भाई करमाज़ोव

फ्योडोर दोस्तोयेव्स्की

अमेज़न क्लासिक्स

भाई करमाज़ोव

फ्योडोर दोस्तोयेव्स्की

कॉन्स्टेंस गार्नेट द्वारा अनुवादित

अमाज़ोन क्लासिक्स

यह एक काल्पनिक रचना है। नाम, पात्र, संगठन, स्थान, घटनाएँ और प्रसंग या तो लेखक की कल्पना की उपज हैं या काल्पनिक रूप से प्रयुक्त किए गए हैं। किसी भी जीवित या मृत व्यक्ति या वास्तविक घटना से कोई भी समानता केवल संयोगवश है।
सर्वाधिकार सुरक्षित।
प्रकाशक की स्पष्ट लिखित अनुमति के बिना इस कृति का कोई भी भाग पुनरुत्पादित, किसी पुनर्प्राप्ति प्रणाली में संग्रहीत या किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम से, इलेक्ट्रॉनिक, यांत्रिक, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग या अन्यथा प्रसारित नहीं किया जा सकता है।
सिएटल स्थित AmazonClassics द्वारा प्रकाशित।
www.apub.com
Amazon, Amazon लोगो और AmazonClassics, Amazon के ट्रेडमार्क हैं।
Amazon.com, Inc., या इसके सहयोगी संगठन।
ISBN-10: 154202191X
ISBN-13: 9781542021913
ईआईएसबीएन: 9781542021920
सीरीज़ का डिज़ाइन जेफ मिलर, फेसआउट स्टूडियो द्वारा किया गया है।

अंतर्वस्तु

भाग एक
पुस्तक 1: एक परिवार का इतिहास
अध्याय 1 फ्योडोर पावलोविच करमाज़ोव
अध्याय 2 वह अपने सबसे बड़े बेटे से छुटकारा पाता है
अध्याय 3 दूसरा विवाह और दूसरा परिवार
अध्याय 4 तीसरा पुत्र, अलेयोशा
अध्याय 5 बुजुर्ग
पुस्तक 2: एक दुर्भाग्यपूर्ण सभा
अध्याय 1 वे मठ पहुँचते हैं
अध्याय 2 बूढ़ा मसखरा
अध्याय 3 आस्था रखने वाली किसान महिलाएं
अध्याय 4: कम आस्था वाली महिला
अध्याय 5 ऐसा ही हो! ऐसा ही हो!
अध्याय 6 ऐसा व्यक्ति जीवित क्यों है?
अध्याय 7 एक युवक जो करियर बनाने के लिए दृढ़ संकल्पित है
अध्याय 8 शर्मनाक दृश्य
पुस्तक 3: द सेंसुअलिस्ट्स
अध्याय 1 नौकरों के क्वार्टर में
अध्याय 2 लिज़ावेटा
अध्याय 3 एक भावुक हृदय की स्वीकारोक्ति—पद्य में
अध्याय 4 एक भावुक हृदय की स्वीकारोक्ति—किस्सों के माध्यम से
अध्याय 5 एक भावुक हृदय की स्वीकारोक्ति—“एड़ी ऊपर”
अध्याय 6 स्मर्ज्याकोव
अध्याय 7 विवाद
अध्याय 8 ब्रांडी के ऊपर
अध्याय 9: कामुक लोग
अध्याय 10 दोनों एक साथ
अध्याय 11 एक और प्रतिष्ठा धूमिल
भाग दो
पुस्तक 4 घाव
अध्याय 1 फादर फेरापोंट
अध्याय 2 अपने पिता के यहाँ
अध्याय 3 स्कूली लड़कों के साथ एक मुलाकात
अध्याय 4 होहलकोव परिवार के यहाँ
अध्याय 5 ड्राइंग रूम में एक घाव
अध्याय 6 झोपड़ी में एक घाव
अध्याय 7 और खुली हवा में
पुस्तक 5: पक्ष और विपक्ष
अध्याय 1 सगाई

अध्याय 2 गिटार के साथ स्मर्ज्याकोव
अध्याय 3 भाई दोस्त बनाते हैं
अध्याय 4 विद्रोह
अध्याय 5 महान पूछताछकर्ता
अध्याय 6 कुछ समय के लिए एक बहुत ही अस्पष्ट व्यक्ति
अध्याय 7 "एक चतुर व्यक्ति से बात करना हमेशा फायदेमंद होता है"
पुस्तक 6 रूसी भिक्षु
अध्याय 1 पिता ज़ोसिमा और उनके आगंतुक
अध्याय दो
अध्याय 3: फादर ज़ोसिमा की बातचीत और उपदेश
भाग तीन
पुस्तक 7 अलेयोशा
अध्याय 1 भ्रष्टाचार की साँस
अध्याय 2 एक महत्वपूर्ण क्षण
अध्याय 3 एक प्याज
अध्याय 4 गलीलिया का काना
पुस्तक 8 मित्या
अध्याय 1 कुज़्मा सैमसनोव
अध्याय 2 ल्यगावी
अध्याय 3 सोने की खदानें
अध्याय 4 अंधेरे में
अध्याय 5 एक अचानक संकल्प
अध्याय 6 "मैं भी आ रहा हूँ!"
अध्याय 7 पहला और सच्चा प्रेमी
अध्याय 8 प्रलाप
पुस्तक 9 प्रारंभिक जांच
अध्याय 1 पेरहोटिन के आधिकारिक करियर का आरंभ
अध्याय 2 अलार्म
अध्याय 3 आत्मा के कष्ट। पहली परीक्षा
अध्याय 4 दूसरी परीक्षा
अध्याय 5 तीसरी परीक्षा
अध्याय 6 अभियोजक ने मित्या को पकड़ लिया

अध्याय 7 मित्या का महान रहस्य। फुफकार के साथ प्राप्त हुआ।
अध्याय 8 गवाहों के साक्ष्य। शिशु
अध्याय 9 वे मित्या को ले जाते हैं

भाग चार

पुस्तक 10 लड़के
अध्याय 1 कोल्या क्रासोटकिन
अध्याय 2 बच्चे
अध्याय 3 स्कूली लड़का
अध्याय 4 खोया हुआ कुत्ता
अध्याय 5 इलुशा के बिस्तर के पास
अध्याय 6 शीघ्र परिपक्वता
अध्याय 7 इलुशा
पुस्तक 11 इवान
अध्याय 1 ग्रुशेंका के यहाँ
अध्याय 2 घायल पैर
अध्याय 3 एक छोटा दानव
अध्याय 4 एक भजन और एक रहस्य
अध्याय 5 तुम नहीं, तुम नहीं!
अध्याय 6 स्मर्ड्याकोव के साथ पहला साक्षात्कार
अध्याय 7 स्मरद्याकोव की दूसरी यात्रा
अध्याय 8 स्मर्ड्याकोव के साथ तीसरा और अंतिम साक्षात्कार
अध्याय 9 शैतान। इवान का दुःस्वप्न
अध्याय 10 “यह बात उन्होंने ही कही थी”
पुस्तक 12 एक न्यायिक त्रुटि
अध्याय 1 वह घातक दिन
अध्याय 2 खतरनाक गवाह
अध्याय 3 चिकित्सा विशेषज्ञ और एक पाउंड मेवे
अध्याय 4: भाग्य मित्या पर मेहरबान हुआ
अध्याय 5 एक अचानक आई विपत्ति
अध्याय 6 अभियोजक का भाषण। चरित्रों के रेखाचित्र
अध्याय 7 एक ऐतिहासिक सर्वेक्षण
अध्याय 8 स्मर्ड्याकोव पर एक ग्रंथ

अध्याय 9: सरपट दौड़ती तिकड़ी। अभियोजक के भाषण का अंत।
अध्याय 10 बचाव पक्ष का भाषण: एक ऐसा तर्क जो दोनों पक्षों को काटता है
तौर तरीकों
अध्याय 11 पैसा नहीं था। कोई डकैती नहीं हुई थी।
अध्याय 12 और वहाँ कोई हत्या भी नहीं हुई थी
अध्याय 13 विचारों को भ्रष्ट करने वाला
अध्याय 14 किसान दृढ़ रहते हैं
उपसंहार
अध्याय 1 मित्या के भागने की योजनाएँ
अध्याय 2 क्षण भर के लिए झूठ सच बन जाता है
अध्याय 3 इलुशा का अंतिम संस्कार। पत्थर पर दिया गया भाषण
लेखक के बारे में
अनुवादक के बारे में

भाग एक

पुस्तक 1

एक परिवार का इतिहास

अध्याय 1

फ्योडोर पावलोविच करामाज़ोव

एलेक्सी फ्योदोरोविच करामाज़ोव, फ्योदोर पावलोविच करामाज़ोव के तीसरे पुत्र थे, जो अपने समय में हमारे जिले के एक प्रसिद्ध जमींदार थे और तेरह वर्ष पूर्व हुई उनकी दुखद और दर्दनाक मृत्यु के कारण आज भी हमें याद हैं, जिसका वर्णन मैं उचित स्थान पर करूँगा। फिलहाल मैं केवल इतना ही कहूँगा कि यह "जमींदार"—जैसा कि हम उन्हें कहते थे, हालाँकि उन्होंने अपने जीवन का एक दिन भी अपनी जागीर पर नहीं बिताया—एक विचित्र व्यक्ति थे, फिर भी ऐसे लोग अक्सर देखने को मिलते थे—एक नीच, दुष्ट और साथ ही साथ संवेदनहीन व्यक्ति। लेकिन वे उन संवेदनहीन व्यक्तियों में से एक थे जो अपने सांसारिक मामलों को संभालने में तो सक्षम होते हैं, लेकिन जाहिर तौर पर उन्हें और किसी चीज की परवाह नहीं होती। उदाहरण के लिए, फ्योदोर पावलोविच ने लगभग शून्य से शुरुआत की थी; उनकी जागीर बहुत छोटी थी; वे दूसरों की मेजों पर भोजन करते थे और चापलूसों की तरह उनसे चिपके रहते थे, फिर भी उनकी मृत्यु के समय पता चला कि उनके पास एक लाख रूबल नकद थे। साथ ही, वह अपने पूरे जीवन में पूरे जिले के सबसे निरर्थक और सनकी लोगों में से एक था। मैं दोहराता हूँ, यह मूर्खता नहीं थी—इनमें से अधिकांश सनकी लोग चतुर और बुद्धिमान होते हैं—बल्कि यह केवल निरर्थकता थी, और वह भी एक विशिष्ट राष्ट्रीय रूप की।
उन्होंने दो बार शादी की थी और उनके तीन बेटे थे, जिनमें सबसे बड़ा बेटा दिमित्री, उनकी पहली संतान से था।
फ्योदोर पावलोविच की पहली पत्नी, अदेलाइदा इवानोव्ना, एक काफी धनी और प्रतिष्ठित कुलीन परिवार से थीं, जो हमारे जिले में ज़मींदार भी थे, मियूसोव परिवार। यह कैसे संभव हुआ कि एक उत्तराधिकारी, जो सुंदर भी थी, और उससे भी बढ़कर इस पीढ़ी की उन ऊर्जावान और बुद्धिमान लड़कियों में से एक थी, जो कभी-कभी पिछली पीढ़ी में भी पाई जाती थीं, ने ऐसे निकम्मे, कमजोर और निकम्मे व्यक्ति से शादी कर ली, जैसा कि हम सब उसे कहते थे, मैं समझाने की कोशिश नहीं करूँगा। मैं पिछली "रोमांटिक" पीढ़ी की एक युवती को जानता हूँ, जिसने एक सज्जन व्यक्ति के लिए कई वर्षों तक रहस्यमय प्रेम किया, जिससे वह किसी भी क्षण आसानी से शादी कर सकती थी, लेकिन उसने उनके मिलन में अपूरणीय बाधाएँ खड़ी कर दीं, और अंत में एक तूफानी रात को एक ऊँचे किनारे से, लगभग एक खाई से, एक गहरी और तेज़ बहने वाली नदी में कूद गई और अपनी सनक को पूरा करने के लिए, शेक्सपियर की ओफेलिया की तरह बनने के लिए, अपनी जान दे दी। वास्तव में, यदि यह खाई, जो उसकी पसंदीदा जगह थी, कम आकर्षक होती, यदि इसके स्थान पर एक साधारण सपाट किनारा होता, तो संभवतः आत्महत्या कभी नहीं होती। यह एक सच्चाई है, और शायद पिछली दो-तीन पीढ़ियों में ऐसे कई उदाहरण देखने को मिले हैं। एडेलाइडा इवानोव्ना मियूसोव का यह कदम भी, निस्संदेह, अन्य लोगों के विचारों की प्रतिध्वनि था, और मानसिक स्वतंत्रता की कमी से उत्पन्न झुंझलाहट का परिणाम था। वह शायद अपनी नारीवादी स्वतंत्रता दिखाना चाहती थी, वर्ग भेद और अपने परिवार के निरंकुश शासन को चुनौती देना चाहती थी। और एक लचीली कल्पना ने, हमें मानना होगा, उसे कुछ क्षणों के लिए यह विश्वास दिला दिया कि फ्योदोर पावलोविच, अपनी परजीवी स्थिति के बावजूद, उस प्रगतिशील युग के साहसी और व्यंग्यात्मक व्यक्तित्वों में से एक था, जबकि वास्तव में वह एक कुटिल स्वभाव का मसखरा था और कुछ नहीं। इस विवाह में रोमांच का कारण यह था कि इससे पहले एक भागकर विवाह किया गया था, जिसने अदेलाइदा इवानोव्ना को बेहद आकर्षित किया। उस समय फ्योदोर पावलोविच की स्थिति ऐसी थी कि वे किसी भी तरह से अपना करियर बनाने के लिए बेहद उत्सुक थे, क्योंकि वे किसी भी तरह से अपना करियर बनाना चाहते थे। एक अच्छे परिवार से जुड़ना और दहेज प्राप्त करना उनके लिए एक लुभावना अवसर था।

जहाँ तक आपसी प्रेम की बात है, अदेलाइदा इवानोव्ना की सुंदरता के बावजूद, न तो दुल्हन और न ही फ्योदोर पावलोविच में कोई प्रेम था। शायद यह फ्योदोर पावलोविच के जीवन में अपनी तरह का एक अनूठा मामला था, जो हमेशा कामुक स्वभाव के थे और जरा से प्रोत्साहन पर भी किसी भी स्त्री के पीछे भागने को तैयार रहते थे। ऐसा लगता है कि अदेलाइदा ही एकमात्र ऐसी महिला थीं जिन्होंने उनके मन को विशेष रूप से आकर्षित नहीं किया।
भागकर शादी करने के तुरंत बाद, एडेलाइडा इवानोव्ना को अचानक ही सब कुछ समझ आ गया। उसके मन में अपने पति के लिए कोई भावना नहीं थी, सिवाय घृणा के। इसी के चलते विवाह का असली रंग अत्यंत शीघ्रता से सामने आ गया। यद्यपि परिवार ने इस घटना को जल्दी स्वीकार कर लिया और भागी हुई दुल्हन को उसका दहेज दे दिया, फिर भी पति-पत्नी का जीवन अत्यंत अव्यवस्थित हो गया और उनके बीच लगातार झगड़े होते रहते थे। कहा जाता है कि युवती ने फ्योदोर पावलोविच की तुलना में कहीं अधिक उदारता और गरिमा दिखाई, जिसने, जैसा कि अब ज्ञात है, उसके पच्चीस हजार रूबल तक की सारी धनराशि मिलते ही हड़प ली, जिससे वे हजार रूबल हमेशा के लिए उससे छिन गए। दहेज में मिले छोटे से गाँव और सुंदर कस्बे के मकान को अपने नाम पर दर्ज कराने के लिए उसने लंबे समय तक हर संभव प्रयास किया। संभवतः वह सफल भी हो जाता, केवल इसलिए कि युवती उससे नैतिक रूप से तंग आ चुकी थी और उससे छुटकारा पाना चाहती थी, और उसकी लगातार और निर्लज्जतापूर्ण ज़िद से उत्पन्न घृणा और तिरस्कार के कारण। लेकिन सौभाग्य से, अदेलाइदा इवानोव्ना के परिवार ने हस्तक्षेप किया और उसके लालच को विफल कर दिया। यह सर्वविदित है कि पति-पत्नी के बीच अक्सर झगड़े होते थे, लेकिन अफवाह यह थी कि फ्योदोर पावलोविच अपनी पत्नी को नहीं पीटते थे, बल्कि उनकी पत्नी उन्हें पीटती थीं। उनकी पत्नी गुस्सैल, साहसी, सांवली, अधीर और असाधारण शारीरिक शक्ति वाली थीं। अंततः, उन्होंने घर छोड़ दिया और एक गरीब धर्मशास्त्र के छात्र के साथ फ्योदोर पावलोविच से भाग गईं, और अपने तीन वर्षीय बच्चे मित्या को अपने पति के हवाले कर दिया। तुरंत ही फ्योदोर पावलोविच ने घर में एक नियमित हरम बना लिया और शराब के नशे में चूर हो गए। बीच-बीच में वे पूरे प्रांत में गाड़ी चलाते और हर किसी से अदेलैदा इवानोव्ना के उन्हें छोड़कर चले जाने की शिकायत करते, और अपने वैवाहिक जीवन के बारे में ऐसी बातें बताते जो एक पति के लिए बताना शर्मनाक होता। उन्हें सबसे ज्यादा खुशी और आत्म-सम्मान तब मिलता था जब वे एक पीड़ित पति की हास्यास्पद भूमिका निभाते और अपने दुखों को बढ़ा-चढ़ाकर पेश करते।
“कोई सोचेगा कि आपको पदोन्नति मिल गई है, फ्योदोर पावलोविच, आप
“दुख में भी इतने प्रसन्न क्यों दिखते हो?” उपहास करने वालों ने उससे कहा। कई लोगों ने तो यहाँ तक कह दिया कि उसे एक नया हास्य किरदार मिल गया है जिसमें वह मसखरा बन सकता है, और यह केवल अपनी हास्यास्पद स्थिति से अनजान होने का नाटक करके इसे और भी हास्यास्पद बनाने की कोशिश कर रहा है। लेकिन कौन जानता है, शायद यह उसकी सरलता ही रही हो। आखिरकार वह अपनी भागी हुई पत्नी का पता लगाने में सफल हो गया। पता चला कि वह बेचारी पीटर्सबर्ग में थी, जहाँ वह अपने धर्मशास्त्र के छात्र के साथ गई थी, और जहाँ उसने पूर्ण स्वतंत्रता का जीवन व्यतीत किया था। फ्योदोर पावलोविच तुरंत पीटर्सबर्ग जाने की तैयारी में जुट गया, हालाँकि उसका उद्देश्य क्या था, यह वह स्वयं नहीं बता सका। वह शायद सचमुच चला जाता; लेकिन ऐसा करने का निश्चय करने के बाद उसने यात्रा के लिए खुद को तैयार करने के लिए एक बार फिर बेहिसाब शराब पीने का फैसला किया। और ठीक उसी समय उसकी पत्नी के परिवार को पीटर्सबर्ग में उसकी मृत्यु की खबर मिली। उसकी मृत्यु अटारी में अचानक हुई थी, एक कहानी के अनुसार टाइफस से, या जैसा कि एक अन्य संस्करण में कहा गया है, किसी अन्य बीमारी से। भुखमरी। फ्योदोर पावलोविच अपनी पत्नी की मृत्यु की खबर सुनकर नशे में धुत थे, और कहा जाता है कि वे सड़क पर दौड़ पड़े और खुशी से चिल्लाने लगे, अपने हाथ स्वर्ग की ओर उठाकर बोले, "हे प्रभु, अब तू अपने सेवक को शांति से जाने दे।" लेकिन कुछ लोग कहते हैं कि वे एक छोटे बच्चे की तरह बेकाबू होकर रोए, इतना कि लोगों को उन पर दया आ गई, भले ही वे उनसे घृणा करते थे। यह पूरी तरह संभव है कि दोनों ही बातें सच हों, कि वे अपनी मुक्ति पर प्रसन्न हुए और साथ ही साथ उन्हें मुक्त करने वाली के लिए रोए भी। सामान्य तौर पर, लोग, यहाँ तक कि दुष्ट भी, हमारी सोच से कहीं अधिक भोले और सरल हृदय वाले होते हैं। और हम स्वयं भी ऐसे ही हैं।

अध्याय दो

वह अपने सबसे बड़े बेटे से छुटकारा पा लेता है

आप आसानी से कल्पना कर सकते हैं कि ऐसा व्यक्ति कैसा पिता रहा होगा और उसने अपने बच्चों का पालन-पोषण कैसे किया होगा। पिता के रूप में उसका व्यवहार ठीक वैसा ही था जैसा उससे उम्मीद की जा सकती थी। उसने एडेलाइडा इवानोव्ना से हुए अपने विवाह से पैदा हुए बच्चे को पूरी तरह से त्याग दिया, न तो द्वेषवश, न ही वैवाहिक शिकायतों के कारण, बल्कि इसलिए कि वह उसे भूल गया था। जब वह अपने आंसुओं और शिकायतों से सबको परेशान कर रहा था और अपने घर को व्यभिचार का अड्डा बना रहा था, तब परिवार के एक वफादार नौकर, ग्रिगोरी ने तीन वर्षीय मित्या की देखभाल की जिम्मेदारी ले ली। अगर उसने उसकी देखभाल न की होती तो बच्चे के छोटे कपड़े बदलने वाला भी कोई नहीं होता।
इसके अलावा, बच्चे के माता पक्ष के रिश्तेदार भी थे।
पहले तो वे उसे भी भूल गए थे। उसके दादाजी का निधन हो चुका था, उनकी विधवा, मित्या की नानी, मॉस्को चली गई थीं और गंभीर रूप से बीमार थीं, जबकि उनकी बेटियाँ शादी कर चुकी थीं, इसलिए मित्या लगभग पूरे एक साल तक बूढ़े ग्रिगोरी की देखरेख में रहा और नौकरों की कुटिया में उनके साथ रहा। लेकिन अगर उसके पिता को उसकी याद होती (वास्तव में, वे उसके अस्तित्व से पूरी तरह अनजान नहीं हो सकते थे), तो वे उसे वापस कुटिया में भेज देते, क्योंकि बच्चा उनकी अय्याशी में बाधा बन सकता था। लेकिन मित्या की माँ के एक चचेरे भाई, प्योत्र अलेक्सांद्रोविच मियूसोव, संयोग से पेरिस से लौट आए। वे बाद में कई वर्षों तक विदेश में रहे, लेकिन उस समय वे काफी युवा थे, और मियूसोव परिवार में एक प्रबुद्ध विचारों और यूरोपीय संस्कृति वाले व्यक्ति के रूप में प्रतिष्ठित थे, जो राजधानियों और विदेशों में रह चुके थे। अपने जीवन के अंत में वे चालीस और पचास के दशक में प्रचलित उदारवादी बन गए। अपने जीवनकाल में वे रूस और विदेश दोनों जगह अपने युग के कई उदारवादी व्यक्तियों के संपर्क में आए थे। वे प्राउधोन और बाकुनिन को व्यक्तिगत रूप से जानते थे, और अपने जीवन के अंतिम वर्षों में वे फरवरी 1848 की पेरिस क्रांति के तीन दिनों का वर्णन करना बहुत पसंद करते थे, और संकेत देते थे कि वे स्वयं भी बैरिकेड्स पर लड़ाई में लगभग शामिल हो गए थे। यह उनकी युवावस्था की सबसे सुखद यादों में से एक थी। उनके पास लगभग एक हजार लोगों की स्वतंत्र संपत्ति थी, जिसकी गणना पुराने तरीके से की जाती है। उनकी भव्य जागीर हमारे छोटे से शहर के बाहरी इलाके में स्थित थी और हमारे प्रसिद्ध मठ की भूमि से सटी हुई थी, जिसके साथ प्योत्र अलेक्जेंड्रोविच ने जागीर मिलने के लगभग तुरंत बाद ही नदी में मछली पकड़ने या जंगल में लकड़ी काटने के अधिकारों को लेकर एक अंतहीन मुकदमा शुरू कर दिया था, मुझे ठीक से नहीं पता कि किस मुद्दे पर। वे इसे एक नागरिक और सुसंस्कृत व्यक्ति के रूप में अपना कर्तव्य मानते थे कि वे "पुजारियों" पर हमला करें। अदेलाइदा इवानोवना के बारे में सब कुछ सुनकर, जिन्हें वह निश्चित रूप से याद करते थे और जिनमें उनकी कभी रुचि भी थी, और मित्या के अस्तित्व के बारे में जानकर, उन्होंने फ्योदोर पावलोविच के प्रति अपने युवावस्था के आक्रोश और तिरस्कार के बावजूद हस्तक्षेप किया। उन्होंने पहली बार पावलोविच से मुलाकात की और सीधे उनसे कहा कि वह बच्चे की शिक्षा का जिम्मा लेना चाहते हैं। बहुत समय बाद तक वह एक खास बात के रूप में बताते थे कि जब वह मित्या के बारे में बात करना शुरू करते थे, तो फ्योदोर पावलोविच कुछ देर तक ऐसे देखते थे मानो उन्हें समझ ही नहीं आ रहा हो कि वह किस बच्चे की बात कर रहे हैं, और मानो उन्हें यह सुनकर आश्चर्य हो रहा हो कि उनके घर में एक छोटा बेटा है। यह कहानी शायद बढ़ा-चढ़ाकर बताई गई हो, लेकिन यह कुछ हद तक सच ही रही होगी।
फ्योदोर पावलोविच को जीवन भर अभिनय का शौक रहा, अचानक किसी किरदार को निभाने का। अप्रत्याशित रूप से, कभी-कभी बिना किसी उद्देश्य के, और यहाँ तक कि अपने स्वयं के सीधे नुकसान के लिए भी, जैसा कि इस मामले में है। हालाँकि, यह आदत बहुत से लोगों में पाई जाती है, जिनमें से कुछ बहुत चतुर होते हैं, फ्योदोर पावलोविच जैसे नहीं। प्योत्र अलेक्जेंड्रोविच ने इस मामले को पूरी लगन से आगे बढ़ाया और फ्योदोर पावलोविच के साथ उस बच्चे का संयुक्त संरक्षक नियुक्त किया गया, जिसकी माँ ने उसे एक छोटा सा घर और ज़मीन विरासत में दी थी। मित्या वास्तव में अपने चचेरे भाई की देखरेख में चला गया,

लेकिन चूंकि बाद वाले का अपना कोई परिवार नहीं था और अपनी जागीरों की आय सुरक्षित करने के बाद वह तुरंत पेरिस लौटने की जल्दी में था, इसलिए उसने लड़के को अपनी एक चचेरी बहन, जो मॉस्को में रहती थी, के हवाले कर दिया। हुआ यूँ कि पेरिस में स्थायी रूप से बसने के बाद वह भी बच्चे को भूल गया, खासकर जब फरवरी की क्रांति छिड़ी, जिसने उसके मन पर ऐसा प्रभाव डाला जो उसे जीवन भर याद रहा। मॉस्को की महिला की मृत्यु हो गई और मित्या उसकी विवाहित बेटियों में से एक की देखरेख में चला गया। मुझे लगता है कि उन्होंने बाद में चौथी बार अपना घर बदला था। मैं अभी इस पर विस्तार से चर्चा नहीं करूँगा, क्योंकि मुझे बाद में फ्योदोर पावलोविच के प्रथम पुत्र के बारे में बहुत कुछ बताना है, और अभी मुझे उनके बारे में सबसे आवश्यक तथ्यों तक ही सीमित रहना होगा, जिनके बिना मैं अपनी कहानी शुरू नहीं कर सकता।

सबसे पहले, यह मित्या, या यूँ कहें कि दिमित्री फ्योदोरोविच, वह व्यक्ति था जो
फ्योदोर पावलोविच के तीन बेटों में से इकलौता बेटा इस विश्वास में पला-बढ़ा कि उसके पास संपत्ति है और बालिग होने पर वह आत्मनिर्भर हो जाएगा। उसका बचपन और युवावस्था अनियमित रहा। उसने जिम्नेजियम में अपनी पढ़ाई पूरी नहीं की, सैन्य विद्यालय में दाखिला लिया, फिर काकेशस गया, पदोन्नति पाई, द्वंद्वयुद्ध लड़ा और पदावनत हो गया, फिर से पदोन्नति पाई, अय्याशी भरी जिंदगी जी और खूब पैसा खर्च किया। बालिग होने तक उसे फ्योदोर पावलोविच से कोई आमदनी नहीं मिली और तब तक वह कर्ज में डूबा रहा। बालिग होने पर ही उसने अपने पिता, फ्योदोर पावलोविच को पहली बार देखा और जाना, जब वह अपनी संपत्ति के बारे में उनसे बात करने के लिए हमारे पड़ोस में आया था। ऐसा लगता है कि वह अपने पिता को पसंद नहीं करता था। वह उसके साथ ज़्यादा देर नहीं रुका और जल्दी से वहाँ से निकल गया। उसे केवल कुछ धनराशि ही मिल पाई थी और उसने संपत्ति से भविष्य में भुगतान के लिए एक समझौता कर लिया था। इस संपत्ति की आय और मूल्य के बारे में वह उसके पिता से कोई बयान नहीं ले पाया था (यह बात ध्यान देने योग्य है)। फ्योदोर पावलोविच ने तब पहली बार गौर किया (यह भी ध्यान देने योग्य है) कि मित्या को अपनी संपत्ति के बारे में अस्पष्ट और बढ़ा-चढ़ाकर जानकारी थी। फ्योदोर पावलोविच इससे बहुत संतुष्ट था, क्योंकि यह उसकी अपनी योजनाओं के अनुरूप था। उसे केवल इतना ही समझ आया कि वह युवक चंचल, उद्दंड, उग्र स्वभाव का, अधीर और फिजूलखर्ची करने वाला था, और अगर उसे तुरंत धन मिल जाए तो वह संतुष्ट हो जाएगा, हालांकि यह संतुष्टि केवल थोड़े समय के लिए ही होगी। इसलिए फ्योदोर पावलोविच ने इस बात का फायदा उठाना शुरू कर दिया और उसे समय-समय पर छोटी-छोटी रकमें, किश्तें भेजने लगा। अंत में, जब चार साल बाद, मित्या का धैर्य टूट गया और वह अपने पिता से हिसाब-किताब निपटाने के लिए दूसरी बार हमारे छोटे से कस्बे में आया, तो उसे यह जानकर बहुत आश्चर्य हुआ कि उसके पास कुछ भी नहीं था, हिसाब-किताब लेना भी मुश्किल था, उसे फ्योदोर पावलोविच से अपनी सारी संपत्ति नकद में मिल चुकी थी, और शायद वह उनका कर्जदार भी था, और उसने अपनी इच्छा से पहले कई समझौते किए थे, इसलिए उसे और कुछ पाने का कोई अधिकार नहीं था, इत्यादि। वह युवक पूरी तरह से टूट गया, उसे धोखे और ठगी का संदेह हुआ, और वह लगभग पागल हो गया। और वास्तव में, इसी घटना के कारण वह विपत्ति आई, जिसका वर्णन मेरी पहली परिचयात्मक कहानी का विषय है, या यूँ कहें कि उसका बाहरी पहलू है। लेकिन उस कहानी पर जाने से पहले, मुझे फ्योदोर पावलोविच के अन्य दो बेटों और उनके वंश के बारे में थोड़ा बताना होगा।

अध्याय 3

दूसरा विवाह और दूसरा परिवार

अपने चार वर्षीय बेटे मित्या को खोने के कुछ ही समय बाद फ्योदोर पावलोविच ने दूसरी शादी कर ली। उनकी दूसरी शादी आठ साल तक चली। उन्होंने सोफिया इवानोव्ना नाम की इस दूसरी पत्नी से, जो कि बहुत कम उम्र की लड़की थी, दूसरे प्रांत से शादी की, जहाँ वे एक यहूदी के साथ किसी छोटे-मोटे व्यापार के सिलसिले में गए थे। हालाँकि फ्योदोर पावलोविच शराबी और दुराचारी थे, फिर भी उन्होंने अपनी पूंजी का निवेश करने में कभी लापरवाही नहीं की और अपने व्यापारिक मामलों को बहुत सफलतापूर्वक संभाला, हालाँकि निस्संदेह वे बहुत ईमानदारी से काम नहीं करते थे। सोफिया इवानोव्ना एक साधारण पादरी की बेटी थीं और बचपन से ही अनाथ थीं, उनका कोई रिश्तेदार नहीं था। वह एक सेनापति की विधवा के घर में पली-बढ़ीं, जो एक धनी और प्रतिष्ठित बुजुर्ग महिला थीं और एक ही समय में उनकी उपकारक और उत्पीड़क दोनों थीं। मुझे पूरी जानकारी नहीं है, लेकिन मैंने केवल इतना सुना है कि एक बार उस अनाथ लड़की को, जो एक शांत और सौम्य प्राणी थी, अटारी में एक कील से लटके हुए फंदे से नीचे उतार दिया गया था, क्योंकि वह उस बूढ़ी औरत की मनमानी और लगातार ताने मारने से इतनी पीड़ित थी, जो जाहिर तौर पर निर्दयी नहीं थी, लेकिन आलस्य के कारण एक असहनीय अत्याचारी बन गई थी।
फ्योदोर पावलोविच ने उसे एक प्रस्ताव दिया; उसके बारे में पूछताछ की गई।
और उसका प्रस्ताव ठुकरा दिया गया। लेकिन फिर, अपनी पहली शादी की तरह, उसने उस अनाथ लड़की से भागकर शादी करने का प्रस्ताव रखा। इसमें कोई संदेह नहीं है कि अगर उसे उसके बारे में थोड़ा और पता चल जाता, तो वह किसी भी हालत में उससे शादी नहीं करती। लेकिन वह दूसरे प्रांत में रहती थी; इसके अलावा, सोलह साल की एक छोटी लड़की को इसके बारे में क्या पता होता, सिवाय इसके कि वह अपनी उपकारिणी के साथ रहने से बेहतर नदी की तलहटी में रहना पसंद करेगी। इसलिए उस बेचारी बच्ची ने उपकारिणी को छोड़कर एक उपकारिणी को पा लिया। इस बार फ्योदोर पावलोविच को एक पैसा भी नहीं मिला, क्योंकि सेनापति की विधवा बहुत क्रोधित थी। उसने उन्हें कुछ नहीं दिया और दोनों को शाप दिया। लेकिन उसने दहेज की उम्मीद नहीं की थी; उसे उस मासूम लड़की की असाधारण सुंदरता ने आकर्षित किया था, और सबसे बढ़कर उसकी मासूम सूरत ने, जो एक दुष्ट और अय्याश व्यक्ति के लिए विशेष आकर्षण का केंद्र थी, जिसने अब तक केवल स्त्री सौंदर्य के भद्दे रूपों की ही प्रशंसा की थी।
“उन मासूम आँखों ने मेरी आत्मा को रेज़र की तरह चीर दिया,” वह अक्सर कहा करते थे।
इसके बाद, वह अपनी घिनौनी हंसी हंसता था। इतने भ्रष्ट व्यक्ति में इसका अर्थ केवल कामुक आकर्षण ही हो सकता था। चूंकि उसे अपनी पत्नी के साथ दहेज नहीं मिला था, और उसने उसे एक तरह से "गद्दी से उतार लिया" था, इसलिए उसने उसके साथ कोई औपचारिकता नहीं निभाई। उसे यह एहसास दिलाकर कि उसने उसके साथ "अन्याय" किया है, उसने उसकी असाधारण नम्रता और आज्ञाकारिता का फायदा उठाकर विवाह के बुनियादी मर्यादाओं को रौंद डाला। उसने अपने घर में चरित्रहीन महिलाओं को इकट्ठा किया और अपनी पत्नी की उपस्थिति में व्यभिचार की पार्टियां चलाईं। यह दिखाने के लिए कि हालात कितने बिगड़ गए थे, मैं यह उल्लेख कर सकता हूं कि ग्रिगोरी, वह उदास, मूर्ख, जिद्दी, झगड़ालू नौकर, जो हमेशा अपनी पहली मालकिन, एडेलाइडा इवानोव्ना से नफरत करता था, अपनी नई मालकिन का पक्ष लेने लगा। उसने उसका पक्ष लिया, फ्योदोर पावलोविच को नौकर के लिए अशोभनीय तरीके से गाली दी, और एक बार उसने जश्न को रोककर सभी उपद्रवी महिलाओं को घर से बाहर निकाल दिया। अंत में, बचपन से ही भय में पली-बढ़ी यह अभागी युवती, उस प्रकार के मानसिक रोग से ग्रसित हो गई जो अक्सर किसान महिलाओं में पाया जाता है, जिन्हें "शैतान के वश में" कहा जाता है। कभी-कभी भयानक उन्माद के दौरों के बाद वह अपना मानसिक संतुलन भी खो बैठती थी। फिर भी उसने फ्योदोर पावलोविच के दो पुत्रों, इवान और एलेक्सी को जन्म दिया, जिनमें से बड़ा पुत्र विवाह के पहले वर्ष में और दूसरा तीन वर्ष बाद पैदा हुआ। जब उसकी मृत्यु हुई, तब छोटा एलेक्सी चार वर्ष का था, और यह अजीब लग सकता है, लेकिन मैं जानता हूँ कि उसने अपनी माँ को जीवन

भर याद रखा, मानो किसी सपने में। उसकी मृत्यु के बाद, दोनों छोटे लड़कों के साथ लगभग वही हुआ जो उनके बड़े भाई मित्या के साथ हुआ था। उनके पिता ने उन्हें पूरी तरह से भुला दिया और त्याग दिया। उनकी देखभाल उसी ग्रिगोरी ने की और वे उसकी कुटिया में रहते थे, जहाँ उन्हें उस अत्याचारी बूढ़ी औरत ने पाया जिसने उनकी माँ का पालन-पोषण किया था। वह अभी भी जीवित थी, और उन आठ वर्षों में भी वह अपने साथ हुए अपमान को नहीं भूली थी। उस पूरे समय वह सोफिया के जीवन शैली के बारे में सटीक जानकारी जुटा रही थी, और उसकी बीमारी और भयावह परिवेश के बारे में सुनकर उसने अपने सेवकों से दो-तीन बार जोर से कहा:
“उसके साथ यही होना चाहिए था। ईश्वर ने उसे उसकी कृतघ्नता का दंड दिया है।” सोफिया इवानोव्ना की मृत्यु के ठीक तीन महीने बाद, जनरल की विधवा ने यह बात कही।
अचानक वह हमारे कस्बे में प्रकट हुई और सीधे फ्योदोर पावलोविच के घर चली गई। उसने कस्बे में केवल आधा घंटा बिताया, लेकिन उसने बहुत कुछ कर लिया। शाम का समय था। फ्योदोर पावलोविच, जिससे वह आठ साल से नहीं मिली थी, नशे में धुत होकर उसके पास आया। कहानी यह है कि उसे देखते ही, बिना किसी स्पष्टीकरण के, उसने उसके चेहरे पर दो जोरदार थप्पड़ मारे, उसके बालों का एक गुच्छा पकड़ा और उसे तीन बार ऊपर-नीचे हिलाया। फिर, बिना कुछ कहे, वह सीधे दो लड़कों के पास झोपड़ी में चली गई। पहली नज़र में ही यह देखकर कि वे नंगे नहीं थे और गंदे कपड़ों में थे, उसने तुरंत ग्रिगोरी को भी कान पर एक घूंसा मारा और यह घोषणा करते हुए कि वह दोनों बच्चों को अपने साथ ले जाएगी, उसने उन्हें उसी हालत में एक गलीचे में लपेटा, गाड़ी में बिठाया और अपने कस्बे की ओर चल पड़ी। ग्रिगोरी ने एक वफादार गुलाम की तरह चुपचाप वार सहा, और जब वह बूढ़ी औरत को उसकी गाड़ी तक ले गया तो उसने झुककर प्रणाम किया और प्रभावशाली ढंग से कहा, "भगवान अनाथों के लिए उसे प्रतिफल देंगे।" "फिर भी तुम मूर्ख हो," बूढ़ी औरत गाड़ी चलाते हुए चिल्लाई।
फ्योदोर पावलोविच ने इस पर विचार करने के बाद फैसला किया कि यह एक अच्छी बात है।
और उसने अपने बच्चों की शिक्षा से संबंधित किसी भी प्रस्ताव पर सेनापति की विधवा की औपचारिक सहमति को अस्वीकार नहीं किया। जहाँ तक उसके द्वारा मारे गए थप्पड़ों की बात है, वह पूरे शहर में घूम-घूमकर यह कहानी सुनाता रहा।
इसके कुछ ही समय बाद उस बूढ़ी औरत की मृत्यु हो गई, लेकिन वह लड़कों को वहीं छोड़ गई।
उनकी वसीयत में प्रत्येक बच्चे की शिक्षा के लिए एक हजार रूबल थे, और यह भी लिखा था कि यह राशि पूरी तरह से उन्हीं पर खर्च की जाए, इस शर्त के साथ कि यह उनके इक्कीस वर्ष की आयु तक चले, क्योंकि ऐसे बच्चों के लिए यह पर्याप्त से अधिक है। यदि अन्य लोग अपना पैसा बर्बाद करना चाहें, तो वे कर सकते हैं। मैंने स्वयं वसीयत नहीं पढ़ी है, लेकिन मैंने सुना है कि उसमें कुछ विचित्र और सनकीपन भरा था। मुख्य उत्तराधिकारी, येफिम पेट्रोविच पोलेनोव, जो प्रांत के कुलीन वर्ग के मार्शल थे, एक ईमानदार व्यक्ति निकले। फ्योदोर पावलोविच को पत्र लिखकर, और यह समझते हुए कि वे अपने बच्चों की शिक्षा के लिए उनसे कुछ भी नहीं ले सकते (हालाँकि पावलोविच ने कभी सीधे तौर पर मना नहीं किया, बल्कि हमेशा की तरह टालमटोल करते रहे, और वास्तव में, कभी-कभी बहुत भावुक भी हो जाते थे), येफिम पेट्रोविच ने अनाथों में व्यक्तिगत रुचि ली। उन्हें विशेष रूप से छोटे बेटे, एलेक्सी से लगाव हो गया, जो लंबे समय तक उनके परिवार के सदस्य के रूप में रहा। मैं पाठक से अनुरोध करता हूँ कि वे इस बात पर शुरू से ही ध्यान दें। येफ़िम पेट्रोविच, जो एक असाधारण उदारता और मानवता के धनी व्यक्ति थे, उनकी शिक्षा और परवरिश के लिए वे युवा सबसे अधिक ऋणी थे। उन्होंने सेनापति की विधवा द्वारा छोड़े गए दो हज़ार रूबल को सुरक्षित रखा, ताकि जब वे बालिग हुए, तब तक ब्याज के संचय से उनकी धनराशि दोगुनी हो गई थी। उन्होंने दोनों को अपने खर्च पर पढ़ाया और निश्चित रूप से प्रत्येक पर एक हज़ार रूबल से कहीं अधिक खर्च किया। मैं उनके बचपन और युवावस्था का विस्तृत वर्णन नहीं करूँगा, बल्कि केवल कुछ सबसे महत्वपूर्ण घटनाओं का उल्लेख करूँगा। बड़े बेटे इवान के बारे में मैं केवल इतना कहूँगा कि वह कुछ हद तक उदास और अंतर्मुखी स्वभाव का था, हालाँकि वह बिल्कुल भी डरपोक नहीं था। दस वर्ष की आयु में ही उसे यह अहसास हो गया था कि वे अपने घर में नहीं, बल्कि दूसरों की दान-पुण्य पर जी रहे हैं, और उनके पिता एक ऐसे व्यक्ति थे जिनके बारे में बात करना शर्मनाक था। इस लड़के ने बहुत कम उम्र में ही, लगभग शैशवावस्था में ही (कम से कम ऐसा कहा जाता है), सीखने की असाधारण प्रतिभा दिखाना शुरू कर दिया था। मुझे ठीक से कारण तो

नहीं पता, लेकिन जब इवान तेरह साल का भी नहीं हुआ था, तभी उसने येफिम पेट्रोविच का परिवार छोड़ दिया और मॉस्को के एक जिम्नेजियम में दाखिला ले लिया। वहाँ वह एक अनुभवी और प्रसिद्ध शिक्षक के साथ रहने लगा, जो येफिम पेट्रोविच का पुराना मित्र था। इवान बाद में कहा करता था कि यह सब येफिम पेट्रोविच के "अच्छे कार्यों के प्रति उत्साह" के कारण हुआ, जो इस विचार से मोहित थे कि लड़के की प्रतिभा को एक प्रतिभाशाली शिक्षक द्वारा प्रशिक्षित किया जाना चाहिए। लेकिन जब उस युवक ने जिम्नेजियम से पढ़ाई पूरी की और विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया, तब न तो येफिम पेट्रोविच और न ही वह शिक्षक जीवित थे। चूंकि येफिम पेट्रोविच ने उस अत्याचारी बूढ़ी महिला की विरासत, जो एक हजार से बढ़कर दो हजार हो गई थी, के भुगतान का कोई प्रबंध नहीं किया था, इसलिए रूस में अपरिहार्य औपचारिकताओं के कारण इसमें देरी हुई। विश्वविद्यालय में पहले दो साल युवक को बहुत कठिनाइयों का सामना करना पड़ा, क्योंकि उसे पढ़ाई के दौरान हर समय अपना खर्च खुद उठाना पड़ता था। यह उल्लेखनीय है कि उन्होंने अपने पिता से संपर्क करने का प्रयास तक नहीं किया, शायद स्वाभिमान के कारण, उनके प्रति तिरस्कार के कारण, या शायद अपनी सूझबूझ के कारण, जिसने उन्हें बताया कि ऐसे पिता से उन्हें कोई वास्तविक सहायता नहीं मिलेगी। कारण चाहे जो भी रहा हो, वह युवक बिल्कुल भी निराश नहीं हुआ और काम पाने में सफल रहा। पहले वह छह पैसे में ट्यूशन देता था और बाद में "प्रत्यक्षदर्शी" के नाम से अखबारों में गली-मोहल्लों की घटनाओं पर लेख प्रकाशित करवाता था। कहा जाता है कि ये लेख इतने रोचक और तीखे थे कि वे तुरंत बिक गए। इससे ही उस युवक की व्यावहारिक और बौद्धिक श्रेष्ठता सिद्ध हो गई, उन जरूरतमंद और दुर्भाग्यशाली छात्रों की तुलना में जो अखबारों और पत्रिकाओं के दफ्तरों के चक्कर लगाते रहते हैं और फ्रेंच से नकल और अनुवाद के लिए लगातार गुहार लगाने के अलावा कुछ और नहीं सोच पाते। संपादकों से एक बार संपर्क स्थापित करने के बाद इवान फ्योदोरोविच ने हमेशा उनसे संपर्क बनाए रखा और विश्वविद्यालय में अपने अंतिम वर्षों में उन्होंने विभिन्न विशेष विषयों पर पुस्तकों की शानदार समीक्षाएँ प्रकाशित कीं, जिससे वे साहित्यिक जगत में प्रसिद्ध हो गए। लेकिन अपने अंतिम वर्ष में ही वे अचानक पाठकों के एक व्यापक दायरे का ध्यान आकर्षित करने में सफल हुए, जिससे बहुत से लोगों ने उन्हें देखा और याद रखा। यह एक विचित्र घटना थी। जब उन्होंने विश्वविद्यालय छोड़ा और अपने दो हज़ार रूबल पर विदेश जाने की तैयारी कर रहे थे, तभी इवान फ्योदोरोविच ने एक महत्वपूर्ण पत्रिका में एक विचित्र लेख प्रकाशित किया, जिसने व्यापक ध्यान आकर्षित किया। यह लेख एक ऐसे विषय पर था जिसके बारे में यह माना जा सकता था कि उन्हें कुछ भी जानकारी नहीं थी, क्योंकि वे प्राकृतिक विज्ञान के छात्र थे। लेख में उस विषय पर चर्चा की गई थी जिस पर उस समय हर जगह बहस चल रही थी - चर्च न्यायालयों की स्थिति। इस विषय पर कई मतों पर चर्चा करने के बाद उन्होंने अपना दृष्टिकोण स्पष्ट किया। लेख की सबसे उल्लेखनीय बात उसका लहजा और उसका अप्रत्याशित निष्कर्ष था। चर्च समर्थक दल के कई लोगों ने उन्हें बिना किसी संदेह के अपना समर्थक मान लिया। फिर भी, न केवल धर्मनिरपेक्ष बल्कि नास्तिकों ने भी उनकी प्रशंसा में उनका साथ दिया। अंत में, कुछ समझदार लोगों ने राय दी कि यह लेख एक धृष्ट व्यंग्यपूर्ण मज़ाक के अलावा कुछ नहीं था। मैं इस घटना का विशेष रूप से उल्लेख इसलिए कर रहा हूँ क्योंकि यह लेख हमारे पड़ोस के प्रसिद्ध मठ तक पहुँच गया, जहाँ के निवासी, चर्च की अदालतों के विषय में विशेष रुचि रखते हुए, इसे पढ़कर पूरी तरह से अचंभित हो गए। लेखक का नाम जानकर, उन्हें इस बात में दिलचस्पी हुई कि वह शहर का मूल निवासी है और "उस फ्योदोर पावलोविच" का पुत्र है। और ठीक उसी समय लेखक स्वयं हमारे बीच प्रकट हुआ।

मुझे याद है मैंने पूछा था कि इवान फ्योदोरोविच हमारे बीच क्यों आए थे?

उस समय मैं एक अजीब सी बेचैनी से घिरा हुआ था। यह दुर्भाग्यपूर्ण मुलाकात, जो इतने सारे परिणामों की पहली सीढ़ी थी, मैं खुद को कभी पूरी तरह से समझा नहीं पाया। यह बात मुझे अजीब लग रही थी कि इतना पढ़ा-लिखा, इतना स्वाभिमानी और दिखने में इतना सतर्क युवक अचानक एक बदनाम घर और ऐसे पिता के घर आ जाए, जिसने उसे जीवन भर नज़रअंदाज़ किया, उसे मुश्किल से जानता था, कभी उसके बारे में सोचा भी नहीं और किसी भी हालत में उसे पैसे नहीं देता, हालांकि उसे हमेशा डर रहता था कि उसके बेटे इवान और एलेक्सी भी उससे पैसे मांगने आ जाएंगे। और अब वह युवक ऐसे पिता के घर में रह रहा था, दो महीने से उनके साथ रह रहा था और उनके बीच बहुत अच्छे संबंध थे। यह आखिरी बात मेरे साथ-साथ कई अन्य लोगों के लिए भी आश्चर्य का कारण थी। प्योत्र अलेक्जेंड्रोविच मियूसोव, जिनके बारे में हम पहले ही बात कर चुके हैं, फ्योदोर पावलोविच की पहली पत्नी के चचेरे भाई, संयोग से अपनी जागीर के दौरे पर फिर से उसी इलाके में

आए हुए थे। वे पेरिस से आए थे, जो उनका स्थायी घर था। मुझे याद है कि जब उनकी मुलाकात उस युवक से हुई, जिसमें उनकी बेहद दिलचस्पी थी, और जिसके साथ वे कभी-कभी बहस करते थे और अपने ज्ञान के मामले में खुद की तुलना करते हुए मन ही मन थोड़ा असहज महसूस करते थे, तो वे सबसे ज्यादा आश्चर्यचकित हुए थे।
वह कहा करता था, "वह घमंडी है, उसे कभी पैसों की कमी नहीं होगी; उसके पास
अब उसके पास विदेश जाने के लिए पर्याप्त पैसे हैं। उसे यहाँ क्या चाहिए? हर कोई देख सकता है कि वह पैसे के लिए नहीं आया है, क्योंकि उसके पिता उसे कभी पैसे नहीं देंगे। उसे शराब और अय्याशी में कोई रुचि नहीं है, फिर भी उसके पिता उसके बिना नहीं रह सकते। वे दोनों एक-दूसरे के साथ बहुत अच्छे से रहते हैं!
यह सच था; उस युवक का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता था।
उसके पिता, जो देखने में अधिक शालीनता से व्यवहार करते प्रतीत होते थे और कभी-कभी अपने बेटे की बात मानने के लिए भी तैयार लगते थे, हालांकि अक्सर वे बेहद और यहां तक कि द्वेषपूर्ण ढंग से विकृत व्यवहार करते थे।
बाद में हमें पता चला कि इवान आंशिक रूप से अनुरोध पर आया था।
यह यात्रा उनके बड़े भाई दिमित्री के हित में थी, जिनसे उनकी पहली मुलाकात इसी यात्रा के दौरान हुई थी, हालांकि मॉस्को छोड़ने से पहले वे दिमित्री के साथ एक महत्वपूर्ण मामले पर पत्राचार कर रहे थे, जो दिमित्री के लिए उनसे कहीं अधिक चिंता का विषय था। वह मामला क्या था, यह पाठक को उचित समय पर पूरी तरह से पता चल जाएगा। फिर भी, इस विशेष परिस्थिति के बारे में जानने के बाद भी, मुझे इवान फ्योदोरोविच एक रहस्यमय व्यक्ति लगे और उनकी यात्रा कुछ रहस्यमयी सी लगी।
मैं यह भी कहना चाहूंगा कि उस समय इवान एक मध्यस्थ के रूप में सामने आया था।
उसके पिता और उसके बड़े भाई दिमित्री के बीच, जो अपने पिता के साथ खुलेआम झगड़ा कर रहा था और यहां तक कि उनके खिलाफ मुकदमा दायर करने की योजना भी बना रहा था।
मैं दोहराता हूँ, परिवार अब पहली बार एकजुट हुआ था, और इसके कुछ सदस्य
सभी सदस्य अपने जीवन में पहली बार मिले। छोटा भाई, एलेक्सी, हमारे बीच एक वर्ष से था, क्योंकि वह तीनों में सबसे पहले आया था। इस परिचय में मुझे एलेक्सी भाई के बारे में बात करना सबसे कठिन लग रहा है। फिर भी मुझे उसके बारे में कुछ प्रारंभिक जानकारी देनी ही होगी, कम से कम एक विचित्र तथ्य को स्पष्ट करने के लिए, और वह यह है कि मुझे अपने नायक को पाठक से एक नौसिखिया के वस्त्र में परिचित कराना है। जी हाँ, वह पिछले एक वर्ष से हमारे मठ में था, और ऐसा प्रतीत होता था कि वह अपना शेष जीवन यहीं बिताना चाहता है।

अध्याय 4

तीसरा पुत्र, अलेयोशा

वह केवल बीस वर्ष का था, उसका भाई इवान उस समय चौबीस वर्ष का था, जबकि उसका बड़ा भाई दिमित्री सत्ताईस वर्ष का था। सबसे पहले, मुझे यह स्पष्ट करना होगा कि यह युवक, अलेयोशा, कट्टरपंथी नहीं था, और कम से कम मेरी राय में, वह रहस्यवादी भी नहीं था। बेहतर होगा कि मैं शुरू से ही अपनी पूरी राय दे दूं। वह बस मानवता का प्रारंभिक प्रेमी था, और उसने मठवासी जीवन इसलिए अपनाया क्योंकि उस समय उसे यह अपने उस्-सांत्वना के लिए आदर्श मार्ग लगा, जो सांसारिक बुराई के अंधकार से प्रेम के प्रकाश की ओर संघर्ष कर रही थी। और इस जीवन ने उसे इस तरह आकर्षित किया, इसका कारण यह था कि उस समय उसे उसमें एक असाधारण व्यक्ति, हमारे प्रसिद्ध गुरु, ज़ोस्सिमा मिले, जिनसे वह अपने भावुक हृदय के पहले प्रेम से पूरी तरह जुड़ गया। लेकिन मैं इस बात से इनकार नहीं करता कि वह उस समय भी बहुत विचित्र था, और वास्तव में बचपन से ही ऐसा था। मैंने पहले ही उल्लेख किया है कि यद्यपि उन्होंने अपनी माँ को चार वर्ष की आयु में खो दिया था, फिर भी वे जीवन भर उन्हें याद करते रहे—उनका चेहरा, उनका स्नेह, "जैसे मानो वे मेरे सामने जीवित खड़ी हों।" जैसा कि सभी जानते हैं, ऐसी यादें इससे भी कम उम्र से, यहाँ तक कि दो वर्ष की आयु से भी बनी रह सकती हैं, लेकिन पूरे जीवन भर अंधेरे में प्रकाश के धब्बों की तरह, किसी विशाल चित्र के उस कोने की तरह जो धुंधला होकर गायब हो गया हो, सिवाय उस टुकड़े के, शायद ही उभर पाती हैं। उनके साथ भी ऐसा ही था। उन्हें एक शांत गर्मी की शाम याद थी, एक खुली खिड़की, डूबते सूरज की तिरछी किरणें (जो उन्हें सबसे स्पष्ट रूप से याद थीं); कमरे के एक कोने में पवित्र प्रतिमा, उसके सामने एक जलता हुआ दीपक, और प्रतिमा के सामने घुटनों के बल बैठी उनकी माँ, सिसकियाँ भरती हुई, उन्हें दोनों बाहों में उठाकर, इतनी जोर से दबाती हुई कि दर्द होने लगा, और ईश्वर की माँ से उनके लिए प्रार्थना करती हुई, उन्हें दोनों बाहों में प्रतिमा की ओर इस तरह फैलाए हुए जैसे उन्हें माँ की शरण में सौंप रही हों... और अचानक एक नर्स दौड़कर आती है और डर के मारे उसे माँ से छीन लेती है। यही दृश्य था! और अलेयोशा को उस पल अपनी माँ का चेहरा याद आ गया। वह कहा करता था कि उसका चेहरा उन्मादी था, लेकिन सुंदर भी था, जैसा कि उसे याद था। लेकिन वह इस याद के बारे में शायद ही किसी से बात करता था। अपने बचपन और जवानी में वह बिल्कुल भी मिलनसार नहीं था, और बहुत कम बोलता था, लेकिन शर्म या रूखेपन के कारण नहीं; बल्कि इसके विपरीत, कुछ अलग ही कारण था, एक तरह की आंतरिक व्यस्तता जो पूरी तरह से निजी थी और दूसरों से असंबंधित थी, लेकिन उसके लिए इतनी महत्वपूर्ण थी कि मानो वह इसके कारण दूसरों को भूल जाता था। लेकिन वह लोगों से प्यार करता था: ऐसा लगता था कि उसने अपने पूरे जीवन में लोगों पर पूरा भरोसा किया, फिर भी किसी ने भी उसे कभी मूर्ख या भोला नहीं समझा। उसके बारे में कुछ ऐसा था जिससे तुरंत यह महसूस होता था (और उसके बाद भी उसके पूरे जीवन में ऐसा ही रहा) कि वह दूसरों का न्याय करने की परवाह नहीं करता था—कि वह कभी भी किसी की आलोचना करने का अधिकार अपने ऊपर नहीं लेता था और कभी भी किसी को किसी भी बात के लिए दोषी नहीं ठहराता था। वह सचमुच हर बात को बिना किसी निंदा के स्वीकार कर लेता था, हालांकि अक्सर वह गहरे दुःख में डूबा रहता था। यह इतना अधिक था कि उसकी युवावस्था में भी कोई उसे चौंका या डरा नहीं सकता था। बीस वर्ष की आयु में अपने पिता के घर आकर, जो कि घोर दुराचार का अड्डा था, वह, अपने पवित्र और शुद्ध स्वभाव के बावजूद, चुपचाप पीछे हट जाता था जब वहाँ देखना असहनीय हो जाता था, लेकिन बिना किसी तिरस्कार या निंदा के। उसके पिता, जो कभी आश्रित स्थिति में रहे थे, और इसलिए संवेदनशील और जल्दी नाराज़ हो जाने वाले थे, ने पहले तो उससे अविश्वास और नाराज़गी के साथ मुलाकात की। वे कहते थे, "वह ज्यादा बोलता नहीं है, और ज्यादा सोचता है।" लेकिन जल्द ही, वास्तव में दो सप्ताह के भीतर, वे उसे गले लगाने और बार-बार चूमने लगे, नशे में आँसुओं के साथ, भावुकता से भरे हुए, फिर भी स्पष्ट रूप से उसके लिए एक सच्चा और गहरा स्नेह महसूस करते थे, जैसा कि उन्होंने पहले कभी किसी के लिए महसूस नहीं किया था।

वास्तव में, वह जहाँ भी जाता था, हर कोई उस युवक से प्यार करता था, और यही कारण था कि

बचपन से ही उनका स्वभाव ऐसा था। जब वे अपने संरक्षक और उपकारक येफिम पेट्रोविच पोलेनोव के घर में आए, तो उन्होंने पूरे परिवार का दिल जीत लिया, यहाँ तक कि वे उन्हें अपने बच्चे की तरह ही मानते थे। फिर भी, वे इतनी कम उम्र में घर में आए थे कि यह संभव नहीं था कि उन्होंने जानबूझकर या चालाकी से सबका दिल जीता हो। इसलिए, सहज और अनजाने में ही प्रेम पाने की उनकी क्षमता उनमें अंतर्निहित थी, मानो उनके स्वभाव में ही थी। स्कूल में भी ऐसा ही था, हालाँकि वे उन बच्चों में से एक लगते थे जिन पर उनके सहपाठी अविश्वास करते थे, कभी-कभी उनका मज़ाक उड़ाते थे और यहाँ तक कि उन्हें नापसंद भी करते थे। उदाहरण के लिए, वे स्वप्निल और कुछ हद तक एकांतप्रिय थे। बचपन से ही उन्हें कोने में छिपकर पढ़ना पसंद था, फिर भी स्कूल में वे हमेशा सबके चहेते रहे। वे शायद ही कभी चंचल या खुशमिजाज होते थे, लेकिन पहली नज़र में ही कोई समझ जाता था कि यह किसी उदासी के कारण नहीं था। इसके विपरीत, वे बुद्धिमान और मिलनसार थे। उन्होंने कभी भी अपने सहपाठियों के बीच दिखावा करने की कोशिश नहीं की। शायद इसी वजह से वह कभी किसी से नहीं डरता था, फिर भी लड़के तुरंत समझ जाते थे कि उसे अपनी निडरता पर घमंड नहीं था और मानो उसे इस बात का एहसास ही न हो कि वह साहसी और निडर है। वह कभी किसी अपमान को बुरा नहीं मानता था। ऐसा होता था कि अपमान के एक घंटे बाद ही वह अपमान करने वाले से बात करता या किसी सवाल का जवाब इतने विश्वास और स्पष्टता से देता जैसे उनके बीच कुछ हुआ ही न हो। और ऐसा नहीं था कि वह अपमान को भूल गया हो या जानबूझकर माफ कर दिया हो, बल्कि वह उसे अपमान मानता ही नहीं था, और यही बात लड़कों को पूरी तरह से मोहित कर लेती थी। उसकी एक ऐसी विशेषता थी जिसके कारण उसके सभी सहपाठी, चाहे वे निचली कक्षा में हों या ऊपरी कक्षा में, उसका मजाक उड़ाना चाहते थे, दुर्भावना से नहीं बल्कि इसलिए कि इससे उन्हें आनंद मिलता था। यह विशेषता थी उसकी बेतहाशा विनम्रता और पवित्रता। वह महिलाओं के बारे में कुछ खास शब्द और बातें सुनना बर्दाश्त नहीं कर पाता था। दुर्भाग्य से, स्कूलों में कुछ खास शब्द और बातें होती हैं जिन्हें मिटाना नामुमकिन है। शुद्ध मन और हृदय वाले, लगभग बच्चे जैसे लड़के स्कूल में आपस में, और कभी-कभी ज़ोर से भी, उन चीज़ों, चित्रों और छवियों के बारे में बात करना पसंद करते हैं जिनके बारे में सैनिक भी कभी-कभी बोलने से हिचकिचाते हैं। इससे भी बढ़कर, बहुत सी ऐसी बातें हैं जिनके बारे में सैनिकों को कोई जानकारी या कल्पना भी नहीं होती, जबकि हमारे बुद्धिजीवी और उच्च वर्ग के छोटे बच्चे उनसे परिचित होते हैं। इसमें कोई नैतिक पतन या वास्तविक भ्रष्ट आंतरिक निंदकपन नहीं है, बल्कि इसका आभास अवश्य है, और अक्सर उनके बीच इसे परिष्कृत, सूक्ष्म, साहसी और अनुकरणीय माना जाता है। जब वे "उस" विषय पर बात करते थे तो अलेयोशा करामाज़ोव को अपने कानों में उंगलियां डालते देखकर, वे कभी-कभी उसके चारों ओर जमा हो जाते, उसके हाथ खींच लेते और दोनों कानों में गालियां चिल्लाते, जबकि वह संघर्ष करता, ज़मीन पर गिर जाता, बिना एक भी अपशब्द कहे खुद को छिपाने की कोशिश करता, चुपचाप उनके अपमान सहता। लेकिन अंत में उन्होंने उसे अकेला छोड़ दिया और उसे "आम लड़की" कहकर ताना मारना बंद कर दिया, और इतना ही नहीं, उन्होंने इसे एक कमजोरी समझकर दया भाव से देखा। वह हमेशा कक्षा में सर्वश्रेष्ठ छात्रों में से एक था, लेकिन कभी प्रथम स्थान पर नहीं आया।

येफिम पेट्रोविच की मृत्यु के समय अलेयोशा के पास अभी दो साल और थे।

प्रांतीय व्यायामशाला में पढ़ाई पूरी की। उनके निधन के तुरंत बाद ही उनकी दुखी विधवा अपने पूरे परिवार के साथ, जिसमें केवल महिलाएं और लड़कियां थीं, इटली की लंबी यात्रा पर चली गईं। अलेयोशा येफिम पेट्रोविच के दो दूर के रिश्तेदारों के घर में रहने लगे, जिनसे वे पहले कभी नहीं मिले थे। वे उनके साथ किस तरह रहते थे, यह उन्हें खुद भी नहीं पता था। दरअसल, यह उनका एक विशिष्ट स्वभाव था कि उन्हें इस बात की परवाह नहीं थी कि वे किसके खर्चे पर जी रहे हैं। इस मामले में वे अपने बड़े भाई इवान से बिलकुल अलग थे, जिन्होंने विश्वविद्यालय में अपने पहले दो साल गरीबी में बिताए, अपने दम पर अपना गुजारा किया और बचपन से ही अपने संरक्षक के खर्चे पर जीने के प्रति कड़वी जागरूकता रखते थे। लेकिन मुझे लगता है कि अलेयोशा के चरित्र की इस विचित्र विशेषता की अत्यधिक आलोचना नहीं करनी चाहिए, क्योंकि उससे थोड़ी सी भी जान-पहचान होने पर कोई भी समझ जाता कि वह उन युवाओं में से एक था, जो धार्मिक उत्साही किस्म के थे और अगर अचानक उन्हें बहुत सारा धन मिल जाए, तो वे उसे बिना किसी संकोच के दान कर देते, चाहे अच्छे कामों के लिए या शायद किसी चालाक बदमाश को। कुल मिलाकर, ऐसा लगता था कि उसे पैसे की कीमत का कोई ज्ञान ही नहीं था, बेशक शाब्दिक अर्थ में नहीं। जब उसे जेब खर्च मिलता था, जो

उसने कभी माँगा भी नहीं था, तो या तो वह उसे इतनी लापरवाही से रखता था कि वह पल भर में गायब हो जाता था, या फिर वह उसे हफ्तों तक अपने पास रखता था, यह न जानते हुए कि उसका क्या करे।
बाद के वर्षों में प्योत्र अलेक्सांद्रोविच मियूसोव, जो एक बहुत ही संवेदनशील व्यक्ति थे,
धन और बुर्जुआ ईमानदारी के बल पर, अलेयोशा को जानने के बाद, उन्होंने निम्नलिखित फैसला सुनाया:
"शायद यही वह एक व्यक्ति है जिसे आप अकेला छोड़ सकते हैं।"
एक लाख निवासियों वाले एक अनजान कस्बे के बीचोंबीच, बिना एक पैसा भी, वह न तो खतरे में पड़ेगा, न ही ठंड और भूख से मरेगा, क्योंकि उसे तुरंत भोजन और आश्रय मिल जाएगा; और अगर ऐसा नहीं भी हुआ, तो वह अपने लिए आश्रय ढूंढ लेगा, और इसमें उसे कोई मेहनत या अपमान नहीं उठाना पड़ेगा। और उसे आश्रय देना कोई बोझ नहीं होगा, बल्कि इसके विपरीत, शायद इसे एक खुशी के रूप में देखा जाएगा।
उन्होंने जिम्नेज़ियम में अपनी पढ़ाई पूरी नहीं की। पढ़ाई खत्म होने से एक साल पहले।
पाठ्यक्रम के दौरान उसने अचानक महिलाओं को बताया कि वह अपने पिता से एक योजना के बारे में बात करने जा रहा है जो उसके मन में आई थी। वे दुखी हुईं और उसे जाने देने के लिए तैयार नहीं थीं। यात्रा में ज़्यादा खर्च नहीं था, और महिलाओं ने उसे अपनी घड़ी गिरवी रखने से मना कर दिया, जो उसके संरक्षक के परिवार द्वारा विदाई उपहार के रूप में दी गई थी। उन्होंने उसे उदारतापूर्वक पैसे दिए और नए कपड़े और चादरें भी दिलवाईं। लेकिन उसने दिए गए पैसों का आधा हिस्सा यह कहकर लौटा दिया कि वह तृतीय श्रेणी में यात्रा करना चाहता है। शहर पहुँचने पर उसने अपने पिता के पहले प्रश्न का कोई उत्तर नहीं दिया कि वह अपनी पढ़ाई पूरी करने से पहले क्यों आया है, और जैसा कि कहा जाता है, वह असामान्य रूप से विचारशील लग रहा था। जल्द ही यह स्पष्ट हो गया कि वह अपनी माँ की कब्र की तलाश में था। उसने उस समय लगभग स्वीकार किया कि यही उसकी यात्रा का एकमात्र उद्देश्य था। लेकिन यह पूरी वजह नहीं हो सकती। यह अधिक संभावना है कि वह स्वयं नहीं समझ पाया और यह समझा नहीं सका कि अचानक उसकी आत्मा में क्या उत्पन्न हुआ था, जिसने उसे अनवरत रूप से एक नए, अज्ञात, लेकिन अपरिहार्य मार्ग पर खींच लिया।
फ्योदोर पावलोविच उन्हें यह नहीं दिखा सके कि उनकी दूसरी पत्नी को कहाँ दफनाया गया था, क्योंकि उन्होंने उसके ताबूत पर मिट्टी डालने के बाद से कभी उसकी कब्र पर नहीं गए थे, और वर्षों के दौरान वह पूरी तरह से भूल गए थे कि उसे कहाँ दफनाया गया था।
वैसे, फ्योदोर पावलोविच कुछ समय पहले तक नहीं थे।
हमारे कस्बे में रहने वाले एक व्यक्ति ने अपनी पत्नी की मृत्यु के तीन-चार साल बाद दक्षिणी रूस की ओर प्रस्थान किया और अंततः ओडेसा में आकर बस गए, जहाँ उन्होंने कई वर्ष बिताए। उनके अपने शब्दों में, शुरुआत में उनका परिचय "बहुत से निम्न वर्ग के यहूदियों, यहूदी महिलाओं और यहूदी रिश्तेदारों" से हुआ और अंत में उन्हें "ऊँचे-नीचे यहूदियों" द्वारा समान रूप से स्वीकार किया जाने लगा। यह अनुमान लगाया जा सकता है कि इस दौरान उनमें धन कमाने और उसे जमा करने की एक विशेष क्षमता विकसित हो गई थी।
अलेयोशा के आने से मात्र तीन वर्ष पूर्व ही वे हमारे कस्बे में लौटे। उनके पुराने परिचितों ने उन्हें बेहद बूढ़ा पाया, हालाँकि वे किसी भी तरह से बूढ़े नहीं थे। उनका व्यवहार पहले से अधिक गरिमापूर्ण तो नहीं, लेकिन अधिक धृष्टतापूर्ण हो गया था। पूर्व मसखरा अब दूसरों को मसखरा बनाने की उद्दंड प्रवृत्ति दिखाने लगा था। महिलाओं के प्रति उनका दुराचार न केवल पहले जैसा था, बल्कि और भी घिनौना हो गया था। थोड़े ही समय में उन्होंने इलाके में कई नए शराबखाने खोल दिए। यह स्पष्ट था कि उनके पास शायद एक लाख रूबल या उससे कुछ कम थे। कस्बे और इलाके के कई निवासी जल्द ही उसके कर्जदार हो गए थे, और ज़ाहिर है, उन्होंने अच्छी ज़मानत भी दी थी। हाल ही में, वह कुछ फूला हुआ सा दिखने लगा था और ज़्यादा गैर-जिम्मेदार, ज़्यादा अस्थिर, बेसुध सा हो गया था, एक बात शुरू करता और दूसरी पर अड़ जाता, मानो वह खुद को पूरी तरह से बेकाबू कर रहा हो। वह ज़्यादा से ज़्यादा शराब पीने लगा था। और अगर वही नौकर ग्रिगोरी, जो उस समय तक काफी बूढ़ा हो चुका था और कभी-कभी लगभग एक शिक्षक की तरह उसकी देखभाल करता था, न होता, तो फ्योदोर पावलोविच भयानक मुसीबत में पड़ सकता था। अलेयोशा के आने से उसके नैतिक पक्ष पर भी असर पड़ा, मानो इस समय से पहले बूढ़े हो चुके व्यक्ति में कुछ ऐसा जागृत हो गया हो जो उसकी आत्मा में लंबे समय से मृत पड़ा था।
“क्या तुम जानते हो,” वह अक्सर अलेयोशा की ओर देखते हुए कहता था, “कि तुम

“उसकी तरह, ‘पागल औरत’”—वह अपनी मृत पत्नी, अलेयोशा की माँ को इसी नाम से पुकारता था। ग्रिगोरी ने ही अलेयोशा को उस “पागल औरत” की कब्र दिखाई थी। वह उसे हमारे शहर के कब्रिस्तान ले गया और एक सुनसान कोने में लोहे का बना एक मकबरा दिखाया, जो सस्ता तो था लेकिन अच्छी तरह से रखा हुआ था। उस पर मृतक का नाम, उम्र और मृत्यु तिथि खुदी हुई थी, और उसके नीचे चार पंक्तियों का एक श्लोक लिखा था, जैसा कि पुराने जमाने के मध्यमवर्गीय मकबरों पर आमतौर पर लिखा जाता था। अलेयोशा को यह देखकर आश्चर्य हुआ कि यह मकबरा ग्रिगोरी ने बनवाया था। उसने इसे बेचारे “पागल औरत” की कब्र पर अपने खर्च पर बनवाया था, क्योंकि फ्योदोर पावलोविच, जिसे वह अक्सर कब्र के बारे में परेशान करता रहता था, ओडेसा चला गया था, कब्र और अपनी सारी यादों को छोड़कर। अलेयोशा ने अपनी माँ की कब्र देखकर कोई खास भावना नहीं दिखाई। उसने केवल ग्रिगोरी द्वारा मकबरे के निर्माण के विस्तृत और गंभीर विवरण को सुना; वह खड़ा रहा। सिर झुकाए वह बिना कुछ बोले चला गया। शायद एक साल बाद ही वह दोबारा कब्रिस्तान आया। लेकिन इस छोटी सी घटना का फ्योदोर पावलोविच पर गहरा प्रभाव पड़ा—और वह भी बहुत ही अनोखा। वह अचानक अपनी पत्नी की आत्मा की शांति के लिए एक हजार रूबल लेकर हमारे मठ में आया; लेकिन दूसरी पत्नी, अलेयोशा की माँ, जिसे वह "पागल औरत" कहता था, के लिए नहीं, बल्कि पहली पत्नी, अदेलाइदा इवानोवना के लिए, जो उसे पीटती थी। उसी दिन शाम को वह शराब पीकर अलेयोशा के सामने भिक्षुओं को अपशब्द कहने लगा। वह स्वयं धार्मिकता से बहुत दूर था; उसने शायद कभी किसी संत की मूर्ति के सामने मोमबत्ती भी नहीं जलाई थी। ऐसे लोगों में अचानक भावनाओं और विचारों का आना आम बात है।
मैंने पहले ही बताया है कि वह फूला हुआ लग रहा था। इस समय उसके चेहरे के हाव-भाव ऐसे थे।
समय ने उसके जीवन के उन निशानों को स्पष्ट कर दिया था जो उसके बीते जीवन की गवाही देते थे। उसकी छोटी, हमेशा अभिमानी, शंकालु और व्यंग्यात्मक आँखों के नीचे लंबे, मांसल थैलों के अलावा; उसके छोटे, मोटे चेहरे पर अनगिनत गहरी झुर्रियों के अलावा; उसकी नुकीली ठुड्डी के नीचे कंठ एक बड़े, मांसल पित्ताशय की तरह लटका हुआ था, जो उसे एक विचित्र, घिनौना, कामुक रूप देता था; इसके अतिरिक्त उसका लंबा, लालची मुँह, भरे हुए होंठ, जिनके बीच काले, सड़े हुए दाँतों के छोटे-छोटे ठूंठ दिखाई देते थे। जब भी वह बोलना शुरू करता, उसके मुँह से लार टपकती थी। उसे अपने चेहरे का मज़ाक उड़ाना बहुत पसंद था, हालाँकि मुझे लगता है कि वह इससे संतुष्ट था। वह विशेष रूप से अपनी नाक की ओर इशारा करता था, जो बहुत बड़ी नहीं थी, लेकिन बहुत नाजुक और स्पष्ट रूप से नुकीली थी। "एकदम रोमन नाक," वह कहता था, "मेरे पित्ताशय के साथ, मेरा चेहरा पतनशील काल के किसी प्राचीन रोमन कुलीन व्यक्ति जैसा दिखता है।" वह इस पर गर्व करता प्रतीत होता था।
अपनी माँ की कब्र पर जाने के कुछ ही समय बाद अलेयोशा ने अचानक घोषणा की
उसने बताया कि वह मठ में प्रवेश करना चाहता है, और भिक्षु उसे नौसिखिया के रूप में स्वीकार करने के लिए तैयार हैं। उसने समझाया कि यह उसकी प्रबल इच्छा है, और वह अपने पिता के रूप में उनसे पूर्ण सम्मानपूर्वक सहमति मांग रहा है। बूढ़े व्यक्ति को पता था कि मठ के आश्रम में रहने वाले बड़े ज़ोस्सिमा ने उसके "विनम्र पुत्र" पर विशेष प्रभाव डाला था।
“निःसंदेह, वह उनमें सबसे ईमानदार भिक्षु है,” उन्होंने टिप्पणी की।
अलेयोशा की बात ध्यानपूर्वक चुपचाप सुनने के बाद, और उसके अनुरोध पर शायद ही आश्चर्यचकित होते हुए, उसने कहा, "हम्म! ... तो तुम यहीं रहना चाहते हो, मेरे प्यारे बच्चे?"
वह आधा नशे में था, और अचानक उसने अपनी धीमी, आधी नशे वाली मुस्कान बिखेरी।
जिसमें कुछ हद तक धूर्तता और नशे में धुत्त चालाकी भी शामिल थी। “हम्म! . . . मुझे पहले से ही आभास था कि तुम्हारा अंत कुछ ऐसा ही होगा। यकीन मानो? तुम तो सीधे उसी तरफ जा रही थी। खैर, अब तुम्हारे पास अपने दो हज़ार हैं। ये तुम्हारे लिए दहेज है। और मैं तुम्हें कभी नहीं छोड़ूंगी, मेरी परी। और अगर वे मांगेंगे तो मैं तुम्हारे लिए वहाँ जो भी ज़रूरी होगा वो दे दूंगी। लेकिन, ज़ाहिर है, अगर वे नहीं मांगेंगे तो हमें क्यों परेशान होना चाहिए? क्या कहती हो? तुम्हें पता है, तुम तो चिड़िया की तरह पैसे उड़ाती हो, हफ्ते में दो दाने। हम्म! . . . क्या तुम्हें पता है कि एक मठ के पास शहर के बाहर एक जगह है जहाँ हर बच्चा जानता है कि वहाँ सिर्फ़ 'भिक्षुओं की पत्नियाँ' रहती हैं, जैसा कि उन्हें कहा जाता है। तीस औरतें, मुझे लगता है। मैं खुद वहाँ गई हूँ। तुम्हें पता है, विविधता के लिहाज़ से यह अपने आप में दिलचस्प है। सबसे बुरी बात यह है कि यह पूरी तरह से

रूसी है। वहाँ कोई फ्रांसीसी महिला नहीं है। बेशक वे उन्हें जल्दी से पा सकते हैं, उनके पास बहुत पैसा है। अगर उन्हें पता चल जाए तो वे साथ आ जाएँगे। खैर, यहाँ ऐसा कुछ नहीं है, न ही 'भिक्षुओं की पत्नियाँ', और दो सौ भिक्षु हैं। वे ईमानदार हैं। वे व्रत रखते हैं। मैं मानता हूँ... हम्म... तो तुम भिक्षु बनना चाहते हो? और क्या तुम जानते हो कि मुझे तुम्हें खोने का कितना दुख है, अलेयोशा; क्या तुम विश्वास करोगे, मुझे तुमसे सच में लगाव हो गया है? खैर, यह एक अच्छा अवसर है। तुम हम पापियों के लिए प्रार्थना करोगे; हमने यहाँ बहुत पाप किए हैं। मैं हमेशा सोचता रहा हूँ कि मेरे लिए कौन प्रार्थना करेगा, और क्या दुनिया में कोई ऐसा है जो ऐसा कर सके। मेरे प्यारे बेटे, मैं इस बारे में बहुत मूर्ख हूँ। तुम विश्वास नहीं करोगे। बहुत ज़्यादा। देखो, मैं इस बारे में कितना भी मूर्ख क्यों न हूँ, मैं सोचता रहता हूँ, मैं सोचता रहता हूँ—समय-समय पर, बेशक, हर समय नहीं। मुझे लगता है कि यह असंभव है कि शैतान मुझे मरने के बाद अपने हुक से नरक में खींचना भूल जाएँ। फिर मैं सोचता हूँ—हुक? वे कहाँ होंगे? क्या ये मिलते हैं? किस चीज़ के? लोहे के हुक? इन्हें कहाँ बनाते हैं? क्या वहाँ कोई भट्टी है? मठ के भिक्षु शायद मानते होंगे कि नरक में छत होती है। अब मैं नरक में विश्वास करने को तैयार हूँ, लेकिन बिना छत के। इससे यह अधिक परिष्कृत, अधिक प्रबुद्ध, अधिक लूथरन लगता है। और, आख़िरकार, इससे क्या फ़र्क पड़ता है कि उसमें छत है या नहीं? लेकिन, क्या आप जानते हैं, इसमें एक घिनौना सवाल छिपा है? अगर छत नहीं है तो हुक भी नहीं हो सकते, और अगर हुक नहीं हैं तो सब कुछ टूट जाएगा, जो कि फिर से असंभव है, क्योंकि तब मुझे नरक में खींचने वाला कोई नहीं होगा, और अगर वे मुझे नहीं खींचते तो दुनिया में न्याय क्या है? उन्हें ये हुक, विशेष रूप से मेरे लिए ही बनाने चाहिए, क्योंकि, अगर तुम जानते, अलेयोशा, मैं कितना नीच हूँ।
“लेकिन वहां कोई हुक नहीं हैं,” अलेयोशा ने धीरे से देखते हुए कहा और
अपने पिता की ओर गंभीरता से देखते हुए।
“हाँ, हाँ, केवल हुक की परछाइयाँ, मुझे पता है, मुझे पता है। इसी तरह एक
एक फ्रांसीसी ने नरक का वर्णन इस प्रकार किया: ‘J’ai bu l’ombre d’un cocher qui avec l’ombre d’une brosse frottait l’ombre d’une carrosse.’ प्रियतमा, तुम्हें कैसे पता कि वहाँ कोई हुक नहीं हैं? जब तुम भिक्षुओं के साथ रहोगी, तब तुम्हारी बात अलग होगी। लेकिन जाओ और वहाँ की सच्चाई का पता लगाओ, फिर आकर मुझे बताओ। वैसे भी, परलोक जाना आसान होता है अगर पता हो कि वहाँ क्या है। इसके अलावा, भिक्षुओं के साथ रहना तुम्हारे लिए यहाँ मेरे साथ रहने से कहीं बेहतर होगा, जहाँ एक शराबी बूढ़ा आदमी और जवान वेश्याएँ हैं... हालाँकि तुम एक देवदूत जैसी हो, फिर भी तुम्हें कुछ छू नहीं सकता। और मैं विश्वास करता हूँ कि वहाँ भी तुम्हें कुछ नहीं छू पाएगा। इसीलिए मैंने तुम्हें जाने दिया, क्योंकि मुझे यही उम्मीद है। तुम पूरी तरह से होश में हो। तुम जलोगी और भस्म हो जाओगी; तुम ठीक हो जाओगी और फिर वापस आओगी। और मैं तुम्हारा इंतज़ार करूँगा। मुझे लगता है कि तुम ही इस दुनिया में इकलौते प्राणी हो जिसने मेरी निंदा नहीं की है। मेरे प्यारे बेटे, मुझे यह महसूस होता है, तुम्हें पता है। मैं इसे महसूस किए बिना नहीं रह सकती।
और वो रोने भी लगा। वो भावुक था। वो दुष्ट था और
भावुक।

अध्याय 5

बड़ों

मेरे कुछ पाठक शायद यह सोचें कि मेरा यह युवक एक बीमार, भावुक, कमज़ोर और पीला पड़ा हुआ, तपेदिक से ग्रस्त स्वप्नद्रष्टा था। इसके विपरीत, अलेयोशा उस समय उन्नीस साल का एक सुविकसित, लाल गालों वाला, निर्मल आँखों वाला, स्वस्थ और दमकता हुआ युवक था। वह बहुत सुंदर, आकर्षक, मध्यम कद का, गहरे भूरे बालों वाला, नियमित, कुछ लंबा, अंडाकार चेहरा और चौड़ी, चमकती हुई गहरी धूसर आँखें थीं; वह बहुत विचारशील और दिखने में बेहद शांत था। शायद मुझे यह कहा जाए कि लाल गाल कट्टरता और रहस्यवाद के विपरीत नहीं हैं; लेकिन मुझे लगता है कि अलेयोशा किसी और से कहीं अधिक यथार्थवादी था। ओह! निस्संदेह, मठ में वह चमत्कारों में पूर्ण विश्वास रखता था, लेकिन मेरे विचार से, चमत्कार कभी भी यथार्थवादी के लिए बाधा नहीं बनते। चमत्कार ही यथार्थवादियों को विश्वास की ओर प्रेरित नहीं करते। एक सच्चा यथार्थवादी, यदि वह नास्तिक है, तो चमत्कार पर अविश्वास करने की शक्ति और क्षमता हमेशा पा लेगा, और यदि उसे किसी चमत्कार का अकाट्य तथ्य के रूप में सामना करना पड़े, तो वह उस तथ्य को स्वीकार करने के बजाय अपनी इंद्रियों पर अविश्वास करना पसंद करेगा। यदि वह इसे स्वीकार भी कर ले, तो वह इसे प्रकृति के एक ऐसे तथ्य के रूप में स्वीकार करेगा जिसे उसने तब तक नहीं पहचाना था। यथार्थवादी में, विश्वास चमत्कार से नहीं, बल्कि चमत्कार विश्वास से उत्पन्न होता है। यदि यथार्थवादी एक बार विश्वास कर लेता है, तो वह अपने यथार्थवाद के कारण चमत्कार को भी स्वीकार करने के लिए बाध्य हो जाता है। प्रेरित थॉमस ने कहा था कि वह तब तक विश्वास नहीं करेगा जब तक वह देख न ले, लेकिन जब उसने देखा तो उसने कहा, "मेरे प्रभु और मेरे ईश्वर!" क्या चमत्कार ने उसे विश्वास करने के लिए विवश किया? संभवतः नहीं, लेकिन उसने केवल इसलिए विश्वास किया क्योंकि वह विश्वास करना चाहता था और संभवतः उसने अपने अंतर्मन में पूर्ण विश्वास किया होगा, तब भी जब उसने कहा, "मैं तब तक विश्वास नहीं करूंगा जब तक मैं देख न लूं।"
मुझे शायद बताया जाएगा कि अलेयोशा मूर्ख था, अविकसित था, और उसमें कुछ भी नहीं था।
अपनी पढ़ाई पूरी कर ली, इत्यादि। यह सच है कि उन्होंने अपनी पढ़ाई पूरी नहीं की, लेकिन उन्हें मूर्ख या मंदबुद्धि कहना घोर अन्याय होगा। मैं ऊपर कही गई बात को ही दोहराऊंगा। उन्होंने इस मार्ग को इसलिए चुना क्योंकि उस समय केवल यही मार्ग उनके मन को भा गया और उन्हें लगा कि यह उनकी आत्मा को अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाने का एक आदर्श मार्ग है। इसके अतिरिक्त, वे कुछ हद तक हमारे अंतिम युग के युवाओं में से एक थे—अर्थात् स्वभाव से ईमानदार, सत्य की चाह रखने वाले, उसकी खोज करने वाले और उसमें विश्वास करने वाले, और अपनी आत्मा की पूरी शक्ति से उसकी सेवा करने के इच्छुक, तत्काल कार्रवाई की चाह रखने वाले और इसके लिए सब कुछ, यहाँ तक कि अपना जीवन भी, बलिदान करने को तैयार। यद्यपि ये युवा दुर्भाग्यवश यह समझने में विफल रहते हैं कि जीवन का बलिदान कई मामलों में सबसे आसान बलिदान होता है, और उदाहरण के लिए, अपनी युवावस्था के पाँच या छह वर्ष कठिन और थकाऊ अध्ययन में समर्पित करना, केवल सत्य और अपने लक्ष्य के लिए सेवा करने की अपनी शक्ति को दस गुना बढ़ाने के लिए—ऐसा बलिदान उनमें से कई लोगों की क्षमता से परे है। अलेयोशा ने जो रास्ता चुना, वह विपरीत दिशा में जाने वाला रास्ता था, लेकिन उसने उसे भी शीघ्र सफलता की उसी प्यास के साथ चुना। जैसे ही उसने गंभीरता से विचार किया, वह ईश्वर और अमरता के अस्तित्व के प्रति आश्वस्त हो गया, और तुरंत ही उसने सहज रूप से अपने मन में कहा: “मैं अमरता के लिए जीना चाहता हूँ, और मैं कोई समझौता स्वीकार नहीं करूँगा।” इसी प्रकार, यदि उसने यह निर्णय लिया होता कि ईश्वर और अमरता का अस्तित्व नहीं है, तो वह तुरंत नास्तिक और समाजवादी बन जाता। क्योंकि समाजवाद केवल श्रम का प्रश्न नहीं है, यह सर्वप्रथम नास्तिकता का प्रश्न है, आज नास्तिकता के स्वरूप का प्रश्न है, ईश्वर के बिना निर्मित बाबेल के मीनार का प्रश्न है, जिसका उद्देश्य पृथ्वी से स्वर्ग तक पहुँचना नहीं, बल्कि पृथ्वी पर स्वर्ग स्थापित करना था। अलेयोशा को पहले की तरह जीना विचित्र और असंभव लगता। लिखा है: “अपनी सारी संपत्ति गरीबों को दे दो और मेरा अनुसरण करो, यदि तुम परिपूर्ण होना चाहते हो।”

अलोशा ने मन ही मन कहा: “मैं ‘सभी’ के बदले दो रूबल नहीं दे सकता,” और
“केवल प्रार्थना सभा में जाओ, उसका अनुसरण मत करो।” शायद बचपन की यादों ने उसे हमारे मठ की याद दिला दी हो, जहाँ उसकी माँ उसे प्रार्थना सभा में ले जाती रही हो। शायद तिरछी धूप और पवित्र प्रतिमा, जिसके सामने उसकी बेचारी “पागल” माँ उसे रखती थी, अब भी उसकी कल्पना पर असर डाल रही हो। इन बातों पर सोचते हुए वह शायद हमारे पास यह देखने आया हो कि क्या वह यहाँ सब कुछ या केवल “दो रूबल” का बलिदान कर सकता है, और मठ में उसकी मुलाकात इस बुजुर्ग से हुई। मुझे रूसी मठों में “बुजुर्ग” क्या होता है, यह समझाने के लिए विषयांतर करना होगा, और मुझे खेद है कि मैं इसे समझाने में खुद को सक्षम नहीं समझता। फिर भी, मैं कुछ शब्दों में इसका संक्षिप्त विवरण देने का प्रयास करूँगा। इस विषय के विशेषज्ञ कहते हैं कि “बुजुर्गों” की संस्था हाल ही की है, हमारे मठों में सौ साल से अधिक पुरानी नहीं है, हालाँकि रूढ़िवादी पूर्व में, विशेष रूप से सिनाई और एथोस में, यह एक हजार साल से अधिक पुरानी है। यह माना जाता है कि यह प्राचीन काल में रूस में भी मौजूद थी, लेकिन रूस पर आई विपत्तियों के कारण—तातार शासन, गृहयुद्ध, कॉन्स्टेंटिनोपल के विनाश के बाद पूर्व से संबंधों में आई रुकावट—यह संस्था विस्मृति में डूब गई। पिछली शताब्दी के अंत में हमारे बीच इसे एक महान तपस्वी, जैसा कि उन्हें कहा जाता था, पैसी वेलिचकोव्स्की और उनके शिष्यों द्वारा पुनर्जीवित किया गया। लेकिन आज तक यह कुछ ही मठों में मौजूद है, और रूस में इसे एक नवाचार मानकर कई बार सताया भी गया है। यह विशेष रूप से प्रसिद्ध कोज़ेल्स्की ऑप्टिन मठ में फला-फूला। हमारे मठ में यह कब और कैसे शुरू हुआ, यह मैं नहीं कह सकता। पहले से ही तीन ऐसे वरिष्ठ भिक्षु थे और ज़ोसिमा उनमें से अंतिम थे। लेकिन वे कमजोरी और बीमारी से लगभग मरणासन्न थे, और उनका स्थान लेने वाला कोई नहीं था। हमारे मठ के लिए यह एक महत्वपूर्ण प्रश्न था, क्योंकि तब तक इसकी कोई विशेष विशेषता नहीं थी: न तो उनके पास संतों के अवशेष थे, न चमत्कार करने वाली मूर्तियाँ, न ही गौरवशाली परंपराएँ, न ही ऐतिहासिक उपलब्धियाँ। यह अपने वरिष्ठ भिक्षुओं के माध्यम से पूरे रूस में फला-फूला और गौरवशाली रहा, जिन्हें देखने और सुनने के लिए हजारों वर्षों से तीर्थयात्री उमड़ते रहे थे। सभी स्थानों से मीलों दूर।
ऐसा बुजुर्ग कौन होता था? बुजुर्ग वह होता था जो तुम्हारी आत्मा, तुम्हारी
जब आप किसी गुरु को चुनते हैं, तो आप अपनी इच्छा का त्याग कर पूर्ण समर्पण और आत्म-त्याग के साथ उसे सौंप देते हैं। यह दीक्षा, त्याग का यह कठिन विद्यालय, स्वेच्छा से आत्म-विजय और आत्म-नियंत्रण की आशा में ग्रहण किया जाता है, ताकि आज्ञाकारी जीवन के बाद पूर्ण स्वतंत्रता, अर्थात् स्वयं से मुक्ति प्राप्त हो सके; उन लोगों के भाग्य से बच सकें जिन्होंने अपना पूरा जीवन अपने भीतर अपने सच्चे स्वरूप को पाए बिना बिताया है। गुरुओं की यह संस्था सिद्धांत पर आधारित नहीं है, बल्कि पूर्व में हज़ार वर्षों के अभ्यास से स्थापित हुई है। गुरु के प्रति दायित्व हमारे रूसी मठों में हमेशा से मौजूद साधारण "आज्ञाकारिता" नहीं है। इस दायित्व में उन सभी लोगों द्वारा गुरु के समक्ष स्वीकारोक्ति शामिल है जिन्होंने स्वयं को गुरु के समक्ष समर्पित किया है, और उनके और उनके बीच के अटूट बंधन को स्वीकार किया है।
उदाहरण के लिए, यह कहानी सुनाई जाती है कि ईसाई धर्म के प्रारंभिक दिनों में एक
एक नवोदित भिक्षु, अपने गुरु द्वारा दिए गए किसी आदेश का पालन न कर पाने के कारण, सीरिया में स्थित अपने मठ को छोड़कर मिस्र चला गया। वहाँ, महान वीरतापूर्ण कार्यों के बाद, अंततः उसे धर्म के लिए यातना सहने और शहादत प्राप्त करने योग्य पाया गया। जब चर्च ने उसे संत मानकर उसका अंतिम संस्कार किया, तो अचानक, उपासक के आग्रह पर, "हे सभी अजन्मे लोगों, यहाँ से चले जाओ," शहीद के शरीर वाला ताबूत अपनी जगह से हट गया और चर्च से बाहर फेंक दिया गया, और ऐसा तीन बार हुआ। अंततः उन्हें पता चला कि इस पवित्र व्यक्ति ने आज्ञापालन की प्रतिज्ञा तोड़ दी थी और अपने गुरु को छोड़ दिया था, और इसलिए, उसके महान कर्मों के बावजूद, गुरु की क्षमा के बिना उसे क्षमा नहीं किया जा सकता था। इसके बाद ही अंतिम संस्कार हो सका। यह तो एक पुरानी कथा मात्र है। लेकिन यहाँ एक हालिया उदाहरण है।
एक भिक्षु को अचानक उसके गुरु ने एथोस छोड़ने का आदेश दिया, जिसे उसने स्वीकार कर लिया।
एक पवित्र स्थान और शरणस्थल के रूप में प्रिय, और पहले यरूशलेम जाकर पवित्र स्थानों को श्रद्धांजलि अर्पित करने और फिर उत्तर में साइबेरिया जाने के लिए कहा गया: "तुम्हारे लिए स्थान वहाँ है, यहाँ नहीं।" दुःख से व्याकुल भिक्षु कॉन्स्टेंटिनोपल के सर्वधर्म कुलपति के पास गए और उनसे अपनी आज्ञाकारिता से मुक्त करने की विनती की। लेकिन कुलपति ने उत्तर दिया कि न केवल वे उन्हें मुक्त करने में असमर्थ हैं,

बल्कि पृथ्वी पर ऐसी कोई शक्ति नहीं है और न ही हो सकती है जो उन्हें मुक्त कर सके, सिवाय उस वरिष्ठ भिक्षु के जिसने स्वयं उन्हें यह कर्तव्य सौंपा था। इस प्रकार कुछ मामलों में वरिष्ठ भिक्षुओं को असीमित और अकथनीय अधिकार प्राप्त होते हैं। यही कारण है कि हमारे कई मठों में इस संस्था का प्रारंभ में लगभग उत्पीड़न की हद तक विरोध किया गया। इस बीच, वरिष्ठ भिक्षु तुरंत लोगों के बीच अत्यधिक सम्मानित होने लगे। उदाहरण के लिए, अज्ञानी लोगों के साथ-साथ प्रतिष्ठित व्यक्ति भी बड़ी संख्या में हमारे मठ के वरिष्ठ भिक्षुओं के पास अपने संदेह, पाप और पीड़ाओं को स्वीकार करने और सलाह एवं मार्गदर्शन मांगने के लिए आते थे। यह देखकर, वरिष्ठ भिक्षुओं के विरोधियों ने घोषणा की कि स्वीकारोक्ति के संस्कार को मनमाने ढंग से और तुच्छ रूप से अपमानित किया जा रहा है, यद्यपि भिक्षु या आम आदमी द्वारा वरिष्ठ भिक्षुओं के समक्ष निरंतर हृदय विदारक होना संस्कार के समान नहीं था। अंततः, वरिष्ठ भिक्षुओं की संस्था बनी रही और रूसी मठों में स्थापित हो रही है। यह शायद सच है कि यह साधन, जो मनुष्य के नैतिक पुनरुत्थान के लिए हजारों वर्षों से दासता से मुक्ति और नैतिक पूर्णता की ओर अग्रसर रहा है, एक दोधारी तलवार हो सकता है और यह कुछ लोगों को विनम्रता और पूर्ण आत्म-संयम की ओर नहीं, बल्कि सबसे शैतानी अहंकार की ओर ले जा सकता है, अर्थात् गुलामी की ओर, न कि स्वतंत्रता की ओर।

बड़े ज़ोसिमा की उम्र पैंसठ वर्ष थी। वे ज़मींदारों के परिवार से थे।

वह युवावस्था में सेना में थे और काकेशस में एक अधिकारी के रूप में सेवा कर चुके थे। उन्होंने निस्संदेह अपनी आत्मा के किसी विशेष गुण से अलेयोशा को प्रभावित किया था। अलेयोशा अपने गुरु के साथ उसी कुटिया में रहते थे, जो उनसे बहुत स्नेह करते थे और उन्हें अपनी सेवा करने देते थे। यह ध्यान देने योग्य है कि अलेयोशा किसी भी प्रकार से बाध्य नहीं थे और जहाँ चाहें जा सकते थे और पूरे दिन अनुपस्थित रह सकते थे। यद्यपि वे भिक्षुओं के वस्त्र पहनते थे, यह उनकी स्वेच्छा थी, दूसरों से अलग दिखने के लिए नहीं। निस्संदेह उन्हें ऐसा करना अच्छा लगता था। संभवतः उनकी युवावस्था की कल्पना उनके गुरु की शक्ति और प्रसिद्धि से गहराई से प्रभावित हुई थी। कहा जाता है कि वर्षों से इतने सारे लोग फादर ज़ोस्सिमा के पास अपने पापों को स्वीकार करने और उनसे सलाह और उपचार के लिए प्रार्थना करने आते रहे हैं कि उन्होंने एक तीव्र अंतर्ज्ञान प्राप्त कर लिया था और एक अपरिचित चेहरे से ही बता सकते थे कि एक नए व्यक्ति की क्या इच्छा है और उसके अंतरात्मा में क्या पीड़ा है। वे कभी-कभी अपने आगंतुकों को उनके एक शब्द भी बोलने से पहले ही उनके रहस्यों को जानकर चकित और लगभग भयभीत कर देते थे।

अलोशा ने देखा कि बहुत से लोग, लगभग सभी, पहली बार बड़े-बुजुर्ग के पास गए।

कुछ समय तो अशर्जित और बेचैन रहे, लेकिन सभी प्रसन्न चेहरों के साथ लौटे। अलेयोशा इस बात से विशेष रूप से प्रभावित हुआ कि फादर ज़ोस्सिमा बिल्कुल भी कठोर नहीं थे। इसके विपरीत, वे लगभग हमेशा हंसमुख रहते थे। भिक्षु कहते थे कि वे अधिक पापी लोगों की ओर आकर्षित होते थे, और पापी जितना बड़ा होता था, वे उससे उतना ही अधिक प्रेम करते थे। निस्संदेह, उनके जीवन के अंत तक, भिक्षुओं में कुछ ऐसे भी थे जो उनसे घृणा और ईर्ष्या करते थे, लेकिन उनकी संख्या कम थी और वे चुप रहे, हालांकि उनमें से कुछ मठ के बहुत प्रतिष्ठित व्यक्ति थे, उदाहरण के लिए, एक वरिष्ठ भिक्षु जो अपने कठोर उपवास और मौन व्रतों के पालन के लिए प्रसिद्ध थे। लेकिन अधिकांश लोग फादर ज़ोस्सिमा के पक्ष में थे और उनमें से बहुत से लोग उन्हें पूरे दिल से, स्नेहपूर्वक और सच्चे मन से प्यार करते थे। कुछ लोग तो उनके प्रति लगभग अंधभक्ति से समर्पित थे और उन्होंने, हालांकि खुलकर नहीं, यह घोषणा की कि वे एक संत थे, इसमें कोई संदेह नहीं हो सकता। उनका अंत निकट देखकर, वे उनके अवशेषों से निकट भविष्य में मठ के लिए चमत्कार और महान गौरव की आशा करते थे। अलेयोशा को उस संत की चमत्कारी शक्ति पर अटूट विश्वास था, ठीक वैसे ही जैसे उन्हें उस ताबूत की कहानी पर अटूट विश्वास था जो गिरजाघर से उड़कर बाहर आ गया था। उन्होंने कई लोगों को बीमार बच्चों या रिश्तेदारों के साथ आते और संत से उन पर हाथ रखकर प्रार्थना करने की विनती करते देखा, जो कुछ ही समय बाद - कुछ तो अगले दिन - लौट आते और संत के चरणों में गिरकर, अपने बीमारों को ठीक करने के लिए उनका धन्यवाद करते।

चाहे वे सचमुच ठीक हो गए हों या प्राकृतिक रूप से बेहतर हो गए हों

अलेयोशा के लिए बीमारी का इलाज कोई मायने नहीं रखता था, क्योंकि वह अपने गुरु की आध्यात्मिक शक्ति में पूर्ण विश्वास रखता था और उनकी प्रसिद्धि, उनके गौरव में इतना आनंदित होता था मानो यह उसकी अपनी जीत हो। जब गुरु अपने आश्रम के द्वार पर आए और वहाँ रूस के कोने-कोने से आए साधारण तीर्थयात्रियों

की भीड़ उनका इंतज़ार कर रही थी, जो उनसे मिलने और उनका आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए आए थे, तो अलेयोशा का हृदय खुशी से भर उठा और मानो वह पूरी तरह से प्रसन्न हो उठा। वे उनके सामने गिर पड़े, रोने लगे, उनके पैर चूमे, जिस धरती पर वे खड़े थे उसे चूमा और विलाप करने लगे, जबकि स्त्रियाँ अपने बच्चों को उनके सामने उठाकर बीमारों को, जिन्हें "भूत-प्रेत से ग्रसित" बताया गया था, उनके पास लाईं। गुरु ने उनसे बात की, उनके लिए एक संक्षिप्त प्रार्थना पढ़ी, उन्हें आशीर्वाद दिया और उन्हें विदा कर दिया। हाल ही में बीमारी के कारण वे इतने कमज़ोर हो गए थे कि कभी-कभी वे अपनी कुटिया से बाहर भी नहीं निकल पाते थे, और तीर्थयात्री कई दिनों तक उनके बाहर आने का इंतज़ार करते थे। अलेयोशा को आश्चर्य नहीं हुआ कि वे उनसे इतना प्रेम क्यों करते थे, क्यों वे केवल उनका चेहरा देखकर ही उनके सामने गिर पड़ते थे और भावुक होकर रोने लगते थे। ओह! वह समझ गया था कि रूसी किसान की विनम्र आत्मा के लिए, जो दुःख और परिश्रम से, और उससे भी अधिक अपने और दुनिया के शाश्वत अन्याय और शाश्वत पाप से व्याकुल है, किसी पवित्र व्यक्ति या वस्तु को ढूंढना सबसे बड़ी आवश्यकता और सांत्वना थी जिसके सामने वह नतमस्तक होकर पूजा कर सके।

हमारे बीच पाप, अन्याय और प्रलोभन मौजूद हैं, लेकिन फिर भी, कहीं न कहीं

पृथ्वी पर कोई पवित्र और महान व्यक्ति है। उसके पास सत्य है; वह सत्य को जानता है; इसलिए यह पृथ्वी पर मृत नहीं है; इसलिए यह एक दिन हमारे पास भी आएगा और प्रतिज्ञा के अनुसार सारी पृथ्वी पर शासन करेगा।

अलियोशा जानता था कि लोगों की यही भावना थी और वे इसी तरह तर्क भी देते थे।

वह यह बात समझता था, लेकिन इस बात पर कि बड़े ज़ोस्सिमा संत और ईश्वर के सत्य के संरक्षक थे—उसे उतना ही विश्वास था जितना कि रोते हुए किसानों और बीमार महिलाओं को, जो अपने बच्चों को बड़े ज़ोस्सिमा के हवाले कर रही थीं। यह दृढ़ विश्वास कि अपनी मृत्यु के बाद बड़े ज़ोस्सिमा मठ को असाधारण गौरव दिलाएंगे, अलेयोशा में वहाँ मौजूद किसी भी व्यक्ति से कहीं अधिक प्रबल था, और हाल ही में उसके हृदय में एक प्रकार की गहरी परमानंद की ज्वाला और भी प्रबल होती जा रही थी। वह इस बात से ज़रा भी विचलित नहीं था कि बड़े ज़ोस्सिमा उसके सामने एक अद्वितीय उदाहरण के रूप में खड़े थे।

कोई बात नहीं। वह पवित्र है। वह अपने हृदय में नवीकरण का रहस्य रखता है।

"वह शक्ति जो अंततः पृथ्वी पर सत्य स्थापित करेगी, और सभी मनुष्य पवित्र होंगे और एक दूसरे से प्रेम करेंगे, और न तो कोई अमीर होगा और न ही कोई गरीब, न कोई ऊंचा होगा और न ही कोई नीचा, बल्कि सभी परमेश्वर की संतान के समान होंगे, और मसीह का सच्चा राज्य आएगा।" यही अलेयोशा के हृदय में स्वप्न था।

उसके दो भाइयों का आगमन, जिन्हें वह तब तक नहीं जानता था,

अलेयोशा पर इसका गहरा प्रभाव पड़ा। उसने अपने सगे भाई इवान की तुलना में अपने सौतेले भाई दिमित्री (हालाँकि दिमित्री बाद में आया था) से जल्दी दोस्ती कर ली। वह अपने भाई इवान में बहुत रुचि रखता था, लेकिन जब इवान को शहर में आए दो महीने हो गए, हालाँकि वे अक्सर मिलते थे, फिर भी उनके बीच घनिष्ठता नहीं थी। अलेयोशा स्वभाव से चुप रहता था, और ऐसा लगता था कि वह किसी बात की उम्मीद कर रहा है, किसी बात को लेकर शर्मिंदा है, जबकि उसका भाई इवान, हालाँकि अलेयोशा ने पहले तो देखा कि वह उसे लंबे समय तक उत्सुकता से देखता रहा, लेकिन जल्द ही उसके बारे में सोचना बंद कर देता था। अलेयोशा ने इसे कुछ शर्मिंदगी के साथ देखा। उसने अपने भाई की उदासीनता का कारण पहले तो उनकी उम्र और शिक्षा के अंतर को माना। लेकिन उसे यह भी आश्चर्य हुआ कि इवान में जिज्ञासा और सहानुभूति की कमी का कारण शायद कुछ और ही हो, जो उसे बिल्कुल अज्ञात हो। वह सोचता रहा कि इवान किसी बात में लीन है—किसी आंतरिक और महत्वपूर्ण बात में—कि वह किसी लक्ष्य की ओर प्रयास कर रहा है, शायद जिसे प्राप्त करना बहुत कठिन हो, और इसीलिए वह उसके बारे में नहीं सोच रहा है। अलेयोशा को यह भी आश्चर्य हुआ कि क्या विद्वान नास्तिक के मन में उसके प्रति, एक नासमझ नौसिखिए के प्रति, कुछ तिरस्कार तो नहीं था। वह निश्चित रूप से जानता था कि उसका भाई नास्तिक था। यदि ऐसा कोई तिरस्कार था भी, तो वह उसे ठेस नहीं पहुँचा सकता था; फिर भी, एक ऐसी बेचैनी और झिझक के साथ जिसे वह स्वयं भी नहीं समझ पा रहा था, वह अपने भाई के पास आने का इंतज़ार करता रहा। दिमित्री इवान के बारे में अत्यंत आदर और विशेष लगन से बात करता था। उससे अलेयोशा ने उस महत्वपूर्ण मामले की सारी जानकारी प्राप्त की थी जिसने हाल ही में दोनों बड़े भाइयों के बीच इतना घनिष्ठ और उल्लेखनीय बंधन बना दिया था। अलेयोशा

की नज़र में दिमित्री का इवान के प्रति उत्साहपूर्ण उल्लेख और भी अधिक प्रभावशाली था क्योंकि दिमित्री, इवान की तुलना में, लगभग अशिक्षित था, और दोनों भाई व्यक्तित्व और चरित्र में इतने भिन्न थे कि दो इतने अलग-अलग व्यक्तियों को खोजना मुश्किल था।
इसी समय सदस्यों की बैठक, या यूं कहें कि सभा हुई।
इस असंयमित परिवार की बैठक उस बुजुर्ग के कमरे में हुई जिसका अलेयोशा पर असाधारण प्रभाव था। इस बैठक का बहाना झूठा था। यही वह समय था जब दिमित्री और उसके पिता के बीच कलह अपने चरम पर थी और उनके रिश्ते असहनीय रूप से तनावपूर्ण हो गए थे। ऐसा लगता है कि फ्योदोर पावलोविच ने सबसे पहले, मज़ाक में ही, सुझाव दिया कि वे सभी फादर ज़ोस्सिमा के कमरे में मिलें और उनके सीधे हस्तक्षेप के बिना, बुजुर्ग की उपस्थिति के शांत प्रभाव से वे अधिक शालीनता से आपस में समझौता कर सकें। दिमित्री, जिसने बुजुर्ग को कभी नहीं देखा था, स्वाभाविक रूप से यह मान लिया कि उसके पिता उसे डराने की कोशिश कर रहे हैं, लेकिन चूंकि वह हाल के कई मौकों पर अपने पिता के साथ अपने गुस्से के लिए खुद को दोषी मानता था, इसलिए उसने चुनौती स्वीकार कर ली। यह ध्यान देने योग्य है कि वह इवान की तरह अपने पिता के साथ नहीं रह रहा था, बल्कि शहर के दूसरे छोर पर अलग रह रहा था। ऐसा हुआ कि उस समय जिले में रह रहे प्योत्र अलेक्सांद्रोविच मियूसोव को यह विचार बहुत पसंद आया। चालीस और पचास के दशक के उदारवादी, स्वतंत्र विचारक और नास्तिक मियूसोव शायद ऊब या कुछ हल्के-फुल्के मनोरंजन की उम्मीद में इस विचार से प्रेरित हुए थे। उन्हें अचानक मठ और उस संत को देखने की तीव्र इच्छा हुई। चूंकि मठ के साथ उनका मुकदमा अभी भी चल रहा था, इसलिए उन्होंने इसे संत से मिलने का बहाना बनाया, ताकि इसे सौहार्दपूर्ण ढंग से सुलझाया जा सके। ऐसे प्रशंसनीय इरादों से आने वाले आगंतुक का स्वागत शायद केवल जिज्ञासावश आने वाले आगंतुक की तुलना में अधिक ध्यान और सम्मान के साथ किया जाता। मठ के भीतर से प्रभाव डाला गया, जिससे संत पर, जो हाल ही में अपनी कोठरी से मुश्किल से ही बाहर निकले थे और बीमारी के कारण अपने नियमित आगंतुकों से भी मिलने से इनकार कर रहे थे, अंततः वे उनसे मिलने के लिए सहमत हो गए और मिलने का दिन तय हो गया।
“मुझे इन पर न्यायाधीश किसने बनाया है?” उसने मुस्कुराते हुए बस इतना ही कहा।
अलोशा।
प्रस्तावित यात्रा के बारे में सुनकर अलेयोशा बहुत परेशान हो गया।
झगड़ालू और कलहलू वाले परिवार में, दिमित्री ही एकमात्र ऐसा व्यक्ति था जो साक्षात्कार को गंभीरता से ले सकता था। बाकी सभी लोग तुच्छ इरादों से आए होंगे, शायद बड़े का अपमान करने के लिए। अलेयोशा इस बात से भलीभांति परिचित था। इवान और मियूसोव जिज्ञासावश आए होंगे, शायद बेहद भद्दी किस्म की, जबकि उसके पिता शायद कोई मज़ाक करने की सोच रहे होंगे। हालाँकि उसने कुछ नहीं कहा, अलेयोशा अपने पिता को अच्छी तरह समझता था। लड़का, मैं दोहराता हूँ, उतना सीधा-सादा नहीं था जितना सब उसे समझते थे। वह भारी मन से उस दिन का इंतज़ार कर रहा था। निस्संदेह वह हमेशा अपने मन में सोचता रहता था कि परिवार के कलह को कैसे समाप्त किया जाए। लेकिन उसकी सबसे बड़ी चिंता बड़े को लेकर थी। वह उनके लिए, उनकी प्रतिष्ठा के लिए कांपता था, और उनके किसी भी अपमान से भयभीत था, विशेष रूप से मियूसोव के परिष्कृत, विनम्र व्यंग्य और उच्च शिक्षित इवान के घमंडी आधे-अधूरे कथनों से। वह तो बड़े को चेतावनी देने का साहस भी करना चाहता था, उन्हें उनके बारे में कुछ बताना चाहता था, लेकिन फिर सोच-विचार करके कुछ नहीं कहा। उसने अपने भाई दिमित्री को एक दिन पहले ही एक मित्र के माध्यम से संदेश भेजा कि वह उससे प्रेम करता है और उससे अपना वादा निभाने की उम्मीद करता है। दिमित्री को आश्चर्य हुआ, क्योंकि उसे याद नहीं था कि उसने क्या वादा किया था, लेकिन उसने पत्र लिखकर उत्तर दिया कि वह अपने आप को "नीचता" से प्रभावित न होने देने का भरसक प्रयास करेगा, लेकिन यद्यपि वह बड़े भाई और उसके भाई इवान का बहुत सम्मान करता था, फिर भी उसे विश्वास था कि यह मुलाकात या तो उसके लिए एक जाल थी या एक तुच्छ नाटक।
फिर भी, कमी होने की बजाय मैं अपनी जीभ काट लेना ज्यादा पसंद करूंगा।
“आप जिस संत पुरुष का इतना आदर करते हैं, उन्हें मेरा प्रणाम,” उन्होंने अंत में लिखा। अलेयोशा इस पत्र से बहुत प्रसन्न नहीं हुए।

पुस्तक 2

एक दुर्भाग्यपूर्ण सभा

अध्याय 1

वे मठ पहुँचते हैं

अगस्त के अंत का वह दिन गर्म और सुहाना था। बुजुर्ग से मुलाकात का समय दोपहर साढ़े ग्यारह बजे, प्रार्थना सभा के तुरंत बाद तय किया गया था। हमारे मेहमान प्रार्थना सभा में शामिल नहीं हुए, बल्कि उसके समाप्त होते ही पहुंचे। सबसे पहले दो कीमती घोड़ों द्वारा खींची गई एक शानदार खुली गाड़ी आई, जिसमें मियूसोव और उनके एक दूर के रिश्तेदार, बीस वर्षीय युवक प्योत्र फोमिच कालगानोव सवार थे। यह युवक विश्वविद्यालय में प्रवेश की तैयारी कर रहा था। मियूसोव, जिनके साथ वह कुछ समय के लिए रह रहा था, उसे ज्यूरिख या जेना विश्वविद्यालय में पढ़ने के लिए विदेश जाने के लिए मनाने की कोशिश कर रहे थे। युवक अभी भी असमंजस में था। वह विचारशील और खोया-खोया सा रहता था। वह सुंदर, मजबूत कद-काठी का और काफी लंबा था। कभी-कभी उसकी निगाहों में एक अजीब सी स्थिरता होती थी। सभी खोए-खोए लोगों की तरह वह कभी-कभी बिना देखे ही किसी को घूरता रहता था। वह शांत और कुछ हद तक असहज था, लेकिन कभी-कभी, जब वह किसी के साथ अकेला होता था, तो वह बातूनी और भावुक हो जाता था, और किसी भी बात पर या बिना किसी बात के भी हंसने लगता था। लेकिन उनकी जीवंतता जितनी जल्दी प्रकट हुई उतनी ही जल्दी गायब भी हो गई। वे हमेशा अच्छे और सलीके से कपड़े पहनते थे; उनके पास पहले से ही कुछ संपत्ति थी और वे और भी अधिक संपत्ति की उम्मीद रखते थे। वे अलेयोशा के मित्र थे।
एक पुरानी, खस्ताहाल, लेकिन विशाल किराए की गाड़ी में, दो बुजुर्गों के साथ
गुलाबी-भूरे रंग के घोड़े, मियूसोव की गाड़ी से काफी पीछे, फ्योदोर पावलोविच अपने बेटे इवान के साथ आ रहे थे। दिमित्री देर से आए, हालांकि उन्हें पिछली शाम समय बता दिया गया था। आगंतुकों ने अपनी गाड़ी होटल के परिसर के बाहर छोड़ दी और पैदल ही मठ के द्वार तक गए। फ्योदोर पावलोविच को छोड़कर, दल में से किसी ने भी मठ नहीं देखा था, और मियूसोव शायद तीस वर्षों से चर्च भी नहीं गए थे। उन्होंने जिज्ञासा और सहजता का भाव दिखाते हुए चारों ओर देखा। लेकिन, चर्च और घरेलू इमारतों को छोड़कर, हालांकि ये भी साधारण थीं, उन्हें मठ के भीतर कुछ भी दिलचस्प नहीं मिला। अंतिम उपासक नंगे सिर चर्च से बाहर आ रहे थे और क्रॉस का चिन्ह बना रहे थे। साधारण लोगों के बीच कुछ उच्च पदस्थ लोग भी थे—दो-तीन महिलाएं और एक बहुत बूढ़ा जनरल। वे सभी होटल में ठहरे हुए थे। हमारे आगंतुक तुरंत भिखारियों से घिर गए, लेकिन उनमें से किसी ने भी उन्हें कुछ नहीं दिया, सिवाय युवा कालगानोव के, जिसने अपने पर्स से दस कोपेक का सिक्का निकाला और घबराकर—पता नहीं क्यों!—जल्दी से एक बूढ़ी औरत को देते हुए कहा: “इसे बराबर बाँट लो।” उसके साथियों में से किसी ने भी इस पर कोई टिप्पणी नहीं की, इसलिए उसे शर्मिंदा होने का कोई कारण नहीं था; लेकिन यह देखकर वह और भी ज़्यादा परेशान हो गया।
यह अजीब था कि उनका आगमन अप्रत्याशित प्रतीत हुआ, और यह कि वे
उनका विशेष सम्मान के साथ स्वागत नहीं किया गया, हालाँकि उनमें से एक ने हाल ही में एक हजार रूबल का दान दिया था, जबकि दूसरा एक अत्यंत धनी और उच्च कोटि का जमींदार था, जिस पर मठ के सभी लोग एक तरह से निर्भर थे, क्योंकि मुकदमे का फैसला किसी भी क्षण उनके मछली पकड़ने के अधिकार उसके हाथों में सौंप सकता था। फिर भी, कोई भी आधिकारिक व्यक्ति उनसे मिलने नहीं आया।
मियूसोव अनमने ढंग से चर्च के चारों ओर की कब्रों को देखने लगा।
और वह कहने ही वाला था कि यहाँ दफ़न मृतकों ने इस "पवित्र स्थान" में लेटने के अधिकार के लिए मोटी रकम चुकाई होगी, लेकिन रुक गया। उसका उदार व्यंग्य तेज़ी से क्रोध में बदल रहा था।
इस मूर्ख जगह पर भला कौन पूछेगा? हमें पता लगाना ही होगा।
समय बीत रहा है,” उसने अचानक कहा, मानो वह खुद से ही बात कर रहा हो।
अचानक एक गंजे सिर वाला, बूढ़ा आदमी बड़ी विनम्रता से प्रकट हुआ।

छोटी-छोटी आँखों वाला, गर्मियों का पूरा ओवरकोट पहने हुए। अपनी टोपी उठाते हुए, उसने मीठी तुतलाहट भरी आवाज़ में अपना परिचय मैक्सिमोव के रूप में दिया, जो तुला का एक ज़मींदार है। वह तुरंत हमारे आगंतुकों की समस्या में शामिल हो गया।
“फादर ज़ोस्सिमा एकांतवास में रहते हैं, जो यहाँ से चार सौ कदम की दूरी पर स्थित है।”
मठ, झाड़ियों के दूसरी ओर।
"मुझे पता है कि यह झाड़ियों के दूसरी तरफ है," फ्योदोर पावलोविच ने कहा।
लेकिन हमें रास्ता याद नहीं है। यहां आए हुए हमें काफी समय हो गया है।
“इस तरफ, इस द्वार से होते हुए, और सीधे झाड़ियों के पार... झाड़ियाँ।”
मेरे साथ आओगे ना? मैं तुम्हें दिखाता हूँ। मुझे जाना है... मैं खुद जा रहा हूँ। इधर, इधर।
वे फाटक से बाहर निकले और झाड़ियों की ओर मुड़ गए। मैक्सिमोव, एक
साठ वर्ष का वह व्यक्ति चलने के बजाय दौड़ने लगा, और एक अविश्वसनीय घबराहट भरी जिज्ञासा के साथ उन सभी को घूरने के लिए एक तरफ मुड़ गया। उसकी आँखें मानो सिर से बाहर निकल रही थीं।
“देखिए, हम अपने निजी काम से इस बुजुर्ग के पास आए हैं।”
मियूसोव ने गंभीरता से कहा, "उस शख्स ने हमें एक तरह से दर्शन दिए हैं, इसलिए यद्यपि हम आपको रास्ता दिखाने के लिए धन्यवाद देते हैं, हम आपसे हमारे साथ चलने का अनुरोध नहीं कर सकते।"
“मैं वहाँ जा चुका हूँ। मैं पहले ही जा चुका हूँ; एक आदर्श शूरवीर,” और मैक्सिमोव
उसने हवा में उंगलियां चटकाईं।
“शूरवीर कौन होता है?” मियूसोव ने पूछा। “वरिष्ठ, महान वृद्ध, वृद्ध! सम्मान और गौरव का प्रतीक।”
ज़ोसिमा मठ। क्या शानदार बुजुर्ग हैं!
लेकिन उनकी बेतुकी बातों को एक बेहद पीले, मुरझाए हुए भिक्षु ने बीच में ही रोक दिया।
मध्यम कद का एक व्यक्ति, जिसने भिक्षु की टोपी पहन रखी थी, उनसे आगे निकल गया। फ्योदोर पावलोविच और मियूसोव रुक गए।
भिक्षु ने अत्यंत विनम्रतापूर्वक झुकते हुए घोषणा की: “प्रमुख भिक्षु आप सभी सज्जनों को आज रात अपने साथ भोजन करने के लिए आमंत्रित करते हैं।”
“आप भी आश्रम में पधारें। एक बजे, इससे देर नहीं। और आप भी,” उन्होंने मैक्सिमोव को संबोधित करते हुए कहा।
“मैं यह अवश्य करूँगा, बिना किसी असफलता के,” फ्योदोर पावलोविच ने ज़ोर से कहा।
निमंत्रण पाकर वह बहुत प्रसन्न हुआ। “और यकीन मानिए, हम सबने यहाँ ठीक से व्यवहार करने का वचन दिया है... और आप, प्योत्र अलेक्जेंड्रोविच, क्या आप भी चलेंगे?”
“जी हां, बिल्कुल। मैं यहां के रीति-रिवाजों का अध्ययन करने के अलावा और किसलिए आया हूं?”
मेरे लिए एकमात्र बाधा आपकी कंपनी है...
"जी हां, दिमित्री फ्योदोरोविच का अभी तक कोई अस्तित्व नहीं है।"
“अगर वो नहीं आया तो ये बहुत बड़ी बात होगी। क्या आपको लगता है कि मुझे ये पसंद है?”
“इतना सारा काम-काज, और वो भी आपकी संगति में? तो हम रात के खाने पर चलेंगे। फादर सुपीरियर को धन्यवाद कहना,” उसने भिक्षु से कहा।
“नहीं, अब मेरा कर्तव्य है कि मैं आपको बड़े भिक्षु के पास ले जाऊं,” भिक्षु ने उत्तर दिया। “यदि ऐसा है तो मैं सीधे फादर सुपीरियर के पास जाऊंगा—फादर सुपीरियर के पास।”
मैक्सिमोव बड़बड़ाया।
“फादर सुपीरियर इस समय व्यस्त हैं। लेकिन जैसा आप चाहें—”
भिक्षु हिचकिचाया।
“बेशर्म बूढ़े आदमी!” मियूसोव ने जोर से कहा, जबकि मैक्सिमोव भाग गया।
वापस मठ की ओर।
“वह वॉन सोहन जैसा है,” फ्योदोर पावलोविच ने अचानक कहा। “क्या आप बस यही सोच सकते हैं? ... वह वॉन सोहन जैसा किस तरह है?
क्या आपने कभी वॉन सोहन को देखा है?

मैंने उनका चित्र देखा है। बात उनके चेहरे की नहीं, बल्कि किसी ऐसी चीज की है जिसे परिभाषित नहीं किया जा सकता।
वह बिल्कुल वॉन सोहन जैसा दिखता है। मैं तो उसकी शक्ल देखकर ही पहचान लेता हूँ।
“अरे, मुझे लगता है कि आप इस मामले में माहिर हैं। लेकिन, ज़रा यहाँ देखिए, फ्योदोर।”
पावलोविच, आपने अभी कहा था कि हमने सही व्यवहार करने का वचन दिया है। इसे याद रखिए। मैं आपको संयम बरतने की सलाह देता हूँ। लेकिन, अगर आप मूर्खता करने लगे तो मैं यहाँ आपके साथ नहीं रहना चाहता... आप देखिए वह कैसा आदमी है”—वह भिक्षु की ओर मुड़ा—“मुझे उसके साथ सभ्य लोगों के बीच जाने से डर लगता है।” भिक्षु के पीले, निर्जीव होठों पर एक हल्की सी मुस्कान आई, जिसमें थोड़ी सी धूर्तता भी थी, लेकिन उसने कोई जवाब नहीं दिया, और स्पष्ट रूप से अपनी गरिमा के कारण चुप रहा। मियूसोव पहले से कहीं ज्यादा गुस्से से भौंहें चढ़ा बैठा।
“ओह, शैतान उन सबको ले जाए! सदियों से विकसित एक बाहरी दिखावा,
और इसके पीछे छल और बकवास के सिवा कुछ नहीं है," ये विचार मियूसोव के दिमाग में कौंध गए।
“ये रहा आश्रम। हम पहुँच गए हैं,” फ्योदोर पावलोविच चिल्लाए।
द्वार बंद हैं।
और उसने ऊपर चित्रित संतों के लिए बार-बार क्रॉस का चिन्ह बनाया।
और फाटकों के किनारों पर।
जब आप रोम जाएं तो आपको रोमवासियों की तरह ही व्यवहार करना चाहिए। यहाँ इस
उस आश्रम में पच्चीस संत उद्धार पा रहे हैं। वे एक-दूसरे को देखते हैं और पत्तागोभी खाते हैं। और इस द्वार से एक भी महिला अंदर नहीं जाती। यही बात अद्भुत है। और यह सचमुच ऐसा ही है। लेकिन मैंने सुना है कि बड़े भिक्षु महिलाओं का स्वागत करते हैं,” उन्होंने अचानक भिक्षु से कहा।
“आम जनता की महिलाएं भी अब यहां मौजूद हैं, बरामदे में लेटी हुई हैं।”
प्रतीक्षा। लेकिन उच्च पदस्थ महिलाओं के लिए बरामदे से सटे दो कमरे बनाए गए हैं, जो परिसर के बाहर हैं —आप खिड़कियाँ देख सकते हैं—और जब बुजुर्ग व्यक्ति स्वस्थ हो जाते हैं, तो वे भीतरी मार्ग से उन कमरों में जाते हैं। वे कमरे हमेशा परिसर के बाहर ही रहते हैं। वहाँ एक हारकोव महिला, मैडम होहलाकोव, अपनी बीमार बेटी के साथ प्रतीक्षा कर रही हैं। शायद उन्होंने उनसे मिलने आने का वादा किया है, हालाँकि हाल ही में वे इतने कमजोर हो गए हैं कि उन्होंने लोगों को भी मुश्किल से ही दर्शन दिए हैं।
तो फिर, आश्रम से बाहर निकलने के लिए कुछ रास्ते तो हैं ही।
महिलाओं के बारे में। हे परम पूज्य पिता, यह न समझें कि मेरा इरादा किसी को हानि पहुँचाने का है। लेकिन क्या आप जानते हैं कि एथोस में न केवल महिलाओं का प्रवेश वर्जित है, बल्कि किसी भी प्रकार के स्त्री-प्रजाति का प्रवेश वर्जित है—न मुर्गियाँ, न टर्की-मुर्गियाँ, न गायें।
"फ्योदोर पावलोविच, मैं आपको चेतावनी देता हूं कि मैं वापस जाऊंगा और आपको यहीं छोड़ दूंगा।"
मेरे जाने के बाद वे तुम्हें बाहर निकाल देंगे।
“लेकिन मैं आपके काम में दखल नहीं दे रहा हूँ, प्योत्र अलेक्सांद्रोविच। देखिए,” उन्होंने कहा।
परिसर में कदम रखते ही वह अचानक चिल्ला उठा, "वे लोग कितनी सुंदर स्वर्ग जैसी जगह में रहते हैं!"
हालांकि अब गुलाब नहीं थे, लेकिन कई दुर्लभ और
जहां भी जगह थी, वहां खूबसूरत शरद ऋतु के फूल उग रहे थे, और जाहिर तौर पर उनकी देखभाल किसी कुशल हाथ ने की थी; गिरजाघर के चारों ओर और कब्रों के बीच फूलों की क्यारियां थीं; और जिस एक मंजिला लकड़ी के घर में बुजुर्ग रहते थे, वह भी फूलों से घिरा हुआ था।
“और क्या अंतिम बुजुर्ग, वारसोनोफी के समय में भी ऐसा ही था? उन्होंने ऐसा नहीं किया था।”
"ऐसी शालीनता की परवाह करना। कहते हैं कि वह उछल-कूद कर महिलाओं को भी लाठी से पीटता था," फ्योदोर पावलोविच ने सीढ़ियों पर चढ़ते हुए कहा।
“बड़े वारसोनोफी कभी-कभी काफी अजीब लगते थे, लेकिन एक महान
“जो भी बात बताई जा रही है वो सब मूर्खता है। उसने कभी किसी को पीटा नहीं,” भिक्षु ने उत्तर दिया। “अब, सज्जनों, अगर आप एक मिनट रुकेंगे तो मैं आपको सूचित करूँगा।”
"फ्योदोर पावलोविच, आखिरी बार, आपका समझौता, क्या आप सुन रहे हैं?"

ठीक से बर्ताव करो वरना मैं तुम्हें सबक सिखाऊंगा!" मियूसोव को फिर से बुदबुदाने का समय मिल गया।
"मुझे समझ नहीं आ रहा कि तुम इतने परेशान क्यों हो," फ्योदोर पावलोविच ने कहा।
व्यंग्यपूर्वक। "क्या तुम्हें अपने पापों को लेकर बेचैनी है? कहते हैं कि ईश्वर आँखों से ही जान लेता है कि किसी ने क्या किया है। और तुम उनकी राय को कितना महत्व देते हो! तुम, पेरिसवासी, और इतने उन्नत। मुझे तुम पर आश्चर्य होता है।"
लेकिन मियूसोव के पास इस व्यंग्य का जवाब देने का समय नहीं था। उनसे पूछा गया कि...
अंदर आ जाओ। वह कुछ चिड़चिड़ाते हुए अंदर आया।
अब, मैं खुद को जानता हूँ, मैं नाराज़ हूँ, मैं अपना आपा खो दूँगा और शुरू कर दूँगा
"झगड़ा करने से—और खुद को और अपने विचारों को नीचा दिखाने से," उन्होंने सोचा।

अध्याय दो

बूढ़ा मसखरा

वे लगभग उसी समय कमरे में दाखिल हुए जब बड़े भिक्षु अपने शयनकक्ष से अंदर आए। कुटिया में पहले से ही भिक्षु की प्रतीक्षा में दो भिक्षु मौजूद थे, एक धर्माध्यक्ष और दूसरे धर्मपिता पैसी, जो बहुत विद्वान थे, जैसा कि बताया जाता था, उनकी सेहत अच्छी थी, हालांकि वे बूढ़े नहीं थे। वहाँ एक लंबा युवक भी था, जो लगभग 22 वर्ष का लग रहा था, जो पूरी मुलाकात के दौरान कोने में खड़ा रहा। उसका चेहरा चौड़ा और सुस्पष्ट था, उसकी आँखें तेज, पैनी और संकीर्ण भूरी थीं, और उसने साधारण वस्त्र पहने हुए थे। वह धर्मशास्त्र का छात्र था और मठ की देखरेख में रह रहा था। उसके चेहरे पर बिना किसी प्रश्न के, लेकिन आत्मसम्मान से भरी श्रद्धा का भाव था। अधीनस्थ और आश्रित स्थिति में होने के कारण, और मेहमानों के बराबर न होने के कारण, उसने उन्हें झुककर अभिवादन नहीं किया।
फादर ज़ोसिमा के साथ एक नौसिखिए शिष्य और अलेयोशा भी थे। दोनों
भिक्षु उठे और बहुत झुककर उनका अभिवादन किया, अपनी उंगलियों से ज़मीन को छुआ; फिर उनका हाथ चूमा। उन्हें आशीर्वाद देते हुए, बड़े भिक्षु ने भी उतनी ही श्रद्धा से उनका अभिवादन किया और उनसे आशीर्वाद मांगा। पूरी रस्म बहुत गंभीरता और भावपूर्ण ढंग से निभाई गई, किसी रोज़मर्रा के अनुष्ठान की तरह नहीं। लेकिन मियूसोव को लगा कि यह सब जानबूझकर प्रभावशाली ढंग से किया गया था। वह अन्य आगंतुकों के सामने खड़े थे। उन्होंने पिछली शाम इस बारे में सोचा था कि यहाँ शिष्टाचार के नाते, उन्हें बड़े भिक्षु का आशीर्वाद लेने के लिए आगे जाना चाहिए था, भले ही उन्होंने उनका हाथ न चूमा हो। लेकिन जब उन्होंने भिक्षुओं को इस तरह झुकते और हाथ चूमते देखा, तो उन्होंने तुरंत अपना इरादा बदल दिया। गरिमापूर्ण गंभीरता के साथ उन्होंने थोड़ा झुककर, पारंपरिक तरीके से प्रणाम किया और एक कुर्सी पर बैठ गए। फ्योदोर पावलोविच ने भी ऐसा ही किया, मानो बंदर की तरह मियूसोव की नकल कर रहे हों। इवान ने बड़े सम्मान और विनम्रता से सिर झुकाया, लेकिन उसने भी अपने हाथ बगल में ही रखे, जबकि कालगानोव इतना असमंजस में था कि उसने सिर नहीं झुकाया। बड़े ने आशीर्वाद देने के लिए उठाया हुआ हाथ नीचे कर लिया और फिर से सिर झुकाकर सबको बैठने को कहा। अलेयोशा के गाल शर्म से लाल हो गए। उसे शर्म आ रही थी। उसकी आशंकाएँ सच हो रही थीं।
फादर ज़ोस्सिमा चमड़े से ढके एक पुराने ज़माने के महोगनी सोफे पर बैठ गए और अपने आगंतुकों को सामने वाली दीवार के साथ चार खस्ताहाल काले चमड़े से ढकी महोगनी कुर्सियों पर एक कतार में बैठा दिया। भिक्षु एक दरवाजे पर और दूसरा खिड़की पर बैठे थे। धर्मशास्त्र का छात्र, नौसिखिया और अलेयोशा खड़े रहे। कमरा बहुत बड़ा नहीं था और फीका-सा दिख रहा था। उसमें केवल आवश्यक सादा और घटिया फर्नीचर था। खिड़की में फूलों के दो गमले थे और कोने में कई पवित्र चित्र रखे थे। वर्जिन मैरी की एक विशाल प्राचीन प्रतिमा के सामने एक दीपक जल रहा था। उसके पास चमकदार फ्रेम में दो अन्य पवित्र चित्र थे, और उनके बगल में नक्काशीदार देवदूत, चीनी मिट्टी के अंडे, हाथीदांत का एक कैथोलिक क्रॉस, जिसे मैटर डोलोरोसा गले लगा रही थी, और पिछली शताब्दियों के महान इतालवी कलाकारों द्वारा बनाई गई कई विदेशी नक्काशी थीं। इन बहुमूल्य और कलात्मक नक्काशी के बगल में संतों और शहीदों के कुछ सबसे भद्दे रूसी चित्र रखे थे, जो मेलों में कुछ पैसों में बिकते हैं। दूसरी दीवारों पर अतीत और वर्तमान के रूसी बिशपों के चित्र थे।
मियूसोव ने इन सभी "पारंपरिक" परिवेशों पर सरसरी नज़र डाली।
और उसने बड़े व्यक्ति को ध्यान से देखा। उसे अपनी अंतर्दृष्टि पर बहुत भरोसा था, जो पचास वर्ष की आयु में स्वाभाविक थी, क्योंकि इस उम्र में एक प्रतिष्ठित और समझदार व्यक्ति का खुद को थोड़ा गंभीर समझना स्वाभाविक है। पहली नज़र में उसे ज़ोसिमा पसंद नहीं आया। वास्तव में, बड़े व्यक्ति के चेहरे में कुछ ऐसा था जो मियूसोव के अलावा शायद ही किसी और को पसंद आता। वह कद में छोटा, झुका हुआ और दुबला-पतला था, उसके पैर बहुत कमज़ोर थे, और यद्यपि वह केवल पैंसठ वर्ष का था, फिर भी वह कम से कम दस वर्ष बड़ा दिखता था। उसका चेहरा बहुत पतला था और उस पर बारीक झुर्रियों का जाल था, खासकर उसकी

छोटी, हल्के रंग की, तेज और दो चमकीले बिंदुओं की तरह चमकती आँखों के आसपास। उसकी कनपटी पर कुछ सफ़ेद बाल थे। उसकी नुकीली दाढ़ी छोटी और कम घनी थी, और उसके होंठ, जो अक्सर मुस्कुराते थे, दो धागों जितने पतले थे। उसकी नाक लंबी नहीं थी, बल्कि चिड़िया की चोंच की तरह नुकीली थी।
"देखने में तो वह एक दुष्ट आत्मा लगता है, जो छोटे-मोटे घमंड से भरा हुआ है," उसने सोचा।
मियूसोव। वह अपनी स्थिति से पूरी तरह असंतुष्ट महसूस कर रहा था।
दीवार पर लगी एक छोटी सी सस्ती घड़ी ने जल्दी से बारह बजाए, और उसने
बातचीत शुरू करें।
"बिल्कुल हमारे समय के हिसाब से," फ्योदोर पावलोविच चिल्लाया, "लेकिन मेरे समय का कोई निशान नहीं।"
पुत्र दिमित्री। मैं उसकी ओर से क्षमा मांगता हूँ, आदरणीय बुजुर्ग!" (अलोशा "आदरणीय बुजुर्ग" शब्द सुनकर कांप उठा।) "मैं स्वयं हमेशा समय का पाबंद रहता हूँ, पल-पल का, यह याद रखते हुए कि समय की पाबंदी राजाओं का शिष्टाचार है..."
"लेकिन तुम वैसे भी राजा नहीं हो," मियूसोव ने अपना आपा खोते हुए बुदबुदाया।
तुरंत संयम बरतें।
"हाँ; यह सच है। मैं राजा नहीं हूँ, और, क्या आप विश्वास करेंगे, प्योत्र
एलेक्जेंड्रोविच, मुझे खुद भी इस बात का एहसास था। लेकिन, अरे! मैं हमेशा गलत बात कह देता हूँ।
"महामहिम," वह अचानक भावुक होकर बोला, "आप अपने सामने एक सचमुच के मसखरे को देख रहे हैं! मैं अपना परिचय इसी रूप में देता हूँ। अफसोस, यह मेरी पुरानी आदत है! और अगर मैं कभी-कभार बेतुकी बातें कर भी देता हूँ, तो उसका एक मकसद होता है, लोगों का मनोरंजन करना और खुद को लोगों के लिए सुखद साबित करना। आखिर सुखद होना तो जरूरी है, है ना? सात साल पहले मैं एक छोटे से कस्बे में था जहाँ मेरा कुछ काम था, और वहाँ कुछ व्यापारियों से मेरी दोस्ती हो गई। हम पुलिस प्रमुख के पास गए क्योंकि हमें उनसे किसी बात के सिलसिले में मिलना था और उन्हें अपने साथ भोजन करने के लिए आमंत्रित करना था। वह एक लंबा, मोटा, गोरा, चिड़चिड़ा आदमी था, ऐसे मामलों में सबसे खतरनाक किस्म का आदमी। उनका जिगर ही तो होता है। मैं सीधे उनके पास गया, और एक अनुभवी व्यक्ति की सहजता से, आप जानते हैं, मैंने कहा, 'श्रीमान इस्परावनिक, आप हमारे नेप्रावनिक बन जाइए।'
'नाप्रावनिक से आपका क्या मतलब है?' उन्होंने कहा। मैंने पहले ही पल में समझ लिया कि मेरा मज़ाक नहीं उड़ा। वे वहाँ उदास खड़े रहे। 'मैंने मज़ाक करने की कोशिश की,' मैंने कहा, 'सबका ध्यान भटकाने के लिए, क्योंकि श्री नाप्रावनिक हमारे जाने-माने रूसी ऑर्केस्ट्रा कंडक्टर हैं और हमारे काम में सामंजस्य के लिए हमें ऐसे ही किसी व्यक्ति की ज़रूरत है।' और मैंने अपनी तुलना को बहुत ही तर्कसंगत तरीके से समझाया, है ना?
'माफ़ कीजिए,' उन्होंने कहा, 'मैं एक इस्परावनिक हूँ, और मैं अपने पेशे पर कोई मज़ाक बर्दाश्त नहीं करता।' वे मुड़े और चले गए। मैं उनके पीछे-पीछे चिल्लाते हुए गया, 'हाँ, हाँ, आप एक इस्परावनिक हैं, नाप्रावनिक नहीं।'
'नहीं,' उन्होंने कहा, 'चूंकि आपने मुझे नाप्रावनिक कहा है, तो मैं नाप्रावनिक हूँ।' और यकीन मानिए, इससे हमारा कारोबार चौपट हो गया! और मैं हमेशा ऐसा ही हूँ, हमेशा ऐसा ही। अपनी विनम्रता से हमेशा खुद को ही नुकसान पहुँचाता हूँ। एक बार, कई साल पहले, मैंने एक प्रभावशाली व्यक्ति से कहा: 'आपकी पत्नी को गुदगुदी बहुत अच्छी लगती है,' एक सम्मानजनक अर्थ में, नैतिक गुणों के संदर्भ में। लेकिन उन्होंने मुझसे पूछा, 'क्यों, क्या आपने उन्हें गुदगुदी की है?' मैंने सोचा कि मुझे विनम्र रहना चाहिए, इसलिए मैं 'हाँ' कहने से खुद को रोक नहीं पाया, और उन्होंने मुझे वहीं पर ज़ोर से गुदगुदी कर दी। लेकिन यह बहुत पहले हुआ था, इसलिए मुझे यह कहानी सुनाने में कोई शर्म नहीं है। मैं हमेशा इसी तरह खुद को नुकसान पहुँचाता रहता हूँ।
"तुम अभी कर रहे हो," मियूसोव ने घृणा से बुदबुदाया। फादर ज़ोस्सिमा चुपचाप उन दोनों को देखते रहे।
"क्या मैं कर रहा हूँ? यकीन मानो, मुझे भी इस बात की जानकारी थी, प्योत्र।"
एलेक्जेंड्रोविच, और मैं आपको बता दूँ, सचमुच, मुझे पहले से ही इसका आभास हो गया था जैसे ही मैंने बोलना शुरू किया। और क्या आप जानते हैं कि मुझे यह भी आभास था कि आप ही सबसे पहले इस पर टिप्पणी करेंगे। जैसे ही मुझे लगता है कि मेरा मज़ाक असरदार नहीं है, आदरणीय, मेरे दोनों गाल ऐसे खिंच जाते हैं जैसे नीचे जबड़े तक आ गए हों और उनमें एक तरह का ऐंठन सा आ जाता है। ऐसा बचपन से ही

होता आ रहा है, जब मुझे रईस परिवारों में गुज़ारा करने के लिए मज़ाक करने पड़ते थे। मैं जन्मजात मसखरा हूँ, और जन्म से ही ऐसा हूँ, आदरणीय, यह मानो मेरे अंदर का जुनून है। मैं कह सकता हूँ कि मेरे अंदर एक शैतान छिपा है। लेकिन बस एक छोटा सा। एक गंभीर शैतान शायद कोई और ठिकाना चुन लेता। लेकिन आपकी आत्मा नहीं, प्योत्र एलेक्जेंड्रोविच; आप भी रहने लायक ठिकाना नहीं हैं। लेकिन मैं विश्वास करता हूँ —मैं ईश्वर में विश्वास करता हूँ, हालाँकि हाल ही में मुझे कुछ संदेह हुए हैं। लेकिन अब मैं बैठा हूँ और ज्ञान की बातों की प्रतीक्षा कर रहा हूँ। मैं दार्शनिक दिदेरोत की तरह हूँ, आदरणीय। क्या आपने कभी सुना है, परम पूज्य पिता, कि महारानी कैथरीन के समय में दिदेरोत मेट्रोपॉलिटन प्लैटन से मिलने गए थे? वे अंदर गए और सीधे बोले, 'ईश्वर नहीं है।' इस पर महान बिशप ने अपनी उंगली उठाकर उत्तर दिया, 'मूर्ख ने अपने मन में कहा है कि ईश्वर नहीं है।' और वे वहीं उनके चरणों में गिर पड़े। उन्होंने पुकारा, 'मैं विश्वास करता हूँ, और बपतिस्मा लूँगा।' और ऐसा ही हुआ। राजकुमारी दश्कोव उनकी धर्ममाता थीं, और पोत्योमकिन उनके धर्मपिता।
“फ्योदोर पावलोविच, यह असहनीय है! आप जानते हैं कि आप झूठ बोल रहे हैं।”
और वह बेवकूफी भरी कहानी सच नहीं है। तुम मूर्खता क्यों कर रहे हो?” मियूसोव कांपती हुई आवाज में चिल्लाई।
“मुझे जीवन भर शक रहा कि यह सच नहीं है,” फ्योदोर पावलोविच रोते हुए बोले।
पूरे विश्वास के साथ। “लेकिन मैं आपको पूरी सच्चाई बताता हूँ, सज्जनों। महान बुजुर्ग! मुझे क्षमा करें, दिदेरोत के बपतिस्मा के बारे में आखिरी बात मैंने अभी-अभी गढ़ी है। मैंने इसके बारे में पहले कभी नहीं सोचा था। मैंने इसे कहानी में रोमांच जोड़ने के लिए गढ़ा है। मैं मूर्खता का नाटक करता हूँ, प्योत्र अलेक्जेंड्रोविच, ताकि लोग मुझे पसंद करें। हालाँकि, कभी-कभी मुझे खुद भी नहीं पता होता कि मैं ऐसा क्यों करता हूँ। और जहाँ तक दिदेरोत की बात है, मैंने यहाँ के संभ्रांत लोगों से बचपन में बीस बार सुना था कि ‘मूर्ख ने अपने मन में कहा है’। मैंने आपकी चाची, प्योत्र अलेक्जेंड्रोविच, से यह कहानी सुनी थी। वे सभी आज भी मानते हैं कि नास्तिक दिदेरोत, मेट्रोपॉलिटन प्लैटन के साथ ईश्वर के विषय पर बहस करने आया था...”
मियूसोव अधीरता में खुद को भूलकर उठ खड़ा हुआ। वह क्रोधित था, और
हास्यास्पद होने का बोध।
कोठरी में जो कुछ हो रहा था वह सचमुच अविश्वसनीय था। चालीस या पचास के लिए
बीते वर्षों में, पूर्व भिक्षुओं के समय से, कोई भी आगंतुक उस कोठरी में अत्यंत श्रद्धा भाव के बिना प्रवेश नहीं करता था। कोठरी में प्रवेश पाने वाले लगभग हर व्यक्ति को ऐसा लगता था मानो उस पर कोई बड़ा उपकार किया जा रहा हो। कई लोग पूरी यात्रा के दौरान घुटनों के बल बैठे रहते थे। उन आगंतुकों में से कई उच्च पदस्थ और विद्वान पुरुष थे, कुछ तो जिज्ञासावश आकर्षित स्वतंत्र विचारक भी थे, लेकिन सभी ने बिना किसी अपवाद के अत्यंत श्रद्धा और कोमलता दिखाई, क्योंकि यहाँ धन का कोई प्रश्न ही नहीं था, बल्कि एक ओर प्रेम और दया, और दूसरी ओर पश्चाताप और किसी आध्यात्मिक समस्या या संकट का समाधान करने की तीव्र इच्छा थी। इसलिए इस तरह के मसखरेपन ने दर्शकों को, या कम से कम उनमें से कुछ को, आश्चर्यचकित और व्याकुल कर दिया। भिक्षु, भावहीन चेहरों के साथ, बड़ी उत्सुकता से यह सुनने के लिए प्रतीक्षा कर रहे थे कि भिक्षु क्या कहेंगे, लेकिन ऐसा लग रहा था मानो वे मियूसोव की तरह खड़े होने ही वाले हों। अलेयोशा सिर झुकाए, आँसू बहाने की कगार पर खड़ा था। उसे सबसे अजीब बात यह लगी कि उसका भाई इवान, जिस पर उसने अपनी सारी उम्मीदें टिका रखी थीं, और जिसका उसके पिता पर इतना प्रभाव था कि वह उन्हें रोक सकता था, अब बिल्कुल शांत बैठा था, उसकी आँखें झुकी हुई थीं, मानो वह उत्सुकता से देख रहा हो कि इसका अंत कैसे होगा, मानो उसका इससे कोई लेना-देना ही न हो। अलेयोशा ने धर्मशास्त्र के छात्र रकितिन की ओर देखने की हिम्मत नहीं की, जिसे वह लगभग घनिष्ठ रूप से जानता था। मठ में केवल वही रकितिन के विचारों को जानता था।
“मुझे क्षमा करें,” मियूसोव ने फादर ज़ोसिमा को संबोधित करते हुए कहा, “शायद मैं
ऐसा लगता है कि मैं भी इस शर्मनाक मूर्खता में शामिल हूँ। मुझे यह सोचकर गलती हुई कि फ्योदोर पावलोविच जैसा व्यक्ति भी इतने सम्मानित व्यक्ति से मिलने पर उचित व्यवहार को समझेगा। मैंने यह नहीं सोचा था कि मुझे उनके साथ आने मात्र के लिए माफी मांगनी पड़ेगी...
प्योत्र अलेक्जेंड्रोविच और कुछ नहीं कह सका और जाने ही वाला था।

कमरा, भ्रम से भरा हुआ।
“कृपया परेशान न हों।” बुजुर्ग व्यक्ति अपने कमजोर पैरों पर खड़ा हुआ, और
प्योत्र अलेक्सांद्रोविच के दोनों हाथ पकड़कर, उन्होंने उसे फिर से बिठाया। “मैं आपसे निवेदन करता हूँ कि आप परेशान न हों। मैं आपसे विशेष रूप से निवेदन करता हूँ कि आप मेरे अतिथि बनें।” और झुककर उन्होंने वापस जाकर अपने छोटे सोफे पर बैठ गए।
“महान बुजुर्ग, बोलिए! क्या मेरी जीवंतता आपको परेशान करती है?” फ्योदोर
पावलोविच अचानक चिल्ला उठा, अपनी कुर्सी की भुजाओं को दोनों हाथों से कसकर पकड़ लिया, मानो अगर जवाब प्रतिकूल हुआ तो वह कुर्सी से उछलकर खड़े होने के लिए तैयार हो।
मैं आपसे भी विनम्रतापूर्वक विनती करता हूँ कि आप स्वयं को परेशान न करें और बेचैन न हों।
बुजुर्ग ने प्रभावशाली ढंग से कहा, “परेशान मत होइए। बिल्कुल सहज महसूस कीजिए। और सबसे बढ़कर, अपने आप पर इतना शर्मिंदा मत होइए, क्योंकि यही सारी समस्या की जड़ है।”
“क्या मैं बिल्कुल सहज महसूस करूँगी? क्या मैं अपने स्वाभाविक स्वरूप में रहूँगी? ओह, यह तो कुछ ज़्यादा ही है, लेकिन मैं
इसे कृतज्ञता और आनंद के साथ स्वीकार करें। हे परमपिता, क्या आप जानते हैं कि बेहतर होगा कि आप मुझे मेरे स्वाभाविक स्वरूप में आने के लिए आमंत्रित न करें। जोखिम न लें... मैं स्वयं इतनी दूर नहीं जाऊंगा। मैं आपको आपकी भलाई के लिए चेतावनी दे रहा हूं। खैर, बाकी सब अभी भी अनिश्चितता के कोहरे में डूबा हुआ है, हालांकि कुछ लोग ऐसे हैं जो आपके लिए मेरा वर्णन करने में प्रसन्न होंगे। मेरा मतलब आपसे है, प्योत्र अलेक्जेंड्रोविच। लेकिन हे पवित्र आत्मा, मैं आपको बता दूं, मैं परमानंद से भरा हुआ हूं।
वह उठा और अपने हाथ ऊपर उठाकर बोला, “गर्भा धन्य हो।”
जिसने तुझे जन्म दिया, और जिन स्तनों ने तुझे दूध पिलाया—विशेषकर वे स्तन। जब तुमने अभी कहा, ‘अपने आप पर इतना शर्म मत करो, क्योंकि यही तो सारी समस्या की जड़ है,’ तो तुम्हारी उस टिप्पणी ने मुझे अंदर तक झकझोर दिया और मेरे दिल को छू लिया। सचमुच, जब भी मैं लोगों से मिलता हूँ, मुझे लगता है कि मैं सबसे नीच हूँ और वे सब मुझे मूर्ख समझते हैं। इसलिए मैं कहता हूँ, ‘मुझे सचमुच मूर्ख बनने दो। मुझे तुम्हारी राय से डर नहीं है, क्योंकि तुम सब मुझसे भी बदतर हो।’ इसीलिए मैं मूर्ख हूँ। यह शर्म से है, हे बड़े, शर्म से; यह बस अति संवेदनशीलता है जो मुझे उद्दंड बना देती है। काश मुझे यकीन होता कि हर कोई मुझे सबसे दयालु और बुद्धिमान व्यक्ति के रूप में स्वीकार करेगा, हे भगवान, मैं कितना अच्छा इंसान होता! गुरुजी!”
वह अचानक घुटनों पर गिर पड़ा, “मुझे शाश्वत जीवन प्राप्त करने के लिए क्या करना चाहिए?”
अब भी यह तय करना मुश्किल था कि वह मजाक कर रहा था या सचमुच ऐसा कह रहा था।
स्थानांतरित।
फादर ज़ोसिमा ने अपनी आँखें ऊपर उठाते हुए उसकी ओर देखा और मुस्कुराते हुए कहा: “तुम्हें बहुत पहले से पता है कि तुम्हें क्या करना है। तुममें समझदारी है।”
बस करो: नशे और वाक्पटुता के आगे मत झुको; कामुक वासना के आगे मत झुको; और सबसे बढ़कर, धन के लोभ के आगे मत झुको। और अपने शराबखाने बंद कर दो। अगर सभी बंद नहीं कर सकते, तो कम से कम दो या तीन तो बंद कर ही दो। और सबसे बढ़कर—झूठ मत बोलो।
"आपका मतलब डिडेरोट के बारे में है?"
नहीं, डिडेरोट के बारे में नहीं। सबसे बढ़कर, खुद से झूठ मत बोलो। वह आदमी जो
खुद से झूठ बोलना और अपने ही झूठ को सुनना इस हद तक बढ़ जाता है कि वह अपने भीतर और अपने आसपास की सच्चाई में फर्क नहीं कर पाता, और इस तरह खुद के लिए और दूसरों के लिए सारा सम्मान खो देता है। सम्मान न होने पर वह प्रेम करना छोड़ देता है, और प्रेमहीनता में खुद को व्यस्त रखने और ध्यान भटकाने के लिए वासनाओं और व्यभिचारी सुखों के आगे झुक जाता है, और अपनी बुराइयों में पशुता की हद तक डूब जाता है, यह सब लगातार दूसरों से और खुद से झूठ बोलने के कारण होता है। जो व्यक्ति खुद से झूठ बोलता है, वह दूसरों की तुलना में कहीं अधिक आसानी से नाराज हो जाता है। आप जानते हैं कि कभी-कभी नाराज होना बहुत सुखद होता है, है ना? एक व्यक्ति जानता है कि किसी ने उसका अपमान नहीं किया है, बल्कि उसने खुद ही अपमान गढ़ा है, झूठ बोला है और उसे बढ़ा-चढ़ाकर पेश किया है, एक शब्द को पकड़कर तिल का ताड़ बना दिया है—वह यह खुद जानता है, फिर भी वह सबसे पहले नाराज होगा, और

अपने आक्रोश में तब तक डूबा रहेगा जब तक उसे उसमें बहुत आनंद न मिलने लगे, और इस तरह वह सचमुच प्रतिशोध की ओर बढ़ जाएगा। लेकिन उठो, बैठो, मैं आपसे विनती करता हूँ। यह सब भी कपटपूर्ण दिखावा है... ।
“हे भगवान! मुझे अपना हाथ चूमने के लिए दो।”
फ्योदोर पावलोविच उछलते हुए उठे और बड़े व्यक्ति के चेहरे पर झटपट चुंबन कर दिया।
पतला हाथ। “हाँ, नाराज़ होना सुखद होता है। आपने यह बात बहुत अच्छे से कही, क्योंकि मैंने इसे पहले कभी नहीं सुना था। हाँ, मैं जीवन भर नाराज़ होता रहा हूँ, खुद को खुश करने के लिए, सौंदर्यबोध के आधार पर नाराज़ होता रहा हूँ, क्योंकि कभी-कभी अपमानित होना सुखद नहीं, बल्कि विशिष्ट होता है—आप भूल गए थे, महानुभाव, यह विशिष्ट होता है! मैं इसे नोट कर लूँगा। लेकिन मैं झूठ बोलता रहा हूँ, पूरी ज़िंदगी, हर दिन और हर घंटे, झूठ बोलता रहा हूँ। सच में, मैं झूठ हूँ, और झूठ का बाप हूँ। हालाँकि मुझे लगता है कि मैं झूठ का बाप नहीं हूँ। मैं अपने लेखों में उलझ रहा हूँ। बस, झूठ का बेटा कह दीजिए, और इतना ही काफी होगा। बस... मेरे देवदूत... मैं कभी-कभी दिदेरोत के बारे में बात कर सकता हूँ! दिदेरोत से कोई नुकसान नहीं होगा, हालाँकि कभी-कभी एक शब्द नुकसान कर सकता है। महानुभाव, वैसे, मैं भूल रहा था, हालाँकि मैं पिछले दो सालों से यहाँ कुछ पूछने और पता लगाने के लिए आने का इरादा रखता था। बस प्योत्र अलेक्जेंड्रोविच को बता दीजिए कि मुझे बीच में न टोकें। मेरा सवाल यह है: क्या यह हे परमपिता, क्या यह सच है कि संतों के जीवनग्रन्थों में कहीं एक ऐसे पवित्र संत की कहानी मिलती है, जो अपने विश्वास के लिए शहीद हो गए थे और जब अंत में उनका सिर काट दिया गया, तो वे खड़े हुए, अपना सिर उठाया और 'विनम्रतापूर्वक उसे चूमते हुए' उसे हाथों में लिए हुए दूर तक चले। क्या यह सच है, आदरणीय परमपिता?
“नहीं, यह सच नहीं है,” बुजुर्ग ने कहा।
सभी संतों के जीवन में ऐसा कुछ भी नहीं है। संत ऐसा क्या करते हैं?
"आपका कहना है कि कहानी सुनाई जाती है?" फादर लाइब्रेरियन ने पूछा।
मुझे नहीं पता कि वह कौन सा संत है। मुझे नहीं पता, और मैं बता भी नहीं सकता। मुझे धोखा दिया गया था। मुझे यह कहानी सुनाई गई थी। मैंने इसे सुना था, और क्या आप जानते हैं कि इसे किसने सुनाया था? यहाँ प्योत्र अलेक्सांद्रोविच मियूसोव ने, जो अभी-अभी डिडेरोट को लेकर बहुत गुस्से में थे। कहानी उन्होंने ही सुनाई थी।
मैंने तुम्हें यह बात कभी नहीं बताई, मैं तुमसे कभी बात ही नहीं करता।
“यह सच है कि आपने मुझे नहीं बताया, लेकिन आपने यह तब बताया जब मैं मौजूद थी।
तीन साल पहले। मैंने इसका ज़िक्र इसलिए किया क्योंकि उस बेतुकी कहानी से तुमने मेरा विश्वास हिला दिया, प्योत्र अलेक्सांद्रोविच। तुम्हें इसके बारे में कुछ पता नहीं था, लेकिन मैं अपना विश्वास डगमगाते हुए घर लौटा, और तब से मेरा विश्वास और भी डगमगाता जा रहा है। हाँ, प्योत्र अलेक्सांद्रोविच, तुम ही मेरे इस बड़े पतन का कारण थे। यह कोई डिडेरोट नहीं था!
फ्योडोर पावलोविच उत्तेजित और दयनीय हो गए, हालांकि यह बिल्कुल स्पष्ट था।
अब तक सभी को पता चल चुका था कि वह एक बार फिर से अपनी भूमिका निभा रहा है। फिर भी मियूसोव को उसके शब्दों से ठेस पहुंची।
“क्या बकवास है, और यह सब बकवास है,” उसने बुदबुदाते हुए कहा। “हो सकता है कि मैं सचमुच में मैंने ये बात कभी न कभी सुनी ही होगी... लेकिन तुम्हें नहीं। मुझे खुद ये बात बताई गई थी। मैंने इसे पेरिस में एक फ्रांसीसी से सुना था। उसने मुझे बताया कि हमारी प्रार्थना सभा में इसे संतों के जीवनग्रंथों से पढ़ा जाता है... वो बहुत विद्वान व्यक्ति थे जिन्होंने रूसी सांख्यिकी का विशेष अध्ययन किया था और रूस में लंबे समय तक रहे थे... मैंने खुद संतों के जीवनग्रंथ नहीं पढ़े हैं, और न ही मैं उन्हें पढ़ने वाला हूँ... खाने के समय तरह-तरह की बातें होती हैं—हम उस समय खाना खा रहे थे।
“हाँ, तुम उस समय भोजन कर रहे थे, और इसीलिए मेरा विश्वास डगमगा गया!” फ्योडोर ने कहा।
पावलोविच उनकी नकल कर रहे थे।
“मुझे तुम्हारे धर्म से क्या लेना-देना?” मियूसोव लगभग चिल्लाने ही वाला था।
लेकिन अचानक उसने खुद को रोका और तिरस्कारपूर्वक कहा, "तुम जिस भी चीज को छूते हो उसे अपवित्र कर देते हो।"

बुज़ुर्ग व्यक्ति अचानक अपनी सीट से उठ खड़े हुए। "क्षमा कीजिए, सज्जनों, क्योंकि..."
“मैं आपको कुछ मिनटों के लिए छोड़ रहा हूँ,” उन्होंने अपने सभी मेहमानों को संबोधित करते हुए कहा। “मेरे कुछ आगंतुक हैं जो आपसे पहले आ चुके हैं। लेकिन फिर भी आप झूठ मत बोलना,” उन्होंने मुस्कुराते हुए चेहरे से फ्योदोर पावलोविच की ओर मुड़ते हुए कहा। वे कोठरी से बाहर निकल गए। अलेयोशा और नौसिखिए उन्हें सीढ़ियों से नीचे उतारने के लिए दौड़ पड़े। अलेयोशा की सांस फूल रही थी: वह वहाँ से निकलकर खुश था, लेकिन इस बात से भी खुश था कि बुजुर्ग का स्वभाव अच्छा था और वे नाराज नहीं हुए। फादर ज़ोस्सिमा बरामदे की ओर जा रहे थे ताकि वहाँ उनका इंतज़ार कर रहे लोगों को आशीर्वाद दे सकें। लेकिन फ्योदोर पावलोविच ने उन्हें कोठरी के दरवाजे पर ही रोक दिया।
“हे भगवान!” वह भावुक होकर बोला। “मुझे आपका हाथ चूमने दीजिए।”
एक बार फिर। हाँ, तुम्हारे साथ मैं अब भी बात कर सकता हूँ, अब भी तालमेल बिठा सकता हूँ। क्या तुम्हें लगता है कि मैं हमेशा झूठ बोलता हूँ और इस तरह मूर्खता करता हूँ? यकीन मानो, मैं जानबूझकर ऐसा व्यवहार करता रहा हूँ ताकि तुम्हारी परीक्षा ले सकूँ। मैं हर समय तुम्हारी परीक्षा लेता रहा हूँ कि क्या मैं तुम्हारे साथ तालमेल बिठा सकता हूँ। क्या तुम्हारे अहंकार के आगे मेरी विनम्रता के लिए कोई जगह है? मैं तुम्हें गवाही देने के लिए तैयार हूँ कि तुम्हारे साथ तालमेल बिठाया जा सकता है! लेकिन अब, मैं चुप रहूँगा; मैं हमेशा चुप रहूँगा। मैं कुर्सी पर बैठूँगा और अपनी ज़बान बंद रखूँगा। अब बोलने की बारी तुम्हारी है, प्योत्र अलेक्जेंड्रोविच। अब तुम ही मुख्य व्यक्ति बचे हो—दस मिनट के लिए।

अध्याय 3

आस्था रखने वाली किसान महिलाएं

परिसर की बाहरी दीवार से सटे लकड़ी के बरामदे के पास, लगभग बीस किसान महिलाओं की भीड़ जमा थी। उन्हें बताया गया था कि बुजुर्ग अंततः बाहर आ रहे हैं, और वे उत्सुकता से वहाँ इकट्ठा हो गई थीं। दो महिलाएं, मैडम होहलाकोव और उनकी बेटी भी बुजुर्ग का इंतजार करने के लिए बरामदे में आई थीं, लेकिन बरामदे के एक अलग हिस्से में, जो उच्च वर्ग की महिलाओं के लिए आरक्षित था।
मैडम होहलाकोव एक धनी महिला थीं, जो अभी भी युवा और आकर्षक थीं, और
वह हमेशा सलीके से कपड़े पहनती थी। उसका रंग कुछ पीला था और उसकी काली आँखें बहुत जीवंत थीं। उसकी उम्र तैंतीस वर्ष से अधिक नहीं थी और वह पाँच वर्ष से विधवा थी। उसकी चौदह वर्षीय बेटी आंशिक रूप से लकवाग्रस्त थी। बेचारी बच्ची पिछले छह महीनों से चल नहीं पा रही थी और उसे एक लंबी लेटने वाली कुर्सी पर बिठाकर इधर-उधर ले जाया जाता था। उसका चेहरा छोटा और प्यारा था, बीमारी के कारण थोड़ा पतला था, लेकिन वह हंसमुख थी। उसकी बड़ी काली आँखों में, जिनकी पलकें लंबी थीं, शरारत की एक झलक थी। उसकी माँ वसंत ऋतु से ही उसे विदेश ले जाने की योजना बना रही थी, लेकिन गर्मियों भर वे अपनी संपत्ति से संबंधित कामों में व्यस्त रहे। वे एक सप्ताह से हमारे शहर में रुके हुए थे, जहाँ वे धार्मिक कार्यों से अधिक व्यापार के उद्देश्य से आए थे, लेकिन तीन दिन पहले ही वे फादर ज़ोस्सिमा से एक बार मिल चुके थे। हालाँकि वे जानते थे कि बुजुर्ग शायद ही किसी से मिलते हैं, फिर भी वे अचानक फिर से आ गए थे और उन्होंने "महान चिकित्सक के दर्शन का सौभाग्य" पाने के लिए विनती की थी।
मां अपनी बेटी के विकलांग बच्चे के बगल में एक कुर्सी पर बैठी थी।
गाड़ी के पास, उससे दो कदम की दूरी पर एक बूढ़ा भिक्षु खड़ा था, जो हमारे मठ का नहीं, बल्कि सुदूर उत्तर में स्थित एक अज्ञात धार्मिक संस्थान से आया हुआ आगंतुक था। वह भी उस बुजुर्ग भिक्षु का आशीर्वाद चाहता था।
लेकिन फादर ज़ोसिमा, बरामदे में प्रवेश करते ही सबसे पहले सीधे उस ओर चले गए।
तीन सीढ़ियों के नीचे किसान जमा थे जो बरामदे की ओर जाती थीं। फादर ज़ोस्सिमा सबसे ऊपर वाली सीढ़ी पर खड़े हुए, अपना शॉल ओढ़ा और अपने चारों ओर जमा महिलाओं को आशीर्वाद देने लगे। एक पागल औरत को उनके पास लाया गया। जैसे ही उसने बुजुर्ग को देखा, वह प्रसव पीड़ा की तरह चीखने और तड़पने लगी। उन्होंने शॉल उसके माथे पर रखा और उसके लिए एक छोटी सी प्रार्थना पढ़ी, जिससे वह तुरंत शांत हो गई।
मुझे नहीं पता कि अब स्थिति कैसी होगी, लेकिन मेरे बचपन में अक्सर ऐसा होता था
गांवों और मठों में इन "भूत-प्रेतग्रस्त" महिलाओं को देखना और सुनना एक अनोखा अनुभव था। उन्हें प्रार्थना सभा में लाया जाता था; वे कुत्ते की तरह चीखती और भौंकती थीं, जिससे उनकी आवाज पूरे चर्च में सुनाई देती थी। लेकिन जब पवित्र प्रसाद लाया जाता और उन्हें उसके पास ले जाया जाता, तो तुरंत ही उनका "भूत-प्रेतग्रस्त" होना बंद हो जाता और बीमार महिलाएं कुछ समय के लिए शांत हो जाती थीं। बचपन में मैं इससे बहुत प्रभावित और आश्चर्यचकित हुआ था; लेकिन फिर मैंने ग्रामीण पड़ोसियों और शहर के शिक्षकों से सुना कि यह सारी बीमारी काम से बचने के लिए एक नाटक थी, और इसे उचित सख्ती से ठीक किया जा सकता था; इस बात की पुष्टि के लिए कई किस्से सुनाए गए। लेकिन बाद में मैंने चिकित्सा विशेषज्ञों से आश्चर्यपूर्वक जाना कि इसमें कोई दिखावा नहीं है, यह एक भयानक बीमारी है जिससे महिलाएं ग्रस्त होती हैं, खासकर रूस में, और यह किसान महिलाओं की कठिन परिस्थितियों के कारण होती है। मुझे बताया गया कि यह एक ऐसी बीमारी है जो प्रसव के दौरान कठिन, असामान्य और बिना सहायता के प्रसव के तुरंत बाद अत्यधिक परिश्रम करने, और मार-पीट आदि से उत्पन्न होती है, जिसे कुछ महिलाएं दूसरों की तरह सहन नहीं कर पातीं। पवित्र संस्कार के लिए लाए जाते ही उस बेचैन और संघर्षरत महिला का चमत्कारिक और तात्कालिक उपचार, जिसे मुझे बहानेबाजी और "पुजारियों" की चालाकी के कारण बताया गया था, संभवतः सबसे स्वाभाविक तरीके से हुआ। उसकी देखभाल करने वाली महिलाएं और स्वयं बीमार महिला दोनों को इस बात

पर पूर्ण विश्वास था कि यदि बीमार महिला को संस्कार के लिए लाया जाए और उसके सामने सिर झुकाया जाए तो उस पर हावी दुष्ट आत्मा टिक नहीं पाएगी। और इसलिए, एक तंत्रिका संबंधी और मानसिक रूप से विक्षिप्त महिला के साथ, उपचार के चमत्कार की अपेक्षा और इस अटूट विश्वास से प्रेरित होकर, संस्कार के सामने सिर झुकाते ही पूरे शरीर में एक प्रकार का कंपन होता था, और होना ही था। और ऐसा हुआ भी, हालांकि केवल एक क्षण के लिए। जैसे ही बुजुर्ग महिला ने बीमार महिला को शॉल से छुआ, ठीक वैसा ही हो गया।
भीड़ में मौजूद कई महिलाएं इस दृश्य को देखकर खुशी के आंसुओं से भर उठीं।
उस क्षण का प्रभाव: कुछ लोग उसके वस्त्र के किनारे को चूमने के लिए बेताब थे, तो कुछ अन्य लोग मधुर स्वर में चिल्ला रहे थे।
उन्होंने उन सभी को आशीर्वाद दिया और उनमें से कुछ से बात की। “प्रेतग्रस्त”
वह महिला जिसे वह पहले से जानता था। वह मठ से मात्र छह वर्स्ट दूर एक गाँव से आई थी, और उसे पहले भी उसके पास लाया जा चुका था।
“लेकिन दूर से एक दिख रही है।” उन्होंने एक महिला की ओर इशारा किया जो उम्र में तो नहीं थी, लेकिन बेहद दुबली-पतली और कमजोर थी, जिसका चेहरा धूप से झुलसने के साथ-साथ लगभग काला पड़ गया था। वह घुटनों के बल बैठी बुजुर्ग को टकटकी लगाए देख रही थी; उसकी आँखों में मानो उन्माद सा झलक रहा था।
“बहुत दूर से, पिताजी, बहुत दूर से! दो सौ मील दूर से!
"यहाँ। दूर से, पिताजी, दूर से!" महिला ने एक मधुर स्वर में कहना शुरू किया, मानो वह शोकगीत गा रही हो, अपना सिर अगल-बगल हिलाते हुए और अपना गाल हाथ पर टिकाए हुए।
वहाँ मौन और धीरज से भरी उदासी का सामना करना पड़ता है।
किसान जीवन। यह अपने आप में सिमट जाता है और शांत हो जाता है। लेकिन एक दुःख फूट पड़ता है, और उसी क्षण से यह आँसुओं में फूट पड़ता है और विलाप में अपना व्यथा प्रकट करता है। यह विशेष रूप से महिलाओं में आम है। लेकिन यह मौन दुःख से हल्का नहीं होता। विलाप केवल हृदय को और अधिक घाव देकर ही सांत्वना प्रदान करते हैं। ऐसा दुःख सांत्वना नहीं चाहता। यह अपनी निराशा की भावना से पोषित होता है। विलाप केवल घाव को फिर से कुरेदने की निरंतर लालसा से ही उत्पन्न होते हैं।
“आप कारीगर वर्ग से हैं?” फादर ज़ोसिमा ने देखते हुए पूछा।
उत्सुकता से उसकी ओर।
“हम शहरवासी हैं, पिताजी, शहरवासी। फिर भी हम किसान हैं, भले ही हम यहीं रहते हों।”
शहर में। हे पिता! मैं आपसे मिलने आई हूँ। हमने आपके बारे में सुना है, पिता! मैंने अपने छोटे बेटे को दफनाया है और तीर्थयात्रा पर आई हूँ। मैं तीन मठों में गई, लेकिन उन्होंने मुझसे कहा, 'जाओ, नस्तास्या, उनके पास जाओ'—अर्थात आपके पास। मैं आ गई हूँ; मैं कल पूजा में थी और आज आपके पास आई हूँ। तुम किसलिए रो रहे हो?
“पिताजी, मैं अपने छोटे बेटे के लिए शोक मना रही हूँ। वह तीन साल का था—”
तीन साल बीत गए, बस तीन महीने बाकी हैं। हे पिता, मैं अपने नन्हे बेटे के लिए व्याकुल हूँ, अपने नन्हे बेटे के लिए। वही आखिरी बचा था। हम चार बच्चे थे, निकिता और मैं, और अब हमारे कोई बच्चे नहीं हैं, हमारे सभी प्रियजन हमें छोड़कर चले गए हैं। मैंने पहले तीन को बिना ज्यादा शोक मनाए दफना दिया था, और अब मैंने आखिरी को भी दफना दिया है, मैं उसे भूल नहीं पा रही हूँ। वह हमेशा मेरे सामने खड़ा रहता है। वह मुझे कभी नहीं छोड़ता। उसने मेरे दिल को मुरझा दिया है। मैं उसके छोटे कपड़े, उसकी छोटी कमीज, उसके छोटे जूते देखती हूँ और विलाप करती हूँ। मैं उसकी बची हुई हर चीज, उसकी छोटी-छोटी चीजें, सब कुछ निकाल कर रखती हूँ। मैं उन्हें देखती हूँ और विलाप करती हूँ। मैं अपने पति निकिता से कहती हूँ, 'मुझे तीर्थयात्रा पर जाने दीजिए, स्वामी।' वह एक ड्राइवर है। हम गरीब नहीं हैं, पिताजी, गरीब नहीं; वह हमारा अपना घोड़ा चलाता है। सब कुछ हमारा अपना है, घोड़ा और गाड़ी। और अब इन सबका हमारे लिए क्या फायदा? मेरे जाने के बाद निकिता ने शराब पीना शुरू कर दिया है। वह जरूर पीता होगा। पहले भी ऐसा ही होता था। जैसे ही मैं पीठ फेरती हूँ, वह पीछे हट जाता है। लेकिन अब मैं उसके बारे में नहीं सोचती। घर छोड़े तीन महीने हो गए हैं। मैं उसे भूल चुकी हूँ। मैं सब कुछ भूल चुकी हूँ। मैं याद नहीं करना चाहती। और अब

हमारा साथ में जीवन कैसा होगा? मेरा उससे नाता टूट गया है, मेरा सबसे नाता टूट गया है। मुझे अपने घर और अपने सामान को देखने की भी परवाह नहीं है। मुझे कुछ भी देखने की परवाह नहीं है!
"सुनो, माँ," बड़े ने कहा। "पुराने समय में एक पवित्र संत ने देखा कि
मंदिर में, आप जैसी एक माँ अपने इकलौते बच्चे के लिए रो रही थी, जिसे परमेश्वर ने अपने पास बुला लिया था। संत ने उससे कहा, "क्या तुम नहीं जानतीं कि ये बच्चे परमेश्वर के सिंहासन के सामने कितने साहसी हैं? स्वर्ग के राज्य में इनसे अधिक साहसी कोई नहीं है। वे कहते हैं, "हे प्रभु, तूने हमें जीवन दिया था, और हमने अभी देखा भी नहीं था कि तूने उसे वापस ले लिया।" और वे इतने साहस से बार-बार प्रार्थना करते हैं कि परमेश्वर उन्हें तुरंत स्वर्गदूतों का दर्जा दे दे। इसलिए," संत ने कहा, "हे माँ, तुम भी आनन्द करो और रोओ मत, क्योंकि तुम्हारा छोटा बेटा प्रभु के साथ स्वर्गदूतों की संगति में है।" संत ने उस प्राचीन रोती हुई माँ से यही कहा था। वे एक महान संत थे और वे झूठ नहीं बोल सकते थे। इसलिए, हे माँ, तुम भी जान लो कि तुम्हारा छोटा बच्चा निश्चित रूप से परमेश्वर के सिंहासन के सामने है, आनन्दित और प्रसन्न है, और तुम्हारे लिए परमेश्वर से प्रार्थना कर रहा है, इसलिए रोओ मत, बल्कि आनन्द करो।"
महिला ने अपना गाल हाथ में रखकर नीचे की ओर देखते हुए उसकी बात सुनी।
उसने गहरी सांस ली।
"मेरी निकिता ने भी मुझे उन्हीं शब्दों से दिलासा देने की कोशिश की, जैसे तुमने कहे थे। 'मूर्ख'"
"एक," उन्होंने कहा, "क्यों रो रही हो? हमारा बेटा तो निःसंदेह ईश्वर के सामने स्वर्गदूतों के साथ गा रहा होगा।" वे मुझसे ऐसा कहते हैं, पर स्वयं रोते हैं। मैं देखती हूँ कि वे मेरी ही तरह रो रहे हैं। "मैं जानती हूँ, निकिता," मैंने कहा। "वह प्रभु ईश्वर के साथ ही तो है, और कहाँ होगा? बस, अब वह हमारे साथ वैसा नहीं है जैसा पहले हुआ करता था।" काश, मैं उसे एक पल के लिए देख पाती, काश, बिना उसके पास जाए, बिना कुछ बोले, काश मैं किसी कोने में छिपकर उसे एक पल के लिए देख पाती, उसे आँगन में खेलते हुए सुन पाती, उसकी नन्ही सी आवाज़ में पुकारते हुए, 'मम्मी, तुम कहाँ हो?' काश, मैं उसे कमरे में अपने नन्हे-नन्हे कदमों से इधर-उधर भागते हुए एक बार सुन पाती, बस एक बार; क्योंकि कितनी बार, कितनी बार मुझे याद आता है कि वह कैसे मेरे पास दौड़कर आता था, चिल्लाता था और हँसता था, काश मैं उसके नन्हे-नन्हे कदमों की आहट सुन पाती तो मैं उसे पहचान लेती! पर वह चला गया, पिताजी, वह चला गया, और मैं उसे फिर कभी नहीं सुन पाऊँगी। ये रही उसकी छोटी सी कमरबंद, लेकिन अब मैं उसे कभी देख या सुन नहीं पाऊंगा।
उसने अपने सीने से अपने बेटे का छोटा कढ़ाईदार कमरबंद निकाला, और जैसे ही
जैसे ही उसने उसे देखा, वह सिसकियों से कांपने लगी, अपनी उंगलियों से अपनी आंखों को छुपा लिया, जिनसे आंसू अचानक धारा की तरह बहने लगे।
"यह तो पुराने समय की राहेल है," बड़े ने कहा, "जो अपने बच्चों के लिए रो रही है और उन्हें सांत्वना नहीं दी जा रही क्योंकि वे अब नहीं हैं। हे माताओं, यही इस धरती पर तुम्हारा भाग्य है। सांत्वना मत लो। तुम्हें सांत्वना की आवश्यकता नहीं है। रोओ, सांत्वना मत लो, बस रोते रहो। बस हर बार जब तुम रोओ, तो याद रखना कि तुम्हारा छोटा बेटा परमेश्वर के दूतों में से एक है, वह ऊपर से तुम्हें देख रहा है, तुम्हें देख रहा है, तुम्हारे आँसुओं पर प्रसन्न हो रहा है और उन्हें प्रभु परमेश्वर की ओर इशारा कर रहा है; और तुम अभी बहुत समय तक उस महान माता के दुःख को अपने भीतर रखोगी। लेकिन अंत में यह शांत आनंद में बदल जाएगा, और तुम्हारे कड़वे आँसू केवल कोमल दुःख के आँसू होंगे जो हृदय को शुद्ध करते हैं और उसे पाप से मुक्त करते हैं। और मैं तुम्हारे बच्चे की आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना करूँगा। उसका नाम क्या था?"
"एलेक्सी, पिताजी।"
"कितना प्यारा नाम है। क्या यह नाम ईश्वर के सेवक एलेक्सी के नाम पर रखा गया है?"
"जी हां, पिताजी।"
"वे कितने संत थे! माँ, मैं उन्हें और आपके दुख को हमेशा याद रखूँगी।"
मेरी प्रार्थनाएं आपके साथ हैं, और मैं आपके पति के स्वास्थ्य के लिए प्रार्थना करूंगी। आपका उन्हें छोड़ना पाप है। आपका छोटा बच्चा स्वर्ग से देखेगा कि आपने उसके पिता को त्याग दिया है, और वह आपके लिए रोएगा। आप उनकी खुशी क्यों भंग कर रही हैं? वह जीवित हैं, क्योंकि आत्मा शाश्वत है, और यद्यपि वह घर में नहीं हैं, फिर भी वह अदृश्य रूप से आपके निकट हैं। जब आप कहती हैं कि घर आपको अप्रिय लगता है, तो वह घर में कैसे जा सकते हैं? यदि वह आपको, अपने माता-पिता को, साथ नहीं पाते हैं, तो वह किसके पास

जाएंगे? वह अब आपको सपनों में आते हैं, और आप दुखी होती हैं। लेकिन फिर वह आपको सुखद सपने भेजेंगे। अपने पति के पास जाओ, माँ; आज ही जाओ।
“हे पिता, मैं आपके कहने पर जाऊँगा। मैं जाऊँगा। आप सीधे मेरे पास आए हैं।”
“मेरे दिल। मेरे निकिता, मेरे निकिता, तुम मेरा इंतज़ार कर रहे हो,” महिला ने मधुर स्वर में कहना शुरू किया; लेकिन बुजुर्ग महिला पहले ही एक बहुत बूढ़ी महिला की ओर मुड़ चुकी थी, जो तीर्थयात्री की तरह नहीं बल्कि कस्बे की निवासी की तरह कपड़े पहने थी। उसकी आँखों से पता चल रहा था कि वह किसी उद्देश्य से आई है और कुछ कहना चाहती है। उसने बताया कि वह एक गैर-कमीशन अधिकारी की विधवा है और पास ही कस्बे में रहती है। उसका बेटा वासेन्का कमिसारिएट सेवा में था और साइबेरिया के इरकुत्स्क गया हुआ था। उसने वहाँ से दो बार पत्र लिखा था, लेकिन अब एक साल बीत चुका था जब उसने कोई पत्र नहीं लिखा था। उसने उसके बारे में पूछताछ की, लेकिन उसे पता नहीं था कि कहाँ पूछना उचित होगा।
“अभी कुछ ही दिन पहले स्टेपनिदा इलिनिशना—वह एक अमीर व्यापारी की पत्नी है”
—उन्होंने मुझसे कहा, ‘प्रहोरोवना, आप जाइए और चर्च में अपने बेटे का नाम प्रार्थना के लिए लिखवाइए, और उसकी आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना कीजिए, मानो वह मर गया हो। उसकी आत्मा व्याकुल होगी,’ उन्होंने कहा, ‘और वह आपको एक पत्र लिखेगा।’ और स्टेपनिदा इलिनिशना ने मुझे बताया कि यह एक निश्चित बात है जिसे कई बार आजमाया जा चुका है। केवल मुझे ही संदेह है... हे हमारी ज्योति! क्या यह सच है या झूठ, और क्या यह सही होगा?’
इसके बारे में सोचना भी मत। यह सवाल पूछना शर्मनाक है। यह कैसे संभव है?
किसी जीवित आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना करना? और वो भी उसकी माँ के लिए! ये तो घोर पाप है, जादू-टोने के समान। केवल तुम्हारी अज्ञानता के कारण ही तुम्हें क्षमा किया जा रहा है। बेहतर होगा कि तुम स्वर्ग की रानी, हमारी शीघ्र रक्षक और सहायक, से उसके अच्छे स्वास्थ्य के लिए प्रार्थना करो और यह भी प्रार्थना करो कि वो तुम्हें तुम्हारी गलती के लिए क्षमा कर दे। और एक बात मैं तुम्हें बताऊँगी, प्रोहोरोव्ना। या तो तुम्हारा बेटा जल्द ही तुम्हारे पास लौट आएगा, या वह तुम्हें पत्र अवश्य भेजेगा। जाओ, और अब से निश्चिंत रहो। तुम्हारा बेटा जीवित है, मैं तुम्हें बता रही हूँ।
हे प्रिय पिता, ईश्वर आपको पुरस्कृत करें, आप हमारे उपकारक हैं, जो हम सभी के लिए प्रार्थना करते हैं। और हमारे पापों के लिए!
लेकिन बुजुर्ग ने भीड़ में पहले ही दो चमकती हुई आँखों को टकटकी लगाए देख लिया था।
उस पर। एक थकी हुई, तपेदिक से ग्रसित दिखने वाली, हालांकि युवा किसान महिला चुपचाप उसे निहार रही थी। उसकी आँखें उससे विनती कर रही थीं, लेकिन वह पास आने से डरी हुई प्रतीत हो रही थी।
“क्या बात है, मेरे बच्चे?”
“हे पिता, मेरी आत्मा को क्षमा कर दीजिए,” उसने कोमल स्वर में कहा और धीरे-धीरे नीचे गिर पड़ी। उसने घुटने टेक दिए और उनके चरणों में गिर पड़ी। “हे पिता, मैंने पाप किया है। मुझे अपने पाप से डर लगता है।”
बुजुर्ग व्यक्ति निचली सीढ़ी पर बैठ गया। महिला धीरे-धीरे उसके पास सरक गई।
वह अभी भी घुटनों के बल बैठी है।
“मैं पिछले तीन सालों से विधवा हूँ,” उसने धीमी आवाज़ में कहना शुरू किया।
एक तरह की सिहरन। “मेरे पति के साथ मेरा जीवन बहुत कठिन था। वह बूढ़े थे। वह मुझे बेरहमी से पीटते थे। वह बीमार पड़े रहते थे; उन्हें देखकर मैं सोचती थी, अगर वह ठीक हो गए, अगर वह फिर से उठ खड़े हुए, तो फिर क्या होगा? और तभी मेरे मन में यह विचार आया—”
“रुको!” बड़े ने कहा और अपना कान उसके होठों के पास ले गया। महिला धीमी फुसफुसाहट में बोलती रही, जिससे उसे सुनना लगभग असंभव था।
कुछ भी पकड़ने के लिए। उसने जल्द ही ऐसा कर लिया था।
“तीन साल पहले?” बुजुर्ग ने पूछा।
“तीन साल। पहले तो मैंने इसके बारे में सोचा ही नहीं था, लेकिन अब मैं इस बारे में सोचने लगा हूँ।”
मैं बीमार हूँ, और यह ख्याल मुझे कभी नहीं छोड़ता।
“क्या आप बहुत दूर से आए हैं?”

"तीन सौ मील से भी अधिक दूर।"
"क्या आपने इसे अपने इकबालिया बयान में बताया है?"
मैंने इसे स्वीकार किया है। मैंने इसे दो बार स्वीकार किया है।
क्या आपको कम्युनियन में शामिल होने की अनुमति मिल गई है?
“हां। मुझे डर लग रहा है। मुझे मरने से डर लग रहा है।”
किसी बात से मत डरो और कभी भयभीत मत हो; और चिंता मत करो। अगर केवल तुम्हारा पश्चाताप ही निराश मत हो, ईश्वर सब क्षमा कर देगा। इस पृथ्वी पर ऐसा कोई पाप नहीं है, और न ही हो सकता है, जिसे प्रभु सच्चे पश्चातापी को क्षमा न करे! मनुष्य ऐसा कोई पाप नहीं कर सकता जो ईश्वर के अनंत प्रेम को समाप्त कर दे। क्या कोई ऐसा पाप हो सकता है जो ईश्वर के प्रेम से भी बढ़कर हो? केवल पश्चाताप के बारे में सोचो, निरंतर पश्चाताप के बारे में, और भय को पूरी तरह त्याग दो। विश्वास करो कि ईश्वर तुमसे इतना प्रेम करता है जितना तुम कल्पना भी नहीं कर सकते; कि वह तुमसे तुम्हारे पाप सहित, तुम्हारे पाप में प्रेम करता है। प्राचीन काल से कहा जाता रहा है कि एक पश्चातापी पापी पर स्वर्ग में दस धर्मी पुरुषों से अधिक आनंद होता है। जाओ, और भयभीत मत हो। मनुष्यों के प्रति कड़वाहट मत रखो। यदि तुम्हारे साथ अन्याय हुआ हो तो क्रोधित मत हो। अपने हृदय में मृत व्यक्ति को उसके द्वारा किए गए अन्याय के लिए क्षमा कर दो। उससे सत्य में मेल-मिलाप करो। यदि तुम पश्चातापी हो, तो तुम प्रेम करते हो। और यदि तुम प्रेम करते हो तो तुम ईश्वर के हो। सभी चीजों का प्रायश्चित प्रेम से होता है, सभी चीजों का उद्धार प्रेम से होता है। यदि मैं, एक पापी, तुम्हारी ही तरह, तुम्हारे प्रति कोमल और दयालु हूँ, तो ईश्वर कितना अधिक दयालु होगा। प्रेम एक ऐसा अनमोल खजाना है जिससे आप पूरे संसार का उद्धार कर सकते हैं और न केवल अपने पापों का बल्कि दूसरों के पापों का भी प्रायश्चित कर सकते हैं।
उसने उस पर तीन बार क्रॉस का निशान बनाया, अपने गले से थोड़ा सा उतार लिया
मैंने एक प्रतिमा उसके ऊपर रख दी। वह बिना कुछ बोले धरती पर सिर झुकाए खड़ी रही।
वह उठा और एक छोटी सी स्वस्थ किसान महिला को प्रसन्नतापूर्वक देखने लगा।
उसकी गोद में बच्चा है।
“विशेगोरी की ओर से, प्रिय पिता।”
“तुम बच्चे को लेकर पाँच मील तक घसीटती रही हो। अब तुम क्या करोगी?”
चाहना?"
मैं तुम्हें देखने आया हूँ। मैं पहले भी तुम्हारे पास आ चुका हूँ—या क्या तुम आ चुके हो?
भूल गए? अगर आप मुझे भूल गए हैं तो आपकी याददाश्त अच्छी नहीं है। उन्होंने हमें बताया था कि आप बीमार हैं। मैंने सोचा, मैं खुद जाकर देख लेता हूँ। अब मैंने आपको देख लिया है, और आप बीमार नहीं हैं! आप अगले बीस साल और जिएंगे। भगवान आपका भला करे! आपके लिए प्रार्थना करने वाले बहुत से लोग हैं; आप बीमार कैसे हो सकते हैं?
"बेटी, मैं हर बात के लिए तुम्हारा शुक्रिया अदा करती हूँ।"
“वैसे, मुझे एक बात पूछनी है, कोई बड़ी बात नहीं। यहाँ साठ हैं।”
कोपेक। हे प्रिय पिता, इन्हें मुझसे भी अधिक गरीब किसी को दे दीजिए। रास्ते में आते हुए मैंने सोचा, बेहतर होगा कि मैं उनके माध्यम से ही दूं। उन्हें पता होगा कि किसे देना है।
“धन्यवाद, मेरी प्रिय, धन्यवाद! तुम एक अच्छी महिला हो। मैं तुमसे प्यार करता हूँ। मैं ऐसा ही करूँगा।”
बिल्कुल। क्या यह आपकी छोटी बच्ची है?
“मेरी प्यारी बच्ची, पिताजी, लिज़ावेटा।”
“प्रभु आप दोनों को, आप और आपकी बच्ची लिज़ावेटा को आशीर्वाद दें! आपके पास
माँ, इससे मेरा हृदय प्रसन्न हो गया। अलविदा, प्यारे बच्चों, अलविदा, प्रियजनों।
उन्होंने उन सभी को आशीर्वाद दिया और उनके सामने झुककर प्रणाम किया।

अध्याय 4

कम आस्था वाली महिला

किसानों से उनकी बातचीत और उन्हें आशीर्वाद देते हुए देखकर एक आगंतुक की आंखों में चुपचाप आंसू आ गए और उन्होंने उन्हें अपने रूमाल से पोंछ लिया। वह कई मायनों में वास्तव में अच्छे स्वभाव वाली एक भावुक समाजसत्तात्मक महिला थीं। जब अंत में बुजुर्ग उनके पास गए तो उन्होंने उनका उत्साहपूर्वक स्वागत किया।
“आह, इस मार्मिक दृश्य को देखकर मुझे कैसा-कैसा महसूस हो रहा है!...”
भावुकता के कारण वह आगे बोल नहीं सकीं। “ओह, मैं लोगों के आपके प्रति प्रेम को समझती हूँ। मैं स्वयं भी लोगों से प्रेम करती हूँ। मैं उनसे प्रेम करना चाहती हूँ। और भला कौन हमारे महान रूसी लोगों से प्रेम करने से खुद को रोक सकता है, जो अपनी महानता में इतने सरल हैं!”
“आपकी बेटी की सेहत कैसी है? आप मुझसे दोबारा बात करना चाहते थे?”
“ओह, मैं इसके लिए बहुत बेसब्री से प्रार्थना कर रही थी, मैंने इसके लिए दुआ की थी! मैं
हम आपके द्वार पर तीन दिन तक घुटने टेककर प्रार्थना करने के लिए तैयार हैं, जब तक आप हमें अंदर आने की अनुमति न दें। हे महान चिकित्सक, हम आपके प्रति अपनी हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करने आए हैं। आपने मेरी लिसे को ठीक कर दिया, उसे पूर्णतः स्वस्थ कर दिया, केवल पिछले गुरुवार को उसके लिए प्रार्थना करके और उस पर अपने हाथ रखकर। हम यहाँ आपके हाथों को चूमने, अपनी भावनाओं और श्रद्धा को अर्पित करने के लिए आए हैं।
“ठीक होने से आपका क्या मतलब है? लेकिन वह तो अभी भी अपनी कुर्सी पर लेटी हुई है।”
“लेकिन गुरुवार से उसकी रात की बुखार की समस्या पूरी तरह से बंद हो गई है,” डॉक्टर ने कहा।
महिला घबराई हुई जल्दबाजी में बोली, “और बस इतना ही नहीं। उसके पैर पहले से ज़्यादा मज़बूत हो गए हैं। आज सुबह वह अच्छे से उठी; पूरी रात सोई थी। उसके गुलाबी गाल, उसकी चमकीली आँखें देखो! वह हमेशा रोती रहती थी, लेकिन अब हंसती है और खुशमिजाज़ है। आज सुबह उसने ज़िद की कि मैं उसे खड़ा होने दूँ, और वह बिना किसी सहारे के पूरे एक मिनट तक खड़ी रही। उसका कहना है कि दो हफ़्ते में वह क्वाड्रिल नृत्य करेगी। मैंने डॉक्टर हर्ज़ेनस्टुबे को बुलाया था। उन्होंने कंधे उचकाए और कहा, ‘मैं हैरान हूँ; मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा।’ और क्या आप चाहती हैं कि हम आपको परेशान करने के लिए यहाँ न आएँ, आपका शुक्रिया अदा करने के लिए न आएँ? लिसे, उनका शुक्रिया अदा करो—उनका शुक्रिया अदा करो!”
लिज़ का प्यारा सा हंसता हुआ चेहरा अचानक गंभीर हो गया। वह उठी।
उसने अपनी कुर्सी को जितना हो सके पीछे खींचा और बड़े व्यक्ति की ओर देखते हुए अपने हाथ उनके सामने जोड़ लिए, लेकिन खुद को रोक नहीं पाई और हंस पड़ी।
"यह उसी के लिए है," उसने अलेयोशा की ओर इशारा करते हुए कहा, और अपनी हंसी को न रोक पाने पर खुद पर बचकानी झुंझलाहट दिखा रही थी।
अगर किसी ने अलेयोशा को बड़े व्यक्ति के ठीक पीछे एक कदम पर खड़े देखा होता, तो वह
पल भर में उसके गालों पर लाली छा गई। उसकी आँखें चमक उठीं और उसने नीचे देखा।
“उसके पास आपके लिए एक संदेश है, एलेक्सी फ्योदोरोविच। आप कैसे हैं?”
मां ने अपना खूबसूरती से दस्ताने पहना हुआ हाथ अलेयोशा की ओर बढ़ाते हुए बात जारी रखी।
बुजुर्ग व्यक्ति ने मुड़कर अचानक अलेयोशा की ओर ध्यान से देखा।
बाद वाला व्यक्ति लीज़ के करीब गया और अजीबोगरीब ढंग से मुस्कुराते हुए, उसकी ओर अपना हाथ बढ़ाया। लीज़ ने एक महत्वपूर्ण भाव प्रकट किया।
“कैटरीना इवानोव्ना ने यह मेरे माध्यम से आपको भेजा है।” उसने उसे एक
छोटा सा नोट। "वह आपसे विशेष रूप से विनती करती है कि आप जितनी जल्दी हो सके उससे मिलने जाएं; कि आप उसे निराश नहीं करेंगे, बल्कि अवश्य आएंगे।"
“वो मुझे अपने पास आने के लिए कह रही है? मुझे? किसलिए?” अलेयोशा ने बुदबुदाते हुए कहा।

अत्यंत आश्चर्य। उसका चेहरा तुरंत चिंतित दिखने लगा।
“ओह, यह सब दिमित्री फ्योदोरोविच और जो कुछ हुआ है, उससे संबंधित है।”
“हाल ही में,” माँ ने जल्दी से समझाया। “कैटरीना इवानोव्ना ने अपना मन बना लिया है, लेकिन इस बारे में उन्हें आपसे मिलना होगा... क्यों, यह तो मैं नहीं बता सकती। लेकिन वह आपसे तुरंत मिलना चाहती हैं। और आपको उनसे मिलने जाना ही होगा, बिल्कुल। यह एक ईसाई कर्तव्य है।”
“मैंने उसे सिर्फ एक बार देखा है,” अलेयोशा ने उसी लहजे में विरोध जताया।
उलझन।
“ओह, वह कितनी महान, अतुलनीय हस्ती है! केवल उसके लिए ही सही।”
पीड़ा... सोचो उसने क्या-क्या सहा है, अब वह क्या झेल रही है! सोचो उसका आगे क्या इंतजार कर रहा है! यह सब भयानक है, बहुत भयानक!
“ठीक है, मैं आऊंगा,” अलेयोशा ने तेजी से चारों ओर नज़र घुमाने के बाद फैसला किया।
संक्षिप्त, रहस्यमय नोट, जिसमें बिना किसी स्पष्टीकरण के, उनसे आने का आग्रह किया गया था।
“ओह, यह तो आपकी कितनी प्यारी और उदारतापूर्ण बात होगी!” लिसे ने खुशी से कहा।
अचानक जोश से भर उठी। “मैंने माँ से कहा था कि तुम ज़रूर नहीं जाओगी। मैंने कहा था कि तुम अपनी आत्मा बचा रही हो। तुम कितनी शानदार हो! मैंने हमेशा तुम्हें शानदार समझा है। मुझे तुम्हें यह बताते हुए कितनी खुशी हो रही है!”
“लीज़!” उसकी माँ ने प्रभावशाली ढंग से कहा, हालाँकि बाद में वह मुस्कुराई।
मैंने यह कहा।
“तुम हमें पूरी तरह से भूल गए हो, एलेक्सी फ्योदोरोविच,” उसने कहा; “तुम
वह हमसे मिलने कभी नहीं आती। फिर भी लीज़ ने मुझे दो बार बताया है कि वह तुम्हारे बिना कभी खुश नहीं रहती।
अलेयोशा ने झुकी हुई निगाहें ऊपर उठाईं और फिर से शर्म से लाल हो गया, और अनजाने में ही फिर मुस्कुरा दिया। लेकिन अब वह बुजुर्ग उसे नहीं देख रहे थे। उन्होंने एक भिक्षु से बात करना शुरू कर दिया था, जो जैसा कि पहले बताया गया था, लीज़ की कुर्सी के पास उनके आने का इंतज़ार कर रहा था। वह स्पष्ट रूप से सबसे साधारण, यानी किसान वर्ग का भिक्षु था, जिसकी सोच संकीर्ण थी, लेकिन वह सच्चा विश्वासी था और अपने तरीके से जिद्दी भी था। उसने बताया कि वह सुदूर उत्तर से, ओबडॉर्स्क से, सेंट सिल्वेस्टर से आया है, और एक गरीब मठ का सदस्य है, जिसमें केवल दस भिक्षु हैं। बुजुर्ग ने उसे आशीर्वाद दिया और जब चाहे अपने कमरे में आने का निमंत्रण दिया।
“तुम ऐसे काम करने की हिम्मत कैसे कर सकते हो?” भिक्षु ने अचानक पूछा।
उन्होंने गंभीरतापूर्वक और अर्थपूर्ण ढंग से लिसे की ओर इशारा किया। उनका तात्पर्य लिसे के "ठीक होने" से था।
“अभी इस बारे में बात करना जल्दबाजी होगी। राहत का मतलब पूर्ण इलाज नहीं है।”
और इसके कई कारण हो सकते हैं। लेकिन अगर कोई उपचार हुआ है, तो वह केवल ईश्वर की इच्छा से ही हुआ है। यह सब ईश्वर की कृपा से है। “पिताजी, मुझसे मिलने आइए,” उन्होंने भिक्षु से कहा। “मैं अक्सर आगंतुकों से नहीं मिल पाता। मैं बीमार हूँ, और मुझे पता है कि मेरे दिन गिने-चुने हैं।”
“अरे नहीं, नहीं! भगवान तुम्हें हमसे नहीं छीनेंगे। तुम बहुत लंबा जीवन जिओगे।”
“अभी समय है,” महिला चिल्लाई। “और आप किस तरह से बीमार हैं? आप तो बहुत स्वस्थ, हंसमुख और खुश दिख रहे हैं।”
“आज मैं पहले से कहीं बेहतर महसूस कर रहा हूँ। लेकिन मुझे पता है कि यह खुशी कुछ ही समय के लिए है।
क्षण भर के लिए। अब मैं अपनी बीमारी को पूरी तरह समझ गया हूँ। अगर मैं तुम्हें इतना खुश दिखता हूँ, तो तुम कभी कुछ ऐसा नहीं कह सकते जो मुझे इतना प्रसन्न करे। क्योंकि मनुष्य सुख के लिए बने हैं, और जो कोई भी पूरी तरह से खुश है, उसे अपने आप से यह कहने का अधिकार है, 'मैं धरती पर ईश्वर की इच्छा पूरी कर रहा हूँ।' सभी धर्मी, सभी संत, सभी पवित्र शहीद सुखी थे।
“अरे वाह! आप तो बहुत ही प्रभावशाली और ऊंचे शब्द बोल रहे हैं!” महिला ने कहा। “आप

आपके शब्द दिल को भेदते प्रतीत होते हैं। फिर भी—खुशी, खुशी—कहाँ है? कौन अपने बारे में कह सकता है कि वह खुश है? ओह, चूंकि आपने आज हमें एक बार फिर मिलने का सौभाग्य दिया है, तो मुझे वह सब बताने दीजिए जो मैं पिछली बार नहीं कह सका, जो कहने की हिम्मत नहीं कर पाया, वह सब जो मैं इतने लंबे समय से सह रहा हूँ! मैं पीड़ा सह रहा हूँ! मुझे क्षमा कीजिए! मैं पीड़ा सह रहा हूँ!
और तीव्र भावनाओं के आवेश में आकर उसने उसके सामने हाथ जोड़ लिए। "खास तौर पर किस बात से?"
मैं... आस्था की कमी से पीड़ित हूँ।
“ईश्वर में आस्था की कमी?”
“अरे नहीं, नहीं! मैं इसके बारे में सोचने की हिम्मत भी नहीं कर सकती। लेकिन भविष्य का जीवन—वह तो ऐसा है...
एक रहस्य! और कोई भी, कोई भी इसे सुलझा नहीं सकता। सुनो! तुम एक चिकित्सक हो, तुम मानव आत्मा के गहरे ज्ञाता हो, और बेशक मैं तुमसे पूरी तरह विश्वास करने की उम्मीद नहीं कर सकता, लेकिन मैं अपने वचन की कसम खाकर कहता हूँ कि मैं अब हल्के में नहीं बोल रहा हूँ। मृत्यु के बाद के जीवन का विचार मुझे पीड़ा और भय से भर देता है। और मुझे नहीं पता कि किससे प्रार्थना करूँ, और मैंने अपने पूरे जीवन में ऐसा करने की हिम्मत नहीं की है। और अब मैं इतनी हिम्मत कर रहा हूँ कि तुमसे पूछ रहा हूँ। हे ईश्वर! अब तुम मेरे बारे में क्या सोचोगे?
उसने अपने हाथ जोड़ लिए।
“मेरे बारे में आपकी राय को लेकर परेशान मत हो,” बुजुर्ग ने कहा। “मैं
मुझे आपके कष्टों की सच्चाई पर पूरा विश्वास है।
“ओह, मैं आपका कितना आभारी हूँ! देखिए, मैं अपनी आँखें बंद करता हूँ और खुद से पूछता हूँ
अगर हर किसी को आस्था है, तो यह कहाँ से आई? और फिर लोग कहते हैं कि यह सब प्रकृति की भयावह घटनाओं के डर से आता है, और इनमें से कुछ भी वास्तविक नहीं है। और मैं खुद से कहता हूँ, 'क्या होगा अगर मैं जीवन भर आस्था रखता रहा, और जब मेरी मृत्यु हो, तो मेरी कब्र पर केवल बरडॉक के फूल उग रहे हों?' जैसा कि मैंने किसी लेखक की रचना में पढ़ा है। यह कितना भयानक है! मैं अपनी आस्था कैसे वापस पा सकता हूँ? लेकिन मैंने तो बचपन में बिना सोचे-समझे, बस यूँ ही आस्था रखी थी। इसे कैसे साबित किया जाए? मैं अब आपके सामने अपना दिल खोलकर रख रहा हूँ और इसके बारे में आपसे पूछ रहा हूँ। अगर मैंने यह मौका गंवा दिया, तो जीवन भर कोई मुझे जवाब नहीं देगा। मैं इसे कैसे साबित करूँ? मैं खुद को कैसे समझाऊँ? ओह, मैं कितना दुखी हूँ! मैं खड़ा होकर अपने चारों ओर देखता हूँ और पाता हूँ कि शायद ही किसी को परवाह है; कोई इसके बारे में सोचता भी नहीं, और मैं अकेला हूँ जो इसे सहन नहीं कर सकता। यह जानलेवा है—जानलेवा!
“इसमें कोई शक नहीं। लेकिन इसे साबित नहीं किया जा सकता, हालांकि आपको इस बात का यकीन दिलाया जा सकता है।”
यह।"
"कैसे?"
सक्रिय प्रेम के अनुभव से। अपने पड़ोसी से सक्रिय रूप से प्रेम करने का प्रयास करें।
और अथक परिश्रम से। प्रेम में आप जितना आगे बढ़ेंगे, ईश्वर की वास्तविकता और अपनी आत्मा की अमरता के प्रति आपका विश्वास उतना ही बढ़ता जाएगा। यदि आप अपने पड़ोसी के प्रेम में पूर्ण आत्म-विस्मृति प्राप्त कर लें, तो आप निःसंदेह विश्वास करेंगे, और आपके मन में कोई संदेह नहीं रह जाएगा। यह सिद्ध हो चुका है। यह निश्चित है।
“सक्रिय प्रेम में? यह एक और सवाल है—और ऐसा सवाल! आप
देखो, मुझे मानवता से इतना प्रेम है कि—क्या तुम विश्वास करोगे?—मैं अक्सर सपने में देखती हूँ कि मैं अपना सब कुछ त्याग दूँ, लीज़ को छोड़ दूँ और दया की बहन बन जाऊँ। मैं आँखें बंद करके सोचती हूँ और सपने देखती हूँ, और उस क्षण मुझे सभी बाधाओं को पार करने की शक्ति मिलती है। उस क्षण कोई घाव, कोई ज़ख्म मुझे डरा नहीं सकता। मैं उन्हें अपने हाथों से बाँधूँगी और धोऊँगी। मैं पीड़ितों की सेवा करूँगी। मैं ऐसे घावों को चूमने के लिए तैयार रहूँगी।
“यह बहुत अच्छा है कि आपका मन ऐसे सपनों से भरा हुआ है और नहीं

कभी-कभी, अनजाने में ही, आप वास्तव में कोई अच्छा काम कर बैठते हैं।
“हाँ। लेकिन क्या मैं इस तरह का जीवन लंबे समय तक सहन कर सकती हूँ?” महिला ने आगे कहा।
पूरी शिद्दत से, लगभग बेतहाशा। “यही सबसे अहम सवाल है—यही मेरा सबसे पीड़ादायक सवाल है। मैं अपनी आँखें बंद करके खुद से पूछता हूँ, ‘क्या तुम इस रास्ते पर लंबे समय तक टिके रहोगे? और अगर जिस मरीज़ के घाव तुम धो रहे हो, वह तुम्हारा शुक्रिया अदा न करे, बल्कि अपनी मनमानी से तुम्हें परेशान करे, तुम्हारी परोपकारी सेवाओं की कद्र न करे, तुम्हें गालियाँ देने लगे, तुम्हें अभद्र तरीके से आदेश देने लगे और तुम्हारे बारे में उच्च अधिकारियों से शिकायत करने लगे (जो अक्सर तब होता है जब लोग बहुत कष्ट में होते हैं)—तो फिर क्या होगा? क्या तुम अपने प्रेम में डटे रहोगे या नहीं?’ और क्या तुम जानते हो, मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि अगर कोई चीज़ मानवता के प्रति मेरे प्रेम को नष्ट कर सकती है, तो वह कृतघ्नता ही होगी। संक्षेप में, मैं एक किराए का सेवक हूँ, मुझे अपना प्रतिफल तुरंत चाहिए—यानी प्रशंसा, और प्रेम का प्रतिफल प्रेम से। अन्यथा मैं किसी से भी प्रेम करने में असमर्थ हूँ।”
वह आत्म-निंदा के तीव्र दौर से गुज़र रही थी, और अंत में उसने कहा कि...
उसने दृढ़ निश्चय के साथ बुजुर्ग व्यक्ति की ओर देखा।
"यह बिल्कुल वैसी ही कहानी है जैसी एक बार एक डॉक्टर ने मुझे सुनाई थी," बुजुर्ग ने कहा।
“वह उम्रदराज व्यक्ति थे, और निस्संदेह बुद्धिमान थे। वे आपकी ही तरह स्पष्टवादी थे, हालांकि मजाक में, कड़वे मजाक में। उन्होंने कहा, ‘मैं मानवता से प्रेम करता हूँ, लेकिन मैं खुद पर आश्चर्य करता हूँ। जितना अधिक मैं सामान्य रूप से मानवता से प्रेम करता हूँ, उतना ही कम मैं विशेष रूप से मनुष्य से प्रेम करता हूँ। अपने सपनों में,’ उन्होंने कहा, ‘मैं अक्सर मानवता की सेवा के लिए उत्साहपूर्ण योजनाएँ बनाता हूँ, और शायद अगर अचानक आवश्यकता होती तो मैं सचमुच सूली पर चढ़ने के लिए भी तैयार हो जाता; फिर भी मैं किसी के साथ दो दिन भी एक ही कमरे में नहीं रह सकता, जैसा कि मुझे अनुभव से पता है। जैसे ही कोई मेरे पास आता है, उसका व्यक्तित्व मेरी आत्मसंतुष्टि को भंग कर देता है और मेरी स्वतंत्रता को सीमित कर देता है। चौबीस घंटे में मैं अच्छे से अच्छे इंसान से भी नफरत करने लगता हूँ: किसी से इसलिए कि वह अपने भोजन पर बहुत अधिक समय लगाता है; किसी से इसलिए कि उसे जुकाम है और वह बार-बार अपनी नाक साफ करता रहता है। जैसे ही कोई मेरे करीब आता है, मैं उसके प्रति शत्रुतापूर्ण हो जाता हूँ। लेकिन हमेशा ऐसा ही होता आया है कि जितना अधिक मैं व्यक्तिगत रूप से मनुष्यों से घृणा करता हूँ, उतना ही अधिक मानवता के प्रति मेरा प्रेम प्रबल हो जाता है।’”
लेकिन क्या किया जाए? ऐसे में क्या किया जा सकता है? क्या किसी को कुछ करना ही चाहिए?
निराशा?"
नहीं। इतना ही काफी है कि आप इससे परेशान हैं। आप जो कर सकते हैं, करें, और इससे
इसका हिसाब आपको मिलेगा। आपमें पहले से ही बहुत कुछ हो चुका है क्योंकि आप स्वयं को इतनी गहराई और ईमानदारी से जान सकते हैं। यदि आप मुझसे इतनी ईमानदारी से केवल अपनी स्पष्टवादिता के लिए प्रशंसा पाने के लिए बात कर रहे हैं, जैसा कि आपने अभी मुझसे किया, तो निश्चित रूप से आप सच्चे प्रेम की प्राप्ति में कुछ भी हासिल नहीं कर पाएंगे; यह सब सपनों से आगे नहीं बढ़ पाएगा, और आपका पूरा जीवन एक प्रेत की तरह बीत जाएगा। उस स्थिति में आप स्वाभाविक रूप से भविष्य के जीवन के बारे में सोचना भी बंद कर देंगे, और अंत में आप स्वयं ही एक तरह से शांत हो जाएंगे।
“तुमने मुझे कुचल दिया! अब, जब तुम बोल रहे हो, मुझे समझ आ रहा है कि मैं
दरअसल, मैं आपसे केवल अपनी ईमानदारी के लिए प्रशंसा चाहता था जब मैंने आपसे कहा था कि मैं कृतघ्नता सहन नहीं कर सकता। आपने मुझे मेरे आप से परिचित कराया है। आपने मुझे पूरी तरह से समझ लिया है और मुझे मेरे आप को ही समझा दिया है!
“क्या आप सच बोल रहे हैं? खैर, अब, इस तरह के कबूलनामे के बाद, मैं
विश्वास रखें कि आप सच्चे और नेक दिल हैं। यदि आपको सुख न मिले, तो हमेशा याद रखें कि आप सही रास्ते पर हैं और इसे छोड़ने की कोशिश न करें। सबसे बढ़कर, झूठ से बचें, हर तरह के झूठ से, खासकर खुद से झूठ बोलने से। अपनी कपटता पर नज़र रखें और हर पल, हर मिनट उसका विश्लेषण करें। दूसरों और खुद के प्रति तिरस्कारपूर्ण न रहें। जो बुराई आपको अपने भीतर दिखती है, वह अपने आप में उसे देखने मात्र से ही शुद्ध हो जाएगी। डर से भी बचें, हालांकि डर हर तरह के झूठ का ही परिणाम है। प्रेम पाने में अपनी

कायरता से कभी न डरें। अपने बुरे कर्मों से भी बहुत अधिक न डरें। मुझे खेद है कि मैं आपको इससे अधिक सांत्वना नहीं दे सकता, क्योंकि कर्म में प्रेम, स्वप्न प्रेम की तुलना में कहीं अधिक कठोर और भयानक होता है। स्वप्न प्रेम तुरंत क्रियाशील, शीघ्रता से और सबके सामने होने वाला होता है। लोग अपनी जान तक दे देते हैं, बस शर्त यह होती है कि परीक्षा लंबी न चले और जल्द ही समाप्त हो जाए, और सब लोग मंच पर होने की तरह तालियाँ बजाएँ। लेकिन सक्रिय प्रेम परिश्रम और धैर्य है, और कुछ लोगों के लिए शायद यह एक संपूर्ण विज्ञान भी है। लेकिन मैं भविष्यवाणी करता हूँ कि जब आप भयभीत होकर देखेंगे कि आपके तमाम प्रयासों के बावजूद आप अपने लक्ष्य के निकट आने के बजाय उससे और दूर होते जा रहे हैं—ठीक उसी क्षण आप उसे प्राप्त कर लेंगे और उस प्रभु की चमत्कारी शक्ति को स्पष्ट रूप से देखेंगे जो हर समय आपसे प्रेम करता रहा है और रहस्यमय ढंग से आपका मार्गदर्शन करता रहा है। मुझे क्षमा करें कि मैं आपके साथ अधिक समय तक नहीं रह सका। वे मेरा इंतजार कर रहे हैं। अलविदा।
वह महिला रो रही थी।
“लीज़, लीज़! उसे आशीर्वाद दो—उसे आशीर्वाद दो!” वह अचानक उठकर चिल्लाई। “वह प्यार के लायक नहीं है। मैंने उसकी शरारतें देखी हैं।
“साथ में,” बड़े ने मजाक में कहा। “तुम एलेक्सी पर क्यों हंस रहे हो?”
दरअसल, लिज़ हर समय उसका मज़ाक उड़ाने में व्यस्त रहती थी।
उसने पहले ही देख लिया था कि अलेयोशा शर्मीला था और उसकी तरफ देखने से बचता था, और उसे यह बात बेहद मनोरंजक लगती थी। वह बेसब्री से उसकी नज़र पड़ने का इंतज़ार कर रही थी। अलेयोशा, उसकी लगातार घूरती निगाहों को सहन न कर पाने के कारण, अचानक ही उसकी तरफ देखने के लिए मजबूर हो गया, और उसने तुरंत उसके चेहरे पर विजयी मुस्कान बिखेर दी। अलेयोशा और भी ज़्यादा परेशान और नाराज़ हो गया। आखिरकार वह उससे पूरी तरह मुंह फेरकर बड़े की पीठ के पीछे छिप गया। कुछ मिनट बाद, उसी ज़बरदस्त आकर्षण से खिंचा चला, वह फिर से यह देखने के लिए मुड़ा कि उसे कोई देख रहा है या नहीं, और उसने देखा कि लीज़ लगभग अपनी कुर्सी से झुककर उसे तिरछी नज़रों से देख रही थी, और बेसब्री से उसके देखने का इंतज़ार कर रही थी। उसकी नज़र पड़ते ही वह इतनी ज़ोर से हंसी कि बड़े ने कहा, "तुम उसका इस तरह मज़ाक क्यों उड़ा रही हो, शरारती बच्ची?"
लीज़ अचानक और बिल्कुल अप्रत्याशित रूप से शरमा गई। उसकी आँखें चमक उठीं और उसकी उसका चेहरा एकदम गंभीर हो गया। वह जल्दी-जल्दी और घबराहट भरी, गर्मजोशी और नाराजगी से भरी आवाज में बोलने लगी:
“तो फिर वो सब कुछ क्यों भूल गया? वो तो मुझे गोद में उठाकर घुमाया करता था।”
जब मैं छोटी थी, हम साथ खेलते थे। वह मुझे पढ़ना सिखाने आते थे, जानते हो? दो साल पहले, जब वह चले गए, तो उन्होंने कहा था कि वह मुझे कभी नहीं भूलेंगे, कि हम हमेशा के लिए दोस्त रहेंगे, हमेशा के लिए, हमेशा के लिए! और अब वह अचानक मुझसे डरने लगे हैं। क्या मैं उन्हें खा जाऊंगी? वह मेरे पास क्यों नहीं आना चाहते? वह बात क्यों नहीं करते? वह हमसे मिलने क्यों नहीं आते? ऐसा नहीं है कि आप उन्हें आने से रोक रही हैं। हम जानते हैं कि वह हर जगह जाते हैं। उन्हें आमंत्रित करना मेरे लिए शिष्टाचार नहीं है। अगर वह मुझे नहीं भूले हैं, तो उन्हें पहले सोचना चाहिए था। नहीं, अब तो वह अपनी जान बचा रहे हैं! आपने उन्हें इतना लंबा गाउन क्यों पहनाया है? अगर वह दौड़ेंगे तो गिर जाएंगे!
और अचानक उसने अपना चेहरा अपने हाथों में छिपा लिया और एक अप्रतिरोध्य गति में चली गई।
लंबी, घबराहट भरी, धीमी हंसी। बुजुर्ग ने मुस्कुराते हुए उसकी हंसी सुनी और स्नेहपूर्वक उसे आशीर्वाद दिया। जैसे ही उसने उनके हाथ को चूमा, अचानक उसने अपना हाथ अपनी आंखों पर रखा और रोने लगी।
“मुझसे नाराज़ मत हो। मैं मूर्ख और निकम्मा हूँ... और
शायद अलेयोशा का ऐसा न चाहना बिल्कुल सही है, कि वह इतनी हास्यास्पद लड़की को देखने नहीं आना चाहता।
“मैं उसे अवश्य भेजूंगा,” बुजुर्ग ने कहा।

अध्याय 5

ऐसा ही हो! ऐसा ही हो!

बड़े भिक्षु लगभग पच्चीस मिनट तक अपने कक्ष से बाहर रहे। साढ़े बारह बज चुके थे, लेकिन दिमित्री, जिसके कारण वे सब वहाँ इकट्ठा हुए थे, अभी तक नहीं आया था। ऐसा लग रहा था मानो उसे भुला दिया गया हो, और जब बड़े भिक्षु वापस कक्ष में आए, तो उन्होंने देखा कि उनके मेहमान उत्सुकता से बातचीत में मशगूल थे। इवान और दोनों भिक्षुओं ने बातचीत में प्रमुख भूमिका निभाई। मियूसोव भी बातचीत में हिस्सा लेने की कोशिश कर रहा था, और जाहिर तौर पर बहुत उत्सुकता से। लेकिन वह इसमें भी असफल रहा। वह स्पष्ट रूप से पृष्ठभूमि में था, और उसकी बातों को नजरअंदाज किया गया, जिससे उसकी चिड़चिड़ाहट बढ़ गई। इवान के साथ उसकी पहले भी बौद्धिक चर्चाएँ हो चुकी थीं और इवान की यह लापरवाही उसे बर्दाश्त नहीं हो रही थी।
"अब तक तो मैं प्रगतिशील विचारों के अग्रभाग में खड़ा रहा हूँ।"
"हम यूरोप में हैं, और यहाँ नई पीढ़ी हमें पूरी तरह से नजरअंदाज कर रही है," उसने सोचा।
फ्योदोर पावलोविच, जिन्होंने चुपचाप बैठने और शांत रहने का वचन दिया था,
दरअसल, वह कुछ समय से चुप था, लेकिन उसने अपने पड़ोसी मियूसोव को व्यंग्यात्मक मुस्कान के साथ देखा, मानो उसकी परेशानी का आनंद ले रहा हो। वह काफी समय से पुराने हिसाब चुकता करने का इंतजार कर रहा था, और अब वह इस मौके को हाथ से जाने नहीं दे सकता था। उसके कंधे पर झुककर उसने फुसफुसाते हुए उसे फिर से चिढ़ाना शुरू कर दिया।
“शिष्टाचारपूर्वक चुंबन करने के बाद तुम अभी-अभी क्यों नहीं चले गए?”
तुम ऐसी अशोभनीय संगति में क्यों रुके रहे? क्योंकि तुम्हें अपमानित और आहत महसूस हुआ था, और तुम अपनी बुद्धिमत्ता का प्रदर्शन करके खुद को न्याय दिलाने के लिए रुके रहे। अब तुम तब तक नहीं जाओगे जब तक तुम उन्हें अपनी बुद्धिमत्ता का प्रदर्शन नहीं कर देते।
“तुम फिर से? . . . इसके विपरीत, मैं तो बस जा रहा हूँ।”
“तुम सबसे आखिर में जाओगे, सबसे आखिर में जाने वाले!” फ्योदोर पावलोविच ने कहा।
फादर ज़ोसिमा की वापसी के लगभग उसी क्षण, उसने उसे एक और धक्का दिया।
चर्चा कुछ देर के लिए शांत हो गई, लेकिन बुजुर्ग व्यक्ति ने बैठते हुए कहा।
अपनी पुरानी जगह पर खड़े होकर, उन्होंने उन सभी को ऐसे देखा मानो उन्हें आगे बढ़ने के लिए हार्दिक निमंत्रण दे रहे हों। अलेयोशा, जो उनके चेहरे के हर भाव को जानता था, ने देखा कि वे बुरी तरह थके हुए थे और बड़ी मुश्किल से चल पा रहे थे। हाल ही में वे थकान के कारण बेहोशी के दौरे पड़ने लगे थे। उनका चेहरा ऐसे दौरों से पहले होने वाली पीलापन लिए हुए था और उनके होंठ सफेद पड़ गए थे। लेकिन जाहिर तौर पर वे समूह को तोड़ना नहीं चाहते थे। ऐसा लगता था कि उन्हें रोके रखने के पीछे उनका अपना कोई खास मकसद था। क्या मकसद? अलेयोशा ने उन्हें ध्यान से देखा।
“हम इस सज्जन के अत्यंत रोचक लेख पर चर्चा कर रहे हैं,” उन्होंने कहा।
पुस्तकालयाध्यक्ष फादर इओसिफ ने बुजुर्ग को संबोधित करते हुए इवान की ओर इशारा करते हुए कहा,
“वह कई नई बातें सामने ला रहे हैं, लेकिन मुझे लगता है कि यह तर्क दोनों पक्षों पर लागू होता है। यह लेख एक चर्च अधिकारी द्वारा चर्च न्यायालय और उसके अधिकार क्षेत्र के दायरे पर लिखी गई पुस्तक के उत्तर में लिखा गया है।”
“मुझे खेद है कि मैंने आपका लेख नहीं पढ़ा है, लेकिन मैंने इसके बारे में सुना है,” उसने कहा।
बुजुर्ग व्यक्ति इवान को बड़ी ध्यान से और एकाग्रता से देख रहा था।
“वह एक बेहद दिलचस्प पदभार संभाल रहे हैं,” फादर ने आगे कहा।
पुस्तकालयाध्यक्ष। "चर्च के अधिकार क्षेत्र के संबंध में, वह स्पष्ट रूप से चर्च को राज्य से अलग करने के घोर विरोधी हैं।"

“यह दिलचस्प है। लेकिन किस अर्थ में?” फादर ज़ोस्सिमा ने इवान से पूछा। अंत में, इवान ने उन्हें जवाब दिया, लेकिन अल्योशा की तरह तिरस्कारपूर्ण लहजे में नहीं।
भयभीत, लेकिन विनम्रता और संयम के साथ, स्पष्ट सद्भावना के साथ और जाहिर तौर पर जरा भी पूर्वचिंता के बिना।
मैं इस बात से शुरू करता हूँ कि तत्वों का यह भ्रम, यानी,
चर्च और राज्य के मूलभूत सिद्धांत, बेशक, हमेशा कायम रहेंगे, इस तथ्य के बावजूद कि उनका आपस में मिलना असंभव है, और इन तत्वों के मिश्रण से कोई सुसंगत या सामान्य परिणाम भी नहीं निकल सकते, क्योंकि इसकी बुनियाद में ही असत्य निहित है। उदाहरण के लिए, न्यायक्षेत्र जैसे मामलों में चर्च और राज्य के बीच समझौता, मेरे विचार से, किसी भी वास्तविक अर्थ में असंभव है। मेरे धार्मिक विरोधी का मानना है कि राज्य में चर्च की एक निश्चित और परिभाषित स्थिति है। इसके विपरीत, मेरा मानना है कि चर्च को पूरे राज्य को समाहित करना चाहिए, न कि केवल उसके एक कोने में रहना चाहिए, और यदि किसी कारणवश यह वर्तमान में असंभव है, तो वास्तव में इसे ईसाई समाज के भावी विकास का प्रत्यक्ष और मुख्य लक्ष्य बनाया जाना चाहिए!
“बिल्कुल सच,” मौन और विद्वान भिक्षु फादर पैसी ने सहमति व्यक्त की।
पूरे जोश और दृढ़ संकल्प के साथ।
“शुद्धतम अल्ट्रामोंटेनिज़्म!” मियूसोव ने अधीरता से चिल्लाते हुए कहा और सड़क पार कर ली।
अपने पैरों को फिर से क्रॉस करते हुए।
“ओह, खैर, हमारे पास तो पहाड़ नहीं हैं,” फादर इओसिफ चिल्लाए और मुड़कर
उन्होंने आगे कहा, “ध्यान दीजिए कि वे अपने विरोधी के निम्नलिखित ‘बुनियादी और आवश्यक’ प्रस्तावों का क्या उत्तर देते हैं, जो कि, जैसा कि आपको ध्यान देना चाहिए, एक पादरी हैं। पहला, कि ‘कोई भी सामाजिक संगठन अपने सदस्यों के नागरिक और राजनीतिक अधिकारों के निपटान का अधिकार स्वयं को नहीं दे सकता और न ही उसे ऐसा करना चाहिए।’ दूसरा, कि ‘आपराधिक और नागरिक क्षेत्राधिकार चर्च के अधिकार क्षेत्र में नहीं होना चाहिए, और यह इसकी प्रकृति के साथ असंगत है, एक दिव्य संस्था के रूप में और धार्मिक उद्देश्यों के लिए मनुष्यों के संगठन के रूप में भी,’ और अंत में, तीसरा, ‘चर्च इस दुनिया का राज्य नहीं है।’”
“एक पादरी के लिए शब्दों का यह बेहद ही अनुचित खेल है!” फादर पैसी
वह फिर से बोलने से खुद को रोक नहीं पाया। इवान को संबोधित करते हुए उसने कहा, “मैंने वह किताब पढ़ी है जिसका आपने जवाब दिया है, और ‘चर्च इस दुनिया का राज्य नहीं है’ इन शब्दों को पढ़कर मैं दंग रह गया। अगर यह इस दुनिया का नहीं है, तो यह धरती पर अस्तित्व में ही नहीं रह सकता। सुसमाचार में ‘इस दुनिया का नहीं’ शब्दों का प्रयोग उस अर्थ में नहीं किया गया है। ऐसे शब्दों के साथ खिलवाड़ करना अनुचित है। हमारे प्रभु यीशु मसीह धरती पर चर्च की स्थापना करने आए थे। स्वर्ग का राज्य, बेशक, इस दुनिया का नहीं, बल्कि स्वर्ग में है; लेकिन उसमें केवल उस चर्च के माध्यम से प्रवेश किया जा सकता है जिसकी स्थापना और संरक्षा धरती पर की गई है। इसलिए ऐसे संदर्भ में शब्दों के साथ इस तरह का हल्का-फुल्का खिलवाड़ अक्षम्य और अनुचित है। चर्च वास्तव में एक राज्य है और शासन करने के लिए नियुक्त किया गया है, और अंत में निस्संदेह पूरी पृथ्वी पर शासन करने वाला राज्य बन जाएगा। इसके लिए हमारे पास ईश्वरीय प्रतिज्ञा है।”
वह अचानक चुप हो गया, मानो खुद को रोक रहा हो।
इवान ध्यानपूर्वक और आदरपूर्वक सुनता रहा और फिर पूर्ण संयम और पहले की तरह सहज सौहार्द के साथ बुजुर्ग व्यक्ति को संबोधित करने लगा:
मेरे लेख का पूरा सार इस तथ्य में निहित है कि पहले तीन के दौरान
सदियों तक ईसाई धर्म पृथ्वी पर केवल चर्च में ही विद्यमान था और चर्च के सिवा कुछ नहीं था। जब मूर्तिपूजक रोमन साम्राज्य ने ईसाई बनने की इच्छा व्यक्त की, तो यह स्वाभाविक था कि ईसाई बनने के साथ-साथ उसने चर्च को भी अपने अधीन कर लिया, लेकिन अपने अनेक विभागों में वह एक मूर्तिपूजक राज्य बना रहा। वास्तव में, ऐसा होना अपरिहार्य था। लेकिन रोम राज्य ने मूर्तिपूजक सभ्यता और संस्कृति को बहुत हद तक बरकरार रखा था, उदाहरण के लिए, राज्य के उद्देश्यों और मूलभूत सिद्धांतों में ही। राज्य में प्रवेश करने वाला

ईसाई चर्च, निश्चित रूप से, अपने मूलभूत सिद्धांतों—जिस आधारशिला पर वह टिका है—का कोई भी अंश नहीं छोड़ सकता था और ईश्वर द्वारा स्वयं निर्धारित और प्रकट किए गए उद्देश्यों के अलावा किसी अन्य उद्देश्य का अनुसरण नहीं कर सकता था, जिनमें से एक उद्देश्य था संपूर्ण विश्व को, और इस प्रकार प्राचीन मूर्तिपूजक राज्य को भी, चर्च में लाना। इस तरह (अर्थात भविष्य को ध्यान में रखते हुए) यह चर्च नहीं है जिसे 'हर सामाजिक संगठन' की तरह या 'धार्मिक उद्देश्यों के लिए पुरुषों के संगठन' (जैसा कि मेरा विरोधी चर्च को कहता है) की तरह राज्य में एक निश्चित स्थान प्राप्त करने की कोशिश करनी चाहिए, बल्कि इसके विपरीत, प्रत्येक सांसारिक राज्य को अंततः पूरी तरह से चर्च में रूपांतरित हो जाना चाहिए और चर्च के उद्देश्यों के विपरीत हर उद्देश्य को त्यागते हुए, केवल एक चर्च बन जाना चाहिए। यह सब इसे किसी भी तरह से नीचा नहीं करेगा या एक महान राज्य के रूप में इसके सम्मान और गौरव को कम नहीं करेगा, न ही इसके शासकों के गौरव को कम करेगा, बल्कि इसे एक झूठे, अभी भी मूर्तिपूजक और गलत मार्ग से सच्चे और उचित मार्ग की ओर मोड़ देगा, जो अकेले शाश्वत लक्ष्य की ओर ले जाता है। यही कारण है कि यदि पुस्तक 'चर्च क्षेत्राधिकार की नींव पर' के लेखक ने उन नींवों की खोज और स्थापना करते समय उन्हें हमारे पापी और अपूर्ण दिनों में अपरिहार्य एक अस्थायी समझौता माना होता, तो उनका निर्णय सही होता। लेकिन जैसे ही लेखक यह दावा करने का साहस करता है कि जिन आधारों का वह अब उल्लेख कर रहा है, जिनमें से कुछ का उल्लेख फादर इओसिफ ने अभी किया है, वे स्थायी, आवश्यक और शाश्वत आधार हैं, तो वह सीधे चर्च और उसके पवित्र और शाश्वत उद्देश्य के विरुद्ध जा रहा है। यही मेरे लेख का सार है।
संक्षेप में कहें तो, फादर पैसी ने प्रत्येक शब्द पर जोर देते हुए फिर से बोलना शुरू किया, "अर्थात् संक्षेप में।" उन्नीसवीं शताब्दी में स्पष्ट रूप से प्रतिपादित कुछ सिद्धांतों के अनुसार, चर्च को राज्य में रूपांतरित कर दिया जाना चाहिए, मानो यह निम्न रूप से उच्च रूप की ओर प्रगति हो, ताकि वह उसमें विलीन हो जाए और विज्ञान, युग की भावना और सभ्यता के लिए मार्ग प्रशस्त करे। और यदि चर्च विरोध करता है और अनिच्छुक है, तो राज्य में उसके लिए एक कोना अलग रखा जाएगा, और वह भी नियंत्रण में—और आधुनिक यूरोपीय देशों में ऐसा ही होगा। लेकिन रूसी आशाएँ और अवधारणाएँ यह नहीं माँगतीं कि चर्च निम्न रूप से उच्च रूप में राज्य में परिवर्तित हो, बल्कि इसके विपरीत, यह माँग करती हैं कि राज्य अंततः केवल चर्च बनने के योग्य हो और कुछ नहीं। ऐसा ही हो! ऐसा ही हो!
"खैर, मैं स्वीकार करता हूँ कि आपने मुझे कुछ हद तक आश्वस्त कर दिया है," मियूसोव ने मुस्कुराते हुए कहा।
फिर से पैर मोड़ते हुए। "जहाँ तक मैं समझता हूँ, ऐसे आदर्श की प्राप्ति तो अनंत काल बाद ही संभव है, ईसा मसीह के दूसरे आगमन पर। खैर, जो मन में आए। युद्ध, कूटनीति, बैंकों आदि के उन्मूलन का यह एक सुंदर काल्पनिक सपना है—वास्तव में, समाजवाद की तर्ज पर। लेकिन मैंने सोचा था कि यह सब गंभीरता से कहा जा रहा है, और चर्च अब अपराधियों पर मुकदमा चलाकर उन्हें पिटाई, कारावास और यहाँ तक कि मृत्युदंड भी दे सकता है।"
लेकिन अगर चर्च की अदालत के अलावा कोई और न होता, तो चर्च
"अभी भी किसी अपराधी को कारावास या मृत्युदंड की सजा नहीं दी जाती। अपराध और उसे देखने का तरीका निश्चित रूप से बदलेगा, बेशक एक साथ नहीं, लेकिन जल्द ही," इवान ने शांत भाव से, बिना हिचकिचाए उत्तर दिया।
"क्या आप सच कह रहे हैं?" मियूसोव ने उत्सुकता से उसकी ओर देखा।
यदि सब कुछ चर्च बन जाए, तो चर्च सभी को बाहर कर देगा।
"अपराधी और अवज्ञाकारी, और उनके सिर नहीं काटे जाएँगे," इवान ने आगे कहा। "मैं आपसे पूछता हूँ, बहिष्कृत व्यक्ति का क्या होगा? वह तब न केवल मनुष्यों से, जैसा कि अब है, बल्कि मसीह से भी अलग हो जाएगा। अपने अपराध से उसने न केवल मनुष्यों के विरुद्ध, बल्कि मसीह के चर्च के विरुद्ध भी अपराध किया होगा। यह बात आज भी सत्य है, लेकिन इसे स्पष्ट रूप से व्यक्त नहीं किया जाता है, और आज का अपराधी अक्सर अपने अंतरात्मा से समझौता कर लेता है: 'मैं चोरी करता हूँ,' वह कहता है, 'लेकिन मैं चर्च के विरुद्ध नहीं जाता। मैं मसीह का शत्रु नहीं हूँ।' आज का अपराधी लगातार अपने आप से यही कहता रहता है, लेकिन जब चर्च राज्य का स्थान ले लेगा, तो उसके लिए, पूरी दुनिया में चर्च के विरोध में, यह कहना मुश्किल होगा: 'सभी मनुष्य गलत हैं, सभी त्रुटि में हैं, समस्त मानव जाति झूठा चर्च है। मैं, एक चोर और हत्यारा, एकमात्र

सच्चा ईसाई चर्च हूँ।' अपने आप से यह कहना बहुत कठिन होगा; इसके लिए असामान्य परिस्थितियों के एक दुर्लभ संयोजन की आवश्यकता होती है।" अब, दूसरी ओर, अपराध के बारे में चर्च के अपने दृष्टिकोण पर विचार करें: क्या यह वर्तमान लगभग मूर्तिपूजक रवैये को त्यागने और समाज के संरक्षण के लिए अपने दूषित सदस्य को यांत्रिक रूप से अलग करने की प्रथा से हटकर, मनुष्य के पुनर्जन्म, उसके सुधार और मुक्ति के विचार को पूरी तरह और ईमानदारी से अपनाने के लिए बाध्य नहीं है?
"आपका क्या मतलब है? मुझे फिर से समझ नहीं आया," मियूसोव ने बीच में ही टोकते हुए कहा।
"फिर से किसी सपने जैसा। कुछ निराकार और समझ से परे। बहिष्कार क्या होता है? किस तरह का बहिष्कार? मुझे लगता है कि आप बस अपना मनोरंजन कर रहे हैं, इवान फ्योदोरोविच।"
"हाँ, लेकिन आप जानते हैं, असल में अब ऐसा ही है," बड़े ने अचानक कहा, और
सभी एक साथ उसकी ओर मुड़ गए। "यदि मसीह का चर्च न होता तो अपराधी को बुराई करने से रोकने वाला कोई नहीं होता, उसके लिए बाद में कोई वास्तविक दंड नहीं होता; यानी, केवल वही यांत्रिक दंड जिसका अभी जिक्र किया गया है, जो अधिकतर मामलों में केवल हृदय को कड़वा कर देता है; और वह वास्तविक दंड नहीं, जो एकमात्र प्रभावी, एकमात्र निवारक और कोमल करने वाला है, जो अंतरात्मा द्वारा पाप की पहचान में निहित है।"
"यह कैसे हो सकता है?" मियूसोव ने उत्सुकता से पूछा। "क्यों," बड़े ने शुरू किया, "ये सभी कठोर श्रम के साथ निर्वासन की सजाएँ क्यों?"
पहले तो कोड़े मारने से भी कोई नहीं सुधरता था, बल्कि उससे भी बुरा यह था कि एक भी अपराधी अपराध करने से नहीं रुकता था, और अपराधों की संख्या कम होने के बजाय लगातार बढ़ती ही जा रही थी। आपको यह मानना ही होगा। परिणामस्वरूप समाज की सुरक्षा नहीं बनी रहती, क्योंकि भले ही दोषी सदस्य को यंत्रवत रूप से अलग कर दिया जाए और नज़रों से ओझल कर दिया जाए, लेकिन उसकी जगह लेने के लिए हमेशा कोई दूसरा अपराधी आ जाता है, और अक्सर तो दो-दो आ जाते हैं। अगर आज भी कोई चीज़ समाज को बचाए रखती है, और अपराधी का पुनर्जन्म और रूपांतरण करती है, तो वह केवल मसीह का नियम है जो उसके अंतरात्मा में बोलता है। ईसाई समाज—अर्थात चर्च—के पुत्र के रूप में अपने गलत काम को पहचानकर ही वह समाज—अर्थात चर्च—के विरुद्ध अपने पाप को पहचानता है। इसलिए आज का अपराधी केवल चर्च के विरुद्ध ही अपने पाप को पहचान सकता है, न कि राज्य के विरुद्ध। यदि समाज, चर्च के रूप में, अधिकार क्षेत्र रखता, तो वह जानता कि कब बहिष्कार से वापस लाना है और कब उसे अपने साथ फिर से जोड़ना है। अब चर्च के पास कोई वास्तविक अधिकार क्षेत्र नहीं है, केवल नैतिक निंदा करने की शक्ति है, इसलिए वह स्वेच्छा से अपराधी को सक्रिय रूप से दंडित करने से पीछे हट जाती है। वह उसे बहिष्कृत नहीं करती, बल्कि केवल मातृत्व भाव से उसे समझाती रहती है। इतना ही नहीं, चर्च अपराधी के साथ सभी ईसाई संबंध बनाए रखने का प्रयास करती है। वह उसे चर्च की सेवाओं में, पवित्र संस्कारों में शामिल करती है, उसे दान देती है, और उसके साथ कैदी की तरह व्यवहार करती है, न कि अपराधी की तरह। हे प्रभु, उस अपराधी का क्या होगा, यदि ईसाई समाज—अर्थात चर्च—भी उसे उसी प्रकार अस्वीकार कर दे, जैसे नागरिक कानून उसे अस्वीकार करता है और उससे नाता तोड़ लेता है? उसका क्या होगा यदि चर्च धर्मनिरपेक्ष कानून के प्रत्यक्ष परिणाम स्वरूप उसे बहिष्कृत कर दे? इससे अधिक भयानक निराशा की स्थिति नहीं हो सकती, कम से कम एक रूसी अपराधी के लिए, क्योंकि रूसी अपराधियों में अभी भी आस्था है। हालांकि, कौन जानता है, शायद तब कोई भयानक घटना घटित हो जाए, शायद अपराधी का निराश हृदय अपनी आस्था खो दे और फिर उसका क्या होगा? लेकिन चर्च, एक कोमल, प्रेममयी माँ की तरह, स्वयं सक्रिय दंड देने से दूर रहता है, क्योंकि पापी को नागरिक कानून द्वारा पहले ही बहुत कठोर दंड दिया जा चुका है, और कम से कम कोई तो ऐसा होना चाहिए जो उस पर दया करे। चर्च सबसे बढ़कर इसलिए दूर रहता है क्योंकि उसका निर्णय ही एकमात्र सत्य है, और इसलिए व्यावहारिक और नैतिक रूप से किसी अन्य निर्णय के साथ, यहाँ तक कि अस्थायी समझौते के रूप में भी, एकजुट नहीं हो सकता। वह इस बारे में कोई समझौता नहीं कर सकता। वे कहते हैं कि विदेशी अपराधी शायद ही कभी पश्चाताप करता है, क्योंकि आज के सिद्धांत ही उसे इस विचार में पुष्ट करते हैं कि उसका अपराध अपराध नहीं है, बल्कि अन्यायपूर्ण दमनकारी शक्ति के विरुद्ध मात्र एक प्रतिक्रिया है। समाज उसे एक ऐसी शक्ति द्वारा पूरी तरह से अलग कर देता है जो उस पर यंत्रवत विजय प्राप्त करती है और (कम से कम यूरोप में वे अपने बारे में यही कहते हैं) इस बहिष्कार के साथ घृणा, विस्मृति और

गलती करने वाले भाई के अंतिम भाग्य के प्रति गहरी उदासीनता भी रखती है। इस तरह, यह सब चर्च के दयालु हस्तक्षेप के बिना ही घटित होता है, क्योंकि कई मामलों में वहाँ चर्च का कोई अस्तित्व ही नहीं है। हालाँकि वहाँ पादरी और भव्य चर्च भवन मौजूद हैं, लेकिन चर्च स्वयं बहुत पहले ही चर्च से राज्य बनने और उसमें पूरी तरह विलीन होने का प्रयास कर चुके हैं। कम से कम लूथरवादी देशों में तो ऐसा ही प्रतीत होता है। रोम की बात करें तो, उसे एक हजार साल पहले चर्च के बजाय राज्य घोषित कर दिया गया था। और इसलिए अपराधी अब चर्च का सदस्य होने के प्रति सचेत नहीं रहता और निराशा में डूब जाता है। यदि वह समाज में लौटता है, तो अक्सर इतनी घृणा के साथ लौटता है कि समाज स्वयं सहज रूप से उससे नाता तोड़ लेता है। आप स्वयं अनुमान लगा सकते हैं कि इसका अंत कैसा होगा। कई मामलों में हमारे यहाँ भी ऐसा ही प्रतीत होता है, लेकिन अंतर यह है कि स्थापित कानून अदालतों के अलावा हमारे पास चर्च भी है, जो अपराधी के साथ हमेशा एक प्रिय और अनमोल पुत्र के रूप में संबंध बनाए रखता है। इसके अलावा, भले ही केवल विचारों में, चर्च का न्याय अब भी संरक्षित है, जो व्यवहार में भले ही न हो, लेकिन भविष्य के एक सपने के रूप में जीवित है, और निस्संदेह अपराधी इसे अपने मन में सहज रूप से पहचानता है। अभी जो कहा गया है वह भी सत्य है, अर्थात् यदि चर्च का अधिकार क्षेत्र व्यवहार में पूरी शक्ति से लागू किया जाए, अर्थात् यदि पूरा समाज चर्च में परिवर्तित हो जाए, तो न केवल चर्च का न्याय अपराधी के सुधार पर ऐसा प्रभाव डालेगा जैसा कि अभी तक नहीं हुआ है, बल्कि संभवतः अपराध भी बहुत कम हो जाएँगे। और इसमें कोई संदेह नहीं है कि चर्च कई मामलों में अपराधी और भविष्य के अपराध को बिल्कुल अलग नजरिए से देखेगा और बहिष्कृत लोगों को सुधारने, बुराई की योजना बनाने वालों को रोकने और पतित लोगों को पुनर्जीवित करने में सफल होगा। फादर ज़ोस्सिमा मुस्कुराते हुए बोले, "यह सच है कि ईसाई समाज अभी तैयार नहीं है और केवल सात धर्मात्मा पुरुषों के सहारे टिका हुआ है, लेकिन उनकी कभी कमी नहीं होती, इसलिए यह समाज अपने पूर्ण रूपांतरण की आशा में अडिग रहेगा, जो लगभग मूर्तिपूजक स्वभाव का है, एक सार्वभौमिक और सर्वशक्तिमान चर्च में परिवर्तित हो जाएगा। ऐसा हो, ऐसा ही हो! चाहे युगों के अंत में ही क्यों न हो, क्योंकि यह होना तय है! और समय और ऋतुओं के बारे में चिंतित होने की कोई आवश्यकता नहीं है, क्योंकि समय और ऋतुओं का रहस्य ईश्वर की बुद्धि, उनकी दूरदर्शिता और उनके प्रेम में निहित है। और जो मानवीय दृष्टि से अभी दूर प्रतीत होता है, वह ईश्वरीय विधान के अनुसार निकट ही प्रकट हो सकता है। और ऐसा ही हो, ऐसा ही हो!"

"ऐसा ही हो, ऐसा ही हो!" फादर पैसी ने संयम और श्रद्धा से दोहराया। "अजीब, बेहद अजीब!" मियूसोव ने कुछ खास उत्साह के बिना कहा।

जैसे कि दबी हुई नाराजगी से उत्पन्न गर्मी।

"आपको इसमें सबसे अजीब क्या लग रहा है?" फादर इओसिफ ने सावधानी से पूछा। "अरे, यह तो हद से ज़्यादा है!" मियूसोव अचानक चिल्ला उठा; "

राज्य का उन्मूलन कर दिया गया है और चर्च को राज्य के समान दर्जा दे दिया गया है। यह केवल अल्ट्रामोंटेनिज़्म नहीं है, यह कट्टर अल्ट्रामोंटेनिज़्म है! यह पोप ग्रेगरी सप्तम के सपनों से भी परे है!

"आप इसे पूरी तरह से गलत समझ रहे हैं," फादर पैसी ने सख्ती से कहा।

समझो, चर्च को राज्य में परिवर्तित नहीं किया जाना है। यह रोम और उसका सपना है। यह शैतान का तीसरा प्रलोभन है। इसके विपरीत, राज्य चर्च में परिवर्तित होगा, उत्थान करेगा और पूरे विश्व पर एक चर्च बन जाएगा —जो अल्ट्रामोंटेनिज़्म और रोम, और आपकी व्याख्या के बिल्कुल विपरीत है, और यह केवल ऑर्थोडॉक्स चर्च के लिए निर्धारित गौरवशाली नियति है। यह तारा पूर्व में उदय होगा!

मियूसोव एकदम चुप थे। उनका पूरा व्यक्तित्व ही कुछ व्यक्त कर रहा था।

असाधारण व्यक्तिगत गरिमा। उसके होठों पर एक अभिमानी और तिरस्कारपूर्ण मुस्कान थी। अलेयोशा धड़कते दिल से यह सब देख रहा था। पूरी बातचीत ने उसे गहराई से झकझोर दिया था। उसने रकितिन पर सरसरी नज़र डाली, जो दरवाजे के पास अपनी जगह पर स्थिर खड़ा था, ध्यान से सुन और देख रहा था, हालांकि उसकी नज़रें झुकी हुई थीं। लेकिन उसके गालों की लाली से अलेयोशा ने अनुमान लगाया कि रकितिन भी शायद कम उत्साहित नहीं था, और वह जानता था कि उसके उत्साह का कारण क्या था।

"सज्जनों, मुझे आपको एक छोटा सा किस्सा सुनाने की अनुमति दें," मियूसोव ने कहा।

प्रभावशाली ढंग से, एक विशिष्ट राजसी आभा के साथ। कुछ साल पहले, दिसंबर के तख्तापलट के तुरंत बाद, मैं संयोगवश पेरिस में सरकार के एक अत्यंत प्रभावशाली व्यक्ति से मिलने गया था, और उनके घर पर मेरी मुलाकात एक बहुत ही दिलचस्प व्यक्ति से हुई। यह व्यक्ति कोई जासूस तो नहीं था, लेकिन राजनीतिक जासूसों की एक पूरी रेजिमेंट का एक तरह का अधीक्षक था—अपने आप में एक काफी शक्तिशाली पद। जिज्ञासावश मैंने उनसे बातचीत करने का अवसर लपक लिया। और चूंकि वे एक आगंतुक के रूप में नहीं, बल्कि एक अधीनस्थ अधिकारी के रूप में एक विशेष रिपोर्ट लेकर आए थे, और उन्होंने अपने वरिष्ठ द्वारा दिए गए स्वागत को देखकर, कुछ हद तक खुलकर बात करने की कृपा की। वे खुलेपन से कहीं अधिक विनम्र थे, जैसा कि फ्रांसीसी लोग विनम्र होना जानते हैं, खासकर एक विदेशी के प्रति। लेकिन मैं उन्हें पूरी तरह समझ गया। विषय उस समय सताए जा रहे समाजवादी क्रांतिकारियों का था। मैं इस व्यक्ति द्वारा कही गई एक अत्यंत रोचक बात का ही उल्लेख करूंगा। उन्होंने कहा, 'हम इन सभी समाजवादियों, अराजकतावादियों, काफिरों और क्रांतिकारियों से विशेष रूप से भयभीत नहीं हैं; हम उन पर नजर रखते हैं और मैं उनकी हर गतिविधि से वाकिफ हूं। लेकिन उनमें कुछ विचित्र लोग हैं जो ईश्वर में विश्वास रखते हैं और ईसाई हैं, लेकिन साथ ही समाजवादी भी हैं। ये वे लोग हैं जिनसे हमें सबसे ज्यादा डर लगता है। वे भयानक लोग हैं! ईसाई समाजवादी नास्तिक समाजवादी से कहीं ज्यादा खतरनाक है।' ये शब्द उस समय मेरे मन पर गहरा प्रभाव छोड़ गए थे, और अब अचानक मुझे याद आ गए हैं, सज्जनों।

“आप इन्हें हम पर लागू करते हैं, और हमें समाजवादी समझते हैं?” फादर पैसी
सीधे-सीधे पूछा गया, घुमा-फिराकर बात नहीं की गई।

लेकिन इससे पहले कि प्योत्र अलेक्जेंड्रोविच कुछ जवाब सोच पाते, दरवाजा खुल गया।

दरवाजा खुला और लंबे समय से प्रतीक्षित अतिथि दिमित्री फ्योदोरोविच अंदर आए। दरअसल, उन्होंने उनके आने की उम्मीद ही छोड़ दी थी, और उनके अचानक आने से कुछ पल के लिए हैरानी हुई।

अध्याय 6

ऐसा व्यक्ति जीवित क्यों है?

दिमित्री फ्योदोरोविच, 82 वर्षीय एक युवक, मध्यम कद और आकर्षक चेहरे वाला, अपनी उम्र से कहीं अधिक परिपक्व दिखता था। वह गठीला था और शारीरिक रूप से काफी मजबूत था। फिर भी उसके चेहरे में कुछ अस्वस्थता झलकती थी। उसका चेहरा दुबला-पतला था, गाल पिचके हुए थे और उनमें एक अस्वस्थ पीलापन था। उसकी बड़ी, उभरी हुई, गहरी आँखों में दृढ़ निश्चय का भाव तो था, लेकिन साथ ही एक अस्पष्टता भी थी। यहाँ तक कि जब वह उत्तेजित होता और चिड़चिड़ाकर बोलता, तब भी उसकी आँखें उसके भावों का अनुसरण नहीं करतीं, बल्कि कुछ और ही भाव प्रकट करतीं, जो कभी-कभी उस समय की स्थिति से बिल्कुल मेल नहीं खाता था। "यह समझना मुश्किल है कि वह क्या सोच रहा है," उससे बात करने वाले लोग अक्सर कहते थे। जो लोग उसकी आँखों में उदासी और संशय देखते थे, वे उसकी अचानक हँसी से चौंक जाते थे, जो उस समय उसके आनंदमय और हल्के-फुल्के विचारों का प्रमाण थी, जब उसकी आँखें इतनी उदास थीं। इस समय उसके चेहरे पर एक तनाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता था। हर कोई जानता था, या सुना था, कि वह हाल के दिनों में बेहद अशांत और अनैतिक जीवन जी रहा था, साथ ही अपने पिता के साथ झगड़ों में वह कितना उग्र हो जाता था। कस्बे में इसके बारे में कई कहानियां प्रचलित थीं। यह सच है कि वह स्वभाव से चिड़चिड़ा था, "अस्थिर और असंतुलित मन वाला," जैसा कि हमारे शांति न्यायाधीश, कचालनिकोव ने बड़े ही सटीक ढंग से उसका वर्णन किया था।
वह बड़े ही सलीके से बटन लगे हुए एक स्टाइलिश और बेदाग पोशाक में था।
फ्रॉक-कोट पहने हुए। उन्होंने काले दस्ताने पहने थे और सिर पर एक टोपी रखी थी। हाल ही में सेना से लौटे होने के कारण उनकी मूंछें थीं, दाढ़ी नहीं। उनके गहरे भूरे बाल छोटे-छोटे कटे हुए थे और कनपटी पर आगे की ओर कंघी किए हुए थे। उनकी चाल एक सैनिक की तरह लंबी और दृढ़ थी। वे एक पल के लिए दहलीज पर रुके और पूरे समूह पर नजर डालते हुए सीधे बुजुर्ग के पास गए, यह अनुमान लगाते हुए कि वही उनके मेजबान हैं। उन्होंने उन्हें झुककर प्रणाम किया और उनका आशीर्वाद मांगा। फादर ज़ोसिमा अपनी कुर्सी से उठकर उन्हें आशीर्वाद दिया। दिमित्री ने आदरपूर्वक उनके हाथ को चूमा और तीव्र भावना, लगभग क्रोध के साथ, उन्होंने कहा:
"कृपया मुझे इतनी देर तक इंतजार कराने के लिए क्षमा कर दीजिए।"
लेकिन मेरे पिता द्वारा भेजे गए नौकर स्मरद्याकोव ने मेरी पूछताछ के जवाब में मुझे दो बार बताया कि मुलाकात केवल एक व्यक्ति के लिए थी। अब मुझे अचानक पता चला है—"
“आप परेशान न हों,” बुजुर्ग ने बीच में कहा। “कोई बात नहीं। आप एक
थोड़ी देर हो गई। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता...
मैं आपका अत्यंत आभारी हूं, और आपसे भी यही अपेक्षा थी।
अच्छाई।"
यह कहते हुए दिमित्री ने एक बार फिर झुककर प्रणाम किया। फिर अचानक मुड़कर...
उसके पिता ने भी उसी प्रकार झुककर सम्मानपूर्वक प्रणाम किया। जाहिर है, उन्होंने पहले से ही इस पर विचार कर लिया था और पूरी गंभीरता से यह प्रणाम किया, यह समझते हुए कि यह उनका कर्तव्य है कि वे अपना सम्मान और सद्भावना प्रदर्शित करें।
हालाँकि फ्योदोर पावलोविच को अचानक हमले का सामना करना पड़ा, फिर भी वह मुकाबला करने में सक्षम थे।
अवसर पर, दिमित्री के प्रणाम के जवाब में, वह अपनी कुर्सी से उछल पड़ा और अपने बेटे को भी उसी तरह झुककर प्रणाम करने को कहा। उसका चेहरा अचानक गंभीर और प्रभावशाली हो गया, जिससे उसमें एक द्वैषपूर्ण भाव आ गया। दिमित्री ने उपस्थित सभी लोगों को प्रणाम किया और बिना कुछ कहे अपने लंबे, दृढ़ कदमों से खिड़की की ओर चला गया, फादर पैसी के पास एकमात्र खाली कुर्सी पर बैठ गया और आगे झुककर उस बातचीत को सुनने के लिए तैयार हो गया जिसे उसने बीच में रोक दिया था।

दिमित्री के प्रवेश में दो मिनट से अधिक समय नहीं लगा था, और
बातचीत फिर से शुरू हुई। लेकिन इस बार मियूसोव ने फादर पैसी के लगातार और लगभग चिड़चिड़ेपन भरे सवाल का जवाब देना अनावश्यक समझा।
उन्होंने कहा, "मुझे इस चर्चा से हटने की अनुमति दें।"
एक खास तरह की शालीन बेफिक्री। "यह एक पेचीदा सवाल भी है। यहाँ इवान फ्योदोरोविच हमारी तरफ मुस्कुरा रहे हैं। उनके पास भी इस बारे में कुछ दिलचस्प कहने को होगा। उनसे पूछिए।"
“कुछ खास नहीं, बस एक छोटी सी बात,” इवान ने तुरंत जवाब दिया।
“आम तौर पर यूरोपीय उदारवादी, और यहाँ तक कि हमारे उदारवादी शौकिया भी, अक्सर समाजवाद के अंतिम परिणामों को ईसाई धर्म के परिणामों के साथ मिला देते हैं। यह बेतुकी धारणा, बेशक, एक विशिष्ट विशेषता है। लेकिन ऐसा नहीं है कि केवल उदारवादी और शौकिया ही समाजवाद और ईसाई धर्म को मिलाते हैं, बल्कि कई मामलों में, ऐसा लगता है कि पुलिस—खासकर विदेशी पुलिस—भी यही करती है। प्योत्र अलेक्सांद्रोविच, आपका पेरिस का किस्सा बिल्कुल सटीक है।”
"मैं आपसे इस विषय को पूरी तरह से समाप्त करने की अनुमति मांगता हूं," मियूसोव ने दोहराया।
“इसके बजाय, सज्जनों, मैं आपको इवान फ्योदोरोविच का एक और रोचक और विशिष्ट किस्सा सुनाता हूँ। केवल पाँच दिन पहले, यहाँ एक सभा में, जिसमें मुख्य रूप से महिलाएँ थीं, उन्होंने तर्क देते हुए गंभीरता से घोषणा की कि पूरी दुनिया में ऐसा कुछ भी नहीं है जो मनुष्यों को अपने पड़ोसियों से प्रेम करने के लिए प्रेरित करे। ऐसा कोई प्राकृतिक नियम नहीं है कि मनुष्य को मानवता से प्रेम करना चाहिए, और यदि अब तक पृथ्वी पर कोई प्रेम रहा भी है, तो वह किसी प्राकृतिक नियम के कारण नहीं, बल्कि केवल इसलिए है क्योंकि मनुष्य अमरता में विश्वास करते हैं। इवान फ्योदोरोविच ने कोष्ठक में आगे कहा कि संपूर्ण प्राकृतिक नियम इसी विश्वास में निहित है, और यदि आप मानवता में अमरता के विश्वास को नष्ट कर दें, तो न केवल प्रेम बल्कि दुनिया के जीवन को बनाए रखने वाली हर जीवित शक्ति तुरंत सूख जाएगी। इसके अलावा, तब कुछ भी अनैतिक नहीं रहेगा, सब कुछ वैध हो जाएगा, यहाँ तक कि नरभक्षण भी। बात यहीं खत्म नहीं होती। उन्होंने यह कहकर अपनी बात समाप्त की कि हम जैसे प्रत्येक व्यक्ति के लिए, जो ईश्वर या अमरता में विश्वास नहीं करता, प्रकृति का नैतिक नियम तुरंत पूर्व धार्मिक नियम के ठीक विपरीत हो जाना चाहिए, और अहंकार, यहाँ तक कि अपराध को न केवल वैध बल्कि अपरिहार्य, सबसे तर्कसंगत और यहां तक कि सम्मानजनक परिणाम के रूप में भी मान्यता मिलनी चाहिए। सज्जनों, इस विरोधाभास से आप हमारे विलक्षण और विरोधाभासी मित्र इवान फ्योदोरोविच के बाकी सिद्धांतों का अंदाजा लगा सकते हैं।
“माफ़ कीजिए,” दिमित्री अचानक चिल्लाया; “अगर मैंने सही सुना है, तो अपराध अवश्य ही
क्या यह बात हर काफिर के लिए न केवल जायज़ है, बल्कि उसकी स्थिति का अपरिहार्य और सबसे तर्कसंगत परिणाम भी मानी जानी चाहिए? क्या ऐसा है या नहीं?
“बिल्कुल सही,” फादर पैसी ने कहा।
मैं इसे याद रखूंगा।
ये शब्द कहते ही दिमित्री अचानक चुप हो गया, जैसे वह पहले कभी चुप हुआ था।
शुरू हो चुका था। हर कोई उत्सुकता से उसकी ओर देख रहा था।
क्या वास्तव में यही आपका मानना है कि इसके परिणाम गंभीर होंगे?
"अमरता में विश्वास का लुप्त होना?" बुजुर्ग ने अचानक इवान से पूछा।
“हाँ। यही मेरा तर्क था। जहाँ कोई गुण नहीं है, वहाँ कोई गुण नहीं है।”
अमरता।"
"ऐसा मानना आपके लिए सौभाग्य की बात है, वरना आप अत्यंत दुखी होंगे।"
“नाखुश क्यों हो?” इवान ने मुस्कुराते हुए पूछा।
क्योंकि, पूरी संभावना है कि आप खुद पर विश्वास नहीं करते हैं।
न तो आपकी आत्मा की अमरता में, और न ही उस बात में जो आपने चर्च के अधिकार क्षेत्र पर अपने लेख में स्वयं लिखी है।"
“शायद आप सही हैं! . . . लेकिन मैं पूरी तरह से मजाक नहीं कर रहा था,” इवान
अचानक और अजीब तरीके से कबूल किया, चेहरा लाल हो गया।

“आप पूरी तरह से मजाक नहीं कर रहे थे। यह सच है। सवाल अभी भी बना हुआ है।”
आपका हृदय व्याकुल है, और आपको कोई उत्तर नहीं मिला। परन्तु शहीद कभी-कभी अपनी निराशा में ही अपना ध्यान भटकाना चाहता है, मानो निराशा ही उसे ऐसा करने पर विवश कर रही हो। इसी बीच, आप भी अपनी निराशा में पत्रिकाओं के लेखों और समाज में होने वाली चर्चाओं से अपना ध्यान भटकाते हैं, यद्यपि आप अपने ही तर्कों पर विश्वास नहीं करते, और दुखी हृदय से मन ही मन उनका उपहास करते हैं... उस प्रश्न का उत्तर आपने नहीं दिया है, और यही आपका सबसे बड़ा दुख है, क्योंकि वह उत्तर की प्रतीक्षा कर रहा है।
“लेकिन क्या मैं इसका जवाब दे सकता हूँ? क्या मैं इसका जवाब हाँ में दे सकता हूँ?” इवान
वह अजीबोगरीब ढंग से सवाल पूछता रहा, अभी भी उसी रहस्यमय मुस्कान के साथ बुजुर्ग की ओर देख रहा था।
यदि इसका निर्णय सकारात्मक रूप से नहीं हो सकता, तो इसका निर्णय कभी भी सकारात्मक रूप से नहीं होगा।
नकारात्मक। आप जानते हैं कि यह आपके हृदय की विशेषता है, और इसका सारा दुख इसी के कारण है। लेकिन सृष्टिकर्ता का धन्यवाद करें जिसने आपको ऐसा हृदय दिया है जो इतने कष्ट सहने में सक्षम है; जो उच्चतर विचारों और खोजों को सहन कर सकता है, क्योंकि हमारा निवास स्वर्ग में है। ईश्वर करे कि आपके हृदय को पृथ्वी पर ही उत्तर प्राप्त हो, और ईश्वर आपके मार्ग को आशीर्वाद दे।
बुजुर्ग ने अपना हाथ उठाया और क्रॉस का चिन्ह बनाने वाले थे।
इवान जहां खड़ा था, वहीं से मियूसोव उसे देख रहा था। लेकिन इवान अपनी सीट से उठा, उसके पास गया, उसका आशीर्वाद लिया और उसका हाथ चूमकर चुपचाप अपनी जगह पर लौट गया। उसका चेहरा दृढ़ और गंभीर लग रहा था। इवान की यह हरकत और उससे पहले हुई सारी बातचीत, जो उससे इतनी हैरान करने वाली थी, अपनी विचित्रता और एक खास गंभीरता के कारण सभी को प्रभावित कर गई, जिससे सभी एक पल के लिए चुप हो गए और अलेयोशा के चेहरे पर लगभग आशंका का भाव था। लेकिन मियूसोव ने अचानक अपने कंधे उचका दिए। और उसी क्षण फ्योदोर पावलोविच अपनी सीट से उछल पड़ा।
“हे परम पवित्र और धर्मनिष्ठ बुजुर्ग,” उसने इवान की ओर इशारा करते हुए कहा, “यह मेरा पुत्र है।”
मेरे खून का टुकड़ा, मेरे सबसे प्यारे खून के टुकड़े! वह मेरे सबसे आज्ञाकारी कार्ल मूर हैं, जबकि यह बेटा दिमित्री, जो अभी-अभी आया है और जिसके खिलाफ मैं आपसे न्याय मांग रहा हूँ, वह अनाज्ञाकारी फ्रांज मूर है—ये दोनों शिलर के उपन्यास 'रॉबर्स' से निकले हैं, और इसलिए मैं ही राज करने वाला काउंट वॉन मूर हूँ! न्याय करो और हमें बचाओ! हमें न केवल आपकी प्रार्थनाओं की बल्कि आपकी भविष्यवाणियों की भी आवश्यकता है!
“मूर्खतापूर्ण लहजे में बात न करें, और सदस्यों का अपमान करके अपनी बात शुरू न करें।”
“आपके परिवार के,” बुजुर्ग ने कमजोर और थकी हुई आवाज में उत्तर दिया। जाहिर है, वह दिन-ब-दिन और अधिक थकते जा रहे थे और उनकी ताकत कम होती जा रही थी।
“यह एक भद्दा तमाशा है जिसका मुझे यहाँ आने से पहले ही अंदाजा हो गया था!” दिमित्री चिल्लाया।
गुस्से से। वह भी उछल पड़ा। "क्षमा करें, आदरणीय फादर," उसने बड़े पादरी को संबोधित करते हुए कहा। "मैं कोई सभ्य व्यक्ति नहीं हूँ, और मुझे यह भी नहीं पता कि आपसे ठीक से कैसे बात करनी चाहिए, लेकिन आप धोखे में हैं और हमें यहाँ मिलने की अनुमति देकर आपने बहुत उदारता दिखाई है। मेरे पिता बस एक बदनामी चाहते हैं। वह ऐसा क्यों चाहते हैं, यह केवल वही बता सकते हैं। उनके पास हमेशा कोई न कोई मकसद होता है। लेकिन मुझे लगता है कि मैं जानता हूँ कि क्यों—"
"वे सब मुझे ही दोषी ठहराते हैं, सब के सब!" फ्योदोर पावलोविच ने अपनी बारी में चिल्लाते हुए कहा।
“यहाँ प्योत्र अलेक्सांद्रोविच भी मुझे ही दोषी ठहरा रहे हैं। तुम भी मुझे ही दोषी ठहरा रहे हो, प्योत्र अलेक्सांद्रोविच!” वह अचानक मियूसोव की ओर मुड़े, हालाँकि मियूसोव उन्हें टोकने की सोच भी नहीं रहे थे।
“वे सब मुझ पर बच्चों के पैसे अपने जूतों में छिपाने और उन्हें धोखा देने का आरोप लगा रहे हैं, लेकिन क्या कोई अदालत नहीं है? वहाँ वे आपके नोट्स, आपके पत्रों और आपके समझौतों से हिसाब लगाएंगे, दिमित्री फ्योदोरोविच, कि आपके पास कितना पैसा था, आपने कितना खर्च किया और आपके पास कितना बचा है। प्योत्र अलेक्सांद्रोविच फैसला सुनाने से इनकार क्यों कर रहे हैं? दिमित्री उनके लिए अजनबी नहीं हैं। क्योंकि वे सब मेरे खिलाफ हैं, जबकि दिमित्री फ्योदोरोविच मेरे कर्जदार हैं, और वह भी थोड़ा नहीं, बल्कि हजारों में,

जिसका मेरे पास दस्तावेजी सबूत है। पूरा शहर उनकी अय्याशी की अफवाहों से गूंज रहा है। और जहाँ वह पहले तैनात थे, वहाँ उन्होंने कई बार किसी सम्मानित लड़की को बहलाने-फुसलाने में एक-दो हजार खर्च किए; दिमित्री फ्योदोरोविच, हम इसके बारे में सब कुछ जानते हैं, इसके सबसे गुप्त विवरण भी। मैं इसे साबित कर दूंगा... क्या आप विश्वास करेंगे, परमपिता, उन्होंने एक अच्छे परिवार और धनवान परिवार की सबसे सम्मानित युवती, एक बेटी का दिल जीत लिया है। एक वीर कर्नल, जो पहले उसका वरिष्ठ अधिकारी था, जिसे अनेक सम्मान प्राप्त थे और जिसके सीने पर अन्ना पदक अंकित था। उसने विवाह का वादा करके उस लड़की को अपने वश में कर लिया, अब वह अनाथ है और यहाँ है; उसकी सगाई उससे हो चुकी है, फिर भी उसकी आँखों के सामने ही वह एक मोहिनी की सेवा में मशगूल है। और यद्यपि यह मोहिनी एक प्रतिष्ठित व्यक्ति के साथ वैवाहिक जीवन जी रही है, फिर भी वह स्वतंत्र स्वभाव की है, सबके लिए एक दुर्गम किला है, ठीक एक कानूनी पत्नी की तरह—क्योंकि वह गुणी है, जी हाँ, परमपिता, वह गुणी है। दिमित्री फ्योदोरोविच इस किले को सोने की चाबी से खोलना चाहता है, और इसीलिए वह अब मुझसे बदतमीजी कर रहा है, मुझसे पैसे लेने की कोशिश कर रहा है, जबकि वह इस मोहिनी पर पहले ही हजारों रुपये लुटा चुका है। वह इस उद्देश्य के लिए लगातार उधार ले रहा है। आपको क्या लगता है, किससे? क्या मैं कहूँ, मित्या?
"चुप रहो!" दिमित्री चिल्लाया, "मेरे जाने तक इंतज़ार करो। मेरी मौजूदगी में कुछ भी बोलने की हिम्मत मत करना।"
एक सम्मानित लड़की के नाम पर कलंक लगाना! उसके बारे में एक शब्द भी बोलना घोर अपराध है, और मैं इसे बर्दाश्त नहीं करूँगा!
उसकी सांस फूल रही थी।
"मित्या! मित्या!" फ्योदोर पावलोविच उन्माद में चिल्लाया, और ज़ोर से साँस छोड़ी।
आंसू। "और क्या तुम्हारे पिता का आशीर्वाद तुम्हारे लिए कुछ भी मायने नहीं रखता? अगर मैं तुम्हें श्राप दूं, तो फिर क्या होगा?"
"बेशर्म पाखंडी!" दिमित्री गुस्से से चिल्लाया। "वह अपने पिता से ऐसा कहता है! अपने पिता से! दूसरों के साथ वह कैसा व्यवहार करेगा?"
महोदय, ज़रा कल्पना कीजिए; यहाँ एक गरीब लेकिन सम्मानित व्यक्ति रहता है, जिस पर एक बड़ा परिवार है। वह एक कप्तान है, जो कुछ मुसीबत में फंस गया और सेना से बर्खास्त कर दिया गया, लेकिन सार्वजनिक रूप से नहीं, न ही कोर्ट-मार्शल द्वारा, और न ही उसकी प्रतिष्ठा पर कोई कलंक लगा। और तीन हफ्ते पहले, दिमित्री ने उसे एक शराबखाने में दाढ़ी से पकड़ा, सड़क पर घसीटा और सबके सामने पीटा, और यह सब इसलिए हुआ क्योंकि वह मेरे एक छोटे से व्यवसाय में एजेंट है।
"यह सब झूठ है! बाहरी तौर पर सच है, लेकिन अंदर से झूठ है!" दिमित्री ने कहा।
क्रोध से कांपते हुए। "पिताजी, मैं अपने कृत्य का औचित्य नहीं ठहराता। हाँ, मैं सार्वजनिक रूप से स्वीकार करता हूँ, मैंने उस कप्तान के साथ एक क्रूर व्यक्ति जैसा व्यवहार किया, और अब मुझे इसका पछतावा है, और मैं अपने क्रूर क्रोध के लिए स्वयं से घृणा करता हूँ। लेकिन यह कप्तान, आपका यह एजेंट, उस महिला के पास गया जिसे आप जादूगरनी कहते हैं, और आपकी ओर से उसे यह सुझाव दिया कि वह मेरे उन ऋणों को ले ले जो आपके पास थे, और मुझसे उन पैसों के लिए मुकदमा करे ताकि अगर मैं आपसे अपनी संपत्ति का हिसाब माँगता रहूँ तो मुझे उनके माध्यम से जेल में डाल दे। अब आप मुझे उस महिला के प्रति कमजोरी रखने के लिए दोषी ठहरा रहे हैं जबकि आपने स्वयं उसे मुझे मोहित करने के लिए उकसाया था! उसने मेरे सामने ही मुझसे यह कहा... उसने मुझे यह कहानी सुनाई और आप पर हँसी... आप मुझे जेल में डालना चाहते थे क्योंकि आप उससे मेरी ईर्ष्या करते थे, क्योंकि आपने उस पर अपना ध्यान केंद्रित करना शुरू कर दिया था; और मैं इसके बारे में भी सब जानता हूँ; उसने इस पर भी आप पर हँसी थी - आप सुन रहे हैं - वह आप पर हँसी थी।" जैसा कि उसने बताया। तो यहाँ देखिए यह आदमी, यह पिता जो अपने दुराचारी बेटे को फटकार रहा है! सज्जनों, मेरे गुस्से के लिए मुझे क्षमा करें, लेकिन मुझे पहले से ही पता था कि यह धूर्त बूढ़ा आदमी आपको केवल एक घोटाला खड़ा करने के लिए इकट्ठा करेगा। अगर वह क्षमादान की गुहार लगाता तो मैं उसे क्षमा कर देती; उसे क्षमा करने और क्षमा मांगने के लिए! लेकिन अभी-अभी उसने न केवल मेरा, बल्कि एक सम्मानित युवती का भी अपमान किया है, जिसके प्रति मेरे मन में इतना आदर है कि मैं उसका नाम व्यर्थ

में लेने की हिम्मत नहीं करती, इसलिए मैंने उसका पर्दाफाश करने का निश्चय कर लिया है, भले ही वह मेरा पिता हो...
वह आगे नहीं बढ़ सका। उसकी आँखें चमक रही थीं और वह साँसें ले रहा था।
मुश्किल खड़ी हो गई। लेकिन कोठरी में मौजूद हर कोई हिल गया। फादर ज़ोस्सिमा को छोड़कर बाकी सभी बेचैनी से अपनी सीटों से उठ खड़े हुए। भिक्षु गंभीर दिख रहे थे, लेकिन बड़े भिक्षु के मार्गदर्शन की प्रतीक्षा कर रहे थे। वह चुपचाप बैठे रहे, उनका चेहरा पीला पड़ गया था, उत्तेजना से नहीं बल्कि बीमारी की कमजोरी से। उनके चेहरे पर एक विनती भरी मुस्कान थी; वह समय-समय पर अपना हाथ उठाते, मानो तूफान को रोक रहे हों, और बेशक, उनके एक इशारे से ही यह दृश्य समाप्त हो जाता; लेकिन ऐसा लग रहा था कि वह किसी बात का इंतज़ार कर रहे हैं और उन्हें ध्यान से देख रहे थे, मानो कुछ समझने की कोशिश कर रहे हों जो उन्हें पूरी तरह से स्पष्ट नहीं था। अंत में मियूसोव ने खुद को पूरी तरह से अपमानित और शर्मिंदा महसूस किया।
“इस शर्मनाक घटना के लिए हम सब जिम्मेदार हैं,” उन्होंने गुस्से में कहा। “लेकिन मैंने किया।”
जब मैं आया था तब मुझे इसका अंदाजा नहीं था, हालांकि मैं जानता था कि मुझे किससे निपटना है। इसे तुरंत रोकना होगा! यकीन मानिए, महोदय, मुझे उन विवरणों की सटीक जानकारी नहीं थी जो अभी-अभी सामने आए हैं, मैं उन पर विश्वास करने को तैयार नहीं था, और मुझे पहली बार पता चला है... एक पिता अपने बेटे के एक चरित्रहीन महिला के साथ संबंधों से ईर्ष्या करता है और अपने बेटे को जेल भेजने के लिए उस महिला के साथ साजिश रचता है! यही वह समूह है जिसमें मुझे उपस्थित होने के लिए मजबूर किया गया है! मुझे धोखा दिया गया। मैं आप सभी से कहता हूँ कि मुझे भी उतना ही धोखा दिया गया जितना किसी और को।
"दिमित्री फ्योदोरोविच!" फ्योदोर पावलोविच ने अचानक चिल्लाकर कहा।
अस्वाभाविक आवाज में, "अगर तुम मेरे बेटे न होते तो मैं तुम्हें अभी इसी वक्त द्वंद्वयुद्ध के लिए चुनौती देता... पिस्तौल से, तीन कदम की दूरी पर... एक रूमाल के पार," उसने दोनों पैरों से पटकते हुए अपनी बात समाप्त की।
जीवन भर अभिनय करते आए पुराने झूठे लोगों के साथ ऐसे क्षण आते हैं।
जब वे अपने किरदार में इस कदर डूब जाते हैं कि वे कांपने लगते हैं या भावुक होकर आंसू बहाने लगते हैं, हालांकि उसी क्षण, या एक सेकंड बाद, वे खुद से फुसफुसा सकते हैं, "तुम जानते हो कि तुम झूठ बोल रहे हो, तुम निर्लज्ज बूढ़े पापी! तुम अपने 'पवित्र' क्रोध के बावजूद अभी अभिनय कर रहे हो।"
दिमित्री ने पीड़ा से भौंहें चढ़ाईं और अपने प्रति असीम घृणा भरी निगाहों से उसे देखा।
पिता।
“मैंने सोचा... मैंने सोचा,” उन्होंने धीमी और मानो नियंत्रित आवाज़ में कहा।
आवाज, "मैं अपने दिल के फरिश्ते, अपने मंगेतर के साथ अपने पैतृक स्थान पर आ रही थी, ताकि उसके बुढ़ापे में उसका ख्याल रख सकूँ, और मुझे वहाँ एक भ्रष्ट, व्यभिचारी, एक नीच मसखरा के अलावा कुछ नहीं मिला!"
“द्वंद्वयुद्ध!” बूढ़ा दुष्ट हांफते और हांफते हुए फिर चिल्लाया।
“और हे प्योत्र अलेक्सांद्रोविच मियूसोव, मैं तुम्हें बता दूं कि तुम्हारे पूरे परिवार में इस ‘प्राणी’ से अधिक उच्च कोटि की और ईमानदार—सुनो—ईमानदार स्त्री कभी नहीं हुई, जैसा कि तुमने उसे कहने की हिम्मत की है! और हे दिमित्री फ्योदोरोविच, तुमने अपनी मंगेतर को उस ‘प्राणी’ के लिए त्याग दिया, इसलिए तुमने खुद सोचा होगा कि तुम्हारी मंगेतर उसके सामने कुछ भी नहीं है। यही है वो स्त्री जिसे ‘प्राणी’ कहा जाता है!”
“शर्मनाक!” फादर इओसिफ ने अचानक कहा।
“शर्मनाक और घिनौना!” कल्गानोव गुस्से से लाल होते हुए चिल्लाया।
लड़कपन भरी आवाज़, भावनाओं से कांप रही थी। उस क्षण तक वह चुप था।
“ऐसा आदमी ज़िंदा क्यों है?” गुस्से से आग बबूला दिमित्री गुर्राया।
खोखली आवाज़ में, अपने कंधों को इतना सिकोड़ते हुए कि वह लगभग विकृत दिखने लगा, उसने कहा, “मुझे बताओ, क्या उसे धरती को अपवित्र करते रहने की अनुमति दी जा सकती है?” उसने चारों ओर देखा और बूढ़े आदमी की ओर इशारा किया। उसने शांत और सधे हुए स्वर में कहा।
“सुनो, सुनो, भिक्षुओं, पितृहत्या की बात सुनो!” फ्योदोर पावलोविच चिल्लाया।

फादर इओसिफ के पास दौड़ते हुए, “यही है तुम्हारे ‘शर्मनाक’ का जवाब! शर्मनाक क्या है? वह ‘प्राणी’, वह ‘चरित्रहीन स्त्री’ शायद तुम भिक्षुओं से भी अधिक पवित्र हो जो मोक्ष की तलाश में हो! वह शायद जवानी में भटक गई, अपने परिवेश से प्रभावित होकर। लेकिन उसने बहुत प्रेम किया, और स्वयं ईसा मसीह ने उस स्त्री को क्षमा किया जिसने ‘बहुत प्रेम किया’।”
“ईसा मसीह ने उसे ऐसे प्रेम के कारण क्षमा नहीं किया था,” उसने अधीरता से कहा।
दयालु फादर इओसिफ।
“हाँ, यह उन्हीं भिक्षुओं के लिए था! यहाँ भोजन करके आप अपनी आत्माओं की रक्षा करते हैं।”
पत्तागोभी खाओ, और खुद को धर्मी समझो। तुम दिन में एक गजन मछली खाते हो, और सोचते हो कि तुम गजन मछली से भगवान को रिश्वत दे रहे हो।
कोठरी में चारों ओर से "यह असहनीय है!" की आवाज सुनाई दी। लेकिन यह अप्रिय दृश्य एक बेहद अप्रत्याशित तरीके से समाप्त हो गया। पिता
ज़ोस्सिमा अचानक अपनी सीट से उठ खड़े हुए। बुजुर्ग और बाकी सभी के लिए चिंता से लगभग विचलित होते हुए भी, अलेयोशा ने किसी तरह उनका हाथ पकड़कर उन्हें सहारा दिया। फादर ज़ोस्सिमा दिमित्री की ओर बढ़े और उनके पास पहुँचकर उनके सामने घुटने टेक दिए। अलेयोशा को लगा कि वे कमजोरी के कारण गिरे हैं, लेकिन ऐसा नहीं था। बुजुर्ग ने स्पष्ट रूप से और जानबूझकर दिमित्री के चरणों में तब तक झुके जब तक उनका माथा ज़मीन को छू नहीं गया। अलेयोशा इतना चकित था कि जब वे दोबारा उठे तो वह उन्हें सहारा देना भूल गया। उनके होठों पर हल्की सी मुस्कान थी।
“अलविदा! आप सब मुझे क्षमा कर दीजिए!” उसने अपने सामने चारों ओर झुकते हुए कहा।
अतिथि।
दिमित्री कुछ क्षणों तक विस्मय में खड़ा रहा। उसके सामने झुकते हुए—
इसका क्या मतलब था? अचानक वह ज़ोर से चिल्लाया, "हे भगवान!" उसने अपना चेहरा हाथों में छिपा लिया और कमरे से बाहर भाग गया। सभी मेहमान उसके पीछे-पीछे निकल पड़े, घबराहट में उन्होंने न तो अलविदा कहा और न ही मेज़बान को प्रणाम किया। केवल भिक्षु ही आशीर्वाद लेने के लिए उसके पास दोबारा गए।
“उसके चरणों में इस तरह गिरने का क्या अर्थ था? क्या यह प्रतीकात्मक था या
“क्या?” फ्योदोर पावलोविच अचानक चुप हो गए और किसी को सीधे संबोधित किए बिना बातचीत को फिर से शुरू करने की कोशिश करने लगे। उस समय वे सभी आश्रम परिसर से बाहर निकल रहे थे।
"मैं पागलखाने और पागलों के लिए जवाब नहीं दे सकता," मियूसोव ने जवाब दिया।
एक बार चिड़चिड़ेपन से कहा, "लेकिन मैं तुम्हारी संगति से दूर रहूंगा, फ्योदोर पावलोविच, और यकीन मानो, हमेशा के लिए। वह साधु कहाँ है?"
यानी, वह भिक्षु जिसने उन्हें अपने साथ भोजन करने के लिए आमंत्रित किया था।
वरिष्ठ अधिकारी ने उन्हें इंतज़ार नहीं कराया। जैसे ही वे बड़े पादरी की कोठरी से सीढ़ियों से नीचे उतरे, वह उनसे तुरंत मिले, मानो वह उनका इंतज़ार कर रहे हों।
“आदरणीय फादर, कृपया मेरी एक कृपा कीजिए। फादर सुपीरियर को मेरा हार्दिक सम्मान व्यक्त कीजिए, मेरी ओर से व्यक्तिगत रूप से क्षमा मांगिए, मियूसोव, उनसे कहिए कि मुझे अत्यंत खेद है कि अप्रत्याशित परिस्थितियों के कारण मैं उनके भोज में उपस्थित होने का सम्मान प्राप्त नहीं कर पा रहा हूँ, यद्यपि मेरी ऐसी प्रबल इच्छा है,” मियूसोव ने भिक्षु से चिढ़कर कहा।
“और वह अप्रत्याशित परिस्थिति, निश्चित रूप से, मैं स्वयं हूँ,” फ्योडोर
पावलोविच ने तुरंत बीच में दखल दिया। “सुन रहे हो, फादर जी; ये सज्जन मेरी संगति में नहीं रहना चाहते, वरना अभी आ जाते। और आप जाइए, प्योत्र अलेक्सांद्रोविच, कृपया फादर सुपीरियर के पास जाइए और आपको भोजन की शुभकामनाएं। मैं मना करता हूँ, आप नहीं। घर, घर, मैं घर पर खाना खाऊंगा, मुझे यहाँ खाने की इच्छा नहीं है, प्योत्र अलेक्सांद्रोविच, मेरे प्रिय रिश्तेदार।”
“मैं तुम्हारा रिश्तेदार नहीं हूँ और कभी नहीं रहा हूँ, तुम नीच आदमी!”
मैंने तुम्हें गुस्सा दिलाने के लिए जानबूझकर ऐसा कहा था, क्योंकि तुम हमेशा इससे इनकार करते हो।

रिश्ता तो है, लेकिन अपनी फेरबदल के बावजूद तुम सच में रिश्तेदार हो। मैं इसे चर्च के कैलेंडर से साबित कर दूंगा। जहाँ तक तुम्हारी बात है, इवान, अगर चाहो तो रुक जाओ। मैं तुम्हारे लिए घोड़े बाद में भेज दूंगा। शिष्टाचार के अनुसार तुम्हें फादर सुपीरियर, प्योत्र अलेक्जेंड्रोविच के पास जाकर हमारे द्वारा मचाई गई गड़बड़ी के लिए माफी मांगनी चाहिए...
“क्या यह सच है कि तुम घर जा रहे हो? क्या तुम झूठ तो नहीं बोल रहे हो?”
“प्योत्र अलेक्सांद्रोविच! जो कुछ हुआ है उसके बाद मैं ऐसा करने की हिम्मत कैसे कर सकता हूँ!”
मुझे क्षमा करें, सज्जनों, मैं भावनाओं में बह गया था! और साथ ही परेशान भी! और सचमुच, मुझे शर्म आ रही है। सज्जनों, एक व्यक्ति का हृदय मैसेडोनिया के सिकंदर जैसा होता है और दूसरे का नन्हे कुत्ते फिडो जैसा। मेरा हृदय नन्हे कुत्ते फिडो जैसा है। मुझे शर्म आ रही है! ऐसी घटना के बाद मैं मठ के भोजन पर कैसे जा सकता हूँ, वहाँ की चटनी कैसे खा सकता हूँ? मुझे शर्म आ रही है, मैं नहीं जा सकता। आप मुझे क्षमा करें!
“शैतान ही जानता है, अगर वह हमें धोखा दे दे तो क्या होगा?” मियूसोव ने सोचा, अभी भी
वह झिझकते हुए, पीछे हटते हुए उस मसखरे को अविश्वास भरी निगाहों से देख रहा था। तभी वह मुड़ा और जब उसने देखा कि मियूसोव उसे देख रहा है, तो उसने उसे चुंबन का इशारा किया।
“तो क्या तुम सुपीरियर आ रहे हो?” मियूसोव ने इवान से अचानक पूछा। “क्यों नहीं? मुझे कल विशेष रूप से आमंत्रित किया गया था।”
"दुर्भाग्यवश, मुझे इस उलझन भरी जगह पर जाने के लिए विवश होना पड़ रहा है।"
“रात का खाना,” मियूसोव ने उसी चिड़चिड़ेपन से कहा, इस बात की परवाह किए बिना कि भिक्षु सुन रहा था। “हमें कम से कम इस व्यवधान के लिए माफी मांगनी चाहिए और यह स्पष्ट करना चाहिए कि यह हमारी गलती नहीं थी। आपका क्या विचार है?”
“हाँ, हमें यह समझाना होगा कि यह हमारी गलती नहीं थी। इसके अलावा, पिताजी नहीं मानेंगे।”
“वहाँ,” इवान ने कहा।
“खैर, मुझे उम्मीद है ऐसा नहीं होगा! इस खाने पर धिक्कार है!”
वे सब चलते रहे। भिक्षु चुपचाप सुनता रहा। सड़क पर
झाड़ियों के बीच से गुजरते हुए उसने एक बात गौर की—कि फादर सुपीरियर काफी देर से इंतजार कर रहे थे और उन्हें आधे घंटे से ज्यादा की देरी हो चुकी थी। उसे कोई जवाब नहीं मिला। मियूसोव ने इवान को घृणा भरी नजरों से देखा।
“देखो, वो ऐसे खाने पर जा रहा है जैसे कुछ हुआ ही न हो,” उसने कहा।
मन में विचार आया। "बेशर्म चेहरा, और करामाज़ोव जैसी अंतरात्मा!"

अध्याय 7

एक युवक जो करियर बनाने के लिए दृढ़ संकल्पित है

अलेयोशा ने फादर ज़ोस्सिमा को उनके शयनकक्ष तक पहुँचाया और उन्हें पलंग पर बैठाया। कमरा छोटा था और उसमें ज़रूरत की सारी चीज़ें थीं। एक संकरा लोहे का पलंग था, जिस पर गद्दे के लिए मखमल की पट्टी बिछी थी। कोने में, मूर्तियों के नीचे, एक पढ़ने की मेज थी जिस पर एक क्रॉस और बाइबिल रखी थी। बुजुर्ग थके-हारे पलंग पर लेट गए। उनकी आँखें चमक रही थीं और वे ज़ोर-ज़ोर से साँस ले रहे थे। वे अलेयोशा को ध्यान से देख रहे थे, मानो कुछ सोच रहे हों।
“जाओ, मेरे प्यारे बेटे, जाओ। पोरफिरी मेरे लिए काफी है। जल्दी करो, तुम
अगर वहां जरूरत हो तो जाकर फादर सुपीरियर की मेज पर इंतजार करो।
“मुझे यहीं रहने दो,” अलेयोशा ने विनती की।
“वहाँ तुम्हारी ज़्यादा ज़रूरत है। वहाँ शांति नहीं है। तुम्हें इंतज़ार करना होगा, और
सेवा भाव रखो। अगर बुरी आत्माएं हावी हों, तो प्रार्थना दोहराओ। और याद रखना, मेरे बेटे”—बुजुर्ग उसे इसी नाम से पुकारना पसंद करते थे—“भविष्य में यह जगह तुम्हारे लिए नहीं है। जब ईश्वर की इच्छा हो कि मुझे बुला लें, तो मठ छोड़ देना। हमेशा के लिए चले जाना।”
अलियोशा ने शुरुआत की।
“क्या बात है? अभी यहाँ आने का समय नहीं है। मैं आपको महानता के लिए आशीर्वाद देता हूँ।
संसार में सेवा करो। तुम्हारी यात्रा लंबी होगी। तुम्हें एक पत्नी भी लानी होगी। वापस आने से पहले तुम्हें सब कुछ सहना होगा। बहुत कुछ करना होगा। लेकिन मुझे तुम पर कोई संदेह नहीं है, इसलिए मैं तुम्हें भेज रहा हूँ। मसीह तुम्हारे साथ है। उसे मत त्यागना, और वह तुम्हें नहीं त्यागेगा। तुम बड़े दुख देखोगे, और उस दुख में तुम्हें सुख मिलेगा। यह मेरा तुम्हें अंतिम संदेश है: दुख में सुख की तलाश करो। काम करो, निरंतर काम करो। मेरे शब्दों को याद रखना, क्योंकि यद्यपि मैं तुमसे फिर बात करूँगा, न केवल मेरे दिन बल्कि मेरे घंटे भी गिने-चुने हैं।
अलियोशा के चेहरे पर एक बार फिर तीव्र भावनाएँ झलक रही थीं। उसके होंठों के कोने
कांप उठा।
“यह क्या है?” फादर ज़ोसिमा ने धीरे से मुस्कुराते हुए पूछा। “सांसारिक
लोग मृतकों के पीछे आँसू बहाते हैं, पर हम यहाँ अपने पिता के जाने पर आनंदित होते हैं। हम उनके लिए प्रार्थना करते हैं और आनंद मनाते हैं। हे प्रभु, मुझे छोड़ दो, मैं प्रार्थना करता हूँ। जाओ, और जल्दी करो। अपने भाइयों के पास रहो। और केवल एक के पास नहीं, बल्कि दोनों के पास रहो।
फादर ज़ोस्सिमा ने उसे आशीर्वाद देने के लिए अपना हाथ उठाया। अलेयोशा कुछ नहीं कर सका। विरोध तो किया, हालाँकि उसके मन में वहाँ रहने की तीव्र इच्छा थी। इसके अलावा, वह दिमित्री को प्रणाम करने का महत्व भी जानना चाहता था; सवाल उसकी ज़बान पर था, पर पूछने की हिम्मत नहीं कर पा रहा था। वह जानता था कि अगर बड़े दिमित्री चाहते तो बिना पूछे ही समझा देते। लेकिन ज़ाहिर है, यह उनकी इच्छा नहीं थी। उस घटना ने अलेयोशा पर गहरा प्रभाव डाला था; वह उसके रहस्यमय महत्व पर आँख बंद करके विश्वास करने लगा था। रहस्यमय, और शायद भयानक भी।
जैसे ही वह आश्रम परिसर से निकलकर मठ की ओर तेजी से बढ़ा,
फादर सुपीरियर के भोज में सेवा करने का समय आते ही, उसे अचानक हृदय में एक तीव्र पीड़ा महसूस हुई और वह रुक गया। उसे ऐसा लगा मानो उसे फादर ज़ोस्सिमा के वे शब्द फिर से सुनाई दे रहे हों, जिनमें उन्होंने उसके निकट आने वाले अंत की भविष्यवाणी की थी। उन्होंने जो इतनी सटीकता से भविष्यवाणी की थी, वह निश्चित रूप से पूरी होनी थी। अलेयोशा को इस बात पर पूर्ण विश्वास था। लेकिन वह उनके बिना कैसे रह सकता था? वह उन्हें देखे और सुने बिना कैसे जी सकता था? वह कहाँ जाए? उन्होंने उससे कहा था कि रोना नहीं, और मठ छोड़ दे। हे भगवान! अलेयोशा ने इतने लंबे समय से ऐसी पीड़ा का अनुभव नहीं किया था। वह मठ और आश्रम को अलग करने वाले छोटे जंगल से होकर तेज़ी से भागा, और अपने विचारों का

बोझ सहन न कर पाने के कारण, उसने रास्ते के किनारे लगे प्राचीन चीड़ के पेड़ों को निहारा। उसे ज़्यादा दूर नहीं जाना था—लगभग पाँच सौ कदम। उसे उस समय किसी से मिलने की उम्मीद नहीं थी, लेकिन रास्ते के पहले मोड़ पर ही उसने रकितिन को देखा। वह किसी का इंतज़ार कर रहा था।
“क्या तुम मेरा इंतज़ार कर रहे हो?” अलेयोशा ने उससे आगे निकलते हुए पूछा। “हाँ,” रकितिन मुस्कुराया।
“तुम फादर सुपीरियर के पास जल्दी जा रहे हो, मैं
मुझे पता है; उनके यहाँ एक भोज है। बिशप और जनरल पाहातोव के स्वागत के बाद से ऐसा भोज नहीं हुआ है, याद है? मैं वहाँ नहीं रहूँगा, लेकिन तुम जाओ और चटनी ले आओ। एलेक्सी, मुझे एक बात बताओ, उस दर्शन का क्या मतलब है? मैं तुमसे यही पूछना चाहता हूँ।
“कौन सा विजन?”
“अपने भाई दिमित्री को प्रणाम करना। और क्या उसने ज़मीन पर हाथ नहीं रखा था?
उसका माथा भी!
“आप फादर ज़ोसिमा की बात कर रहे हैं?”
"जी हां, फादर ज़ोसिमा के।"
"क्या तुमने ज़मीन को छुआ?"
“अरे वाह, यह तो अपमानजनक अभिव्यक्ति है! खैर, इसमें क्या बुराई है? वैसे भी, इसका मतलब क्या है?”
दृष्टि का अर्थ क्या है?
"मुझे नहीं पता इसका क्या मतलब है, मीशा।"
मुझे पता था कि वह तुम्हें यह नहीं समझाएगा! इसमें कुछ भी अद्भुत नहीं है।
यह तो ज़ाहिर सी बात है, बस एक आम धार्मिक दिखावा था। लेकिन इस प्रदर्शन के पीछे एक मकसद था। कस्बे के सभी धर्मनिष्ठ लोग इसके बारे में बात करेंगे और पूरे प्रांत में यह कहानी फैलाएंगे, यह सोचते हुए कि इसका क्या मतलब था। मेरे ख्याल से उस बूढ़े आदमी की सूंघने की शक्ति वाकई तेज़ है; उसने किसी अपराध को भांप लिया। तुम्हारे घर से इसकी बदबू आ रही है।
“कौन सा अपराध?”
रकितिन के मन में कुछ ऐसा था जिसे वह बेताब होकर बताना चाहता था। “यह अपराध तुम्हारे परिवार में ही रहेगा। तुम्हारे भाइयों और तुम्हारे अमीरों के बीच।
बूढ़े पिता। तो फादर ज़ोसिमा नीचे बैठ गए, ताकि आने वाली किसी भी स्थिति के लिए तैयार रहें। अगर बाद में कुछ होता है, तो लोग कहेंगे: 'अरे वाह, उस पवित्र व्यक्ति ने तो पहले ही देख लिया था, भविष्यवाणी कर दी थी!' हालाँकि इस तरह की भविष्यवाणी तो बेमानी ही होगी। 'अरे वाह, लेकिन यह तो प्रतीकात्मक था,' वे कहेंगे, 'एक रूपक था,' और न जाने क्या-क्या! उनकी महिमा के लिए याद किया जाएगा: 'उन्होंने अपराध की भविष्यवाणी की और अपराधी को चिह्नित किया!' इन पागल कट्टरपंथियों का यही हाल होता है; वे शराबखाने में क्रॉस का निशान बनाते हैं और मंदिर पर पत्थर फेंकते हैं। आपके बड़े की तरह, वह एक नेक आदमी पर लाठी चलाते हैं और एक हत्यारे के चरणों में गिर पड़ते हैं।
“कौन सा अपराध? कौन सा हत्यारा? तुम्हारा मतलब क्या है?” अलेयोशा एकदम रुक गया। रकितिन भी रुक गया।
“कौन सा हत्यारा? मानो तुम्हें पता ही न हो! मुझे यकीन है तुमने इसके बारे में सोचा होगा।”
इससे पहले भी। वैसे, यह भी दिलचस्प है। सुनो, अलेयोशा, तुम हमेशा सच बोलते हो, भले ही तुम हमेशा दुविधा में फंसे रहते हो। क्या तुमने इस बारे में सोचा है या नहीं? जवाब दो।
“मैंने किया है,” अलेयोशा ने धीमी आवाज़ में उत्तर दिया। यहाँ तक कि रकितिन भी प्रभावित हुआ।
चौंक गया।
“क्या? क्या तुमने सचमुच ऐसा किया है?” वह चिल्लाया।
“मैंने... मैंने इसके बारे में ठीक से सोचा नहीं है,” अलेयोशा ने बुदबुदाते हुए कहा, “लेकिन सीधे तौर पर आप वह इतनी अजीब तरह से बोलने लगा कि मुझे लगा जैसे मैंने खुद ही यह सोचा हो।
“देखा? (और तुमने इसे कितनी अच्छी तरह व्यक्त किया!) अपने पिता को देखकर और
आज तुमने अपने भाई मित्या के साथ अपराध करने की सोची। तो क्या मैं गलत नहीं हूँ?
“लेकिन रुकिए, एक मिनट रुकिए,” अलेयोशा ने बेचैनी से बीच में कहा। “किस वजह से ऐसा हुआ है?”

क्या आप यह सब देखना चाहते हैं? इसमें आपकी रुचि क्यों है? यही पहला सवाल है।
“दो सवाल, असंबद्ध, लेकिन स्वाभाविक। मैं उनका जवाब दूंगा।
अलग-अलग। मुझे यह देखने के लिए किसने प्रेरित किया? अगर मैं अचानक तुम्हारे भाई दिमित्री को न समझ लेता, उसके दिल की गहराई में न उतर जाता, तो मैं इसे देख ही नहीं पाता। मैंने उसके एक ही गुण से उसके पूरे व्यक्तित्व को जान लिया। ये बेहद ईमानदार लेकिन भावुक लोग एक सीमा रेखा खींचते हैं जिसे पार नहीं किया जा सकता। अगर ऐसा होता, तो वह तुम्हारे पिता पर चाकू लेकर हमला कर देता। लेकिन तुम्हारे पिता एक शराबी और पापी बूढ़े व्यक्ति हैं, जो कभी सीमा नहीं खींच सकते—अगर वे दोनों खुद को बेकाबू होने देंगे, तो दोनों को ही दुख उठाना पड़ेगा।
“नहीं, मीशा, नहीं। अगर बस इतना ही है, तो तुमने मुझे तसल्ली दे दी है। ऐसी नौबत नहीं आएगी।”
वह।"
लेकिन तुम क्यों कांप रहे हो? मैं तुम्हें बताता हूँ; वह ईमानदार हो सकता है, तुम्हारा
मित्या (वह मूर्ख है, लेकिन ईमानदार है), वह एक कामुक व्यक्ति है। यही उसकी परिभाषा और उसका मूल स्वरूप है। तुम्हारे पिता ने ही उसे यह नीच कामुकता विरासत में दी है। जानते हो, अलेयोशा, मुझे तुम पर आश्चर्य होता है कि तुमने अपनी पवित्रता कैसे बरकरार रखी है। तुम भी करामाज़ोव हो, जानते हो! तुम्हारे परिवार में कामुकता एक बीमारी की तरह फैली हुई है। लेकिन अब, ये तीनों कामुक व्यक्ति अपनी कमर में चाकू लिए एक-दूसरे को देख रहे हैं। तीनों आपस में सिर फोड़ रहे हैं, और तुम चौथे हो सकते हो।
“उस औरत के बारे में आपकी सोच गलत है। दिमित्री उससे नफरत करता है,” उसने कहा।
अलेयोशा, एक तरह से कांपते हुए।
“ग्रुशेंका? नहीं भाई, वह उससे नफरत नहीं करता। क्योंकि उसने खुलेआम
उसने अपनी मंगेतर को उसके लिए त्याग दिया, लेकिन वह उससे घृणा नहीं करता। मेरे प्यारे बेटे, यहाँ कुछ ऐसा है जो तुम अभी तक नहीं समझ पाए हो। एक आदमी किसी सुंदरता से, किसी स्त्री के शरीर से, या यहाँ तक कि उसके शरीर के किसी अंग से भी प्रेम कर बैठता है (एक कामुक व्यक्ति इसे समझ सकता है), और वह उसके लिए अपने बच्चों को भी त्याग देता है, अपने माता-पिता और अपने देश, रूस को भी बेच देता है। यदि वह ईमानदार है, तो वह चोरी करेगा; यदि वह दयालु है, तो वह हत्या करेगा; यदि वह वफादार है, तो वह धोखा देगा। स्त्रियों के पैरों के कवि पुश्किन ने अपनी कविताओं में उनके पैरों का वर्णन किया है। दूसरे उनकी प्रशंसा नहीं करते, लेकिन उनके पैरों को देखकर उन्हें रोमांच होता है—और यह केवल उनके पैरों की बात नहीं है। यहाँ तिरस्कार से कोई लाभ नहीं होगा, भाई, भले ही वह ग्रुशेंका से घृणा करता हो। वह करता तो है, लेकिन वह खुद को उससे दूर नहीं कर पाता।
“मैं समझता हूँ,” अलेयोशा अचानक चौंककर बोला। “सच में? खैर, मुझे लगता है कि तुम समझते हो, क्योंकि तुमने इसे सीधे-सीधे बोल दिया।”
“पहला शब्द,” रकितिन ने दुर्भावना से कहा। “यह बात तुम्हारे मुंह से अनजाने में निकल गई, और इसीलिए यह स्वीकारोक्ति और भी कीमती है। तो यह एक जाना-पहचाना विषय है; तुमने इसके बारे में पहले ही सोच लिया है, मेरा मतलब है कामुकता के बारे में! ओह, हे पवित्र आत्मा! तुम शांत स्वभाव के हो, अलेयोशा, तुम एक संत हो, मैं जानता हूँ, लेकिन शैतान ही जानता है कि तुमने क्या सोचा है, और तुम पहले से क्या जानते हो! तुम पवित्र हो, लेकिन तुम गहराई में उतर चुके हो... मैं तुम्हें लंबे समय से देख रहा हूँ। तुम स्वयं एक करामाज़ोव हो; तुम एक सच्चे करामाज़ोव हो—निस्संदेह जन्म और चयन का इसमें कुछ योगदान है। तुम अपने पिता से कामुक हो, अपनी माँ से एक पागल संत। तुम क्यों कांप रहे हो? क्या यह सच है? क्या तुम जानते हो, ग्रुशेंका मुझसे तुम्हें साथ लाने की विनती कर रही है। ‘मैं उसका चोगा उतार दूँगी,’ वह कहती है। तुम सोच भी नहीं सकते कि वह तुम्हें साथ लाने के लिए मुझसे कितनी बार विनती करती है।” मुझे आश्चर्य हुआ कि उसने आपमें इतनी दिलचस्पी क्यों ली। क्या आप जानते हैं, वह भी एक असाधारण महिला है!
“उसे धन्यवाद कहो और कहो कि मैं नहीं आ रहा हूँ,” अलेयोशा ने तनाव भरे स्वर में कहा।
मुस्कुराते हुए। "मिशा, तुम अपनी बात पूरी करो। मैं तुम्हें अपना विचार बाद में बताऊंगी।"
“समाप्त करने जैसा कुछ नहीं है। सब कुछ स्पष्ट है। वही पुरानी धुन है, भाई।”
अगर तुम भी दिल से कामुक हो, तो अपने भाई इवान का क्या? वो भी करामाज़ोव ही है। तुम सब करामाज़ोवों की जड़ में यही बात है कि तुम सब कामुक, लालची और पागल हो! तुम्हारा भाई इवान किसी बेवकूफी भरे,

अज्ञात मकसद से मज़ाक में धार्मिक लेख लिखता है, हालाँकि वो नास्तिक है और खुद मानता है कि ये एक धोखा है—ये है तुम्हारा भाई इवान। वो मित्या की मंगेतर को पाना चाहता है और मुझे लगता है कि वो कामयाब भी हो जाएगा। और तो और, ये मित्या की सहमति से हो रहा है। मित्या अपनी मंगेतर को उससे छुटकारा पाने के लिए उसके हवाले कर देगा और ग्रुशेंका भाग जाएगा। और वो अपनी सारी नेकदिली और निस्वार्थता के बावजूद ऐसा करने को तैयार है। ज़रा ध्यान दो। ये लोग सबसे खतरनाक होते हैं! भला कौन तुम्हें पहचान सकता है? वो अपनी नीचता को पहचानता है और फिर भी उसे करता रहता है! मैं तुम्हें यह भी बता दूं, वह बूढ़ा आदमी, तुम्हारा पिता, अब मित्या के रास्ते में खड़ा है। वह अचानक ग्रुशेंका के लिए पागल हो गया है। उसे देखते ही उसके मुंह में पानी आ जाता है। उसने अभी जेल में जो हंगामा किया, वह सिर्फ ग्रुशेंका की वजह से किया, क्योंकि मियूसोव ने उसे 'त्यागी हुई प्राणी' कहा था। वह प्यार में पागल हो गया है। पहले तो वह सिर्फ उसके शराबखानों और कुछ अन्य संदिग्ध धंधों के सिलसिले में उसके यहाँ काम करती थी, लेकिन अब उसे अचानक उसकी असलियत का एहसास हो गया है और वह उसके लिए बेकाबू हो गया है। वह उसे अपने प्रस्तावों से परेशान करता रहता है, जो ज़ाहिर तौर पर सम्मानजनक नहीं हैं। और इस रास्ते पर पिता-पुत्र की टक्कर ज़रूर होगी! लेकिन ग्रुशेंका उनमें से किसी का पक्ष नहीं लेती, वह अभी भी उनके साथ खेल रही है, दोनों को चिढ़ा रही है, यह सोच रही है कि किससे उसे सबसे ज़्यादा फ़ायदा होगा। क्योंकि भले ही वह पिता से बहुत सारा पैसा चुरा ले, वह उससे शादी नहीं करेगा, और शायद अंत में वह कंजूस बन जाए और अपना पर्स बंद रखे। यहीं पर मित्या का महत्व सामने आता है; उसके पास पैसे नहीं हैं, लेकिन वह उससे शादी करने को तैयार है। जी हाँ, शादी करने को तैयार! अपनी मंगेतर, बेहद खूबसूरत कटरीना इवानोव्ना, जो अमीर और एक कर्नल की बेटी है, को छोड़कर ग्रुशेंका से शादी करने को तैयार है, जो एक अय्याश, अनपढ़ और देहाती मेयर सैमसनोव नाम के एक बूढ़े व्यापारी की रखैल रह चुकी है। इस सब से कोई खूनी संघर्ष छिड़ सकता है, और यही आपके भाई इवान को चाहिए। यह उसके लिए एकदम सही रहेगा। वह कटरीना इवानोव्ना को, जिसके लिए वह तड़प रहा है, अपने साथ ले जाएगा और उसकी साठ हज़ार की दहेज की रकम हड़प लेगा। एक मामूली और भिखारी के लिए यह शुरुआत में ही बहुत लुभावना है। और ध्यान दें, वह मित्या के साथ कोई अन्याय नहीं करेगा, बल्कि उसकी सबसे बड़ी सेवा करेगा। मुझे यह बात पक्के तौर पर पता है कि मित्या ने पिछले ही हफ्ते, जब वह कुछ जिप्सी लड़कियों के साथ शराबखाने में नशे में धुत था, ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाकर कहा था कि वह अपनी मंगेतर कात्या के लायक नहीं है, बल्कि उसका भाई इवान ही उसके लायक है। और कैटेरिना इवानोव्ना आखिर में इवान जैसे आकर्षक आदमी को मना नहीं करेगी। वह पहले से ही उन दोनों के बीच दुविधा में है। और उस इवान ने तुम सबको कैसे जीत लिया कि तुम सब उसकी पूजा करते हो? वह तुम पर हंस रहा है और तुम्हारे मजे ले रहा है।

“तुम्हें कैसे पता? तुम इतनी आत्मविश्वास से कैसे बोल सकते हो?” अलेयोशा
उसने तीखे स्वर में, भौंहें चढ़ाते हुए पूछा।

“तुम क्यों पूछते हो, और मेरे जवाब से क्यों डरते हो? इससे पता चलता है कि तुम
जान लो कि मैं सच बोल रहा हूँ।

“तुम्हें इवान पसंद नहीं है। इवान पैसों से प्रभावित नहीं होगा।”

“सच में? और कैटरीना इवानोव्ना की खूबसूरती? यह सिर्फ पैसे की बात नहीं है,
हालांकि साठ हजार की संपत्ति एक आकर्षण है।"

“इवान इन सब बातों से ऊपर है। वह हजारों के बदले भी किसी की भरपाई नहीं करेगा। यह
इवान न तो पैसा ढूंढ रहा है, न ही आराम। शायद वह पीड़ा की तलाश में है।

“यह कैसा बेतुका सपना है? अरे, तुम तो बड़े ही अभिजात वर्ग हो!”

“अरे, मीशा, उसका स्वभाव उग्र है। उसका मन बंधन में है। वह
एक बड़े, अनसुलझे संदेह से ग्रस्त। वह उन लोगों में से एक है जो लाखों नहीं, बल्कि अपने सवालों के जवाब चाहते हैं।

“ये तो साहित्यिक चोरी है, अलेयोशा। तुम अपने बड़ों के वाक्यों को उद्धृत कर रहे हो। आह,”

“इवान ने तुम्हारे लिए एक समस्या खड़ी कर दी है!” रकितिन ने खुले द्वेष के साथ चिल्लाया। उसका चेहरा बदल गया और उसके होंठ फड़फड़ाने लगे। “और यह समस्या बेवकूफी भरी है। इसका अंदाज़ा लगाने से कोई फायदा नहीं। ज़रा दिमाग लगाओ—तुम्हें समझ आ जाएगा। उसका लेख बेतुका और हास्यास्पद है।

और क्या तुमने अभी-अभी उसका बेवकूफी भरा सिद्धांत सुना: अगर आत्मा अमर नहीं है, तो कोई सद्गुण नहीं है, और सब कुछ जायज़ है। (और हाँ, क्या तुम्हें याद है कि तुम्हारा भाई मित्या कैसे चिल्लाया था: 'मैं याद रखूँगा!') बदमाशों के लिए एक आकर्षक सिद्धांत!—(मैं अपशब्द बोल रहा हूँ, यह बेवकूफी है।) बदमाशों के लिए नहीं, बल्कि पाखंडी ढोंगियों के लिए, जो 'गहरे, अनसुलझे संदेहों से घिरे' हैं। वह दिखावा कर रहा है, और असल में बात यह है कि 'एक तरफ तो हमें मानना ही पड़ेगा' और 'दूसरी तरफ इसे स्वीकार करना ही होगा!' उसका पूरा सिद्धांत धोखा है! मानवता अमरता में विश्वास किए बिना भी सद्गुण के लिए जीने की शक्ति अपने भीतर पा लेगी।" इसे स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व के प्रति प्रेम में पाया जाएगा।
रकितिन अपनी उत्तेजना को मुश्किल से ही रोक पा रहा था, लेकिन अचानक, जैसे ही
हालांकि उसे कुछ याद आया, लेकिन वह अचानक रुक गया।
"बस करो," उसने और भी टेढ़ी मुस्कान के साथ कहा। "तुम क्यों हंस रहे हो? क्या तुम्हें लगता है कि मैं कोई अशिष्ट मूर्ख हूँ?"
नहीं, मैंने कभी सपने में भी तुम्हें मूर्ख नहीं समझा। तुम तो चतुर हो।
लेकिन... छोड़ो, मुस्कुराना मेरी बेवकूफी थी। मीशा, मैं समझ सकता हूँ कि तुम इस बात से परेशान हो रहे हो। तुम्हारी इस बेचैनी से लगता है कि तुम भी कैटेरिना इवानोव्ना के प्रति उदासीन नहीं हो; भाई, मुझे बहुत पहले से यही शक था, इसीलिए तुम मेरे भाई इवान को पसंद नहीं करते। क्या तुम उससे जलते हो?
"और उसके पैसों से भी जलते हो? क्या तुम इसे भी नहीं जोड़ोगे?"
मैं पैसों के बारे में कुछ नहीं कहूंगा। मैं आपका अपमान नहीं करूंगा।
"मैं इस पर विश्वास करता हूँ, क्योंकि तुम ऐसा कहते हो, लेकिन तुम और तुम्हारा भाई इवान दोनों ही नाश हों।"
तुम्हारे साथ। क्या तुम नहीं समझती कि कैटेरिना इवानोव्ना के अलावा भी कोई उसे नापसंद कर सकता है? और मैं उसे क्यों पसंद करूं? वह मुझे गाली देने की हिम्मत करता है, तुम्हें पता है। तो मुझे उसे गाली देने का अधिकार क्यों नहीं है?
मैंने कभी नहीं सुना कि उसने तुम्हारे बारे में कुछ कहा हो, अच्छा या बुरा।
तुम्हारे बारे में तो कोई बात ही नहीं करता।
लेकिन मैंने सुना है कि परसों कैटरीना इवानोव्ना के यहाँ वह था
मुझे गालियां देते हुए—देखिए, आपके इस दीन सेवक में उसकी कितनी दिलचस्पी है। और फिर भला ईर्ष्यालु कौन है, भाई, मैं कह नहीं सकता। उसने तो यहाँ तक कह दिया कि अगर मैं निकट भविष्य में आर्कमांड्राइट नहीं बनता और भिक्षु नहीं जाता, तो मैं निश्चित रूप से पीटर्सबर्ग जाकर किसी प्रतिष्ठित पत्रिका में समीक्षक के रूप में काम करूँगा, जहाँ मैं अगले दस साल तक लिखूँगा, और अंत में पत्रिका का मालिक बन जाऊँगा, और उसे उदारवादी और नास्तिक विचारधारा की ओर ले जाऊँगा, जिसमें समाजवादी रंग की झलक होगी, समाजवाद का हल्का सा आवरण होगा, लेकिन साथ ही हर समय सतर्क रहूँगा, यानी दोनों पक्षों से तालमेल बनाए रखूँगा और मूर्खों को बेवकूफ बनाऊँगा। आपके भाई के अनुसार, समाजवाद का यह रंग मुझे आय को बचाकर रखने और किसी यहूदी के मार्गदर्शन में निवेश करने से नहीं रोकेगा, जब तक कि मेरे करियर के अंत में मैं पीटर्सबर्ग में एक बड़ा घर नहीं बना लेता और अपने प्रकाशन कार्यालयों को उसमें स्थानांतरित नहीं कर देता, और ऊपरी मंजिलों को किराए पर नहीं दे देता। उन्होंने इसके लिए जगह भी चुन ली है, नेवा नदी पर बनने वाले नए पत्थर के पुल के पास, जिसके बारे में कहा जाता है कि यह पीटर्सबर्ग में बनाया जाएगा।
"आह, मीशा, सचमुच यही होगा, एक-एक शब्द सच होगा," चिल्लाते हुए बोली।
अलियोशा अपनी हंसमुख मुस्कान को रोक नहीं पाया।
"आपको व्यंग्य करने में भी आनंद आता है, एलेक्सी फ्योदोरोविच।"
नहीं, नहीं, मैं मज़ाक कर रहा था, मुझे माफ़ कर दीजिए। मेरे पास कुछ बिल्कुल अलग है।
लेकिन, माफ कीजिए, आपको ये सब किसने बताया होगा? क्या आप खुद कैटेरिना इवानोव्ना के यहाँ मौजूद थीं जब वो आपके बारे में बात कर रहा था?
"मैं वहां नहीं था, लेकिन दिमित्री फ्योदोरोविच वहां थे; और मैंने उन्हें यह बात खुद अपने कानों से कहते सुना; अगर आप जानना चाहें तो, उन्होंने मुझे नहीं बताया, लेकिन मैंने अनजाने में ही उनकी बातें सुन लीं, क्योंकि मैं

ग्रुशेंका के बेडरूम में बैठा था और मैं वहां से जा नहीं सकता था क्योंकि दिमित्री फ्योदोरोविच बगल वाले कमरे में थे।"
"ओह, हाँ, मैं भूल ही गया था कि वह आपकी रिश्तेदार है।"
“एक रिश्तेदार! वह ग्रुशेंका मेरी रिश्तेदार है!” रकितिन चिल्लाया और मुड़ गया।
गहरा लाल। "क्या तुम पागल हो? तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है!"
“अरे, क्या वह आपकी रिश्तेदार नहीं है? मैंने तो ऐसा ही सुना था।”
“तुमने यह कहाँ सुना होगा? तुम करामाज़ोव लोग खुद को एक होने का दावा करते हो।”
आपका परिवार प्राचीन और कुलीन है, हालांकि आपके पिता दूसरों के यहाँ मसखरापन करते हुए घूमते थे और रसोई में तो उन्हें केवल एहसान के तौर पर ही जाने दिया जाता था। मैं भले ही एक पुजारी का बेटा हूँ और आप जैसे रईसों की नज़र में मामूली हूँ, लेकिन मुझे इतनी आसानी से और बेदर्दी से अपमानित मत कीजिए। मेरे अंदर भी सम्मान की भावना है, एलेक्सी फ्योदोरोविच, मैं ग्रुशेंका जैसी आम वेश्या का रिश्तेदार नहीं हो सकता। आपसे विनती है कि कृपया इसे समझें!
रकितिन बेहद चिढ़ गया था।
मुझे माफ़ कर दीजिए, भगवान के लिए, मुझे बिल्कुल भी पता नहीं था... इसके अलावा... मैं कैसे...
तुम उसे वेश्या कहते हो? क्या वो... वैसी औरत है?” अलेयोशा अचानक शर्म से लाल हो गया। “मैं फिर से कहता हूँ, मैंने सुना है कि वो तुम्हारी रिश्तेदार है। तुम अक्सर उससे मिलने जाते हो, और तुमने खुद मुझे बताया था कि तुम उसके प्रेमी नहीं हो। मैंने कभी सपने में भी नहीं सोचा था कि तुम जैसे इंसान को उससे इतनी नफरत होगी! क्या वो वाकई इसकी हकदार है?”
“हो सकता है कि उससे मिलने के मेरे अपने कुछ कारण हों। यह आपका मामला नहीं है।
व्यापार। लेकिन रिश्ते की बात करें तो, तुम्हारा भाई, या यहाँ तक कि तुम्हारे पिता भी, उसे मेरी बजाय तुम्हारा बनाने की ज़्यादा संभावना रखते हैं। खैर, हम यहाँ हैं। बेहतर होगा कि तुम रसोई में जाओ। अरे! क्या हुआ, क्या बात है? क्या हम देर हो गए? उन्होंने इतनी जल्दी खाना खत्म नहीं किया होगा! क्या करामाज़ोव फिर से कोई गड़बड़ कर रहे हैं? ज़रूर कर रहे होंगे। ये रहे तुम्हारे पिता और उनके पीछे तुम्हारा भाई इवान। वे फादर सुपीरियर के कमरे से भाग निकले हैं। और देखो, फादर इसिडोर सीढ़ियों से उनके पीछे कुछ चिल्ला रहे हैं। और तुम्हारे पिता चिल्ला रहे हैं और अपने हाथ हिला रहे हैं। मुझे लगता है कि वे गाली दे रहे हैं। अरे, और देखो मियूसोव अपनी गाड़ी में जा रहा है। देखो, वह जा रहा है। और देखो बूढ़ा मैक्सिमोव भाग रहा है!— ज़रूर कोई झगड़ा हुआ होगा। खाना तो नहीं बना होगा। ज़रूर उन्होंने फादर सुपीरियर को नहीं पीटा होगा! या शायद उन्हें पीटा गया हो? उनके साथ यही होना चाहिए!
रकितिन के विस्मयबोध का एक कारण था।
यह एक शर्मनाक, अभूतपूर्व दृश्य था। यह सब एक क्षणिक आवेग का परिणाम था।

अध्याय 8

शर्मनाक दृश्य

मियूसोव, एक सभ्य और शिष्ट व्यक्ति होने के नाते, जब इवान के साथ फादर सुपीरियर के पास पहुँचा, तो उसे मन ही मन कुछ झिझक महसूस हुई: उसे अपने आप पर काबू न रख पाने का पछतावा हुआ। उसे लगा कि उसे उस नीच, दुष्ट फ्योदोर पावलोविच से इतनी घृणा करनी चाहिए थी कि फादर ज़ोसिमा के कमरे में उससे नाराज़ होकर अपना आपा खो देना ठीक नहीं था। सीढ़ियों पर खड़े-खड़े उसने सोचा, "वैसे भी, भिक्षुओं की कोई गलती नहीं थी। और अगर वे यहाँ अच्छे लोग हैं (और फादर सुपीरियर, जैसा कि मुझे पता चला है, एक रईस हैं), तो उनके साथ दोस्ताना और विनम्र व्यवहार क्यों न किया जाए? मैं बहस नहीं करूँगा, मैं सबका साथ दूँगा, मैं विनम्रता से उनका दिल जीत लूँगा, और... और... उन्हें दिखा दूँगा कि मेरा उस ईसप, उस मसखरे, उस पियरोट से कोई लेना-देना नहीं है, और मैं भी उनकी तरह इस मामले में फँस गया हूँ।"
उन्होंने मठ के साथ अपना मुकदमा छोड़ने और त्याग करने का निश्चय किया।
उसने लकड़ी काटने और मछली पकड़ने के अधिकारों पर तुरंत अपना दावा पेश किया। वह ऐसा करने के लिए इसलिए अधिक तत्पर था क्योंकि इन अधिकारों का मूल्य बहुत कम हो गया था, और वास्तव में उसे इस बात का बिल्कुल भी अंदाजा नहीं था कि प्रश्नगत लकड़ी और नदी कहाँ स्थित हैं।
जब उन्होंने पिता के साथ प्रवेश किया तो उनके ये नेक इरादे और भी मजबूत हो गए।
सुपीरियर का भोजन कक्ष, हालांकि कड़ाई से कहें तो, वह भोजन कक्ष नहीं था, क्योंकि फादर सुपीरियर के पास कुल मिलाकर केवल दो ही कमरे थे; फिर भी, वे फादर ज़ोसिमा के कमरे से कहीं अधिक बड़े और आरामदायक थे। लेकिन इन कमरों की साज-सज्जा में भी कोई खास विलासिता नहीं थी। फर्नीचर महोगनी का था, चमड़े से ढका हुआ, 1820 के पुराने जमाने की शैली में; फर्श पर एक भी दाग नहीं था, बल्कि सब कुछ साफ-सुथरा चमक रहा था, और खिड़कियों में कई चुनिंदा फूल लगे थे; उस समय कमरे में सबसे शानदार चीज, बेशक, खूबसूरती से सजाई गई मेज थी। कपड़ा साफ था, प्लेटें चमक रही थीं; तीन तरह की अच्छी तरह से पकी हुई रोटियाँ, शराब की दो बोतलें, उत्कृष्ट मीठे पेय की दो बोतलें, और क्वास से भरा एक बड़ा कांच का जग था—ये दोनों ही मठ में बने थे और आसपास के इलाके में प्रसिद्ध थे। वोदका नहीं थी। रकितिन ने बाद में बताया कि पाँच व्यंजन थे: स्टर्लेट मछली का सूप, छोटी मछली की पैटीज़ के साथ परोसा गया; फिर उबली हुई मछली एक विशेष तरीके से परोसी गई; फिर सैल्मन कटलेट, आइस पुडिंग और कंपोट, और अंत में ब्लैंक-मंगे। रकितिन को इन सभी स्वादिष्ट व्यंजनों के बारे में पता चल गया था, क्योंकि वह रसोई में झाँकने से खुद को रोक नहीं पाता था, जहाँ उसकी पहले से ही अच्छी पकड़ थी। उसकी हर जगह अच्छी पकड़ थी और उसे हर बात की जानकारी मिल जाती थी। वह बेचैन और ईर्ष्यालु स्वभाव का था। वह अपनी असाधारण क्षमताओं से भली-भांति परिचित था और अपने अहंकार में उन्हें बढ़ा-चढ़ाकर बताता था। वह जानता था कि वह किसी न किसी रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा, लेकिन अलेयोशा, जो उससे बहुत लगाव रखता था, अपने मित्र रकितिन को बेईमान देखकर दुखी था, जबकि वह स्वयं इस बात से पूरी तरह अनजान था कि वह बेईमान है, क्योंकि वह मेज पर रखा पैसा नहीं चुराता था, इसलिए वह अत्यंत ईमानदार व्यक्ति था। न तो अलेयोशा और न ही कोई और उसे इस मामले में प्रभावित कर सकता था।
रकितिन, ज़ाहिर है, इतने महत्वहीन व्यक्ति थे कि उन्हें आमंत्रित करना उचित नहीं था।
रात्रिभोज में, जिसमें मठ के केवल फादर इओसिफ, फादर पैसी और एक अन्य भिक्षु को ही आमंत्रित किया गया था। मियूसोव, कालगानोव और इवान के आने पर वे पहले से ही प्रतीक्षा कर रहे थे। दूसरा अतिथि, मैक्सिमोव, थोड़ा किनारे खड़ा प्रतीक्षा कर रहा था। फादर सुपीरियर अपने मेहमानों का स्वागत करने के लिए कमरे के बीच में आए। वे लंबे, पतले, लेकिन अभी भी चुस्त-दुरुस्त बूढ़े व्यक्ति थे, जिनके काले बालों में सफ़ेद बाल आ रहे थे और उनका चेहरा लंबा, गंभीर और तपस्वी था। उन्होंने मौन में अपने मेहमानों को प्रणाम किया। लेकिन इस बार वे उनका आशीर्वाद लेने के लिए उनके पास आए। मियूसोव ने तो उनके हाथ को चूमने की कोशिश भी की, लेकिन फादर सुपीरियर ने अभिवादन से बचने के लिए समय रहते अपना हाथ

पीछे खींच लिया। लेकिन इवान और कालगानोव ने अत्यंत सरल और पूर्ण भाव से समारोह संपन्न किया और किसानों की तरह उनके हाथ को चूमा।
“हम आपसे अत्यंत विनम्रतापूर्वक क्षमा मांगते हैं, महामहिम,” मियूसोव ने कहना शुरू किया।
विनम्रता से मुस्कुराते हुए और गरिमापूर्ण एवं सम्मानजनक स्वर में बोलते हुए, उन्होंने कहा, “हमें क्षमा करें कि हम आपके आमंत्रित सज्जन, फ्योदोर पावलोविच के बिना अकेले आए हैं। उन्होंने आपके आतिथ्य सत्कार को अस्वीकार करना आवश्यक समझा, और इसका कारण भी था। पूज्य फादर ज़ोस्सिमा के कक्ष में, अपने पुत्र के साथ हुए अप्रिय मतभेद के कारण वे आवेश में आ गए और उन्होंने कुछ ऐसे शब्द कह दिए जो बिल्कुल अनुचित थे... वास्तव में, बिल्कुल अशोभनीय... जैसा कि”—उन्होंने भिक्षुओं की ओर देखा—“आपकी श्रद्धा को निःसंदेह ज्ञात है। इसलिए, अपनी गलती स्वीकार करते हुए, उन्हें गहरा खेद और लज्जा हुई और उन्होंने मुझसे और अपने पुत्र इवान फ्योदोरोविच से निवेदन किया कि हम उनकी क्षमा और खेद को आप तक पहुंचाएं। संक्षेप में, वे बाद में इसकी भरपाई करने की आशा और इच्छा रखते हैं। वे आपका आशीर्वाद चाहते हैं और आपसे निवेदन करते हैं कि जो कुछ हुआ है उसे भूल जाएं।”
अपने भाषण का आखिरी शब्द बोलते ही मियूसोव पूरी तरह से ठीक हो गए।
उसकी आत्मसंतुष्टि और पहले की सारी झुंझलाहट गायब हो गई। उसने फिर से पूरी ईमानदारी से मानवता से प्रेम करना शुरू कर दिया।
फादर सुपीरियर ने गरिमा के साथ उनकी बात सुनी और थोड़ा झुक गए।
प्रमुख ने उत्तर दिया:
मुझे उनकी अनुपस्थिति का गहरा अफसोस है। शायद हमारी मेज पर वे कुछ और ही कर पाते।
उन्हें हम पसंद आने लगे, और हमें भी। कृपया बैठ जाइए, सज्जनों।
वह पवित्र प्रतिमा के सामने खड़ा हुआ और ज़ोर से प्रार्थना करने लगा। सभी झुक गए।
उन्होंने श्रद्धापूर्वक अपने सिर झुकाए, और मैक्सिमोव ने विशेष उत्साह के साथ अपने हाथ उसके सामने जोड़ लिए।
इसी क्षण फ्योदोर पावलोविच ने अपनी आखिरी शरारत की।
यह ध्यान देने योग्य है कि वह वास्तव में घर जाना चाहता था, और वास्तव में उसे लग रहा था कि एल्डर के कमरे में अपने शर्मनाक व्यवहार के बाद फादर सुपीरियर के साथ भोजन करना असंभव है, मानो कुछ हुआ ही न हो। ऐसा नहीं था कि उसे अपने आप पर बहुत शर्म आ रही थी—बल्कि शायद इसके विपरीत। फिर भी उसे लगा कि भोजन पर जाना उचित नहीं होगा। उसकी खस्ताहाल गाड़ी होटल की सीढ़ियों तक मुश्किल से पहुंची ही थी और वह उसमें मुश्किल से बैठा ही था कि वह अचानक रुक गया। उसे एल्डर के यहाँ कहे अपने शब्द याद आ गए: “जब भी मैं लोगों से मिलता हूँ, मुझे हमेशा लगता है कि मैं सबसे नीच हूँ, और वे सब मुझे मसखरा समझते हैं; इसलिए मैं कहता हूँ कि मुझे मसखरा बनने दो, क्योंकि तुम सब मुझसे भी ज़्यादा मूर्ख और नीच हो।” वह अपने इस अनुचित व्यवहार का बदला सबसे लेना चाहता था। उसे अचानक याद आया कि अतीत में एक बार उससे पूछा गया था, “तुम फलां व्यक्ति से इतनी नफरत क्यों करते हो?” और उसने अपनी बेशर्म धृष्टता से उन्हें जवाब दिया, "मैं तुम्हें बताता हूँ। उसने मुझे कोई नुकसान नहीं पहुँचाया है। लेकिन मैंने उसके साथ एक गंदी चाल चली, और तब से मैं उससे नफरत करता हूँ।"
अब उस बात को याद करके वह दबे स्वर में और दुर्भावनापूर्ण मुस्कान के साथ मुस्कुराया, हिचकिचाते हुए। एक पल के लिए। उसकी आँखें चमक उठीं और उसके होंठ सचमुच काँपने लगे। "चलो, जब मैंने शुरू कर ही दिया है, तो आगे भी क्यों न बढ़ाऊँ," उसने निश्चय किया। उस क्षण उसकी प्रबल भावना को इन शब्दों में व्यक्त किया जा सकता है, "अब तो खुद को सुधारने का कोई रास्ता नहीं है। तो चलो, मैं उन्हें अपनी पूरी ताकत से शर्मिंदा कर दूँ। मैं उन्हें दिखा दूँगा कि मुझे उनकी परवाह नहीं है—बस इतना ही!"
उसने कोचवान को रुकने को कहा और खुद तेजी से कदम बढ़ाते हुए वापस लौट आया।
मठ से सीधे फादर सुपीरियर के पास। उसे ठीक से पता नहीं था कि वह क्या करेगा, लेकिन वह जानता था कि वह खुद पर काबू नहीं रख सकता, और एक स्पर्श उसे अश्लीलता की चरम सीमा तक ले जा सकता है, लेकिन केवल अश्लीलता तक, किसी आपराधिक कृत्य तक नहीं, जिसके लिए उसे कानूनी रूप से दंडित किया जा सके। अंत में, वह हमेशा खुद को रोक सकता था, और इस मामले में वह कभी-कभी खुद पर आश्चर्यचकित भी होता था। वह फादर सुपीरियर के भोजन कक्ष में उस समय पहुँचा जब प्रार्थना समाप्त हो

चुकी थी और सभी लोग मेज की ओर बढ़ रहे थे। दरवाजे पर खड़े होकर उसने उपस्थित लोगों पर नजर डाली और अपनी लंबी, ढीठ, शरारती हंसी हंसते हुए, सभी के चेहरों को निडरता से देखा। "वे सोच रहे थे कि मैं चला गया था, और मैं फिर से आ गया हूँ," उसने पूरे कमरे में चिल्लाकर कहा।
एक पल के लिए सब लोग बिना कुछ बोले उसे घूरते रहे; और अचानक
हर किसी को आहत हो रहा था कि कुछ घिनौना, भयानक और बेहद शर्मनाक घटित होने वाला है। मियूसोव का सौम्यतम मन तुरंत ही क्रूर अवस्था में बदल गया। उनके हृदय में जो भी भावनाएँ शांत हो गई थीं, वे पल भर में फिर से जागृत हो गईं।
“नहीं! मैं यह बर्दाश्त नहीं कर सकता!” वह चिल्लाया। “मैं बिलकुल नहीं कर सकता! और... मैं
बिल्कुल नहीं!
उसके सिर में खून दौड़ गया। वह सचमुच हकलाने लगा; लेकिन वह था
शैली के बारे में सोचना छोड़ कर, उसने अपनी टोपी पकड़ ली।
“वह क्या नहीं कर सकता?” फ्योदोर पावलोविच चिल्लाए, “कि वह बिल्कुल भी नहीं कर सकता।”
क्या मैं नहीं आ सकता? क्या मैं अंदर आ सकता हूँ या नहीं? क्या आप मुझे अतिथि के रूप में स्वीकार करेंगे?
"आपका तहे दिल से स्वागत है," वरिष्ठ अधिकारी ने उत्तर दिया।
उन्होंने आगे कहा, “सज्जनों, मैं आप सभी से अत्यंत विनम्रतापूर्वक निवेदन करता हूँ कि आप अपने मतभेदों को एक तरफ रख दें और प्रेम और पारिवारिक सद्भाव में एकजुट हों—और हमारी इस साधारण भोजन-भरी मेज पर प्रभु से प्रार्थना करें।”
“नहीं, नहीं, यह असंभव है!” मियूसोव गुस्से से चिल्लाया। “अगर प्योत्र अलेक्सांद्रोविच के लिए यह असंभव है, तो मेरे लिए भी असंभव है।”
मैं, और मैं रुकूंगा नहीं। इसीलिए तो मैं आया हूँ। अब मैं प्योत्र अलेक्सांद्रोविच के साथ हर जगह रहूंगा। अगर आप चले जाओगे, प्योत्र अलेक्सांद्रोविच, तो मैं भी चला जाऊंगा, अगर आप रुकोगे, तो मैं भी रुकूंगा। आपने पारिवारिक सद्भाव के बारे में जो कहा, उससे आपने उसे ठेस पहुँचाई है, फादर सुपीरियर, वह यह स्वीकार नहीं करता कि वह मेरा रिश्तेदार है। सही कहा ना, वॉन सोहन? ये रहा वॉन सोहन। कैसे हो वॉन सोहन?
“क्या तुम्हारा मतलब मुझसे है?” मैक्सिमोव ने हैरानी से बुदबुदाया। “बेशक मेरा मतलब तुमसे है,” फ्योदोर पावलोविच चिल्लाया। “और कौन?
फादर सुपीरियर वॉन सोहन नहीं हो सकते थे।
लेकिन मैं वॉन सोहन भी नहीं हूँ। मैं मैक्सिमोव हूँ।
नहीं, आप वॉन सोहन हैं। महोदय, क्या आप जानते हैं कि वॉन सोहन कौन हैं?
क्या? यह एक मशहूर हत्या का मामला था। उनकी हत्या एक वेश्यालय में हुई थी। मुझे लगता है कि आप लोगों के बीच ऐसी जगहों को यही कहा जाता है—उनकी हत्या की गई और उन्हें लूटा गया, और उनकी उम्र इतनी अधिक होने के बावजूद, उन्हें एक बक्से में कीलों से ठोककर पीटर्सबर्ग से मॉस्को सामान ढोने वाली गाड़ी में भेज दिया गया, और जब उन्हें ठोका जा रहा था, तब वेश्याएं गीत गा रही थीं और वीणा बजा रही थीं, यानी पियानो। तो ये वही वॉन सोहन हैं। वो मुर्दों में से जी उठे हैं, है ना, वॉन सोहन?
“क्या हो रहा है? ये क्या है?” समूह में से आवाज़ें सुनाई दीं।
भिक्षुओं।
“चलिए चलते हैं,” मियूसोव ने कालगानोव से कहा। “नहीं, मुझे माफ़ कीजिए,” फ्योदोर पावलोविच ने तीखी आवाज़ में बीच में ही टोकते हुए दूसरा कदम उठाया।
कमरे में प्रवेश करें। “मुझे अपनी बात पूरी करने दीजिए। उस कोठरी में आपने मुझे सिर्फ इसलिए बदतमीज़ी करने का दोषी ठहराया क्योंकि मैंने गोजन मछली खाने की बात की थी, प्योत्र अलेक्जेंड्रोविच। मेरे रिश्तेदार मियूसोव अपने शब्दों में ईमानदारी से ज़्यादा बड़प्पन को महत्व देते हैं, लेकिन मैं अपने शब्दों में बड़प्पन से ज़्यादा ईमानदारी को महत्व देता हूँ, और—बड़प्पन भाड़ में जाए! है ना, वॉन सोहन? मुझे अनुमति दीजिए, फादर सुपीरियर, हालाँकि मैं एक मसखरा हूँ और मसखरापन का नाटक करता हूँ, फिर भी मैं सम्मान का प्रतीक हूँ, और मैं अपने मन की बात कहना चाहता हूँ। हाँ, मैं सम्मान का प्रतीक हूँ, जबकि प्योत्र अलेक्जेंड्रोविच में सिर्फ़ घायल अहंकार है और कुछ नहीं। मैं यहाँ शायद देखने और अपने मन की बात कहने आया हूँ। मेरा बेटा, एलेक्सी, यहाँ है, उसकी जान बचाई जा रही है। मैं उसका पिता हूँ; मैं उसकी भलाई की

परवाह करता हूँ, और यह मेरा कर्तव्य है। जब मैं मसखरापन का नाटक कर रहा था, तब मैं सुन रहा था और देख रहा था... धूर्त; और अब मैं आपको प्रदर्शन का अंतिम दृश्य दिखाना चाहता हूँ। आप जानते हैं कि हमारे यहाँ क्या चल रहा है? जो गिरता है, वही पड़ा रहता है। एक बार जो गिर जाता है, वही हमेशा के लिए पड़ा रहता है। बिलकुल नहीं! मैं फिर से उठना चाहता हूँ। परमपिता जी, मैं आपसे नाराज़ हूँ। पाप स्वीकारोक्ति एक महान संस्कार है, जिसके समक्ष मैं श्रद्धापूर्वक झुकने को तैयार हूँ; लेकिन उस कोठरी में, वे सब घुटने टेककर ज़ोर-ज़ोर से पाप स्वीकार करते हैं। क्या ज़ोर-ज़ोर से पाप स्वीकार करना उचित है? पवित्र पिताओं ने गुप्त रूप से पाप स्वीकार करने का आदेश दिया था: तभी आपकी पाप स्वीकारोक्ति एक रहस्य रहेगी, और पुराने समय में ऐसा ही था। लेकिन मैं सबके सामने उसे कैसे समझाऊँगा कि मैंने यह और वह किया... खैर, आप समझ ही गए होंगे - कभी-कभी इसके बारे में बात करना उचित नहीं होता - तो यह वास्तव में एक कलंक है! नहीं, पिताओं, मुझे लगता है कि कोई आपके साथ कोड़े मारने वालों के पास ले जाया जा सकता है... पहले अवसर पर मैं धर्मसभा को लिखूँगा, और मैं मैं अपने बेटे एलेक्सी को घर ले जाऊंगी।
हमें यहां यह ध्यान देना चाहिए कि फ्योदोर पावलोविच को पता था कि कहां खोजना है
कमज़ोरी। एक समय ऐसी दुर्भावनापूर्ण अफवाहें फैली थीं जो आर्कबिशप तक भी पहुँच गई थीं (न केवल हमारे मठ के बारे में, बल्कि उन अन्य मठों में भी जहाँ वरिष्ठों की संस्था थी) कि वरिष्ठों को ज़रूरत से ज़्यादा सम्मान दिया जाता था, यहाँ तक कि सुपीरियर के अधिकार को भी ठेस पहुँचाई जाती थी, कि वरिष्ठ पाप स्वीकारोक्ति के संस्कार का दुरुपयोग करते थे, इत्यादि-अथवा—ये सभी बेतुके आरोप थे जो समय के साथ अपने आप ही समाप्त हो गए। लेकिन मूर्खता की भावना, जिसने फ्योदोर पावलोविच को जकड़ लिया था और उसे उसकी अपनी ही नसों के बल पर अपमान की गहरी खाई में धकेल रही थी, ने उसे इस पुराने झूठे आरोप को दोहराने के लिए उकसाया। फ्योदोर पावलोविच को इसका एक शब्द भी समझ नहीं आया, और वह इसे ठीक से कह भी नहीं सका, क्योंकि उस समय कोई भी वरिष्ठों के कक्ष में घुटने टेककर ज़ोर से पाप स्वीकार नहीं कर रहा था, इसलिए उसने ऐसा कुछ देखा ही नहीं था। वह केवल पुरानी झूठी अफवाहों की धुंधली याददाश्त के आधार पर बोल रहा था। लेकिन जैसे ही उसने अपना मूर्खतापूर्ण भाषण समाप्त किया, उसे एहसास हुआ कि वह बेतुकी बातें कर रहा है, और तुरंत अपने श्रोताओं को, और सबसे बढ़कर खुद को, यह साबित करने की तीव्र इच्छा हुई कि वह बेतुकी बातें नहीं कर रहा था। और, यद्यपि वह भली-भांति जानता था कि हर शब्द के साथ वह और अधिक बेतुकी बातें जोड़ रहा है, फिर भी वह खुद को रोक नहीं सका और अंधाधुंध आगे बढ़ता चला गया।
“कितना शर्मनाक!” प्योत्र अलेक्सांद्रोविच चिल्लाए। “मुझे क्षमा करें!” फादर सुपीरियर ने कहा। “पुराने समय से कहा जाता रहा है, ‘बहुत से लोगों ने
मेरे विरुद्ध बोलने लगे हैं और मेरे बारे में बुरी-बुरी बातें कहने लगे हैं। यह सुनकर मैंने मन ही मन कहा: यह प्रभु का दंड है और उन्होंने इसे मेरी व्यर्थ आत्मा को चंगा करने के लिए भेजा है। इसलिए हम आपका विनम्रतापूर्वक धन्यवाद करते हैं, आदरणीय अतिथि!” और उन्होंने फ्योदोर पावलोविच को झुककर प्रणाम किया।
“अरे—अरे—अरे—पाखंड और घिसे-पिटे मुहावरे! पुराने मुहावरे और
पुराने हाव-भाव। पुराने झूठ और औपचारिक प्रणाम। हम इन सबके बारे में जानते हैं। होठों पर चुंबन और दिल में खंजर, जैसा कि शिलर के 'रॉबर्स' में है। मुझे झूठ पसंद नहीं है, भिक्षुओं, मुझे सच्चाई चाहिए। लेकिन सच्चाई गोजन (एक प्रकार का सूप) खाने में नहीं मिलती, और मैं यह बात ज़ोर से कहता हूँ! हे भिक्षु पिता, आप उपवास क्यों करते हैं? आप इसके लिए स्वर्ग में पुरस्कार की उम्मीद क्यों करते हैं? अरे, ऐसे पुरस्कार के लिए तो मैं भी आकर उपवास करूँगा! नहीं, हे संत भिक्षु, आप संसार में सदाचारी बनने की कोशिश कीजिए, समाज का भला कीजिए, दूसरों के खर्चे पर खुद को मठ में बंद किए बिना, और इसके लिए स्वर्ग में पुरस्कार की उम्मीद किए बिना—आपको यह थोड़ा कठिन लगेगा। मैं भी समझदारी की बात कर सकता हूँ, हे वरिष्ठ पिता। यहाँ क्या है?” वह मेज के पास गया। “पुरानी पोर्ट वाइन, एलिसेयेव भाइयों द्वारा बनाई गई मीड। धिक्कार है, भिक्षुओं! यह तो गोजन से भी कहीं बढ़कर है।” देखो, ये पादरी लोग कितनी बोतलें लेकर आए हैं! और ये सब किसने मुहैया कराया है? रूसी किसान, मजदूर, अपनी मेहनत से कमाया हुआ पैसा यहाँ लाता है, जो वह अपने परिवार और कर वसूलने वाले से निचोड़कर लाता है! तुम लोग जनता का खून चूसते हो, जानते हो ना, पादरी लोग!

“यह तो बेहद शर्मनाक है!” फादर इओसिफ ने कहा।
फादर पैसी हठपूर्वक चुप रहे। मियूसोव कमरे से बाहर भागे, और
उनके बाद कालगानोव।
“ठीक है, फादर, मैं प्योत्र अलेक्जेंड्रोविच का अनुसरण करूँगा! मैं अब आपसे मिलने नहीं आऊँगा। आप चाहे मेरे सामने घुटने टेककर भीख मांग लें, मैं नहीं आऊँगा। मैंने आपको एक हज़ार रूबल भेजे थे, इसलिए आपने मुझ पर नज़र रखनी शुरू कर दी है। ही ही ही! नहीं, मैं अब और कुछ नहीं कहूँगा। मैं अपनी जवानी का, अपने द्वारा सहे गए सभी अपमानों का बदला ले रहा हूँ।” उसने बनावटी भावनाओं में बहकर मेज पर मुट्ठी पटकी। “इस मठ ने मेरे जीवन में बहुत बड़ी भूमिका निभाई है! इसने मुझे बहुत आँसू बहाने पर मजबूर किया है। आप मेरी पागल पत्नी को मेरे खिलाफ भड़काते थे। आप मुझे ‘घंटी और किताब’ कहकर कोसते थे, मेरे बारे में हर जगह अफवाहें फैलाते थे। बस करो, फादर! यह उदारवाद का युग है, स्टीमर और रेलवे का युग है। न तो एक हज़ार, न सौ रूबल, नहीं, न ही एक सौ फ़ार्थिंग मुझसे निकलवा पाओगे!”
यह बात फिर से ध्यान देने योग्य है कि हमारे मठ ने कभी कोई महान भूमिका नहीं निभाई थी।
यह घटना उनके जीवन का एक अहम हिस्सा थी, और इसके चलते उन्होंने कभी आंसू नहीं बहाए थे। लेकिन वे अपनी बनावटी भावनाओं में इतने बह गए थे कि एक पल के लिए उन्हें खुद भी यकीन हो गया था। वे इतने भावुक हो गए थे कि लगभग रोने ही वाले थे। लेकिन ठीक उसी क्षण उन्हें एहसास हुआ कि अब पीछे हटने का समय आ गया है।
फादर सुपीरियर ने उसके इस घिनौने झूठ पर अपना सिर झुकाया, और फिर
उन्होंने प्रभावशाली ढंग से बात की:
“यह फिर से लिखा है, ‘सावधानीपूर्वक सहन करो और खुशी से उस अपमान को स्वीकार करो’
यह तुम्हारे किसी कार्य के कारण नहीं हुआ है, इसलिए विचलित मत हो और जिसने तुम्हारा अपमान किया है उससे घृणा मत करो। और हम भी ऐसा ही करेंगे।
अरे, अरे, अरे! अपने बारे में और बाकी सारी झंझटों के बारे में सोचो। सोचो!
हे पिताओ, मैं जा रहा हूँ। लेकिन मैं अपने पुत्र एलेक्सी को अपने अधिकार से हमेशा के लिए यहाँ से ले जा रहा हूँ। मेरे सबसे आज्ञाकारी पुत्र इवान फ्योदोरोविच, मुझे आपको मेरे पीछे आने का आदेश देने की अनुमति दें। वॉन सोहन, आपको यहाँ क्यों रुकना है? अभी शहर में आकर मुझसे मिलें। वहाँ खूब मज़ा आएगा। यह बस एक छोटा सा वर्स्ट है; उपवास के तेल के बदले मैं आपको सुअर का बच्चा और कशा दूँगा। हम ब्रांडी और लिकर के साथ रात का खाना खाएँगे... मेरे पास क्लाउडबेरी वाइन है। अरे, वॉन सोहन, अपना मौका मत गंवाओ।” वह चिल्लाते और हाथ हिलाते हुए बाहर चला गया।
उसी क्षण रकितिन ने उसे देखा और अलेयोशा को उसकी ओर इशारा किया। "अलेक्सी!" उसके पिता ने दूर से चिल्लाते हुए कहा, उसे देखते ही। "तुम
आज ही हमेशा के लिए मेरे पास वापस आ जाओ, अपना तकिया और गद्दा भी साथ ले आओ, और पीछे कोई निशान मत छोड़ना।"
अलियोशा वहीं जड़वत खड़ा रहा और चुपचाप उस दृश्य को देखता रहा।
इसी बीच, फ्योदोर पावलोविच गाड़ी में बैठ चुके थे, और इवान चुपचाप उनके पीछे-पीछे जाने ही वाला था कि अलेयोशा को अलविदा भी कहे। लेकिन तभी एक और अविश्वसनीय, हास्यास्पद दृश्य ने इस घटनाक्रम को पूरा कर दिया। मैक्सिमोव अचानक गाड़ी के पास आ गया। वह हांफते हुए, कहीं देर न हो जाए, दौड़ता हुआ आया। रकितिन और अलेयोशा ने उसे दौड़ते हुए देखा। वह इतनी जल्दी में था कि अधीरता में उसने अपना पैर उस पायदान पर रख दिया जिस पर इवान का बायां पैर अभी भी टिका हुआ था, और गाड़ी को कसकर पकड़कर उसमें कूदने की कोशिश करता रहा। "मैं तुम्हारे साथ चल रहा हूँ!" वह चिल्लाता रहा, चेहरे पर बेपरवाह खुशी के भाव के साथ एक हल्की सी हंसी हंसते हुए। "मुझे भी ले चलो।"
“देखो!” फ्योदोर पावलोविच प्रसन्न होकर चिल्लाया। “क्या मैंने नहीं कहा था कि वह वॉन है?”
सोन। ये तो स्वयं वॉन सोन हैं, जो मृत्यु से जी उठे हैं। अरे, तुम यहाँ से कैसे भाग निकले? तुमने वहाँ क्या किया? और तुम खाने से कैसे बच निकले? तुम तो बड़े ही बेशर्म हो! मैं भी वैसा ही हूँ, लेकिन मुझे तुम पर आश्चर्य हो रहा है, भाई! कूद जाओ, कूद जाओ! उसे जाने दो, इवान। मज़ा आएगा। वह हमारे पैरों के पास

कहीं लेट सकता है। क्या तुम हमारे पैरों के पास लेटोगे, वॉन सोन? या कोचवान के साथ डिब्बे पर बैठोगे? डिब्बे पर चढ़ जाओ, वॉन सोन!
लेकिन इवान, जो अब तक अपनी सीट पर बैठ चुका था, ने बिना कुछ कहे मैक्सिमोव को
छाती पर ज़ोरदार घूंसा पड़ा और वो हवा में उड़ गया। महज़ संयोग था कि वो गिरा नहीं।
“गाड़ी चलाओ!” इवान ने कोचवान पर क्रोधित होकर चिल्लाते हुए कहा। “क्यों, तुम क्या कर रहे हो, तुम्हारा इरादा क्या है? तुमने ऐसा क्यों किया?”
फ्योदोर पावलोविच ने विरोध किया।
लेकिन गाड़ी पहले ही जा चुकी थी। इवान ने कोई जवाब नहीं दिया। "अच्छा, तुम तो बड़े ही बड़े आदमी हो," फ्योदोर पावलोविच ने फिर कहा। दो मिनट के विराम के बाद, अपने बेटे की ओर तिरछी नज़र से देखते हुए, "अरे, यह तो..."
आपने ही ये सारा मठ का मामला खड़ा किया। आपने ही इसे बढ़ावा दिया, आपने ही इसे मंजूरी दी। अब आप क्यों नाराज़ हैं?
“बहुत बकवास कर ली। अब थोड़ा आराम कर लो,” इवान ने झल्लाकर कहा।
उदास भाव से।
फ्योदोर पावलोविच दो मिनट तक फिर चुप रहे। उन्होंने गंभीर स्वर में कहा, "अब एक बूंद ब्रांडी अच्छी रहेगी," लेकिन
इवान ने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी।
“घर पहुँचने पर तुम्हें भी थोड़ा मिलेगा।” इवान अभी भी चुप था।
फ्योदोर पावलोविच ने दो मिनट और इंतजार किया। “लेकिन मैं अलेयोशा को मठ से ले जाऊंगा, चाहे आप कुछ भी कर लें।”
मुझे यह इतना नापसंद है, आदरणीय कार्ल वॉन मूर।"
इवान ने तिरस्कारपूर्वक अपने कंधे उचकाए और मुँह फेरकर घूरने लगा
वे सड़क पर थे। और घर वापस आते समय उन्होंने फिर कभी बात नहीं की।

पुस्तक 3

कामुकतावादी

अध्याय 1

नौकरों के क्वार्टर में

करामाज़ोव परिवार का घर कस्बे के केंद्र से काफी दूर था, लेकिन बिल्कुल उसके बाहर भी नहीं था। यह दो मंजिला, देखने में सुंदर पुराना मकान था, जिस पर धूसर रंग किया हुआ था और छत लाल लोहे की थी। यह विशाल और आरामदायक था, और कई वर्षों तक टिक सकता था। इसमें तरह-तरह की छोटी-छोटी अलमारियां, कोठरी और सीढ़ियां थीं। इसमें चूहे थे, लेकिन फ्योदोर पावलोविच को उनसे कोई खास परेशानी नहीं थी। वे अक्सर कहते थे, "शाम को अकेले रहने पर इतना अकेलापन महसूस नहीं होता।" उनकी आदत थी कि वे नौकरों को रात के लिए झोपड़ी में भेज देते थे और खुद अकेले कमरे में बंद हो जाते थे। झोपड़ी आंगन में बनी एक विशाल और मजबूत इमारत थी। फ्योदोर पावलोविच खाना वहीं बनाते थे, हालांकि घर में रसोई भी थी; उन्हें खाना पकाने की गंध पसंद नहीं थी, और सर्दी हो या गर्मी, वे बर्तन आंगन पार करके अंदर लाते थे। यह घर एक बड़े परिवार के लिए बनाया गया था; इसमें नौकरों समेत पांच गुना अधिक लोगों के रहने की जगह थी। लेकिन हमारी कहानी के समय उस घर में फ्योदोर पावलोविच और उनके बेटे इवान के अलावा कोई नहीं रहता था। और उस झोपड़ी में केवल तीन नौकर थे: बूढ़े ग्रिगोरी, उनकी बूढ़ी पत्नी मार्फा और स्मरद्याकोव नाम का एक युवक। इन तीनों के बारे में हमें कुछ कहना होगा। बूढ़े ग्रिगोरी के बारे में हम पहले ही कुछ कह चुके हैं। वे दृढ़ और संकल्पित थे और अपने लक्ष्य के लिए अंधभक्ति से आगे बढ़ते थे, अगर कभी किसी कारण से (और वे अक्सर बहुत अतार्किक कारण होते थे) उन्हें यह विश्वास हो जाता था कि वह अटल रूप से सही है। वे ईमानदार और निर्मल थे। उनकी पत्नी, मार्फा इग्नात्येवना ने जीवन भर अपने पति की इच्छा का अक्षरशः पालन किया, फिर भी दासों की मुक्ति के बाद उन्होंने उन्हें बहुत परेशान किया। वे फ्योदोर पावलोविच को छोड़कर अपनी थोड़ी सी बचत से मॉस्को में एक छोटी सी दुकान खोलने पर तुली हुई थीं। लेकिन ग्रिगरी ने तब एक बार फिर यह फैसला किया कि "वह औरत बकवास कर रही है, क्योंकि हर औरत बेईमान होती है," और उन्हें अपने पुराने मालिक को नहीं छोड़ना चाहिए, चाहे वह कोई भी हो, क्योंकि "अब यही उनका कर्तव्य था।"

“क्या आप कर्तव्य का अर्थ समझती हैं?” उन्होंने मार्फा इग्नात्येवना से पूछा। “मैं कर्तव्य का अर्थ समझती हूँ, ग्रिगोरी वासिल्येविच, लेकिन यह हमारा कर्तव्य क्यों है?”

“यहाँ रहने का मेरा कर्तव्य मुझे कभी समझ नहीं आएगा,” मार्फा ने दृढ़ता से उत्तर दिया।

“अच्छा, तो फिर समझ नहीं आया। लेकिन ऐसा ही होगा। और तुम चुप रहो।”

और ऐसा ही हुआ। वे नहीं गए, और फ्योदोर पावलोविच ने वादा किया

उन्हें मजदूरी के रूप में थोड़ी सी रकम देता था और नियमित रूप से भुगतान करता था। ग्रिगोरी यह भी जानता था कि उसका अपने स्वामी पर निर्विवाद प्रभाव था। यह सच था और वह इससे अवगत था। फ्योदोर पावलोविच एक हठी और धूर्त व्यक्ति था, फिर भी, जैसा कि उसने कहा था, "जीवन के कुछ मामलों में" उसकी इच्छाशक्ति काफी मजबूत थी, लेकिन कुछ अन्य आपात स्थितियों का सामना करने में वह खुद को बेहद कमजोर पाता था। वह अपनी कमजोरियों को जानता था और उनसे डरता भी था। कुछ ऐसी स्थितियाँ होती हैं जिनमें सतर्क रहना पड़ता है। और एक भरोसेमंद व्यक्ति के बिना यह आसान नहीं होता, और ग्रिगोरी एक अत्यंत भरोसेमंद व्यक्ति था। अपने जीवन में कई बार ग्रिगोरी के हस्तक्षेप से फ्योदोर पावलोविच बड़ी मुश्किल से मार खाने से बचा था, और हर बार उस बूढ़े नौकर ने उसे अच्छी तरह से समझाया था। लेकिन फ्योदोर पावलोविच केवल मार खाने से ही नहीं डरता था। ऐसे कई गंभीर और बेहद सूक्ष्म एवं जटिल अवसर भी आए, जब फ्योदोर पावलोविच अपने उस असाधारण प्रेम और निष्ठा की भावना को समझ नहीं पाते थे, जो कभी-कभी अचानक ही उन पर हावी हो जाती थी। यह लगभग एक विकृत अवस्था थी। भ्रष्ट और अक्सर वासना में क्रूर, किसी हानिकारक कीड़े की तरह, फ्योदोर पावलोविच कभी-कभी नशे की हालत में

अंधविश्वासी भय और नैतिक उथल-पुथल से ग्रस्त हो जाते थे, जो लगभग शारीरिक रूप ले लेती थी। वे कहा करते थे, "उन पलों में मेरी आत्मा कांप उठती है।" ऐसे क्षणों में उन्हें यह महसूस करना अच्छा लगता था कि उनके पास ही, कमरे में नहीं तो लॉज में, एक बलवान, निष्ठावान, गुणी और उनसे बिल्कुल अलग व्यक्ति मौजूद है, जिसने उनकी सारी अय्याशी देखी है और उनके सारे रहस्य जानता है, लेकिन अपनी भक्ति में उन सब बातों को नजरअंदाज करने को तैयार है, उनका विरोध नहीं करता, सबसे बढ़कर, उन्हें इस दुनिया या अगली दुनिया में किसी भी बात से डांटता या धमकाता नहीं है, और जरूरत पड़ने पर उनकी रक्षा करता है—किससे? किसी अज्ञात से, लेकिन भयानक और खतरनाक से। उसे बस इतना चाहिए था कि कोई दूसरा आदमी हो, कोई पुराना और सच्चा दोस्त, जिसे वह अपनी बीमारी के पलों में बुला सके, बस उसका चेहरा देखने के लिए, या शायद उससे कुछ बेमतलब की बातें करने के लिए। और अगर बूढ़ा नौकर नाराज़ नहीं होता, तो उसे तसल्ली मिलती, और अगर वह नाराज़ होता, तो वह और भी उदास हो जाता। कभी-कभी (हालांकि बहुत कम ही) फ्योदोर पावलोविच रात में ग्रिगोरी को जगाने और उसे थोड़ी देर के लिए बुलाने के लिए झोपड़ी में जाता था। जब बूढ़ा आदमी आता, तो फ्योदोर पावलोविच छोटी-छोटी बातों पर चर्चा शुरू कर देता और फिर उसे जाने देता, कभी-कभी तो मज़ाक भी करता। और उसके जाने के बाद, फ्योदोर पावलोविच मन ही मन कोसते हुए बिस्तर पर लेट जाता और चैन की नींद सो जाता। कुछ ऐसा ही उसके साथ अलेयोशा के आने पर भी हुआ था। अलेयोशा ने उसके साथ रहकर, सब कुछ देखकर और किसी बात पर दोष न देकर उसके दिल को छलनी कर दिया था। इसके अलावा, अलेयोशा अपने साथ कुछ ऐसा लेकर आया था जो उसके पिता ने पहले कभी नहीं देखा था: उसके प्रति घृणा का पूर्ण अभाव और अटूट दयालुता, उस बूढ़े व्यक्ति के प्रति एक स्वाभाविक, सहज समर्पण जो इसके बिल्कुल भी योग्य नहीं था। यह सब उस बूढ़े अय्याश के लिए एक पूर्ण आश्चर्य था, जिसने सभी पारिवारिक संबंध तोड़ दिए थे। यह उसके लिए एक नया और आश्चर्यजनक अनुभव था, जिसने तब तक "बुराई" के अलावा किसी और चीज से प्रेम नहीं किया था। जब अलेयोशा उसे छोड़कर चला गया, तो उसने मन ही मन स्वीकार किया कि उसने कुछ ऐसा सीखा है जिसे वह तब तक सीखने को तैयार नहीं था।

मैं पहले ही बता चुका हूं कि ग्रिगोरी एडेलाइडा इवानोव्ना से घृणा करता था।

फ्योदोर पावलोविच की पहली पत्नी और दिमित्री की माँ सोफिया इवानोव्ना के बारे में ग्रिगोरी को पता था कि उसने इसके विपरीत, बेचारी "पागल औरत" सोफिया इवानोव्ना को अपने मालिक और उसके बारे में बुरा या अपमानजनक बोलने वाले किसी भी व्यक्ति से बचाया था। उस दुखी पत्नी के प्रति उसकी सहानुभूति उसके लिए पवित्र हो गई थी, इसलिए बीस साल बाद भी, वह किसी से भी उसके बारे में अपमानजनक टिप्पणी बर्दाश्त नहीं कर सकता था और तुरंत ही ऐसा करने वाले को रोक देता था। बाहरी तौर पर, ग्रिगोरी शांत, गंभीर और कम बोलने वाला था, और सोच-समझकर, बिना किसी फिजूलखर्ची के बोलता था। पहली नज़र में यह बताना असंभव था कि क्या वह अपनी शांत, आज्ञाकारी पत्नी से प्यार करता था; लेकिन वह वास्तव में उससे प्यार करता था, और वह यह जानती थी।

मार्फा इग्नात्येवना किसी भी तरह से मूर्ख नहीं थीं; वास्तव में, वह शायद थीं।

अपने पति से अधिक बुद्धिमान, या कम से कम सांसारिक मामलों में उनसे अधिक विवेकशील, फिर भी विवाह के बाद से ही उन्होंने बिना किसी प्रश्न या शिकायत के हर बात में उनकी बात मान ली थी और उनकी आध्यात्मिक श्रेष्ठता का सम्मान करती थीं। यह उल्लेखनीय था कि वे अपने जीवन में एक-दूसरे से कितना कम बोलते थे, और केवल सबसे आवश्यक दैनिक मामलों पर ही बात करते थे। गंभीर और गरिमामय ग्रिगोरी अपने सभी कर्तव्यों और चिंताओं पर अकेले ही विचार करते थे, इसलिए मार्फा इग्नात्येवना को यह अच्छी तरह से पता था कि उन्हें उनकी सलाह की आवश्यकता नहीं है। उन्हें लगता था कि उनके पति उनकी चुप्पी का सम्मान करते हैं और इसे उनकी अच्छी समझ का संकेत मानते हैं। उन्होंने उन्हें केवल एक बार पीटा था, और वह भी बहुत मामूली रूप से। फ्योदोर पावलोविच के अदेलाइदा इवानोव्ना से विवाह के एक वर्ष बाद, गाँव की लड़कियों और महिलाओं - जो उस समय दास थीं - को घर के सामने गाने और नाचने के लिए बुलाया गया था। जब वे "हरे-भरे मैदानों में" गाना शुरू कर रहे थे, तभी मार्फा, जो उस समय एक युवती थी, उछलकर आगे बढ़ी और "रूसी नृत्य" करने लगी। यह नृत्य गाँव के रीति-रिवाजों से नहीं, बल्कि उस रूप में था जैसा वह धनी मियूसोव परिवार के निजी रंगमंच में नौकरानी के रूप में काम करते समय करती थी, जहाँ अभिनेताओं को मॉस्को के एक नृत्य शिक्षक द्वारा नृत्य सिखाया जाता था। ग्रिगोरी ने अपनी पत्नी को नाचते

देखा और एक घंटे बाद, अपने घर में अपनी कुटिया में, उसने उसके बाल थोड़े खींचते हुए उसे नृत्य का पाठ पढ़ाया। लेकिन बात यहीं खत्म हो गई: फिर कभी पिटाई नहीं हुई और मार्फा इग्नात्येवना ने नृत्य करना छोड़ दिया।
भगवान ने उन्हें संतान का आशीर्वाद नहीं दिया था। एक बच्चा पैदा हुआ, लेकिन उसकी मृत्यु हो गई। ग्रिगोरी को बच्चों से बहुत प्यार था और वह इसे दिखाने में ज़रा भी शर्म महसूस नहीं करता था। जब अदेलैदा इवानोव्ना भाग गई, तो ग्रिगोरी ने तीन साल के बच्चे दिमित्री को अपने साथ ले लिया, उसके बाल संवारे और उसे अपने हाथों से टब में नहलाया और लगभग एक साल तक उसकी देखभाल की। बाद में उसने इवान और अलेयोशा की भी देखभाल की, जिसके लिए सेनापति की विधवा ने उसे एक थप्पड़ मारा था; लेकिन मैं यह सब पहले ही बता चुका हूँ। अपने बच्चे से उसे जो एकमात्र खुशी मिली थी, वह उसके जन्म की प्रतीक्षा में थी। जब उसका जन्म हुआ, तो वह गहरे दुख और भय से भर गया। बच्चे की छह उंगलियाँ थीं। ग्रिगोरी इस बात से इतना आहत हुआ कि वह नामकरण संस्कार के दिन तक न केवल चुप रहा, बल्कि बगीचे में ही रहा। वसंत ऋतु थी और उसने तीन दिन रसोई के बगीचे की खुदाई में बिताए। तीसरे दिन बच्चे का नामकरण संस्कार तय किया गया: इस बीच ग्रिगोरी एक निष्कर्ष पर पहुँच गया था। जिस कुटिया में पादरी और मेहमान इकट्ठा थे, जिनमें फ्योदोर पावलोविच भी शामिल थे, जिन्हें बच्चे का धर्मपिता बनना था, वहाँ पहुँचकर उन्होंने अचानक घोषणा की कि बच्चे का "बपतिस्मा बिल्कुल नहीं होना चाहिए।" उन्होंने यह बात धीमी, संक्षिप्त और मुश्किल से बोलते हुए, पुजारी को नीरस निगाहों से देखते हुए कही।
“क्यों नहीं?” पुजारी ने हंसते हुए आश्चर्य से पूछा। “क्योंकि यह एक अजगर है,” ग्रिगोरी ने बुदबुदाते हुए कहा।
“एक अजगर? कौन सा अजगर?”
ग्रिगोरी कुछ देर तक चुप रहा। "यह प्रकृति का भ्रम है," उसने कहा।
उसने अस्पष्ट लेकिन दृढ़ता से बुदबुदाया, और स्पष्ट रूप से आगे कुछ भी कहने को तैयार नहीं था।
वे हँसे, और बेशक उन्होंने उस बेचारे बच्चे का नामकरण संस्कार कर दिया। ग्रिगोरी ने प्रार्थना की। उन्होंने पूरी श्रद्धा से बपतिस्मा के समय प्रार्थना की, लेकिन नवजात शिशु के प्रति उनकी राय में कोई बदलाव नहीं आया। फिर भी उन्होंने किसी भी तरह से हस्तक्षेप नहीं किया। जब तक वह बीमार शिशु जीवित रहा, उन्होंने शायद ही कभी उसकी ओर देखा, बल्कि उसे अनदेखा करने की कोशिश की और ज्यादातर समय कुटिया से बाहर ही रहे। लेकिन जब दो सप्ताह बाद शिशु की थ्रश (सूजन) से मृत्यु हो गई, तो उन्होंने स्वयं शिशु को उसके छोटे ताबूत में रखा, गहरे शोक में उसे देखा और जब वे उस छोटी सी कब्र को भर रहे थे, तो वे घुटनों के बल गिर पड़े और धरती को प्रणाम किया। इसके बाद उन्होंने कई वर्षों तक अपने शिशु का जिक्र नहीं किया, न ही मार्फा ने उनके सामने शिशु के बारे में कोई बात की, और ग्रिगोरी के उपस्थित न होने पर भी, वह कभी भी फुसफुसाहट से अधिक जोर से उसके बारे में बात नहीं करती थी। मार्फा ने देखा कि दफनाने के दिन से ही उन्होंने अपना जीवन "धर्म" में समर्पित कर दिया और संतों के जीवनग्रंथ पढ़ने लगे, ज्यादातर समय अकेले और चुपचाप बैठकर, और हमेशा अपने बड़े, गोल, चांदी के फ्रेम वाले चश्मे पहने रहते थे। वे शायद ही कभी जोर से पढ़ते थे, केवल उपवास के दौरान ही। उन्हें अय्यूब की पुस्तक से विशेष लगाव था, और किसी तरह उन्होंने "ईश्वर से डरने वाले पिता इसहाक सीरियाई" के वचनों और उपदेशों की एक प्रति प्राप्त कर ली थी, जिसे वे वर्षों तक लगातार पढ़ते रहे। हालांकि उन्हें उसका बहुत कम अर्थ समझ आता था, फिर भी शायद इसी कारण वे उसे और अधिक महत्व देते थे और उससे प्रेम करते थे। हाल ही में उन्होंने पड़ोस में बसे कोड़े मारने वाले संप्रदाय के सिद्धांतों को सुनना शुरू किया था। वे स्पष्ट रूप से उनसे विचलित थे, लेकिन उन्होंने नए धर्म को अपनाना उचित नहीं समझा। धर्मशास्त्रीय अध्ययन की उनकी आदत ने उनके चेहरे पर और भी अधिक गंभीरता ला दी थी।
शायद उनमें रहस्यवाद के प्रति स्वाभाविक झुकाव था। और उनके जन्म के समय
विकृत शिशु और उसकी मृत्यु, मानो किसी विशेष योजना के तहत, एक और विचित्र और अद्भुत घटना के साथ घटित हुई, जिसने, जैसा कि उन्होंने बाद में कहा, उनकी आत्मा पर एक गहरी छाप छोड़ दी। हुआ यूं कि, अपने बच्चे के अंतिम संस्कार के ठीक बाद वाली रात को, मार्फा एक नवजात शिशु के रोने की आवाज़ से जाग उठीं। वह डर गईं और अपने पति को जगाया। उन्होंने सुना और कहा कि उन्हें लगा कि यह किसी के कराहने की आवाज़ है, "शायद कोई औरत हो।" वह उठे और कपड़े पहने। मई की वह रात काफी गर्म थी। जैसे ही वह सीढ़ियों से नीचे उतरे, उन्होंने बगीचे से कराहने की आवाज़ें स्पष्ट रूप से सुनीं। लेकिन आंगन से

बगीचे में जाने वाला द्वार रात में बंद था, और उसमें प्रवेश करने का कोई दूसरा रास्ता नहीं था, क्योंकि वह चारों ओर से एक मजबूत, ऊंची बाड़ से घिरा हुआ था। घर लौटकर ग्रिगोरी ने लालटेन जलाई, बगीचे की चाबी ली और अपनी पत्नी के बेतहाशा डर की परवाह किए बिना चुपचाप बगीचे में चला गया। उसकी पत्नी अब भी यही मान रही थी कि उसे किसी बच्चे के रोने की आवाज़ सुनाई दे रही है और वह उसका अपना बच्चा है जो उसे पुकार रहा है। वहाँ पहुँचते ही उसने सुना कि कराहने की आवाज़ बगीचे के द्वार के पास बने स्नानघर से आ रही है और वह एक औरत की कराहें हैं। स्नानघर का दरवाजा खोलते ही उसने जो दृश्य देखा, उससे वह दंग रह गया। एक मंदबुद्धि लड़की, जो गलियों में भटकती रहती थी और पूरे शहर में लिज़ावेटा स्मरड्यास्तचाया (बदबूदार लिज़ावेटा) के नाम से जानी जाती थी, स्नानघर में घुस गई थी और उसने अभी-अभी एक बच्चे को जन्म दिया था। वह बच्चे के साथ मरणासन्न अवस्था में पड़ी थी। उसने कुछ नहीं कहा, क्योंकि वह कभी बोल ही नहीं पाई थी। लेकिन उसकी कहानी तो एक अलग अध्याय की ज़रूरत है।

अध्याय दो

लिज़ावेटा

एक घटना ऐसी थी जिसने ग्रिगोरी को विशेष रूप से झकझोर दिया और उसके एक बेहद अप्रिय और घृणित संदेह को पुष्ट कर दिया। यह लिज़ावेटा एक बौनी सी महिला थी, "मुट्ठी भर से भी कम पाँच फुट की," जैसा कि उसकी मृत्यु के बाद कई धर्मपरायण बूढ़ी महिलाओं ने उसके बारे में दयनीय स्वर में कहा था। उसका चौड़ा, स्वस्थ, लाल चेहरा खालीपन और मूर्खता से भरा हुआ था और उसकी आँखों की स्थिर निगाहें, भले ही उनमें सौम्य भाव हो, अप्रिय थीं। वह गर्मी हो या सर्दी, नंगे पैर घूमती रहती थी, केवल एक सूती कपड़े का टुकड़ा पहने हुए। उसके मोटे, लगभग काले बाल भेड़ की ऊन की तरह घुंघराले थे और उसके सिर पर एक बड़ी टोपी की तरह लगते थे। वे हमेशा कीचड़ से सने रहते थे और उनमें पत्ते, टहनियों के टुकड़े और लकड़ी के बुरादे चिपके रहते थे, क्योंकि वह हमेशा जमीन पर और गंदगी में सोती थी। उसके पिता, इल्या नाम के एक बेघर, बीमार और शराबी, ने सब कुछ खो दिया था और कई वर्षों तक कुछ धनी व्यापारियों के साथ कामगार के रूप में रहे थे। उसकी माँ की बहुत पहले मृत्यु हो चुकी थी। द्वेषपूर्ण और बीमार स्वभाव का इल्या, जब भी लिज़ावेटा उसके पास लौटती, उसे बेरहमी से पीटता था। लेकिन वह ऐसा बहुत कम करती थी, क्योंकि कस्बे में हर कोई उसे मूर्ख समझकर और ईश्वर की प्रिय मानकर उसकी देखभाल करने को तैयार रहता था। इल्या के मालिक और कस्बे के कई अन्य लोग, विशेषकर व्यापारी, उसे बेहतर कपड़े पहनाने की कोशिश करते थे और सर्दियों में हमेशा उसे ऊँचे जूते और भेड़ की खाल का कोट पहनाते थे। हालाँकि वह बिना विरोध किए उन्हें कपड़े पहनने देती थी, फिर भी वह अक्सर चली जाती थी, अधिमानतः गिरजाघर के बरामदे में, और उसे दी गई हर चीज़ - रुमाल, भेड़ की खाल, स्कर्ट या जूते - उतारकर वहीं छोड़ देती थी और पहले की तरह नंगे पैर अपनी कमीज़ में चली जाती थी। एक बार ऐसा हुआ कि प्रांत के एक नए गवर्नर, जो हमारे कस्बे के निरीक्षण दौरे पर थे, ने लिज़ावेटा को देखा और उनकी भावनाओं को गहरा आघात पहुँचा। हालांकि उसे बताया गया था कि वह मूर्ख है, फिर भी उसने कहा कि बीस साल की युवती का केवल एक फ्रॉक पहनकर घूमना मर्यादा का उल्लंघन है और ऐसा दोबारा नहीं होना चाहिए। लेकिन राज्यपाल अपने रास्ते चला गया और लिज़ावेटा को उसी हालत में छोड़ दिया गया। अंततः उसके पिता की मृत्यु हो गई, जिससे अनाथ होने के कारण वह कस्बे के धार्मिक लोगों की नज़रों में और भी स्वीकार्य हो गई। वास्तव में, हर कोई उसे पसंद करता था; यहाँ तक कि लड़के भी उसे तंग नहीं करते थे, जबकि हमारे कस्बे के लड़के, खासकर स्कूली बच्चे, बहुत शरारती होते हैं। वह अनजान घरों में चली जाती थी और कोई उसे भगाता नहीं था। हर कोई उसके प्रति दयालु था और उसे कुछ न कुछ देता था। अगर उसे एक तांबा दिया जाता, तो वह उसे ले लेती और तुरंत चर्च या जेल के भिक्षापात्र में डाल देती। अगर उसे बाज़ार में कोई रोटी या बन दिया जाता, तो वह उसे सबसे पहले मिलने वाले बच्चे को दे देती। कभी-कभी वह कस्बे की सबसे अमीर महिलाओं में से किसी एक को रोककर उसे दे देती और वह महिला प्रसन्न होकर उसे ले लेती। उसने खुद कभी काले ब्रेड और पानी के सिवा कुछ नहीं खाया था। अगर वह किसी महंगी दुकान में जाती, जहाँ कीमती सामान या पैसे पड़े होते, तो कोई उस पर नज़र नहीं रखता था, क्योंकि वे जानते थे कि अगर वह उनके द्वारा नज़रअंदाज़ किए गए हज़ारों रूबल देख ले, तो वह एक पैसा भी नहीं छुएगी। वह शायद ही कभी चर्च जाती थी। वह या तो चर्च के बरामदे में सोती थी या एक बाड़ (हमारे शहर में आज भी बाड़ की जगह बहुत सी बाड़ हैं) चढ़कर रसोई के बगीचे में चली जाती थी। वह हफ्ते में कम से कम एक बार अपने पिता के पुराने मालिकों के घर जाती थी, और सर्दियों में हर रात वहीं जाती थी, और या तो गलियारे में या गौशाला में सोती थी। लोग हैरान थे कि वह ऐसा जीवन कैसे सहन कर सकती है, लेकिन उसे इसकी आदत हो चुकी थी, और हालाँकि वह बहुत छोटी थी, फिर भी उसका शरीर हृष्ट-पुष्ट था। कुछ शहरवासियों का कहना था कि वह यह सब केवल गर्व के कारण करती है, लेकिन यह बात शायद ही विश्वसनीय है। वह मुश्किल से बोल पाती थी, और कभी-कभी अस्पष्ट सी आवाज़ निकालती थी। भला वह गर्व कैसे कर सकती थी?

यह घटना सितंबर की एक साफ, गर्म, चांदनी रात में घटी (कई साल पहले)

कुछ समय पहले, पाँच-छह शराबी लोग हमारे देहाती तौर-तरीकों के अनुसार बहुत देर रात क्लब से लौट रहे थे। वे उस "पिछली राह" से गुज़रे, जो घरों के पीछे के बगीचों के बीच से जाती थी और जिसके दोनों ओर बाड़ लगी हुई थी। यह रास्ता उस पुल पर खुलता था जो उस लंबे, बदबूदार तालाब पर बना था जिसे हम नदी कहते थे। बाड़ के नीचे बिच्छू-बूटी और बरडॉक के बीच हमारे शराबी लोगों ने लिज़ावेटा को सोते हुए देखा। वे उसे देखने के लिए रुक गए, हँसने लगे और बेलगाम अश्लीलता से मज़ाक करने लगे। एक युवक के मन में यह विचित्र सवाल आया कि क्या कोई औरत जैसी किसी चीज़ को जानवर की तरह देख सकता है, इत्यादि... उन सभी ने घोर घृणा के साथ कहा कि यह असंभव है। लेकिन उनमें से एक, फ्योदोर पावलोविच, आगे आया और बोला कि यह बिल्कुल भी असंभव नहीं है, बल्कि इसमें एक खास तरह का रोमांच है, इत्यादि... यह सच है कि उस समय वह एक मसखरे की भूमिका कुछ ज़्यादा ही निभा रहा था। वह खुद को आगे रखकर लोगों का मनोरंजन करना पसंद करता था, दिखावे के लिए तो बराबरी का व्यवहार करता था, लेकिन असल में वह उनके सामने दब्बू जैसा व्यवहार करता था। यह ठीक उसी समय की बात है जब उसे पीटर्सबर्ग में अपनी पहली पत्नी की मृत्यु की खबर मिली थी, और टोपी पर काला कपड़ा लगाए वह इतनी बेशर्मी से शराब पी रहा था और व्यवहार कर रहा था कि हममें से सबसे बेपरवाह लोग भी उसे देखकर चौंक गए। ज़ाहिर है, जश्न मनाने वाले लोग उसकी इस अप्रत्याशित राय पर हँसे; और उनमें से एक ने तो उसे चुनौती भी दे दी कि वह ऐसा करके दिखाए। बाकी लोगों ने इस विचार को और भी ज़ोरदार तरीके से खारिज कर दिया, हालाँकि तब भी वे खूब हँस रहे थे, और अंत में वे अपने रास्ते चले गए। बाद में, फ्योदोर पावलोविच ने कसम खाकर कहा कि वह उनके साथ गया था, और शायद ऐसा ही हुआ हो, कोई निश्चित रूप से नहीं जानता, और न ही कभी कोई जान पाया। लेकिन पाँच-छह महीने बाद, पूरे शहर में लिज़ावेटा की हालत को लेकर गहरी नाराज़गी और आक्रोश की चर्चा होने लगी और लोग यह पता लगाने की कोशिश करने लगे कि आखिर वह कौन था जिसने उसके साथ अन्याय किया था। तभी अचानक पूरे शहर में एक भयानक अफवाह फैल गई कि वह अपराधी कोई और नहीं बल्कि फ्योदोर पावलोविच था। अफवाह किसने फैलाई? उस शराबी टोली में से पाँच लोग शहर छोड़कर जा चुके थे और हमारे बीच केवल एक ही व्यक्ति बचा था, जो एक बुजुर्ग और बहुत सम्मानित सिविल पार्षद थे, जिनकी बेटियाँ बड़ी हो चुकी थीं। अगर अफवाह में कोई सच्चाई भी होती, तो भी वे उसे फैला नहीं सकते थे। लेकिन अफवाह सीधे फ्योदोर पावलोविच की ओर इशारा कर रही थी और लगातार उन्हीं की ओर इशारा करती रही। बेशक, इससे उन्हें कोई खास परेशानी नहीं थी: वे व्यापारियों के एक समूह का खंडन करने की जहमत ही नहीं उठाते। उन दिनों वे बहुत स्वाभिमानी थे और अपने खास अधिकारियों और रईसों के समूह के अलावा किसी और से बात करना उन्हें गवारा नहीं था, जिनका वे बहुत अच्छे से स्वागत करते थे।

उस समय ग्रिगरी ने अपने स्वामी का जोरदार समर्थन किया। उसने उकसाया
उसके बचाव में झगड़े और कहा-सुनी हुई और वह कुछ लोगों को अपने पक्ष में करने में सफल रहा। उसने दावा किया, "यह उस लड़की की अपनी गलती है," और अपराधी कार्प था, एक खतरनाक अपराधी, जो जेल से भाग गया था और जिसका नाम हम सभी को अच्छी तरह से पता था, क्योंकि वह हमारे शहर में छिपा हुआ था। यह अनुमान तर्कसंगत लग रहा था, क्योंकि याद था कि कार्प शरद ऋतु में ठीक उसी समय आस-पास ही था और उसने तीन लोगों को लूटा था। लेकिन इस घटना और इसके बारे में हुई सारी चर्चा ने उस बेचारी मूर्ख लड़की के प्रति लोगों की सहानुभूति कम नहीं की। उसकी पहले से कहीं बेहतर देखभाल की गई। कोंड्राटयेव नाम की एक धनी व्यापारी की विधवा ने अप्रैल के अंत में उसे अपने घर में पनाह देने का इंतजाम किया, जिसका मतलब था कि उसे प्रसव के बाद तक बाहर नहीं जाने देना। उन्होंने उस पर लगातार नजर रखी, लेकिन उनकी सतर्कता के बावजूद वह आखिरी दिन भाग निकली और फ्योदोर पावलोविच के बगीचे में घुस गई। उस हालत में वह ऊँची, मजबूत बाड़ पर कैसे चढ़ पाई, यह एक रहस्य बना रहा। कुछ लोगों का मानना था कि उसे किसी ने उठाकर बाड़ के ऊपर से पार कराया होगा; जबकि अन्य लोगों ने इससे भी अधिक रहस्यमय बात की ओर इशारा किया। सबसे संभावित व्याख्या यह है कि यह घटना स्वाभाविक रूप से घटी होगी—कि लिज़ावेटा, जो बगीचों में सोने के लिए बाड़ फांदने की आदी थी, अपनी शारीरिक स्थिति के बावजूद किसी तरह इस बाड़ पर चढ़ने में कामयाब हो गई और नीचे कूद गई, जिससे उसे चोट लग गई। ग्रिगोरी जल्दी से मार्फा के पास गया और उसे लिज़ावेटा के पास भेज दिया, जबकि वह खुद उसे लाने के लिए दौड़ पड़ा।

पास ही रहने वाली एक बूढ़ी दाई ने बच्चे की जान बचाई, लेकिन लिज़ावेटा की सुबह होते ही मृत्यु हो गई। ग्रिगोरी बच्चे को लेकर घर आया और अपनी पत्नी को बिठाकर उसकी गोद में रख दिया। उसने कहा, "ईश्वर का बच्चा—एक अनाथ—सबके लिए समान है, और हमारे लिए तो सबसे बढ़कर है। हमारे इस नन्हे बिछड़े बच्चे ने हमें यह भेजा है, जो शैतान के पुत्र और एक पवित्र निर्दोष से आया है। इसे दूध पिलाओ और अब और मत रोओ।"

तो मार्फा ने बच्चे का पालन-पोषण किया। उसका नाम पावेल रखा गया, जिस पर लोगों ने तुरंत ही फ्योदोरोविच (फ्योदोर का बेटा) नाम जोड़ दिया। फ्योदोर पावलोविच ने इस पर कोई आपत्ति नहीं जताई और इसे मज़ेदार समझा, हालांकि उन्होंने अपनी ज़िम्मेदारी से लगातार इनकार किया। शहर के लोग उनके द्वारा अनाथ बच्चे को गोद लेने से खुश थे। बाद में, फ्योदोर पावलोविच ने बच्चे के लिए एक उपनाम रखा और उसकी माँ के उपनाम पर उसे स्मरद्याकोव नाम दिया।

इस प्रकार, स्मर्ड्याकोव फ्योदोर पावलोविच का दूसरा नौकर बन गया, और जब हमारी कहानी शुरू होती है, तब स्मरद्याकोव ग्रिगोरी और मार्फा के साथ उसी झोपड़ी में रह रहा था। वह रसोइया के रूप में कार्यरत था। मुझे इस स्मरद्याकोव के बारे में कुछ कहना चाहिए, लेकिन मुझे शर्म आती है कि मैं अपने पाठकों का ध्यान इन साधारण नौकरों पर इतना लंबा खींच रहा हूँ, इसलिए मैं अपनी कहानी पर वापस लौटता हूँ, उम्मीद है कि कहानी के दौरान स्मरद्याकोव के बारे में और अधिक बता पाऊँगा।

अध्याय 3

एक भावुक हृदय की स्वीकारोक्ति
-श्लोक में

आदेश सुनने के बाद अलेयोशा कुछ समय तक असमंजस में रहा।
पिता ने गाड़ी से उसे आवाज़ दी। लेकिन अपनी बेचैनी के बावजूद वह
वह स्थिर नहीं रहा। यह उसका स्वभाव नहीं था। वह तुरंत रसोई की ओर चला गया।
यह पता लगाने के लिए कि उसके पिता ऊपर क्या कर रहे थे। फिर वह भरोसा करते हुए रवाना हो गया।
मुझे उम्मीद है कि रास्ते में उसे अपने मन में उठ रहे संदेह का कोई उत्तर मिल जाएगा।
साथ ही यह भी कहना चाहूँगा कि उसके पिता की चीखें उसे घर लौटने का आदेश दे रही थीं।
“अपने गद्दे और तकिए के साथ” वाली बात से उसे ज़रा भी डर नहीं लगा।
मैं पूरी तरह समझ गया था कि वे कठोर चीखें केवल "एक
किसी प्रभाव को उत्पन्न करने के लिए "फलना-फूलना"। ठीक उसी तरह जैसे हमारे शहर का एक व्यापारी करता है।
जो अपने दोस्तों के साथ अपना जन्मदिन मना रहा था, वह इस बात पर गुस्सा हो गया कि...
और वोदका देने से इनकार किए जाने पर, उसने अपने बर्तन और फर्नीचर तोड़ दिए और
उसने अपने और अपनी पत्नी के कपड़े फाड़ दिए, और अंत में अपनी खिड़कियाँ तोड़ दीं, यह सब उसने प्रभाव दिखाने के लिए। अगले दिन, ज़ाहिर है, जब वह होश में आया, तो उसे पछतावा हुआ।
टूटे हुए प्याले और तश्तरियाँ। अलेयोशा जानता था कि उसके पिता उसे जाने देंगे।
अगले दिन, संभवतः उसी शाम को भी, मठ वापस जाना। इसके अलावा,
उसे पूरा यकीन था कि उसके पिता किसी और को नुकसान पहुंचा सकते हैं, लेकिन वह ऐसा नहीं करेगा।
उसे चोट नहीं पहुँचाना। अलेयोशा को पूरा यकीन था कि पूरी दुनिया में कोई भी उसे कभी चोट नहीं पहुँचाएगा।
उसे नुकसान पहुँचाना चाहते थे, और उससे भी बढ़कर, वह जानता था कि कोई भी उसे नुकसान नहीं पहुँचा सकता।
उसके लिए यह एक स्वयंसिद्ध सत्य था, जिसे उसने बिना किसी प्रश्न के एक बार में ही मान लिया था।
और वह बिना किसी झिझक के, उस पर भरोसा करते हुए, अपने रास्ते पर चल पड़ा।
लेकिन उसी क्षण एक अलग तरह की चिंता ने उन्हें परेशान कर दिया, और
उसे इस बात की और भी ज्यादा चिंता थी क्योंकि वह इसे शब्दों में व्यक्त नहीं कर पा रहा था। यह डर था...
कैटेरिना इवानोव्ना नाम की एक महिला, जिसने उससे इतनी बेसब्री से विनती की थी।
मैडम होहलाकोव द्वारा उन्हें एक पत्र दिया गया था जिसमें उन्हें उनसे मिलने आने के लिए कहा गया था।
कुछ। इस अनुरोध और जाने की आवश्यकता ने तुरंत ही एक भावना को जगा दिया।
उसके दिल में बेचैनी की भावना उठ रही थी, और यह भावना दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही थी।
आश्रम और अन्य स्थानों के दृश्यों के बावजूद, पूरी सुबह कष्टदायक रही।
फादर सुपीरियर के पास। वह बेचैन नहीं थे क्योंकि उन्हें पता नहीं था कि वह क्या कह रही है।
वह क्या बोलेगा और उसे क्या जवाब देना होगा। और वह उससे डरता नहीं था।
बस एक महिला के रूप में। हालाँकि वह महिलाओं के बारे में बहुत कम जानता था, उसने अपना समय बिताया था।
अपने जीवन के शुरुआती बचपन से लेकर मठ में प्रवेश करने तक, पूरी तरह से
महिलाओं से। वह उस महिला, कैटेरिना इवानोवना से डरता था। वह
जब से उसने उसे पहली बार देखा था, तब से वह उससे डरता था। उसने उसे केवल दो या चार बार ही देखा था।
तीन बार, और उससे बस कुछ शब्द कहने का ही मौका मिला था। उसने सोचा

उसे एक सुंदर, अभिमानी और दबंग लड़की के रूप में देखा जाता था। उसकी सुंदरता ही वह कारण नहीं थी जिसने उसे
उसे परेशान कर रहा था, लेकिन कुछ और भी था। और उसकी आशंका की अस्पष्टता।
इससे आशंका और बढ़ गई। लड़की के इरादे अत्यंत नेक थे, उसने कहा।
वह यह जानती थी। वह अपने भाई दिमित्री को बचाने की कोशिश कर रही थी, बस इसी के जरिए।
उदारता, हालाँकि वह पहले ही उसके साथ बुरा व्यवहार कर चुका था। फिर भी, हालाँकि
अलियोशा ने इन सभी उत्तम और उदार लोगों को पहचाना और उनके साथ न्याय किया।
भावनाओं के आवेश में, जैसे ही वह पास आया, उसकी पीठ में सिहरन दौड़ गई।
उसका घर।
उसने सोचा कि उसे इवान नहीं मिलेगा, जो उसका इतना करीबी था।
दोस्त, उसके साथ, क्योंकि इवान निश्चित रूप से अब अपने पिता के साथ था। दिमित्री वह था
वहाँ उसे न मिलने की संभावना और भी कम थी, और उसे इसके कारण का पूर्वाभास हो गया था।
और इसलिए उनकी बातचीत केवल उसी से होती थी। उनके मन में एक गहरीT तड़प थी।
उस दुर्भाग्यपूर्ण साक्षात्कार से पहले अपने भाई दिमित्री से मिलने के लिए भाग जाना।
उसे पत्र दिखाकर, वह उससे इस बारे में बात कर सकता था। लेकिन दिमित्री एक अलग ही दुनिया में रहता था।
बहुत दूर था, और वह निश्चित रूप से घर से भी दूर होगा। स्थिर खड़ा था।
एक मिनट के लिए, उसने अंतिम निर्णय लिया। उसने तेजी से अपने आप को क्रॉस का निशान बनाया।
और अपनी आदत के अनुसार हावभाव दिखाते हुए, और तुरंत मुस्कुराते हुए, वह दृढ़ता से मुड़ गया।
उसकी भयानक महिला की दिशा।
वह उसका घर जानता था। अगर वह हाई स्ट्रीट से होकर जाता और फिर पार करता...
बाज़ार जाने का रास्ता बहुत लंबा था। हालाँकि हमारा शहर छोटा है, फिर भी...
घर बिखरे हुए हैं और दूर-दूर हैं। और इसी बीच उसके पिता थे।
वह उसकी प्रतीक्षा कर रहा था, और शायद अभी तक उसके आदेश को भूला नहीं था।
यह अनुचित था, इसलिए उसे वहां जाने और वापस आने में जल्दी करनी पड़ी। इसलिए उसने
उसने पीछे के रास्ते से शॉर्टकट लेने का फैसला किया, क्योंकि वह उस रास्ते के हर इंच से वाकिफ था।
ज़मीन। इसका मतलब था बाड़ के किनारे से होकर जाना, बाधाओं को पार करना और ज़मीन को पार करना।
दूसरे लोगों के पिछवाड़े, जहाँ हर कोई जिससे वह मिलता था, उसे जानता था और अभिवादन करता था।
उसे। इस तरह वह आधे समय में हाई स्ट्रीट तक पहुंच सकता था।
उसे अपने पिता के बगीचे से सटे हुए बगीचे से होकर गुजरना पड़ता था, जो एक अन्य व्यक्ति का था।
चार खिड़कियों वाला एक छोटा सा जर्जर मकान। इस मकान का मालिक, जैसा कि
अलियोशा जिसे जानती थी, वह एक बूढ़ी औरत थी जो बिस्तर पर पड़ी थी और अपनी बेटी के साथ रहती थी, जो
वह पीटर्सबर्ग में जनरलों के परिवारों में एक सभ्य नौकरानी के रूप में काम कर चुकी थी। अब
वह एक साल से घर पर अपनी बीमार माँ की देखभाल कर रही थी।
अच्छे कपड़े पहने हुए, हालांकि उसकी बूढ़ी माँ और वह दोनों ही डूब चुकी थीं।
इतनी गरीबी थी कि वे हर दिन फ्योदोर पावलोविच की रसोई में खाना खाने जाते थे।
सूप और रोटी, जो मार्फा ने खुशी-खुशी दे दी। फिर भी, हालांकि युवती
जब वह सूप पीने आई, तो उसने अपनी कोई भी पोशाक कभी नहीं बेची थी, और इनमें से एक
यहां तक कि उसकी एक लंबी पूंछ भी थी—यह तथ्य अलेयोशा ने रकितिन से सीखा था।
जो कस्बे में होने वाली हर बात से वाकिफ रहता था। उसके पास
जैसे ही उसने यह सुना, वह इसे भूल गया, लेकिन अब, बगीचे में पहुँचकर, वह
ट्रेन वाली ड्रेस याद आई, उसने अपना सिर उठाया, जो पहले से ही था
सोच में डूबे हुए, तभी उन्हें कुछ ऐसा मिला जिसकी उन्हें बिल्कुल उम्मीद नहीं थी।

बगीचे में मौजूद बाधा को पार करते हुए, दिमित्री किसी चीज़ पर सवार होकर आगे बढ़ रहा था।
आगे झुकते हुए, ज़ोर-ज़ोर से इशारे करते हुए, उसे बुलाते हुए, स्पष्ट रूप से
किसी के सुन लेने के डर से वह एक शब्द भी बोलने से डर रहा था। अलेयोशा दौड़कर उसके पास गया।
बाधा।
"अच्छा हुआ तुमने ऊपर देखा। मैं तो लगभग तुम पर चिल्लाने ही वाला था।"
मित्या ने खुशी से फुसफुसाते हुए कहा, “जल्दी से अंदर आ जाओ! कैसे?”
आपका आना बहुत अच्छा लगा! मैं आपके बारे में ही सोच रहा था!
अलियोशा भी बहुत खुश था, लेकिन उसे समझ नहीं आ रहा था कि इस स्थिति से कैसे उबरे।
बाधा। मित्या ने कूदने में मदद के लिए अपना ताकतवर हाथ उसकी कोहनी के नीचे रखा।
अपने चोगे को समेटते हुए, अलेयोशा ने एक फुर्तीले व्यक्ति की तरह बाधा को पार कर लिया।
नंगे पैर वाला गली का बच्चा।
“शाबाश! अब चलो,” मित्या ने उत्साह से कहा।
फुसफुसाना।
“कहाँ?” अलेयोशा ने फुसफुसाते हुए पूछा, अपने चारों ओर देखते हुए और खुद को पाते हुए।
एक सुनसान बगीचे में, जहाँ उनके अलावा कोई और नहीं था। बगीचा था
घर छोटा था, लेकिन वह कम से कम पचास कदम दूर था।
“यहाँ कोई नहीं है। तुम फुसफुसा क्यों रहे हो?” अलेयोशा ने पूछा। “मैं फुसफुसा क्यों रहा हूँ? भाड़ में जाओ!”
दिमित्री ने अपनी पूरी ताकत से चिल्लाया।
आवाज। “देखो प्रकृति कैसे-कैसे मूर्खतापूर्ण खेल खेलती है। मैं यहाँ गुप्त रूप से हूँ, और
घड़ी पर। मैं बाद में समझाऊंगा, लेकिन यह जानते हुए कि यह एक रहस्य है, मैंने शुरू किया।
बेवकूफों की तरह फुसफुसा रहे हो, जब ज़रूरत नहीं है। चलो चलते हैं। उधर। जब तक
तो चुप रहो। मैं तुम्हें चूमना चाहता हूँ।
संसार में ईश्वर की महिमा हो।
मुझमें ईश्वर की महिमा हो...
मैं यहीं बैठे-बैठे यही बात दोहरा रहा था, आपके आने से पहले।
यह बगीचा लगभग तीन एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ था और इसमें पेड़-पौधे लगाए गए थे।
चारों ओर केवल बाड़ के किनारे ही पेड़ थे। वहाँ सेब के पेड़, मेपल के पेड़ थे।
नींबू और बर्च के पेड़। बगीचे का मध्य भाग खाली घास का मैदान था।
वह स्थान, जहाँ से कई सौ किलोग्राम घास ले जाई जाती थी।
गर्मी का मौसम। बगीचे को गर्मियों के लिए कुछ रूबल के किराए पर दिया गया था।
रसभरी, करौंदा और गूजबेरी के बागान भी लगाए गए थे।
किनारों पर; घर के पास हाल ही में एक किचन गार्डन लगाया गया था।
दिमित्री अपने भाई को बगीचे के सबसे एकांत कोने में ले गया।
वहाँ, चूने के पेड़ों और काले करंट और एल्डर की पुरानी झाड़ियों के घने जंगल में,
स्नोबॉल ट्री और लिलीक के बीच, एक टूटा-फूटा हरा ग्रीष्मकालीन घर खड़ा था।
उम्र के साथ काला पड़ गया था। इसकी दीवारें जालीदार थीं, लेकिन फिर भी एक
छत जो आश्रय दे सके। पता नहीं यह ग्रीष्मकालीन घर कब बना था।
इसका निर्माण हुआ था। ऐसी परंपरा थी कि इसका निर्माण लगभग पचास साल पहले हुआ था।
यह घर वॉन श्मिट नामक एक सेवानिवृत्त कर्नल के स्वामित्व में था, जो उस समय उस घर के मालिक थे।
समय। सब कुछ जीर्ण-शीर्ण अवस्था में था, फर्श सड़ रहा था, तख्ते ढीले थे,
लकड़ी के काम से सीलन की गंध आ रही थी। ग्रीष्मकालीन घर में हरे रंग की लकड़ी थी।
जमीन में एक मेज लगी हुई थी, और उसके चारों ओर कुछ हरी बेंचें थीं।
जिस पर अभी भी बैठना संभव था। अलेयोशा ने तुरंत ही यह बात समझ ली थी।
भाई की उत्साहित अवस्था देखकर, और मंडप में प्रवेश करते ही उसने आधा देखा
टेबल पर ब्रांडी की बोतल और एक वाइन ग्लास रखा हुआ है।

“ये तो ब्रांडी है,” मित्या हँसते हुए बोला। “मैं तुम्हारा चेहरा देख सकता हूँ: ‘ये शराब पी रहा है’।”
फिर से!’ उस प्रेत पर अविश्वास करो।
निकम्मे, झूठे लोगों पर भरोसा मत करो।
और अपने संदेहों को दूर कर दो।
मैं शराब नहीं पी रहा हूँ, मैं तो बस 'मज़े कर रहा हूँ', जैसा कि तुम्हारा वो सूअर, राकितिन, कहता है।
वह एक दिन सिविल पार्षद बनेगा, लेकिन वह हमेशा 'मौज-मस्ती' की बातें करता रहेगा।
बैठ जाओ। अलेयोशा, मैं तुम्हें अपनी बाहों में भर सकता हूँ और अपने सीने से लगा सकता हूँ।
मैं तुम्हें तब तक सीने से लगाऊंगा जब तक मैं तुम्हें कुचल न दूं, क्योंकि पूरी दुनिया में—वास्तविकता में—
वास्तविकता में—
(क्या तुम इसे समझ सकते हो?) मैं तुम्हारे सिवा किसी से प्यार नहीं करता!
उसने अपने अंतिम शब्द एक प्रकार के उत्साह में कहे। "तुम्हारे सिवा और एक 'सुंदर स्त्री' के सिवा, जिससे मुझे प्रेम हो गया है और जिसने मुझे बर्बाद कर दिया है।"
लेकिन प्यार में होना, प्यार करने का मतलब नहीं है। आप किसी महिला से प्यार कर सकते हैं।
और फिर भी उससे नफरत करते हैं। याद रखना! मैं अब भी इस बारे में खुशी-खुशी बात कर सकता हूँ। बैठ जाओ।
मैं मेज के पास बैठ जाऊंगी और तुम्हारे बगल में बैठकर तुम्हें देखूंगी और बातें करती रहूंगी।
तुम चुप रहो और मैं बोलता रहूंगा, क्योंकि समय आ गया है। लेकिन
चिंतन, आप जानते हैं, मुझे धीरे से बोलना चाहिए, क्योंकि यहाँ—यहाँ—आप सुन सकते हैं
जो कान सुन रहे हैं, उन्हें कभी मत बताओ। मैं सब कुछ समझा दूंगा; जैसा कि कहते हैं,
कहानी जारी रहेगी। मैं तुम्हें क्यों तरस रहा था?
मैं इन दिनों से तुम्हारे लिए तरस रहा था, और अभी? (पांच दिन हो गए हैं)
मैंने यहीं लंगर डाल दिया है।) क्योंकि मैं सिर्फ तुम्हें ही सब कुछ बता सकता हूँ;
क्योंकि मुझे ऐसा करना ही है, क्योंकि मुझे तुम्हारी ज़रूरत है, क्योंकि कल मैं यहाँ से उड़ जाऊँगा।
बादल, क्योंकि कल जीवन का अंत और आरंभ होगा। क्या आपने
क्या आपने कभी ऐसा महसूस किया है, क्या आपने कभी सपने में देखा है कि आप किसी खाई में गिर रहे हैं?
मैं बस इसी तरह गिर रहा हूँ, लेकिन सपने में नहीं। और मुझे डर नहीं है, और
डरो मत। कम से कम, मैं तो डरता हूँ, लेकिन मुझे इसमें मज़ा आता है। यह आनंद नहीं है।
हालांकि, परमानंद। धिक्कार है सब पर, जो भी हो! एक मजबूत आत्मा, एक कमजोर
भावना, स्त्रीत्व की भावना—जो भी हो! आइए प्रकृति की प्रशंसा करें: आप देखिए
कितनी धूप है, आसमान कितना साफ है, सारे पत्ते हरे हैं, अभी भी
गर्मी का मौसम; दोपहर के चार बजे और सन्नाटा! तुम कहाँ थे?
जा रहा है?"
मैं पिताजी के घर जा रहा था, लेकिन मेरा इरादा कैटेरिना इवानोव्ना के घर जाने का था।
पहला।"
उसे और पिताजी को! ओह! क्या संयोग है! मैं इंतज़ार क्यों कर रही थी?
तुम्हारे लिए? मेरी आत्मा के हर कोने में तुम्हारे लिए भूख और प्यास है और
मेरी पसलियों में भी? क्यों, तुम्हें पिता और उसके पास भेजने के लिए, कैटेरिना
इवानोवना, ताकि उसका और पिता का काम तमाम हो जाए। एक फ़रिश्ता भेजा जाए।
मैं किसी को भी भेज सकता था, लेकिन मैं एक फरिश्ता भेजना चाहता था। और ये लो तुम।
आप अपने पिता और उससे मिलने जा रहे हैं।"
“क्या तुमने सच में मुझे ही भेजा था?” अलेयोशा ने परेशान होकर पूछा।
अभिव्यक्ति।
“रुको! तुम्हें पता था! और मैं देख रहा हूँ कि तुम इसे एक ही बार में समझ गए हो। लेकिन बने रहो।”
चुप रहो, कुछ देर चुप रहो। पछतावा मत करो, और रोओ मत।
दिमित्री खड़ा हुआ, एक पल सोचा और अपनी उंगली अपने

माथा।
“उसने आपसे पूछा है, आपको पत्र लिखा है या कुछ और किया है, इसीलिए
तुम उसके पास जा रहे हो? अगर ऐसा न होता तो तुम नहीं जाते?
“ये रहा उसका नोट।” अलेयोशा ने उसे अपनी जेब से निकाला। मित्या ने देखा।
इसे जल्दी से पार कर लें।
और तुम तो पीछे वाले रास्ते से जा रहे थे! हे भगवान, मैं तुम्हारा शुक्रिया अदा करता हूँ!
मैंने उसे पिछले रास्ते से भेजा, और वह मेरे पास सोने की मछली की तरह आया।
उस कहानी के मूर्ख बूढ़े मछुआरे! सुनो, अलेयोशा, सुनो, भाई! अब मैं
मैं तुम्हें सब कुछ बताना चाहती हूँ, क्योंकि मुझे किसी न किसी को तो बताना ही होगा। स्वर्ग में एक देवदूत को।
मैंने पहले ही बता दिया है; लेकिन मैं धरती पर मौजूद एक फरिश्ते को बताना चाहता हूँ। तुम एक फरिश्ता हो।
पृथ्वी। तुम सुनोगे, न्याय करोगे और क्षमा करोगे। और मुझे यही चाहिए, यही।
मुझसे ऊपर वाले को माफ कर देना चाहिए। सुनो! अगर दो लोग अलग हो जाते हैं
धरती पर सब कुछ छोड़कर अज्ञात की ओर उड़ जाना, या कम से कम उनमें से एक को तो छोड़ ही देना।
और उड़ान भरने या बर्बाद होने से पहले वह किसी और के पास आकर कहता है,
‘मेरे लिए यह करो’—ऐसा कोई काम जो पहले कभी नहीं माँगा गया हो और जो केवल वही कर सकता हो
मृत्युशय्या पर पूछे जाने पर—क्या दूसरा व्यक्ति, यदि वह मित्र या सहकर्मी होता, तो क्या वह इनकार कर देता?
भाई?"
“मैं कर दूंगा, लेकिन मुझे बताओ क्या करना है, और जल्दी करो,” अलेयोशा ने कहा। “जल्दी करो! हम्म! ...
जल्दी मत करो, अलेयोशा, तुम जल्दी करो और
चिंता मत करो। अब जल्दी करने की कोई जरूरत नहीं है। अब दुनिया ने एक नया मोड़ ले लिया है।
नया मोड़। आह, अलेयोशा, कितना अफ़सोस है कि तुम परमानंद को नहीं समझ सकते। लेकिन
मैं उससे क्या कह रहा हूँ? मानो तुम्हें समझ ही न आया हो। कितना बेवकूफ है!
मैं हूँ! मैं क्या कह रहा हूँ? ‘हे मनुष्य, महान बनो!’—ऐसा कौन कहता है?
अलोशा ने प्रतीक्षा करने का निश्चय किया। उसे लगा कि शायद, वास्तव में, उसका
काम यहीं पड़ा था। मित्या एक पल के लिए सोच में डूब गया, उसकी कोहनी यहीं टिकी हुई थी।
मेज और उसका सिर, दोनों हाथों में थे। दोनों चुप थे।
“अलोशा,” मित्या ने कहा, “तुम अकेले हो जो नहीं हँसोगे।
मैं अपनी बात की शुरुआत शिलर की 'आनंद की स्तुति' से करना चाहूंगा—यह मेरी स्वीकारोक्ति है।
खुशी! मुझे जर्मन नहीं आती, बस इतना पता है कि इसे यही कहते हैं।
लोग सोचते हैं कि मैं नशे में होने के कारण बकवास कर रहा हूँ। मैं बिल्कुल भी नशे में नहीं हूँ।
ब्रांडी तो ठीक है, लेकिन मुझे नशे में धुत होने के लिए दो बोतलें चाहिए होती हैं:
गुलाबी चेहरे वाला सिलिनस
उसके लड़खड़ाते हुए गधे पर।
लेकिन मैंने बोतल का एक चौथाई हिस्सा भी नहीं पिया है, और मैं साइलेनस नहीं हूँ। मैं नहीं हूँ।
साइलेनस, यद्यपि मैं मजबूत हूँ,1 क्योंकि मैंने एक बार हमेशा के लिए निर्णय ले लिया है।
मुझे इस मज़ाक के लिए माफ़ करें; आपको मुझे सिर्फ़ मज़ाक से कहीं ज़्यादा चीज़ों के लिए माफ़ करना होगा-
दिन। परेशान मत होइए। मैं बात को घुमा-फिराकर नहीं कह रहा हूँ। मैं सही बात कह रहा हूँ, और मैं
मैं अभी मुद्दे पर आता हूँ। मैं आपको ज़्यादा देर तक सस्पेंस में नहीं रखूँगा। रुकिए, कैसे?
क्या यह चलता है?
उसने अपना सिर उठाया, एक मिनट सोचा और फिर उत्साह से बोलना शुरू किया:
अपनी गुफा में जंगली और भयभीत

नग्न गुफावासी को छुपा दिया,
और बेघर खानाबदोश भटकता रहा
उपजाऊ मैदान को उजाड़ते हुए।
भाले और बाण से धमकाने वाला
जंगल में शिकारी भटक गया...
सभी असहाय फंसे हुए लोगों पर विपत्ति आएगी!
उन क्रूर और शत्रुतापूर्ण तटों पर!
“उच्च ओलंपस के शिखर से
माता सेरेस नीचे आईं,
उन दुर्गम क्षेत्रों में खोज करते हुए
उसकी खोई हुई बेटी प्रोसरपाइन।
लेकिन देवी को कोई शरण नहीं मिली।
वहां मुझे कोई सौहार्दपूर्ण स्वागत नहीं मिला।
और कोई मंदिर गवाही नहीं देता
देवताओं की पूजा के लिए।
खेतों से और अंगूर के बागों से
दावतों को सजाने के लिए कोई फल नहीं आए।
केवल रक्त से लथपथ पीड़ितों का मांस
वेदी की आग पर सुलगते रहे,
और जहाँ कहीं भी शोकग्रस्त देवी
वह अपनी उदास निगाहें घुमाती है,
सबसे घिनौनी गिरावट में डूबा हुआ
मनुष्य अपनी घृणास्पद प्रवृत्ति का प्रदर्शन करता है।
मित्या फूट-फूटकर रोने लगी और उसने अलेयोशा का हाथ पकड़ लिया। “मेरे प्यारे, मेरे प्यारे, तुम अब भी अपमानित हो रहे हो। यहाँ...”
पृथ्वी पर मनुष्य के लिए बहुत अधिक पीड़ा, बहुत अधिक कष्ट।
यह मत सोचो कि मैं केवल एक पुलिस अधिकारी की वर्दी में एक क्रूर व्यक्ति हूँ, जो गंदगी में लोटता रहता है और
शराब। मैं उस पतित व्यक्ति के अलावा शायद ही किसी और चीज़ के बारे में सोचता हूँ—काश मैं
मैं झूठ नहीं बोल रहा हूँ। मैं भगवान से प्रार्थना करता हूँ कि मैं झूठ नहीं बोल रहा हूँ और दिखावा नहीं कर रहा हूँ। मैं इस बारे में सोचता हूँ।
क्योंकि मैं खुद वही आदमी हूं।
क्या वह अपनी आत्मा को नीचता से मुक्त करेगा?
और प्रकाश और मूल्य को प्राप्त करो,
उसे मुड़कर हमेशा के लिए जकड़ लेना चाहिए
अपनी प्राचीन धरती माता को।
लेकिन मुश्किल यह है कि मैं धरती माँ से हमेशा के लिए कैसे जुड़ा रहूँ? मुझे नहीं पता।
उसे चूमता हूँ। मैं उसके सीने से लिपटता नहीं हूँ। क्या मुझे किसान बनना है या फिर...
चरवाहा? मैं आगे बढ़ता हूँ और मुझे नहीं पता कि मैं शर्मिंदा करने वाला हूँ या नहीं।
प्रकाश और आनंद। यही तो मुश्किल है, क्योंकि दुनिया में सब कुछ एक पहेली है!
और जब भी मैं घोर पतन की स्थिति में डूब गया हूँ (और यह
(यह हमेशा से होता आया है) मैं हमेशा सेरेस और मनुष्य के बारे में वह कविता पढ़ता था।
क्या इसने मुझे सुधारा है? कभी नहीं! क्योंकि मैं करामाज़ोव हूँ। क्योंकि जब मैं छलांग लगाता हूँ तो...
मैं गड्ढे में सिर के बल, एड़ी ऊपर करके गिरता हूँ, और गिरने में मुझे आनंद आता है।
उस अपमानजनक रवैये पर मुझे गर्व है। और बिल्कुल गहराई में

उस अपमान की मैं प्रशंसा में गीत गाता हूँ। मुझे शापित होने दो। मुझे
चाहे मैं कितना भी नीच और घृणित क्यों न होऊं, मुझे बस उस पर्दे के किनारे को चूमने दो जिसमें मेरा ईश्वर विराजमान है।
आवरण में लिपटा हुआ। यद्यपि मैं शैतान का अनुसरण कर रहा हूँ, फिर भी मैं तेरा पुत्र हूँ, हे प्रभु।
और मैं तुझसे प्रेम करता हूँ, और मुझे वह आनंद प्राप्त होता है जिसके बिना संसार टिक नहीं सकता।
शाश्वत आनंद को बढ़ावा देता है
समस्त सृष्टि की आत्मा,
यह उसकी गुप्त उत्तेजक आग है
लौ से भरा जीवन का प्याला।
उसी के इशारे पर घास मुड़ गई है
प्रत्येक पत्ती प्रकाश की ओर
और सौर मंडल विकसित हुए हैं।
अराजकता और अंधेरी रात से,
असीम अंतरिक्ष के क्षेत्रों को भरते हुए
ऋषि की दृष्टि से परे।
प्रकृति की असीम दयालु गोद में,
सभी जीवित प्राणी आनंद का पान करते हैं।
और पक्षी, जानवर और रेंगने वाले जीव
सभी उसके नेतृत्व में चलते हैं।
मनुष्य के लिए उसके उपहार जरूरत के समय मित्र होते हैं।
माला, झागदार मस्ट,
स्वर्गदूतों को—ईश्वर के सिंहासन का दर्शन,
कीड़ों के लिए—कामुक वासना।
लेकिन बहुत हो गई कविता! मेरी आँखों में आंसू आ रहे हैं; मुझे रोने दो। शायद यह मूर्खता हो कि
सब लोग तुम पर हँसेंगे। लेकिन तुम नहीं हँसोगे। तुम्हारी आँखें चमक रही हैं।
बहुत हो गई कविता। अब मैं आपको उन कीड़ों के बारे में बताना चाहता हूँ जिन्हें भगवान ने
उसने "कामुक वासना" दी।
कीड़ों के लिए—कामुक वासना।
मैं वही कीड़ा हूँ, भाई, और यह बात विशेष रूप से मेरे बारे में कही जाती है। हम सभी करामाज़ोव
ऐसे ही कीड़े होते हैं, और हे देवदूत, तुम तो मानो तुममें भी निवास करते हो, और
यह आपके रक्त में तूफान खड़ा कर देगा। तूफान, क्योंकि कामुक वासना एक
आंधी—आंधी से भी बदतर! सुंदरता एक भयानक और डरावनी चीज है! यह है
यह भयानक है क्योंकि इसे न तो समझा जा सका है और न ही कभी समझा जा सकता है।
ईश्वर हमें केवल पहेलियाँ ही देता है। यहाँ सीमाएँ मिलती हैं और सब कुछ।
विरोधाभास साथ-साथ मौजूद होते हैं। मैं कोई सुसंस्कृत व्यक्ति नहीं हूँ, भाई, लेकिन
मैंने इस बारे में बहुत सोचा है। ये कितने भयानक रहस्य हैं!
इस धरती पर अनेक पहेलियाँ मनुष्य को बोझिल कर देती हैं। हमें यथासंभव इनका समाधान करना होगा।
और पानी में त्वचा को सूखा रखने की कोशिश करें। वाह! मैं तो ये सोच भी नहीं सकती।
उच्च कोटि के मन और हृदय वाले व्यक्ति का आरंभ मैडोना के आदर्श से होता है।
और इसका अंत सोडोम के आदर्श के साथ होता है। इससे भी अधिक भयानक बात यह है कि एक आदमी
अपनी आत्मा में सदोम के आदर्श को धारण किए हुए वह उस आदर्श का त्याग नहीं करता है।
मैडोना, और शायद उसका दिल उस आदर्श के लिए सचमुच आग से जल रहा हो,
ठीक वैसे ही जैसे उसके युवावस्था और भोलेपन के दिनों में था। हाँ, मनुष्य विशाल है, बहुत विशाल है।
बिल्कुल। मैं तो उसे और भी संकरा कर देता। पता नहीं इसका क्या नतीजा निकलेगा!
जो मन को शर्मनाक लगता है, वही हृदय को सुंदरता प्रतीत होती है, और कुछ नहीं।

क्या सोडोम में सुंदरता थी? मेरा विश्वास करो, विशाल जनसमूह के लिए
मानव जाति की सुंदरता सोडोम में पाई जाती है। क्या आपको यह रहस्य पता था? भयानक
बात यह है कि सुंदरता रहस्यमय होने के साथ-साथ भयानक भी है। ईश्वर और शैतान दोनों ही
वहाँ लड़ाई होती है और युद्धक्षेत्र मनुष्य का हृदय है। लेकिन मनुष्य हमेशा
वह अपने दर्द की बात करता है। सुनो, अब तथ्यों पर आते हैं।

1. रूसी भाषा में, "मौन।"

अध्याय 4

एक भावुक हृदय की स्वीकारोक्ति—
उपाख्यान में

“मैं उस समय बेपरवाह ज़िंदगी जी रहा था। पिताजी ने अभी बताया कि मैंने जवान लड़कियों को बहलाने-फुसलाने में कई हज़ार रूबल खर्च कर दिए। यह एक घिनौनी मनगढ़ंत कहानी है, और ऐसा कुछ भी नहीं था। और अगर ऐसा कुछ था भी, तो मुझे सिर्फ़ इसके लिए पैसों की ज़रूरत नहीं थी। मेरे लिए पैसा एक सहायक वस्तु है, मेरे दिल की उपज है, एक ढांचा है। आज वह मेरी प्रेमिका होती, कल उसकी जगह कोई गली की लड़की होती। मैं दोनों तरह की लड़कियों के साथ समय बिताता था। मैं संगीत, दंगे और खानाबदोशों पर मुट्ठी भर पैसे लुटाता था। कभी-कभी मैं महिलाओं को भी पैसे दे देता था, क्योंकि वे लालच से पैसे ले लेती थीं, यह मानना पड़ेगा, और खुश होकर शुक्रगुजार भी होती थीं। महिलाएं मुझे पसंद करती थीं: सभी नहीं, लेकिन कभी-कभी ऐसा होता था। लेकिन मुझे हमेशा मुख्य सड़क के पीछे की छोटी, अंधेरी गलियाँ पसंद थीं —वहाँ रोमांच और आश्चर्य मिलते हैं, और मिट्टी में कीमती धातु भी। मैं लाक्षणिक रूप से कह रहा हूँ, भाई। जिस कस्बे में मैं था, वहाँ ऐसी कोई गलियाँ नहीं थीं। शाब्दिक अर्थ में तो नहीं, लेकिन नैतिक रूप से ज़रूर था। अगर आप मेरी तरह होते, तो आप जानते कि इसका क्या मतलब है। मुझे बुराई से प्यार था, मुझे बुराई की बदनामी से प्यार था। मुझे क्रूरता से प्यार था; क्या मैं एक कीड़ा नहीं हूँ, क्या मैं एक हानिकारक कीट नहीं हूँ? असल में, मैं एक करामाज़ोव हूँ! एक बार हम सब, सात स्लेज में, पिकनिक पर गए। अँधेरा था, सर्दी का मौसम था, और मैंने एक लड़की का हाथ दबाना शुरू किया और उसे मुझे चूमने के लिए मजबूर किया। वह एक अधिकारी की बेटी थी, एक प्यारी, कोमल, आज्ञाकारी लड़की। उसने मुझे ऐसा करने दिया, अँधेरे में उसने मुझे बहुत कुछ करने दिया। बेचारी ने सोचा होगा कि मैं अगले दिन आकर उसे शादी का प्रस्ताव रखूँगा (मुझे उसके लिए एक अच्छा साथी माना जाता था)। लेकिन मैंने उससे पाँच महीने तक एक शब्द भी नहीं कहा। मैं उसे अक्सर नाच-गाने के दौरान एक कोने में देखता था (हमारे यहाँ हमेशा नाच-गाने होते थे), उसकी आँखें मुझे देखती रहती थीं। मैंने देखा कि कैसे उसकी आँखें आग से चमकती थीं—कोमल आक्रोश की आग। इस खेल ने मेरी आत्मा में पल रही उस कीड़े जैसी वासना को और भड़का दिया। पांच महीने बाद उसने एक अधिकारी से शादी कर ली और शहर छोड़कर चली गई, अब भी नाराज़ थी, और शायद अब भी मुझसे प्यार करती थी। अब वे खुशी से रहते हैं। ध्यान रहे कि मैंने किसी को नहीं बताया। मैंने इस बारे में शेखी नहीं मारी। हालाँकि मैं नीच इच्छाओं से भरा हूँ, और नीच चीज़ों से प्यार करता हूँ, मैं बेईमान नहीं हूँ। तुम शरमा रहे हो; तुम्हारी आँखों में चमक आ गई। बस करो ये गंदी बातें। और ये सब कुछ खास नहीं था—पॉल डी कॉक की तरह सड़क किनारे खिले फूल—हालाँकि वो क्रूर कीड़ा मेरी आत्मा में पहले ही जड़ जमा चुका था। मेरे पास यादों का एक पूरा एल्बम है, भाई। भगवान उन्हें आशीर्वाद दें, प्यारी यादें। मैंने बिना झगड़े के इसे खत्म करने की कोशिश की। और मैंने उन्हें कभी किसी को नहीं दिया। मैंने उनमें से किसी के बारे में कभी डींग नहीं मारी। लेकिन बस इतना ही काफी है। तुम ये नहीं सोच सकते कि मैं तुम्हें यहाँ सिर्फ़ ऐसी बकवास करने के लिए लाया हूँ। नहीं, मैं तुम्हें कुछ और दिलचस्प बताने जा रहा हूँ; और आश्चर्यचकित मत होना कि मुझे तुम्हें बताने में शर्म आने के बजाय खुशी हो रही है।
“तुम ऐसा इसलिए कह रहे हो क्योंकि मैं शरमा गया था,” अलेयोशा ने अचानक कहा। “मैं शरमाया नहीं था।” आपकी बातों या आपके किए पर मुझे शर्म आ रही थी। मुझे शर्म इसलिए आई क्योंकि मैं भी बिल्कुल आपकी तरह ही हूँ।
“तुम? अरे, ये तो कुछ ज़्यादा ही हो रहा है!”
“नहीं, यह ज़्यादा दूर नहीं है,” अलेयोशा ने गर्मजोशी से कहा (ज़ाहिर है, यह विचार उसे पसंद नहीं आया था)। (एक नया वाला)। “सीढ़ी वही है। मैं सबसे नीचे वाले पायदान पर हूँ, और तुम ऊपर हो, लगभग तेरहवें पायदान पर। मैं इसे ऐसे ही देखता हूँ। लेकिन सब कुछ एक जैसा ही है। बिल्कुल एक ही प्रकार का। सबसे नीचे वाले पायदान पर खड़ा कोई भी व्यक्ति ऊपर वाले पायदान पर अवश्य ही जाएगा।”
"तो फिर उस पर बिल्कुल भी कदम नहीं रखना चाहिए।"

जो भी इससे बच सकता है, उसे ऐसा नहीं करना चाहिए।
लेकिन क्या आप ऐसा कर सकते हैं?
मुझे नहीं लगता।
"चुप रहो, अलेयोशा, चुप रहो, प्रिय! मैं तुम्हारा हाथ चूमना चाहती हूँ, तुम मुझे इतना छूते हो।"
वो बदमाश ग्रुशेंका मर्दों पर बुरी नज़र रखती है। उसने एक बार मुझसे कहा था कि वो तुम्हें एक दिन खा जाएगी। अरे नहीं, मैं ऐसा नहीं करूँगी! मक्खियों से भरे इस भ्रष्टाचार के मैदान से, चलो मेरी त्रासदी की ओर बढ़ते हैं, जो मक्खियों से, यानी हर तरह की नीचता से दूषित है। हालाँकि उस बूढ़े ने मेरी मासूमियत के बारे में झूठ बोला, लेकिन मेरी त्रासदी में सचमुच कुछ ऐसा ही था, हालाँकि यह सिर्फ़ एक बार हुआ, और फिर वो बात सामने नहीं आई। जिस बूढ़े ने मुझे उस बात के लिए दोषी ठहराया जो हुई ही नहीं, उसे इस बात का पता भी नहीं है; मैंने इसके बारे में किसी को नहीं बताया। तुम पहले हो, इवान को छोड़कर, बेशक—इवान सब कुछ जानता है। उसे तुम्हारे पहले ही पता था। लेकिन इवान तो एक कब्र है।
“इवान एक मकबरा है?”
"हाँ।"
अलोशा ने बड़ी ध्यान से सुना।
मैं एक पंक्ति रेजिमेंट में लेफ्टिनेंट था, लेकिन फिर भी मैं निगरानी में था।
एक तरह के अपराधी की तरह। फिर भी उस छोटे से कस्बे में मेरा बहुत अच्छा स्वागत हुआ। मैंने दिल खोलकर पैसे खर्च किए। लोग मुझे अमीर समझते थे; मैं खुद भी ऐसा ही समझता था। लेकिन मैंने उन्हें और भी कई तरीकों से खुश किया होगा। हालाँकि वे मुझे देखकर सिर हिलाते थे, फिर भी वे मुझे पसंद करते थे। मेरे कर्नल, जो एक बूढ़े आदमी थे, अचानक मुझसे नफरत करने लगे। वे हमेशा मुझे नीचा दिखाते थे, लेकिन मेरे प्रभावशाली दोस्त थे, और इसके अलावा, पूरा कस्बा मेरे साथ था, इसलिए वे मुझे ज्यादा नुकसान नहीं पहुंचा सकते थे। गलती मेरी ही थी कि मैंने उनके साथ उचित सम्मान से पेश नहीं आया। मैं घमंडी था। यह जिद्दी बूढ़ा आदमी, जो वास्तव में बहुत अच्छा, दयालु और मेहमाननवाज था, उसकी दो पत्नियाँ थीं, दोनों मर चुकी थीं। उसकी पहली पत्नी, जो एक साधारण परिवार से थी, अपनी ही तरह सीधी-सादी बेटी छोड़ गई। जब मैं वहाँ था, तब वह 24 साल की युवती थी, और अपने पिता और अपनी माँ की बहन, एक चाची के साथ रहती थी। चाची सीधी-सादी और अनपढ़ थीं; भतीजी सीधी-सादी लेकिन चंचल थी। मुझे लोगों के बारे में अच्छी बातें कहना अच्छा लगता है। मैंने अगाफ्या से ज़्यादा आकर्षक स्वभाव वाली महिला कभी नहीं देखी थी— ज़रा सोचिए, उनका नाम अगाफ्या इवानोवना था! और रूसी शैली में वे दिखने में भी कम सुंदर नहीं थीं: लंबी, हृष्ट-पुष्ट, सुडौल काया और खूबसूरत आँखें, हालाँकि चेहरा थोड़ा खुरदुरा था। उन्होंने शादी नहीं की थी, हालाँकि उनके दो चाहने वाले थे। उन्होंने दोनों को ठुकरा दिया, लेकिन हमेशा की तरह हंसमुख रहीं। मेरा उनसे घनिष्ठ संबंध था, लेकिन उस तरह का नहीं, बल्कि शुद्ध मित्रता। मैं अक्सर महिलाओं से बड़ी मासूमियत से दोस्ती करता रहा हूँ। मैं उनसे चौंकाने वाली बेबाकी से बातें करता था, और वे बस हँसती थीं। कई महिलाओं को ऐसी आज़ादी पसंद होती है, और वे भी एक लड़की थीं, जिससे यह और भी मज़ेदार हो जाता था। एक और बात, उन्हें कभी भी युवती नहीं समझा जा सकता था। वे और उनकी चाची अपने पिता के घर में एक तरह की स्वेच्छा से विनम्रता के साथ रहती थीं, खुद को दूसरों के बराबर नहीं समझती थीं। वे सबकी चहेती थीं और सबके काम आती थीं, क्योंकि वे एक कुशल दर्जी थीं। उनमें यह हुनर था। वह बिना किसी शुल्क के नि:शुल्क अपनी सेवाएँ देती थी, लेकिन अगर कोई उसे पैसे की पेशकश करता तो वह मना नहीं करती थी। कर्नल का मामला तो बिलकुल अलग था। वह ज़िले के प्रमुख व्यक्तियों में से एक थे। उनके घर के सारे दरवाज़े खुले रहते थे, वे पूरे शहर को दावतें देते थे, भोज और नृत्य समारोह आयोजित करते थे। जब मैं पहुँचा और बटालियन में शामिल हुआ, तब पूरा शहर कर्नल की दूसरी बेटी, जो बेहद खूबसूरत थी और जिसने अभी-अभी राजधानी के एक प्रतिष्ठित स्कूल से पढ़ाई पूरी की थी, की वापसी की चर्चा कर रहा था। यह दूसरी बेटी कैटरीना इवानोव्ना है, और वह उनकी दूसरी पत्नी की संतान थी, जो एक प्रतिष्ठित जनरल के परिवार से थीं; हालाँकि, जैसा कि मुझे विश्वसनीय सूत्रों से पता चला, उन्होंने भी कर्नल को कोई पैसा नहीं दिया। उनके कुछ जान-पहचान के लोग थे, बस इतना ही। उनसे कुछ उम्मीदें तो थीं, लेकिन वे पूरी नहीं हुईं।
“लेकिन जब वह युवती बोर्डिंग स्कूल से मिलने आई, तो

पूरा शहर फिर से जीवंत हो उठा। हमारी सबसे प्रतिष्ठित महिलाएं—दो महामहिम और एक कर्नल की पत्नी—और बाकी सभी ने उनका अनुसरण करते हुए, तुरंत उनका समर्थन किया और उनके सम्मान में दावतें दीं। वह पार्टियों और पिकनिक की शान थीं, और उन्होंने संकटग्रस्त गवर्नेंस की मदद के लिए जीवंत झांकियां बनाईं। मैंने इस पर ध्यान नहीं दिया, मैं पहले की तरह ही बेपरवाह बना रहा, और उस समय मेरे एक कारनामे ने पूरे शहर में चर्चा का विषय बना दिया। एक शाम बैटरी कमांडर के यहाँ मैंने देखा कि वह मुझे निहार रही थीं, लेकिन मैं उनके पास नहीं गया, मानो मैं उनकी जान-पहचान को तुच्छ समझता हूँ। कुछ समय बाद एक शाम की पार्टी में मैं उनके पास गया और उनसे बात की। उन्होंने मुश्किल से मेरी ओर देखा और तिरस्कारपूर्वक अपने होंठ सिकोड़ लिए। 'थोड़ा रुको। मैं अपना बदला ज़रूर लूँगा,' मैंने सोचा। उस समय मैंने कई मौकों पर एक भयानक मूर्खता का प्रदर्शन किया था, और मुझे स्वयं इसका एहसास था। बात और भी बिगड़ गई क्योंकि मुझे लगा कि 'कातेंका' कोई भोली-भाली बोर्डिंग स्कूल की लड़की नहीं थी, बल्कि चरित्रवान, स्वाभिमानी और उच्च सिद्धांतों वाली महिला थी; सबसे बढ़कर, उसके पास शिक्षा और बुद्धि थी, और मेरे पास न तो थी। क्या आपको लगता है कि मैं उसे कोई प्रस्ताव देना चाहता था? नहीं, मैं तो बस बदला लेना चाहता था, क्योंकि मैं खुद को हीरो मानता था और उसे ऐसा महसूस नहीं होता था।

“इस बीच, मैंने अपना समय शराब पीने और दंगा करने में बिताया, जब तक कि लेफ्टिनेंट-कर्नल ने मुझे तीन दिन के लिए गिरफ्तार कर लिया गया। ठीक उसी समय पिताजी ने मुझे छह हजार रूबल भेजे, इसके बदले में मैंने उन्हें एक दस्तावेज़ भेजा जिसमें मैंने उन पर अपने सभी दावों को त्याग दिया था—एक तरह से हमारे हिसाब-किताब को निपटा दिया और कहा कि मैं अब और कुछ नहीं मांगूंगा। उस समय मुझे एक शब्द भी समझ नहीं आया। जब तक मैं यहाँ नहीं आया, अलेयोशा, पिछले कुछ दिनों तक, बल्कि शायद अभी भी, मुझे पिताजी के साथ अपने पैसों के लेन-देन का कुछ भी समझ नहीं आया है। खैर, कोई बात नहीं, हम इस बारे में बाद में बात करेंगे।

जैसे ही मुझे पैसे मिले, मुझे एक दोस्त का पत्र मिला जिसमें उसने मुझे बताया एक ऐसी बात जिसने मुझे बेहद दिलचस्पी दिलाई। मुझे पता चला कि अधिकारी हमारे लेफ्टिनेंट-कर्नल से असंतुष्ट थे। उन पर अनियमितताओं का संदेह था; दरअसल, उनके दुश्मन उनके लिए एक बड़ा सरप्राइज प्लान बना रहे थे। तभी डिवीजन का कमांडर आया और उसने खूब हंगामा मचाया। कुछ ही समय बाद उन्हें रिटायर होने का आदेश दे दिया गया। मैं आपको यह सब कैसे हुआ, यह नहीं बताऊंगा। उनके दुश्मन तो निश्चित रूप से थे। अचानक शहर में उनके और उनके पूरे परिवार के प्रति एक अजीब सी उदासीनता छा गई। उनके सभी दोस्तों ने उनसे मुंह मोड़ लिया। तभी मैंने अपना पहला कदम उठाया। मैं अगाफ्या इवानोवना से मिला, जिनसे मेरी हमेशा से दोस्ती रही थी, और मैंने उनसे पूछा, 'क्या आपको पता है कि आपके पिता के खातों में सरकारी धन के 4,500 रूबल का घाटा है?'

“‘तुम्हारा क्या मतलब है? तुम ऐसा क्यों कह रहे हो? जनरल तो यहाँ थे!

कुछ समय पहले तक सब कुछ ठीक था।

“‘तब ऐसा था, लेकिन अब ऐसा नहीं है।’”

वह बुरी तरह डरी हुई थी।

“‘मुझे डराओ मत!’ उसने कहा। ‘तुम्हें किसने बताया?’ “‘चिंता मत करो,’ मैंने कहा, ‘मैं किसी को नहीं बताऊंगा। तुम जानती हो कि मैं कितना चुप रहता हूँ।

जैसे कि कब्र। मैं केवल "संभावनाओं" को ध्यान में रखते हुए यह जोड़ना चाहता था कि जब वे आपके पिता से 4,500 रूबल की मांग करेंगे और वे इसे पेश नहीं कर पाएंगे, तो उन पर मुकदमा चलाया जाएगा और उन्हें बुढ़ापे में एक आम सैनिक के रूप में सेवा करने के लिए मजबूर किया जाएगा, जब तक कि आप मुझे अपनी युवती को गुप्त रूप से न भेज दें। मुझे अभी-अभी पैसे मिले हैं। अगर आप चाहें तो मैं उसे चार हजार दे दूंगा और इस बात को पूरी तरह से गुप्त रखूंगा।

“‘अरे, तुम बदमाश!’—उसने यही कहा। ‘तुम दुष्ट बदमाश!’”

तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई!'

वह बेहद क्रोधित होकर चली गई, जबकि मैंने एक बार फिर उसके पीछे चिल्लाकर उसे आवाज़ दी।

कि इस रहस्य को पवित्र रखा जाना चाहिए। मैं सीधे-सीधे कह दूं कि वे दोनों सीधी-सादी महिलाएं, अगाफ्या और उसकी चाची, इस पूरे मामले में एकदम देवदूतों की तरह व्यवहार करती रहीं। वे सचमुच अपनी 'कात्या'

से बहुत प्यार करती थीं, उन्हें अपने से कहीं ऊपर मानती थीं और उनकी हर तरह से सेवा करती थीं। लेकिन अगाफ्या ने हमारी बातचीत के बारे में उन्हें बता दिया। मुझे यह बात बाद में पता चली। उन्होंने इसे छुपाया नहीं, और बेशक मैं यही चाहती थी।
अचानक ही बटालियन की कमान संभालने के लिए नया मेजर आ गया।
पुराने लेफ्टिनेंट-कर्नल अचानक बीमार पड़ गए, दो दिन तक अपने कमरे से बाहर नहीं निकल सके और उन्होंने सरकारी पैसा नहीं दिया। डॉ. क्रावचेंको ने कहा कि वे सचमुच बीमार थे। लेकिन मुझे यह बात पक्के तौर पर पता थी, और बहुत समय से पता थी, कि पिछले चार सालों से पैसा उनके पास कभी नहीं आया था, सिवाय तब जब कमांडर निरीक्षण के लिए आते थे। वे इसे एक भरोसेमंद व्यक्ति, हमारे कस्बे के एक व्यापारी, ट्रिफोनोव को उधार देते थे, जो एक बूढ़ा विधुर था, जिसकी बड़ी दाढ़ी और सोने के फ्रेम वाला चश्मा था। वह मेले में जाता, पैसे से अच्छा-खासा व्यापार करता और पूरी रकम कर्नल को लौटा देता, साथ ही मेले से एक उपहार और उधार पर ब्याज भी लाता। लेकिन इस बार (मुझे यह सब संयोग से ट्रिफोनोव के बेटे और वारिस से पता चला, जो एक धूर्त और दुनिया के सबसे दुष्ट लोगों में से एक था) - इस बार, मैं कहता हूँ, ट्रिफोनोव मेले से कुछ भी नहीं लौटाया। लेफ्टिनेंट-कर्नल सीधे उसके पास चले गए। 'मुझे आपसे कभी कोई पैसा नहीं मिला, और मिल भी नहीं सकता था।' बस यही जवाब उन्हें मिला। अब हमारे लेफ्टिनेंट-कर्नल घर में ही बंद हैं, सिर पर तौलिया लपेटे, जबकि तीनों उनके सिर पर बर्फ लगा रहे हैं। तभी एक अर्दली किताब और 'बटालियन का पैसा तुरंत, दो घंटे के भीतर सौंप दो' का आदेश लेकर आता है। उन्होंने किताब पर हस्ताक्षर किए (मैंने बाद में किताब में हस्ताक्षर देखे), खड़े हुए और कहा कि वे अपनी वर्दी पहनेंगे, अपने बेडरूम की ओर भागे, अपनी दो बैरल वाली बंदूक में सर्विस बुलेट भरी, अपने दाहिने पैर से बूट उतारा, बंदूक को अपनी छाती से लगाया और पैर से ट्रिगर टटोलने लगे। लेकिन अगाफ्या को मेरी कही बात याद आ गई और उसे शक हो गया। वह चुपके से कमरे में झाँकी और ठीक समय पर अंदर चली गई। वह अंदर घुसी, पीछे से उन पर झपटी, उन्हें गले लगाया और बंदूक चल गई, जो छत से टकराई, लेकिन किसी को चोट नहीं आई। बाकी लोग अंदर दौड़े, बंदूक छीन ली और उन्हें बांहों से पकड़ लिया। मुझे इस सब के बारे में बाद में पता चला। मैं घर पर थी, शाम ढल रही थी और मैं बाहर जाने की तैयारी कर रही थी। मैंने कपड़े पहन लिए थे, बाल संवार लिए थे, रुमाल में इत्र लगा लिया था और टोपी भी पहन ली थी, तभी अचानक दरवाजा खुला और कमरे में मेरे सामने कटेरीना इवानोवना खड़ी थीं।
"कभी-कभी चीजें अजीबोगरीब तरीके से घटित होती हैं। उसे किसी ने भी नहीं देखा था।"
मैं गली में इस तरह ठहरा कि कस्बे में किसी को पता ही न चले। मैं दो बूढ़ी, जर्जर महिलाओं के साथ ठहरा, जिन्होंने मेरी देखभाल की। वे बहुत ही दयालु थीं, मेरे लिए कुछ भी करने को तैयार थीं, और मेरे कहने पर बाद में एकदम चुप हो गईं। बेशक, मैं स्थिति को तुरंत समझ गया। वह अंदर आईं और सीधे मेरी ओर देखा, उनकी गहरी आँखें दृढ़ थीं, यहाँ तक कि चुनौती भरी भी, लेकिन उनके होठों और मुँह के आसपास मुझे अनिश्चितता दिखाई दी।
"'मेरी बहन ने मुझे बताया था,' उसने कहना शुरू किया, 'कि तुम मुझे 4,500 रूबल दोगे।'"
अगर मैं खुद तुम्हारे पास इसके लिए आया हूँ... मैं आया हूँ... मुझे पैसे दे दो!
वह इसे जारी नहीं रख सकी। उसकी सांस फूल रही थी, वह डरी हुई थी, उसकी आवाज लड़खड़ा रही थी। उसके होंठों के कोने और उनके आसपास की रेखाएं कांप उठीं। अलेयोशा, क्या तुम सुन रहे हो या सो रहे हो?
"मित्या, मुझे पता है तुम पूरी सच्चाई बताओगे," अलेयोशा ने घबराकर कहा। "मैं बता रहा हूँ। अगर मैंने पूरी सच्चाई, जैसी हुई थी, बता दी तो मैं किसी को नहीं बख्शूँगा।"
मैं खुद। मेरा पहला विचार करामाज़ोव जैसा था। एक बार मुझे कनखजूरे ने काट लिया था, भाई, और मैं दो हफ्ते तक बुखार से बिस्तर पर पड़ा रहा। खैर, मुझे ऐसा लगा जैसे कोई कनखजूरा मेरे दिल को काट रहा हो —एक जहरीला कीड़ा, समझे? मैंने उसे ऊपर से नीचे तक देखा। तुमने उसे देखा है? वह कितनी सुंदर है। लेकिन उस समय वह एक अलग ही तरह से सुंदर थी। उस पल वह सुंदर इसलिए थी क्योंकि वह कुलीन थी, और मैं एक धूर्त था; वह अपने पिता के लिए अपनी उदारता और बलिदान की सारी भव्यता में, और मैं—एक कीड़ा! और, मैं चाहे कितना भी धूर्त क्यों न था, वह तन-मन से पूरी तरह मेरी दया पर थी। वह घिरी हुई थी। मैं तुम्हें साफ-साफ बताऊं, वह विचार, वह जहरीला विचार, मेरे दिल पर इस कदर हावी हो गया था कि मैं

लगभग बेहोश हो गया था। ऐसा लग रहा था जैसे उसका विरोध करना नामुमकिन है; जैसे मुझे एक कीड़े की तरह, एक जहरीली मकड़ी की तरह, बिना किसी दया के काम करना चाहिए। मैं मुश्किल से सांस ले पा रहा था। समझो, मुझे अगले दिन जाकर उसका हाथ मांगना चाहिए था, ताकि बात सम्मानजनक तरीके से खत्म हो जाए और किसी को पता भी न चले। क्योंकि भले ही मेरी इच्छाएं नीच हों, मैं ईमानदार हूँ। और ठीक उसी क्षण किसी आवाज़ ने मेरे कान में फुसफुसाया, 'लेकिन जब तुम कल अपना प्रस्ताव लेकर आओगे, तो वह लड़की तुम्हें देखेगी तक नहीं; वह अपने कोचवान को आदेश देगी कि तुम्हें घर से बाहर निकाल दे। वह कहेगी, "पूरे शहर में यह बात फैला दो, मैं तुमसे नहीं डरती।"' मैंने उस युवती की ओर देखा, मेरी आवाज़ ने मुझे धोखा नहीं दिया था। ऐसा ही होना था, इसमें कोई शक नहीं था। अब मैं उसके चेहरे से समझ गया था कि मुझे घर से निकाल दिया जाएगा। मेरा गुस्सा भड़क उठा। मैं उसके साथ सबसे घटिया और नीच हरकत करना चाहता था: उसे तिरछी नज़र से देखना और जहाँ वह मेरे सामने खड़ी थी, वहीं उसे ऐसी आवाज़ में चुप करा देना जो सिर्फ़ एक दुकानदार ही बोल सकता है।

“चार हज़ार! आपका क्या मतलब है? मैं मज़ाक कर रहा था। आप

आप बड़ी आसानी से जीत का जश्न मना रही हैं, महोदया। अगर आप चाहें तो दो सौ, मुझे पूरा यकीन है। लेकिन चार हज़ार जैसी रकम को ऐसे फिजूलखर्ची में बर्बाद करना ठीक नहीं है। आपने अपना समय व्यर्थ ही बर्बाद किया है।

“मुझे तो मैच हार जाना चाहिए था, बेशक। वो भाग जाती। लेकिन ऐसा नहीं हो पाया।”

यह एक भयानक बदला होता। यह सब कुछ जायज़ होता। मैं उस चाल को चलने के लिए जीवन भर पछताता रहता। यकीन मानिए, किसी और औरत के साथ ऐसा कभी नहीं हुआ, एक भी औरत के साथ नहीं, कि मैंने उसे उस पल इतनी नफरत से देखा हो। लेकिन कसम से, मैंने उसे तीन सेकंड, या शायद पाँच सेकंड तक, भयानक नफरत से देखा—वह नफरत जो प्यार से, सबसे दीवाने प्यार से बस एक बाल बराबर दूर होती है! मैं खिड़की के पास गया, अपना माथा जमे हुए शीशे पर टिकाया, और मैंने

मुझे याद है, बर्फ ने मेरे माथे को आग की तरह जला दिया था। मैंने उसे ज़्यादा देर तक नहीं रोका, डरो मत। मैं मुड़ा, मेज़ के पास गया, दराज़ खोली और पाँच हज़ार रूबल का एक नोट निकाला (वह एक फ्रेंच शब्दकोश में पड़ा था)। फिर मैंने चुपचाप उसे दिखाया, मोड़ा, उसे दे दिया, गलियारे का दरवाज़ा खोला और पीछे हटकर उसे गहरा प्रणाम किया, अत्यंत आदरपूर्ण, अत्यंत प्रभावशाली प्रणाम, यकीन मानो! वह काँप उठी, एक पल के लिए मुझे घूरती रही, भयानक रूप से पीली पड़ गई—बिल्कुल सफ़ेद—और अचानक, जल्दबाज़ी में नहीं, बल्कि धीरे से, कोमल भाव से मेरे पैरों पर झुक गई—बोर्डिंग स्कूल वाला प्रणाम नहीं, बल्कि रूसी प्रणाम, अपना माथा ज़मीन पर रखकर। वह उछलकर भाग गई। मैंने अपनी तलवार पहनी हुई थी। मैंने उसे निकाला और लगभग वहीं खुद को उससे मार डाला; क्यों, मुझे नहीं पता। यह निश्चित रूप से बहुत बड़ी बेवकूफी होती। मुझे लगता है कि यह खुशी के कारण था। क्या आप समझ सकते हैं कि कोई खुशी में खुद को मार सकता है? लेकिन मैंने खुद को चाकू नहीं मारा। मैंने तो बस अपनी तलवार को चूमा और उसे म्यान में वापस रख दिया—वैसे, यह बात आपको बताने की कोई ज़रूरत नहीं थी। और मुझे लगता है कि अपने अंदरूनी संघर्ष के बारे में आपको बताते हुए मैंने खुद को बड़ा दिखाने के लिए कुछ ज़्यादा ही बढ़ा-चढ़ाकर बताया है। खैर, छोड़ो इसे, और जो भी इंसान के दिल में झाँकने की कोशिश करते हैं, भाड़ में जाएँ! खैर, कैटेरिना इवानोव्ना के साथ उस 'साहसिक घटना' का यही हाल है। तो अब इवान को इसके बारे में पता चल गया है, और आपको—किसी और को नहीं।

दिमित्री उठा, उत्साह में एक-दो कदम आगे बढ़ा, और अपना सामान निकाला।

उसने रूमाल से अपना माथा पोंछा, फिर बैठ गया, लेकिन पहले वाली जगह पर नहीं, बल्कि दूसरी तरफ, जिससे अलेयोशा को उसका सामना करने के लिए पूरी तरह से घूमना पड़ा।

अध्याय 5

एक भावुक हृदय की स्वीकारोक्ति
—“हील्स अप”

“अब,” अलेयोशा ने कहा, “मुझे पहला भाग समझ आ गया है।”
“आप पहले भाग को समझते हैं। वह भाग एक नाटक है, और उसे खेला गया था।
वहां पर। दूसरा भाग एक त्रासदी है, और इसे यहां अभिनीत किया जा रहा है।"
“और मुझे अभी तक दूसरे भाग का कुछ भी समझ नहीं आया,” अलेयोशा ने कहा। “और मुझे? क्या आपको लगता है कि मुझे समझ आया है?”
“रुको, दिमित्री। एक ज़रूरी सवाल है। मुझे बताओ, तुम थे
क्या आपकी सगाई हो चुकी है? क्या अब भी आपकी सगाई हो चुकी है?
“हमारी सगाई तुरंत नहीं हुई थी, उसके बाद तीन महीने तक नहीं हुई थी।”
एक रोमांचक अनुभव। अगले दिन मैंने खुद से कहा कि घटना समाप्त हो गई है, इसका कोई अगला भाग नहीं होगा। मुझे लगा कि उसे प्रस्ताव देना घटिया बात होगी। उसकी तरफ से, शहर में रहने के छह हफ्तों में उसने कोई हलचल नहीं दिखाई; सिवाय एक घटना के। उसके आने के अगले दिन नौकरानी मेरे नाम एक लिफाफा लेकर आई। मैंने उसे फाड़कर खोला: उसमें नोट का बचा हुआ पैसा था। केवल 4,500 रूबल की जरूरत थी, लेकिन उसे बदलने पर लगभग दो सौ रूबल की छूट थी। उसने मुझे केवल 260 रूबल भेजे। मुझे ठीक से याद नहीं है, लेकिन कोई नोट नहीं, कोई स्पष्टीकरण नहीं। मैंने पैकेट में पेंसिल का निशान ढूंढा —कुछ नहीं मिला! खैर, मैंने बाकी पैसे ऐसी अय्याशी में खर्च कर दिए कि नए मेयर को मुझे डांटना पड़ा।
"ठीक है, लेफ्टिनेंट-कर्नल ने बटालियन का पैसा पेश किया,
सभी लोग आश्चर्यचकित रह गए, क्योंकि किसी को विश्वास नहीं था कि उसने पैसे को छुआ तक नहीं था। भुगतान करते ही वह बीमार पड़ गया, बिस्तर पर पड़ गया, और तीन सप्ताह बाद, उसके दिमाग में विकार उत्पन्न होने लगा और पाँच दिन बाद उसकी मृत्यु हो गई। उसे सैन्य सम्मान के साथ दफनाया गया, क्योंकि उसे अपनी सेवामुक्ति प्राप्त करने का समय नहीं मिला था। उसके अंतिम संस्कार के दस दिन बाद, कैटेरिना इवानोव्ना अपनी चाची और बहन के साथ मॉस्को गईं। और देखिए, जिस दिन वे रवाना हुईं (मैंने उन्हें नहीं देखा था, न ही उन्हें विदा किया था और न ही विदाई ली थी), मुझे एक छोटा सा नोट मिला, नीले रंग के पतले कागज का एक टुकड़ा, और उस पर पेंसिल से केवल एक पंक्ति लिखी थी: 'मैं तुम्हें लिखूँगी। प्रतीक्षा करो। के।' और बस इतना ही।
अब मैं बाकी की बात दो शब्दों में समझा देता हूँ। मॉस्को में उनकी किस्मत...
अरब की परीकथाओं की तरह अचानक और बिजली की तेज़ी से सब कुछ बदल गया। उस जनरल की विधवा, जो उनकी सबसे करीबी रिश्तेदार थी, ने अचानक अपनी दो भतीजियों को खो दिया, जो उसकी वारिस और निकटतम संबंधी थीं—दोनों की एक ही सप्ताह में चेचक से मृत्यु हो गई। शोक से व्याकुल उस बूढ़ी औरत ने कात्या को अपनी बेटी की तरह, अपनी इकलौती आशा मानकर गले लगाया, उसे कसकर पकड़ लिया और कात्या के पक्ष में अपनी वसीयत बदल दी। लेकिन यह तो भविष्य की बात थी। इस बीच उसने कात्या को विवाह के दहेज के रूप में अस्सी हज़ार रूबल दिए, ताकि वह उनका जो चाहे कर सके। वह एक भावुक महिला थी। बाद में मैंने उसे मॉस्को में थोड़ा-बहुत देखा।
“अचानक मुझे डाक से चार हज़ार पाँच सौ रूबल मिले।
जैसा कि आप अनुमान लगा सकते हैं, मैं आश्चर्य से अवाक रह गया था। तीन दिन बाद वह वादा किया गया पत्र आया। वह अब मेरे पास है। आपको उसे पढ़ना चाहिए। वह मेरी पत्नी बनने का प्रस्ताव रखती है, खुद को मुझे सौंपती है। वह कहती है, 'मैं तुमसे बेइंतहा प्यार करती हूँ, भले ही तुम मुझसे प्यार न करो, कोई बात नहीं। मेरे पति बन जाओ। डरो मत। मैं तुम्हें किसी भी तरह से परेशान नहीं करूँगी। मैं तुम्हारी संपत्ति बनूँगी। मैं तुम्हारे पैरों के नीचे की चटाई बनूँगी। मैं तुम्हें हमेशा प्यार करना चाहती हूँ। मैं तुम्हें खुद से बचाना चाहती हूँ।' अलेयोशा, मैं उन पंक्तियों को अपने अशिष्ट शब्दों और अपने अशिष्ट लहजे में, अपने उस अशिष्ट लहजे

में, जिसे मैं कभी ठीक नहीं कर सकता, दोहराने के योग्य नहीं हूँ। वह पत्र मुझे आज भी चुभता है। क्या तुम्हें लगता है कि मुझे कोई आपत्ति नहीं है—कि मुझे अब भी कोई आपत्ति नहीं है? मैंने उसे तुरंत जवाब लिखा, क्योंकि मेरे लिए मॉस्को जाना असंभव था। मैंने उसे आँसुओं के साथ लिखा। एक बात जिसके लिए मैं हमेशा शर्मिंदा रहूँगा। मैंने उसकी अमीरी और दहेज की बात कही, जबकि मैं तो बस एक घमंडी भिखारी था! मैंने पैसों का ज़िक्र किया! मुझे चुपचाप सह लेना चाहिए था, पर वो मेरे मुंह से निकल गया। फिर मैंने तुरंत इवान को लिखा और छह पन्नों के एक पत्र में उसे सब कुछ बता दिया और उसे उसके पास भेज दिया। तुम ऐसे क्यों देख रहे हो? मुझे क्यों घूर रहे हो? हाँ, इवान को उससे प्यार हो गया था; वो अब भी उससे प्यार करता है। मुझे पता है। दुनिया की नज़र में मैंने एक बेवकूफी भरा काम किया; लेकिन शायद वही एक बेवकूफी भरा काम अब हम सबको बचा ले। ओह! क्या तुम नहीं देखते कि वो इवान के बारे में कितना अच्छा सोचती है, उसका कितना सम्मान करती है? जब वो हमारी तुलना करती है, तो क्या तुम्हें लगता है कि वो मुझ जैसे आदमी से प्यार कर सकती है, खासकर यहाँ जो कुछ हुआ है उसके बाद?
लेकिन मुझे पूरा यकीन है कि वह आप जैसे आदमी से प्यार करती है, किसी और आदमी से नहीं। उसके जैसे।"
“वह अपनी पवित्रता से प्रेम करती है, मुझसे नहीं।” शब्द अनायास ही टूट गए, और दिमित्री ने लगभग दुर्भावना से ऐसा किया। वह हँसा, लेकिन एक मिनट बाद उसकी आँखें चमक उठीं, उसका चेहरा लाल हो गया और उसने गुस्से में मुट्ठी से मेज पर प्रहार किया।
“मैं कसम खाता हूँ, अलेयोशा,” वह अपने आप पर तीव्र और वास्तविक क्रोध के साथ चिल्लाया; “हो सकता है आप मेरी बात पर विश्वास न करें, लेकिन ईश्वर पवित्र है, और ईसा मसीह ईश्वर हैं, इसलिए मैं कसम खाती हूँ कि यद्यपि मैंने अभी उसकी ऊँची भावनाओं पर मुस्कुराया, मैं जानती हूँ कि मैं आत्मा से उससे लाखों गुना नीच हूँ, और उसकी ये ऊँची भावनाएँ किसी स्वर्गदूत की तरह सच्ची हैं। यही त्रासदी है—कि मैं यह निश्चित रूप से जानती हूँ। अगर कोई थोड़ा-बहुत दिखावा करता है तो क्या हुआ? क्या मैं खुद ऐसा नहीं करती? और फिर भी मैं सच्ची हूँ, मैं सच्ची हूँ। जहाँ तक इवान की बात है, मैं समझ सकती हूँ कि वह अब प्रकृति को कोस रहा होगा—अपनी बुद्धि से भी! यह देखकर कि किसे, किस बात को प्राथमिकता दी जा रही है? एक ऐसे राक्षस को जो, भले ही उसकी सगाई हो चुकी है और सबकी निगाहें उस पर टिकी हैं, फिर भी अपनी अय्याशी पर काबू नहीं रख सकता—और वह भी अपनी मंगेतर की आँखों के सामने! और मुझ जैसे आदमी को तरजीह दी जाती है, जबकि उसे ठुकरा दिया जाता है। और क्यों? क्योंकि एक लड़की कृतज्ञता के कारण अपना जीवन और भाग्य कुर्बान करना चाहती है। यह हास्यास्पद है! मैंने इवान से इस बारे में एक शब्द भी नहीं कहा है।” और इवान ने बेशक मुझे कभी इस तरह का कोई संकेत नहीं दिया। लेकिन नियति अपना काम करेगी, और योग्य व्यक्ति अपनी जगह पर कायम रहेगा जबकि अयोग्य व्यक्ति हमेशा के लिए अपनी तंग गली में गायब हो जाएगा—अपनी गंदी तंग गली में, अपनी प्यारी तंग गली में, जहाँ वह घर जैसा महसूस करता है और जहाँ वह अपनी मर्ज़ी से और आनंद से गंदगी और बदबू में डूब जाएगा। मैं मूर्खतापूर्ण बातें कर रहा हूँ। मेरे पास कहने के लिए शब्द नहीं बचे हैं। मैं उन्हें बेतरतीब ढंग से इस्तेमाल कर रहा हूँ, लेकिन जो मैंने कहा है वही होगा। मैं तंग गली में डूब जाऊँगा, और वह इवान से शादी करेगी।
“रुको, दिमित्री,” अलेयोशा ने बड़ी घबराहट के साथ फिर से बीच में टोका। “वहाँ...”
एक बात जो आपने अभी तक स्पष्ट नहीं की है: आप अभी भी सगाईशुदा हैं, है ना? अगर आपकी मंगेतर नहीं चाहती तो आप सगाई कैसे तोड़ सकते हैं?
जी हाँ, औपचारिक और विधिवत रूप से सगाई हो चुकी है। मेरे आगमन पर ही सब कुछ तय हो गया था। मॉस्को में भव्य समारोह, प्रतिष्ठित मूर्तियों और शानदार शैली के साथ हमारा स्वागत हुआ। जनरल की पत्नी ने हमें आशीर्वाद दिया और - यकीन मानिए? - कात्या को बधाई भी दी। उन्होंने कहा, 'तुमने अच्छा चुनाव किया है, मैं उसे अच्छी तरह समझती हूँ।' और - यकीन मानिए? - उन्हें इवान पसंद नहीं था और उन्होंने मुश्किल से ही उसका अभिवादन किया। मॉस्को में मेरी कात्या से बहुत बातचीत हुई। मैंने उसे अपने बारे में पूरी ईमानदारी और सम्मान के साथ बताया। उसने सब कुछ ध्यान से सुना।
एक मीठा सा भ्रम था।
उन्होंने कोमल शब्द कहे।

हालांकि, उन्होंने गर्व भरे शब्द भी कहे। उन्होंने मुझसे सुधार का एक बड़ा वादा करवाया। मैंने अपना वादा निभाया, और यहाँ—”
"क्या?"
“क्यों, मैंने तुम्हें बुलाया और आज, इसी दिन, तुम्हें यहाँ बुलाया—”
याद रखना—तुम्हें फिर से—आज ही के दिन—कैटरीना इवानोवना के पास भेजना है, और—”
"क्या?"
उसे यह बताने के लिए कि मैं उससे फिर कभी मिलने नहीं आऊँगा। कहो, ‘वह तुम्हें भेजता है’
उनकी तारीफें।
लेकिन क्या यह संभव है?
“इसीलिए मैं तुम्हें अपनी जगह भेज रहा हूँ, क्योंकि यही कारण है कि...”
यह असंभव है। और, मैं उसे खुद कैसे बता सकता हूँ?
"और तुम कहां कर रहे हो?"
"पिछली गली में।"
“तो फिर ग्रुशेंका चलते हैं!” अलेयोशा ने शोक भरे स्वर में कहा, अपने हाथों को थामे हुए।
हाथ। "क्या रकितिन ने सचमुच सच कहा होगा? मुझे लगा था कि तुम बस उससे मिलने गई थी, और बस इतना ही।"
क्या कोई मंगेतर इस तरह की मुलाकातें कर सकता है? क्या ऐसा संभव है?
ऐसी मंगेतर, और वो भी पूरी दुनिया के सामने? धिक्कार है, मुझमें भी कुछ तो इज्जत है! जैसे ही मैंने ग्रुशेंका से मिलना शुरू किया, मेरी मंगेतर और ईमानदार आदमी होने की पहचान दोनों ही खत्म हो गईं। मैं समझता हूँ। तुम मुझे क्यों घूर रहे हो? देखो, मैं तो सबसे पहले उसे पीटने गया था। मैंने सुना था, और अब मुझे पक्का पता है, कि उस कप्तान, मेरे पिता के एजेंट ने, ग्रुशेंका को मेरा एक उधार दिया था ताकि वो मुझसे पैसे वसूलने के लिए मुझ पर मुकदमा करे और मुझे खत्म कर दे। वे मुझे डराना चाहते थे। मैं उसे पीटने गया था। मैंने उसे पहले भी देखा था। पहली नज़र में वो आकर्षक नहीं लगती। मैं उसके पुराने व्यापारी के बारे में जानता था, जो अब बीमार पड़ा है, लकवाग्रस्त है; लेकिन वो उसके लिए अच्छी-खासी रकम छोड़ रहा है। मैं यह भी जानता था कि उसे पैसों का बहुत शौक था, वो उन्हें जमा करती थी और बहुत ज़्यादा ब्याज पर उधार देती थी, वो एक निर्दयी धोखेबाज़ और ठग थी। मैं उसे पीटने गया था, और वहीं रुक गया। तभी तूफान आ गया—उसने मुझे महामारी की तरह जकड़ लिया। मैं अब भी महामारी से ग्रस्त हूँ, और जानता हूँ कि सब कुछ खत्म हो गया है, मेरे लिए अब कुछ भी नहीं बचा है। युगों का चक्र पूरा हो गया है। यही मेरी स्थिति है। और यद्यपि मैं एक भिखारी हूँ, भाग्य की मर्ज़ी से, उस समय मेरी जेब में तीन हज़ार थे। मैं ग्रुशेंका के साथ मोक्रो गया, जो यहाँ से पच्चीस वर्स्ट दूर है। मैंने वहाँ जिप्सियों और शराब को इकट्ठा किया और वहाँ के सभी किसानों, सभी महिलाओं और लड़कियों को शराब पिलाकर मदहोश कर दिया। मैंने हज़ारों रुपये उड़ा दिए। तीन दिनों में मैं पूरी तरह से खाली हो गया, लेकिन एक नायक बना रहा। क्या आपको लगता है कि नायक को उसका लक्ष्य मिल गया था? उससे तो इसका कोई संकेत नहीं मिला। मैं आपको बताता हूँ कि उस बदमाश ग्रुशेंका के पूरे शरीर में एक कोमल वक्रता है। आप इसे उसके छोटे से पैर में, यहाँ तक कि उसकी छोटी उंगली में भी देख सकते हैं। मैंने इसे देखा, और चूमा, लेकिन बस इतना ही, कसम से! “अगर तुम चाहो तो मैं तुमसे शादी कर लूँगी,” उसने कहा, “तुम तो भिखारी हो। बस इतना कह दो कि तुम मुझे मारोगे नहीं, और मुझे जो चाहूँ वो करने दोगे, तो शायद मैं तुमसे शादी कर लूँगी।” वह हँसी, और अब भी हँस रही है!
दिमित्री अचानक गुस्से से उछल पड़ा। वह मानो अचानक ही...
वे नशे में थे। अचानक उसकी आँखें लाल हो गईं।
"और क्या तुम सचमुच उससे शादी करने का इरादा रखते हो?"
“अगर वो चाहे तो तुरंत। और अगर वो न चाहे तो भी मैं यहीं रहूंगा। मैं यहीं रहूंगा।
उसके द्वार पर खड़ा कुली। "अलेयोशा!" वह चिल्लाया। वह उसके सामने अचानक रुक गया और उसे कंधों से पकड़कर ज़ोर-ज़ोर से हिलाने लगा। "क्या तुम जानते हो, भोले-भाले लड़के, कि यह सब भ्रम है, बेमतलब का भ्रम, क्योंकि यहाँ एक त्रासदी है। सुनो, एलेक्सी, कि मैं भले ही नीच, घटिया और भ्रष्ट भावनाओं वाला आदमी हूँ, लेकिन दिमित्री करामाज़ोव कभी चोर और जेबकतरा नहीं हो सकता। अच्छा, तो सुनो, मैं तुम्हें

बताता हूँ कि मैं चोर और जेबकतरा हूँ। उसी सुबह, ग्रुशेंका को पीटने जाने से ठीक पहले, कटेरीना इवानोव्ना ने मुझे बुलवाया और पूरी गोपनीयता से (मुझे नहीं पता क्यों, शायद उनके पास कोई कारण रहा होगा) मुझे प्रांत के मुख्य शहर में जाकर मॉस्को में अगाफ्या इवानोव्ना को तीन हज़ार रूबल भेजने को कहा, ताकि यहाँ शहर में किसी को इसके बारे में पता न चले।" तो जब मैं ग्रुशेंका से मिलने गया, तो मेरी जेब में वो तीन हज़ार रूबल थे, और वही पैसे हमने मोक्रोए में खर्च किए। बाद में मैंने बहाना बनाया कि मैं शहर गया था, लेकिन मैंने उसे डाकघर की रसीद नहीं दिखाई। मैंने कहा कि मैंने पैसे भेज दिए हैं और रसीद ले आऊंगा, लेकिन अभी तक मैं रसीद नहीं लाया। मैं भूल गया हूँ। अब आपको क्या लगता है कि आज आप उससे क्या कहेंगे? 'उसने आपको शुभकामनाएं भेजी हैं,' और वह आपसे पूछेगी, 'पैसे का क्या हुआ?' आप उससे यह भी कह सकते थे, 'वह एक पतित कामुक और नीच प्राणी है, जिसकी वासनाएं अनियंत्रित हैं। उसने आपके पैसे नहीं भेजे, बल्कि बर्बाद कर दिए, क्योंकि एक नीच जानवर की तरह वह खुद पर काबू नहीं रख सका।' लेकिन आप यह भी कह सकते थे, 'वह चोर तो नहीं है। ये रहे आपके तीन हज़ार; वह इसे वापस भेज देता है। आप इसे खुद अगाफ्या इवानोवना को भेज दें।' लेकिन उन्होंने मुझसे कहा कि मैं कहूँ, “वह आपको शुभकामनाएँ भेजते हैं।” लेकिन, जैसा कि है, वह पूछेगी, “लेकिन पैसा कहाँ है?”
“मित्या, तुम दुखी हो, हाँ! लेकिन उतने दुखी नहीं जितना तुम सोचते हो। चिंता मत करो।”
"निराशा के कारण चिंता करते-करते मर जाओ।"
“क्या तुम्हें लगता है कि मैं खुद को गोली मार लूंगा क्योंकि मुझे तीन नहीं मिल रहे हैं?”
हजार रुपये चुकाने हैं? बस यही तो बात है। मैं खुद को गोली नहीं मारूंगा। मुझमें अभी इतनी ताकत नहीं है। बाद में शायद। लेकिन अभी मैं ग्रुशेंका जा रहा हूं। मुझे परवाह नहीं कि क्या होता है।
“और फिर क्या?”
अगर वो मुझे स्वीकार करे तो मैं उसका पति बनूंगा, और जब प्रेमी आएंगे तो मैं...
अगले कमरे में जाओ। मैं उसकी सहेलियों के जूते साफ कर दूंगी, उनके समोवर में हवा भर दूंगी, उनके छोटे-मोटे काम कर दूंगी।
“कैटरीना इवानोव्ना यह सब समझ जाएगी,” अलेयोशा ने गंभीरता से कहा।
“वह इस परेशानी की गंभीरता को समझेगी और माफ कर देगी। उसका मन बहुत ऊंचा है, और आपसे ज्यादा दुखी कोई नहीं हो सकता। वह खुद यह देख लेगी।”
“वह सब कुछ माफ नहीं करेगी,” दिमित्री ने मुस्कुराते हुए कहा। “अभी भी बहुत कुछ बाकी है।”
भाई, इसमें कुछ ऐसा है जिसे कोई औरत माफ नहीं कर सकती। क्या तुम जानते हो कि सबसे अच्छा तरीका क्या होगा?
"क्या?"
"तीन हजार रुपये वापस कर दो।"
“यह हमें कहाँ से मिलेगा? मैंने कहा, मेरे पास दो हज़ार हैं। इवान दे देगा।”
आपको एक हजार और चाहिए—कुल मिलाकर तीन हजार हो गए। इसे ले लो और वापस कर दो।
“और तुम्हें वो तीन हज़ार कब मिलेंगे? तुम्हारी उम्र अभी नहीं है।”
और हां, तुम्हें आज ही उससे मेरी विदाई ले जानी होगी—बिल्कुल ले जानी होगी—चाहे पैसे हों या न हों, क्योंकि मैं अब और इंतज़ार नहीं कर सकता, हालात इतने बिगड़ चुके हैं। कल बहुत देर हो जाएगी। मैं तुम्हें पिताजी के पास छोड़ दूंगा।
“पिता बनने के लिए?”
“हां, पहले पिताजी से। उनसे तीन हजार मांग लेना।”
लेकिन, मित्या, वह इसे नहीं देगा।
“जैसे कि वो करेगा! मुझे पता है वो नहीं करेगा। क्या तुम इसका मतलब जानते हो?”
निराशा, एलेक्सी?
"हाँ।"
“सुनो। कानूनी तौर पर उसका मुझ पर कोई कर्ज़ नहीं है। मुझे उससे सब कुछ मिल चुका है, मुझे पता है। लेकिन नैतिक रूप से तो उसका मुझ पर कुछ कर्ज़ है, है ना? तुम्हें पता है उसने मेरी माँ के 28 हज़ार रुपये से शुरुआत की और उससे एक लाख रुपये कमा लिए। अगर वो मुझे 28 हज़ार में से सिर्फ़ 3 हज़ार रुपये वापस

दे दे, तो मेरी आत्मा नरक से निकल जाएगी और उसके कई पापों का प्रायश्चित हो जाएगा। उन 3 हज़ार रुपये के लिए—मैं तुम्हें वचन देता हूँ—मैं सब कुछ खत्म कर दूँगा और वो मुझसे फिर कभी कुछ नहीं सुनेगा। आखिरी बार मैं उसे पिता बनने का मौका दे रहा हूँ। उससे कहना कि स्वयं ईश्वर ने उसे ये मौका भेजा है।
"मित्या, वह इसे किसी भी कीमत पर नहीं देगा।"
मुझे पता है वो ऐसा नहीं करेगा। मुझे ये अच्छी तरह पता है। खासकर अब। ये ठीक नहीं है।
बस। मुझे कुछ और भी पता है। अभी कुछ ही दिन पहले, शायद कल ही, उसे पहली बार गंभीरता से पता चला (गंभीरता से रेखांकित करें) कि ग्रुशेंका शायद मज़ाक नहीं कर रही है, और सचमुच मुझसे शादी करना चाहती है। वह उसका स्वभाव जानता है; वह उसकी बिल्ली को जानता है। और क्या आपको लगता है कि वह मुझे इसके लिए पैसे देगा, जबकि वह खुद उसके लिए पागल है? और बात यहीं खत्म नहीं होती। मैं आपको इससे भी ज़्यादा बता सकती हूँ। मुझे पता है कि पिछले पाँच दिनों से वह बैंक से तीन हज़ार रुपये निकाल रहा है, उन्हें सौ-सौ रूबल के नोटों में बदलवा रहा है, एक बड़े लिफाफे में भरकर, पाँच मुहरों से सील करके, और लाल टेप से बाँध रहा है। आप देख सकते हैं कि मुझे इसके बारे में कितनी अच्छी तरह से पता है! लिफाफे पर लिखा है: 'मेरी परी, ग्रुशेंका के लिए, जब वह मेरे पास आएगी।' उसने इसे खुद चुपके से और गुप्त रूप से लिखा है, और नौकर स्मर्ड्याकोव के अलावा किसी को नहीं पता कि पैसा वहाँ है, जिस पर वह खुद की तरह भरोसा करता है। तो अब वो पिछले तीन-चार दिनों से ग्रुशेंका का इंतज़ार कर रहा है; उसे उम्मीद है कि वो पैसों के लिए आएगी। उसने उसे संदेश भेज दिया है, और उसने भी उसे संदेश भेजा है कि शायद वो आ जाए। और अगर वो उस बूढ़े आदमी के पास चली जाती है, तो क्या मैं उसके बाद उससे शादी कर सकता हूँ? अब तुम समझ गए होगे कि मैं यहाँ छुपकर क्यों हूँ और किस बात का इंतज़ार कर रहा हूँ।
"उसके लिए?"
“हाँ, उसके लिए। फोमा के पास यहाँ इन वेश्याओं के घर में एक कमरा है। फोमा
वह हमारे इलाके का रहने वाला है; वह हमारी रेजिमेंट में सिपाही था। वह उनके लिए काम करता है। रात में चौकीदार रहता है और दिन में तीतर का शिकार करने जाता है; और इसी तरह उसका गुजारा चलता है। मैंने उसके कमरे में अपना ठिकाना बना लिया है। न तो उसे और न ही घर की महिलाओं को यह राज पता है—यानी कि मैं यहाँ पहरा दे रहा हूँ।
"तो फिर स्मरद्याकोव के अलावा किसी को नहीं पता?"
“और कोई नहीं। अगर वह बूढ़े आदमी के पास जाती है तो वह मुझे बता देगा।”
"तो फिर उसने ही आपको पैसों के बारे में बताया था?"
“हाँ। यह एक गहरा राज़ है। यहाँ तक कि इवान को भी पैसों के बारे में पता नहीं है, या
कुछ भी। बूढ़ा आदमी इवान को चेरमाश्न्या भेज रहा है, जो दो-तीन दिन का सफर है। लकड़ी के लिए एक खरीदार मिल गया है: वह लकड़ी के लिए आठ हजार देगा। इसलिए बूढ़ा आदमी इवान से बार-बार कह रहा है कि वह जाकर व्यवस्था कर दे। इसमें उसे दो-तीन दिन लगेंगे। बूढ़ा आदमी यही चाहता है, ताकि उसके जाने के दौरान ग्रुशेंका आ सके।
तो क्या वह आज ग्रुशेंका के आने की उम्मीद कर रहा है?
“नहीं, वह आज नहीं आएगी; इसके संकेत मिल रहे हैं। वह निश्चित रूप से नहीं आएगी।”
मित्या अचानक चिल्लाया, “स्मरद्याकोव भी यही सोचता है। पिताजी अभी शराब पी रहे हैं। वे इवान के साथ मेज पर बैठे हैं। अलेयोशा, उनके पास जाओ और तीन हजार रुपये मांगो।”
“प्रिय मित्या, तुम्हें क्या हुआ है?” अलेयोशा उछलते हुए चिल्लाया।
वह अपनी जगह से अपने भाई के उन्मादी चेहरे को ध्यान से देख रहा था। एक पल के लिए उसके मन में यह विचार आया कि दिमित्री पागल हो गया है।
“क्या बात है? मैं पागल नहीं हूँ,” दिमित्री ने ध्यान से और गंभीरता से देखते हुए कहा।
उसकी ओर देखते हुए उसने कहा, “डरने की कोई बात नहीं। मैं तुम्हें पिता के पास भेज रहा हूँ, और मुझे पता है मैं क्या कह रहा हूँ। मुझे चमत्कारों पर विश्वास है।”
“चमत्कारों में?”
ईश्वरीय कृपा के चमत्कार से, ईश्वर मेरे हृदय को जानता है। वह मेरी स्थिति को देखता है।

निराशा। वह पूरी स्थिति को समझता है। निश्चित रूप से वह कुछ भयानक होने नहीं देगा। अलेयोशा, मैं चमत्कारों में विश्वास करता हूँ। जाओ!
मैं जा रहा हूँ। बताओ, क्या तुम यहाँ मेरा इंतज़ार करोगे?
“हां। मुझे पता है इसमें कुछ समय लगेगा। आप सीधे उस पर हमला नहीं कर सकते।”
वह अब नशे में है। मैं तीन घंटे, चार, पांच, छह, सात घंटे तक इंतज़ार करूँगा। बस याद रखना कि तुम्हें आज ही कैटेरिना इवानोव्ना के पास जाना है, चाहे आधी रात को ही क्यों न हो, पैसे लेकर या बिना पैसे के, और कहना है, 'वह तुम्हें शुभकामनाएं भेजता है।' मैं चाहता हूँ कि तुम उससे यह श्लोक कहो: 'वह तुम्हें शुभकामनाएं भेजता है।'
“मित्या! और अगर ग्रुशेंका आज आ जाए—अगर आज नहीं तो—”
कल या परसों?
“ग्रुशेंका? मैं उससे मिलूंगी। मैं तुरंत बाहर जाकर इसे रोकूंगी।”
और अगर—
"अगर कोई 'अगर' वाली बात है, तो यह हत्या होगी। मैं इसे बर्दाश्त नहीं कर सकता।"
“किसकी हत्या की जाएगी?”
“वह बूढ़ा आदमी। मैं उसे नहीं मारूंगा।”
भाई, तुम क्या कह रहे हो?
“ओह, मुझे नहीं पता... मुझे नहीं पता। शायद मैं उसे न मारूँ, और
शायद मैं ऐसा करूँगी। मुझे डर है कि उस पल उसका चेहरा मुझे अचानक इतना घृणित लगने लगेगा। मुझे उसका बदसूरत गला, उसकी नाक, उसकी आँखें, उसकी बेशर्म हँसी, सब कुछ नफ़रत है। मुझे शारीरिक घृणा महसूस होती है। मुझे इसी बात का डर है। यही मेरे लिए असहनीय हो सकता है।
“मैं जाऊँगा, मित्या। मुझे विश्वास है कि ईश्वर सब कुछ सर्वोत्तम तरीके से ही करेगा।”
कुछ भी बुरा नहीं होगा।
और मैं बैठकर चमत्कार की प्रतीक्षा करूँगा। और अगर ऐसा नहीं हुआ तो...
—”
अलोशा सोच-विचार करते हुए अपने पिता के घर की ओर चल पड़ा।

अध्याय 6

स्मर्ज्याकोव

उसने वास्तव में अपने पिता को अभी भी मेज पर पाया। हालाँकि वहाँ एक भोजन कक्ष था।
घर में, ड्राइंग रूम में मेज हमेशा की तरह सजी हुई थी, जो कि
सबसे बड़ा कमरा, और पुराने जमाने की शान-शौकत से सजा हुआ।
फर्नीचर सफेद और बहुत पुराना था, जिस पर पुराने, लाल, रेशमी कपड़े की गद्दी लगी हुई थी।
खिड़कियों के बीच की जगहों में विस्तृत सफेद रंग के दर्पण लगे हुए थे।
पुराने जमाने की नक्काशी वाले सुनहरे फ्रेम। दीवारें सफेद रंग से ढकी हुई हैं।
कई जगहों से फटे हुए कागज पर दो बड़े चित्र लटके हुए थे—एक
किसी ऐसे राजकुमार का, जो तीस साल पहले उस जिले का राज्यपाल रह चुका था।
और दूसरा किसी बिशप का, जो बहुत पहले मर चुका था। सामने वाले कोने में
दरवाजे पर कई मूर्तियां थीं, जिनके सामने एक दीपक जलाया गया था।
सूर्यास्त... पूजा-अर्चना के उद्देश्य से नहीं, बल्कि कमरे को रोशन करने के लिए।
फ्योदोर पावलोविच बहुत देर से, रात के तीन या चार बजे सोते थे।
सुबह के समय वह कमरे में इधर-उधर घूमती रहती थी या रात में किसी कुर्सी पर बैठ जाती थी।
कुर्सी पर बैठे-बैठे वह सोच रहा था। यह उसकी आदत बन चुकी थी। वह अक्सर काफी देर तक सोता रहता था।
घर में अकेले रहते हुए, अपने नौकरों को लॉज में भेज देते थे; लेकिन आमतौर पर
स्मर्ज्याकोव वहीं हॉल में एक बेंच पर सोता रहा।
जब अलेयोशा अंदर आया, तब तक खाना खत्म हो चुका था, लेकिन कॉफी और जैम मौजूद थे।
परोसा जा चुका था। फ्योदोर पावलोविच को मीठी चीज़ें ब्रांडी के साथ पसंद थीं।
रात का खाना। इवान भी मेज पर बैठा कॉफी पी रहा था। नौकर, ग्रिगोरी और
स्मरद्याकोव और नौकर दोनों ही पास खड़े थे।
फ्योदोर पावलोविच बेहद खुश लग रहे थे।
हंसी। कमरे में प्रवेश करने से पहले, अलेयोशा ने एक तीखी हंसी सुनी।
वह यह बात अच्छी तरह जानता था, और उसकी बातों से समझ गया था कि उसके पिता ने केवल
यह स्थिति सौहार्दपूर्ण स्तर पर पहुँच गई थी, और पूरी तरह से बिगड़ने से बहुत दूर थी।
पिया हुआ।
“ये रहा! ये रहा!” फ्योदोर पावलोविच अत्यंत प्रसन्न होकर चिल्लाया।
अलेयोशा को देखकर। “हमारे साथ बैठिए। कॉफी उपवास के दौरान खाई जाने वाली मिठाई है, लेकिन यह गर्म है।”
और अच्छा है। मैं आपको ब्रांडी नहीं दे रहा हूँ, आप उपवास रख रहे हैं। लेकिन क्या
क्या आप थोड़ा लेना चाहेंगे? नहीं; इससे बेहतर है कि मैं आपको हमारी मशहूर शराब पिलाऊँ।
स्मरद्याकोव, अलमारी में जाओ, दाहिनी ओर दूसरी शेल्फ पर। ये रहा।
चाबियां। एकदम शानदार!
अलियोशा ने शराब पीने से इनकार करना शुरू कर दिया।
“कोई बात नहीं। अगर आप इसे नहीं लेंगे, तो हम ले लेंगे,” फ्योदोर पावलोविच ने कहा।
मुस्कुराते हुए। "लेकिन रुकिए—क्या आपने खाना खा लिया?"
“हाँ,” अलेयोशा ने उत्तर दिया, जिसने वास्तव में केवल एक टुकड़ा ही खाया था।
फादर सुपीरियर के रसोईघर में मैंने रोटी खाई और एक गिलास क्वास पिया।
"हालांकि मुझे गर्म कॉफी मिल जाए तो मुझे खुशी होगी।"
“शाबाश, मेरी प्यारी! वह कॉफी पिएगा। क्या इसे गर्म करने की जरूरत है?”

नहीं, यह उबल रहा है। यह बेहतरीन कॉफी है: स्मरद्याकोव की बनाई हुई। मेरी
स्मर्ड्याकोव कॉफी बनाने में माहिर हैं, और मछली के पैटी बनाने में भी, और मछली के सूप बनाने में भी।
आपको एक दिन जरूर आना चाहिए और मछली का सूप पीना चाहिए। मुझे बता देना।
पहले से ही... लेकिन रुको; क्या मैंने आज सुबह तुमसे घर आने के लिए नहीं कहा था?
क्या आप अपना गद्दा, तकिया और सब कुछ लाए हैं? क्या आप अपना गद्दा लाए हैं? वह,
हे हे!
“नहीं, मैंने नहीं देखा,” अलेयोशा ने भी मुस्कुराते हुए कहा।
“अरे, लेकिन तुम डरे हुए थे, तुम आज सुबह डरे हुए थे।”
क्या तुम नहीं थे? देखो, मेरी जान, मैं तुम्हें परेशान करने के लिए कुछ नहीं कर सका।
इवान, तुम्हें पता है, जिस तरह से वह सीधे चेहरे पर देखता है, मैं उसका विरोध नहीं कर सकता।
हँसी? मुझे तो बहुत हंसी आती है। मैं उसे बहुत पसंद करता हूँ। अलेयोशा, मुझे...
मैं तुम्हें अपना आशीर्वाद देता हूँ—एक पिता का आशीर्वाद।
अलेयोशा उठ खड़ा हुआ, लेकिन फ्योदोर पावलोविच ने अपना इरादा बदल लिया था। “नहीं, नहीं,” उसने
कहा। “मैं बस तुम्हारे ऊपर क्रॉस का चिन्ह बना दूंगा, क्योंकि
अब। शांत बैठो। अब हमारे पास आपके लिए भी एक खास तोहफा है। यह आपको खुश कर देगा।
आप हंसते हैं। बालाम का गधा यहां हमसे बात करने लगा है—और वो कैसे-कैसे बात करता है!
वो कितनी बातें करता है!
ऐसा प्रतीत होता था कि बालाम का गधा उसका नौकर, स्मरद्याकोव था। वह एक
लगभग चौबीस वर्ष का एक युवक, जो बेहद असामाजिक और कम बोलने वाला था।
ऐसा नहीं था कि वह शर्मीला या संकोची था। इसके विपरीत, वह अभिमानी था और
वह हर किसी से नफरत करता प्रतीत होता था।
लेकिन अब हमें उनके बारे में कुछ शब्द कहने के लिए रुकना होगा। वे थे
ग्रिगोरी और मार्फा द्वारा पाला-पोसा गया, लेकिन लड़का "बिना किसी समझ के" बड़ा हुआ।
"कृतज्ञता," जैसा कि ग्रिगरी ने व्यक्त किया; वह एक अमित्र लड़का था, और ऐसा लगता था
दुनिया को अविश्वास की दृष्टि से देखना। अपने बचपन में उन्हें बहुत शौक था।
बिल्लियों को लटकाकर, और उन्हें बड़े धूमधाम से दफनाते थे। वह सजने-संवरने का काम करता था।
एक चादर ओढ़े हुए, मानो वह एक चोगा हो, और गाते हुए, और किसी वस्तु को लहराते हुए।
उसने मरी हुई बिल्ली के ऊपर धूपदानी की तरह धूप जलाई। यह सब उसने छुपकर किया।
अत्यंत गोपनीयता के साथ। ग्रिगोरी ने एक बार उसे इसी तरह की चाल चलते हुए पकड़ लिया और
उन्होंने उसकी जमकर पिटाई की। वह एक कोने में दुबक गया और कुछ देर तक वहीं रूठकर बैठा रहा।
सप्ताह। "वह राक्षस न तो तुम्हारी परवाह करता है और न मेरी," ग्रिगरी अक्सर कहा करता था।
मार्फा से उसने कहा, “और उसे किसी की परवाह नहीं है। क्या तुम इंसान हो?”
उसने लड़के को सीधे संबोधित करते हुए कहा, “तुम इंसान नहीं हो। तुम बड़े हो गए हो।”
स्नानघर में लगी फफूंद से।2 तुम वही हो।" स्मर्ड्याकोव, यह
बाद में प्रकट हुआ, वह उसे उन शब्दों के लिए कभी माफ नहीं कर सकता था। ग्रिगरी ने सिखाया।
उन्होंने उसे पढ़ना-लिखना सिखाया और जब वह बारह साल का हुआ, तो उन्होंने पढ़ाना शुरू कर दिया।
उन्हें धर्मग्रंथों का पाठ पढ़ाया। लेकिन यह शिक्षा व्यर्थ गई। दूसरे या
तीसरे पाठ में लड़का अचानक मुस्कुरा उठा।
“ये किसलिए है?” ग्रिगरी ने उसे धमकी भरे लहजे में देखते हुए पूछा।
उनके चश्मे के नीचे।
“अरे, कुछ नहीं। ईश्वर ने पहले दिन प्रकाश बनाया, और सूर्य, चंद्रमा,
और चौथे दिन तारे दिखाई दिए। पहले दिन प्रकाश कहाँ से आया था?
दिन?"
ग्रिगोरी अवाक रह गया। लड़के ने व्यंग्य भरी नज़र से उसकी ओर देखा।
शिक्षक। उनके चेहरे पर स्पष्ट रूप से तिरस्कारपूर्ण भाव था।

ग्रिगोरी खुद को रोक नहीं सका। "मैं तुम्हें दिखाऊंगा कहाँ!" वह चिल्लाया, और
उसने लड़के के गाल पर ज़ोरदार थप्पड़ मारा। लड़के ने थप्पड़ को बिना किसी प्रतिक्रिया के सहन कर लिया।
लेकिन फिर कुछ दिनों के लिए वह अपने कोने में लौट गया। एक हफ्ते बाद उसने
उन्हें उस बीमारी का पहला दौरा पड़ा, जिससे वे अपने शेष जीवन भर पीड़ित रहे।
जीवन—मिर्गी। जब फ्योदोर पावलोविच ने इसके बारे में सुना, तो लड़के के प्रति उनका रवैया बदल गया।
वह एकदम बदल गया प्रतीत हुआ। तब तक उसने उस पर ध्यान नहीं दिया था, हालांकि
उसने उसे कभी डांटा नहीं, और जब भी उससे मिलता, उसे एक कोपेक देता था।
कभी-कभी, जब उनका मूड अच्छा होता था, तो वे लड़के को भेज देते थे।
उसकी मेज से कुछ मीठा। लेकिन जैसे ही उसे उसकी बीमारी के बारे में पता चला, उसने
उन्होंने उसमें सक्रिय रुचि दिखाई, डॉक्टर को बुलाया और उपचार के कई प्रयास किए, लेकिन
यह बीमारी लाइलाज निकली। औसतन, दौरे पड़ते थे।
महीने में एक बार, लेकिन अलग-अलग अंतराल पर। दौरे की तीव्रता भी अलग-अलग होती थी:
कुछ हल्के थे और कुछ बहुत कठोर। फ्योदोर पावलोविच ने सख्ती से पालन किया।
ग्रिगोरी को लड़के को शारीरिक दंड देने से मना किया गया और उसने शुरुआत की
उसे ऊपर आने की अनुमति दी। उसने उसे शिक्षा प्राप्त करने से मना किया।
कुछ समय के लिए कुछ भी। एक दिन जब लड़का लगभग
पंद्रहवें वर्ष में, फ्योदोर पावलोविच ने उसे किताबों की अलमारी के पास मंडराते हुए देखा, और
कांच के पार से शीर्षक पढ़ना। फ्योदोर पावलोविच के पास काफी संख्या में थे।
सौ से भी ज़्यादा किताबें थीं, लेकिन किसी ने उन्हें कभी पढ़ते नहीं देखा।
उसने स्मरद्याकोव को किताबों की अलमारी की चाबी दी। “आओ, पढ़ो। तुम मेरे बनोगे।”
पुस्तकालयाध्यक्ष। आंगन में इधर-उधर घूमने से बेहतर है कि आप बैठकर पढ़ें।
“आओ, इसे पढ़ो,” और फ्योदोर पावलोविच ने उन्हें ‘इवनिंग्स इन अ कॉटेज’ नामक पुस्तक दी।
डिकांका के पास।
उन्होंने थोड़ा पढ़ा लेकिन उन्हें अच्छा नहीं लगा। उन्होंने एक बार भी मुस्कुराया नहीं, और अंत में...
भौंहें चढ़ाते हुए।
“क्यों? क्या यह हास्यास्पद नहीं है?” फ्योदोर पावलोविच ने पूछा। स्मर्ज्याकोव ने कुछ नहीं कहा।
"जवाब दो, बेवकूफ!"
“यह सब झूठ है,” लड़के ने मुस्कुराते हुए बुदबुदाया। “तो जाओ भाड़ में! तुम्हारी आत्मा किसी नौकर की है।
यहीं रहो, ये लो...”
स्मारागदोव का सार्वभौमिक इतिहास। उसमें लिखी सारी बातें सच हैं। उसे पढ़िए।
लेकिन स्मरद्याकोव स्मारगदोव की दस पृष्ठ भी नहीं पढ़ पाए।
मुझे यह नीरस लगा। इसलिए किताबों की अलमारी को फिर से बंद कर दिया गया।
कुछ ही समय बाद मार्फा और ग्रिगोरी ने फ्योदोर पावलोविच को सूचना दी।
कि स्मरद्याकोव धीरे-धीरे असाधारण प्रतिभा दिखाने लगा था।
वह बेहद सजग रहता था। वह अपने सूप के सामने बैठता, चम्मच उठाता और देखता।
सूप में हाथ डालकर, झुककर उसे ध्यान से देखें, एक चम्मच सूप लें और उसे मुंह से लगाएँ।
रोशनी।
“यह क्या है? कोई भृंग?” ग्रिगरी पूछता।
"शायद कोई मक्खी हो," मार्फा ने कहा।
संकोची युवक ने कभी जवाब नहीं दिया, लेकिन उसने अपने साथ भी ऐसा ही किया।
रोटी, उसका मांस, और वह जो कुछ भी खाता था। वह अपने कांटे पर एक टुकड़ा रखता था।
प्रकाश में लाकर, सूक्ष्मदर्शी से इसकी बारीकी से जांच करें, और वह भी लंबे विचार-विमर्श के बाद ही।
उन्होंने इसे उसके मुंह में डालने का फैसला किया।
“अरे! ये तो बड़े-बड़े सज्जनों का दिखावा है!” ग्रिगरी ने बुदबुदाते हुए देखा।

उसे।
जब फ्योडोर पावलोविच को स्मरद्याकोव में इस घटनाक्रम के बारे में पता चला
उसने उसे अपना रसोइया बनाने का निश्चय किया और उसे मॉस्को भेज दिया।
प्रशिक्षण प्राप्त किया। उन्होंने वहां कुछ साल बिताए और उल्लेखनीय रूप से बदले हुए वापस लौटे।
रूप-रंग। वह अपनी उम्र के हिसाब से बेहद बूढ़ा दिखता था। उसका चेहरा बदल गया था।
झुर्रीदार, पीला और अजीब तरह से नपुंसक। स्वभाव से वह लगभग ऐसा ही प्रतीत होता था।
वह पहले जैसा ही था, ठीक वैसा ही। वह पहले की तरह ही असामाजिक था, और
किसी भी प्रकार की संगति के प्रति उसने जरा भी रुचि नहीं दिखाई। मॉस्को में,
बाद में हमें पता चला कि वह हमेशा चुप ही रहता था। मॉस्को शहर में भी यही हाल था।
उसे इसमें बहुत कम दिलचस्पी थी; उसने वहाँ बहुत कम देखा और शायद ही किसी चीज पर ध्यान दिया।
किसी भी बात का। वह एक बार थिएटर गया था, लेकिन चुपचाप और असंतुष्ट होकर लौट आया।
इसके साथ। दूसरी ओर, वह मॉस्को से अच्छे कपड़े पहनकर हमारे पास लौटा।
साफ कोट और साफ चादर ओढ़े हुए। उन्होंने अपने कपड़ों को बड़ी सावधानी से झाड़ा।
वह नियमित रूप से दिन में दो बार सफाई करता था और अपने सुंदर बछड़े के चमड़े के जूते साफ करने का उसे बहुत शौक था।
उन्हें खास अंग्रेजी पॉलिश से चमकाया गया था, जिससे वे दर्पण की तरह चमक रहे थे। उसने मुड़कर देखा।
एक बेहतरीन रसोइया की तलाश में। फ्योदोर पावलोविच ने उसे लगभग उतना ही वेतन दिया।
वह सारा पैसा स्मर्ड्याकोव ने कपड़े, पोमेड, परफ्यूम आदि पर खर्च कर दिया।
ऐसी बातें। लेकिन ऐसा लगता था कि वह महिलाओं के प्रति भी उतना ही तिरस्कार रखता था।
पुरुषों के मामले में, वह बहुत ही सतर्क और लगभग अप्राप्य थे। फ्योदोर
पावलोविच का उसके प्रति नजरिया कुछ अलग होने लगा था। उसके दौरे बढ़ते जा रहे थे।
अधिक बार, और जब वह बीमार होता था तो मार्फा खाना बनाती थी, जो कि
क्या यह फ्योडोर पावलोविच के लिए बिल्कुल भी उपयुक्त है?
"तुम्हारे दौरे क्यों बिगड़ते जा रहे हैं?" फ्योडोर पावलोविच ने पूछा, देखते हुए।
उसने अपनी नई रसोइए को तिरछी नज़र से देखा। "क्या आप शादी करना चाहेंगे? क्या मैं आपके लिए कोई ढूंढूँ?"
पत्नी?"
लेकिन स्मरद्याकोव गुस्से से पीला पड़ गया और उसने कोई जवाब नहीं दिया। फ्योडोर
पावलोविच ने अधीरता भरे इशारे से उसे छोड़ दिया। सबसे बड़ी बात यह थी कि वह
मुझे उनकी ईमानदारी पर पूरा भरोसा था। ऐसा एक बार हुआ था, जब फ्योडोर
पावलोविच नशे में धुत था, वह कीचड़ भरे आंगन में गिर पड़ा।
उसे अभी-अभी सौ रूबल के नोट मिले थे। उसे बस उनकी कमी खल रही थी।
अगले दिन, और वह अपनी जेबें तलाशने ही वाला था कि उसने देखा
मेज पर पड़े नोट। वे कहाँ से आए थे? स्मर्ड्याकोव के पास थे।
मैंने उन्हें एक दिन पहले ही उठा लिया और अंदर ले आया था।
“वाह, मेरे लड़के, मैंने तुम्हारे जैसा कोई कभी नहीं देखा,” फ्योदोर पावलोविच
संक्षेप में कहा और उसे दस रूबल दिए। हम यह भी जोड़ सकते हैं कि उसने न केवल
मुझे उसकी ईमानदारी पर भरोसा था, लेकिन किसी कारणवश मुझे वह पसंद भी था।
हालांकि वह युवक उसे भी उतनी ही उदास निगाहों से देख रहा था जितनी कि बाकी सबको।
वह हमेशा चुप रहता था। वह शायद ही कभी बोलता था। अगर किसी के मन में भी यह सवाल उठता, तो वह क्या होता?
उस समय युवक की रुचि किसमें थी, और उसके मन में क्या था
ध्यान रहे, उसे देखकर यह बताना असंभव होता। फिर भी उसने इसका इस्तेमाल किया।
कभी-कभी घर में, या यहाँ तक कि आँगन या सड़क पर भी अचानक रुक जाना, और
वह दस मिनट तक स्थिर खड़ा रहता, विचारों में डूबा रहता। एक मुखाकृति विशेषज्ञ।

उसके चेहरे को देखकर ही पता चल जाता कि उसमें कोई विचार नहीं था, कोई भाव नहीं था।
प्रतिबिंब, लेकिन केवल एक प्रकार का चिंतन। एक उल्लेखनीय तस्वीर है।
क्रामस्कोय चित्रकार द्वारा बनाई गई एक पेंटिंग, जिसका शीर्षक है "चिंतन"। इसमें एक जंगल भी है।
सर्दी का मौसम है, और जंगल से गुजरने वाली एक सड़क पर, बिल्कुल सुनसान जगह में, एक पेड़ खड़ा है।
फटे कफ्तान और छाल के जूतों में एक किसान। वह मानो खोया हुआ खड़ा है।
विचार। फिर भी वह सोच नहीं रहा है; वह "मनन" कर रहा है। अगर कोई उसे छूता है
वह चौंक जाता और उसे ऐसे देखता जैसे जाग रहा हो और स्तब्ध हो गया हो।
यह सच है कि वह तुरंत होश में आ जाएगा; लेकिन अगर उससे पूछा जाए कि क्या
वह जिस बारे में सोच रहा था, उसे कुछ भी याद नहीं रहेगा। फिर भी शायद वह
उसने अपने भीतर उस धारणा को छिपा रखा है जो उस पर हावी थी।
चिंतन की अवधि के दौरान। वे छापें उनके लिए प्रिय हैं और
इसमें कोई संदेह नहीं कि वह उन्हें अनजाने में और यहां तक कि अचेतन रूप से भी जमा करता है। कैसे और
क्यों, बेशक, उसे भी नहीं पता। वह अचानक, जमाखोरी के बाद,
कई वर्षों से चली आ रही धारणाओं को त्यागकर, सब कुछ छोड़कर यरूशलेम की यात्रा पर निकल पड़ें।
या शायद वह अचानक अपनी आत्मा की मुक्ति के लिए तीर्थयात्रा पर निकल पड़े, या हो सकता है कि वह अचानक ही अपना इरादा बदल दे।
अपने पैतृक गांव में आग लगा दें, और शायद दोनों काम करें। ऐसे कई लोग हैं।
किसानों के बीच "चिंतनशील"। खैर, स्मर्ज्याकोव शायद
उनमें से एक, और वह शायद लालचवश अपने अनुभवों को संचित कर रहा था।
मुझे खुद भी नहीं पता कि ऐसा क्यों हो रहा है।

2. रूस में प्रचलित एक कहावत।

अध्याय 7

विवाद

लेकिन अचानक बालाम के गधे ने बोलना शुरू कर दिया। विषय बड़ा अजीब था। ग्रिगोरी सुबह खरीदारी करने गया था और दुकानदार लुक्यानोव से उसने उस दिन के अखबार में छपी एक रूसी सैनिक की कहानी सुनी थी। उस सैनिक को एशिया के किसी दूरदराज इलाके में बंदी बना लिया गया था और उसे धमकी दी गई थी कि अगर उसने ईसाई धर्म नहीं छोड़ा और इस्लाम नहीं अपनाया तो उसे तुरंत दर्दनाक मौत दे दी जाएगी। उसने अपने धर्म को छोड़ने से इनकार कर दिया और उसे यातनाएं दी गईं, जिंदा ही उसकी खाल उतारी गई और अंत में उसने ईसा मसीह की स्तुति और महिमा करते हुए दम तोड़ दिया। ग्रिगोरी ने खाने की मेज पर यह कहानी सुनाई। फ्योदोर पावलोविच को हमेशा रात के खाने के बाद मिठाई खाते समय हंसना और बातें करना अच्छा लगता था, भले ही सिर्फ ग्रिगोरी के साथ ही सही। आज दोपहर वह खास तौर पर खुशमिजाज और खुले दिल से बात कर रहा था। अपनी ब्रांडी की चुस्की लेते हुए और कहानी सुनते हुए उसने कहा कि ऐसे सैनिक को संत घोषित कर देना चाहिए और उसकी खाल किसी मठ में ले जानी चाहिए। "इससे लोग उमड़ पड़ेंगे और खूब पैसा आएगा।"
ग्रिगोरी ने भौंहें चढ़ा लीं, यह देखकर कि फ्योदोर पावलोविच किसी भी तरह से
भावुक तो हुआ, लेकिन हमेशा की तरह उपहास उड़ाने लगा। उसी क्षण दरवाजे पर खड़े स्मरद्याकोव मुस्कुराए। स्मरद्याकोव अक्सर रात के खाने के अंत में मेज पर सेवा करते थे, और इवान के हमारे शहर में आने के बाद से वे हर दिन ऐसा ही करते थे।
“तुम किस बात पर मुस्कुरा रहे हो?” फ्योदोर पावलोविच ने पूछा, मानो वह सुन रहा हो।
वे तुरंत मुस्कुरा दिए, और समझ गए कि यह ग्रिगोरी के बारे में है।
“खैर, मेरी राय यह है,” स्मर्ड्याकोव ने अचानक और अप्रत्याशित रूप से कहना शुरू किया।
ऊँची आवाज़ में, "यदि उस प्रशंसनीय सैनिक का पराक्रम इतना महान था, तो मेरे विचार से इसमें कोई पाप नहीं होता यदि उसने ऐसी आपात स्थिति में, एक तरह से, मसीह के नाम और अपने बपतिस्मा का त्याग कर दिया होता, ताकि वह अपने जीवन को अच्छे कर्मों के लिए बचा सके, जिससे वर्षों के दौरान उसकी कायरता का प्रायश्चित हो सके।"
“यह पाप कैसे नहीं हो सकता? तुम बकवास कर रहे हो। इसके लिए तुम्हें सज़ा मिलेगी।”
"सीधे नरक में जाओ और वहां भेड़ के मांस की तरह भुने जाओ," फ्योदोर पावलोविच ने लिखा था।
इसी समय अलेयोशा और फ्योदोर पावलोविच अंदर आए, जैसा कि हम जानते हैं।
मैंने उसे देखा था और उसकी उपस्थिति से बहुत प्रसन्न हुआ था।
“हम आपके विषय पर ही बात कर रहे हैं, आपके विषय पर,” वह खुशी से हंसते हुए बोला।
अलेयोशा, सुनने के लिए बैठ जाओ।
“जहां तक मटन की बात है, ऐसा नहीं है, और इसके लिए वहां कुछ भी नहीं होगा, और
"न्याय के अनुसार तो ऐसा नहीं होना चाहिए," स्मरद्याकोव ने दृढ़ता से कहा।
“न्याय के अनुसार’ से आपका क्या मतलब है?” फ्योदोर पावलोविच चिल्लाया।
और अधिक उत्साह से, उसने अपने घुटने से अलेयोशा को धक्का दिया।
“वह एक बदमाश है, बस यही है!” ग्रिगरी के मुंह से अचानक आवाज़ निकली। उसने देखा
स्मरद्याकोव ने क्रोधपूर्वक उसके चेहरे पर प्रहार किया।
“शरारती होने की बात हो तो, थोड़ा रुकिए, ग्रिगोरी वासिल्येविच,” जवाब दिया।
स्मरद्याकोव ने पूर्ण संयम के साथ कहा, "आपको यह समझना चाहिए कि यदि ईसाई जाति के शत्रु मुझे बंदी बना लें और मुझसे ईश्वर के नाम को कोसने और अपने पवित्र बपतिस्मा को त्यागने की मांग करें, तो मुझे अपने विवेक के अनुसार कार्य करने का पूरा अधिकार है, क्योंकि इसमें कोई पाप नहीं होगा।"
“लेकिन तुम ये बात पहले भी कह चुके हो। शब्दों को व्यर्थ मत करो। साबित करो,” फ्योदोर चिल्लाया।
पावलोविच।

“सूप बनाने वाले!” ग्रिगोरी ने तिरस्कारपूर्वक बुदबुदाया। “सूप बनाने वाले बनने की बात पर भी ज़रा रुकिए और खुद ही विचार कीजिए।”
ग्रिगोरी वासिलीविच, मुझे अपशब्द कहे बिना। क्योंकि जैसे ही मैं उन शत्रुओं से कहूँ, ‘नहीं, मैं ईसाई नहीं हूँ, और मैं अपने सच्चे ईश्वर को शाप देता हूँ,’ तो तुरंत, ईश्वर के सर्वोच्च न्याय से, मैं तत्काल और विशेष रूप से शापित हो जाऊँगा, और पवित्र चर्च से अलग हो जाऊँगा, ठीक वैसे ही जैसे मैं एक विधर्मी हूँ, ताकि उसी क्षण, न केवल जब मैं इसे ज़ोर से कहता हूँ, बल्कि जब मैं इसे कहने के बारे में सोचता हूँ, एक चौथाई सेकंड बीतने से पहले ही, मैं अलग हो जाता हूँ। क्या ऐसा है या नहीं, ग्रिगोरी वासिलीविच?
उसने स्पष्ट संतुष्टि के साथ ग्रिगोरी को संबोधित किया, हालाँकि वास्तव में वह
वह फ्योदोर पावलोविच के सवालों का जवाब दे रहा था, और इस बात से भलीभांति अवगत था, और जानबूझकर यह दिखावा कर रहा था कि ग्रिगोरी ने सवाल पूछे हैं।
“इवान,” फ्योदोर पावलोविच अचानक चिल्लाया, “मेरे लिए नीचे झुक जाओ।”
धीरे से कहो। उसने यह सब तुम्हारे फायदे के लिए किया है। वह चाहता है कि तुम उसकी प्रशंसा करो। उसकी प्रशंसा करो।
इवान ने अपने पिता की उत्तेजित फुसफुसाहट को पूरी गंभीरता से सुना। "रुको, स्मर्ड्याकोव, एक मिनट चुप रहो," फ्योदोर पावलोविच ने एक बार फिर कहा।
और भी। "इवान, फिर से तुम्हारा कान।"
इवान एकदम गंभीर चेहरे के साथ फिर से नीचे झुका। “मैं तुमसे उतना ही प्यार करता हूँ जितना अलेयोशा से। यह मत सोचो कि मैं तुमसे प्यार नहीं करता। थोड़ी ब्रांडी?
“हाँ।” “लेकिन तुम भी काफी नशे में हो,” इवान ने सोचते हुए देखा।
अपने पिता की ओर लगातार देखते हुए।
वह बड़ी उत्सुकता से स्मरद्याकोव को देख रहा था। "तुम तो पहले से ही अभिशापित हो," ग्रिगोरी अचानक बोल पड़ा, "और
तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई बहस करने की, बदमाश! उसके बाद, अगर—"
“ग्रिगोरी, उसे डाँटो मत, उसे डाँटो मत,” फ्योदोर पावलोविच ने उसे बीच में ही रोकते हुए कहा।
छोटा।
“ग्रिगोरी वासिल्येविच, आपको इंतजार करना चाहिए, भले ही थोड़े समय के लिए ही सही, और
सुनो, क्योंकि मैंने अभी अपनी बात पूरी नहीं की है। क्योंकि जिस क्षण मैं शापित होता हूँ, उसी चरम क्षण में, मैं बिलकुल एक विधर्मी के समान हो जाता हूँ, और मेरा बपतिस्मा मुझसे छीन लिया जाता है और व्यर्थ हो जाता है। क्या ऐसा ही नहीं है?
“जल्दी करो और खत्म करो, मेरे लड़के,” फ्योदोर पावलोविच ने घूंट भरते हुए उससे आग्रह किया।
वह बड़े चाव से अपने वाइन ग्लास से शराब पी रहा था।
और अगर मैंने ईसाई होना छोड़ दिया है, तो मैंने दुश्मन से झूठ नहीं बोला।
जब उन्होंने मुझसे पूछा कि मैं ईसाई हूँ या नहीं, तो उन्होंने देखा कि परमेश्वर ने मुझे मेरे ईसाई होने के विचार मात्र से ही मुक्त कर दिया था, इससे पहले कि मैं शत्रु से एक शब्द भी कह पाता। और यदि मुझे पहले ही मुक्त कर दिया गया है, तो किस प्रकार और किस न्याय के साथ मुझे परलोक में एक ईसाई के रूप में मसीह का इनकार करने के लिए उत्तरदायी ठहराया जा सकता है, जबकि केवल उस विचार मात्र से ही, उनका इनकार करने से पहले ही, मुझे मेरे बपतिस्मा से मुक्ति मिल गई थी? यदि मैं अब ईसाई नहीं हूँ, तो मैं मसीह का त्याग नहीं कर सकता, क्योंकि तब मेरे पास त्यागने के लिए कुछ भी नहीं है। एक अपवित्र तातार, ग्रिगोरी वासिलीविच को, स्वर्ग में भी, जन्म से ईसाई न होने के लिए कौन उत्तरदायी ठहराएगा? और इसके लिए उसे कौन दंडित करेगा, यह देखते हुए कि एक बैल से दो खालें नहीं उतारी जा सकतीं? सर्वशक्तिमान ईश्वर, भले ही वे तातार को दोषी ठहरा दें, मरने के बाद उसे कम से कम सज़ा देंगे, मुझे लगता है (क्योंकि उसे सज़ा मिलनी ही है), क्योंकि अगर वह अपवित्र, गैर-ईसाई माता-पिता से पैदा हुआ है, तो उसका कोई दोष नहीं है। क्या प्रभु ईश्वर किसी तातार को ईसाई कह सकते हैं? इसका मतलब होगा कि सर्वशक्तिमान ईश्वर झूठ बोल रहे हैं। और क्या स्वर्ग और पृथ्वी के स्वामी झूठ बोल सकते हैं, एक शब्द में भी?
ग्रिगोरी स्तब्ध रह गया और वक्ता की ओर देखने लगा, उसकी आँखें लगभग

उसका दिमाग चकरा रहा था। हालाँकि उसे ठीक से समझ नहीं आ रहा था कि क्या कहा जा रहा है, लेकिन इस उलझन में उसे कुछ तो समझ आ गया था, और वह ऐसे खड़ा था जैसे किसी ने अपना सिर दीवार से टकरा दिया हो। फ्योदोर पावलोविच ने अपना गिलास खाली किया और ज़ोर-ज़ोर से हंसने लगा।
“अलेयोशा! अलेयोशा! इस बारे में तुम्हारा क्या कहना है! अरे, तुम तो तर्कशास्त्री हो! उसे अवश्य ही इवान, तुम कहीं जेसुइट्स के साथ रहे होगे। अरे, तुम बदबूदार जेसुइट, तुम्हें किसने सिखाया? लेकिन तुम बकवास कर रहे हो, हे तर्कवादी, बकवास, बकवास, बकवास। रो मत, ग्रिगोरी, हम इसे पल भर में राख कर देंगे। मुझे यह बताओ, हे गधे; तुम अपने दुश्मनों के सामने सही हो सकते हो, लेकिन तुमने अपने दिल में अपने विश्वास का त्याग कर दिया है, और तुम खुद कहते हो कि उसी क्षण तुम शापित हो गए। और अगर एक बार तुम शापित हो गए तो नरक में भी तुम्हें शाप नहीं मिलेगा। इस बारे में तुम्हारा क्या कहना है, मेरे प्यारे जेसुइट?
इसमें कोई संदेह नहीं है कि मैंने इसे अपने हृदय में त्याग दिया है, लेकिन फिर भी
उसमें कोई विशेष पाप नहीं था। या यदि कोई पाप था भी, तो वह अत्यंत साधारण था।
"यह सबसे साधारण कैसे है?"
“तुम झूठ बोल रहे हो, अभिशापित!” ग्रिगरी ने फुफकारा।
“ग्रिगोरी वासिलीविच, खुद को समझो,” स्मर्ज्याकोव ने गंभीर स्वर में आगे कहा।
और वह शांत था, अपनी जीत के प्रति सचेत था, लेकिन मानो पराजित शत्रु के प्रति उदार था। “ग्रिगोरी वासिलीविच, ज़रा खुद पर गौर कीजिए; धर्मग्रंथों में लिखा है कि अगर आपके पास राई के दाने के बराबर भी आस्था हो और आप किसी पहाड़ को समुद्र में धकेलने का आदेश दें, तो वह बिना किसी देरी के आपकी आज्ञा का पालन करेगा। तो, ग्रिगोरी वासिलीविच, अगर मुझमें आस्था नहीं है और आपमें इतनी आस्था है कि आप लगातार मुझे गालियां देते रहते हैं, तो आप खुद इस पहाड़ से कहिए कि वह समुद्र में न जाए, क्योंकि वह बहुत दूर है, बल्कि हमारे बगीचे के नीचे बहने वाली इस बदबूदार छोटी नदी में ही चला जाए। आप खुद देखेंगे कि वह टस से मस नहीं होगा, बल्कि वहीं खड़ा रहेगा, चाहे आप उस पर कितना भी चिल्लाएं, और इससे पता चलता है, ग्रिगोरी वासिलीविच, कि आपमें सही मायने में आस्था नहीं है, और आप सिर्फ दूसरों को गालियां देते हैं। फिर से, इस बात को ध्यान में रखते हुए कि आज के समय में कोई भी, न केवल आप, बल्कि वास्तव में कोई भी, सबसे ऊंचे पद वाले व्यक्ति से लेकर सबसे निचले पद वाले किसान तक, पहाड़ों को समुद्र में नहीं धकेल सकता—शायद दुनिया में कोई एक या ज़्यादा से ज़्यादा दो लोग ही ऐसा कर सकते हैं, और वे भी शायद वे मिस्र के रेगिस्तान में कहीं गुप्त रूप से अपनी आत्माओं को बचा रहे हैं, इसलिए आप उन्हें नहीं ढूंढ पाएंगे—अगर ऐसा है, अगर बाकी सभी में विश्वास नहीं है, तो क्या ईश्वर बाकी सभी को शाप देगा? यानी, रेगिस्तान में रहने वाले लगभग दो संन्यासियों को छोड़कर, पूरी पृथ्वी की आबादी को, और क्या वह अपनी सर्वविदित दया से उनमें से एक को भी क्षमा नहीं करेगा? और इसलिए मुझे विश्वास है कि भले ही मैंने कभी संदेह किया हो, पश्चाताप के आँसू बहाने पर मुझे क्षमा कर दिया जाएगा।
“रुको!” फ्योदोर पावलोविच ने खुशी से झूमते हुए कहा। “तो तुम रुको!”
मान लो दो लोग पहाड़ों को हिला सकते हैं? इवान, इसे नोट कर लो, लिख लो। बस, यहीं पर तुम्हें रूसी अंदाज़ नज़र आएगा!
"आप यह कहने में बिलकुल सही हैं कि यह लोगों की आस्था की विशेषता है।"
इवान ने सहमति जताते हुए मुस्कुराया।
“तुम सहमत हो। अगर तुम सहमत हो, तो ऐसा ही होगा। यह सच है, है ना, अलेयोशा?”
यही तो रूसियों का मूल विश्वास है, है ना?
“नहीं, स्मर्ज्याकोव में रूसी आस्था बिल्कुल भी नहीं है,” अलेयोशा ने दृढ़ता से कहा।
और गंभीरता से।
“मैं उसके विश्वास की बात नहीं कर रहा हूँ। मेरा मतलब रेगिस्तान में उन दोनों से है, बस इतना ही।”
विचार। यह तो निश्चित रूप से रूसी ही होगा, है ना?
“हाँ, यह बिल्कुल रूसी है,” अलेयोशा मुस्कुराते हुए बोला। “तेरे शब्द सोने के सिक्के के बराबर हैं, ओ गधे, और मैं आज ही तुझे दे दूंगा।”

लेकिन बाकी सब बकवास है, बकवास, बकवास। सुनो, मूर्ख, हम सब यहाँ कम विश्वास वाले हैं, केवल लापरवाही के कारण, क्योंकि हमारे पास समय नहीं है; हमारे पास काम का बोझ बहुत ज़्यादा है, और दूसरी बात, प्रभु परमेश्वर ने हमें बहुत कम समय दिया है, दिन में केवल चौबीस घंटे, इसलिए किसी के पास पर्याप्त नींद लेने का भी समय नहीं है, अपने पापों के पश्चाताप करने का तो सवाल ही नहीं उठता। जबकि तुमने अपने शत्रुओं के सामने अपने विश्वास से इनकार कर दिया, जबकि तुम्हारे पास अपने विश्वास को दिखाने के अलावा और कोई काम नहीं था! इसलिए, भाई, मैं मानता हूँ कि यह एक पाप है।
“यह पाप हो सकता है, लेकिन अपने आप को समझो, ग्रिगोरी वासिल्येविच।”
अगर यह पाप है भी, तो यह उसे कम करके आंकता है। अगर मैंने उस समय सचमुच में विश्वास किया होता, जैसा मुझे करना चाहिए था, तो अपने विश्वास के लिए यातनाएँ न सहना और मूर्तिपूजक मोहम्मद धर्म अपना लेना वास्तव में पाप होता। लेकिन, ज़ाहिर है, तब यातना की नौबत नहीं आती, क्योंकि मुझे बस उस पल पहाड़ से कहना होता, 'हल हो जा और यातना देने वाले को कुचल दे,' और वह हल हो जाता और उसी क्षण उसे काले भृंग की तरह कुचल देता, और मैं ऐसे चला जाता जैसे कुछ हुआ ही न हो, ईश्वर की स्तुति और महिमा करते हुए। लेकिन, मान लीजिए कि उसी क्षण मैंने यह सब कर लिया होता, और उस पहाड़ से कहा होता, 'इन यातना देने वालों को कुचल दे,' और उसने उन्हें नहीं कुचला होता, तो ऐसे समय में, और मृत्यु के ऐसे भयानक क्षण में, मैं कैसे संदेह करने से खुद को रोक पाता? और इसके अलावा, मुझे पहले से ही पता होना चाहिए कि मैं स्वर्ग के राज्य की पूर्णता को प्राप्त नहीं कर सकता (क्योंकि जब मेरे कहने पर पहाड़ नहीं हिला, तो ऊपर बैठे लोग मेरे विश्वास को ज्यादा महत्व नहीं दे सकते थे, और आने वाले संसार में मेरा कोई बड़ा पुरस्कार नहीं होगा)। तो मैं उन्हें अपनी खाल भी उतारने क्यों दूं, वो भी व्यर्थ में? क्योंकि, भले ही वे मेरी आधी खाल उतार दें, तब भी पहाड़ मेरे कहने या मेरी पुकार पर नहीं हिलेगा। और ऐसे क्षण में न केवल संदेह हावी हो सकता है, बल्कि डर से व्यक्ति अपना विवेक खो सकता है, जिससे वह सोचने में भी असमर्थ हो जाएगा। इसलिए, अगर मुझे यहाँ या वहाँ अपना लाभ या पुरस्कार नहीं दिख रहा है, तो कम से कम मुझे अपनी जान तो बचा लेनी चाहिए, तो मैं विशेष रूप से दोषी कैसे हो सकता हूँ? और इसलिए प्रभु की कृपा पर पूरा भरोसा रखते हुए मुझे यह आशा रखनी चाहिए कि मुझे पूरी तरह से क्षमा कर दिया जाएगा।

अध्याय 8

ब्रांडी के ऊपर

विवाद समाप्त हो गया था। लेकिन, हैरानी की बात यह है कि, जो फ्योदोर पावलोविच इतने हंसमुख थे, अचानक उनका चेहरा उतर गया। उन्होंने भौंहें चढ़ाईं और ब्रांडी का घूंट भरा, और वह पहले से ही ज़रूरत से ज़्यादा थी।
“यहाँ से चले जाओ, जेसुइटों!” उसने नौकरों पर चिल्लाते हुए कहा। “चले जाओ।”
स्मरद्याकोव। मैंने आज तुम्हें वादा किया हुआ सोने का सिक्का भेज दूंगा, लेकिन तुम जाओ! रो मत, ग्रिगोरी। मार्फा के पास जाओ। वह तुम्हें दिलासा देगी और सुला देगी। ये बदमाश हमें खाने के बाद चैन से बैठने नहीं दे रहे हैं,” उसने चिढ़कर कहा, और नौकर उसकी बात मानते ही तुरंत चले गए।
“स्मर्ड्याकोव अब हमेशा खाने के बाद बीच में दखल देता है। वो तुमसे ही बात कर रहा है।”
“वह इसमें इतनी दिलचस्पी ले रहा है। तुमने ऐसा क्या किया है जिससे वह इतना आकर्षित हो गया है?” उसने इवान से पूछा।
“बिल्कुल नहीं,” इवान ने उत्तर दिया। “वह ऊँचा पद पाकर खुश है।”
मेरे बारे में उसकी राय यह है कि वह एक चापलूस और नीच आत्मा है। हालांकि, समय आने पर वह क्रांति के लिए कच्चा माल साबित हो सकता है।
“क्रांति के लिए?”
“और भी लोग होंगे, और बेहतर भी। लेकिन उनके जैसे भी कुछ लोग होंगे।”
ठीक है। पहले उसके जैसे लोग आएंगे, और बाद में बेहतर लोग।
और वह समय कब आएगा?
“रॉकेट शायद लॉन्च होगा और फिर निष्क्रिय हो जाएगा। किसान नहीं हैं।”
मुझे इन सूप बनाने वालों को सुनना बहुत अच्छा लग रहा है, अब तक तो बहुत ही अच्छा लग रहा है।"
“अरे भाई, लेकिन बिलाम की गधी जैसी गधी सोचती ही रहती है, और...”
पता नहीं वो कहाँ जाएगा।
इवान ने मुस्कुराते हुए कहा, "वह विचारों का भंडार जमा कर रहा है।"
"देखो, मुझे पता है कि वह मुझे बर्दाश्त नहीं कर सकता, न ही किसी और को, यहाँ तक कि तुम्हें भी नहीं, हालाँकि
आपको लगता है कि वह आपके बारे में अच्छी राय रखता है। इससे भी बुरी बात यह है कि वह अलेयोशा से नफरत करता है। लेकिन वह चोरी नहीं करता, यह एक अच्छी बात है, और वह चुगली भी नहीं करता, वह चुप रहता है, और हमारी निजी बातें सबके सामने नहीं फैलाता। वह शानदार मछली के पेस्ट्री भी बनाता है। लेकिन, धिक्कार है उसे, क्या वह इतना चर्चा के लायक है?
"बेशक वह नहीं है।"
और जहाँ तक उसके द्वारा रचे जा रहे विचारों का सवाल है, रूसी किसान, सामान्यतः
बोलने को तो मार पड़नी ही चाहिए। यही बात मैं हमेशा से कहता आया हूँ। हमारे किसान धोखेबाज़ हैं, दया के पात्र नहीं हैं, और यह अच्छी बात है कि उन्हें कभी-कभी कोड़े मारे जाते हैं। रूस में बर्च के पेड़ बहुतायत में हैं। अगर उन्होंने जंगलों को नष्ट कर दिया, तो रूस बर्बाद हो जाएगा। मैं चतुर लोगों का पक्षधर हूँ। हमने किसानों को कोड़े मारना छोड़ दिया है, हम इतने चतुर हो गए हैं, लेकिन वे खुद को कोड़े मारते रहते हैं। और यह अच्छी बात है। 'जिस पैमाने से तुम नापोगे, उसी पैमाने से तुम्हें भी नापा जाएगा,' या कहावत क्या है? खैर, नापा तो जाएगा ही। लेकिन रूस तो पूरी तरह से नीचता से भरा है। मेरी प्यारी, अगर तुम्हें पता होता कि मैं रूस से कितनी नफरत करता हूँ... मतलब, रूस से नहीं, बल्कि इस सारी बुराई से! लेकिन शायद मेरा मतलब रूस ही है। Tout cela c’est de la cochonnerie... क्या तुम जानती हो कि मुझे क्या पसंद है? मुझे बुद्धि पसंद है।
“आपने एक और गिलास पी लिया है। बस बहुत हो गया।”

“थोड़ा रुकिए। मैं एक और लूंगा, फिर एक और, और फिर मैं रुक जाऊंगा। नहीं,
रुको, तुमने मुझे बीच में ही रोक दिया। मोक्रो में मैं एक बूढ़े आदमी से बात कर रहा था, और उसने मुझे बताया: ‘हमें लड़कियों को पिटवाने से ज़्यादा कुछ पसंद नहीं है, और हम हमेशा लड़कों को ही उन्हें पिटवाने का काम देते हैं। और जिस लड़की को उसने आज पीटा है, कल वो लड़का उससे शादी का प्रस्ताव रखेगा। तो ये लड़कियों को भी खूब भाता है,’ उसने कहा। ये तो कमाल की बात है! लेकिन फिर भी, ये तो बढ़िया है। चलें, एक नज़र डाल लें? अलेयोशा, क्या तुम शरमा रहे हो? शरमाओ मत, बच्चे। मुझे माफ़ करना कि मैं सुपीरियर के यहाँ रात के खाने पर नहीं रुका और भिक्षुओं को मोक्रो की लड़कियों के बारे में नहीं बताया। अलेयोशा, इस बात पर नाराज़ मत हो कि मैंने आज सुबह तुम्हारे सुपीरियर को नाराज़ कर दिया। मुझे गुस्सा आ गया था। अगर भगवान है, अगर वो सच में है, तो ज़ाहिर है, मैं ही दोषी हूँ, और मुझे इसका जवाब देना होगा। लेकिन अगर भगवान है ही नहीं, तो तुम्हारे पिता किस लायक हैं? उनके सिर काट देना काफी नहीं है, क्योंकि वे तरक्की में रुकावट डालते हैं। क्या तुम यकीन करोगे, इवान, कि इससे मेरी भावनाएं आहत होती हैं? नहीं, जैसा कि मैं तुम्हारी आंखों से देख सकता हूं, तुम यकीन नहीं करते। तुम लोगों की बातों पर यकीन करते हो, कि मैं सिर्फ एक मसखरा हूं। अलेयोशा, क्या तुम भी यकीन करते हो कि मैं सिर्फ एक मसखरा हूं? नहीं, मुझे इस पर विश्वास नहीं है।
और मुझे विश्वास है कि आप ऐसा नहीं करते, और आप सच बोलते हैं। आप ईमानदार लगते हैं।
और तुम ईमानदारी से बोलते हो। लेकिन इवान नहीं। इवान घमंडी है... फिर भी, मैं तुम्हारे भिक्षुओं का अंत कर दूंगा। मैं उस सारी रहस्यमयी चीज़ को ले जाकर, हमेशा के लिए, पूरे रूस में दबा दूंगा, ताकि सभी मूर्खों को अक्ल आ जाए। और फिर टकसाल में आने वाला सोना और चांदी!
"लेकिन इसे क्यों दबाया जाए?" इवान ने पूछा।
“ताकि सत्य की विजय हो। इसीलिए।”
"खैर, अगर सच्चाई की जीत हुई, तो तुम्हें पता है, तुम सबसे पहले होगे।"
लूटा और दबाया गया।"
“आह! मुझे लगता है आप सही कह रहे हैं। आह, मैं कितना मूर्ख हूँ!” फ्योदोर पावलोविच ने माथे पर हल्के से हाथ मारते हुए कहा। “खैर, अगर ऐसा है तो तुम्हारा मठ बना रहेगा, अलेयोशा। और हम समझदार लोग आराम से बैठकर अपनी ब्रांडी का आनंद लेंगे। तुम्हें पता है, इवान, यह तो स्वयं सर्वशक्तिमान ईश्वर का ही आदेश रहा होगा। इवान, बोलो, क्या ईश्वर है या नहीं? रुको, सच बोलो, गंभीरता से बोलो। फिर से क्यों हंस रहे हो?”
मुझे हंसी आ रही है कि तुमने अभी-अभी कोई चतुराई भरी टिप्पणी कर दी।
स्मेरद्याकोव के इस विश्वास के बारे में कि दो संत ऐसे थे जो पहाड़ों को हिला सकते थे।"
"तो क्या मैं भी अब उसके जैसा हो गया हूँ?"
"बहुत ज्यादा।"
"अच्छा, इससे पता चलता है कि मैं भी एक रूसी हूँ, और मेरे पास एक रूसी है।"
विशेषता। और आप भी उसी तरह फंस सकते हैं, भले ही आप दार्शनिक हों। क्या मैं आपको पकड़ लूँ? क्या शर्त लगाओगे कि मैं आपको कल पकड़ लूँगा? फिर भी बोलिए, क्या ईश्वर है या नहीं? बस, गंभीर हो जाइए। मैं चाहता हूँ कि आप अभी गंभीर हों।
नहीं, भगवान नहीं है।
“अलोशा, क्या ईश्वर है?”
"वहाँ है।"
"इवान, क्या किसी प्रकार की अमरता संभव है, बस थोड़ी सी, बस थोड़ी सी?"
"अमरता भी नहीं है।"
"बिल्कुल भी नहीं?"
"बिल्कुल भी नहीं।"
“तब तो पूर्णतः शून्यता ही होती है। शायद कुछ तो हो?”
कुछ न होने से कुछ होना बेहतर है!
"पूर्ण शून्यता।"

“अलोशा, क्या अमरता संभव है?”
"वहाँ है।"
“ईश्वर और अमरता?”
“ईश्वर और अमरता। ईश्वर में ही अमरता है।”
“हम्म! लगता है इवान सही है। हे भगवान! सोचो कितना विश्वास है।”
मनुष्य ने उस सपने पर व्यर्थ ही कितनी शक्ति लुटा दी है, और कितने ही हज़ार वर्षों से? मनुष्य पर कौन हँस रहा है? इवान! अंतिम बार, हमेशा के लिए, क्या ईश्वर है या नहीं? मैं अंतिम बार पूछता हूँ!
और आखिरी बार फिर से कह रहा हूँ, ऐसा नहीं है।
“इवान, मानवता पर कौन हंस रहा है?”
इवान ने मुस्कुराते हुए कहा, "यह शैतान का काम होगा।"
और शैतान? क्या उसका अस्तित्व है?
नहीं, शैतान भी नहीं है।
“यह तो बहुत दुख की बात है। धिक्कार है, उस आदमी के साथ मैं क्या-क्या नहीं करता जिसने सबसे पहले मुझे मारा।”
ईश्वर का आविष्कारक! उसे किसी कड़वे एस्पेन पेड़ पर लटका देना भी उसके लिए बहुत अच्छा होगा।
"अगर उन्होंने ईश्वर का आविष्कार न किया होता तो सभ्यता का अस्तित्व ही न होता।"
“क्या ऐसा नहीं होता? ईश्वर के बिना?”
“नहीं। और ब्रांडी भी नहीं होती। लेकिन मुझे आपका लेना ही होगा।
वैसे भी, ब्रांडी को अपने से दूर रखो।"
“रुको, रुको, रुको, प्यारे बच्चे, एक और छोटा गिलास। मैंने अलेयोशा को चोट पहुँचाई है।”
भावनाएँ। तुम मुझसे नाराज़ तो नहीं हो, अलेयोशा? मेरे प्यारे छोटे एलेक्सी!
नहीं, मैं नाराज़ नहीं हूँ। मैं तुम्हारे विचार जानता हूँ। तुम्हारा दिल मुझसे बेहतर है।
अपने सिर।"
“क्या मेरा दिल मेरे दिमाग से बेहतर है? हे भगवान! और यह तो आपने कहा। इवान,”
क्या तुम अलेयोशा से प्यार करते हो?
"हाँ।"
“तुम्हें उससे प्यार करना चाहिए” (इस समय तक फ्योदोर पावलोविच बहुत नशे में थे)।
“सुनो, अलेयोशा, आज सुबह मैंने तुम्हारे बड़े के साथ बदतमीज़ी की। पर मैं उत्तेजित था। लेकिन उस बड़े में चतुराई है, है ना, इवान?”
"बहुत संभावना है।"
“हाँ, है। Il y a du Piron là dedans. वह एक जेसुइट है, एक रूसी है।”
एक तो यह कि। चूंकि वह एक सम्मानित व्यक्ति है, इसलिए पवित्रता का दिखावा करने और ढोंग करने को लेकर उसके भीतर एक छिपा हुआ आक्रोश उबल रहा है।
लेकिन, बेशक, वह भगवान में विश्वास रखता है।
“बिल्कुल नहीं। क्या आपको नहीं पता था? अरे, वह खुद ही सबको यही बताता है।”
यानी, हर कोई नहीं, बल्कि वे सभी बुद्धिमान लोग जो उनके पास आते हैं। उन्होंने कुछ समय पहले गवर्नर शुल्ज़ से सीधे कहा था: "विश्वास तो है, लेकिन मुझे नहीं पता कि किस विश्वास में।"
"वास्तव में?"
“उन्होंने सचमुच ऐसा किया। लेकिन मैं उनका सम्मान करता हूँ। उनमें मेफिस्टोफेल्स की कुछ झलक है।”
उनके बारे में, या यूँ कहें कि 'हमारे समय के नायक' के बारे में... अर्बेनिन, या उनका नाम क्या है?... देखिए, वे एक कामुक व्यक्ति हैं। वे इतने कामुक हैं कि अगर मेरी बेटी या पत्नी उनसे अपने दिल की बात कहने जाएँ तो मुझे डर लगेगा। आप जानते हैं, जब वे कहानियाँ सुनाना शुरू करते हैं... पिछले साल से पहले उन्होंने हमें चाय पर बुलाया, शराब वाली चाय (महिलाएँ उन्हें शराब भेजती हैं), और पुराने दिनों की कहानियाँ सुनाते-सुनाते हम लोटपोट हो गए... खासकर कि कैसे उन्होंने एक बार एक लकवाग्रस्त महिला को ठीक किया था। उन्होंने कहा, 'अगर मेरे पैर ठीक होते तो मैं आपको नाच कर दिखा सकता था।' इस पर आप क्या कहेंगे?

उन्होंने कहा, 'मेरे पास अपने समय में बहुत सारे हुनर हैं। उन्होंने व्यापारी देमिडोव को साठ हज़ार में से एक दिया था।'
“क्या, उसने इसे चुरा लिया?”
“उसने एक भरोसेमंद आदमी की तरह उसे पैसे दिए और कहा, ‘अपना ख्याल रखना’”
मेरे लिए इसे छोड़ दो, दोस्त, कल मेरे घर पर पुलिस तलाशी लेगी।’ और उसने उसे रख लिया। ‘तुमने इसे चर्च को दे दिया है,’ उसने ऐलान किया। मैंने उससे कहा: ‘तुम बदमाश हो,’ मैंने कहा। ‘नहीं,’ उसने कहा, ‘मैं बदमाश नहीं हूँ, लेकिन मैं खुले विचारों वाला हूँ।’ लेकिन वह वह नहीं था, वह कोई और था। मैंने उसे किसी और के साथ मिला दिया... अनजाने में। चलो, एक और गिलास, बस। बोतल हटाओ, इवान। मैं झूठ बोल रहा था। तुमने मुझे क्यों नहीं रोका, इवान, और मुझे क्यों नहीं बताया कि मैं झूठ बोल रहा हूँ?
मुझे पता था कि तुम खुद ही रुक जाओगे।
“यह झूठ है। तुमने यह द्वेषवश किया, मेरे प्रति केवल द्वेषवश।
मेरा अपमान करो। तुम मेरे घर में आए और मेरा अपमान किया।
“ठीक है, मैं जा रहा हूँ। तुमने बहुत ज्यादा ब्रांडी पी ली है।”
मैंने आपसे ईश्वर के नाम पर विनती की है कि आप एक दिन के लिए चेरमाश्न्या चले जाएं या
दो, और तुम नहीं जाओगे।"
"अगर आप इतना ही अड़े हैं तो मैं कल चला जाऊंगा।"
“तुम नहीं जाओगे। तुम मुझ पर नजर रखना चाहते हो। यही तुम्हारी इच्छा है।”
वह एक द्वेषपूर्ण व्यक्ति है। इसीलिए तुम नहीं जाओगे।
बूढ़ा आदमी अड़ा रहा। वह नशे की उस हालत में पहुँच चुका था जब
अब तक हानिरहित रहे शराबी ने झगड़ा करने और अपनी बात मनवाने की कोशिश शुरू कर दी।
“तुम मुझे क्यों देख रहे हो? तुम ऐसे क्यों देख रहे हो? तुम्हारी आँखें
मेरी तरफ देखो और कहो, ‘तुम बदसूरत शराबी!’ तुम्हारी आँखों में अविश्वास है। उनमें तिरस्कार है... तुम यहाँ किसी इरादे से आए हो। अलेयोशा, यहाँ, मेरी तरफ देखता है और उसकी आँखें चमक उठती हैं। अलेयोशा मुझसे घृणा नहीं करता। एलेक्सी, तुम्हें इवान से प्यार नहीं करना चाहिए।
मेरे भाई के साथ बदतमीजी मत करो। उस पर हमला करना बंद करो।
अलोशा ने जोर देकर कहा।
“ओह, ठीक है। उफ़, मेरा सिर दुख रहा है। इवान, ब्रांडी हटा दो। यह...”
मैंने तुम्हें तीसरी बार बताया है।
वह सोचने लगा, और अचानक उसके चेहरे पर एक धीमी, धूर्त मुस्कान फैल गई। "एक कमजोर बूढ़े आदमी पर गुस्सा मत करो, इवान। मुझे पता है कि तुम मुझसे प्यार नहीं करते।"
लेकिन फिर भी गुस्सा मत करो। तुम्हें मुझसे प्यार करने की कोई वजह नहीं है। तुम चेरमाश्न्या जाओ। मैं खुद तुम्हारे पास आऊंगा और तुम्हारे लिए एक तोहफा लाऊंगा। मैं तुम्हें वहां एक खूबसूरत लड़की से मिलवाऊंगा। मेरी नज़र उस पर बहुत दिनों से है। वह अभी भी नंगे पैर घूमती है। नंगे पैर वाली लड़कियों से मत डरो—उनसे नफरत मत करो—वे अनमोल हैं!
और उसने उसके हाथ को जोर से चूमा।
“मेरे विचार से,” वह तुरंत संभल गया, मानो पल भर में गंभीर हो गया हो।
उन्होंने अपने पसंदीदा विषय पर बात की। मेरी सोच के अनुसार... आह, तुम लड़के! तुम बच्चे, छोटे-छोटे दूध पीते सूअर, मेरी सोच के अनुसार... मैंने अपने जीवन में कभी किसी औरत को बदसूरत नहीं समझा—यही मेरा नियम रहा है! क्या तुम यह समझ सकते हो? तुम इसे कैसे समझ सकते हो? तुम्हारी नसों में खून नहीं, दूध बहता है। तुम अभी तक अपने खोल से बाहर नहीं निकले हो। मेरा नियम यह रहा है कि तुम हर औरत में कुछ न कुछ ऐसा दिलचस्प पा सकते हो जो तुम्हें किसी और में नहीं मिलेगा। बस, उसे ढूंढना आना चाहिए, यही तो असली बात है! यही तो हुनर है! मेरी नज़र में कोई बदसूरत औरत नहीं होती। औरत होना ही आधी लड़ाई है... लेकिन तुम यह कैसे समझ सकते हो? बूढ़ी लड़कियों में भी, उनमें भी तुम्हें कुछ ऐसा मिल सकता है जो तुम्हें यह सोचने पर मजबूर कर दे कि मर्द इतने मूर्ख कैसे हो सकते हैं कि उन्हें बूढ़ा होने देते हैं और उन पर ध्यान नहीं देते। नंगे पैर वाली लड़कियां हों या बदसूरत, तुम्हें उन्हें चौंकाना होगा। क्या तुम्हें यह नहीं पता

था? तुम्हें उन्हें तब तक अचंभित करना होगा जब तक वे मैं हैरान, परेशान और शर्मिंदा थी कि ऐसा सज्जन व्यक्ति ऐसी छोटी सी बदचलन लड़की के प्यार में पड़ गया। यह अच्छी बात है कि दुनिया में हमेशा मालिक और गुलाम होते हैं और रहेंगे, इसलिए हमेशा एक छोटी सी नौकरानी और उसका मालिक भी होगा, और तुम जानते हो, खुशी के लिए बस इतना ही काफी है। रुको... सुनो, अलेयोशा, मैं हमेशा तुम्हारी माँ को चौंका देती थी, लेकिन एक अलग तरीके से। मैं उन पर बिल्कुल ध्यान नहीं देती थी, लेकिन अचानक, जब समय आता, मैं पूरी तरह से उनके प्रति समर्पित हो जाती, घुटनों के बल रेंगती, उनके पैर चूमती, और मैं हमेशा, हमेशा—मुझे याद है जैसे आज ही हुआ हो—उन्हें उस खनकती, शांत, घबराहट भरी, अजीब सी हंसी में बदल देती थी। यह उनकी खासियत थी। मुझे पता था कि उनके दौरे हमेशा इसी तरह शुरू होते थे। अगले दिन वह हिस्टीरिया में चीखने लगतीं, और यह छोटी सी हंसी खुशी की निशानी नहीं थी, हालांकि यह एक बहुत अच्छी नकली हंसी थी। यही तो बड़ी बात है, मुझे हर किसी से निपटना आता था। एक बार बेल्याव्स्की—वह एक सुंदर और अमीर आदमी था—यहाँ आना और उसके आसपास मंडराना पसंद करता था—अचानक उसने उसके सामने मेरे चेहरे पर एक थप्पड़ मार दिया। और वह—इतनी सीधी-सादी—मुझे लगा कि वह उस थप्पड़ के लिए मुझे गिरा देगी। वह मुझ पर कैसे टूट पड़ी! 'तुम हार गए, अब हार गए,' उसने कहा। 'तुम्हें उससे चोट लगी है। तुम मुझे उसे बेचने की कोशिश कर रहे थे,' उसने कहा... 'और उसकी हिम्मत कैसे हुई मेरी मौजूदगी में तुम्हें मारने की! फिर कभी मेरे पास आने की हिम्मत मत करना, कभी नहीं! तुरंत भाग जाओ, उसे द्वंद्वयुद्ध के लिए चुनौती दो!'... तब मैं उसे होश में लाने के लिए मठ ले गया। पवित्र पिताओं ने प्रार्थना करके उसे समझाया। लेकिन मैं कसम खाता हूँ, भगवान की कसम, अलेयोशा, मैंने उस बेचारी पागल लड़की का कभी अपमान नहीं किया! शायद सिर्फ एक बार, पहले साल में; तब वह प्रार्थना करने की बहुत शौकीन थी। वह विशेष रूप से हमारी लेडी के पर्व मनाती थी और मुझे बाहर निकाल देती थी। फिर मैं उसके कमरे में गया। मैंने सोचा, मैं उसके अंदर से यह अंधविश्वास निकाल दूंगा! मैंने कहा, 'देखो, यह तुम्हारी पवित्र मूर्ति है। यह रही। मैं इसे नीचे उतारता हूँ। तुम इसे चमत्कार मानती हो, लेकिन देखो, मैं इस पर सीधे थूकता हूँ और मुझे कुछ नहीं होगा!'... जब उसने इसे देखा, हे भगवान! मुझे लगा वह मुझे मार डालेगी। लेकिन वह बस उछल पड़ी, अपने हाथ मलने लगी, फिर अचानक अपना चेहरा उनमें छिपा लिया, कांपने लगी और ज़मीन पर गिर पड़ी... एकदम ढेर हो गई। "अलेयोशा, अलेयोशा, क्या हुआ?"

बूढ़ा आदमी घबराकर उछल पड़ा। जब से उसने बोलना शुरू किया था

अपनी माँ के बारे में बात करते-करते अलेयोशा के चेहरे पर धीरे-धीरे बदलाव आने लगा। उसका चेहरा लाल हो गया, आँखें चमक उठीं, होंठ काँपने लगे। वह बूढ़ा शराबी बड़बड़ाता रहा, उसे कुछ भी नज़र नहीं आया, जब तक कि अलेयोशा के साथ कुछ बहुत ही अजीब नहीं हुआ। ठीक वही जो वह उस पागल औरत के बारे में बता रहा था, अचानक अलेयोशा के साथ दोहराया गया। वह अपनी माँ की तरह ही अपनी कुर्सी से उछल पड़ा, अपने हाथ मलने लगा, अपना चेहरा उनमें छिपा लिया और फिर कुर्सी पर गिर पड़ा, अचानक ज़ोर-ज़ोर से रोने लगा। उसकी माँ से उसकी असाधारण समानता ने उस बूढ़े आदमी को विशेष रूप से प्रभावित किया। "इवान, इवान! जल्दी पानी दो! यह बिल्कुल उसके जैसी है, जैसी वह पहले हुआ करती थी।"

उसकी माँ। उस पर अपने मुँह से थोड़ा पानी छिड़क दो, मैं उसके साथ यही किया करता था। वह अपनी माँ को लेकर परेशान है, अपनी माँ को लेकर," उसने इवान से बुदबुदाते हुए कहा।

"लेकिन मुझे लगता है कि वह मेरी भी माँ थी, उसकी माँ। क्या वह नहीं थी?"

इवान अनियंत्रित क्रोध और घृणा से भर उठा। बूढ़ा आदमी उसकी चमकती आँखों के सामने सहम गया। लेकिन कुछ बहुत ही अजीब हुआ, हालांकि केवल एक पल के लिए; ऐसा लगा जैसे बूढ़े आदमी के दिमाग से यह बात निकल ही गई हो कि अलेयोशा की माँ वास्तव में इवान की भी माँ थी।

"तुम्हारी माँ?" वह समझ न पाने के कारण बुदबुदाया। "तुम्हारा क्या मतलब है?"

तुम किस माँ की बात कर रहे हो? क्या वो थी? . . . अरे यार! वो तुम्हारी भी तो थी! धिक्कार है! मेरा दिमाग इतना अंधकारमय कभी नहीं हुआ। माफ करना, मैं सोच रहा था, इवान . . . ही, ही, ही!" वो रुक गया। उसके चेहरे पर एक चौड़ी, नशे में धुत, अधूरी सी मुस्कान फैल गई।

उसी क्षण हॉल में एक भयानक शोर और कोलाहल सुनाई दिया, वहाँ

तेज चीख-पुकार मची, दरवाजा जोर से खुला और दिमित्री कमरे में घुस आया। बूढ़ा आदमी दहशत में इवान की ओर भागा।

“वह मुझे मार डालेगा! वह मुझे मार डालेगा! उसे मुझ तक पहुँचने मत दो!” वह चिल्लाया।
इवान के कोट के निचले हिस्से से चिपकी हुई।

अध्याय 9

कामुकतावादी

ग्रिगोरी और स्मरद्याकोव दिमित्री के पीछे कमरे में दौड़े। वे गलियारे में उससे हाथापाई कर रहे थे और उसे अंदर आने से मना कर रहे थे, क्योंकि उन्हें कुछ दिन पहले फ्योदोर पावलोविच ने निर्देश दिए थे। दिमित्री के कमरे में प्रवेश करते ही एक पल के लिए रुककर चारों ओर देखने का फायदा उठाते हुए, ग्रिगोरी मेज के चारों ओर दौड़ा, कमरे के दूसरी तरफ के भीतरी कमरों की ओर जाने वाले दोहरे दरवाजे बंद कर दिए और बंद दरवाजों के सामने खड़ा हो गया, अपनी बाहें फैलाकर, मानो अपने खून की आखिरी बूंद तक प्रवेश द्वार की रक्षा करने के लिए तैयार हो। यह देखकर दिमित्री ने चीखने के बजाय एक कराह निकाली और ग्रिगोरी पर झपटा।
“तो वो वहीं है! वो वहीं छिपी है! हट जा, बदमाश!” उसने ग्रिगोरी को खींचकर ले जाने की कोशिश की, लेकिन बूढ़े नौकर ने उसे पीछे धकेल दिया।
क्रोध से बेकाबू होकर दिमित्री ने हाथ बढ़ाया और पूरी ताकत से ग्रिगोरी पर प्रहार किया। बूढ़ा आदमी लकड़ी के लट्ठे की तरह गिर पड़ा और दिमित्री उसके ऊपर से कूदकर दरवाजा तोड़कर अंदर घुस गया।
स्मरद्याकोव कमरे के दूसरे छोर पर पीला पड़ा कांपता हुआ, फ्योदोर पावलोविच के पास दुबका खड़ा रहा।
“वह यहाँ है!” दिमित्री चिल्लाया। “मैंने उसे अभी-अभी घर की ओर मुड़ते हुए देखा।”
अभी, लेकिन मैं उसे पकड़ नहीं पाया। वह कहाँ है? वह कहाँ है?
“वह यहाँ है!” की उस चीख ने फ्योडोर पर अवर्णनीय प्रभाव डाला।
पावलोविच। उसका सारा डर खत्म हो गया।
“उसे पकड़ो! उसे पकड़ो!” वह चिल्लाया और दिमित्री के पीछे दौड़ पड़ा।
ग्रिगोरी फर्श से उठ गया था, लेकिन अब भी स्तब्ध लग रहा था। इवान और अलेयोशा अपने पिता के पीछे दौड़े। तीसरे कमरे में किसी चीज़ के ज़ोरदार गिरने की आवाज़ सुनाई दी: यह संगमरमर के चबूतरे पर रखा एक बड़ा सा कांच का फूलदान था—जो महंगा नहीं था—जिसे दिमित्री ने दौड़ते हुए गिरा दिया था।
“उस पर हमला करो!” बूढ़े आदमी ने चिल्लाकर कहा। “मदद करो!”
इवान और अलेयोशा ने बूढ़े आदमी को पकड़ लिया और उसे जबरदस्ती अपने साथ ले जा रहे थे।
पीछे।
“तुम उसके पीछे क्यों भाग रहे हो? वो तो तुम्हें जान से मार देगा,” इवान चिल्लाया।
उसने अपने पिता पर क्रोधित होकर देखा।
“इवान! अलेयोशा! वह यहीं होगी। ग्रुशेंका यहीं है। उसने कहा कि उसने उसे खुद भागते हुए देखा था।”
वह घबरा रहा था। उस समय उसे ग्रुशेंका के आने की उम्मीद नहीं थी, और
उसके यहाँ होने की अचानक मिली खबर ने उसे बेकाबू कर दिया। वह बुरी तरह कांप रहा था। वह व्याकुल लग रहा था।
“लेकिन तुमने खुद देख लिया है कि वह नहीं आई है,” इवान चिल्लाया। “हो सकता है वह दूसरे प्रवेश द्वार से आई हो।”
“तुम्हें पता है कि वह प्रवेश द्वार बंद है, और चाबी तुम्हारे पास है।” दिमित्री अचानक ड्राइंग रूम में प्रकट हुआ। वह, ज़ाहिर है,
दूसरा प्रवेश द्वार बंद मिला, और चाबी वास्तव में फ्योदोर पावलोविच की जेब में थी। सभी कमरों की खिड़कियाँ भी बंद थीं, इसलिए ग्रुशेंका न तो कहीं से अंदर आ सकती थी और न ही कहीं से बाहर भाग सकती थी।
"उसे पकड़ो!" फ्योदोर पावलोविच ने उसे दोबारा देखते ही चीख मारी।
“वह मेरे बेडरूम से पैसे चुरा रहा है।” इवान से खुद को छुड़ाकर वह फिर दिमित्री की ओर दौड़ा। लेकिन दिमित्री ने दोनों हाथ ऊपर उठाए और अचानक बूढ़े आदमी के कनपटी पर बचे बालों के दो गुच्छों को पकड़कर खींचा और उसे ज़मीन पर पटक दिया। उसने एड़ी से उसके चेहरे पर दो-तीन बार लात मारी। बूढ़ा

आदमी चीख उठा। इवान, हालांकि दिमित्री जितना ताकतवर नहीं था, उसने अपनी बाहों में उसे भर लिया और पूरी ताकत से उसे खींचकर दूर कर दिया। अलेयोशा ने अपनी कमज़ोर ताकत से दिमित्री को आगे पकड़े हुए उसकी मदद की।
“पागल! तुमने उसे मार डाला!” इवान चिल्लाया।
“उसे यही मिलना चाहिए था!” दिमित्री हांफते हुए चिल्लाया। “अगर मैंने उसे नहीं मारा होता,
मैं फिर आऊंगा और उसे मार डालूंगा। तुम उसकी रक्षा नहीं कर सकते!
“दिमित्री! तुरंत चले जाओ!” अलेयोशा ने आदेशात्मक स्वर में कहा। “एलेक्सी! तुम बताओ। मैं सिर्फ तुम्हारी बात पर विश्वास कर सकता हूँ; क्या वह अभी-अभी यहाँ थी?”
अभी या नहीं? मैंने खुद उसे गली से बाड़ के पास से रेंगते हुए आते देखा। मैंने चिल्लाया, तो वह भाग गई।
"मैं कसम खाता हूँ कि वह यहाँ नहीं थी, और किसी को भी उसके आने की उम्मीद नहीं थी।"
लेकिन मैंने उसे देखा था... तो वह जरूर होगी... मैं तुरंत पता लगाऊंगा कि वह कहाँ है।
अलविदा, एलेक्सी! अभी ईसप से पैसों के बारे में एक शब्द भी मत कहना। लेकिन तुरंत कैटेरिना इवानोवना के पास जाओ और उनसे कहना, ‘वह तुम्हें मेरा प्रणाम भेजते हैं!’ प्रणाम, उनका प्रणाम! बस प्रणाम और अलविदा! उन्हें सारी बात विस्तार से बताना।
इसी बीच इवान और ग्रिगोरी ने बूढ़े व्यक्ति को उठाया और उसे बिठा दिया।
एक आरामकुर्सी पर। उसका चेहरा खून से सना हुआ था, लेकिन वह होश में था और दिमित्री की चीखों को उत्सुकता से सुन रहा था। उसे अब भी लग रहा था कि ग्रुशेंका सचमुच घर में कहीं है। दिमित्री ने बाहर जाते समय उसे घृणा भरी निगाहों से देखा।
“मुझे तुम्हारा खून बहाने का कोई पछतावा नहीं है!” वह चिल्लाया। “सावधान रहो, बूढ़े आदमी,”
अपने सपने से सावधान रहो, क्योंकि मेरा भी एक सपना है। मैं तुम्हें श्राप देता हूँ और तुमसे पूरी तरह से नाता तोड़ता हूँ।
वह कमरे से बाहर भाग गया।
“वह यहीं है। वह यहीं होनी चाहिए। स्मर्ज्याकोव! स्मर्ज्याकोव!” बूढ़े आदमी ने कहा।
उसने लगभग सुनाई न देने वाली धीमी आवाज़ में हांफते हुए उंगली से उसे इशारा किया।
“नहीं, वह यहाँ नहीं है, तुम बूढ़े पागल!” इवान ने गुस्से से उस पर चिल्लाते हुए कहा।
“देखो, वो बेहोश हो रहा है! पानी लाओ! तौलिया लाओ! जल्दी करो, स्मर्ज्याकोव!”
स्मरद्याकोव पानी लेने दौड़ा। आखिरकार उन्होंने बूढ़े आदमी के कपड़े उतार दिए, और
उसे बिस्तर पर लिटा दिया गया। उन्होंने उसके सिर पर एक गीला तौलिया लपेट दिया। ब्रांडी, उसकी तीव्र भावनाओं और उसे लगी चोटों से थका हुआ, उसने आँखें बंद कर लीं और सिर तकिए पर रखते ही सो गया।
इवान और अलेयोशा ड्राइंग रूम में वापस चले गए। स्मर्ज्याकोव ने टूटे हुए फूलदान के टुकड़े हटा दिए, जबकि ग्रिगोरी मेज के पास खड़ा उदास होकर फर्श को देख रहा था।
"क्या तुम्हें भी अपने सिर पर गीली पट्टी बांधकर सो नहीं जाना चाहिए?"
अलियोशा ने उससे कहा, “हम उसका ख्याल रखेंगे। मेरे भाई ने तुम्हारे सिर पर बहुत बुरी चोट मारी है।”
“उसने मेरा अपमान किया है!” ग्रिगोरी ने उदास और स्पष्ट स्वर में कहा। “उसने न केवल तुम्हारा, बल्कि अपने पिता का भी ‘अपमान’ किया है,” इवान ने बनावटी लहजे में कहा।
मुस्कान।
“मैं उसे उसके टब में नहलाता था। उसने मेरा अपमान किया है,” ग्रिगोरी ने दोहराया। “धिक्कार है, अगर मैंने उसे दूर न खींचा होता तो शायद वह मेरी हत्या कर देता।”
“ईसप के लिए यह करना कोई बड़ी बात नहीं होगी, है ना?” इवान ने अलेयोशा से फुसफुसाते हुए कहा।
“भगवान न करे!” अलेयोशा चिल्लाया।
“वह मना क्यों करेगा?” इवान उसी फुसफुसाहट में पूछता रहा,
भयावह भाव से मुंह बनाते हुए, "एक सरीसृप दूसरे को खा जाएगा। और दोनों के लिए यही उचित होगा।"
अलोशा सिहर उठा।
“बेशक मैं उसे मरने नहीं दूंगा, जैसा मैंने अभी नहीं होने दिया। यहीं रहो।”
अलेयोशा, मैं आंगन में थोड़ी देर टहलने चलता हूँ। मेरे सिर में दर्द होने लगा है।

अलियोशा अपने पिता के शयनकक्ष में गया और उनके बिस्तर के पास पीछे की ओर बैठ गया।
लगभग एक घंटे तक स्क्रीन पर देखते रहने के बाद, बूढ़े व्यक्ति ने अचानक अपनी आँखें खोलीं और काफी देर तक अलेयोशा को निहारते रहे, मानो कुछ याद कर रहे हों या ध्यान लगा रहे हों। अचानक उनके चेहरे पर असाधारण उत्तेजना झलकने लगी।
“अलोशा,” उसने आशंका से फुसफुसाते हुए कहा, “इवान कहाँ है?”
“आंगन में है। उसे सिरदर्द है। वह पहरा दे रहा है।”
“मुझे वो दर्पण दो। वो वहाँ रखा है। मुझे दे दो।” अलेयोशा ने उसे एक छोटा गोल तह करने वाला दर्पण दिया जो वहाँ रखा था।
दराजों वाली अलमारी। बूढ़े आदमी ने उसमें खुद को देखा; उसकी नाक काफी सूजी हुई थी, और उसके माथे के बाईं ओर एक बड़ा सा गहरा लाल निशान था।
“इवान क्या कहता है? अलेयोशा, मेरे प्यारे, मेरे इकलौते बेटे, मुझे डर है...”
इवान। मुझे बाकी सबसे ज्यादा इवान से डर लगता है। तुम ही हो जिससे मुझे डर नहीं लगता...
“इवान से भी मत डरो। वह गुस्से में है, लेकिन वह तुम्हारी रक्षा करेगा।”
“अलोशा, और दूसरे का क्या हुआ? वो ग्रुशेंका भाग गया है। मेरे फ़रिश्ते, बताओ
मुझे सच बताओ, क्या वह अभी यहीं थी या नहीं?
“उसे किसी ने नहीं देखा। यह एक गलती थी। वह यहाँ नहीं थी।”
"तुम्हें पता है कि मित्या उससे शादी करना चाहता है, उससे शादी करना चाहता है।"
वह उससे शादी नहीं करेगी।
“वह नहीं मानेगी। वह नहीं मानेगी। वह नहीं मानेगी। वह किसी भी कीमत पर नहीं मानेगी!” बूढ़ा आदमी खुशी से झूम उठा, मानो उसे और कुछ चाहिए ही न।
उसे दिलासा दिया जा सकता था। खुशी से झूमते हुए उसने अलेयोशा का हाथ पकड़ा और उसे प्यार से अपने दिल से लगा लिया। उसकी आँखों में आँसू चमक रहे थे।
“ईश्वर की माता की वह छवि जिसके बारे में मैं अभी आपको बता रहा था,”
उन्होंने कहा, “इसे घर ले जाओ और अपने पास रखो। और मैं तुम्हें मठ वापस जाने दूंगा... मैं आज सुबह मजाक कर रहा था, मुझसे नाराज़ मत हो। मेरा सिर दुख रहा है, अलेयोशा... अलेयोशा, मेरे दिल को तसल्ली दो। फ़रिश्ता बनो और मुझे सच बताओ!”
“तुम अब भी यही पूछ रहे हो कि वह यहाँ आई थी या नहीं?” अलेयोशा ने कहा।
दुःखपूर्वक।
नहीं, नहीं, नहीं। मुझे आप पर विश्वास है। मैं आपको बताता हूँ: आप ग्रुशेंका के पास जाइए।
या तो खुद जाकर, या किसी तरह उससे मिलो; जल्दी करो और उससे पूछो; खुद देख लो कि वह किसे चुनना चाहती है, उसे या मुझे। क्या? क्या? क्या तुम देख सकते हो?
“अगर मैं उसे देखूंगा तो उससे पूछूंगा,” अलेयोशा शर्मिंदा होकर बुदबुदाया। “नहीं, वह तुम्हें नहीं बताएगी,” बूढ़े आदमी ने बीच में ही टोकते हुए कहा, “वह बदमाश है। वह...”
वो तुम्हें चूमना शुरू कर देगी और कहेगी कि वो सिर्फ तुम्हें चाहती है। वो धोखेबाज, बेशर्म औरत है। तुम्हें उसके पास नहीं जाना चाहिए, बिलकुल नहीं!
"नहीं, पिताजी, और यह उचित नहीं होगा, यह बिल्कुल भी सही नहीं होगा।"
“वह अभी तुम्हें कहाँ भेज रहा था? भागते हुए उसने ‘जाओ’ चिल्लाया।”
“कैटरीना इवानोवना को।”
“पैसों के लिए? उससे पैसे मांगने के लिए?”
नहीं। पैसों के लिए नहीं।
“उसके पास कोई पैसा नहीं है; एक पैसा भी नहीं। मैं आज रात आराम करूंगा और सोचूंगा।”
सब कुछ खत्म हो गया है, अब तुम जा सकते हो। शायद तुम उससे मिल जाओ... बस कल सुबह मुझसे मिलने ज़रूर आना। ज़रूर आना। मुझे तुमसे कल कुछ कहना है। क्या तुम आओगे?
"हाँ।"
जब आप आएं, तो ऐसा दिखावा करें कि आप अपनी मर्जी से हालचाल पूछने आए हैं।

मुझे। किसी को मत बताना कि मैंने तुम्हें ऐसा करने को कहा है। इवान से एक शब्द भी मत कहना।
"अचे से।"
अलविदा, मेरी परी। तुमने अभी-अभी मेरा साथ दिया। मैं तुम्हें कभी नहीं भूल पाऊँगी।
इसे भूल जाओ। मुझे कल तुमसे कुछ कहना है—लेकिन मुझे इसके बारे में सोचना होगा।
और अब आपको कैसा लग रहा है?
“मैं कल उठूंगा और बाहर जाऊंगा, बिल्कुल ठीक, बिल्कुल ठीक!” आंगन पार करते हुए अलेयोशा ने इवान को बेंच पर बैठे हुए पाया।
द्वार। वह अपनी नोटबुक में पेंसिल से कुछ लिख रहा था। अलेयोशा ने इवान को बताया कि उनके पिता जाग गए थे, होश में थे और उन्होंने उसे मठ में वापस सोने दिया था।
“अलोशा, मुझे कल सुबह आपसे मिलकर बहुत खुशी होगी,” उसने कहा।
इवान विनम्रतापूर्वक खड़ा हो गया। उसकी यह विनम्रता अलेयोशा के लिए पूरी तरह से आश्चर्यजनक थी।
“मैं कल होहलकोव के घर पर रहूंगा,” अलेयोशा ने उत्तर दिया, “हो सकता है मैं
अगर मुझे अभी कैटरीना इवानोव्ना नहीं मिलीं, तो मैं उनके घर भी जाऊंगी।
लेकिन अब तो तुम उसके पास जा ही रहे हो, है ना? उस ‘तारीफ और
"अलविदा," इवान ने मुस्कुराते हुए कहा। अलेयोशा परेशान हो गया।
मुझे लगता है कि अब मैं उसकी बातों को पूरी तरह समझ गया हूँ, और उसका कुछ हिस्सा
वह पहले ही जा चुका है। दिमित्री ने तुमसे कहा है कि तुम उसके पास जाओ और कहो कि वह—असल में—उससे विदा ले रहा है?
"भाई, पिता और दिमित्री के बीच इस सारी भयावहता का अंत कैसे होगा?"
अलेयोशा ने हैरानी से कहा।
“पक्का नहीं कहा जा सकता। शायद कुछ भी नहीं: सब कुछ खत्म हो सकता है।
औरत तो जानवर है। किसी भी हालत में हमें बूढ़े आदमी को घर के अंदर ही रखना चाहिए और दिमित्री को घर में नहीं आने देना चाहिए।
भाई, मुझे एक और बात पूछने दो: क्या किसी पुरुष को दूसरे को देखने का अधिकार है?
पुरुषों में से कौन जीने के योग्य है, यह तय करना है?
योग्यता का प्रश्न क्यों उठाएं? यह मामला अक्सर सुलझ जाता है।
अन्य अधिक स्वाभाविक कारणों से मनुष्यों के हृदयों में यह भावना उत्पन्न होती है। और अधिकारों की बात करें तो, इच्छा करने का अधिकार किसे नहीं है?
“किसी दूसरे व्यक्ति की मृत्यु के लिए नहीं?”
“अगर किसी दूसरे आदमी की मौत हो जाए तो क्या? खुद से झूठ क्यों बोलना, जबकि सभी मनुष्य
हम ऐसे ही जीते हैं और शायद जीने से बच भी नहीं सकते। क्या आप मेरी अभी कही बात का जिक्र कर रहे हैं —कि एक सरीसृप दूसरे को खा जाएगा? अगर ऐसा है तो मुझे आपसे पूछना है, क्या आप मुझे दिमित्री की तरह ईसप का खून बहाने, उसकी हत्या करने में सक्षम समझते हैं?
“इवान, तुम क्या कह रहे हो? ऐसा विचार मेरे मन में कभी आया ही नहीं। मैं
मुझे नहीं लगता कि दिमित्री भी ऐसा कर पाएगा।
“धन्यवाद, केवल इसी के लिए,” इवान मुस्कुराया। “निश्चित रूप से, मुझे हमेशा रक्षा करनी चाहिए।”
“लेकिन इस मामले में मैं अपनी इच्छा से पूरी छूट रखता हूँ। कल तक के लिए अलविदा। मुझे दोषी मत ठहराना, और मुझे खलनायक मत समझना,” उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा।
उन्होंने पहले कभी न किए गए तरीके से गर्मजोशी से हाथ मिलाया। अलेयोशा को लगा
कि उसके भाई ने ही उसकी ओर पहला कदम बढ़ाया था, और उसने निश्चित रूप से किसी खास मकसद से ऐसा किया था।

अध्याय 10

दोनों एकसाथ

अलेयोशा अपने पिता के घर से निकलते समय पहले से भी ज़्यादा थका हुआ और निराश महसूस कर रहा था। उसका मन भी चकनाचूर और अस्त-व्यस्त लग रहा था, और उसे दिन भर के कष्टदायक और विरोधाभासी अनुभवों के बिखरे हुए टुकड़ों को जोड़कर कोई निष्कर्ष निकालने में डर लग रहा था। उसे निराशा की एक ऐसी अनुभूति हो रही थी, जो उसने पहले कभी नहीं की थी। सबसे बड़ा सवाल, जो एक पहाड़ की तरह खड़ा था, उसके सामने था: उसके पिता और उसके भाई दिमित्री का इस भयानक स्त्री के साथ क्या अंत होगा? वह स्वयं इसका गवाह था, वह वहाँ मौजूद था और उसने उन्हें आमने-सामने देखा था। फिर भी, केवल उसका भाई दिमित्री ही दुखी हो सकता था, बुरी तरह से, पूरी तरह से दुखी: उसके लिए मुसीबत इंतज़ार कर रही थी। ऐसा प्रतीत हो रहा था कि अन्य लोग भी इसमें शामिल थे, जितना अलेयोशा ने पहले सोचा भी नहीं था। इसमें कुछ रहस्यमय भी था। इवान ने उसकी ओर कदम बढ़ाया था, जिसकी अलेयोशा लंबे समय से इच्छा कर रहा था। फिर भी, अब उसे किसी कारण से डर लग रहा था। और ये औरतें? आश्चर्य की बात है कि उस सुबह वह कैटेरिना इवानोव्ना के घर अत्यंत झिझक के साथ निकला था; अब उसे ऐसा कुछ भी महसूस नहीं हो रहा था। इसके विपरीत, वह वहाँ ऐसे जल्दी पहुँच रहा था मानो उससे मार्गदर्शन की उम्मीद कर रहा हो। फिर भी, उसे यह संदेश देना पहले से कहीं अधिक कठिन था। तीन हज़ार का मामला अपरिवर्तनीय रूप से तय हो चुका था, और दिमित्री, खुद को अपमानित और अपनी आखिरी उम्मीद खोता हुआ महसूस करते हुए, किसी भी हद तक गिर सकता था। इसके अलावा, उसने उसे कैटेरिना इवानोव्ना को अपने पिता के साथ अभी-अभी घटी घटना का वर्णन करने के लिए कहा था।

अब सात बज चुके थे और अंधेरा होने लगा था जब अलेयोशा अंदर आया।

हाई स्ट्रीट में स्थित विशाल और सुविधाजनक घर में कैटेरिना इवानोव्ना रहती थीं। अलेयोशा जानती थीं कि वह अपनी दो चाचियों के साथ रहती थीं। उनमें से एक, कम पढ़ी-लिखी महिला, उनकी सौतेली बहन अगाफ्या इवानोव्ना की चाची थीं, जिन्होंने बोर्डिंग स्कूल से आने के बाद उनके पिता के घर में उनकी देखभाल की थी। दूसरी चाची मॉस्को की एक संभ्रांत और प्रतिष्ठित महिला थीं, हालांकि उनकी आर्थिक स्थिति तंग थी। कहा जाता था कि वे दोनों कैटेरिना इवानोव्ना के सामने हर बात मानती थीं और उन्हें केवल संरक्षक के रूप में अपने साथ रखती थीं। कैटेरिना इवानोव्ना स्वयं किसी के सामने नहीं झुकती थीं, सिवाय अपनी उपकारिका, जनरल की विधवा के, जो बीमारी के कारण मॉस्को में ही रह रही थीं और जिन्हें वह सप्ताह में दो बार अपने सभी कार्यों का पूरा विवरण लिखकर भेजने के लिए बाध्य थीं।

जब अलेयोशा ने हॉल में प्रवेश किया और नौकरानी से पूछा तो उसने दरवाजा खोल दिया।

उसका नाम लेने से स्पष्ट था कि उन्हें उसके आने की सूचना पहले से ही थी। संभवतः खिड़की से उसे देख लिया गया था। कम से कम, अलेयोशा ने एक आवाज़ सुनी, भागते कदमों की आहट और सरसराते कपड़ों की आवाज़ सुनी। शायद दो या तीन औरतें कमरे से बाहर भागी थीं।

अलोशा को यह बात अजीब लगी कि उसके आने से इतनी हलचल मच गई।

उन्हें तुरंत ड्राइंग रूम में ले जाया गया। यह एक बड़ा कमरा था, जो सुरुचिपूर्ण और भरपूर फर्नीचर से सजा हुआ था, बिल्कुल भी देहाती शैली का नहीं था। इसमें कई सोफे, लाउंज, सेटियां, बड़ी और छोटी मेजें थीं। दीवारों पर चित्र लगे थे, मेजों पर फूलदान और दीपक थे, ढेर सारे फूल थे, और खिड़की में एक मछलीघर भी था। शाम का समय था और काफी अंधेरा था। अलेयोशा ने सोफे पर एक रेशमी चादर बिछी देखी, जिस पर जाहिर तौर पर अभी-अभी लोग बैठे थे; और सोफे के सामने वाली मेज पर चॉकलेट के दो अधूरे कप, केक, नीली किशमिश से भरी एक कांच की तश्तरी और मिठाई से भरी एक और तश्तरी रखी थी। अलेयोशा ने देखा कि उन्होंने मेहमानों को परेशान किया है, और उनका चेहरा उतर गया। लेकिन उसी क्षण पर्दा उठा, और तेज कदमों से कैटेरिना इवानोवना अंदर आईं, खुशी की एक चमकती मुस्कान के साथ अलेयोशा की ओर दोनों हाथ बढ़ाते हुए। उसी क्षण एक नौकर दो जलती हुई मोमबत्तियां लाया और उन्हें मेज पर रख दिया।

भगवान का शुक्र है! आखिरकार तुम भी आ गए! मैं तो बस प्रार्थना ही कर रहा था।
तुम सारा दिन यहीं रहो! बैठ जाओ।
अलेयोशा, कैटरीना इवानोव्ना की सुंदरता पर मोहित हो गया था, जब तीन
कुछ सप्ताह पहले, दिमित्री, कैटेरिना इवानोव्ना के विशेष अनुरोध पर, अलेयोशा को उनसे मिलवाने के लिए लाया था। हालाँकि, उस मुलाकात में उन दोनों के बीच कोई बातचीत नहीं हुई थी। अलेयोशा को बहुत शर्मीला समझकर, कैटेरिना इवानोव्ना ने उसे समय देने के लिए दिमित्री से लगातार बात की थी। अलेयोशा चुप रहा, लेकिन उसने बहुत कुछ स्पष्ट रूप से देखा था। वह उस अभिमानी लड़की के दबंग स्वभाव, गर्व और आत्मविश्वास से प्रभावित हुआ था। और यह निश्चित था कि अलेयोशा को लगा कि वह इसे बढ़ा-चढ़ाकर नहीं कह रहा है। उसने सोचा कि उसकी बड़ी, चमकती काली आँखें बहुत सुंदर थीं, खासकर उसके पीले, बल्कि कुछ हद तक पीले, लंबे चेहरे के साथ। लेकिन उन आँखों में और उसके सुंदर होठों की रेखाओं में कुछ ऐसा था जिससे उसका भाई शायद बेतहाशा प्यार कर बैठे, लेकिन शायद यह प्यार लंबे समय तक टिक न पाए। उसने यह विचार दिमित्री को लगभग स्पष्ट रूप से तब बताया जब मुलाकात के बाद उसके भाई ने उससे विनती की और ज़ोर देकर कहा कि वह अपनी मंगेतर को देखकर अपने भावों को न छिपाए।
"आप उसके साथ खुश रहेंगे, लेकिन शायद—पूरी तरह से शांत और खुश नहीं होंगे।"
बिल्कुल सही कहा भाई। ऐसे लोग हमेशा एक जैसे ही रहते हैं। वे बदलते नहीं हैं।
भाग्य के आगे झुक जाओ। तो तुम्हें लगता है कि मैं उससे हमेशा प्यार नहीं करूंगा?
नहीं; शायद तुम उससे हमेशा प्यार करोगे। लेकिन शायद हमेशा नहीं।
उसके साथ खुश रहो।
उस समय अलेयोशा ने शरमाते हुए और गुस्से में अपनी राय दी थी।
अपने भाई की विनतियों के आगे झुककर ऐसे "मूर्खतापूर्ण" विचारों को शब्दों में व्यक्त करने के लिए वह स्वयं को क्षमा चाहता था। क्योंकि अपने इस विचार को बोलते ही उसे यह अत्यंत मूर्खतापूर्ण प्रतीत हुआ। एक स्त्री के बारे में इतना आत्मविश्वासपूर्ण मत देने पर उसे शर्म भी आ रही थी। कैटेरिना इवानोव्ना को पहली ही नज़र में देखकर, जब वह दौड़कर उसके पास आई, तो उसे और भी आश्चर्य हुआ कि शायद वह पूरी तरह से गलत था। इस बार उसका चेहरा सहज दयालुता और सीधे-सादे, सच्चे दिल से निकली ईमानदारी से दमक रहा था। वह "अभिमान और घमंड," जिसने अलेयोशा को पहले बहुत प्रभावित किया था, अब केवल एक स्पष्ट, उदार ऊर्जा और स्वयं पर एक प्रकार के उज्ज्वल, दृढ़ विश्वास में प्रकट हुआ था। अलेयोशा ने पहली ही नज़र में, पहले ही शब्द में, यह समझ लिया कि जिस पुरुष से वह इतना प्रेम करती थी, उसके साथ उसकी स्थिति की सारी त्रासदी उससे छिपी नहीं थी; कि शायद वह पहले से ही सब कुछ जानती थी, बिल्कुल सब कुछ। और फिर भी, इसके बावजूद, उसके चेहरे पर ऐसी चमक थी, भविष्य के प्रति ऐसा विश्वास था। अलेयोशा को तुरंत एहसास हुआ कि उसने अपने विचारों में उसके साथ बहुत बड़ा अन्याय किया है। वह पल भर में ही उस पर मोहित हो गया। इन सबके अलावा, उसने उसके पहले शब्दों में ही देखा कि वह बहुत उत्तेजित थी, शायद असाधारण उत्तेजना और लगभग परमानंद की अवस्था में।
मैं आपसे मिलने के लिए बहुत उत्सुक था, क्योंकि मैं आपसे पूरी सच्चाई जान सकता हूँ।
—सिर्फ आपसे, किसी और से नहीं।"
"मैं आ गया हूँ," अलेयोशा ने उलझन में बुदबुदाते हुए कहा, "मैं—उसने मुझे भेजा है।"
"अरे, उसने तुम्हें भेजा! मुझे इसका पूर्वाभास था। अब मुझे सब कुछ पता है—सब कुछ!"
कैटरीना इवानोवना ने गुस्से से भरी आँखों से कहा, "एक पल रुकिए, एलेक्सी फ्योदोरोविच, मैं आपको बताती हूँ कि मैं आपसे मिलने के लिए इतनी बेताब क्यों थी। देखिए, मैं शायद आपसे कहीं ज़्यादा जानती हूँ, और आपको मुझे कुछ भी बताने की ज़रूरत नहीं है। मैं आपको बताती हूँ कि मुझे आपसे क्या चाहिए। मैं उनके बारे में आपकी आखिरी राय जानना चाहती हूँ। मैं चाहती हूँ कि आप मुझे सीधे-सीधे, स्पष्ट रूप से, यहाँ तक कि बेबाकी से भी (जितनी बेबाकी से आप चाहें!), बताएँ कि आज उनसे मुलाकात के बाद आपने उनके बारे में और उनकी स्थिति के बारे में क्या सोचा। शायद यह उनसे व्यक्तिगत रूप से बात करने से बेहतर होगा, क्योंकि वह मुझसे मिलना नहीं चाहते। क्या आप समझ रहे हैं कि मुझे आपसे क्या चाहिए? अब, मुझे सीधे-सीधे बताइए, मुझे उस संदेश का हर एक शब्द बताइए जो उन्होंने आपको भेजा था (मुझे पता था कि वह आपको संदेश भेजेंगे)।"

उन्होंने मुझसे कहा कि मैं आपको उनकी शुभकामनाएं दूं—और यह भी कहूँ कि वे ऐसा करेंगे।
फिर कभी नहीं आएगा—सिर्फ आपको अपनी शुभकामनाएं देने के लिए।
“उनकी तारीफें? क्या उन्होंने यही कहा था—क्या ये उनकी अपनी अभिव्यक्ति थी?”
"हाँ।"
"शायद अनजाने में उसने शब्द में गलती कर दी हो, शायद उसने जानबूझकर गलती की हो।"
क्या आपने सही शब्द का प्रयोग नहीं किया?
नहीं; उसने मुझे ठीक-ठीक वही शब्द दोहराने को कहा था। उसने मुझसे दो या दो बार विनती की थी।
तीन बार ऐसा कहना न भूलें।"
कैटेरिना इवानोवना का चेहरा शर्म से लाल हो गया।
“अब मेरी मदद करो, एलेक्सी फ्योदोरोविच। मुझे सचमुच तुम्हारी मदद की ज़रूरत है। मैं
मैं आपको अपनी राय बताऊँगा, और आपको बस इतना कहना है कि यह सही है या गलत। सुनो! अगर
उसने मुझे ये तारीफें यूँ ही भेज दी होतीं, बिना आपसे उन शब्दों को दोहराने पर ज़ोर दिए, बिना उन पर बल
दिए, तो बात यहीं खत्म हो जाती! लेकिन अगर उसने उन शब्दों पर खास ज़ोर दिया, अगर उसने खास तौर
पर आपसे कहा कि मुझे ये शब्द दोहराना न भूलें, तो शायद वह बहुत उत्साहित था, बेकाबू था। उसने अपना
फैसला कर लिया था और उसे लेकर डरा हुआ था। वह मुझसे दृढ़ कदमों से नहीं जा रहा था, बल्कि बेतहाशा
छलांग लगा रहा था। उस वाक्य पर ज़ोर देना शायद महज़ दिखावा था।
“हां, हां!” अलेयोशा ने उत्साह से कहा। “मुझे लगता है कि यही सही है।”
और अगर ऐसा है, तो वह पूरी तरह से खोया नहीं है। मैं अब भी उसे बचा सकता हूँ। रुको! क्या उसने
मैं आपको पैसों के बारे में कुछ नहीं बताऊँगा—लगभग तीन हजार रूबल के बारे में?”
उन्होंने इसके बारे में बात की थी, और यही बात सबसे ज्यादा दुखद है।
“उसने कहा कि उसने अपनी इज्जत खो दी है और अब कुछ भी मायने नहीं रखता,” अलेयोशा ने गर्मजोशी से
जवाब दिया, उसके दिल में उम्मीद की एक लहर दौड़ गई और उसे विश्वास हो गया कि शायद उसके भाई के
लिए बचने और मुक्ति पाने का कोई रास्ता हो। “लेकिन क्या तुम्हें पैसों के बारे में पता है?” उसने पूछा और
अचानक रुक गया।
मुझे इसके बारे में काफी समय से पता था; मैंने पूछताछ करने के लिए मॉस्को को टेलीग्राम भेजा था, और
बहुत पहले ही पता चला था कि पैसे नहीं आए। उसने पैसे भेजे ही नहीं थे, पर मैंने कुछ नहीं कहा। पिछले
हफ्ते मुझे पता चला कि उसे अभी भी पैसों की ज़रूरत है। मेरा बस यही मकसद था कि उसे पता चले कि
उसे किससे मदद मांगनी चाहिए और उसका सच्चा दोस्त कौन है। नहीं, वह यह नहीं मानता कि मैं उसकी
सच्ची दोस्त हूँ; वह मुझे पहचानता ही नहीं और मुझे महज़ एक औरत समझता है। मैं पूरे हफ्ते परेशान रही,
यह सोचकर कि उसे तीन हज़ार खर्च करने के बाद मुझसे मिलने में शर्मिंदगी महसूस करने से कैसे रोकूँ।
उसे खुद पर शर्म आनी चाहिए, उसे दूसरों के जानने पर शर्म आनी चाहिए, पर मेरे जानने पर नहीं। वह बिना
शर्म के भगवान को सब कुछ बता सकता है। आखिर वह अब भी क्यों नहीं समझता कि मैं उसके लिए
कितना कुछ सहने को तैयार हूँ? क्यों, क्यों वह मुझे नहीं पहचानता? इतना सब होने के बाद भी उसकी हिम्मत
कैसे हुई मुझे न पहचानने की? मैं उसे हमेशा के लिए बचाना चाहती हूँ। वह मुझे अपनी मंगेतर के रूप में भूल
जाए। और यहाँ उसे डर है कि मेरी नज़रों में उसकी बेइज्ज़ती हो गई है। अरे, एलेक्सी फ्योदोरोविच, वह तो
आपके साथ खुलकर बात करने से डरते नहीं थे। फिर मुझे वही सम्मान क्यों नहीं मिलना चाहिए?
उसके आखिरी शब्द आँसुओं में डूबे हुए थे। उसकी आँखों से आँसू बह रहे थे। "मुझे तुम्हें बताना ही होगा,"
अलेयोशा ने काँपती आवाज़ में कहना शुरू किया, "क्या
अभी-अभी उसके और मेरे पिता के बीच कुछ हुआ।
और उसने पूरे दृश्य का वर्णन किया, कि कैसे दिमित्री ने उसे कुछ लाने के लिए भेजा था।
उसने बताया कि कैसे उसने घर में घुसकर अपने पिता को धक्का दिया और उसके बाद फिर से विशेष रूप
से और ज़ोर देकर उनसे अपनी शुभकामनाएँ स्वीकार करने और विदा लेने की विनती की। "वह उस औरत
के पास गया," अलेयोशा ने धीरे से कहा।
“और क्या आपको लगता है कि मैं उस औरत को बर्दाश्त नहीं कर सकता? क्या वह

क्या आपको लगता है कि मैं नहीं कर सकती? लेकिन वह उससे शादी नहीं करेगा," वह अचानक घबराकर हंस पड़ी। "क्या करामाज़ोव परिवार में ऐसा जुनून हमेशा के लिए रह सकता है? यह जुनून है, प्यार नहीं। वह उससे शादी नहीं करेगा क्योंकि वह उससे शादी नहीं करेगी।" एक बार फिर कैटेरिना इवानोवना अजीब तरह से हंस पड़ी।
"हो सकता है वो उससे शादी कर ले," अलेयोशा ने उदास स्वर में नीचे देखते हुए कहा। "वो उससे शादी नहीं करेगा, मैं तुम्हें बता रहा हूँ। वो लड़की तो फरिश्ता है। क्या तुम जानते हो?"
"क्या आप जानते हैं?" कैटेरिना इवानोव्ना ने अचानक असाधारण स्नेह से कहा। "वह सबसे अद्भुत प्राणियों में से एक है। मैं जानती हूँ कि वह कितनी मोहक है, लेकिन मैं यह भी जानती हूँ कि वह दयालु, दृढ़ और नेक है। एलेक्सी फ्योदोरोविच, आप मुझे इस तरह क्यों देख रहे हैं? शायद आप मेरी बातों पर आश्चर्य कर रहे हैं, शायद आपको मुझ पर विश्वास नहीं हो रहा है? अग्राफेना अलेक्जेंड्रोव्ना, मेरी परी!" उसने अचानक किसी को पुकारा, बगल के कमरे में झाँकते हुए, "हमारे पास आइए। यह एक मित्र है। यह अलेयोशा है। वह हमारे सभी मामलों के बारे में जानता है। खुद को उससे मिलिए।"
"मैं तो बस पर्दे के पीछे से आपके फोन का इंतजार कर रहा था," एक ने कहा।
कोमल, बल्कि मधुर, स्त्री जैसी आवाज।
पर्दा उठाया गया और ग्रुशेंका खुद मुस्कुराती और दमकती हुई दिखाई दीं।
वह मेज के पास आई। अलेयोशा के मन में तीव्र घृणा उत्पन्न हुई। उसने अपनी निगाहें उस पर टिका दीं और उनसे हटा नहीं सका। वह आ गई थी, वही भयानक स्त्री, जिसे इवान ने आधे घंटे पहले "जानवर" कहा था। फिर भी, उसके सामने खड़ी वह स्त्री अत्यंत सरल और साधारण लग रही थी, एक नेक दिल, दयालु स्त्री, बेशक सुंदर, लेकिन अन्य सुंदर साधारण स्त्रियों जैसी! यह सच है कि वह बेहद खूबसूरत थी, उस रूसी सुंदरता के साथ जिसे कई पुरुष दिल से प्यार करते थे। वह काफी लंबी थी, हालांकि असाधारण रूप से लंबी कैटेरिना इवानोव्ना से थोड़ी छोटी थी। उसका शरीर सुडौल था, उसकी चाल-ढाल कोमल, मानो खामोश, थी, उसकी आवाज की तरह ही एक अजीब सी मिठास से भरी हुई। वह कैटेरिना इवानोव्ना की तरह जोरदार, साहसी कदमों से नहीं चलती थी, बल्कि खामोशी से चलती थी। उसके पैरों से ज़मीन पर बिल्कुल भी आवाज़ नहीं आती थी। वह धीरे से एक नीची कुर्सी पर बैठ गई, उसकी शानदार काली रेशमी पोशाक धीरे से सरसरा उठी, और उसने अपनी दूधिया सफेद गर्दन और चौड़े कंधों को एक कीमती काले कश्मीरी शॉल में बड़े ही नाजुक ढंग से लपेट लिया। वह बाईस वर्ष की थी, और उसका चेहरा बिल्कुल उसी उम्र का लग रहा था। उसका चेहरा बेहद गोरा था, गालों पर हल्का गुलाबीपन था। उसके चेहरे की बनावट कुछ ज़्यादा ही चौड़ी थी, और निचला जबड़ा थोड़ा आगे निकला हुआ था। उसका ऊपरी होंठ पतला था, लेकिन थोड़ा उभरा हुआ निचला होंठ कम से कम दुगना भरा हुआ था, और ऐसा लग रहा था जैसे वह मुंह फुला रही हो। लेकिन उसके शानदार, घने गहरे भूरे बाल, उसकी सांवली भौहें और आकर्षक धूसर-नीली आँखें, लंबी पलकों के साथ, किसी भी उदासीन व्यक्ति को, जो सड़क पर भीड़ में उससे अचानक मिलता, उसके चेहरे को देखते ही रुक जाने और उसे लंबे समय तक याद रखने पर मजबूर कर देतीं। अलेयोशा को उसके चेहरे में सबसे ज़्यादा जो बात प्रभावित करती थी, वह थी उसकी मासूमियत भरी मासूमियत। उसकी आँखों में एक मासूमियत भरी चमक थी, एक बचकानी खुशी। वह मेज के पास आई, खुशी से झूम रही थी और बचकानी, अधीर और भरोसेमंद जिज्ञासा के साथ कुछ उम्मीद कर रही थी। उसकी आँखों की चमक ने आत्मा को प्रसन्न कर दिया —अलेयोशा ने यह महसूस किया। उसमें कुछ ऐसा भी था जिसे वह समझ नहीं पा रहा था, या परिभाषित नहीं कर पा रहा था, और जो शायद अनजाने में ही उसे प्रभावित कर रहा था। वह कोमलता, उसके शारीरिक हाव-भाव की मोहकता, बिल्ली जैसी खामोशी थी। फिर भी उसका शरीर बलवान और सुगठित था। शॉल के नीचे चौड़े कंधे, ऊँचा, अभी भी काफी लड़की जैसा सीना दिखाई दे रहा था। उसकी आकृति मिलो की वीनस की रेखाओं का आभास कराती थी, हालांकि कुछ हद तक अतिरंजित अनुपात में। यह अनुमान लगाया जा सकता था। रूसी सौंदर्य के पारखी निश्चित रूप से भविष्यवाणी कर सकते थे कि यह ताजा, अभी भी युवा सुंदरता तीस वर्ष की आयु तक अपनी समरूपता खो देगी, "फैल जाएगी"; चेहरा फूल जाएगा, और बहुत जल्द उसके माथे और आँखों के आसपास झुर्रियाँ दिखाई देंगी; रंगत खुरदरी और शायद लाल हो जाएगी— वास्तव में, यह क्षणिक सुंदरता थी, वह क्षणभंगुर सुंदरता जो अक्सर रूसी महिलाओं में देखने को मिलती है। बेशक, अलेयोशा ने इस बारे में नहीं सोचा था; हालांकि वह मोहित था, फिर भी उसे एक अप्रिय अनुभूति के

साथ, और मानो खेद के साथ, आश्चर्य हुआ कि वह इस तरह क्यों बोलती है और स्वाभाविक रूप से क्यों नहीं बोल पाती। वह ऐसा इसलिए करती थी क्योंकि उसे लगता था कि शब्दों के अतिरंजित, मधुर उतार-चढ़ाव में एक आकर्षण है। यह तो बस एक बुरी, असभ्य आदत थी जो खराब शिक्षा और शिष्टाचार के झूठे विचार को दर्शाती थी। फिर भी, बोलने का यह लहजा और तरीका अलेयोशा को उसके चेहरे के बचकाने सरल और प्रसन्न भाव, उसकी आँखों में कोमल, शिशुवत आनंद के साथ लगभग अविश्वसनीय रूप से असंगत लगा। कटेरीना इवानोवना ने तुरंत उसे अलेयोशा के सामने एक कुर्सी पर बैठाया और उसके मुस्कुराते होठों पर कई बार प्रेम से चूमा। ऐसा लग रहा था जैसे वह उससे पूरी तरह प्यार करती हो।
“हम पहली बार मिल रहे हैं, एलेक्सी फ्योदोरोविच,” उन्होंने कहा।
अत्यंत प्रसन्न होकर उसने कहा, “मैं उसे जानना चाहता था, उसे देखना चाहता था। मैं उसके पास जाना चाहता था, लेकिन जैसे ही मैंने अपनी इच्छा व्यक्त की, वह मेरे पास आ गई। मुझे पता था कि हमें सब कुछ मिलकर सुलझाना चाहिए—सब कुछ। मेरे दिल ने मुझे यही कहा—मुझसे यह कदम न उठाने की विनती की गई, लेकिन मुझे पहले से ही पता था कि यह मुश्किल से निकलने का रास्ता होगा, और मैं गलत नहीं था। ग्रुशेंका ने मुझे सब कुछ समझाया है, उसने मुझे बताया है कि वह क्या करना चाहती है। वह अच्छाई की परी की तरह यहाँ आई और हमारे लिए शांति और खुशी लेकर आई।”
“तुमने मेरा अपमान नहीं किया, प्यारी, बेहतरीन युवती,” उसने धीमी आवाज़ में कहा।
ग्रुशेंका अपनी मधुर आवाज में, उसी मनमोहक प्रसन्न मुस्कान के साथ गा रही थी।
"मुझसे इस तरह बात करने की हिम्मत मत करो, हे जादूगरनी, हे चुड़ैल! तिरस्कार!"
तुम! यहाँ, मुझे तुम्हारे निचले होंठ को एक बार फिर चूमना है। ऐसा लग रहा है जैसे यह सूजा हुआ है, और अब यह और भी सूज जाएगा, और बढ़ता ही जाएगा। देखो, एलेक्सी फ्योदोरोविच, वह कैसे हंस रही है! देवदूत को देखना मन को सुकून देता है।
अलियोशा का चेहरा लाल हो गया, और उसे हल्की-हल्की, महसूस न होने वाली कंपकंपी महसूस होने लगी। उसे।
“आप मुझे इतना महत्व देती हैं, प्रिय युवती, और शायद मैं बिल्कुल भी वैसा नहीं हूँ।”
आपकी दयालुता के योग्य।
“योग्य नहीं! वह इसके लायक नहीं है!” कैटेरिना इवानोव्ना फिर से चिल्लाई।
उसी गर्मजोशी के साथ। “आप जानते हैं, एलेक्सी फ्योदोरोविच, हम कल्पनाशील हैं, हम अपनी मर्जी पर अड़े रहते हैं, लेकिन अपने छोटे से दिल में सबसे ज्यादा गर्व महसूस करते हैं। हम नेक हैं, हम उदार हैं, एलेक्सी फ्योदोरोविच, मैं आपको बता दूं। हम बस बदकिस्मत रहे हैं। हम एक अयोग्य, शायद या चंचल आदमी के लिए हर बलिदान देने को बहुत जल्दी तैयार हो गए थे। एक आदमी था—एक, वह भी एक अधिकारी, हम उससे प्यार करते थे, हमने उसके लिए सब कुछ कुर्बान कर दिया था। यह बहुत पहले की बात है, पांच साल पहले, और वह हमें भूल गया है, उसने शादी कर ली है। अब वह विधुर है, उसने पत्र लिखा है, वह यहाँ आ रहा है, और, क्या आप जानते हैं, हमने उससे प्यार किया है, केवल उससे, इस पूरे समय, और हमने उसे अपने पूरे जीवन भर प्यार किया है! वह आएगा, और ग्रुशेंका फिर से खुश होगी। पिछले पांच सालों से वह दुखी है। लेकिन कौन उसे दोष दे सकता है, कौन उसकी कृपा पर गर्व कर सकता है? केवल वह बिस्तर पर पड़ा बूढ़ा व्यापारी, लेकिन वह उसके पिता, उसके मित्र, उसके रक्षक जैसा है। उसने उसे तब पाया था हताशा में डूबी, पीड़ा से भरी, अपने प्रिय पुरुष द्वारा त्यागी गई। वह उस समय खुद को डुबोने के लिए तैयार थी, लेकिन उस बूढ़े व्यापारी ने उसे बचा लिया—बचा लिया!
“आप मेरी बहुत ही विनम्रता से रक्षा कर रही हैं, प्रिय युवती। आप बहुत जल्दी में हैं।”
“हर बात के बारे में,” ग्रुशेंका ने फिर धीमी आवाज़ में कहा।
“तुम्हारी रक्षा करूं! क्या तुम्हारी रक्षा करना मेरा काम है? क्या मुझे तुम्हारी रक्षा करने की हिम्मत करनी चाहिए?”
ग्रुशेंका, देवदूत, मुझे अपना हाथ दो। देखो, एलेक्सी फ्योदोरोविच, यह प्यारा सा कोमल छोटा हाथ! इसे देखो! इसने मुझे खुशी दी है और मेरा मन बहलाया है, और मैं इसे चूमने जा रही हूँ, बाहर से और अंदर से, यहाँ, यहाँ, यहाँ!
और उसने तीन बार उस निश्चित रूप से आकर्षक, हालांकि कुछ हद तक मोटे व्यक्ति को चूमा।

ग्रुशेंका ने एक तरह के आनंद में अपना हाथ आगे बढ़ाया। उसने एक प्यारी सी, संगीतमय, थोड़ी घबराहट भरी हंसी के साथ अपना हाथ आगे बढ़ाया, "प्यारी युवती" को देखा, और जाहिर तौर पर उसे अपना हाथ चूमना अच्छा लगा।
“शायद कुछ ज़्यादा ही उत्साह है,” अलेयोशा ने सोचा। वह शर्म से लाल हो गया।
उन्हें हर समय मन में एक अजीब सी बेचैनी महसूस होती रही।
“प्रिय युवती, इस तरह मेरा हाथ चूमने से मुझे शर्म नहीं आएगी।”
एलेक्सी फ्योदोरोविच से पहले।"
“क्या आपको लगता है कि मेरा इरादा आपको शर्मिंदा करने का था?” कैटेरिना इवानोव्ना ने कहा।
कुछ आश्चर्यचकित होकर। "अरे, मेरी प्यारी, तुम मुझे कितना कम समझती हो!"
"हां, और शायद आप भी मुझे पूरी तरह से गलत समझ रही हैं, प्रिय युवती।"
शायद मैं उतना अच्छा नहीं हूँ जितना मैं तुम्हें दिखता हूँ। मेरा दिल कमजोर है; मैं अपनी मनमानी करूँगा।
उस दिन मैंने बेचारे दिमित्री फ्योदोरोविच को महज़ मजे के लिए मोहित कर लिया था।
लेकिन अब तुम उसे बचाओगे। तुमने मुझे वचन दिया है। तुम समझाओगे।
उसे सब कुछ बता दो। तुम उसे बता दोगी कि तुम लंबे समय से किसी और से प्यार करती हो, जो अब तुम्हें अपना हाथ दे रहा है।
“अरे नहीं! मैंने तुम्हें ऐसा करने का वचन नहीं दिया था। तुम लगातार बोलते रहे, यही तो बात है।”
उस बारे में। मैंने आपको वचन नहीं दिया था।
“तो फिर मुझे आपकी बात पूरी तरह समझ नहीं आई,” कैटेरिना इवानोव्ना ने धीरे से कहा।
चेहरा थोड़ा पीला पड़ गया। "तुमने वादा किया था—"
“ओह, नहीं, देवदूत महिला, मैंने कुछ भी वादा नहीं किया है,” ग्रुशेंका ने बीच में ही टोकते हुए कहा।
धीरे और सहजता से, उसी प्रसन्न और सरल भाव से। “तुम देख ही रही हो, प्यारी युवती, मैं तुम्हारे मुकाबले कितना जिद्दी हूँ। अगर मैं कुछ करना चाहता हूँ तो कर ही लेता हूँ। मैंने अभी तुम्हें कोई वादा किया था।
लेकिन अब फिर से सोच रहा हूँ: शायद मुझे मित्या से फिर से लगाव हो जाए। एक समय था जब मैं उसे बहुत पसंद करता था—लगभग पूरे एक घंटे तक। अब शायद मैं जाकर उससे कहूँ कि आज से मेरे साथ रहे। देखो, मैं कितना बदलता रहता हूँ।”
“अभी-अभी आपने कुछ बिल्कुल अलग कहा था,” कैटेरिना इवानोव्ना ने कहा।
धीमी आवाज़ में फुसफुसाया।
“अरे, अभी-अभी! लेकिन, आप जानते हैं। मैं कितना कोमल हृदय और भोला प्राणी हूँ।”
सोचो, मेरी वजह से उसे क्या-क्या झेलना पड़ा होगा! अगर घर जाकर मुझे उस पर तरस आया तो क्या होगा? फिर क्या होगा?
मुझे इसकी बिल्कुल उम्मीद नहीं थी—
“अरे, युवती, तुम मुझसे कहीं ज्यादा अच्छी और उदार हो!”
अब शायद आप मुझ जैसे नासमझ प्राणी की परवाह न करें, अब आप मेरा स्वभाव जान चुकी हैं। मुझे अपना प्यारा सा छोटा हाथ दीजिए, देवदूत जैसी महिला,” उसने कोमलता से कहा और एक प्रकार के आदर के साथ कैटेरिना इवानोव्ना का हाथ थाम लिया।
"लो, प्यारी युवती, मैं तुम्हारा हाथ थामकर उसे चूमूंगा जैसे तुमने मेरा हाथ चूमा था।"
तुमने मेरे हाथों को तीन बार चूमा, लेकिन मुझे तुम्हारे हाथों को तीन सौ बार चूमना चाहिए ताकि मैं तुम्हारे बराबर हो सकूँ। खैर, छोड़ो ये सब। फिर जो होगा सो ईश्वर की मर्ज़ी होगी। शायद मैं पूरी तरह से तुम्हारा दास बन जाऊँ और एक दास की तरह तुम्हारी आज्ञा का पालन करना चाहूँ। जो होगा सो ईश्वर की मर्ज़ी होगी, बिना किसी समझौते और वादे के। कितना प्यारा हाथ है तुम्हारा—कितना प्यारा हाथ है तुम्हारा! प्यारी युवती, कितनी खूबसूरत हो तुम!
उसने धीरे-धीरे अपने हाथों को होठों तक उठाया, और उसके हाथों में एक अजीब सी वस्तु थी।
चुंबनों में उसके साथ "बराबर का व्यवहार" करना।
कैटेरिना इवानोव्ना ने अपना हाथ नहीं हटाया। वह संकोच से सुन रही थी।

आखिरी शब्दों तक उम्मीद बनी रही, हालाँकि ग्रुशेंका का गुलाम की तरह उसकी आज्ञा मानने का वादा बहुत अजीब ढंग से व्यक्त किया गया था। उसने उसकी आँखों में गौर से देखा; उसे अभी भी उन आँखों में वही सरल, भरोसेमंद भाव और वही उज्ज्वल प्रसन्नता दिखाई दी।
“शायद वह बहुत भोली है,” कैटेरिना इवानोव्ना ने आँखों में चमक के साथ सोचा।
आशा।
इस बीच ग्रुशेंका उस "सुंदर हाथ" को लेकर काफी उत्साहित लग रही थी।
उसने जानबूझकर उसे होठों तक उठाया। लेकिन उसने उसे दो-तीन मिनट तक होठों के पास ही रखा, मानो किसी बात पर पुनर्विचार कर रही हो।
“क्या आप जानती हैं, देवदूत महिला?” उसने अचानक और भी धीमी आवाज़ में कहा।
और मीठी आवाज़ में, "क्या तुम्हें पता है, आखिरकार, मुझे लगता है कि मैं तुम्हारे हाथ को नहीं चूमूँगी?" और वह हल्की सी खिलखिलाहट भरी हंसी हंस पड़ी।
“जैसी आपकी मर्जी। आपको क्या हुआ है?” कैटेरिना इवानोव्ना ने कहा।
अचानक शुरू होना।
ताकि तुम्हें याद रहे कि तुमने मेरे हाथ को चूमा था, लेकिन मैं
मैंने तुम्हें चूमा नहीं।
उसकी आँखों में अचानक एक चमक आ गई। उसने बड़ी उत्सुकता से कैटेरिना इवानोवना को देखा।
“बेशर्म प्राणी!” कैटेरिना इवानोव्ना ने अचानक चीखते हुए कहा।
कुछ पकड़ते हुए। उसका पूरा चेहरा लाल हो गया और वह अपनी सीट से उछल पड़ी।
ग्रुशेंका भी उठीं, लेकिन बिना किसी जल्दबाजी के।
“तो मैं मित्या को बताऊँगी कि तुमने मेरे हाथ को चूमा था, लेकिन मैंने तुम्हारे हाथ को नहीं चूमा था।”
सब कुछ। और वो कितना हँसेगा!
“नीच कुतिया! यहाँ से चली जाओ!”
अरे, शर्म की बात है, युवती! अरे, शर्म की बात है! यह तो शोभा नहीं देता।
हे प्रिय युवती, तुम ऐसा शब्द बोलो।
“चले जाओ! तुम बिकने वाले प्राणी हो!” कैटेरिना इवानोवना चिल्लाई।
उसके पूरी तरह से विकृत चेहरे की हर एक विशेषता काम कर रही थी।
“सचमुच बिकने के लिए! तुम पहले शाम के समय पैसे के लिए सज्जनों के घर जाया करती थी।”
एक बार; तुमने अपनी खूबसूरती को बेचने के लिए पेश किया था। देखो, मुझे पता है।
कैटेरिना इवानोव्ना चीखी और उस पर झपटने ही वाली थी कि अलेयोशा ने उसे रोक दिया।
उसने उसे अपनी पूरी ताकत से थाम लिया।
“एक कदम भी नहीं, एक शब्द भी नहीं! उससे बात मत करो, उसे जवाब मत दो। वह चली जाएगी।”
वह तुरंत चली जाएगी।
उसी क्षण कैटरीना इवानोव्ना की चीख सुनकर उसकी दोनों चाचियाँ दौड़कर आईं और
उन्हें एक नौकरानी दिखाई दी। सब उसकी ओर दौड़े।
"मैं चली जाऊंगी," ग्रुशेंका ने सोफे से अपना लबादा उठाते हुए कहा।
“एल्योशा, प्रिय, मुझे घर तक छोड़ दो!”
“चले जाओ—चले जाओ, जल्दी करो!” अलेयोशा ने हाथ जोड़ते हुए चिल्लाया।
विनतीपूर्वक।
“प्यारे छोटे अलेयोशा, मुझे घर तक छोड़ आओ! मुझे तुम्हें एक प्यारी सी कहानी सुनानी है।”
मैं रास्ते में हूँ। मैंने ये दृश्य तुम्हारे लिए बनाया है, अलेयोशा। मुझे घर तक छोड़ देना, प्रिय, बाद में तुम्हें इसका पछतावा होगा।
अलेयोशा ने हाथ मलते हुए मुंह फेर लिया। ग्रुशेंका दौड़कर बाहर निकल गई।
घर, मधुरता से हंसते हुए।
कैटेरिना इवानोव्ना को हिस्टीरिया का दौरा पड़ गया। वह फूट-फूटकर रोने लगी।
वह ऐंठन से कांप रही थी। हर कोई उसके आसपास इकट्ठा हो गया।

“मैंने तुम्हें चेतावनी दी थी,” उसकी बड़ी चाची ने कहा। “मैंने तुम्हें रोकने की कोशिश की थी।”
ऐसा करना। तुम बहुत जल्दबाज़ हो। तुम ऐसा कैसे कर सकते हो? तुम इन जीवों को नहीं जानते, और लोग कहते हैं कि वह उनमें से सबसे बुरी है। तुम बहुत मनमानी करते हो।
“वह तो शेरनी है!” कैटेरिना इवानोव्ना चिल्लाई। “तुमने मुझे क्यों पकड़ा?”
एलेक्सी फ्योदोरोविच? मैं उसे हरा देती—पूरी तरह हरा देती!
वह अलेयोशा के सामने खुद पर काबू नहीं रख सकी; शायद वास्तव में उसे इसकी परवाह ही नहीं थी।
“उसे सार्वजनिक रूप से फांसी के तख्ते पर कोड़े मारे जाने चाहिए!” अलेयोशा दरवाजे की ओर पीछे हट गया।
“लेकिन, हे भगवान!” कैटेरिना इवानोव्ना ने हाथ जोड़ते हुए कहा। “वह! वह!”
वह कितना बेईमान, कितना अमानवीय हो सकता है! अरे, उसने उस प्राणी को उस मनहूस, शापित दिन की सारी कहानी बता दी! 'तुमने अपनी खूबसूरती बेच दी, प्यारी युवती।' वह जानती है! तुम्हारा भाई बदमाश है, एलेक्सी फ्योदोरोविच।
अलेयोशा कुछ कहना चाहता था, लेकिन उसे शब्द नहीं मिल रहे थे। उसका दिल
दर्द हो रहा था।
“चले जाओ, एलेक्सी फ्योदोरोविच! यह शर्मनाक है, यह मेरे लिए बहुत बुरा है!
मैं घुटनों के बल बैठकर आपसे विनती करता हूँ, कल आइए। मुझे दोषी मत ठहराइए। मुझे क्षमा कीजिए। मुझे नहीं पता कि अब मैं क्या करूँगा!
अलियोशा लड़खड़ाते हुए सड़क पर निकला। वह रो सकता था जब वह
किया। अचानक नौकरानी ने उसे पकड़ लिया।
“युवक आपको मैडम होहलाकोव का यह पत्र देना भूल गई थी;
यह हमारे पास रात के खाने के समय से ही पड़ा हुआ है।"
अलियोशा ने बिना किसी भाव के छोटा गुलाबी लिफाफा उठाया और उसे लगभग रख दिया।
अनजाने में ही, उसने उसे अपनी जेब में डाल लिया।

अध्याय 11

एक और प्रतिष्ठा धूमिल हो गई

कस्बे से मठ तक की दूरी लगभग तीन-चौथाई मील से थोड़ी ही अधिक थी। अलेयोशा उस सुनसान सड़क पर तेज़ी से चलने लगा। लगभग रात हो चुकी थी और तीस कदम आगे कुछ भी साफ़ दिखाई नहीं दे रहा था। आधे रास्ते में चौराहे थे। चौराहे पर एक अकेले विलो पेड़ के नीचे एक आकृति दिखाई दी। जैसे ही अलेयोशा चौराहे पर पहुँचा, वह आकृति बाहर निकली और ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाते हुए उस पर झपटी।
"अपने पैसे या अपने जीवन!"
“तो तुम हो, मित्या,” अलेयोशा ने हैरानी से, बुरी तरह चौंकते हुए कहा।
तथापि।
हा हा हा! आपको मेरी उम्मीद नहीं थी? मैं सोच रहा था कि आपका इंतजार कहाँ करूँ।
उसके घर से? वहाँ से तीन रास्ते हैं, और शायद मैं तुम्हें देख नहीं पाया। आखिर में मैंने यहीं इंतज़ार करने का सोचा, क्योंकि तुम्हें यहाँ से गुज़रना ही था, मठ जाने का कोई और रास्ता नहीं है। आओ, मुझे सच बताओ। मुझे कीड़े की तरह कुचल दो। लेकिन बात क्या है?
“कुछ नहीं भाई—तुमने मुझे जो डराया, वो तो बस एक डर है। ओह, दिमित्री! पिताजी का...”
अभी-अभी खून बहा। (अलोशा रोने लगा, वह काफी देर से रोने के कगार पर था, और अब मानो उसकी आत्मा टूट गई।) "तुमने लगभग उसे मार ही डाला—उसे शाप दिया—और अब—यहाँ—तुम मज़ाक कर रहे हो—'या तो तुम्हारा पैसा या तुम्हारी जान!'"
अच्छा, तो फिर क्या? यह ठीक नहीं है—क्या यही बात है? मेरे लिए उपयुक्त नहीं है।
पद?"
“नहीं—मैं केवल—”
"रुको। रात को देखो। देखो कितनी अंधेरी रात है, कितने बादल हैं, कितना..."
हवा तेज़ हो गई थी। मैं यहाँ विलो के पेड़ के नीचे छिपकर तुम्हारा इंतज़ार कर रही थी। और हे भगवान, अचानक मेरे मन में ख्याल आया, अब और दुख में क्यों जीऊँ, आखिर इंतज़ार किस बात का? मेरे पास विलो का पेड़ है, रुमाल है, कमीज़ है, मैं इन्हें पल भर में रस्सी बना सकती हूँ, और साथ में ब्रेसेस भी हैं, तो फिर धरती पर बोझ क्यों डालूँ, अपनी नीच उपस्थिति से इसे अपमानित क्यों करूँ? और तभी मैंने तुम्हें आते सुना — हे भगवान, ऐसा लगा जैसे अचानक कोई मेरे पास आ गिरा हो। तो फिर एक आदमी है, जिसे मैं प्यार करती हूँ। ये रहा वो आदमी, मेरा प्यारा छोटा भाई, जिसे मैं दुनिया में किसी से भी ज़्यादा प्यार करती हूँ, दुनिया में इकलौता जिसे मैं प्यार करती हूँ। और उस पल मैं तुमसे इतना प्यार करती थी, इतना ज़्यादा कि मैंने सोचा, ‘मैं अभी उसकी गर्दन पर गिर जाऊँगी।’ तभी मेरे मन में एक बेवकूफी भरा ख्याल आया, तुमसे मज़ाक करने और तुम्हें डराने का। मैं एक मूर्ख की तरह चिल्लाई, ‘तुम्हारा पैसा!’ मेरी मूर्खता के लिए मुझे माफ़ कर देना— ये सिर्फ़ बकवास थी, और मेरे दिल में कुछ भी बुरा नहीं है... अरे यार, बताओ क्या हुआ। उसने क्या कहा? मुझे मारो, मुझे कुचल दो, मुझे मत छोड़ो! क्या वह बहुत गुस्से में थी?
“नहीं, ऐसा नहीं... मित्या, ऐसा कुछ नहीं था। वहाँ—मुझे मिल गया।”
उन दोनों को वहीं पर।
“दोनों? कौन?”
"ग्रुशेंका और कतेरीना इवानोव्ना।"
दिमित्री अवाक रह गया।
“असंभव!” वह चिल्लाया। “तुम पागल हो गए हो! ग्रुशेंका उसके साथ?” अलेयोशा ने अंदर जाने के क्षण से लेकर अब तक जो कुछ हुआ था, उसका पूरा ब्यौरा दिया।
कैटरीना इवानोव्ना की कहानी। वह दस मिनट तक सुनाता रहा। यह तो नहीं कहा जा सकता कि उसने धाराप्रवाह और क्रमबद्ध तरीके से कहानी सुनाई, लेकिन ऐसा लग रहा था कि वह अपनी बात स्पष्ट रूप से कह रहा था, किसी भी महत्वपूर्ण शब्द या क्रिया को छोड़े बिना, और अक्सर एक ही शब्द में अपनी भावनाओं

का सजीव वर्णन कर रहा था। दिमित्री चुपचाप सुनता रहा, उसे एक भयानक स्थिर निगाहों से देखता रहा, लेकिन अलेयोशा को स्पष्ट था कि वह सब कुछ समझ गया था और हर बात को आत्मसात कर लिया था। लेकिन जैसे-जैसे कहानी आगे बढ़ी, उसका चेहरा न केवल उदास, बल्कि भयावह हो गया। उसने भौंहें चढ़ाईं, दांत भींचे, और उसकी स्थिर निगाहें और भी कठोर, केंद्रित और भयानक हो गईं, तभी अचानक, अविश्वसनीय गति से, उसका क्रोधी, क्रूर चेहरा बदल गया, उसके कसकर बंद होंठ खुल गए, और दिमित्री फ्योदोरोविच अनियंत्रित, सहज हंसी में फूट पड़ा। वह सचमुच हंसी से कांप रहा था। काफी देर तक वह बोल नहीं सका।

“तो उसने उसका हाथ नहीं चूमा! इसलिए उसने उसे नहीं चूमा; इसलिए वह भाग गई!”

वह उन्मादपूर्ण खुशी से चिल्लाता रहा; अगर यह इतनी सहज न होती तो इसे उद्दंड खुशी कहा जा सकता था।

“तो दूसरी ने उसे शेरनी कहा! और वह सचमुच शेरनी है! तो उसे फांसी पर लटका देना चाहिए! हाँ, हाँ, बिल्कुल। मैं भी यही सोचता हूँ; उसे तो बहुत पहले ही फांसी दे देनी चाहिए थी। बात ऐसी है भाई, उसे सजा मिलने दो, लेकिन पहले मुझे ठीक होना होगा। मैं उस धृष्टता की रानी को समझता हूँ। वह तो बिल्कुल वैसी ही है! तुमने उसे हाथ चूमते हुए देखा था, वह शैतान औरत! वह अपनी हद पार कर चुकी है! तो वह घर भाग गई? मैं जाऊँगा—अह—मैं उसके पास दौड़कर जाऊँगा! अलेयोशा, मुझे दोष मत देना, मैं मानता हूँ कि फांसी उसके लिए बहुत कम सजा है।”

“लेकिन कैटेरिना इवानोवना!” अलेयोशा ने दुख से कहा।

“मैं भी उसे देख रही हूँ! मैं उसे पूरी तरह से देख पा रही हूँ, जैसा मैंने पहले कभी नहीं देखा! यह एक दुनिया के चारों महाद्वीपों की नियमित खोज, यानी पाँचों की! क्या कमाल की बात है! ये तो बिल्कुल कात्या जैसी है, जो अपने पिता को बचाने के उदार इरादे से एक अशिष्ट, बदतमीज़ अधिकारी का सामना करने और जानलेवा अपमान का जोखिम उठाने से नहीं डरी! लेकिन ये घमंड, ये बेपरवाही, भाग्य को चुनौती, ये असीम चुनौती! आप कहते हैं कि चाची ने उसे रोकने की कोशिश की? आप जानते हैं, वो चाची खुद भी बहुत दबंग हैं। वो मॉस्को में जनरल की विधवा की बहन हैं, और उनसे भी ज़्यादा घमंडी हैं। लेकिन उनके पति सरकारी पैसा चुराते पकड़े गए। उन्होंने सब कुछ खो दिया, अपनी सारी संपत्ति, और उस घमंडी पत्नी को अपना असली रंग दिखाना पड़ा, और तब से उन्होंने उसे नहीं छोड़ा है। इसलिए उन्होंने कात्या को रोकने की कोशिश की, लेकिन कात्या ने उनकी बात नहीं सुनी! उन्हें लगता है कि वो हर चीज़ पर विजय पा सकती हैं, कि हर चीज़ उनके सामने झुक जाएगी। उन्हें लगता था कि वो ग्रुशेंका को अपने वश में कर सकती हैं, और उन्हें खुद भी इस बात पर यकीन था: वो खुद को एक खेल की तरह पेश करती हैं, और इसमें किसकी गलती है? क्या तुम्हें लगता है कि उसने जानबूझकर, किसी मकसद से ग्रुशेंका का हाथ पहले चूमा था? नहीं, वह सचमुच ग्रुशेंका से मोहित थी, यानी ग्रुशेंका से नहीं, बल्कि अपने ही सपने, अपने ही भ्रम से—क्योंकि वह उसका सपना था, उसका भ्रम था! अलेयोशा, प्यारे, तुम उन औरतों से कैसे बच निकले? क्या तुमने अपना चोगा उठाया और भाग गए? हा हा हा!

“भाई, लगता है तुम्हें इस बात का एहसास ही नहीं हुआ कि तुमने कैटेरिना का कितना अपमान किया है।” इवानोवना ने ग्रुशेंका को उस दिन के बारे में बताया। और अभी-अभी उसने ग्रुशेंका के मुंह पर यह बात उछाल दी कि वह अपनी सुंदरता बेचने के लिए छुपकर सज्जनों के पास गई थी! भाई, इससे बड़ा अपमान और क्या हो सकता है?

अलोशा को सबसे ज्यादा चिंता इस बात की थी कि, भले ही यह अविश्वसनीय लगे,
ऐसा प्रतीत हुआ कि उसका भाई कैटेरिना इवानोव्ना के अपमान से प्रसन्न था।

“वाह!” दिमित्री ने गुस्से से भौंहें चढ़ाईं और अपना हाथ माथे पर मारा।

उसे अब जाकर इस बात का एहसास हुआ, हालांकि अलेयोशा ने उसे अभी-अभी अपमान के बारे में बताया था, और कैटेरिना इवानोव्ना की चीख: "तुम्हारा भाई बदमाश है!"

"हां, शायद मैंने ग्रुशेंका को उस 'मनहूस दिन' के बारे में सचमुच बताया था,"
कात्या इसे कहती है। हाँ, मैंने उसे बताया था, मुझे याद है! यह मोक्रो में उस समय की बात है। मैं नशे में थी, जिप्सी लोग गा रहे थे... लेकिन मैं सिसक रही थी। मैं तब सिसक रही थी, कात्या की मूर्ति के सामने घुटने टेककर प्रार्थना कर रही थी, और ग्रुशेंका इसे समझ गई। वह तब सब कुछ समझ गई थी। मुझे याद है, वह

खुद भी रोई थी... धिक्कार है! लेकिन अब ऐसा होना ही था... तब वह रोई, लेकिन अब 'दिल में छुरा घोंपने जैसा दर्द'! औरतें ऐसी ही होती हैं।
उसने नीचे देखा और सोच में डूब गया।
“हाँ, मैं एक बदमाश हूँ, एकदम बदमाश!” उसने अचानक उदास स्वर में कहा। “इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि मैं रोया या नहीं, मैं बदमाश हूँ! अगर इससे तुम्हें कोई तसल्ली मिले तो उसे बता देना कि मैं यह नाम स्वीकार करता हूँ। बस, बहुत हो गया। अलविदा। बात करने का कोई फायदा नहीं! इसमें कोई मज़ा नहीं है। तुम अपने रास्ते जाओ और मैं अपने। और मैं तुम्हें फिर कभी नहीं देखना चाहता, सिवाय आखिरी उपाय के। अलविदा, एलेक्सी!”
उसने अल्योशा का हाथ गर्मजोशी से दबाया, और अभी भी नीचे देखते हुए, बिना
अपना सिर उठाते हुए, मानो खुद को अलग करते हुए, वह तेजी से शहर की ओर मुड़ गया।
अलियोशा ने उसकी देखभाल की, उसे विश्वास ही नहीं हो रहा था कि वह इस तरह चला जाएगा।
अचानक।
“रुको, एलेक्सी, एक और बात मैं तुमसे अकेले में कहना चाहता हूँ!” दिमित्री चिल्लाया।
अचानक पीछे मुड़ते हुए, "मेरी तरफ देखो। मुझे ध्यान से देखो। देखो यहाँ— मेरे लिए बहुत बड़ी बदनामी इंतजार कर रही है।" (जैसे ही उसने “यहाँ” कहा, दिमित्री ने अजीब अंदाज़ में अपनी मुट्ठी से अपनी छाती पर प्रहार किया, मानो अपमान ठीक उसकी छाती पर, किसी जगह, शायद जेब में, या उसके गले में लटका हो।)
“अब तुम मुझे जानते हो, एक बदमाश, एक घोषित बदमाश, लेकिन मैं तुम्हें बता दूं कि मैंने पहले कभी ऐसा कुछ नहीं किया है और न ही फिर कभी करूँगा, जो उस अपमान की नीचता की तुलना कर सके जो मैं इस पल अपनी छाती पर, यहाँ, यहाँ, झेल रहा हूँ, जो होने वाला है, हालाँकि मैं इसे रोकने के लिए पूरी तरह से स्वतंत्र हूँ। मैं इसे रोक सकता हूँ या इसे अंजाम दे सकता हूँ, ध्यान रखना। खैर, मैं तुम्हें बता दूं, मैं इसे अंजाम दूंगा। मैं इसे नहीं रोकूंगा। मैंने तुम्हें अभी सब कुछ बता दिया, लेकिन मैंने तुम्हें यह नहीं बताया, क्योंकि मुझमें भी इतनी हिम्मत नहीं थी। मैं अभी भी सुधर सकता हूँ; अगर मैं ऐसा करता हूँ, तो मैं कल अपनी खोई हुई आधी इज़्ज़त वापस पा सकता हूँ। लेकिन मैं नहीं सुधरूंगा। मैं अपनी नीच योजना को अंजाम दूंगा, और तुम गवाह हो सकते हो कि मैंने तुम्हें ऐसा कहा था। पहले से ही। अंधकार और विनाश! समझाने की कोई ज़रूरत नहीं। समय आने पर पता चल जाएगा। गंदी तंग गली और शैतान औरत। अलविदा। मेरे लिए प्रार्थना मत करो, मैं इसके लायक नहीं हूँ। और इसकी कोई ज़रूरत नहीं है, बिल्कुल भी नहीं... मुझे इसकी ज़रूरत नहीं है! चले जाओ!
और वह अचानक पीछे हट गया, इस बार आखिरकार। अलेयोशा उस ओर चला गया।
मठ।
“क्या? मैं उसे फिर कभी नहीं देख पाऊंगा! वह क्या कह रहा है?” उसने सोचा।
बेतहाशा। “क्यों, मैं कल उससे ज़रूर मिलूंगा। मैं उससे पूछताछ करूंगा। मैं यह सुनिश्चित करूंगा कि उससे मुलाकात हो। उसका मतलब क्या है?”
वह मठ के चारों ओर घूमा और चीड़ के जंगल को पार करके वहाँ पहुँचा।
आश्रम। उसके लिए दरवाजा खोल दिया गया, हालांकि उस समय किसी को भी अंदर जाने की अनुमति नहीं थी। फादर ज़ोस्सिमा की कोठरी में जाते समय उसके दिल में एक कंपकंपी सी दौड़ रही थी।
“वह क्यों चला गया था? उसने उसे दुनिया में क्यों भेजा था?”
यहां शांति थी। यहां पवित्रता थी। लेकिन यहां भ्रम था, यहां अंधकार था जिसमें व्यक्ति अपना रास्ता खो देता था और तुरंत भटक जाता था...
कोठरी में उसे नौसिखिए पोर्फिरी और फादर पैसी मिले, जो आए थे।
हर घंटे फादर ज़ोस्सिमा का हालचाल जानने के लिए अलेयोशा को चिंता हुई कि उनकी हालत दिन-ब-दिन बिगड़ती जा रही है। उस दिन भाइयों के साथ उनकी नियमित बातचीत भी नहीं हो सकी। नियम के अनुसार, हर शाम प्रार्थना के बाद भिक्षु फादर ज़ोस्सिमा की कोठरी में इकट्ठा होते थे और दिन भर के अपने पापों, पापी विचारों और प्रलोभनों को ज़ोर से स्वीकार करते थे; यहाँ तक कि अगर कोई विवाद हुआ हो तो उसे भी बताते थे। कुछ घुटने टेककर स्वीकारोक्ति करते थे। बड़े भिक्षु क्षमादान करते, सुलह कराते, उपदेश देते, प्रायश्चित करते, आशीर्वाद देते और उन्हें विदा करते थे। इसी सामूहिक "स्वीकारोक्ति" के विरुद्ध "बुजुर्गों" के विरोधियों

ने विरोध किया, उनका कहना था कि यह स्वीकारोक्ति के संस्कार का अपमान है, लगभग धर्म का घोर उल्लंघन है, हालाँकि यह बिल्कुल अलग बात थी। उन्होंने धर्मप्रांत के अधिकारियों के सामने यह भी प्रस्तुत किया कि ऐसी स्वीकारोक्ति से कोई लाभ नहीं होता, बल्कि यह काफी हद तक पाप और प्रलोभन को बढ़ावा देती है। कई भिक्षुओं को बड़े भिक्षु के पास जाना पसंद नहीं था, और वे अपनी इच्छा के विरुद्ध जाते थे क्योंकि सब लोग जाते थे, और इस डर से कि कहीं उन पर घमंड और विद्रोही विचारों का आरोप न लग जाए। लोग कहते थे कि कुछ भिक्षु पहले से ही मान जाते थे, और कहते थे, "मैं स्वीकार करता हूँ कि आज सुबह मेरा आप पर गुस्सा फूट पड़ा, और आप इसकी पुष्टि कर दीजिए," बस कुछ कहने के लिए। अलेयोशा जानता था कि ऐसा कभी-कभी सचमुच होता था। वह यह भी जानता था कि भिक्षुओं में कुछ ऐसे भी थे जिन्हें इस बात से गहरी नाराज़गी थी कि रिश्तेदारों के पत्र नियमित रूप से बड़े भिक्षु के पास ले जाए जाते थे, और वे उन्हें उन लोगों के सामने खोलते और पढ़ते थे जिन्हें वे संबोधित थे।
यह मान लिया गया था कि यह सब स्वेच्छा से और सद्भावना से किया गया था।
स्वैच्छिक समर्पण और लाभकारी मार्गदर्शन के माध्यम से आस्था प्राप्त की जाती थी। लेकिन वास्तव में, इस अभ्यास में कभी-कभी काफी कपट और बनावटीपन भी होता था। फिर भी, अधिक अनुभवी और वरिष्ठ भिक्षु अपने मत पर अडिग रहे और उनका तर्क था कि “जो लोग सच्चे मन से मोक्ष की खोज में इन दीवारों के भीतर आए हैं, उनके लिए ऐसी आज्ञाकारिता और त्याग निश्चित रूप से लाभकारी और बहुत लाभदायक होगा; दूसरी ओर, जो लोग इसे कष्टदायी पाते हैं और शिकायत करते हैं, वे सच्चे भिक्षु नहीं हैं और उन्होंने मठ में प्रवेश करके गलती की है—उनका उचित स्थान संसार में है। मंदिर में भी कोई पाप और शैतान से सुरक्षित नहीं रह सकता। इसलिए इस पर अधिक ध्यान देना उचित नहीं था।”
“वह कमजोर हो गया है, उसे नींद आने लगी है,” फादर पैसी ने कहा।
अलेयोशा को आशीर्वाद देते हुए उसने फुसफुसाकर कहा, “उसे जगाना मुश्किल है। और उसे जगाया नहीं जा सकता। वह पाँच मिनट के लिए जागा, भाइयों को आशीर्वाद भेजा और रात में अपने लिए प्रार्थना करने का अनुरोध किया। वह सुबह फिर से पवित्र संस्कार लेने का इरादा रखता है। उसने तुम्हें याद किया, एलेक्सी। उसने पूछा कि क्या तुम कहीं चले गए हो, और उसे बताया गया कि तुम शहर में हो। उसने कहा, ‘मैंने उसे उस काम के लिए आशीर्वाद दिया है, उसका स्थान वहाँ है, यहाँ नहीं, कुछ समय के लिए।’ ये उसके तुम्हारे बारे में कहे शब्द थे। उसने तुम्हें प्रेम और चिंता के साथ याद किया; क्या तुम समझते हो कि उसने तुम्हारा कितना सम्मान किया? लेकिन उसने यह कैसे तय कर लिया कि तुम कुछ समय दुनिया में बिताओगे? उसने तुम्हारे भाग्य में कुछ तो देखा होगा! समझ लो, एलेक्सी, कि अगर तुम दुनिया में लौटते हो, तो अपने बड़े द्वारा सौंपे गए कर्तव्य को पूरा करने के लिए लौटना होगा, न कि व्यर्थ के घमंड और सांसारिक सुखों के लिए।”
फादर पैसी बाहर चले गए। अलेयोशा को इसमें कोई संदेह नहीं था कि फादर ज़ोस्सिमा मरणासन्न, यद्यपि वे एक-दो दिन और जी सकते थे। अलेयोशा ने दृढ़ निश्चय किया कि अपने पिता, होहलकोव परिवार और कटेरीना इवानोव्ना से किए गए वादों के बावजूद, वे अगले दिन मठ नहीं छोड़ेंगे, बल्कि अंत तक अपने गुरु के साथ रहेंगे। उनका हृदय प्रेम से प्रज्वलित था, और वे स्वयं को इस बात के लिए धिक्कार रहे थे कि वे एक क्षण के लिए भी उन्हें भूल गए थे जिन्हें उन्होंने मठ में मृत्युशय्या पर छोड़ा था, और जिनका वे संसार में सर्वोपरि सम्मान करते थे। वे फादर ज़ोस्सिमा के शयनकक्ष में गए, घुटने टेके और गुरु के समक्ष भूमि पर प्रणाम किया, जो बिना हिले-डुले, नियमित, लगभग न सुनाई देने वाली साँसों और शांत चेहरे के साथ गहरी नींद में सो रहे थे।
अलियोशा दूसरे कमरे में लौट आया, जहाँ फादर ज़ोसिमा ने उसका स्वागत किया था।
सुबह अपने मेहमानों से मिलने के बाद, उन्होंने अपने जूते उतारे और उस सख्त, संकरे, चमड़े के सोफे पर लेट गए, जिसे वे लंबे समय से बिस्तर की तरह इस्तेमाल करते आ रहे थे। वे अपने साथ सिर्फ एक तकिया लाए थे। जिस गद्दे के बारे में उनके पिता ने सुबह उन्हें बताया था, उस पर लेटना वे कब का भूल चुके थे। उन्होंने अपना चोगा भी उतार दिया, जिसे वे ओढ़ते थे। लेकिन सोने से पहले, वे घुटनों के बल बैठ गए और काफी देर तक प्रार्थना की। अपनी भावपूर्ण प्रार्थना में उन्होंने ईश्वर से अपने अंधकार को दूर करने की विनती नहीं की, बल्कि उस आनंदमय भावना के लिए तरस रहे थे, जो उनकी आत्मा में हमेशा उनकी शाम की प्रार्थना के बाद आती थी। उस आनंद से उन्हें हमेशा हल्की और सुकून भरी नींद आती थी। प्रार्थना करते-करते, अचानक उन्हें अपनी जेब में वह छोटा सा गुलाबी नोट महसूस हुआ जो नौकर ने कैटेरिना इवानोव्ना के

घर से निकलते समय उन्हें दिया था। वे थोड़ा विचलित हुए, लेकिन उन्होंने अपनी प्रार्थना पूरी की। फिर, कुछ झिझक के बाद, उन्होंने लिफाफा खोला। उसमें उनके लिए एक पत्र था, जिस पर मैडम होहलाकोव की युवा बेटी लिसे के हस्ताक्षर थे, जिसने सुबह बड़े व्यक्ति के सामने उनका मजाक उड़ाया था।
"एलेक्सी फ्योदोरोविच," उन्होंने लिखा, "मैं आपको बिना किसी स्वार्थ के लिख रही हूँ।"
किसी को भी, यहाँ तक कि माँ को भी, इस बात का पता नहीं है, और मैं जानती हूँ कि यह कितना गलत है। लेकिन मैं अपने दिल में उठी इस भावना को बताए बिना नहीं रह सकती, और यह बात कुछ समय के लिए हम दोनों के अलावा किसी को नहीं पता होनी चाहिए। लेकिन मैं तुम्हें वह बात कैसे कहूँ जो मैं तुम्हें बताना चाहती हूँ? कहते हैं कि कागज़ शरमाता नहीं है, लेकिन मैं तुम्हें यकीन दिलाती हूँ कि यह सच नहीं है और यह मेरी तरह ही पूरी तरह से शरमा रहा है। प्यारे अलेयोशा, मैं तुमसे प्यार करती हूँ, बचपन से, मॉस्को के दिनों से, जब तुम आज से बहुत अलग थे, और मैं तुम्हें जीवन भर प्यार करती रहूँगी। मेरे दिल ने तुम्हें चुना है, ताकि हम अपना जीवन एक करें और बुढ़ापे तक साथ-साथ गुजारें। बेशक, इस शर्त पर कि तुम मठ छोड़ दोगे। जहाँ तक हमारी उम्र की बात है, हम कानून द्वारा तय समय का इंतजार करेंगे। तब तक मैं निश्चित रूप से काफी मजबूत हो जाऊँगी, मैं चल-फिर और नाच-गाना कर पाऊँगी। इसमें कोई शक नहीं है।
"देखा आपने, मैंने हर चीज़ के बारे में सोच लिया है। बस एक ही चीज़ है जो मैं नहीं कर सकता।"
ज़रा सोचिए: इसे पढ़कर आप मेरे बारे में क्या सोचेंगे। मैं हमेशा हँसती-खेलती और शरारतें करती रहती हूँ। आज सुबह मैंने आपको नाराज़ कर दिया, लेकिन मैं आपको विश्वास दिलाती हूँ कि कलम उठाने से पहले मैंने ईश्वर की माता की प्रतिमा के सामने प्रार्थना की थी, और अब मैं प्रार्थना कर रही हूँ, और लगभग रो रही हूँ। मेरा रहस्य आपके हाथों में है। कल आप कब आएंगे, मुझे नहीं पता।
मैं तुम्हें कैसे देखूँगी। आह, एलेक्सी फ्योदोरोविच, क्या होगा अगर मैं आज की तरह तुम्हें देखकर खुद को मूर्ख की तरह हँसने से रोक न पाऊँ? तुम सोचोगे कि मैं एक बदतमीज़ लड़की हूँ जो तुम्हारा मज़ाक उड़ा रही है, और तुम मेरे पत्र पर विश्वास नहीं करोगे। इसलिए मैं तुमसे विनती करती हूँ, प्रिय, अगर तुम्हें मुझ पर थोड़ी भी दया आए, तो कल जब तुम आओ, तो मेरी आँखों में सीधे मत देखना, क्योंकि अगर मेरी नज़रें तुमसे मिलेंगी, तो मुझे हँसी आ ही जाएगी, खासकर जब तुम उस लंबे गाउन में होगे। जब मैं इसके बारे में सोचती हूँ तो मुझे ठंड लगने लगती है, इसलिए जब तुम आओ, तो कुछ देर के लिए मेरी तरफ बिल्कुल मत देखना, माँ को या खिड़की की तरफ देखना...
"ये लो, मैंने तुम्हारे लिए एक प्रेम पत्र लिखा है। ओह, प्रिय, मैंने ये क्या कर दिया?"
अलेयोशा, मेरा तिरस्कार मत करो, और अगर मैंने कुछ बहुत बुरा किया हो और तुम्हें दुख पहुँचाया हो, तो मुझे क्षमा कर दो। अब मेरी प्रतिष्ठा का राज़, जो शायद हमेशा के लिए नष्ट हो गई है, तुम्हारे हाथों में है। आज मैं ज़रूर रोऊँगी। अलविदा, हमारी अगली मुलाकात तक, हमारी भयानक मुलाकात तक।
बैठक।—लिसे।
"पुनश्च—अलोशा! तुम्हें ज़रूर आना होगा!—लीज़।" अलोशा ने आश्चर्य से नोट पढ़ा, उसे दो बार पढ़ा, और सोचने लगा...
छोटा सा, और अचानक एक कोमल, मधुर हंसी हंसा। वह चौंक गया। उसे वह हंसी पापपूर्ण लगी। लेकिन एक मिनट बाद वह फिर से उतनी ही कोमल और खुशी से हंसा। उसने धीरे से लिफाफे में नोट वापस रखा, क्रॉस का निशान बनाया और लेट गया। उसके दिल की बेचैनी तुरंत शांत हो गई। "हे ईश्वर, इन सब पर दया करो, इन सभी दुखी और अशांत आत्माओं को अपनी शरण में लो और उन्हें सही रास्ते पर ले चलो। सभी मार्ग तुम्हारे हैं। अपनी बुद्धि के अनुसार उनकी रक्षा करो। तुम प्रेम हो। तुम सबको आनंद भेजोगे!" अलेयोशा ने धीरे से कहा, क्रॉस का निशान बनाया और शांति से सो गया।

भाग दो

पुस्तक 4

घाव

अध्याय 1

फादर फेरापोंट

अलेयोशा भोर से पहले ही जल्दी उठ गया। फादर ज़ोस्सिमा बहुत कमज़ोर महसूस करते हुए उठे, हालाँकि वे बिस्तर से उठकर कुर्सी पर बैठना चाहते थे। उनका दिमाग बिल्कुल साफ़ था; उनका चेहरा बहुत थका हुआ लग रहा था, फिर भी चमकीला और लगभग प्रसन्न था। उनके चेहरे पर खुशी, दयालुता और सौहार्द का भाव था। उन्होंने अलेयोशा से कहा, "शायद मैं कल तक जीवित न रहूँ।" फिर उन्होंने तुरंत पाप स्वीकार करने और पवित्र भोज लेने की इच्छा जताई। वे हमेशा फादर पैसी के सामने ही पाप स्वीकार करते थे। पवित्र भोज लेने के बाद अंतिम संस्कार हुआ। भिक्षु इकट्ठा हुए और धीरे-धीरे कुटिया में आश्रम के लोग भर गए। इसी बीच उजाला हो गया। लोग मठ से आने लगे। संस्कार समाप्त होने के बाद, बड़े भिक्षु ने सभी को चूमकर विदा लेने की इच्छा जताई। कुटिया छोटी होने के कारण पहले आए आगंतुक दूसरों के लिए जगह बनाने के लिए चले गए। अलेयोशा बड़े भिक्षु के बगल में खड़ा रहा, जो अपनी कुर्सी पर फिर से बैठ गए थे। उन्होंने जितना हो सका उतना बोला। हालाँकि उनकी आवाज़ कमज़ोर थी, फिर भी काफ़ी स्थिर थी।
मैं तुम्हें इतने सालों से पढ़ा रहा हूँ, और इसीलिए मैं बोलता आ रहा हूँ।
"इतने सालों से जोर-जोर से बोलते-बोलते मुझे बोलने की आदत पड़ गई है, और इतनी ज्यादा कि अब भी, अपनी कमजोरी के बावजूद, मेरे लिए चुप रहना बोलने से ज्यादा मुश्किल हो गया है, प्यारे पिताओं और भाइयों," उन्होंने अपने चारों ओर मौजूद समूह की ओर भावुक होकर देखते हुए मजाक में कहा।
अलोशा को बाद में याद आया कि उसने उनसे क्या कहा था। लेकिन
हालाँकि उनकी आवाज़ स्पष्ट और स्थिर थी, फिर भी उनका भाषण कुछ अटपटा सा था। उन्होंने अनेक विषयों पर बात की; मृत्यु के क्षण से पहले वे अपने जीवन में अनकही सारी बातें कहने के लिए उत्सुक प्रतीत हो रहे थे, और यह केवल उपदेश देने के उद्देश्य से नहीं, बल्कि ऐसा लग रहा था मानो वे समस्त मनुष्यों और समस्त सृष्टि के साथ अपने आनंद और परमानंद को साझा करने के लिए प्यासे हों, और अपने जीवन में एक बार फिर अपना संपूर्ण हृदय खोलकर रख देना चाहते हों।
“एक दूसरे से प्रेम करो, पिताओं,” फादर ज़ोस्सिमा ने अलेयोशा से कहा।
बाद में याद रख सका। “ईश्वर के लोगों से प्रेम करो। यद्यपि हम यहाँ आए हैं और इन दीवारों के भीतर स्वयं को बंद कर लिया है, इसका अर्थ यह नहीं कि हम बाहर वालों से अधिक पवित्र हैं, बल्कि इसके विपरीत, यहाँ आने मात्र से ही हममें से प्रत्येक ने स्वयं स्वीकार किया है कि वह दूसरों से, पृथ्वी पर सभी मनुष्यों से, बदतर है... और जितना अधिक समय भिक्षु अपने एकांतवास में बिताता है, उतना ही उसे यह बात गहराई से समझनी चाहिए। अन्यथा उसके यहाँ आने का कोई कारण नहीं होता। जब उसे यह अहसास होता है कि वह न केवल दूसरों से बदतर है, बल्कि वह सभी मनुष्यों के प्रति हर चीज के लिए, सभी मानवीय पापों के लिए, राष्ट्रीय और व्यक्तिगत, उत्तरदायी है, तभी हमारे एकांतवास का उद्देश्य प्राप्त होता है। क्योंकि हे प्रियजनों, जान लो कि हममें से प्रत्येक निस्संदेह पृथ्वी पर सभी मनुष्यों और हर चीज के लिए उत्तरदायी है, न केवल सृष्टि की सामान्य पापमयता के कारण, बल्कि प्रत्येक व्यक्ति व्यक्तिगत रूप से समस्त मानव जाति और प्रत्येक मनुष्य के लिए उत्तरदायी है। यह ज्ञान भिक्षु और प्रत्येक मनुष्य के लिए जीवन का मुकुट है। क्योंकि भिक्षु कोई विशेष प्रकार के मनुष्य नहीं होते, बल्कि वे होते हैं जो सभी मनुष्यों को होना चाहिए। केवल उस ज्ञान के माध्यम से ही हमारा हृदय अनंत, सार्वभौमिक प्रेम से कोमल हो जाता है।” असीम प्रेम। तब तुममें से प्रत्येक को प्रेम द्वारा समस्त संसार को जीतने और अपने आँसुओं से संसार के पापों को धोने की शक्ति प्राप्त होगी... तुममें से प्रत्येक अपने हृदय पर ध्यान रखो और निरंतर अपने पापों को स्वीकार करो। अपने पापों से भयभीत

मत हो, यहाँ तक कि जब तुम उन्हें जानते हो, केवल पश्चाताप होने पर, परन्तु परमेश्वर से कोई शर्त मत रखो। मैं फिर कहता हूँ, अभिमान मत करो। न तो छोटे पर और न ही बड़े पर अभिमान करो। जो तुम्हें ठुकराते हैं, जो तुम्हारा अपमान करते हैं, जो तुम्हें गाली देते हैं और तुम्हारी निंदा करते हैं, उनसे घृणा मत करो। नास्तिकों, बुराई के शिक्षकों, भौतिकवादियों से घृणा मत करो—और मेरा तात्पर्य केवल अच्छे लोगों से नहीं है—क्योंकि उनमें बहुत से अच्छे लोग हैं, विशेषकर हमारे समय में—दुष्टों से भी घृणा मत करो। अपनी प्रार्थनाओं में उन्हें इस प्रकार याद करो: हे प्रभु, उन सभी को बचाओ जिनके लिए प्रार्थना करने वाला कोई नहीं है, उन सभी को भी बचाओ जो प्रार्थना नहीं करेंगे। और जोड़ो: हे प्रभु, मैं यह प्रार्थना अभिमान में नहीं कर रहा हूँ, क्योंकि मैं सभी मनुष्यों से नीचा हूँ... परमेश्वर के प्रेम को याद करो। हे लोगो, अजनबियों को झुंड को अपने साथ न ले जाने दो, क्योंकि यदि तुम अपनी आलस्य और घमंड में, या इससे भी बदतर, लोभ में डूबे रहोगे, तो वे चारों ओर से आकर तुम्हारे झुंड को अपने साथ ले जाएंगे। लोगों को निरंतर सुसमाचार सुनाओ... ज़बरदस्ती मत करो... सोने-चांदी से प्रेम मत करो, उन्हें जमा मत करो... विश्वास रखो। झंडे को थामे रहो और उसे ऊँचा उठाओ।

लेकिन बुजुर्ग व्यक्ति की बातें अलेयोशा द्वारा बताई गई बातों से कहीं अधिक असंबद्ध थीं।

बाद में उनके शब्द रुक जाते थे। कभी-कभी वे पूरी तरह से रुक जाते थे, मानो सांस लेने और अपनी शक्ति वापस पाने के लिए, लेकिन वे एक प्रकार के परमानंद में थे। लोगों ने उन्हें भावभीनीता से सुना, हालांकि कई लोग उनके शब्दों पर आश्चर्यचकित हुए और उन्हें अस्पष्ट पाया... बाद में सभी को वे शब्द याद रहे।

जब अलेयोशा एक पल के लिए कोठरी से बाहर निकला, तो उस पर हमला हुआ।

वहाँ जमा हुए भिक्षुओं में व्याप्त उत्साह और उत्सुकता साफ झलक रही थी। कुछ भिक्षुओं में यह उत्सुकता चिंता के रूप में प्रकट हो रही थी, तो कुछ में गहन श्रद्धा के रूप में। सभी को उम्मीद थी कि बड़े भिक्षु की मृत्यु के तुरंत बाद कोई चमत्कार होगा। उनकी उत्सुकता, एक दृष्टि से, लगभग निरर्थक थी, लेकिन यहाँ तक कि सबसे गंभीर भिक्षु भी इससे प्रभावित थे। फादर पैसी का चेहरा सबसे गंभीर लग रहा था।

अलियोशा को रहस्यमय तरीके से एक भिक्षु द्वारा रकितिन से मिलने के लिए बुलाया गया था, जो शहर से मैडम होहलाकोव का एक अनोखा पत्र लेकर अलेयोशा आए थे। उसमें उन्होंने अलेयोशा को एक विचित्र और बहुत ही उपयुक्त घटना के बारे में बताया था। पता चला कि पिछले दिन फादर ज़ोस्सिमा का आशीर्वाद लेने आई महिलाओं में शहर की एक बूढ़ी औरत, एक सार्जेंट की विधवा, प्रोहोरोवना भी थीं। उन्होंने पूछा था कि क्या वह अपने बेटे वासेंका की आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना कर सकती हैं, जो इरकुत्स्क गया था और एक साल से अधिक समय से उनसे कोई खबर नहीं भेज रहा था। इस पर फादर ज़ोस्सिमा ने सख्ती से जवाब देते हुए उन्हें ऐसा करने से मना किया और कहा कि जीवित के लिए मृत की तरह प्रार्थना करना एक प्रकार का जादू-टोना है। बाद में उन्होंने उनकी अज्ञानता के कारण उन्हें क्षमा कर दिया और "जैसे भविष्य की किताब पढ़ रहे हों" (यह मैडम होहलाकोव का कथन था) उन्हें सांत्वना के शब्द कहे: "कि उनका बेटा वास्या निश्चित रूप से जीवित है और वह या तो स्वयं बहुत जल्द आएगा या एक पत्र भेजेगा, और उन्हें घर जाकर उसका इंतजार करना चाहिए।" और “क्या आप विश्वास करेंगे?” मैडम होहलाकोव ने उत्साह से कहा, “भविष्यवाणी अक्षरशः पूरी हो गई है, बल्कि उससे भी कहीं अधिक।” बुढ़िया के घर पहुँचते ही साइबेरिया से आया एक पत्र उन्हें मिला, जो उनका इंतज़ार कर रहा था। लेकिन बात यहीं खत्म नहीं हुई; येकातेरिनबर्ग से रास्ते में लिखे पत्र में वास्या ने अपनी माँ को बताया कि वह एक अधिकारी के साथ रूस लौट रहा है, और पत्र मिलने के तीन सप्ताह बाद वह “अपनी माँ को गले लगाने” की आशा रखता है।

मैडम होहलाकोव ने अल्योशा से इस नई खबर की सूचना देने का हार्दिक अनुरोध किया।

सुपीरियर और सभी भिक्षुओं को “भविष्यवाणी का चमत्कार” बताते हुए, उसने कहा, “सभी को, सभी को इसके बारे में पता होना चाहिए!” पत्र जल्दबाजी में लिखा गया था, लेखक का उत्साह उसकी हर पंक्ति में स्पष्ट था। लेकिन अलेयोशा को भिक्षुओं को बताने की कोई आवश्यकता नहीं थी, क्योंकि सभी को पहले से ही इसके बारे में पता था। रकितिन ने अपने संदेशवाहक भिक्षु को यह आदेश दिया था कि “वे आदरणीय फादर पैसी को अत्यंत आदरपूर्वक सूचित करें कि रकितिन को उनसे एक अत्यंत महत्वपूर्ण विषय पर बात करनी है, जिसे वे एक क्षण के लिए भी टाल नहीं सकते, और अपनी धृष्टता के लिए विनम्रतापूर्वक क्षमा मांगते हैं।” चूंकि भिक्षु ने अलेयोशा से पहले फादर पैसी को संदेश दिया था, इसलिए पत्र पढ़ने के बाद अलेयोशा के पास कहानी की पुष्टि के रूप में इसे फादर पैसी को सौंपने के अलावा कोई विकल्प नहीं बचा था।

और वह संयमी और सतर्क व्यक्ति भी, हालांकि पढ़ते समय उसके चेहरे पर शिकन आ जाती थी।
इस "चमत्कार" की खबर से उनके भीतर की भावनाएं पूरी तरह से दब नहीं पाईं। उनकी आंखें चमक उठीं और उनके होठों पर एक गंभीर और शांत मुस्कान आ गई।
“हम और भी बड़ी चीजें देखेंगे!” उसके मुँह से आवाज़ निकली। “हम और भी बड़ी चीजें देखेंगे, और भी बड़ी चीजें!” आसपास के भिक्षुओं ने कहा।
दोहराया गया।
लेकिन फादर पैसी ने फिर से भौंहें चढ़ाते हुए उन सभी से कम से कम एक के लिए विनती की।
उन्होंने कहा, "जब तक इसकी पूरी तरह से पुष्टि नहीं हो जाती, तब तक इस मामले पर बात न करें, क्योंकि इस दुनिया के लोगों में बहुत अधिक अंधविश्वास है, और वास्तव में यह स्वाभाविक रूप से भी हो सकता था।" उन्होंने विवेकपूर्ण ढंग से, मानो अपने अंतरात्मा को संतुष्ट करने के लिए, यह बात जोड़ी, हालांकि वे खुद अपने खंडन पर मुश्किल से ही विश्वास कर रहे थे, इस तथ्य को उनके श्रोताओं ने बहुत स्पष्ट रूप से महसूस किया।
एक घंटे के भीतर ही यह "चमत्कार" सबको पता चल गया।
मठ और प्रार्थना सभा में शामिल होने आए कई आगंतुक भी इससे प्रभावित थे। ऐसा प्रतीत होता था कि सबसे अधिक प्रभावित वह भिक्षु था जो एक दिन पहले सुदूर उत्तर में स्थित ओब्डोर्स्क के छोटे से मठ, सेंट सिल्वेस्टर से आया था। वही भिक्षु पिछले दिन मैडम होहलाकोव के पास खड़ा था और उसने फादर ज़ोस्सिमा से, महिला की बेटी के "उपचार" का जिक्र करते हुए, गंभीरता से पूछा था, "आप इस तरह के काम करने का साहस कैसे कर सकते हैं?"
अब वह कुछ असमंजस में था और उसे समझ नहीं आ रहा था कि किसका विश्वास करे।
पिछली शाम वह मधुमक्खी पालन स्थल के पीछे स्थित फादर फेरापोंट की एकांत कोठरी में उनसे मिलने गए थे और उस मुलाकात से वे बेहद प्रभावित और विस्मित हुए थे। फादर फेरापोंट वही वृद्ध भिक्षु थे जो उपवास और मौन धारण करने में अत्यंत निष्ठावान थे और जिनका उल्लेख पहले ही हो चुका है। वे फादर ज़ोस्सिमा और "वरिष्ठ भिक्षुओं" की पूरी संस्था के कट्टर विरोधी थे, जिसे वे एक हानिकारक और व्यर्थ नवाचार मानते थे। वे एक अत्यंत दुर्जेय विरोधी थे, यद्यपि मौन रहने के कारण वे शायद ही किसी से एक शब्द भी बोलते थे। उनकी दुर्जेयता का कारण यह था कि कई भिक्षु उनके विचारों से पूरी तरह सहमत थे और कई आगंतुक उन्हें एक महान संत और तपस्वी मानते थे, यद्यपि उन्हें इस बात का कोई संदेह नहीं था कि वे थोड़े सनकी थे। लेकिन उनकी सनक ही उन्हें आकर्षित करती थी।
फादर फेरापोंट कभी भी बुजुर्ग से मिलने नहीं गए। हालाँकि वे वहीं रहते थे।
उस आश्रम में नियमों का पालन करना उसके लिए अनिवार्य नहीं था, और इसका कारण यह था कि उसका व्यवहार ऐसा था मानो वह पागल हो गया हो। उसकी उम्र पचहत्तर वर्ष या उससे अधिक थी, और वह मधुमक्खी पालन स्थल के बाहर एक कोने में एक पुरानी, जर्जर लकड़ी की कुटिया में रहता था, जो बहुत पहले एक अन्य महान तपस्वी, फादर इओना के लिए बनाई गई थी, जो एक सौ पाँच वर्ष तक जीवित रहे थे, और जिनके संतत्वपूर्ण कार्यों की कई रोचक कहानियाँ अभी भी मठ और आसपास के क्षेत्र में प्रचलित थीं। फादर फेरापोंट इसी पद पर अपना स्थान स्थापित करवाने में सफल हो गए थे।
सात साल पहले, फादर फेरापोंट एकांत कोठरी में रहते थे। यह साधारण सी एक किसान की झोपड़ी थी, हालाँकि देखने में किसी गिरजाघर जैसी लगती थी, क्योंकि इसमें असाधारण संख्या में मूर्तियाँ थीं जिनके सामने हमेशा जलते हुए दीपक थे—जिन्हें लोग ईश्वर को भेंट के रूप में मठ में लाते थे। फादर फेरापोंट को उनकी देखभाल करने और दीपक जलाए रखने का काम सौंपा गया था। कहा जाता था (और वास्तव में यह सच था) कि वे तीन दिनों में केवल दो पौंड रोटी खाते थे। मधुमक्खी पालक, जो मधुमक्खी पालन केंद्र के पास ही रहता था, उन्हें हर तीन दिन में रोटी लाता था, और यहाँ तक कि अपनी सेवा करने वाले उस व्यक्ति से भी फादर फेरापोंट शायद ही कभी कुछ बोलते थे। फादर सुपीरियर द्वारा रविवार को देर से होने वाली प्रार्थना के बाद नियमित रूप से भेजी जाने वाली चार पौंड रोटी, साथ ही पवित्र रोटी, उनका साप्ताहिक राशन होता था। उनके घड़े का पानी हर दिन बदला जाता था। वे शायद ही कभी प्रार्थना में शामिल होते थे। उनसे मिलने आने वाले आगंतुक उन्हें कभी-कभी पूरे दिन घुटनों के बल बैठकर प्रार्थना करते हुए देखते थे, बिना इधर-उधर देखे। यदि वे उनसे बात करते भी थे, तो उनका उत्तर संक्षिप्त, अचानक, विचित्र और लगभग हमेशा असभ्य

होता था। बहुत ही कम मौकों पर, वे आगंतुकों से बात करते थे, लेकिन ज्यादातर वे कोई अजीबोगरीब बात कहते थे जो पूरी तरह से रहस्यमय होती थी, और किसी भी विनती से वे उसका कोई स्पष्टीकरण नहीं देते थे। वे पुजारी नहीं, बल्कि एक साधारण भिक्षु थे। एक अजीब धारणा थी, खासकर सबसे अज्ञानी लोगों के बीच, कि फादर फेरापोंट का दिव्य आत्माओं से संपर्क था और वे केवल उन्हीं से बात करते थे, इसलिए वे मनुष्यों से चुप रहते थे।
ओबडोर्स्क के भिक्षु को मधुमक्खी पालन केंद्र की ओर निर्देशित किया गया था।
मधुमक्खी पालक, जो एक बहुत ही शांत और चिड़चिड़े भिक्षु भी थे, उस कोने में गए जहाँ फादर फेरापोंट की कुटिया थी। “हो सकता है कि वे आपसे अजनबी होने का दिखावा करें और हो सकता है कि आपको उनसे कुछ भी न मिले,” मधुमक्खी पालक ने उन्हें चेतावनी दी थी। भिक्षु ने बाद में बताया कि वे अत्यंत भयभीत होकर वहाँ पहुँचे। शाम काफी ढल चुकी थी। फादर फेरापोंट अपनी कुटिया के दरवाजे पर एक नीची बेंच पर बैठे थे। ऊपर एक विशाल पुराना एल्म का पेड़ हल्की सरसराहट कर रहा था। हवा में शाम की ताजगी थी। ओब्डोर्स्क के भिक्षु ने संत के सामने सिर झुकाया और उनका आशीर्वाद मांगा।
“क्या आप चाहते हैं कि मैं आपके सामने सिर झुकाऊं, भिक्षु?” फादर फेरापोंट ने कहा।
"उठना!"
भिक्षु उठ खड़ा हुआ।
“आशीर्वाद, आशीर्वाद पाओ! मेरे पास बैठो। तुम कहाँ से आए हो?” गरीब भिक्षु को सबसे ज्यादा चौंकाने वाली बात यह थी कि अपने सख्त नियमों के बावजूद
उपवास और वृद्धावस्था के बावजूद, फादर फेरापोंट अभी भी एक चुस्त-दुरुस्त बूढ़े व्यक्ति प्रतीत होते थे। वे लंबे थे, सीधे खड़े रहते थे और उनका चेहरा पतला, फिर भी तरोताज़ा और स्वस्थ था। इसमें कोई संदेह नहीं था कि उनमें अभी भी काफी ताकत थी। उनका शरीर एथलेटिक था। इतनी अधिक उम्र के बावजूद उनके बाल पूरी तरह से सफेद नहीं हुए थे, और उनके बाल और दाढ़ी अभी भी घने थे, जो कभी काले हुआ करते थे। उनकी आंखें भूरी, बड़ी और चमकदार थीं, लेकिन बेहद उभरी हुई थीं। वे एक अलग लहजे में बोलते थे। उन्होंने मोटे, लाल रंग के कपड़े का एक लंबा, किसान जैसा कोट पहना हुआ था (जैसा कि उस समय कहा जाता था) और उनकी कमर पर एक मोटी रस्सी बंधी हुई थी। उनका गला और छाती नंगी थी। उनके कोट के नीचे, सबसे मोटे लिनेन की कमीज गंदगी से लगभग काली हो गई थी, जिसे महीनों से बदला नहीं गया था। लोग कहते थे कि उन्होंने अपने कोट के नीचे तीस पाउंड वजन के लोहे के हथकंडे पहन रखे थे। उनके मोजे रहित पैर पुराने चप्पलों में ठूंसे हुए थे जो लगभग फटने वाले थे।
“छोटे से ओबडोर्स्क मठ से, सेंट सिल्वेस्टर से,” भिक्षु ने कहा।
उसने विनम्रतापूर्वक उत्तर दिया, जबकि उसकी उत्सुक और जिज्ञासु, लेकिन कुछ हद तक डरी हुई छोटी आँखें साधु पर नजर रखे हुए थीं।
“मैं आपके सिल्वेस्टर के यहाँ आया था। मैं वहाँ रुका करता था। क्या सिल्वेस्टर ठीक है?” भिक्षु हिचकिचाया।
“तुम लोग तो बिल्कुल नासमझ हो! तुम लोग व्रत कैसे रखते हो?”
“हमारा आहार प्राचीन मठवासी नियमों के अनुसार है। उपवास के दौरान
सोमवार, बुधवार और शुक्रवार को भोजन नहीं दिया जाता है। मंगलवार और गुरुवार को हम सफेद रोटी, शहद के साथ पके फल, जंगली जामुन या नमक वाली पत्तागोभी और साबुत अनाज की दलिया खाते हैं। शनिवार को सफेद पत्तागोभी का सूप, मटर के साथ नूडल्स, कशा, ये सभी भांग के तेल के साथ परोसे जाते हैं। सप्ताह के अन्य दिनों में हम पत्तागोभी के सूप के साथ सूखी मछली और कशा खाते हैं। सोमवार से शनिवार शाम तक, पवित्र सप्ताह के पूरे छह दिन, कुछ भी पकाया नहीं जाता है, और हम केवल रोटी और पानी लेते हैं, वह भी बहुत कम मात्रा में; यदि संभव हो तो हर दिन भोजन न करें, ठीक वैसे ही जैसे उपवास के पहले सप्ताह में किया जाता है। गुड फ्राइडे को कुछ भी नहीं खाया जाता है। इसी तरह शनिवार को हमें तीन बजे तक उपवास रखना होता है, और फिर थोड़ी रोटी और पानी लेकर एक प्याला शराब पीनी होती है। पवित्र गुरुवार को हम शराब पीते हैं और बिना तेल के या बिना पकाए कुछ खाते हैं। चूंकि लाओडिसियन परिषद ने पवित्र गुरुवार के लिए यह निर्धारित किया है: 'पवित्र गुरुवार को उपवास न रखकर पूरे उपवास का अपमान करना अनुचित है!' इसी प्रकार हम उपवास रखते हैं। “परन्तु हे परमपिता, आपके सामने यह क्या है?” भिक्षु ने अधिक आत्मविश्वास से कहा, “आप तो पूरे वर्ष, यहाँ तक कि ईस्टर पर भी, केवल रोटी और पानी ही लेते हैं,

और जो भोजन हम दो दिनों में खाते हैं, वह आपके लिए पूरे सात दिनों तक पर्याप्त रहता है। यह सचमुच अद्भुत है—आपका महान संयम।"
"और मशरूम?" फादर फेरापोंट ने अचानक पूछा। "मशरूम?" आश्चर्यचकित भिक्षु ने दोहराया।
"हाँ। मैं उनकी रोटी छोड़ सकता हूँ, मुझे उसकी बिल्कुल भी ज़रूरत नहीं है, और मैं चला जाऊँगा।"
वे जंगल में रहते हैं और वहाँ मशरूम या बेर खाकर अपना जीवन यापन करते हैं, लेकिन वे यहाँ की रोटी नहीं छोड़ सकते, इसलिए वे शैतान के बंधन में हैं। आजकल अपवित्र लोग ऐसे उपवास की आवश्यकता को नकारते हैं। उनका निर्णय घमंडी और अपवित्र है।
"ओह, सच," भिक्षु ने आह भरी।
"क्या तुमने उनमें शैतान देखे हैं?" फेरापोंट ने पूछा। "उनमें? किनमें?" भिक्षु ने डरते हुए पूछा। "मैं पिछले साल त्रिमूर्ति रविवार को फादर सुपीरियर के पास गया था, मैंने नहीं देखे।"
तब से ऐसा कुछ नहीं हुआ। मैंने एक आदमी की छाती पर एक शैतान को बैठे देखा, जो उसके चोगे के नीचे छिपा हुआ था, केवल उसके सींग बाहर निकले हुए थे; दूसरे की जेब से एक शैतान झाँक रहा था, जिसकी आँखें इतनी तेज़ थीं कि वह मुझसे डर गया; एक और शैतान एक आदमी के अपवित्र पेट में बैठा था, एक और शैतान एक आदमी की गर्दन के चारों ओर लटका हुआ था, और इस तरह वह उसे बिना देखे ही इधर-उधर ले जा रहा था।
"क्या आप आत्माओं को देख सकते हैं?" भिक्षु ने पूछा।
"मैं आपको बताता हूँ, मैं देख सकता हूँ, मैं उनके आर-पार देख सकता हूँ। जब मैं बाहर आ रहा था सुपीरियर के यहाँ से मैंने एक मकड़ी को दरवाजे के पीछे मुझसे छिपते हुए देखा, वह बहुत बड़ी थी, डेढ़ गज या उससे भी अधिक ऊँची, उसकी मोटी, लंबी, भूरे रंग की पूंछ थी। उसकी पूंछ का सिरा दरवाजे की दरार में फंसा हुआ था। मैंने झट से दरवाजा बंद कर दिया, जिससे उसकी पूंछ उसमें दब गई। वह चीखी और छटपटाने लगी। मैंने उसके ऊपर तीन बार क्रॉस का निशान बनाया। और वह वहीं मर गई, जैसे कोई कुचली हुई मकड़ी। वह कोने में सड़ गई होगी और बदबू मार रही होगी, लेकिन उन्हें दिखाई नहीं देता, उन्हें उसकी गंध नहीं आती। मुझे वहाँ गए एक साल हो गया है। मैं आपको यह बता रहा हूँ, क्योंकि आप अजनबी हैं।
"आपके शब्द बहुत भयानक हैं! लेकिन, परम पावन पिता," भिक्षु ने कहा।
और अधिक साहसी होते हुए, "क्या यह सच है, जैसा कि दूर-दूर के देशों में तुम्हारे बारे में प्रचार किया जा रहा है, कि तुम पवित्र आत्मा के साथ निरंतर संवाद में हो?"
वह कभी-कभी नीचे की ओर उड़कर आता है।
"वह नीचे कैसे आता है? किस रूप में?"
"एक पक्षी की तरह।"
"क्या पवित्र आत्मा कबूतर के रूप में प्रकट हुई?"
"एक पवित्र आत्मा है और एक पवित्र आत्मा है। पवित्र आत्मा
ये अन्य पक्षियों के रूप में भी प्रकट हो सकते हैं—कभी निगल पक्षी के रूप में, कभी गोल्डफिंच के रूप में और कभी ब्लू-टिट के रूप में।
"तुम उसे एक साधारण मूर्ख से कैसे अलग पहचानते हो?"
वह बोलता है।
वह कैसे बोलता है, किस भाषा में?
"मानव भाषा।"
और वह आपको क्या बताता है?
आज उसने मुझे बताया कि एक मूर्ख मुझसे मिलने आएगा और मुझसे पूछेगा
ये अनुचित प्रश्न हैं। आप बहुत ज्यादा जानना चाहते हैं, भिक्षु।
"हे परम पवित्र और धन्य पिता, आपके शब्द अत्यंत भयावह हैं," भिक्षु ने कहा।
उसने अपना सिर हिलाया। लेकिन उसकी डरी हुई छोटी आँखों में संदेह का भाव था।
"क्या आपको यह पेड़ दिखाई दे रहा है?" फादर फेरापोंट ने कुछ देर रुककर पूछा। "जी हां, परम पूज्य फादर।"
"आपको लगता है कि यह एक एल्म का पेड़ है, लेकिन मेरे लिए इसका आकार कुछ और है।"

“किस तरह की आकृति?” भिक्षु ने व्यर्थ विराम के बाद पूछा।
अपेक्षा।
“यह रात में होता है। क्या आप उन दो शाखाओं को देख रहे हैं? रात में ऐसा होता है।”
ईसा मसीह अपनी बाहें मेरी ओर फैलाए हुए हैं और उन बाणों से मुझे खोज रहे हैं, मैं इसे स्पष्ट रूप से देखता हूँ और कांप उठता हूँ। यह भयानक है, बहुत भयानक!
"अगर स्वयं ईसा मसीह ही हों तो इसमें भयानक क्या है?"
"अरे, वो तो मुझे उठा ले जाएगा और अपने साथ ले जाएगा।"
"जीवित?"
“एलियाह की आत्मा और महिमा में, क्या तुमने नहीं सुना? वह मुझे अपने साथ ले जाएगा।”
मुझे अपनी बाहों में उठाकर ले जाओ।
हालाँकि भिक्षु उस कोठरी में लौट आया जिसे वह अपने एक साथी के साथ साझा कर रहा था
भाइयों, मन की गहरी उलझन में डूबे होने के बावजूद, उनके हृदय में फादर फेरापोंट के प्रति फादर ज़ोस्सिमा से कहीं अधिक श्रद्धा थी। वे उपवास के प्रबल समर्थक थे, और यह कोई आश्चर्य की बात नहीं थी कि फादर फेरापोंट जैसे कठोर उपवास रखने वाले व्यक्ति को "चमत्कार" दिखाई दें। उनके शब्द निश्चित रूप से विचित्र प्रतीत होते थे, लेकिन केवल ईश्वर ही जान सकता था कि उन शब्दों में क्या छिपा था, और क्या इससे भी बुरे शब्द और कार्य उन लोगों में आम तौर पर नहीं देखे जाते जिन्होंने ईश्वर की महिमा के लिए अपनी बुद्धि का त्याग कर दिया है? वे शैतान की पूंछ खींचने की बात पर विश्वास करने के लिए तैयार और उत्सुक थे, और केवल लाक्षणिक अर्थ में ही नहीं। इसके अलावा, मठ में आने से पहले, उनके मन में "बुजुर्गों" की संस्था के प्रति एक मजबूत पूर्वाग्रह था, जिसके बारे में उन्होंने केवल सुनी-सुनाई बातों से ही जाना था और जिसे वे एक हानिकारक नवाचार मानते थे। मठ में कुछ समय बिताने से पहले ही, उन्होंने कुछ सतही भाइयों की दबी हुई फुसफुसाहटें सुन ली थीं जो इस संस्था को नापसंद करते थे। इसके अलावा, वे एक दखलंदाज़, जिज्ञासु व्यक्ति थे, जो हर बात में अपनी नाक घुसाते थे। इसीलिए फादर ज़ोस्सिमा द्वारा किए गए नए “चमत्कार” की खबर सुनकर अलेयोशा बेहद हैरान रह गया। बाद में अलेयोशा को याद आया कि ओब्डोर्स्क से आया उनका जिज्ञासु मेहमान लगातार एक समूह से दूसरे समूह में घूम रहा था, और बड़े भिक्षु के कमरे के अंदर और बाहर जमा भिक्षुओं से बातें सुन रहा था और सवाल पूछ रहा था। लेकिन उस समय उसने उस पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया था, और उसे यह बात बाद में ही याद आई।
उनके पास इसके लिए सोचने का बिल्कुल भी समय नहीं था, क्योंकि जब फादर ज़ोसिमा,
थकान महसूस करते हुए, जब वह बिस्तर पर वापस गया, तो आँखें बंद करते समय उसे अलेयोशा की याद आई और उसने उसे बुलवाया। अलेयोशा तुरंत दौड़कर आया। कोठरी में फादर पैसी, फादर इओसिफ और नौसिखिए पोर्फिरी के अलावा कोई और नहीं था। बड़े फादर ने अपनी थकी हुई आँखें खोलीं और अलेयोशा को ध्यान से देखते हुए अचानक उससे पूछा:
“क्या तुम्हारे लोग तुम्हारा इंतजार कर रहे हैं, मेरे बेटे?”
अलोशा हिचकिचाया।
क्या उन्हें तुम्हारी ज़रूरत नहीं है? क्या तुमने कल किसी से वादा नहीं किया था?
क्या आपने उन्हें आज देखा?
मैंने वादा किया था—अपने पिता से—अपने भाइयों से—और दूसरों से भी।
“देखो, तुम्हें जाना होगा। शोक मत करो। यकीन मानो, मैं तुम्हारे बिना नहीं मरूंगा।”
तुम मेरे आखिरी शब्द सुनने के लिए यहाँ मौजूद हो। मैं तुमसे वो शब्द कहूँगा, मेरे बेटे, ये तुम्हारे लिए मेरा आखिरी उपहार होगा। तुमसे, प्यारे बेटे, क्योंकि तुम मुझसे प्यार करते हो। लेकिन अब जाओ और अपना वादा निभाओ।
अलेयोशा ने तुरंत आज्ञा का पालन किया, हालाँकि जाना उसके लिए कठिन था। लेकिन वादा
यह जानकर कि वह धरती पर अपना आखिरी शब्द सुनेगा, कि यह उसके लिए आखिरी उपहार होगा, अलेयोशा, उसकी आत्मा आनंद से भर उठी। उसने जल्दी से शहर में अपना काम खत्म किया और जल्दी लौट आया। फादर पैसी ने भी कुछ प्रेरणादायक शब्द कहे, जिनसे वह बहुत प्रभावित और आश्चर्यचकित हुआ। उन्होंने ये बातें तब कहीं जब वे दोनों साथ में कोठरी से बाहर निकले।

“याद रखना, नौजवान, निरंतर,” फादर पैसी ने बिना किसी हिचकिचाहट के कहना शुरू किया।
प्रस्तावना में कहा गया है, “इस संसार का विज्ञान, जो एक महान शक्ति बन गया है, विशेष रूप से पिछली शताब्दी में, पवित्र ग्रंथों में हमें सौंपी गई हर दिव्य चीज़ का विश्लेषण करता रहा है। इस क्रूर विश्लेषण के बाद, इस संसार के विद्वानों के पास प्राचीन काल की पवित्रता का कुछ भी शेष नहीं बचा है। उन्होंने केवल भागों का विश्लेषण किया है और संपूर्ण को अनदेखा कर दिया है, और वास्तव में उनका अंधापन आश्चर्यजनक है। फिर भी संपूर्ण उनकी आँखों के सामने अडिग खड़ा है, और नरक के द्वार इसके विरुद्ध प्रबल नहीं होंगे। क्या यह उन्नीस शताब्दियों तक कायम नहीं रहा है, क्या यह अभी भी व्यक्तिगत आत्मा और जनसमूह में एक जीवंत, गतिशील शक्ति नहीं है? यह नास्तिकों की आत्माओं में भी उतना ही मजबूत और जीवंत है, जिन्होंने सब कुछ नष्ट कर दिया है! क्योंकि यहाँ तक कि जिन्होंने ईसाई धर्म का त्याग कर उस पर आक्रमण किया है, वे भी अपने अंतर्मन में ईसाई आदर्श का अनुसरण करते हैं, क्योंकि अब तक न तो उनकी सूक्ष्मता और न ही उनके हृदय की उमंग प्राचीन काल में ईसा मसीह द्वारा दिए गए आदर्श से उच्चतर मनुष्य और सद्गुण का आदर्श बनाने में सक्षम रही है। जब भी ऐसा प्रयास किया गया है, परिणाम केवल विकृत ही रहा है। हे युवक, इसे विशेष रूप से याद रखना।” क्योंकि तुम्हें तुम्हारे बिछड़े हुए बड़े द्वारा संसार में भेजा जा रहा है। शायद, इस महान दिन को याद रखते हुए, तुम मेरे उन शब्दों को नहीं भूलोगे, जो मैंने तुम्हारे मार्गदर्शन के लिए हृदय से कहे थे, क्योंकि तुम अभी युवा हो और संसार के प्रलोभन बहुत बड़े हैं और तुम्हारे बस की बात नहीं हैं। अच्छा, अब जाओ, मेरे अनाथ।
इन शब्दों के साथ फादर पैसी ने उसे आशीर्वाद दिया। जैसे ही अलेयोशा वहां से चला गया...
जब अलेयोशा मठ में जाकर उन बातों पर विचार कर रहा था, तो अचानक उसे एहसास हुआ कि उसे एक नया और अप्रत्याशित मित्र, एक स्नेही शिक्षक मिल गया है, उस कठोर भिक्षु में जिसने अब तक उसके साथ सख्ती से व्यवहार किया था। ऐसा लग रहा था मानो फादर ज़ोस्सिमा ने अपनी मृत्यु के समय उसे अलेयोशा को सौंप दिया हो, और "शायद यही उनके बीच का संबंध था," अलेयोशा ने अचानक सोचा। उसने अभी-अभी जो दार्शनिक विचार सुने थे, वे फादर पैसी के हृदय की गर्मजोशी की गवाही दे रहे थे। वे लड़के के मन को प्रलोभनों से लड़ने के लिए तैयार करने और अपनी देखरेख में छोड़ी गई उस युवा आत्मा की रक्षा के लिए हर संभव प्रयास कर रहे थे।

अध्याय दो

अपने पिता के यहाँ

सबसे पहले, अलेयोशा अपने पिता के पास गया। रास्ते में उसे याद आया कि उसके पिता ने एक दिन पहले ज़ोर देकर कहा था कि वह अपने भाई इवान को देखे बिना आए। "ऐसा क्यों?" अलेयोशा अचानक सोचने लगा। "अगर मेरे पिता को मुझसे अकेले में कुछ कहना भी हो, तो मुझे बिना दिखे क्यों जाना चाहिए? शायद कल उत्साह में उनका कुछ और कहने का इरादा रहा होगा," उसने सोचा।
फिर भी, जब मार्फा इग्नात्येवना ने बगीचा खोला तो वह बहुत खुश हुआ।
उसके द्वार पर (ऐसा प्रतीत होता था कि ग्रिगोरी लॉज में बिस्तर पर बीमार पड़ा था), उसने उसके प्रश्न के उत्तर में बताया कि इवान फ्योदोरोविच दो घंटे पहले बाहर गया था।
और मेरे पिता?
“वह उठ गया है, अपनी कॉफ़ी पी रहा है,” मार्फ़ा ने कुछ रूखेपन से जवाब दिया। अलेयोशा अंदर गया। बूढ़ा आदमी मेज़ पर अकेला बैठा था।
चप्पल और एक पुराना सा ओवरकोट पहने हुए, वह कुछ हिसाब-किताब देख रहा था, हालांकि उसका ध्यान कहीं और था। घर में वह बिलकुल अकेला था, क्योंकि स्मरद्याकोव भी बाज़ार गया हुआ था। हालांकि वह जल्दी उठ गया था और आत्मविश्वास दिखाने की कोशिश कर रहा था, पर वह थका हुआ और कमज़ोर लग रहा था। उसके माथे पर, जिस पर रात भर में बड़े-बड़े बैंगनी निशान पड़ गए थे, एक लाल रुमाल से पट्टी बंधी हुई थी; उसकी नाक भी रात भर में बुरी तरह सूज गई थी, और उस पर जगह-जगह छोटे-छोटे निशान थे, जिससे उसका पूरा चेहरा अजीब तरह से चिड़चिड़ा और गुस्से से भरा हुआ लग रहा था। बूढ़ा आदमी इस बात से वाकिफ था, और जैसे ही अलेयोशा अंदर आया, उसने उसे शत्रुतापूर्ण नज़र से देखा।
“कॉफी ठंडी हो गई है,” वह गुस्से से चिल्लाया; “मैं तुम्हें नहीं दूंगा। मेरे पास
आज मैंने उपवास के दौरान खाई जाने वाली मछली की सूप के अलावा कुछ नहीं मंगवाया, और मैंने इसे खाने के लिए किसी को आमंत्रित भी नहीं किया है। आप यहाँ क्यों आए हैं?
“यह जानने के लिए कि तुम कैसे हो,” अलेयोशा ने कहा।
“हाँ। वैसे भी, मैंने तुम्हें कल आने के लिए कहा था। इन सब बातों का कोई महत्व नहीं है।”
आपको परेशान होने की जरूरत नहीं थी। लेकिन मुझे पता था कि आप सीधे दखल देंगे।
उसने लगभग शत्रुतापूर्ण भाव से यह कहा। उसी समय वह उठा और
उसने घबराकर शीशे में अपनी नाक की ओर देखा (शायद उस सुबह चालीसवीं बार)। साथ ही, उसने अपने लाल रुमाल को माथे पर और भी सलीके से बांधना शुरू कर दिया।
“लाल रंग बेहतर है। यह बिल्कुल सफेद रंग के अस्पताल जैसा है,” उन्होंने टिप्पणी की।
गंभीर स्वर में। "अच्छा, वहाँ सब कैसा चल रहा है? आपके बड़े कैसे हैं?"
“उसकी हालत बहुत खराब है; हो सकता है कि वह आज ही मर जाए,” अलेयोशा ने उत्तर दिया। लेकिन उसके पिता
उसने सुना नहीं था और अपना ही सवाल तुरंत भूल गया था।
“इवान बाहर गया है,” उसने अचानक कहा। “वह पूरी कोशिश कर रहा है कि...”
"मित्या की मंगेतर। इसीलिए तो वह यहाँ रुका हुआ है," उसने शरारती लहजे में कहा और मुँह टेढ़ा करते हुए अलेयोशा की ओर देखा।
“क्या उसने तुम्हें सच में ऐसा बताया होगा?” अलेयोशा ने पूछा। “हाँ, उसने बताया था, बहुत पहले। यकीन मानो, उसने मुझे तीन हफ्ते पहले बताया था।”
कुछ समय पहले? आपको नहीं लगता कि वह भी मुझे मारने आया था, है ना? उसके आने का कोई न कोई मकसद तो रहा होगा।
“तुम्हारा क्या मतलब है? तुम ऐसी बातें क्यों कहते हो?” अलेयोशा ने कहा।

परेशान।
"वह पैसे नहीं मांगता, यह सच है, लेकिन फिर भी उसे एक पैसा भी नहीं मिलेगा।"
मुझसे। मैं यथासंभव लंबे समय तक जीना चाहता हूँ, मेरे प्रिय एलेक्सी फ्योदोरोविच, तुम बेहतर जान लो, और इसलिए मुझे हर पैसे की ज़रूरत है, और जितना लंबा मैं जीऊंगा, उतनी ही ज़्यादा मुझे इसकी ज़रूरत पड़ेगी," वह पीले सूती कपड़े से बने अपने ढीले, चिकने ओवरकोट की जेबों में हाथ डाले कमरे के एक कोने से दूसरे कोने तक टहलते हुए बोला। "मैं पचपन साल की उम्र में भी एक आदमी जैसा दिखता हूँ, लेकिन मैं अगले बीस साल तक एक आदमी जैसा दिखना चाहता हूँ। जैसे-जैसे मैं बूढ़ा होता जाऊंगा, तुम जानते हो, मैं आकर्षक नहीं रहूँगा। स्त्रियाँ अपनी मर्ज़ी से मेरे पास नहीं आएंगी, इसलिए मुझे अपने पैसे की ज़रूरत पड़ेगी। इसलिए मैं अपने लिए, मेरे प्रिय बेटे एलेक्सी फ्योदोरोविच, ज़्यादा से ज़्यादा बचत कर रहा हूँ। तुम बेहतर जान लो। क्योंकि मैं अपने पापों में अंत तक डूबा रहूँगा, मैं तुम्हें बता दूँ। क्योंकि पाप मीठा होता है; सभी इसका दुरुपयोग करते हैं, लेकिन सभी मनुष्य इसमें जीते हैं, बस कुछ लोग इसे छुपकर करते हैं, और मैं खुलेआम। और इसलिए बाकी सभी पापी मुझ पर टूट पड़ते हैं क्योंकि मैं इतना भोला हूँ। और हे एलेक्सी फ्योदोरोविच, तुम्हारा स्वर्ग मुझे बिल्कुल भी पसंद नहीं है, मैं तुम्हें बता दूं; और तुम्हारा स्वर्ग, चाहे वो सच में हो भी, किसी सज्जन के लिए उचित स्थान नहीं है। मेरा मानना है कि मैं सो जाता हूँ और फिर कभी नहीं जागता, बस इतना ही। अगर तुम चाहो तो मेरी आत्मा के लिए प्रार्थना कर सकते हो। और अगर नहीं करना चाहते, तो मत करो, भाड़ में जाओ! यही मेरा दर्शन है। कल इवान ने यहाँ खूब बातें कीं, हालाँकि हम सब नशे में थे। इवान एक घमंडी और अभिमानी व्यक्ति है, लेकिन उसमें कोई विशेष ज्ञान नहीं है... न ही शिक्षा। वह चुपचाप बैठा रहता है और बिना कुछ बोले मुस्कुराता है—यही उसकी खासियत है।
अलोशा चुपचाप उसकी बातें सुनता रहा।
"वह मुझसे बात क्यों नहीं करता? अगर वह बोलता भी है, तो अकड़ दिखाता है। आपका
इवान एक बदमाश है! और अगर मैं चाहूँ तो पल भर में ग्रुशेंका से शादी कर लूँगा। क्योंकि अगर आपके पास पैसा है, एलेक्सी फ्योदोरोविच, तो आपको बस चाहना है और वो मिल जाता है। इवान को इसी बात का डर है, वो मेरी शादी रोकने के लिए घात लगाए बैठा है और इसीलिए वो मित्या को ग्रुशेंका से शादी करने के लिए उकसा रहा है। उसे उम्मीद है कि इससे मैं ग्रुशेंका से दूर रहूँगा (जैसे कि अगर मैं उससे शादी नहीं करूँगा तो उसे अपना पैसा दे दूँगा!)। इसके अलावा, अगर मित्या ग्रुशेंका से शादी कर लेता है, तो इवान उसकी अमीर मंगेतर को अपने साथ ले जाएगा, यही उसकी योजना है! तुम्हारा इवान एक बदमाश है!
"तुम कितने गुस्से में हो! ये कल की वजह से है; बेहतर होगा कि तुम लेट जाओ।"
अलोशा ने कहा।
"वाह! तुमने ऐसा कहा," बूढ़े आदमी ने अचानक कहा, मानो उसे
पहली बार उसके मन में यह बात आई, "और मैं तुमसे नाराज़ नहीं हूँ। लेकिन अगर इवान ने ऐसा कहा होता, तो मैं उससे नाराज़ होता। सिर्फ़ तुम्हारे साथ ही मेरे अच्छे पल होते हैं, वरना तुम जानते हो कि मैं कितना चिड़चिड़ा इंसान हूँ।"
"तुम बुरे स्वभाव के नहीं हो, बल्कि विकृत हो," अलेयोशा ने मुस्कुराते हुए कहा। "सुनो। मेरा इरादा आज सुबह उस बदमाश मित्या को जेल में डलवाने का था और मैं
मुझे नहीं पता कि अब मैं इस बारे में क्या फैसला करूं। बेशक आजकल माता-पिता को भेदभाव की नजर से देखा जाता है, लेकिन आज भी कानून आपको अपने बूढ़े पिता को बालों से पकड़कर घसीटने, उनके घर में ही उनके चेहरे पर लात मारने और गवाहों के सामने उनकी हत्या करने का दावा करने की इजाजत नहीं देता। अगर मैं चाहूं तो उन्हें कुचल सकता हूं और कल जो उन्होंने किया उसके लिए उन्हें तुरंत जेल में डाल सकता हूं।
"तो फिर आप कानूनी कार्यवाही शुरू नहीं करना चाहते?"
"इवान ने मुझे मना लिया है। मुझे इवान की परवाह नहीं करनी चाहिए, लेकिन एक और कारण है।"
चीज़।"
और अलेयोशा की ओर झुकते हुए, उसने गोपनीय अंदाज़ में आधे-अधूरे मन से आगे कहा-
फुसफुसाना।
अगर मैं उस बदमाश को जेल भेज दूं, तो उसे पता चलेगा और वह उससे मिलने दौड़कर आएगी।

एक बार। लेकिन अगर उसे पता चला कि उसने मुझे, एक कमज़ोर बूढ़े आदमी को, बुरी तरह पीटा है, तो शायद वह उसे छोड़ दे और मेरे पास आ जाए... क्योंकि यही उसका तरीका है, हर बात को उलट-पुलट कर। मैं उसे अच्छी तरह जानता हूँ! क्या तुम थोड़ी सी ब्रांडी लोगे? थोड़ी ठंडी कॉफ़ी ले लो और मैं उसमें एक चौथाई गिलास ब्रांडी डाल दूँगा, ये बहुत स्वादिष्ट है, मेरे बच्चे।
“नहीं, धन्यवाद। अगर अनुमति हो तो मैं यह रोल अपने साथ ले जाना चाहूंगा,” अलेयोशा ने कहा, और आधा पेनी का फ्रेंच रोल लेकर उसने उसे अपने चोगे की जेब में रख लिया। "और बेहतर होगा कि तुम ब्रांडी भी न पियो," उसने बूढ़े आदमी के चेहरे की ओर देखते हुए आशंका से कहा।
"आप बिलकुल सही कह रहे हैं, यह मेरी नसों को शांत करने के बजाय उन्हें और परेशान करता है।"
बस एक छोटा सा गिलास। मैं उसे अलमारी से निकाल लेता हूँ।
उसने अलमारी का ताला खोला, एक गिलास में तरल पदार्थ डाला, उसे पिया, फिर अलमारी को बंद कर दिया।
उसने अलमारी खोली और चाबी वापस अपनी जेब में रख ली।
बस इतना ही काफी है। एक गिलास से मेरी जान नहीं जाएगी।
“देखो, अब तुम्हारा मूड कुछ बेहतर लग रहा है,” अलेयोशा ने मुस्कुराते हुए कहा। “उम्म! मैं तुम्हें ब्रांडी के बिना भी प्यार करता हूँ, लेकिन बदमाशों के साथ तो मैं...
बदमाश! इवान चेरमाश्न्या नहीं जा रहा—ऐसा क्यों? वो जासूसी करना चाहता है कि अगर ग्रुशेंका आती है तो मैं उसे कितना देता हूँ। ये सब बदमाश हैं! लेकिन मैं इवान को पहचानता नहीं, मैं उसे बिल्कुल नहीं जानता। वो कहाँ से आया है? वो दिल से हममें से नहीं है। जैसे कि मैं उसे कुछ दूँगा! मैं कोई वसीयत नहीं छोड़ूँगा, तुम जान लो। और मैं मित्या को भृंग की तरह कुचल दूँगा। मैं रात में अपनी चप्पल से काले भृंगों को कुचल देता हूँ; उन पर पैर रखने से वो मरोड़ते हैं। और तुम्हारा मित्या भी मरोड़ेगा। तुम्हारा मित्या, क्योंकि तुम उससे प्यार करते हो। हाँ, तुम उससे प्यार करते हो और मुझे तुम्हारे उससे प्यार करने से डर नहीं लगता। लेकिन अगर इवान उससे प्यार करता तो मुझे उसके प्यार करने से खुद के लिए डर लगता। लेकिन इवान किसी से प्यार नहीं करता। इवान हममें से नहीं है। इवान जैसे लोग हमारे जैसे नहीं हैं, मेरे बच्चे। वे धूल के बादल की तरह हैं। जब हवा चलती है, तो धूल उड़ जाती है... आज जब मैंने तुम्हें बुलाया था, तब मेरे मन में एक अजीब सा ख्याल आया था; मैं तुमसे मित्या के बारे में जानना चाहता था। अगर मैं उसे अभी एक-दो हज़ार दे दूं, तो क्या वह बेचारा पांच साल के लिए, या उससे भी बेहतर, पैंतीस साल के लिए, ग्रुशेंका के बिना, पूरी तरह से गायब हो जाएगा और उसे हमेशा के लिए छोड़ देगा?
“मैं—मैं उससे पूछूंगा,” अलेयोशा ने बुदबुदाते हुए कहा। “अगर आप उसे तीन दे दें तो।”
हजार, शायद वह—”
“ये सब बकवास है! अब तुम्हें उससे पूछने की ज़रूरत नहीं है, बिलकुल नहीं! मैंने अपना विचार बदल लिया है।”
“मेरा दिमाग खराब हो गया था। ये मेरा बेवकूफी भरा विचार था। मैं उसे कुछ नहीं दूंगा, एक पैसा भी नहीं, मुझे अपना पैसा खुद चाहिए,” बूढ़े आदमी ने हाथ हिलाते हुए कहा। “मैं उसे बिना पैसे के कीड़े की तरह कुचल दूंगा। उससे कुछ मत कहना, वरना वो उम्मीद करने लगेगा। तुम्हारा यहाँ कोई काम नहीं है, तुम्हें रुकने की ज़रूरत नहीं है। क्या उसकी मंगेतर, कैटेरिना इवानोव्ना, जिसे उसने इतने समय तक मुझसे छुपा कर रखा है, उससे शादी करेगी या नहीं? मुझे लगता है कि तुम कल उससे मिलने गए थे?”
"कोई भी बात उसे उसे छोड़ने के लिए मजबूर नहीं कर सकती।"
"देखो, ये खूबसूरत युवतियाँ एक अय्याश और एक
बदमाश! मैं तुम्हें बताता हूँ, वे बेचारी युवतियाँ, पीली-सी दिखने वाली, बिल्कुल अलग—आह, अगर मेरे पास उसकी जवानी और उस समय का रूप होता (क्योंकि मैं 28 साल की उम्र में उससे ज़्यादा सुंदर था), तो मैं भी उसकी तरह एक विजयी नायक होता। वह एक नीच बदमाश है! लेकिन उसे ग्रुशेंका कभी नहीं मिलेगी, बिल्कुल नहीं! मैं उसे कुचल दूँगा!
उनके अंतिम शब्दों के साथ ही उनका क्रोध फिर से जागृत हो गया था।
“तुम जा सकते हो। आज यहाँ तुम्हारे लिए कुछ भी काम नहीं है,” उसने गुस्से से कहा।
कठोरता से।

अलियोशा उसे अलविदा कहने के लिए उसके पास गया और उसे चूमा।
कंधा।
“ये किसलिए है?” बूढ़ा आदमी थोड़ा हैरान हुआ। “देखते हैं।”
क्या हम फिर से एक दूसरे से मिलेंगे, या आपको लगता है कि हम नहीं मिलेंगे?
"बिल्कुल नहीं, मेरा ऐसा कोई इरादा नहीं था।"
“मैंने भी ऐसा नहीं किया, मेरा ऐसा कोई इरादा नहीं था,” बूढ़े आदमी ने उसकी ओर देखते हुए कहा।
“सुनो, सुनो,” उसने उसके पीछे चिल्लाते हुए कहा, “जल्दी करो और फिर आना, मैं तुम्हारे लिए मछली का सूप बनाऊँगा, बढ़िया वाला, आज जैसा नहीं। ज़रूर आना! कल आना, सुना तुमने, कल!”
और जैसे ही अलेयोशा दरवाजे से बाहर निकला, वह चला गया
फिर से अलमारी में गया और आधा गिलास और उंडेल दिया।
“मैं और नहीं लूंगा!” उसने गला साफ करते हुए बुदबुदाया, और फिर से वह
उसने अलमारी का ताला लगाया और चाबी अपनी जेब में रख ली। फिर वह अपने बेडरूम में गया, थका हुआ सा बिस्तर पर लेट गया और एक मिनट में ही सो गया।

अध्याय 3

स्कूली लड़कों के साथ एक मुलाकात

“शुक्र है उसने मुझसे ग्रुशेंका के बारे में नहीं पूछा,” अलेयोशा ने अपने पिता के घर से निकलते हुए और मैडम होहलाकोव के घर की ओर मुड़ते हुए सोचा, “वरना मुझे उसे कल ग्रुशेंका से हुई अपनी मुलाकात के बारे में बताना पड़ता।”
अलियोशा को इस बात का गहरा दुख था कि कल से ही दोनों लड़ाकों ने फिर से लड़ाई शुरू कर दी थी। उनकी ऊर्जा क्षीण हो गई थी, और उनके दिल फिर से कठोर हो गए थे। “पिताजी द्वेषपूर्ण और क्रोधित हैं, उन्होंने कोई योजना बनाई है और उस पर अडिग रहेंगे। और दिमित्री का क्या? वह भी कल से ज़्यादा कठोर होगा, वह भी द्वेषपूर्ण और क्रोधित होगा, और उसने भी, निस्संदेह, कोई योजना बनाई होगी। ओह, चाहे कुछ भी हो जाए, मुझे आज उसे ढूंढकर ही रहना है।”
लेकिन अलेयोशा को ध्यान करने का अधिक समय नहीं मिला। रास्ते में एक घटना घटित हो गई।
जो देखने में तो मामूली लग रहा था, पर उसका अलेक्सा पर गहरा असर हुआ। जैसे ही वह चौक पार करके मिहाइलोस्की स्ट्रीट में मुड़ा, जो एक छोटी सी खाई से हाई स्ट्रीट से अलग होती है (हमारा पूरा शहर खाइयों से घिरा हुआ है), उसने पुल पर नौ से बारह साल की उम्र के स्कूली बच्चों का एक समूह देखा। वे स्कूल से घर जा रहे थे, कुछ के कंधे पर बैग थे, कुछ के चमड़े के थैले लटके हुए थे, कुछ ने छोटी जैकेट पहनी थी, कुछ ने छोटे ओवरकोट। कुछ ने तो टखनों के पास सिलवटों वाले ऊंचे जूते भी पहने थे, जैसे अमीर बाप के लाड़ले बच्चे पहनना पसंद करते हैं। पूरा समूह किसी बात पर उत्सुकता से चर्चा कर रहा था, मानो कोई सभा कर रहे हों। अलेक्सा मॉस्को में रहने के दिनों से ही बच्चों को देखे बिना नहीं रह पाता था, और हालांकि उसे तीन साल या उसके आसपास के बच्चे बहुत प्यारे लगते थे, उसे दस और ग्यारह साल के स्कूली बच्चे भी अच्छे लगते थे। इसलिए, आज वह जितना भी उत्सुक था, वह तुरंत उनसे बात करने के लिए उनके पास से हटना चाहता था। उसने उनके उत्साहित, गुलाबी चेहरों की ओर देखा और तुरंत पाया कि सभी लड़कों के हाथों में पत्थर थे। खाई के पीछे लगभग तीस कदम की दूरी पर, एक और स्कूली लड़का बाड़ के पास खड़ा था। उसके पास भी एक थैला था। वह लगभग दस साल का था, पीला, नाजुक सा दिखने वाला और उसकी काली आँखें चमक रही थीं। वह बाकी छह लड़कों पर ध्यान से और चिंता से नज़र रख रहा था, जो स्पष्ट रूप से उसके सहपाठी थे जिनके साथ वह अभी-अभी स्कूल से निकला था, लेकिन जिनके साथ उसका झगड़ा चल रहा था।
अलियोशा आगे बढ़ा और एक गोरे, घुंघराले बालों वाले, गुलाबी चेहरे वाले लड़के को संबोधित करते हुए बोला...
काली जैकेट पहने हुए व्यक्ति ने देखा:
“जब मैं तुम्हारे जैसा थैला पहनती थी, तो मैं उसे हमेशा अपने साथ रखती थी।”
मैं अपनी बाईं ओर हाथ रखूंगा ताकि मेरा दाहिना हाथ खाली रहे, लेकिन आपका हाथ तो आपकी दाईं ओर है। इसलिए आपके लिए उस तक पहुंचना मुश्किल होगा।
अलियोशा ने इस व्यावहारिक कार्य को शुरू करने में कोई कला या पूर्वचिंता नहीं दिखाई।
टिप्पणी। लेकिन एक वयस्क व्यक्ति के लिए किसी बच्चे, या उससे भी अधिक बच्चों के समूह के साथ तुरंत गोपनीय संबंध स्थापित करने का यही एकमात्र तरीका है। शुरुआत गंभीरता और व्यावहारिक तरीके से करनी चाहिए ताकि पूर्ण समानता का स्तर प्राप्त हो सके। अलेयोशा ने इसे सहज रूप से समझ लिया था।
“लेकिन वह बाएं हाथ से लिखता है,” ग्यारह साल के एक अन्य, स्वस्थ दिखने वाले लड़के ने कहा।
उसने तुरंत जवाब दिया। बाकी सभी लोग अलेयोशा को घूरने लगे।
“वह तो अपने बाएं हाथ से भी पत्थर फेंकता है,” तीसरे व्यक्ति ने कहा। उसी क्षण एक पत्थर समूह की ओर आया, लेकिन बाएं हाथ को बस छूकर निकल गया।
गेंद लड़के के हाथ में आ गई, हालांकि खाई के दूसरी तरफ खड़े लड़के ने उसे अच्छी तरह और जोरदार तरीके से फेंका था।
“उसे मारो, उसे वापस मारो, स्मुरोव,” सब चिल्लाए। लेकिन स्मुरोव,

बाएं हाथ से लिखने वाले लड़के को कुछ कहने की ज़रूरत नहीं थी, और उसने तुरंत बदला लिया; उसने एक पत्थर फेंका, लेकिन वह लड़के को नहीं लगा और ज़मीन पर जा गिरा। खाई के दूसरी ओर खड़ा लड़का, जिसकी कोट की जेब पत्थरों से भरी हुई थी, ने समूह पर एक और पत्थर फेंका; इस बार वह सीधा अलेयोशा की ओर गया और उसके कंधे पर ज़ोर से लगा, जिससे उसे काफ़ी दर्द हुआ।
“उसने इसे तुम्हारे लिए निशाना बनाया था, उसका इरादा तुम्हें ही चोट पहुँचाने का था। तुम करामाज़ोव हो।”
"करामाज़ोव!" लड़के हंसते हुए चिल्लाए। "आओ, सब मिलकर उस पर पत्थर फेंको!" और छह पत्थर लड़के की ओर चले। एक पत्थर लड़के के सिर पर लगा और वह गिर पड़ा, लेकिन तुरंत उठकर उसने उन पर जमकर पत्थर बरसाने शुरू कर दिए। दोनों तरफ से लगातार पत्थर फेंके जा रहे थे। समूह के कई लोगों की जेबें भी पत्थरों से भरी हुई थीं।
“ये क्या कर रहे हो! क्या तुम्हें शर्म नहीं आती? छह के मुकाबले एक! अरे,
“तुम उसे मार डालोगे,” अलेयोशा चिल्लाया।
वह आगे दौड़ा और उड़ते हुए पत्थरों से टकराकर अकेले लड़के की रक्षा करने लगा।
तीन या चार खिलाड़ियों ने एक मिनट के लिए गेंद फेंकना बंद कर दिया।
"उसने शुरुआत की!" लाल कमीज पहने एक लड़के ने गुस्से भरी बचकानी आवाज में चिल्लाकर कहा।
“वह एक दरिंदा है, उसने कुछ दिन पहले कक्षा में क्रासोटकिन पर चाकू से हमला कर दिया था। खून बह रहा था। क्रासोटकिन ने कुछ नहीं बताया, लेकिन उसकी खूब पिटाई होनी चाहिए।”
"लेकिन किसलिए? मुझे लगता है कि आप उसे चिढ़ाते हैं।"
“देखो, उसने फिर तुम्हारी पीठ पर पत्थर मारा है, वो तुम्हें पहचानता है,” बच्चे चिल्लाए। “अब वो तुम पर पत्थर फेंक रहा है, हम पर नहीं। आओ, सब लोग उस पर फिर से हमला करो, निशाना मत चूकना, स्मुरोव!”
और फिर से पत्थरों की बौछार शुरू हो गई, और वो भी बहुत ज़ोरदार। खाई के दूसरी तरफ़ खड़े लड़के की छाती पर पत्थर लगा; वो चीखा, रोने लगा और मिहाइलोव्स्की स्ट्रीट की तरफ़ पहाड़ी पर भाग गया। सब चिल्लाए: “अहा, वो डर गया है, भाग रहा है। भागो!”
“कारामाज़ोव, तुम नहीं जानते कि वह कितना क्रूर है, हत्या करना तो उसके लिए बहुत आसान है।”
“उसे,” जैकेट पहने लड़के ने चमकती आँखों से कहा। वह सबसे बड़ा लग रहा था।
“उसे क्या हुआ है?” अलेयोशा ने पूछा, “क्या वो चुगलखोर है?” दोनों लड़के एक-दूसरे को तिरस्कार भरी निगाहों से देखने लगे। “क्या तुम उस तरफ जा रहे हो, मिहाइलोस्की के पास?” उसी लड़के ने आगे पूछा।
"उसे पकड़ लो... देखो, वह फिर से रुक गया है, वह इंतजार कर रहा है और तुम्हारी तरफ देख रहा है।"
“वो तुम्हें देख रहा है,” बाकी लड़कों ने एक साथ कहा। “तुम उससे पूछो, क्या उसे बिखरे बालों वाला रुई का टुकड़ा पसंद है? क्या तुम सुन रहे हो, पूछो।”
कि उसे!"
वहाँ ज़ोरदार हंसी गूंज उठी। अलेयोशा ने उनकी ओर देखा, और वे
उस पर।
“उसके पास मत जाओ, वह तुम्हें चोट पहुँचाएगा,” स्मुरोव ने चेतावनी भरे स्वर में कहा। “मैं उससे उस सूती धागे के बारे में नहीं पूछूंगा, क्योंकि मुझे उम्मीद है कि तुम उसे चिढ़ाओगे।”
मैं किसी तरह उस सवाल का जवाब ढूंढ लूंगा। लेकिन मैं उससे पता लगा लूंगा कि तुम उससे इतनी नफरत क्यों करते हो।
“तो पता लगाओ, पता लगाओ,” लड़के हंसते हुए चिल्लाए। अलेयोशा पुल पार करके बाड़ के किनारे-किनारे पहाड़ी पर सीधा चलने लगा।
लड़के की ओर।
“तुम सावधान रहना,” लड़कों ने उसके पीछे से आवाज़ लगाई; “वह डरेगा नहीं।”
वह तुम्हें एक मिनट में चुपके से चाकू मार देगा, जैसे उसने क्रासोटकिन के साथ किया था।
लड़का बिना हिले-डुले उसका इंतज़ार करता रहा। उसके पास आकर, अलेयोशा
उसके सामने लगभग नौ साल का एक बच्चा खड़ा था। वह दुबला-पतला, कमज़ोर लड़का था, जिसका पतला, लंबा और पीला चेहरा था, और बड़ी-बड़ी काली आँखें उसे बदले की भावना से घूर रही थीं। उसने एक पुराना, फटा हुआ ओवरकोट पहना हुआ था, जो उसे बहुत छोटा पड़ गया था। उसकी नंगी बाहें आस्तीनों से बाहर

निकली हुई थीं। उसकी पतलून के दाहिने घुटने पर एक बड़ा धब्बा था, और उसके दाहिने जूते के अंगूठे के पास चमड़े में एक बड़ा छेद था, जिसे स्याही से सावधानीपूर्वक काला किया गया था। उसके ओवरकोट की दोनों जेबें पत्थरों से भरी हुई थीं। अलेयोशा उससे दो कदम आगे रुक गया और जिज्ञासा भरी निगाहों से उसे देखने लगा। लड़के ने अलेयोशा की आँखों से तुरंत समझ लिया कि वह उसे नहीं पीटेगा, इसलिए उसका आक्रामक रवैया कम हो गया और उसने पहले उससे बात की।
“मैं अकेला हूँ, और वे छह हैं। मैं अकेले ही उन सबको हरा दूँगा!” उसने कहा।
अचानक, चमकती आँखों के साथ।
“मुझे लगता है कि किसी पत्थर से तुम्हें बहुत चोट लगी होगी,” अलेयोशा ने कहा। “लेकिन मैंने स्मुरोव के सिर पर मारा था!” लड़के ने चिल्लाकर कहा। “उन्होंने मुझे बताया कि तुम मुझे जानते हो, और तुमने मुझ पर पत्थर फेंका था।”
"उद्देश्य," अलेयोशा ने कहा।
लड़के ने गुस्से भरी निगाहों से उसकी ओर देखा।
“मैं तुम्हें नहीं जानता। क्या तुम मुझे जानते हो?” अलेयोशा ने पूछा। “मुझे अकेला छोड़ दो!” लड़के ने चिढ़कर कहा; लेकिन वह हिला नहीं, मानो
वह किसी बात की उम्मीद कर रहा था, और एक बार फिर उसकी आँखों में प्रतिशोध की चमक दिखाई दी।
“ठीक है, मैं जा रहा हूँ,” अलेयोशा ने कहा; “लेकिन मैं तुम्हें और खुद को नहीं जानता।”
मैं तुम्हें चिढ़ाऊंगा नहीं। उन्होंने मुझे बताया कि वे तुम्हें कैसे चिढ़ाते हैं, लेकिन मैं तुम्हें चिढ़ाना नहीं चाहता। अलविदा!
“रेशमी पतलून पहने भिक्षु!” लड़का चिल्लाया और उसी गति से अलेयोशा के पीछे-पीछे चलने लगा।
प्रतिशोधी और चुनौती भरे भावों के साथ, उसने स्वयं को रक्षात्मक मुद्रा में ढाल लिया, उसे पूरा विश्वास था कि अब अलेयोशा उस पर टूट पड़ेगा; लेकिन अलेयोशा मुड़ा, उसकी ओर देखा और चला गया। वह अभी तीन कदम भी नहीं चला था कि लड़के की जेब में रखा सबसे बड़ा पत्थर उसकी पीठ पर ज़ोर से लगा।
“तो तुम किसी आदमी को पीछे से मारोगे! तब वे सच बोलते हैं, जब वे
“कहते हो कि तुम छुपकर हमला करते हो,” अलेयोशा ने फिर से मुड़ते हुए कहा। इस बार लड़के ने बेरहमी से एक पत्थर अलेयोशा के चेहरे पर फेंका; लेकिन अलेयोशा को खुद को बचाने का बस थोड़ा सा समय मिल गया और पत्थर उसकी कोहनी पर लगा।
“क्या तुम्हें शर्म नहीं आती? मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है?” वह चिल्लाया। लड़का चुपचाप चुनौती भरे स्वर में इंतज़ार करता रहा, उसे यकीन था कि अब अलेयोशा उसे सबक सिखाएगा।
उस पर हमला करो। यह देखकर कि अब भी वह नहीं मानेगा, उसका क्रोध एक छोटे जंगली जानवर जैसा था; वह अलेयोशा पर झपटा, और इससे पहले कि अलेयोशा हिल पाता, उस दुष्ट बच्चे ने अपने दोनों हाथों से उसका बायां हाथ पकड़ लिया और उसकी मध्यमा उंगली को काट लिया। उसने अपने दांत उसमें गड़ा दिए और दस सेकंड बाद तक उसे नहीं छोड़ा। अलेयोशा दर्द से चिल्लाया और अपनी पूरी ताकत से अपनी उंगली छुड़ा ली। बच्चे ने आखिरकार उंगली छोड़ दी और अपनी पिछली दूरी पर लौट गया। अलेयोशा की उंगली नाखून के पास, हड्डी तक बुरी तरह कट गई थी; उससे खून बहने लगा। अलेयोशा ने अपना रुमाल निकाला और उसे अपने घायल हाथ पर कसकर बांध लिया। उसे पट्टी बांधने में पूरा एक मिनट लग गया। लड़का पूरे समय इंतजार करता रहा। आखिरकार अलेयोशा ने अपनी कोमल निगाहें उठाईं और उसे देखा।
“बहुत खूब,” उसने कहा, “देखो तुमने मुझे कितनी बुरी तरह से काट लिया है। बस इतना ही।”
काफी है ना? अब बताओ, मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है?
लड़का अचरज से देखता रहा।
"हालांकि मैं आपको नहीं जानता और यह पहली बार है जब मैंने आपको देखा है,"
अलोशा ने उसी शांत भाव से आगे कहा, “फिर भी मैंने तुम्हारे साथ कुछ तो किया होगा—तुम मुझे यूं ही चोट नहीं पहुंचाओगी। तो मैंने क्या किया है? मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है, बताओ?”
जवाब देने के बजाय, लड़का जोर-जोर से रोने लगा और भाग गया।
अलेयोशा धीरे-धीरे उसके पीछे मिहाइलोस्की स्ट्रीट की ओर बढ़ा, और काफी देर तक उसने बच्चे को दूर भागते हुए देखा, वह पहले की तरह ही तेज़ दौड़ रहा था, बिना सिर घुमाए, और निस्संदेह अभी भी रोता हुआ

था। उसने ठान लिया कि जैसे ही समय मिलेगा, वह उसे ढूंढ निकालेगा और इस रहस्य को सुलझाएगा। फिलहाल उसके पास समय नहीं था।

अध्याय 4

होहलकोव के यहाँ

अलेयोशा जल्द ही मैडम होहलाकोव के घर पहुँच गया, जो दो मंजिला एक खूबसूरत पत्थर का मकान था और हमारे कस्बे के सबसे बेहतरीन मकानों में से एक था। हालाँकि मैडम होहलाकोव अपना अधिकांश समय दूसरे प्रांत में बिताती थीं, जहाँ उनकी एक जागीर थी, या मॉस्को में, जहाँ उनका अपना घर था, फिर भी हमारे कस्बे में भी उनका एक घर था, जो उन्हें अपने पूर्वजों से विरासत में मिला था। हमारे जिले में स्थित जागीर उनकी तीन जागीरों में सबसे बड़ी थी, फिर भी इससे पहले वे हमारे प्रांत में बहुत कम ही रही थीं। वह दौड़कर हॉल में अलेयोशा के पास आई।
“क्या आपको नए चमत्कार के बारे में मेरा पत्र मिला?” वह तेजी से बोली और
घबराते हुए।
"हाँ।"
“क्या तुमने यह सबको दिखाया? उसने बेटे को उसकी माँ से मिला दिया!”
“आज उसकी मृत्यु हो रही है,” अलेयोशा ने कहा।
मैंने सुना है, मुझे पता है, ओह, मैं तुमसे, तुमसे या किसी और से बात करने के लिए कितना तरस रहा हूँ। इन सब बातों के बारे में। नहीं, आपसे, आपसे! और मुझे कितना अफ़सोस है कि मैं उनसे मिल नहीं पा रही हूँ! पूरा शहर उत्साहित है, सब उत्सुक हैं। लेकिन अब—क्या आपको पता है कि कैटेरिना इवानोवना अभी यहाँ हैं?
“अहा, ये तो अच्छी बात है,” अलेयोशा चिल्लाया। “तो मैं उसे यहीं देखूंगा। उसने बताया था।”
मैंने कल ही मुझे यह सुनिश्चित करने के लिए कहा था कि मैं आज उससे मिलने जरूर आऊं।
“मुझे पता है, मुझे सब पता है। मैंने कल जो कुछ हुआ वो बिल्कुल सुना है—और
उस प्राणी का घिनौना व्यवहार! यह बहुत दुखद है, और अगर मैं उसकी जगह होती तो मुझे नहीं पता कि मैं क्या करती। और तुम्हारा भाई दिमित्री फ्योदोरोविच, उसके बारे में तुम क्या सोचती हो?—हे भगवान! एलेक्सी फ्योदोरोविच, मैं भूल रही हूँ, ज़रा सोचो; तुम्हारा भाई उसके साथ अंदर है, वह भयानक भाई नहीं जो कल इतना चौंकाने वाला था, बल्कि दूसरा, इवान फ्योदोरोविच, वह उसके साथ बैठा बातें कर रहा है; वे गंभीर बातचीत कर रहे हैं। ज़रा कल्पना करो कि अब उनके बीच क्या चल रहा है— यह भयानक है, मैं तुम्हें बता रही हूँ, यह दिल दहला देने वाला है, यह किसी अविश्वसनीय डरावनी कहानी जैसा है। वे बिना किसी स्पष्ट कारण के अपना जीवन बर्बाद कर रहे हैं। वे दोनों इसे जानते हैं और इसमें आनंद लेते हैं। मैं तुम्हारा इंतज़ार कर रही थी! मैं तुम्हारे लिए तड़प रही थी! यह मेरे लिए असहनीय है, यही सबसे बुरी बात है। मैं आपको इसके बारे में अभी सब कुछ बताऊँगी, लेकिन अभी मुझे किसी और चीज़ के बारे में बात करनी है, जो सबसे महत्वपूर्ण है—मैं तो सबसे महत्वपूर्ण बात भूल ही गई थी। मुझे बताइए, लीज़ इतनी हिस्टीरिया में क्यों है? जैसे ही उसने सुना कि आप यहाँ हैं, वह हिस्टीरिया में जाने लगी!
“मम्मी, अब आप हिस्टीरिकल हो रही हैं, मैं नहीं,” लीज़ की आवाज़ ने मधुर स्वर में कहा।
दरवाजे के किनारे की एक छोटी सी दरार से। उसकी आवाज़ ऐसी लग रही थी मानो वह हंसना चाहती हो, लेकिन अपनी हंसी रोकने की पूरी कोशिश कर रही हो। अलेयोशा ने तुरंत उस दरार को देखा, और उसे यकीन था कि लीज़ उसमें से झाँक रही होगी, लेकिन वह उसे देख नहीं पा रहा था।
और इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं, लिसे, कोई आश्चर्य की बात नहीं... तुम्हारी सनक मुझे ऐसा करने पर मजबूर कर देगी।
वो बहुत ज़्यादा परेशान थी। लेकिन एलेक्सी फ्योदोरोविच इतनी बीमार है कि पूरी रात बुखार से तड़पती रही और कराहती रही! मैं सुबह का और हर्ज़ेनस्टुबे के आने का बेसब्री से इंतज़ार कर रहा था। वो कहता है कि उसे कुछ समझ नहीं आ रहा, हमें इंतज़ार करना होगा। हर्ज़ेनस्टुबे हमेशा आता है और कहता है कि उसे कुछ समझ नहीं आ रहा। जैसे ही आप घर के पास पहुँचे, वो चीखी, हिस्टीरिया में चली गई और ज़िद करने लगी कि उसे वापस इसी कमरे में लाया जाए।

“मम्मी, मुझे पता नहीं था कि वह आया था। मैं उसकी वजह से नहीं आई थी।”
मुझे इस कमरे में व्हीलचेयर पर लाया गया है।"
“यह सच नहीं है, लिसे, यूलिया तुम्हें यह बताने के लिए दौड़ी थी कि एलेक्सी फ्योदोरोविच
वह आ रही थी। वह तुम्हारी तलाश में थी।
मेरी प्यारी माँ, यह बिल्कुल भी समझदारी वाली बात नहीं है। लेकिन अगर आप चाहें तो...
"इसकी भरपाई करो और कुछ बहुत ही चतुराई भरी बात कहो, प्यारी माँ, बेहतर होगा कि तुम हमारे सम्मानित अतिथि, एलेक्सी फ्योदोरोविच को बता दो कि कल जो कुछ हुआ उसके बाद और सबके उन पर हंसने के बावजूद, हमारे पास आने की हिम्मत करके उन्होंने अपनी बुद्धि की कमी दिखाई है।"
“लीज़, तुम हद पार कर रही हो। मैं स्पष्ट कर दूं कि मुझे सख्त होना पड़ेगा। भला कौन हँसेगा?
वो? मुझे बहुत खुशी है कि वो आ गया है, मुझे उसकी ज़रूरत है, मैं उसके बिना नहीं रह सकती। ओह, एलेक्सी फ्योदोरोविच, मैं बहुत दुखी हूँ!
"लेकिन क्या बात है, माँ, मेरी प्यारी?"
आह, तुम्हारी सनक, लिसे, तुम्हारी बेचैनी, तुम्हारी बीमारी, वो भयानक रात
बुखार, वो भयानक, कभी न खत्म होने वाला दर्द, कभी न खत्म होने वाला, कभी न खत्म होने वाला, यही सबसे बुरा है! सब कुछ, असल में, सब कुछ... यहाँ तक कि वो चमत्कार भी! ओह, उस चमत्कार ने मुझे कितना परेशान किया है, कितना चकनाचूर कर दिया है, प्यारे एलेक्सी फ्योदोरोविच! और ड्राइंग रूम में वो त्रासदी, मैं उसे सहन नहीं कर सकता, मैं आपको चेतावनी देता हूँ। मैं उसे सहन नहीं कर सकता। शायद एक कॉमेडी, त्रासदी नहीं। मुझे बताओ, क्या फादर ज़ोसिमा कल तक जीवित रहेंगे, क्या वो रहेंगे? हे भगवान! मेरे साथ क्या हो रहा है? हर मिनट मैं अपनी आँखें बंद करता हूँ और देखता हूँ कि यह सब बकवास है, सब बकवास।
“मैं बहुत आभारी रहूंगा,” अलेयोशा ने अचानक बीच में टोकते हुए कहा, “अगर आप ऐसा कर सकें
मुझे उंगली पर पट्टी बांधने के लिए एक साफ कपड़ा दीजिए। मेरी उंगली में चोट लग गई है और बहुत दर्द हो रहा है।
अलेयोशा ने अपनी कटी हुई उंगली खोली। रूमाल पूरी तरह भीगा हुआ था।
खून। मैडम होहलाकोव चीखी और अपनी आँखें बंद कर लीं।
हे भगवान, कितना भयानक घाव है!
लेकिन जैसे ही लिसे ने दरार से अलेयोशा की उंगली देखी, उसने झपट्टा मार दिया।
दरवाजा पूरी तरह खुला हुआ।
“आओ, इधर आओ,” वह रौबदार लहजे में चिल्लाई। “अब कोई बकवास नहीं! अच्छा
हे भगवान! इतनी देर तक तुम चुपचाप खड़ी क्यों रहीं? माँ, कहीं वो खून बहने से मर न जाता! तुमने ये कैसे किया? पानी, पानी! पहले इसे धो लो, दर्द कम करने के लिए इसे ठंडे पानी में डुबो कर रखो, और वहीं रखो, वहीं रखो... जल्दी करो माँ, एक बेसिन में थोड़ा पानी लाओ। जल्दी करो,” उसने घबराते हुए कहा। अलेयोशा के घाव को देखकर वो बहुत डर गई थी।
“क्या हमें हर्ज़ेनस्टुबे को नहीं बुलाना चाहिए?” मैडम होहलाकोव चिल्लाईं। “माँ, आप मेरी जान ले लेंगी। आपका हर्ज़ेनस्टुबे आएगा और
कहते हैं कि वह कुछ नहीं कर सकता! पानी, पानी! माँ, भगवान के लिए खुद जाओ और यूलिया को जल्दी लाओ, वह बहुत सुस्त है और कभी जल्दी नहीं आती! जल्दी करो, माँ, नहीं तो मैं मर जाऊँगी।
“अरे, ये तो कुछ भी नहीं है,” अलेयोशा घबराकर चिल्लाया। यूलिया पानी लेकर दौड़ी और अलेयोशा ने उसमें अपनी उंगली डाली। “माँ, थोड़ी रुई ला दो, भगवान के लिए, थोड़ी रुई और वो कीचड़ साफ कर दो।”
घावों के लिए कास्टिक लोशन, उसे क्या कहते हैं? हमारे पास है। आपको पता है बोतल कहाँ है, माँ; यह आपके बेडरूम में दाहिनी ओर की अलमारी में है, वहाँ रुई के साथ इसकी एक बड़ी बोतल रखी है।
“मैं एक मिनट में सब कुछ ले आऊंगा, लीज़, बस चिल्लाना मत और कुछ मत करना।”
हंगामा। देखो, एलेक्सी फ्योदोरोविच कितनी बहादुरी से इसे सह रहे हैं। एलेक्सी फ्योदोरोविच, आपको इतना भयानक घाव कहाँ से लगा?
मैडम होहलाकोव जल्दी से चली गईं। लीज़ को बस इसी का इंतज़ार था। "सबसे पहले, इस सवाल का जवाब दो, तुम्हें इस तरह चोट कहाँ लगी?"

अलोशा ने झट से पूछा, “और फिर मैं तुमसे किसी बिल्कुल अलग विषय पर बात करूंगा। तो?”
उसे सहज रूप से यह एहसास होता था कि उसकी माँ की अनुपस्थिति का समय अनमोल है।
अलेयोशा ने उसे स्कूली लड़कों के साथ अपनी रहस्यमय मुलाकात के बारे में कम से कम शब्दों में बताने की जल्दी की। उसकी कहानी सुनकर लिसे ने अपने हाथ जोड़ लिए।
“तुम ये कपड़े पहनकर स्कूल के लड़कों के साथ कैसे घूम सकते हो?” वो गुस्से से चिल्लाई, मानो उसे उसे नियंत्रित करने का पूरा अधिकार हो। “अगर तुम ऐसा कर सकते हो, तो तुम खुद भी एक लड़के ही हो, बिलकुल लड़के! लेकिन तुम्हें उस भयानक लड़के के बारे में पता लगाना होगा और मुझे सब कुछ बताना होगा, क्योंकि इसमें कुछ रहस्य छिपा है। अब दूसरी बात, लेकिन पहले एक सवाल: क्या दर्द की वजह से तुम फालतू की बातें नहीं कर पा रहे हो, लेकिन समझदारी से बात कर पा रहे हो?”
"बिल्कुल नहीं, और मुझे अब ज्यादा दर्द भी नहीं हो रहा है।"
“ऐसा इसलिए है क्योंकि आपकी उंगली पानी में है। इसे तुरंत बदलना होगा।”
क्योंकि एक मिनट में गर्मी हो जाएगी। यूलिया, तहखाने से कुछ बर्फ और पानी का एक और बर्तन ले आओ।
अब वो चली गई है, मैं बोल सकती हूँ; क्या तुम मुझे वो चिट्ठी दोगे जो मैंने तुम्हें कल भेजी थी, प्यारे एलेक्सी फ्योदोरोविच—जल्दी करो, क्योंकि माँ एक मिनट में वापस आ जाएँगी और मैं नहीं चाहती—"
मुझे पत्र नहीं मिला है।
“यह सच नहीं है, तुमने किया है। मुझे पता था कि तुम यही कहोगे। तुमने इसे सही तरीके से किया है।”
वो जेब। मुझे उस मजाक पर पूरी रात पछतावा हो रहा है। मुझे चिट्ठी तुरंत वापस दो, मुझे दे दो।
मैंने इसे घर पर ही छोड़ दिया है।
लेकिन उस मूर्खतापूर्ण मजाक के बाद आप मुझे बच्ची, छोटी लड़की नहीं मान सकते!
मेरी इस मूर्खता के लिए क्षमा चाहता हूँ, लेकिन अगर आपको वास्तव में वह पत्र नहीं मिला है, तो आपको उसे मुझे लाना ही होगा—आज ही लाएँ, आपको लाना ही होगा, आपको लाना ही होगा।
आज तो मैं ऐसा बिल्कुल नहीं कर सकता, क्योंकि मैं मठ वापस जा रहा हूँ और मैं
मैं अगले दो दिनों तक, शायद तीन या चार दिनों तक, आपसे मिलने नहीं आ पाऊंगा—फादर ज़ोसिमा की वजह से।
“चार दिन, ये क्या बकवास है! सुनो। क्या तुम मुझ पर खूब हंसे?”
मुझे बिल्कुल भी हंसी नहीं आई।
"क्यों नहीं?"
क्योंकि मैंने आपकी कही हर बात पर विश्वास किया।
आप मेरा अपमान कर रहे हैं!
बिल्कुल नहीं। जैसे ही मैंने इसे पढ़ा, मुझे लगा कि सब कुछ ठीक हो जाएगा।
मुझे माफ़ करना, क्योंकि फादर ज़ोस्सिमा के मरते ही मुझे मठ छोड़ना होगा। फिर मैं वापस जाकर अपनी पढ़ाई पूरी करूँगा, और जब तुम बालिग़ हो जाओगी, तब हमारी शादी हो जाएगी। मैं तुमसे प्यार करूँगा।
हालाँकि मुझे इस बारे में सोचने का समय नहीं मिला है, लेकिन मुझे विश्वास है कि तुमसे बेहतर पत्नी मुझे नहीं मिल सकती, और फादर ज़ोस्सिमा ने मुझसे कहा है कि मुझे शादी करनी ही होगी।
"लेकिन मैं तो अपाहिज हूँ, व्हीलचेयर पर इधर-उधर घूमती हूँ," लीज़ ने शरमाते हुए हँसते हुए कहा।
गहरा लाल रंग।
मैं आपको खुद व्हीलचेयर पर घुमाऊंगा, लेकिन मुझे यकीन है कि तब तक आप ठीक हो जाएंगे।
“लेकिन तुम पागल हो,” लीज़ ने घबराते हुए कहा, “मज़ाक का इतना बड़ा बखेड़ा खड़ा कर दिया! ये रही मम्मी, शायद ये सही जगह है। मम्मी, आप हमेशा कितनी धीमी चलती हैं, आपको इतना समय कैसे लग जाता है! और ये रही यूलिया बर्फ के साथ!”
“ओह, लीज़, चीखना मत, सबसे बढ़कर चीखना मत। वो चीख
मुझे गुस्सा आता है... जब तुम रुई के रेशे दूसरी जगह रख देते हो तो मैं क्या करूँ? मैं बहुत ढूंढ चुकी हूँ—मुझे पूरा यकीन है कि तुमने जानबूझकर ऐसा किया है।
लेकिन मुझे यह पता नहीं था कि वह खराब उंगली के साथ आएगा, या फिर...
शायद मैंने जानबूझकर ऐसा किया हो। मेरी प्यारी माँ, आप तो वाकई बहुत ही हास्यपूर्ण बातें कहने लगी हैं।

मेरी हास्यप्रद बातों पर ध्यान न दें, लेकिन मुझे कहना होगा कि आप मेरे प्रति अच्छी भावना दिखाते हैं। एलेक्सी फ्योदोरोविच की पीड़ा! ओह, मेरे प्यारे एलेक्सी फ्योदोरोविच, मुझे जो चीज मार रही है, वह कोई एक खास चीज नहीं है, न ही हर्ज़ेनस्टुबे, बल्कि सब कुछ एक साथ, यही मेरे लिए असहनीय है।"
“बस करो माँ, हर्ज़ेनस्टुबे के बारे में बहुत हो गया,” लिसे हँसी।
खुशी से। “जल्दी करो रुई और लोशन लाओ, माँ। ये तो बस गौल्ड का पानी है, एलेक्सी फ्योदोरोविच, मुझे नाम याद आ गया, लेकिन ये बहुत बढ़िया लोशन है। यकीन मानो माँ, यहाँ आते समय गली में लड़कों से उसकी लड़ाई हो गई, और एक लड़के ने उसकी उंगली काट ली, है ना बच्चा, बिल्कुल बच्चा? क्या उसके बाद उसकी शादी हो सकती है? बस यूँ ही, वो शादी करना चाहता है, माँ। ज़रा सोचो उसकी शादी हो जाए, कितना अजीब होगा, कितना भयानक होगा?”
और लिज़ अपनी पतली, हिस्टीरिकल हंसी हंसती रही, और शरारती निगाहों से देखती रही।
अलोशा।
“लेकिन लीज़, शादी क्यों? तुम ऐसी बात क्यों कर रही हो? यह तो बिल्कुल अजीब है।”
वह जगह बेमेल थी—और शायद वह लड़का पागल था।
“अरे माँ! ऐसा लग रहा था जैसे पागल लड़के हों!”
“क्यों नहीं, लिसे, जैसे कि मैंने कोई बेवकूफी भरी बात कह दी हो! तुम्हारा लड़का शायद
अगर किसी पागल कुत्ते ने काट लिया होता, तो वह पागल होकर अपने आस-पास के किसी भी व्यक्ति को काट लेता। एलेक्सी फ्योदोरोविच, तुमने कितनी अच्छी तरह से पट्टी बांधी है! मैं तो ऐसा नहीं कर पाता। क्या तुम्हें अभी भी दर्द हो रहा है?
"अब तो इसमें कुछ खास बात नहीं है।"
"तुम्हें पानी से डर नहीं लगता?" लिसे ने पूछा।
"बस करो, लीज़, शायद मैंने बोलने में कुछ ज़्यादा ही जल्दबाज़ी कर दी।"
लड़के के पागल होने की खबर सुनकर, आपने तुरंत उस पर झपट्टा मारा। कैटेरिना इवानोव्ना को अभी-अभी पता चला है कि आप यहाँ हैं, एलेक्सी फ्योदोरोविच, वह बस मेरी तरफ दौड़ी, वह आपसे मिलने के लिए बेताब है, बेताब है!
“अरे माँ, आप खुद उनके पास जाइए। वह अभी नहीं जा सकता, वह अभी अंदर है।”
ज्यादा दर्द।"
“बिल्कुल नहीं, मैं आराम से जा सकता हूँ,” अलेयोशा ने कहा। “क्या! तुम जा रहे हो? क्या यही तुम्हारा कहना है?”
"ठीक है, जब मैं उनसे मिल लूंगा, तो मैं यहाँ वापस आऊंगा और हम बात कर सकते हैं।"
आपको जितनी इच्छा हो। लेकिन मैं कैटेरिना इवानोव्ना से तुरंत मिलना चाहूंगा, क्योंकि मैं जितनी जल्दी हो सके मठ वापस जाने के लिए बहुत उत्सुक हूं।
“माँ, इसे जल्दी से ले जाओ। एलेक्सी फ्योदोरोविच, परेशान मत करो।”
बाद में मुझसे मिलने आ जाना, लेकिन सीधे अपने मठ वापस चले जाना। अच्छा हुआ तुम चले गए। मुझे सोना है, मैं पूरी रात सो नहीं पाया।
"अरे, लीज़, तुम तो बस मज़ाक कर रही हो, लेकिन काश तुम सो जाती!"
मैडम होहलाकोव रो पड़ीं।
मुझे नहीं पता मैंने क्या किया है... मैं तीन मिनट और रुकूंगा, अगर जरूरत पड़ी तो पांच मिनट भी।
“तुम्हें पसंद है,” अलेयोशा ने बुदबुदाते हुए कहा।
“पांच साल का भी! माँ, इसे जल्दी से यहाँ से ले जाओ, यह तो एक राक्षस है।”
“लिसे, तुम पागल हो। चलो चलते हैं, एलेक्सी फ्योदोरोविच, वह भी बहुत पागल है।
आज तो उसका मूड ही खराब है। मुझे उससे उलझने से डर लग रहा है। ओह, नर्वस लड़कियों के साथ कितनी परेशानी होती है! शायद तुम्हें देखकर उसे सच में नींद आ जाए। तुमने उसे कितनी जल्दी नींद दिला दी, और यह कितनी अच्छी बात है!
“आह, माँ, आप कितनी मीठी बातें करती हैं! इसके लिए मुझे आपको चूमना ही होगा, माँ।”
“और मैं भी तुम्हें चूमता हूँ, लिसे। सुनो, एलेक्सी फ्योदोरोविच,” मैडम

होहलकोव ने रहस्यमय और महत्वपूर्ण अंदाज़ में, तेज़ फुसफुसाहट में बोलना शुरू किया। “मैं कुछ भी संकेत नहीं देना चाहता, मैं पर्दा नहीं उठाना चाहता, आप खुद देखेंगे कि क्या हो रहा है। यह भयावह है। यह एक बहुत बड़ा तमाशा है। वह आपके भाई इवान से प्यार करती है, और वह खुद को यह यकीन दिलाने की पूरी कोशिश कर रही है कि वह आपके भाई दिमित्री से भी प्यार करती है। यह भयावह है! मैं आपके साथ अंदर चलूँगा, और अगर वे मुझे बाहर नहीं निकालते, तो मैं अंत तक यहीं रहूँगा।”

अध्याय 5

ड्राइंग रूम में एक घाव

लेकिन ड्राइंग रूम में बातचीत पहले ही खत्म हो चुकी थी। कैटेरिना इवानोव्ना बहुत उत्तेजित थीं, हालांकि उनका चेहरा दृढ़ दिख रहा था। जैसे ही अलेयोशा और मैडम होहलाकोव अंदर आए, इवान फ्योदोरोविच विदा लेने के लिए खड़े हो गए। उनका चेहरा कुछ पीला पड़ गया था, और अलेयोशा ने उन्हें चिंता से देखा। क्योंकि यही वह क्षण था जब एक शंका, एक परेशान करने वाली पहेली का हल निकलना था, जो कुछ समय से अलेयोशा को सता रही थी। पिछले महीने के दौरान उन्हें कई बार यह बताया गया था कि उनके भाई इवान कैटेरिना इवानोव्ना से प्यार करते हैं, और उससे भी बढ़कर, कि वह दिमित्री से उन्हें "छीनने" की योजना बना रहे हैं। कुछ समय पहले तक यह विचार अलेयोशा को भयानक लगता था, हालांकि इससे उन्हें बहुत चिंता होती थी। वह अपने दोनों भाइयों से प्यार करते थे, और उनके बीच इस तरह की प्रतिद्वंद्विता से डरते थे। इस बीच, दिमित्री ने पिछले दिन साफ-साफ कहा था कि उन्हें खुशी है कि इवान उनका प्रतिद्वंद्वी है, और यह उनके लिए बहुत मददगार है। किस तरह से यह उनकी मदद करता है? ग्रुशेंका से शादी करने में? लेकिन अलेयोशा इसे सबसे बुरी बात मानते थे। इन सब बातों के अलावा, अलेयोशा को पिछली शाम तक यह पक्का यकीन था कि कटेरीना इवानोव्ना दिमित्री से अटूट और गहरा प्यार करती हैं; लेकिन यह यकीन उसने पिछली शाम तक ही किया था। उसे यह भी लगता था कि वह इवान जैसे आदमी से प्यार करने में असमर्थ हैं, और वह दिमित्री से प्यार करती हैं, और इस तरह के प्यार की सारी विचित्रता के बावजूद, उसे वैसे ही प्यार करती हैं जैसे वह है।
लेकिन कल ग्रुशेंका के साथ फिल्माए गए दृश्य के दौरान एक और विचार उनके मन में आया।
उसे। मैडम होहलाकोव द्वारा अभी-अभी बोले गए शब्द "क्षति पहुँचाने वाला" ने उसे लगभग चौंका दिया, क्योंकि उस रात भोर होते-होते वह आधी नींद में "क्षति, क्षति" चिल्लाया था, शायद अपने सपने के संदर्भ में। वह पूरी रात कटेरीना इवानोव्ना के यहाँ बीते दिन के दृश्य का सपना देख रहा था। अब अलेयोशा मैडम होहलाकोव के इस स्पष्ट और दृढ़ कथन से प्रभावित हुआ कि कटेरीना इवानोव्ना इवान से प्रेम करती थी, और केवल "आत्म-क्षति" के बहाने खुद को धोखा दे रही थी, और दिमित्री के लिए अपने झूठे प्रेम का दिखावा करके किसी काल्पनिक कृतज्ञता के कर्तव्य का पालन कर रही थी। "हाँ," उसने सोचा, "शायद पूरी सच्चाई इन्हीं शब्दों में निहित है।" लेकिन उस स्थिति में इवान की क्या स्थिति थी? अलेयोशा को सहज रूप से लगा कि कटेरीना इवानोव्ना जैसे चरित्र वाली महिला को प्रभुत्वशाली होना चाहिए, और वह केवल दिमित्री जैसे व्यक्ति पर ही प्रभुत्व जमा सकती थी, इवान जैसे पुरुष पर कभी नहीं। दिमित्री शायद अंततः अपनी खुशी के लिए उसके प्रभुत्व को स्वीकार कर ले (जो अलेयोशा की इच्छा थी), लेकिन इवान—नहीं, इवान उसके अधीन नहीं हो सकता था, और ऐसा समर्पण उसे खुशी नहीं दे सकता था। अलेयोशा इवान के बारे में यही मानने से खुद को रोक नहीं सका। और अब ये सभी शंकाएँ और विचार उसके मन में कौंध गए जब वह ड्राइंग रूम में दाखिल हुआ। एक और विचार भी उसके मन में आया: "क्या होगा अगर वह उन दोनों में से किसी से भी प्यार न करती हो—न इवान से और न ही दिमित्री से?"
यह ध्यान देने योग्य है कि अलेयोशा को मानो अपने आप पर शर्म आ रही थी।
पिछले महीने भर ये विचार बार-बार उसके मन में आते रहे और वह खुद को दोषी ठहराता रहा। “मुझे प्यार और औरतों के बारे में क्या पता है और मैं ऐसे सवालों का फैसला कैसे कर सकता हूँ?” ऐसे संदेह और अटकलों के बाद उसने मन ही मन खुद को कोसते हुए सोचा। फिर भी इसके बारे में सोचना नामुमकिन नहीं था। उसे सहज रूप से महसूस हुआ कि यह प्रतिद्वंद्विता उसके भाइयों के जीवन में बहुत महत्वपूर्ण है और बहुत कुछ इसी पर निर्भर करता है।
“एक सरीसृप दूसरे को खा जाएगा,” इवान ने उस दिन कहा था।
इससे पहले, वह अपने पिता और दिमित्री के बारे में गुस्से में बोल रहा था। इवान दिमित्री को एक धूर्त प्राणी की तरह देखता था, और शायद लंबे समय से ऐसा ही सोचता आ रहा था। क्या यह शायद कैटरीना इवानोव्ना को जानने के बाद से था? यह वाक्य कल इवान के मुंह से अनजाने में निकल गया था, लेकिन इससे इसका महत्व

और बढ़ गया। अगर वह ऐसा महसूस करता है, तो शांति की क्या संभावना है? क्या इसके विपरीत, उनके परिवार में नफरत और शत्रुता के नए कारण नहीं बन रहे थे? और अलेयोशा को उनमें से किसके प्रति सहानुभूति दिखानी चाहिए? और वह उनमें से प्रत्येक के लिए क्या कामना करे? वह उन दोनों से प्यार करता था, लेकिन इन परस्पर विरोधी हितों के बीच वह प्रत्येक के लिए क्या कामना कर सकता था? वह इस उलझन में पूरी तरह भटक सकता था, और अलेयोशा का हृदय अनिश्चितता सहन नहीं कर सकता था, क्योंकि उसका प्रेम हमेशा सक्रिय प्रकृति का था। वह निष्क्रिय प्रेम करने में असमर्थ था। यदि वह किसी से प्रेम करता था, तो वह तुरंत उसकी मदद करने में जुट जाता था। और ऐसा करने के लिए उसे यह जानना आवश्यक था कि उसका लक्ष्य क्या है; उसे निश्चित रूप से यह जानना आवश्यक था कि प्रत्येक के लिए सबसे अच्छा क्या है, और यह सुनिश्चित करने के बाद, उन दोनों की मदद करना उसके लिए स्वाभाविक था। लेकिन एक निश्चित लक्ष्य की जगह, उसे चारों ओर अनिश्चितता और उलझन के सिवा कुछ नहीं मिला। "यह बहुत पीड़ादायक था," जैसा कि अभी कहा गया था। लेकिन इस "पीड़ा" में भी वह क्या समझ सकता था? इस उलझन भरे जाल में उसे एक शब्द भी समझ नहीं आ रहा था।
अलियोशा को देखकर, कटेरीना इवानोव्ना ने जल्दी और खुशी से इवान से कहा,
जो पहले ही उठकर जाने लगी थी, उसने कहा, “एक मिनट! एक मिनट और रुकिए! मैं यहाँ मौजूद इस व्यक्ति की राय सुनना चाहती हूँ जिस पर मुझे पूरा भरोसा है। आप कहीं मत जाइए,” उसने मैडम होहलाकोव को संबोधित करते हुए कहा। उसने अलेयोशा को अपने बगल में बैठाया, और मैडम होहलाकोव इवान के सामने बैठ गईं।
“तुम सब मेरे दोस्त हो, दुनिया में मेरे सब कुछ तुम ही हो, मेरे प्यारे दोस्तों।”
उसने कोमल स्वर में बोलना शुरू किया, उसकी आवाज़ में पीड़ा के सच्चे आँसू भरे हुए थे, और अलेयोशा का दिल तुरंत उसके लिए पिघल उठा। “तुम, एलेक्सी फ्योदोरोविच, कल उस घिनौने दृश्य के साक्षी थे, और तुमने देखा कि मैंने क्या किया। तुमने नहीं देखा, इवान फ्योदोरोविच, उसने देखा। कल उसने मेरे बारे में क्या सोचा, मुझे नहीं पता। मैं बस इतना जानती हूँ कि अगर आज, इसी क्षण, वही घटना दोहराई जाए, तो मैं कल जैसी ही भावनाएँ व्यक्त करूँगी—वही भावनाएँ, वही शब्द, वही हरकतें। तुम्हें मेरी हरकतें याद हैं, एलेक्सी फ्योदोरोविच; तुमने उनमें से एक में मुझे रोका था।” (यह कहते ही उसका चेहरा लाल हो गया और उसकी आँखें चमक उठीं)। “मुझे आपको बताना ही होगा कि मैं इससे उबर नहीं पा रही हूँ। सुनो, एलेक्सी फ्योदोरोविच। मुझे यह भी नहीं पता कि मैं अब भी उससे प्यार करती हूँ या नहीं। मुझे उस पर दया आती है, और यह प्यार का अच्छा संकेत नहीं है। अगर मैं उससे प्यार करती, अगर मैं अब भी उससे प्यार करती, तो शायद मुझे अब उस पर अफ़सोस नहीं होता, बल्कि उससे नफ़रत होती।”
उसकी आवाज कांप रही थी और उसकी पलकों पर आंसू चमक रहे थे। अलेयोशा
वह मन ही मन कांप उठा। "वह लड़की सच्ची और ईमानदार है," उसने सोचा, "और वह अब दिमित्री से प्यार नहीं करती।"
“यह सच है, यह सच है,” मैडम होहलाकोव चिल्लाईं। “रुको, प्रिय। मैंने तुम्हें मुख्य बात, अपना अंतिम निर्णय नहीं बताया है।”
रात के दौरान। मुझे लगता है कि शायद मेरा फैसला मेरे लिए बहुत बुरा है, लेकिन मुझे लगता है कि कोई भी चीज़ मुझे इसे बदलने के लिए मजबूर नहीं कर पाएगी—बिल्कुल भी नहीं। यह जीवन भर ऐसा ही रहेगा। मेरे प्यारे, दयालु, सदा वफादार और उदार सलाहकार, दुनिया में मेरे इकलौते दोस्त, इवान फ्योदोरोविच, जो दिल की गहरी समझ रखते हैं, मेरे इस फैसले को स्वीकार करते हैं और इसकी सराहना करते हैं। वे यह जानते हैं।
“हाँ, मुझे यह मंजूर है,” इवान ने दबी हुई लेकिन दृढ़ आवाज में सहमति जताई। “लेकिन मुझे अलेयोशा भी पसंद है (अरे! एलेक्सी फ्योदोरोविच, मुझे माफ कर दीजिए)
(मैं तुम्हें केवल अलेयोशा कहकर पुकार रही हूँ), मैं चाहती हूँ कि एलेक्सी फ्योदोरोविच भी मेरे दोनों मित्रों के सामने मुझे बताएँ कि क्या मैं सही हूँ। मुझे सहज रूप से महसूस होता है कि तुम, अलेयोशा, मेरे प्यारे भाई (क्योंकि तुम मेरे लिए एक प्यारे भाई हो)," उसने उत्साह से फिर कहा, उसका ठंडा हाथ अपने गर्म हाथ में लेते हुए, "मुझे पूर्वाभास है कि तुम्हारा निर्णय, तुम्हारी स्वीकृति, मेरे सभी कष्टों के बावजूद मुझे शांति प्रदान करेगी, क्योंकि तुम्हारे शब्दों के बाद, मैं शांत हो जाऊँगी और समर्पण कर दूँगी—मुझे ऐसा महसूस होता है।"
“मुझे नहीं पता कि आप मुझसे क्या पूछ रहे हैं,” अलोशा ने शरमाते हुए कहा। “मैं तो बस...

जान लो कि मैं तुमसे प्यार करता हूँ और इस समय मैं अपनी खुशी से ज़्यादा तुम्हारी खुशी चाहता हूँ! ... लेकिन मुझे इन सब मामलों के बारे में कुछ नहीं पता," किसी बात ने उसे जल्दी से यह बात कहने के लिए मजबूर किया।
“ऐसे मामलों में, एलेक्सी फ्योदोरोविच, ऐसे मामलों में, सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि सम्मान, कर्तव्य और उससे भी कुछ ऊँचा—पता नहीं क्या—लेकिन शायद कर्तव्य से भी ऊँचा। मेरे हृदय में यह अदम्य भावना जागृत है, और यह मुझे अदम्य रूप से विवश करती है। लेकिन इसे दो शब्दों में कहा जा सकता है। मैंने पहले ही निर्णय कर लिया है, भले ही वह उस—औरत से शादी कर ले,” उसने गंभीरता से कहना शुरू किया, “जिसे मैं कभी, कभी माफ़ नहीं कर सकती, तब भी मैं उसे नहीं छोड़ूँगी। अब से मैं उसे कभी, कभी नहीं छोड़ूँगी!” वह एक प्रकार के फीके, उन्मादी उन्माद में फूट पड़ी। “ऐसा नहीं है कि मैं लगातार उसके पीछे भागूँगी, उसके रास्ते में आऊँगी और उसे परेशान करूँगी। ओह, नहीं! मैं किसी दूसरे शहर चली जाऊँगी—जहाँ आपको पसंद हो—लेकिन मैं जीवन भर उसकी रक्षा करूँगी—मैं जीवन भर निरंतर उसकी रक्षा करूँगी। जब वह उस औरत से दुखी हो जाएगा, और ऐसा जल्द ही होना तय है, तो वह मेरे पास आए और उसे एक दोस्त, एक बहन मिलेगी... केवल एक बहन, बेशक, और हमेशा के लिए; लेकिन कम से कम उसे यह तो पता चलेगा कि वह बहन सचमुच उसकी बहन है, जो उससे प्यार करती है और जिसने अपना सारा जीवन उसके लिए न्योछावर कर दिया है। मैं अपनी बात मनवा लूंगी। मैं इस बात पर ज़ोर दूंगी कि वह मुझे जाने और बिना किसी झिझक के मुझ पर पूरा भरोसा करे,” वह उन्माद में चिल्लाई। “मैं एक ऐसी देवी बनूंगी जिसकी वह पूजा कर सके—और कम से कम वह अपने विश्वासघात और कल उसके कारण मुझे जो कष्ट सहना पड़ा, उसके लिए मेरा ऋणी तो रहेगा। और उसे यह देखने दो कि मैं जीवन भर उसके प्रति और उससे किए गए वादे के प्रति सच्ची रहूंगी, भले ही वह बेवफा रहा हो और मुझे धोखा दिया हो। मैं—मैं उसकी खुशी का एक साधन मात्र बन जाऊंगी, या—मैं कैसे कहूँ?—एक उपकरण, उसकी खुशी की एक मशीन, और यह अपने पूरे जीवन भर, अपने पूरे जीवन भर, और वह इसे अपने पूरे जीवन भर देखेगा! यही मेरा निर्णय है। इवान फ्योदोरोविच मुझे पूरी तरह से स्वीकार करते हैं।”
उसकी सांस फूल रही थी। शायद वह अपने विचार को व्यक्त करना चाहती थी।
अधिक गरिमा, कलात्मकता और सहजता तो थी, लेकिन उसकी वाणी बहुत जल्दबाजी भरी और भद्दी थी। उसमें युवावस्था का आवेग साफ झलक रहा था, जिससे पता चलता था कि वह कल के अपमान से अभी भी आहत थी और उसका स्वाभिमान संतुष्टि के लिए तड़प रहा था। वह स्वयं भी यही महसूस कर रही थी।
उसका चेहरा अचानक उदास हो गया, उसकी आँखों में एक अप्रिय भाव आ गया। अलेयोशा ने इसे तुरंत देख लिया और उसके मन में सहानुभूति का भाव जागा। उसके भाई इवान ने यह कहकर स्थिति और बिगाड़ दी: उन्होंने कहा, "मैंने तो सिर्फ अपना विचार व्यक्त किया है। किसी और के कहने पर, यह बात गलत साबित होगी।"
मैं प्रभावित और तनावग्रस्त हो जाती, लेकिन तुम्हारे कारण ऐसा नहीं हुआ। कोई और औरत होती तो गलत होती, लेकिन तुम सही हो। मुझे नहीं पता इसे कैसे समझाऊं, लेकिन मुझे लगता है कि तुम बिल्कुल सच्ची हो और इसलिए तुम सही हो।
लेकिन यह तो सिर्फ अभी के लिए है। और यह क्षण किस बात का प्रतीक है?
"यह तो बस कल का अपमान है।" मैडम होहलाकोव का हस्तक्षेप करने का कोई इरादा नहीं था, लेकिन वह इस बेहद उचित टिप्पणी को करने से खुद को रोक नहीं सकीं।
“बिल्कुल सही, बिल्कुल सही,” इवान ने अजीब सी उत्सुकता के साथ कहा, जो स्पष्ट रूप से दिखाई दे रही थी।
बीच में बात काटे जाने पर नाराज़ होकर उसने कहा, “किसी और के लिए यह क्षण केवल कल की यादों का क्षण होता। लेकिन कैटेरिना इवानोव्ना के स्वभाव के कारण, यह क्षण उसके जीवन भर रहेगा। जो किसी और के लिए केवल एक वादा होता, वह उसके लिए एक शाश्वत, बोझिल, शायद कठिन, लेकिन अटूट कर्तव्य है। और इस कर्तव्य के पूरा होने की अनुभूति ही उसे शक्ति प्रदान करेगी। कैटेरिना इवानोव्ना, तुम्हारा जीवन अब से अपनी भावनाओं, अपनी वीरता और अपने कष्टों पर चिंतन करने में व्यतीत होगा; लेकिन अंत में वह कष्ट कम हो जाएगा और एक साहसी और गौरवपूर्ण योजना की पूर्ति के मधुर चिंतन में परिवर्तित हो जाएगा।

हाँ, यह निश्चित रूप से गौरवपूर्ण है, और हर हाल में निराशाजनक भी, लेकिन तुम्हारे लिए एक विजय है। और इसकी चेतना अंततः पूर्ण संतोष का स्रोत बनेगी और तुम्हें बाकी सब कुछ के प्रति समर्पित कर देगी।"
यह बात स्पष्ट रूप से कुछ दुर्भावना और जाहिर तौर पर कुछ इरादे से कही गई थी।
इरादा; शायद इस बात को छिपाने की कोई इच्छा भी नहीं थी कि उसने व्यंग्यपूर्ण और इरादे से बात की थी।
"अरे बाप रे, ये सब कितना गलत है!" मैडम होहलाकोव फिर चिल्लाईं। "अलेक्सी फ्योदोरोविच, आप बोलिए। मैं यह जानने के लिए बहुत बेताब हूँ कि आप क्या कहना चाहते हैं।"
"कहोगे!" कैटेरिना इवानोव्ना चिल्लाई और फूट-फूटकर रोने लगी। अलेयोशा सोफे से उठ खड़ा हुआ।
"कुछ नहीं, कुछ नहीं!" वो रोते हुए बोली। "मैं परेशान हूँ, मैं
कल रात नींद नहीं आई। लेकिन आप और आपके भाई जैसे दो दोस्तों के साथ रहकर मुझे अभी भी ताकत महसूस हो रही है—क्योंकि मुझे पता है—आप दोनों मुझे कभी अकेला नहीं छोड़ेंगे।
दुर्भाग्यवश मुझे मॉस्को लौटना पड़ रहा है—शायद कल—
और तुम्हें लंबे समय के लिए छोड़कर जाना पड़ेगा—और, दुर्भाग्य से, यह अपरिहार्य है," इवान ने अचानक कहा।
"कल—मॉस्को के लिए!" उसका चेहरा अचानक विकृत हो गया; "लेकिन—
लेकिन, हे भगवान! कितनी भाग्यशाली!" वह अचानक बदली हुई आवाज़ में बोली। पल भर में उसके आँसुओं का कोई निशान नहीं बचा। उसमें एक पल में ऐसा परिवर्तन आया, जिसने अलेयोशा को चकित कर दिया। एक बेचारी, अपमानित लड़की, जो मानो "घाव" में रो रही थी, के स्थान पर उसने एक ऐसी स्त्री को देखा जो पूरी तरह से शांत और बेहद प्रसन्न थी, मानो अभी-अभी कोई सुखद घटना घटी हो।
"ओह, यह बिल्कुल भी सौभाग्य की बात नहीं है कि मैं तुम्हें खो रही हूँ," उसने सुधार करते हुए कहा। अचानक, एक मनमोहक सामाजिक मुस्कान के साथ, उसने कहा, "तुम्हारे जैसे दोस्त ऐसा सोच भी नहीं सकते थे। तुम्हें खोने से मैं बहुत दुखी हूँ।" वह आवेग में आकर इवान की ओर दौड़ी और उसके दोनों हाथ पकड़कर उन्हें प्यार से दबाया। "लेकिन अच्छी बात यह है कि तुम मॉस्को में चाची और अगाफ्या से मिल पाओगे और उन्हें मेरी वर्तमान स्थिति की सारी भयावहता बता पाओगे। तुम अगाफ्या से खुलकर बात कर सकते हो, लेकिन प्यारी चाची को छोड़ देना। तुम जानते हो कि यह कैसे करना है। तुम सोच भी नहीं सकते कि कल और आज सुबह मैं कितनी दुखी थी, यह सोचकर कि मैं उन्हें वह भयानक पत्र कैसे लिखूँगी—
क्योंकि ऐसी बातें पत्र में कभी नहीं बताई जा सकतीं... अब मेरे लिए लिखना आसान होगा, क्योंकि तुम उनसे मिलोगे और सब कुछ समझाओगे। ओह, मैं कितनी खुश हूँ! लेकिन मैं बस इसी बात से खुश हूँ, मेरा विश्वास करो। बेशक, तुम्हारी जगह कोई नहीं ले सकता... मैं अभी पत्र लिखने जाती हूँ," उसने अचानक कहा और कमरे से बाहर जाने के लिए एक कदम बढ़ाया।
और अलेयोशा और उसकी राय के बारे में क्या, जिसके बारे में आप इतने चिंतित थे?
"सुनने के लिए बेहद उत्सुक हो?" मैडम होहलाकोव चिल्लाईं। उनकी आवाज़ में व्यंग्य और गुस्से का भाव था।
"मैं यह भूली नहीं थी," कैटेरिना इवानोव्ना अचानक रुकते हुए चिल्लाईं।
"और ऐसे समय में आप इतने विरोधी क्यों हो रहे हैं?" उसने गर्मजोशी और कटुता भरे लहजे में कहा। "मैंने जो कहा, मैं दोहराती हूँ। मुझे उनकी राय चाहिए। उससे भी बढ़कर, मुझे उनका फैसला चाहिए! जैसा वे कहेंगे, वैसा ही होगा। आप देख रहे हैं कि मैं आपके शब्दों के लिए कितनी बेचैन हूँ, एलेक्सी फ्योदोरोविच... लेकिन बात क्या है?"
"मुझे इस पर विश्वास नहीं हो रहा था। मैं इसे समझ ही नहीं पा रहा हूँ!" अलेयोशा रो पड़ा।
अचानक संकट में।
"क्या? क्या?"
"वह मॉस्को जा रहा है, और तुम खुशी से चिल्ला रहे हो। तुमने कहा था
क्या तुमने ये जानबूझकर किया? और फिर तुम ये समझाने लगते हो कि तुम्हें इस बात की खुशी नहीं है, बल्कि एक दोस्त को खोने का दुख है। लेकिन ये भी तो एक तरह का अभिनय ही था—तुम एक किरदार निभा रहे थे—जैसे थिएटर में!
"थिएटर में? क्या? तुम्हारा क्या मतलब है?" कैटेरिना ने हैरानी से कहा।

इवानोवना, अत्यंत आश्चर्यचकित होकर, चेहरे पर लाली लिए और भौंहें चढ़ाते हुए।
“भले ही आप उसे आश्वस्त करें कि आपको उसमें एक मित्र खोने का दुख है, फिर भी
“उसके सामने बार-बार कहते रहो कि उसका जाना सौभाग्य की बात है,” अलेयोशा हांफते हुए बोला। वह मेज पर खड़ा था और बैठा नहीं।
“तुम क्या कह रहे हो? मुझे समझ नहीं आ रहा।”
मैं खुद को नहीं समझ पा रहा हूँ... मुझे ऐसा लगा जैसे मैंने एक पल में सब कुछ देख लिया हो... मुझे पता है कि मैं
“मैं ठीक से कह नहीं पा रहा हूँ, लेकिन फिर भी कहूँगा,” अलेयोशा उसी कांपती और टूटी हुई आवाज़ में बोलता रहा। “मुझे लगता है कि शायद तुम दिमित्री से बिल्कुल भी प्यार नहीं करती हो... और शुरू से ही कभी नहीं किया... और दिमित्री ने भी तुम्हें कभी प्यार नहीं किया... और सिर्फ़ तुम्हारा सम्मान करता है... मुझे सच में नहीं पता कि मैं यह सब कहने की हिम्मत कैसे कर रहा हूँ, लेकिन किसी को तो सच बोलना ही होगा... क्योंकि यहाँ कोई भी सच नहीं बोलेगा।”
“क्या सच?” कैटेरिना इवानोव्ना चिल्लाईं, और वहाँ एक उन्मादी गूँज उठी।
उसकी आवाज में।
“मैं तुम्हें बताऊंगा,” अलेयोशा ने हताशा से कहा, मानो वह
घर की छत से कूदते हुए। “दिमित्री को बुलाओ; मैं उसे बुला लाऊंगा—और उसे यहाँ आने दो और तुम्हारा हाथ पकड़ने दो, इवान का हाथ पकड़ने दो और अपने हाथ मिला लेने दो। क्योंकि तुम इवान को तड़पा रही हो, सिर्फ इसलिए कि तुम उससे प्यार करती हो—और उसे भी तड़पा रही हो, क्योंकि तुम दिमित्री से ‘आत्म-पीड़ा’ के ज़रिए—एक अवास्तविक प्रेम से—क्योंकि तुमने खुद को मना लिया है।”
अलोशा ने बोलना बंद कर दिया और चुप हो गया।
“तुम... तुम... तुम एक छोटे से धार्मिक मूर्ख हो—बस यही हो तुम!”
कैटेरिना इवानोव्ना का गुस्सा फूट पड़ा। उनका चेहरा पीला पड़ गया था और उनके होंठ गुस्से से कांप रहे थे।
इवान अचानक हँसा और उठ खड़ा हुआ। उसकी टोपी उसके हाथ में थी। "तुम गलत हो, मेरे प्यारे अलेयोशा," उसने एक भावपूर्ण चेहरे के साथ कहा।
अलियोशा ने उसके चेहरे पर इससे पहले कभी युवा ईमानदारी और मजबूत, अप्रतिरोध्य रूप से स्पष्ट भावनाओं का ऐसा भाव नहीं देखा था। “कैटरीना इवानोव्ना ने कभी मेरी परवाह नहीं की! वह हमेशा से जानती थी कि मैं उसकी परवाह करता हूँ—हालाँकि मैंने कभी उससे अपने प्यार का एक शब्द भी नहीं कहा—वह जानती थी, लेकिन उसने मेरी परवाह नहीं की। मैं कभी उसका दोस्त भी नहीं रहा, एक पल के लिए भी नहीं; वह इतनी घमंडी है कि उसे मेरी दोस्ती की ज़रूरत ही नहीं। उसने मुझे अपने पास बदला लेने के लिए रखा। उसने मुझसे और मुझ पर उन सभी अपमानों का बदला लिया जो दिमित्री ने पहली मुलाकात के बाद से लगातार उसे दिए थे। क्योंकि वह पहली मुलाकात भी उसके दिल में एक अपमान की तरह चुभती है—उसका दिल ऐसा ही है! उसने मुझसे सिर्फ दिमित्री के लिए अपने प्यार के बारे में ही बात की है। मैं अब जा रहा हूँ; लेकिन, यकीन मानो, कैटरीना इवानोव्ना, तुम उससे सचमुच प्यार करती हो। और जितना वह तुम्हारा अपमान करता है, उतना ही तुम उससे प्यार करती हो—यही तुम्हारा ‘दर्द’ है। तुम उससे वैसे ही प्यार करती हो जैसे वह है; तुम उससे इसलिए प्यार करती हो क्योंकि वह तुम्हारा अपमान करता है। अगर वह सुधर जाए, तो तुम उसे तुरंत छोड़ दोगी और उससे प्यार करना बंद कर दोगी। लेकिन तुम्हें उसकी ज़रूरत है ताकि तुम अपनी वीर निष्ठा पर लगातार विचार कर सको।” और उसे बेवफाई के लिए कोसना। और यह सब तुम्हारे अहंकार से उपजा है। ओह, इसमें बहुत अपमान और आत्म-अपमान है, लेकिन यह सब अहंकार से ही आता है... मैं बहुत छोटी थी और मैंने तुम्हें बहुत प्यार किया। मुझे पता है कि मुझे यह नहीं कहना चाहिए, मेरे लिए तुम्हें छोड़कर चले जाना अधिक गरिमापूर्ण होता, और यह तुम्हारे लिए कम अपमानजनक होता। लेकिन मैं बहुत दूर जा रही हूँ, और कभी वापस नहीं आऊँगी... यह हमेशा के लिए है। मैं एक 'घाव' के पास नहीं बैठना चाहती... लेकिन मुझे नहीं पता कि अब कैसे बोलूँ। मैंने सब कुछ कह दिया है... अलविदा, कैटरीना इवानोव्ना; तुम मुझसे नाराज़ नहीं हो सकतीं, क्योंकि मुझे तुमसे सौ गुना अधिक कठोर दंड मिला है, केवल इस तथ्य से कि मैं तुम्हें फिर कभी नहीं देख पाऊँगी। अलविदा! मुझे तुम्हारा हाथ नहीं चाहिए। तुमने मुझे जानबूझकर

इतना कष्ट दिया है कि इस समय मैं तुम्हें क्षमा नहीं कर सकती। मैं तुम्हें बाद में माफ़ कर दूँगा, लेकिन अभी मुझे तुम्हारा हाथ नहीं चाहिए। 'डेन डांक, डेम, बेगेहर इच निष्ट',” उसने बनावटी मुस्कान के साथ कहा, जिससे यह ज़ाहिर हो गया कि वह शिलर को पढ़ सकता था, और इतना पढ़ चुका था कि उसे कंठस्थ हो गया था—जिस पर अलेयोशा कभी विश्वास नहीं करता। वह अपनी मेज़बान, मैडम होहलाकोव को भी अलविदा कहे बिना कमरे से बाहर चला गया। अलेयोशा ने अपने हाथ जोड़ लिए।
“इवान!” वह उसके पीछे बेताब होकर चिल्लाया। “वापस आ जाओ, इवान! नहीं, कुछ नहीं।”
“मैं उसे अब वापस आने के लिए मना लूँगा!” उसने पछतावे के साथ यह महसूस करते हुए फिर से कहा; “लेकिन यह मेरी गलती है, मेरी गलती। मैंने ही शुरू किया था!” इवान गुस्से में, गलत तरीके से बोला। अन्यायपूर्ण और गुस्से में। उसे यहाँ वापस आना ही होगा, वापस आना होगा,” अलेयोशा बेचैनी से चिल्लाता रहा।
कैटेरिना इवानोव्ना अचानक अगले कमरे में चली गईं। “तुमने कोई नुकसान नहीं किया। तुमने बहुत ही सुंदर व्यवहार किया, बिल्कुल एक देवदूत की तरह।”
मैडम होहलाकोव ने तेजी से और उत्साह से अलेयोशा से फुसफुसाते हुए कहा, "मैं इवान फ्योदोरोविच को जाने से रोकने के लिए अपनी पूरी कोशिश करूंगी।"
उसका चेहरा खुशी से चमक उठा, जिससे अलेयोशा को बहुत दुख हुआ, लेकिन
कैटेरिना इवानोव्ना अचानक लौट आई। उसके हाथ में दो सौ रूबल के नोट थे।
“मुझे आपसे एक बहुत बड़ी विनती करनी है, एलेक्सी फ्योदोरोविच,” उसने कहना शुरू किया।
अलेयोशा से बात करते हुए, मानो कुछ हुआ ही न हो, वह शांत और स्थिर स्वर में बोल रही थी। “एक सप्ताह पहले—हाँ, मुझे लगता है एक सप्ताह पहले—दिमित्री फ्योदोरोविच ने एक जल्दबाजी और अन्यायपूर्ण कार्य किया—एक बहुत ही घिनौना काम। यहाँ एक छोटा सा शराबखाना है, और वहाँ उनकी मुलाकात उस बर्खास्त अधिकारी, उस कप्तान से हुई, जिसे आपके पिता किसी काम में रखते थे। दिमित्री फ्योदोरोविच किसी तरह उस कप्तान पर अपना आपा खो बैठे, उसकी दाढ़ी पकड़कर उसे सड़क पर घसीटते हुए कुछ दूर तक ले गए, उसी अपमानजनक तरीके से। और मुझे बताया गया है कि उनका बेटा, एक छोटा सा बच्चा, जो यहाँ के स्कूल में पढ़ता है, यह सब देखकर उनके पास दौड़ा और रोते हुए अपने पिता के लिए गिड़गिड़ाने लगा, हर किसी से उसकी रक्षा करने की अपील करने लगा, जबकि सब लोग हँस रहे थे। आपको मुझे माफ करना होगा, एलेक्सी फ्योदोरोविच, मैं उनके उस शर्मनाक कृत्य के बारे में सोचे बिना नहीं रह सकता... उन कृत्यों में से एक जो केवल दिमित्री फ्योदोरोविच ही अपने गुस्से में कर सकते थे... और अपने आवेश में! मैं उसका वर्णन भी नहीं कर सकता...” मुझे शब्द नहीं मिल रहे। मैंने उसके पीड़ित के बारे में पूछताछ की है, और पता चला है कि वह बहुत गरीब आदमी है। उसका नाम स्नेगिरिओव है। उसने सेना में कुछ गलत किया था और उसे निकाल दिया गया था। मैं आपको बता नहीं सकती कि क्या। और अब वह अपने परिवार के साथ घोर गरीबी में डूब गया है—बीमार बच्चों वाला एक दुखी परिवार, और मुझे लगता है कि उसकी पत्नी भी पागल है। वह यहाँ लंबे समय से रह रहा है; वह पहले कॉपी क्लर्क का काम करता था, लेकिन अब उसे कुछ नहीं मिल रहा है। मैंने सोचा था कि अगर आप... मतलब मैंने सोचा था... मुझे नहीं पता। मैं बहुत उलझन में हूँ। देखिए, मैं आपसे, मेरे प्यारे एलेक्सी फ्योदोरोविच, यह कहना चाहती थी कि आप उसके पास जाएँ, उनके पास जाने का कोई बहाना ढूँढ़ें—मेरा मतलब उस कप्तान से है—ओह, भगवान, मैं इसे कितनी बुरी तरह समझा पा रही हूँ!—और बड़ी ही नज़ाकत से, सावधानी से, जैसा कि केवल आप ही जानते हैं” (अलोशा शरमा गया), “उसे यह सहायता, ये दो सौ रूबल दे दें। वह इसे ज़रूर ले लेगा।” ...मेरा मतलब है, उसे इसे लेने के लिए मनाना... या यूँ कहूँ, मेरा मतलब क्या है? देखिए, यह उसे कानूनी कार्यवाही करने से रोकने के लिए मुआवज़ा नहीं है (क्योंकि मुझे लगता है कि वह ऐसा करना चाहता था), बल्कि यह मेरी ओर से सहानुभूति का प्रतीक है, दिमित्री फ्योदोरोविच की मंगेतर होने के नाते, उसकी मदद करने की इच्छा का प्रतीक है, न कि उसकी ओर से... लेकिन आप जानते हैं... मैं खुद जा सकती थी, लेकिन आप इसे मुझसे कहीं बेहतर जानते हैं। वह लेक स्ट्रीट में कल्मिकोव नाम की एक महिला के घर में रहता है... भगवान के लिए, एलेक्सी फ्योदोरोविच, मेरे लिए यह कर दीजिए, और अभी... अभी मैं काफी... थक गई हूँ। अलविदा!
वह इतनी तेजी से मुड़ी और पर्दे के पीछे गायब हो गई कि अलेयोशा

उसके पास एक शब्द भी बोलने का समय नहीं था, हालाँकि वह बोलना चाहता था। वह उनसे क्षमा माँगना चाहता था, खुद को दोषी ठहराना चाहता था, कुछ कहना चाहता था, क्योंकि उसका हृदय भरा हुआ था और वह बिना कहे कमरे से बाहर नहीं जा सकता था। लेकिन मैडम होहलाकोव ने उसका हाथ पकड़ा और उसे अपने साथ खींच लिया। हॉल में उन्होंने उसे फिर से पहले की तरह रोक लिया।
वह स्वाभिमानी है, वह खुद से जूझ रही है; लेकिन दयालु, आकर्षक भी है।
"उदार," उसने लगभग फुसफुसाते हुए कहा। "ओह, मैं उससे कितना प्यार करती हूँ, खासकर कभी-कभी, और मैं फिर से हर बात से कितनी खुश हूँ! प्यारे एलेक्सी फ्योदोरोविच, आपको पता नहीं था, लेकिन मुझे आपको बताना ही होगा कि हम सब, हम सब—उसकी दोनों चाचियाँ, मैं और हम सब, यहाँ तक कि लीज़ भी —पिछले एक महीने से बस यही उम्मीद और प्रार्थना कर रहे हैं कि वह आपके चहेते दिमित्री को छोड़ दे, जो उसकी ओर ध्यान नहीं देता और उसकी परवाह नहीं करता, और इवान फ्योदोरोविच से शादी कर ले—एक ऐसा उत्कृष्ट और सुसंस्कृत युवक, जो उसे दुनिया में किसी भी चीज़ से ज़्यादा प्यार करता है। हम इसे साकार करने के लिए पूरी कोशिश कर रहे हैं, और शायद इसी वजह से मैं यहाँ रुकी हुई हूँ।"
"लेकिन वो रो रही है—वो फिर से घायल हो गई है," रोते हुए बोला।
अलोशा।
"किसी महिला के आँसुओं पर कभी भरोसा मत करना, एलेक्सी फ्योदोरोविच। मैं कभी भी इसके पक्ष में नहीं हूँ।
ऐसे मामलों में महिलाएं ही बेहतर होती हैं। मैं हमेशा पुरुषों का पक्ष लेता हूं।
"मम्मा, आप उसे बिगाड़ रही हैं," लीज़ की नन्ही सी आवाज़ पीछे से सुनाई दी।
दरवाजा।
"नहीं, यह सब मेरी गलती थी। मैं बुरी तरह दोषी हूँ," अलेयोशा ने दोहराया।
वह सांत्वनाहीन था, अपने हाथों में अपना चेहरा छिपाए हुए अपनी गलती के लिए पश्चाताप की पीड़ा से व्याकुल था।
इसके बिलकुल विपरीत; तुमने तो फ़रिश्ते की तरह व्यवहार किया, बिल्कुल फ़रिश्ते की तरह। मैं तैयार हूँ। यह बात हजार बार दोहराई जानी चाहिए।
"मम्मा, ये तो बिल्कुल फरिश्ते जैसा व्यवहार कर रहा है?" लिज़ की आवाज़ सुनाई दी।
दोबारा।
"मुझे अचानक से ऐसा लगा," अलेयोशा ने इस तरह बोलना जारी रखा जैसे उसे कुछ पता ही न हो।
मैंने लिसे को यह कहते सुना, "कि वह इवान से प्यार करती थी, इसलिए मैंने वह बेवकूफी भरी बात कह दी... अब क्या होगा?"
"किसे, किसे?" लिसे चिल्लाई। "मम्मी, क्या आप सच में बनना चाहती हैं?"
मेरी मृत्यु। मैं तुमसे पूछता हूँ और तुम जवाब नहीं देते।
उसी समय नौकरानी अंदर भागी।
"कैटरीना इवानोव्ना बीमार हैं... वह रो रही हैं, छटपटा रही हैं, हिस्टीरिया से पीड़ित हैं।"
"क्या बात है?" लीज़ ने बहुत घबराए हुए स्वर में पूछा। "मम्मी, मैं
उसे नहीं, बल्कि उन्हें हिस्टीरिया हो जाएगा!
"लीज़, दया करके चिल्लाओ मत, मुझे सताओ मत। तुम्हारी उम्र में तो..."
बड़ों को जो कुछ पता होता है, वो सब तो कोई नहीं जान सकता। मैं आकर तुम्हें वो सब बताऊँगी जो तुम्हें जानना चाहिए। हे भगवान! मैं आ रही हूँ, मैं आ रही हूँ... हिस्टीरिया एक अच्छा संकेत है, एलेक्सी फ्योदोरोविच; उसका हिस्टीरिया होना बहुत अच्छी बात है। यही तो होना चाहिए। ऐसे मामलों में मैं हमेशा औरत के खिलाफ होती हूँ, इन सभी स्त्री-सुलभ आँसुओं और हिस्टीरिया के खिलाफ। यूलिया, जाकर कहो कि मैं उसके पास आऊँगी। इवान फ्योदोरोविच का इस तरह चले जाना उसकी अपनी गलती है। लेकिन वो जाएगा नहीं। लीज़, भगवान के लिए, चीखना बंद करो! ओह, हाँ; तुम नहीं चीख रही हो। मैं चीख रही हूँ। अपनी माँ को माफ कर दो; लेकिन मैं बहुत खुश हूँ, बहुत खुश हूँ, बहुत खुश हूँ! क्या आपने गौर किया, एलेक्सी फ्योदोरोविच, इवान फ्योदोरोविच अभी-अभी जब बाहर गए, जब उन्होंने ये सब कहा और चले गए, तब वे कितने जवान लग रहे थे? मुझे लगा कि वे कितने विद्वान, कितने ज्ञानी हैं, और अचानक उनका व्यवहार

इतना गर्मजोशी भरा, खुला और युवापन से भरा हुआ था, इतनी अनुभवहीनता से, और यह सब इतना अच्छा था, बिल्कुल आपकी तरह... और जिस तरह से उन्होंने वह जर्मन कविता दोहराई, वह बिल्कुल आपकी तरह थी! लेकिन मुझे जाना होगा, मुझे जाना होगा! एलेक्सी फ्योदोरोविच, जल्दी से उसका काम पूरा करो, और फिर जल्दी वापस आ जाओ। लीज़, क्या तुम्हें अभी कुछ चाहिए? भगवान के लिए, एलेक्सी फ्योदोरोविच को एक मिनट भी मत रोको। वह तुरंत तुम्हारे पास वापस आ जाएगा।
अंत में मैडम होहलाकोव भाग गईं। जाने से पहले, अलेयोशा ने उनसे कहा होगा कि...
दरवाजा खोलते ही लीज़ नज़र आई।
“हर हाल में नहीं,” लिसे चिल्लाई। “अभी बिल्कुल नहीं। मेरे माध्यम से बात करो।”
दरवाजा। तुम फरिश्ता कैसे बन गए? मैं बस यही जानना चाहता हूँ।
"लीज़, तुमने कितनी बड़ी बेवकूफी की! अलविदा!"
“इस तरह जाने की हिम्मत मत करो!” लिज़ कहने लगी। “लिज़, मुझे बहुत दुख है! मैं तुरंत वापस आ रहा हूँ, लेकिन मुझे बहुत बड़ा दुख है।”
दु: ख!"
और वह कमरे से बाहर भाग गया।

अध्याय 6

झोपड़ी में एक घाव

वह सचमुच बहुत दुखी था, जैसा पहले कभी नहीं हुआ था। वह मूर्ख की तरह जल्दबाजी में घुस गया था, और किस मामले में दखल दे रहा था? एक प्रेम प्रसंग में। "लेकिन मुझे इसके बारे में क्या पता? मैं ऐसी बातों के बारे में क्या बता सकता हूँ?" वह सौवीं बार खुद से दोहराता रहा, उसका चेहरा लाल हो गया था। "ओह, शर्मिंदा होना तो कुछ भी नहीं है; शर्म तो बस वह सज़ा है जिसका मैं हकदार हूँ। परेशानी यह है कि मैंने निश्चित रूप से और अधिक दुख का कारण बना दिया है... और फादर ज़ोसिमा ने मुझे सुलह कराने और उन्हें मिलाने के लिए भेजा था। क्या यही उन्हें मिलाने का तरीका है?" फिर उसे अचानक याद आया कि उसने कैसे उनके हाथ मिलाने की कोशिश की थी, और वह फिर से बुरी तरह शर्मिंदा हो गया। "हालाँकि मैंने पूरी ईमानदारी से काम किया, मुझे भविष्य में और अधिक समझदार होना चाहिए," उसने अचानक निष्कर्ष निकाला, और अपने निष्कर्ष पर मुस्कुराया भी नहीं।

कैटेरिना इवानोव्ना के काम के चलते उन्हें लेक स्ट्रीट जाना पड़ा, और उनका
भाई दिमित्री पास ही लेक स्ट्रीट के एक मोड़ पर रहते थे। अलेयोशा ने कप्तान के पास जाने से पहले किसी भी हालत में उनके पास जाने का फैसला किया, हालांकि उसे पहले से ही आभास था कि वह अपने भाई को नहीं पा सकेंगे। उसे शक था कि अब उनका भाई जानबूझकर उनसे दूर रहेगा, लेकिन उन्हें किसी भी कीमत पर उन्हें ढूंढना ही था। समय बीतता जा रहा था: मठ से निकलने के बाद से एक पल के लिए भी अलेयोशा के मन से अपने मरते हुए बड़े भाई का ख्याल नहीं निकला था।

कैटेरिना के बारे में एक बात ऐसी थी जिसमें उन्हें विशेष रुचि थी।

इवानोव्ना के आदेश पर; जब उसने कप्तान के बेटे का ज़िक्र किया, उस छोटे स्कूली बच्चे का जो अपने पिता के पास रोते हुए भागा था, तो अलेयोशा के मन में तुरंत यह विचार आया कि यह वही स्कूली बच्चा होगा जिसने उसकी उंगली काट ली थी जब अलेयोशा ने उससे पूछा था कि उसने उसे चोट पहुँचाने के लिए क्या किया था। अब अलेयोशा को लगभग यकीन हो गया था, हालाँकि वह यह नहीं बता सकता था कि क्यों। किसी और विषय के बारे में सोचना राहत की बात थी, और उसने अपने किए गए "शरारत" के बारे में और न सोचने का फैसला किया, और खुद को पछतावे से परेशान न करने का, बल्कि जो करना था वो करने का, चाहे जो भी हो। इस विचार से उसे पूरी तरह से सुकून मिला। दिमित्री के घर की ओर मुड़ते हुए, उसे भूख लगी, और अपने पिता के यहाँ से लाया हुआ ब्रेड का टुकड़ा अपनी जेब से निकालकर उसने खा लिया। इससे उसे ताकत मिली।

दिमित्री घर पर नहीं था। घर के लोग, जिनमें एक बूढ़ा फर्नीचर बनाने वाला भी शामिल था,
उसके बेटे और उसकी बूढ़ी पत्नी ने अलेयोशा को शक की निगाहों से देखा। “वह पिछले तीन रातों से यहाँ नहीं सोया है। शायद वह कहीं चला गया है,” अलेयोशा के लगातार सवालों के जवाब में बूढ़े ने कहा। अलेयोशा समझ गया कि वह निर्देशों के अनुसार ही जवाब दे रहा है। जब उसने पूछा कि क्या वह ग्रुशेंका के यहाँ है या फोमा के यहाँ छिपा हुआ है (अलेयोशा ने जानबूझकर इतनी खुलकर बात की थी), तो तीनों ने उसे हैरानी से देखा। “वे उससे प्यार करते हैं, वे उसकी देखभाल के लिए हर संभव कोशिश कर रहे हैं,” अलेयोशा ने सोचा। “यह अच्छी बात है।”

अंततः उसे लेक स्ट्रीट में वह घर मिल गया। वह एक जर्जर छोटा सा घर था।
एक तरफ धंसा हुआ मकान, जिसकी तीन खिड़कियाँ सड़क की ओर खुलती थीं, और एक कीचड़ भरा आँगन, जिसके बीचोंबीच एक अकेली गाय खड़ी थी। उसने आँगन पार किया और गलियारे में खुलने वाला दरवाज़ा देखा। गलियारे के बाईं ओर घर की बूढ़ी औरत अपनी बूढ़ी बेटी के साथ रहती थी। दोनों बहरी लग रही थीं। कप्तान के बारे में बार-बार पूछने पर, उनमें से एक को आखिरकार समझ आया कि वह उनके किराएदारों के बारे में पूछ रहा है, और उसने गलियारे के पार एक दरवाज़े की ओर इशारा किया। कप्तान का कमरा एक साधारण झोपड़ी जैसा निकला। अलेयोशा ने दरवाज़ा खोलने के लिए लोहे की कुंडी पर हाथ रखा ही था कि अंदर की अजीब खामोशी ने उसे चौंका दिया। फिर भी वह कैटेरिना इवानोव्ना के शब्दों से जानता

था कि उस आदमी का परिवार है। "या तो वे सब सो रहे हैं या शायद उन्होंने मुझे आते हुए सुन लिया है और मेरे दरवाज़ा खोलने का इंतज़ार कर रहे हैं। मुझे पहले दस्तक देनी चाहिए," और उसने दस्तक दी। जवाब आया, लेकिन तुरंत नहीं, शायद दस सेकंड के अंतराल के बाद।
किसी ने ऊँची और बहुत गुस्से वाली आवाज़ में पूछा, “वहाँ कौन है?” तभी अलेयोशा ने दरवाज़ा खोला और दहलीज पार की। उसने देखा कि
वह एक साधारण किसान के कमरे में था। कमरा बड़ा तो था, लेकिन उसमें तरह-तरह के घरेलू सामान भरे पड़े थे और कई लोग उसमें मौजूद थे। बाईं ओर एक बड़ा रूसी चूल्हा था। चूल्हे से बाईं ओर की खिड़की तक एक रस्सी कमरे के आर-पार जा रही थी, जिस पर चिथड़े लटके हुए थे। दाईं और बाईं ओर, दोनों तरफ दीवार से सटा हुआ पलंग था, जिस पर बुनी हुई रजाई बिछी हुई थी। बाईं ओर वाले पलंग पर प्रिंटेड कवर वाले चार तकियों का एक पिरामिडनुमा ढेर था, हर तकिया पिछले वाले से छोटा था। दूसरे पलंग पर सिर्फ एक बहुत छोटा तकिया था। सामने वाला कोना एक पर्दे या रस्सी पर लटकी चादर से ढका हुआ था। इस पर्दे के पीछे एक बेंच और कुर्सी पर बना हुआ पलंग दिखाई दे रहा था। सादी लकड़ी की खुरदरी चौकोर मेज को बीच वाली खिड़की के पास रख दिया गया था। तीनों खिड़कियाँ, जिनमें से प्रत्येक में हरे रंग के चार छोटे-छोटे फफूंदी लगे शीशे थे, बहुत कम रोशनी दे रही थीं और बंद थीं, इसलिए कमरा बहुत रोशन नहीं था और काफी घुटन भरा था। मेज पर एक कड़ाही में तले हुए अंडों के कुछ अवशेष, आधी खाई हुई रोटी का एक टुकड़ा और वोदका की कुछ बूंदों वाली एक छोटी बोतल रखी थी।
एक शालीन दिखने वाली महिला, सूती गाउन पहने हुए, बैठी हुई थी।
बाईं ओर पलंग के पास एक कुर्सी थी। उसका चेहरा पतला और पीला था, और उसके पिचके गाल पहली नज़र में ही बता रहे थे कि वह बीमार है। लेकिन अलेयोशा को सबसे ज़्यादा प्रभावित करने वाली बात उस गरीब औरत की आँखों का भाव था—आश्चर्य और जिज्ञासा का भाव, फिर भी अभिमान का भाव। और जब वह उसके पति से बात कर रहा था, तो उसकी बड़ी भूरी आँखें उसी अभिमान और प्रश्नवाचक भाव से एक वक्ता से दूसरे वक्ता की ओर घूम रही थीं। उसके बगल में खिड़की के पास एक युवती खड़ी थी, जो दिखने में साधारण थी, उसके बाल कम थे, लाल रंग के थे, उसने सादे कपड़े पहने थे लेकिन बहुत ही साफ-सुथरे ढंग से। अलेयोशा के अंदर आते ही उसने उसे तिरस्कार भरी नज़रों से देखा। दूसरे पलंग के पास एक और महिला बैठी थी। वह बहुत दयनीय दिख रही थी, लगभग बीस साल की एक युवती, लेकिन कुबड़ी और अपाहिज, "सूखे पैरों वाली," जैसा कि अलेयोशा को बाद में बताया गया। उसकी बैसाखियाँ पास ही कोने में रखी थीं। इस गरीब लड़की की बेहद खूबसूरत और कोमल आँखें सौम्य भाव से अलेयोशा को देख रही थीं।
पैंतालीस साल का एक आदमी मेज पर बैठा था, तले हुए अंडे खा रहा था। वह दुबला-पतला, छोटा और कमज़ोर शरीर वाला था। उसके बाल लाल रंग के थे और दाढ़ी हल्की और घनी थी, बिल्कुल रूई के टुकड़े जैसी (यह तुलना और "रूई का टुकड़ा" वाक्यांश किसी कारण से अलेयोशा के दिमाग में कौंध गया, उसे बाद में याद आया)। ज़ाहिर है, इसी सज्जन ने उसे आवाज़ दी थी, क्योंकि कमरे में कोई और आदमी नहीं था। लेकिन जब अलेयोशा अंदर गया, तो वह जिस बेंच पर बैठा था, उससे उछल पड़ा और फटे हुए रुमाल से जल्दी से अपना मुँह पोंछकर अलेयोशा की ओर दौड़ पड़ा।
“यह एक भिक्षु है जो मठ के लिए भीख मांगने आया है। आने के लिए एक अच्छी जगह है!”
बाएं कोने में खड़ी लड़की ने जोर से कहा। वह आदमी तुरंत उसकी ओर घूमा और उत्तेजित व कांपती हुई आवाज में जवाब दिया:
“नहीं, वरवारा, तुम गलत हो। मुझे पूछने दो,” वह फिर से मुड़ा।
अलेयोशा, "आप हमारे इस धार्मिक अनुष्ठान में क्यों आए हैं?"
अलेयोशा ने उसे ध्यान से देखा। वह उसे पहली बार देख रहा था।
उसके चेहरे पर एक अजीब सी बेचैनी, घबराहट और चिड़चिड़ाहट झलक रही थी। हालांकि उसने अभी-अभी शराब पी थी, पर वह नशे में धुत नहीं था। उसके चेहरे पर असाधारण धृष्टता थी, और फिर भी, अजीब बात है, उसी समय डर भी झलक रहा था। वह ऐसे व्यक्ति जैसा लग रहा था जिसे लंबे समय तक अधीन रखा गया था और उसने इसे स्वीकार कर लिया था, और अब अचानक पलटकर खुद को साबित करने की कोशिश कर रहा था। या, बेहतर कहें तो, ऐसे व्यक्ति जैसा जो आपको बुरी तरह मारना चाहता है लेकिन बुरी तरह डरा हुआ है कि आप उसे मार देंगे। उसके शब्दों और उसकी तीखी आवाज के लहजे में एक तरह का

अजीबोगरीब हास्य था, कभी द्वेषपूर्ण तो कभी चापलूसी भरा, और लगातार एक स्वर से दूसरे स्वर में बदलता रहता था। "हमारी वापसी" के बारे में सवाल उसने कांपते हुए, आंखें घुमाते हुए और अलेयोशा के इतने करीब आकर पूछा कि अलेयोशा सहज रूप से एक कदम पीछे हट गया। उसने एक बहुत ही जर्जर, गहरे रंग का सूती कोट पहना हुआ था, जिस पर पैबंद लगे थे और धब्बे थे। उसने बेहद हल्के रंग की, फैशन से बाहर हो चुकी, और बहुत पतले कपड़े की चेक वाली पतलून पहनी हुई थी। वे इतने सिकुड़े हुए और इतने छोटे थे कि वह एक लड़के की तरह दिख रहा था मानो वह उनसे बड़ा हो गया हो।
“मैं एलेक्सी करामाज़ोव हूँ,” अलेयोशा ने जवाब देना शुरू किया। “मैं यह अच्छी तरह समझता हूँ, महोदय,” उस सज्जन ने तुरंत कहा।
उन्हें आश्वस्त करें कि वे पहले से ही जानते हैं कि वे कौन हैं। "मैं कैप्टन स्नेगिरिओव हूँ, महोदय, लेकिन मैं अब भी यह जानना चाहता हूँ कि वास्तव में आपको यहाँ तक लाने का कारण क्या है—"
“ओह, मैं कोई खास काम से नहीं आया हूँ। मैं आपसे थोड़ी बात करना चाहता था—”
अगर आप मुझे अनुमति दें तो।"
“तो फिर, ये लीजिए, महोदय; कृपया बैठ जाइए। वे इसी का इस्तेमाल करते थे।”
पुराने हास्य नाटकों में कहते थे, 'कृपया बैठ जाइए', और उन्होंने फुर्ती से एक खाली कुर्सी (यह खुरदरी लकड़ी की कुर्सी थी, गद्देदार नहीं) उठाई और उसे कमरे के लगभग बीच में उनके लिए रख दिया; फिर, अपने लिए एक और वैसी ही कुर्सी लेकर, वे अलेयोशा के सामने बैठ गए, इतने करीब कि उनके घुटने लगभग छू रहे थे।
“निकोले इल्यिच स्नेगिरिओव महोदय, जो पूर्व में रूसी सेना में कप्तान थे”
पैदल सेना में, अपनी बुराइयों के कारण शर्मिंदा हुआ, लेकिन फिर भी कप्तान बना रहा। हालाँकि अब मैं अपनी बोलने की शैली के कारण कप्तान नहीं हूँ; अपने जीवन के पिछले आधे हिस्से में मैंने 'सर' कहना सीख लिया है। यह एक ऐसा शब्द है जिसका प्रयोग तब किया जाता है जब आपका रुतबा गिर चुका हो।
“यह बिल्कुल सही है,” अलेयोशा मुस्कुराते हुए बोला। “लेकिन क्या इसका इस्तेमाल अनैच्छिक रूप से होता है या जानबूझकर?”
उद्देश्य?"
“भगवान की कसम, यह अनैच्छिक है, और मैं इसका इस्तेमाल नहीं करता था! मैं इसका इस्तेमाल नहीं करता था।”
मैंने जीवन भर ‘सर’ शब्द का प्रयोग किया, लेकिन जैसे ही मैं मुश्किल दौर से गुज़रा, मैंने ‘सर’ कहना शुरू कर दिया। यह किसी उच्च शक्ति का कार्य है। मैं समझता हूँ कि आप समकालीन प्रश्नों में रुचि रखते हैं, लेकिन मैं आपकी जिज्ञासा कैसे जगा सकता हूँ, जबकि मैं ऐसे परिवेश में रहता हूँ जहाँ आतिथ्य सत्कार करना असंभव है?
मैं इसी काम के सिलसिले में आया हूँ।
“किस काम के बारे में?” कप्तान ने अधीरता से बीच में ही टोकते हुए कहा। “मेरे भाई दिमित्री फ्योदोरोविच के साथ आपकी मुलाकात के बारे में,” अलेयोशा ने कहा।
असहजता से बोल दिया।
“कौन सी मीटिंग, महोदय? आपका मतलब उस मीटिंग से तो नहीं है? मेरी ‘थोड़ी सी’ के बारे में
तो फिर, 'टो'?" वह इतना करीब आ गया कि उसके घुटने अलेयोशा से टकराने लगे। उसके होंठ अजीब तरह से एक धागे की तरह सिकुड़े हुए थे।
“यह रुई का पतला सा टुकड़ा क्या है?” अलेयोशा ने बुदबुदाते हुए कहा।
“पिताजी!” एक जानी-पहचानी आवाज़ ने कहा।
अलेयोशा—पर्दे के पीछे से स्कूली लड़के की आवाज़ आई। “मैंने अभी उसकी उंगली काट ली।” पर्दा हटा और अलेयोशा ने देखा कि उसका हमलावर मूर्तियों के नीचे कोने में रखी बेंच और कुर्सी पर बने छोटे से पलंग पर लेटा हुआ था। लड़का अपने कोट और एक पुराने गद्देदार रजाई से ढका हुआ था। वह स्पष्ट रूप से अस्वस्थ था और उसकी चमकती आँखों को देखकर लग रहा था कि उसे बुखार है। उसने अलेयोशा को निडर होकर देखा, मानो वह अपने घर में हो और उसे कोई छू न सके।
“क्या! क्या उसने तुम्हारी उंगली काट ली?” कप्तान अपनी कुर्सी से उछल पड़ा।

"क्या उसने तुम्हारी उंगली काटी थी?"
“हाँ। वह दूसरे स्कूली लड़कों के साथ पत्थर फेंक रहा था। उनमें से छह थे।”
उन्हें अकेले उसके खिलाफ खड़ा कर दिया। मैं उसके पास गया, और उसने मुझ पर एक पत्थर फेंका और फिर दूसरा मेरे सिर पर। मैंने उससे पूछा कि मैंने उसका क्या बिगाड़ा है। और फिर वह मुझ पर झपटा और मेरी उंगली बुरी तरह काट ली, मुझे नहीं पता क्यों।
“मैं उसे अभी इसी वक्त पीटूँगा, साहब!” कप्तान उछलकर खड़ा हो गया।
उसकी सीट।
लेकिन मैं बिल्कुल भी शिकायत नहीं कर रहा हूँ, मैं बस आपको बता रहा हूँ... मुझे नहीं लगता
मैं चाहता हूं कि उसकी पिटाई हो। इसके अलावा, वह बीमार भी लग रहा है।
“और क्या तुम्हें लगता है कि मैं उसे पीटूँगा? कि मैं अपने इलुशा को लेकर उसे पीटूँगा?
“क्या आप चाहते हैं कि मैं उसे आपके सामने आपकी संतुष्टि के लिए पेश करूँ? क्या आप इसे तुरंत करवाना चाहते हैं, महोदय?” कप्तान ने अचानक अलेयोशा की ओर मुड़ते हुए कहा, मानो वह उस पर हमला करने वाला हो। “मुझे आपकी उंगली के लिए खेद है, महोदय; लेकिन इलुशा को पीटने के बजाय, क्या आप चाहते हैं कि मैं अपनी चार उंगलियाँ इस चाकू से आपकी आँखों के सामने काट दूँ ताकि आपका उचित क्रोध शांत हो सके? मुझे लगता है कि चार उंगलियाँ आपके प्रतिशोध की प्यास बुझाने के लिए काफी होंगी। क्या आप पाँचवीं उंगली भी नहीं माँगेंगे?” वह गले में अटकन के साथ रुक गया। उसके चेहरे के सभी भाव फड़क रहे थे; वह बेहद विद्रोही लग रहा था। वह एक तरह के उन्माद में था।
“मुझे लगता है कि अब मैं सब कुछ समझ गया हूँ,” अलेयोशा ने कोमल और उदास स्वर में कहा।
अपनी सीट पर बैठे-बैठे ही उन्होंने कहा, “तो आपका बेटा अच्छा लड़का है, वह अपने पिता से प्यार करता है, और उसने मुझ पर हमला इसलिए किया क्योंकि मैं आपके हमलावर का भाई हूँ... अब मुझे समझ आया,” उन्होंने सोच-विचार करते हुए दोहराया। “लेकिन मेरे भाई दिमित्री फ्योदोरोविच को अपने किए पर पछतावा है, मैं यह जानता हूँ, और अगर उनके लिए आपके पास आना संभव हो, या उससे भी बेहतर, उसी जगह पर आपसे मिलना संभव हो, तो वह सबके सामने आपसे क्षमा मांगेंगे—अगर आप चाहें तो।”
"दाढ़ी नोचने के बाद, तुम्हारा मतलब है कि वह मुझसे माफी मांगेगा?"
और उसे लगता है कि यह एक संतोषजनक अंत होगा, है ना?
“अरे नहीं! इसके विपरीत, वह आपकी हर इच्छा पूरी करेगा और हर तरह से करेगा।”
आप चाहते हैं।"
तो अगर मैं महामहिम से कहूँ कि वे मेरे सामने घुटने टेक दें तो...
क्या वह ऐसा उसी सराय में करता था—जिसे ‘द मेट्रोपोलिस’ कहा जाता है—या फिर बाज़ार में?
"हां, वह घुटनों के बल भी बैठ जाता था।"
“आपने मेरे दिल को झकझोर दिया है, महोदय। मुझे रुला दिया और अंदर तक झकझोर दिया।”
मुझे दिल से नमस्कार! मैं आपके भाई की उदारता को भलीभांति समझता हूँ। मुझे अपने परिवार से मिलवाने दीजिए, मेरी दो बेटियाँ और मेरा बेटा— मेरे बच्चे। अगर मैं मर जाऊँ, तो उनकी देखभाल कौन करेगा, और जब तक मैं जीवित हूँ, मेरे जैसे अभागे की देखभाल उनके सिवा कौन करेगा? यह तो प्रभु ने मेरे जैसे हर इंसान के लिए बड़ी बात तय की है, महोदय। क्योंकि कोई न कोई तो ऐसा होगा जो मुझ जैसे इंसान से भी प्यार कर सके।
“अरे, ये तो बिलकुल सच है!” अलेयोशा ने कहा। “अरे, ये बेवकूफी करना बंद करो! कोई बेवकूफ आता है, और तुम हमें
"शर्म की बात है!" खिड़की के पास खड़ी लड़की ने अचानक अपने पिता की ओर तिरस्कारपूर्ण और घृणास्पद भाव से मुड़ते हुए कहा।
“थोड़ा रुको, वरवारा!” उसके पिता ने कठोर स्वर में कहा, लेकिन
उसे काफी प्रशंसा भरी नजरों से देखते हुए, उसने अलेयोशा से फिर कहा, "यही तो उसका स्वभाव है।"
और समस्त प्रकृति में कुछ भी नहीं था
इससे उसे अच्छा लग सकता है।

या यूँ कहें कि स्त्रीत्व में: जो उनकी नज़रों में भा सकता था। लेकिन अब मैं आपको अपनी पत्नी, अरिना पेट्रोवना से मिलवाता हूँ। वह विकलांग हैं, उनकी उम्र तैंतालीस वर्ष है; वह चल तो सकती हैं, लेकिन बहुत कम। वह साधारण परिवार से हैं। अरिना पेट्रोवना, अपने चेहरे पर भाव लाओ। यह एलेक्सी फ्योदोरोविच करामाज़ोव हैं। उठो, एलेक्सी फ्योदोरोविच।" उन्होंने उनका हाथ पकड़ा और अप्रत्याशित बल से उन्हें ऊपर खींच लिया। "आपको एक महिला से परिचय कराने के लिए खड़ा होना होगा। यह करामाज़ोव नहीं हैं, माँ, जो... हम्म... इत्यादि, बल्कि उनके भाई हैं, जो विनम्रता से परिपूर्ण हैं। आओ, अरिना पेट्रोवना, आओ, माँ, पहले तुम्हारा हाथ चूमने दो।"
और उसने आदरपूर्वक और कोमलता से अपनी पत्नी के हाथ को चूमा।
खिड़की से मुंह फेरकर महिला ने गुस्से से उस दृश्य को अनदेखा कर दिया; अभिमानी ढंग से जिज्ञासु दिख रही महिला के चेहरे पर असाधारण सौहार्द का भाव आ गया।
"सुप्रभात! बैठ जाइए, श्रीमान चेर्नोमाज़ोव," उसने कहा। "करामाज़ोव, माँ, करामाज़ोव (हम साधारण परिवार से हैं)," उसने फिर फुसफुसाते हुए कहा।
"खैर, करामाज़ोव, या जो भी हो, लेकिन मैं हमेशा यही सोचता हूँ कि..."
चेर्नोमाज़ोव... बैठ जाओ। उसने तुम्हें क्यों उठाया है? वह मुझे अपाहिज कहता है, पर मैं अपाहिज नहीं हूँ, बस मेरी टांगें बैरल की तरह सूजी हुई हैं और मैं खुद सिकुड़ गया हूँ। एक समय मैं बहुत मोटा हुआ करता था, पर अब ऐसा लगता है जैसे मैंने सुई निगल ली हो।
"हम साधारण परिवार से हैं," कप्तान ने फिर बुदबुदाया। "ओह, पिताजी, पिताजी!" कुबड़ी लड़की, जो तब तक चुप थी, ने कहा।
उसने अचानक कहा, "अपनी कुर्सी पर बैठो," और उसने अपने रूमाल से अपनी आँखें छुपा लीं।
खिड़की पर खड़ी लड़की ने झल्लाकर कहा, "मूर्ख!" माँ ने अपनी बेटियों की ओर इशारा करते हुए कहा, "क्या तुमने हमारी खबर सुनी है?"
"यह ऐसा है जैसे बादल छा जाते हैं; बादल छंट जाते हैं और फिर से संगीत सुनाई देता है। जब हम सेना में थे, तब हमारे यहाँ ऐसे कई मेहमान आते थे। मैं किसी की तुलना नहीं कर रहा; सबकी अपनी-अपनी पसंद होती है। तब पादरी की पत्नी आती और कहती, 'अलेक्जेंडर अलेक्जेंड्रोविच तो नेक दिल इंसान हैं, लेकिन नास्तास्या पेट्रोवना,' वह कहतीं, 'नरक की औलाद है।' 'खैर,' मैंने कहा, 'यह तो पसंद की बात है; लेकिन तुम तो बहुत तेजतर्रार हो।' 'और तुम्हें अपनी औकात में रखने की ज़रूरत है,' वह बोली। 'अरे काली तलवार,' मैंने कहा, 'तुम्हें किसने मुझे सिखाने के लिए कहा?' 'लेकिन मेरी साँस,' वह बोली, 'साफ़ है, और तुम्हारी गंदी।' 'आप सभी अधिकारियों से पूछिए कि क्या मेरी सांस में बदबू है।' और तब से यह बात मेरे मन में बैठी हुई है। कुछ समय पहले मैं यहीं बैठी थी, जैसे अभी बैठी हूँ, तभी मैंने उसी जनरल को आते देखा जो ईस्टर के लिए यहाँ आया था, और मैंने उससे पूछा: 'महामहिम,' मैंने कहा, 'क्या किसी महिला की सांस से बदबू आ सकती है?' 'हाँ,' उसने उत्तर दिया; 'आपको खिड़की का शीशा या दरवाजा खोल देना चाहिए, क्योंकि यहाँ हवा ताज़ी नहीं है।' और वे सब यही कहते रहते हैं! और मेरी सांस से उन्हें क्या लेना-देना? मरे हुए लोगों की बदबू तो इससे भी बदतर होती है! 'मैं हवा को खराब नहीं करूँगी,' मैंने कहा, 'मैं चप्पलें मंगवाकर चली जाऊँगी।' मेरे प्यारे बच्चों, अपनी माँ को दोष मत दो! निकोले इलिच, मैं तुम्हें खुश क्यों नहीं कर सकती? केवल इलुशा ही है जो स्कूल से घर आता है और मुझसे प्यार करता है। कल वह मेरे लिए एक सेब लाया था। अपनी माँ को माफ कर दो—एक बेचारी अकेली प्राणी को माफ कर दो! मेरी सांस तुम्हें अप्रिय क्यों लगने लगी है?
और बेचारी पागल औरत फूट-फूट कर रोने लगी, और उसकी आँखों से आँसू बहने लगे।
गाल। कप्तान उसकी ओर दौड़ी।
"माँ, माँ, मेरी प्यारी, छोड़ दो! तुम अकेली नहीं हो। हर कोई
"तुम्हें प्यार करता है, हर कोई तुम्हें प्यार करता है।" वह फिर से उसके दोनों हाथों को चूमने लगा और कोमलता से उसके चेहरे को सहलाने लगा; खाने का नैपकिन लेकर वह उसके आँसू पोंछने लगा। अलेयोशा को लगा जैसे उसकी आँखों में भी आँसू आ गए हों। "देखो, समझे?" वह गुस्से से अलेयोशा की ओर मुड़ा और उस बेचारे मूर्ख की ओर इशारा किया।
"मैं देख और सुन सकता हूँ," अलेयोशा ने बुदबुदाते हुए कहा।
"पिताजी, पिताजी, आप उसके साथ ऐसा कैसे कर सकते हैं! उसे अकेला छोड़ दो!" लड़के ने रोते हुए कहा।

वह अपने बिस्तर पर उठकर बैठ गया और चमकती आंखों से अपने पिता को निहारने लगा।
"बेवकूफी करना और अपनी मूर्खतापूर्ण हरकतों का प्रदर्शन करना बंद करो, जिनसे कभी कोई लाभ नहीं होता।"
“कुछ भी!” वरवारा ने जोश में पैर पटकते हुए चिल्लाया।
“वरवारा, इस बार तुम्हारा गुस्सा बिलकुल जायज़ है, और मैं जल्दी से जल्दी...”
आपको संतुष्ट करूँ। आइए, एलेक्सी फ्योदोरोविच, आप अपनी टोपी पहन लीजिए, मैं भी अपनी पहन लेता हूँ। हम बाहर चलते हैं। मुझे आपसे एक ज़रूरी बात कहनी है, लेकिन इन दीवारों के भीतर नहीं। यहाँ बैठी यह लड़की मेरी बेटी नीना है; मैं आपको उससे मिलवाना भूल गया था। वह साक्षात स्वर्गदूत है... जो हम मनुष्यों के पास आई है... अगर आप समझ सकें तो।
“वह तो पूरी तरह कांप रहा है, मानो उसे दौरे पड़ रहे हों!” वरवारा
उसने आक्रोशपूर्वक बोलना जारी रखा।
और अभी-अभी वो मेरे ऊपर पैर पटक रही थी और मुझे मूर्ख कह रही थी।
वह भी साक्षात देवदूत हैं, और मुझे ऐसा कहने का उनके पास उचित कारण है। चलो, एलेक्सी फ्योदोरोविच, हमें इस सफर को खत्म करना होगा।
और, अलेयोशा का हाथ पकड़कर, वह उसे कमरे से बाहर खींचकर ले गया।
गली।

अध्याय 7

और खुली हवा में

"हवा तो ताजी है, लेकिन मेरे अपार्टमेंट में ऐसा बिल्कुल भी नहीं है।"
चलिए, धीरे-धीरे चलें, महोदय। आपकी इस रुचि के लिए मैं आभारी रहूंगा।
“मुझे भी आपसे कुछ महत्वपूर्ण कहना है,” अलेयोशा ने कहा।
"बस मुझे यह नहीं पता कि शुरुआत कैसे करूं।"
“निश्चित रूप से आपको मुझसे कोई काम होगा। आप ऐसा कभी नहीं करेंगे।”
बिना किसी उद्देश्य के मेरी ओर देखा। जब तक आप केवल इसलिए नहीं आते कि...
लड़के की शिकायत करना, और इसकी संभावना बहुत कम है। और हाँ, इसके बारे में...
लड़का: मैं तुम्हें अंदर समझा नहीं सका, लेकिन यहाँ मैं उस दृश्य का वर्णन करूँगा।
आपको। मेरी दाढ़ी एक हफ्ते पहले ज़्यादा घनी थी—मेरा मतलब है मेरी दाढ़ी। यही बात है।
मेरी दाढ़ी को वे लोग उपनाम देते हैं, खासकर स्कूली लड़के। खैर, आपका
भाई दिमित्री फ्योदोरोविच मुझे मेरी दाढ़ी से खींच रहे थे, मैंने ऐसा किया था
कुछ नहीं, वह भयंकर गुस्से में था और संयोगवश मेरे सामने आ गया।
मुझे सराय से घसीटकर बाज़ार में ले जाया गया; उसी क्षण
लड़के स्कूल से बाहर आ रहे थे, और उनके साथ इलुशा भी था। जैसे ही उसने देखा
मुझे ऐसी हालत में देखकर वह मेरी ओर दौड़ा। ‘पिताजी,’ वह चिल्लाया, ‘पिताजी!’
उसने मुझे पकड़ लिया, गले लगाया, मुझे छुड़ाने की कोशिश की और रोने लगी।
हमलावर ने कहा, ‘छोड़ दो, छोड़ दो, ये मेरे पिता हैं, इन्हें माफ कर दो!’—हाँ, सचमुच उसने ऐसा किया।
‘उसे माफ कर दो’ कहकर वह चिल्लाया। उसने उस हाथ को, उसी हाथ को, अपनी छोटी सी हथेली में
कसकर पकड़ लिया।
मैंने हाथों से उसे चूमा... मुझे उस पल उसका छोटा सा चेहरा याद है, लेकिन अब नहीं।
मैं इसे भूल गया हूँ और कभी नहीं भूलूंगा!
“मैं कसम खाता हूँ,” अलेयोशा रोते हुए बोला, “कि मेरा भाई अपने सबसे गहरे दिल की बात कहेगा।”
और सच्चे खेद का इजहार करे, भले ही उसे उसी स्थिति में घुटने टेकने पड़ें।
बाजार... मैं उसे मजबूर कर दूंगा वरना वह मेरा भाई नहीं रहेगा!
“अहा, तो यह तो सिर्फ एक सुझाव है! और यह उनकी तरफ से नहीं है, बल्कि
बस आपके उदार और दयालु हृदय से। आपको कहना चाहिए था।
तो। नहीं, उस स्थिति में मुझे आपके भाई के बारे में बताने दीजिए।
वीर सैनिक की उदारता, क्योंकि उन्होंने उस समय इसे व्यक्त किया था।
उसने मेरी दाढ़ी पकड़कर मुझे घसीटना बंद कर दिया और मुझे छोड़ दिया: 'तुम एक हो'
उन्होंने कहा, 'मैं अधिकारी हूं, और मैं एक अधिकारी हूं, अगर आपको कोई अच्छा आदमी मिल जाए तो।'
मुझे अपनी दूसरी चुनौती भेजें। मैं आपको संतुष्टि दूंगा, चाहे आप
'तुम बदमाश हो।' उसने यही कहा। वाकई एक वीर आत्मा! मैं सेवानिवृत्त हो गया।
इलूशा के साथ, और वह दृश्य परिवार के इतिहास में हमेशा के लिए अंकित हो गया है।
इलूशा की आत्मा। नहीं, कुलीनों के विशेषाधिकारों का दावा करना हमारा अधिकार नहीं है। न्यायाधीश
खुद ही देख लीजिए। आप अभी-अभी हमारे आलीशान घर से आए हैं, आपने वहां क्या देखा?
तीन महिलाएं, जिनमें से एक विकलांग और मंदबुद्धि थी, दूसरी भी विकलांग थी और
कुबड़ा और तीसरी विकलांग नहीं बल्कि बहुत ही होशियार है। वह एक छात्रा है।
पीटर्सबर्ग वापस जाने और मुक्ति के लिए काम करने के लिए बेताब।
नेवा नदी के किनारे एक रूसी महिला। मैं इलुशा के बारे में बात नहीं करूँगा, वह...
केवल नौ। मैं दुनिया में अकेला हूँ, और अगर मैं मर गया, तो बाकी सबका क्या होगा?

उनसे? मैं आपसे बस यही पूछता हूँ। और अगर मैं उसे चुनौती देता हूँ और वह मुझे मार डालता है तो...
फिर क्या होगा? उनका क्या होगा? और इससे भी बुरा, अगर वह ऐसा नहीं करता है तो क्या होगा?
मुझे मार डालो, लेकिन सिर्फ अपाहिज कर दो: मैं काम नहीं कर सकता, लेकिन फिर भी मुझे बोलना चाहिए।
खिलाने के लिए। इसे कौन खिलाएगा और इन सबको कौन खिलाएगा? क्या मुझे ही खिलाना पड़ेगा?
इलूशा को स्कूल से निकाल कर सड़कों पर भीख मांगने के लिए भेज देना? यही तो बात है।
इसका मतलब है कि मैं उसे द्वंद्वयुद्ध के लिए चुनौती दूं। यह सरासर बेतुकी बात है और कुछ नहीं।
वह आपसे क्षमा मांगेगा, वह आपके चरणों में गिरकर माफी मांगेगा।
“बाजार के बीचोंबीच,” अलेयोशा ने चमकती आँखों से फिर से कहा।
“मैंने उस पर मुकदमा चलाने के बारे में सोचा था,” कप्तान ने आगे कहा, “लेकिन ज़रा सोचिए...”
हमारे कोड के अनुसार, क्या मुझे व्यक्तिगत चोट के लिए पर्याप्त मुआवजा मिल सकता है? और फिर
अग्राफेना अलेक्जेंड्रोवना 3 ने मुझे बुलवाया और मुझ पर चिल्लाई: 'हिम्मत मत करना...'
सपने में भी मत सोचो! अगर तुम उसके खिलाफ कार्रवाई करोगे, तो मैं यह बात पूरी दुनिया को बता दूंगा कि
उसने तुम्हारी बेईमानी के लिए तुम्हें पीटा, और फिर तुम पर मुकदमा चलाया जाएगा।' मैं कहता हूँ
ईश्वर साक्षी है, जिसकी बेईमानी थी और जिसके आदेशों का मैंने पालन किया।
क्या यह अभिनय उनके और फ्योदोर पावलोविच के द्वारा नहीं किया गया था? 'और तो और,'
उसने आगे कहा, 'मैं तुम्हें हमेशा के लिए बर्खास्त कर दूंगी और तुम फिर कभी कोई कमाई नहीं कर
पाओगे।'
मेरी तरफ से एक पैसा भी नहीं। मैं अपने व्यापारी से भी बात करूँगी (वह उसे इसी नाम से पुकारती है)।
बूढ़ा आदमी) ‘और वह तुम्हें निकाल देगा!’ और अगर वह मुझे निकाल देता है, तो मैं क्या कर सकता हूँ?
तो फिर किसी से कमाऊं? आपके लिए मुझे बस इन्हीं दो पर निर्भर रहना है।
फ्योडोर पावलोविच ने न केवल मुझे नौकरी देने से मना कर दिया है, बल्कि किसी और के लिए भी ऐसा ही
किया है।
कारण तो है, लेकिन उसका इरादा मेरे द्वारा हस्ताक्षरित कागजातों का इस्तेमाल करके कानूनी कार्यवाही
करने का है।
मेरे खिलाफ। इसलिए मैं चुप रहा, और आपने हमारी वापसी देखी है। लेकिन अब चलो
मैं आपसे पूछना चाहता हूँ: क्या इलुशा ने आपकी उंगली को बहुत चोट पहुँचाई? मैं इस बारे में विस्तार से बात
नहीं करना चाहता।
हमारा महल उनके सामने है।"
“हाँ, बिलकुल, और वह बहुत गुस्से में था। वह तुम्हारा बदला ले रहा था।”
मुझे करामाज़ोव के रूप में देखा जा रहा है, अब मुझे यह समझ आ रहा है। लेकिन काश आपने देखा होता
कि वह कैसे
वह अपने सहपाठियों पर पत्थर फेंक रहा था! यह बहुत खतरनाक है। वे शायद
उसे मार डालो। वे बच्चे और मूर्ख हैं। एक पत्थर फेंका जा सकता है और टूट सकता है।
किसी का सिर।
“बस यही हुआ है। उसे पत्थर लगने से चोट आई है।”
दिन। सिर पर नहीं, बल्कि छाती पर, दिल के ठीक ऊपर। वह घर आ गया।
वह रोता-बिलखता रहा और अब बीमार भी है।
और आप जानते हैं कि वह पहले उन पर हमला करता है। वह उनके प्रति द्वेष रखता है।
आपका खाता। उनका कहना है कि उसने क्रासोटकिन नाम के एक लड़के को चाकू मारा था।
कुछ समय पहले तक पेननाइफ का इस्तेमाल होता था।
मैंने भी इसके बारे में सुना है, यह खतरनाक है। क्रासोटकिन एक अधिकारी हैं।
यहां हमें इसके बारे में और अधिक जानकारी मिल सकती है।"
“मैं आपको सलाह दूंगा,” अलोशा ने गर्मजोशी से आगे कहा, “कि आप उसे न भेजें।”
जब तक वह शांत नहीं हो जाता और उसका गुस्सा थम नहीं जाता, तब तक उसे कुछ समय के लिए स्कूल से
पूरी तरह से दूर रखें..."

“गुस्सा!” कप्तान ने दोहराया, “बस यही बात है। वह थोड़ा सा
यह एक प्राणी है, लेकिन इसका क्रोध बहुत प्रचंड है। आप सब कुछ नहीं जानते, महोदय। मुझे बताने दीजिए।
और भी। उस घटना के बाद से सभी लड़के उसे चिढ़ाते रहते हैं।
‘सूअर के तिनके का टुकड़ा।’ स्कूली बच्चे एक निर्दयी नस्ल हैं, व्यक्तिगत रूप से वे
वे देवदूत जैसे होते हैं, लेकिन साथ मिलकर, खासकर स्कूलों में, वे अक्सर निर्दयी हो जाते हैं।
मज़ाक उड़ाने से इलुशा में एक साहसी भावना जागृत हो गई है। एक साधारण लड़का, एक कमज़ोर
पुत्र, उसे समर्पण कर देना चाहिए था, उसे अपने पिता पर शर्म आनी चाहिए थी, महोदय, लेकिन वह
वह उन सबके खिलाफ अपने पिता के लिए खड़ा हुआ। अपने पिता के लिए, सच्चाई के लिए और
न्याय। उस पीड़ा के लिए जो उसने तुम्हारे भाई के हाथ चूमते और रोते हुए सहन की।
उसके लिए ‘पिताजी क्षमा करें, उसे क्षमा करें’—यह तो केवल ईश्वर ही जानता है—और मैं, उसका
पिता। हमारे बच्चों के लिए—आपके बच्चों के लिए नहीं, बल्कि हमारे बच्चों के लिए—उन लोगों के बच्चों के
लिए जो...
सभी लोग उन बेचारे सज्जनों को नीचा समझते हैं—क्या न्याय है ये?
मतलब, महोदय, नौ साल की उम्र में भी। अमीरों को कैसे पता चलेगा? उन्हें तो पता ही नहीं।
जीवन में एक बार ही वे इतनी गहराई का अनुभव कर पाते हैं। लेकिन उस क्षण चौक पर,
जब उसने उसका हाथ चूमा, उसी क्षण मेरी इलुशा ने सब कुछ समझ लिया।
न्याय का अर्थ है। वह सत्य उसके भीतर प्रवेश कर गया और उसे हमेशा के लिए कुचल दिया, महोदय।
कप्तान ने फिर से उग्र स्वर में, मानो उन्माद में, कहा और उसने अपना दाहिना हाथ मारा।
उसने अपनी बाईं हथेली पर मुट्ठी रखी, मानो वह यह दिखाना चाहता हो कि "सत्य" क्या है।
इलूशा बुरी तरह कुचल गया। “उसी दिन, महोदय, उसे बुखार हो गया और वह बेहोश हो गया।”
पूरी रात। उस दिन उसने मुझसे मुश्किल से एक शब्द भी कहा, लेकिन मैंने देखा कि वह लगातार मुझसे बात
करता रहा।
वह कोने से मुझे देख रहा था, हालाँकि वह खिड़की की ओर मुड़ गया और
वह सीखने का नाटक कर रहा था। लेकिन मैं देख सकता था कि उसका ध्यान कहीं और था।
उनके सबक। अगले दिन मैं अपनी परेशानियों को भुलाने के लिए शराब पी गया, मैं पापी इंसान हूँ।
और मुझे ज्यादा कुछ याद नहीं है। माँ भी रोने लगीं—मैं बहुत स्नेही हूँ।
माँ की बात करें तो—मैंने अपनी सारी दौलत अपनी परेशानियों को भुलाने में खर्च कर दी। मत करो
इसके लिए मुझे तिरस्कृत करें, महोदय, रूस में शराब पीने वाले पुरुष सबसे अच्छे होते हैं। सबसे अच्छे।
हममें से पुरुष सबसे बड़े शराबी हैं। मैं लेट जाता हूँ और मुझे कुछ नहीं होता।
मुझे इलूशा याद है, हालाँकि उस पूरे दिन लड़के उसका मज़ाक उड़ा रहे थे।
उसे स्कूल में। 'अरे, तेरे पिता को स्कूल से बाहर निकाल लिया गया था,' वे चिल्लाए, 'तेरे पिता को स्कूल से
बाहर निकाल लिया गया था।'
उसके सूती कपड़े के टुकड़े के पास सराय में, तुम दौड़कर गए और माफी मांगी।
“तीसरे दिन जब वह स्कूल से लौटा, तो मैंने देखा कि वह कैसा दिख रहा था।
पीला और दयनीय। 'क्या हुआ?' मैंने पूछा। उसने जवाब नहीं दिया। खैर,
हमारे घर में मम्मी और बेटियों की मौजूदगी के बिना कोई बात नहीं होती।
इसमें। इतना ही नहीं, लड़कियों को इसके बारे में पहले ही दिन पता चल गया था। वरवारा
वह गुर्राने लगा था। 'तुम मूर्ख और मसखरे हो, क्या तुम कभी कुछ कर सकते हो?'
'तर्कसंगत?' 'बिल्कुल,' मैंने कहा, 'क्या हम कभी कुछ तर्कसंगत कर सकते हैं?'
मैंने इसे पहली बार इस तरह बंद किया था। इसलिए शाम को मैं लड़के को बाहर ले गया।
टहलना, क्योंकि आपको पता ही होगा कि हम हर शाम टहलने जाते हैं, हमेशा की तरह।
जिस रास्ते पर हम अभी चल रहे हैं—हमारे द्वार से उस विशाल पत्थर तक
जो सड़क पर अकेले पड़ा है, उस बाधा के नीचे, जो शुरुआत का प्रतीक है।
कस्बे के चारागाह का। एक सुंदर और एकांत स्थान, महोदय। इलुशा और मैं चले।
हमेशा की तरह हाथ में हाथ डाले चल रहे थे। उसका हाथ छोटा है, उंगलियां पतली हैं और

सर्दी-जुकाम—उसे सीने में दर्द रहता है, तुम्हें पता है। 'पिताजी,' उसने कहा, 'पिताजी!'
'तो?' मैंने कहा। मैंने उसकी आँखों में चमक देखी। 'पिताजी, उसने तब आपके साथ कैसा बर्ताव किया था!'
'इलुशा, अब कुछ नहीं किया जा सकता,' मैंने कहा। 'पिताजी, उसे माफ़ मत कीजिए, माफ़ मत कीजिए।'
उसे! स्कूल में सब कहते हैं कि उसने इसके लिए तुम्हें दस रूबल दिए हैं।' 'नहीं,
मैंने कहा, 'इलुशा, मैं उससे किसी भी कीमत पर पैसे नहीं लूंगा।' फिर उसने
वह पूरी तरह से कांपने लगा, उसने मेरा हाथ अपने दोनों हाथों में लिया और उसे फिर से चूमा।
'पिताजी,' उसने कहा, 'पिताजी, उसे द्वंद्वयुद्ध के लिए चुनौती दीजिए, स्कूल में वे कहते हैं कि आप
तुम कायर हो और उसे चुनौती नहीं दोगे, और तुम दस रूबल स्वीकार कर लोगे।
उससे।' 'मैं उसे द्वंद्वयुद्ध के लिए चुनौती नहीं दे सकता, इलुशा,' मैंने उत्तर दिया। और मैंने बताया
संक्षेप में, जो मैंने अभी आपको बताया है। उसने सुना। 'पिताजी,' उसने कहा, 'खैर...'
इसे माफ मत करना। जब मैं बड़ा हो जाऊंगा तो मैं खुद उसका पर्दाफाश करूंगा और उसे मार डालूंगा।'
आँखें चमक उठीं। और बेशक मैं उसका पिता हूँ, और मुझे अपना योगदान देना ही था।
एक शब्द: 'हत्या करना पाप है,' मैंने कहा, 'यहाँ तक कि द्वंद्वयुद्ध में भी।' 'पिताजी,' उन्होंने कहा, 'जब
मैं बड़ा हो जाऊंगा, मैं उसे गिरा दूंगा, उसके हाथ से तलवार छीन लूंगा, मैं गिर जाऊंगा।
उस पर अपनी तलवार लहराते हुए मैं कहूँगा: "मैं तुम्हें मार सकता था, लेकिन मैं तुम्हें क्षमा करता हूँ।"
तुम, तो बस!"' आप देख सकते हैं कि उसके छोटे से दिमाग ने क्या-क्या सोचा है।
इन दो दिनों के दौरान, वह पूरे दिन उस प्रतिशोध की योजना बना रहा होगा।
और रात में इसके बारे में बढ़-चढ़कर बातें करते रहते हैं।
लेकिन मुझे पता चला कि वह स्कूल से बुरी तरह पिटा हुआ घर आने लगा था।
मैंने परसों इसके बारे में बात की थी, और आप सही हैं, मैं उसे नहीं भेजूंगा।
मैंने सुना है कि वह उस स्कूल में अब और नहीं जाएगा। मैंने सुना है कि वह पूरी कक्षा के खिलाफ खड़ा हो रहा था।
अकेले और उन सभी को चुनौती देते हुए, उसका हृदय आक्रोश से भरा हुआ था,
कड़वाहट—मैं उसके बारे में चिंतित था। हम फिर से टहलने गए। 'पिताजी,'
उसने पूछा, 'क्या अमीर लोग धरती पर किसी और से ज्यादा ताकतवर होते हैं?' 'हाँ,'
मैंने कहा, 'इलुशा, इस धरती पर धनी लोगों से अधिक शक्तिशाली कोई लोग नहीं हैं।'
'पिताजी,' उसने कहा, 'मैं अमीर बनूंगा, मैं एक अधिकारी बनूंगा और विजय प्राप्त करूंगा।'
सभी लोग। ज़ार मुझे इनाम देगा, मैं यहाँ वापस आऊँगा और फिर कुछ नहीं।
कोई हिम्मत करेगा...' फिर वह चुप हो गया और उसके होंठ अब भी कांप रहे थे।
'पिताजी,' उसने कहा, 'यह कितना भयानक शहर है।' 'जी हाँ, इलुशा,' मैंने कहा, 'ऐसा नहीं है।'
'बहुत ही अच्छा शहर है।' 'पिताजी, चलिए किसी दूसरे शहर में चलते हैं, कोई अच्छा शहर हो,' उसने कहा।
उन्होंने कहा, 'जहां लोग हमारे बारे में नहीं जानते।' 'हम आगे बढ़ेंगे, हम आगे बढ़ेंगे।'
मैंने कहा, 'इलुशा, बस मुझे इसके लिए पैसे बचाने होंगे।' मुझे खुशी हुई कि मैं उसकी बात मान सका।
हमने अपने मन को पीड़ादायक विचारों से मुक्त किया और यह सोचने लगे कि हम कैसे आगे बढ़ेंगे।
हम दूसरे शहर में चले जाएंगे, हम घोड़ा और गाड़ी कैसे खरीदेंगे। 'हम रखेंगे'
मां और तुम्हारी बहनें अंदर हैं, हम उन्हें ढक देंगे और हम चलेंगे।
आपको कभी-कभार लिफ्ट मिल जाएगी, और मैं आपके बगल में चलूंगा, क्योंकि हमें जाना ही होगा।
हमें अपने घोड़े की देखभाल करनी होगी, हम सब घुड़सवारी नहीं कर सकते। हम इसी तरह जाएंगे।' वह था
उस विचार से मैं बेहद रोमांचित हो गया, खासकर घोड़े को अपने पास रखने और उसे चलाने के विचार से।
उसे। क्योंकि ज़ाहिर है, एक रूसी लड़का घोड़ों के बीच ही पैदा होता है। हमने खूब बातें कीं।
काफी देर तक। शुक्र है, मैंने सोचा, मैंने उसका ध्यान भटका दिया और उसे दिलासा दिया।
उसे।
"यह परसों की शाम की बात है, लेकिन पिछली रात की।"
सब कुछ बदल गया था। वह सुबह स्कूल गया था, वह वापस आया।
वह बहुत उदास था, बेहद उदास। शाम को मैंने उसका हाथ पकड़ा।

और हम टहलने निकल गए; वह बात नहीं कर रहा था। हवा चल रही थी और
सूरज नहीं था, और शरद ऋतु का आभास हो रहा था; शाम ढल रही थी। हम चलने लगे।
हम दोनों उदास थे। मैंने कहा, 'अच्छा, मेरे बेटे, हमारे इस कार्यक्रम के बारे में क्या ख्याल है?'
'क्या हम यात्रा पर निकल रहे हैं?' मैंने सोचा कि शायद मैं उसे वापस आज की बातचीत पर ले आऊं।
पहले। उसने कोई जवाब नहीं दिया, लेकिन मुझे अपने हाथ में उसकी उंगलियां कांपती हुई महसूस हुईं।
आह, मैं
सोचा, यह एक बुरा काम है; कुछ नया है। हम पत्थर तक पहुँच गए थे।
हम अभी जहां हैं। मैं पत्थर पर बैठ गया। और हवा में बहुत कुछ था।
पतंगें फड़फड़ा रही थीं और चक्कर लगा रही थीं। लगभग तीस पतंगें दिखाई दे रही थीं।
बेशक, यह पतंग उड़ाने का मौसम है। 'देखो, इलुशा,' मैंने कहा, 'अब समय आ गया है कि हम...'
हमने पिछले साल की पतंग फिर से निकाल ली। मैं इसे ठीक कर दूंगा, तुमने इसे कहाँ रख दिया है?
'दूर?' मेरे बेटे ने कोई जवाब नहीं दिया। उसने नज़रें फेर लीं और बगल में मुड़ गया।
मैं। और फिर हवा का एक झोंका आया और रेत उड़ने लगी। वह अचानक मुझ पर गिर पड़ा।
उसने अपनी दोनों छोटी भुजाएँ मेरी गर्दन के चारों ओर लपेट लीं और मुझे कसकर पकड़ लिया। तुम्हें पता है,
जब बच्चे चुप और गर्वित होते हैं, और अपने आँसू रोकने की कोशिश करते हैं
वे बहुत बड़ी मुसीबत में हैं और अचानक टूट जाते हैं, उनके आंसू बहने लगते हैं।
आंसुओं की धाराएँ। उन गर्म आंसुओं की धाराओं से उसने अचानक मेरा चेहरा भिगो दिया।
वह सिसक रहा था और ऐसे कांप रहा था जैसे उसे दौरे पड़ रहे हों, और उसने खुद को सिकोड़ लिया।
जब मैं पत्थर पर बैठा था, तब वह मेरे खिलाफ़ खड़ा था। 'पिताजी,' वह लगातार रोता रहा, 'प्यारे पिताजी,
कैसे?'
उसने तुम्हारा अपमान किया!' और मैं भी फूट-फूटकर रोने लगी। हम एक-दूसरे की बाहों में कांपते हुए बैठे रहे।
मैंने उससे कहा, 'इलुशा, मेरे प्यारे इलुशा।' उस समय हमें किसी ने नहीं देखा। केवल ईश्वर ही हमें देख रहा था।
उन्होंने हमें देखा, मुझे उम्मीद है कि वे इसे मेरे श्रेय के लिए रिकॉर्ड करेंगे। आपको उनका धन्यवाद करना चाहिए।
भाई, एलेक्सी फ्योदोरोविच। नहीं, महोदय, मैं आपके कहने पर अपने बेटे को नहीं पीटूँगा।
संतुष्टि।"
वह अपने पुराने चिड़चिड़े और मसखरेपन वाले लहजे में लौट आया था।
अलोशा को लगा कि वह उस पर भरोसा करता है, और अगर कुछ होता तो
अगर कोई और, यानी अलेयोशा, उसकी जगह होता, तो वह इतनी खुलकर बात नहीं करता।
और उसने वह बात नहीं बताई होती जो उसने अभी बताई थी। इससे अलेयोशा को प्रोत्साहन मिला।
जिसका दिल आंसू बहाने की कगार पर कांप रहा था।
“आह, काश मैं तुम्हारे बेटे से दोस्ती कर पाता!” वह चिल्लाया। “अगर
आप इसका इंतजाम कर सकते हैं—"
“ज़रूर, महोदय,” कप्तान ने बुदबुदाते हुए कहा।
“लेकिन अब कुछ बिल्कुल अलग सुनो!” अलेयोशा ने आगे कहा। “मैं
मेरे पास आपके लिए एक संदेश है। मेरे उसी भाई, दिमित्री ने मेरा अपमान किया है।
उनकी मंगेतर भी एक नेक दिल लड़की थी, जिसके बारे में आपने शायद सुना होगा।
मुझे आपको उसकी गलती के बारे में बताने का अधिकार है; वास्तव में मुझे ऐसा करना चाहिए, क्योंकि
सुनकर
आपके साथ हुए अपमान और आपकी दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति के बारे में सब कुछ जानने के बाद,
उन्होंने मुझे अभी इसी वक्त यह आदेश दिया है कि मैं उनकी ओर से यह मदद आप तक पहुंचाऊं।
लेकिन केवल उसी से, दिमित्री से नहीं, जिसने उसे त्याग दिया है।
मुझसे नहीं, उसके भाई से नहीं, और न ही किसी और से, बल्कि उससे, केवल उससे ही!

वह आपसे उसकी मदद स्वीकार करने की विनती करती है... आप दोनों का अपमान हुआ है।
वही आदमी। उसने तुम्हारे बारे में तभी सोचा जब उसे भी वैसा ही संदेश मिला था।
उससे किया गया अपमान—मेरा मतलब है, क्रूरता में समान। वह बहन की तरह आती है।
मुसीबत में फंसे भाई की मदद करो... उसने मुझसे कहा कि मैं तुम्हें इन्हें लेने के लिए मना लूँ।
उससे दो सौ रूबल, जैसे कि बहन से, यह जानते हुए कि आप
ऐसी आवश्यकता। इसके बारे में किसी को पता नहीं चलेगा, इससे किसी प्रकार की अनुचित बदनामी नहीं हो सकती।
ये रहे दो सौ रूबल, और मैं कसम खाता हूँ कि तुम्हें इन्हें लेना ही होगा, वरना
—जब तक कि पृथ्वी पर सभी मनुष्य शत्रु न हो जाएँ! लेकिन भाई भी होते हैं
धरती पर... तुम्हारा हृदय उदार है... तुम्हें यह देखना ही होगा, अवश्य ही देखना होगा।"
और अलेयोशा ने इंद्रधनुषी रंगों के दो नए सौ रूबल के नोट आगे बढ़ाए।
वे दोनों उस समय विशाल पत्थर के पास खड़े थे।
बाड़ थी, और आसपास कोई नहीं था। नोट्स से ऐसा प्रतीत हुआ कि...
कप्तान पर जबरदस्त प्रभाव पड़ा। उन्होंने शुरुआत की, लेकिन पहले तो केवल
आश्चर्य। उनकी बातचीत का ऐसा परिणाम तो उन्होंने कभी सोचा भी नहीं था।
उम्मीद से परे। मदद की उम्मीद से परे कुछ भी उसके सपनों से परे नहीं हो सकता था।
कोई भी—और इतनी बड़ी रकम!
उसने नोट्स लिए और एक मिनट के लिए वह लगभग जवाब देने में असमर्थ था।
उसके चेहरे पर एकदम नया भाव आ गया।
“मेरे लिए? इतने सारे पैसे—दो सौ रूबल! बढ़िया!”
हे भगवान! मैंने पिछले चार सालों में इतना पैसा कभी नहीं देखा!
हे भगवान! और वो कहती है कि वो बहन है... क्या ये सच है?
“मैं कसम खाता हूँ कि मैंने तुम्हें जो कुछ भी बताया है, वह सब सच है,” अलेयोशा चिल्लाया। कप्तान का चेहरा शर्म से लाल हो गया।
सुनो, मेरी प्यारी, सुनो। अगर मैं इसे ले लूँगी, तो मैं एक
बदमाश? एलेक्सी फ्योदोरोविच, आपकी नजर में मैं बदमाश नहीं होऊंगा?
नहीं, एलेक्सी फ्योदोरोविच, सुनो, सुनो,” उसने जल्दी से अलेयोशा को छूते हुए कहा।
अपने दोनों हाथों से। "तुम मुझे इसे लेने के लिए मना रहे हो, यह कहकर कि यह एक
बहन इसे भेजती है, लेकिन मन ही मन, क्या तुम मेरे लिए घृणा महसूस नहीं करोगे?
अगर मैं इसे ले लूँ, तो?
नहीं, नहीं, मैं अपनी जान की कसम खाकर कहता हूँ कि मैं ऐसा कभी नहीं करूँगा! और न ही कोई कभी करेगा।
सिर्फ मुझे जानो—मैं, तुम, वह और एक और महिला, उसकी घनिष्ठ मित्र।"
“उस महिला की चिंता मत करो! सुनो, एलेक्सी फ्योदोरोविच, ऐसे समय में
यह बात आपको अवश्य सुननी चाहिए, क्योंकि आप इन दो सौ लोगों की बातों को नहीं समझ सकते।
अब मेरे लिए रूबल का क्या मतलब है।” बेचारा धीरे-धीरे ऊपर उठता चला गया।
कुछ हद तक असंगत, लगभग बेकाबू उत्साह। वह अपना संतुलन खो बैठा था।
और वह बहुत तेज़ी से बोल रहा था, मानो उसे डर हो कि उसे बोलने की अनुमति नहीं दी जाएगी।
उसे बस इतना ही कहना था।
“इसे ईमानदारी से एक ‘बहन’ से प्राप्त करने के अलावा, यह इतना उच्च स्तर का है
आदरणीय और पूजनीय, क्या आप जानते हैं कि अब मैं माँ की देखभाल कर सकता हूँ?
नीना, मेरी कुबड़ी परी बेटी? डॉक्टर हर्ज़ेनस्टुबे मेरे पास आए थे।
वह अपने हृदय की दयालुता से उन दोनों की पूरे एक घंटे तक जांच कर रहा था।
उन्होंने कहा, 'मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा है,' लेकिन उन्होंने मिनरल वाटर पीने की सलाह दी।
जो यहाँ एक दवा की दुकान पर रखी है। उन्होंने कहा कि इससे उसे ज़रूर फायदा होगा।

और उन्होंने स्नान करने का भी आदेश दिया, जिसमें कुछ दवा मिलाई गई हो। खनिज जल
इसकी कीमत तीस कोपेक है, और उसे शायद चालीस बोतलें पीनी पड़ेंगी; इसलिए मैं
मैंने पर्ची ली और उसे आइकनों के नीचे शेल्फ पर रख दिया, और वहीं पर वह पड़ी रही।
झूठ। और उसने नीना के लिए गर्म पानी से स्नान करने का आदेश दिया, जिसमें कुछ घुला हुआ था।
सुबह और शाम। लेकिन हम अपने घर में इस तरह का इलाज कैसे कर सकते हैं?
नौकरों के बिना, मदद के बिना, स्नानघर के बिना, और बिना किसी सुविधा के एक हवेली।
पानी? नीना को पूरे शरीर में गठिया है, मुझे नहीं लगता मैंने आपको यह बताया था। उसके पूरे शरीर में
गठिया है।
रात में उसके दाहिने हिस्से में दर्द होता है, वह असहनीय पीड़ा में होती है, और, क्या आप विश्वास करेंगे,
देवदूत हमें जगाने के डर से बिना कराह किए इसे सहन करता है। हम जो खा सकते हैं वही खाते हैं।
मुझे मिलता है, और वह केवल बचा-खुचा ही लेगी, जो आप शायद ही किसी कुत्ते को देंगे। 'मैं
मैं इसके लायक नहीं हूँ, मैं इसे तुमसे ले रहा हूँ, मैं तुम पर बोझ हूँ,' यही बात है।
उसकी मासूम आँखों में जो भाव झलकते हैं। हम उसकी सेवा करते हैं, पर उसे यह पसंद नहीं आता।
'मैं एक बेकार अपाहिज हूँ, किसी के काम की नहीं।' मानो वह न ही
यह सब सार्थक है, क्योंकि वह अपनी देवदूत जैसी मधुरता से हम सभी को बचा रही है।
उसके बिना, उसके कोमल शब्दों के बिना, हमारे बीच नरक जैसा माहौल होता!
इससे वरवारा भी नरम पड़ जाती है। और वरवारा को भी कठोरता से मत आंकिए, वह एक
एंजेल भी, उसके साथ भी अन्याय हुआ है। वह गर्मियों में हमारे पास आई थी।
और वह अपने द्वारा पढ़ाई से कमाए और बचाए गए सोलह रूबल लेकर आई।
सितंबर में उसके साथ पीटर्सबर्ग वापस जाना था, यानी अभी। लेकिन हम उसे ले गए।
वह पैसे पर ही अपना गुजारा करती थी, इसलिए अब उसके पास वापस जाने के लिए कुछ नहीं बचा है।
सचमुच वह वापस नहीं जा सकती, क्योंकि उसे हमारे लिए गुलाम की तरह काम करना होगा।
जैसे कोई घोड़ा हम सबको अपनी पीठ पर बिठाकर भाग रहा हो। वह हम सबकी सेवा करती है।
मरम्मत करता है और धोता है, फर्श साफ करता है, माँ को सुलाता है। और माँ है
मनमौजी, रोने वाली और पागल! और अब मुझे इससे एक नौकर मिल सकता है।
एलेक्सी फ्योदोरोविच, आप समझ रहे हैं ना, पैसों से मैं दवाइयां खरीद सकता हूँ।
प्यारे प्राणियों, मैं अपने छात्र को पीटर्सबर्ग भेज सकता हूँ, मैं गोमांस खरीद सकता हूँ, मैं
उन्हें ठीक से खिलाओ। हे भगवान, यह तो एक सपना है!
अलेयोशा को इस बात से बहुत खुशी हुई कि उसने उसे इतनी खुशी दी थी और
कि बेचारा व्यक्ति खुश होने के लिए राजी हो गया था।
"रुको, एलेक्सी फ्योदोरोविच, रुको," कप्तान ने बात शुरू की।
उन्मादपूर्ण तेज़ी, एक नए दिवास्वप्न में बह गई। "क्या आप जानते हैं कि
इलूशा और मैं शायद सचमुच अपना सपना पूरा करेंगे। हम एक घोड़ा खरीदेंगे।
और गाड़ी, एक काला घोड़ा, वह काले घोड़े पर जोर देता है, और हम रवाना होंगे।
हमने उस दिन नाटक किया था। मेरा एक पुराना दोस्त है, जो के. प्रांत में वकील है।
और मुझे एक भरोसेमंद आदमी से पता चला कि अगर मैं जाऊँ तो वह मुझे एक
मुझे उनके कार्यालय में क्लर्क के रूप में जगह मिल गई, तो कौन जानता है, शायद वह मान भी जाए।
इसलिए मैंने बस
मम्मी और नीना को गाड़ी में बिठा दो, इलुशा गाड़ी चलाएगी, और मैं पैदल चलूँगा, मैं
चलना... क्यों न, अगर मैं कम से कम एक कर्ज चुकाने में सफल हो जाऊं जो मुझे देना बाकी है,
शायद मेरे पास इसके लिए भी पर्याप्त पैसे होंगे!
"काफी होगा!" अलेयोशा चिल्लाया। "कैटरीना इवानोव्ना
मैं आपको जितनी जरूरत होगी उतना और भेज दूंगा, और आपको पता है, मेरे पास भी पैसे हैं।
आप जो चाहें ले सकते हैं, जैसे आप अपने भाई या दोस्त से लेते हैं।
इसे बाद में लौटा देना... (तुम अमीर बन जाओगे, तुम अमीर बन जाओगे!) और तुम जानते हो कि तुम

दूसरे प्रांत में जाने से बेहतर विचार और क्या हो सकता है! यह बहुत अच्छा होगा।
आपको, विशेषकर आपके बेटे को बचाना है—और आपको जल्दी जाना चाहिए।
सर्दी से पहले, ठंड से पहले। जब आप तैयार हों तो हमें अवश्य लिखें।
वहाँ, और हम हमेशा भाई रहेंगे... नहीं, यह कोई सपना नहीं है!
अलेयोशा उसे गले लगाना चाहता था, वह इतना खुश था। लेकिन एक नज़र डालने पर...
वह अचानक रुक गया। वह आदमी गर्दन फैलाकर खड़ा था।
और उसके होंठ उभरे हुए थे, चेहरा पीला और उन्मादी था। उसके होंठ थे
ऐसा लग रहा था मानो कुछ कहने की कोशिश कर रहा हो; कोई आवाज़ नहीं आई, फिर भी
उसके होंठ हिले। यह बहुत ही विचित्र था।
“यह क्या है?” अलेयोशा ने चौंककर पूछा।
“एलेक्सी फ्योदोरोविच... मैं... तुम,” कप्तान लड़खड़ाते हुए बुदबुदाया।
वह उसे एक अजीब, बेकाबू, स्थिर निगाहों से देख रहा था, और उसके चेहरे पर हताशा झलक रही थी।
संकल्प। उसी समय उसके होठों पर एक हल्की सी मुस्कान थी। "मैं... तुम,"
महोदय... क्या आप नहीं चाहेंगे कि मैं आपको एक छोटी सी तरकीब दिखाऊं जो मुझे आती है?
अचानक, उसने दृढ़ता से फुसफुसाते हुए कहा, उसकी आवाज़ अब और नहीं रही।
लड़खड़ाना।
“कौन सी चाल?”
“बड़ी चालाकी है,” कप्तान ने फुसफुसाते हुए कहा। उसका मुंह टेढ़ा हो गया था।
उसकी बाईं आंख सिकुड़ी हुई थी। वह अब भी अलेयोशा को घूर रहा था।
“क्या बात है? क्या चाल है?” अलेयोशा पूरी तरह से चीख उठा।
चिंतित।
“अरे, देखो,” कप्तान अचानक चिल्लाया और उसे दिखाते हुए बोला
दो नोट जिन्हें उसने अपने अंगूठे के बीच एक कोने से पकड़ रखा था
बातचीत के दौरान उसने अपनी तर्जनी उंगली को बेरहमी से मसल दिया और
उसने उन्हें अपने दाहिने हाथ में कसकर पकड़ लिया। "क्या तुम देख रहे हो, क्या तुम देख रहे हो?"
वह चीख उठा, उसका चेहरा पीला पड़ गया और वह गुस्से से लाल हो गया। और अचानक उसने अपना हाथ
ऊपर उठाकर फेंक दिया।
रेत पर पड़े हुए मुड़े हुए नोट। "देख रहे हो?" वह फिर से चीखा, इशारा करते हुए।
उनसे। "वहाँ देखो!"
और उग्र क्रोध से वह उन्हें अपनी एड़ी से कुचलने लगा, हांफते हुए।
और ऐसा करते हुए वह चिल्लाया:
आपके पैसों का इतना ही फायदा! आपके पैसों का इतना ही फायदा!
आपका पैसा! आपके पैसे का यही हाल है!
अचानक वह पीछे की ओर झपटा और अलेयोशा के सामने खड़ा हो गया, और
उनके पूरे व्यक्तित्व से असीम गर्व झलक रहा था।
जिन्होंने तुम्हें भेजा है, उनसे कह दो कि सूत का टुकड़ा अपना सामान नहीं बेचता।
“सम्मान,” उसने अपना हाथ हवा में उठाते हुए चिल्लाया। फिर वह तेज़ी से मुड़ा और
वह दौड़ने लगा; लेकिन पाँच कदम भी नहीं दौड़ पाया था कि वह पूरी तरह मुड़ गया।
उसने घूमकर अलेयोशा के हाथ को चूमा। फिर वह पाँच कदम और दौड़ा और उसके बाद
आखिरी बार मुड़ा। इस बार उसका चेहरा विकृत नहीं था।
हँसी, लेकिन आँसुओं से काँपती हुई। आँसू भरी, लड़खड़ाती, सिसकती हुई आवाज़ में।
उसने आवाज लगाई:
अगर मैं आपसे हमारे लिए पैसे ले लूं तो मैं अपने बेटे से क्या कहूँ?
शर्म करो?"
और फिर वह बिना मुड़े आगे दौड़ता चला गया। अलेयोशा उसे देखता रहा।

बेहद दुखी। ओह, उसने देखा कि आखिरी पल तक वह आदमी
मुझे नहीं पता था कि वह नोटों को मसलकर फेंक देगा। उसे नहीं पता था।
वापस मुड़ जाओ। अलेयोशा जानता था कि वह नहीं मुड़ेगा। वह उसका पीछा नहीं करेगा और उसे पुकारेगा नहीं।
उसे वापस लौटा दिया, वह जानता था क्यों। जब वह नज़र से ओझल हो गया, तो अलेयोशा ने उसे उठा लिया।
दो नोट। वे बहुत कुचले और मुड़े हुए थे, और थे
रेत में धंसे हुए थे, लेकिन उन्हें कोई चोट नहीं आई थी और वे नए जैसे सरसराहट कर रहे थे।
जब अलेयोशा ने उन्हें खोलकर सीधा किया। सीधा करने के बाद
उसने उन्हें बाहर निकाला, मोड़ा, अपनी जेब में रखा और कैटेरिना के पास चला गया।
इवानोवना अपने आयोग की सफलता पर रिपोर्ट देंगी।

3 ग्रुशेंका.

पुस्तक 5

पक्ष और विपक्ष

अध्याय 1

सगाई

मैडम होहलाकोव एक बार फिर अलेयोशा से मिलने वाली पहली व्यक्ति थीं। वह घबराई हुई थीं; कोई महत्वपूर्ण घटना घटी थी। कटेरीना इवानोव्ना के हिस्टीरिया के दौरे बेहोशी में बदल गए थे, और फिर "एक भयानक, असहनीय कमजोरी छा गई थी, वह आंखें ऊपर करके लेटी हुई थीं और प्रलाप कर रही थीं। अब उन्हें बुखार था। उन्होंने हर्ज़ेनस्टुबे को बुलवाया था; उन्होंने चाचियों को बुलवाया था। चाचियां तो आ चुकी थीं, लेकिन हर्ज़ेनस्टुबे अभी तक नहीं आए थे। वे सभी उनके कमरे में बैठकर इंतज़ार कर रही थीं। वह अब बेहोश थीं, और अगर यह दिमागी बुखार में बदल गया तो क्या होगा!"
मैडम होहलाकोव बेहद चिंतित दिखीं। "यह गंभीर मामला है, बहुत गंभीर।"
वह हर शब्द पर कुछ न कुछ जोड़ती रही, मानो इससे पहले उसके साथ जो कुछ भी हुआ था, वह कोई गंभीर घटना ही न हो। अलेयोशा बड़ी परेशानी से सुन रहा था और अपने कारनामों का वर्णन करने ही वाला था कि उसने पहले ही शब्द पर उसे रोक दिया। उसके पास सुनने का समय नहीं था। उसने उससे विनती की कि वह लीज़ के साथ बैठे और वहीं उसका इंतज़ार करे।
“लिसे,” उसने लगभग उसके कान में फुसफुसाते हुए कहा, “लिसे ने मुझे बहुत आश्चर्यचकित कर दिया है।” अभी-अभी, प्रिय एलेक्सी फ्योदोरोविच। उसने मुझे भी छुआ, इसलिए मेरा दिल उसे सब कुछ माफ कर देता है। ज़रा सोचो, जैसे ही तुम गए, उसे आज और कल तुम पर हंसने का सचमुच पछतावा होने लगा, हालांकि वह तुम पर नहीं हंस रही थी, बल्कि सिर्फ मजाक कर रही थी। लेकिन उसे इस बात का बहुत अफसोस था, लगभग रोने ही वाली थी, जिससे मैं काफी हैरान हो गया। उसे मुझ पर हंसने का कभी सच में अफसोस नहीं हुआ, उसने तो बस मजाक किया था। और तुम जानते हो कि वह हर पल मुझ पर हंसती रहती है। लेकिन इस बार वह सच में हंस रही थी। एलेक्सी फ्योदोरोविच, वह तुम्हारी राय को बहुत महत्व देती है, और अगर हो सके तो उसकी बातों से नाराज़ मत होना या आहत मत होना। मैं उस पर कभी सख्ती नहीं करता, क्योंकि वह बहुत ही समझदार बच्ची है - यकीन मानो? उसने अभी कहा कि तुम उसके बचपन के दोस्त हो, 'बचपन के सबसे अच्छे दोस्त' - ज़रा सोचो - 'सबसे अच्छे दोस्त' - और मेरे बारे में क्या? उसके मन में बहुत गहरी भावनाएँ और यादें हैं, और तो और, वह ऐसे वाक्य बोलती है, जो बिल्कुल अप्रत्याशित होते हैं, और अचानक ही निकल आते हैं जब आप उनकी बिल्कुल उम्मीद नहीं करते। उदाहरण के लिए, उसने हाल ही में एक चीड़ के पेड़ के बारे में बात की: उसके बचपन में हमारे बगीचे में एक चीड़ का पेड़ हुआ करता था। बहुत संभव है कि वह अभी भी वहीं खड़ा हो; इसलिए भूतकाल में बोलने की कोई ज़रूरत नहीं है। चीड़ के पेड़ इंसानों की तरह नहीं होते, एलेक्सी फ्योदोरोविच, वे जल्दी नहीं बदलते। 'मम्मा,' उसने कहा, 'मुझे यह चीड़ का पेड़ सपने की तरह याद है,' लेकिन उसने इसके बारे में कुछ ऐसा अनोखा कहा कि मैं उसे दोहरा नहीं सकती। वैसे भी, मैं तो भूल ही गई हूँ। अच्छा, अलविदा! मैं इतनी चिंतित हूँ कि मुझे लग रहा है मैं पागल हो जाऊँगी। आह! एलेक्सी फ्योदोरोविच, मैं अपने जीवन में दो बार पागल हो चुकी हूँ। लीज़ के पास जाओ, उसे खुश करो, जैसा कि तुम हमेशा इतने प्यारे तरीके से करते हो। “लीज़,” वह चिल्लाते हुए उसके दरवाजे पर गई, “मैं तुम्हारे लिए एलेक्सी फ्योदोरोविच को लाई हूँ, जिसका तुमने इतना अपमान किया था। मैं तुम्हें विश्वास दिलाती हूँ कि वह बिल्कुल भी क्रोधित नहीं है; बल्कि, वह इस बात से आश्चर्यचकित है कि तुम ऐसा सोच भी सकती हो।”
“धन्यवाद, माँ। अंदर आइए, एलेक्सी फ्योदोरोविच।” अलेयोशा अंदर चला गया। लिसे थोड़ी शर्मिंदा दिखी और तुरंत उसका चेहरा लाल हो गया।
गहरा लाल रंग। जाहिर तौर पर वह किसी बात से शर्मिंदा थी, और जैसा कि लोग ऐसे मामलों में अक्सर करते हैं, उसने तुरंत दूसरी बातों के बारे में बात करना शुरू कर दिया, मानो वे बातें उस समय उसके लिए बेहद महत्वपूर्ण हों।
“मम्मा ने मुझे दो सौ रूबल के बारे में सब कुछ बता दिया है, एलेक्सी।”
फ्योदोरोविच, और आपका उन्हें उस बेचारे अधिकारी के पास ले जाना... और उसने मुझे वह भयानक कहानी सुनाई कि कैसे उसका अपमान किया गया था... और आप जानते हैं, हालांकि माँ चीजों को उलझा देती है...

वह हमेशा एक काम से दूसरे काम की ओर भागती रहती है... यह सुनकर मैं रो पड़ी। अच्छा, क्या आपने उसे पैसे दे दिए और वह बेचारा आदमी कैसा है?
“सच तो यह है कि मैंने उसे वह नहीं दिया, और यह एक लंबी कहानी है,” उसने जवाब दिया।
अलियोशा ऐसा लग रहा था मानो वह भी अपनी असफलता के अफसोस के अलावा और कुछ नहीं सोच पा रहा हो, फिर भी लिसे ने अच्छी तरह से देखा कि वह भी दूसरी तरफ देख रहा था, और वह भी दूसरी बातों के बारे में बात करने की कोशिश कर रहा था।
अलियोशा मेज पर बैठ गया और अपनी कहानी सुनाने लगा, लेकिन पहले ही पल में...
शब्दों के साथ ही उसकी झिझक दूर हो गई और लीज़ का पूरा ध्यान भी उसकी ओर आकर्षित हो गया। उसने गहरी भावना के साथ बोलना शुरू किया, उस प्रबल प्रभाव में जो उसे अभी-अभी मिला था, और वह अपनी कहानी को अच्छे से और विस्तार से बताने में सफल रहा। पुराने दिनों में मॉस्को में, उसे लीज़ के पास आना और उसे अपने साथ घटी घटनाओं, पढ़ी हुई चीज़ों या अपने बचपन की यादों के बारे में बताना बहुत पसंद था। कभी-कभी वे दिवास्वप्न देखते और पूरी प्रेम कहानियाँ बुन लेते थे—आमतौर पर खुशमिजाज और मनोरंजक। अब वे दोनों अचानक दो साल पहले के मॉस्को के पुराने दिनों में पहुँच गए। लीज़ उसकी कहानी से बहुत प्रभावित हुई। अलेयोशा ने इलुशा का वर्णन गर्मजोशी से किया। जब उसने यह वर्णन समाप्त किया कि कैसे उस अभागे आदमी ने पैसों को रौंद डाला, तो लीज़ खुद को रोक नहीं पाई और अपने हाथ जोड़कर रो पड़ी:
“तो तुमने उसे पैसे नहीं दिए! तो तुमने उसे भाग जाने दिया! अरे, तुम्हें तो उसके पीछे भागना चाहिए था!”
“नहीं, लिसे; अच्छा हुआ कि मैं उसके पीछे नहीं भागा,” अलेयोशा उठते हुए बोला।
वह अपनी कुर्सी से उठा और सोच-विचार करते हुए कमरे के उस पार चला गया।
“ऐसा कैसे? यह बेहतर कैसे है? अब वे बिना भोजन के हैं और उनकी स्थिति...
निराशाजनक।"
“निराशाजनक नहीं है, क्योंकि दो सौ रूबल उन्हें मिल ही जाएंगे। वह
“कल पैसे ले लेना। कल वो ज़रूर ले लेगा,” अलेयोशा इधर-उधर टहलते हुए, सोचते हुए बोला। “देखो, लिसे,” वो अचानक उसके सामने रुकते हुए बोला, “मैंने एक गलती की, लेकिन वो भी मेरे भले के लिए ही हुई।”
"यह कैसी भूल थी, और यह बेहतर क्यों साबित हुई?"
मैं आपको बताता हूँ। वह कमज़ोर और डरपोक स्वभाव का आदमी है; उसके पास
इतना कष्ट सहने के बावजूद वह बहुत ही नेक स्वभाव के हैं। मैं सोचती रहती हूँ कि उन्हें अचानक इतना बुरा क्यों लगा, क्योंकि मैं आपको यकीन दिलाती हूँ कि आखिरी क्षण तक उन्हें पता ही नहीं था कि वह नोटों को रौंदने वाले हैं। और अब मुझे लगता है कि उन्हें बुरा लगने के कई कारण थे... और उनकी स्थिति को देखते हुए ऐसा होना स्वाभाविक ही था... सबसे पहले तो उन्हें इस बात का दुख था कि उन्होंने मेरे सामने पैसे पाकर इतनी खुशी जाहिर की और मुझसे इसे छिपाया नहीं। अगर उन्हें खुशी इतनी ज्यादा न होती; अगर उन्होंने इसे न दिखाया होता; अगर उन्होंने दूसरों की तरह पैसे लेते समय संकोच और नखरे दिखाने शुरू कर दिए होते, तो शायद वह फिर भी पैसे ले लेते। लेकिन वह सचमुच बहुत खुश थे, और यह बात मुझे बहुत शर्मिंदा कर रही थी। आह, लिसे, वह एक अच्छे और सच्चे इंसान हैं—यही तो सारी बात का सबसे बुरा पहलू है। जब तक वह बोलता रहा, उसकी आवाज़ इतनी कमज़ोर, इतनी टूटी हुई थी, वह इतनी तेज़ी से बोलता रहा, इतनी ज़ोर से हँसता रहा, या शायद रो रहा था—हाँ, मुझे यकीन है कि वह रो रहा था, वह इतना खुश था—और उसने अपनी बेटियों के बारे में बात की—और उस नौकरी के बारे में जो उसे दूसरे शहर में मिल सकती थी... और जब उसने अपने दिल की बात कह दी, तो उसे इस बात का पछतावा हुआ कि उसने मुझे अपने दिल की सारी बातें इस तरह बता दीं। इसलिए वह मुझसे तुरंत नफरत करने लगा। वह उन बेहद संवेदनशील गरीब लोगों में से एक है। उसे सबसे ज़्यादा शर्मिंदगी इस बात से हुई कि उसने बहुत जल्दी हार मान ली और मुझे दोस्त मान लिया। पहले तो वह लगभग मुझ पर टूट पड़ा और मुझे डराने की कोशिश की, लेकिन जैसे ही उसने पैसे देखे, वह मुझे गले लगाने लगा; वह बार-बार अपने हाथों से मुझे छूता रहा। शायद इसी वजह से उसे यह सब इतना अपमानजनक लगा, और फिर मैंने वह गलती कर दी, एक बहुत बड़ी गलती। मैंने अचानक उससे कहा कि अगर उसके पास दूसरे शहर जाने के लिए पर्याप्त पैसे नहीं हैं, तो हम उसे दे देंगे, और सच में, मैं खुद अपने पैसों से उसे उतना दे दूँगा जितना वह चाहेगा। यह सुनकर वह एकदम चौंक गया।

उसने सोचा, मैं उसकी मदद के लिए आगे क्यों आया? लीज़, तुम्हें पता है, एक घायल व्यक्ति के लिए यह बहुत मुश्किल होता है जब दूसरे लोग उसे ऐसे देखते हैं जैसे वे उसके उपकारी हों... मैंने यह सुना है; फ़ादर ज़ोस्सिमा ने मुझे बताया था। मुझे नहीं पता कि इसे कैसे कहूँ, लेकिन मैंने इसे अक्सर खुद देखा है। और मुझे भी ऐसा ही लगता है। और सबसे बुरी बात यह थी कि हालाँकि उसे आखिरी क्षण तक पता नहीं था कि वह नोटों पर पैर रख देगा, लेकिन उसे इसका एक आभास था, मुझे यकीन है। बस इसी आभास ने उसे इतना उत्साहित कर दिया था... और हालाँकि यह बहुत भयानक है, लेकिन यह सब अच्छे के लिए ही है। दरअसल, मेरा मानना है कि इससे बेहतर कुछ हो ही नहीं सकता था।
“काश, इससे बेहतर कुछ क्यों नहीं हो सका?” लिसे ने देखते हुए कहा।
अलोशा को देखकर उसे बहुत आश्चर्य हुआ।
क्योंकि अगर उसने पैसे ले लिए होते, तो घर पहुँचने के एक घंटे बाद ही वह
शर्मिंदगी से रो रहा होता, ठीक यही हुआ होता। और शायद कल सुबह जल्दी मेरे पास आता, और हो सकता है कि नोट मुझ पर फेंककर उन्हें पैरों से कुचल देता, जैसा उसने अभी किया। लेकिन अब वह बहुत गर्व और जीत का भाव लिए घर चला गया है, हालांकि वह जानता है कि उसने खुद को बर्बाद कर लिया है। इसलिए अब उसे कल तक दो सौ रूबल स्वीकार करवाना सबसे आसान होगा, क्योंकि उसने पहले ही अपनी इज्जत बचा ली है, पैसे फेंक दिए हैं और उन्हें पैरों तले रौंद दिया है... जब उसने ऐसा किया था, तब उसे पता नहीं था कि मैं कल उसे फिर से पैसे लौटा दूँगा, और फिर भी उसे उन पैसों की बहुत ज़रूरत है। हालांकि वह अब खुद पर गर्व कर रहा है, फिर भी आज भी वह सोच रहा होगा कि उसने कितनी बड़ी मदद खो दी है। वह रात में पहले से कहीं ज्यादा इसके बारे में सोचेगा, इसके सपने देखेगा, और कल सुबह तक वह मुझसे माफी मांगने के लिए दौड़कर आ सकता है। ठीक उसी समय मैं वहाँ पहुँच जाऊँगा। मैं कहूँगा, ‘देखो, तुम बड़े घमंडी हो, तुमने दिखा दिया है; लेकिन अब पैसे ले लो और हमें माफ़ कर दो!’ और फिर वो पैसे ले लेगा!
अपने अंतिम शब्द कहते हुए अलेयोशा आनंद से भावुक हो गया, “और
तो वो इसे ले लेगा!” लिसे ने ताली बजाई।
“अरे हाँ, यह सच है! अब मैं इसे पूरी तरह समझ गया हूँ। अरे, अलेयोशा, कैसे...”
तुम्हें ये सब पता है? इतनी कम उम्र में भी वो दिल की बात जानता है... मुझे तो ये कभी पता ही नहीं चलता। अब सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि उसे यह विश्वास दिलाया जाए कि वह समान स्तर पर है।
“हमारे साथ, हमसे पैसे लेने के बावजूद,” अलोशा ने उत्साह में आगे कहा, “और न केवल बराबरी के स्तर पर, बल्कि उससे भी ऊंचे स्तर पर।”
“‘उच्चतर स्तर पर’ कहना आकर्षक है, एलेक्सी फ्योदोरोविच; लेकिन आगे बढ़ो, आगे बढ़ो।”
पर!"
“आपका मतलब है कि ‘उच्चतर स्थिति में’ जैसा कोई मुहावरा नहीं है; लेकिन इससे कोई फर्क नहीं पड़ता क्योंकि—”
“अरे नहीं, बिलकुल भी नहीं। मुझे माफ़ कर दो, अलेयोशा, प्यारे... तुम
जान लो, मैंने अब तक तुम्हारा बहुत कम सम्मान किया है—मतलब, तुम्हारा सम्मान बराबरी के स्तर पर ही किया है; लेकिन अब मैं तुम्हारा सम्मान और भी ऊंचे स्तर पर करूंगी। प्रिय, मेरे मजाक पर गुस्सा मत होना,” उसने तुरंत, तीव्र भावना के साथ कहा। “मैं मूर्ख और तुच्छ हूँ, लेकिन तुम! सुनो, एलेक्सी फ्योदोरोविच। क्या हमारे सारे विश्लेषण में—मेरा मतलब तुम्हारे विश्लेषण से है... नहीं, बेहतर होगा कि इसे हमारा विश्लेषण कहें—क्या हम उस बेचारे आदमी का अपमान नहीं कर रहे हैं—उसकी आत्मा का इस तरह, मानो ऊपर से, विश्लेषण करके? इतनी निश्चितता से यह तय करके कि वह पैसा ले लेगा?”
“नहीं, लिसे, यह अपमान नहीं है,” अलेयोशा ने जवाब दिया, मानो उसने
उसने सवाल के लिए खुद को तैयार किया। “मैं यहाँ आते समय इसी बारे में सोच रहा था। जब हम सब उसके जैसे हैं, जब हम सब बिल्कुल उसके जैसे हैं, तो यह तिरस्कार कैसे हो सकता है? क्योंकि तुम जानती हो कि हम सब एक जैसे हैं, उससे बेहतर नहीं। अगर हम बेहतर होते, तो उसकी जगह हम भी बिल्कुल वैसे ही होते... मुझे नहीं पता, लीज़, लेकिन मुझे लगता है कि मेरी आत्मा कई मायनों में नीच है, और उसकी आत्मा नीच नहीं है; बल्कि इसके विपरीत, वह कोमल भावनाओं से भरी है... नहीं, लीज़, मुझे उससे कोई तिरस्कार नहीं है। क्या तुम जानती हो, लीज़, मेरे बड़े ने मुझे एक बार कहा था कि ज़्यादातर लोगों की देखभाल वैसे ही

करो जैसे बच्चों की करते हो, और उनमें से कुछ की देखभाल वैसे ही करो जैसे अस्पताल में बीमारों की करते हो।"
"आह, प्रिय एलेक्सी फ्योदोरोविच, आइए हम लोगों की देखभाल वैसे ही करें जैसे हम अपने लिए करते हैं।"
बीमारों!
"चलो, लीज़; मैं तैयार हूँ। हालाँकि मैं स्वयं पूरी तरह से तैयार नहीं हूँ।
मैं कभी-कभी बहुत अधीर हो जाता हूँ और कभी-कभी मुझे चीजें समझ नहीं आतीं। तुम्हारे साथ ऐसा नहीं है।
"अरे, मुझे विश्वास ही नहीं हो रहा! एलेक्सी फ्योदोरोविच, मैं कितना खुश हूँ!"
"मुझे बहुत खुशी है कि तुमने ऐसा कहा, लिसे।"
"एलेक्सी फ्योदोरोविच, आप अद्भुत रूप से अच्छे हैं, लेकिन आप...
कभी-कभी थोड़ी औपचारिक... और फिर भी तुम बिल्कुल भी औपचारिक नहीं हो। दरवाजे पर जाओ, उसे धीरे से खोलो, और देखो कि क्या माँ सुन रही है," लिज़ ने घबराई हुई, जल्दबाजी में फुसफुसाते हुए कहा।
अलेयोशा गया, दरवाजा खोला और बताया कि कोई सुन नहीं रहा है। "इधर आओ, एलेक्सी फ्योदोरोविच," लिसे ने और भी लाल होते हुए कहा।
उसका चेहरा और लाल हो गया। "अपना हाथ दो—हाँ, सही कहा। मुझे एक बड़ी बात माननी है, मैंने कल तुम्हें मज़ाक में नहीं, बल्कि गंभीरता से लिखा था," और उसने अपने हाथों से अपनी आँखें छुपा लीं। यह स्पष्ट था कि उसे अपनी इस बात को स्वीकार करने में बहुत शर्म आ रही थी।
अचानक उसने उसका हाथ झट से पकड़ लिया और आवेग में आकर उसे तीन बार चूमा।
"आह, लिसे, कितनी अच्छी बात है!" अलेयोशा ने खुशी से कहा। "तुम्हें पता है, मैं
मुझे पूरा यकीन था कि आप सच में गंभीर थे।
"पक्का? कसम से!" उसने उसका हाथ हटा दिया, लेकिन उसे छोड़ा नहीं।
वह शर्म से लाल हो गई और खुशी से खिलखिला उठी। "मैंने उसके हाथ को चूमा और उसने कहा, 'कितनी अच्छी बात है!'"
लेकिन उसका ताना मारना अनुचित था। अलेयोशा भी बहुत दुखी था। "मैं हमेशा तुम्हें खुश रखना चाहता हूँ, लिसे, लेकिन मुझे नहीं पता कि कैसे करूँ।"
"यह," उसने शरमाते हुए धीरे से कहा।
"अलोशा, प्यारे, तुम बहुत रूखे और कठोर हो। क्या तुम्हें समझ आ रहा है? उसने मुझे चुना है।
वह उनकी पत्नी हैं और इस बात से पूरी तरह संतुष्ट हैं। उन्हें पूरा यकीन है कि मैं गंभीर थी। यह कैसी बात है! अरे, यह तो सरासर गुस्ताखी है।
"क्या मेरा इतना आश्वस्त होना गलत था?" अलेयोशा ने हंसते हुए पूछा।
अचानक।
"अरे, अलेयोशा, इसके विपरीत, यह तो बिल्कुल सही था," लिसे चिल्लाई।
वह उसे स्नेह और प्रसन्नता से देख रही थी।
अलेयोशा स्थिर खड़ा रहा, उसका हाथ अपने हाथ में थामे हुए। अचानक वह नीचे झुक गया।
और उसने उसके होठों पर चुंबन लिया।
"अरे, तुम क्या कर रहे हो?" लीज़ चिल्लाई। अलेयोशा बुरी तरह शर्मिंदा हो गया। "ओह, मुझे माफ़ करना अगर मुझे ऐसा नहीं करना चाहिए... शायद मैं बहुत बेवकूफ हूँ... तुम
तुमने कहा कि मुझे ठंड लग रही थी, इसलिए मैंने तुम्हें चूमा... लेकिन मुझे लगता है कि यह बेवकूफी थी।
लिज़ हँसी और अपना चेहरा हाथों में छिपा लिया। "और उस ड्रेस में!"
हंसी के बीच ही उसने वीर्यपात कर दिया। लेकिन अचानक उसकी हंसी रुक गई और वह गंभीर, लगभग सख्त हो गई।
"अलोशा, हमें चुंबन को अभी टाल देना चाहिए। हम अभी इसके लिए तैयार नहीं हैं, और हम
"मुझे बहुत लंबा इंतजार करना पड़ेगा," उसने अचानक अपनी बात समाप्त की। "बल्कि मुझे यह बताओ कि तुम, जो इतने चतुर, इतने बुद्धिमान, इतने observant हो, मुझ जैसी एक छोटी सी मूर्ख, एक अपाहिज को क्यों चुनते हो? आह, अलेयोशा, मैं बहुत खुश हूँ, क्योंकि मैं तुम्हारे लायक बिल्कुल नहीं हूँ।"
"हाँ, लीज़। मैं कुछ दिनों में मठ छोड़कर चला जाऊँगा।"

अगर मैं दुनिया में जाऊंगी, तो मुझे शादी करनी ही होगी। मैं यह जानती हूं। उन्होंने भी मुझे शादी करने को कहा था। आपसे बेहतर शादी किससे हो सकती है—और आपके सिवा मुझे कौन अपनाएगा? मैं इस बारे में सोच रही हूं। पहली बात तो यह है कि आप मुझे बचपन से जानते हैं और आपमें बहुत से ऐसे गुण हैं जो मुझमें नहीं हैं। आप मुझसे ज़्यादा हंसमुख हैं; सबसे बढ़कर, आप मुझसे ज़्यादा मासूम हैं। मैं पहले ही बहुत सी चीजों के संपर्क में आ चुकी हूं... आह, आपको नहीं पता, लेकिन मैं भी एक करामाज़ोव हूं। अगर आप हंसते हैं और मज़ाक करते हैं, और मुझ पर भी, तो क्या फर्क पड़ता है? हंसते रहिए। मुझे बहुत खुशी है कि आप ऐसा करते हैं। आप एक छोटे बच्चे की तरह हंसते हैं, लेकिन एक शहीद की तरह सोचते हैं।
“शहीद की तरह? कैसे?”
“हाँ, लिसे, तुम्हारा अभी का सवाल: क्या हम नहीं दिखा रहे थे?”
उस बेचारे आदमी की आत्मा को चीर-फाड़ कर उसका अपमान करना—यही तो एक पीड़ित का सवाल था... देखिए, मुझे नहीं पता इसे कैसे व्यक्त करूं, लेकिन जो भी ऐसे सवालों के बारे में सोचता है, वह पीड़ा सहने में सक्षम होता है। अपनी बीमार कुर्सी पर बैठे-बैठे आप पहले ही बहुत सी बातों पर विचार कर चुके होंगे।
“अलोशा, मुझे अपना हाथ दो। तुम इसे क्यों हटा रहे हो?” उसने धीरे से कहा।
खुशी से काँपती हुई आवाज में लिसे बोली, “सुनो, अलेयोशा। जब तुम मठ से बाहर आओगे तो क्या पहनोगे? किस तरह का सूट? हंसो मत, गुस्सा मत करो, यह मेरे लिए बहुत महत्वपूर्ण है।”
"मैंने सूट के बारे में नहीं सोचा है, लिसे; लेकिन आप जो चाहें मैं वही पहन लूंगी।"
मुझे अच्छा लगेगा अगर आपके पास गहरे नीले रंग का मखमली कोट और सफेद रंग का पिके कोट हो। एक जैकेट और एक मुलायम भूरे रंग की फेल्ट टोपी... मुझे बताओ, क्या तुम्हें लगा कि जब मैंने कहा कि मैंने जो लिखा उसका वह मतलब नहीं था, तो मुझे तुम्हारी परवाह नहीं थी?
नहीं, मुझे इस पर विश्वास नहीं हुआ।
"अरे, तुम असहनीय व्यक्ति हो, तुम सुधरने वाले नहीं हो।"
“देखो, मुझे पता था कि तुम मेरी परवाह करते हुए प्रतीत होते थे, लेकिन मैंने दिखावा किया।”
मुझे लगता है कि आप नहीं चाहते थे कि मैं आपके लिए इसे आसान बना दूं।
“इससे तो और भी बुरा हो गया! सबसे बुरा भी और सबसे अच्छा भी! अलेयोशा, मैं बहुत परेशान हूँ।”
मैं तुम्हें बहुत पसंद करती हूँ। आज सुबह तुम्हारे आने से ठीक पहले, मैंने अपनी किस्मत आजमाने की कोशिश की। मैंने सोचा कि मैं तुमसे अपना पत्र मांगूंगी, और अगर तुम उसे शांति से निकालकर मुझे दे देते (जैसा कि तुमसे उम्मीद की जा सकती थी), तो इसका मतलब होता कि तुम मुझसे बिल्कुल भी प्यार नहीं करते, तुम्हारे मन में कोई भावना नहीं है, और तुम बस एक नासमझ लड़के हो, किसी काम के नहीं, और मेरा सब कुछ बर्बाद हो गया है। लेकिन तुमने पत्र घर पर ही छोड़ दिया और इससे मुझे तसल्ली मिली। तुमने उसे जानबूझकर घर पर छोड़ा, ताकि वापस न दो, क्योंकि तुम्हें पता था कि मैं उसे मांगूंगी? यही बात थी, है ना?
“अरे, लीज़, ऐसा बिलकुल नहीं था। पत्र अब मेरे पास है, और यह ऐसा था।
सुबह, इस जेब में। ये रहा।
अलियोशा हंसते हुए चिट्ठी बाहर निकाल लाई और उसे दूर से दिखाते हुए बोली, “लेकिन मैं इसे तुम्हें नहीं दूंगी। इसे यहीं से देखो।”
“तो फिर तुमने झूठ बोला? तुम, एक भिक्षु, झूठ बोल रहे हो!”
“अगर आप चाहें तो कह सकते हैं कि मैंने झूठ बोला,” अलेयोशा भी हंसते हुए बोला। “मैंने झूठ इसलिए बोला ताकि...”
“मैं तुम्हें यह पत्र वापस दे दूंगा। यह मेरे लिए बहुत कीमती है,” उसने अचानक भावुक होकर कहा और उसका चेहरा फिर से लाल हो गया। “यह हमेशा मेरे लिए कीमती रहेगा, और मैं इसे किसी को नहीं दूंगा!”
लिज़ ने खुशी से उसकी ओर देखा। "अलोशा," उसने फिर धीरे से कहा, "दरवाजे की ओर देखो। क्या माँ सुन नहीं रही है?"
“ठीक है, लीज़, मैं देख लूँगा; लेकिन क्या न देखना बेहतर नहीं होगा? क्यों?”
क्या आपको अपनी माँ पर इस तरह की नीचता का संदेह है?
“यह कैसी नीचता है? जहाँ तक उसकी बेटी की जासूसी करने की बात है, यह उसका अधिकार है, यह...”

"यह नीचता नहीं!" लीज़ गुस्से से चिल्लाई। "आप निश्चिंत रहें, एलेक्सी फ्योदोरोविच, कि जब मैं माँ बनूँगी, और अगर मेरी बेटी मेरे जैसी हुई, तो मैं उस पर ज़रूर नज़र रखूँगी!"
"सच में, लिसे? यह सही नहीं है।"
“अरे बाप रे! इसमें नीचता का क्या लेना-देना है? अगर वह होती
किसी आम सांसारिक बातचीत को सुनना नीचता होगी, लेकिन जब उसकी अपनी बेटी एक युवक के साथ बंद कमरे में हो... सुनो, अलेयोशा, क्या तुम जानते हो कि शादी होते ही मैं तुम पर नजर रखूंगी, और मैं तुम्हें बता दूं कि मैं तुम्हारे सभी पत्र खोलकर पढ़ूंगी, इसलिए बेहतर होगा कि तुम तैयार रहो।
“हाँ, बिल्कुल, अगर ऐसा है तो—” अलेयोशा ने बुदबुदाते हुए कहा, “लेकिन यह सही नहीं है।”
“अरे, कितना अपमानजनक! अलेयोशा, प्यारे, हम पहली ही बात पर झगड़ा नहीं करेंगे।”
दिन। बेहतर होगा कि मैं आपको पूरी सच्चाई बता दूं। बेशक, लोगों की जासूसी करना बहुत गलत है, और बेशक, मैं सही नहीं हूं और आप सही हैं, लेकिन फिर भी मैं आप पर जासूसी करता रहूंगा।
“तो फिर करो; तुम्हें कुछ पता नहीं चलेगा,” अलेयोशा हँसते हुए बोला। “और, अलेयोशा, क्या तुम मेरी बात मानोगे? हमें इस पर भी फैसला करना होगा।”
"मुझे ऐसा करने में बहुत खुशी होगी, लिसे, और मैं निश्चित रूप से ऐसा करूँगा, लेकिन सबसे उपयुक्त तरीके से नहीं।"
महत्वपूर्ण बातें। भले ही आप मुझसे सहमत न हों, मैं सबसे महत्वपूर्ण मामलों में अपना कर्तव्य निभाऊंगा।
“हाँ, बिल्कुल सही; लेकिन मैं आपको बता दूं कि मैं न केवल आपके सामने झुकने के लिए तैयार हूँ, बल्कि सबसे महत्वपूर्ण मामलों में ही नहीं, बल्कि हर चीज़ में। और मैं अब ऐसा करने की कसम खाने को तैयार हूँ—हर चीज़ में, और अपने पूरे जीवन भर के लिए!” लिसे ने जोश से कहा, “और मैं खुशी-खुशी, खुशी-खुशी ऐसा करूँगी! इतना ही नहीं, मैं कसम खाती हूँ कि मैं कभी आपकी जासूसी नहीं करूँगी, कभी नहीं, कभी आपका एक भी पत्र नहीं पढ़ूँगी। क्योंकि आप सही हैं और मैं नहीं। और यद्यपि मुझे जासूसी करने का बहुत लालच होगा, मैं जानती हूँ कि मैं ऐसा नहीं करूँगी क्योंकि आप इसे अपमानजनक मानते हैं। अब आप ही मेरी अंतरात्मा हैं... सुनिए, एलेक्सी फ्योदोरोविच, आप आजकल इतने उदास क्यों हैं—कल भी और आज भी? मैं जानती हूँ कि आप बहुत चिंतित और परेशान हैं, लेकिन मुझे लगता है कि आपको कोई विशेष दुख भी है, शायद कोई गुप्त दुख?”
“हाँ, लिसे, मेरे पास भी एक गुप्त बात है,” अलेयोशा ने उदास स्वर में उत्तर दिया। “मैं
मुझे लगता है कि तुम मुझसे प्यार करते हो, क्योंकि तुमने यह अंदाजा लगा लिया था।
“कौन सा दुख? किस बारे में? क्या आप मुझे बता सकती हैं?” लीज़ ने झिझकते हुए पूछा।
विनती।
“मैं तुम्हें बाद में बताऊँगा, लिसे—बाद में,” अलेयोशा ने उलझन में कहा। “अभी
शायद आप इसे समझ न पाएं—और शायद मैं भी इसे समझा न पाऊं।"
मुझे पता है कि तुम्हारे भाई और तुम्हारे पिता भी तुम्हें चिंतित कर रहे हैं।
“हाँ, मेरे भाई भी,” अलेयोशा ने सोचते हुए धीरे से कहा। “मुझे तुम्हारा भाई इवान पसंद नहीं है, अलेयोशा,” लीज़ ने अचानक कहा। उसने इस टिप्पणी पर कुछ हैरानी जताई, लेकिन कोई जवाब नहीं दिया। “मेरे भाई खुद को बर्बाद कर रहे हैं,” उसने आगे कहा, “मेरे पिता भी।”
और वे अपने साथ दूसरों को भी नष्ट कर रहे हैं। जैसा कि फादर पैसी ने कुछ दिन पहले कहा था, यह 'करामाज़ोवों की आदिम शक्ति' है, एक क्रूर, बेलगाम, सांसारिक शक्ति। क्या ईश्वर की आत्मा उस शक्ति से ऊपर है? यह भी मुझे नहीं पता। मैं बस इतना जानता हूँ कि मैं भी एक करामाज़ोव हूँ... मैं एक भिक्षु, एक भिक्षु! क्या मैं भिक्षु हूँ, लिसे? तुमने अभी कहा था कि मैं हूँ।
"हाँ मैंने किया।"
और शायद मैं भगवान में विश्वास भी नहीं करता।
“तुम्हें विश्वास नहीं है? क्या बात है?” लिसे ने शांत और सौम्य स्वर में कहा।
लेकिन अलेयोशा ने कोई जवाब नहीं दिया। उसके इन आखिरी शब्दों में कुछ बहुत ही रहस्यमय, बहुत ही व्यक्तिपरक था, शायद खुद उसके लिए भी अस्पष्ट, लेकिन फिर भी उसे अंदर ही अंदर पीड़ा दे रहा था।
और अब इन सबके ऊपर, मेरे दोस्त, दुनिया का सबसे अच्छा आदमी, है

जाना, धरती छोड़ना है! अगर तुम जानतीं, लिसे, कि मैं आत्मा से उससे कितना जुड़ा हुआ हूँ! और फिर मैं अकेला रह जाऊँगा... मैं तुम्हारे पास आऊँगा, लिसे... भविष्य में हम साथ रहेंगे।
“हाँ, साथ मिलकर, साथ मिलकर! अब से हम हमेशा साथ रहेंगे, सब के साथ।”
हमारी जिंदगी! सुनो, मुझे चूमो, मैं तुम्हें इसकी इजाजत देती हूँ।
अलोशा ने उसे चूमा।
“चलो, अब जाओ। ईश्वर तुम्हारे साथ रहें!” और उसने क्रॉस का चिन्ह बनाया।
उसके ऊपर। “जल्दी से उसके पास लौट जाओ जब तक वह जीवित है। मुझे लगता है मैंने तुम्हें बेरहमी से रोक रखा है। मैं आज उसके और तुम्हारे लिए प्रार्थना करूँगा। अलेयोशा, हम खुश होंगे! क्या हम खुश होंगे, क्या हम होंगे?”
"मुझे विश्वास है कि हम ऐसा कर लेंगे, लिसे।"
अलियोशा ने मैडम होहलाकोव के पास न जाना ही बेहतर समझा और वह
उसे अलविदा कहे बिना ही वह घर से निकल गया। लेकिन जैसे ही उसने दरवाजा खोला, उसने देखा कि मैडम होहलाकोव उसके सामने खड़ी हैं। पहले ही शब्द से अलेयोशा समझ गया कि वह उससे मिलने के लिए जानबूझकर इंतजार कर रही थीं।
“एलेक्सी फ्योदोरोविच, यह बहुत बुरा है। यह सब बचकाना बकवास है और
बेतुका। मुझे विश्वास है कि तुम सपने नहीं देखोगे... यह मूर्खता है, मूर्खता के सिवा कुछ नहीं!" उसने तुरंत उस पर हमला करते हुए कहा।
“बस उसे यह मत बताना,” अलेयोशा ने कहा, “वरना वह नाराज हो जाएगी, और यही सही है।”
अब उसके लिए बुरा होगा।
“एक समझदार नौजवान की समझदारी भरी सलाह। क्या मुझे यह समझना चाहिए कि...”
आपने उसकी लाचार हालत पर दया करके ही उससे सहमति जताई, क्योंकि आप विरोध करके उसे नाराज नहीं करना चाहते थे?
“नहीं, बिलकुल नहीं। मैंने जो कहा, उसमें मैं पूरी तरह गंभीर था,” अलेयोशा ने कहा।
मजबूती से।
इस बारे में गंभीरता से सोचना असंभव है, अकल्पनीय है, और सबसे पहले तो मैं
वह फिर कभी तुम्हारे घर नहीं आएगी, और मैं उसे अपने साथ ले जाऊंगी, तुम इस बात का यकीन कर लो।"
“लेकिन क्यों?” अलेयोशा ने पूछा। “यह सब बहुत दूर की बात है। हमें शायद इंतज़ार करना पड़ेगा।”
और डेढ़ साल।"
“अरे, एलेक्सी फ्योदोरोविच, यह बिल्कुल सच है, और आपके पास समय होगा।”
डेढ़ साल में हज़ार बार झगड़ा और अलगाव। लेकिन मैं बहुत दुखी हूँ! हालाँकि यह सब बेतुका है, फिर भी मेरे लिए बहुत बड़ा झटका है। मुझे ऐसा लग रहा है जैसे मैं फ़ामुसोव के नाटक 'सॉरो फ्रॉम विट' के आखिरी दृश्य में हूँ। तुम चात्स्की हो और वह सोफ़्या है, और ज़रा सोचो, मैं तुमसे सीढ़ियों पर मिलने दौड़ कर आई हूँ, और नाटक में घातक दृश्य सीढ़ियों पर ही होता है। मैंने सब कुछ सुना; मैं लगभग गिर ही गई थी। तो यही है उसकी भयानक रात और हाल के उसके हिस्टीरिया का कारण! इसका मतलब बेटी के लिए प्यार है, लेकिन माँ के लिए मौत। इससे अच्छा तो मैं अभी अपनी कब्र में होती। और इससे भी ज़्यादा गंभीर बात, उसने यह पत्र क्या लिखा है? मुझे अभी दिखाओ, अभी!
“नहीं, इसकी कोई ज़रूरत नहीं है। मुझे बताइए, कैटेरिना इवानोव्ना अब कैसी हैं? मुझे अवश्य ही जानना।"
“वह अभी भी बेहोशी की हालत में है; उसे होश नहीं आया है। उसकी चाचियाँ...”
यहां हैं; लेकिन वे आहें भरने और खुद को बड़ा दिखाने के अलावा कुछ नहीं करते। हर्ज़ेनस्टुबे आए, और वे इतने घबराए हुए थे कि मुझे समझ नहीं आ रहा था कि मैं उनके लिए क्या करूँ। मैंने लगभग डॉक्टर को बुलाने का सोचा था। उन्हें मेरी गाड़ी में घर ले जाया गया। और इन सबके ऊपर, आप और यह पत्र! यह सच है कि डेढ़ साल तक कुछ नहीं हो सकता। भगवान के नाम पर, आपके मरते हुए बड़े भाई के नाम पर, मुझे वह पत्र दिखाओ, एलेक्सी फ्योदोरोविच। मैं उनकी माँ हूँ। अगर आप चाहें तो इसे अपने हाथ में पकड़ें, और मैं इसे ऐसे ही पढ़ूँगी।

नहीं, मैं तुम्हें यह नहीं दिखाऊँगी। भले ही उसने इसकी अनुमति दे दी हो, मैं नहीं दिखाऊँगी। मैं
मैं कल आ रहा हूँ, और अगर आप चाहें तो हम कई बातों पर चर्चा कर सकते हैं, लेकिन अब अलविदा!
और अलेयोशा दौड़कर सीढ़ियों से नीचे सड़क पर चला गया।

अध्याय दो

गिटार के साथ स्मर्ज्याकोव

उसके पास समय बिल्कुल नहीं था। लीज़ को अलविदा कहते हुए ही उसके मन में यह विचार आया कि उसे अपने भाई दिमित्री को ढूंढने के लिए कोई तरकीब अपनानी ही होगी, जो जाहिर तौर पर उससे दूर ही रह रहा था। काफी रात हो चुकी थी, लगभग तीन बज रहे थे। अलेयोशा का पूरा मन मठ की ओर, अपने मरते हुए संत की ओर लगा हुआ था, लेकिन दिमित्री से मिलने की ज़रूरत हर चीज़ से ज़्यादा ज़रूरी थी। हर घंटे के साथ अलेयोशा के मन में यह विश्वास और मज़बूत होता जा रहा था कि कोई बड़ी विपत्ति आने वाली है। वह विपत्ति क्या होगी, और उस पल वह अपने भाई से क्या कहेगा, यह वह शायद निश्चित रूप से नहीं कह सकता था। "भले ही मेरे उपकारी को मेरे बिना ही मरना पड़े, फिर भी मुझे जीवन भर इस बात का पछतावा नहीं रहेगा कि मैं कुछ बचा सकता था और मैंने ऐसा नहीं किया, बल्कि आगे बढ़ गया और जल्दी से घर चला गया। अगर मैं अपनी योजना के अनुसार चलूँ, तो मैं उनके महान उपदेश का पालन करूँगा।"
उसकी योजना अपने भाई दिमित्री को अचानक पकड़ने और उसके ऊपर चढ़ने की थी।
पिछले दिन की तरह, वह बाड़ के पास से होकर बगीचे में जाएगा और ग्रीष्मकालीन कुटिया में बैठ जाएगा। अलेयोशा ने सोचा कि अगर दिमित्री वहाँ नहीं होगा, तो वह फोमा या घर की महिलाओं को अपने बारे में नहीं बताएगा, बल्कि ग्रीष्मकालीन कुटिया में ही छिपा रहेगा, चाहे उसे शाम तक वहीं इंतजार करना पड़े। अगर पहले की तरह, दिमित्री ग्रुशेंका के आने का इंतजार कर रहा होगा, तो उसके ग्रीष्मकालीन कुटिया में आने की पूरी संभावना होगी। हालाँकि, अलेयोशा ने अपनी योजना के विवरण पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया, बल्कि उस पर अमल करने का निश्चय किया, भले ही इसका मतलब उस दिन मठ वापस न लौटना ही क्यों न हो।
सब कुछ बिना किसी बाधा के हुआ, उसने सारी रुकावटें पार कर लीं।
लगभग उसी जगह पर जहाँ वह कल था, और चुपके से ग्रीष्मकालीन घर में घुस गया। वह किसी की नज़र में नहीं आना चाहता था। घर की मालकिन और फोमा भी, अगर वह यहाँ होता, तो अपने भाई के प्रति वफादार होते और उसके निर्देशों का पालन करते, और इसलिए अलेयोशा को बगीचे में आने से मना कर देते, या दिमित्री को चेतावनी दे देते कि उसे ढूँढा जा रहा है और उसके बारे में पूछताछ की जा रही है।
गर्मी के घर में कोई नहीं था। अलेयोशा बैठ गया और सोचने लगा...
प्रतीक्षा। उसने ग्रीष्मकालीन घर के चारों ओर नज़र घुमाई, जो उसे किसी तरह पहले से कहीं अधिक प्राचीन लग रहा था। हालाँकि दिन कल की तरह ही सुहावना था, फिर भी इस बार यह जगह दयनीय सी लग रही थी। मेज पर एक गोलाकार निशान था, जो शायद कल ब्रांडी का गिलास गिरने से बना था। उबाऊ प्रतीक्षा के समय में हमेशा की तरह उसके मन में मूर्खतापूर्ण और निरर्थक विचार आ रहे थे। उदाहरण के लिए, वह सोच रहा था कि वह ठीक उसी जगह क्यों बैठा है जहाँ वह पहले बैठा था, दूसरी कुर्सी पर क्यों नहीं बैठा। अंततः वह बहुत उदास हो गया—निराशा और अनिश्चितता से उदास। लेकिन वह वहाँ पंद्रह मिनट से अधिक नहीं बैठा था कि अचानक उसे कहीं पास ही गिटार की झंकार सुनाई दी। लोग बैठे थे, या अभी-अभी बैठे थे, बीस कदम से भी कम दूरी पर झाड़ियों में कहीं। अलेयोशा को अचानक याद आया कि कल ग्रीष्मकालीन घर से बाहर आते समय, उसने बाड़ के पास बाईं ओर झाड़ियों के बीच एक पुरानी हरी नीची बगीचे की कुर्सी देखी थी। लोग अब उस पर बैठे होंगे। वे कौन थे?
अचानक एक आदमी की आवाज मीठी, पतली और सुरीली लगने लगी।
गिटार बजाते हुए:
अजेय शक्ति के साथ
मैं अपनी प्रियतमा से बंधा हुआ हूँ।
हे प्रभु, दया करो!
उस पर भी और मुझ पर भी!
उस पर भी और मुझ पर भी!
उस पर भी और मुझ पर भी!

आवाज बंद हो गई। यह एक नौकर की कर्कश आवाज थी, एक नौकर का गाना। अचानक एक और आवाज, एक महिला की, ने व्यंग्यपूर्ण और शरमाते हुए, हालांकि बनावटी ढंग से पूछा:
“पावेल फ्योदोरोविच, आप इतने लंबे समय से हमसे मिलने क्यों नहीं आए? क्यों?”
क्या आप हमेशा हमें नीचा समझते हैं?
"बिल्कुल नहीं," एक व्यक्ति की आवाज ने विनम्रतापूर्वक, लेकिन दृढ़ता से जवाब दिया।
यह स्पष्ट था कि पुरुष का पलड़ा भारी था और महिला उसे लुभाने की कोशिश कर रही थी। अलेयोशा ने सोचा, "मुझे लगता है कि वह पुरुष स्मरद्याकोव ही होगा, उसकी आवाज़ से। और वह महिला यहाँ के घर की बेटी होगी, जो मॉस्को से आई है, वही जो पूंछ वाली पोशाक पहनती है और मार्फा में सूप पीने जाती है।"
“मुझे हर तरह की कविताएँ बहुत पसंद हैं, बशर्ते उनमें तुकबंदी हो,” महिला ने कहा।
आवाज जारी रही। "आप आगे क्यों नहीं बोलते?"
उस आदमी ने फिर गाना गाया:
मुझे शाही दौलत से क्या लेना-देना है?
अगर मेरे प्रियतम स्वस्थ हों तो?
प्रभु दया करो
उस पर भी और मुझ पर भी!
उस पर भी और मुझ पर भी!
उस पर भी और मुझ पर भी!
“पिछली बार तो और भी बढ़िया था,” महिला की आवाज़ ने कहा। “तुमने गाया था।”
“अगर मेरी जान स्वस्थ हो”; यह ज़्यादा कोमल लगता था। मुझे लगता है कि तुम आज भूल गए हो।
"कविता बकवास है!" स्मर्ज्याकोव ने संक्षिप्त लहजे में कहा।
“अरे नहीं! मुझे कविता बहुत पसंद है।”
“जहां तक कविता की बात है, यह पूरी तरह बकवास है। अपने आप को समझो, चाहे कोई भी हो।”
क्या हम सब तुकबंदी में बात करें? और अगर हम सब तुकबंदी में बात करने लगें, भले ही सरकार ने ऐसा फरमान जारी किया हो, तो हम ज्यादा कुछ कह नहीं पाएंगे, है ना? कविता का कोई फायदा नहीं, मारिया कोंद्रत्येवना।
“आप कितने होशियार हैं! आप हर चीज में इतनी गहराई तक कैसे पहुंच गए?”
महिला की आवाज में दुष्प्रचार का भाव बढ़ता जा रहा था।
मैं इससे बेहतर कर सकता था। मुझे इससे अधिक जानकारी हो सकती थी।
अगर बचपन से ही मेरी किस्मत ऐसी न होती, तो मैं द्वंद्वयुद्ध में उसे गोली मार देता अगर कोई मुझे गालियां देता, सिर्फ इसलिए कि मैं एक गंदे भिखारी का वंशज हूं और मेरा कोई बाप नहीं है। और वे लोग मॉस्को में मेरे मुंह पर ये बात उछालते थे। ये बात ग्रिगोरी वासिलीविच की वजह से उन तक पहुंची थी। ग्रिगोरी वासिलीविच मुझे मेरे जन्म के खिलाफ विद्रोह करने का दोषी ठहराते हैं, लेकिन मैं तो जन्म से पहले ही उन्हें मुझे मार डालने की इजाजत दे देता ताकि मैं दुनिया में आता ही न। वे लोग बाजार में ये बातें कहते थे, और तुम्हारी मां भी, बड़ी बेरुखी से, मुझे बताने लगी कि उसके बाल सिर पर चटाई जैसे हैं, और उसकी लंबाई पांच फुट से थोड़ी कम है। थोड़ी सी की बात क्यों कर रही थी, जबकि वो बाकी सब की तरह 'थोड़ी सी' कह सकती थी? वो इसे एक आम किसान की भावना की तरह दिखाना चाहती थी। क्या एक रूसी किसान को एक शिक्षित व्यक्ति की तुलना में भावनाशील कहा जा सकता है? अपनी अज्ञानता में, उसे तो बिल्कुल भी भावनाशील नहीं कहा जा सकता। बचपन से ही जब भी मैं 'थोड़ा सा' शब्द सुनती हूँ, तो मेरा गुस्सा फूट पड़ता है। मुझे पूरा रूस, मारिया कोंड्राटयेवना से नफरत है।
“अगर आप सेना में कैडेट होते, या युवा सैनिक होते, तो आप ऐसा नहीं करते।”
भले ही तुमने ऐसी बातें की हों, लेकिन तुम पूरे रूस की रक्षा के लिए अपनी तलवार निकाल लेते।"
“मैं हुस्सार नहीं बनना चाहती, मार्या कोंड्राट्येवना, और इससे भी बढ़कर, मैं
सभी सैनिकों को समाप्त करना चाहेंगे।"
और जब कोई शत्रु आएगा, तो हमारी रक्षा कौन करेगा?
“रक्षा की कोई आवश्यकता नहीं है। 1812 में एक बड़ा आक्रमण हुआ था।”

नेपोलियन, जो फ्रांस के पहले सम्राट और वर्तमान सम्राट के पिता थे, ने रूस पर विजय प्राप्त की थी, और अगर उन्होंने हमें जीत लिया होता तो यह अच्छा ही होता। एक चतुर राष्ट्र एक मूर्ख राष्ट्र को जीत कर अपने राज्य में मिला लेता। हमारी व्यवस्थाएँ बिल्कुल अलग होतीं।
क्या वे अपने देश में हमसे कहीं बेहतर स्थिति में हैं? मुझे ऐसा नहीं लगता।
"मैं अपने एक परिचित शौकीन व्यक्ति को तीन युवा अंग्रेजों से बदल दूंगी," मार्या कोंड्राट्येवना ने कोमल भाव से कहा, निस्संदेह अपने शब्दों के साथ एक बेहद उदास निगाह भी डाली।
"यह तो हर किसी की अपनी पसंद है।"
लेकिन आप बिल्कुल एक विदेशी की तरह हैं—बिल्कुल एक अत्यंत सज्जन व्यक्ति की तरह।
मैं तुम्हें यह बात बता रहा हूँ, हालाँकि इससे मुझे शर्म आती है।
अगर आप जानना चाहें तो, वहां के लोग और यहां के लोग अपने-अपने मामलों में बिल्कुल एक जैसे हैं। ये लोग कुटिल हैं। ये ठग हैं, फर्क सिर्फ इतना है कि वहाँ बदमाश चमकीले जूते पहनता है और यहाँ गंदगी में लोटता है और उसे इसमें कोई बुराई नहीं दिखती। रूसी जनता को मार पड़नी चाहिए, जैसा कि फ्योदोर पावलोविच ने कल बिल्कुल सही कहा था, भले ही वह पागल हो, और उसके सभी बच्चे भी।
आपने खुद कहा था कि आप इवान फ्योदोरोविच का बहुत सम्मान करते हैं।
लेकिन उसने कहा कि मैं एक घटिया नौकर हूँ। उसे लगता है कि मैं अनुशासनहीन हो सकता हूँ।
वह इस मामले में गलत है। अगर मेरी जेब में कुछ पैसे होते, तो मैं बहुत पहले ही यहाँ से चला गया होता। दिमित्री फ्योदोरोविच अपने व्यवहार, सोच और गरीबी में किसी भी नौकर से भी बदतर है। उसे कुछ भी करना नहीं आता, फिर भी हर कोई उसका सम्मान करता है। मैं भले ही मामूली सूप बनाने वाला हूँ, लेकिन अगर किस्मत साथ दे तो मैं पेट्रोव्का, मॉस्को में एक कैफे रेस्टोरेंट खोल सकता हूँ, क्योंकि मेरा खाना पकाने का हुनर कुछ खास है, और मॉस्को में विदेशियों को छोड़कर कोई भी ऐसा नहीं है जिसका खाना पकाने का हुनर कुछ खास हो। दिमित्री फ्योदोरोविच एक भिखारी है, लेकिन अगर उसे देश के सबसे बड़े काउंट के बेटे को चुनौती देनी पड़े, तो वह उससे लड़ जाएगा। वैसे वह मुझसे किस तरह बेहतर है? क्योंकि वह मुझसे कहीं ज्यादा मूर्ख है। देखो उसने बिना किसी ज़रूरत के कितना पैसा बर्बाद कर दिया है!
"द्वंद्वयुद्ध कितना रोमांचक होगा," मार्या कोंड्राटयेवना ने अचानक कहा। "कैसे?"
“यह बहुत ही भयानक और साहसी कार्य होना चाहिए, खासकर जब युवा अधिकारी हों।”
हाथों में पिस्तौल लिए एक-दूसरे पर गोलियां चला रहे हैं, वो भी किसी महिला के लिए। कितना शानदार नज़ारा! आह, काश लड़कियों को भी देखने की इजाज़त होती, मैं तो एक लड़की को देखने के लिए कुछ भी दे देता!
“किसी पर गोली चलाना तो ठीक है, लेकिन जब वह सीधे आपके चेहरे पर गोली चला रहा हो, तो आपको बहुत मूर्खता महसूस होगी। आप भाग जाना ही बेहतर समझेंगी, मार्या कोंड्राट्येवना।”
“क्या तुम्हारा मतलब भाग जाने से है?” लेकिन स्मरद्याकोव ने इस पर ध्यान नहीं दिया।
जवाब देने के लिए। एक पल की चुप्पी के बाद गिटार फिर से बज उठा, और उसने उसी ऊँची आवाज़ में फिर से गाना शुरू कर दिया:
आप जो भी कहें,
मैं बहुत दूर चला जाऊंगा।
जीवन उज्ज्वल और आनंदमय होगा।
बहुत दूर शहर में।
मैं शोक नहीं करूंगा।
मैं बिलकुल भी शोक नहीं करूंगा।
मेरा शोक मनाने का कोई इरादा नहीं है।
फिर कुछ अप्रत्याशित हुआ। अलेयोशा को अचानक छींक आ गई।
वे सब चुप थे। अलेयोशा उठा और उनकी ओर चल पड़ा। उसने देखा कि स्मरद्याकोव सजे-धजे कपड़े पहने, चमकीले जूते पहने, बालों में पोमेड लगाए और शायद कर्ल किए हुए था। गिटार बगीचे की बेंच पर पड़ा था। उसकी साथी घर की बेटी थी, जिसने दो गज लंबी ट्रेल वाली हल्के नीले रंग की पोशाक पहनी थी। वह जवान थी और दिखने में बुरी नहीं थी, लेकिन उसका चेहरा इतना गोल और झुर्रियों से भरा था।

“क्या मेरा भाई दिमित्री जल्द ही वापस आएगा?” अलेयोशा ने उतने ही उत्साह से पूछा।
उन्होंने यथासंभव संयम बनाए रखा।
स्मरद्याकोव धीरे-धीरे उठे; मारिया कोंड्राट्येवना भी उठीं। “मैं दिमित्री फ्योदोरोविच के बारे में कैसे जानूँ? मैं उनका अपना रिश्तेदार तो नहीं हूँ।”
"रक्षक," स्मर्ड्याकोव ने शांत, स्पष्ट और घमंडी लहजे में उत्तर दिया।
“लेकिन मैंने तो बस इतना पूछा था कि क्या आपको पता है?” अलेयोशा ने समझाया। “मुझे उसके ठिकाने के बारे में कुछ नहीं पता और मैं जानना भी नहीं चाहता।”
लेकिन मेरे भाई ने मुझे बताया कि आपने उसे सब कुछ बता दिया है जो वहाँ चल रहा है।
घर पर जाकर, मैंने उसे वादा किया कि जब अग्रफेना अलेक्जेंड्रोवना आएगी तो मैं उसे बता दूंगा।
स्मरद्याकोव ने जानबूझकर, बिना किसी भाव के उसकी ओर देखा। "और इस बार तुम अंदर कैसे आए, जबकि द्वार एक घंटे से बंद था?"
कितने समय पहले?” उसने अलेयोशा की ओर देखते हुए पूछा।
मैं पीछे वाली गली से बाड़ फांदकर अंदर आया और सीधे चला गया।
"गर्मी के घर में। मुझे उम्मीद है कि आप मुझे माफ कर देंगी," उन्होंने मार्या कोंड्राट्येवना को संबोधित करते हुए कहा। "मैं अपने भाई को ढूंढने की जल्दी में था।"
“अरे, हम इसमें क्या गलती कर सकते हैं!” अलेयोशा की माफी से मुग्ध होकर मार्या कोंड्राटयेवना ने धीरे से कहा। “दरअसल दिमित्री फ्योदोरोविच अक्सर इसी तरह ग्रीष्मकालीन घर जाते हैं। हमें पता ही नहीं चलता कि वह यहाँ हैं और ग्रीष्मकालीन घर में बैठे हैं।”
मैं उसे ढूंढने के लिए या आपसे यह जानने के लिए बहुत उत्सुक हूं कि वह इस समय कहां है।
यकीन मानिए, यह उनके लिए बेहद महत्वपूर्ण व्यवसाय का मामला है।
“वह हमें कभी नहीं बताता,” मार्या कोंड्राट्येवना ने तुतलाते हुए कहा। “हालांकि मैं यहां एक दोस्त के रूप में आता था,” स्मरद्याकोव ने फिर से कहना शुरू किया।
“दिमित्री फ्योदोरोविच ने यहाँ भी मुझसे गुरु के बारे में लगातार सवाल पूछकर मुझे बेरहमी से परेशान किया है। ‘क्या खबर है?’ वह पूछते हैं। ‘अंदर क्या चल रहा है? कौन आ रहा है और कौन जा रहा है?’ और क्या मैं उन्हें कुछ और नहीं बता सकता। दो बार तो वह मुझे जान से मारने की धमकी भी दे चुके हैं।”
“मौत के साथ?” अलेयोशा ने आश्चर्य से कहा।
"क्या आपको लगता है कि वह अपने गुस्से को देखते हुए इस बात को ज्यादा महत्व देगा?"
क्या कल आपने खुद को देखा था? वह कहता है कि अगर मैंने अग्रफेना अलेक्जेंड्रोवना को अंदर आने दिया और उसने रात वहीं बिताई, तो सबसे पहले मुझे ही इसका खामियाजा भुगतना पड़ेगा। मैं उससे बहुत डरती हूँ, और अगर मुझे ऐसा करने से और भी ज्यादा डर न लगता, तो मुझे पुलिस को बता देना चाहिए था। भगवान ही जाने वह क्या-क्या न कर दे!
“उस दिन उनके सम्माननीय अधिकारी ने उनसे कहा, ‘मैं तुम्हें ओखली में पीस डालूंगा!’”
मार्या कोंड्राट्येवना द्वारा जोड़ा गया।
“ओह, अगर यह मोर्टार में पीटने की बात है, तो यह शायद सिर्फ बातें ही हों,” टिप्पणी की गई।
अलोशा। "अगर मुझे उनसे मिलने का मौका मिलता, तो शायद मैं उनसे इस बारे में भी बात करता।"
“ठीक है, मैं आपको बस इतना ही बता सकता हूँ,” स्मर्ड्याकोव ने कहा, मानो
मैंने अपना इरादा बदल दिया; “मैं यहाँ एक पुराने दोस्त और पड़ोसी के रूप में आया हूँ, और अगर मैं नहीं आता तो यह अजीब होता। दूसरी ओर, इवान फ्योदोरोविच ने मुझे आज सुबह सबसे पहले लेक स्ट्रीट स्थित आपके भाई के लॉज में भेजा, बिना किसी पत्र के, लेकिन दिमित्री फ्योदोरोविच के लिए एक संदेश के साथ कि मैं यहाँ बाज़ार में स्थित रेस्तरां में उनके साथ भोजन करने जाऊँ। मैं गया, लेकिन आठ बजने के बावजूद दिमित्री फ्योदोरोविच घर पर नहीं मिले। ‘वह यहाँ आए थे, लेकिन अब चले गए हैं,’ ये उनकी मकान मालकिन के शब्द थे। ऐसा लगता है जैसे उनके बीच कोई समझौता हो। शायद इस समय वह इवान फ्योदोरोविच के साथ रेस्तरां में हों, क्योंकि इवान फ्योदोरोविच रात के खाने के लिए घर नहीं आए हैं और फ्योदोर पावलोविच ने एक घंटे पहले अकेले भोजन किया था और अब सोने चले गए हैं। लेकिन मैं आपसे विशेष रूप से विनती

करता हूँ कि मेरे बारे में और मैंने आपको जो बताया है उसके बारे में किसी से बात न करें, क्योंकि वह मुझे बेवजह मार डालेंगे।”
“भाई इवान ने आज दिमित्री को रेस्तरां में आमंत्रित किया था?” अलेयोशा ने दोहराया।
जल्दी से।
"ऐसा है।"
"बाजार में स्थित मेट्रोपोलिस सराय?"
“बिल्कुल वही।”
“ऐसा होने की पूरी संभावना है,” अलेयोशा ने बहुत उत्साहित होकर कहा। “धन्यवाद,”
स्मर्ड्याकोव; यह महत्वपूर्ण है। मैं तुरंत वहां जाऊंगा।
“मुझे धोखा मत देना,” स्मरद्याकोव ने उसके पीछे से पुकारा। “नहीं, मैं संयोगवश ही सराय में चला जाऊंगा। चिंता मत करो।”
“लेकिन एक मिनट रुको, मैं तुम्हारे लिए द्वार खोल देती हूँ,” मार्या चिल्लाई।
कोंड्राट्येवना.
“नहीं; यह शॉर्टकट है, मैं फिर से बाड़ के ऊपर से चला जाऊंगा।” जो उसने सुना था उससे अलेयोशा बहुत घबरा गया। वह दौड़कर गया।
सराय। उनके लिए अपने मठवासी वस्त्रों में सराय के अंदर जाना असंभव था, लेकिन वे प्रवेश द्वार पर अपने भाइयों के बारे में पूछकर उन्हें नीचे बुला सकते थे। लेकिन जैसे ही वे सराय पहुँचे, एक खिड़की खुल गई और उनके भाई इवान ने उसमें से उन्हें आवाज़ दी।
“अलोशा, क्या तुम मेरे पास ऊपर नहीं आ सकते? मैं तुम्हारा बहुत आभारी रहूंगा।”
“हाँ, मैं कर सकती हूँ, बस मुझे ठीक से पता नहीं है कि इस ड्रेस में...”
लेकिन मैं एक अलग कमरे में हूँ। सीढ़ियाँ चढ़ो; मैं तुमसे मिलने के लिए दौड़कर नीचे आ जाऊँगा।
आप।"
एक मिनट बाद अलेयोशा अपने भाई के बगल में बैठा था। इवान अकेला था।
भोजन करना।

अध्याय 3

भाई दोस्त बन जाते हैं

इवान किसी अलग कमरे में नहीं था, बल्कि एक ऐसी जगह पर था जिसे एक पर्दे से अलग कर दिया गया था, ताकि कमरे में मौजूद अन्य लोग उसे देख न सकें। यह प्रवेश द्वार से पहला कमरा था, जिसकी दीवार के साथ एक बुफे (भोजन कक्ष) लगा हुआ था। वेटर लगातार इधर-उधर भाग रहे थे। कमरे में एकमात्र ग्राहक एक बूढ़ा सेवानिवृत्त सैनिक था जो एक कोने में चाय पी रहा था। लेकिन सराय के अन्य कमरों में हमेशा की तरह चहल-पहल थी; वेटरों को पुकारने की आवाजें, बोतलों के कॉर्क खुलने की आवाज, बिलियर्ड गेंदों की खनक, ऑर्गन की धीमी ध्वनि। अलेयोशा जानता था कि इवान आमतौर पर इस सराय में नहीं आता था और उसे आम तौर पर सराय पसंद नहीं थीं। इसलिए उसने सोचा कि वह यहाँ दिमित्री से मिलने के लिए ही आया होगा। लेकिन दिमित्री वहाँ नहीं था।
“क्या मैं आपके लिए मछली, सूप या कुछ और मंगवाऊं? आप सिर्फ चाय पर ही तो नहीं जीते।”
“मान लो,” इवान चिल्लाया, जाहिर तौर पर अलेयोशा को पकड़ने की खुशी से। उसने रात का खाना खत्म कर लिया था और चाय पी रहा था।
“मुझे सूप पीने दो, और उसके बाद चाय भी, मुझे भूख लगी है,” अलेयोशा ने कहा।
खुशी से।
और चेरी जैम? वो भी यहाँ मिलता है। याद है ना, पहले कैसे मिलता था?
क्या आपको बचपन में चेरी जैम पसंद था?
“तुम्हें याद है? मुझे जैम भी दे दो, मुझे अभी भी पसंद है।” इवान ने वेटर को बुलाया और सूप, जैम और चाय का ऑर्डर दिया। “मुझे सब याद है, अलेयोशा, मुझे तुम ग्यारह साल की उम्र तक याद हो।”
मैं लगभग पंद्रह साल का था। पंद्रह और ग्यारह में इतना फर्क होता है कि उस उम्र में भाई कभी दोस्त नहीं बन पाते। मुझे नहीं पता कि मैं तुम्हें पसंद भी करता था या नहीं। जब मैं पहले कुछ सालों के लिए मॉस्को गया, तो मैंने तुम्हारे बारे में बिल्कुल नहीं सोचा। फिर, जब तुम खुद मॉस्को आए, तो हम शायद एक बार कहीं मिले थे। और अब मुझे यहां आए तीन महीने से ज्यादा हो गए हैं, और अब तक हमने एक-दूसरे से मुश्किल से एक शब्द भी कहा है। कल मैं जा रहा हूँ, और मैं यहीं बैठे-बैठे सोच रहा था कि तुमसे अलविदा कहने के लिए कैसे मिलूँ, और तभी तुम यहाँ से गुज़र गए।
"तो क्या आप मुझसे मिलने के लिए बहुत उत्सुक थे?"
“हाँ, बिल्कुल। मैं तुम्हें एक बार अच्छे से जान लेना चाहता हूँ, और तुम भी मुझे जान लो। और फिर अलविदा कह देना। मेरा मानना है कि लोगों को जाने से ठीक पहले जान लेना सबसे अच्छा होता है। मैंने देखा है कि तुम पिछले तीन महीनों से मुझे कैसे देख रहे हो। तुम्हारी आँखों में हमेशा एक उम्मीद की लकीर रही है, और मैं इसे बर्दाश्त नहीं कर सकता। इसी वजह से मैं तुमसे दूर रहा। लेकिन अंत में मैंने तुम्हारा सम्मान करना सीख लिया है। मैंने सोचा, यह छोटा सा आदमी दृढ़ है। हालाँकि मैं हँस रहा हूँ, मैं गंभीर हूँ। तुम सच में दृढ़ हो, है ना? मुझे ऐसे लोग पसंद हैं जो अपने सिद्धांतों पर अडिग रहते हैं, चाहे वे तुम्हारे जैसे छोटे ही क्यों न हों। तुम्हारी उम्मीद भरी आँखें अब मुझे परेशान नहीं करतीं, बल्कि मुझे उनसे प्यार हो गया, उन उम्मीद भरी आँखों से। लगता है तुम किसी कारण से मुझसे प्यार करते हो, अलेयोशा?”
“मैं तुमसे प्यार करता हूँ, इवान। दिमित्री तुम्हारे बारे में कहता है—इवान एक कब्र है! मैं तुम्हारे बारे में कहता हूँ,
इवान एक पहेली है। तुम आज भी मेरे लिए एक पहेली हो। लेकिन मैं तुम्हारे बारे में कुछ समझता हूँ, और यह बात मुझे आज सुबह तक समझ नहीं आई थी।
“यह क्या है?” इवान हँसते हुए बोला।
“तुम्हें गुस्सा नहीं आएगा?” अलेयोशा भी हंस पड़ा।
"कुंआ?"
“तुम भी उतने ही युवा हो जितने कि तेईस साल के दूसरे युवक होते हैं।”

तुम तो बस एक नौजवान, मासूम और अच्छे लड़के हो, बिल्कुल अनुभवहीन! अब, क्या मैंने तुम्हारा बहुत अपमान किया है?
“इसके विपरीत, मैं एक संयोग से चकित हूँ,” इवान ने गर्मजोशी से कहा।
हंसमुख भाव से। “क्या आप विश्वास करेंगे कि उसके साथ उस दृश्य के बाद से, मैंने अपनी जवानी के अलावा और कुछ नहीं सोचा है, और जैसे ही आपने यह अनुमान लगाया, आप इसके बारे में बात करने लगे। क्या आप जानते हैं कि मैं यहाँ बैठकर खुद से सोच रहा हूँ: कि अगर मैं जीवन में विश्वास न करता, अगर मैं अपनी प्रेमिका में विश्वास खो देता, चीजों की व्यवस्था में विश्वास खो देता, वास्तव में आश्वस्त हो जाता कि सब कुछ अव्यवस्थित, निंदनीय और शायद शैतान से भरा हुआ अराजकता है, अगर मैं मनुष्य के मोहभंग की हर भयावहता से आहत हो जाता—तब भी मैं जीना चाहता और एक बार इस प्याले का स्वाद चखने के बाद, मैं इसे तब तक नहीं छोड़ता जब तक कि इसे पूरा न पी जाता! हालाँकि, तीस की उम्र में, मैं निश्चित रूप से प्याला छोड़ दूँगा, भले ही मैंने इसे खाली न किया हो, और मुड़ जाऊँगा—मुझे नहीं पता कहाँ। लेकिन तीस की उम्र तक, मैं जानता हूँ कि मेरी जवानी हर चीज पर विजय प्राप्त करेगी—हर मोहभंग पर, जीवन के प्रति हर घृणा पर। मैंने खुद से कई बार पूछा है कि क्या दुनिया में कोई ऐसी निराशा है जो जीवन के लिए इस उन्मत्त और शायद अनुचित प्यास को पराजित कर सके।” मेरे भीतर जीवन है, और मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि तीस वर्ष की आयु तक तो जीवन नहीं है, और फिर मैं स्वयं ही इसे खो दूँगा, ऐसा मुझे लगता है। कुछ निरर्थक, क्षय रोग से ग्रस्त नैतिकतावादी—और विशेष रूप से कवि—अक्सर जीवन की उस प्यास को नीच कहते हैं। यह करामाज़ोव परिवार की विशेषता है, यह सच है, जीवन की वह प्यास जो हर चीज़ की परवाह नहीं करती; निस्संदेह आप में भी यह है, लेकिन यह नीच क्यों है? हमारे ग्रह पर अभिकेन्द्रीय बल अभी भी बहुत प्रबल है, अलेयोशा। मेरे भीतर जीवन की लालसा है, और मैं तर्क के विरुद्ध भी जीता रहता हूँ। हालाँकि मैं ब्रह्मांड की व्यवस्था में विश्वास नहीं करता, फिर भी मुझे वसंत ऋतु में खिलने वाले चिपचिपे छोटे पत्ते प्यारे लगते हैं। मुझे नीला आकाश प्यारा लगता है, मुझे कुछ लोग प्यारे लगते हैं, जिन्हें आप कभी-कभी बिना कारण जाने ही प्यार कर बैठते हैं। मुझे मनुष्यों द्वारा किए गए कुछ महान कार्य प्यारे लगते हैं, हालाँकि शायद मैंने उनमें विश्वास करना छोड़ दिया है, फिर भी पुरानी आदत के कारण हृदय उन्हें महत्व देता है। ये आपके लिए सूप लाए हैं, इसे खाएँ, यह आपको अच्छा लगेगा। यह बेहतरीन सूप है। मुझे पता है कि यहाँ कैसे पहुँचना है। मैं यूरोप की यात्रा करना चाहता हूँ, अलेयोशा, मैं यहीं से निकलूँगा। और फिर भी मैं जानता हूँ कि मैं केवल एक कब्रिस्तान जा रहा हूँ, लेकिन यह एक बहुत ही पवित्र कब्रिस्तान है! वहाँ लेटे हुए मृत लोग अनमोल हैं, उनके ऊपर का हर पत्थर अतीत के ऐसे जोशीले जीवन की कहानी कहता है, उनके काम, उनकी सच्चाई, उनके संघर्ष और उनके विज्ञान में ऐसे प्रबल विश्वास की कहानी कहता है, कि मैं जानता हूँ कि मैं ज़मीन पर गिरकर उन पत्थरों को चूमूँगा और उन पर रोऊँगा; हालाँकि मुझे अपने दिल में यकीन है कि यह लंबे समय से केवल एक कब्रिस्तान ही है। और मैं निराशा से नहीं रोऊँगा, बल्कि इसलिए रोऊँगा क्योंकि मैं अपने आँसुओं में खुश रहूँगा, मैं अपनी आत्मा को अपनी भावनाओं में डुबो दूँगा। मुझे बसंत ऋतु में चिपचिपी पत्तियाँ, नीला आकाश पसंद है—बस यही है। यह बुद्धि या तर्क का मामला नहीं है, यह अपने भीतर से, अपने दिल से प्यार करना है। इंसान अपनी जवानी की पहली ताकत से प्यार करता है। क्या तुम्हें मेरी इस लंबी-चौड़ी बात का कुछ समझ आया, अलेयोशा?” इवान अचानक हँस पड़ा।
“मैं अच्छी तरह समझता हूँ, इवान। इंसान अपने भीतर से, अपने दिल से प्यार करना चाहता है।
“पेट। तुमने ये बात बहुत अच्छे से कही और मुझे बेहद खुशी है कि तुम्हारे अंदर जीवन के लिए इतनी लालसा है,” अलेयोशा ने कहा। “मुझे लगता है कि हर किसी को दुनिया में हर चीज से बढ़कर जीवन से प्यार करना चाहिए।”
"क्या आप जीवन के अर्थ से अधिक जीवन से प्रेम करते हैं?"
"बिल्कुल, इसे पसंद करो, जैसा कि तुम कहते हो, तर्क की परवाह किए बिना, यह होना ही चाहिए।"
तर्क का अध्ययन करो, और तभी इसका अर्थ समझ पाओगे। मैं बहुत समय से यही सोचता आ रहा हूँ। इवान, तुम्हारा आधा काम हो चुका है, तुम जीवन से प्यार करते हो, अब तुम्हें बस दूसरा आधा काम पूरा करने की कोशिश करनी है और तुम बच जाओगे।
“तुम मुझे बचाने की कोशिश कर रहे हो, लेकिन शायद मैं खोया नहीं हूँ! और इसका क्या मतलब है?”
आपके दूसरे भाग का क्या मतलब है?

“क्यों, हमें अपने मृतकों को जीवित करना होगा, जो शायद मरे नहीं हैं।”
सभी को नमस्कार। आइए, मुझे चाय पीने दीजिए। इवान, मुझे आपकी बातचीत से बहुत खुशी हुई।
मुझे लगता है कि आप प्रेरित महसूस कर रहे हैं। मुझे ऐसे पेशे बहुत पसंद हैं।
ऐसे नौसिखियों से दूर रहो। एलेक्सी, तुम तो बड़े दृढ़ निश्चयी हो। क्या सच में तुम मठ छोड़ने का इरादा रखते हो?
"हां, मेरे बड़े मुझे दुनिया में भेजते हैं।"
हम तब दुनिया में एक दूसरे से मिलेंगे। हम मेरे मरने से पहले ही मिलेंगे।
तीस की उम्र में, मैं इस प्याले से मुंह मोड़ना शुरू कर दूंगा। पिताजी सत्तर की उम्र तक अपने प्याले से मुंह नहीं मोड़ना चाहते, असल में वे अस्सी तक जीने का सपना देखते हैं, ऐसा वे कहते हैं। हालांकि वे एक मसखरे हैं, फिर भी वे इसे बहुत गंभीरता से लेते हैं। वे एक मजबूत चट्टान पर खड़े हैं, वे अपनी कामुकता पर खड़े हैं—हालांकि तीस की उम्र के बाद, वास्तव में, सहारा लेने के लिए कुछ और नहीं बचता... लेकिन सत्तर तक जीना बुरा है, तीस तक जीना ही बेहतर है; कोई खुद को धोखा देकर 'कुलीनता की एक झलक' बनाए रख सकता है। क्या तुमने आज दिमित्री को देखा?
“नहीं, लेकिन मैंने स्मर्ज्याकोव को देखा,” और अलेयोशा ने जल्दी से, हालांकि बारीकी से, कहा,
उन्होंने स्मर्ज्याकोव के साथ अपनी मुलाकात का वर्णन किया। इवान उत्सुकता से सुनने लगा और उसने उनसे सवाल पूछे।
लेकिन उसने मुझसे विनती की कि मैं दिमित्री को यह न बताऊं कि उसने मुझे उसके बारे में बताया था।
अलोशा ने आगे कहा। इवान ने भौंहें चढ़ाकर सोचना शुरू किया।
“क्या तुम स्मरद्याकोव के बयान से नाराज़ हो?” अलेयोशा ने पूछा। “हाँ, उसी के बयान से। धिक्कार है उसे, मैं तो दिमित्री से मिलना ही चाहता था, लेकिन
“अब इसकी कोई जरूरत नहीं है,” इवान ने अनिच्छा से कहा।
"लेकिन क्या आप सचमुच इतनी जल्दी जा रहे हैं, भाई?"
"हाँ।"
“दिमित्री और उसके पिता का क्या होगा? इसका अंत कैसे होगा?” अलेयोशा ने पूछा।
उद्वेग से।
तुम हमेशा इसी बात को दोहराते रहते हो! मेरा इससे क्या लेना-देना है? क्या मैं ही मेरा
भाई दिमित्री का रखवाला?” इवान ने चिढ़कर कहा, लेकिन फिर अचानक उसके चेहरे पर कड़वाहट भरी मुस्कान आ गई। “केन ने अपने मारे गए भाई के बारे में यही जवाब दिया था, है ना? शायद तुम इस समय यही सोच रहे हो? खैर, धिक्कार है, मैं यहाँ उनका रखवाला बनकर नहीं रह सकता, है ना? मैंने अपना काम पूरा कर लिया है और मैं जा रहा हूँ। क्या तुम्हें लगता है कि मैं दिमित्री से जलता हूँ, कि मैं पिछले तीन महीनों से उसकी खूबसूरत कैटरीना इवानोव्ना को चुराने की कोशिश कर रहा हूँ? बकवास, मेरा अपना काम था। मैंने उसे पूरा कर लिया। मैं जा रहा हूँ। मैंने उसे अभी-अभी पूरा किया है, तुम गवाह थे।”
“कतेरीना इवानोव्ना के यहाँ?”
“हाँ, और मैंने खुद को हमेशा के लिए मुक्त कर लिया है। और आखिरकार, मुझे करना क्या है?”
दिमित्री का क्या? दिमित्री का कोई लेना-देना नहीं है। मुझे कैटेरिना इवानोव्ना के साथ अपना काम निपटाना था। आप जानते हैं, इसके विपरीत, दिमित्री ने ऐसा व्यवहार किया जैसे हमारे बीच कोई समझौता हो। मैंने उससे ऐसा करने के लिए नहीं कहा था, लेकिन उसने पूरी गंभीरता से उसे मुझे सौंप दिया और हमें अपना आशीर्वाद दिया। यह सब बहुत अजीब है। आह, अलेयोशा, अगर तुम्हें पता होता कि मेरा दिल अब कितना हल्का है! क्या तुम विश्वास करोगे, मैं यहाँ बैठकर अपना खाना खा रहा था और अपनी आज़ादी के पहले घंटे का जश्न मनाने के लिए शैम्पेन मंगवाने ही वाला था। छी! लगभग छह महीने से यह सब चल रहा था, और अचानक मैंने इसे खत्म कर दिया। कल तक भी मैं यह नहीं सोच सकता था कि अगर मैं चाहूँ तो इसे खत्म करना कितना आसान होगा।
“क्या तुम अपने प्यार की बात कर रहे हो, इवान?”
"मेरी प्रेम कहानी, अगर आप चाहें तो। मुझे उस युवती से प्यार हो गया, मैं चिंतित था।"

मैं उसके ऊपर बहुत ध्यान दे रहा था और वह मुझे चिंतित कर रही थी। मैं बैठकर उसकी देखभाल कर रहा था... और अचानक सब कुछ ढह गया! आज सुबह मैंने जोश से भरी बातें कीं, लेकिन जाते-जाते मैं जोर से हंस पड़ा। क्या आप विश्वास करेंगे? जी हां, यह बिल्कुल सच है।
“अब तो तुम इस बात से बहुत खुश लग रहे हो,” अलेयोशा ने देखते हुए कहा।
उसका चेहरा, जो अचानक से और भी चमक उठा था।
लेकिन मुझे कैसे पता चलता कि मुझे उसकी ज़रा भी परवाह नहीं थी! हा हा! ऐसा लगता है
आखिरकार मैंने ऐसा नहीं किया। फिर भी वह मुझे कितना आकर्षित करती थी! भाषण देते समय वह कितनी आकर्षक लग रही थी! और क्या आप जानते हैं कि वह अब भी मुझे बेहद आकर्षित करती है, फिर भी उसे छोड़ना कितना आसान है। क्या आपको लगता है कि मैं शेखी बघार रहा हूँ?
"नहीं, शायद यह प्यार नहीं था।"
इवान हंसते हुए बोला, "अलोशा, प्यार के बारे में विचार मत करो, यह..."
तुम्हारे लिए यह ठीक नहीं है। आज सुबह तुम कितनी जल्दी में चर्चा में कूद पड़े! मैं तुम्हें चूमना भूल गया... लेकिन उसने मुझे कितना सताया! यह सचमुच एक 'घाव' के पास बैठने जैसा था। आह, उसे पता था कि मैं उससे कितना प्यार करता हूँ! वह मुझसे प्यार करती थी, दिमित्री से नहीं,” इवान ने खुशी से कहा। “दिमित्री के लिए उसकी भावनाएँ बस एक आत्म-पीड़ा थीं। मैंने अभी उसे जो कुछ भी बताया वह बिल्कुल सच था, लेकिन सबसे बुरी बात यह है कि उसे यह समझने में पंद्रह या बीस साल लग सकते हैं कि वह दिमित्री की परवाह नहीं करती, बल्कि मुझसे प्यार करती है जिसे वह सताती है, और शायद आज के सबक के बावजूद भी वह इसे कभी न समझ पाए। खैर, यही बेहतर है; मैं हमेशा के लिए जा सकता हूँ। वैसे, वह अब कैसी है? मेरे जाने के बाद क्या हुआ?”
अलियोशा ने उसे बताया कि वह बहुत परेशान थी, और अब भी वह परेशान है।
उसने सुना, वह बेहोश और प्रलाप की अवस्था में था।
"क्या मैडम होहलाकोव बढ़ा-चढ़ाकर बातें नहीं कर रही हैं?"
मुझे नहीं लगता।
मुझे पता लगाना होगा। वैसे, हिस्टीरिया से कोई नहीं मरता। उनका कोई महत्व नहीं है।
भगवान ने महिलाओं को हिस्टीरिया का दौरा राहत के लिए दिया है। मैं उसके पास बिल्कुल नहीं जाऊंगी। फिर से खुद को आगे क्यों धकेलूँ?
लेकिन तुमने उससे कहा था कि उसने कभी तुम्हारी परवाह नहीं की।
मैंने जानबूझकर ऐसा किया। अलेयोशा, क्या मैं थोड़ी शैम्पेन मंगवा लूँ? चलिए
मेरी आज़ादी का जश्न मनाओ। आह, काश तुम्हें पता होता कि मैं कितना खुश हूँ!
“नहीं भाई, हमें शराब नहीं पीनी चाहिए,” अलेयोशा ने अचानक कहा। “इसके अलावा, मुझे कुछ उदासी भी महसूस हो रही है।”
"हां, आप काफी समय से अवसादग्रस्त हैं, मैंने यह देखा है।"
"तो क्या आपने कल सुबह जाने का मन बना लिया है?"
“सुबह? मैंने तो यह नहीं कहा कि मुझे सुबह जाना चाहिए... लेकिन शायद यह
शायद सुबह हो जाए। यकीन मानिए, मैंने आज यहाँ खाना सिर्फ इसलिए खाया ताकि उस बूढ़े आदमी के साथ खाना न खाना पड़े, मुझे उससे इतनी नफरत है। उसकी नज़र में तो मुझे बहुत पहले ही चले जाना चाहिए था। लेकिन आप मेरे जाने को लेकर इतने परेशान क्यों हैं? मेरे जाने से पहले हमारे पास बहुत समय है, अनंत काल!
"अगर तुम कल ही जा रहे हो, तो अनंत काल से तुम्हारा क्या मतलब है?"
“लेकिन इससे हमें क्या फर्क पड़ता है?” इवान हँसते हुए बोला। “हमारे पास तो काफी समय है।”
हमारी बातचीत, जिस वजह से हम यहाँ आए हैं। आप इतने हैरान क्यों दिख रहे हैं? जवाब: हम यहाँ क्यों मिले हैं? कैटेरिना इवानोव्ना के लिए मेरे प्यार की बात करने के लिए, उस बूढ़े आदमी और दिमित्री की बात करने के लिए? विदेश यात्रा की बात करने के लिए? रूस की भयावह स्थिति की बात करने के लिए? सम्राट नेपोलियन की बात करने के लिए? क्या यही बात है?
"नहीं।"

“तो फिर आपको पता है कि किस लिए। दूसरों के लिए यह अलग है; लेकिन हम अपने
युवा पीढ़ी को सबसे पहले शाश्वत प्रश्नों का हल निकालना होगा। यही हमारे लिए मायने रखता है। युवा रूस आज सिर्फ शाश्वत प्रश्नों की ही बात कर रहा है। ठीक उसी समय जब बुजुर्ग लोग व्यावहारिक प्रश्नों में उलझे हुए हैं। पिछले तीन महीनों से आप मेरी ओर उम्मीद भरी निगाहों से क्यों देख रहे हैं? मुझसे यह पूछने के लिए, 'आप किस बात पर विश्वास करते हैं, या किस बात पर बिल्कुल भी विश्वास नहीं करते?' पिछले तीन महीनों से आपकी निगाहों का यही मतलब रहा है, है ना?
“शायद ऐसा ही हो,” अलेयोशा मुस्कुराया। “अब तुम मुझ पर नहीं हंस रहे हो।”
इवान?
मैं हंस रही हूँ! मैं अपने छोटे भाई को चोट नहीं पहुँचाना चाहती जो पहले से ही
तीन महीने से मुझे इतनी उम्मीद से देख रहे हैं। अलेयोशा, सीधे मेरी आँखों में देखो! बेशक मैं भी तुम्हारी ही तरह एक छोटा लड़का हूँ, बस नौसिखिया नहीं। और रूसी लड़के अब तक क्या करते रहे हैं, मेरा मतलब है, उनमें से कुछ? उदाहरण के लिए, इस बदबूदार शराबखाने में, वे मिलते हैं और एक कोने में बैठ जाते हैं। वे अपने जीवन में पहले कभी नहीं मिले होते और जब वे शराबखाने से बाहर निकलते हैं, तो चालीस साल तक फिर नहीं मिलते। और शराबखाने में उस क्षणिक ठहराव में वे किस बारे में बात करते हैं? शाश्वत प्रश्नों के बारे में, ईश्वर के अस्तित्व और अमरता के बारे में। और जो ईश्वर में विश्वास नहीं करते, वे समाजवाद या अराजकतावाद की बात करते हैं, पूरी मानवता के एक नए स्वरूप में परिवर्तन की बात करते हैं, ताकि अंत में सब कुछ एक ही हो जाए, ये वही प्रश्न हैं जिन्हें उलट-पुलट कर पेश किया गया है। और बहुत सारे, बहुत सारे सबसे अनोखे रूसी लड़के शाश्वत प्रश्नों के अलावा कुछ नहीं करते! क्या ऐसा ही नहीं है?
"हाँ, सच्चे रूसियों के लिए ईश्वर के अस्तित्व और उससे संबंधित प्रश्न
"अमरता, या जैसा कि आप कहते हैं, उन्हीं सवालों को उलट-पुलट कर पेश करना, सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण बात है, और ऐसा होना भी चाहिए," अलेयोशा ने अपने भाई को उसी सौम्य और जिज्ञासु मुस्कान के साथ देखते हुए कहा।
“खैर, अलेयोशा, रूसी होना कभी-कभी बहुत ही नासमझी भरा होता है, लेकिन
रूसी लड़के जिस तरह से अपना समय बिताते हैं, उससे ज्यादा मूर्खतापूर्ण कुछ और सोचना मुश्किल है। लेकिन एक रूसी लड़का है जिसका नाम अलेयोशा है और मैं उसे बहुत पसंद करती हूँ।
“तुमने इसे कितनी खूबसूरती से कहा!” अलेयोशा अचानक हंस पड़ा। “अच्छा, बताओ कहाँ से शुरू करूँ, अपने आदेश दो। ईश्वर का अस्तित्व,
एह?
आप जहां चाहें वहां से शुरू कर सकते हैं। आपने कल पिताजी के घर पर घोषणा की थी कि
कोई ईश्वर नहीं।” अलेयोशा ने अपने भाई की ओर ध्यानपूर्वक देखा।
मैंने कल रात खाने पर जानबूझकर आपको चिढ़ाने के लिए ऐसा कहा था और मैंने आपका देखा था आँखें चमक उठीं। लेकिन अब मुझे आपसे चर्चा करने में कोई आपत्ति नहीं है, और मैं यह बात पूरी गंभीरता से कह रहा हूँ। मैं आपसे दोस्ती करना चाहता हूँ, अलेयोशा, क्योंकि मेरे कोई दोस्त नहीं हैं और मैं एक बार कोशिश करना चाहता हूँ। खैर, ज़रा सोचिए, शायद मैं भी ईश्वर को स्वीकार कर लूँ,” इवान हँसते हुए बोला; “यह आपके लिए आश्चर्य की बात है, है ना?”
"जी हां, बिल्कुल, अगर आप मजाक नहीं कर रहे हैं तो।"
“मज़ाक कर रहे हो? कल बड़े-बुजुर्गों के यहाँ मुझे बताया गया कि मैं मज़ाक कर रहा था। तुम
सुनो, प्यारे बच्चे, अठारहवीं सदी में एक बूढ़ा पापी था जिसने कहा था कि अगर ईश्वर नहीं है, तो उसे गढ़ना पड़ेगा। S’il n’existait pas Dieu, il faudrait l’inventer. और मनुष्य ने सचमुच ईश्वर को गढ़ा है। और जो बात विचित्र है, जो आश्चर्यजनक होती, वह यह नहीं है कि ईश्वर का वास्तव में अस्तित्व है; आश्चर्य की बात यह है कि ऐसा विचार, ईश्वर की आवश्यकता का विचार, मनुष्य जैसे क्रूर, दुष्ट प्राणी के दिमाग में कैसे आ सकता है। यह कितना पवित्र, कितना मार्मिक, कितना बुद्धिमान और मनुष्य के लिए कितना बड़ा गौरव है। जहाँ तक मेरी बात है, मैंने बहुत पहले ही यह विचार न करने का निश्चय कर लिया है कि मनुष्य ने ईश्वर को बनाया या ईश्वर ने मनुष्य को। और मैं इस विषय पर रूसी लड़कों द्वारा प्रतिपादित सभी सिद्धांतों पर चर्चा नहीं करूँगा, जो सभी यूरोपीय परिकल्पनाओं से निकले हैं; क्योंकि जो वहाँ एक परिकल्पना है, वह रूसी लड़के के लिए

एक सिद्धांत है, और न केवल लड़कों के लिए बल्कि उनके शिक्षकों के लिए भी, क्योंकि हमारे रूसी प्रोफेसर अक्सर स्वयं वही लड़के होते हैं। इसलिए मैं सभी परिकल्पनाओं को छोड़ देता हूँ। अब हमारा लक्ष्य क्या है? मैं यथासंभव शीघ्रता से अपने मूल स्वरूप को समझाने का प्रयास कर रहा हूँ, अर्थात् मैं किस प्रकार का मनुष्य हूँ, मैं किस पर विश्वास करता हूँ और मेरी आशाएँ क्या हैं, बस यही है, है ना? और इसलिए मैं आपसे कहता हूँ कि मैं ईश्वर को सरलता से स्वीकार करता हूँ। परन्तु आपको यह ध्यान रखना चाहिए: यदि ईश्वर का अस्तित्व है और यदि उन्होंने वास्तव में संसार की रचना की है, तो जैसा कि हम सब जानते हैं, उन्होंने यूक्लिड की ज्यामिति और मानव मन की केवल तीन आयामों की अवधारणा के अनुसार ही इसकी रचना की है। फिर भी ऐसे ज्यामितिज्ञ और दार्शनिक रहे हैं और अभी भी हैं, और यहाँ तक कि कुछ सबसे प्रतिष्ठित भी, जो इस बात पर संदेह करते हैं कि क्या संपूर्ण ब्रह्मांड, या व्यापक रूप से कहें तो संपूर्ण अस्तित्व, केवल यूक्लिड की ज्यामिति के अनुसार ही रचा गया था; वे तो यह कल्पना करने का साहस भी करते हैं कि दो समानांतर रेखाएँ, जो यूक्लिड के अनुसार पृथ्वी पर कभी नहीं मिल सकतीं, अनंत में कहीं मिल सकती हैं। मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि जब मैं इसे भी नहीं समझ सकता, तो मैं ईश्वर को समझने की आशा भी नहीं कर सकता। मैं विनम्रतापूर्वक स्वीकार करता हूँ कि मुझमें ऐसे प्रश्नों का उत्तर देने की क्षमता नहीं है; मेरा मन यूक्लिड के सांसारिक विचारों से युक्त है, और मैं उन समस्याओं को कैसे हल कर सकता हूँ जो इस संसार से संबंधित नहीं हैं? और मैं तुम्हें भी सलाह देता हूँ कि तुम भी इस बारे में कभी मत सोचना, मेरे प्रिय अलेयोशा, विशेषकर ईश्वर के बारे में, चाहे वह अस्तित्व में हो या न हो। ऐसे सभी प्रश्न केवल तीन आयामों की अवधारणा वाले मन के लिए बिल्कुल अनुपयुक्त हैं। इसलिए मैं ईश्वर को स्वीकार करता हूँ और प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार करता हूँ, और इससे भी बढ़कर, मैं उनकी बुद्धि, उनके उद्देश्य को स्वीकार करता हूँ— जो हमारी समझ से परे हैं; मैं जीवन के अंतर्निहित क्रम और अर्थ में विश्वास करता हूँ; मैं उस शाश्वत सामंजस्य में विश्वास करता हूँ जिसमें कहा जाता है कि हम एक दिन विलीन हो जाएँगे। मैं उस वचन में विश्वास करता हूँ जिसकी ओर ब्रह्मांड अग्रसर है, जो स्वयं 'ईश्वर के साथ' था, जो स्वयं ईश्वर है, और इसी प्रकार अनंत तक। इसके लिए अनेक प्रकार के शब्द हैं। लगता है मैं सही मार्ग पर हूँ, है ना? लेकिन क्या आप विश्वास करेंगे, अंततः मैं ईश्वर की इस दुनिया को स्वीकार नहीं करता, और यद्यपि मैं जानता हूँ कि यह अस्तित्व में है, मैं इसे बिल्कुल भी स्वीकार नहीं करता। आपको समझना होगा कि ऐसा नहीं है कि मैं ईश्वर को स्वीकार नहीं करता, बल्कि उनके द्वारा बनाई गई दुनिया को मैं स्वीकार नहीं करता और न ही कर सकता हूँ। मैं इसे स्पष्ट कर देता हूँ। मैं एक बच्चे की तरह विश्वास करता हूँ कि दुख दूर हो जाएँगे और उनकी भरपाई हो जाएगी, कि मानवीय विरोधाभासों की सारी अपमानजनक निरर्थकता एक दयनीय मृगतृष्णा की तरह, मनुष्य के शक्तिहीन और अत्यंत छोटे यूक्लिडियन मस्तिष्क की घृणित रचना की तरह गायब हो जाएगी, कि दुनिया के अंत में, शाश्वत सामंजस्य के क्षण में, कुछ ऐसा अनमोल घटित होगा जो सभी हृदयों के लिए पर्याप्त होगा, सभी शिकायतों को शांत करेगा, मानवता के सभी अपराधों, उनके द्वारा बहाए गए सभी रक्त का प्रायश्चित करेगा; कि यह न केवल क्षमा करना संभव बनाएगा बल्कि मनुष्यों के साथ जो कुछ भी हुआ है उसे न्यायसंगत ठहराएगा—लेकिन यद्यपि यह सब घटित हो जाए, मैं इसे स्वीकार नहीं करता। मैं इसे स्वीकार नहीं करूँगा। भले ही समानांतर रेखाएँ मिलें और मैं स्वयं देख लूँ, मैं देखूँगा और कहूँगा कि वे मिली हैं, लेकिन फिर भी मैं इसे स्वीकार नहीं करूँगा। यही मेरे स्वभाव का मूल है, अलेयोशा; यही मेरा सिद्धांत है। मैं अपनी बात पर दृढ़ हूँ। मैंने जानबूझकर अपनी बातचीत की शुरुआत मूर्खतापूर्ण ढंग से की, लेकिन मैं अपनी स्वीकारोक्ति तक पहुँच गया, क्योंकि तुम बस यही चाहते थे। तुम ईश्वर के बारे में नहीं सुनना चाहते थे, बल्कि केवल यह जानना चाहते थे कि तुम्हारा प्रिय भाई किस मार्ग पर चलता है। और इसलिए मैंने तुम्हें बता दिया।

इवान ने अपने लंबे भाषण का समापन स्पष्ट और अप्रत्याशित भावनाओं के साथ किया।

“और तुमने ‘जितना हो सके उतनी मूर्खता से’ शुरुआत क्यों की?” अलेयोशा ने पूछा।

वह स्वप्निल भाव से उसकी ओर देख रही थी।

“शुरुआत में, रूसी होने के नाते। रूसी बातचीत पर

ऐसे विषयों पर चर्चा हमेशा बेहद मूर्खतापूर्ण ढंग से की जाती है। और दूसरी बात, जितना मूर्ख कोई होता है, उतना ही वह वास्तविकता के करीब होता है। जितना मूर्ख कोई होता है, उतना ही स्पष्ट उसकी बात होती है। मूर्खता संक्षिप्त और सरल होती है, जबकि बुद्धि छल-कपट करती है और खुद को छुपाती है। बुद्धि धूर्त होती

है, लेकिन मूर्खता ईमानदार और सीधी होती है। मैंने इस चर्चा को अपनी निराशा की ओर मोड़ दिया है, और मैंने इसे जितनी मूर्खतापूर्ण ढंग से प्रस्तुत किया है, उतना ही मेरे लिए अच्छा है।
“तुम समझाओगे कि तुम दुनिया को क्यों स्वीकार नहीं करते?” अलेयोशा ने कहा। “ज़रूर समझाऊंगा, यह कोई रहस्य नहीं है, मैं इसी बात की ओर इशारा कर रहा हूं।”
प्रिय छोटे भाई, मैं तुम्हें बिगाड़ना या तुम्हारे गढ़ से विमुख करना नहीं चाहता, शायद मैं तुमसे ठीक होना चाहता हूँ।” इवान अचानक एक नन्हे-मुन्ने बच्चे की तरह मुस्कुरा उठा। अलेयोशा ने उसके चेहरे पर ऐसी मुस्कान पहले कभी नहीं देखी थी।

अध्याय 4

विद्रोह

“मुझे आपसे एक बात कहनी है,” इवान ने कहना शुरू किया। “मैं कभी समझ नहीं पाया कि कोई अपने पड़ोसियों से कैसे प्यार कर सकता है। मेरे विचार से, दूर रहने वालों से प्यार करना तो दूर की बात है, लेकिन पड़ोसियों से प्यार करना नामुमकिन है। मैंने कहीं पढ़ा था कि संत जॉन द मर्सीफुल के पास जब एक भूखा-प्यासा भिखारी आया, तो उन्होंने उसे अपने बिस्तर पर लिटाया, अपनी बाहों में भर लिया और उसके मुंह में सांस फूंकी, जो किसी भयानक बीमारी से सड़ा हुआ और घिनौना था। मुझे पूरा यकीन है कि उन्होंने यह ‘आत्म-पीड़ा’ के कारण किया, झूठ की आत्म-पीड़ा के कारण, कर्तव्य के नाम पर किए गए दान के लिए, जो उन पर एक प्रायश्चित था। किसी से प्यार करने के लिए, उसे छुपकर रहना पड़ता है, क्योंकि जैसे ही वह अपना चेहरा दिखाता है, प्यार खत्म हो जाता है।”
“फादर ज़ोस्सिमा ने इस बारे में एक से अधिक बार बात की है,” अलेयोशा ने टिप्पणी की;
“उसने भी कहा था कि किसी व्यक्ति का चेहरा अक्सर उन लोगों को उससे प्रेम करने से रोकता है जो प्रेम का अभ्यास नहीं करते। लेकिन फिर भी मानवता में बहुत प्रेम है, लगभग ईसा मसीह जैसा प्रेम। मैं स्वयं यह जानता हूँ, इवान।”
“खैर, मुझे अभी तक इसके बारे में कुछ भी पता नहीं है, और मैं इसे समझ भी नहीं सकता, और असंख्य मनुष्य मेरे साथ हैं। सवाल यह है कि क्या यह मनुष्य के बुरे गुणों के कारण है या यह उनके स्वभाव में निहित है। मेरे विचार से, मनुष्यों के प्रति ईसा मसीह जैसा प्रेम पृथ्वी पर असंभव चमत्कार है। वह ईश्वर थे। लेकिन हम ईश्वर नहीं हैं। मान लीजिए, उदाहरण के लिए, मैं बहुत कष्ट सहता हूँ। दूसरा कभी नहीं जान सकता कि मैं कितना कष्ट सहता हूँ, क्योंकि वह दूसरा है, मैं नहीं। और तो और, मनुष्य शायद ही कभी दूसरे के कष्ट को स्वीकार करने को तैयार होता है (मानो यह कोई भेद हो)। आपको क्या लगता है, वह इसे क्यों स्वीकार नहीं करेगा? क्योंकि मुझसे दुर्गंध आती है, क्योंकि मेरा चेहरा मूर्ख जैसा है, क्योंकि मैंने एक बार उसके पैर पर पैर रख दिया था। इसके अलावा, कष्ट भी कई प्रकार के होते हैं; अपमानजनक, नीचा दिखाने वाला कष्ट जो मुझे विनम्र बनाता है—उदाहरण के लिए, भूख—शायद मेरा उपकारक मुझे इसे सहने की अनुमति दे दे; लेकिन जब बात उच्च स्तर के कष्ट की आती है—उदाहरण के लिए, किसी विचार के लिए—तो वह इसे शायद ही कभी स्वीकार करेगा, शायद इसलिए कि मेरा चेहरा उसे ऐसा नहीं लगता जैसा वह एक ऐसे व्यक्ति का चेहरा देखता है जो किसी विचार के लिए कष्ट सहता है। और इसलिए वह मुझे तुरंत अपनी कृपा से वंचित कर देता है, और यह बिल्कुल भी हृदयहीनता के कारण नहीं है। भिखारियों को, विशेषकर सभ्य भिखारियों को, कभी भी स्वयं को प्रकट नहीं करना चाहिए, बल्कि समाचार पत्रों के माध्यम से दान मांगना चाहिए। कोई अपने पड़ोसियों से अमूर्त रूप से, या दूर से भी प्रेम कर सकता है, लेकिन निकट से यह लगभग असंभव है। यदि यह मंच पर, बैले नृत्य की तरह होता, जहाँ भिखारी रेशमी चिथड़े और फटे हुए फीते पहने हुए आते हैं और सुंदर नृत्य करते हुए भीख मांगते हैं, तो शायद हमें उन्हें देखना अच्छा लगता। लेकिन तब भी हमें उनसे प्रेम नहीं करना चाहिए। खैर, बस इतना ही। मैं बस आपको अपना दृष्टिकोण दिखाना चाहता था। मेरा इरादा आम तौर पर मानवता के दुखों के बारे में बात करने का था, लेकिन बेहतर होगा कि हम खुद को बच्चों के दुखों तक ही सीमित रखें। इससे मेरे तर्क का दायरा दसवें हिस्से तक कम हो जाता है। फिर भी, बेहतर होगा कि हम बच्चों तक ही सीमित रहें, हालाँकि इससे मेरा तर्क कमजोर हो जाता है। लेकिन, सबसे पहले तो, बच्चों को पास से भी प्यार किया जा सकता है, चाहे वे गंदे हों, बदसूरत हों (वैसे तो मुझे लगता है कि बच्चे कभी बदसूरत नहीं होते)। दूसरा कारण यह है कि मैं बड़ों के बारे में बात नहीं करूँगा, क्योंकि वे घिनौने और प्यार के लायक नहीं होते, और उनमें एक गुण होता है—उन्होंने सेब खा लिया है और उन्हें अच्छे-बुरे का ज्ञान है, और वे 'भगवान जैसे' हो गए हैं। वे अभी भी सेब खाते रहते हैं। लेकिन बच्चों ने कुछ नहीं खाया है, और वे अब तक निर्दोष हैं। क्या तुम्हें बच्चे पसंद हैं, अलेयोशा? मुझे पता है कि तुम्हें पसंद हैं, और तुम समझोगे कि मैं उनके बारे में बात करना क्यों पसंद करता हूँ। अगर उन्हें भी धरती पर भयानक कष्ट सहने पड़ते हैं, तो उन्हें अपने पिताओं के पापों के लिए भुगतना होगा, उन्हें अपने पिताओं के लिए दंडित होना होगा, जिन्होंने सेब

खाया है; लेकिन यह तर्क परलोक का है और धरती पर मनुष्य के हृदय के लिए समझ से परे है। निर्दोषों को दूसरों के पापों के लिए नहीं भुगतना चाहिए, और विशेषकर ऐसे निर्दोषों को! तुम्हें शायद आश्चर्य हो, अलेयोशा, लेकिन मुझे भी बच्चे बहुत पसंद हैं। और देखो, क्रूर लोग, हिंसक, लालची, करामाज़ोव जैसे लोग कभी-कभी बच्चों से बहुत प्यार करते हैं। जब बच्चे बहुत छोटे होते हैं—उदाहरण के लिए सात साल तक—तो वे बड़ों से कितने अलग होते हैं; वे मानो एक अलग ही प्रजाति के प्राणी होते हैं। मैं एक ऐसे अपराधी को जानता था जो जेल में था और जिसने अपने चोर जीवन में कई परिवारों, जिनमें कई बच्चे भी शामिल थे, की हत्या कर दी थी। लेकिन जब वह जेल में था, तो उसे बच्चों से एक अजीब सा लगाव हो गया था। वह अपना सारा समय अपनी खिड़की पर बैठकर जेल के आंगन में खेलते बच्चों को देखता रहता था। उसने एक छोटे लड़के को अपनी खिड़की तक आना सिखाया और उससे गहरी दोस्ती कर ली... तुम्हें नहीं पता मैं तुम्हें यह सब क्यों बता रहा हूँ, अलेयोशा? मेरा सिर दुख रहा है और मैं उदास हूँ।

"तुम अजीब तरह से बात कर रहे हो," अलेयोशा ने बेचैनी से कहा, "जैसे मानो
तुम कुछ बदले हुए से लग रहे थे।

"वैसे, हाल ही में मेरी मुलाकात मॉस्को में एक बल्गेरियाई व्यक्ति से हुई थी," इवान ने आगे कहा।
अपने भाई की बातों को अनसुना करते हुए, उसने मुझे बताया कि स्लावों के व्यापक विद्रोह के डर से तुर्कों और सर्कसियों ने बुल्गारिया के सभी हिस्सों में किस प्रकार के अपराध किए। वे गाँवों को जलाते हैं, हत्या करते हैं, महिलाओं और बच्चों पर अत्याचार करते हैं, कैदियों को कानों से बाड़ पर कीलों से ठोक देते हैं, उन्हें सुबह तक उसी हालत में छोड़ देते हैं, और सुबह उन्हें फाँसी पर लटका देते हैं—ऐसी हर चीज़ जिसकी आप कल्पना भी नहीं कर सकते। लोग कभी-कभी पशुवत क्रूरता की बात करते हैं, लेकिन यह जानवरों के साथ घोर अन्याय और अपमान है; एक जानवर कभी भी मनुष्य जितना क्रूर, इतना कलात्मक रूप से क्रूर नहीं हो सकता। बाघ केवल फाड़ता और कुतरता है, वह बस इतना ही कर सकता है। वह लोगों को कानों से कीलों से ठोकने के बारे में कभी नहीं सोचेगा, भले ही वह ऐसा करने में सक्षम हो। इन तुर्कों को बच्चों को यातना देने में भी आनंद आता था; वे माँ के गर्भ से अजन्मे बच्चे को काटकर, शिशुओं को हवा में उछालते थे और उनकी माताओं की आँखों के सामने उन्हें संगीनों की नोकों पर पकड़ लेते थे। माताओं की आँखों के सामने ऐसा करना ही उनके मनोरंजन का मुख्य कारण था। एक और दृश्य जो मुझे बेहद रोचक लगा। कल्पना कीजिए एक कांपती हुई माँ अपनी गोद में बच्चे को लिए खड़ी है, और उसके चारों ओर तुर्क सैनिकों का एक घेरा है। उन्होंने एक चाल चली है: वे बच्चे को सहलाते हैं, उसे हंसाने के लिए खुद हंसते हैं। वे सफल हो जाते हैं, बच्चा हंसता है। उसी क्षण एक तुर्क सैनिक बच्चे के चेहरे से चार इंच की दूरी पर पिस्तौल तान देता है। बच्चा खुशी से हंसता है, अपने छोटे हाथ पिस्तौल की ओर बढ़ाता है, और वह बच्चे के चेहरे पर ट्रिगर दबा देता है और उसके दिमाग को उड़ा देता है। कलात्मक था ना? वैसे, कहते हैं कि तुर्कों को मीठी चीजें बहुत पसंद होती हैं।

"भाई, तुम कहना क्या चाहते हो?" अलेयोशा ने पूछा। "मुझे लगता है कि अगर शैतान का अस्तित्व नहीं है, बल्कि मनुष्य ने उसे बनाया है, तो वह..."

उसने उसे अपनी ही छवि और स्वरूप में बनाया।

"तो क्या उसने ठीक वैसे ही किया जैसे उसने ईश्वर के साथ किया था?" अलेयोशा ने पूछा। "'यह कितना अद्भुत है कि आप शब्दों को बदल सकते हैं,' जैसा कि पोलोनियस हैमलेट में कहता है।"

इवान हँस पड़ा। "तुम मेरे ही शब्दों को मेरे विरुद्ध मोड़ रहे हो। खैर, मुझे खुशी है। तुम्हारा ईश्वर अवश्य महान होगा, अगर मनुष्य ने उसे अपनी छवि और स्वरूप में बनाया है। तुमने अभी पूछा कि मैं क्या कहना चाह रहा था। देखो, मुझे कुछ खास तथ्य इकट्ठा करने का शौक है, और यकीन मानो, मैं अखबारों और किताबों से कुछ खास तरह के किस्से भी कॉपी करता हूँ, और मेरे पास पहले से ही एक अच्छा संग्रह है। तुर्कों ने बेशक इसमें हाथ आजमाया है, लेकिन वे विदेशी हैं। मेरे पास अपने देश के ऐसे नमूने हैं जो तुर्कों से भी बेहतर हैं। तुम जानते हो कि हम पिटाई को प्राथमिकता देते हैं—छड़ी और कोड़े—यह हमारी राष्ट्रीय परंपरा है। कान ठोकना हमारे लिए अकल्पनीय है, क्योंकि आखिर हम यूरोपीय हैं। लेकिन छड़ी और कोड़ा हमेशा हमारे साथ रहते हैं और इन्हें हमसे छीना नहीं जा सकता। विदेशों में अब वे शायद ही कभी पिटाई करते हैं। शिष्टाचार अधिक मानवीय हो गए हैं, या कानून पारित हो गए हैं, इसलिए अब वे लोगों को कोड़े मारने की हिम्मत नहीं करते। लेकिन वे इसकी भरपाई एक और तरीके से करते हैं जो हमारे जितना ही राष्ट्रीय है। और इतना राष्ट्रीय कि हमारे बीच यह व्यावहारिक रूप से असंभव होगा। हम, हालांकि मेरा मानना है कि हमारे

कुलीन वर्ग में धार्मिक आंदोलन शुरू होने के बाद से हम इससे प्रतिरक्षित हो रहे हैं। मेरे पास एक आकर्षक पुस्तिका है, जिसका फ्रांसीसी से अनुवाद किया गया है, जिसमें वर्णन है कि कैसे, अभी हाल ही में, पाँच साल पहले, एक हत्यारे, रिचर्ड को फाँसी दी गई थी - एक युवक, मेरा मानना है, तेईस वर्ष का, जिसने पश्चाताप किया और फाँसी के मंच पर ही ईसाई धर्म अपना लिया। यह रिचर्ड एक नाजायज बच्चा था जिसे उसके माता-पिता ने छह साल की उम्र में स्विस पहाड़ों पर कुछ चरवाहों को दे दिया था। उन्होंने उसे अपने लिए काम करने के लिए पाला-पोसा। वह उनके बीच एक छोटे जंगली जानवर की तरह पला-बढ़ा। चरवाहों ने उसे कुछ नहीं सिखाया, और मुश्किल से उसे खाना-कपड़ा दिया, बल्कि उसे सात साल की उम्र में ठंड और गीले मौसम में भेड़ों को चराने के लिए भेज दिया, और किसी ने भी उसके साथ ऐसा व्यवहार करने में संकोच या हिचक नहीं दिखाई। इसके विपरीत, वे सोचते थे कि उन्हें पूरा अधिकार है, क्योंकि रिचर्ड को उन्हें एक संपत्ति की तरह दिया गया था, और उन्हें उसे खिलाने की आवश्यकता भी नहीं समझ में आई। रिचर्ड खुद बताता है कि उन वर्षों में, सुसमाचार में वर्णित आवारा पुत्र की तरह, वह खाने के लिए तरसता था। सूअरों को जो चारा दिया जाता था, उसे बेचने के लिए पाला जाता था। लेकिन वे उसे वह भी नहीं देते थे और जब वह सूअरों से चोरी करता था तो उसे पीटते थे। इस तरह उसने अपना पूरा बचपन और जवानी बिताई, जब तक कि वह बड़ा होकर इतना मजबूत नहीं हो गया कि घर छोड़कर चोर बन सके। उस दरिंदे ने जिनेवा में दिहाड़ी मजदूर के रूप में अपना जीवन यापन करना शुरू किया। वह अपनी कमाई शराब में उड़ा देता था, एक जानवर की तरह रहता था और अंत में एक बूढ़े आदमी की हत्या और लूटपाट करके अपना जीवन समाप्त किया। उसे पकड़ा गया, उस पर मुकदमा चला और उसे मौत की सजा सुनाई गई। वहाँ के लोग भावुक नहीं होते। जेल में पहुँचते ही वह पादरियों, ईसाई भाईचारे के सदस्यों, परोपकारी महिलाओं और ऐसे ही अन्य लोगों से घिर गया। उन्होंने उसे जेल में पढ़ना-लिखना सिखाया और उसे सुसमाचार समझाया। उन्होंने उसे प्रेरित किया, उस पर काम किया, लगातार उस पर दबाव डाला, जब तक कि अंत में उसने पूरी गंभीरता से अपना अपराध स्वीकार नहीं कर लिया। उसका धर्म परिवर्तन हो गया। उसने स्वयं अदालत को लिखा कि वह एक राक्षस था, लेकिन अंत में ईश्वर ने उसे प्रकाश दिया और उस पर कृपा दिखाई। जिनेवा शहर में उसके लिए उत्साह का माहौल था—पूरा परोपकारी और धार्मिक जिनेवा। शहर के सभी कुलीन और संभ्रांत लोग जेल की ओर दौड़े, रिचर्ड को चूमा और गले लगाया; 'तुम हमारे भाई हो, तुम्हें ईश्वर की कृपा प्राप्त हुई है।' और रिचर्ड केवल भावुक होकर रोता रहा, 'हाँ, मुझे ईश्वर की कृपा प्राप्त हुई है! अपनी पूरी जवानी और बचपन में मैं सूअरों का खाना खाकर खुश रहता था, लेकिन अब मुझे भी ईश्वर की कृपा प्राप्त हुई है। मैं प्रभु में मर रहा हूँ।' 'हाँ, रिचर्ड, प्रभु में मरो; तुमने खून बहाया है और तुम्हें मरना ही होगा। हालाँकि यह तुम्हारी गलती नहीं है कि तुम प्रभु को नहीं जानते थे, जब तुमने सूअरों के खाने की लालसा की और उसे चुराने के लिए तुम्हारी पिटाई हुई (जो कि बहुत गलत था, क्योंकि चोरी करना मना है); लेकिन तुमने खून बहाया है और तुम्हें मरना ही होगा।' और अंतिम दिन, रिचर्ड, पूरी तरह से बेजान होकर, केवल रोता रहा और हर मिनट दोहराता रहा: 'यह मेरा सबसे खुशी का दिन है। मैं प्रभु के पास जा रहा हूँ।' 'हाँ,' पादरी, न्यायाधीश और परोपकारी महिलाएं चिल्लाईं। 'यह सबसे खुशी का दिन है।' अपने जीवन के उस दिन, क्योंकि तुम प्रभु के पास जा रहे हो!' वे सभी जेल वैन के पीछे जुलूस में फांसी के तख्ते तक पैदल या गाड़ी से जाते हैं। फांसी के तख्ते पर वे रिचर्ड को पुकारते हैं: 'मर जाओ, भाई, प्रभु में मर जाओ, क्योंकि तुमने भी कृपा पाई है!' और इस तरह, अपने भाइयों के चुंबनों से लथपथ, रिचर्ड को फांसी के तख्ते पर घसीटा जाता है, और गिलोटिन तक ले जाया जाता है। और उन्होंने भाईचारे के भाव से उसका सिर काट दिया, क्योंकि उसने कृपा पाई थी। हाँ, यह उनकी विशेषता है। उस पुस्तिका का रूसी भाषा में अनुवाद कुछ कुलीन और धर्म प्रचारक रूसी परोपकारियों द्वारा किया गया है, और लोगों को जागरूक करने के लिए इसे निःशुल्क वितरित किया गया है। रिचर्ड का मामला दिलचस्प है क्योंकि यह राष्ट्रीय है। हालाँकि हमारे लिए किसी व्यक्ति का सिर काटना हास्यास्पद है, क्योंकि वह हमारा भाई बन गया है और उसने कृपा पाई है, फिर भी हमारी अपनी एक विशेषता है, जो इससे भी बदतर है। हमारा ऐतिहासिक शौक पीड़ा पहुँचाने से मिलने वाली प्रत्यक्ष संतुष्टि है। नेक्रासोव की रचनाओं में ऐसी पंक्तियाँ हैं जिनमें एक किसान द्वारा घोड़े को चाबुक मारने का वर्णन है। आँखों पर, 'उसकी कोमल आँखों पर,' यह तो सबने देखा ही होगा। यह खास तौर पर रूसी है। वह वर्णन करता है कि कैसे एक कमज़ोर सा घोड़ा भारी बोझ के नीचे दबकर लड़खड़ा गया है और हिल भी नहीं पा रहा है। किसान उसे पीटता है, बेरहमी से पीटता है, अंत में क्रूरता के नशे में चूर होकर, उसे बार-बार निर्दयता से कोड़े मारता है। 'चाहे तुम कितने

भी कमज़ोर क्यों न हो, तुम्हें खींचना ही होगा, चाहे इसके लिए मरना ही क्यों न पड़े।' घोड़ा ज़ोर लगाता है, और फिर किसान उस बेचारे असहाय प्राणी की रोती हुई, उसकी 'कोमल आँखों' पर कोड़े मारने लगता है। वह पागल जानवर बोझ को खींचता है, काँपता है, साँस लेने के लिए हाँफता है, अगल-बगल हिलता है, एक अजीब तरह की अप्राकृतिक ऐंठन भरी हरकत के साथ—नेक्रासोव में यह भयानक है। लेकिन वह तो बस एक घोड़ा है, और भगवान ने घोड़ों को पीटने के लिए ही बनाया है। यही बात हमें तातारों ने सिखाई है, और उन्होंने इसकी याद के तौर पर हमें कोड़ा दिया है। लेकिन इंसान भी हो सकते हैं। पिटाई। एक सुशिक्षित, सभ्य सज्जन और उनकी पत्नी ने अपनी सात वर्षीय बच्ची को बेंत से पीटा। मेरे पास इसका सटीक विवरण है। पिता को खुशी थी कि बेंत टहनियों से ढकी हुई थी। उन्होंने कहा, 'इससे ज्यादा चुभन होती है,' और इसलिए उन्होंने अपनी बेटी को बेंत से पीटना शुरू कर दिया। मैं जानता हूँ कि कुछ लोग हर वार से कामुकता से भर जाते हैं, सचमुच कामुकता से, जो हर वार के साथ बढ़ती जाती है। वे एक मिनट, पाँच मिनट, दस मिनट तक पीटते हैं, और अधिक बार और अधिक बेरहमी से। बच्ची चीखती है। अंत में बच्ची चीख नहीं पाती, वह हांफते हुए कहती है, 'पापा! पापा!' किसी विचित्र संयोग से मामला अदालत में पहुँच गया। एक वकील नियुक्त किया गया। रूसी लोग लंबे समय से वकीलों को 'किराए का विवेक' कहते आए हैं। वकील अपने मुवक्किल के बचाव में कहता है, 'यह इतनी सरल बात है, एक रोजमर्रा की घरेलू घटना। एक पिता अपने बच्चे को सुधारता है। यह हमारे लिए शर्म की बात है,' वह कहता है। इसे अदालत में लाया गया।' जूरी, उसकी बातों से प्रभावित होकर, उसके पक्ष में फैसला सुनाती है। यातना देने वाले के बरी होने पर जनता खुशी से झूम उठती है। आह, काश मैं वहाँ होता! मैं उसके सम्मान में चंदा इकट्ठा करने का प्रस्ताव रखता! मनमोहक तस्वीरें।
लेकिन बच्चों के बारे में मेरे पास और भी बेहतर बातें हैं। मैंने बहुत कुछ इकट्ठा किया है।
रूसी बच्चों के बारे में बात करते हैं, अलेयोशा। एक पाँच साल की छोटी बच्ची थी, जिससे उसके माता-पिता नफ़रत करते थे, जो 'अत्यंत सम्मानित और अच्छे संस्कार वाले लोग' थे। देखिए, मुझे फिर से दोहराना होगा, यह कई लोगों की एक विशेष विशेषता है, बच्चों को यातना देने का यह प्रेम, और केवल बच्चों को ही। मानवता के अन्य सभी वर्गों के प्रति ये यातना देने वाले लोग सभ्य और दयालु यूरोपीय लोगों की तरह व्यवहार करते हैं; लेकिन वे बच्चों को यातना देने के बहुत शौकीन होते हैं, यहाँ तक कि उस अर्थ में बच्चों से भी प्रेम करते हैं। यह उनकी असहायता ही है जो यातना देने वाले को लुभाती है, उस बच्चे का मासूम विश्वास, जिसके पास कोई सहारा या अपील नहीं है, जो उसके घृणित रक्त में आग लगा देता है। बेशक, हर इंसान में एक शैतान छिपा होता है—क्रोध का शैतान, यातना झेल रहे पीड़ित की चीखों पर वासना से भरी गर्मी का शैतान, जंजीरों से मुक्त हुआ अधर्म का शैतान, दुराचार के बाद होने वाली बीमारियों का शैतान, गठिया, गुर्दे की बीमारी, इत्यादि।
“इस पांच वर्षीय बेचारे बच्चे को उन लोगों द्वारा हर संभव यातना दी गई।”
सभ्य माता-पिता। उन्होंने उसे पीटा, घूंसे मारे, बिना किसी कारण के लात मारी, यहाँ तक कि उसका पूरा शरीर चोट के निशानों से भर गया। फिर, उन्होंने क्रूरता की और भी हदें पार कर दीं— उसे रात भर ठंड और पाले में शौचालय में बंद रखा, और क्योंकि उसने रात में उठने के लिए नहीं कहा (जैसे कि पाँच साल का बच्चा जो अपनी गहरी नींद में सो रहा हो, उसे जागकर पूछने के लिए प्रशिक्षित किया जा सकता है), उन्होंने उसका चेहरा मल दिया और उसका मुँह मल से भर दिया, और यह उसकी माँ ने किया था। और वह माँ उस बेचारी बच्ची की कराहें सुनकर सो सकती थी! क्या आप समझ सकते हैं कि एक नन्ही सी बच्ची, जो यह भी नहीं समझ सकती कि उसके साथ क्या किया जा रहा है, अंधेरे और ठंड में अपने छोटे से दर्द भरे दिल को अपनी छोटी मुट्ठी से क्यों पीट रही है, और अपने प्यारे, दयालु ईश्वर से अपनी रक्षा के लिए नम्र, निर्भीक आँसू बहा रही है? क्या आप समझते हैं, मेरे मित्र और भाई, हे धर्मनिष्ठ और विनम्र नौसिखिए? क्या आप समझते हैं कि यह घिनौना काम क्यों होना चाहिए और क्यों इसकी अनुमति दी जाती है? मुझे बताया गया है कि इसके बिना मनुष्य पृथ्वी पर अस्तित्व में नहीं आ सकता था, क्योंकि वह अच्छे और बुरे को नहीं जान सकता था। उसे उस शैतानी अच्छाई और बुराई के बारे में क्यों पता होना चाहिए, जब इसकी इतनी कीमत चुकानी पड़ती है? अरे, ज्ञान का सारा संसार भी उस बच्चे की 'प्यारे, दयालु ईश्वर' से की गई प्रार्थना के लायक नहीं! मैं बड़ों के कष्टों की बात नहीं कर रहा, उन्होंने तो सेब खा लिया है, धिक्कार है उन पर, और शैतान उन सबको ले जाए! लेकिन ये छोटे बच्चे! मैं तुम्हें कष्ट दे रहा हूँ, अलेयोशा, तुम अपने आप में नहीं हो। अगर तुम चाहो तो मैं यहीं रुक जाता हूँ।

“कोई बात नहीं। मैं भी कष्ट सहना चाहता हूँ,” अलेयोशा ने बुदबुदाते हुए कहा। “एक तस्वीर, बस एक और, क्योंकि यह बहुत ही विचित्र है, बहुत ही विशिष्ट है।”
और मैंने इसे अभी-अभी रूसी प्राचीन वस्तुओं के किसी संग्रह में पढ़ा है। मैं नाम भूल गया हूँ। मुझे इसे ढूँढ़ना होगा। यह सदी के आरंभ में दास प्रथा के सबसे अंधकारमय दिनों की बात है, और जनता के मुक्तिदाता की जय हो! उन दिनों एक कुलीन परिवार से संबंध रखने वाला, विशाल जागीरों का मालिक, एक ऐसा सेनापति था—जो उस समय भी कुछ अपवाद था—जो सेवा से सेवानिवृत्त होकर आराम का जीवन व्यतीत करते हुए यह मानता था कि उसने अपनी प्रजा के जीवन पर पूर्ण अधिकार प्राप्त कर लिया है। उस समय ऐसे लोग हुआ करते थे। तो हमारा सेनापति, दो हज़ार लोगों की अपनी संपत्ति पर बसा हुआ, शान-शौकत से रहता था और अपने गरीब पड़ोसियों पर इस तरह प्रभुत्व जमाता था मानो वे आश्रित और मूर्ख हों। उसके पास सैकड़ों शिकारी कुत्तों के बाड़े और लगभग सौ सहायक थे—सभी घुड़सवार और वर्दीधारी। एक दिन एक आठ वर्षीय दास लड़के ने खेलते-खेलते पत्थर फेंका और सेनापति के पसंदीदा शिकारी कुत्ते के पंजे में चोट पहुँचा दी। ‘मेरा प्यारा कुत्ता लंगड़ा क्यों हो गया है?’ उसे बताया गया कि लड़के ने पत्थर फेंका था जिससे कुत्ते के पंजे में चोट लग गई। ‘तो तुमने ही किया है।’ जनरल ने बच्चे को ऊपर से नीचे तक देखा। ‘इसे ले जाओ।’ उसे ले जाया गया—उसकी माँ से अलग कर दिया गया और पूरी रात एक कोठरी में बंद रखा गया। अगली सुबह जनरल घोड़े पर सवार होकर, अपने कुत्तों, अपने आश्रितों, सहायकों और शिकारियों के साथ, पूरे शिकार जुलूस में बाहर आया। नौकरों को सूचना देने के लिए बुलाया गया, और उन सबके सामने बच्चे की माँ खड़ी थी। बच्चे को कोठरी से लाया गया। यह एक उदास, ठंडा, धुंध भरा पतझड़ का दिन था, शिकार के लिए एकदम सही दिन। जनरल ने बच्चे के कपड़े उतारने का आदेश दिया; बच्चे को नंगा कर दिया गया। वह डर से कांप रहा था, रोने की हिम्मत नहीं कर रहा था... ‘इसे दौड़ाओ,’ जनरल ने आदेश दिया। ‘भागो! भागो!’ सहायक चिल्लाए। लड़का भागा... ‘उस पर हमला करो!’ सेनापति चिल्लाता है और वह कुत्ते के पूरे झुंड को बच्चे पर छोड़ देता है। कुत्ते उसे पकड़ लेते हैं और उसकी माँ की आँखों के सामने उसके टुकड़े-टुकड़े कर देते हैं! . . . मेरा मानना है कि बाद में सेनापति को उसकी जागीरों का प्रबंधन करने में असमर्थ घोषित कर दिया गया था। खैर—उसे क्या मिलना चाहिए था? गोली मार दी जानी चाहिए थी? क्या हमारी नैतिक भावनाओं को संतुष्ट करने के लिए उसे गोली मार दी जानी चाहिए थी? बोलो, अलेयोशा!
“गोली मार दी जाएगी,” अलेयोशा ने फीकी आँखों से इवान की ओर देखते हुए धीरे से कहा।
टेढ़ी मुस्कान।
“वाह!” इवान खुशी से चिल्लाया। “अगर तुम भी ऐसा कह रहे हो तो... तुम बहुत सुंदर हो।”
भिक्षु! तो तुम्हारे दिल में एक छोटा शैतान बैठा है, अलेयोशा करामाज़ोव!
मैंने जो कहा वह बेतुका था, लेकिन—”
“यही तो असली मुद्दा है, वह ‘लेकिन’!” इवान चिल्लाया। “मैं तुम्हें बताता हूँ, नौसिखिए,
इस धरती पर बेतुकापन बेहद जरूरी है। दुनिया बेतुकेपन पर टिकी है, और शायद इनके बिना इसमें कुछ भी नहीं होता। हम वही जानते हैं जो हम जानते हैं!
"आप क्या जानते हैं?"
“मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा,” इवान बेहोशी की हालत में बोलता रहा। “मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा।”
मैं अब कुछ भी समझना नहीं चाहता। मैं यथास्थिति पर अडिग रहना चाहता हूँ। मैंने बहुत पहले ही तय कर लिया था कि मैं कुछ नहीं समझूंगा। अगर मैं कुछ भी समझने की कोशिश करूंगा, तो मैं यथास्थिति के प्रति विश्वासघात करूंगा, और मैंने यथास्थिति पर अडिग रहने का निश्चय कर लिया है।
“तुम मुझे क्यों आज़मा रहे हो?” अलेयोशा अचानक घबराकर चिल्लाया। “क्या
आखिरकार तुमने अपनी बात कह ही दी?
“बिल्कुल, मैं करूँगा; मैं इसी की तैयारी कर रहा था। तुम मेरे प्रिय हो।”
मैं तुम्हें जाने नहीं देना चाहता, और मैं तुम्हें तुम्हारी ज़ोसिमा के हवाले नहीं करूंगा।"
इवान एक मिनट के लिए चुप रहा, उसका चेहरा अचानक बहुत उदास हो गया। “सुनो! मैंने बच्चों का मामला केवल अपनी बात को और स्पष्ट करने के लिए उठाया है।
मानवता के उन अन्य आँसुओं के बारे में, जिनसे पृथ्वी अपनी ऊपरी परत से लेकर मध्य तक भीगी हुई है, मैं कुछ नहीं कहूँगा। मैंने जानबूझकर अपना विषय सीमित कर लिया है। मैं एक तुच्छ प्राणी हूँ, और मैं पूरी

विनम्रता से स्वीकार करता हूँ कि मैं यह नहीं समझ सकता कि संसार की व्यवस्था ऐसी क्यों है। मुझे लगता है कि इसके लिए मनुष्य स्वयं ही दोषी हैं; उन्हें स्वर्ग दिया गया था, वे स्वतंत्रता चाहते थे, और उन्होंने स्वर्ग से अग्नि चुरा ली, हालाँकि वे जानते थे कि वे दुखी होंगे, इसलिए उन पर दया करने की कोई आवश्यकता नहीं है। अपनी दयनीय, सांसारिक, यूक्लिडियन समझ से, मैं केवल इतना जानता हूँ कि दुख है और कोई भी दोषी नहीं है; कि कारण का परिणाम सीधा और सरल है; कि सब कुछ बहता है और अपना स्तर पाता है—लेकिन यह केवल यूक्लिडियन बकवास है, मैं यह जानता हूँ, और मैं इसके अनुसार जीवन नहीं जी सकता! मुझे इस बात से क्या सांत्वना मिलती है कि कोई भी दोषी नहीं है और कारण का परिणाम सीधा और सरल है, और मैं इसे जानता हूँ?—मुझे न्याय चाहिए, अन्यथा मैं स्वयं को नष्ट कर लूँगा। और न्याय किसी दूर अनंत समय और स्थान में नहीं, बल्कि यहीं पृथ्वी पर, और वह भी स्वयं को देखने योग्य। मैंने इसमें विश्वास किया है। मैं इसे देखना चाहता हूँ, और अगर तब तक मैं मर जाऊँ, तो मुझे फिर से जीवित कर दो, क्योंकि अगर यह सब मेरे बिना ही हो जाए, तो यह बहुत अन्याय होगा। निश्चित रूप से मैंने केवल इसलिए कष्ट नहीं सहा है कि मैं, मेरे अपराध और मेरे कष्ट, किसी और के लिए भविष्य की सद्भावना की भूमि को सींच सकें। मैं अपनी आँखों से देखना चाहता हूँ कि हिरणी शेर के साथ लेटी हो और पीड़ित उठकर अपने हत्यारे को गले लगा ले। मैं वहाँ मौजूद रहना चाहता हूँ जब अचानक सभी को समझ आ जाए कि यह सब किस लिए हुआ था। दुनिया के सभी धर्म इसी लालसा पर आधारित हैं, और मैं भी इसमें विश्वास करता हूँ। लेकिन फिर बच्चे हैं, और मैं उनके बारे में क्या करूँ? यह एक ऐसा प्रश्न है जिसका उत्तर मैं नहीं दे सकता। मैं सौवीं बार दोहराता हूँ, अनगिनत प्रश्न हैं, लेकिन मैंने केवल बच्चों को ही चुना है, क्योंकि उनके मामले में मेरा मतलब इतना स्पष्ट है कि इसका उत्तर देना असंभव है। सुनो! अगर शाश्वत सद्भाव के लिए सभी को कष्ट सहना ही है, तो बच्चों का इससे क्या लेना-देना है, कृपया मुझे बताओ? यह समझ से परे है कि उन्हें क्यों कष्ट सहना चाहिए, और उन्हें सद्भाव के लिए क्यों कीमत चुकानी चाहिए। वे भी भविष्य की सद्भावना के लिए मिट्टी को उपजाऊ बनाने में योगदान क्यों दें? मैं मनुष्यों में पाप में एकजुटता समझता हूँ। मैं प्रतिशोध में एकजुटता भी समझता हूँ; लेकिन बच्चों के साथ ऐसी कोई एकजुटता नहीं हो सकती। और अगर यह सच है कि उन्हें अपने पिता के सभी अपराधों की ज़िम्मेदारी साझा करनी होगी, तो यह सत्य इस दुनिया का नहीं है और मेरी समझ से परे है। कोई मसखरा शायद कहेगा कि बच्चा बड़ा होकर पाप करता, लेकिन देखो, वह बड़ा नहीं हुआ, आठ साल की उम्र में कुत्तों ने उसे नोंच डाला। ओह, अलेयोशा, मैं ईश्वर की निंदा नहीं कर रहा हूँ! मैं समझता हूँ कि उस समय ब्रह्मांड में कितना बड़ा बदलाव आएगा, जब स्वर्ग और पृथ्वी की हर चीज़ एक ही स्तुति गीत में विलीन हो जाएगी और हर जीवित प्राणी, जो जी चुका है, ज़ोर से पुकारेगा: 'हे प्रभु, तू न्यायप्रिय है, क्योंकि तेरे मार्ग प्रकट हैं।' जब माँ अपने बच्चे को कुत्तों के सामने फेंकने वाले दुष्ट को गले लगाएगी और तीनों आँसू बहाते हुए ज़ोर से पुकारेंगे, 'हे प्रभु, तू न्यायप्रिय है!' तब ज्ञान का शिखर प्राप्त हो जाएगा और सब कुछ स्पष्ट हो जाएगा। लेकिन जो बात मुझे यहाँ रोक रही है, वह यह है कि मैं उस सामंजस्य को स्वीकार नहीं कर सकता। और जब तक मैं पृथ्वी पर हूँ, मैं अपने लिए उपाय करने में जल्दी करता हूँ। देखो, अलेयोशा, शायद ऐसा सच में हो सकता है कि अगर मैं उस क्षण तक जीवित रहूँ, या उसे देखने के लिए फिर से जीवित हो जाऊँ, तो शायद मैं भी बाकी लोगों के साथ ज़ोर से पुकारूँ, बच्चे को यातना देने वाले को गले लगाती माँ को देखकर, 'हे प्रभु, तू न्यायप्रिय है!' लेकिन मैं तब ज़ोर से पुकारना नहीं चाहता। समय रहते, मैं अपनी रक्षा के लिए जल्दी करता हूँ, और इसलिए मैं उच्च सद्भाव का पूर्णतः त्याग करता हूँ। उस एक पीड़ित बच्चे के आँसू, जिसने अपनी छोटी मुट्ठी से अपनी छाती पीटते हुए, अपने दुर्गंधयुक्त शौचालय में, अपने अनभिज्ञ आँसुओं के साथ 'प्रिय दयालु ईश्वर' से प्रार्थना की, इसके लायक नहीं हैं! यह इसके लायक नहीं है, क्योंकि उन आँसुओं का प्रायश्चित नहीं हुआ है। उनका प्रायश्चित होना चाहिए, अन्यथा सद्भाव नहीं हो सकता। लेकिन कैसे? आप उनका प्रायश्चित कैसे करेंगे? क्या यह संभव है? उनका बदला लेकर? लेकिन मुझे उनके बदले की क्या परवाह? मुझे अत्याचारियों के लिए नरक की क्या परवाह? नरक से क्या लाभ होगा, जब उन बच्चों को पहले ही यातना दी जा चुकी है? और अगर नरक है, तो सद्भाव का क्या होगा? मैं क्षमा करना चाहता हूँ। मैं आलिंगन करना चाहता हूँ। मैं और अधिक पीड़ा नहीं चाहता। और यदि बच्चों की पीड़ाएँ सत्य के लिए आवश्यक पीड़ाओं की कुल संख्या को बढ़ाती हैं, तो मैं विरोध करता हूँ कि सत्य ऐसी कीमत के लायक नहीं है। मैं नहीं चाहता कि माँ उस ज़ालिम को गले लगाए जिसने उसके बेटे को कुत्तों के सामने फेंक दिया! वह उसे माफ़ करने की हिम्मत नहीं कर सकती! अगर वह चाहे तो अपने लिए उसे माफ़ कर दे, अपने दिल के अथाह दर्द के लिए उस ज़ालिम को माफ़ कर

दे। लेकिन अपने सताए हुए बच्चे के दर्द को माफ़ करने का उसे कोई अधिकार नहीं है; वह ज़ालिम को माफ़ करने की हिम्मत नहीं कर सकती, भले ही बच्चा उसे माफ़ कर दे! और अगर ऐसा है, अगर वे माफ़ करने की हिम्मत नहीं कर सकते, तो सद्भाव का क्या होगा? क्या पूरी दुनिया में कोई ऐसा प्राणी है जिसे माफ़ करने का अधिकार हो और जो माफ़ कर सके? मुझे सद्भाव नहीं चाहिए। मानवता के प्रति प्रेम के कारण मुझे यह नहीं चाहिए। मैं तो बिना बदला लिए हुए दर्द के साथ रहना पसंद करूँगा। मैं अपने बिना बदला लिए हुए दर्द और अतृप्त आक्रोश के साथ रहना पसंद करूँगा, भले ही मैं गलत हूँ। इसके अलावा, सद्भाव के लिए बहुत बड़ी कीमत माँगी जाती है; इतना चुकाना हमारी क्षमता से परे है। इसलिए मैं अपना प्रवेश टिकट जल्दी से वापस कर रहा हूँ, और अगर मैं एक ईमानदार आदमी हूँ तो मुझे इसे जल्द से जल्द वापस करना चाहिए। और मैं वही कर रहा हूँ। अलेयोशा, ऐसा नहीं है कि मैं ईश्वर को अस्वीकार करता हूँ, बल्कि मैं उन्हें अत्यंत आदरपूर्वक टिकट लौटा रहा हूँ।
“यह तो विद्रोह है,” अलेयोशा ने नीचे देखते हुए धीरे से कहा। “विद्रोह? मुझे खेद है कि आप इसे ऐसा कहते हैं,” इवान ने गंभीरता से कहा। “कोई भी
विद्रोह में जीना मुश्किल है, और मैं जीना चाहता हूँ। खुद बताओ, मैं तुम्हें चुनौती देता हूँ—जवाब दो। कल्पना करो कि तुम मानव भाग्य का ताना-बाना बुन रहे हो, जिसका उद्देश्य अंततः मनुष्यों को सुखी बनाना, उन्हें शांति और विश्राम देना है, लेकिन यह आवश्यक और अपरिहार्य हो कि केवल एक नन्हे प्राणी—उदाहरण के लिए, वह बच्चा जो अपनी मुट्ठी से अपनी छाती पीट रहा है—को यातना देकर मार डाला जाए, और उस इमारत की नींव उसके अनवरत आँसुओं पर रखी जाए, तो क्या तुम इन शर्तों पर वास्तुकार बनने को तैयार होगे? मुझे बताओ, और सच बताओ।
“नहीं, मैं सहमत नहीं हूँ,” अलेयोशा ने धीरे से कहा। “और क्या आप इस बात को स्वीकार कर सकते हैं कि जिन पुरुषों के लिए आप इसे बना रहे हैं, वे भी इसमें शामिल हैं?”
क्या वे एक नन्हे पीड़ित के अपवित्र रक्त की नींव पर अपनी खुशी स्वीकार करने के लिए सहमत होंगे? और इसे स्वीकार करके वे हमेशा के लिए खुश रहेंगे?
“नहीं, मैं इसे स्वीकार नहीं कर सकता, भाई,” अलेयोशा ने अचानक चमकती आँखों से कहा।
आँखों, “तुमने अभी कहा, क्या इस संसार में कोई ऐसा प्राणी है जिसे क्षमा करने का अधिकार हो और जो क्षमा कर सके? परन्तु एक ऐसा प्राणी है जो सब कुछ क्षमा कर सकता है, सब कुछ के लिए, क्योंकि उसने सबके लिए अपना निर्दोष रक्त बहाया। तुम उसे भूल गए हो, और उसी पर यह भवन बना है, और उसी से लोग पुकारते हैं, ‘हे प्रभु, तू न्यायप्रिय है, क्योंकि तेरे मार्ग प्रकट हैं!’”
“आह! वह जो पापरहित है और उसका रक्त! नहीं, मैं उसे नहीं भूला हूँ;
इसके विपरीत, मैं तो हमेशा सोचता रहता हूँ कि तुमने पहले उनका ज़िक्र क्यों नहीं किया, क्योंकि आमतौर पर तुम्हारी हर दलील में उन्हीं का ज़िक्र होता है। जानते हो, अलेयोशा—हँसो मत! मैंने करीब एक साल पहले एक कविता लिखी थी। अगर तुम मुझे दस मिनट और दे सको, तो मैं तुम्हें सुना दूँगा।
“क्या तुमने कविता लिखी?”
“अरे नहीं, मैंने इसे नहीं लिखा,” इवान हँसते हुए बोला, “और मैंने कभी दो किताबें नहीं लिखीं।”
मेरे जीवन में कविता की पंक्तियाँ बहुत महत्वपूर्ण हैं। लेकिन मैंने इस कविता को गद्य में रचा और मुझे याद आ गई। इसे रचते समय मैं भावनाओं में बह गया था। आप मेरे पहले पाठक—अर्थात श्रोता—होंगे। भला एक लेखक को एक भी श्रोता क्यों छोड़ना चाहिए?” इवान मुस्कुराया। “क्या मैं आपको सुनाऊँ?”
“मुझे पूरी तरह से ध्यान चाहिए,” अलेयोशा ने कहा।
मेरी कविता का नाम 'द ग्रैंड इनक्विजिटर' है; यह एक हास्यास्पद बात है, लेकिन मैं
मैं तुम्हें यह बताना चाहता हूँ।

अध्याय 5

ग्रैंड इनक्विजिटर

“इसकी भी एक प्रस्तावना होनी चाहिए—मतलब, एक साहित्यिक प्रस्तावना,” इवान हँसते हुए बोला, “और मैं प्रस्तावना लिखने में बिल्कुल अनाड़ी हूँ। देखिए, मेरी कहानी सोलहवीं शताब्दी में घटित होती है, और उस समय, जैसा कि आपने शायद स्कूल में पढ़ा होगा, कविता में दिव्य शक्तियों को धरती पर लाना प्रथा थी। दांते की तो बात ही छोड़िए, फ्रांस में, मठों के भिक्षुओं के साथ-साथ पादरी भी नियमित रूप से ऐसे प्रदर्शन करते थे जिनमें मैडोना, संत, देवदूत, ईसा मसीह और स्वयं ईश्वर को मंच पर लाया जाता था। उन दिनों यह सब बड़ी सादगी से किया जाता था। विक्टर ह्यूगो के ‘नोट्रे डेम डे पेरिस’ में, लुई 11 के शासनकाल में पेरिस के होटल डे विले में राजकुमार के जन्म के सम्मान में लोगों के लिए एक शिक्षाप्रद और निःशुल्क तमाशा प्रस्तुत किया गया था। इसे ‘ले बॉन जुजमेंट डे ला ट्रेस सैंटे एट ग्रेसियस वर्जिन मैरी’ कहा जाता था, और वह स्वयं मंच पर प्रकट होती हैं और अपना ‘बॉन जुजमेंट’ सुनाती हैं। इसी तरह के नाटक, मुख्यतः पुराने नियम से लिए गए नाटक, पीटर द ग्रेट के समय तक कभी-कभी मॉस्को में भी प्रदर्शित किए जाते थे। नाटकों के अलावा, दुनिया भर में तरह-तरह की किंवदंतियाँ और गाथाएँ भी प्रचलित थीं, जिनमें आवश्यकता पड़ने पर संत, देवदूत और स्वर्ग की सभी शक्तियाँ भाग लेती थीं। हमारे मठों में भिक्षु ऐसे कविताओं का अनुवाद, नकल और यहाँ तक कि रचना करने में भी लगे रहते थे—और यह कार्य तातारों के शासनकाल में भी जारी रहा। उदाहरण के लिए, ऐसी ही एक कविता (स्वर्गिक भाषा में) है, 'नरक में हमारी माता की यात्रा', जिसका वर्णन दांते के वर्णन जितना ही साहसिक है। हमारी माता नरक का दौरा करती हैं, और प्रधान देवदूत माइकल उन्हें यातनाओं से गुज़रने में मार्गदर्शन करते हैं। वह पापियों और उनके दंड को देखती हैं। वहाँ वह अन्य लोगों के बीच एक उल्लेखनीय पापी समूह को जलती हुई झील में देखती हैं; उनमें से कुछ झील की तलहटी में इस कदर डूब जाते हैं कि वे तैरकर बाहर नहीं निकल पाते, और 'इन्हें ईश्वर भूल जाता है'—यह एक असाधारण गहराई और शक्ति का भाव है। और इस प्रकार हमारी माता, स्तब्ध और रोती हुई, ईश्वर के सिंहासन के समक्ष गिर पड़ती हैं और नरक में सभी के लिए—उन सभी के लिए जो उन्होंने देखा है—दया की भीख मांगती हैं। वहाँ, बिना किसी भेदभाव के। ईश्वर के साथ उनकी बातचीत बेहद रोचक है। वह उनसे विनती करती हैं, वह रुकती नहीं हैं, और जब ईश्वर उनके पुत्र के क्रूस पर जड़े हाथों और पैरों की ओर इशारा करते हुए पूछते हैं, 'मैं उनके सताने वालों को कैसे क्षमा करूँ?' तो वह सभी संतों, सभी शहीदों, सभी स्वर्गदूतों और महादूतों से कहती हैं कि वे उनके साथ गिरकर बिना किसी भेदभाव के सभी पर दया की प्रार्थना करें। इसका अंत इस बात से होता है कि वह ईश्वर से हर साल गुड फ्राइडे से ट्रिनिटी डे तक कष्टों से मुक्ति प्राप्त करती हैं, और पापी तुरंत नरक से कृतज्ञता का स्वर उठाते हुए कहते हैं, 'हे प्रभु, इस न्याय में आप न्यायप्रिय हैं।' खैर, अगर मेरी कविता उस समय प्रकाशित हुई होती, तो वह भी इसी प्रकार की होती। मेरी कविता में वह आते हैं, लेकिन कुछ नहीं कहते, केवल प्रकट होते हैं और चले जाते हैं। पंद्रह शताब्दियाँ बीत चुकी हैं जब उन्होंने अपनी महिमा में आने का वादा किया था, पंद्रह शताब्दियाँ बीत चुकी हैं जब उनके पैगंबर ने लिखा था, 'देखो, मैं शीघ्र आता हूँ'; 'उस दिन और उस घड़ी के विषय में न तो पुत्र जानता है, केवल पिता,' जैसा कि स्वयं उन्होंने कहा था। पृथ्वी पर भविष्यवाणी की गई थी। लेकिन मानवता उसी आस्था और उसी प्रेम के साथ उसकी प्रतीक्षा कर रही है। ओह, और भी अधिक आस्था के साथ, क्योंकि पंद्रह शताब्दियों से मनुष्य को स्वर्ग से कोई संकेत नहीं दिखाई दे रहे हैं।

आज आसमान से कोई संकेत नहीं मिला।

हृदय की बात में कुछ जोड़ना।

हृदय की अंतरात्मा की आवाज़ पर विश्वास के सिवा कुछ नहीं बचा था। यह सच है कि उन दिनों कई चमत्कार हुए थे। ऐसे संत थे जिन्होंने चमत्कारिक उपचार किए; कुछ पवित्र लोगों के जीवनवृत्त के अनुसार, स्वयं स्वर्ग की रानी ने उनसे दर्शन किए थे। लेकिन शैतान सोया नहीं था, और इन चमत्कारों की सत्यता पर मनुष्यों के मन में संदेह उत्पन्न होने लगे थे। और ठीक उसी समय उत्तरी जर्मनी में एक भयानक नया विधर्म प्रकट हुआ। “एक विशाल तारा, मशाल के समान” (अर्थात एक गिरजाघर के समान), “जल के स्रोतों पर गिरा और वे

कड़वे हो गए।" इन विधर्मियों ने ईश्वर की निंदा करते हुए चमत्कारों का खंडन करना शुरू कर दिया। लेकिन जो लोग विश्वासयोग्य बने रहे, उनका विश्वास और भी दृढ़ हो गया। मानवता के आँसू पहले की तरह ही उनके लिए उमड़े, उनके आने की प्रतीक्षा की, उनसे प्रेम किया, उनकी आशा की, उनके लिए कष्ट सहने और मरने की तड़प पहले की तरह ही बनी रही। और इतने युगों तक मानवजाति ने विश्वास और उत्साह के साथ प्रार्थना की, "हे प्रभु हमारे परमेश्वर, अपने आगमन में शीघ्रता करें," इतने युगों तक उन्हें पुकारा, कि अपनी असीम दया से उन्होंने अपने सेवकों के पास आने की कृपा की। उस दिन से पहले जब वे धरती पर आए थे, उन्होंने कुछ पवित्र पुरुषों, शहीदों और संन्यासियों से मुलाकात की थी, जैसा कि उनके जीवन वृत्तांतों में लिखा है। हमारे बीच, ट्युटचेव ने उनके शब्दों की सत्यता में पूर्ण विश्वास रखते हुए गवाही दी कि

दासों के वस्त्र पहने, क्रूस उठाए हुए
थका हुआ और हारा हुआ, स्वर्ग का राजा
हमारी माता, रूस, आशीर्वाद देने आई थी।
और वह हमारे देश में विचरण करता रहा।
और यह बात बिल्कुल सच थी, मैं आपको विश्वास दिलाता हूं।
और देखो, उसने क्षण भर के लिए लोगों के सामने प्रकट होने की कृपा की।

यातनाग्रस्त, पीड़ित लोग, अधर्म में डूबे हुए, फिर भी उन्हें बच्चों की तरह प्यार करते थे। मेरी कहानी स्पेन के सेविले शहर में, धर्म जांच के सबसे भयानक दौर में घटित होती है, जब ईश्वर की महिमा के लिए प्रतिदिन आग जलाई जाती थी, और 'शानदार आग में दुष्ट विधर्मियों को जलाया जाता था।' ओह, बेशक, यह वह आगमन नहीं था जिसमें वे अपने वादे के अनुसार अंत समय में अपनी समस्त स्वर्गीय महिमा के साथ प्रकट होंगे, और जो 'पूर्व से पश्चिम की ओर बिजली की तरह अचानक' होगा। नहीं, वे अपने बच्चों से केवल एक क्षण के लिए मिलने आए, और वहीं जहाँ विधर्मियों के चारों ओर आग की लपटें उठ रही थीं। अपनी असीम दया से वे एक बार फिर उसी मानव रूप में मनुष्यों के बीच आए जिसमें वे पंद्रह शताब्दियों पहले तीन वर्षों तक मनुष्यों के बीच विचरण करते रहे थे। वह दक्षिणी शहर के 'गर्म फुटपाथों' पर उतरा, जहाँ एक दिन पहले लगभग सौ विधर्मियों को, ईश्वर की महिमा के लिए, कार्डिनल, ग्रैंड इनक्विजिटर द्वारा, राजा, दरबार, शूरवीरों, कार्डिनलों, दरबार की सबसे आकर्षक महिलाओं और सेविले की पूरी आबादी की उपस्थिति में, एक भव्य ऑटो दा फे में जला दिया गया था।

वह चुपचाप, बिना किसी की नज़र में आए आया, और फिर भी, हैरानी की बात है, हर कोई उन्हें पहचान लिया। यह कविता के सबसे बेहतरीन अंशों में से एक हो सकता है। मेरा मतलब है, उन्होंने उन्हें क्यों पहचाना? लोग उनकी ओर अनायास ही आकर्षित हो जाते हैं, वे उन्हें घेर लेते हैं, उनके चारों ओर मंडराते हैं, उनका अनुसरण करते हैं। वे असीम करुणा की कोमल मुस्कान के साथ चुपचाप उनके बीच विचरण करते हैं। उनके हृदय में प्रेम का सूर्य प्रज्वलित होता है, उनकी आँखों से प्रकाश और शक्ति झलकती है, और उनकी चमक लोगों पर पड़ती है, जिससे उनके हृदय प्रेम से भर जाते हैं। वे अपने हाथ उनकी ओर बढ़ाते हैं, उन्हें आशीर्वाद देते हैं, और उनके स्पर्श से, यहाँ तक कि उनके वस्त्रों से भी, चंगाई का गुण उत्पन्न होता है। भीड़ में एक बूढ़ा व्यक्ति, जो बचपन से अंधा है, पुकारता है, 'हे प्रभु, मुझे चंगा कर दो और मैं तुझे देख पाऊँगा!' और मानो उसकी आँखों से पर्दा हट जाता है और वह अंधा व्यक्ति उन्हें देख लेता है। भीड़ रोती है और उनके चरणों की धरती को चूमती है। बच्चे उनके सामने फूल फेंकते हैं, गाते हैं और जयजयकार करते हैं। 'यह वही हैं - यह वही हैं!' सभी दोहराते हैं। 'यह वही हैं, उनके सिवा कोई और नहीं हो सकता!' वह सेविले गिरजाघर की सीढ़ियों पर उस समय रुकते हैं जब रोते-बिलखते शोक संतप्त लोग एक छोटा सा खुला सफेद ताबूत ला रहे होते हैं। उसमें एक सात वर्षीय बच्ची है, जो एक प्रतिष्ठित नागरिक की इकलौती बेटी है। मृत बच्ची फूलों में लिपटी हुई है। भीड़ रोती हुई माँ से कहती है, 'वह तुम्हारे बच्चे को जीवित करेंगे।' ताबूत के पास आकर पुजारी हैरान और तेवर चढ़ा लेते हैं, लेकिन मृत बच्ची की माँ विलाप करते हुए उनके चरणों में गिर पड़ती है। 'यदि यह आप ही हैं, तो मेरे बच्चे को जीवित कर दीजिए!' वह अपने हाथ उनकी ओर फैलाते हुए रोती है। जुलूस रुक जाता है, ताबूत उनके चरणों में सीढ़ियों पर रख दिया जाता है। वह करुणा से देखते हैं, और उनके होंठ एक बार फिर कोमल स्वर में कहते हैं, 'हे कन्या, उठो!' और कन्या उठ उठती है। छोटी बच्ची ताबूत में बैठ जाती है और चारों ओर देखती है, आश्चर्य से खुली आँखों से मुस्कुराती है, उसके हाथ में सफेद गुलाबों का गुच्छा है जो उन्होंने उसके हाथ में रखा था।

“लोगों में चीख-पुकार, सिसकियाँ और अफरा-तफरी मची हुई है, और उस क्षण
स्वयं कार्डिनल, ग्रैंड इनक्विजिटर, गिरजाघर के पास से गुज़रते हैं। वे लगभग नब्बे वर्ष के बूढ़े, लंबे और सीधे खड़े व्यक्ति हैं, जिनका चेहरा मुरझाया हुआ है और आँखें धँसी हुई हैं, फिर भी उनमें एक चमक बाकी है। उन्होंने अपने भव्य कार्डिनल के वस्त्र नहीं पहने हैं, जैसे उन्होंने एक दिन पहले पहने थे, जब वे रोमन चर्च के शत्रुओं को जला रहे थे—इस समय उन्होंने अपना खुरदरा, पुराना, भिक्षु का चोगा पहना हुआ है। उनके पीछे कुछ दूरी पर उनके उदास सहायक, दास और 'पवित्र रक्षक' आ रहे हैं। भीड़ को देखकर वे रुक जाते हैं और दूर से उसे देखते हैं। वे सब कुछ देखते हैं; वे ताबूत को उनके चरणों में रखते हुए देखते हैं, बच्चे को उठते हुए देखते हैं, और उनका चेहरा गंभीर हो जाता है। वे अपनी घनी भूरी भौंहें सिकोड़ते हैं और उनकी आँखों में एक भयावह आग सी चमक उठती है। वे अपनी उंगली आगे बढ़ाते हैं और रक्षकों को उन्हें ले जाने का आदेश देते हैं। और उनकी शक्ति ऐसी है कि लोग उनके सामने पूरी तरह से दबकर कांपते हुए आज्ञापालन में लीन हो जाते हैं, और भीड़ तुरंत पहरेदारों के लिए रास्ता बना देती है, और सन्नाटे में वे उन्हें पकड़कर ले जाते हैं। भीड़ तुरंत एक साथ, बूढ़े धर्माध्यक्ष के सामने, धरती पर झुक जाती है। वे मौन में लोगों को आशीर्वाद देते हैं और आगे बढ़ जाते हैं। पहरेदार अपने कैदी को पवित्र धर्माध्यक्ष के प्राचीन महल में स्थित तंग, अंधकारमय गुंबददार जेल में ले जाते हैं और उन्हें उसमें बंद कर देते हैं। दिन बीत जाता है और उसके बाद सेविले की अंधेरी, जलती हुई, 'सांस रोक देने वाली' रात छा जाती है। हवा 'लॉरेल और नींबू की खुशबू से महक रही' है। घोर अंधेरे में जेल का लोहे का दरवाजा अचानक खुलता है और स्वयं धर्माध्यक्ष हाथ में मशाल लिए अंदर आते हैं। वे अकेले हैं; उनके पीछे दरवाजा तुरंत बंद हो जाता है। वे दरवाजे पर खड़े होकर एक-दो मिनट तक उनके चेहरे को निहारते हैं। अंत में वे धीरे-धीरे उठते हैं, मेज पर मशाल रखते हैं और बोलते हैं।
“‘क्या तुम हो? तुम?’ लेकिन कोई जवाब न मिलने पर, वह तुरंत कहता है, ‘मत करो’”
उत्तर दो, चुप रहो। तुम क्या कह सकते हो? मैं भली-भांति जानता हूँ कि तुम क्या कहना चाहते हो। और तुम्हें अपने पुराने कथनों में कुछ भी जोड़ने का कोई अधिकार नहीं है। तो फिर तुम हमें रोकने क्यों आए हो? क्योंकि तुम हमें रोकने आए हो, और तुम यह जानते हो। लेकिन क्या तुम जानते हो कि कल क्या होगा? मैं नहीं जानता कि तुम कौन हो और मुझे यह जानने की परवाह भी नहीं है कि यह तुम हो या केवल उसका कोई रूप, लेकिन कल मैं तुम्हें दोषी ठहराऊँगा और सबसे बुरे विधर्मी के रूप में तुम्हें आग में जला दूँगा। और जो लोग आज तुम्हारे चरणों को चूम रहे हैं, वे कल मेरे जरा से इशारे पर तुम्हारी आग के अंगारों को इकट्ठा करने के लिए दौड़ पड़ेंगे। क्या तुम यह जानते हो? हाँ, शायद तुम जानते हो,’ उसने गहन चिंतन के साथ कहा, एक पल के लिए भी कैदी से अपनी निगाहें हटाए बिना।
“मुझे ठीक से समझ नहीं आया, इवान। इसका क्या मतलब है?” अलेयोशा ने कहा, जो
चुपचाप सुनते हुए, उसने मुस्कुराते हुए कहा, "क्या यह महज एक कोरी कल्पना है, या बूढ़े आदमी की कोई गलती—कोई असंभव लेन-देन?"
इवान हंसते हुए बोला, "अगर तुम इतने भ्रष्ट हो चुके हो, तो इसे आखिरी समझ लो।"
आधुनिक यथार्थवाद को पसंद करता है और किसी भी काल्पनिक चीज़ को बर्दाश्त नहीं कर सकता। अगर आप इसे गलत पहचान का मामला मानते हैं, तो मान लीजिए। यह सच है,” वह हंसते हुए आगे बोला, “बूढ़ा आदमी नब्बे साल का था, और हो सकता है कि वह अपने इस विचार को लेकर पागल हो गया हो। हो सकता है कि वह कैदी के रूप को देखकर चौंक गया हो। हो सकता है कि वास्तव में यह महज़ उसकी बड़बड़ाहट हो, एक नब्बे साल के बूढ़े का भ्रम हो, जो एक दिन पहले सौ विधर्मियों के उन्माद से अति उत्साहित हो गया हो। लेकिन क्या इससे हमें कोई फर्क पड़ता है कि यह पहचान की गलती थी या एक बेतुकी कल्पना? महत्वपूर्ण बात तो यह है कि बूढ़े आदमी को बोलना चाहिए, खुलकर बोलना चाहिए कि उसने नब्बे वर्षों तक चुपचाप क्या सोचा है।”
“और कैदी भी चुप है? क्या वह उसे देखता है और कुछ नहीं कहता?”
शब्द?"
“वैसे भी यह तो होना ही था,” इवान फिर हँसा। “बूढ़े आदमी ने
मैंने उनसे कहा कि उन्हें अपने पुराने कथनों में कुछ भी जोड़ने का अधिकार नहीं है। मेरे विचार से, यह रोमन कैथोलिक धर्म की सबसे मूलभूत विशेषता है। वे कहते हैं, 'सब कुछ आपने पोप को सौंप दिया है, इसलिए सब कुछ अभी भी पोप के हाथों में है, और अब आपको आने की कोई आवश्यकता नहीं है। कम से कम अभी

तो आपको हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए।' जेसुइट्स इसी तरह बोलते और लिखते हैं। मैंने स्वयं उनके धर्मशास्त्रियों की रचनाओं में इसे पढ़ा है। मेरे पिताजी उनसे पूछते हैं, 'क्या आपको उस संसार के रहस्यों में से एक को हमारे सामने प्रकट करने का अधिकार है जहाँ से आप आए हैं?' और वे स्वयं उनके प्रश्न का उत्तर देते हैं। 'नहीं, आपको यह अधिकार नहीं है; ताकि आप पुराने कथनों में कुछ न जोड़ें, और मनुष्यों से वह स्वतंत्रता न छीनें जिसे आपने पृथ्वी पर रहते हुए ऊंचा किया था। आप जो कुछ भी नया प्रकट करेंगे, वह मनुष्यों की आस्था की स्वतंत्रता का अतिक्रमण होगा; क्योंकि यह एक चमत्कार के रूप में प्रकट होगा, और पंद्रह सौ वर्ष पहले उन दिनों में उनकी आस्था की स्वतंत्रता आपको किसी भी चीज़ से अधिक प्रिय थी। क्या आपने तब अक्सर नहीं कहा था, "मैं तुम्हें स्वतंत्र करूँगा"? लेकिन अब आपने इन "स्वतंत्र" पुरुषों को देख लिया है,' बूढ़ा व्यक्ति अचानक एक गंभीर मुस्कान के साथ कहता है। 'हाँ, हमने इसके लिए भारी कीमत चुकाई है,' वह उन्हें गंभीरता से देखते हुए आगे कहता है, 'लेकिन अंततः हमने आपके नाम पर वह कार्य पूरा कर लिया है। पंद्रह शताब्दियों तक हम आपकी स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करते रहे, लेकिन अब यह समाप्त हो गया है और हमेशा के लिए समाप्त हो गया है। क्या आपको विश्वास नहीं है कि यह हमेशा के लिए समाप्त हो गया है? आप नम्रता से मेरी ओर देखते हैं और मुझ पर क्रोधित होने की कृपा भी नहीं करते। लेकिन मैं आपको बता दूँ कि आज, लोग पहले से कहीं अधिक आश्वस्त हैं कि उन्हें पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त है, फिर भी वे अपनी स्वतंत्रता हमारे पास लाए हैं और विनम्रतापूर्वक हमारे चरणों में रख दी है। लेकिन यह हमारा ही किया-धरा है। क्या यही आपने किया? क्या यही आपकी स्वतंत्रता थी?'

"मुझे फिर से समझ नहीं आया," अलेयोशा ने बीच में कहा। "क्या वह व्यंग्य कर रहा है, क्या वह jesting?"

"बिल्कुल नहीं! वह इसे अपने और अपने चर्च के लिए एक उपलब्धि मानता है कि अंत में उन्होंने स्वतंत्रता को पराजित कर दिया है और ऐसा उन्होंने मनुष्यों को प्रसन्न करने के लिए किया है। 'अब' (यहाँ वह निश्चित रूप से धर्म जांच के बारे में बात कर रहे हैं) 'पहली बार मनुष्यों की खुशी के बारे में सोचना संभव हुआ है। मनुष्य को विद्रोही बनाया गया था; और विद्रोही कैसे खुश हो सकते हैं? तुम्हें चेतावनी दी गई थी,' वह उनसे कहते हैं। 'तुम्हें कई बार नसीहतें और चेतावनियाँ दी गईं, लेकिन तुमने उन चेतावनियों को नहीं सुना; तुमने उस एकमात्र मार्ग को अस्वीकार कर दिया जिससे मनुष्य प्रसन्न हो सकते थे। लेकिन, सौभाग्य से, जाते समय तुमने यह कार्य हमें सौंप दिया। तुमने वादा किया है, तुमने अपने वचन से इसे स्थापित किया है, तुमने हमें बांधने और खोलने का अधिकार दिया है, और अब, निश्चित रूप से, तुम इसे वापस लेने के बारे में सोच भी नहीं सकते। तो फिर, तुम हमें रोकने क्यों आए हो?'

और 'चेतावनी और नसीहतों की कमी न होने' का क्या अर्थ है?

अलोशा ने पूछा।

"क्यों, यही तो उस बूढ़े आदमी की मुख्य बात है। 'बुद्धिमान और भयानक आत्मा, आत्म-विनाश और गैर--'अस्तित्व,' बूढ़ा व्यक्ति आगे कहता है, 'महान आत्मा ने जंगल में तुझसे बात की, और ग्रंथों में हमें बताया गया है कि उसने तुझे "परीक्षित" किया। क्या यह सच है? और क्या उससे अधिक सत्य कुछ कहा जा सकता है जो उसने तुझसे तीन प्रश्नों में प्रकट किया और जिसे तूने अस्वीकार कर दिया, और जिसे ग्रंथों में "परीक्षा" कहा गया है? और फिर भी यदि पृथ्वी पर कभी कोई वास्तव में अद्भुत चमत्कार हुआ है, तो वह उसी दिन हुआ, तीन परीक्षाओं के दिन। उन तीन प्रश्नों का कथन ही अपने आप में चमत्कार था।' मान लीजिए कि तर्क के लिए यह संभव हो कि उस भयानक आत्मा के वे तीन प्रश्न ग्रंथों से पूरी तरह लुप्त हो गए हों, और हमें उन्हें पुनः स्थापित करना हो, उन्हें नए सिरे से गढ़ना हो, और ऐसा करने के लिए हमने पृथ्वी के सभी बुद्धिमान पुरुषों—शासकों, प्रमुख पुरोहितों, विद्वानों, दार्शनिकों, कवियों—को एकत्रित किया हो और उन्हें तीन प्रश्न गढ़ने का कार्य सौंपा हो, जो न केवल उस अवसर के अनुकूल हों, बल्कि तीन शब्दों, तीन मानवीय वाक्यांशों में, संसार और मानवता के संपूर्ण भावी इतिहास को व्यक्त करें—तो क्या आप मानते हैं कि पृथ्वी की सारी बुद्धि मिलकर भी उन तीन प्रश्नों के बराबर गहराई और शक्ति वाला कोई प्रश्न गढ़ सकती थी, जो वास्तव में उस बुद्धिमान और शक्तिशाली आत्मा ने जंगल में आपसे पूछे थे? केवल उन प्रश्नों से, उनके कथन के चमत्कार से, हम देख सकते हैं कि यहाँ हमारा संबंध क्षणभंगुर मानवीय बुद्धि से नहीं, बल्कि परम और शाश्वत से है। क्योंकि उन तीन प्रश्नों में मानो मानव जाति का संपूर्ण इतिहास समाहित है और उसकी भविष्यवाणी की गई है, और उनमें मानव स्वभाव के सभी अनसुलझे ऐतिहासिक विरोधाभास समाहित हैं। उस समय यह इतना स्पष्ट

नहीं हो सकता था, क्योंकि भविष्य अज्ञात था; लेकिन अब जब पंद्रह सौ वर्ष बीत चुके हैं, हम देखते हैं कि उन तीन प्रश्नों में जो कुछ भी कहा गया था, वह इतना सटीक रूप से अनुमानित और भविष्यवाणी किया गया था, और इतना सत्य सिद्ध हुआ है कि उसमें कुछ भी जोड़ा या घटाया नहीं जा सकता।

"'स्वयं निर्णय करो कि कौन सही था—तुम या वह जिसने तुमसे प्रश्न किया था?'"

पहले प्रश्न को याद करो; दूसरे शब्दों में, उसका अर्थ यह था: "तुम संसार में जाना चाहते हो, और खाली हाथ जा रहे हो, उस स्वतंत्रता के वादे के साथ जिसे मनुष्य अपनी सरलता और स्वाभाविक अनियंत्रण में समझ भी नहीं सकते, जिससे वे डरते और भयभीत होते हैं—क्योंकि मनुष्य और मानव समाज के लिए स्वतंत्रता से अधिक असहनीय कुछ भी नहीं रहा है। परन्तु क्या तुम इस सूखे और बंजर रेगिस्तान में इन पत्थरों को देखते हो? इन्हें रोटी में बदल दो, और मनुष्य भेड़ों के झुंड की तरह तुम्हारे पीछे दौड़ेंगे, कृतज्ञ और आज्ञाकारी, यद्यपि सदा कांपते रहेंगे, कहीं तुम अपना हाथ न खींच लो और उन्हें अपनी रोटी से वंचित न कर दो।" परन्तु तुम मनुष्य को स्वतंत्रता से वंचित नहीं करना चाहते थे और तुमने प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया, यह सोचते हुए कि उस स्वतंत्रता का क्या मूल्य है, यदि आज्ञाकारिता रोटी से खरीदी जाती है? तुमने उत्तर दिया कि मनुष्य केवल रोटी से ही जीवित नहीं रहता। लेकिन क्या तू जानता है कि उस सांसारिक रोटी के लिए धरती की आत्मा तेरे विरुद्ध उठ खड़ी होगी, तुझसे संघर्ष करेगी और तुझ पर विजय प्राप्त करेगी, और सब उसका अनुसरण करते हुए चिल्लाएँगे, "इस जानवर से कौन मुकाबला कर सकता है? इसने हमें स्वर्ग से आग दी है!" क्या तू जानता है कि युग बीत जाएँगे, और मनुष्य अपने विद्वानों के मुख से यह घोषणा करेंगे कि कोई अपराध नहीं है, और इसलिए कोई पाप नहीं है; केवल भूख है? "मनुष्यों को भोजन दो, और फिर उनसे सद्गुण की अपेक्षा करो!" यही वे उस झंडे पर लिखेंगे, जिसे वे तेरे विरुद्ध उठाएँगे, और जिससे वे तेरे मंदिर को नष्ट कर देंगे। जहाँ तेरा मंदिर खड़ा था, वहाँ एक नई इमारत खड़ी होगी; बाबेल का भयानक मीनार फिर से बनाया जाएगा, और यद्यपि, पुराने की तरह, यह पूरा नहीं होगा, फिर भी तू उस नए मीनार को रोक सकता था और मनुष्यों के हज़ार वर्षों के कष्टों को कम कर सकता था; क्योंकि वे हज़ार वर्षों की पीड़ा के बाद अपने मीनार के साथ हमारे पास लौटेंगे। वे हमें फिर से खोजेंगे, भूमिगत तहखानों में छिपे हुए, क्योंकि हम फिर से सताए और प्रताड़ित किए जाएँगे। वे हमें ढूँढ़ेंगे और हमसे पुकारेंगे, "हमें भोजन दो, क्योंकि जिन्होंने स्वर्ग से आग बरसाने का वादा किया था, उन्होंने वह नहीं दी!" और तब हम उनका मीनार पूरा करेंगे, क्योंकि जो उन्हें भोजन देता है, वही इमारत पूरी करता है। और हम अकेले ही तेरे नाम से उन्हें भोजन देंगे, झूठा दावा करते हुए कि यह तेरे नाम से है। हे भगवान, वे हमारे बिना कभी भी अपना पेट नहीं भर सकते! जब तक वे स्वतंत्र रहेंगे, कोई विज्ञान उन्हें रोटी नहीं दे सकता। अंत में वे अपनी स्वतंत्रता हमारे चरणों में रख देंगे और हमसे कहेंगे, "हमें अपना गुलाम बना लो, लेकिन हमें भोजन दो।" वे अंततः स्वयं समझ जाएँगे कि स्वतंत्रता और सबके लिए पर्याप्त रोटी एक साथ असंभव है, क्योंकि वे कभी भी आपस में बाँट नहीं पाएँगे! वे यह भी मान लेंगे कि वे कभी स्वतंत्र नहीं हो सकते, क्योंकि वे कमज़ोर, दुष्ट, निकम्मे और विद्रोही हैं। हे प्रभु, तूने उन्हें स्वर्ग की रोटी का वादा किया था, परन्तु मैं फिर से कहता हूँ, क्या वह कमज़ोर, सदा पापी और नीच मनुष्य जाति की दृष्टि में सांसारिक रोटी के समर्थ हो सकती है? और यदि स्वर्ग की रोटी के लिए हज़ारों लोग तेरा अनुसरण करेंगे, तो उन लाखों-करोड़ों प्राणियों का क्या होगा जिनमें सांसारिक रोटी को छोड़कर स्वर्ग की रोटी ग्रहण करने की शक्ति नहीं होगी? या क्या तू केवल हज़ारों महान और बलवानों की ही परवाह करता है, जबकि समुद्र की रेत के समान असंख्य लाखों कमज़ोर परन्तु तुझसे प्रेम करने वाले प्राणी केवल महान और बलवानों के लिए ही जीवित रहेंगे? नहीं, हम कमज़ोरों की भी परवाह करते हैं। वे पापी और विद्रोही हैं, परन्तु अंत में वे भी आज्ञाकारी हो जाएँगे। वे हम पर आश्चर्य करेंगे और हमें देवता मानेंगे, क्योंकि हम उस स्वतंत्रता को सहने के लिए तैयार हैं जिसे उन्होंने इतना भयानक पाया है और उन पर शासन करने के लिए तैयार हैं—स्वतंत्र होना उनके लिए इतना भयानक लगेगा। परन्तु हम उन्हें बताएँगे कि हम तेरे सेवक हैं और तेरे नाम से उन पर शासन करेंगे। हम उन्हें फिर से धोखा देंगे, क्योंकि हम तुम्हें दोबारा हमारे पास नहीं आने देंगे। वह धोखा ही हमारा कष्ट होगा, क्योंकि हमें झूठ बोलने के लिए विवश होना पड़ेगा।

"'जंगल में पूछे गए पहले प्रश्न का यही महत्व है, और यह

तूने उस स्वतंत्रता के लिए इस वस्तु का त्याग किया है जिसे तूने सर्वोपरि माना है। फिर भी इस प्रश्न में इस संसार का महान रहस्य छिपा है। "रोटी" को चुनकर तू मानवता की सर्वव्यापी और शाश्वत लालसा को संतुष्ट कर देता—पूजा करने के लिए किसी को पाना। जब तक मनुष्य स्वतंत्र रहता है, वह पूजा करने के लिए किसी

को पाने के लिए इतनी निरंतर और कष्टदायी रूप से प्रयास करता है। परन्तु मनुष्य उस वस्तु की पूजा करना चाहता है जो निर्विवाद रूप से स्थापित हो, ताकि सभी मनुष्य एकमत होकर उसकी पूजा करें। क्योंकि ये बेचारे प्राणी न केवल ऐसी वस्तु की खोज में लगे हैं जिसकी कोई एक या दूसरा पूजा कर सके, बल्कि ऐसी वस्तु की खोज में लगे हैं जिस पर सभी विश्वास करें और उसकी पूजा करें; आवश्यक यह है कि सभी उसमें एक साथ हों। सामूहिक पूजा की यह लालसा आरंभ से ही प्रत्येक मनुष्य और समस्त मानवता का मुख्य दुख रही है। सामूहिक पूजा के लिए उन्होंने एक दूसरे को तलवार से मार डाला है। उन्होंने देवता स्थापित किए हैं और एक दूसरे को चुनौती दी है, "अपने देवताओं को त्याग दो और आकर हमारे देवताओं की पूजा करो, अन्यथा हम तुम्हें और तुम्हारे देवताओं को मार डालेंगे!" और यही संसार के अंत तक होता रहेगा, यहाँ तक कि जब देवता पृथ्वी से विलीन हो जाएँगे; वे फिर भी मूर्तियों के सामने झुकेंगे। तू जानता था, तू जान ही सकता था, मनुष्य के स्वभाव का यह मूलभूत रहस्य, परन्तु तूने उस अचूक ध्वज को ठुकरा दिया जो तुझे सभी मनुष्यों को केवल तेरे सामने झुकाने के लिए दिया गया था—सांसारिक रोटी का ध्वज; और तूने इसे स्वतंत्रता और स्वर्ग की रोटी के लिए ठुकरा दिया। देख तूने आगे क्या किया। और वह भी फिर से स्वतंत्रता के नाम पर! मैं तुझसे कहता हूँ कि मनुष्य को इससे बड़ी चिंता किसी और की नहीं होती कि वह किसी ऐसे व्यक्ति को शीघ्र पा ले जिसे वह स्वतंत्रता का वह उपहार सौंप सके जिसके साथ वह जन्म लेता है। परन्तु केवल वही व्यक्ति उसकी स्वतंत्रता का स्वामी बन सकता है जो उसके अंतरात्मा को शांत कर सके। रोटी में तुझे एक अजेय ध्वज दिया गया था; रोटी दे, और मनुष्य तेरी पूजा करेगा, क्योंकि रोटी से बढ़कर कुछ भी निश्चित नहीं है। परन्तु यदि कोई और उसके अंतरात्मा पर अधिकार कर ले—ओह! तब वह तेरी रोटी को त्याग देगा और उसका अनुसरण करेगा जिसने उसकी अंतरात्मा को फँसा लिया है। इस बात में तू सही था। क्योंकि मनुष्य के अस्तित्व का रहस्य केवल जीना ही नहीं, बल्कि जीने का कोई उद्देश्य होना भी है। जीवन के उद्देश्य की स्थिर समझ के बिना, मनुष्य जीना नहीं चाहेगा और प्रचुर मात्रा में रोटी होने पर भी पृथ्वी पर रहने के बजाय स्वयं को नष्ट करना पसंद करेगा। यह सत्य है। लेकिन फिर क्या हुआ? तूने मनुष्यों की स्वतंत्रता छीनने के बजाय उसे पहले से भी अधिक बढ़ा दिया! क्या तू भूल गया कि मनुष्य भले-बुरे के ज्ञान में चुनाव की स्वतंत्रता के बजाय शांति और यहाँ तक कि मृत्यु को भी पसंद करता है? मनुष्य के लिए उसकी अंतरात्मा की स्वतंत्रता से अधिक आकर्षक कुछ भी नहीं है, लेकिन इससे बड़ा दुख का कारण भी कुछ नहीं है। और देखिये, मनुष्य की अंतरात्मा को सदा के लिए शांत करने के लिए एक ठोस आधार देने के बजाय, तूने वह सब चुना जो असाधारण, अस्पष्ट और रहस्यमय है; तूने वह चुना जो मनुष्यों की शक्ति से बिल्कुल परे था, मानो तू उनसे बिल्कुल भी प्रेम नहीं करता हो—तू जो उनके लिए अपना प्राण देने आया था! हे प्रभु, तूने मनुष्य की स्वतंत्रता छीनने के बजाय उसे और बढ़ा दिया, और मानव जाति के आध्यात्मिक साम्राज्य को उसके कष्टों से सदा के लिए बोझिल कर दिया। तूने मनुष्य के स्वतंत्र प्रेम की कामना की, कि वह तेरा स्वतंत्र रूप से अनुसरण करे, तुझसे मोहित होकर और तेरे वश में होकर। कठोर प्राचीन कानून के स्थान पर, मनुष्य को अब स्वतंत्र हृदय से स्वयं निर्णय लेना होगा कि क्या अच्छा है और क्या बुरा, केवल तेरी छवि ही उसके मार्गदर्शक के रूप में होगी। परन्तु क्या तू नहीं जानता था कि यदि वह स्वतंत्र चुनाव के भयानक बोझ से दबा हुआ है, तो अंततः वह तेरी छवि और तेरे सत्य को भी अस्वीकार कर देगा? वे अंत में ज़ोर-ज़ोर से पुकारेंगे कि सत्य तुझमें नहीं है, क्योंकि तूने उन पर इतनी चिंताएँ और अनसुलझी समस्याएँ डालकर उन्हें जितना भ्रम और पीड़ा दी है, उससे अधिक भ्रम और पीड़ा में उन्हें नहीं छोड़ा जा सकता था।

"इसलिए, वास्तव में, तूने स्वयं ही इसकी नींव रखी।"

तेरे राज्य का विनाश हुआ है, और इसके लिए तुझसे अधिक दोषी कोई नहीं है। फिर भी तुझे क्या भेंट दी गई थी? तीन शक्तियाँ हैं, केवल तीन शक्तियाँ, जो इन शक्तिहीन विद्रोहियों के विवेक को उनके सुख के लिए हमेशा के लिए जीत कर बंदी बना सकती हैं—वे शक्तियाँ हैं चमत्कार, रहस्य और अधिकार। तूने इन तीनों को अस्वीकार कर दिया और ऐसा करने का उदाहरण प्रस्तुत किया। जब बुद्धिमान और भयानक आत्मा ने तुझे मंदिर के शिखर पर स्थापित किया और तुझसे कहा, "यदि तू यह जानना चाहता है कि तू परमेश्वर का पुत्र है या नहीं, तो अपने आप को नीचे फेंक दे, क्योंकि लिखा है: स्वर्गदूत उसे थामे रहेंगे ताकि वह गिरकर घायल न हो जाए, और तब तू जान जाएगा कि तू परमेश्वर का पुत्र है और तब तू अपने पिता में अपने विश्वास की महानता सिद्ध कर देगा।" परन्तु तूने इनकार कर दिया और अपने आप को नीचे नहीं फेंका। ओह, बेशक, तूने परमेश्वर के समान गर्व से और उचित रूप से ऐसा किया; परन्तु मनुष्य जाति, क्या वे देवता हैं? हे प्रभु, क्या

तुम जानते थे कि एक कदम उठाकर, स्वयं को नीचे गिराने की एक हरकत करके, तुम ईश्वर को चुनौती दे रहे होगे और उस पर अपना सारा विश्वास खो दोगे, और उस धरती पर चूर-चूर हो जाओगे जिसे बचाने के लिए तुम आए थे? और जिस बुद्धिमान आत्मा ने तुम्हें चुनौती दी थी, वह प्रसन्न होती। लेकिन मैं फिर पूछता हूँ, क्या तुम्हारे जैसे बहुत से लोग हैं? और क्या तुम एक पल के लिए भी यह मान सकते थे कि मनुष्य भी ऐसी परीक्षा का सामना कर सकते हैं? क्या मनुष्यों का स्वभाव ऐसा है कि वे चमत्कार को अस्वीकार कर दें, और अपने जीवन के महान क्षणों में, अपनी सबसे गहरी, सबसे पीड़ादायक आध्यात्मिक कठिनाइयों के क्षणों में, केवल हृदय के स्वतंत्र निर्णय पर ही भरोसा करें? हे प्रभु, क्या तुम जानते थे कि तुम्हारा कर्म पुस्तकों में दर्ज होगा, सुदूर काल तक और पृथ्वी के सुदूर छोर तक पहुँचाया जाएगा, और तुमने आशा की थी कि मनुष्य तुम्हारा अनुसरण करते हुए ईश्वर पर भरोसा रखेगा और चमत्कार की माँग नहीं करेगा। लेकिन तुम यह नहीं जानते थे कि जब मनुष्य चमत्कार को अस्वीकार करता है, तो वह ईश्वर को भी अस्वीकार कर देता है; मनुष्य ईश्वर की उतनी खोज नहीं करता जितनी चमत्कारों की। और चूंकि मनुष्य चमत्कारों के बिना नहीं रह सकता, वह अपने लिए नए चमत्कार रचता है, और जादू-टोने की पूजा करता है, भले ही वह सौ गुना विद्रोही, विधर्मी और नास्तिक हो। जब लोग तुझसे चिल्लाते हुए, तेरा उपहास और अपमान करते हुए बोले, "क्रूस से नीचे उतर आ, तब तू क्रूस से नीचे नहीं उतरा।" तू नीचे नहीं उतरा, क्योंकि तू मनुष्य को चमत्कार से गुलाम नहीं बनाना चाहता था, और तू चमत्कार पर आधारित नहीं, बल्कि स्वतंत्र रूप से दी गई आस्था चाहता था। तू स्वतंत्र प्रेम चाहता था, न कि उस शक्ति के सामने दास के तुच्छ उन्माद को जिसने उसे सदा के लिए भयभीत कर रखा है। परन्तु तूने मनुष्यों को बहुत ऊँचा समझा, क्योंकि वे स्वभाव से विद्रोही होते हुए भी दास ही हैं। चारों ओर देख और न्याय कर; पंद्रह शताब्दियाँ बीत चुकी हैं, उन्हें देख। तूने किसे अपने पास उठाया है? मैं कसम खाता हूँ, मनुष्य स्वभाव से उतना ही कमज़ोर और नीच है जितना तूने उसे समझा है! क्या वह वह कर सकता है जो तूने किया? उसे इतना सम्मान देकर, तूने मानो उसके प्रति अपनी भावनाएँ खो दीं, क्योंकि तूने उससे बहुत अधिक अपेक्षाएँ रखीं—तूने तो उसे अपने से भी अधिक प्रेम किया! यदि तू उसका कम सम्मान करता, तो तू उससे कम अपेक्षाएँ रखता। यह प्रेम के अधिक अनुरूप होता, क्योंकि उसका बोझ हल्का होता। वह कमज़ोर और नीच है। क्या हुआ यदि वह अब हर जगह हमारी सत्ता के विरुद्ध विद्रोह कर रहा है और अपने विद्रोह पर गर्व करता है? यह एक बच्चे और स्कूली बच्चे का घमंड है। वे छोटे बच्चे हैं जो स्कूल में दंगा कर रहे हैं और शिक्षक को बाहर निकाल रहे हैं। लेकिन उनका बचकाना आनंद समाप्त हो जाएगा; इसकी उन्हें भारी कीमत चुकानी पड़ेगी। वे मंदिर गिरा देंगे और धरती को खून से लथपथ कर देंगे। लेकिन अंत में वे मूर्ख बच्चे देखेंगे कि यद्यपि वे विद्रोही हैं, वे शक्तिहीन विद्रोही हैं, जो अपने विद्रोह को जारी रखने में असमर्थ हैं। अपने मूर्खतापूर्ण आँसुओं में डूबे हुए, वे अंततः यह पहचान लेंगे कि जिसने उन्हें विद्रोही बनाया है, उसका उद्देश्य उनका उपहास करना ही रहा होगा। वे निराशा में यह कहेंगे, और उनका यह कथन ईशनिंदा होगा जो उन्हें और भी दुखी कर देगा, क्योंकि मनुष्य का स्वभाव ईशनिंदा सहन नहीं कर सकता, और अंत में वह हमेशा स्वयं से ही बदला लेता है। और इसलिए अशांति, भ्रम और दुख—यही मनुष्य का वर्तमान भाग्य है, जबकि तूने उनकी स्वतंत्रता के लिए इतना कुछ सहा! महान पैगंबर दर्शन और छवि में बताते हैं कि उन्होंने उन सभी को देखा जिन्होंने प्रथम पुनरुत्थान में भाग लिया था और प्रत्येक जनजाति में बारह हजार लोग थे। लेकिन यदि वे इतने अधिक थे, तो वे मनुष्य नहीं बल्कि देवता ही रहे होंगे। उन्होंने तेरा क्रूस उठाया था, उन्होंने बंजर, भूखे जंगल में कई वर्षों तक टिड्डियों और जड़ों पर जीवन व्यतीत किया था—और तू वास्तव में उन स्वतंत्र संतानों पर, स्वतंत्र प्रेम पर, अपने नाम के लिए स्वतंत्र और शानदार बलिदान पर गर्व कर सकता है। लेकिन याद रखिए कि वे केवल कुछ हजार ही थे; और बाकी का क्या? और अन्य कमजोरों को कैसे दोषी ठहराया जाए, क्योंकि वे वह सहन नहीं कर सके जो बलवानों ने सहन किया? कमजोर आत्मा को कैसे दोषी ठहराया जाए कि वह ऐसे भयानक उपहारों को ग्रहण करने में असमर्थ है? क्या तू केवल चुने हुए लोगों के लिए और चुने हुए लोगों के पास ही आया है? लेकिन यदि ऐसा है, तो यह एक रहस्य है और हम इसे समझ नहीं सकते। और यदि यह एक रहस्य है, तो हमें भी एक रहस्य का उपदेश देने और उन्हें यह सिखाने का अधिकार है कि उनके हृदय का स्वतंत्र निर्णय, प्रेम मायने नहीं रखता, बल्कि एक रहस्य मायने रखता है जिसका उन्हें अपनी अंतरात्मा के विरुद्ध भी अंधाधुंध पालन करना होगा। तो हमने यही किया है। हमने तेरे कार्य को सुधारा है और इसे चमत्कार, रहस्य और अधिकार पर आधारित किया है। और मनुष्य प्रसन्न हुए कि उन्हें फिर से भेड़ों की तरह चलाया जा रहा था, और वह भयानक उपहार जिसने उन्हें इतना कष्ट दिया था, अंततः उनके हृदयों से

हटा दिया गया था। क्या उन्हें यह सिखाना हमारा सही था? बोलो! क्या हमने मानव जाति से प्रेम नहीं किया, इतनी विनम्रता से उनकी कमजोरी को स्वीकार करते हुए, प्रेमपूर्वक उनके बोझ को हल्का करते हुए, और उनकी कमजोर प्रकृति को हमारी स्वीकृति से पाप करने की अनुमति देते हुए? तू अब हमें रोकने क्यों आया है? और हे प्रभु, अपनी कोमल आँखों से मुझे चुपचाप और गहराई से क्यों देख रहे हो? क्रोधित हो जाइए। मुझे आपका प्रेम नहीं चाहिए, क्योंकि मैं आपसे प्रेम नहीं करता। और आपसे कुछ भी छिपाने का क्या लाभ? क्या मैं नहीं जानता कि मैं किससे बात कर रहा हूँ? जो कुछ मैं कह सकता हूँ, वह सब आपको पहले से ही ज्ञात है। और क्या मुझे आपसे हमारे रहस्य को छुपाना उचित है? शायद यह आपकी इच्छा है कि आप इसे मेरे मुख से सुनें। तो सुनिए। हम आपके साथ नहीं, बल्कि उसके साथ काम कर रहे हैं—यही हमारा रहस्य है। बहुत समय हो गया है—आठ शताब्दियाँ—जब से हम उसके पक्ष में हैं, आपके पक्ष में नहीं। ठीक आठ शताब्दियाँ पहले, हमने उससे वह छीन लिया जिसे आपने तिरस्कारपूर्वक अस्वीकार कर दिया था, वह अंतिम उपहार जो उसने आपको दिया था, जिसमें उसने आपको पृथ्वी के सभी राज्य दिखाए थे। हमने उससे रोम और सीज़र की तलवार छीन ली, और स्वयं को पृथ्वी का एकमात्र शासक घोषित कर दिया, यद्यपि अब तक हम अपना कार्य पूरा नहीं कर पाए हैं। लेकिन इसमें किसकी गलती है? ओह, कार्य तो अभी शुरू ही हुआ है, पर शुरू हो चुका है। इसके पूरा होने में अभी लंबा समय लगेगा और धरती को अभी बहुत कष्ट सहना पड़ेगा, लेकिन हम विजयी होंगे और सीज़र बनेंगे, और तब हम मानव जाति के सर्वव्यापी सुख की योजना बनाएंगे। लेकिन तुम तब भी सीज़र की तलवार उठा सकते थे। तुमने उस अंतिम उपहार को क्यों ठुकरा दिया? यदि तुमने सर्वशक्तिमान आत्मा की उस अंतिम सलाह को स्वीकार कर लिया होता, तो तुम वह सब कुछ प्राप्त कर लेते जो मनुष्य धरती पर चाहता है—अर्थात्, कोई ऐसा जिसकी पूजा की जा सके, कोई ऐसा जो उसकी अंतरात्मा को शांत रखे, और सभी को एक सर्वसम्मत और सामंजस्यपूर्ण चींटी-टीले में एकजुट करने का कोई साधन, क्योंकि सार्वभौमिक एकता की लालसा मनुष्य की तीसरी और अंतिम पीड़ा है। संपूर्ण मानव जाति ने हमेशा एक सार्वभौमिक राज्य के गठन का प्रयास किया है। कई महान राष्ट्र हुए हैं जिनका महान इतिहास रहा है, लेकिन वे जितने अधिक विकसित हुए, उतने ही अधिक दुखी रहे, क्योंकि उन्होंने अन्य लोगों की तुलना में विश्वव्यापी एकता की लालसा को अधिक तीव्रता से महसूस किया। महान विजेता, तिमूर और चंगेज़ खान, पृथ्वी पर तूफ़ान की तरह मंडराते रहे, इसकी प्रजा को अपने अधीन करने का प्रयास करते रहे, और वे भी सार्वभौमिक एकता की उसी लालसा की अचेतन अभिव्यक्ति मात्र थे। यदि तूने संसार और सीज़र का बैंगनी वस्त्र ले लिया होता, तो तू सार्वभौमिक राज्य की स्थापना कर देता और सार्वभौमिक शांति प्रदान कर देता। क्योंकि मनुष्यों पर शासन कौन कर सकता है, सिवाय उसके जो उनकी अंतरात्मा और उनकी रोटी को अपने हाथों में रखता है? हमने सीज़र की तलवार उठा ली है, और ऐसा करके हमने निश्चित रूप से तुझे अस्वीकार कर दिया है और उसका अनुसरण किया है। हे, आने वाले युगों में स्वतंत्र विचारों का भ्रम, उनका विज्ञान और नरभक्षण जारी रहेगा। क्योंकि हमारे बिना ही उन्होंने बाबेल का अपना मीनार बनाना शुरू कर दिया था, और अंततः वे नरभक्षण में ही समाप्त होंगे। लेकिन तब वह पशु हमारे पास रेंगकर आएगा और हमारे पैर चाटेगा और उन्हें खून के आंसुओं से लथपथ कर देगा। और हम उस पशु पर बैठेंगे और प्याला उठाएंगे, और उस पर लिखा होगा, "रहस्य।" लेकिन तब, और केवल तभी, मनुष्यों के लिए शांति और सुख का शासन आएगा। हे प्रभु, तू अपने चुने हुए लोगों पर गर्व करता है, परन्तु तू तो केवल चुने हुए लोगों का ही पक्ष लेता है, जबकि हम सबको विश्राम देते हैं। और इसके अतिरिक्त, उन चुने हुए लोगों में से कितने, वे शक्तिशाली लोग जो चुने जा सकते थे, तेरी प्रतीक्षा करते-करते थक गए हैं, और अपनी आत्मा की शक्ति और अपने हृदय की गर्माहट दूसरे पक्ष को सौंप चुके हैं और सौंप देंगे, और अंत में तेरे विरुद्ध अपना स्वतंत्रता ध्वज फहरा देंगे। तूने स्वयं वह ध्वज फहराया था। परन्तु हमारे साथ सब सुखी रहेंगे और तेरी स्वतंत्रता के अधीन रहते हुए न तो विद्रोह करेंगे और न ही एक-दूसरे को नष्ट करेंगे। हे प्रभु, हम उन्हें यह विश्वास दिलाएँगे कि वे तभी स्वतंत्र होंगे जब वे अपनी स्वतंत्रता हमें सौंप देंगे और हमारे अधीन हो जाएँगे। और क्या हम सही होंगे या झूठ बोल रहे होंगे? वे आश्वस्त हो जाएँगे कि हम सही हैं, क्योंकि उन्हें गुलामी और अराजकता की भयावहता याद रहेगी जिसमें तेरी स्वतंत्रता ने उन्हें धकेल दिया था। स्वतंत्रता, स्वतंत्र विचार और विज्ञान उन्हें ऐसी विकट परिस्थितियों में ले जाएंगे और उन्हें ऐसे चमत्कारों और अनसुलझे रहस्यों से रूबरू कराएंगे कि उनमें से कुछ, जो उग्र और विद्रोही हैं, स्वयं को नष्ट कर लेंगे, अन्य, जो विद्रोही तो हैं लेकिन कमजोर हैं, एक-दूसरे को नष्ट कर देंगे,

जबकि शेष, जो कमजोर और दुखी हैं, हमारे चरणों में गिड़गिड़ाते हुए आएंगे और हमसे विनती करेंगे: “हाँ, आप सही थे, केवल आप ही उनके रहस्य के ज्ञाता हैं, और हम आपके पास लौटते हैं, हमें स्वयं से बचाओ!” “हमसे रोटी प्राप्त करके वे स्पष्ट रूप से देखेंगे कि हम रोटी लेते हैं।”
उनके हाथों से बनाया हुआ, बिना किसी चमत्कार के, उन्हें देने के लिए। वे देखेंगे कि हम पत्थरों को रोटी में नहीं बदलते, बल्कि सच में वे रोटी से भी ज़्यादा हमारे हाथों से इसे लेने के लिए आभारी होंगे! क्योंकि उन्हें अच्छी तरह याद होगा कि पुराने समय में, हमारी सहायता के बिना, उनके हाथों में बनी रोटी भी पत्थर बन जाती थी, जबकि जब से वे हमारे पास वापस आए हैं, उनके हाथों में पत्थर ही रोटी बन गए हैं। वे पूर्ण समर्पण का महत्व अच्छी तरह जानेंगे! और जब तक मनुष्य यह नहीं जान लेते, वे दुखी रहेंगे। उनके इसे न जानने के लिए सबसे ज़्यादा दोषी कौन है?— बोलो! किसने झुंड को तितर-बितर कर दिया और उसे अनजान रास्तों पर भटका दिया? लेकिन झुंड फिर से इकट्ठा होगा और एक बार फिर समर्पण करेगा, और फिर यह हमेशा के लिए होगा। तब हम उन्हें उनकी प्रकृति के अनुसार कमज़ोर प्राणियों का शांत, विनम्र सुख देंगे। हे प्रभु, हम अंततः उन्हें घमंड न करने के लिए मना लेंगे, क्योंकि तूने ही उन्हें ऊपर उठाया और इस प्रकार उन्हें घमंड करना सिखाया। हम उन्हें दिखाएंगे कि वे कमज़ोर हैं, कि वे केवल दयनीय बच्चे हैं, लेकिन बच्चों जैसी खुशी सबसे प्यारी होती है। वे डरपोक हो जाएंगे और हमारी ओर देखेंगे और डर से हमारे पास दुबक जाएंगे, जैसे चूजे मुर्गी के पास। वे हम पर आश्चर्य करेंगे और हमारे सामने विस्मय से भर उठेंगे, और हमारे इतने शक्तिशाली और चतुर होने पर गर्व करेंगे कि हम लाखों-करोड़ों के इतने उग्र झुंड को वश में करने में सक्षम हुए हैं। वे हमारे क्रोध के सामने असहाय होकर कांपेंगे, उनका मन भयभीत हो जाएगा, वे स्त्रियों और बच्चों की तरह जल्दी से आंसू बहाएंगे, लेकिन हमारे इशारे पर वे उतनी ही जल्दी हंसने और आनंद मनाने, खुशी से झूमने और बच्चों जैसे गीत गाने के लिए तैयार हो जाएंगे। हां, हम उन्हें काम पर लगाएंगे, लेकिन उनके खाली समय में हम उनके जीवन को बच्चों के खेल जैसा बना देंगे, बच्चों के गीतों और मासूम नृत्य के साथ। ओह, हम उन्हें पाप करने की भी अनुमति देंगे, वे कमज़ोर और असहाय हैं, और वे हमें बच्चों की तरह प्यार करेंगे क्योंकि हम उन्हें पाप करने की अनुमति देते हैं। हम उनसे कहेंगे कि हर पाप का प्रायश्चित हो जाएगा, यदि वह हमारी अनुमति से किया गया हो; कि हम उन्हें पाप करने की अनुमति इसलिए देते हैं क्योंकि हम उनसे प्रेम करते हैं; और इन पापों का दंड हम स्वयं पर लेते हैं। और हम यह दंड स्वयं पर लेंगे, और वे हमें अपने उद्धारकर्ता मानकर पूजेंगे जिन्होंने परमेश्वर के समक्ष उनके पापों का दंड अपने ऊपर ले लिया है। और वे हमसे कुछ भी नहीं छिपाएँगे। हम उन्हें उनकी पत्नियों और रखेलों के साथ रहने की अनुमति देंगे या मना करेंगे, संतान उत्पन्न करने या न करने की अनुमति देंगे—उनके आज्ञाकारी या अवज्ञाकारी होने के अनुसार— और वे प्रसन्नतापूर्वक और प्रसन्नता से हमारे अधीन हो जाएँगे। वे अपने अंतरात्मा के सबसे कष्टदायक रहस्य, सब कुछ, हमारे पास लाएँगे, और हमारे पास सभी का उत्तर होगा। और वे हमारे उत्तर पर विश्वास करने में प्रसन्न होंगे, क्योंकि यह उन्हें उस महान चिंता और भयानक पीड़ा से बचाएगा जो वे वर्तमान में अपने लिए स्वतंत्र निर्णय लेने में झेल रहे हैं। और सभी सुखी होंगे, लाखों प्राणी, सिवाय उन एक लाख प्राणियों के जो उन पर शासन करते हैं। क्योंकि केवल हम, हम जो इस रहस्य की रक्षा करते हैं, दुखी होंगे। लाखों-करोड़ों सुखी शिशु होंगे, और लाखों-करोड़ों पीड़ित होंगे जिन्होंने भले-बुरे के ज्ञान का अभिशाप अपने ऊपर ले लिया है। वे शांति से मरेंगे, शांति से तेरे नाम में विलीन हो जाएँगे, और कब्र के पार उन्हें मृत्यु के सिवा कुछ नहीं मिलेगा। परन्तु हम इस रहस्य को गुप्त रखेंगे, और उनकी खुशी के लिए हम उन्हें स्वर्ग और अनंत काल के पुरस्कार का लालच देंगे। यद्यपि यदि परलोक में कुछ होता भी, तो वह निश्चित रूप से उनके लिए नहीं होता।
भविष्यवाणी है कि तू विजय के साथ फिर आएगा, तू अपने चुने हुए, गर्वित और बलवानों के साथ आएगा, परन्तु हम कहेंगे कि उन्होंने केवल स्वयं को बचाया है, परन्तु हमने सबको बचाया है। हमें बताया गया है कि वह वेश्या जो पशु पर बैठी है और अपने हाथों में रहस्य लिए है, लज्जित होगी, कि कमजोर फिर उठ खड़ा होगा, और उसके शाही बैंगनी वस्त्रों को फाड़ देगा और उसके घृणित शरीर को नंगा कर देगा। परन्तु तब मैं खड़ा होकर तुझे उन लाखों-करोड़ों सुखी बच्चों की ओर इशारा करूँगा जिन्होंने कोई पाप नहीं किया है। और हम, जिन्होंने उनके सुख के लिए उनके पापों का बोझ अपने ऊपर ले लिया है, तेरे सामने खड़े होकर कहेंगे: “यदि तू कर सकता है और साहस रखता है, तो हमारा न्याय कर।” जान ले कि मैं तुझसे नहीं डरता। जान ले कि मैं भी जंगल में रहा हूँ, मैं भी जड़ों और टिड्डियों पर पला-बढ़ा हूँ, मैंने भी उस स्वतंत्रता को अनमोल समझा है जिससे तूने मनुष्यों को आशीष दी है, और मैं भी तेरे चुने हुए लोगों में, बलवान और शक्तिशाली लोगों में,

“संख्या पूरी करने” की प्यास से, शामिल होने का प्रयास कर रहा था। परन्तु मैं जाग उठा और पागलपन की सेवा नहीं की। मैं लौट आया और उन लोगों में शामिल हो गया जिन्होंने तेरे कार्य को सुधारा है। मैंने घमंडियों को छोड़कर नम्रों के पास लौट आया, नम्रों के सुख के लिए। जो मैं तुझसे कहता हूँ, वह पूरा होगा, और हमारा राज्य स्थापित होगा। मैं दोहराता हूँ, कल तू उस आज्ञाकारी झुंड को देखेगा जो मेरे संकेत पर उस ढेर के चारों ओर जलते हुए अंगारे जमा करने के लिए दौड़ेगा जिस पर मैं तुझे हमें रोकने के लिए आने के कारण जलाऊँगा। क्योंकि यदि कोई हमारी आग का पात्र है, तो वह तू ही है। कल मैं तुम्हें जला दूंगा। डिक्सी।
इवान रुक गया। वह बोलते-बोलते भावनाओं में बह गया और बोलने लगा...
उत्साह; जब उसने अपना काम समाप्त कर लिया, तो वह अचानक मुस्कुरा उठा।
अलियोशा चुपचाप सुनता रहा; अंत में वह बहुत भावुक हो गया।
और कई बार ऐसा लगा कि वह बीच में ही टोकने ही वाला है, लेकिन उसने खुद को रोक लिया। अब उसके शब्द तेज़ी से निकलने लगे।
“लेकिन... ये तो बेतुका है!” वह शर्म से लाल होते हुए चिल्लाया। “तुम्हारी कविता तो प्रशंसा में है...”
यीशु पर दोषारोपण नहीं, जैसा कि आप चाहते हैं। और स्वतंत्रता के बारे में आपकी बात पर कौन विश्वास करेगा? क्या यही इसे समझने का तरीका है? ऑर्थोडॉक्स चर्च में इसका यह विचार नहीं है... यह रोम की बात है, और वह भी पूरा रोम नहीं, यह झूठ है - ये तो कैथोलिकों के सबसे बुरे लोग हैं, पूछताछ करने वाले, जेसुइट्स! ... और आपके पूछताछ करने वाले जैसा कोई काल्पनिक प्राणी हो ही नहीं सकता। ये मानवता के कौन से पाप हैं जिन्हें वे अपने ऊपर ले लेते हैं? ये रहस्य के रखवाले कौन हैं जिन्होंने मानवता की खुशी के लिए खुद पर कोई अभिशाप ले लिया है? उन्हें कब देखा गया है? हम जेसुइट्स को जानते हैं, उनकी बुराई की जाती है, लेकिन निश्चित रूप से वे वैसे नहीं हैं जैसा आप वर्णन करते हैं? वे बिल्कुल भी वैसे नहीं हैं, बिलकुल भी नहीं... वे तो बस भविष्य में दुनिया की सांसारिक संप्रभुता के लिए रोम की सेना हैं, जिसमें रोम का पोप सम्राट होगा... यही उनका आदर्श है, लेकिन इसमें किसी प्रकार का रहस्य या उदात्त उदासी नहीं है... यह केवल सत्ता की लालसा है, घिनौने सांसारिक लाभ की लालसा है, प्रभुत्व की लालसा है—एक प्रकार की सार्वभौमिक दासता जिसमें वे स्वामी हों—बस यही उनका उद्देश्य है। शायद वे ईश्वर में भी विश्वास नहीं करते। आपका पीड़ित पूछताछकर्ता महज़ एक कल्पना है।
“रुको, रुको,” इवान हँसते हुए बोला, “तुम कितनी हॉट हो! तुम इसे कल्पना कहती हो, रहने दो।”
ऐसा ही हो! बेशक यह एक कल्पना है। लेकिन मुझे कहने दीजिए: क्या आप सचमुच सोचते हैं कि पिछली शताब्दियों का रोमन कैथोलिक आंदोलन वास्तव में सत्ता की लालसा, घिनौने सांसारिक लाभ के अलावा कुछ नहीं है? क्या यही फादर पैसी की शिक्षा है?
नहीं, इसके विपरीत भी नहीं, फादर पैसी ने एक बार कुछ ऐसा कहा था जो कुछ हद तक
"बिल्कुल तुम्हारे जैसा... लेकिन बेशक यह बिल्कुल वैसा नहीं है, जरा भी वैसा नहीं है," अलेयोशा ने जल्दबाजी में खुद को सुधारते हुए कहा।
“आपकी ‘बिल्कुल अलग’ बात के बावजूद, यह एक अनमोल स्वीकारोक्ति है। मैं आपसे पूछता हूँ।”
आपके जेसुइट और इनक्विजिटर सिर्फ तुच्छ भौतिक लाभ के लिए एकजुट क्यों हो गए हैं? उनमें से एक भी ऐसा शहीद क्यों नहीं हो सकता जो घोर दुःख से पीड़ित हो और मानवता से प्रेम करता हो? ज़रा सोचिए, मान लीजिए कि उन सभी लोगों में से, जो केवल घिनौने भौतिक लाभ की इच्छा रखते हैं, कोई एक ऐसा व्यक्ति हो —काश मेरे पुराने इनक्विजिटर जैसा कोई हो, जिसने स्वयं रेगिस्तान में जड़ें खाईं और अपने शरीर को वश में करने के लिए अथक प्रयास किए ताकि वह स्वतंत्र और परिपूर्ण हो सके। फिर भी उसने जीवन भर मानवता से प्रेम किया, और अचानक उसकी आँखें खुल गईं, और उसने देखा कि पूर्णता और स्वतंत्रता प्राप्त करना कोई महान नैतिक आशीर्वाद नहीं है, यदि साथ ही साथ यह विश्वास भी हो जाए कि ईश्वर की लाखों रचनाएँ उपहास के रूप में बनाई गई हैं, कि वे कभी भी अपनी स्वतंत्रता का उपयोग करने में सक्षम नहीं होंगी, कि ये बेचारे विद्रोही कभी भी मीनार को पूरा करने के लिए विशालकाय नहीं बन सकते, कि महान आदर्शवादी ने सद्भाव का अपना सपना ऐसे ही मूर्खों के लिए नहीं देखा था। यह सब देखकर वह वापस मुड़ गया और चतुर लोगों में शामिल हो गया। क्या ऐसा हो सकता था?
“किसके साथ शामिल हुए, कौन से चतुर लोग?” अलेयोशा पूरी तरह से बहकते हुए चिल्लाया।

दूर। “उनमें ऐसी कोई महान चतुराई नहीं है और न ही कोई रहस्य और गुप्त बातें... शायद नास्तिकता के अलावा और कुछ नहीं, यही उनका रहस्य है। आपका पूछताछकर्ता ईश्वर में विश्वास नहीं करता, यही उसका रहस्य है!”
“अगर ऐसा है तो क्या होगा! आखिरकार आपने सही अनुमान लगा लिया। यह बिलकुल सच है कि यही तो सारा रहस्य है, लेकिन क्या यह पीड़ादायक नहीं है, कम से कम उस जैसे व्यक्ति के लिए, जिसने अपना पूरा जीवन रेगिस्तान में गुज़ार दिया और फिर भी मानवता के प्रति अपने असाध्य प्रेम से छुटकारा नहीं पा सका? बुढ़ापे में उसे यह पक्का विश्वास हो गया कि केवल उस महान भयानक आत्मा की सलाह से ही कमज़ोर, अनियंत्रित, 'अधूरे, अनुभवहीन प्राणियों, जिन्हें मज़ाक में बनाया गया है', के लिए किसी भी तरह का सहनीय जीवन बनाया जा सकता है। और इसलिए, इस बात से आश्वस्त होकर, वह देखता है कि उसे ज्ञानी आत्मा, मृत्यु और विनाश की भयानक आत्मा की सलाह का पालन करना चाहिए, और इसलिए झूठ और छल को स्वीकार करना चाहिए, और जानबूझकर मनुष्यों को मृत्यु और विनाश की ओर ले जाना चाहिए, और फिर भी उन्हें पूरे रास्ते धोखा देना चाहिए ताकि वे यह न जान सकें कि उन्हें कहाँ ले जाया जा रहा है, ताकि बेचारे अंधे प्राणी कम से कम रास्ते में खुद को खुश समझ सकें। और ध्यान दें, यह छल उस ईश्वर के नाम पर किया जा रहा है जिसके आदर्श में उस बूढ़े व्यक्ति ने जीवन भर पूरी श्रद्धा से विश्वास किया था। क्या यह दुखद नहीं है? और अगर केवल एक ही ऐसा व्यक्ति पूरी सेना के मुखिया के रूप में खड़ा हो, जो 'गंदे लाभ के लिए सत्ता की लालसा से भरा हो'—तो क्या ऐसा एक व्यक्ति ही त्रासदी रचने के लिए काफी नहीं होगा? इससे भी बढ़कर, ऐसे एक व्यक्ति का मुखिया होना ही रोमन चर्च के सभी बलों और जेसुइट्स के साथ उसके सर्वोच्च विचार, उसके मूल विचार को जन्म देने के लिए काफी है। मैं आपसे स्पष्ट रूप से कहता हूँ कि मेरा दृढ़ विश्वास है कि आंदोलन के मुखियाओं में हमेशा से ऐसा कोई न कोई व्यक्ति रहा होगा। कौन जानता है, शायद रोमन पोप्स में भी ऐसे कुछ लोग रहे हों। कौन जानता है, शायद उस शापित बूढ़े व्यक्ति की आत्मा, जो मानवता से अपने ही तरीके से इतनी हठपूर्वक प्रेम करता है, आज भी ऐसे कई बूढ़े लोगों में पाई जाती है, जो संयोग से नहीं बल्कि आपसी सहमति से अस्तित्व में हैं, एक गुप्त संघ के रूप में जो बहुत पहले रहस्य की रक्षा के लिए, उसे कमजोरों और दुखी लोगों से बचाने के लिए, ताकि उन्हें सुखी बनाया जा सके। निस्संदेह ऐसा ही है, और वास्तव में ऐसा ही होना चाहिए। मुझे लगता है कि मेसन्स के बीच भी कुछ ऐसा ही रहस्य छिपा हुआ है, और यही कारण है कि कैथोलिक मेसन्स को अपना प्रतिद्वंद्वी मानते हैं और उन्हें विचारधारा की एकता को भंग करने वाला समझते हैं, जबकि यह अत्यंत आवश्यक है कि एक ही समुदाय और एक ही मार्गदर्शक हो... लेकिन जिस तरह से मैं अपने विचार का बचाव कर रहा हूँ, उससे ऐसा लगता है कि मैं आपकी आलोचना से चिढ़ने वाला लेखक हूँ। बस बहुत हो गया।
"शायद तुम भी एक मेसन हो!" अलेयोशा ने अचानक कहा।
“तुम भगवान पर विश्वास नहीं करते,” उसने बड़े दुख भरे स्वर में कहा। उसे लगा कि उसका भाई उसे व्यंग्य भरी निगाहों से देख रहा है। “तुम्हारी कविता कहाँ समाप्त होती है?” उसने अचानक नीचे देखते हुए पूछा। “या यह अंत था?”
“मैं इसे इसी तरह समाप्त करना चाहता था। जब पूछताछकर्ता ने बोलना बंद कर दिया तो...”
कुछ देर तक उसने अपने कैदी के जवाब का इंतज़ार किया। उसकी चुप्पी उस पर भारी पड़ रही थी। उसने देखा कि कैदी पूरी देर ध्यान से सुनता रहा, उसके चेहरे को प्यार से देखता रहा और स्पष्ट रूप से जवाब देना नहीं चाहता था। बूढ़ा आदमी चाहता था कि वह कुछ कहे, चाहे कितना भी कड़वा और भयानक क्यों न हो। लेकिन अचानक वह चुपचाप बूढ़े आदमी के पास आया और उसके खूनहीन बूढ़े होंठों को धीरे से चूम लिया। बस यही उसका जवाब था। बूढ़ा आदमी कांप उठा। उसके होंठ हिले। वह दरवाजे पर गया, उसे खोला और उससे कहा: 'जाओ, और फिर कभी मत आना... बिल्कुल मत आना, कभी नहीं, कभी नहीं!' और उसने उसे कस्बे की अंधेरी गलियों में छोड़ दिया। कैदी चला गया।
और वह बूढ़ा आदमी?
"उसके दिल में चुंबन की चमक है, लेकिन बूढ़ा आदमी अपने विचार पर अडिग है।"
“और तुम भी उसके साथ?” अलेयोशा ने उदास स्वर में कहा। इवान हँस पड़ा।
“अरे, ये सब बकवास है, अलेयोशा। ये तो बस एक अर्थहीन कविता है।”

नासमझ विद्यार्थी, जो कविता की दो पंक्तियाँ भी नहीं लिख सकता। आप इसे इतनी गंभीरता से क्यों ले रहे हैं? क्या आप यह सोच रहे हैं कि मैं सीधे जेसुइट्स के पास जाकर उनके कामों को सुधारने वाले लोगों में शामिल हो जाऊँगा? हे भगवान, इससे मेरा कोई लेना-देना नहीं है। मैंने आपको बताया था, मैं बस तीस साल तक जीना चाहता हूँ, और फिर... प्याला ज़मीन पर पटक दूँगा!
लेकिन नन्हे चिपचिपे पत्ते, और कीमती मकबरे, और नीला आकाश,
और जिस स्त्री से तुम प्रेम करते हो! तुम कैसे जीओगे, कैसे उनसे प्रेम करोगे?" अलेयोशा ने दुख से रोते हुए कहा। "अपने हृदय और मस्तिष्क में ऐसे कष्ट के साथ, तुम कैसे कर पाओगे? नहीं, तुम इसीलिए तो जा रहे हो, उनसे मिलने के लिए... अगर नहीं, तो तुम स्वयं को मार डालोगे, तुम इसे सहन नहीं कर पाओगे!"
"हर चीज़ सहने की एक ताकत होती है," इवान ने ठंडी मुस्कान के साथ कहा। "कैसी ताकत?"
"करामाज़ोव परिवार की ताकत—करामाज़ोव परिवार की ताकत
नीचता।"
"व्यभिचार में डूब जाना, अपनी आत्मा को भ्रष्टाचार से गला घोंट देना, है ना?"
"शायद ऐसा भी हो सकता है... शायद तीस साल की उम्र तक ही मैं इससे बच पाऊँगा, और
तब-"
"तुम इससे कैसे बचोगे? किस चीज़ से बचोगे? यह असंभव है।"
आपके विचारों के साथ।"
"एक बार फिर करामाज़ोव के तरीके से।"
"'सब कुछ जायज़ है,' तुम्हारा मतलब है? सब कुछ जायज़ है, क्या यही बात है?" इवान ने तेवर चढ़ाए और अचानक उसका चेहरा अजीब तरह से पीला पड़ गया। "अरे, तुमने कल वाला जुमला पकड़ लिया है, जिससे मियूसोव को बहुत बुरा लगा था—"
और जिसे दिमित्री ने बड़ी भोली तरह से झटपट पकड़ लिया और अपने शब्दों में बदल दिया!" वह अजीब सी मुस्कान के साथ बोला। "हाँ, अगर आप चाहें तो, क्योंकि यह शब्द कहा जा चुका है, 'सब कुछ जायज़ है'। मैं इससे इनकार नहीं करूँगा। और मित्या का संस्करण भी बुरा नहीं है।"
अलियोशा चुपचाप उसकी ओर देखता रहा।
इवान ने कहा, "मैंने सोचा था कि यहां से जाने पर कम से कम तुम तो मेरे साथ होगे।"
अचानक, अप्रत्याशित भावना के साथ; "पर अब मुझे समझ आ रहा है कि हे मेरे प्रिय संन्यासी, आपके हृदय में भी मेरे लिए कोई स्थान नहीं है। 'सब कुछ जायज़ है' इस सिद्धांत का मैं त्याग नहीं करूँगा—क्या आप इसके लिए मेरा त्याग करेंगे? हाँ?"
अलेयोशा उठा, उसके पास गया और उसके होठों पर धीरे से चुंबन किया। "यह तो साहित्यिक चोरी है!"
इवान अत्यंत प्रसन्न होकर चिल्लाया। "तुमने यह किससे चुराया है?"
मेरी कविता। फिर भी धन्यवाद। उठो, अलेयोशा, अब हम दोनों को जाना होगा।
वे बाहर निकले, लेकिन प्रवेश द्वार पर पहुँचकर रुक गए।
रेस्टोरेंट।
"सुनो, अलेयोशा," इवान ने दृढ़ स्वर में कहना शुरू किया, "अगर मैं सचमुच ऐसा कर पाऊं तो..."
मैं इन चिपचिपी छोटी पत्तियों की परवाह करूँगा, मैं बस तुम्हें याद करते हुए उनसे प्यार करूँगा। मेरे लिए इतना ही काफी है कि तुम कहीं यहाँ हो, और मैं अभी भी जीने की इच्छा नहीं खोऊँगा। क्या यह तुम्हारे लिए काफी है? अगर चाहो तो इसे प्रेम की घोषणा समझ लो। और अब तुम दाईं ओर जाओ और मैं बाईं ओर। और बस, सुना तुमने, बस। मेरा मतलब है, अगर मैं कल नहीं भी जाऊँ (मुझे लगता है मैं ज़रूर जाऊँगा) और हम फिर मिलें, तो इन विषयों पर एक शब्द भी मत कहना। मैं विशेष रूप से यही विनती करता हूँ। और दिमित्री के बारे में भी, मैं तुमसे विशेष रूप से कहता हूँ, मुझसे फिर कभी बात मत करना," उसने अचानक चिड़चिड़ाते हुए कहा; "सब कुछ खत्म हो चुका है, सब कुछ बार-बार कहा जा चुका है, है ना? और इसके बदले में मैं तुमसे एक वादा करता हूँ। जब तीस साल की उम्र में, मैं 'जीवन का प्याला ज़मीन पर पटकना' चाहूँगा, मैं जहाँ भी रहूँ, तुमसे एक बार फिर बात करने आऊँगा, चाहे वह अमेरिका से ही क्यों न हो, तुम इस बात का यकीन कर लो। मैं जानबूझकर आऊँगा। तुम्हें देखना बहुत दिलचस्प होगा, यह देखना कि उस समय तुम कैसी बनोगी। यह एक गंभीर वादा है, समझे? और हो सकता है कि हम सात या दस साल के लिए अलग

हो रहे हों। चलो, अब अपने पिता सेराफिकस के पास जाओ, वह मर रहे हैं। अगर वह तुम्हारे बिना मर गए, तो तुम मुझसे नाराज़ हो जाओगी कि मैंने तुम्हें रोक रखा था। अलविदा, मुझे एक बार फिर चूम लो; ठीक है, अब जाओ।

इवान अचानक मुड़ा और पीछे देखे बिना अपने रास्ते चला गया।

दिमित्री एक दिन पहले ही अलेयोशा को छोड़कर चला गया था, हालाँकि विदाई का तरीका बहुत अलग था। उस क्षण की पीड़ा और निराशा में, यह अजीब समानता एक तीर की तरह अलेयोशा के मन में कौंध गई। वह थोड़ी देर रुका, अपने भाई को देखता रहा। अचानक उसने देखा कि इवान चलते समय लड़खड़ा रहा था और उसका दायाँ कंधा बाएँ से ज़्यादा झुका हुआ लग रहा था। उसने पहले कभी ऐसा नहीं देखा था। लेकिन अचानक ही वह भी मुड़ा और लगभग दौड़कर मठ की ओर भागा। लगभग अंधेरा हो चुका था और वह लगभग डर गया था; उसके अंदर कुछ नया पनप रहा था जिसका कारण वह नहीं समझ पा रहा था। पिछली शाम की तरह ही हवा फिर से तेज़ हो गई थी और जब वह आश्रम के झुरमुट में दाखिल हुआ तो प्राचीन चीड़ के पेड़ उसके चारों ओर उदास स्वर में गुनगुना रहे थे। वह लगभग भाग ही गया। "पिता सेराफिकस—उन्हें यह नाम कहीं से मिला—कहाँ से?" अलेयोशा ने सोचा। “इवान, बेचारे इवान, मैं तुमसे दोबारा कब मिल पाऊँगी? ... ये रहा आश्रम। हाँ, हाँ, वही हैं पिता सेराफिकस, वही मुझे बचाएँगे—उससे और हमेशा के लिए!” इसके बाद कई बार उसने सोचा कि इवान को छोड़कर वह ऐसा कैसे कर सकता है।

वह अपने भाई दिमित्री को पूरी तरह से भूल गया, हालांकि उसने उस सुबह, कुछ ही घंटे पहले, उसे ढूंढने और ऐसा न करने का दृढ़ संकल्प लिया था, भले ही वह उस रात मठ में वापस लौटने में असमर्थ हो।

अध्याय 6

कुछ समय के लिए एक बहुत ही अस्पष्ट

अलेयोशा से विदा लेने के बाद इवान फ्योदोर पावलोविच के घर लौट आया। लेकिन, हैरानी की बात यह थी कि वह असहनीय अवसाद से घिर गया, जो घर की ओर बढ़ते हर कदम के साथ बढ़ता गया। उसका उदास होना कोई असामान्य बात नहीं थी; असामान्य बात यह थी कि इवान यह नहीं बता पा रहा था कि इसका कारण क्या है। वह पहले भी कई बार उदास हो चुका था, और ऐसे समय में उसका उदास महसूस करना कोई आश्चर्य की बात नहीं थी, जब उसने उन सभी चीजों से नाता तोड़ लिया था जो उसे यहाँ तक लाई थीं, और उस दिन एक नई शुरुआत करने और एक नए, अनजाने भविष्य में कदम रखने की तैयारी कर रहा था। वह फिर से पहले की तरह अकेला हो जाएगा, और यद्यपि उसे जीवन से बहुत आशाएँ और अपेक्षाएँ थीं, फिर भी वह अपनी आशाओं, अपेक्षाओं या यहाँ तक कि इच्छाओं का भी कोई निश्चित विवरण नहीं दे सकता था। फिर भी उस क्षण, यद्यपि नए और अज्ञात के प्रति आशंका थी
उसके दिल में जगह तो ज़रूर थी, लेकिन जो बात उसे परेशान कर रही थी, वो कुछ और ही थी। “क्या ये मेरे पिता के घर से नफ़रत है?” उसने सोचा। “शायद; मैं इससे बहुत तंग आ चुका हूँ; और भले ही ये आखिरी बार हो जब मैं इसकी नफ़रत भरी दहलीज पार कर रहा हूँ, फिर भी मुझे इससे नफ़रत है... नहीं, ये भी नहीं। क्या ये अलेयोशा से बिछड़ने और उससे हुई बातचीत की वजह से है? इतने सालों तक मैं पूरी दुनिया से चुप रहा और बोलने की जहमत तक नहीं उठाई, और अचानक से मैंने ऐसी बेतुकी बातें बोल दीं।” ये ज़रूर जवानी के अनुभवहीनता और घमंड की झुंझलाहट हो सकती थी—खुद को ज़ाहिर न कर पाने की झुंझलाहट, खासकर अलेयोशा जैसे इंसान के सामने, जिस पर उसका दिल ज़रूर टिका हुआ था। बेशक ये झुंझलाहट ज़रूर आई होगी; लेकिन फिर भी ये वो बात नहीं थी, ये भी नहीं थी। “मैं उदासी से बीमार महसूस कर रहा हूँ और फिर भी मुझे समझ नहीं आ रहा कि मैं क्या चाहता हूँ। शायद सोचना ही बेहतर नहीं है।”
इवान ने "न सोचने" की कोशिश की, लेकिन वह भी व्यर्थ थी। किस बात ने उसे
अवसाद इतना कष्टदायक और चिड़चिड़ाने वाला था कि उसमें एक प्रकार का आकस्मिक, बाहरी स्वरूप था —उसे ऐसा महसूस होता था। कोई व्यक्ति या वस्तु कहीं न कहीं अलग से उभरती हुई प्रतीत होती थी, ठीक वैसे ही जैसे कभी-कभी कोई चीज अचानक आंखों के सामने आ जाती है, और भले ही कोई काम या बातचीत में इतना व्यस्त हो कि लंबे समय तक उस पर ध्यान न दे, फिर भी वह चिढ़ाती और लगभग पीड़ा देती रहती है जब तक कि अंततः उसे एहसास न हो जाए और वह उस आपत्तिजनक वस्तु को हटा न दे, जो अक्सर काफी तुच्छ और हास्यास्पद होती है—गलत जगह पर पड़ी कोई वस्तु, फर्श पर पड़ा रुमाल, शेल्फ पर न रखी किताब, इत्यादि।
अंततः, बेहद नाराज़ और चिड़चिड़े मन से इवान घर पहुँचा, और
अचानक, बगीचे के द्वार से लगभग पंद्रह कदम की दूरी पर, उसे समझ आ गया कि उसे किस बात की चिंता सता रही है।
प्रवेश द्वार पर एक बेंच पर नौकर स्मरद्याकोव बैठा आनंद ले रहा था।
शाम की ठंडक में, इवान ने उसे देखते ही जान लिया कि उसके मन में नौकर स्मरद्याकोव का ही ख्याल है, और यही वो आदमी है जिससे उसकी आत्मा घृणा करती है। अचानक ही सब कुछ उसके सामने स्पष्ट हो गया। कुछ देर पहले, जब अलेयोशा उसे स्मरद्याकोव से अपनी मुलाकात के बारे में बता रहा था, तो उसे अचानक उदासी और घृणा का अनुभव हुआ था, जिसने तुरंत उसके दिल में क्रोध को जन्म दिया था। बाद में, जब वह बात कर रहा था, तो स्मरद्याकोव कुछ समय के लिए उसके दिमाग से निकल गया था; लेकिन फिर भी वह उसके मन में था, और जैसे ही इवान अलेयोशा से विदा लेकर घर की ओर चलने लगा, वह भूली हुई भावना फिर से उभरने लगी। "क्या यह संभव है कि उस जैसे तुच्छ, घृणित प्राणी के कारण मुझे इतनी चिंता हो रही है?" उसने असहनीय चिड़चिड़ाहट के साथ सोचा।
यह सच था कि इवान को हाल ही में तीव्र नापसंदगी महसूस होने लगी थी।

खासकर पिछले कुछ दिनों में, इवान को स्मरद्याकोव के प्रति घृणा का भाव बढ़ने लगा था। शायद यह घृणा इसलिए और बढ़ गई थी क्योंकि जब इवान पहली बार इस इलाके में आया था, तब उसकी सोच बिल्कुल अलग थी। तब स्मरद्याकोव में उसकी गहरी रुचि थी और वह उसे बहुत ही अनोखा मानता था। उसने स्मरद्याकोव को उससे बात करने के लिए प्रोत्साहित किया था, हालांकि उसके मन में एक तरह की असंगति या कहें बेचैनी थी, और वह समझ नहीं पाता था कि आखिर ऐसी कौन सी बात है जो "चिंतनशील" के मस्तिष्क पर लगातार और दृढ़ता से असर डालती है। उन्होंने दार्शनिक प्रश्नों पर चर्चा की और यहाँ तक कि इस बात पर भी कि पहले दिन प्रकाश कैसे हो सकता था, जबकि सूर्य, चंद्रमा और तारे चौथे दिन ही बने थे, और इसे कैसे समझा जाए। लेकिन इवान ने जल्द ही समझ लिया कि सूर्य, चंद्रमा और तारे भले ही दिलचस्प विषय हों, लेकिन स्मरद्याकोव के लिए ये विषय गौण थे, और वह कुछ और ही खोज रहा था। किसी न किसी रूप में, वह असीम घमंड और आहत घमंड को प्रकट करने लगा था, जो इवान को नापसंद था। सबसे पहले तो इसी बात ने उसके मन में घृणा पैदा की थी। बाद में घर में कुछ गड़बड़ हो गई। ग्रुशेंका आ गई, और उसके भाई दिमित्री के साथ भी विवाद हुए—उन्होंने इस बारे में भी बात की। लेकिन हालांकि स्मरद्याकोव हमेशा इस बारे में बड़े उत्साह से बात करता था, यह पता लगाना असंभव था कि वह इससे क्या चाहता था। वास्तव में, उसकी कुछ इच्छाओं की अतार्किकता और असंगतता में कुछ आश्चर्यजनक था, जो अनजाने में प्रकट हो जाती थीं और हमेशा अस्पष्ट रूप से व्यक्त की जाती थीं। स्मरद्याकोव हमेशा पूछताछ करता रहता था, कुछ अप्रत्यक्ष लेकिन स्पष्ट रूप से सोचे-समझे प्रश्न पूछता था, लेकिन उसका उद्देश्य क्या था, यह वह स्पष्ट नहीं करता था, और आमतौर पर सबसे महत्वपूर्ण क्षण में वह रुक जाता और चुप हो जाता या किसी दूसरे विषय पर चला जाता। लेकिन जिस बात ने अंततः इवान को सबसे ज्यादा परेशान किया और उसके प्रति उसकी नापसंदगी को पुख्ता किया, वह थी स्मरद्याकोव की वह अजीब, घृणित आत्मीयता जो वह दिन-प्रतिदिन अधिक स्पष्ट रूप से दिखाने लगा था। ऐसा नहीं था कि वह अपना आपा खो बैठा और असभ्य हो गया; इसके विपरीत, वह हमेशा बहुत सम्मानपूर्वक बोलता था, फिर भी उसने यह सोचना शुरू कर दिया था—पता नहीं क्यों!—कि उसके और इवान फ्योदोरोविच के बीच किसी तरह की आपसी समझ थी। उसकी बोलने की शैली ऐसी थी मानो उन दोनों के बीच कोई समझौता, कोई गुप्त बात हो, जो कभी न कभी दोनों पक्षों द्वारा व्यक्त की गई हो, केवल उन्हें ही पता हो और उनके आसपास के लोगों की समझ से परे हो। लेकिन लंबे समय तक इवान अपनी बढ़ती नापसंदगी का असली कारण नहीं समझ पाया और हाल ही में उसे इसकी जड़ का पता चला। घृणा और झुंझलाहट की भावना के साथ उसने द्वार से अंदर जाने की कोशिश की।

स्मरद्याकोव से बिना कुछ बोले या उसकी ओर देखे, इवान तुरंत समझ गया कि वह उससे विशेष रूप से बात करना चाहता है। लेकिन स्मरद्याकोव बेंच से उठ खड़ा हुआ, और उसकी इस हरकत से ही इवान को तुरंत पता चल गया कि वह उससे बात करना चाहता है। इवान ने उसकी ओर देखा और रुक गया, और इस बात ने कि वह आगे बढ़ने के बजाय रुक गया, जैसा कि वह एक मिनट पहले सोच रहा था, उसे क्रोधित कर दिया। क्रोध और घृणा से उसने स्मरद्याकोव के कमजोर, बीमार चेहरे को देखा, जिसके माथे पर छोटे-छोटे घुंघराले बाल आगे की ओर कंघी किए हुए थे। उसकी बाईं आँख झपकी और वह मुस्कुराया, मानो कह रहा हो, "कहाँ जा रहे हो? तुम आगे नहीं बढ़ोगे; देखो, हम दोनों समझदार लोगों को एक-दूसरे से कुछ कहना है।"

इवान कांप उठा। "दूर हो जाओ, निकम्मे मूर्ख। मुझे तुमसे क्या लेना-देना है?"

यह बात उसकी जुबान पर थी, लेकिन उसे गहरे आश्चर्य के साथ खुद को यह कहते हुए सुना, "क्या मेरे पिता अभी भी सो रहे हैं, या वह जाग गए हैं?"

उसने खुद को आश्चर्यचकित करते हुए, धीरे और विनम्रता से प्रश्न पूछा, और

एक बार फिर, खुद को आश्चर्यचकित करते हुए, वह बेंच पर बैठ गया। एक पल के लिए उसे लगभग डर सा लगा; बाद में उसे यह बात याद आई। स्मर्ड्याकोव उसके सामने खड़ा था, उसके हाथ उसकी पीठ के पीछे थे, और वह आत्मविश्वास और लगभग सख्ती से उसकी ओर देख रहा था।

“महामहिम अभी भी सो रहे हैं,” उन्होंने जानबूझकर कहा (“आप ही थे

“पहले बोलने वाला मैं नहीं हूँ,” मानो वह कह रहा हो। “मुझे आप पर आश्चर्य है, महोदय,” उसने थोड़ी देर रुककर, अपनी नज़रें बनावटी ढंग से नीचे करते हुए, अपना दाहिना पैर आगे बढ़ाते हुए और अपने पॉलिश किए हुए जूते की नोक से खेलते हुए कहा।

“तुम मुझ पर आश्चर्य क्यों कर रहे हो?” इवान ने अचानक और उदास स्वर में पूछा।

उसने खुद को संयमित करने की पूरी कोशिश की, और अचानक घृणा के साथ महसूस किया कि वह तीव्र जिज्ञासा महसूस कर रहा था और किसी भी कीमत पर उसे संतुष्ट किए बिना वहां से नहीं जाता।
“महाराज, आप चेरमाश्न्या क्यों नहीं जाते?” स्मर्ड्याकोव ने अचानक पूछा।
उसकी आँखों में चमक थी और वह परिचित मुस्कान के साथ मुस्कुराया। "मैं क्यों मुस्कुरा रहा हूँ, यह तुम्हें खुद ही समझना होगा, अगर तुम समझदार हो," उसकी सिकुड़ी हुई बाईं आँख मानो कह रही थी।
“मुझे चेरमाश्न्या क्यों जाना चाहिए?” इवान ने आश्चर्य से पूछा। स्मर्ड्याकोव फिर चुप हो गया।
अंत में उन्होंने कहा, "स्वयं फ्योदोर पावलोविच ने आपसे ऐसा करने की विनती की है।"
धीरे-धीरे और अपने जवाब को कोई महत्व न देते हुए, उन्होंने कहा, "मैंने आपको एक गौण कारण से टाल दिया, बस कुछ कहने के लिए।"
“तुम्हें धिक्कार है! खुलकर बोलो जो तुम चाहते हो!” इवान अंततः क्रोध से चिल्लाया।
नम्रता से हिंसा की ओर संक्रमण।
स्मर्ड्याकोव ने अपना दाहिना पैर बाएं पैर के पास उठाया, खुद को ऊपर खींचा, लेकिन फिर भी उसने उसी शांति और उसी हल्की मुस्कान के साथ उसकी ओर देखा।
“असल में कुछ नहीं—बस थोड़ी-बहुत बातचीत हुई।” फिर सन्नाटा छा गया। वे लगभग एक मिनट तक चुप रहे। इवान
इवान जानता था कि उसे उठकर अपना गुस्सा दिखाना चाहिए, और स्मरद्याकोव उसके सामने खड़ा था और मानो इंतज़ार कर रहा हो कि वह गुस्सा करेगा या नहीं। कम से कम इवान को तो यही लगा। आखिरकार वह उठने के लिए हिला। स्मरद्याकोव ने मानो मौके का फायदा उठा लिया।
“इवान फ्योदोरोविच, मैं बहुत बुरी स्थिति में हूँ। मुझे नहीं पता कि मैं आपकी मदद कैसे करूँ।”
“मैं स्वयं,” उन्होंने दृढ़तापूर्वक और स्पष्ट स्वर में कहा, और अपने अंतिम शब्द पर उन्होंने आह भरी। इवान फ्योदोरोविच फिर से बैठ गए।
वे दोनों बिलकुल पागल हैं, वे छोटे बच्चों से बेहतर नहीं हैं।
स्मर्ड्याकोव ने बोलना जारी रखा। “मैं आपके माता-पिता और आपके भाई दिमित्री फ्योदोरोविच की बात कर रहा हूँ। यहाँ फ्योदोर पावलोविच तुरंत उठकर हर मिनट मुझे परेशान करने लगेंगे, ‘क्या वह आई? वह क्यों नहीं आई?’ और यह सिलसिला आधी रात तक और उसके बाद भी चलता रहेगा। और अगर अग्रफेना अलेक्जेंड्रोवना नहीं आती (क्योंकि बहुत संभव है कि वह आने का इरादा ही न रखती हो) तो वह कल सुबह फिर मेरे पास आएंगे, ‘वह क्यों नहीं आई? वह कब आएगी?’—जैसे कि इसके लिए मैं ही दोषी हूँ। दूसरी तरफ भी यही हाल है। जैसे ही अंधेरा होता है, या उससे पहले ही, आपका भाई अपने हाथों में बंदूक लिए प्रकट होगा: ‘सावधान रहो, बदमाश, सूप बनाने वाले। अगर तुम उसे नहीं देख पाए और मुझे नहीं बताया—तो मैं तुम्हें सबसे पहले मार डालूँगा।’ रात खत्म होने पर, सुबह, वह भी, फ्योदोर पावलोविच की तरह, मुझे परेशान करने लगते हैं। ‘वह क्यों नहीं आई? क्या वह जल्दी आएगी?’ और वह भी, उन्हें लगता है कि मेरी गलती है क्योंकि उनकी पत्नी नहीं आई। और हर दिन, हर घंटे उनका गुस्सा बढ़ता ही जा रहा है, इतना कि कभी-कभी मुझे डर के मारे खुदकुशी करने का मन करता है। मैं उन पर भरोसा नहीं कर सकती, महोदय।
“और तुमने दखल क्यों दिया? तुमने दिमित्री के लिए जासूसी क्यों शुरू की?
इवान ने चिड़चिड़ाते हुए कहा, "फ्योदोरोविच?"
मैं दखलंदाजी करने से कैसे बच सकता था? हालांकि, वास्तव में, मैंने बिल्कुल भी दखलंदाजी नहीं की है। अगर आप सच जानना चाहते हैं तो। मैं शुरू से ही चुप रहा, जवाब देने की हिम्मत नहीं कर पाया; लेकिन उसने मुझे अपना नौकर बना लिया। तब से उसने बस एक ही बात कही है: 'अगर तुमने उसे खोया तो मैं तुझे मार डालूंगा, बदमाश।' मुझे पूरा यकीन है, महोदय, कि कल मुझे बहुत तेज दौरा पड़ेगा।
“‘लॉन्ग फिट’ से आपका क्या मतलब है?”
"एक लंबा दौरा, जो काफी देर तक चलता है—कई घंटों तक, या शायद एक या दो दिन तक।"
एक बार तो यह सिलसिला तीन दिन तक चला। उस समय मैं अटारी से गिर गया था। छटपटाना रुका और फिर शुरू हो गया, और तीन दिन तक मुझे होश नहीं आया। फ्योदोर पावलोविच ने यहाँ के डॉक्टर हर्ज़ेनस्टुबे को बुलवाया, उन्होंने मेरे सिर पर बर्फ लगाई और दूसरे उपाय भी आजमाए... मैं मर भी सकता था।
लेकिन वे कहते हैं कि मिर्गी के रोगी में यह बताना मुश्किल है कि दौरा कब आएगा।

"तुम्हारे कहने का क्या मतलब है कि तुम कल एक लोगे?" इवान ने एक अजीब, चिड़चिड़ी जिज्ञासा के साथ पूछा।
“यह बिल्कुल सच है। पहले से पता नहीं चल सकता।”
"इसके अलावा, तुम अटारी से गिर गए थे।"
मैं हर रोज अटारी तक चढ़ता हूँ। हो सकता है मैं अटारी से फिर गिर जाऊँ-
कल। और अगर नहीं, तो मैं तहखाने की सीढ़ियों से गिर सकता हूँ। मुझे हर दिन तहखाने में जाना पड़ता है।
इवान ने उसे देर तक देखा।
“मुझे लगता है तुम बकवास कर रहे हो, और मुझे तुम्हारी बात समझ नहीं आ रही,” उसने कहा।
उसने धीमी आवाज़ में, लेकिन कुछ धमकी भरे लहजे में कहा, "क्या तुम कल से तीन दिन तक बीमार होने का नाटक करने वाले हो?"
स्मरद्याकोव, जो फिर से जमीन की ओर देख रहा था और खेल रहा था
अपने दाहिने पैर के अंगूठे से, उसने पैर नीचे रखा, बाएँ पैर को आगे बढ़ाया और मुस्कुराते हुए कहा:
"अगर मैं ऐसा करतब दिखा पाता, यानी कि मैं मिर्गी का दौरा पड़ने का नाटक कर पाता—और यह
जो व्यक्ति इन उपायों का आदी हो, उसके लिए ये मुश्किल नहीं होगा—मुझे मृत्यु से बचने के लिए ऐसे उपाय अपनाने का पूरा अधिकार होगा। क्योंकि अगर अग्राफेना अलेक्जेंड्रोवना मेरे बीमार होने के दौरान मेरे पिता से मिलने आती भी है, तो भी मेरे पिता एक बीमार व्यक्ति को न बताने के लिए दोषी नहीं ठहरा सकते। उन्हें शर्म आएगी।
“अरे बाप रे!” इवान गुस्से से लाल होते हुए चिल्लाया, “तुम ऐसा क्यों कर रहे हो?”
क्या तुम हमेशा अपनी जिंदगी को लेकर इतने परेशान रहते हो? मेरे भाई दिमित्री की सारी धमकियाँ महज़ खोखले वादे हैं, उनका कोई मतलब नहीं। वो तुम्हें नहीं मारेगा; वो तुम्हें नहीं मारेगा!
“वह सबसे पहले मुझे मक्खी की तरह मार डालेगा। लेकिन उससे भी ज्यादा, मुझे डर लगता है।”
जब वह अपने पिता के साथ कुछ पागलपन भरा काम करेगा, तो मुझे उसका साथी समझा जाएगा।
आपको सह-अपराधी क्यों माना जाना चाहिए?
वे सोचेंगे कि मैं एक सहयोगी हूँ, क्योंकि मैंने उसे संकेत बता दिए थे।
एक बड़ा रहस्य।"
“क्या संकेत? आपने किसे बताया? आप लोग धिक्कार हैं, स्पष्ट-स्पष्ट रूप से बोलिए।”
“मुझे यह बात माननी ही पड़ेगी,” स्मरद्याकोव ने पांडित्यपूर्ण लहजे में कहा।
शांत भाव से, “इस मामले में मेरा फ्योदोर पावलोविच से एक गुप्त संबंध है। जैसा कि आप स्वयं जानते हैं (यदि आप जानते हैं), वह पिछले कई दिनों से रात या शाम होते ही खुद को कमरे में बंद कर लेता है। आजकल आप हर शाम जल्दी अपने कमरे में चले जाते हैं, और कल तो आप बिल्कुल भी नीचे नहीं आए, इसलिए शायद आपको पता नहीं है कि वह रात में कितनी सावधानी से खुद को कमरे में बंद कर लेता है, और अगर ग्रिगोरी वासिलीविच दरवाजे पर भी आ जाए तो वह उसकी आवाज सुने बिना दरवाजा नहीं खोलता। लेकिन ग्रिगोरी वासिलीविच नहीं आता, क्योंकि अब मैं अकेले उसके कमरे में उसकी सेवा करता हूँ। यह व्यवस्था उसने खुद ही की है जब से अग्रफेना अलेक्जेंड्रोवना के साथ यह मामला शुरू हुआ है। लेकिन रात में, उसके आदेश पर, मैं लॉज में चला जाता हूँ ताकि आधी रात तक सो न सकूँ, बल्कि जागता रहूँ, उठकर आँगन में घूमता रहूँ, अग्रफेना अलेक्जेंड्रोवना के आने का इंतजार करता रहूँ। पिछले कुछ दिनों से वह उसके आने की बेसब्री से इंतजार कर रहा है। वह जो तर्क देता है...” वह दिमित्री फ्योदोरोविच (जिसे वह मित्या कहकर बुलाता है) से डरती है, और इसलिए, वह कहता है, 'वह देर रात मेरे पास पिछले रास्ते से आएगी। तुम आधी रात तक और उसके बाद भी उसका इंतज़ार करना; और अगर वह आती है, तो दौड़कर मेरे दरवाजे या बगीचे की खिड़की पर दस्तक देना। पहले दो बार धीरे से दस्तक देना, और फिर तीन बार तेज़ी से, फिर,' वह कहता है, 'मैं तुरंत समझ जाऊंगा कि वह आ गई है, और चुपचाप तुम्हारे लिए दरवाजा खोल दूंगा।' एक और संकेत जो उसने मुझे किसी अप्रत्याशित घटना की स्थिति में दिया। पहले दो बार दस्तक, और फिर कुछ देर बाद एक और ज़ोर से। तब वह समझ जाएगा कि अचानक कुछ हुआ है और मुझे उससे मिलना चाहिए, और वह मेरे लिए दरवाजा खोल देगा ताकि मैं जाकर उससे बात कर सकूं। यह सब इसलिए है कि अगर अग्रफेना अलेक्जेंड्रोवना खुद न आ सके, बल्कि संदेश भेजे। इसके अलावा, दिमित्री फ्योदोरोविच भी आ सकता है,

इसलिए मुझे उसे बताना होगा कि वह पास ही है। उसकी इज़्ज़त मैं दिमित्री फ्योदोरोविच से बहुत डरता हूँ, इतना कि अगर अग्रफेना अलेक्जेंड्रोवना भी आ जातीं और हम उनके साथ कमरे में बंद हो जाते, और दिमित्री फ्योदोरोविच उस समय आस-पास कहीं भी आ जाते, तो मैं तीन बार खटखटाकर उन्हें तुरंत सूचित करने के लिए बाध्य होता। यानी पाँच बार खटखटाने का पहला संकेत अग्रफेना अलेक्जेंड्रोवना के आने का संकेत होता, जबकि तीन बार खटखटाने का दूसरा संकेत 'आपको कुछ ज़रूरी बात बतानी है' का संकेत होता। उन्होंने मुझे कई बार ये संकेत दिखाए हैं और समझाए हैं। और क्योंकि पूरे ब्रह्मांड में इन संकेतों को मेरे और उनके अलावा कोई नहीं जानता, इसलिए वे बिना किसी झिझक के और बिना आवाज़ लगाए दरवाज़ा खोल देते (वे ज़ोर से आवाज़ लगाने से बहुत डरते हैं)। खैर, अब तो दिमित्री फ्योदोरोविच को भी ये संकेत पता चल गए हैं।
“वे कैसे जाने जाते हैं? क्या तुमने उसे बताया? तुमने उसे बताने की हिम्मत कैसे की?”
मैंने डर के मारे ऐसा किया। भला मैं इसे कैसे छुपा सकती थी?
उसे? दिमित्री फ्योदोरोविच हर दिन यही कहता रहा, 'तुम मुझे धोखा दे रहे हो, मुझसे कुछ छुपा रहे हो! मैं तुम्हारे दोनों पैर तोड़ दूंगा।' इसलिए मैंने उसे वे गुप्त संकेत दिए ताकि वह मेरी निष्ठा को समझ सके और संतुष्ट हो सके कि मैं उसे धोखा नहीं दे रहा था, बल्कि उसे वह सब कुछ बता रहा था जो मैं बता सकता था। अगर आपको लगता है कि वह उन संकेतों का फायदा उठाकर अंदर घुसने की कोशिश करेगा, तो ऐसा मत सोचिए।
उसे अंदर आने दें।"
लेकिन अगर मुझे दौरा पड़ जाए और मैं बिस्तर पर पड़ जाऊं, तो मैं उसे अंदर आने से कैसे रोक सकता हूँ? तो, अगर मैं उसे रोकने की हिम्मत भी करूँ, यह जानते हुए कि वह कितना बेताब है?
अरे! तुम इतने यकीन से कैसे कह सकते हो कि तुम्हें दौरा पड़ेगा, धिक्कार है!
तुम? क्या तुम मुझ पर हंस रहे हो?
मैं तुम पर हंसने की हिम्मत कैसे कर सकता हूँ? मैं इस पर हंसने के मूड में बिल्कुल नहीं हूँ।
मुझे डर सता रहा है। मुझे लग रहा है कि मुझे दौरा पड़ने वाला है। मुझे पूर्वाभास हो रहा है। सिर्फ डर ही इसे शुरू कर देगा।
"धिक्कार है! अगर तुम बीमार पड़ गए, तो ग्रिगोरी पहरा देगा। चलो।"
ग्रिगोरी को पहले से ही पता है; वह उसे अंदर नहीं आने देगा।
मुझे ग्रिगोरी वासिल्येविच को संकेतों के बारे में बताने की हिम्मत कभी नहीं करनी चाहिए।
मेरे मालिक के आदेश के बिना। और ग्रिगोरी वासिलीविच द्वारा उसे सुनने और अंदर न आने देने की बात करें तो, वह कल से बीमार है, और मार्फा इग्नात्येवना कल उसे दवा देने वाली है। उन्होंने अभी-अभी इसका इंतज़ाम किया है। यह उसका एक बहुत ही अनोखा नुस्खा है। मार्फा इग्नात्येवना एक औषधि जानती है और उसे हमेशा अपने पास रखती है। यह किसी जड़ी बूटी से बनी एक तेज़ दवा है। उसे इसका रहस्य पता है, और वह ग्रिगोरी वासिलीविच को साल में तीन बार यह दवा देती है जब उसका कमर दर्द इतना बढ़ जाता है कि वह लगभग लकवाग्रस्त हो जाता है। फिर वह एक तौलिया लेती है, उसे उस दवा से गीला करती है, और आधे घंटे तक उसकी पूरी पीठ पर तब तक मलती है जब तक कि वह पूरी तरह लाल और सूजी हुई न हो जाए, और बोतल में जो कुछ बचता है उसे वह एक विशेष प्रार्थना के साथ उसे पीने के लिए देती है; लेकिन पूरी नहीं, क्योंकि ऐसे मौकों पर वह अपने लिए भी कुछ बचा लेती है और खुद पी लेती है। और चूंकि वे कभी भी तेज़ शराब नहीं पीते, मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि वे दोनों तुरंत सो जाते हैं और बहुत देर तक गहरी नींद सोते हैं। और जब ग्रिगोरी वासिलीविच जागते हैं तो वे पूरी तरह से ठीक होते हैं, लेकिन मार्फा इग्नात्येवना को हमेशा इससे सिरदर्द रहता है। इसलिए, अगर मार्फा इग्नात्येवना कल अपनी योजना को अंजाम देती हैं, तो उन्हें कुछ पता नहीं चलेगा और वे दिमित्री फ्योदोरोविच को रोक नहीं पाएंगे। वे सो रहे होंगे।
“यह कैसी उलझन है! और यह सब एक साथ घटित होता प्रतीत होता है, मानो...
“ये सब पहले से तय था। तुम्हें दौरा पड़ेगा और वे दोनों बेहोश हो जाएँगे,” इवान चिल्लाया। “लेकिन क्या तुम ऐसा ही करने की कोशिश नहीं कर रहे हो?” अचानक उससे पूछा गया और उसने धमकी भरे लहजे में भौंहें चढ़ा लीं।
मैं ऐसा कैसे कर सकता था? ...और मुझे ऐसा क्यों करना चाहिए, जब सब कुछ दिमित्री पर निर्भर करता है।

फ्योदोरोविच और उसकी योजनाएँ? ... अगर उसका कुछ करने का इरादा है, तो वह करेगा; लेकिन अगर नहीं, तो मैं उसे उसके पिता पर नहीं थोपूँगा।
और उसे पिता के पास क्यों जाना चाहिए, खासकर चुपके से, अगर, जैसा कि आप कहते हैं
"तुम खुद कह रहे हो, अग्रफेना अलेक्जेंड्रोवना बिल्कुल नहीं आएगी?" इवान गुस्से से लाल होते हुए बोला।
"तुम खुद ही ऐसा कह रहे हो, और जब से मैं यहाँ हूँ, मुझे पूरा यकीन है कि यह सब उस बूढ़े आदमी का वहम है, और वह लड़की उसके पास नहीं आएगी। अगर वह नहीं आती है तो दिमित्री उसके पास क्यों जाएगा? बोलो, मैं जानना चाहता हूँ कि तुम क्या सोच रहे हो!"
“तुम खुद जानते हो कि वह क्यों आएगा। मेरे सोचने का क्या फायदा?”
वह शायद गुस्से में या मेरी बीमारी के कारण शक में आकर मुझसे मिलने आएगा और कल की तरह ही अधीर होकर कमरों की तलाशी लेगा, यह देखने के लिए कि कहीं वह चुपके से उससे बचकर तो नहीं निकल गई। उसे यह भी अच्छी तरह पता है कि फ्योदोर पावलोविच के पास एक बड़ा लिफाफा है जिसमें तीन हजार रूबल हैं, जो रिबन से बंधा है और उस पर तीन मुहरें लगी हैं। उस पर उसने खुद लिखा है, 'मेरी परी ग्रुशेंका के लिए, अगर वह आए,' और तीन दिन बाद उसने इसमें जोड़ा, 'मेरी छोटी मुर्गी के लिए।' पता नहीं इसका क्या नतीजा होगा।
“बकवास!” इवान लगभग आपा खो बैठा। “दिमित्री नहीं आएगा!”
पैसे चुराओ और ऐसा करने के लिए मेरे पिता की हत्या कर दो। ग्रुशेंका की वजह से वह कल ही उन्हें मार सकता था, उस पागल, बर्बर मूर्ख की तरह, लेकिन वह चोरी नहीं करेगा।
"इवान फ्योदोरोविच को इस समय पैसों की बहुत सख्त जरूरत है—सबसे ज्यादा जरूरत। आपको नहीं पता कि उन्हें कितनी सख्त जरूरत है," स्मरद्याकोव ने पूर्ण संयम और उल्लेखनीय स्पष्टता के साथ समझाया। “वह उन तीन हज़ार को भी अपना ही मानता है। उसने खुद मुझसे ऐसा कहा था। उसने कहा, ‘मेरे पिता पर अभी भी मेरे तीन हज़ार बकाया हैं।’ और इसके अलावा, इवान फ्योदोरोविच, एक और बात बिल्कुल सच है। यह लगभग निश्चित है, अगर अग्रफेना अलेक्जेंड्रोवना चाहे तो उसे, यानी मालिक फ्योदोर पावलोविच को, उससे शादी करने के लिए मजबूर कर देगी—और बेशक वह चाहेगी। मैंने बस इतना कहा है कि वह नहीं आएगी, लेकिन शायद वह इससे ज़्यादा कुछ चाहती हो—मेरा मतलब है यहाँ मालकिन बनना। मैं खुद जानता हूँ कि उसका व्यापारी सैमसनोव इस बारे में उसके साथ हँस रहा था, और खुलेआम उससे कह रहा था कि ऐसा करना बिल्कुल भी मूर्खतापूर्ण नहीं होगा। और वह काफी समझदार है। वह दिमित्री फ्योदोरोविच जैसे भिखारी से शादी नहीं करेगी। इसलिए, इस बात को ध्यान में रखते हुए, इवान फ्योदोरोविच, सोचो कि फिर न तो दिमित्री फ्योदोरोविच, न तुम और न ही तुम्हारा भाई, एलेक्सी फ्योदोरोविच को मालिक की मृत्यु के बाद कुछ भी नहीं मिलेगा, एक रूबल भी नहीं, क्योंकि अग्रफेना अलेक्जेंड्रोवना उससे सिर्फ सारी दौलत हथियाने के लिए शादी करेगी। लेकिन अगर तुम्हारे पिता की अभी मृत्यु हो जाए, तो चालीस हजार रुपये तो ज़रूर मिलेंगे, यहाँ तक कि दिमित्री फ्योदोरोविच को भी, जिससे वह इतनी नफरत करता है, क्योंकि उसने कोई वसीयत नहीं बनाई है... दिमित्री फ्योदोरोविच यह सब बहुत अच्छी तरह जानता है।
इवान के चेहरे पर एक अजीब सी सिहरन दौड़ गई। वह अचानक शर्म से लाल हो गया। "तो फिर आखिर क्यों," उसने अचानक स्मरद्याकोव की बात काटते हुए कहा, "तुम ऐसा क्यों करते हो?"
मुझे चेरमाश्न्या जाने की सलाह दे रहे हो? तुम्हारा मतलब क्या था? अगर मैं चला गया, तो देखना यहाँ क्या होगा।” इवान ने मुश्किल से साँस ली।
"बिल्कुल सही," स्मरद्याकोव ने इवान को देखते हुए धीरे और समझदारी से कहा।
हालांकि, पूरी एकाग्रता से।
“‘बिल्कुल ऐसा ही’ से तुम्हारा क्या मतलब है?” इवान ने उससे पूछा।
उसकी आंखों में एक भयावह चमक थी, वह बड़ी मुश्किल से खुद को नियंत्रित कर पा रहा था।
मैंने इसलिए बोला क्योंकि मुझे तुम पर दया आ रही थी। अगर मैं तुम्हारी जगह होता तो मुझे भी यही करना चाहिए था।
“बस सब कुछ फेंक दो... ऐसी स्थिति में बने रहने के बजाय,” स्मरद्याकोव ने इवान की चमकती आँखों को देखते हुए अत्यंत स्पष्टवादिता से उत्तर दिया। दोनों चुप रहे।
तुम बिलकुल बेवकूफ लगते हो, और उससे भी बड़ी बात... एक भयानक

“वह भी बदमाश है।” इवान अचानक बेंच से उठ खड़ा हुआ। वह सीधे फाटक से निकलने ही वाला था कि रुक गया और स्मरद्याकोव की ओर मुड़ा। इसके बाद कुछ अजीब हुआ। इवान अचानक गुस्से में आकर अपने होंठ काटने लगा, मुट्ठियाँ भींचने लगा और अगले ही पल स्मरद्याकोव पर टूट पड़ता। स्मरद्याकोव ने भी उसी क्षण यह देख लिया, चौंक गया और पीछे हट गया। लेकिन स्मरद्याकोव को कोई नुकसान नहीं हुआ और इवान चुपचाप, मानो उलझन में, फाटक की ओर मुड़ गया।
“अगर आपको जानना हो तो बता दूं कि मैं कल सुबह-सुबह मॉस्को जा रहा हूँ।”
कल सुबह। बस इतना ही!” उसने अचानक गुस्से में जोर से कहा, और बाद में खुद से सोचा कि स्मरद्याकोव से यह कहने की क्या जरूरत थी।
“यही सबसे अच्छा तरीका है जो आप कर सकते हैं,” उसने जवाब दिया, मानो उसके पास
यह सुनने की उम्मीद थी; "सिवाय इसके कि अगर यहां कुछ भी होता है तो आपको मॉस्को से टेलीग्राम भेजा जा सकता है।"
इवान फिर रुका और फिर से तेजी से स्मरद्याकोव की ओर मुड़ा। लेकिन एक
उसमें भी बदलाव आ चुका था। उसकी सारी सहजता और बेफिक्री पूरी तरह गायब हो गई थी। उसके चेहरे पर ध्यान और उम्मीद का भाव था, वह गंभीर था लेकिन साथ ही साथ डरपोक और सहमी हुई भी थी।
“क्या आपके पास कहने के लिए कुछ और नहीं है—कुछ और जोड़ना नहीं है?” यह हो सकता है
इवान पर टिकी उसकी गहन निगाहों में यह बात स्पष्ट थी।
और क्या मुझे भी चेरमाश्न्या से बुलवाया नहीं जा सकता—अगर कुछ हो जाए तो।
“क्या हुआ?” इवान अचानक चिल्लाया, किसी अज्ञात कारण से उसकी आवाज ऊंची हो गई।
“चेरमाश्न्या से भी... तुम्हें बुलाया जा सकता है,” स्मरद्याकोव
वह लगभग फुसफुसाते हुए बुदबुदाई, थोड़ी परेशान लग रही थी, लेकिन इवान की आंखों में ध्यान से देख रही थी।
“केवल मॉस्को ही दूर है और चेरमाश्न्या पास है। क्या यह मेरी जान बचाने के लिए है?”
क्या आप किराए पर पैसा खर्च करने पर जोर दे रहे हैं, या मुझे इतनी दूर जाने से बचाने के लिए, इसलिए आप चेरमाश्न्या जाने पर जोर दे रहे हैं?
“बिल्कुल सही...” स्मर्ड्याकोव ने कांपती हुई आवाज में बुदबुदाया।
उसने इवान को घृणास्पद मुस्कान से देखा और फिर पीछे हटने को तैयार हो गया। लेकिन उसे आश्चर्य हुआ जब इवान ज़ोर से हंस पड़ा और हंसते-हंसते फाटक से बाहर निकल गया। उस क्षण उसका चेहरा देखने वाला कोई भी समझ जाता कि वह मन की शांति के कारण नहीं हंस रहा था, और वह स्वयं भी उस क्षण अपनी भावनाओं को व्यक्त नहीं कर पा रहा था। वह मानो किसी मानसिक उन्माद में चल रहा था।

अध्याय 7

किसी से बात करना हमेशा फायदेमंद होता है

चतुर आदमी

और उसी घबराहट भरी बेचैनी में उसने बात की। फ्योदोर से मुलाकात
पावलोविच जैसे ही ड्राइंग रूम में दाखिल हुआ, उसने तुरंत उसे आवाज़ दी।
हाथ हिलाते हुए उसने कहा, “मैं ऊपर अपने कमरे में जा रहा हूँ, तुम्हारे पास नहीं। अच्छा।”
"बाय!" कहकर वह अपने पिता की ओर देखे बिना ही आगे बढ़ गया।
उस समय वह बूढ़ा आदमी उसे बहुत घृणित लग रहा था; लेकिन ऐसा
शत्रुता का यह असावधान प्रदर्शन फ्योदोर के लिए भी आश्चर्यजनक था।
पावलोविच। और बूढ़ा आदमी जाहिर तौर पर उसे कुछ बताना चाहता था।
एक बार वह उससे मिलने के लिए जानबूझकर ड्राइंग रूम में आई थी।
इस सौहार्दपूर्ण अभिवादन को पाकर वह चुपचाप और एक भावहीन मुद्रा में खड़ा रहा।
व्यंग्यपूर्ण भाव से वह अपने बेटे को ऊपर जाते हुए देखता रहा, जब तक कि वह उसकी नजरों से ओझल नहीं हो गया।
“उसे क्या हुआ है?” उसने तुरंत स्मर्ज्याकोव से पूछा, जिसने
इवान का पीछा किया था।
“किसी बात पर गुस्सा है। कौन बता सकता है?” नौकर ने बुदबुदाते हुए कहा।
टालमटोल करते हुए।
“उसे धिक्कार है! उसे क्रोधित होने दो। समोवर लाओ, और
आपके साथ अच्छा तालमेल रहेगा। एकदम चुस्त-दुरुस्त! कोई खबर नहीं?
इसके बाद कई सवाल पूछे गए, जैसे कि स्मरद्याकोव ने अभी-अभी पूछे थे।
इवान से की गई सभी शिकायतें, जो उसके आने वाले मेहमान से संबंधित थीं, और ये
जिन सवालों को हम छोड़ देंगे। आधे घंटे बाद घर में ताला लगा दिया गया, और
एक बूढ़ा सनकी व्यक्ति उत्तेजित होकर कमरों में इधर-उधर घूम रहा था।
हर मिनट तय की गई पांचों दस्तकें सुनने की उम्मीद। अब
फिर उसने अंधेरे में बाहर की ओर देखा, लेकिन उसे कुछ भी दिखाई नहीं दिया।
काफी रात हो चुकी थी, लेकिन इवान अभी भी जागा हुआ था और सोच रहा था। वह उठकर बैठ गया।
उस रात देर तक, दो बजे तक। लेकिन हम उसका विवरण नहीं देंगे।
विचार, और यह उस आत्मा में झाँकने का स्थान नहीं है—उसकी बारी बाद में आएगी
आओ। और अगर कोई कोशिश भी करे, तो इसका हिसाब देना बहुत मुश्किल होगा।
उनके मन में कोई विचार नहीं थे, बल्कि कुछ बहुत ही अस्पष्ट विचार थे।
और सबसे बढ़कर, तीव्र उत्तेजना। उसे ऐसा महसूस हुआ जैसे उसने अपना सब कुछ खो दिया हो।
दिशाओं को लेकर भी वह चिंतित था। वह तरह-तरह की अजीब और लगभग आश्चर्यजनक बातों से भी परेशान था।
इच्छाएँ; उदाहरण के लिए, आधी रात के बाद अचानक उसे तीव्र, अनियंत्रित इच्छाएँ होने लगती थीं।
नीचे जाने की इच्छा, दरवाजा खोलना, लॉज में जाना और पीटना
स्मरद्याकोव। लेकिन अगर उनसे पूछा जाता कि क्यों, तो वे कोई जवाब नहीं दे पाते।
सटीक कारण, सिवाय इसके कि शायद वह नौकर से नफरत करता था क्योंकि वह एक ऐसा व्यक्ति था जिसने
उसने दुनिया में किसी और से कहीं अधिक गंभीर रूप से उसका अपमान किया। दूसरी ओर,
उस रात वह एक से अधिक बार एक प्रकार की अकथनीय भावना से अभिभूत हो गया था।

अपमानजनक आतंक, जिसने उसे महसूस हुआ कि उसकी शारीरिक शक्ति को पूरी तरह से पंगु बना दिया है।
उसके सिर में दर्द हो रहा था और उसे चक्कर आ रहे थे। उसके मन में घृणा की भावना पनप रही थी।
उसका दिल, मानो वह किसी से बदला लेने पर तुला हो। वह नफरत भी करता था।
अलेयोशा को अभी-अभी उससे हुई बातचीत याद आ रही थी। कुछ क्षणों में
वह खुद से बेहद नफरत करता था। वह कैटेरिना इवानोव्ना को लगभग भूल ही गया था।
मैंने सोचा, और बाद में इस पर बहुत आश्चर्य हुआ, खासकर जब उसने
उसे वह बात पूरी तरह याद थी जब उसने कैटेरिना के सामने इतनी बहादुरी से विरोध किया था।
इवानोव्ना ने कहा कि वह अगले दिन मॉस्को के लिए रवाना हो जाएगा, कुछ गड़बड़ थी।
उसने मन ही मन फुसफुसाया, "यह सब बकवास है, तुम नहीं जा रहे हो, और ऐसा होगा भी नहीं।"
जिस तरह से तुम अभी शेखी बघार रहे हो, उससे खुद को अलग करना कितना आसान होगा।
उस रात को बहुत समय बाद याद करते हुए, इवान ने अजीबोगरीब ढंग से उस रात को याद किया।
घृणा इस बात से उत्पन्न हुई कि वह अचानक सोफे से कैसे उठा और चुपके से चला गया, जैसे
हालांकि उसे डर था कि कोई उसे देख रहा है, उसने दरवाजा खोला और बाहर चला गया।
सीढ़ियों पर चढ़ते हुए मैंने नीचे फ्योदोर पावलोविच की हलचल सुनी,
मैंने काफी देर तक—लगभग पाँच मिनट तक—एक अजीब से भाव से सुना।
जिज्ञासा से भरी, सांस रोके हुए उसका दिल ज़ोर से धड़क रहा था। और उसे यह क्यों लगा था?
यह सब करने के बाद, वह क्यों सुन रहा था, यह वह नहीं बता सकता था। वह "कार्रवाई"
इसके बाद जीवन भर वह इसे "बदनाम" कहता रहा, और अपने दिल की गहराई में,
उन्होंने इसे अपने जीवन का सबसे नीच कृत्य माना। फ्योदोर पावलोविच के लिए
उस क्षण उसे स्वयं कोई घृणा नहीं थी, बल्कि वह अत्यंत उत्सुक था।
यह जानने के लिए कि वह नीचे कैसे चल रहा होगा और वह क्या सोच रहा होगा।
वह अब क्या कर रहा होगा, यह सोचकर वह सोचने लगा और कल्पना करने लगा कि वह कैसे झाँक रहा होगा।
अंधेरी खिड़कियाँ और कमरे के बीच में रुककर, सुनना, सुनना
किसी के दस्तक देने का इंतज़ार कर रहा था। इवान दो बार सीढ़ियों पर बाहर गया, मानो सुनने के लिए।
यह।
लगभग दो बजे जब सब कुछ शांत था, और यहाँ तक कि फ्योदोर भी।
पावलोविच बिस्तर पर जा चुकी थी, इवान भी बिस्तर पर लेट गया था, सोने का पक्का इरादा करके।
वह तुरंत सो गया, क्योंकि वह अत्यधिक थका हुआ महसूस कर रहा था। और वह सो गया।
एक बार, मैं बिना सपनों के गहरी नींद सोया, लेकिन सुबह सात बजे जल्दी उठ गया।
जब दिन का उजाला हो चुका था, तब उसने अपनी आँखें खोलीं और आश्चर्यचकित रह गया।
वह खुद को असाधारण रूप से ऊर्जावान महसूस कर रहा था। वह तुरंत उठ खड़ा हुआ और कपड़े पहने।
जल्दी से; फिर उसने अपना ट्रंक बाहर निकाला और तुरंत सामान पैक करना शुरू कर दिया।
कपड़े पिछली सुबह धोबी से वापस आ गए थे। इवान
यह सोचकर वह मुस्कुरा उठा कि सब कुछ उसकी अचानक हुई समस्या में मदद कर रहा है।
प्रस्थान। और उनका प्रस्थान निश्चित रूप से अचानक हुआ। हालाँकि इवान ने कहा था
एक दिन पहले (कैटरीना इवानोव्ना, अलेयोशा और स्मर्ज्याकोव को) उसने
वह अगले दिन जा रहा था, फिर भी उसे याद था कि उसके मन में इस बात का कोई विचार नहीं था।
जब वह सोने गया तो उसकी विदाई का सपना नहीं आया था, या कम से कम उसने ऐसा सपना नहीं देखा था कि उसका पहला
सुबह का पहला काम उसका सामान पैक करना होगा। आखिरकार उसका सामान और थैला पैक हो गया।
तैयार थे। करीब नौ बजे मार्फा इग्नात्येवना अंदर आईं।
अपनी हमेशा की तरह के सवाल के साथ, "महामहिम, आप अपनी चाय कहाँ पिएंगे, आपके

अपना कमरा या नीचे वाला कमरा?" वह लगभग खुश दिख रहा था, लेकिन उसके चेहरे पर लगभग कुछ भी नहीं था।
उसके शब्दों और हाव-भाव में कुछ जल्दबाजी और बिखराव सा झलक रहा था।
अपने पिता का सौहार्दपूर्ण अभिवादन करते हुए, और विशेष रूप से उनके स्वास्थ्य के बारे में पूछताछ करते हुए,
हालांकि उन्होंने अंत तक उनका जवाब सुनने का इंतजार नहीं किया, उन्होंने घोषणा कर दी कि वह
वह एक घंटे में हमेशा के लिए मॉस्को लौटने के लिए रवाना हो रहा था, और उसने उससे विनती की।
घोड़ों को बुलवाने के लिए। उसके पिता ने यह घोषणा सुनी, लेकिन उन्हें कोई संकेत नहीं मिला।
आश्चर्य हुआ, और उसने असभ्य तरीके से उसे खोने का अफसोस जताना भूल गया।
ऐसा करने के बजाय, वह किसी घटना की याद आने पर बहुत घबरा गया।
उसका अपना महत्वपूर्ण व्यवसाय था।
तुम तो बड़े ही अजीब आदमी हो! मुझे कल बताया ही नहीं! कोई बात नहीं; हम
फिर भी इसे संभालो। मेरे प्यारे बेटे, मुझ पर एक बड़ा उपकार करो। जाओ
रास्ते में चेरमाश्न्या है। स्टेशन से बस बाईं ओर मुड़ना है।
वोलोव्या, बस बारह वर्स्ट और आगे जाओ और तुम चेरमाश्न्या पहुँच जाओगे।
मुझे खेद है, मैं नहीं कर सकता। रेलवे स्टेशन तक अस्सी किलोमीटर दूर है और ट्रेन चलने लगती है।
आज रात सात बजे मॉस्को के लिए फ्लाइट है। मैं उसे मुश्किल से ही पकड़ पाऊंगा।
आपको यह कल या परसों हो जाएगा, लेकिन आज ही इसे बंद कर दें।
टचेरमश्न्या। अपने पिता को खुश करने में आपको ज्यादा परेशानी नहीं होगी! अगर मैं
अगर मुझे यहाँ रोकने का कोई कारण न होता, तो मैं खुद को कुचलकर मर गया होता।
मुझे वहां कुछ ज़रूरी काम है, इसलिए मैं कुछ समय पहले ही जा रहा हूँ। लेकिन यहाँ... अभी समय नहीं है।
अब मुझे जाना होगा... देखिए, मेरे पास वहाँ झाड़ियों से भरी ज़मीन के दो टुकड़े हैं।
मास्लोव परिवार का एक बूढ़ा व्यापारी और उसका बेटा इसके लिए आठ हजार देंगे।
लकड़ी। लेकिन पिछले साल मैं एक ऐसे खरीदार को पाने से चूक गया जो मुझे अच्छी कीमत देता।
बारह। यहाँ कोई भी इसे खरीदने को तैयार नहीं है। मास्लोवों के पास
सब कुछ उनके अपने तरीके से होता है। जो वे देंगे, वही लेना पड़ेगा, क्योंकि यहाँ कोई भी
उनके खिलाफ बोली लगाने की हिम्मत करो। इल्यिंस्कोए के पुजारी ने मुझे पिछले गुरुवार को पत्र लिखा था।
कि गोरस्टकिन नाम का एक व्यापारी, जिसे मैं जानता हूँ, वहाँ आया था।
जो बात उसे मूल्यवान बनाती है, वह यह है कि वह इस क्षेत्र का नहीं है, इसलिए वह डरता नहीं है।
मास्लोव लोग। वह कहता है कि वह मुझे उस झाड़ी के लिए ग्यारह हजार देगा।
सुना तुमने? लेकिन वह यहाँ कुल मिलाकर सिर्फ एक हफ्ते के लिए ही रहेगा, पादरी ने लिखा है।
इसलिए आपको तुरंत जाकर उससे सौदा करना चाहिए।"
"ठीक है, आप पादरी को पत्र लिखिए; वह समझौता करवा देंगे।"
"वह यह नहीं कर सकता। उसे व्यापार की समझ नहीं है। वह एक अनमोल रत्न है।"
मैं उसे बिना रसीद के मेरे लिए बीस हजार रुपये दे दूंगा; लेकिन
उसमें व्यापार की कोई समझ नहीं है, वह एक आदर्श बच्चा है, एक कौआ भी उसे धोखा दे सकता है।
और फिर भी वह एक विद्वान व्यक्ति हैं, क्या आप विश्वास करेंगे? यह गोरस्टकिन ऐसा दिखता है
किसान की तरह वह नीले रंग का कफ्तान पहनता है, लेकिन असल में वह एक बदमाश है। यही बात है।
यह एक आम शिकायत है। वह झूठा है। कभी-कभी वह ऐसे झूठ बोलता है कि आप
मुझे आश्चर्य है कि वह ऐसा क्यों कर रहा है। उसने मुझे पिछले साल बताया था कि उसकी पत्नी
वह मर चुका था और उसने दूसरी शादी कर ली थी, और क्या आप विश्वास करेंगे, वहाँ
क्या उसमें एक शब्द भी सच नहीं था? उसकी पत्नी की कभी मृत्यु हुई ही नहीं, वह अभी भी जीवित है।
वह उसे इस दिन हफ्ते में दो बार पीटता है। तो आपको क्या ढूंढना होगा?
सवाल यह है कि जब वह कहता है कि वह चाहता है तो वह झूठ बोल रहा है या सच।
मैं इसे खरीद लूंगा और ग्यारह हजार रुपये दूंगा।

“मैं ऐसे काम में किसी काम का नहीं रहूंगा। मेरी आंखें भी ठीक नहीं हैं।”
“रुको, थोड़ा इंतजार करो! तुम काम आओगे, क्योंकि मैं तुम्हें संकेत बता दूंगा।”
जिससे आप गोरस्टकिन के बारे में अंदाजा लगा सकते हैं। मैंने उनके साथ लंबे समय से व्यापार किया है।
समय। देखो, तुम्हें उसकी दाढ़ी पर ध्यान देना होगा; उसकी दाढ़ी भद्दी, पतली और लाल है। अगर
जब वह बोलता है तो उसकी दाढ़ी हिलती है और वह गुस्सा हो जाता है, कोई बात नहीं, वह कह रहा है।
उसका मतलब है कि वह व्यापार करना चाहता है। लेकिन अगर वह अपनी दाढ़ी सहलाता है तो...
उसका बायां हाथ और मुस्कुराहट—वह आपको धोखा देने की कोशिश कर रहा है। उसकी आंखों पर ध्यान
मत दीजिए।
उसकी आँखों से आपको कुछ पता नहीं चलेगा, वह एक गहरा रहस्य है, एक बदमाश—लेकिन
उसकी दाढ़ी देखो! मैं तुम्हें एक नोट दूंगा और तुम उसे दिखा देना। उसका नाम है...
गोरस्टकिन, हालांकि उसका असली नाम ल्यागावी है; 4 लेकिन उसे इस नाम से मत पुकारो, वह
नाराज़ मत होइए। अगर आप उससे समझौता कर लेते हैं और देखते हैं कि सब ठीक है
ठीक है, यहाँ तुरंत लिखो। तुम्हें बस इतना लिखना है: ‘वह झूठ नहीं बोल रहा है।’ अलग दिखो।
ग्यारह हजार के लिए; एक हजार की छूट दे सकते हैं, लेकिन इससे ज्यादा नहीं। बस
सोचो! आठ हजार और ग्यारह हजार में अंतर होता है।
यह लगभग तीन हजार रुपये जुटाने के बराबर है; एक हजार रुपये ढूंढना इतना आसान नहीं है।
खरीदार, और मुझे पैसों की सख्त जरूरत है। बस मुझे बता दीजिए कि यह...
अगर बात गंभीर है, तो मैं दौड़कर जाऊंगा और इसे ठीक कर दूंगा। मैं किसी भी तरह समय निकाल लूंगा।
लेकिन
अगर यह सब पुजारी का ही विचार है, तो मेरे वहां तक घोड़े दौड़ाकर जाने का क्या फायदा?
आओ, क्या तुम जाओगे?
"ओह, मेरे पास समय नहीं है। मुझे क्षमा करें।"
“आओ, तुम अपने पिता की बात मान लो। मैं इसे नहीं भूलूंगा। तुम्हारे पास कोई नहीं है।”
दिल, आपमें से किसी का भी—बस यही तो बात है! आपके लिए एक-दो दिन क्या मायने रखते हैं? कहाँ
क्या आप अभी वेनिस जा रहे हैं? आपका वेनिस अभी दो दिन और चलेगा।
मैं अलेयोशा को भेज देता, लेकिन ऐसी चीज़ में अलेयोशा का क्या उपयोग है?
मैंने तुम्हें सिर्फ इसलिए भेजा है क्योंकि तुम एक चतुर व्यक्ति हो। क्या तुम्हें लगता है कि मैं यह नहीं देख पा
रहा हूँ?
वो? आपको लकड़ी के बारे में कुछ नहीं पता, लेकिन आपकी नज़र अच्छी है। बस इतना ही।
हम यह देखना चाहते हैं कि वह आदमी वाकई गंभीर है या नहीं। मैं आपको बताता हूँ, उसकी दाढ़ी पर ध्यान
दें।
अगर उसकी दाढ़ी हिलती है तो समझ जाइए कि वह गंभीर है।
"तो क्या तुम मुझे खुद उस मनहूस चेरमाश्न्या जाने के लिए मजबूर करोगे?"
इवान ने एक दुष्ट मुस्कान के साथ कहा।
फ्योडोर पावलोविच को यह घातक बीमारी नहीं हुई, या वे इसे होने से रोकना चाहते थे।
लेकिन उसने मुस्कान देख ली।
“तो तुम जाओगे, जाओगे? मैं तुम्हारे लिए तुरंत एक नोट लिख देता हूँ।”
मुझे नहीं पता कि मैं जाऊँगा या नहीं। मुझे नहीं पता। मैं इस बारे में फैसला करूँगा।
रास्ता।"
“बकवास! तुरंत फैसला करो। मेरे प्यारे दोस्त, फैसला करो! अगर तुम फैसला कर लेते हो तो
अगर कोई बात हो तो मुझे एक पंक्ति लिख देना; इसे पादरी को दे देना और वह इसे मुझे भेज देगा।
एक बार। और मैं आपको इससे ज्यादा देर नहीं करूंगा। आप वेनिस जा सकते हैं।
पुजारी आपको घोड़े वापस वोलोव्या स्टेशन तक पहुंचा देंगे।
बूढ़ा आदमी बहुत प्रसन्न हुआ। उसने पत्र लिखा और उसे बुलवाया।
घोड़े। ब्रांडी के साथ हल्का दोपहर का भोजन लाया गया। जब फ्योडोर

पावलोविच प्रसन्न थे, वे आमतौर पर उदार स्वभाव के होते थे, लेकिन आज वे
ऐसा लग रहा था कि वह खुद को संयमित रख रहा था। उदाहरण के लिए, दिमित्री के बारे में उसने एक शब्द भी नहीं कहा।
वह बिछड़ने से बिल्कुल भी विचलित नहीं हुआ, और वास्तव में, वह असमंजस में प्रतीत हो रहा था।
कुछ कहना था। इवान ने इस बात पर विशेष ध्यान दिया। "वह ज़रूर ऊब गया होगा।"
“मैं,” उसने सोचा। अपने बेटे को सीढ़ियों पर छोड़ने जाते समय ही,
बूढ़ा आदमी परेशान होने लगा। वह उसे चूमना चाहता था, लेकिन इवान ने उसे रोक दिया।
उसने जल्दी से अपना हाथ आगे बढ़ाया, जाहिर तौर पर चुंबन से बचने के लिए। उसके पिता ने यह देख लिया।
एक बार अंदर जाते ही, वह तुरंत उठ खड़ा हुआ।
“खैर, आपको शुभकामनाएँ, आपको शुभकामनाएँ!” उसने दोहराया।
कदम। “तुम कभी न कभी फिर आओगे? ज़रूर आना। मैं आऊंगा।”
आपको देखकर हमेशा खुशी होती है। ईश्वर आप पर कृपा बनाए रखें!
इवान गाड़ी में बैठ गया।
“अलविदा, इवान! मुझ पर ज़्यादा सख्ती मत करना!” पिता ने पुकारा।
पिछली बार।
पूरा परिवार विदा लेने के लिए बाहर आया—स्मरद्याकोव, मार्फा,
और ग्रिगोरी। इवान ने उन्हें दस-दस रूबल दिए। जब वह बैठ गया...
गाड़ी में बैठे हुए ही, स्मर्ड्याकोव कालीन को ठीक करने के लिए उछल पड़े।
“देखो... मैं चेरमाश्न्या जा रहा हूँ,” उसने अचानक अपनी बात काटते हुए कहा।
इवान। फिर से, कल की तरह, शब्द अपने आप ही निकलते हुए प्रतीत हुए।
और वह भी हँसा, एक अजीब सी, घबराहट भरी हँसी। उसे वह हँसी लंबे समय तक याद रही।
बाद में।
इसलिए यह कहावत बिल्कुल सही है कि 'किसी से बात करना हमेशा फायदेमंद होता है'
"चतुर आदमी," स्मरद्याकोव ने इवान की ओर देखते हुए दृढ़ता से उत्तर दिया।
गाड़ी आगे बढ़ गई। इवान के मन में कुछ भी स्पष्ट नहीं था, लेकिन वह
उसने उत्सुकता से अपने चारों ओर खेतों, पहाड़ियों, पेड़ों और भेड़ों के झुंड को देखा।
आसमान में ऊँचाई पर उड़ते हुए हंसों को देखकर, अचानक उसे लगा कि...
बहुत खुश। उसने ड्राइवर से बात करने की कोशिश की, और उसे उसमें बहुत दिलचस्पी महसूस हुई।
किसान ने उसे जवाब दिया; लेकिन एक मिनट बाद उसे एहसास हुआ कि वह
उसे कुछ भी समझ नहीं आया, और उसने वास्तव में इस बात पर ध्यान भी नहीं दिया था।
किसान का जवाब। वह चुप रहा, और फिर भी यह सुखद था। हवा थी
ताज़ा, शुद्ध और शीतल, आसमान उज्ज्वल। अलेयोशा और कैटरीना की तस्वीरें।
इवानोवना उसके मन में आ उठी। लेकिन उसने धीरे से मुस्कुराया और धीरे से फूँक मारी।
दोस्ताना प्रेत, और वे उड़ गए। "उनके लिए अभी बहुत समय है,"
उसने सोचा। वे जल्दी से स्टेशन पहुँच गए, घोड़े बदले और
वोलोव्या की ओर घोड़े दौड़ाते हुए। "एक चतुर व्यक्ति से बात करना क्यों सार्थक है?"
उसका मतलब क्या था?” यह विचार अचानक उसके मन में घर कर गया।
सांस लेते हुए। "और मैंने उसे क्यों बताया कि मैं चेरमाश्न्या जा रहा हूँ?"
वोलोव्या स्टेशन पहुँच गए। इवान गाड़ी से उतर गया, और ड्राइवर खड़े हो गए।
उसके चारों ओर बारह वर्स्ट की दूरी तय करके चेरमाश्न्या जाने के लिए मोलभाव चल रहा था।
उसने उन्हें घोड़ों को जोतने को कहा। वह थाने में गया और देखा।
उसने चारों ओर देखा, ओवरसियर की पत्नी पर एक नजर डाली और अचानक वापस अपनी ओर मुड़ गई।
प्रवेश द्वार।
मैं चेरमाश्न्या नहीं जाऊँगा। क्या रेलवे स्टेशन पहुँचने में बहुत देर हो चुकी है?

सात भाई हो क्या?"
"हम इसे कर ही देंगे। क्या हम गाड़ी निकाल लें?"
"तुरंत। क्या आप में से कोई कल शहर जा रहा है?"
"बिल्कुल। मित्री यहाँ करेगा।"
"क्या तुम मेरी एक मदद कर सकते हो, मित्री? मेरे पिता के घर, फ्योदोर के पास जाओ।"
पावलोविच करामाज़ोव से कहो कि मैं चेरमाश्न्या नहीं गया हूँ।
आप?"
"बिल्कुल कर सकता हूँ। मैं फ्योदोर पावलोविच को लंबे समय से जानता हूँ।"
और ये लो तुम्हारे लिए, क्योंकि मुझे पूरा यकीन है कि वो तुम्हें ये नहीं देगा।
"कुछ भी," इवान ने खिलखिलाते हुए हंसते हुए कहा।
"आप इस पर भरोसा कर सकते हैं, वह ऐसा नहीं करेगा।" मित्या भी हँस पड़ा। "धन्यवाद।"
महोदय, मैं इसे अवश्य करूँगा।
सात बजे इवान ट्रेन में चढ़ा और मॉस्को के लिए रवाना हो गया।
अतीत को अलविदा। मैंने पुरानी दुनिया को हमेशा के लिए त्याग दिया है, और काश मैं भी ऐसा ही कर पाता।
इसकी कोई खबर नहीं, कोई गूंज नहीं। एक नए जीवन की ओर, नई जगहों की ओर, और कहीं देखने की
ज़रूरत नहीं।
वापस!" लेकिन खुशी के बजाय उसकी आत्मा उदासी से भर गई, और उसका
उसका हृदय ऐसी पीड़ा से तड़प रहा था, जैसी उसने अपने जीवन में पहले कभी महसूस नहीं की थी।
वह पूरी रात सोचता रहा। ट्रेन तेजी से आगे बढ़ती रही, और सुबह होते ही...
जब वह मॉस्को के पास पहुँच रहा था, तो वह अचानक अपनी नींद से जाग उठा।
ध्यान।
"मैं एक बदमाश हूँ," उसने धीरे से अपने आप से कहा।
फ्योदोर पावलोविच अपने बेटे को विदा करने से काफी संतुष्ट रहे।
इसके बाद दो घंटे तक उसे लगभग खुशी का एहसास हुआ और वह बैठकर ब्रांडी पीता रहा।
लेकिन अचानक कुछ ऐसा हुआ जो बहुत ही परेशान करने वाला था और
घर में सभी के लिए अप्रिय स्थिति थी, और फ्योदोर पूरी तरह से परेशान हो गया था।
पावलोविच की शांति तुरंत भंग हो गई। स्मर्ड्याकोव तहखाने में चला गया।
किसी चीज से टकराकर वह सीढ़ियों के ऊपर से गिर गया। सौभाग्य से, मार्फा
इग्नात्येवना आंगन में थी और उसने समय रहते उसकी आवाज सुन ली। उसने गिरने का दृश्य नहीं देखा।
लेकिन उसने उसकी चीख सुनी—वह अजीब, विचित्र चीख, जिससे वह लंबे समय से परिचित थी—
मिर्गी के दौरे में गिरते हुए व्यक्ति की चीख। वे यह नहीं बता सके कि क्या
सीढ़ियों से उतरते समय उसे दौरा पड़ गया था, जिसके कारण वह
वह बेहोश हो गया होगा, या फिर गिरने और सदमे के कारण ऐसा हुआ होगा।
स्मरद्याकोव को दौरा पड़ा था, जिसके बारे में यह ज्ञात था कि वह इस तरह के दौरे के लिए उत्तरदायी था।
उन्होंने उसे तहखाने की सीढ़ियों के नीचे पाया, वह ऐंठन से तड़प रहा था।
और उसके मुंह से झाग निकल रहा था। पहले तो यही लगा कि उसका पैर टूट गया होगा।
किसी चीज—हाथ या पैर—से चोट लग गई, लेकिन "ईश्वर ने उसे बचा लिया"
"उसे," जैसा कि मार्फा इग्नात्येवना ने कहा था - ऐसा कुछ भी नहीं हुआ था।
ऐसा हुआ। लेकिन उसे तहखाने से बाहर निकालना मुश्किल था। उन्होंने पूछा...
पड़ोसियों की मदद से किसी तरह काम चल गया। फ्योदोर पावलोविच खुद।
वह पूरे समारोह में उपस्थित था। उसने मदद की, जाहिर तौर पर वह घबराया हुआ था और
परेशान। बीमार व्यक्ति को होश नहीं आया; ऐंठन बंद हो गई।
कुछ समय के लिए, लेकिन फिर से शुरू हो गया, और सभी ने निष्कर्ष निकाला कि वही
वही बात दोहराई जाएगी, जो एक साल पहले हुई थी, जब उसने गलती से
वह अटारी से गिर गया। उन्हें याद आया कि उसके सिर पर बर्फ रखी गई थी।

तब तहखाने में अभी भी बर्फ थी, और मार्फा इग्नात्येवना के पास कुछ था।
बात आगे बढ़ी। शाम को फ्योदोर पावलोविच ने डॉक्टर को बुलवाया।
हर्ज़ेनस्टुबे तुरंत आ गए। वे एक अत्यंत सम्माननीय वृद्ध व्यक्ति थे, और
प्रांत के सबसे सावधान और कर्तव्यनिष्ठ डॉक्टर। सावधानीपूर्वक जांच के बाद
जांच के बाद, उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि दौरा बहुत हिंसक था और संभवतः
इसके गंभीर परिणाम हो सकते हैं; इस बीच, हर्ज़ेनस्टुबे ने पूरी तरह से ऐसा नहीं किया।
इसे समझें, लेकिन कल सुबह तक, यदि वर्तमान उपाय कारगर रहे तो
असफल होने पर, वह कुछ और करने का साहस करेगा। बीमार व्यक्ति को ले जाया गया।
लॉज में, ग्रिगोरी और मार्फा इग्नात्येवना के कमरे के बगल वाले कमरे में।
फिर फ्योदोर पावलोविच को एक के बाद एक कई दुर्भाग्य झेलने पड़े।
उस दिन मार्फा इग्नात्येवना ने रात का खाना और सूप बनाया था।
स्मरद्याकोव की तुलना में, यह "बर्तन धोने के पानी से बेहतर नहीं था," और
मुर्गे का मांस इतना सूख गया था कि उसे चबाना असंभव था। अपने मालिक के लिए...
हालांकि उचित, कड़वी निंदाओं के बावजूद, मार्फा इग्नात्येवना ने जवाब दिया कि
वह मुर्गी शुरू से ही बहुत बूढ़ी थी, और उसे कभी प्रशिक्षित नहीं किया गया था।
एक रसोइया के रूप में। शाम को फ्योदोर के लिए एक और मुसीबत आने वाली थी।
पावलोविच को सूचित किया गया कि ग्रिगोरी, जो कुछ समय से अस्वस्थ थे...
पिछले तीन दिनों से वह कमर दर्द के कारण पूरी तरह बिस्तर पर पड़ा था। फ्योदोर पावलोविच
उसने जितनी जल्दी हो सके अपनी चाय खत्म की और खुद को कमरे में अकेले बंद कर लिया।
घर। वह बेहद उत्तेजित और बेचैन था। उस शाम उसने
ग्रुशेंका के आने को लगभग निश्चित मान लिया गया था। उसे प्राप्त हुआ था
उस सुबह स्मरद्याकोव से एक आश्वासन मिला कि "उसने वादा किया था कि वह..."
"बिना किसी चूक के आना।" उस जिद्दी बूढ़े आदमी का दिल धड़क उठा।
उत्तेजना; वह अपने खाली कमरों में इधर-उधर टहलते हुए सुन रहा था। उसे ऐसा करना ही था।
सतर्क रहें। दिमित्री कहीं उसकी तलाश में हो सकता है, और
जब उसने खिड़की पर दस्तक दी (स्मर्ड्याकोव ने उसे दो बार सूचित किया था)
इससे कुछ दिन पहले उसने उसे बताया था कि दरवाजे पर कहाँ और कैसे दस्तक देनी है।
इसे तुरंत खोला जाना चाहिए। उसे मार्ग में दूसरी नहीं होना चाहिए, क्योंकि डर है कि—
ऐसा न हो कि वह डरकर भाग जाए। फ्योदोर
पावलोविच के पास सोचने के लिए बहुत कुछ था, लेकिन उनका दिल कभी भी किसी चीज़ में इतना डूबा हुआ नहीं था।
ऐसी कामुक उम्मीदें। इस बार वह लगभग निश्चित रूप से कह सकता था कि वह
आना होगा!

4. अर्थात् सेटर डॉग।

पुस्तक 6

रूसी भिक्षु

अध्याय 1

फादर ज़ोसिमा और उनके आगंतुक

जब अलेयोशा चिंतित और दुखी मन से अपने बड़े गुरु के कमरे में गया, तो वह लगभग अचंभित होकर वहीं खड़ा रह गया। जैसा कि उसे आशंका थी, वह शायद बेहोश होकर अंतिम सांसें ले रहा एक बीमार व्यक्ति था, लेकिन उसने उसे कुर्सी पर बैठे हुए देखा। हालाँकि वह कमजोर और थका हुआ था, फिर भी उसका चेहरा प्रसन्न और आनंदमय था। वह आगंतुकों से घिरा हुआ था और एक शांत और आनंदमय बातचीत में मग्न था। लेकिन अलेयोशा के आने से पंद्रह मिनट पहले ही वह अपने बिस्तर से उठा था; उसके आगंतुक पहले ही उसके कमरे में इकट्ठा हो गए थे, उसके जागने की प्रतीक्षा कर रहे थे, क्योंकि उन्हें फादर पैसी से पूरा भरोसा था कि "गुरु उठेंगे, और जैसा कि उन्होंने स्वयं सुबह वादा किया था, अपने प्रिय लोगों से एक बार फिर बातचीत करेंगे।" मरणासन्न बुजुर्ग फादर पैसी के इस वादे और वास्तव में उनके हर शब्द पर अटूट विश्वास था। यदि उन्होंने उन्हें बेहोश देखा होता, यदि उन्होंने उन्हें अंतिम सांस लेते देखा होता, और फिर भी उनका यह वादा होता कि वे उठकर उन्हें अलविदा कहेंगे, तो शायद वे मृत्यु पर भी विश्वास नहीं करते, बल्कि फिर भी मृत व्यक्ति के ठीक होने और अपना वादा पूरा करने की उम्मीद करते। सुबह जब वे सोने के लिए लेटे, तो फादर ज़ोस्सिमा ने उनसे दृढ़ निश्चय से कहा: “मैं आपके साथ एक और वार्तालाप के आनंद के बिना नहीं मरूँगा, मेरे प्रियतम। मैं एक बार फिर आपके प्यारे चेहरे को देखूँगा और एक बार फिर अपने दिल की बात आपसे कहूँगा।” फादर ज़ोस्सिमा के साथ इस संभवतः अंतिम वार्तालाप के लिए एकत्रित हुए भिक्षु कई वर्षों से उनके समर्पित मित्र थे। वे चार थे: फादर इओसिफ और फादर पैसी, फादर मिहाइल, जो आश्रम के संरक्षक थे, एक ऐसे व्यक्ति जो बहुत बूढ़े नहीं थे और विद्वता से बहुत दूर थे। वह साधारण परिवार से थे, दृढ़ इच्छाशक्ति और अटूट आस्था वाले, सादगीपूर्ण रूप वाले, लेकिन गहरे स्नेही थे, हालांकि वे इसे इस तरह छिपाते थे मानो उन्हें इस पर शर्म आती हो। चौथे, फादर अनफिम, एक बहुत बूढ़े और विनम्र छोटे भिक्षु थे, जो बेहद गरीब किसान वर्ग से थे। वे लगभग अनपढ़ थे, और बहुत शांत स्वभाव के थे, शायद ही किसी से बात करते थे। वे अत्यंत विनम्र थे, और ऐसा लगता था मानो किसी बड़ी और भयानक चीज से भयभीत हो गए हों, जो उनकी बुद्धि से परे हो। फादर ज़ोस्सिमा को इस डरपोक व्यक्ति से बहुत स्नेह था, और वे हमेशा उनका विशेष सम्मान करते थे, हालांकि शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति था जिससे उन्होंने इतना कम बात की हो, इस तथ्य के बावजूद कि उन्होंने उनके साथ पवित्र रूस में वर्षों तक यात्रा की थी। यह बहुत पहले की बात है, चालीस साल पहले, जब फादर ज़ोस्सिमा ने कोस्त्रोमा के एक छोटे से मठ में भिक्षु के रूप में अपना जीवन शुरू किया था, और जब कुछ समय बाद, वे फादर अनफिम के साथ उनके गरीब मठ के लिए भिक्षा एकत्र करने के लिए तीर्थयात्रा पर गए थे।
पूरी पार्टी बेडरूम में थी, जैसा कि हमने पहले बताया था,
कमरा बहुत छोटा था, इसलिए उन चारों (पोर्फिरी, नौसिखिए, जो खड़ा था, के अलावा) के लिए फादर ज़ोस्सिमा के चारों ओर बैठने के लिए बैठक कक्ष से लाई गई कुर्सियों पर मुश्किल से ही जगह थी। अंधेरा होने लगा था, कमरा मूर्तियों के सामने रखे दीयों और मोमबत्तियों से रोशन था।
अलेयोशा को दरवाजे पर शर्मिंदा खड़ा देखकर, फादर ज़ोसिमा
उसने खुशी से मुस्कुराते हुए उसकी ओर हाथ बढ़ाया।
“स्वागत है, मेरी शांत आत्मा, स्वागत है, मेरी प्रिय, तुम भी यहाँ हो। मुझे पता था।”
आपको आना चाहिए।"
अलियोशा उसके पास गया, उसके सामने ज़मीन पर झुक गया और
वह रोने लगा। उसके दिल से कुछ उमड़ आया, उसकी आत्मा कांप उठी, वह फूट-फूट कर रोना चाहता था।
“आओ, अभी मेरे लिए मत रोओ,” फादर ज़ोसिमा मुस्कुराते हुए बोले और अपना सिर नीचे रख दिया।
दाहिना हाथ सिर पर रखकर, उसने कहा, “देखो, मैं बैठा-बैठा बातें कर रहा हूँ; शायद मैं अभी बीस साल और जी लूँ, जैसा कि विशेगोरी की उस प्यारी और नेक महिला ने, अपनी नन्ही लिज़ाबेटा को गोद में लिए, कल मेरे

लिए कामना की थी। ईश्वर माँ और नन्ही लिज़ाबेटा को आशीर्वाद दे।" उसने क्रॉस का चिन्ह बनाया। "पोर्फिरी, क्या तुमने उसका चढ़ावा वहाँ पहुँचाया जहाँ मैंने तुम्हें बताया था?"
उसका मतलब उन साठ कोपेकों से था जो उसे एक दिन पहले अच्छे आदमी ने लाकर दिए थे।
एक महिला ने विनम्रतापूर्वक कहा कि यह धन "मुझसे भी गरीब किसी व्यक्ति को" दे दिया जाए। इस प्रकार के दान, जो हमेशा व्यक्तिगत परिश्रम से अर्जित धन होते हैं, स्वेच्छा से किए गए प्रायश्चित के रूप में दिए जाते हैं। बुजुर्ग ने पिछली शाम पोर्फिरी को एक विधवा के पास भेजा था, जिसका घर हाल ही में जल गया था और जो आग लगने के बाद अपने बच्चों के साथ भीख मांगने गई थी। पोर्फिरी ने तुरंत उत्तर दिया कि उसने निर्देशानुसार धन "एक अज्ञात दानदाता" से प्राप्त धन दे दिया था।
"उठो, मेरे प्यारे बेटे," बड़े ने अलेयोशा से कहा। "मुझे देखने दो
"तुम। क्या तुम घर गए थे और अपने भाई से मिले थे?" अलेयोशा को यह बात अजीब लगी कि उसने इतने आत्मविश्वास और सटीकता से, केवल अपने एक भाई के बारे में पूछा—लेकिन किस भाई के बारे में? शायद उसने उसे कल और आज दोनों दिन उसी भाई के लिए भेजा था।
"मैंने अपने एक भाई को देखा है," अलेयोशा ने उत्तर दिया।
मेरा मतलब उस बड़े वाले से है, जिसके सामने मैंने सिर झुकाया था।
"मैंने उसे कल ही देखा था और आज वह मुझे नहीं मिला," अलेयोशा ने कहा। "जल्दी से उसे ढूंढो, कल फिर जाओ और जल्दी करो, फिर निकल जाओ।"
सब कुछ करो और जल्दी करो। शायद अभी भी तुम्हारे पास किसी भयानक घटना को रोकने का समय हो।
मैंने कल उसके लिए आने वाली भीषण पीड़ा के सामने सिर झुकाया।
वह अचानक चुप हो गया और सोचने लगा। शब्द थे...
अजीब। फादर इओसिफ, जिन्होंने कल यह दृश्य देखा था, ने फादर पैसी के साथ नजरें मिलाईं। अलेयोशा खुद को पूछने से रोक नहीं पाया:
"पिता और गुरु," उन्होंने अत्यंत भावुक होकर कहना शुरू किया, "आपके शब्द मेरे लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।"
बहुत अस्पष्ट... उसके लिए आगे क्या कष्ट इंतजार कर रहा है?
"पूछो मत। मुझे कल कुछ भयानक दिखाई दिया...
मानो उसका पूरा भविष्य उसकी आँखों में झलक रहा था। उसकी आँखों में एक ऐसी दृष्टि आई—जिससे मैं उस आदमी के भविष्य की तैयारी देखकर तुरंत भयभीत हो गया। मैंने अपने जीवन में एक-दो बार ही किसी के चेहरे पर ऐसी दृष्टि देखी है... मानो वह उसके भविष्य के भाग्य को दर्शा रही हो, और दुर्भाग्य से, वह भाग्य सच हो गया। मैंने तुम्हें उसके पास भेजा था, एलेक्सी, क्योंकि मुझे लगा कि तुम्हारा भाईचारा वाला चेहरा उसकी मदद करेगा। लेकिन सब कुछ और हमारा सारा भाग्य प्रभु की ओर से है। 'गेहूं का दाना जब तक जमीन में गिरकर मर नहीं जाता, वह अकेला रहता है; परन्तु यदि वह मर जाता है, तो बहुत फल देता है।' इसे याद रखना। एलेक्सी, मैंने तुम्हारे चेहरे के लिए कई बार चुपचाप प्रार्थना की है, यह जान लो," बड़े ने कोमल मुस्कान के साथ कहा। "मैं तुम्हारे बारे में यही सोचता हूँ, तुम इन दीवारों से बाहर जाओगे, लेकिन संसार में एक साधु की तरह रहोगे। तुम्हारे कई शत्रु होंगे, परन्तु तुम्हारे शत्रु भी तुमसे प्रेम करेंगे।" जीवन में आपको कई विपत्तियाँ आएंगी, लेकिन आप उनमें ही अपनी खुशी पाएंगे, और जीवन को आशीर्वाद देंगे और दूसरों को भी आशीर्वाद देने के लिए प्रेरित करेंगे—यही सबसे महत्वपूर्ण है। यही आपका चरित्र है। "पिताओं और गुरुओं," उन्होंने अपने मित्रों से कोमल मुस्कान के साथ कहा, "मैंने आज तक उन्हें भी नहीं बताया कि इस युवक का चेहरा मुझे इतना प्रिय क्यों है। अब मैं आपको बताता हूँ। उनका चेहरा मेरे लिए मानो एक स्मृति और एक भविष्यवाणी रहा है। मेरे जीवन के आरंभ में, जब मैं बच्चा था, मेरा एक बड़ा भाई था जिसकी सत्रह वर्ष की आयु में मेरी आँखों के सामने मृत्यु हो गई। और बाद में, अपने जीवन के दौरान, मुझे धीरे-धीरे यह विश्वास हो गया कि वह भाई मेरे लिए एक मार्गदर्शक और ऊपर से एक संकेत था। क्योंकि यदि वह मेरे जीवन में न आया होता, तो शायद मैं कभी भी, कम से कम मुझे ऐसा लगता है, भिक्षु न बनता और इस पवित्र मार्ग पर न चलता। वह पहली बार मेरे बचपन में मेरे सामने प्रकट हुए थे, और यहाँ, मेरी तीर्थयात्रा के अंत में, ऐसा लगता है कि वह मेरे सामने फिर से प्रकट हुए हैं।" हे पिताओं और गुरुजनों, यह कितना अद्भुत है कि एलेक्सी, जिसका चेहरा कुछ हद तक, हालांकि पूर्णतः नहीं, उससे मिलता-जुलता है, मुझे आध्यात्मिक रूप से

उसके जैसा ही प्रतीत होता है। कई बार मैंने उसे वही युवक, मेरा भाई, समझा है, जो मेरी तीर्थयात्रा के अंत में रहस्यमय ढंग से मेरे पास लौट आया है, एक स्मृति और प्रेरणा के रूप में। इसलिए मैं अपने इस विचित्र सपने पर सचमुच आश्चर्यचकित हो गया। “क्या तुम यह सुन रहे हो, पोर्फिरी?” वह अपने सेवक नौसिखिए की ओर मुड़ा। “कई बार मैंने तुम्हारे चेहरे पर ऐसा भाव देखा है मानो तुम इस बात से दुखी हो कि मैं एलेक्सी को तुमसे अधिक प्यार करता हूँ। अब तुम जानते हो कि ऐसा क्यों था, लेकिन मैं तुमसे भी प्यार करता हूँ, यह जान लो, और कई बार मैं तुम्हारी इस पीड़ा को देखकर दुखी हुआ हूँ। प्रिय मित्रों, मैं तुम्हें उस युवक, मेरे भाई के बारे में बताना चाहता हूँ, क्योंकि मेरे जीवन में उससे अधिक अनमोल, अधिक महत्वपूर्ण और मार्मिक उपस्थिति किसी की नहीं रही। मेरा हृदय कोमलता से भरा है, और इस समय मैं अपने पूरे जीवन को ऐसे देख रहा हूँ मानो उसे फिर से जी रहा हूँ।”

यहां मुझे यह उल्लेख करना होगा कि फादर ज़ोसिमा की यह अंतिम बातचीत
उनके जीवन के अंतिम दिन उनसे मिलने आए मित्रों की बातचीत का कुछ अंश लिखित रूप में सुरक्षित है। एलेक्सी फ्योदोरोविच करामाज़ोव ने अपने गुरु की मृत्यु के कुछ समय बाद इसे स्मृति से लिख लिया था। लेकिन क्या यह केवल उस समय हुई बातचीत थी, या उन्होंने इसमें अपने गुरु के साथ हुई पिछली बातचीत के अंश भी जोड़े थे, यह मैं निश्चित नहीं कर सकता। उनके विवरण में, फादर ज़ोस्सिमा की बातचीत बिना किसी रुकावट के चलती रही, मानो वे अपने मित्रों को अपनी जीवन कहानी सुना रहे हों, हालांकि अन्य विवरणों से यह स्पष्ट है कि उस शाम की बातचीत सामान्य थी। हालांकि मेहमानों ने फादर ज़ोस्सिमा को ज्यादा नहीं टोका, फिर भी उन्होंने भी बातचीत की, शायद खुद भी कुछ बताया। इसके अलावा, फादर ज़ोस्सिमा बिना रुके कहानी सुनाते नहीं रह सकते थे, क्योंकि वे कभी-कभी हांफ रहे थे, उनकी आवाज लड़खड़ा रही थी, और वे आराम करने के लिए अपने बिस्तर पर लेट भी गए थे, हालांकि वे सोए नहीं और उनके आगंतुक अपनी जगह से नहीं उठे। एक-दो बार फादर पैसी द्वारा बाइबल पढ़ने से बातचीत में रुकावट आई। यह भी उल्लेखनीय है कि उनमें से किसी ने भी यह अनुमान नहीं लगाया था कि उस रात उनकी मृत्यु हो जाएगी, क्योंकि दिन में गहरी नींद के बाद उस शाम उन्हें अचानक नई शक्ति मिल गई थी, जिसने उन्हें इस लंबी बातचीत के दौरान जगाए रखा। यह प्रेम का अंतिम प्रयास था जिसने उन्हें अद्भुत ऊर्जा प्रदान की; हालांकि, यह ऊर्जा केवल थोड़े समय के लिए ही थी, क्योंकि उनका जीवन तुरंत ही समाप्त हो गया... लेकिन इस बारे में बाद में बात करेंगे। अभी मैं केवल इतना ही कहूंगा कि मैंने एलेक्सी फ्योदोरोविच करामाज़ोव द्वारा दिए गए विवरण तक ही सीमित रहना बेहतर समझा है। यह संक्षिप्त और कम थकाऊ होगा, हालांकि, जैसा कि मुझे दोहराना होगा, अलेयोशा ने पिछली बातचीत से बहुत कुछ लिया और उसे इसमें जोड़ा।

दिवंगत पुजारी और भिक्षु के जीवन पर टिप्पणी,
एल्डर ज़ोस्सिमा के ये कथन एलेक्सी फ्योदोरोविच करामाज़ोव द्वारा उनके स्वयं के शब्दों से लिए गए हैं।

जीवनी

(क) पिता ज़ोसिमा का भाई

प्रिय पितागण और शिक्षकगण, मेरा जन्म उत्तर के एक दूरस्थ प्रांत के वी नामक कस्बे में हुआ था। मेरे पिता जन्म से तो एक संभ्रांत व्यक्ति थे, लेकिन उनका कोई विशेष रुतबा या प्रतिष्ठा नहीं थी। जब मैं मात्र दो वर्ष का था, तब उनका देहांत हो गया और मुझे उनकी कोई याद नहीं है। वे मेरी माता के लिए लकड़ी का बना एक छोटा सा घर और कुछ संपत्ति छोड़ गए, जो बहुत बड़ी तो नहीं थी, लेकिन उन्हें और उनके बच्चों को सुख-सुविधाओं से पालने के लिए पर्याप्त थी। हम दो भाई-बहन थे, मेरा बड़ा भाई मार्केल और मैं। वह मुझसे आठ वर्ष बड़े थे, उनका स्वभाव उतावला और चिड़चिड़ा था, लेकिन वे दयालु हृदय के थे और कभी व्यंग्य नहीं करते थे। वे विशेष रूप से शांत रहते थे, खासकर घर पर मेरे, अपनी माता और नौकरों के साथ। वे विद्यालय में अच्छे थे, लेकिन अपने सहपाठियों से उनकी बनती नहीं थी, हालांकि उन्होंने कभी झगड़ा नहीं किया, कम से कम मेरी माता ने मुझे यही बताया है। उनकी मृत्यु से छह महीने पहले, जब वे सत्रह वर्ष के थे, उनकी दोस्ती एक राजनीतिक निर्वासित से हुई, जिसे स्वतंत्र विचार रखने के कारण मॉस्को से हमारे कस्बे में निर्वासित कर दिया गया था, और वे वहाँ एकांत जीवन व्यतीत कर रहे थे। वे एक अच्छे विद्वान थे जिन्होंने विश्वविद्यालय में दर्शनशास्त्र में विशिष्टता प्राप्त की थी। किसी बात ने उसे मार्केल के प्रति आकर्षित कर दिया और वह उसे मिलने के लिए अक्सर बुलाता रहता था। उस सर्दी के मौसम में वह युवक उसके साथ पूरी शामें

बिताता था, जब तक कि निर्वासित मार्केल को अपने शक्तिशाली मित्रों के कारण अपने अनुरोध पर पीटर्सबर्ग में अपना पद पुनः ग्रहण करने के लिए नहीं बुलाया गया।
यह लेंट की शुरुआत थी, और मार्केल उपवास नहीं करेगा, वह असभ्य था।
और इस पर हँस पड़ा। “यह सब बकवास है, और कोई भगवान नहीं है,” उसने कहा, जिससे मेरी माँ, नौकर और मैं भी भयभीत हो गए। हालाँकि मैं केवल नौ साल का था, मैं भी ऐसे शब्द सुनकर स्तब्ध रह गया था।
हमारे पास चार नौकर थे, सभी दास थे। मुझे याद है कि मेरी माँ ने उन चार में से एक, रसोइया अफीम्या को, जो लंगड़ी और बूढ़ी थी, साठ रूबल में बेच दिया और उसकी जगह एक मुफ्त नौकरानी को रख लिया।
लेंट के छठे सप्ताह में, मेरा भाई, जो कभी भी मजबूत नहीं था और जिसके पास एक
तपेदिक की प्रवृत्ति से ग्रस्त, वह बीमार पड़ गया। वह लंबा था लेकिन दुबला-पतला और नाजुक दिखता था, और उसका चेहरा बहुत ही आकर्षक था। मुझे लगता है कि उसे सर्दी लग गई थी, खैर, जो डॉक्टर आया उसने जल्द ही मेरी माँ से फुसफुसाकर कहा कि यह तेजी से फैलने वाला तपेदिक है, और वह वसंत तक जीवित नहीं रहेगा। मेरी माँ रोने लगी, और मेरे भाई को डराए बिना, उसने उससे विनती की कि वह चर्च जाए, पाप स्वीकार करे और संस्कार ग्रहण करे, क्योंकि वह अभी भी चलने-फिरने में सक्षम था। इससे वह क्रोधित हो गया, और उसने चर्च के बारे में कुछ अपशब्द कहे। हालाँकि, वह सोचने लगा; उसने तुरंत समझ लिया कि वह गंभीर रूप से बीमार है, और इसीलिए उसकी माँ उससे पाप स्वीकार करने और संस्कार ग्रहण करने की विनती कर रही थी। वास्तव में, वह बहुत पहले से ही जानता था कि वह ठीक नहीं है, और एक साल पहले उसने रात के खाने पर हमारी माँ और मुझसे शांत भाव से कहा था, "मैं तुम्हारे बीच ज्यादा दिन नहीं रहूँगा, शायद मैं एक और साल भी न जी पाऊँ," जो अब एक भविष्यवाणी की तरह लग रहा था।
तीन दिन बीत गए और पवित्र सप्ताह आ गया। और मंगलवार की सुबह
मेरे भाई ने चर्च जाना शुरू कर दिया। उसने कहा, “माँ, मैं यह सब सिर्फ़ आपके लिए कर रहा हूँ, आपको प्रसन्न करने और आपको सांत्वना देने के लिए।” मेरी माँ खुशी और दुख दोनों से रो पड़ीं। उन्होंने सोचा, “अगर उसमें इतना बदलाव आ गया है, तो उसका अंत निकट ही होगा।” लेकिन वह ज़्यादा दिन चर्च नहीं जा सका, वह बिस्तर पर पड़ गया, इसलिए उसे घर पर ही पाप स्वीकार करना पड़ा और धार्मिक अनुष्ठान करना पड़ा।
यह ईस्टर का देर से मनाया जाने वाला दिन था, और दिन उज्ज्वल, सुहावने और सुगंध से भरे हुए थे।
मुझे याद है कि वह रात भर खांसते रहते थे और ठीक से सो नहीं पाते थे, लेकिन सुबह उठकर कपड़े पहनते और आरामकुर्सी पर बैठने की कोशिश करते थे। मुझे याद है कि वह ऐसे ही बैठे रहते थे, प्यारे और सौम्य, मुस्कुराते हुए, उनका चेहरा बीमारी के बावजूद चमकता और प्रसन्न रहता था। उनमें एक अद्भुत बदलाव आया, मानो उनकी आत्मा बदल गई हो। बूढ़ी नर्स आती और कहती, "मेरे प्यारे, मुझे पवित्र प्रतिमा के सामने दीपक जलाने दीजिए।" और एक बार तो उन्होंने ऐसा करने से मना कर दिया और दीपक बुझा दिया।
"इसे जलाओ, इसे जलाओ, प्रिय, मैंने तुम्हें ऐसा करने से रोककर बहुत बड़ी गलती की।"
जब तुम दीपक जलाते हो तो तुम प्रार्थना कर रहे होते हो, और जब मैं तुम्हें देखकर प्रसन्न होता हूँ तो मैं प्रार्थना कर रहा होता हूँ। अतः हम दोनों एक ही ईश्वर से प्रार्थना कर रहे हैं।
वे शब्द हमें अजीब लगे, और माँ अपने कमरे में चली जाती थी।
और वह रोती थी, लेकिन जब वह उसके पास जाती तो अपनी आँखें पोंछ लेती और खुशमिजाज दिखती। “माँ, रो मत, प्यारी,” वह कहता, “मुझे अभी लंबा जीवन जीना है, तुम्हारे साथ खुशियाँ मनाने के लिए बहुत समय है, और जीवन आनंदमय और हर्षोल्लास से भरा है।”
“अरे, प्यारे बच्चे, जब तुम रात को बुखार से तड़पते हुए लेटे रहते हो तो खुशी की बात कैसे कर सकते हो?”
"इस तरह खांसना जैसे खुद को टुकड़े-टुकड़े कर देना।"
“माँ, रोओ मत,” वह जवाब देता, “जीवन स्वर्ग है, और हम सब वहीं हैं।”
हम स्वर्ग में हैं, लेकिन हम उसे देख नहीं पाएंगे; अगर हम देख पाते, तो अगले ही दिन धरती पर स्वर्ग होता।
हर कोई उसकी बातों पर अचंभित था, वह इतनी विचित्र और सकारात्मकता से बोलता था; हम सब भावुक हो गए और रो पड़े। दोस्त हमसे मिलने आए। वह उनसे कहता, “प्यारे लोगों, मैंने ऐसा क्या किया है कि तुम मुझसे इतना प्यार करते हो, मुझ जैसे किसी से कोई कैसे प्यार कर सकता है, और यह बात मुझे पहले क्यों नहीं पता थी, मैंने इसकी कदर क्यों नहीं की?”

जब नौकर उसके पास आते तो वह लगातार कहता, “प्रिय, दयालु
लोगों, आप मेरे लिए इतना सब क्यों कर रहे हैं? क्या मैं सेवा पाने के योग्य हूँ? यदि ईश्वर की इच्छा होती कि मैं जीवित रहूँ, तो मैं आपकी सेवा करता, क्योंकि सभी मनुष्यों को एक दूसरे की सेवा करनी चाहिए।
माँ ने सुनते हुए सिर हिलाया। “मेरी प्यारी, ये तुम्हारी ही बीमारी है।”
इसी वजह से तुम इस तरह बात करते हो।
“माँ, प्यारी,” वह कहता था, “नौकर और मालिक तो होने ही चाहिए।”
लेकिन अगर ऐसा है तो मैं अपने सेवकों का सेवक बनूंगा, जैसे वे मेरे सेवक हैं। और एक बात और, माँ, हममें से हर एक ने सभी मनुष्यों के विरुद्ध पाप किया है, और मैंने तो सबसे अधिक पाप किया है।
माँ ने आँसुओं के बीच मुस्कुराते हुए कहा, "अरे, कैसे?"
क्या तुमने सभी मनुष्यों से अधिक पाप किया है? लुटेरों और हत्यारों ने तो ऐसा किया है, लेकिन तुमने ऐसा कौन सा पाप किया है कि तुम स्वयं को सबसे अधिक दोषी मानते हो?
“माँ, मेरी प्यारी सी जान,” उसने कहा (उसने इस तरह के अजीबोगरीब शब्द इस्तेमाल करना शुरू कर दिया था)।
(उस समय के स्नेह भरे शब्दों में), “मेरे प्यारे दिल, मेरी खुशी, यकीन मानो, हर कोई वास्तव में सभी मनुष्यों के लिए और हर चीज के लिए जिम्मेदार है। मुझे नहीं पता कि मैं तुम्हें यह कैसे समझाऊं, लेकिन मैं इसे महसूस करता हूं, यहां तक कि पीड़ादायक रूप से भी। और फिर हम कैसे जीते रहे, क्रोधित होते रहे और कुछ नहीं जानते रहे?”
इसलिए वह हर दिन और भी अधिक मधुर, आनंदमय और परिपूर्ण होकर उठता था।
प्रेम का। जब डॉक्टर, एक बूढ़ा जर्मन जिसका नाम आइज़ेनश्मिट था, आया:
“अच्छा, डॉक्टर साहब, क्या इस दुनिया में मेरा एक और दिन बाकी है?” वह मज़ाक में पूछता। “आप अभी कई दिन जिएंगे,” डॉक्टर जवाब देते, “और कई महीने भी।”
कई साल भी।"
“महीने और साल!” वह हैरानी से कहता। “दिनों की गिनती क्यों करें? एक
एक दिन में ही मनुष्य को सारी खुशियाँ मिल जाती हैं। मेरे प्रियजनों, हम क्यों झगड़ते हैं, एक-दूसरे से आगे निकलने की कोशिश करते हैं और मन में द्वेष रखते हैं? चलो सीधे बगीचे में चलते हैं, वहाँ टहलते-खेलते हैं, एक-दूसरे से प्यार करते हैं, एक-दूसरे की सराहना करते हैं, एक-दूसरे को चूमते हैं और जीवन को आनंदमय बनाते हैं।
“आपका बेटा ज्यादा दिन तक जीवित नहीं रह पाएगा,” डॉक्टर ने मेरी माँ से कहा, जब वह
मैं उसे दरवाजे तक ले गया। "यह बीमारी उसके दिमाग को प्रभावित कर रही है।"
उनके कमरे की खिड़कियाँ बगीचे की ओर खुलती थीं, और हमारा बगीचा भी।
वह एक छायादार जगह थी, जिसमें पुराने पेड़ थे जिन पर कलियाँ खिल रही थीं। बसंत के पहले पक्षी डालियों पर चहचहा रहे थे, खिड़कियों पर चहक रहे थे और गा रहे थे। उन्हें देखकर और उनकी प्रशंसा करते हुए, वह अचानक उनसे क्षमा मांगने लगा: “स्वर्ग के पक्षियों, प्रसन्न पक्षियों, मुझे क्षमा कर दो, क्योंकि मैंने भी तुम्हारे विरुद्ध पाप किया है।” उस समय हममें से कोई भी इसे समझ नहीं पाया, लेकिन वह खुशी के आँसू बहा रहा था। “हाँ,” उसने कहा, “मेरे चारों ओर ईश्वर की ऐसी महिमा थी: पक्षी, पेड़, मैदान, आकाश; केवल मैं लज्जा में जी रहा था और इन सबका अपमान कर रहा था और सुंदरता और महिमा को नहीं देख पा रहा था।”
“तुम अपने ऊपर बहुत सारे पाप ले लेती हो,” माँ रोते हुए कहा करती थीं। “माँ, प्यारी, मैं खुशी से रो रही हूँ, दुख से नहीं। हालाँकि मैं रो नहीं सकती।”
मैं आपको समझाता हूँ, मैं उनके सामने स्वयं को विनम्र करना पसंद करता हूँ, क्योंकि मुझे नहीं पता कि मैं उनसे कितना प्रेम करूँ। यदि मैंने सबके विरुद्ध पाप किया है, फिर भी सब मुझे क्षमा कर देते हैं, तो यही स्वर्ग है। क्या मैं अभी स्वर्ग में नहीं हूँ?
और भी बहुत कुछ था जो मुझे याद नहीं है। मुझे याद है कि मैं गया था।
एक बार मैं उसके कमरे में गया, जब वहाँ कोई और नहीं था। शाम सुहाना था, सूरज डूब रहा था और पूरा कमरा रोशन था। उसने मुझे इशारा किया और मैं उसके पास गया। उसने मेरे कंधों पर हाथ रखा और कोमलता से, प्यार से मेरे चेहरे को देखा; एक मिनट तक वह कुछ नहीं बोला, बस मुझे देखता रहा।

“अच्छा,” उन्होंने कहा, “अब जाओ और खेलो, मेरे लिए भी जीवन का आनंद लो।” मैं तब बाहर गया और खेलने के लिए दौड़ पड़ा। और उसके बाद अपने जीवन में कई बार मैंने ऐसा किया।
मुझे आज भी आँसुओं के साथ याद है कि उन्होंने मुझसे कहा था कि मैं उनके लिए भी जीवन का आनंद लूँ। उनके और भी कई अद्भुत और सुंदर कथन थे, हालाँकि उस समय हम उन्हें समझ नहीं पाए थे। ईस्टर के तीसरे सप्ताह के बाद उनका निधन हो गया। वे पूरी तरह से होश में थे, हालाँकि वे बोल नहीं पा रहे थे; अपने अंतिम क्षण तक उनमें कोई बदलाव नहीं आया। वे खुश दिख रहे थे, उनकी आँखें चमक रही थीं और हमें ढूँढ़ रही थीं, वे हम पर मुस्कुरा रहे थे, हमें बुला रहे थे। उनकी मृत्यु के बारे में पूरे शहर में चर्चा हो रही थी। उस समय मैं इन सब बातों से प्रभावित तो हुई थी, लेकिन बहुत ज़्यादा नहीं, हालाँकि उनके अंतिम संस्कार में मैं बहुत रोई थी। तब मैं छोटी थी, एक बच्ची थी, लेकिन एक अमिट छाप, एक छिपा हुआ एहसास, मेरे दिल में रह गया, जो समय आने पर उभरने और प्रतिक्रिया देने के लिए तैयार था। और ऐसा ही हुआ।

(ख) फादर ज़ोस्सिमा के जीवन में पवित्र शास्त्रों का महत्व

मैं अपनी माँ के साथ अकेला रह गया था। उनकी सहेलियाँ उन्हें सलाह देने लगीं कि वे मुझे भी दूसरे माता-पिता की तरह पीटर्सबर्ग भेज दें। उन्होंने कहा, “अब आपका इकलौता बेटा है, आपकी आमदनी ठीक-ठाक है, और अगर आप उसे यहाँ रखेंगी तो शायद आप उसके उज्ज्वल भविष्य को बर्बाद कर देंगी।” उन्होंने सुझाव दिया कि मुझे पीटर्सबर्ग में कैडेट कोर में भेज दिया जाए, ताकि बाद में मैं इंपीरियल गार्ड में भर्ती हो सकूँ। मेरी माँ ने बहुत देर तक दुविधा में रहीं, अपने इकलौते बच्चे से बिछड़ना उनके लिए बहुत कष्टदायक था, लेकिन अंत में उन्होंने यह फैसला कर लिया, हालाँकि इस प्रक्रिया में उन्हें बहुत आँसू बहाने पड़े, क्योंकि उन्हें विश्वास था कि वे मेरी खुशी के लिए यह कदम उठा रही हैं। वे मुझे पीटर्सबर्ग ले गईं और कैडेट कोर में भर्ती करा दिया, और उसके बाद मैंने उन्हें फिर कभी नहीं देखा। क्योंकि तीन साल बाद उनका भी देहांत हो गया। उन्होंने वे तीन साल हम दोनों के लिए शोक और मातम मनाने में बिताए।
मैं अपने बचपन के घर से केवल अनमोल वस्तुएँ ही लेकर आया हूँ।
यादें, क्योंकि बचपन की यादों से बढ़कर कोई और अनमोल याद नहीं होती, खासकर जब परिवार में प्यार और सद्भाव हो। वास्तव में, एक बुरे घर की भी अनमोल यादें रह सकती हैं, बशर्ते दिल अनमोल चीजों को पहचानना जानता हो। घर की यादों के साथ-साथ, मैं बाइबल की यादों को भी गिनता हूँ, जिसे बचपन में मैं घर पर बड़े चाव से पढ़ता था। मेरे पास बाइबल इतिहास की एक किताब थी, जिसमें बेहतरीन चित्र थे, जिसका नाम था 'पुराने और नए नियम की एक सौ चार कहानियां', और मैंने उसी से पढ़ना सीखा। वह किताब आज भी मेरी अलमारी में रखी है, मैं उसे अतीत की एक अनमोल निशानी की तरह सहेज कर रखता हूँ। लेकिन पढ़ने से पहले भी, मुझे याद है कि आठ साल की उम्र में पहली बार मेरे मन में धार्मिक भावना जागी थी। मेरी माँ मुझे ईस्टर से पहले वाले सोमवार को अकेले चर्च ले गई थीं (मुझे याद नहीं कि उस समय मेरा भाई कहाँ था)। वह एक सुहावना दिन था, और मुझे आज भी याद है, मानो मैं उसे अभी देख रहा हूँ, कि कैसे धूपदानी से धुआँ उठकर धीरे-धीरे ऊपर की ओर तैर रहा था और गुंबद में ऊपर की ओर छोटी खिड़की से आती धूप की लहरों के साथ मिल रहा था। मैं उस दृश्य से बहुत प्रभावित हुआ, और अपने जीवन में पहली बार मैंने सचेत रूप से परमेश्वर के वचन का बीज अपने हृदय में ग्रहण किया। एक युवक एक बड़ी किताब लिए हुए गिरजाघर के बीच में आया, इतनी बड़ी कि उस समय मुझे लगा कि वह उसे मुश्किल से उठा पा रहा होगा। उसने उसे पढ़ने की मेज पर रखा, खोला और पढ़ना शुरू किया, और अचानक पहली बार मैंने परमेश्वर के गिरजाघर में पढ़ी गई किसी बात को समझा। उज़ देश में एक धर्मी और ईश्वर से डरने वाला व्यक्ति रहता था, जिसके पास बहुत धन-दौलत थी, बहुत सारे ऊँट, बहुत सारी भेड़ें और गधे थे, और उसके बच्चे दावत में शामिल हुए, और वह उनसे बहुत प्यार करता था और उनके लिए प्रार्थना करता था। “हो सकता है कि मेरे बेटों ने दावत में पाप कर दिया हो।” अब शैतान परमेश्वर के पुत्रों के साथ यहोवा के सामने आया और यहोवा से कहा कि वह पृथ्वी पर ऊपर-नीचे और पृथ्वी के नीचे घूम चुका है। परमेश्वर ने उससे पूछा, “क्या तूने मेरे सेवक अय्यूब पर ध्यान दिया है?” परमेश्वर ने अपने महान और पवित्र सेवक की ओर इशारा करते हुए शैतान पर गर्व किया। शैतान परमेश्वर के शब्दों पर हँसा और बोला, “उसे मेरे हवाले कर दे, और तू देखेगा कि तेरा सेवक तेरे विरुद्ध बड़बड़ाएगा और तेरे नाम को शाप देगा।” और परमेश्वर ने अपने प्रिय धर्मी पुरुष को शैतान के हवाले कर दिया। शैतान ने उसके बच्चों और उसके पशुओं को मार डाला और उसकी सारी संपत्ति बिखेर दी, जैसे आकाश से बिजली गिरती है। अय्यूब ने अपना वस्त्र फाड़ डाला और ज़मीन पर गिर पड़ा और ज़ोर से

चिल्लाया, “मैं अपनी माता के गर्भ से नंगा निकला था, और नंगा ही पृथ्वी में लौटूँगा; यहोवा ने दिया और यहोवा ने ले लिया। यहोवा का नाम सदा-सर्वदा धन्य हो।”
पिता और शिक्षकगण, मेरे आँसुओं को क्षमा करें, क्योंकि मेरा सारा बचपन उमड़ पड़ा है।
वह दृश्य फिर से मेरे सामने आ गया, और मैं अब भी वैसे ही सांस ले रही हूँ जैसे तब ले रही थी, जैसे आठ साल के बच्चे की गोद में सांस लेती थी, और मुझे वैसा ही एहसास हो रहा है जैसा तब हुआ था, विस्मय, आश्चर्य और आनंद। उस समय ऊँटों ने मेरी कल्पना को झकझोर दिया था, और शैतान ने, जो ईश्वर से इस तरह बातें करता था, और ईश्वर ने, जिसने अपने सेवक को विनाश के हवाले कर दिया, और उसके सेवक ने पुकार कर कहा: “हे प्रभु, तेरा नाम धन्य हो, यद्यपि तू मुझे दंड देता है,” और फिर गिरजाघर में मधुर और कोमल गायन: “मेरी प्रार्थना तेरे सामने उठे,” और फिर पुजारी के धूपदान से धूप, घुटने टेकना और प्रार्थना। तब से—कल ही मैंने इसे उठाया—मैं उस पवित्र कथा को बिना आँसू बहाए कभी नहीं पढ़ पाई हूँ। और उसमें कितना कुछ महान, रहस्यमय और अथाह है! बाद में मैंने उपहास और निंदा के शब्द सुने, घमंड भरे शब्द, “परमेश्वर अपने सबसे प्रिय संत को शैतान के मनोरंजन के लिए कैसे त्याग सकता है, उससे उसके बच्चों को छीन सकता है, उसे भयंकर फोड़ों से पीड़ित कर सकता है, जिससे वह मिट्टी के बर्तन से अपने फोड़ों से मवाद साफ करे—और वह भी केवल शैतान को शेखी बघारने के लिए! ‘देखो, मेरा संत मेरे लिए क्या-क्या सह सकता है।’”
लेकिन इसकी महानता तो इसी में निहित है कि यह एक रहस्य है—कि क्षणिक सांसारिक दिखावा और शाश्वत सत्य इसमें एक साथ समाहित हैं। सांसारिक सत्य के सामने शाश्वत सत्य सिद्ध होता है। सृष्टिकर्ता, जैसे सृष्टि के आरंभिक दिनों में प्रत्येक दिन का अंत स्तुति के साथ करते थे: “यह अच्छा है कि मैंने सृष्टि की है,” अय्यूब की ओर देखते हैं और फिर से अपनी सृष्टि की स्तुति करते हैं। और अय्यूब, प्रभु की स्तुति करते हुए, न केवल उनकी बल्कि उनकी समस्त सृष्टि की पीढ़ियों-पीढ़ियों तक, और सदा-सर्वदा सेवा करता है, क्योंकि इसी के लिए उसे नियुक्त किया गया था। हे भगवान, यह कैसी अद्भुत पुस्तक है, और इसमें कितने सबक हैं! बाइबल कितनी अद्भुत पुस्तक है, कितना चमत्कार है, इससे मनुष्य को कितनी शक्ति मिलती है! यह संसार, मनुष्य और मानव स्वभाव का एक सांचा है, इसमें सब कुछ समाहित है, और हर युग के लिए एक नियम है। और कितने रहस्य सुलझते और प्रकट होते हैं! ईश्वर अय्यूब को फिर से जीवित करता है, उसे फिर से धन देता है। कई वर्ष बीत जाते हैं, और उसके अन्य बच्चे होते हैं और वह उनसे प्रेम करता है। लेकिन जब उसके पहले बच्चे नहीं रहे, जब उसने उन्हें खो दिया, तो वह उन नए बच्चों से कैसे प्रेम कर सकता था? उन्हें याद करते हुए, वह उन नए बच्चों के साथ पूरी तरह से खुश कैसे हो सकता था, चाहे वे नए बच्चे कितने भी प्यारे क्यों न हों? लेकिन वह हो सकता था, हो सकता था। यह मानव जीवन का महान रहस्य है कि पुराना दुःख धीरे-धीरे शांत, कोमल आनंद में बदल जाता है। वृद्धावस्था की सौम्य शांति यौवन के उफान का स्थान ले लेती है। मैं प्रतिदिन उगते सूरज को आशीर्वाद देता हूँ, और पहले की तरह ही मेरा हृदय उससे मिलने के लिए गीत गाता है, लेकिन अब मुझे उसका अस्त होना, उसकी लंबी तिरछी किरणें और उनसे जुड़ी कोमल, मधुर यादें, मेरे लंबे, सुखी जीवन की प्यारी छवियाँ और सबसे बढ़कर, वह दिव्य सत्य, जो कोमल, मेल-मिलाप करने वाला और क्षमा करने वाला है, और भी अधिक प्रिय लगता है! मेरा जीवन समाप्त हो रहा है, मैं यह भली-भांति जानता हूँ, लेकिन मेरे शेष प्रत्येक दिन मुझे यह एहसास होता है कि मेरा सांसारिक जीवन एक नए अनंत, अज्ञात, निकट आ रहे जीवन के संपर्क में है, जिसकी निकटता मेरी आत्मा को आनंद से कंपकंपा देती है, मेरे मन को प्रज्वलित कर देती है और मेरे हृदय को खुशी से रुला देती है।
मित्रों और शिक्षकों, मैंने एक से अधिक बार सुना है, और हाल ही में शायद किसी ने सुना होगा। अक्सर सुनने को मिलता है कि पुजारी, और विशेषकर ग्राम पुजारी, अपनी दयनीय आमदनी और अपमानजनक स्थिति को लेकर चारों ओर से शिकायत कर रहे हैं। वे स्पष्ट रूप से कहते हैं, यहाँ तक कि लिखित रूप में भी—मैंने स्वयं पढ़ा है—कि वे अपनी सीमित आय के कारण लोगों को धर्मग्रंथ नहीं सिखा पाते, और यदि लूथरवादी और विधर्मी आकर अनुयायियों को गुमराह करते हैं, तो वे उन्हें गुमराह करने देते हैं क्योंकि उनके पास गुजारा करने के लिए बहुत कम है। प्रभु उनकी आजीविका में वृद्धि करें, जो उनके लिए इतनी अनमोल है, क्योंकि उनकी शिकायत भी जायज़ है। लेकिन सच कहूँ तो, यदि इस मामले में किसी को दोषी ठहराया जाना है, तो आधा दोष हमारा भी है। क्योंकि हो सकता है कि उनके पास समय की कमी हो, हो सकता है कि वे सच ही कहें कि वे हर समय काम और सेवाओं में डूबे रहते हैं, लेकिन फिर भी ऐसा नहीं है, उनके पास भी सप्ताह में एक घंटा ही ईश्वर को याद करने का समय होता है। और वे पूरे साल काम नहीं

करते। सप्ताह में एक बार, शाम के किसी समय, उसे अपने पास इकट्ठा होने दें, भले ही शुरुआत में केवल बच्चे ही हों—पिताओं को भी पता चलेगा और वे भी आने लगेंगे। इसके लिए कोई हॉल बनाने की ज़रूरत नहीं है, उन्हें अपनी कुटिया में ही ले जाएं। इससे उसकी कुटिया खराब नहीं होगी, वे वहाँ केवल एक घंटे के लिए ही रहेंगे। उसे वह पुस्तक खोलकर बिना किसी बड़े-बड़े शब्दों या अहंकार के, बिना उन्हें नीचा दिखाए, बल्कि कोमल और दयालु भाव से पढ़ना शुरू करने दें। उन्हें इस बात की खुशी होनी चाहिए कि वे उन्हें पढ़कर सुना रहे हैं और वे ध्यान से सुन रहे हैं, उन्हें स्वयं भी शब्दों से प्रेम होना चाहिए, और बीच-बीच में रुककर उन शब्दों का अर्थ समझाना चाहिए जो किसानों को समझ में नहीं आते। चिंता न करें, वे सब कुछ समझ जाएंगे, रूढ़िवादी हृदय सब कुछ समझ जाएगा! उन्हें अब्राहम और सारा, इसहाक और रेबेका के बारे में, याकूब के लाबान के पास जाकर सपने में प्रभु से कुश्ती करने और यह कहने के बारे में कि "यह स्थान पवित्र है"—पढ़ने दें, और वह किसान के भक्त मन पर गहरा प्रभाव डालेगा। उसे, विशेषकर बच्चों को, यह पढ़ने दो कि कैसे भाइयों ने उस कोमल बालक, स्वप्नद्रष्टा और भविष्यवक्ता यूसुफ को गुलामी में बेच दिया, और उसके पिता से कहा कि एक जंगली जानवर उसे खा गया है, और उसे उसके खून से सने कपड़े दिखाए। उसे यह भी पढ़ने दो कि कैसे बाद में भाई अनाज के लिए मिस्र गए, और यूसुफ, जो पहले से ही एक महान शासक था, उनके द्वारा पहचाना नहीं गया, उसने उन्हें सताया, उन पर आरोप लगाए, अपने भाई बेंजामिन की रक्षा की, और यह सब प्रेम से कहा: "मैं तुमसे प्रेम करता हूँ, और प्रेम से ही तुम्हें सताता हूँ।" क्योंकि उसे जीवन भर याद रहा कि कैसे उन्होंने उसे जलते रेगिस्तान में कुएँ के पास व्यापारियों को बेच दिया था, और कैसे उसने हाथ मलते हुए रोया था और अपने भाइयों से विनती की थी कि उसे एक परदेस में गुलाम के रूप में न बेचें। और कैसे कई वर्षों बाद उन्हें फिर से देखकर, उसने उनसे असीम प्रेम किया, लेकिन प्रेम से ही उन्हें सताया और परेशान किया। अंत में अपने हृदय के कष्ट को सहन न कर पाने के कारण वह उन्हें छोड़कर चला गया, अपने बिस्तर पर गिर पड़ा और रोने लगा। फिर, अपने आँसू पोंछते हुए, वह प्रसन्न होकर उनके पास गया और उनसे कहा, "भाइयों, मैं तुम्हारा भाई यूसुफ हूँ!" उन्हें आगे यह भी पढ़ने को मिले कि बूढ़ा याकूब अपने प्रिय पुत्र के जीवित होने की खबर सुनकर कितना प्रसन्न हुआ था, और कैसे वह अपना देश छोड़कर मिस्र गया और एक परदेस में उसकी मृत्यु हो गई, और वह अपनी उस महान भविष्यवाणी को विरासत में छोड़ गया जो उसके नम्र और डरपोक हृदय में जीवन भर रहस्यमय ढंग से छिपी रही थी, कि उसकी संतान, यहूदा से, संसार की महान आशा, मसीहा और उद्धारकर्ता आएगा।

पिता और शिक्षकगण, मुझे क्षमा करें और क्रोधित न हों, क्योंकि मैं एक छोटी बच्ची की तरह हूँ।

हे बालक, मैं उन बातों का बखान कर रहा हूँ जो तुम बहुत पहले से जानते हो, और मुझे सौ गुना अधिक कुशलता से सिखा सकते हो। मैं केवल भावविभोर होकर बोल रहा हूँ, और मेरे आँसुओं के लिए क्षमा करना, क्योंकि मुझे बाइबल से प्रेम है। हे परमेश्वर के पुजारी, उसे भी रोने दो, और निश्चय ही उसके श्रोताओं के हृदय भी स्पंदित होंगे। बस एक छोटा सा बीज ही काफी है—इसे किसान के हृदय में डाल दो, और यह मरेगा नहीं, यह उसकी आत्मा में जीवन भर रहेगा, यह उसके अंधकार और पाप के बीच एक उज्ज्वल बिंदु की तरह, एक महान स्मरण की तरह छिपा रहेगा। और अधिक शिक्षा या व्याख्या की आवश्यकता नहीं है, वह सब कुछ सरलता से समझ जाएगा। क्या तुम्हें लगता है कि किसान नहीं समझते? उन्हें सुंदर एस्तेर और अभिमानी वश्ती की मार्मिक कहानी सुना कर देखो; या व्हेल के पेट में योना की चमत्कारिक कहानी सुना कर देखो। प्रभु यीशु के दृष्टांतों को न भूलें, विशेष रूप से संत लूका के सुसमाचार से चुनें (मैंने भी यही किया था), फिर प्रेरितों के कार्य से संत पौलुस के धर्म परिवर्तन की कहानी (जिसे आपको किसी भी कीमत पर नहीं छोड़ना चाहिए), और संतों के जीवन से, उदाहरण के लिए, ईश्वर के सेवक एलेक्सी का जीवन और सबसे बढ़कर, धन्य शहीद और ईश्वर की द्रष्टा, मिस्र की मरियम— और आप इन सरल कहानियों से उनके दिलों को छू लेंगे। अपनी गरीबी के बावजूद, सप्ताह में एक घंटा इसके लिए दें, बस एक छोटा सा घंटा। और आप स्वयं देखेंगे कि हमारे लोग दयालु और कृतज्ञ हैं, और आपको सौ गुना प्रतिफल देंगे। अपने पुजारी की दयालुता और उनके द्वारा सुने गए मार्मिक शब्दों को याद करते हुए, वे स्वेच्छा से उनके खेतों और घर में उनकी मदद करेंगे, और पहले से अधिक सम्मान के साथ उनका व्यवहार करेंगे— जिससे उनकी सांसारिक समृद्धि में भी वृद्धि होगी। बात इतनी सरल है कि कभी-कभी तो हंसी उड़ाए जाने के डर से उसे शब्दों में व्यक्त करने से भी डर लगता है, फिर भी यह कितनी सत्य है! जो ईश्वर में विश्वास नहीं करता, वह ईश्वर के अनुयायियों में भी विश्वास नहीं करेगा। जो ईश्वर के अनुयायियों में विश्वास करता है, वह उनकी पवित्रता को भी देखेगा, भले ही उसने तब

तक उसमें विश्वास न किया हो। केवल लोग और उनकी भावी आध्यात्मिक शक्ति ही हमारे उन नास्तिकों को परिवर्तित कर सकती है, जो अपनी जन्मभूमि से विमुख हो गए हैं।
और जब तक हम उदाहरण प्रस्तुत नहीं करते, तब तक मसीह के वचनों का क्या लाभ?
परमेश्वर के वचन के बिना मनुष्य खोया हुआ है, क्योंकि उसकी आत्मा वचन और सभी अच्छी चीजों के लिए प्यासी है।
अपनी जवानी में, बहुत समय पहले, लगभग चालीस साल पहले, मैंने पूरे रूस की यात्रा की थी।
फादर अनफिम के साथ, हम अपने मठ के लिए चंदा इकट्ठा कर रहे थे, और एक रात हमने कुछ मछुआरों के साथ एक बड़ी नौकायन योग्य नदी के किनारे बिताई। लगभग अठारह साल का एक सुंदर किसान लड़का हमारे साथ शामिल हुआ; उसे अगली सुबह जल्दी वापस जाना था क्योंकि उसे एक व्यापारी की नाव को किनारे पर खींचना था। मैंने देखा कि वह अपनी निर्मल और कोमल आँखों से सीधे अपने सामने देख रहा था। वह जुलाई की एक चमकदार, गर्म, शांत रात थी, चौड़ी नदी से ठंडी धुंध उठ रही थी, हमें मछली के छपछपाने की आवाज़ सुनाई दे रही थी, पक्षी शांत थे, सब कुछ शांत और सुंदर था, मानो सब कुछ ईश्वर से प्रार्थना कर रहा हो। केवल हम दोनों, मैं और वह लड़का, सो नहीं रहे थे और हम ईश्वर के इस संसार की सुंदरता और इसके महान रहस्य के बारे में बातें कर रहे थे। घास का हर तिनका, हर कीड़ा, चींटी और सुनहरी मधुमक्खी, सभी अपने मार्ग को इतनी अद्भुत रूप से जानते हैं, हालाँकि उनमें बुद्धि नहीं है, वे ईश्वर के रहस्य के साक्षी हैं और निरंतर स्वयं उसे पूरा करते हैं। मैंने देखा कि उस प्यारे लड़के का हृदय भावुक हो गया था। उसने मुझे बताया कि उसे जंगल और जंगल के पक्षी बहुत प्यारे हैं। वह पक्षी पकड़ने वाला था, हर पक्षी की आवाज़ पहचानता था, हर पक्षी को बुला सकता था। उसने कहा, "मुझे जंगल में रहने से बेहतर कुछ नहीं लगता, हालाँकि सब कुछ अच्छा है।"
मैंने उसे उत्तर दिया, “सचमुच, सब कुछ अच्छा और उचित है, क्योंकि सब कुछ है
सत्य। देखो,” मैंने कहा, “घोड़े को देखो, वह विशालकाय जानवर जो मनुष्य के इतना करीब है; या उस विनम्र, चिंतनशील बैल को देखो, जो मनुष्य को भोजन देता है और उसके लिए काम करता है; उनके चेहरों को देखो, कितनी नम्रता, मनुष्य के प्रति कितनी भक्ति, जो अक्सर उन्हें निर्दयता से पीटता है। कितनी कोमलता, कितना विश्वास और कितनी सुंदरता! यह जानकर कितना हृदयस्पर्शी है कि उनमें कोई पाप नहीं है, क्योंकि मनुष्य को छोड़कर सभी पापरहित हैं, और मसीह हमसे पहले उनके साथ रहे हैं।”
लड़के ने पूछा, "यीशु भी उनके साथ क्यों हैं?"
मैंने कहा, “ऐसा होना ही चाहिए, क्योंकि वचन सबके लिए है। समस्त सृष्टि और
सभी प्राणी, हर पत्ता, ईश्वर के वचन की ओर अग्रसर है, ईश्वर की महिमा का गुणगान कर रहा है, मसीह के सामने विलाप कर रहा है, अनजाने में ही अपने निष्पाप जीवन के रहस्य से यह सब कर रहा है। मैंने कहा, “वहाँ जंगल में एक भयानक भालू घूमता है, क्रूर और डरावना, फिर भी निर्दोष।” और मैंने उसे बताया कि कैसे एक बार एक भालू एक महान संत के पास आया, जिन्होंने जंगल में एक छोटी सी कुटिया में शरण ली थी। महान संत को उस पर दया आई, वे निडर होकर उसके पास गए और उसे रोटी का एक टुकड़ा दिया। उन्होंने कहा, “जाओ, मसीह तुम्हारे साथ रहें,” और वह खूंखार जानवर विनम्रतापूर्वक और आज्ञाकारी होकर चला गया, उसने कोई नुकसान नहीं पहुँचाया। और वह लड़का बहुत प्रसन्न हुआ कि भालू संत को चोट पहुँचाए बिना चला गया, और मसीह भी उसके साथ थे। उसने कहा, “आह, यह कितना अच्छा है, ईश्वर का सारा कार्य कितना अच्छा और सुंदर है!” वह शांत और मधुर भाव से सोच में डूबा बैठा था। मैंने देखा कि वह समझ गया था। और वह मेरे बगल में गहरी और निर्मल नींद सो गया। ईश्वर उसकी युवावस्था को आशीर्वाद दे! और मैंने सोते समय उसके लिए प्रार्थना की। हे प्रभु, अपने लोगों को शांति और प्रकाश प्रदान करो!

अध्याय दो

(ग) भिक्षु बनने से पहले फादर ज़ोस्सिमा की युवावस्था की यादें।

द्वंद्व

मैंने लगभग आठ साल तक सैन्य कैडेट स्कूल में लंबा समय बिताया।
सेंट पीटर्सबर्ग में, और वहाँ के मेरे परिवेश की नवीनता में, मेरे कई अनुभव शामिल थे।
बचपन की यादें धुंधली पड़ गईं, हालांकि मैं कुछ भी नहीं भूला। मैंने बहुत कुछ सीख लिया।
कई नई आदतें और राय जिन्होंने मुझे एक क्रूर, बेतुके इंसान में बदल दिया,
लगभग एक जंगली प्राणी। शिष्टाचार और सामाजिक तौर-तरीकों का ऊपरी दिखावा।
उन्होंने फ्रेंच भाषा के साथ-साथ इसे भी हासिल कर लिया।
लेकिन हम सभी, जिनमें मैं भी शामिल हूं, अपनी सेवा में कार्यरत सैनिकों को सम्मान की दृष्टि से देखते थे।
मवेशियों की तरह। शायद मैं उस मामले में बाकियों से भी बदतर था, क्योंकि मैं इतना
मैं अपने साथियों की तुलना में कहीं अधिक आसानी से प्रभावित हो जाता था। जब तक हम वहां से निकले, तब तक
स्कूल में अधिकारी के रूप में, हम देश के सम्मान के लिए अपनी जान कुर्बान करने को तैयार थे।
रेजिमेंट, लेकिन हममें से किसी को भी इसके वास्तविक अर्थ की जानकारी नहीं थी।
सम्मान, और अगर किसी को यह पता होता, तो वह सबसे पहले होता
इसका उपहास उड़ाओ। शराबखोरी, व्यभिचार और शैतानी हरकतें ही वो सब थीं जो हम लगभग करते थे।
हमें इस बात पर गर्व था। मैं यह नहीं कह रहा कि हम स्वभाव से बुरे थे, ये सब बातें
वे युवक अच्छे थे, लेकिन उनका व्यवहार बुरा था, और मेरा व्यवहार तो सबसे बुरा था।
मेरे लिए स्थिति और भी बदतर इसलिए हो गई क्योंकि मेरे पास खुद का पैसा आ गया था, और
इसलिए मैंने खुद को सुखमय जीवन में झोंक दिया और पूरी तरह से उसमें डूब गया।
युवाओं की लापरवाही।
मुझे पढ़ने का शौक था, फिर भी अजीब बात है कि बाइबिल ही वह एकमात्र पुस्तक थी जिसने मुझे पढ़ने के लिए प्रेरित किया।
मैंने उस समय इसे कभी नहीं खोला, हालाँकि मैं इसे हमेशा अपने साथ रखता था, और मैं
मैं उससे कभी अलग नहीं हुआ; सच तो यह है कि मैं उस किताब को "के लिए" संभाल कर रख रहा था।
"दिन और घंटा, महीना और साल के लिए," हालांकि मुझे यह पता नहीं था।
इस जीवन के चार वर्षों के बाद, संयोगवश मैं के. नामक कस्बे में था, जहाँ
उस समय हमारी रेजिमेंट वहाँ तैनात थी। हमने कस्बे के लोगों को पाया।
मेहमाननवाज, समृद्ध और मनोरंजन के शौकीन। मेरा हार्दिक स्वागत हुआ।
मैं हर जगह मौजूद था, क्योंकि मेरा स्वभाव हंसमुख था और मैं अच्छी तरह से जाना जाता था।
बंद, जो दुनिया में हमेशा बहुत मायने रखता है। और फिर एक परिस्थिति
जो घटना घटी, वही इस सब की शुरुआत थी।
मुझे एक खूबसूरत और बुद्धिमान युवती से लगाव हो गया।
नेक और उच्च चरित्र वाली, बहुत सम्मानित लोगों की बेटी।
वे प्रभावशाली और प्रतिष्ठित धनी लोग थे। वे हमेशा मुझे एक
सौहार्दपूर्ण और मैत्रीपूर्ण स्वागत। मुझे लगा कि वह युवती मुझे घूर रही थी।
कृपा के साथ और इस विचार से मेरा दिल प्रज्वलित हो गया। बाद में मैंने देखा और
मुझे पूरी तरह से एहसास हो गया था कि शायद मैं उससे उतना गहरा प्यार नहीं करता था।
लेकिन मैंने केवल उनके उच्चतर मन और चरित्र को ही पहचाना, जिसे मैं
ऐसा करने से वास्तव में कोई मदद नहीं मिलती। हालाँकि, मुझे उसे ऐसा करने से रोक दिया गया था।
उस समय स्वार्थवश, मैं उस प्रस्ताव को स्वीकार करने से हिचकिचा रहा था।
मेरे युवावस्था के चरम पर मेरे स्वतंत्र और स्वच्छंद कुंवारे जीवन के आकर्षण

मैं जवान था और मेरी जेब पैसों से भरी हुई थी। मैंने अपने बारे में कुछ संकेत जरूर दिए थे।
हालांकि, मेरी भावनाएं यही थीं कि मैंने कुछ समय के लिए कोई भी निर्णायक कदम उठाने से परहेज किया।
फिर अचानक हमें दो महीने के लिए किसी और जगह जाने का आदेश मिल गया।
ज़िला।
दो महीने बाद लौटने पर मैंने पाया कि वह युवती पहले से ही
एक धनी पड़ोसी जमींदार से शादी की, जो बहुत ही मिलनसार व्यक्ति था और अभी भी युवा था।
हालांकि वह मुझसे उम्र में बड़ा था, लेकिन सेंट पीटर्सबर्ग के सबसे अच्छे समाज से जुड़ा हुआ था, जो
मैं ऐसा नहीं था, और न ही मेरी शिक्षा उत्कृष्ट थी, जो कि वास्तव में नहीं थी।
इस अप्रत्याशित परिस्थिति से मेरा मन इतना अभिभूत हो गया था कि
सकारात्मकता धूमिल हो गई। सबसे बुरी बात यह थी कि, जैसा कि मैंने तब सीखा,
युवा जमींदार की उससे काफी समय पहले सगाई हो चुकी थी, और मैं उससे मिल चुका था।
मैंने उसे कई बार उसके घर में बुलाया था, लेकिन अपने अहंकार के कारण मैं ऐसा नहीं कर पाया।
किसी ने कुछ भी नोटिस नहीं किया। और इससे मुझे विशेष रूप से शर्मिंदगी हुई; लगभग सभी ने
सब लोग इसके बारे में सब जानते थे, जबकि मुझे कुछ भी पता नहीं था। मैं अचानक भावनाओं से भर गया।
अदम्य क्रोध। चेहरा लाल हो गया था और मैं याद करने लगा कि कितनी बार ऐसा हुआ था।
मैं उससे अपने प्यार का इज़हार करने ही वाला था, और उसने ऐसा नहीं किया था।
अगर उसने मुझे रोकने या चेतावनी देने की कोशिश की होती, तो मैंने निष्कर्ष निकाला कि वह अवश्य ही
वे हर समय मुझ पर हंसते रहते थे। बाद में, ज़ाहिर है, मैंने इस पर विचार किया और
मुझे याद आया कि वह मुझ पर बिल्कुल भी नहीं हंस रही थी;
इसके विपरीत, वह मजाक करके मेरी किसी भी तरह की प्रेम क्रिया को रोक देती थी और
दूसरे विषयों पर बात शुरू करना संभव नहीं था; लेकिन उस समय मैं ऐसा करने में असमर्थ था।
सोच-विचार करते हुए, मेरे मन में बदला लेने की तीव्र इच्छा जाग उठी। मुझे यह याद करके आश्चर्य होता है।
कि मेरा क्रोध और प्रतिशोध की भावनाएँ मेरे लिए अत्यंत घृणित थीं
अपने स्वभाव के कारण, क्योंकि मैं सहज मिजाज का था, मुझे गुस्सा करना मुश्किल लगता था।
किसी के साथ लंबे समय तक नहीं रह सकता था, इसलिए मुझे कृत्रिम रूप से खुद को तैयार करना पड़ा और
अंततः यह घृणित और बेतुका हो गया।
मैंने अवसर की प्रतीक्षा की और अपने "प्रतिद्वंद्वी" का अपमान करने में सफल रहा।
एक बड़ी कंपनी की उपस्थिति। मैंने एक बिल्कुल ही अप्रासंगिक मुद्दे पर उसका अपमान किया।
बहाना बनाकर, एक महत्वपूर्ण सार्वजनिक घटना पर उनकी राय का उपहास उड़ाते हुए—यह
वर्ष 18265—और मेरा उपहास, जैसा कि लोगों ने कहा, चतुर और प्रभावी था।
फिर मैंने उसे स्पष्टीकरण मांगने के लिए मजबूर किया, और इतना असभ्य व्यवहार किया कि वह
हमारे बीच मौजूद भारी असमानता के बावजूद उन्होंने मेरी चुनौती स्वीकार कर ली, क्योंकि मैं
एक युवा, महत्वहीन और निम्न पद का व्यक्ति। मैंने सीखा
बाद में यह भी पता चला कि यह उसकी ओर से ईर्ष्या की भावना के कारण भी था।
मेरी चुनौती स्वीकार कर ली गई; वह अपनी पत्नी के कारण मुझसे काफी ईर्ष्या करता था।
शादी से पहले का हिसाब; अब उसे लगता था कि अगर वह मान जाए तो
उसने मेरा अपमान किया और मेरी चुनौती स्वीकार करने से इनकार कर दिया, और अगर उसे इसके बारे में
पता चला तो,
वह उससे नफरत करने लग सकती है और उसके प्रति उसका प्यार डगमगा सकता है। जल्द ही
मुझे अपने रेजिमेंट के एक साथी, एक ध्वजवाहक में दूसरा साथी मिल गया। उन दिनों
हालांकि द्वंद्वयुद्ध के लिए कड़ी सजा दी जाती थी, फिर भी द्वंद्वयुद्ध एक तरह का फैशन था।
अधिकारियों के बीच—एक क्रूर पूर्वाग्रह इतना प्रबल और गहराई से जड़ जमा चुका है।
कभी-कभी ऐसा हो सकता है।
जून का अंत था, और हमारी बैठक सात बजे होनी थी।
अगले दिन शाम को कस्बे के बाहरी इलाके में—और फिर कुछ और हुआ।

एक ऐसी घटना घटी जो वास्तव में मेरे जीवन का निर्णायक मोड़ थी।
शाम को, क्रूर और निर्मम मनोदशा में घर लौटते हुए, मैं क्रोध से भर उठा।
मैंने अपने सहायक अफनासी के साथ मिलकर उसे अपने पूरे बल से चेहरे पर दो घूंसे मारे।
शायद, वह खून से लथपथ था। वह मेरे पास कुछ ही समय से था।
मैंने उसकी सेवा की और उससे पहले भी उसे मारा था, लेकिन इतनी क्रूरता से कभी नहीं।
और यकीन मानिए, भले ही यह बात चालीस साल पुरानी है, लेकिन मुझे आज भी इसे याद करके शर्म आती है।
और दर्द। मैं बिस्तर पर गया और लगभग तीन घंटे सोया; जब मैं उठा तो...
दिन निकल रहा था। मैं उठ गया—मुझे अब और सोना नहीं था—मैं चला गया।
मैंने खिड़की खोली, और सामने बगीचा दिखाई दिया; मुझे सूरज दिखाई दिया।
सूर्योदय हुआ; मौसम सुहाना और सुंदर था, पक्षी चहचहा रहे थे।
“इसका क्या अर्थ है?” मैंने सोचा। “मुझे अपने दिल में ऐसा महसूस हो रहा है जैसे...”
कुछ घिनौना और शर्मनाक। क्या यह इसलिए है क्योंकि मैं खून बहाने वाला हूँ? नहीं।"
मैंने सोचा, “मुझे लगता है कि यह वह नहीं है। क्या ऐसा हो सकता है कि मैं मृत्यु से डरता हूँ, डरता हूँ...?”
क्या मेरी हत्या हो रही है? नहीं, ऐसा नहीं है, बिलकुल भी नहीं है।... और अचानक ही मैं
मुझे पता था कि यह क्या था: यह इसलिए था क्योंकि मैंने उस शाम अफनासी को हराया था।
पहले! सब कुछ मेरे दिमाग में आ गया, सब कुछ मानो बार-बार दोहराया जा रहा था।
फिर से; वह मेरे सामने खड़ा था और मैं उसके चेहरे पर सीधे-सीधे मुक्के मार रहा था और
उसने अपनी बाहों को सख्ती से नीचे की ओर रखा हुआ था, सिर सीधा था, और उसकी आँखें एकटक देख रही थीं।
मुझे ऐसा लग रहा था मानो मैं किसी जुलूस में हूँ। वह हर वार पर लड़खड़ा रहा था और हिम्मत भी नहीं कर पा रहा था।
खुद को बचाने के लिए हाथ उठाना। यही वह स्थिति है जिसमें मनुष्य को लाया गया है।
और वो तो एक इंसान दूसरे इंसान को पीट रहा था! कितना बड़ा अपराध!
मानो किसी तेज खंजर ने मुझे आर-पार कर दिया हो। मैं ऐसे खड़ा था मानो...
सन्न रह गया, जबकि सूरज चमक रहा था, पत्तियाँ आनंदित हो रही थीं और
पक्षी चहचहाकर ईश्वर की स्तुति कर रहे थे... मैंने अपना चेहरा हाथों में छिपा लिया और गिर पड़ा।
मैं अपने बिस्तर पर लेट गई और फूट-फूट कर रोने लगी। फिर मुझे अपनी याद आई।
भाई मार्केल और उसने अपनी मृत्यु शैय्या पर अपने सेवकों से जो कहा: “मेरा
मेरे प्रियजनों, तुम मेरा इंतज़ार क्यों करते हो, तुम मुझसे प्यार क्यों करते हो, क्या मैं तुम्हारे लायक हूँ?
क्या आप मेरा इंतजार कर रहे हैं?
“क्या मैं इसके लायक हूँ?” ये सवाल मेरे मन में कौंधा। “आखिर मैं हूँ क्या?”
इसका महत्व यह है कि एक अन्य मनुष्य, एक साथी प्राणी, को उसकी समानता और स्वरूप में बनाया गया है।
क्या ईश्वर को मेरी सेवा करनी चाहिए?” मेरे जीवन में पहली बार यह प्रश्न
यह मुझ पर हावी हो गया। उसने कहा था, “माँ, मेरे प्यारे दिल, सच में हम
हम सभी एक-दूसरे के प्रति जवाबदेह हैं, बस पुरुष इस बात को नहीं जानते। अगर
वे जानते थे कि दुनिया पल भर में स्वर्ग बन जाएगी।
“हे भगवान, क्या यह भी झूठ हो सकता है?” रोते हुए मैंने सोचा। “सच में, शायद, मैं
मैं सभी से अधिक सभी के लिए जिम्मेदार हूँ, मैं सभी मनुष्यों से बड़ा पापी हूँ।
दुनिया।" और अचानक ही मुझे संपूर्ण सत्य अपने पूर्ण प्रकाश में प्रकट हो गया;
मैं क्या करने वाला था? मैं एक अच्छे, चतुर, नेक आदमी को मारने वाला था, जो
उसने मेरे साथ कोई गलत काम नहीं किया था, और अपनी पत्नी को जीवन भर की खुशियों से वंचित करके उसने ऐसा किया।

मुझे उसकी जिंदगी के हर पल में उसे भी यातना देकर मार डालना चाहिए। मैं अपने बिस्तर पर इसी तरह लेटा रहा।
तकिये में चेहरा छिपाए, समय बीतने की परवाह किए बिना। अचानक
मेरा सहायक, पताकाधारी, मुझे बुलाने के लिए पिस्तौल लेकर आया।
“अरे,” उसने कहा, “अच्छा हुआ कि तुम उठ गए, अब समय आ गया है कि हम चलें।”
हम निकल पड़े हैं, आप भी हमारे साथ आइए!
मुझे समझ नहीं आ रहा था कि क्या करूं और मैं असमंजस में इधर-उधर भागता रहा; हम चले गए लेकिन गाड़ी तक।
मैंने उससे कहा, "एक मिनट रुको। मैं अभी वापस आता हूँ, मेरे पास..."
मैं अपना पर्स भूल गई थी।
और मैं अकेले ही अफनासी के छोटे से कमरे में वापस भागा। मैंने कहा, "अफनासी, मैंने कल तुम्हारे चेहरे पर दो घूंसे मारे थे।"
“मुझे माफ कर दो,” मैंने कहा।
वह जैसे डर गया हो, चौंक गया और मेरी तरफ देखा; और मैंने देखा
यह पर्याप्त नहीं था, और मौके पर ही, अपनी पूरी अधिकारी की वर्दी में, मैंने
मैं उनके चरणों में गिर पड़ा और अपना सिर जमीन पर झुका लिया।
मैंने कहा, "मुझे माफ कर दीजिए।"
तब वह पूरी तरह से स्तब्ध रह गया।
“माननीय न्यायाधीश... महोदय, आप ये क्या कर रहे हैं? क्या मैं इसके लायक हूँ?” और वह फूट-फूटकर रोने लगा, जैसा मैंने पहले किया था, उसने अपना चेहरा अपने मुँह में छिपा लिया।
उसने हाथ फैलाए, खिड़की की ओर मुड़ा और सिसकियों से कांपने लगा। मैं उड़कर बाहर निकल गया।
मैं अपने साथी के साथ गाड़ी में कूद गया।
“तैयार हो?” मैंने चिल्लाकर कहा। “क्या तुमने कभी किसी विजेता को देखा है?” मैंने उससे पूछा।
"यह आपके सामने है।"
मैं बेहद खुश था, पूरे रास्ते हंसता और बातें करता रहा, मुझे याद नहीं।
किस बारे में।
उन्होंने मेरी तरफ देखा। “अच्छा भाई, तुम तो बड़े साहसी हो, लगे रहो।”
मुझे लगता है कि वे वर्दी की गरिमा को बनाए रखेंगे।
तो हम उस जगह पहुँच गए और उन्हें वहाँ हमारा इंतज़ार करते हुए पाया। हम
बारह कदम की दूरी पर तैनात; पहला शॉट उसी ने लिया। मैं प्रसन्नता से खड़ा होकर उसे देख रहा था।
सीधे मेरे चेहरे पर; मैंने पलक भी नहीं झपकाई, मैंने उसे प्यार से देखा, क्योंकि मैं
मुझे पता था कि मैं क्या करूंगा। उसकी गोली मेरे गाल और कान को छूकर निकल गई।
“भगवान का शुक्र है,” मैं चिल्लाई, “कोई भी आदमी नहीं मरा,” और मैंने अपना हाथ पकड़ लिया
पिस्तौल लेकर, उसने पीछे मुड़कर उसे दूर जंगल में फेंक दिया। "यही वह जगह है।"
“तुम्हारे लिए,” मैं रो पड़ी।
मैंने अपने प्रतिद्वंदी की ओर रुख किया।
“मुझे क्षमा करें, महोदय, मैं कितना नासमझ हूँ,” मैंने कहा, “मेरी इस अकारण की गलती के लिए।”
तुम्हारा अपमान करने और तुम्हें मुझ पर गोली चलाने के लिए मजबूर करने के लिए। मैं तुमसे दस गुना बुरा हूँ।
आप और शायद और भी बहुत कुछ। यह बात उस व्यक्ति को बताएं जो आपके लिए सबसे प्रिय है।
दुनिया।"
मेरे ऐसा कहते ही वे तीनों मुझ पर चिल्लाने लगे। “सच कहूँ तो,” मेरे विरोधी ने चिढ़कर कहा, “अगर तुम नहीं चाहते थे तो
लड़ने के लिए, तुमने मुझे अकेला क्यों नहीं छोड़ा?

“कल मैं मूर्ख था, आज मुझे बेहतर समझ है,” मैंने उसे प्रसन्नतापूर्वक उत्तर दिया। “कल की बात पर तो मैं आपकी बात मानता हूँ, लेकिन आज की बात पर विश्वास करना मुश्किल है।”
“मैं आपकी राय से सहमत हूं,” उन्होंने कहा।
“वाह!” मैंने ताली बजाते हुए कहा। “मैं आपसे पूरी तरह सहमत हूँ।
वे इसके हकदार थे!
"क्या आप गोली चलाएंगे, महोदय, या नहीं?"
“नहीं, मैं ऐसा नहीं करूँगा,” मैंने कहा; “अगर आप चाहें तो मुझ पर फिर से गोली चला सकते हैं, लेकिन यह होगा
आपके लिए बेहतर होगा कि आप गोली न चलाएं।
मेरे सहायक, खासकर मेरा वाला, भी चिल्ला रहे थे: "क्या तुम अपमान कर सकते हो?"
इस तरह से रेजिमेंट को अपने प्रतिद्वंद्वी का सामना करना चाहिए और उससे माफी मांगनी चाहिए!
काश मुझे यह पहले पता होता!
मैं उन सबके सामने खड़ा था, अब हंस नहीं रहा था।
मैंने कहा, “सज्जनों, क्या इन दिनों में किसी को ढूंढना वाकई इतना अद्भुत है?”
वह व्यक्ति जो अपनी मूर्खता पर पश्चाताप कर सकता है और सार्वजनिक रूप से उसे स्वीकार कर सकता है।
गलत काम?
"लेकिन द्वंद्वयुद्ध में नहीं," मेरे साथी ने फिर से चिल्लाकर कहा।
“यही तो अजीब बात है,” मैंने कहा। “क्योंकि मुझे अपनी गलती माननी चाहिए थी।”
मेरे यहाँ पहुँचते ही गलती हो गई, इससे पहले कि उसने एक भी गोली चलाई हो, इससे पहले कि वह उसे आगे ले जाए
एक महान और घातक पाप में बदल गया; लेकिन हमने अपने जीवन को इतना विकृत बना दिया है कि
उस तरह से कार्य करना लगभग असंभव होता, क्योंकि मेरे ऐसा करने के बाद ही संभव होता।
बारह कदम की दूरी पर उसे गोली का सामना करना पड़ा, क्या मेरे शब्दों में कोई अर्थ हो सकता है?
उनके लिए इसका महत्व था, और अगर मैंने पहले बात की होती, तो वह कहते, 'वह'
वह कायर है, पिस्तौल देखकर डर गया है, उसकी बात सुनने का कोई फायदा नहीं।
उन्हें।’ सज्जनों,” मैंने अचानक अपने दिल से निकली बात कहते हुए कहा,
अपने चारों ओर ईश्वर के उपहारों को देखो, स्वच्छ आकाश, शुद्ध वायु, कोमल वातावरण
घास, पक्षी; प्रकृति सुंदर और निष्कलंक है, और हम, केवल हम ही पापी हैं।
और मूर्ख, और हम यह नहीं समझते कि जीवन ही स्वर्ग है, क्योंकि हमारे पास केवल
इसे समझने के लिए और यह अपनी पूरी सुंदरता के साथ तुरंत पूर्ण हो जाएगा, हमें
एक दूसरे को गले लगाओ और रोओ।
मैं और भी कुछ कहना चाहता था, लेकिन कह नहीं सका; मेरी आवाज लड़खड़ा गई।
उसमें मिठास और जवानी का आनंद था, और मेरे दिल में ऐसा परमानंद था।
जैसा मैंने अपने जीवन में पहले कभी नहीं जाना था।
मेरे प्रतिद्वंदी ने कहा, "यह सब तर्कसंगत और शिक्षाप्रद है, और किसी भी तरह से।"
अगर आप एक मौलिक व्यक्ति हैं तो।"
मैंने भी हंसते हुए उससे कहा, "तुम हंस सकते हो, लेकिन उसके बाद तुम..."
वे मुझे पसंद करेंगे।
“ओह, अब मैं तुम्हें स्वीकार करने के लिए तैयार हूँ,” उसने कहा; “क्या तुम हाथ मिलाओगे?”
हाथ? क्योंकि मुझे विश्वास है कि आप वास्तव में ईमानदार हैं।
“नहीं,” मैंने कहा, “अभी नहीं, बाद में जब मैं और अधिक योग्य हो जाऊँगा और
अगर आप सम्मान के पात्र हैं, तो उनसे हाथ मिलाइए और आपका भला होगा।
हम घर गए, रास्ते भर मेरी दूसरी दोस्त मुझे कोसती रही, जबकि मैं उसे चूमती रही।
उसे। मेरे सभी साथियों को इस घटना की खबर तुरंत मिली और वे सब इकट्ठा हो गए।
उसी दिन मेरे बारे में फैसला सुना दें।

उन्होंने कहा, “उसने वर्दी को कलंकित किया है; उसे अपना पद त्याग देना चाहिए।”
आयोग।"
कुछ लोगों ने मेरा समर्थन किया: “उसने गोली का सामना किया,” उन्होंने कहा। “हाँ, लेकिन वह अपनी दूसरी गोली से डर गया था और उसने माफी मांगी।”
"अगर उसे गोली लगने का डर होता, तो वह खुद को ही गोली मार लेता।"
माफ़ी मांगने से पहले उसने पहले पिस्तौल उठाई, और फिर उसे भरकर फेंक दिया।
जंगल। नहीं, इसमें कुछ और भी है, कुछ मौलिक।
मुझे उन्हें सुनना और देखना अच्छा लगा। “मेरे प्यारे दोस्तों और
साथियों,” मैंने कहा, “मेरी नियुक्ति से इस्तीफा देने की चिंता मत करो, क्योंकि मैं
मैंने पहले ही ऐसा कर दिया है। मैंने आज सुबह अपने कागजात भेज दिए हैं और जैसे ही
जैसे ही मुझे अस्पताल से छुट्टी मिलेगी, मैं एक मठ में जाऊंगा—इसी उद्देश्य से मैं जा रहा हूँ।
मैं रेजिमेंट छोड़ रहा हूँ।
जब मैंने यह कहा तो वे सब जोर से हंस पड़े। “आपको हमें पहले ही यह बताना चाहिए था, इससे सब कुछ स्पष्ट हो जाता है, हम
किसी भिक्षु का न्याय नहीं किया जा सकता।
वे हँसे और खुद को रोक नहीं पाए, और यह हँसी तिरस्कारपूर्ण नहीं थी, बल्कि
विनम्रता और प्रसन्नता से। उन सभी ने तुरंत मेरे प्रति मित्रता का भाव दिखाया, यहाँ तक कि उन लोगों ने भी जो
उन्होंने मेरी निंदा करने में सबसे कठोर रुख अपनाया था, और अगले पूरे महीने, मेरे सामने
छुट्टी आ गई, वे मेरा पूरा फायदा नहीं उठा पाए। "अरे, तुम साधु हो," वे
वे कहते थे। और हर किसी ने मुझसे कुछ न कुछ अच्छा कहा, उन्होंने कोशिश करना शुरू कर दिया।
मुझे मनाओ, यहाँ तक कि मुझ पर तरस भी खाओ: "तुम अपने साथ क्या कर रहे हो?"
“नहीं,” वे कहते, “वह एक बहादुर आदमी है, उसने आग का सामना किया और कर सकता था।”
उसने अपनी पिस्तौल से भी गोली चलाई होगी, लेकिन पिछली रात उसने एक सपना देखा था कि वह
उसे भिक्षु बन जाना चाहिए था, इसीलिए उसने ऐसा किया।
कस्बे के समाज के साथ भी यही स्थिति थी। तब तक मुझे पता था कि...
उनका सहृदय स्वागत किया गया था, लेकिन उन पर विशेष ध्यान नहीं दिया गया था, और
अब अचानक सब लोग मुझे जान गए और मुझे आमंत्रित करने लगे; वे मुझ पर हँसे, लेकिन
वे मुझसे प्यार करते थे। मैं यह भी बताना चाहूँगा कि हालाँकि सभी लोग खुलकर इस बारे में बात करते थे।
हमारे द्वंद्वयुद्ध पर अधिकारियों ने कोई ध्यान नहीं दिया, क्योंकि मेरा प्रतिद्वंद्वी एक
हमारे सेनापति का करीबी रिश्तेदार था, और चूंकि कोई रक्तपात नहीं हुआ था और कोई
इसके गंभीर परिणाम हुए, और चूंकि मैंने अपने पद से इस्तीफा दे दिया, इसलिए उन्होंने इसे एक गंभीर परिणाम के रूप में लिया।
मज़ाक। और फिर मैंने खुलकर और निडर होकर बोलना शुरू कर दिया, चाहे वे कुछ भी कहें।
हंसी, क्योंकि यह हमेशा सौहार्दपूर्ण हंसी थी, न कि द्वेषपूर्ण हंसी। ये
बातचीत अधिकतर शाम के समय, महिलाओं की संगति में होती थी;
उस समय महिलाओं को मेरी बातें सुनना विशेष रूप से पसंद था और उन्होंने पुरुषों को भी ऐसा करने के लिए प्रेरित किया।
सुनना।
“लेकिन मैं भला इन सब की ज़िम्मेदारी कैसे उठा सकता हूँ?” हर कोई यही सवाल पूछेगा।
मेरे चेहरे पर हंसते हुए। "क्या मैं, उदाहरण के लिए, आपकी जिम्मेदारी ले सकता हूँ?"
मैं जवाब देता, "हो सकता है कि आपको यह पता न हो, क्योंकि पूरी दुनिया
हम लंबे समय से एक अलग राह पर चल रहे हैं, क्योंकि हम इसे सबसे बड़ा झूठ मानते हैं।
खुद को सत्य मानकर दूसरों से भी वही झूठ बोलने की मांग करते हैं। यहाँ मैंने अपने जीवन में पहली बार ऐसा किया है।

जीवन ने ईमानदारी से काम किया और, खैर, आप सब मुझे पागल समझते हैं। हालाँकि
आप लोग मेरे प्रति मित्रवत व्यवहार करते हैं, फिर भी, देखिए, आप सब मुझ पर हंसते हैं।
“लेकिन हम आपके प्रति दोस्ताना व्यवहार करने से कैसे बच सकते हैं?” मेरी मेज़बान ने कहा।
हंसते हुए। कमरा लोगों से भरा हुआ था। अचानक ही युवती
वह उठा, जिसके कारण द्वंद्वयुद्ध लड़ा गया था और जिसे मैंने हाल ही में जाना था
वो मेरी भावी पत्नी बनने वाली थी। मैंने उसे कमरे में आते हुए नहीं देखा था।
वह कमरे में आई। फिर उठी, मेरे पास आई और अपना हाथ आगे बढ़ाया।
“मैं आपको बता दूं,” उसने कहा, “कि मैं पहली ऐसी व्यक्ति हूं जो आप पर नहीं हंसती।”
लेकिन इसके विपरीत, मैं नम आंखों से आपका धन्यवाद करता हूं और आपके प्रति अपना सम्मान व्यक्त करता हूं।
फिर आपके इस कदम के लिए।
उनके पति भी आ गए और फिर वे सब मेरे पास आए और
उसने लगभग मुझे चूम ही लिया था। मेरा दिल खुशी से भर गया था, लेकिन मेरा ध्यान कहीं और था।
विशेषकर एक अधेड़ उम्र के व्यक्ति ने मेरा ध्यान खींचा, जो मेरे पास आकर मुझसे बात कर रहा था।
अन्य। मैं उसे नाम से तो पहले से जानता था, लेकिन उससे कभी जान-पहचान नहीं हुई थी।
और उस शाम तक उनसे एक शब्द भी नहीं बोला।

(घ) रहस्यमय आगंतुक

वह लंबे समय से कस्बे में एक अधिकारी थे; उनका पद काफी महत्वपूर्ण था।
सभी द्वारा सम्मानित, धनी और परोपकारिता के लिए प्रसिद्ध। उन्होंने सदस्यता ली।
उन्होंने अनाथालय और अनाथालय को काफी बड़ी रकम दान की; वे बहुत
वे गुप्त रूप से दानशील भी थे, यह तथ्य उनकी मृत्यु के बाद ही ज्ञात हुआ।
वह लगभग पचास वर्ष का व्यक्ति था, दिखने में लगभग गंभीर और बहुत ज्यादा
बातचीत में मग्न रहते थे। उनकी शादी को करीब दस साल हो गए थे और उनकी पत्नी...
जो अभी जवान ही थी, उसने उसे तीन बच्चे दिए थे। खैर, मैं बैठा था।
अगली शाम मैं अपने कमरे में अकेला था, तभी अचानक मेरा दरवाजा खुल गया।
और तभी यह सज्जन अंदर आए।
वैसे, मुझे यह भी बताना चाहिए कि मैं अब अपने पुराने घर में नहीं रह रहा था।
जैसे ही मैंने अपना पद छोड़ा, मैंने एक बुजुर्ग के साथ कमरे ले लिए।
एक महिला, जो एक सरकारी क्लर्क की विधवा थी। मेरी मकान मालकिन की नौकरानी इंतज़ार कर रही थी।
मुझ पर, क्योंकि मैं उसके कमरों में इसलिए रहने लगा था क्योंकि मेरी वापसी पर
द्वंद्वयुद्ध के बाद मैंने अफनासी को रेजिमेंट में वापस भेज दिया था, क्योंकि मुझे शर्म आ रही थी।
उनके साथ मेरे आखिरी साक्षात्कार के बाद उनकी आँखों में आँखें डालकर देखिए। वह व्यक्ति इतना सहज है।
दुनिया को किसी भी नेक काम पर शर्म महसूस करने के लिए मजबूर होना चाहिए।
मेरे आगंतुक ने कहा, "मैंने आपकी बातें बड़े चाव से सुनी हैं।"
पिछले कुछ दिनों से मैं अलग-अलग घरों में थी और आखिरकार मैं आपसे मिलना चाहती थी।
व्यक्तिगत परिचय, ताकि आपसे और अधिक आत्मीयता से बात कर सकूँ। क्या आप कर सकती हैं, प्रिय?
महोदय, क्या आप मुझे यह कृपा प्रदान करेंगे?
मैं अत्यंत प्रसन्नता के साथ ऐसा कर सकता हूँ, और मैं इसे एक अवसर के रूप में देखूंगा।
सम्मान।" मैंने यह कहा, हालाँकि मैं लगभग निराश महसूस कर रहा था, क्योंकि मैं बहुत निराश था।
इस आदमी की शक्ल-सूरत से मैं पहली ही नज़र में प्रभावित हो गया था।
हालांकि दूसरे लोगों ने मेरी बातें दिलचस्पी और ध्यान से सुनीं, लेकिन किसी ने भी
वह पहले भी मेरे पास इतने गंभीर, सख्त और एकाग्र मन से आया था।
भाव। और अब वह मेरे कमरे में मुझसे मिलने आया था। वह बैठ गया।
नीचे।

“मुझे लगता है कि आप एक बहुत ही मजबूत चरित्र वाले व्यक्ति हैं,” उन्होंने कहा; “जैसे
आपने सत्य की सेवा करने का साहस दिखाया है, भले ही ऐसा करने से आपको जोखिम उठाना पड़ा हो।
जिससे सभी की अवमानना होगी।
“आपकी प्रशंसा शायद कुछ ज़्यादा ही है,” मैंने उत्तर दिया। “नहीं, यह ज़्यादा नहीं है,” उन्होंने उत्तर दिया;
“विश्वास कीजिए, इस तरह का पाठ्यक्रम
यह कार्य आपके विचार से कहीं अधिक कठिन है। यही वह चीज है जिसने प्रभावित किया है।
“मैं, और केवल इसी कारण से मैं आपके पास आया हूँ,” उन्होंने आगे कहा।
कृपया मुझे बताइए, यदि आप मेरी शायद अनुचित बातों से नाराज नहीं हैं।
जिज्ञासावश, यदि आपको याद हो तो उस समय आपको ठीक-ठीक क्या महसूस हुआ था?
वह क्षण जब आपने द्वंद्वयुद्ध में क्षमा मांगने का निश्चय किया।
मेरे प्रश्न को तुच्छ न समझें; इसके विपरीत, मैंने यह प्रश्न पूछकर
मैं अपने ही एक गुप्त उद्देश्य पर सवाल उठा रहा हूँ, जिसे शायद मैं आपको समझाऊँगा।
बाद में, यदि ईश्वर की इच्छा हो कि हम और अधिक घनिष्ठ हो जाएँ
परिचित।"
जब तक वह बोल रहा था, मैं सीधे उसकी आँखों में देख रहा था।
मुझे अचानक उस पर पूरा भरोसा हो गया और साथ ही उसके बारे में जानने की बहुत उत्सुकता भी जाग उठी।
इसके अलावा, मुझे ऐसा लगा कि उसकी आत्मा में कोई अजीब रहस्य छिपा हुआ है।
“आप पूछते हैं कि जब मैंने पूछा तो उस समय मेरी सटीक भावनाएँ क्या थीं?”
मैंने उत्तर दिया, “मेरे प्रतिद्वंदी की क्षमा के बारे में; लेकिन बेहतर होगा कि मैं आपको बता दूं...”
"शुरुआत जो मैंने अभी तक किसी और को नहीं बताई है।" और मैंने सब कुछ बता दिया।
अफनासी और मेरे बीच जो कुछ हुआ था, और मैंने उसके सामने कैसे सिर झुकाया था
उसके पैरों के नीचे की जमीन। "इससे आप खुद ही देख सकते हैं," मैंने निष्कर्ष निकाला।
"द्वंद्वयुद्ध के समय मेरे लिए यह आसान था, क्योंकि मैंने एक
शुरुआत तो घर से ही हो जाती है, और एक बार जब मैं उस रास्ते पर चलना शुरू कर देता हूँ, तो आगे बढ़ने के लिए।
आगे चलकर यह मुश्किल तो बिल्कुल नहीं रहा, बल्कि खुशी का स्रोत बन गया।
और खुशी।"
मुझे अच्छा लगा जिस तरह से वह सुनते हुए मेरी तरफ देख रहा था। उसने कहा, "यह सब..."
बेहद दिलचस्प। मैं आपसे बार-बार मिलने आऊंगा।
और तब से वह लगभग हर शाम मुझसे मिलने आने लगा।
और अगर उसने कभी इस बारे में बात की होती, तो हम और भी अच्छे दोस्त बन गए होते।
स्वयं के बारे में। लेकिन वह अपने बारे में शायद ही कभी कुछ कहता था, फिर भी लगातार
उसने मुझसे मेरे बारे में पूछा। इसके बावजूद मुझे उससे बहुत लगाव हो गया और
मैंने उससे अपनी सारी भावनाओं के बारे में पूरी ईमानदारी से बात की। "क्योंकि," मैंने सोचा।
मैंने कहा, “मुझे उसके रहस्य जानने की क्या आवश्यकता है, क्योंकि मैं इसके बिना भी देख सकता हूँ कि
क्या वह एक अच्छा आदमी है? इसके अलावा, हालांकि वह इतना गंभीर आदमी है और मेरा
वह वरिष्ठ हैं, लेकिन मुझ जैसे नौजवान को देखकर मेरे साथ बराबरी का व्यवहार करते हैं।
और मैंने उनसे बहुत कुछ सीखा जो मेरे लिए लाभदायक था, क्योंकि वे एक नेक इंसान थे।
उच्च कोटि के विचारों वाला।
“वह जीवन स्वर्ग है,” उसने अचानक मुझसे कहा, “कि मैं बहुत समय से वहीं रहा हूँ।”
"इसके बारे में सोच रहा हूँ"; और अचानक उसने कहा, "मैं वास्तव में इसके अलावा और कुछ नहीं सोचता।"
उन्होंने मेरी तरफ देखा और मुस्कुराए। “मुझे इस बात का तुमसे कहीं ज्यादा यकीन है।”
मैं आपको बाद में बताऊंगा कि क्यों।
मैंने उसकी बात सुनी और सोचा कि वह स्पष्ट रूप से मुझे कुछ बताना चाहता है।

कुछ।
उन्होंने आगे कहा, “स्वर्ग हम सभी के भीतर छिपा हुआ है—यहीं पर स्थित है।”
अब यह मेरे भीतर छिपा हुआ है, और यदि मैं चाहूँ तो यह कल मेरे सामने प्रकट हो जाएगा।
हमेशा के लिए।"
मैंने उसकी ओर देखा; वह बहुत भावुक होकर बोल रहा था और घूर रहा था।
वह रहस्यमय ढंग से मेरी ओर देख रहा था, मानो मुझसे सवाल कर रहा हो।
और हम सभी अपने अलावा बाकी सभी के प्रति जवाबदेह हैं।
पापों, आपने जो सोचा वह बिल्कुल सही था, और यह अद्भुत है कि आपने
मैं इसे एक ही बार में इसके संपूर्ण महत्व के साथ समझ सकता था। और वास्तव में, ऐसा ही था।
जैसे ही मनुष्य इस बात को समझ जाएंगे, स्वर्ग का राज्य उनके लिए नहीं रहेगा।
एक सपना, लेकिन एक जीवंत वास्तविकता।"
“और कब,” मैंने उससे क्रोधपूर्वक कहा, “यह कब होगा?”
क्या यह कभी सच होगा? क्या यह महज़ हमारा एक सपना नहीं है?
“तो फिर, आप इस पर विश्वास नहीं करते?” उन्होंने कहा। “आप इसका प्रचार तो करते हैं, लेकिन खुद इस पर अमल नहीं करते।”
खुद पर विश्वास करो। मेरा विश्वास करो, यह सपना, जैसा कि तुम इसे कहते हो, जरूर पूरा होगा।
यह निश्चित रूप से होगा; यह आएगा, लेकिन अभी नहीं, क्योंकि हर प्रक्रिया में समय लगता है।
कानून। यह एक आध्यात्मिक, मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है। दुनिया को बदलने के लिए,
इसे नए सिरे से बनाने के लिए, पुरुषों को मनोवैज्ञानिक रूप से एक अलग मार्ग अपनाना होगा। जब तक तुम सचमुच सबके भाई बन गए हो, भाईचारा कायम हो गया है
ऐसा नहीं होगा। न तो किसी भी प्रकार की वैज्ञानिक शिक्षा से, न ही किसी प्रकार के सामान्य ज्ञान से।
ब्याज, हमेशा मनुष्यों को संपत्ति और विशेषाधिकारों को समान रूप से साझा करना सिखाएगा।
सभी के लिए विचार। हर कोई अपने हिस्से को बहुत छोटा समझेगा और वे
हमेशा एक-दूसरे से ईर्ष्या करते रहो, शिकायत करते रहो और एक-दूसरे पर हमला करते रहो। तुम पूछते हो कि कब
ऐसा होगा; ऐसा होगा, लेकिन पहले हमें इससे गुजरना होगा।
अलगाव की अवधि।"
मैंने उनसे पूछा, “एकांत से आपका क्या तात्पर्य है?” उन्होंने कहा, “अरे, वह अलगाव जो हर जगह व्याप्त है, विशेष रूप से हमारे युग में—यह
अभी पूरी तरह विकसित नहीं हुआ है, अभी अपनी सीमा तक नहीं पहुंचा है। हर एक के लिए
वह अपनी विशिष्टता को यथासंभव अलग रखने का प्रयास करता है, और इसे सुरक्षित रखना चाहता है।
अपने लिए जीवन की अधिकतम संभव परिपूर्णता प्राप्त करना; लेकिन इस बीच अपने सभी प्रयासों को जारी रखना।
इससे जीवन की पूर्णता प्राप्त नहीं होती बल्कि आत्म-विनाश होता है, क्योंकि इसके बजाय
आत्म-साक्षात्कार के मार्ग पर चलते हुए वह अंततः पूर्ण एकांत में पहुँच जाता है। समस्त मानवजाति
हमारी पीढ़ी अलग-अलग इकाइयों में बंट गई है, वे सब अलग-अलग रहते हैं, हर कोई अपनी-अपनी राह पर।
खांचा; हर कोई अलग-थलग रहता है, खुद को छुपाता है और जो कुछ उसके पास है उसे भी छुपाता है।
बाकी सब कुछ, और अंत में वह दूसरों से घृणा करने लगता है और उन्हें घृणा उत्पन्न करने लगता है।
वह स्वयं ही धन इकट्ठा करता है और सोचता है, 'मैं अब कितना शक्तिशाली हूँ और कैसे'
सुरक्षित,' और अपने पागलपन में वह यह नहीं समझता कि जितना अधिक वह ढेर लगाता है
जितना अधिक वह आत्म-विनाशकारी नपुंसकता में डूबता जाता है, उतना ही वह ऊपर उठता जाता है।
क्योंकि वह
वह केवल अपने दम पर निर्भर रहने और खुद को दूसरों से अलग रखने का आदी था।
पूरी तरह से; उसने खुद को दूसरों की मदद पर, मनुष्यों पर विश्वास न करने के लिए प्रशिक्षित किया है।

और मानवता में, और केवल इस डर से कांपता है कि कहीं वह अपना पैसा न खो दे।
उसने अपने लिए जो विशेषाधिकार हासिल किए हैं। आजकल हर जगह पुरुष
उन्होंने अपने उपहास में यह समझना बंद कर दिया है कि सच्ची सुरक्षा तो यही है।
यह सामाजिक एकजुटता में पाया जाता है, न कि एकाकी व्यक्तिगत प्रयास में। लेकिन यह
भयानक व्यक्तिवाद का अंत अवश्यंभावी है, और सब कुछ अचानक समाप्त हो जाएगा।
समझें कि वे कितनी अस्वाभाविक रूप से एक दूसरे से अलग हैं। यह होगा
समय की भावना को समझो, और लोग आश्चर्यचकित होंगे कि वे इतने लंबे समय तक बैठे रहे।
प्रकाश देखे बिना अंधकार। और फिर मनुष्य के पुत्र का चिन्ह।
आकाश में दिखाई देगा... लेकिन तब तक हमें झंडा बुलंद रखना होगा।
उड़ान भरना। कभी-कभी तो उसे अकेले ही ऐसा करना पड़ता है, और उसका व्यवहार ऐसा लगता है कि...
पागल होना, एक आदमी को उदाहरण पेश करना चाहिए, और इस तरह लोगों की आत्माओं को उनकी
एकांत, और उन्हें भाईचारे के किसी कार्य के लिए प्रेरित करना, कि महान विचार
हो सकता है कि मेरी मृत्यु न हो।"
हमारी शामें, एक के बाद एक, इतनी रोमांचक और उत्साहपूर्ण तरीके से बीतती रहीं।
जोशीली बातचीत। मैंने समाज से दूरी बना ली और अपने पड़ोसियों से बहुत कम मिलने लगा।
अक्सर। इसके अलावा, मेरा फैशन कुछ हद तक खत्म हो चुका था। मैं यह इसलिए नहीं कह रहा हूँ क्योंकि...
दोष, क्योंकि वे अब भी मुझसे प्यार करते थे और मेरे साथ अच्छे व्यवहार करते थे, लेकिन
इसमें कोई शक नहीं कि फैशन समाज में एक बड़ी ताकत है। मैंने शुरुआत की...
मैं अपने रहस्यमय आगंतुक को प्रशंसा की दृष्टि से देखता हूँ, क्योंकि वह अपने
मेरी बुद्धि से मुझे यह एहसास होने लगा कि वह किसी योजना पर विचार कर रहा था।
वह अपने हृदय को तल्लीन कर रहा था, और शायद किसी महान कार्य के लिए स्वयं को तैयार कर रहा था।
शायद वह
मुझे यह बात पसंद आई कि मैंने उसके रहस्य के बारे में जिज्ञासा नहीं दिखाई, न ही उसे जानने की कोशिश
की।
न तो सीधे सवाल से और न ही इशारों से। लेकिन अंत में मैंने देखा कि वह ऐसा प्रतीत हो रहा था
मुझे कुछ बताने की इच्छा के संकेत देने के लिए। यह काफी हद तक बढ़ गया था।
दरअसल, यह बात उनके मेरे पास आने के लगभग एक महीने बाद ही स्पष्ट हो गई थी।
एक बार उन्होंने मुझसे कहा, "क्या आप जानते हैं कि लोग बहुत जिज्ञासु होते हैं?"
शहर में हमारे बारे में लोग सोचते हैं कि मैं आपसे इतनी बार मिलने क्यों आता हूँ। लेकिन चलिए।
उन्हें आश्चर्य होगा, क्योंकि जल्द ही सब कुछ स्पष्ट हो जाएगा।
कभी-कभी उस पर असाधारण बेचैनी छा जाती थी, और
ऐसे मौकों पर वह लगभग हमेशा ही उठकर चला जाता था।
कभी-कभी वह मुझे लंबे समय तक तीखी निगाहों से देखता था, और मैं सोचती थी, "वह
अब वह सीधे कुछ कहेगा।" लेकिन वह अचानक बात करना शुरू कर देता था...
कुछ साधारण और जानी-पहचानी सी बात। वह अक्सर सिरदर्द की शिकायत भी करता था।
एक दिन, बिलकुल अप्रत्याशित रूप से, जब वह बात कर रहा था
बहुत उत्साह के साथ लंबे समय तक, मैंने उसे अचानक पीला पड़ते देखा, और उसका चेहरा
वह लगातार मेरी ओर घूरते हुए बेतहाशा काम कर रहा था।
मैंने कहा, "क्या बात है? क्या आप बीमार महसूस कर रहे हैं?" — वह अभी-अभी ठीक हुए थे।
सिरदर्द की शिकायत।
"मैं... क्या आप जानते हैं... मैंने किसी का खून किया है।" उसने यह कहा और उसका चेहरा चॉक की तरह
सफेद पड़ गया और वह मुस्कुराया। "वह ऐसा क्यों कर रहा है?"
मुस्कुरा रहे हो? यह विचार मेरे मन में कौंधा, इससे पहले कि मुझे कुछ समझ आता।
मैं भी पीला पड़ गया।
"तुम क्या कह रहे हो?" मैंने चिल्लाकर पूछा।

“देखिए,” उसने फीकी मुस्कान के साथ कहा, “मुझे इसके लिए कितना कुछ खोना पड़ा है।”
पहला शब्द कहो। अब मैंने कह दिया है, मुझे लगता है कि मैंने पहला कदम उठा लिया है और
जारी रहेगा।
काफी समय तक मुझे उस पर विश्वास नहीं हुआ, और मैंने उस पर कभी विश्वास नहीं किया।
उस समय, लेकिन ऐसा तभी हुआ जब वह लगातार तीन दिन मुझसे मिलने आया और मुझे बताया
मुझे इसके बारे में सब कुछ पता चल गया। मुझे लगा कि वह पागल है, लेकिन अंत में मैं मान गया।
मुझे गहरा दुख और आश्चर्य हुआ। उसका अपराध बहुत बड़ा और भयानक था।
चौदह साल पहले, उसने एक जमींदार की विधवा की हत्या कर दी थी।
एक धनी और सुंदर युवती जिसका हमारे कस्बे में घर था।
उसे उससे बेइंतहा प्यार हो गया, उसने अपनी भावनाओं का इज़हार किया और कोशिश की
उसे शादी के लिए राजी करना था। लेकिन वह पहले ही किसी और को अपना दिल दे चुकी थी।
वह व्यक्ति, जो कुलीन वंश का और सेना में उच्च पदस्थ अधिकारी था, उस समय उपस्थित था।
मोर्चे पर बिताए समय के बावजूद, वह उसके जल्द लौटने की उम्मीद कर रही थी।
उसने उसका प्रस्ताव ठुकरा दिया और उससे विनती की कि वह उससे मिलने न आए। उसके बाद
जब उसने उससे मिलना बंद कर दिया, तो उसने घर के बारे में अपने ज्ञान का फायदा उठाया।
रात में छत के रास्ते बगीचे से प्रवेश करना, पकड़े जाने का बहुत बड़ा खतरा है।
लेकिन, जैसा कि अक्सर होता है, असाधारण दुस्साहस के साथ किया गया अपराध
दूसरों की तुलना में अधिक सफल।
रोशनदान से अटारी में प्रवेश करते हुए, वह सीढ़ी से नीचे उतर गया।
यह जानते हुए कि इसके निचले हिस्से में स्थित दरवाजा कभी-कभी, इसके माध्यम से
नौकरों की लापरवाही के कारण दरवाजा खुला छोड़ दिया गया था। उसे उम्मीद थी कि ऐसा ही होगा, और
ऐसा ही हुआ।
था। वह अंधेरे में उसके बेडरूम की ओर बढ़ा, जहाँ एक रोशनी थी।
जल रहा था। मानो जानबूझकर, उसकी दोनों नौकरानियाँ जन्मदिन की पार्टी में चली गई थीं।
बिना अनुमति लिए उसी गली में पार्टी हुई। बाकी नौकर सो गए।
नौकरों के क्वार्टर में या भूतल पर स्थित रसोई में। उसका जुनून
उसे सोते हुए देखकर उसका गुस्सा भड़क उठा, और फिर बदले की भावना से भरी ईर्ष्या और क्रोध की
भावना जागृत हुई।
उसके दिल पर कब्जा कर लिया, और एक शराबी की तरह, बेकाबू होकर, वह
उसके दिल में चाकू घोंप दिया, ताकि वह चीख भी न सके। फिर
उसने अपनी शैतानी और आपराधिक चालाकी से यह साजिश रची कि संदेह उस पर केंद्रित हो जाए।
नौकरों ने। वह इतना नीच था कि उसने उसका पर्स छीन लिया, उसका सीना खोल दिया।
उसके तकिए के नीचे से चाबियाँ निकालना, और उसमें से कुछ चीजें लेना, यह सब करते हुए
यह किसी अनभिज्ञ नौकर द्वारा किया गया हो सकता है, जिसने मूल्यवान कागजात वहीं छोड़ दिए हों।
और उसने केवल पैसे लिए। उसने सोने की कुछ बड़ी वस्तुएँ ले लीं, लेकिन बाकी वहीं छोड़ दीं।
छोटी-छोटी वस्तुएँ जो दस गुना अधिक मूल्यवान थीं। वह उन्हें भी अपने साथ ले गया।
अपने लिए कुछ चीजें स्मृति चिन्ह के रूप में रख लूंगा, लेकिन उस बारे में बाद में बात करेंगे।
इस भयानक कृत्य को अंजाम देने के बाद, वह उसी रास्ते से लौट गया जिससे वह आया था।
न तो अगले दिन, जब अलार्म बजाया गया, और न ही उसके बाद कभी भी।
क्या उसके जीवन में कभी किसी ने सपने में भी यह सोचा था कि वह अपराधी हो सकता है? नहीं
उसके प्रति उसके प्रेम का सभी को ज्ञात था, क्योंकि वह हमेशा शांत और मौन रहता था।
और उसका कोई ऐसा मित्र नहीं था जिससे वह अपने दिल की बात कह सके।
उसे महज एक परिचित के रूप में देखा जाता था, और वह भी बहुत घनिष्ठ नहीं था।
जिस महिला की हत्या हुई थी, उससे मिलने वह पिछले दो सप्ताह से नहीं आया था।
उसके एक दास, प्योत्र पर तुरंत संदेह किया गया, और हर परिस्थिति

शक की पुष्टि हो गई। वह आदमी जानता था—दरअसल, उसकी प्रेमिका नहीं जानती थी।
इस तथ्य को छिपाना कि उसे अपने एक दास को सैनिक के रूप में भेजना पड़ा था
हमने उसे भेजने का फैसला किया, क्योंकि उसके कोई रिश्तेदार नहीं थे और उसका आचरण ठीक था।
असंतोषजनक। लोगों ने उसे गुस्से में आकर उसे जान से मारने की धमकी देते हुए सुना था।
जब वह शराबखाने में नशे में था। उसकी मृत्यु से दो दिन पहले, वह भाग गया था।
वह शहर में कहीं दूर, एक ऐसी जगह पर रुका हुआ था जिसके बारे में किसी को पता नहीं था। हत्या के अगले दिन,
वह शहर से बाहर जाने वाली सड़क पर नशे में धुत हालत में चाकू लिए हुए मिला।
उसकी जेब में कुछ था, और उसका दाहिना हाथ खून से सना हुआ था।
उसने दावा किया कि उसकी नाक से खून बह रहा था, लेकिन किसी ने उस पर विश्वास नहीं किया।
नौकरानियों ने कबूल किया कि वे एक पार्टी में गई थीं और गली का दरवाजा खुला हुआ था।
उनके लौटने तक इसे खुला छोड़ दिया गया था। और इसी तरह की कई और बातें सामने आईं।
रोशनी, जिससे निर्दोष नौकर पर संदेह पैदा होता है।
उन्होंने उसे गिरफ्तार कर लिया और उस पर हत्या का मुकदमा चलाया गया; लेकिन एक हफ्ते बाद
गिरफ्तारी के बाद, कैदी को बुखार हो गया और वह बेहोशी की हालत में मर गया।
अस्पताल। वहीं मामला खत्म हो गया और न्यायाधीशों और अधिकारियों ने...
कस्बे में हर कोई इस बात से आश्वस्त था कि अपराध हुआ था।
यह अपराध अस्पताल में मृत नौकर के अलावा किसी और ने नहीं किया था।
उसके बाद सजा शुरू हुई।
मेरे रहस्यमय आगंतुक, जो अब मेरे दोस्त हैं, ने मुझे बताया कि पहले तो वह ऐसा नहीं था।
अंतरात्मा की पीड़ा से जरा भी परेशान नहीं। वह लंबे समय तक दुखी रहा।
समय, लेकिन उस कारण से नहीं; बल्कि इस पछतावे से कि उसने उसे मार डाला था
जिस स्त्री से वह प्रेम करता था, वह अब इस दुनिया में नहीं है, उसे मारकर उसने अपने आप को मार डाला।
प्यार, जब तक उसके रगों में जुनून की आग जल रही थी। लेकिन निर्दोषों का
उसने अपने ही साथी प्राणी की हत्या में जो खून बहाया था, उसके बारे में उसने शायद ही सोचा था।
यह सोचकर कि उसकी शिकार किसी और आदमी की पत्नी बन सकती थी
यह बात उसे असहनीय लगी, और इसलिए लंबे समय तक वह अपने विश्वास में डूबा रहा।
उसे अंतरात्मा से यह आभास हो रहा था कि वह इसके अलावा कुछ और कर ही नहीं सकता था।
पहले तो वह नौकर की गिरफ्तारी से चिंतित था, लेकिन उसकी बीमारी और
मृत्यु ने जल्द ही उसके मन को शांति प्रदान की, क्योंकि उस व्यक्ति की मृत्यु स्पष्ट रूप से (जैसा कि उसने कहा था)
(उस समय जो महसूस हुआ) उसकी गिरफ्तारी या डर के कारण नहीं, बल्कि उसे हुई एक कंपकंपी के कारण।
यह तस्वीर उस दिन ली गई थी जब वह भाग गया था, और पूरी रात नशे में धुत पड़ा रहा था।
गीली ज़मीन। पैसों और अन्य चीज़ों की चोरी ने उसे परेशान कर दिया था।
इसका कोई खास कारण नहीं था, क्योंकि उसने तर्क दिया कि चोरी लाभ के लिए नहीं बल्कि किसी अन्य उद्देश्य के लिए की गई थी।
संदेह से बचने के लिए। चोरी की गई राशि कम थी, और उसने कुछ ही समय बाद
उन्होंने पूरी राशि, और उससे भी कहीं अधिक, निधि के लिए दान कर दी।
कस्बे में एक अनाथालय चलाना। उसने यह जानबूझकर किया ताकि वह अपना जीवन यापन कर सके।
चोरी के बारे में अंतरात्मा को शांति मिली, और यह एक उल्लेखनीय तथ्य है कि लंबे समय तक
उस समय उन्हें सचमुच शांति मिली थी—उन्होंने खुद मुझे यह बताया था। फिर वे अंदर चले गए।
सेना में लंबे समय तक सक्रिय रहने के बाद, उन्होंने एक कठिन कार्य के लिए स्वेच्छा से आगे आए।
और श्रमसाध्य कर्तव्य, जिसमें उन्हें दो साल लगे, और एक ऐसे व्यक्ति होने के नाते

दृढ़ इच्छाशक्ति के कारण वह अतीत को लगभग भूल चुका था। जब भी उसे अतीत याद आता, वह उसे भुलाने की कोशिश करता।
इसके बारे में बिल्कुल भी न सोचें। वे परोपकार के कार्यों में भी सक्रिय हो गए, उन्होंने स्थापना की और शहर में कई संस्थानों को बनाए रखने में मदद की, और बहुत कुछ किया।
दो राजधानियों में रहे, और मॉस्को और सेंट पीटर्सबर्ग दोनों में सदस्य चुने गए।
परोपकारी संस्थाएँ।
लेकिन अंततः, वह अतीत और उसके तनाव के बारे में सोचने लगा।
यह सब उसके लिए असहनीय था। फिर वह एक सुंदर और बुद्धिमान लड़की की ओर आकर्षित हो गया।
और जल्द ही उसने उससे शादी कर ली, इस उम्मीद में कि शादी से उसका अकेलापन दूर हो जाएगा।
अवसाद से उबरने और नए जीवन में प्रवेश करके तथा अपने जीवन को सावधानीपूर्वक जीने से,
अपनी पत्नी और बच्चों के प्रति कर्तव्य निभाते हुए, वह पुरानी यादों से दूर भागता था।
पूरी तरह से। लेकिन जो उसने उम्मीद की थी, ठीक उसके विपरीत हुआ।
शादी के पहले महीने से ही वह लगातार परेशान रहने लगा था।
यह विचार, "मेरी पत्नी मुझसे प्यार करती है—लेकिन अगर उसे पता चल जाए तो क्या होगा?" जब उसने पहली बार
जब उसने उसे बताया कि वह जल्द ही उसे एक बच्चे को जन्म देगी, तो वह परेशान हो गया। "मैं
मैंने जीवन दिया है, लेकिन मैंने जीवन छीना है।" बच्चे आए। "मैं उन्हें प्यार करने की हिम्मत कैसे कर सकता हूँ?"
उन्हें सिखाना और शिक्षित करना, मैं उनसे सद्गुणों के बारे में कैसे बात करूँ? मैंने त्याग दिया है
खून।" वे शानदार बच्चे थे, वह उन्हें दुलारना चाहता था; "और मैं
मैं उनके मासूम और सीधे-सादे चेहरों को देख भी नहीं सकता, मैं इसके लायक नहीं हूँ।
अंततः वह खून के भयानक और अशुभ निशानों से सताने लगा।
उसके द्वारा मारे गए पीड़ित, उसके द्वारा नष्ट किए गए युवा जीवन से, उस रक्त से जो
उसने बदले की भावना से चीख मारी। उसे भयानक सपने आने लगे थे। लेकिन, एक
धैर्यवान व्यक्ति होने के नाते, उन्होंने लंबे समय तक अपने कष्टों को सहन किया, यह सोचते हुए: "मैं
इस गुप्त पीड़ा से सब कुछ का प्रायश्चित हो जाएगा। लेकिन वह आशा भी व्यर्थ थी;
जितना समय बीतता गया, उसकी पीड़ा उतनी ही तीव्र होती गई।
समाज में उन्हें उनकी सक्रिय परोपकारिता के लिए सम्मान प्राप्त था, हालाँकि हर
उनके कठोर और गंभीर स्वभाव से हर कोई दंग रह जाता था। लेकिन जितना अधिक वह
जितना अधिक सम्मान मिलता था, उतना ही उसके लिए यह असहनीय होता जा रहा था। उसने मुझसे स्वीकार किया कि वह
उसके मन में आत्महत्या के विचार आने लगे थे। लेकिन उसे एक और बात सताने लगी।
विचार—एक ऐसा विचार जिसे उन्होंने पहले असंभव माना था और
यह अकल्पनीय था, हालांकि अंततः इसने उसके दिल पर इस कदर कब्जा कर लिया कि वह इसे सहन नहीं कर सका।
इसे भुला दो। उसने उठ खड़े होने, बाहर जाने और सबके सामने कबूल करने का सपना देखा।
सभी पुरुषों में से, उसने ही हत्या की थी। तीन साल से यह सपना उसे सता रहा था।
उसका पीछा किया, अलग-अलग रूपों में उसे सताया। अंततः उसने अपने विश्वास से उसे जकड़ लिया।
पूरे मन से उसे विश्वास था कि यदि वह अपना अपराध स्वीकार कर ले, तो उसकी आत्मा को शांति मिलेगी और
वह हमेशा के लिए शांति में रहेगा। लेकिन इस विश्वास ने उसके दिल को भय से भर दिया, क्योंकि
वह इसे कैसे अंजाम दे सकता था? और फिर मेरे द्वंद्वयुद्ध में जो हुआ, वह हुआ।
"तुम्हें देखकर मैंने अपना मन बना लिया है।"
मैंने उसकी ओर देखा।
मैंने हाथ जोड़कर रोते हुए कहा, "क्या यह संभव है कि इतनी तुच्छ बात हो जाए?"

क्या इस घटना से आपमें ऐसा संकल्प उत्पन्न हो सकता है?
उन्होंने कहा, "पिछले तीन वर्षों से मेरा संकल्प और मजबूत होता जा रहा है।"
उन्होंने उत्तर दिया, “और आपकी कहानी ने तो बस इसे अंतिम रूप दे दिया। आपको देखकर, मैं
मैंने खुद को दोषी ठहराया और तुमसे ईर्ष्या की," उसने लगभग उदास स्वर में मुझसे कहा।
"लेकिन आप विश्वास नहीं करेंगे," मैंने कहा; "यह चौदह साल पहले की बात है।"
“मेरे पास सबूत हैं, पुख्ता सबूत। मैं उन्हें दिखाऊंगी।” फिर मैं रो पड़ी और मैंने उसे चूम लिया।
“मुझे एक बात बताओ, बस एक बात,” उसने कहा (जैसे कि सब कुछ इसी पर निर्भर करता हो)।
मुझ पर), “मेरी पत्नी, मेरे बच्चे! मेरी पत्नी शोक से मर सकती है, और यद्यपि
मेरे बच्चे अपना पद और संपत्ति नहीं खोएंगे, वे एक अपराधी के होंगे।
बच्चों के लिए और हमेशा के लिए! और कैसी यादें, मेरी कैसी यादें हमेशा रहेंगी
उनके दिलों में अपनी छाप छोड़ जाओ!
मेंने कुछ नहीं कहा।
और उनसे बिछड़ना, उन्हें हमेशा के लिए छोड़ देना? यह हमेशा के लिए है, तुम।
हमेशा के लिए जान लो!
मैं चुपचाप बैठी रही और मन ही मन प्रार्थना दोहराती रही। अंत में जब मैं उठी तो मुझे डर लग रहा था। "तो?"
उसने मेरी ओर देखा।
मैंने कहा, “जाओ, कबूल करो। सब कुछ बीत जाता है, केवल सत्य ही शेष रहता है।”
जब आपके बच्चे बड़े होंगे, तो वे आपके इस महान व्यक्तित्व को समझेंगे।
संकल्प।"
उस समय वह मुझे छोड़कर चला गया, मानो उसने अपना मन बना लिया हो। फिर भी
दो सप्ताह से अधिक समय बाद भी, वह हर शाम मेरे पास आता था, अभी भी
खुद को तैयार कर रहा था, फिर भी बात कहने में असमर्थ था। उसने मुझे
दिल का दर्द। एक दिन वह दृढ़ निश्चय के साथ आएगा और जोश से कहेगा:
मुझे पता है कि मेरे लिए वह पल स्वर्ग होगा, स्वर्ग, जिस क्षण मैं अपने पापों को स्वीकार करूंगा।
चौदह साल से मैं नरक में हूँ। मैं कष्ट सहना चाहता हूँ। मैं अपनी पीड़ा स्वीकार करूँगा।
सजा भुगतो और जीना शुरू करो। तुम दुनिया में ऐसे ही आगे बढ़ सकते हो।
गलत, लेकिन अब पीछे मुड़ने का कोई रास्ता नहीं है। अब मैं अपने पड़ोसी से प्यार करने की हिम्मत नहीं कर सकता।
मेरे अपने बच्चे भी। हे भगवान, शायद मेरे बच्चे समझ जाएंगे।
मुझे जो भी दंड मिला है, वह मुझे दोषी नहीं ठहराएगा! ईश्वर मेरे साथ नहीं है।
शक्ति, लेकिन सच्चाई में।
मैंने उनसे कहा, “तुम्हारे बलिदान को सब समझेंगे, भले ही तुरंत न समझ पाएं।”
वे बाद में समझ जाएंगे; क्योंकि तुमने सत्य की सेवा की है, उच्चतर सत्य की, न कि
पृथ्वी का।"
और वह संतुष्ट होकर चला जाता, लेकिन अगले दिन वह
फिर आओ, कड़वे, फीके, व्यंग्यात्मक।
“जब भी मैं तुम्हारे पास आता हूँ, तुम मुझे इतनी जिज्ञासा भरी निगाहों से देखते हो मानो
यह कहना कि, 'उसने अभी तक अपना जुर्म कबूल नहीं किया है!' ज़रा रुकिए, मुझे इतना ज़्यादा तिरस्कार मत कीजिए।
यह उतना आसान काम नहीं है जितना आप सोचते हैं। शायद मैं ऐसा नहीं करूँगा।
अगर आप ऐसा करते भी हैं, तो आप मेरे खिलाफ मुखबिरी तो नहीं करेंगे?
और उसे अनुचित जिज्ञासा से देखने के बजाय, मुझे डर लग रहा था कि...
मैं उसकी तरफ बिल्कुल भी नहीं देख रही थी। मैं चिंता से काफी बीमार थी, और मेरा दिल भरा हुआ था।
आंसू। मुझे रात को नींद नहीं आई।
“मैं अभी अपनी पत्नी के पास से आया हूँ,” उसने आगे कहा। “क्या आप समझते हैं?”

‘पत्नी’ शब्द का क्या अर्थ है? जब मैं बाहर गई, तो बच्चों ने मुझे पुकारा।
अलविदा पिताजी, जल्दी वापस जाइए और बच्चों की पत्रिका पढ़िए।
हमें।’ नहीं, तुम यह नहीं समझते! कोई भी व्यक्ति दूसरे के ज्ञान से नहीं सीख सकता।
अफसोस।"
उसकी आँखें चमक रही थीं, उसके होंठ फड़क रहे थे। अचानक उसने प्रहार किया।
उसने मुट्ठी से मेज पर इतनी जोर से मारा कि उस पर रखी हर चीज नाचने लगी—यह पहली बार था।
उन्होंने ऐसा काम किया था, जबकि वे इतने सौम्य स्वभाव के व्यक्ति थे।
“लेकिन क्या मुझे ऐसा करने की ज़रूरत है?” उसने हैरानी से कहा, “क्या मुझे ऐसा करना ही होगा? किसी को भी दोषी नहीं ठहराया गया है।”
मेरी जगह किसी को साइबेरिया नहीं भेजा गया, उस आदमी की बुखार से मौत हो गई।
मैंने जो रक्त बहाया है, उसके लिए मुझे अपने कष्टों से दंड मिला है। और मैं ऐसा नहीं होने दूंगा।
मैंने विश्वास किया, लेकिन वे मेरे सबूतों पर विश्वास नहीं करेंगे। क्या मुझे स्वीकार करना चाहिए? क्या मुझे स्वीकार करना चाहिए? मैं हूँ
मैं अपने द्वारा बहाए गए रक्त के लिए जीवन भर कष्ट भोगने को तैयार हूँ, यदि केवल
पत्नी और बच्चों को शायद बख्श दिया जाए। क्या मेरे साथ उन्हें बर्बाद करना न्यायसंगत होगा?
क्या हम कोई गलती तो नहीं कर रहे हैं? इस मामले में सही क्या है? और क्या लोग
क्या वे इसे पहचानेंगे, क्या वे इसकी सराहना करेंगे, क्या वे इसका सम्मान करेंगे?
“हे भगवान!” मैंने मन ही मन सोचा, “वह दूसरों के बारे में सोच रहा है।”
ऐसे क्षण में सम्मान! और मुझे उस समय उसके लिए इतना दुख हुआ कि मुझे लगता है कि मैं
अगर इससे उसे सांत्वना मिलती तो मैं भी उसी भाग्य को साझा कर लेता। मैंने देखा कि वह था
वह पूरी तरह से बौखला गया था। मैं स्तब्ध रह गया, अपने दिल और दिमाग दोनों से यह महसूस करते हुए।
इस तरह के प्रस्ताव का क्या अर्थ था।
“मेरा भाग्य तय करो!” उसने फिर से कहा।
“जाओ और कबूल करो,” मैंने उससे फुसफुसाकर कहा। मेरी आवाज लड़खड़ा गई, लेकिन मैं
उसने दृढ़ता से फुसफुसाया। मैंने मेज से नया नियम उठाया,
मैंने उन्हें रूसी अनुवाद दिखाया और संत जॉन के सुसमाचार का अध्याय 12 दिखाया।
श्लोक 24:
मैं तुमसे सच कहता हूँ, जब तक गेहूँ का एक दाना भी गिर न जाए...
यदि वह जमीन में दबकर मर जाए, तो वह अकेली रह जाती है; परन्तु यदि वह मर जाए, तो बहुत फल देती है।
मैं अभी वही श्लोक पढ़ ही रहा था कि वह अंदर आया। उसने उसे पढ़ा। "यह सच है," उसने कहा, लेकिन उसके चेहरे पर कड़वाहट भरी मुस्कान थी। "ये सब बातें कितनी भयानक हैं!"
“आपको उन किताबों में जो मिलेगा,” उन्होंने कुछ देर रुककर कहा। “इसे थोपना काफी आसान है।”
उन्हें एक ही पृष्ठ पर अंकित किया गया है। और उन्हें किसने लिखा है? क्या उन्हें किसी ने लिखा होगा? पुरुष?
मैंने कहा, “पवित्र आत्मा ने इन्हें लिखा है।”
“तुम्हारे लिए बकवास करना आसान है,” उसने फिर मुस्कुराते हुए कहा, इस बार लगभग पूरी मुस्कान के साथ।
नफरत।
मैंने दोबारा किताब उठाई, उसे दूसरी जगह से खोला और उसे दिखाया...
इब्रानियों को पत्र, अध्याय 10, पद 31। उन्होंने पढ़ा:
“जीवित ईश्वर के हाथों में पड़ना एक भयानक बात है।” उसने इसे पढ़ा और किताब को फेंक दिया। वह कांप रहा था।
ऊपर।
“बहुत ही खराब संदेश,” उन्होंने कहा। “इसमें कोई शक नहीं कि आपने गलत संदेश चुना है।”

"उपयुक्त वाले।" वह कुर्सी से उठा। "अच्छा!" उसने कहा, "शायद अलविदा।"
मैं दोबारा नहीं आऊंगा... हम स्वर्ग में मिलेंगे। मैं यही कहता आया हूँ।
चौदह वर्ष 'जीवित ईश्वर के हाथों में', यही सोचना चाहिए।
उन चौदह वर्षों में से। कल मैं उन हाथों से विनती करूँगा कि वे मुझे जाने दें।
जाना।"
मैं उसे अपनी बाहों में भरकर चूमना चाहती थी, लेकिन हिम्मत नहीं कर पाई—उसकी
उसका चेहरा विकृत और उदास था। वह चला गया।
“हे भगवान!” मैंने सोचा, “अब उसे किस चीज का सामना करना पड़ेगा!” मैं अपने पैरों पर गिर पड़ा।
उन्होंने प्रतिमा के सामने घुटने टेके और ईश्वर की पवित्र माता के समक्ष उनके लिए रोए।
हमारा त्वरित रक्षक और सहायक। मैं आधे घंटे तक रोते हुए प्रार्थना करती रही, और यह
काफी रात हो चुकी थी, लगभग आधी रात। अचानक मैंने दरवाजा खुलते देखा और वह अंदर आया।
फिर से। मुझे आश्चर्य हुआ।
मैंने उससे पूछा, "तुम कहाँ थे?"
उन्होंने कहा, “मुझे लगता है कि मैं कुछ भूल गया हूँ... अपना रुमाल।”
सोचो... खैर, भले ही मैं कुछ भूला न हूँ, फिर भी मुझे थोड़ी देर रुक जाना चाहिए।"
वह बैठ गया। मैं उसके ऊपर खड़ा हो गया।
“तुम भी बैठ जाओ,” उसने कहा।
मैं बैठ गया। हम दो मिनट तक स्थिर बैठे रहे; वह मुझे ध्यान से देखता रहा और
अचानक मुस्कुराया—मुझे याद आया—फिर वह उठा और मुझे गले लगा लिया
उसने मुझे प्यार से गले लगाया और चूमा।
“याद है,” उसने कहा, “मैं तुम्हारे पास दूसरी बार कैसे आया था? क्या तुम्हें याद है?”
सुनो, याद रखना!
और वह बाहर चला गया।
मैंने सोचा, "कल।"
और ऐसा ही हुआ। उस शाम मुझे नहीं पता था कि अगला दिन उसका था।
जन्मदिन था। मैं पिछले कुछ दिनों से बाहर नहीं निकला था, इसलिए मुझे बाहर जाने का कोई मौका नहीं
मिला।
यह बात किसी से भी सुनने को मिलती थी। उस दिन उनके यहाँ हमेशा बहुत बड़ी सभा होती थी।
कस्बे के सभी लोग वहाँ गए थे। इस बार भी ऐसा ही हुआ। रात के खाने के बाद उसने
वह हाथ में एक औपचारिक कागज़ लिए कमरे के बीचोंबीच आ गया।
अपने विभाग के प्रमुख को, जो वहां उपस्थित थे, यह घोषणा।
उन्होंने पूरी सभा के सामने एक घोषणापत्र पढ़कर सुनाया। इसमें एक पूर्ण विवरण था।
अपराध का पूरा ब्यौरा, हर एक बात विस्तार से।
“मैंने एक राक्षस की तरह पुरुषों से खुद को अलग कर लिया था। ईश्वर ने मुझसे मुलाकात की है,” उन्होंने
कहा।
अंत में उसने कहा, “मैं अपने पाप का दंड भुगतना चाहता हूँ!”
फिर उसने वे सारी चीजें निकालीं और मेज पर रख दीं जो उसके पास थीं।
चौदह वर्षों तक अपने पास रखते हुए, जिसे वह अपने अपराध का सबूत मानता था,
मृत महिला के गहने जो उसने ध्यान भटकाने के लिए चुराए थे
संदेह, एक क्रॉस और उसके गले से लिया गया एक लॉकेट जिसमें उसका चित्र था
लॉकेट में उसकी मंगेतर, उसकी नोटबुक और दो पत्र; एक पत्र उसके द्वारा लिखा गया था।
अपने मंगेतर से यह कहते हुए कि वह जल्द ही उसके साथ होगा, और उसका अधूरा काम
जवाब अगले दिन भेजने के लिए मेज पर छोड़ दिया गया था। वह इन दोनों को ले गया।
किसलिए लिखे गए थे? उन्होंने चौदह साल बाद तक उन्हें क्यों संभाल कर रखा था?
उन्हें उसके खिलाफ सबूत के तौर पर नष्ट करने के बजाय?

और यही हुआ: हर कोई हैरान और भयभीत था।
सभी ने इस बात पर विश्वास करने से इनकार कर दिया और सोचा कि वह पागल हो गया है, हालांकि
सभी ने बड़ी उत्सुकता से सुना। कुछ दिनों बाद इस पर पूरी तरह से निर्णय ले लिया गया।
और हर घर में यही सहमति थी कि वह बेचारा आदमी पागल था।
अधिकारियों के पास मामले को अपने हाथ में लेने से इनकार करने का विकल्प नहीं था, लेकिन उन्होंने भी इसे छोड़ दिया।
हालांकि उन गहनों और पत्रों ने उन्हें सोचने पर मजबूर कर दिया, फिर भी उन्होंने फैसला किया कि भले ही यदि वे प्रामाणिक साबित होते हैं, तो उन पर कोई आरोप नहीं लगाया जा सकता है।
अकेले। इसके अलावा, हो सकता है उसने उसे ये चीजें एक दोस्त के तौर पर दी हों, या पूछा हो।
उसे उनकी देखभाल करने के लिए कहा गया था। हालाँकि, बाद में मुझे पता चला कि
इन वस्तुओं की प्रामाणिकता की पुष्टि उनके मित्रों और रिश्तेदारों द्वारा की गई।
एक महिला की हत्या कर दी गई थी, और इस बारे में कोई संदेह नहीं था। फिर भी कुछ नहीं।
आखिरकार, ऐसा होना ही था।
पांच दिन बाद, सभी को पता चल गया था कि वह बीमार है और उसकी जान खतरे में है।
खतरा। मैं उसकी बीमारी की प्रकृति नहीं समझा सकता, उन्होंने कहा कि यह एक
हृदय की बीमारी। लेकिन यह पता चला कि डॉक्टरों ने
अपनी पत्नी के कहने पर उसने अपनी मानसिक स्थिति की भी जांच करवाई, और वह आया था
इस निष्कर्ष पर कि यह पागलपन का मामला था। हालाँकि, मैंने कुछ भी प्रकट नहीं किया।
लोग मुझसे सवाल करने के लिए दौड़ पड़े। लेकिन जब मैं उनसे मिलने जाना चाहता था, तो मुझे एक
उन्हें लंबे समय तक ऐसा करने से मना किया गया था, खासकर उनकी पत्नी द्वारा।
“तुम्हारे कारण ही वह बीमार हुआ है,” उसने मुझसे कहा; “वह
वह हमेशा उदास रहता था, लेकिन पिछले एक साल से लोगों ने गौर किया कि वह कुछ अजीब तरह से बदल गया था।
वह उत्तेजित हो जाता था और अजीबोगरीब हरकतें करता था, और अब तुम ही उसके विनाश का कारण बन गए हो।
आपके उपदेश ने उसे इस स्थिति तक पहुँचाया है; पिछले एक महीने से वह हमेशा
तुम्हारे साथ।"
वास्तव में, न केवल उसकी पत्नी बल्कि पूरा शहर मेरे खिलाफ हो गया था।
और उन्होंने मुझे दोषी ठहराया। उन्होंने कहा, "यह सब तुम्हारी वजह से हुआ है।" मैं चुप रहा और वास्तव में मैं हृदय से प्रसन्न हुआ, क्योंकि मैंने स्पष्ट रूप से उस व्यक्ति पर ईश्वर की दया देखी जिसने अपना रुख बदल लिया था।
उसने खुद को ही दंडित किया। मुझे उसकी इस पागलपन पर विश्वास नहीं हो रहा था।
आखिरकार उन्होंने मुझे उनसे मिलने दिया, उन्होंने मुझसे अलविदा कहने पर जोर दिया।
उसके पास गया और तुरंत देखा कि न केवल उसके दिन, बल्कि उसके घंटे भी
गिनती की गई। वह कमजोर था, पीला पड़ गया था, उसके हाथ कांप रहे थे, वह हांफ रहा था।
उसकी सांसें थम नहीं रही थीं, लेकिन उसका चेहरा कोमल और प्रसन्न भावों से भरा हुआ था।
“हो गया!” उसने कहा। “मैं तुम्हें देखने के लिए बहुत समय से तरस रहा था, क्यों नहीं मिला?”
तुम आओ?"
मैंने उसे यह नहीं बताया कि वे मुझे उससे मिलने नहीं देंगे। “ईश्वर ने मुझ पर दया की है और मुझे अपने पास बुला रहा है। मैं जानता हूँ कि मैं
मैं मर रहा हूँ, लेकिन इतने वर्षों बाद पहली बार मुझे खुशी और शांति का अनुभव हो रहा है।
जिस क्षण मैंने अपना कर्तव्य पूरा कर लिया, उस क्षण से मेरे दिल को स्वर्ग जैसा आनंद मिला।
अब मुझे अपने बच्चों से प्यार करने और उन्हें चूमने की हिम्मत है। न तो मेरी पत्नी और न ही...
न तो न्यायाधीशों ने, न ही किसी और ने इस पर विश्वास किया है। मेरे बच्चे भी इस पर कभी विश्वास नहीं करेंगे।

दोनों में से कोई भी नहीं। मुझे उसमें ईश्वर की दया दिखाई देती है। मैं मर जाऊँगा, और मेरा नाम होगा
उन पर कोई दाग नहीं है। और अब मुझे ईश्वर निकट महसूस होता है, मेरा हृदय आनंदित होता है जैसे कि
हे भगवान... मैंने अपना कर्तव्य पूरा कर दिया है।
वह बोल नहीं पा रहा था, उसकी सांस फूल रही थी, उसने मेरा हाथ दबाया
उन्होंने गर्मजोशी से मेरी ओर देखा। हमारी बातचीत ज्यादा देर तक नहीं चली, उनकी पत्नी ने बात जारी
रखी।
वह हमारी ओर झाँक रहा था। लेकिन उसके पास मुझसे फुसफुसाने का समय था:
“क्या तुम्हें याद है कि मैं उस दूसरी बार तुम्हारे पास कैसे वापस आया था?”
आधी रात? मैंने तुमसे कहा था कि याद रखना। तुम्हें पता है मैं किसलिए वापस आया? मैं
मैं तुम्हें मारने आया हूँ!
मैने शुरू किया।
मैं तुमसे अलग होकर अंधेरे में चला गया, मैं इधर-उधर भटकता रहा...
गलियों में, खुद से जूझते हुए। और अचानक मुझे तुमसे नफरत होने लगी ताकि मैं
मैं इसे बर्दाश्त नहीं कर पा रही थी। अब, मैंने सोचा, वही मुझे बांधे रखता है, और वही मेरा न्यायाधीश है।
मैं कल अपनी सजा भुगतने से इनकार नहीं कर सकता, क्योंकि वह सब कुछ जानता है।
ऐसा नहीं था कि मुझे इस बात का डर था कि तुम मुझे धोखा दोगे (मैंने कभी ऐसा सोचा भी नहीं था)।
लेकिन मैंने सोचा, 'अगर मैं कबूल नहीं करूंगी तो मैं उसका सामना कैसे कर पाऊंगी?' और अगर
अगर तुम दुनिया के दूसरे छोर पर होते, लेकिन जीवित होते, तो सब कुछ बदल जाता।
वही बात, यह सोचना असहनीय था कि तुम यह जानते हुए भी जीवित हो।
हर बात पर मुझे दोषी ठहराते हुए। मैं तुमसे इतनी नफरत करता था मानो तुम ही इसका कारण हो।
जैसे कि हर चीज़ के लिए तुम ही ज़िम्मेदार हो। तब मैं तुम्हारे पास वापस आया।
मुझे याद आया कि तुम्हारी मेज पर एक खंजर पड़ा था। मैं बैठ गया और
मैंने तुम्हें बैठने के लिए कहा, और पूरे एक मिनट तक मैं सोचता रहा। अगर मैंने तुम्हें मार डाला होता
मुझे उस हत्या से बर्बाद हो जाना चाहिए था, भले ही मैंने अपना जुर्म कबूल न किया होता।
दूसरे के बारे में। लेकिन मैंने इसके बारे में बिल्कुल नहीं सोचा था, और मैं इसके बारे में सोचना भी नहीं चाहता
था।
उस पल, मुझे सिर्फ तुमसे नफरत थी और मैं तुमसे बदला लेना चाहती थी।
हर चीज़ के लिए। प्रभु ने मेरे हृदय में बैठे शैतान को परास्त कर दिया। लेकिन मुझे आपको बताना है
तुम, तुम मौत के इतने करीब कभी नहीं थे।
एक सप्ताह बाद उनकी मृत्यु हो गई। पूरा शहर उनके अंतिम संस्कार में शामिल हुआ।
मुख्य पुजारी ने भावपूर्ण भाषण दिया। सभी ने उस भयानक बीमारी पर शोक व्यक्त किया।
जिसने उसकी उम्र कम कर दी थी। लेकिन पूरा शहर मेरे खिलाफ विद्रोह कर रहा था।
अंत्येष्टि के बाद, लोग मुझसे मिलने से भी इनकार करने लगे। कुछ लोग, शुरू में तो कुछ ही लोग।
और बाद में तो और भी ज्यादा, लोग वास्तव में उसकी कहानी की सच्चाई पर विश्वास करने लगे, और
वे मुझसे मिलने आए और बड़ी दिलचस्पी और उत्सुकता से मुझसे सवाल पूछे, क्योंकि
मनुष्य धर्मी लोगों के पतन और अपमान को देखकर प्रसन्न होता है। लेकिन मैंने अपने हाथ रोके रखे।
जीभ, और उसके तुरंत बाद, मैंने शहर छोड़ दिया, और पांच महीने बाद
ईश्वर की कृपा से मैंने सुरक्षित और आशीर्वादपूर्ण मार्ग पर कदम रखा, अदृश्य की स्तुति करते हुए।
वह उंगली जिसने मुझे इतनी स्पष्टता से उस ओर निर्देशित किया था। लेकिन मुझे अपनी प्रार्थना में याद है।
आज तक, ईश्वर का सेवक मिहैल, जिसने इतना कष्ट सहा।

5 संभवतः वह सार्वजनिक घटना ज़ार के विरुद्ध डेकाब्रिस्ट षड्यंत्र थी,
दिसंबर 1825, जिसमें रूस के सबसे प्रतिष्ठित व्यक्ति शामिल थे।—अनुवादक की टिप्पणी।

अध्याय 3

वार्तालाप और उपदेश
फादर ज़ोसिमा

(ई) रूसी भिक्षु और उनका संभावित महत्व

हे पिताओं और शिक्षकों, भिक्षु क्या है? सुसंस्कृत जगत में आजकल कुछ लोग इस शब्द का उपहास उड़ाते हैं, तो कुछ इसे गाली के रूप में इस्तेमाल करते हैं, और भिक्षु के प्रति यह तिरस्कार बढ़ता ही जा रहा है। यह सच है, अफसोस की बात है, सच है कि भिक्षुओं में भी बहुत से आलसी, पेटू, व्यभिचारी और उद्दंड भिखारी हैं। शिक्षित लोग इन पर उंगली उठाते हुए कहते हैं, "तुम निकम्मे हो, समाज के निकम्मे सदस्य हो, दूसरों के श्रम पर जीते हो, बेशर्म भिखारी हो।" फिर भी कितने ही नम्र और दीन भिक्षु हैं, जो एकांत और शांति में गहन प्रार्थना के लिए तरसते हैं! इन पर कम ध्यान दिया जाता है, या इन्हें अनदेखा कर दिया जाता है। और लोग कितने आश्चर्यचकित होंगे यदि मैं कहूँ कि एकांत प्रार्थना के लिए तरसने वाले इन नम्र भिक्षुओं से ही शायद एक बार फिर रूस का उद्धार होगा! क्योंकि वे वास्तव में शांति और सन्नाटे में "दिन, घंटे, महीने और वर्ष" के लिए तैयार किए जाते हैं। इस बीच, अपने एकांत में, वे प्राचीन काल के धर्मपिताओं, प्रेरितों और शहीदों के समय से चली आ रही ईश्वर के सत्य की पवित्रता में, मसीह की सुंदर और निष्कलंक छवि को बनाए रखते हैं। और जब समय आएगा, तो वे इसे संसार के लड़खड़ाते धर्मों के सामने प्रकट करेंगे। यह एक महान विचार है। वह तारा पूरब से उदय होगा।

भिक्षु के बारे में मेरा यही विचार है, और क्या यह गलत है? क्या यह कुछ ज्यादा ही घमंडी है? ज़रा देखिए। सांसारिक और वे सभी जो स्वयं को परमेश्वर के लोगों से ऊपर समझते हैं, क्या उनमें परमेश्वर की छवि और उनका सत्य विकृत नहीं हो गया है? उनके पास विज्ञान है; लेकिन विज्ञान में इंद्रियों द्वारा अनुभव की जाने वाली वस्तु के अलावा कुछ नहीं है। आध्यात्मिक जगत, मनुष्य के अस्तित्व का उच्चतर भाग, पूरी तरह से अस्वीकार कर दिया गया है, एक प्रकार की विजय के साथ, यहाँ तक कि घृणा के साथ भी। दुनिया ने स्वतंत्रता के शासन की घोषणा की है, विशेष रूप से हाल के दिनों में, लेकिन उनकी इस स्वतंत्रता में हमें क्या दिखाई देता है? गुलामी और आत्म-विनाश के अलावा कुछ नहीं! क्योंकि दुनिया कहती है:

"तुम्हारी इच्छाएँ हैं, इसलिए उन्हें पूरा करो, क्योंकि तुम्हें भी वही अधिकार प्राप्त हैं जो दूसरों को प्राप्त हैं।" सबसे धनी और शक्तिशाली लोगों को संतुष्ट करने से मत डरो, बल्कि अपनी इच्छाओं को और भी बढ़ाओ।" यही आधुनिक विश्व का सिद्धांत है। इसमें वे स्वतंत्रता देखते हैं। और इच्छाओं को बढ़ाने के इस अधिकार का क्या परिणाम होता है? धनियों में अलगाव और आध्यात्मिक आत्महत्या; गरीबों में ईर्ष्या और हत्या; क्योंकि उन्हें अधिकार तो दिए गए हैं, लेकिन उनकी इच्छाओं को पूरा करने के साधन नहीं दिखाए गए हैं। वे मानते हैं कि दुनिया अधिकाधिक एकजुट हो रही है, भाईचारे के बंधन में बंध रही है, क्योंकि यह दूरी को कम कर रही है और विचारों को हवा में उड़ा रही है।

अफसोस, ऐसे एकता के बंधन पर भरोसा मत करो। स्वतंत्रता की व्याख्या इस प्रकार करना...

इच्छाओं की प्रचुरता और शीघ्र संतुष्टि से मनुष्य का स्वभाव विकृत हो जाता है, क्योंकि उनमें अनेक निरर्थक, मूर्खतापूर्ण इच्छाएँ, आदतें और हास्यास्पद कल्पनाएँ पनपने लगती हैं। वे केवल आपसी ईर्ष्या, विलासिता और आडंबर के लिए जीते हैं। दावतें, मुलाक़ातें, वाहन, पद और सेवा के लिए दास रखना उनके लिए एक आवश्यकता बन गई है, जिसके लिए वे अपना जीवन, सम्मान और मानवीय भावनाएँ त्याग देते हैं, और यहाँ तक कि इसे पूरा न कर पाने पर आत्महत्या तक कर लेते हैं। यही स्थिति हम उन लोगों में भी देखते हैं जो धनी नहीं हैं, जहाँ गरीब लोग अपनी अधूरी ज़रूरतों और ईर्ष्या को शराब में डुबो देते हैं। लेकिन जल्द ही वे शराब की जगह खून पीने लगेंगे, उन्हें उसी ओर ले जाया जा रहा है। मैं आपसे पूछता हूँ, क्या ऐसा व्यक्ति स्वतंत्र है? मैं एक ऐसे "स्वतंत्रता के रक्षक" को जानता हूँ जिसने मुझे स्वयं बताया कि जब उसे जेल में तंबाकू से वंचित किया गया, तो वह इस अभाव से इतना दुखी हुआ कि वह तंबाकू वापस पाने के लिए लगभग अपने उद्देश्य से विश्वासघात करने चला गया! और ऐसा व्यक्ति कहता है, "मैं मानवता के लिए लड़ रहा हूँ।"

ऐसा व्यक्ति कैसे लड़ सकता है? वह किस काम का है? शायद वह सक्षम हो सकता है...

कुछ कार्य तो जल्दी ही समाप्त हो जाते हैं, पर वह लंबे समय तक टिक नहीं सकता। और इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि स्वतंत्रता प्राप्त करने के बजाय वे गुलामी में डूब गए हैं, और भाईचारे और मानवता के मिलन के उद्देश्य की सेवा करने के बजाय, इसके विपरीत, फूट और अलगाव में पड़ गए हैं, जैसा कि मेरे रहस्यमय आगंतुक और शिक्षक ने मेरी युवावस्था में मुझसे कहा था। और इसलिए मानवता की सेवा, भाईचारे और मानव जाति की एकजुटता का विचार दुनिया में धीरे-धीरे लुप्त होता जा रहा है, और वास्तव में इस विचार का कभी-कभी उपहास भी किया जाता है। क्योंकि मनुष्य अपनी आदतों से कैसे छुटकारा पा सकता है? यदि वह अपने द्वारा निर्मित अनगिनत इच्छाओं को पूरा करने की आदत का इस प्रकार गुलाम है, तो उसका क्या होगा? वह अलग-थलग पड़ गया है, और उसे शेष मानवता से क्या लेना-देना है? उन्होंने वस्तुओं का एक बड़ा भंडार तो जमा कर लिया है, लेकिन दुनिया में आनंद कम होता जा रहा है।
मठवासी जीवन शैली बहुत अलग है। आज्ञापालन, उपवास और प्रार्थना इसके मूल तत्व हैं।
हमारा उपहास उड़ाया जाता है, फिर भी उन्हीं के माध्यम से सच्ची स्वतंत्रता का मार्ग निहित है। मैं अपनी अनावश्यक इच्छाओं का त्याग करता हूँ, अपने अहंकार और बेलगाम इच्छाशक्ति को वश में करता हूँ और आज्ञाकारिता से उसे नियंत्रित करता हूँ, और ईश्वर की सहायता से आत्मा की स्वतंत्रता और उसके साथ आध्यात्मिक आनंद प्राप्त करता हूँ। महान विचार को साकार करने और उसे क्रियान्वित करने में कौन सबसे अधिक सक्षम है—एकांत में रहने वाला धनी व्यक्ति या वह व्यक्ति जिसने भौतिक वस्तुओं और आदतों के बंधन से स्वयं को मुक्त कर लिया है? भिक्षु को उसके एकांतवास के लिए फटकारा जाता है, "तुमने अपने उद्धार के लिए मठ की दीवारों के भीतर स्वयं को एकांत में रखा है, और मानवता की भाईचारे की सेवा को भूल गए हो!" लेकिन हम देखेंगे कि भाईचारे के प्रेम के लिए कौन सबसे अधिक उत्साही होगा। क्योंकि एकांत में हम नहीं, बल्कि वे हैं, भले ही वे इसे न देखें। पुराने समय में, जननेता हमारे बीच से ही आए थे, और वे फिर से क्यों नहीं आ सकते? वही नम्र और विनम्र तपस्वी उठेंगे और महान कार्य के लिए काम करने निकलेंगे। रूस का उद्धार जनता से ही होता है। और रूसी भिक्षु हमेशा जनता के पक्ष में रहे हैं। हम तभी अलग-थलग पड़ते हैं जब जनता अलग-थलग पड़ती है। जनता हमारी ही तरह विश्वास करती है, और एक नास्तिक सुधारक रूस में कभी कुछ नहीं कर सकता, चाहे वह दिल से सच्चा और प्रतिभाशाली ही क्यों न हो। यह याद रखना! जनता नास्तिक का सामना करेगी और उसे परास्त कर देगी, और रूस एक और रूढ़िवादी बनेगा। किसान का ध्यान रखो और उसके दिल की रक्षा करो। उसे चुपचाप शिक्षित करते रहो। भिक्षुओं के रूप में यही तुम्हारा कर्तव्य है, क्योंकि किसान के हृदय में ईश्वर बसता है।
(f) स्वामी और सेवकों के बारे में, और क्या उनके लिए ऐसा करना संभव है

आत्मा में भाई

बेशक, मैं इस बात से इनकार नहीं करता कि किसानों में भी पाप है। और भ्रष्टाचार की आग हर घंटे, ऊपर से नीचे की ओर, स्पष्ट रूप से फैल रही है। अलगाव की भावना लोगों पर भी हावी हो रही है। साहूकार और समुदाय को लूटने वाले पनप रहे हैं। व्यापारी पहले से ही पद के लिए और अधिक उत्सुक होता जा रहा है, और खुद को सुसंस्कृत दिखाने का प्रयास करता है, जबकि उसमें संस्कृति का कोई अंश नहीं है, और इस उद्देश्य के लिए वह अपनी पुरानी परंपराओं का घोर अपमान करता है, और अपने पूर्वजों के धर्म से भी लज्जित होता है। वह राजकुमारों से मिलता है, जबकि वह केवल एक भ्रष्ट किसान है। किसान शराब में सड़ रहे हैं और इस आदत से छुटकारा नहीं पा सकते। और अपनी पत्नियों, यहाँ तक कि अपने बच्चों के प्रति भी कितना क्रूर व्यवहार! सब कुछ शराब के नशे में! मैंने कारखानों में नौ साल के बच्चों को देखा है, कमजोर, कुबड़ा, झुका हुआ, और पहले से ही पतित। घुटन भरी कार्यशाला, मशीनों का शोर, दिन भर का काम, गंदी भाषा और शराब, शराब—क्या यही एक नन्हे बच्चे के दिल को चाहिए? उसे धूप, बच्चों के साथ खेलना, चारों ओर अच्छे उदाहरण और कम से कम थोड़ा सा प्यार चाहिए। अब और नहीं, भिक्षुओं, बच्चों को प्रताड़ित करना बंद करो, उठो और इसका प्रचार करो, जल्दी करो, जल्दी करो!
लेकिन ईश्वर रूस को बचाएगा, क्योंकि भले ही किसान भ्रष्ट हों और
वे अपने घृणित पाप का त्याग नहीं कर सकते, फिर भी वे जानते हैं कि यह ईश्वर द्वारा शापित है और पाप करना उनका अपराध है। इसलिए हमारे लोग आज भी धार्मिकता में विश्वास रखें, ईश्वर पर आस्था रखें और भक्ति के आँसू बहाएँ।
उच्च वर्गों के साथ मामला अलग है। वे विज्ञान का अनुसरण करते हुए चाहते हैं कि...

न्याय को केवल तर्क पर आधारित करो, पहले की तरह मसीह पर नहीं, और वे पहले ही घोषणा कर चुके हैं कि कोई अपराध नहीं है, कोई पाप नहीं है। और यह बात तर्कसंगत है, क्योंकि यदि ईश्वर ही नहीं है तो अपराध का क्या अर्थ? यूरोप में लोग पहले ही हिंसा के साथ धनियों के विरुद्ध उठ खड़े हुए हैं, और जननेता हर जगह उन्हें रक्तपात की ओर ले जा रहे हैं, और उन्हें सिखा रहे हैं कि उनका क्रोध उचित है। परन्तु उनका "क्रोध शापित है, क्योंकि वह क्रूर है।" परन्तु ईश्वर रूस को बचाएगा, जैसे उसने उसे अनेक बार बचाया है। उद्धार लोगों से, उनके विश्वास और उनकी नम्रता से आएगा।
पिताओं और शिक्षकों, लोगों के विश्वास की रक्षा करें और यह एक
सपना। मैं अपने पूरे जीवन में अपने महान लोगों की गरिमा, उनकी सच्ची और उचित गरिमा से प्रभावित रहा हूँ। मैंने इसे स्वयं देखा है, मैं इसकी गवाही दे सकता हूँ, मैंने इसे देखा है और इस पर आश्चर्य किया है, मैंने इसे अपने किसानों के पतित पापों और गरीबी से त्रस्त रूप के बावजूद देखा है। वे गुलाम नहीं हैं, और दो शताब्दियों की दासता के बाद भी वे व्यवहार और आचरण में स्वतंत्र हैं, फिर भी उनमें कोई उद्दंडता नहीं है, न ही वे प्रतिशोधी हैं और न ही ईर्ष्यालु। "आप धनी और कुलीन हैं, आप चतुर और प्रतिभाशाली हैं, ठीक है, ऐसे ही रहें, ईश्वर आपको आशीर्वाद दे। मैं आपका सम्मान करता हूँ, लेकिन मैं जानता हूँ कि मैं भी एक मनुष्य हूँ। केवल इस तथ्य से कि मैं बिना ईर्ष्या के आपका सम्मान करता हूँ, मैं एक मनुष्य के रूप में अपनी गरिमा को सिद्ध करता हूँ।"
सच तो यह है कि अगर वे ऐसा नहीं कहते (क्योंकि उन्हें अभी तक यह कहना नहीं आता),
वे ऐसा ही व्यवहार करते हैं। मैंने स्वयं देखा है, स्वयं अनुभव किया है, और क्या आप विश्वास करेंगे, हमारे रूसी किसान जितने गरीब होते हैं, उनकी वह शांत अच्छाई उतनी ही अधिक स्पष्ट दिखाई देती है, क्योंकि उनमें से अधिकांश धनी पहले से ही भ्रष्ट हो चुके हैं, और इसका बहुत कुछ हमारी लापरवाही और उदासीनता के कारण है। लेकिन ईश्वर अपने लोगों को बचाएगा, क्योंकि रूस अपनी विनम्रता में महान है। मैं अपने भविष्य को देखने का सपना देखता हूँ, और ऐसा लगता है कि मैं इसे अभी से स्पष्ट रूप से देख रहा हूँ। ऐसा होगा कि हमारे धनी लोगों में सबसे भ्रष्ट व्यक्ति भी अंत में गरीबों के सामने अपने धन से शर्मिंदा होगा, और गरीब, उसकी विनम्रता को देखकर, समझेंगे और उसके सामने झुकेंगे, उसकी इस शर्मिंदगी का खुशी और दयालुता से जवाब देंगे। मेरा विश्वास कीजिए कि ऐसा ही होगा; परिस्थितियाँ उसी ओर बढ़ रही हैं। समानता केवल मनुष्य की आध्यात्मिक गरिमा में पाई जाती है, और यह केवल हमारे बीच ही समझी जा सकती है। यदि हम भाई होते, तो बंधुत्व होता, लेकिन उससे पहले, वे धन के बंटवारे पर कभी सहमत नहीं होंगे। हम मसीह की छवि को संरक्षित रखते हैं, और यह एक अनमोल हीरे की तरह पूरी दुनिया में चमक उठेगी। ऐसा ही हो, ऐसा ही हो!
पितागण और शिक्षकों, एक बार मेरे साथ एक मार्मिक घटना घटी।
भटकते-भटकते मेरी मुलाकात के. कस्बे में मेरे पुराने सहायक अफनासी से हुई। उनसे बिछड़े हुए आठ साल हो गए थे। संयोग से उनकी नजर मुझ पर पड़ी, उन्होंने मुझे पहचान लिया, दौड़कर मेरे पास आए और खुशी से झूम उठे! वे मुझ पर झपट पड़े और बोले, "मालिक, क्या आप ही हैं? क्या सच में आप ही हैं?" वे मुझे अपने साथ घर ले गए।
वह अब सेना में नहीं था, उसकी शादी हो चुकी थी और उसके पहले से ही दो छोटे बच्चे थे।
बच्चे। वह और उसकी पत्नी बाज़ार में फल-सब्जी बेचकर अपना जीवन यापन करते थे। उनका कमरा साधारण था, लेकिन उज्ज्वल और साफ-सुथरा था। उन्होंने मुझे बिठाया, समोवर रखा और अपनी पत्नी को बुलवाया, मानो मेरा आना उनके लिए कोई उत्सव हो। उन्होंने अपने बच्चों को मेरे पास लाकर कहा, "पिताजी, इन्हें आशीर्वाद दीजिए।"
क्या उन्हें आशीर्वाद देना मेरा कर्तव्य है? मैं तो बस एक साधारण भिक्षु हूँ। मैं उनके लिए प्रार्थना करूँगा।
"और आपके लिए, अफनासी पावलोविच, मैंने उस दिन से हर दिन प्रार्थना की है, क्योंकि यह सब आपकी वजह से हुआ," मैंने कहा। और मैंने उसे यथासंभव समझाया। और आप क्या सोचते हैं? वह व्यक्ति मुझे घूरता रहा और उसे विश्वास नहीं हो रहा था कि मैं, उसका पूर्व स्वामी, एक अधिकारी, अब इस वेश और पद पर उसके सामने हूँ; यह देखकर उसकी आँखों में आंसू आ गए।
मैंने कहा, "तुम क्यों रो रहे हो? मेरे प्रिय मित्र, बेहतर होगा कि तुम मेरे लिए खुशियाँ मनाओ।"
जिसे मैं कभी नहीं भूल सकता, क्योंकि मेरा मार्ग आनंदमय और प्रसन्नता से भरा है।"

उसने ज्यादा कुछ नहीं कहा, बस आहें भरता रहा और मेरे ऊपर सिर हिलाता रहा।
कोमलता से।
“तुम्हारी संपत्ति का क्या हुआ?” उसने पूछा। “मैंने उसे मठ को दे दिया,” मैंने उत्तर दिया; “हम साथ रहते हैं।”
चाय के बाद मैंने विदाई देना शुरू किया, और अचानक उसने आधा
मैंने उसे मठ को भेंट के रूप में एक रूबल दिया, और दूसरा आधा रूबल मैंने उसे जल्दी से मेरे हाथ में थमाते हुए देखा: "यह आपके भ्रमण के लिए है, यह आपके काम आ सकता है, फादर।"
मैंने उनका आधा रूबल लिया, उन्हें और उनकी पत्नी को प्रणाम किया और बाहर चला गया।
खुशी मनाते हुए। और रास्ते में मैंने सोचा: “अब हम दोनों यहाँ हैं, वह घर पर और मैं सड़क पर, निस्संदेह आहें भर रहे हैं और सिर हिला रहे हैं, फिर भी अपने दिलों की खुशी में मुस्कुरा रहे हैं, यह याद करते हुए कि ईश्वर ने ही हमारी मुलाकात करवाई थी।”
उसके बाद मैंने उसे कभी नहीं देखा। मैं उसका मालिक था और वह मेरा।
पहले तो हम सेवक थे, लेकिन अब जब हमने कोमल हृदयों से प्रेमपूर्वक एक-दूसरे को चूमा, तो हमारे बीच एक गहरा मानवीय बंधन स्थापित हो गया। मैंने इस बारे में बहुत सोचा है, और अब मेरा विचार यह है: क्या यह सोचना असंभव है कि वह महान और सरल हृदय वाली एकता समय आने पर रूसी जनता के बीच सार्वभौमिक हो जाए? मेरा मानना है कि ऐसा अवश्य होगा और वह समय निकट है।
और नौकरों के बारे में मैं यह जोड़ना चाहूंगा: पुराने दिनों में जब मैं जवान था तब मैं था
अक्सर नौकरों पर गुस्सा करते थे; “रसोइया ने कुछ ज़्यादा गरम परोस दिया था, नौकर ने मेरे कपड़े नहीं झाड़े थे।” लेकिन उस समय मुझे सबसे अच्छी सीख मेरे प्यारे भाई के एक विचार से मिली, जो मैंने बचपन में उनसे सुना था: “क्या मैं इस लायक हूँ कि कोई और मेरी सेवा करे और अपनी गरीबी और अज्ञानता में मेरे आदेशों का पालन करे?” और उस समय मुझे आश्चर्य हुआ कि ऐसे सरल और स्पष्ट विचार हमारे मन में इतनी देर से क्यों आते हैं।
यह असंभव है कि संसार में सेवक न हों, लेकिन ऐसा व्यवहार करें
ताकि आपका सेवक, सेवक न होने की तुलना में, मन से अधिक स्वतंत्र हो सके। और मैं अपने सेवक का सेवक क्यों न बनूँ और उसे यह दिखाऊँ, और वह भी बिना किसी अहंकार या अविश्वास के? मेरा सेवक मेरे अपने परिवार के समान क्यों न हो, ताकि मैं उसे अपने परिवार में शामिल कर सकूँ और ऐसा करने में प्रसन्न हो सकूँ? यह अभी भी संभव है, लेकिन इससे भविष्य में मनुष्यों की महान एकता स्थापित होगी, जब मनुष्य अपने लिए सेवक नहीं ढूँढेगा, न ही अपने साथी प्राणियों को सेवक बनाने की इच्छा रखेगा, जैसा कि वह अभी करता है, बल्कि इसके विपरीत, पूरे हृदय से सभी का सेवक बनने की तमन्ना रखेगा, जैसा कि सुसमाचार सिखाता है।
और क्या यह एक सपना हो सकता है कि अंत में मनुष्य को अपना आनंद केवल इसी में मिलेगा?
क्या हम प्रकाश और दया के कार्यों में लिप्त होंगे, न कि क्रूर सुखों में, जैसा कि आजकल होता है, लालच, व्यभिचार, आडंबर, घमंड और ईर्ष्या से भरे आपसी प्रतिस्पर्धा में? मेरा दृढ़ विश्वास है कि ऐसा नहीं है और वह समय निकट है। लोग हंसते हैं और पूछते हैं: “वह समय कब आएगा और क्या वह आने वाला प्रतीत होता है?” मेरा विश्वास है कि मसीह की सहायता से हम इस महान कार्य को पूरा करेंगे। और मानव इतिहास में पृथ्वी पर कितने ही विचार आए हैं जो उनके प्रकट होने से दस वर्ष पहले अकल्पनीय थे? फिर भी जब उनका नियत समय आया, तो वे प्रकट हुए और पूरी पृथ्वी पर फैल गए। ऐसा ही हमारे साथ होगा, और हमारे लोग संसार में चमकेंगे, और सभी लोग कहेंगे: “जिस पत्थर को बनाने वालों ने ठुकरा दिया था, वही इमारत का आधारशिला बन गया है।”
और हम स्वयं तिरस्कार करने वालों से पूछ सकते हैं: यदि हमारी आशा एक सपना है, तो कब?
क्या तुम मसीह के बिना, केवल अपनी बुद्धि के बल पर अपना भवन बनाओगे और न्यायसंगत व्यवस्था स्थापित करोगे? यदि वे यह दावा करते हैं कि वे ही एकता की ओर अग्रसर हैं, तो उनमें से केवल सबसे भोले-भाले ही इस पर विश्वास करते हैं, जिससे उनकी इस सरलता पर सचमुच आश्चर्य होता है। वास्तव में, उनके सपने हमसे भी कहीं अधिक अटपटे हैं। वे न्याय का लक्ष्य रखते हैं, परन्तु मसीह को नकारते हुए, वे अंततः पृथ्वी को रक्त से लथपथ कर देंगे, क्योंकि रक्त रक्त का उत्तर देता है, और जो तलवार उठाता है वह तलवार से ही नष्ट हो जाता है। और यदि मसीह की वाचा न होती, तो वे पृथ्वी पर अंतिम दो व्यक्तियों तक एक-दूसरे

का वध कर देते। और वे अंतिम दो व्यक्ति अपने अहंकार में एक-दूसरे को रोक नहीं पाते, और एक दूसरे को मार डालता और फिर स्वयं को भी। और ऐसा ही होता, यदि मसीह का यह वचन न होता कि नम्र और दीन लोगों के लिए जीवन के दिन कम कर दिए जाएँगे।
द्वंद्वयुद्ध के बाद भी मैंने अधिकारी की वर्दी पहनी हुई थी, तब मैंने बात की।
आम समाज में नौकरों के बारे में एक सवाल था, और मुझे याद है कि सब लोग मुझ पर हैरान थे। उन्होंने पूछा, "क्या हम अपने नौकरों को सोफे पर बिठाकर चाय पिलाएँगे?" मैंने जवाब दिया, "क्यों नहीं, कम से कम कभी-कभी तो?" सब लोग हँस पड़े। उनका सवाल बेतुका था और मेरा जवाब स्पष्ट नहीं था; लेकिन उसमें निहित विचार कुछ हद तक सही था।

(जी) प्रार्थना, प्रेम और अन्य लोकों से संपर्क के बारे में

हे युवक, प्रार्थना करना मत भूलो। हर बार जब तुम प्रार्थना करो, यदि तुम्हारी प्रार्थना सच्ची है, तो उसमें एक नया भाव और नया अर्थ होगा, जो तुम्हें नया साहस देगा, और तुम समझोगे कि प्रार्थना एक शिक्षा है। यह भी याद रखो, हर दिन, और जब भी संभव हो, अपने मन में दोहराओ, “हे प्रभु, आज तेरे सामने आने वाले सभी पर दया करो।” क्योंकि हर घंटे और हर पल हजारों मनुष्य इस धरती से विदा होते हैं, और उनकी आत्माएं ईश्वर के समक्ष प्रकट होती हैं। और उनमें से कितने अकेले, अज्ञात, दुखी, निराश होकर विदा होते हैं, क्योंकि कोई उनके लिए शोक नहीं मनाता, और न ही कोई जानता है कि वे जीवित थे या नहीं! और देखो, शायद पृथ्वी के दूसरे छोर से, उनकी आत्मा की शांति के लिए तुम्हारी प्रार्थना ईश्वर तक पहुंचेगी, भले ही तुम उन्हें न जानते हो और न ही वे तुम्हें। प्रभु के समक्ष भयभीत खड़ी आत्मा के लिए उस क्षण यह महसूस करना कितना मार्मिक होगा कि उसके लिए भी प्रार्थना करने वाला कोई है, कि पृथ्वी पर एक साथी प्राणी बचा है जो उससे प्रेम करता है! और ईश्वर तुम दोनों पर और भी अधिक कृपा दृष्टि रखेगा, क्योंकि यदि तुमने उस पर इतनी दया दिखाई है, तो वह कितना दया दिखाएगा जो तुमसे कहीं अधिक प्रेममय और दयालु है! और वह तुम्हारे कारण उसे क्षमा कर देगा।
भाइयों, मनुष्यों के पाप से मत डरो। मनुष्य से उसके पाप में भी प्रेम करो, क्योंकि
यह दिव्य प्रेम का ही रूप है और पृथ्वी पर सर्वोच्च प्रेम है। ईश्वर की समस्त सृष्टि से प्रेम करो, संपूर्ण सृष्टि से, यहाँ तक कि उसमें मौजूद रेत के प्रत्येक कण से भी। हर पत्ते से, ईश्वर के प्रकाश की हर किरण से प्रेम करो। जानवरों से प्रेम करो, पौधों से प्रेम करो, हर चीज़ से प्रेम करो। यदि तुम हर चीज़ से प्रेम करोगे, तो तुम वस्तुओं में दिव्य रहस्य को जान पाओगे। एक बार जब तुम इसे जान लोगे, तो तुम इसे प्रतिदिन बेहतर ढंग से समझने लगोगे। और अंततः तुम संपूर्ण संसार से सर्वव्यापी प्रेम करने लगोगे। जानवरों से प्रेम करो: ईश्वर ने उन्हें विचार और आनंद की बुनियादी समझ निर्मल अवस्था में दी है। इसे कष्ट मत दो, उन्हें परेशान मत करो, उनकी खुशी मत छीनो, ईश्वर की इच्छा के विरुद्ध कार्य मत करो। हे मनुष्य, जानवरों से अपनी श्रेष्ठता पर घमंड मत करो; वे पापरहित हैं, और तुम, अपनी महानता के साथ, पृथ्वी पर अपने आगमन से उसे अपवित्र करते हो, और अपने पीछे अपनी अशुद्धता के निशान छोड़ जाते हो—अफ़सोस, यह हममें से लगभग हर एक के लिए सच है! विशेष रूप से बच्चों से प्रेम करो, क्योंकि वे भी स्वर्गदूतों के समान निष्पाप हैं; वे हमारे दिलों को कोमल और पवित्र करने के लिए जीते हैं, मानो हमारा मार्गदर्शन करने के लिए। जो कोई बच्चे को ठेस पहुँचाता है, उसका बुरा हाल होता है! फादर अनफिम ने मुझे बच्चों से प्यार करना सिखाया। वह दयालु और शांत स्वभाव के व्यक्ति अक्सर हमारी यात्राओं के दौरान हमें दिए गए पैसों से बच्चों के लिए मिठाई और केक खरीदते थे। वे किसी भी बच्चे को देखकर भावुक हुए बिना नहीं रह सकते थे। यही उस व्यक्ति का स्वभाव था।
कुछ विचारों पर व्यक्ति असमंजस में पड़ जाता है, विशेषकर पुरुषों को देखकर।
पाप के बारे में सोचते हुए, मन में यह सवाल उठता है कि क्या बल का प्रयोग करना चाहिए या विनम्र प्रेम का। हमेशा विनम्र प्रेम का ही चुनाव करें। यदि आप एक बार दृढ़ निश्चय कर लें, तो आप पूरी दुनिया को अपने वश में कर सकते हैं। प्रेमपूर्ण विनम्रता अद्भुत रूप से शक्तिशाली है, सभी चीजों में सबसे शक्तिशाली है, और इसके समान कुछ भी नहीं है।
हर दिन, हर घंटे, हर मिनट, अपने चारों ओर घूमकर देखो
स्वयं का ध्यान रखें और सुनिश्चित करें कि आपकी छवि शालीन हो। आप किसी छोटे बच्चे के पास से गुज़रते हैं, द्वेषपूर्ण, कड़वे शब्दों से, क्रोध से भरे हृदय से; हो सकता है आपने बच्चे पर ध्यान न दिया हो, लेकिन उसने

आपको देख लिया है, और आपकी अशोभनीय और नीच छवि उसके निहत्थे हृदय में बस सकती है। आपको पता नहीं है, लेकिन हो सकता है आपने उसके मन में बुराई का बीज बो दिया हो और वह बढ़ रहा हो, और यह सब इसलिए हुआ क्योंकि आप बच्चे के सामने सावधान नहीं थे, क्योंकि आपने अपने भीतर एक सचेत, सक्रिय परोपकारी प्रेम का विकास नहीं किया। भाइयों, प्रेम एक शिक्षक है; लेकिन इसे प्राप्त करना आना चाहिए, क्योंकि इसे प्राप्त करना कठिन है, यह बहुत महंगा पड़ता है, यह लंबे परिश्रम से धीरे-धीरे जीता जाता है। क्योंकि हमें केवल कभी-कभार, एक पल के लिए ही नहीं, बल्कि हमेशा के लिए प्रेम करना चाहिए। हर कोई कभी-कभार प्रेम कर सकता है, यहाँ तक कि दुष्ट भी कर सकता है।
मेरे भाई ने पक्षियों से माफी मांगी; यह सुनने में बेतुका लगता है, लेकिन ऐसा ही है।
यह सही है; क्योंकि सब कुछ सागर के समान है, सब कुछ बहता और घुलता-मिलता है; एक जगह का स्पर्श पृथ्वी के दूसरे छोर पर हलचल पैदा कर देता है। पक्षियों से क्षमा मांगना शायद निरर्थक लगे, लेकिन पक्षी आपके साथ अधिक प्रसन्न होंगे—कम से कम थोड़ा अधिक प्रसन्न—और बच्चे और सभी जानवर भी, यदि आप स्वयं अभी की तुलना में अधिक नेक होते। मैं आपसे कहता हूँ, सब कुछ सागर के समान है। तब आप भी पक्षियों से प्रार्थना करेंगे, एक सर्वव्यापी प्रेम में लीन होकर, एक प्रकार के परमानंद में, और प्रार्थना करेंगे कि वे भी आपके पाप को क्षमा कर दें। इस परमानंद को संजो कर रखें, चाहे यह मनुष्यों को कितना भी निरर्थक क्यों न लगे।
मेरे मित्रों, ईश्वर से प्रसन्नता की प्रार्थना करो। बच्चों की तरह, पक्षियों की तरह प्रसन्न रहो।
स्वर्ग की ओर बढ़ो। और मनुष्यों के पाप तुम्हें अपने कार्यों में बाधा न डालें। इस बात से मत डरो कि यह तुम्हारे काम को नष्ट कर देगा और उसे पूरा होने से रोक देगा। यह मत कहो, "पाप शक्तिशाली है, दुष्टता शक्तिशाली है, बुरा वातावरण शक्तिशाली है, और हम अकेले और असहाय हैं, और बुरा वातावरण हमें नष्ट कर रहा है और हमारे अच्छे काम को पूरा होने से रोक रहा है।" हे बच्चों, उस निराशा से दूर भागो! उद्धार का केवल एक ही मार्ग है, स्वयं को लो और सभी मनुष्यों के पापों के लिए स्वयं को जिम्मेदार ठहराओ, यही सत्य है, तुम जानते हो, मित्रों, क्योंकि जैसे ही तुम ईमानदारी से स्वयं को हर चीज और सभी मनुष्यों के लिए जिम्मेदार ठहराओगे, तुम तुरंत देखोगे कि यह वास्तव में ऐसा ही है, और तुम हर किसी और हर चीज के लिए दोषी हो। लेकिन अपनी आलस्य और लाचारी दूसरों पर थोपकर तुम अंततः शैतान के घमंड में भागीदार बनोगे और परमेश्वर के विरुद्ध बड़बड़ाओगे।
शैतान के अभिमान के बारे में मेरा विचार यह है: पृथ्वी पर हमारे लिए यह कठिन है कि...
इसे समझना मुश्किल है, और इसीलिए गलती करना और उसे दूसरों तक पहुँचाना इतना आसान है, यहाँ तक कि यह सोचना भी कि हम कुछ महान और उत्तम कर रहे हैं। वास्तव में, हमारी प्रकृति की कई प्रबल भावनाएँ और हलचलें हम पृथ्वी पर नहीं समझ सकते। इसे बाधा न बनने दें, और यह न सोचें कि यह आपके किसी भी कार्य का औचित्य सिद्ध कर सकता है। क्योंकि परम न्यायाधीश आपसे वह पूछता है जो आप समझ सकते हैं, न कि वह जो आप नहीं समझ सकते। आप स्वयं इसे भविष्य में जान लेंगे, क्योंकि तब आप सभी चीजों को सत्य रूप में देखेंगे और उन पर विवाद नहीं करेंगे। वास्तव में, पृथ्वी पर हम मानो भटके हुए हैं, और यदि हमारे सामने मसीह की अनमोल छवि न होती, तो हम जलप्रलय से पहले की मानव जाति की तरह नष्ट हो जाते और पूरी तरह से खो जाते। पृथ्वी पर बहुत कुछ हमसे छिपा है, लेकिन इसकी भरपाई के लिए हमें दूसरे लोक, उच्चतर स्वर्गीय लोक के साथ अपने जीवंत बंधन का एक अनमोल रहस्यमय बोध दिया गया है, और हमारे विचारों और भावनाओं की जड़ें यहाँ नहीं बल्कि दूसरे लोकों में हैं। इसीलिए दार्शनिक कहते हैं कि हम पृथ्वी पर चीजों की वास्तविकता को नहीं समझ सकते।
ईश्वर ने विभिन्न लोकों से बीज लेकर इस पृथ्वी पर बोए, और
उसका बगीचा हरा-भरा हो गया और उसमें हर वो चीज़ उग आई जो उग सकती थी, लेकिन जो कुछ भी उगता है, वो तभी जीवित रहता है और जीवन पाता है जब उसे दूसरे रहस्यमय संसारों से जुड़ाव का अहसास होता है। अगर वह अहसास आपमें कमज़ोर पड़ जाए या नष्ट हो जाए, तो आपके भीतर की दिव्य वृद्धि भी समाप्त हो जाएगी। तब आप जीवन के प्रति उदासीन हो जाएंगे और यहाँ तक कि उससे घृणा करने लगेंगे। मेरा यही मानना है।

(h) क्या मनुष्य अपने साथी प्राणियों का न्याय कर सकता है? अंत तक आस्था

विशेष रूप से याद रखें कि आप किसी का न्याय नहीं कर सकते। क्योंकि कोई भी व्यक्ति किसी अपराधी का न्याय तब तक नहीं कर सकता, जब तक वह यह न पहचान ले कि वह भी उतना ही अपराधी है जितना कि उसके सामने खड़ा व्यक्ति, और शायद उस अपराध के लिए वह सभी मनुष्यों से अधिक दोषी है। जब वह यह समझ जाएगा, तभी वह न्याय करने योग्य होगा। यद्यपि यह बात हास्यास्पद लगती है, पर यह सत्य है। यदि मैं स्वयं धर्मी होता, तो शायद मेरे सामने कोई अपराधी खड़ा ही न होता। यदि आप उस अपराधी का अपराध अपने ऊपर ले सकते हैं जिसका आपका हृदय न्याय कर रहा है, तो उसे तुरंत स्वीकार कर लें, उसके लिए स्वयं कष्ट सहें, और उसे बिना किसी निंदा के जाने दें। और यदि कानून ही आपको उसका न्याय करने के लिए बाध्य करे, तो भी यथासंभव उसी भावना से कार्य करें, क्योंकि वह जाकर स्वयं को आपसे कहीं अधिक कठोर रूप से दोषी ठहराएगा। यदि आपके चुंबन के बाद वह आपको छुए बिना, आपका उपहास करते हुए चला जाए, तो इसे अपने लिए बाधा न बनने दें। यह दर्शाता है कि उसका समय अभी नहीं आया है, लेकिन उचित समय पर आएगा। और यदि नहीं भी आता है, तो कोई बात नहीं; यदि वह नहीं, तो उसकी जगह कोई और समझेगा, कष्ट भोगेगा, स्वयं का न्याय करेगा और स्वयं को दोषी ठहराएगा, और सत्य सिद्ध हो जाएगा। इस पर विश्वास करो, निःसंदेह विश्वास करो; क्योंकि इसी में संतों की सारी आशा और आस्था निहित है।
बिना रुके काम करते रहो। अगर तुम्हें रात को सोते समय याद आ जाए तो...
“मैंने वो नहीं किया जो मुझे करना चाहिए था,” तुरंत उठो और उसे करो। यदि तुम्हारे आस-पास के लोग द्वेषपूर्ण और कठोर हैं और तुम्हारी बात नहीं सुनते, तो उनके सामने गिरकर क्षमा मांगो; क्योंकि वास्तव में उनके न सुनने के लिए तुम ही दोषी हो। और यदि तुम उनकी कड़वाहट में उनसे बात नहीं कर सकते, तो मौन और विनम्रता से उनकी सेवा करो, कभी आशा मत छोड़ो। यदि सभी लोग तुम्हें त्याग दें और बलपूर्वक भगा दें, तो जब तुम अकेले रह जाओ, तो धरती पर गिरकर उसे चूमो, अपने आंसुओं से उसे सींचो और वह फल देगी, भले ही तुम्हारे एकांत में तुम्हें किसी ने देखा या सुना न हो। अंत तक विश्वास रखो, भले ही सभी लोग भटक गए हों और तुम अकेले ही वफादार रह गए हो; तब भी अपनी भेंट चढ़ाओ और अपने एकांत में ईश्वर की स्तुति करो। और यदि तुम दोनों एक साथ एकत्रित हो—तो एक पूरा संसार है, जीवित प्रेम का संसार। एक-दूसरे को कोमलता से गले लगाओ और ईश्वर की स्तुति करो, क्योंकि केवल तुम दोनों में ही उसका सत्य पूरा हुआ है।
यदि तुम स्वयं पाप करते हो और अपने पापों के लिए मृत्यु तक शोक करते हो या अपने किसी प्रियजन के लिए
अचानक पाप करने पर, दूसरों के लिए आनन्द मनाओ, धर्मी व्यक्ति के लिए आनन्द मनाओ, इस बात पर आनन्द मनाओ कि यदि तुमने पाप किया है, तो वह धर्मी है और उसने पाप नहीं किया है।
यदि मनुष्यों के बुरे कर्म आपको आक्रोशित और अत्यधिक क्रोधित करते हैं
दुःख, यहाँ तक कि दुष्टों से बदला लेने की इच्छा, इन सभी भावनाओं से सर्वथा दूर रहो। तुरंत जाओ और स्वयं कष्ट सहो, मानो तुम स्वयं उस पाप के दोषी हो। उस कष्ट को स्वीकार करो और सहन करो, तुम्हारा हृदय शांत होगा और तुम समझ जाओगे कि तुम भी दोषी हो, क्योंकि तुम दुष्टों के लिए प्रकाश बन सकते थे, ठीक वैसे ही जैसे एक निष्पाप व्यक्ति, और तुम उनके लिए प्रकाश नहीं बन सके। यदि तुम प्रकाश होते, तो तुम दूसरों के लिए भी मार्ग प्रकाशित करते, और शायद दुष्ट तुम्हारे प्रकाश से अपने पाप से बच जाते। और यद्यपि तुम्हारा प्रकाश चमक रहा था, फिर भी तुम देखते हो कि मनुष्य उससे नहीं बच पाए, तो दृढ़ रहो और दिव्य प्रकाश की शक्ति पर संदेह मत करो। विश्वास करो कि यदि वे नहीं बच पाए, तो वे परलोक में बच जाएँगे। और यदि वे परलोक में नहीं बच पाते, तो उनके पुत्र बच जाएँगे, क्योंकि तुम्हारा प्रकाश तुम्हारे मरने के बाद भी नहीं बुझेगा। धर्मात्मा व्यक्ति चला जाता है, परन्तु उसका प्रकाश बना रहता है। उद्धारक की मृत्यु के बाद मनुष्य सदा बच जाते हैं। मनुष्य अपने नबियों को ठुकराकर उनकी हत्या कर देते हैं, परन्तु वे अपने शहीदों से प्रेम करते हैं और जिन्हें उन्होंने मारा है, उनका आदर करते हैं। तुम समस्त के लिए कार्य कर रहे हो, तुम भविष्य के लिए कार्य कर रहे हो। किसी प्रतिफल की आशा मत करो, क्योंकि तुम्हारा प्रतिफल इस पृथ्वी पर ही महान है: वह आध्यात्मिक आनंद जो केवल धर्मी मनुष्य को ही प्राप्त होता है। बड़ों या बलवानों से मत डरो, परन्तु बुद्धिमान और सदा शांत रहो। सीमा जानो, समय जानो, उसका अध्ययन करो। जब तुम एकांत में हो, प्रार्थना करो। अपने आप को पृथ्वी पर गिराकर उसे चूमना प्रेम करो। पृथ्वी को चूमो और उससे निरंतर, असीम प्रेम करो। सभी मनुष्यों से प्रेम करो, सब कुछ से प्रेम करो। उस परमानंद और आनंद की खोज करो।

अपनी खुशी के आँसुओं से पृथ्वी को सींचो और उन आँसुओं से प्रेम करो। उस आनंद से लज्जित मत हो, उसका सदुपयोग करो, क्योंकि यह ईश्वर का एक महान उपहार है; यह अनेकों को नहीं, बल्कि केवल चुने हुए लोगों को ही प्राप्त होता है।

(i) नरक और नरक की आग पर एक रहस्यवादी चिंतन

पिताओं और शिक्षकों, मैं सोचता हूँ, "नरक क्या है?" मेरा मानना है कि यह प्रेम करने में असमर्थ होने का दुख है। अनंत काल में, समय और स्थान की असीम गहराई में, एक आध्यात्मिक प्राणी को पृथ्वी पर आने पर यह कहने की शक्ति दी गई थी, "मैं हूँ और मैं प्रेम करता हूँ।" केवल एक बार, उसे सक्रिय प्रेम का क्षण दिया गया था, और उसी के लिए उसे सांसारिक जीवन दिया गया था, और उसके साथ समय और ऋतुएँ भी। और उस सुखी प्राणी ने उस अनमोल उपहार को ठुकरा दिया, उसे महत्व दिया लेकिन प्रेम नहीं किया, उसका तिरस्कार किया और निर्दयी बना रहा। ऐसा प्राणी, पृथ्वी छोड़कर, अब्राहम की गोद में जाता है और अब्राहम से बात करता है, जैसा कि हमें धनी व्यक्ति और लाजर के दृष्टांत में बताया गया है, और स्वर्ग को देखता है और प्रभु के पास जा सकता है। लेकिन यही उसकी पीड़ा है, बिना प्रेम किए प्रभु के पास जाना, उन लोगों के निकट लाया जाना जिन्होंने प्रेम किया है जबकि उसने उनके प्रेम का तिरस्कार किया है। क्योंकि वह स्पष्ट रूप से देखता है और मन ही मन कहता है, "अब मुझे समझ आ गई है, और यद्यपि अब मुझे प्रेम की प्यास है, फिर भी मेरे प्रेम में कोई महान बलिदान नहीं होगा, क्योंकि मेरा सांसारिक जीवन समाप्त हो चुका है, और अब्राहम जीवन के जल की एक बूँद (अर्थात सांसारिक सक्रिय जीवन का उपहार) भी नहीं लाएगा, ताकि मेरे भीतर जल रही आध्यात्मिक प्रेम की तीव्र प्यास को बुझा सके, यद्यपि मैंने पृथ्वी पर इसका तिरस्कार किया था; मेरे लिए अब कोई जीवन नहीं है और न ही कोई समय होगा! यद्यपि मैं दूसरों के लिए अपना जीवन सहर्ष दे दूँ, फिर भी ऐसा कभी नहीं हो सकता, क्योंकि वह जीवन बीत चुका है जिसे प्रेम के लिए बलिदान किया जा सकता था, और अब उस जीवन और इस अस्तित्व के बीच एक खाई खड़ी हो गई है।"

वे नरक की आग की बात भौतिक अर्थ में करते हैं। मैं उस रहस्य में नहीं पड़ना चाहता।

और मैं इससे दूर रहता हूँ। लेकिन मुझे लगता है कि अगर भौतिक रूप से आग होती, तो वे खुश होते, क्योंकि मुझे लगता है कि भौतिक पीड़ा में उनकी कहीं अधिक आध्यात्मिक पीड़ा क्षण भर के लिए भूल जाती। इसके अलावा, वह आध्यात्मिक पीड़ा उनसे छीनी नहीं जा सकती, क्योंकि वह पीड़ा बाहरी नहीं बल्कि उनके भीतर है। और अगर वह उनसे छीनी भी जा सकती, तो मुझे लगता है कि उन दुखी प्राणियों के लिए वह और भी कड़वी होती। क्योंकि भले ही स्वर्ग में धर्मात्मा लोग उनकी पीड़ाओं को देखकर उन्हें क्षमा कर दें और अपने असीम प्रेम से उन्हें स्वर्ग में बुला लें, वे केवल उनकी पीड़ाओं को बढ़ा देंगे, क्योंकि वे उनमें उस संवेदनशील, सक्रिय और कृतज्ञ प्रेम की तीव्र प्यास को और भी तीव्र कर देंगे जो अब असंभव है। हालाँकि, अपने हृदय की झिझक में मैं सोचता हूँ कि इस असंभवता को स्वीकार करना ही अंततः उन्हें सांत्वना देगा। धर्मी लोगों के प्रेम को स्वीकार करने और उसे चुकाने की असंभवता को जानते हुए, इस विनम्रता और नम्रता के प्रभाव से वे अंततः उस सक्रिय प्रेम की एक झलक प्राप्त कर लेंगे, जिसे उन्होंने जीवन में तिरस्कृत किया था, उसके बाहरी स्वरूप के समान कुछ हद तक... मुझे खेद है, मित्रों और भाइयों, कि मैं इसे स्पष्ट रूप से व्यक्त नहीं कर सकता। लेकिन धिक्कार है उन पर जिन्होंने पृथ्वी पर स्वयं को मार डाला, धिक्कार है आत्महत्या करने वालों पर! मेरा मानना है कि उनसे अधिक दुखी कोई नहीं हो सकता। वे हमें बताते हैं कि उनके लिए प्रार्थना करना पाप है और बाहरी तौर पर चर्च, मानो, उनका त्याग कर देता है, लेकिन मेरे अंतर्मन में मेरा मानना है कि हम उनके लिए भी प्रार्थना कर सकते हैं। प्रेम कभी भी मसीह के लिए अपराध नहीं हो सकता। ऐसे लोगों के लिए मैंने अपने पूरे जीवन अंतर्मन प्रार्थना की है, मैं स्वीकार करता हूँ, पिताओं और शिक्षकों, और अब भी मैं उनके लिए प्रतिदिन प्रार्थना करता हूँ।

ओह, कुछ लोग तो नरक में भी गर्व और साहस बनाए रखते हैं, चाहे कुछ भी हो जाए।

उन्हें परम सत्य का निश्चित ज्ञान और चिंतन है; कुछ भयभीत लोग हैं जिन्होंने स्वयं को पूरी तरह शैतान और उसके अभिमानी स्वभाव के हवाले कर दिया है। ऐसे लोगों के लिए नरक स्वैच्छिक और निरंतर भस्म करने वाला है; वे अपनी ही पसंद से यातना भोगते हैं। क्योंकि उन्होंने स्वयं को शाप दिया है, ईश्वर और जीवन को शाप दिया है। वे अपने प्रतिशोधी अभिमान पर ऐसे जीते हैं जैसे रेगिस्तान में भूखा आदमी अपने ही शरीर से खून चूसता है। लेकिन वे कभी संतुष्ट नहीं होते, और वे क्षमा को अस्वीकार करते हैं, वे उस ईश्वर को शाप देते हैं जो उन्हें बुलाता है। वे जीवित ईश्वर को घृणा के बिना नहीं देख सकते, और वे चिल्लाते हैं कि जीवन के ईश्वर

का नाश हो जाए, कि ईश्वर स्वयं को और अपनी सृष्टि को नष्ट कर दे। और वे अपने ही क्रोध की आग में सदा जलते रहेंगे और मृत्यु और नाश की कामना करते रहेंगे। लेकिन वे मृत्यु को प्राप्त नहीं कर पाएंगे...
यहां एलेक्सी फ्योदोरोविच करामाज़ोव की पांडुलिपि समाप्त होती है। मैं दोहराता हूं, यह यहीं समाप्त होती है।
अपूर्ण और खंडित। उदाहरण के लिए, जीवनी संबंधी विवरण केवल फादर ज़ोसिमा के प्रारंभिक बचपन को ही कवर करते हैं। उनके उपदेशों और विचारों में हमें ऐसे कथन मिलते हैं जो स्पष्ट रूप से बहुत अलग-अलग अवसरों पर कहे गए हैं। अंतिम कुछ घंटों के दौरान उनके कथनों को बाकी से अलग नहीं रखा गया है, लेकिन एलेक्सी फ्योदोरोविच की पांडुलिपि में जो कुछ है उससे उनका सामान्य स्वरूप समझा जा सकता है।
अंत में बुजुर्ग की मृत्यु काफी अप्रत्याशित रूप से हुई। हालाँकि
उस आखिरी शाम उनके आसपास जमा हुए लोगों को उनकी मृत्यु का आभास हो गया था, फिर भी यह कल्पना करना कठिन था कि यह इतनी अचानक होगी। इसके विपरीत, जैसा कि मैंने पहले ही देखा है, उनके मित्र उन्हें उस रात इतना प्रसन्न और बातूनी देखकर आश्वस्त थे कि उनकी स्थिति में कम से कम अस्थायी रूप से सुधार हुआ है। बाद में आश्चर्य से उन्होंने कहा कि उनकी मृत्यु से पाँच मिनट पहले भी इसकी भविष्यवाणी करना असंभव था। उन्हें अचानक सीने में तीव्र दर्द हुआ, उनका चेहरा पीला पड़ गया और उन्होंने अपने हाथों को अपने हृदय पर रख लिया। सभी अपनी-अपनी सीटों से उठे और उनके पास दौड़े। लेकिन पीड़ा सहते हुए भी, उन्होंने मुस्कुराते हुए उनकी ओर देखा, धीरे-धीरे अपनी कुर्सी से घुटनों के बल बैठ गए, फिर अपना चेहरा जमीन पर झुकाया, अपनी बाहें फैलाईं और मानो परमानंद में डूबे हुए, प्रार्थना करते हुए और जमीन को चूमते हुए, चुपचाप और खुशी से अपनी आत्मा ईश्वर को सौंप दी।
उनकी मृत्यु की खबर तुरंत आश्रम में फैल गई और वहाँ तक पहुँच गई।
मठ में। मृतक के सबसे करीबी मित्रों और अपने पद के अनुसार कर्तव्यबद्ध लोगों ने प्राचीन रीति-रिवाज के अनुसार शव को अंतिम संस्कार के लिए तैयार करना शुरू किया, और सभी भिक्षु चर्च में एकत्रित हो गए। भोर होने से पहले ही मृत्यु की खबर पूरे शहर में फैल गई। सुबह तक पूरा शहर इस घटना की चर्चा कर रहा था, और शहर से लोग मठ की ओर उमड़ रहे थे। लेकिन इस विषय पर अगली पुस्तक में चर्चा की जाएगी; मैं यहाँ केवल इतना ही जोड़ूँगा कि एक दिन बीतने से पहले ही कुछ ऐसा अप्रत्याशित, विचित्र, परेशान करने वाला और भिक्षुओं और शहरवासियों पर इतना गहरा प्रभाव डालने वाला घटित हुआ कि इतने वर्षों बाद भी, उस दिन की अनिश्चितता आज भी शहर में स्पष्ट रूप से याद है।

भाग तीन

पुस्तक 7

अलोशा

अध्याय 1

भ्रष्टाचार की सांस

फादर ज़ोसिमा के पार्थिव शरीर को विधिानुसार दफनाने की तैयारी की गई।
स्थापित अनुष्ठान। जैसा कि सर्वविदित है, मृत भिक्षुओं और संन्यासियों के शरीर
धोए नहीं जाते। चर्च के अनुष्ठान के शब्दों में: “यदि इनमें से कोई भी
भिक्षु भगवान के साथ प्रस्थान करते हैं, वह भिक्षु जिसे यह पद सौंपा गया है (अर्थात, जिसका यह पद है)।
शरीर को गर्म पानी से पोंछें, पहले क्रॉस का चिन्ह बनाएं।
मृतक के माथे, छाती और हाथों पर स्पंज से पोंछें।
और पैरों पर और घुटनों के बल, और बस इतना ही काफी है।" यह सब फादर ने किया था।
इसके बाद पैसी ने मृतक को अपने मठवासी वस्त्र पहनाए और उसे लपेट दिया।
उसे उसके लबादे में, जो रीति-रिवाज के अनुसार थोड़ा सा कटा हुआ था ताकि
उसके सिर पर क्रॉस के आकार में लिपटा हुआ था। उसने अपने सिर पर एक
आठ कोनों वाले क्रॉस के निशान वाला हुड। हुड खुला छोड़ दिया गया था और मृतकों को
उस आदमी का चेहरा काले जालीदार कपड़े से ढका हुआ था। उसके हाथों में एक मूर्ति रखी हुई थी।
उद्धारकर्ता। सुबह होते-होते उन्हें उस ताबूत में रखा गया जो पहले से ही तैयार था।
बहुत पहले से तैयार कर लिया गया था। ताबूत को पूरे दिन वहीं छोड़ने का निर्णय लिया गया था।
वह कोठरी, जो उस बड़े कमरे में थी जिसमें बुजुर्ग व्यक्ति अपने आगंतुकों से मिलते थे और
साथी भिक्षुओं। चूंकि मृतक एक पुजारी और अत्यंत सख्त नियमों का पालन करने वाला भिक्षु था,
पवित्र कक्ष में भिक्षुओं द्वारा उनके शरीर पर भजन संहिता नहीं बल्कि सुसमाचार पढ़ा जाना था।
आदेशों के तुरंत बाद फादर इओसिफ ने पढ़ना शुरू किया।
शोक सभा। फादर पैसी ने बाद में पूरे दिन सुसमाचार पढ़ने की इच्छा व्यक्त की।
और रात भर अपने मृत मित्र पर शोक मनाया, लेकिन फिलहाल वह, साथ ही पिता भी।
आश्रम के अधीक्षक बहुत व्यस्त थे, क्योंकि
कुछ असाधारण, एक अनसुनी, यहाँ तक कि "अनुचित" उत्तेजना और
भिक्षुओं और आगंतुकों में अधीरता भरी उम्मीद स्पष्ट होने लगी।
मठ के छात्रावासों से, और लोगों की भीड़ उमड़ रही थी
शहर। और समय बीतने के साथ-साथ यह और भी स्पष्ट होता गया। दोनों
सुपरिटेंडेंट और फादर पैसी ने जनरल को शांत करने की पूरी कोशिश की।
हलचल और अशांति।
जब पूरी तरह से दिन का उजाला हो गया, तो कुछ लोग अपने बीमारों को लेकर आने लगे।
अधिकांश मामलों में बच्चे, उनके साथ कस्बे से आए हुए थे—जैसे कि वे वहीं से आए हों
ऐसा करने के लिए विशेष रूप से इसी क्षण की प्रतीक्षा कर रहे थे, जाहिर तौर पर इस बात से आश्वस्त थे कि
मृत बुजुर्ग के अवशेषों में उपचार की शक्ति थी, जो तुरंत ही प्रभावी हो जाती।
उनकी आस्था के अनुसार प्रकट हुआ। तभी यह स्पष्ट हुआ।
हमारे कस्बे में हर किसी ने फादर ज़ोसिमा को निःसंदेह स्वीकार कर लिया था।
अपने जीवनकाल में एक महान संत के रूप में। और जो लोग आए वे बहुत दूर थे।
निम्न वर्ग के सभी लोग।
विश्वासियों की ओर से प्रदर्शित यह तीव्र अपेक्षा
जल्दबाजी, इतनी खुली सोच, यहां तक कि अधीरता और लगभग जिद के साथ,

फादर पैसी को यह अनुचित लगा। हालाँकि उन्होंने बहुत पहले ही इसका अनुमान लगा लिया था।
कुछ इसी तरह की बात थी, लेकिन उस भावना की वास्तविक अभिव्यक्ति उसकी समझ से परे थी।
वह जो कुछ भी खोज रहा था। जब वह किसी भिक्षु से मिलता, तो
जब उन्होंने यह उत्साह दिखाया, तो फादर पैसी ने उन्हें फटकारना शुरू कर दिया। “ऐसा
उन्होंने कहा, "किसी असाधारण चीज की तत्काल अपेक्षा, यह दर्शाती है कि..."
"हल्कापन, जो सांसारिक लोगों के लिए संभव है लेकिन हममें शोभा नहीं देता।"
लेकिन उस पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया गया और फादर पैसी ने इसे गौर किया।
बेचैनी से। फिर भी वह स्वयं (यदि पूरी सच्चाई बताई जाए तो), गुप्त रूप से
अपने दिल की गहराई में, वह लगभग वैसी ही उम्मीदें रखता था और इसके अलावा कुछ और नहीं हो सकता था।
वह इस बात से अवगत था, हालांकि वह अत्यधिक अधीर अपेक्षा से नाराज था।
उसके चारों ओर, और उसमें उसने हल्केपन और घमंड को देखा। फिर भी,
कुछ खास लोगों से मिलना उन्हें विशेष रूप से अप्रिय लगता था, जिनके
उसकी उपस्थिति ने उसके मन में गहरी आशंकाएँ उत्पन्न कर दीं। मृत व्यक्ति की भीड़ में...
उस कोठरी को उसने मन ही मन घृणा से देखा (जिसके लिए उसने तुरंत
(उसने स्वयं को फटकारा) राकितिन और भिक्षु की उपस्थिति के लिए
ओबडोर्स्क, जो अभी भी मठ में रह रहे थे। उन दोनों में से फादर
पैसी को अचानक किसी कारणवश संदेह होने लगा—हालाँकि, वास्तव में, वह
हो सकता है कि दूसरों के बारे में भी उनकी यही भावना रही हो।
ओबडोर्स्क का भिक्षु सबसे अधिक नखरेबाज़ के रूप में ध्यान आकर्षित कर रहा था।
उत्साहित भीड़। वह हर जगह दिखाई दे रहा था; हर जगह वह पूछ रहा था
वह हर जगह सवाल सुन रहा था, चारों ओर फुसफुसा रहा था।
एक विचित्र, रहस्यमय भाव के साथ। उनके चेहरे पर सबसे बड़ा भाव झलक रहा था।
अधीरता और यहाँ तक कि एक प्रकार की झुंझलाहट भी।
जहां तक रकितिन की बात है, जैसा कि बाद में पता चला, वह बहुत पहले ही आ गया था।
मैडम होहलाकोव के विशेष अनुरोध पर आश्रम में। जैसे ही वह
एक नेक दिल लेकिन कमजोर दिमाग वाली महिला, जो खुद नहीं हो सकती थी
आश्रम में प्रवेश किया, जागकर पिता की मृत्यु की खबर सुनी
ज़ोसिमा इतनी तीव्र जिज्ञासा से भर गई कि उसने तुरंत ही
रकितिन को आश्रम में भेजा गया, ताकि वह कड़ी निगरानी रखे और रिपोर्ट करे।
वह उसे हर आधे घंटे में पत्र द्वारा "घटित होने वाली हर बात" बताती थी।
रकितिन को एक अत्यंत धार्मिक और धर्मनिष्ठ युवक माना जाता था। वह
लोगों से घुलमिलने और अपनी इच्छानुसार कोई भी भूमिका निभाने में वह विशेष रूप से चतुर होता है।
अगर उसे अपने लिए जरा सा भी फायदा नजर आता, तो वह उनके लिए सबसे उपयुक्त समझता।
ऐसा करने से।
वह एक उज्ज्वल, साफ दिन था, और बहुत सारे आगंतुक उमड़ रहे थे।
उन कब्रों के बारे में, जो विशेष रूप से चर्च के आसपास बहुत अधिक संख्या में थीं और
आश्रम में इधर-उधर बिखरी हुई। जैसे ही वह चारों ओर घूमा...
आश्रम में, फादर पैसी को अलेयोशा की याद आई और उन्हें याद आया कि उन्होंने उसे नहीं देखा था।
कुछ समय से उससे नहीं, उस रात के बाद से। और जैसे ही उसने सोचा
उसने उसे आश्रम के सबसे दूर कोने में तुरंत देख लिया।
बगीचे में, एक ऐसे भिक्षु की समाधि पर बैठा हुआ, जो बहुत पहले प्रसिद्ध हो चुका था।
उनकी संतता के लिए। वह आश्रम की ओर पीठ करके और अपना चेहरा उसकी ओर करके बैठे थे।
वह दीवार के पीछे छिपा हुआ प्रतीत हो रहा था, और ऐसा लग रहा था जैसे वह समाधि के पीछे छिपा हो।
उसके पास जाकर,

फादर पैसी ने देखा कि वह चुपचाप लेकिन फूट-फूटकर रो रहा था, उसका चेहरा
उसने अपनी आँखें अपने हाथों में छिपा रखी थीं, और उसका पूरा शरीर सिसकियों से कांप रहा था।
फादर पैसी थोड़ी देर तक उसके ऊपर खड़े रहे।
"बस करो, प्यारे बेटे, बस करो, प्यारे," उन्होंने अंत में भावुक होकर कहा।
“तुम क्यों रो रहे हो? आनंद करो, रोओ मत। क्या तुम नहीं जानते कि यह
अपने समय का सबसे महान व्यक्ति? ज़रा सोचिए कि वह इस समय कहाँ है!
अलियोशा ने उसकी ओर देखा, अपना चेहरा खोलते हुए, जो सूजा हुआ था।
बच्चे की तरह रोते हुए, लेकिन बिना एक शब्द बोले तुरंत मुँह फेर लिया और
उसने एक बार फिर अपना चेहरा अपने हाथों में छिपा लिया।
“शायद यही अच्छा है,” फादर पैसी ने सोच-समझकर कहा; “अगर तुम रोना चाहो तो रो लो।”
"ज़रूर, ये आंसू तुम्हें ईसा मसीह ने भेजे हैं।"
“तुम्हारे ये भावुक आंसू तुम्हारी आत्मा को राहत देंगे और इससे तुम्हें बहुत फायदा होगा।”
“अपने प्यारे दिल को खुश करो,” उसने मन ही मन कहा और वहां से चला गया।
अलेयोशा, और उसके बारे में प्यार से सोच रही थी। हालाँकि, वह जल्दी से वहाँ से चला गया।
क्योंकि उसे लगा कि उसे देखकर वह भी रो सकता है।
इस बीच समय बीतता जा रहा था; मठ की सेवाएं और
मृतकों के लिए शोकगीत समय के अनुसार संपन्न हुए। फादर पैसी ने फिर से भाग लिया।
उन्होंने ताबूत के पास फादर इओसिफ की जगह ली और सुसमाचार पढ़ना शुरू किया। लेकिन
दोपहर तीन बजे से पहले कुछ ऐसा घटित हुआ जिससे मैं
पिछली किताब के अंत में जिसका संकेत दिया गया था, वह हम सभी के लिए इतना अप्रत्याशित था।
और इसलिए आम उम्मीद के विपरीत, मैं दोहराता हूं, इस मामूली घटना का
हमारे शहर और आसपास के सभी इलाकों में आज भी इसे बारीकी से याद किया जाता है।
पड़ोस। मैं यहाँ अपने लिए व्यक्तिगत रूप से यह जोड़ना चाहूँगा कि मुझे यह लगभग महसूस होता है।
उस घटना को याद करना घृणित है जिसने इतनी तुच्छ हलचल पैदा की और
यह कई लोगों के लिए एक बड़ी बाधा थी, हालांकि वास्तव में यह सबसे बड़ी बाधा थी।
यह तो स्वाभाविक और मामूली बात है। मुझे तो इसका ज़िक्र बिल्कुल नहीं करना चाहिए था।
मेरी कहानी में, अगर इसने दिल पर बहुत गहरा प्रभाव नहीं डाला होता तो...
मेरी कहानी के नायक, अलेयोशा, जो कि भविष्य का मुख्य नायक है, की आत्मा एक
यह उनके आध्यात्मिक विकास में एक संकट और निर्णायक मोड़ था, जिसने उन्हें गहरा सदमा पहुँचाया।
बुद्धि, जिसने अंततः इसे उसके शेष जीवन के लिए मजबूत बनाया और इसे एक
निश्चित लक्ष्य।
और अब, अपनी कहानी पर लौटते हैं। भोर से पहले जब उन्होंने पिता को लिटाया।
ज़ोसिमा के शव को ताबूत में रखकर सामने वाले कमरे में लाया गया,
जो लोग वहां मौजूद थे, उनके बीच खिड़कियां खोलने का सवाल उठा।
ताबूत के चारों ओर। लेकिन किसी ने अनायास ही यह सुझाव दिया था।
अनुत्तरित और लगभग अनसुना। उपस्थित लोगों में से कुछ शायद
मैंने इसे आंतरिक रूप से महसूस किया है, लेकिन फिर इस बात पर विचार किया है कि क्षय और
ऐसे संत के शरीर से भ्रष्टाचार होना एक वास्तविक बेतुकापन था, जिसे
विश्वास की कमी और इस तुच्छता के प्रति सहानुभूति (यदि मुस्कान नहीं तो) के लिए।
संकेत दिया गया। क्योंकि वे कुछ बिल्कुल अलग उम्मीद कर रहे थे।
और देखो, दोपहर के कुछ ही समय बाद कुछ संकेत दिखाई दिए,
पहले तो केवल आने-जाने वालों ने ही चुपचाप इसका अवलोकन किया।
जाहिर है, हर कोई अपने मन के विचार को व्यक्त करने से डरता था। लेकिन
तीन बजे तक वे संकेत इतने स्पष्ट और अचूक हो गए थे कि
यह खबर तुरंत आश्रम में मौजूद सभी भिक्षुओं और आगंतुकों तक पहुंच गई।

वह मठ में घुस गया, जिससे सभी भिक्षु आश्चर्यचकित रह गए, और
अंततः, अत्यंत कम समय में, यह खबर पूरे शहर में फैल गई और सभी को रोमांचित कर दिया।
उसमें एक ही व्यक्ति था, चाहे विश्वासी हों या अविश्वासी। अविश्वासी प्रसन्न हुए, और जैसे
विश्वासियों में से कुछ तो अविश्वासियों से भी अधिक प्रसन्न हुए।
क्योंकि "मनुष्य धर्मी लोगों के पतन और अपमान से प्रसन्न होते हैं," जैसा कि मृतक के मामले में हुआ।
एक बुजुर्ग ने अपने एक उपदेश में ऐसा कहा था।
दरअसल, सड़न की गंध आने लगी थी।
ताबूत का आकार धीरे-धीरे और अधिक स्पष्ट होता गया, और तीन बजे तक यह पूरी तरह से स्पष्ट हो गया था।
स्पष्ट। हमारे मठ के पूरे इतिहास में ऐसा कोई घोटाला नहीं हुआ है।
इसे वापस लिया जा सकता था, और किसी अन्य परिस्थिति में ऐसा घोटाला नहीं हो सकता था।
यह संभव हो पाया, जैसा कि इसके तुरंत बाद अशोभनीय अव्यवस्था में प्रकट हुआ।
स्वयं भिक्षुओं के बीच ही खोज हुई। इसके बाद, कई लोगों ने भी इसका पता लगाया।
कई वर्षों बाद, कुछ समझदार भिक्षु आश्चर्यचकित और भयभीत हो गए, जब
उन्होंने उस दिन को याद किया, कि घोटाला इस हद तक पहुंच सकता था।
अनुपात। क्योंकि अतीत में, अत्यंत पवित्र जीवन जीने वाले भिक्षु ईश्वर से भयभीत होकर मर जाते थे।
वे बुजुर्ग लोग, जिनकी संतता को सभी स्वीकार करते थे, फिर भी उनके
साधारण ताबूतों में भी भ्रष्टाचार की गंध आ चुकी थी, स्वाभाविक रूप से, मानो
सभी शव थे, लेकिन इससे न तो कोई घोटाला हुआ और न ही जरा सी भी
उत्साह। बेशक, पुराने समय में संत हुआ करते थे।
वह मठ जिसकी स्मृति को सावधानीपूर्वक संरक्षित किया गया था और जिसके अवशेष,
परंपरा के अनुसार, इसमें भ्रष्टाचार के कोई लक्षण नहीं दिखे। यह तथ्य
भिक्षुओं द्वारा इसे मार्मिक और रहस्यमय माना जाता है, और इसकी परंपरा
इसे एक आशीर्वाद और चमत्कार के रूप में, और एक वादे के रूप में संजोया गया था।
ईश्वर की कृपा से, भविष्य में उनकी कब्रों से और भी अधिक महिमा प्राप्त होगी।
एक ऐसे ही बुजुर्ग व्यक्ति थे, जिनकी यादें विशेष रूप से संजोई जाती थीं।
भिक्षु जॉब, जिनकी मृत्यु सत्तर वर्ष पहले सौ वर्ष की आयु में हुई थी।
पांच। वह एक प्रसिद्ध तपस्वी थे, जो उपवास और मौन में कठोर थे, और उनके
आगमन पर सभी आगंतुकों को विशेष सम्मान के साथ मकबरे की ओर इशारा किया जाता था।
और इससे जुड़ी महान आशाओं के रहस्यमय संकेत। (यही वह बात थी)
वह मकबरा जिस पर फादर पैसी ने सुबह अलेयोशा को बैठे हुए पाया था।
मठ में संजोई गई एक और स्मृति प्रसिद्ध फादर की थी।
वारसोनोफी, जिनकी हाल ही में मृत्यु हुई थी और जो फादर ज़ोसिमा से पहले इस पद पर थे।
वरिष्ठों के बीच। अपने जीवनकाल में उन्हें एक विलक्षण संत के रूप में पूजा जाता था।
मठ में आने वाले सभी तीर्थयात्री। एक परंपरा थी कि ये दोनों
वे अपने ताबूतों में ऐसे पड़े थे मानो जीवित हों, उनमें किसी प्रकार के लक्षण दिखाई नहीं दे रहे थे।
दफनाए जाने के समय उनके शरीर का अपघटन हुआ था और वहाँ एक पवित्र प्रकाश था।
उनके चेहरों पर। और कुछ लोगों ने तो यहाँ तक कह दिया कि एक मीठी खुशबू आ रही थी।
उनके शरीरों से।
फिर भी, इन शिक्षाप्रद यादों के बावजूद, यह मुश्किल होगा
इसके साथ प्रकट हुई तुच्छता, बेतुकेपन और दुर्भावना की व्याख्या करें।
फादर ज़ोसिमा का ताबूत। यह मेरी निजी राय है कि कई अलग-अलग
कई कारण एक साथ काम कर रहे थे, जिनमें से एक गहरी जड़ें जमा चुका था।
बुजुर्गों की संस्था के प्रति शत्रुता, इसे एक हानिकारक नवाचार और घृणा के रूप में देखा जाता है।
कई भिक्षुओं के हृदयों में गहराई से छिपा हुआ। इससे भी अधिक शक्तिशाली था
मृत व्यक्ति की संतता के प्रति ईर्ष्या, जो उनके दौरान दृढ़ता से स्थापित हो गई थी

जीवन भर ऐसा था कि इस पर सवाल उठाना लगभग वर्जित था। क्योंकि यद्यपि
दिवंगत बुजुर्ग ने चमत्कारों से कहीं अधिक प्रेम से कई दिलों को जीत लिया था, और
वास्तव में, उसके चारों ओर बड़ी संख्या में प्रेम करने वाले अनुयायी एकत्रित हो गए थे।
बल्कि इसी वजह से उसने ईर्ष्या जगा दी थी और इसलिए
मठों में ही नहीं, बल्कि खुलेआम और गुप्त रूप से भी कट्टर शत्रु बन जाते हैं।
लेकिन इसके बाहर की दुनिया में। उसने किसी को कोई नुकसान नहीं पहुँचाया, लेकिन "वे ऐसा क्यों करते हैं?"
क्या आप उसे इतना संत मानते हैं? और यही सवाल, बार-बार दोहराए जाने पर,
अंततः उसके प्रति तीव्र, अतृप्त घृणा उत्पन्न हो जाती है। मेरा मानना है कि यही कारण था।
बहुत से लोग सड़न की गंध से बेहद प्रसन्न थे।
जो इतनी जल्दी हुआ, क्योंकि उनकी मृत्यु को अभी एक दिन भी नहीं बीता था।
उसी समय उनमें से कुछ ऐसे भी थे जो अब तक श्रद्धापूर्वक व्यवहार करते रहे थे।
बुजुर्ग के प्रति समर्पित, जो लगभग अपमानित और व्यक्तिगत रूप से आहत महसूस कर रहे थे।
इस घटना के कारण। बात इस तरह घटी।
जैसे ही सड़न के लक्षण दिखने शुरू हुए, पूरा
भिक्षुओं के हावभाव से कोठरी में प्रवेश करने के उनके गुप्त इरादे उजागर हो गए।
वे अंदर गए, थोड़ी देर रुके और खबर की पुष्टि करने के लिए जल्दी से बाहर आ गए।
बाहर इंतजार कर रहे अन्य भिक्षुओं की भीड़ की ओर। उनमें से कुछ कांप उठे।
उनके सिर दुख से झुके हुए थे, लेकिन कुछ अन्य लोगों ने अपनी खुशी छिपाने की भी परवाह नहीं की।
जो उनकी द्वेषपूर्ण आँखों में स्पष्ट रूप से चमक रहा था। और अब कोई भी नहीं।
उन्होंने इसके लिए उन्हें फटकारा, लेकिन किसी ने भी विरोध में आवाज नहीं उठाई, जो कि
यह विचित्र था, क्योंकि अधिकांश भिक्षु मृत बुजुर्ग के प्रति समर्पित थे।
लेकिन ऐसा प्रतीत हुआ मानो इस मामले में ईश्वर ने अल्पसंख्यकों को ही सर्वोच्च स्थान दे दिया हो।
कुछ समय के लिए हाथ।
बाहर से आने वाले आगंतुक, विशेषकर शिक्षित वर्ग के लोग, जल्द ही चले गए
वे भी उसी जासूसी के इरादे से कोठरी में घुस गए। किसानों में से कुछ ही लोग गए।
हालांकि कोठरी के द्वार पर लोगों की भीड़ जमा थी, फिर भी वे अंदर चले गए।
आश्रम। तीन बजे के बाद सांसारिक आगंतुकों की भीड़ काफी बढ़ जाती थी।
इसमें वृद्धि हुई और यह निस्संदेह चौंकाने वाली खबर के कारण हुआ। लोग
उन लोगों को आकर्षित किया जो अन्यथा उस दिन नहीं आते और नहीं आते
आने का इरादा रखने वाले कुछ लोग थे, और उनमें कुछ उच्च पदस्थ व्यक्ति भी शामिल थे।
खड़े रहे। लेकिन बाहरी शिष्टाचार अभी भी बरकरार था और फादर पैसी, साथ
गंभीर चेहरे के साथ, वह दृढ़तापूर्वक और स्पष्ट रूप से सुसमाचार को जोर से पढ़ता रहा।
ऐसा प्रतीत होता है कि वह अपने आसपास हो रही घटनाओं पर ध्यान नहीं दे रहा था, हालांकि उसने ध्यान दिया था।
दरअसल, बहुत पहले ही कुछ असामान्य देखा गया था। लेकिन अंततः फुसफुसाहटें सुनाई देने लगीं,
पहले तो धीमी आवाज में, लेकिन धीरे-धीरे तेज और अधिक आत्मविश्वास से भरी हुई आवाज, उस तक भी पहुंच गई।
"इससे पता चलता है कि ईश्वर का न्याय मनुष्य के न्याय जैसा नहीं है," फादर पैसी ने अचानक सुना।
इस भावना को सबसे पहले व्यक्त करने वाला एक आम आदमी था, एक बुजुर्ग व्यक्ति।
कस्बे का एक अधिकारी, जो अपने धर्मनिष्ठ स्वभाव के लिए जाना जाता था। लेकिन वह केवल
उन्होंने वही बात ज़ोर से दोहराई जो भिक्षु लंबे समय से फुसफुसा रहे थे।
इस निंदनीय निष्कर्ष को तैयार करने से पहले, और सबसे बुरी बात यह थी कि एक
उस निष्कर्ष पर मिली विजयी संतुष्टि धीरे-धीरे बढ़ती गई।
हर पल स्पष्ट। जल्द ही उन्होंने बाहरी चीजों को भी त्यागना शुरू कर दिया।

वे शिष्टाचार का उल्लंघन करते थे और लगभग ऐसा महसूस करते थे कि उन्हें इसे त्यागने का एक प्रकार का अधिकार है।
“और ऐसा किस कारण से हुआ होगा?” कुछ भिक्षुओं ने पूछा।
उसने पहले तो खेद जताते हुए कहा; “उसका शरीर छोटा था और उसका मांस
उसकी हड्डियों पर सब कुछ सूख गया था, सड़ने के लिए बचा ही क्या था?
“यह स्वर्ग से कोई संकेत होना चाहिए,” अन्य लोगों ने तुरंत कहा, और उनके
इस राय को बिना किसी विरोध के तुरंत स्वीकार कर लिया गया। क्योंकि यह भी बताया गया था कि,
यदि अपघटन प्राकृतिक होता, जैसा कि प्रत्येक मृत शरीर के मामले में होता है
पापी, यह कम से कम बीस वर्षों के अंतराल के बाद स्पष्ट हो जाता।
चार घंटे, लेकिन यह असमय भ्रष्टाचार "प्रकृति से अधिक" था, और इसलिए
ईश्वर का हाथ स्पष्ट था। यह एक संकेत था। यही निष्कर्ष है।
बेहद आकर्षक लग रहा था।
दयालु फादर इओसिफ, पुस्तकालयाध्यक्ष, मृतक के प्रिय व्यक्ति थे।
मैंने कुछ दुर्भावनापूर्ण वक्ताओं को जवाब देने की कोशिश की कि "यह हर जगह लागू नहीं होता है"
एक समान," और यह कि धर्मी लोगों के शरीरों की अविनाशिता एक
यह ऑर्थोडॉक्स चर्च का सिद्धांत नहीं है, बल्कि केवल एक राय है, और वह भी
उदाहरण के लिए एथोस जैसे अधिकांश ऑर्थोडॉक्स क्षेत्रों में, वे बहुत अधिक नहीं थे।
भ्रष्टाचार की बू से भ्रमित, और वहाँ का मुख्य संकेत
उद्धार पाए हुए लोगों का महिमामंडन शारीरिक अविनाशिता नहीं था, बल्कि उनका रंग था।
जब शरीर कई वर्षों तक धरती में दबे रहते हैं तो उनकी हड्डियाँ
उसमें सड़ गया। “और यदि हड्डियाँ मोम के समान पीली हों, तो यह एक बड़ा संकेत है।”
यदि मृत संत पीले नहीं बल्कि काले हैं, तो प्रभु ने उन्हें महिमा प्रदान की है।
इससे पता चलता है कि ईश्वर ने उसे ऐसी महिमा के योग्य नहीं समझा है—यही कारण है कि
एथोस में विश्वास, एक महान स्थान, जहाँ ऑर्थोडॉक्स सिद्धांत प्रचलित है
“प्राचीन काल से संरक्षित, अक्षुण्ण और अपनी उच्चतम शुद्धता में,” फादर ने कहा।
अंत में इओसिफ।
लेकिन विनम्र पिता के शब्दों का कोई खास असर नहीं हुआ और इससे तो और भी ज्यादा उत्तेजना पैदा हो गई।
व्यंग्यात्मक जवाब: "यह सब पांडित्य और नवाचार है, इसे सुनने का कोई फायदा नहीं है।"
भिक्षुओं ने निर्णय लिया। “हम पुराने सिद्धांत पर कायम रहेंगे, हर तरह के सिद्धांत मौजूद हैं।”
"आजकल हो रहे नवाचारों में से क्या हमें उन सभी का अनुसरण करना चाहिए?" अन्य लोगों ने यह सवाल उठाया।
“हमारे भी उतने ही धर्मपिता हुए हैं जितने उनके हुए थे। वे यहाँ हैं।”
तुर्कों में, वे सब कुछ भूल चुके हैं। उनका सिद्धांत बहुत पुराना हो चुका है।
“वे अपवित्र हैं और उनके पास घंटियाँ भी नहीं हैं,” सबसे उपहासपूर्वक कहने वाले ने आगे कहा।
फादर इओसिफ वहां से चले गए, उनका दुख और भी बढ़ गया था क्योंकि उन्होंने ही यह प्रस्ताव रखा था।
अपने ही विचार को उन्होंने कम आत्मविश्वास के साथ व्यक्त किया, मानो उन्हें उस पर मुश्किल से ही विश्वास हो।
स्वयं। उसने बड़े दुख के साथ यह आशंका जताई कि कुछ बहुत ही अनुचित होने वाला है।
शुरुआत में अवज्ञा के सकारात्मक संकेत थे। धीरे-धीरे
थोड़ी देर बाद, सभी समझदार भिक्षु फादर इओसिफ की तरह मौन हो गए। और
इसलिए ऐसा हुआ कि वे सभी जिन्होंने बड़े से प्रेम किया और स्वीकार किया था
पूर्ण आज्ञाकारिता, बड़ों की संस्था, ये सब एक साथ भयानक रूप से
जब वे मिले तो उन्होंने नजरें नीचे कर लीं और एक-दूसरे के चेहरों की ओर संकोच से देखा।
बुजुर्गों की संस्था के प्रति शत्रुता रखने वालों ने इसे एक नवीनता के रूप में प्रस्तुत किया।

उन्होंने गर्व से अपना सिर ऊंचा कर लिया। “दिवंगत बुजुर्ग से भ्रष्टाचार की कोई बू नहीं आती थी।”
“वरसोनोफी, लेकिन एक मीठी खुशबू,” उन्होंने दुर्भावना से याद किया। “लेकिन वह
उन्हें वह गौरव इसलिए नहीं मिला क्योंकि वे एक बुजुर्ग थे, बल्कि इसलिए मिला क्योंकि वे एक पवित्र व्यक्ति थे।
आदमी।"
और इसके बाद आलोचनाओं और यहां तक कि दोषारोपण की बौछार शुरू हो गई।
फादर ज़ोसिमा ने कहा, “उनकी शिक्षा झूठी थी; उन्होंने सिखाया कि जीवन एक महान आनंद है।”
और यह आंसुओं की घाटी नहीं है,” कुछ अधिक तर्कहीन लोगों ने कहा। “वह
प्रचलित धारणा का पालन करते हुए, उन्होंने नरक में भौतिक अग्नि को नहीं पहचाना।
कुछ अन्य लोगों ने, और भी अधिक तर्कहीन होकर कहा, “वह उपवास में सख्त नहीं था।”
वह मीठी चीजें खाता था, चाय के साथ चेरी जैम खाता था, महिलाएं ऐसा करती थीं
उसे भेज दो। क्या सख्त नियमों का पालन करने वाले भिक्षु के लिए चाय पीना उचित है?” यह आवाज सुनाई दी।
कुछ ईर्ष्यालु लोगों के बीच। "वह घमंड से बैठा था," सबसे द्वेषपूर्ण
उसने बदले की भावना से घोषणा की; “वह खुद को संत समझता था और इसे अपना मानकर चलता था।”
जब लोग उसके सामने घुटने टेकते थे, तब ऐसा होता था। उसने धार्मिक संस्कार का दुरुपयोग किया।
"स्वीकारोक्ति," बुजुर्गों की संस्था के सबसे कट्टर विरोधियों ने एक बयान में जोड़ा।
दुर्भावनापूर्ण कानाफूसी। और इनमें कुछ सबसे पुराने भिक्षु भी शामिल थे,
अपनी भक्ति में सबसे कठोर, सच्चे तपस्वी, जो उस दौरान मौन रहे थे
दिवंगत बुजुर्ग के जीवन के बारे में, लेकिन अब अचानक उन्होंने अपने होंठ खोल दिए। और यह
यह भयानक था, क्योंकि उनके शब्दों का युवा भिक्षुओं पर बहुत प्रभाव पड़ा था।
वे अभी तक अपने विश्वासों में दृढ़ नहीं थे। ओब्डोर्स्क के भिक्षु ने सब कुछ सुना।
वह ध्यान से सुनता रहा, गहरी साँसें लेता रहा और सिर हिलाता रहा। "हाँ, स्पष्ट रूप से।"
फादर फेरापोंट का कल का फैसला सही था," और उस क्षण
फादर फेरापोंट स्वयं प्रकट हुए, मानो जानबूझकर।
भ्रम को बढ़ाना।
मैं पहले ही बता चुका हूँ कि वह अपनी लकड़ी की कोठरी से शायद ही कभी बाहर निकलता था।
मधुमक्खी पालन केंद्र। वह चर्च में भी शायद ही कभी दिखाई देता था और उन्होंने इस बात को नजरअंदाज कर दिया।
उसके पागलपन के आधार पर उसकी उपेक्षा की गई और उसे नियमों का पालन नहीं कराया गया।
बाकी सभी पर बाध्यकारी। लेकिन अगर पूरी सच्चाई बताई जाए, तो उनके पास शायद ही कुछ था।
इस बारे में एक विकल्प। क्योंकि इस पर जोर देना अपमानजनक होता।
प्रार्थना करने वाले इतने महान तपस्वी पर सामान्य नियमों का बोझ डालना
दिन-रात (वह घुटनों के बल ही सो जाता था)। अगर वे ज़िद करते,
भिक्षुओं ने कहा होगा, “वह हम सब से अधिक पवित्र है और वह एक
हमारे शासन से भी ज़्यादा कठोर शासन। और अगर वह चर्च नहीं जाता, तो इसका कारण यह है कि वह
उसे पता है कि उसे कब क्या करना चाहिए; उसका अपना नियम है।" यह जोखिम से बचने के लिए था।
इन पापपूर्ण बड़बड़ाहटों से दूर, फादर फेरापोंट को शांति मिली।
जैसा कि सभी को पता था, फादर फेरापोंट विशेष रूप से फादर को नापसंद करते थे।
ज़ोसिमा। और अब उसकी झोपड़ी में उसे यह खबर मिली थी कि "ईश्वर का..."
निर्णय लेने की क्षमता मनुष्य की क्षमता के समान नहीं है," और कुछ घटित हुआ था।
जो "प्रकृति से अधिक" था। यह आसानी से माना जा सकता है कि उनमें से
सबसे पहले खबर लेकर उनके पास पहुंचने वाला ओबडोर्स्क का भिक्षु था, जिसके पास
मैंने उससे एक शाम पहले मुलाकात की थी और उसकी कोठरी से दहशत में बाहर निकला था।
मैंने ऊपर उल्लेख किया है कि यद्यपि फादर पैसी दृढ़ रहे और

ताबूत के ऊपर स्थिर अवस्था में बैठकर सुसमाचार पढ़ा जा रहा था, न तो कुछ सुनाई दे रहा था और न ही कुछ दिखाई दे रहा था।
जब वह कोठरी के बाहर से गुजर रहा था, तो उसने अपने दिल में इसका अधिकांश अनुमान सही लगाया, क्योंकि
वह अपने आसपास के लोगों को अच्छी तरह जानता था। वह इससे विचलित नहीं हुआ, लेकिन
आगे क्या होगा, इसका निडर होकर इंतजार किया, गहरी निगाहों से देखते हुए।
और आम उत्साह के परिणाम के बारे में अंतर्दृष्टि।
अचानक गलियारे में असाधारण हंगामा मच गया, जो खुलेआम अवहेलना कर रहा था।
शिष्टाचार की धज्जियां उसके कानों में गूँज उठीं। दरवाजा ज़ोर से खुला और फादर फेरापोंट
दरवाजे पर प्रकट हुआ। उसके पीछे उसके साथ कुछ और भी दिखाई दे रहे थे।
उसके साथ भिक्षुओं की भीड़ और कस्बे के कई लोग थे।
हालांकि, वह कोठरी में दाखिल नहीं हुआ, बल्कि सीढ़ियों के नीचे खड़ा रहा।
वे यह देखने के लिए प्रतीक्षा कर रहे थे कि फादर फेरापोंट क्या कहेंगे या करेंगे। क्योंकि उन्हें ऐसा लग रहा था कि
उनकी धृष्टता के बावजूद, एक निश्चित विस्मय था कि वह व्यर्थ नहीं आया था।
दरवाजे पर खड़े होकर, फादर फेरापोंट ने अपनी बाहें उठाईं, और उनके नीचे
ओबडोर्स्क के भिक्षु की उत्सुक और जिज्ञासु छोटी आँखें दाहिनी भुजा से झाँक रही थीं।
वह अकेला ही, अपनी तीव्र जिज्ञासा के कारण, सीढ़ियों पर चढ़ने से खुद को रोक नहीं सका।
फादर फेरापोंट के बाद। इसके विपरीत, बाकी लोग और पीछे हट गए।
दरवाजा जोर से खुलने पर अचानक दहशत फैल गई। उसने अपने हाथ पकड़ रखे थे।
ऊपर उठते ही, फादर फेरापोंट अचानक दहाड़ उठे:
“मैं निकालता हूँ!” और चारों दिशाओं में मुड़ते हुए, उसने शुरुआत की।
चारों दीवारों पर एक बार क्रॉस का चिन्ह बनाते हुए और चार
एक के बाद एक कोठरी के कोने। वे सभी जो फादर फेरापोंट के साथ थे।
वे तुरंत ही उसकी हरकत समझ गए। क्योंकि वे जानते थे कि वह हमेशा ऐसा ही करता था।
वह जहाँ भी जाता, तब तक न बैठता और न ही एक शब्द बोलता, जब तक कि...
उसने बुरी आत्माओं को भगा दिया था।
“शैतान, यहाँ से चले जाओ! शैतान, यहाँ से चले जाओ!” वह हर संकेत पर यही दोहराता था।
क्रॉस। "मैं निकालता हूँ, मैं निकालता हूँ," वह फिर दहाड़ा।
उसने रस्सी से बंधी हुई अपनी खुरदरी पोशाक पहन रखी थी। उसकी नंगी छाती,
उसके भूरे बालों से ढका हुआ, उसकी भांग की कमीज के नीचे से दिखाई दे रहा था। उसके पैर
वे नंगे थे। जैसे ही उसने अपने हाथ हिलाने शुरू किए, उसके हाथों में जकड़ी हुई क्रूर बेड़ियाँ उतर आईं।
उसके गाउन के नीचे से खनखनाहट की आवाज सुनाई दे रही थी।
फादर पैसी ने पढ़ते हुए विराम लिया, आगे बढ़े और खड़े हो गए।
उसके सामने प्रतीक्षा कर रहे थे।
“हे परम पूज्य पिता, आप किसलिए आए हैं? आप मुझे क्यों ठेस पहुंचा रहे हैं?”
"तुम व्यवस्था के विरुद्ध क्यों हो? तुम झुंड की शांति क्यों भंग कर रहे हो?" उसने कहा।
अंत में, उसने उसे घूरकर देखा।
“मैं यहाँ किसलिए आया हूँ? तुम पूछते हो क्यों? तुम्हारा धर्म क्या है?” चिल्लाकर बोला।
फादर फेरापोंट ने पागलों की तरह कहा, "मैं यहाँ आपके आगंतुकों को भगाने आया हूँ।"
अपवित्र शैतान। मैं यह देखने आया हूँ कि मेरे यहाँ से गुज़रते हुए कितने लोग यहाँ जमा हो गए हैं।
मैं कुछ समय के लिए दूर रहा हूँ। मैं उन्हें बर्च की झाड़ से साफ करना चाहता हूँ।
“तुम दुष्ट आत्मा को निकाल देते हो, लेकिन शायद तुम उसकी सेवा कर रहे हो।”
“खुद के बारे में,” फादर पैसी ने निडर होकर आगे कहा। “और कौन अपने बारे में कह सकता है?
‘मैं पवित्र हूँ’? क्या आप हैं, पिता?

मैं अशुद्ध हूँ, पवित्र नहीं। मैं आरामकुर्सी पर नहीं बैठूंगा और...
“मैं उन्हें अपने सामने मूर्ति की तरह झुकने नहीं दूंगा,” फादर फेरापोंट गरजते हुए बोले।
“आजकल लोग सच्चे धर्म को नष्ट कर रहे हैं। मृत व्यक्ति ही तुम्हारा संत है,” उन्होंने कहा।
भीड़ की ओर मुड़कर, अपनी उंगली से ताबूत की ओर इशारा करते हुए, "विश्वास नहीं किया"
शैतानों में। उसने शैतानों को दूर रखने के लिए दवा दी। और इसलिए उनके पास है
कोनों में मकड़ियों की तरह आम हो गए हैं। और अब उसने शुरू कर दिया है...
खुद को बदबूदार बना लेना। इसमें हमें ईश्वर की ओर से एक महान संकेत मिलता है।"
जिस घटना का उन्होंने जिक्र किया वह यह थी। भिक्षुओं में से एक प्रेतवाधित था।
उसे सपनों में और बाद में जागते समय भी बुरी आत्माओं के दर्शन होते थे।
जब उसने अत्यंत भयभीत होकर यह बात बड़े फादर ज़ोसिमा को बताई,
उन्होंने निरंतर प्रार्थना और कठोर उपवास की सलाह दी थी। लेकिन जब उससे कोई लाभ नहीं हुआ, तो
उन्होंने कहा कि निरंतर प्रार्थना और कठोर उपवास आवश्यक हैं।
उन्होंने उसे सलाह दी कि प्रार्थना और उपवास जारी रखते हुए, वह एक
विशेष दवा। उस समय कई लोग सदमे में थे और हाथ हिला रहे थे।
वे इस विषय पर चर्चा करते हुए अपने सिर झुकाए बैठे थे—और सबसे बढ़कर फादर फेरापोंट,
जिन आलोचकों ने इस "असाधारण" घटना की रिपोर्ट करने में जल्दबाजी की थी।
बड़े व्यक्ति की ओर से सलाह।
“चले जाइए, फादर!” फादर पैसी ने आदेशात्मक स्वर में कहा, “यह...”
इसका निर्णय मनुष्य को नहीं बल्कि ईश्वर को करना चाहिए। शायद हम यहाँ एक ऐसा ‘संकेत’ देख रहे हैं जो
न तो तुम, न मैं, न ही हममें से कोई भी इसे समझ सकता है। हे पिता, जाइए!
और झुंड को परेशान मत करो!” उसने प्रभावशाली ढंग से दोहराया।
“उसने नियमानुसार उपवास नहीं रखे और इसलिए यह संकेत मिला।”
आ गया है। यह स्पष्ट है और इसे छिपाना पाप है,” कट्टरपंथी ने जोश में आकर कहा।
अपनी बुद्धि से परे जोश में आकर, वह शांत नहीं होने वाला था।
मिठाइयों के लालच में आकर, महिलाएं उन्हें अपनी जेबों में भरकर उसके पास लाती थीं, वह
चाय की चुस्की लेते हुए, उसने अपने पेट की पूजा की, उसे मीठी चीजों से भर दिया और
अहंकारी विचारों से भरा मन... और इसी कारण उसे लज्जित होना पड़ता है...
“आप हल्के में बोलते हैं, फादर।” फादर पैसी ने भी अपनी आवाज ऊंची कर दी। “मैं
मैं आपके उपवास और कठोरता की प्रशंसा करता हूँ, लेकिन आप कुछ लोगों की तरह हल्के-फुल्के ढंग से
बोलते हैं।
चंचल, नासमझ और बचकाना नौजवान। चले जाओ, पिता, मैं तुम्हें आदेश देता हूँ!
अंत में फादर पैसी ने गरजते हुए कहा।
“मैं जाऊंगा,” फेरापोंट ने थोड़ा हैरान होते हुए कहा, लेकिन फिर भी
कड़वाहट से। “हे विद्वानो! तुम इतने चतुर हो कि मेरी बातों को नीचा समझते हो।”
विनम्रता। मैं यहाँ बहुत कम ज्ञान के साथ आया था और यहाँ आकर मैं सब कुछ भूल गया हूँ।
मुझे जो पता था, वह यह था कि मेरी कमजोरी में स्वयं ईश्वर ने मेरी रक्षा की है।
आपकी सूक्ष्मता।"
फादर पैसी दृढ़ता से उसके ऊपर खड़े होकर प्रतीक्षा कर रहे थे। फादर फेरापोंट
वह रुका और अचानक निराशा से अपना गाल हाथ पर टिका लिया।
मृत बुजुर्ग के ताबूत को देखते हुए, मधुर स्वर में उच्चारण किया गया:
“कल वे उसके ऊपर ‘हमारे सहायक और रक्षक’ गीत गाएंगे—एक
शानदार राष्ट्रगान—और जब मैं मर जाऊँगा तो सब यही गाएँगे, ‘क्या’
“सांसारिक आनंद’—एक छोटा भजन,”6 उन्होंने आँसू भरी खेद के साथ कहा। “तुम हो
“घमंडी और अभिमानी, यह जगह व्यर्थ है!” वह अचानक चिल्लाया जैसे कोई
पागल आदमी, और उसने हाथ हिलाकर तेज़ी से मुड़ गया।

वह सीढ़ियों से नीचे उतरा। नीचे उसका इंतजार कर रही भीड़ डगमगा उठी; कुछ
कुछ लोग तुरंत उसके पीछे-पीछे चले गए और कुछ वहीं रुके रहे, क्योंकि कोठरी अभी भी खुली थी, और
फादर फेरापोंट के पीछे-पीछे सीढ़ियों पर चढ़ते हुए फादर पैसी खड़े होकर देखने लगे।
लेकिन उत्तेजित बूढ़ा कट्टरपंथी पूरी तरह शांत नहीं हुआ। चलते हुए
बीस कदम दूर जाकर, वह अचानक डूबते सूरज की ओर मुड़ा, दोनों हाथ ऊपर उठाए
उसकी बाहें छिन गईं और मानो किसी ने उसे काट डाला हो, वह ज़मीन पर गिर पड़ा।
एक तेज चीख के साथ।
“मेरे ईश्वर ने विजय प्राप्त कर ली है! मसीह ने डूबते सूरज पर विजय प्राप्त कर ली है!”
वह बेतहाशा चिल्लाया, अपने हाथ सूरज की ओर फैलाए और चेहरा नीचे की ओर झुका लिया।
जमीन पर गिरा हुआ वह एक छोटे बच्चे की तरह सिसक रहा था, आँसुओं से कांप रहा था।
और उसने अपनी बाहें ज़मीन पर फैला दीं। फिर सब उसकी ओर दौड़े; वहाँ
विस्मयबोध और सहानुभूतिपूर्ण सिसकियाँ थीं... एक प्रकार का उन्माद प्रतीत हो रहा था।
उन सभी पर कब्जा कर लो।
“यही तो संत है! यही तो पवित्र पुरुष है!”
कुछ लोग भय खोकर जोर से चिल्ला उठे, “यही वह व्यक्ति है जिसे बुजुर्ग होना चाहिए।”
अन्य लोगों ने दुर्भावनापूर्वक कहा।
“वह एक बुजुर्ग नहीं बनेगा... वह इनकार कर देगा... वह किसी की सेवा नहीं करेगा।”
शापित नवाचार... वह उनकी मूर्खता की नकल नहीं करेगा," अन्य आवाजें
उन्होंने तुरंत अपनी बात रखी। और यह कहना मुश्किल है कि वे कितनी दूर तक जा सकते थे, लेकिन
उसी क्षण घंटी बजी और उन्हें प्रार्थना सभा में बुलाया गया। सब कुछ शुरू हो गया।
सभी ने तुरंत क्रॉस का निशान बनाया। फादर फेरापोंट भी उठे और क्रॉस का निशान बनाने लगे।
वह बिना पीछे मुड़े, कुछ बुदबुदाते हुए वापस अपनी कोठरी में चला गया।
ऐसी उद्गार जो पूरी तरह से समझ से परे थीं। कुछ लोग उसके पीछे चले, लेकिन
बड़ी संख्या में लोग सेवा के लिए जल्दी से तितर-बितर हो गए। फादर पैसी ने फादर को जाने दिया।
इओसिफ अपनी जगह पर पढ़ता रहा और नीचे चला गया। कट्टरपंथियों की उन्मादी चीखें सुनाई दे सकती थीं।
इससे वह विचलित नहीं हुआ, लेकिन अचानक उसका हृदय किसी बात को लेकर उदासी से भर गया।
एक विशेष कारण था और उसे ऐसा महसूस हुआ। वह स्थिर खड़ा रहा और अचानक सोचने लगा,
“मैं इतना उदास क्यों हूँ?” और तुरंत आश्चर्य से समझ गया।
उनकी अचानक उदासी का कारण एक बहुत ही छोटा और विशेष कारण था।
कोठरी के प्रवेश द्वार पर उमड़ी भीड़ को देखकर उसने अलेयोशा को देखा और वह
उसे याद आया कि उसे देखते ही उसके दिल में एक टीस उठी थी। "क्या
“क्या वो लड़का अब मेरे दिल के लिए इतना मायने रखता है?” उसने आश्चर्य से खुद से पूछा।
उसी क्षण अलेयोशा उसके पास से गुजरा और जल्दी से चला गया, लेकिन उस गति से नहीं।
चर्च की दिशा में। उनकी नज़रें मिलीं। अलेयोशा ने तुरंत अपना चेहरा दूसरी ओर मोड़ लिया।
उसने अपनी आँखें ज़मीन पर टिका दीं और लड़के की नज़र से ही,
फादर पैसी ने उस समय अनुमान लगा लिया था कि उसमें कितना बड़ा बदलाव हो रहा है।
पल।
“क्या तुम भी प्रलोभन में पड़ गए हो?” फादर पैसी चिल्लाए। “क्या
"तुम अल्पविश्वासियों के साथ हो?" उसने शोकपूर्ण स्वर में पूछा।
अलियोशा स्थिर खड़ा रहा और फादर पैसी को अस्पष्ट रूप से देखता रहा, लेकिन जल्दी ही
उसने बार-बार अपनी नज़रें हटाईं और ज़मीन की ओर देखा। वह खड़ा रहा।
वह एक तरफ मुड़ा हुआ था और उसने अपना चेहरा फादर पैसी की ओर नहीं घुमाया, जो उसे देख रहे थे।
ध्यानपूर्वक।
“तुम्हें इतनी जल्दी कहाँ है? सेवा के लिए घंटी बज रही है,” उसने फिर पूछा।

लेकिन अलेयोशा ने फिर कोई जवाब नहीं दिया।
“क्या आप आश्रम छोड़ रहे हैं? बिना अनुमति लिए, बिना अनुमति लिए?
क्या आप आशीर्वाद मांग रहे हैं?
अलोशा ने अचानक व्यंग्यात्मक मुस्कान दी और एक अजीब, बहुत ही अजीब नज़र डाली।
उस पिता के पास, जिसके लिए वह पूर्व मार्गदर्शक, उसके हृदय का पूर्व स्वामी था।
और मन, उसके प्रिय बड़े भाई ने मरते समय उसे यह बात बताई थी। और
अचानक, बिना कुछ बोले, उसने अपना हाथ हिलाया, मानो उसे कोई परवाह ही न हो।
सम्मान दिखाने के लिए भी, वह तेज़ी से कदम बढ़ाते हुए द्वार की ओर चल पड़ा।
आश्रम से।
“तुम फिर वापस आओगे!” फादर पैसी ने धीरे से कहा, देखते हुए
उसे दुःखपूर्ण आश्चर्य के साथ।

6 जब किसी भिक्षु के शरीर को कोठरी से गिरजाघर तक और गिरजाघर से बाहर ले जाया जाता है गिरजाघर से कब्रिस्तान तक जाते समय, "क्या सांसारिक आनंद..." भजन गाया जाता है। यदि मृतक एक पुजारी और भिक्षु दोनों थे, तो इसके बजाय "हमारा सहायक और रक्षक" भजन गाया जाता है।

अध्याय दो

एक महत्वपूर्ण क्षण

फादर पैसी का यह निर्णय बिल्कुल सही था कि उनका "प्यारा बेटा" वापस लौटेगा। शायद कुछ हद तक, उन्होंने अलेयोशा की आध्यात्मिक स्थिति के सच्चे अर्थ को अंतर्दृष्टि से समझा था। फिर भी, मुझे स्पष्ट रूप से स्वीकार करना होगा कि मेरे लिए उस युवा नायक के जीवन के उस विचित्र, अस्पष्ट क्षण का स्पष्ट वर्णन करना बहुत कठिन होगा, जिसे मैं इतना प्यार करता हूँ। फादर पैसी के दुख भरे प्रश्न, "क्या तुम भी कम आस्था वालों में से हो?" के उत्तर में, मैं अलेयोशा की ओर से विश्वासपूर्वक कह सकता था, "नहीं, वह कम आस्था वालों में से नहीं है। बल्कि इसके विपरीत।" वास्तव में, उसकी सारी परेशानी इस तथ्य से उत्पन्न हुई कि उसकी आस्था बहुत प्रबल थी। लेकिन फिर भी परेशानी बनी रही और इतनी पीड़ादायक थी कि लंबे समय बाद भी अलेयोशा उस दुखद दिन को अपने जीवन के सबसे कड़वे और घातक दिनों में से एक मानता था। यदि यह प्रश्न पूछा जाए: "क्या उसका सारा दुख और बेचैनी केवल इस कारण थी कि उसके बड़े भाई के शरीर ने चमत्कार करने के बजाय समय से पहले सड़ने के लक्षण दिखाए?" मैं सीधे-सीधे कहूँ तो, “हाँ, बिलकुल ऐसा ही था।” मैं पाठक से बस यही निवेदन करूँगा कि मेरे युवा नायक के पवित्र हृदय पर हँसने की जल्दी न करें। मेरा इरादा न तो उसके लिए माफ़ी माँगने का है और न ही उसकी कम उम्र, पढ़ाई में कम प्रगति या ऐसे किसी कारण से उसके भोले-भाले विश्वास को सही ठहराने का। बल्कि इसके विपरीत, मैं उसके हृदय के गुणों का दिल से सम्मान करता हूँ। बेशक, एक ऐसा युवक जो भावनाओं को संशय से ग्रहण करता है, जिसका प्रेम उदासीन होता है, और जिसका दिमाग अपनी उम्र से ज़्यादा समझदार होता है और इसलिए कम महत्व का होता है, ऐसा युवक, मैं मानता हूँ, मेरे नायक के साथ जो हुआ उससे बच सकता था। लेकिन कुछ मामलों में, किसी भावना से बह जाना, चाहे वह कितनी भी अतार्किक क्यों न हो, जो एक बड़े प्रेम से उत्पन्न होती है, उदासीन रहने से कहीं अधिक प्रशंसनीय होता है। और यह बात युवाओं में और भी सच है, क्योंकि जो युवक हमेशा संवेदनशील रहता है, उस पर संदेह किया जाता है और उसका कोई महत्व नहीं होता—यह मेरी राय है!
“लेकिन,” शायद समझदार लोग कहेंगे, “हर युवक
मैं इस तरह के अंधविश्वास में विश्वास नहीं कर सकता और आपका नायक दूसरों के लिए कोई आदर्श नहीं है।"
इस पर मैं फिर से जवाब देता हूँ, “हाँ! मेरे नायक को आस्था थी, एक पवित्र और अटल आस्था।”
लेकिन फिर भी मैं उसके लिए माफी नहीं मांगने वाला हूं।"
हालांकि मैंने ऊपर, और शायद जल्दबाजी में, यह घोषणा की थी कि मैं ऐसा नहीं करूंगा।
मेरे नायक की व्याख्या या औचित्य सिद्ध करने के लिए, मुझे लगता है कि मेरी कहानी के शेष भाग को समझने के लिए कुछ स्पष्टीकरण आवश्यक है। तो चलिए, मैं कहूँ, यह चमत्कारों का प्रश्न नहीं था। उनके मन में चमत्कारों की कोई व्यर्थ और अधीर अपेक्षा नहीं थी। और उस समय अलेयोशा को किसी पूर्वकल्पित विचार की विजय के लिए किसी चमत्कार की आवश्यकता नहीं थी—नहीं, बिलकुल नहीं—उनके सामने जो कुछ था वह एक ही आकृति थी—उनके प्रिय बड़े की आकृति, उस पवित्र पुरुष की आकृति जिसका वे अत्यंत श्रद्धापूर्वक आदर करते थे। वास्तव में, उनके शुद्ध युवा हृदय में प्रत्येक व्यक्ति और प्रत्येक वस्तु के लिए जो प्रेम छिपा था, वह पिछले एक वर्ष से—और शायद गलत तरीके से—एक ही व्यक्ति, उनके प्रिय बड़े पर केंद्रित था। यह सत्य है कि उन्होंने उस व्यक्ति को इतने लंबे समय तक अपना आदर्श मान लिया था कि उनकी सारी युवा शक्ति और ऊर्जा उस आदर्श की ओर मुड़ गई, यहाँ तक कि उस क्षण "प्रत्येक व्यक्ति और प्रत्येक वस्तु" को भूल भी गई। उन्हें बाद में याद आया कि उस भयानक दिन, वह अपने भाई दिमित्री को पूरी तरह से भूल गए थे, जिसके बारे में वह एक दिन पहले इतने चिंतित और परेशान थे; वह इलूशा के पिता को दो सौ रूबल देना भी भूल गया था, जबकि पिछली शाम उसने ऐसा करने का बहुत इरादा किया था। लेकिन उसे चमत्कारों की नहीं, बल्कि "उच्चतर न्याय" की आवश्यकता थी, जो उसके विश्वास में उस आघात से आहत हुआ था जिसने अचानक और क्रूरता से उसके हृदय को घायल कर दिया था। और इसका क्या अर्थ है कि

अलेयोशा द्वारा अपेक्षित यह "न्याय" अनिवार्य रूप से उसके प्रिय गुरु की राख से होने वाले चमत्कारों का रूप ले लेता है? दरअसल, मठ में हर कोई यही विचार और यही आशा रखता था, यहाँ तक कि वे लोग भी जिनकी बुद्धि का अलेयोशा आदर करता था, उदाहरण के लिए स्वयं फादर पैसी। और इसलिए अलेयोशा, संदेह से मुक्त होकर, अपने सपनों को भी बाकी सभी के समान रूप दे बैठा। और मठ में बिताए एक वर्ष ने उसके हृदय में इस अपेक्षा को प्रबल कर दिया था। लेकिन वह न्याय के लिए तरस रहा था, न्याय के लिए, न कि केवल चमत्कारों के लिए।
और अब वह व्यक्ति जिसे, उनके विश्वास के अनुसार, ऊपर उठाया जाना चाहिए था
पूरी दुनिया में हर कोई, वह व्यक्ति, अपने हक की महिमा पाने के बजाय, अचानक अपमानित और बेइज्जत हो गया! किसलिए? किसने उसका फैसला किया? किसने यह तय किया होगा? ये वो सवाल थे जो उसके भोले-भाले और पवित्र हृदय को झकझोर रहे थे। वह इस बात को सहन नहीं कर पा रहा था कि सबसे पवित्र व्यक्ति को उसके से इतने ही हीन तुच्छ लोगों के उपहास और द्वेषपूर्ण मजाक का पात्र बनाया जाए। अगर कोई चमत्कार न भी हुआ होता, अगर उसकी आशाओं को सही ठहराने वाली कोई अद्भुत बात न भी होती, तो भी यह अपमान, यह तिरस्कार, यह असमय क्षय, जैसा कि उन द्वेषपूर्ण भिक्षुओं ने कहा, "प्रकृति से परे" क्यों? यह "स्वर्ग का संकेत" क्यों, जिसका उन्होंने फादर फेरापोंट के साथ मिलकर इतने गर्व से स्वागत किया था, और उन्हें क्यों लगा कि उन्हें इसका स्वागत करने का अधिकार मिल गया है? ईश्वर की कृपा कहाँ है? ईश्वर ने "सबसे नाजुक क्षण में" अपना चेहरा क्यों छिपा लिया (जैसा कि अलेयोशा ने सोचा था), मानो स्वेच्छा से प्रकृति के अंधे, गूंगे, निर्दयी नियमों के आगे आत्मसमर्पण कर दिया हो?
इसी वजह से अलेयोशा का दिल खून से लथपथ था, और, बेशक, जैसा कि मैंने
जैसा कि पहले ही कहा जा चुका है, सबसे बड़ा दुख यही था कि जिस व्यक्ति को वह धरती पर सबसे अधिक प्यार करता था, उसे शर्मिंदा और अपमानित होना पड़ा! मेरे नायक की यह बड़बड़ाहट शायद सतही और तर्कहीन रही हो, लेकिन मैं तीसरी बार फिर दोहराता हूँ—और यह स्वीकार करने को तैयार हूँ कि अपनी इस भावना का बचाव करना मुश्किल हो सकता है—मुझे खुशी है कि मेरे नायक ने उस क्षण में खुद को बहुत तर्कसंगत नहीं दिखाया, क्योंकि समझदार व्यक्ति समय के साथ तर्क पर लौट आता है, लेकिन अगर ऐसे असाधारण क्षण में किसी लड़के के दिल में प्यार हावी नहीं होता, तो कब होगा? हालाँकि, मैं एक अजीब बात का उल्लेख करना नहीं भूलूँगा, जो इस घातक और अस्पष्ट क्षण में कुछ समय के लिए अलेयोशा के मन में उभरी। यह नई बात इवान के साथ हुई बातचीत का परेशान करने वाला प्रभाव था, जो अब लगातार अलेयोशा के मन को सता रहा था। इस क्षण में यह उसे सता रहा था। ओह, ऐसा नहीं था कि उसकी आत्मा के मूलभूत, मौलिक, विश्वास में कुछ हलचल हुई थी। वह अपने ईश्वर से प्रेम करता था और उस पर दृढ़ विश्वास रखता था, यद्यपि अचानक उसके मन में ईश्वर के विरुद्ध संदेह उत्पन्न हो रहा था। फिर भी, इवान के साथ हुई पिछली बातचीत से उत्पन्न एक अस्पष्ट, पीड़ादायक और बुरी छाप अचानक उसके मन में फिर से जागृत हो गई और ऐसा प्रतीत हुआ मानो वह उसकी चेतना की सतह पर आने के लिए विवश हो रही हो।
जब शाम होने लगी थी, तब रकितिन चीड़ के झुरमुट को पार करते हुए आगे बढ़ा।
मठ में शरण लेने के दौरान, अचानक अलेयोशा एक पेड़ के नीचे जमीन पर औंधे मुंह लेटा हुआ दिखाई दिया, वह हिल नहीं रहा था और ऐसा लग रहा था मानो सो रहा हो। वह उसके पास गया और उसे उसके नाम से पुकारा।
“तुम यहाँ हो, एलेक्सी? क्या तुम...” वह सोचने लगा लेकिन रुक गया।
बंद। उसका मतलब था, "क्या तुम इस हद तक आ सकते हो?"
अलियोशा ने उसकी ओर नहीं देखा, लेकिन एक हल्की सी हलचल से ही रकितिन ने तुरंत उसे देख लिया। उसने देखा कि वह उसकी बात सुन और समझ गया था।
“क्या बात है?” उसने आगे पूछा; लेकिन उसके चेहरे पर आश्चर्य धीरे-धीरे कम होता चला गया।
वह मुस्कान धीरे-धीरे और अधिक व्यंग्यात्मक होती चली गई।
मैंने कहा, मैं पिछले दो घंटों से तुम्हें ढूंढ रहा था। तुम अचानक प्रकट हो गए।
गायब हो गया। तुम क्या कर रहे हो? ये कैसी बेवकूफी है? तुम बस मेरी तरफ देख लो...

अलियोशा ने अपना सिर उठाया, बैठ गया और पेड़ से पीठ टिका ली। वह रो नहीं रहा था, लेकिन उसके चेहरे पर पीड़ा और चिड़चिड़ाहट के भाव थे। उसने रकितिन की ओर नहीं देखा, बल्कि अपनी नज़रें एक तरफ हटा लीं।
“क्या आपको पता है कि आपका चेहरा कितना बदल गया है? अब आपके चेहरे की वो मशहूर झलक बिल्कुल नहीं दिखती।”
इसमें सौम्यता झलकती है। क्या आप किसी से नाराज़ हैं? क्या वे आपके साथ दुर्व्यवहार कर रहे हैं?
“मुझे अकेला छोड़ दो,” अलेयोशा ने अचानक थके हुए अंदाज़ में कहा।
हाथ, अभी भी उससे नजरें हटाए हुए।
“ओहो! तो हम ऐसा महसूस कर रहे हैं! तो आप लोगों पर चिल्ला सकते हैं जैसे
अन्य मनुष्यों के सामने। ये तो स्वर्गदूतों से नीचे उतरने जैसा है। मैं कहता हूँ, अलेयोशा, तुमने मुझे चौंका दिया है, सुना? मेरा मतलब यही है। यहाँ मुझे किसी बात पर आश्चर्य हुए बहुत समय हो गया है। मैंने हमेशा तुम्हें एक पढ़ा-लिखा आदमी समझा था...
अलेयोशा ने अंततः उसकी ओर देखा, लेकिन अस्पष्ट रूप से, मानो मुश्किल से ही।
मुझे समझ आ रहा था कि उसने क्या कहा।
"क्या आप सचमुच सिर्फ इसलिए इतने परेशान हो सकते हैं क्योंकि आपके पिताजी ने..."
"बदबू? आपका मतलब यह तो नहीं है कि आपको सचमुच विश्वास था कि वह चमत्कार करेगा?" रकितिन ने सचमुच आश्चर्यचकित होते हुए कहा।
मुझे विश्वास था, मुझे विश्वास है, मैं विश्वास करना चाहता हूँ, और मैं विश्वास करूँगा, मुझे और क्या चाहिए?
“तुम्हें क्या चाहिए?” अलेयोशा ने चिढ़कर कहा।
“बिल्कुल नहीं, मेरे बेटे। धिक्कार है! तेरह साल का स्कूली बच्चा ऐसा नहीं कर सकता।”
अब तो तुम इस बात पर यकीन करते हो। लेकिन... अब तुम अपने ईश्वर से नाराज़ हो, उसके खिलाफ बगावत कर रहे हो; उसने तुम्हें तरक्की नहीं दी, उसने तुम्हें पुण्य का पुरस्कार नहीं दिया! अरे, तुम तो बड़े ही बिगड़े हुए हो!
अलियोशा ने आधी बंद आँखों से रकितिन को काफी देर तक निहारा, और
उसकी आँखों में अचानक एक चमक आ गई... लेकिन रकितिन के प्रति क्रोध की नहीं।
मैं अपने ईश्वर के विरुद्ध विद्रोह नहीं कर रहा हूँ; मैं बस ‘उनकी दुनिया को स्वीकार नहीं करता’।”
अलेयोशा ने अचानक बनावटी मुस्कान दी।
“तुम्हारा मतलब क्या है, तुम दुनिया को स्वीकार नहीं करते?” रकितिन ने सोचा।
उसके जवाब पर एक पल रुककर उसने सोचा, "ये कैसी बेवकूफी है?"
अलियोशा ने कोई जवाब नहीं दिया।
“बस करो, बहुत बकवास हो गई, अब काम की बात करते हैं। क्या तुम्हें कुछ कहना है?”
आज क्या खाएं?
मुझे याद नहीं है... मुझे लगता है कि मैंने किया है।
"तुम्हारे चेहरे से तो यही लगता है कि तुम्हें खुद को अपडेट रखने की जरूरत है। तुम्हें देखकर अफसोस होता है।"
आप पर। मैंने सुना है कि आप भी पूरी रात नहीं सोए, आपकी वहाँ कोई मीटिंग थी। और फिर उसके बाद ये सब हंगामा। शायद आपने पवित्र रोटी के एक निवाले के अलावा कुछ नहीं खाया होगा। मेरी जेब में कुछ सॉसेज है; मैं इसे शहर से लाया हूँ, ज़रूरत पड़ने पर काम आएगा, लेकिन आप सॉसेज नहीं खाते...
"मुझे कुछ दें।"
“मैं कहता हूँ! तुम तो जा ही रहे हो! अरे, ये तो बैरिकेड्स के साथ एक तरह का विद्रोह है!”
अच्छा, मेरे बेटे, हमें इसका पूरा फायदा उठाना चाहिए। मेरे घर आओ... मुझे भी थोड़ी सी वोदका पीने में कोई आपत्ति नहीं होगी, मैं बहुत थका हुआ हूँ। मुझे लगता है वोदका तुम्हारे लिए कुछ ज्यादा ही हो जाएगी... या फिर तुम थोड़ी पीना चाहोगे?
मुझे थोड़ी वोदका भी दे दो।
“अरे वाह! तुमने तो मुझे चौंका ही दिया, भाई!” रकितिन ने हैरानी से उसकी ओर देखा।

खैर, चाहे वोदका हो या सॉसेज, यह एक शानदार मौका है और इसे गंवाना नहीं चाहिए। आइए, हमारे साथ चलिए।
अलियोशा चुपचाप उठा और रकितिन के पीछे-पीछे चला गया। “अगर तुम्हारा छोटा भाई इवान यह देख ले तो वह कितना हैरान होगा!
वैसे, क्या आपको पता था कि आपका भाई इवान आज सुबह मॉस्को के लिए रवाना हो गया है?
“हाँ,” अलेयोशा ने बेरुखी से उत्तर दिया, और अचानक उसके मन में उसकी छवि उभर आई।
भाई दिमित्री का आभास उसके मन में हुआ। लेकिन केवल एक क्षण के लिए, और यद्यपि इसने उसे किसी ऐसी बात की याद दिला दी जिसे एक पल के लिए भी टाला नहीं जा सकता था, कोई कर्तव्य, कोई भयानक दायित्व, फिर भी उस याद ने उस पर कोई प्रभाव नहीं डाला, उसके हृदय तक नहीं पहुँचा और तुरंत उसके मन से ओझल हो गया और भुला दिया गया। लेकिन, बहुत समय बाद, अलेयोशा को यह याद आया।
“आपके भाई इवान ने एक बार कहा था कि मैं ‘बिना किसी ज्ञान के एक उदारवादी मूर्ख’ हूँ
चाहे कितनी भी प्रतिभाएं हों।’ एक समय था जब तुम भी मुझे ‘बेईमान’ कहने से खुद को रोक नहीं पाए थे। अच्छा! अब मैं देखना चाहूंगा कि तुम्हारी प्रतिभाएं और सम्मान की भावना तुम्हारे लिए क्या कर सकती हैं।” यह वाक्य रकितिन ने मन ही मन फुसफुसाते हुए पूरा किया।
“सुनो!” उसने ज़ोर से कहा, “चलो मठ के आगे वाले रास्ते से चलते हैं।”
सीधे शहर की ओर। हम्म! वैसे मुझे मैडम होहलाकोव के यहाँ भी जाना चाहिए। ज़रा सोचिए, मैंने उन्हें सब कुछ बताने के लिए पत्र लिखा था, और यकीन मानिए, उन्होंने तुरंत पेंसिल से जवाब दिया (उन्हें नोट्स लिखने का बहुत शौक है) कि 'फादर ज़ोस्सिमा जैसे आदरणीय व्यक्ति से उन्हें ऐसे व्यवहार की उम्मीद कभी नहीं थी।' यही उनका शब्द था: 'व्यवहार।' वह भी नाराज़ हैं। अरे, तुम तो बड़े बदमाश हो! रुको!” वह अचानक फिर चिल्लाया। वह अचानक रुक गया और अलेयोशा को कंधे से पकड़कर उसे भी रोक दिया।
“क्या तुम जानते हो, अलेयोशा?” उसने उत्सुकता से उसकी आँखों में झाँका,
अचानक मन में आए एक नए विचार में लीन होकर, वह बाहर से तो हंस रहा था, लेकिन जाहिर तौर पर उस नए विचार को ज़ोर से बोलने से डर रहा था, क्योंकि अलेयोशा की अजीब और अप्रत्याशित मनोदशा को देखकर उसे अभी भी यकीन करना मुश्किल हो रहा था। "अलेयोशा, क्या तुम जानते हो कि हमें कहाँ जाना चाहिए?" उसने अंत में दबी आवाज़ में और इशारे से पूछा।
मुझे परवाह नहीं... कि आपको कहाँ पसंद है।
“चलो ग्रुशेंका चलते हैं, है ना? क्या तुम आओगे?” रकितिन ने कहा।
अंत में, दबी हुई आशंका से कांपते हुए।
“चलो ग्रुशेंका चलते हैं,” अलेयोशा ने शांत भाव से तुरंत उत्तर दिया, और यह
इतनी जल्दी और शांतिपूर्वक हुई सहमति से रकितिन इतना हैरान हो गया कि वह लगभग पीछे हटने ही वाला था।
“वाह! मैं तो यही कह रहा हूँ!” वह आश्चर्य से चिल्लाया, लेकिन अलेयोशा को मजबूती से पकड़ते हुए उसने उसे हाथ में लेकर रास्ते पर आगे बढ़ाया, इस डर से कि कहीं वह अपना मन न बदल ले।
वे चुपचाप चलते रहे, रकितिन को बोलने से सचमुच डर लग रहा था। "और वह कितनी खुश होगी, कितनी प्रसन्न होगी!" उसने बुदबुदाया, लेकिन फिर चुप हो गया।
फिर सन्नाटा छा गया। और वास्तव में वह अलेयोशा को ग्रुशेंका को प्रसन्न करने के लिए नहीं ले जा रहा था। वह एक व्यावहारिक व्यक्ति था और स्वयं के लाभ की संभावना के बिना कभी कोई कार्य नहीं करता था। इस मामले में उसका उद्देश्य दोहरा था, पहला "धर्मी लोगों के पतन" और अलेयोशा के "संतों से पापियों" में गिरने का प्रतिशोधी भाव, जिस पर वह पहले से ही अपनी कल्पना में प्रसन्न हो रहा था, और दूसरा स्वयं के लिए एक निश्चित भौतिक लाभ, जिसके बारे में आगे विस्तार से बताया जाएगा।
“तो अब निर्णायक क्षण आ गया है,” उसने द्वेषपूर्ण भाव से मन ही मन सोचा।
खुशी से, "और हम इसे तुरंत पकड़ लेंगे, क्योंकि यही तो हम चाहते हैं।"

अध्याय 3

एक प्याज

ग्रुशेंका कस्बे के सबसे व्यस्त इलाके में, गिरजाघर चौक के पास, विधवा मोरोज़ोव के घर के आंगन में बने एक छोटे से लकड़ी के मकान में रहती थी। मोरोज़ोव का मकान दो मंजिला, बड़ा और बेहद बदसूरत पत्थर का बना हुआ था। विधवा अपनी दो अविवाहित भतीजियों के साथ एकांत जीवन व्यतीत करती थी, जो दोनों ही बुजुर्ग थीं। उसे ग्रुशेंका को किराए पर देने की कोई आवश्यकता नहीं थी, लेकिन सभी जानते थे कि उसने चार साल पहले ग्रुशेंका को किराएदार के रूप में रखा था, केवल अपने रिश्तेदार, व्यापारी सैमसनोव को खुश करने के लिए, जो ग्रुशेंका का संरक्षक माना जाता था। कहा जाता था कि ईर्ष्यालु बूढ़े सैमसनोव ने अपनी "पसंदीदा" ग्रुशेंका को विधवा मोरोज़ोव के पास इसलिए रखा था ताकि विधवा अपनी नई किराएदार के व्यवहार पर कड़ी नज़र रख सके। लेकिन यह कड़ी नज़र जल्द ही अनावश्यक साबित हुई, और अंततः विधवा मोरोज़ोव ग्रुशेंका से बहुत कम मिलती थी और उसकी देखभाल करके उसे परेशान नहीं करती थी। यह सच है कि उस बूढ़े व्यक्ति द्वारा प्रांत के प्रमुख शहर से अठारह वर्षीय दुबली-पतली, नाज़ुक, शर्मीली, संकोची, स्वप्निल और उदास लड़की को लाए हुए चार वर्ष बीत चुके थे, और तब से बहुत कुछ घटित हो चुका था। शहर में लड़की के इतिहास के बारे में बहुत कम जानकारी थी, और वह भी अस्पष्ट थी। पिछले चार वर्षों में, यहाँ तक कि कई लोगों के उस खूबसूरत युवती में रुचि लेने के बावजूद, जिसमें अग्रफेना अलेक्जेंड्रोवना का रूप विकसित हो चुका था, उसके बारे में और कुछ पता नहीं चल पाया था। अफवाहें थीं कि सत्रह वर्ष की आयु में किसी ने, किसी अधिकारी ने, उसे धोखा दिया था और उसके तुरंत बाद उसे छोड़ दिया था। अधिकारी चला गया और बाद में शादी कर ली, जबकि ग्रुशेंका गरीबी और अपमान में रह गई थी। हालाँकि, यह कहा जाता था कि यद्यपि ग्रुशेंका को बूढ़े व्यक्ति, सैमसनोव ने गरीबी से बाहर निकाला था, वह एक सम्मानित परिवार से थी जो पादरी वर्ग से संबंधित था, और वह किसी पादरी या इसी तरह के किसी व्यक्ति की बेटी थी।

और अब चार साल बाद, वह संवेदनशील, घायल और दयनीय नन्हा अनाथ बच्चा।

ग्रुशेंका एक गोल-मटोल, गुलाबी रंग की खूबसूरत रूसी महिला बन चुकी थी, जो साहसी और दृढ़ निश्चयी, अभिमानी और उद्दंड स्वभाव की थी। व्यापार में उसकी अच्छी समझ थी, वह धन-संपन्न, बचत करने वाली और सावधान थी, और कहा जाता था कि उसने सही या गलत तरीकों से थोड़ी संपत्ति जमा कर ली थी। केवल एक बात पर सभी सहमत थे। ग्रुशेंका से आसानी से संपर्क नहीं किया जा सकता था और उसके बूढ़े संरक्षक के अलावा, उन चार वर्षों में कोई भी पुरुष उसके स्नेह का दावा नहीं कर सकता था। यह एक अटल सत्य था, क्योंकि कई लोगों ने, विशेष रूप से पिछले दो वर्षों में, उसका स्नेह पाने का प्रयास किया था। लेकिन उनके सभी प्रयास व्यर्थ गए थे और इनमें से कुछ चाहने वालों को उस दृढ़ इच्छाशक्ति वाली युवती के कड़े और व्यंग्यात्मक प्रतिरोध के कारण अपमानजनक और हास्यास्पद तरीके से पीछे हटना पड़ा था। यह भी ज्ञात था कि वह युवती, विशेष रूप से हाल के दिनों में, "सट्टेबाजी" में लिप्त थी और इस दिशा में उसने उल्लेखनीय क्षमता दिखाई थी, जिसके कारण कई लोग कहने लगे थे कि वह किसी यहूदी से कम नहीं है। ऐसा नहीं था कि वह ब्याज पर पैसा उधार देती थी, लेकिन यह ज्ञात था कि कुछ समय पहले उसने बूढ़े करामाज़ोव के साथ साझेदारी में, नाममात्र मूल्य के दसवें हिस्से में खराब ऋण खरीदकर उनका दस गुना लाभ कमाया था। वृद्ध विधुर सैमसनोव, जो एक विशाल संपत्ति के धनी व्यक्ति थे, कंजूस थे और
निर्दयी। वह अपने वयस्क बेटों पर अत्याचार करता था, लेकिन पिछले एक साल से, जब वह बीमार था और उसके सूजे हुए पैर काम नहीं कर रहे थे, वह अपनी आश्रिता के प्रभाव में आ गया था, जिसे उसने पहले तो सख्ती से और सादे माहौल में रखा था, जैसा कि उस समय के जानकार कहते थे, "उपवास के दौरान मिलने वाले भोजन" पर। लेकिन ग्रुशेंका ने खुद को उससे मुक्त कर लिया था, और उसने उसमें अपनी वफादारी का असीम विश्वास जगा दिया था। वह बूढ़ा, जो अब बहुत पहले मर चुका है, अपने समय में एक बड़ा व्यवसाय चलाता था और एक उल्लेखनीय व्यक्तित्व भी था, कंजूस और पत्थर की तरह कठोर। हालांकि ग्रुशेंका का उस पर इतना गहरा प्रभाव था कि वह उसके बिना नहीं रह सकता था (खासकर पिछले दो वर्षों में), उसने

उसे कोई बड़ी संपत्ति नहीं दी और अगर उसने उसे छोड़ने की धमकी भी दी होती तो भी वह ऐसा करने के लिए प्रेरित नहीं होता। लेकिन उसने उसे एक छोटी सी रकम दी थी, और जब यह बात सबको पता चली तो यह भी सबके लिए आश्चर्य की बात थी।
“तुम दिमाग वाली लड़की हो,” उसने उससे कहा, जब उसने उसे आठ दिए
हजार रूबल, "और तुम्हें अपना ख्याल खुद रखना होगा, लेकिन मैं तुम्हें बता दूं कि पहले की तरह तुम्हारे वार्षिक भत्ते के अलावा, मेरी मृत्यु के दिन तक तुम्हें मुझसे कुछ भी नहीं मिलेगा, और मैं अपनी वसीयत में भी तुम्हारे लिए कुछ नहीं छोड़ूंगा।"
और उसने अपना वचन निभाया; उसकी मृत्यु हो गई और उसने अपनी सारी संपत्ति अपने पुत्रों के नाम कर दी, जिन्हें,
उन्होंने अपने जीवन भर अपनी पत्नियों और बच्चों के साथ नौकरों जैसा व्यवहार किया था। उनकी वसीयत में ग्रुशेंका का ज़िक्र तक नहीं था। यह सब बाद में पता चला। उन्होंने ग्रुशेंका को अपनी सलाह से पूंजी बढ़ाने और व्यापार में आगे बढ़ने में मदद की थी।
जब फ्योदोर पावलोविच, जो पहली बार ग्रुशेंका के संपर्क में आए थे
एक अटकलबाजी के चलते, ग्रुशेंका को उससे बेइंतहा प्यार हो गया, जिससे वह खुद भी हैरान रह गया। गंभीर रूप से बीमार होने के बावजूद, बूढ़े सैमसनोव को इस बात पर बहुत हंसी आई। यह उल्लेखनीय है कि अपनी पूरी जान-पहचान के दौरान ग्रुशेंका बूढ़े सैमसनोव के साथ पूरी तरह से खुलकर बात करती थी, और ऐसा लगता है कि वह दुनिया में एकमात्र ऐसा व्यक्ति था जिसके साथ वह इतनी सहज थी। हाल ही में, जब दिमित्री भी अपनी प्रेमिका के साथ आया, तो बूढ़े सैमसनोव ने हंसना बंद कर दिया। इसके विपरीत, एक बार उन्होंने ग्रुशेंका को एक सख्त और गंभीर सलाह दी।
“अगर आपको पिता या पुत्र, दोनों में से किसी एक को चुनना पड़े, तो बेहतर होगा कि आप पिता या पुत्र को चुनें।”
उस बूढ़े आदमी को चुन लो, बशर्ते कि तुम यह सुनिश्चित कर लो कि वह बूढ़ा बदमाश तुमसे शादी कर ले और तुम्हें पहले से ही कुछ संपत्ति दे दे। लेकिन कप्तान के साथ संबंध मत रखो, उससे तुम्हें कोई फायदा नहीं होगा।
ये वही शब्द थे उस बूढ़े अय्याश के, जिसे पहले से ही यह महसूस हो रहा था कि
उनकी मृत्यु निकट ही थी और वास्तव में उनकी मृत्यु पांच महीने बाद हुई।
मैं यह भी संक्षेप में बताना चाहूंगा कि हालांकि हमारे शहर में कई लोग इसके बारे में जानते थे
करामाज़ोव पिता-पुत्र की घिनौनी और भयानक प्रतिद्वंद्विता, जिसका निशाना ग्रुशेंका थी, को शायद ही कोई समझ पाया कि उन दोनों के प्रति उसके रवैये के पीछे असल वजह क्या थी। यहाँ तक कि ग्रुशेंका की दो नौकरानियों ने (जिस त्रासदी की चर्चा हम बाद में करेंगे) अदालत में गवाही दी कि उसने दिमित्री फ्योदोरोविच को केवल डर के मारे अपने यहाँ रखा था क्योंकि "उसने उसकी जान से मारने की धमकी दी थी।" ये नौकरानियाँ ग्रुशेंका के पुराने घर से आई एक बूढ़ी रसोइया थीं, जो बीमार और लगभग बहरी थीं, और उसकी पोती, एक बीस साल की होशियार युवती, जो नौकरानी का काम करती थी। ग्रुशेंका बहुत ही सादगी से रहती थी और उसका परिवेश विलासिता से बिल्कुल रहित था। उसका घर तीन कमरों का था, जो 1820 के दशक के महोगनी फर्नीचर से सुसज्जित था, जो उसकी मकान मालकिन का था।
जब रकितिन और अलेयोशा उसके कमरे में दाखिल हुए तो काफी अंधेरा था, फिर भी वे
कमरे में रोशनी नहीं थी। ग्रुशेंका अपने ड्राइंग रूम में महोगनी की पीठ वाले बड़े, सख्त और भद्दे सोफे पर लेटी हुई थी। सोफा जर्जर और फटे हुए चमड़े से ढका हुआ था। उसके सिर के नीचे उसके बिस्तर से लिए गए दो सफेद तकिए थे। वह पीठ के बल लेटी हुई थी, उसके हाथ सिर के पीछे थे। उसने काले रेशमी कपड़े पहने थे, मानो किसी का इंतज़ार कर रही हो, और सिर पर एक सुंदर लेस का फिचू था, जो उस पर बहुत जंच रहा था। उसके कंधों पर एक लेस का शॉल था, जिस पर एक बड़ा सोने का ब्रोच लगा हुआ था। वह निश्चित रूप से किसी का इंतज़ार कर रही थी। वह अधीर और थकी हुई लग रही थी, उसका चेहरा पीला पड़ गया था और उसके होंठ और आँखें गर्म थीं, वह बेचैनी से अपने दाहिने पैर के पंजे से सोफे के आर्मरेस्ट को थपथपा रही थी। रकितिन और अलेयोशा के आने से थोड़ी हलचल मच गई। हॉल से वे ग्रुशेंका को सोफे से उछलकर डरी

हुई आवाज में चिल्लाते हुए सुन सकते थे, "कौन है?" लेकिन नौकरानी ने आगंतुकों का स्वागत किया और तुरंत अपनी मालकिन को वापस बुलाया।
"यह वह नहीं है, कुछ भी नहीं है, बस कुछ और आगंतुक हैं।"
“क्या बात है?” रकितिन ने बुदबुदाते हुए अलेयोशा को अंदर ले जाते हुए कहा।
बैठक का कमरा।
ग्रुशेंका सोफे के पास खड़ी थी मानो अभी भी घबराई हुई हो। एक मोटी कुंडली
उसके गहरे भूरे बालों की एक लट लेस कवरिंग से निकलकर उसके दाहिने कंधे पर गिर गई, लेकिन उसने इस पर ध्यान नहीं दिया और जब तक उसने अपने आगंतुकों को नहीं देखा और उन्हें पहचान नहीं लिया, तब तक उसने बालों को वापस नहीं समेटा।
“अरे, तुम हो, रकितिन? तुमने मुझे काफी डरा दिया। तुम किसे जानते हो?”
"इधर लाए हो? तुम्हारे साथ ये कौन है? हे भगवान, तुम उसे ले आए हो!" अलेयोशा को पहचानते हुए वह हैरानी से बोली।
“मोमबत्तियाँ मंगवा लीजिए!” रकितिन ने बेहद सहज और बेफिक्र अंदाज में कहा।
घनिष्ठ मित्र, जिसे घर में आदेश देने का विशेषाधिकार प्राप्त है।
“मोमबत्तियाँ... बिल्कुल, मोमबत्तियाँ... फेन्या, उसके लिए एक मोमबत्ती लाओ... अच्छा,
“तुमने उसे लाने के लिए बिल्कुल सही समय चुना है!” उसने अलेयोशा की ओर इशारा करते हुए फिर कहा और शीशे की ओर मुड़कर दोनों हाथों से अपने बालों को जल्दी से बांधने लगी। वह नाखुश लग रही थी।
“क्या मैं आपको खुश नहीं कर पाया?” रकितिन ने लगभग तुरंत ही पूछा।
अपमानित।
“तुमने मुझे डरा दिया, रकितिन, बात यही है।” ग्रुशेंका मुड़ी और बोली...
अलेयोशा को देखकर मुस्कुराते हुए बोली, “मुझसे मत डरो, मेरे प्यारे अलेयोशा, तुम सोच भी नहीं सकते कि तुम्हें देखकर मैं कितनी खुश हूँ, तुम तो अचानक आए हो। पर तुमने मुझे डरा दिया, राकितिन, मुझे लगा मित्या घुसपैठ कर रहा है। देखो, मैंने अभी उसे धोखा दिया, मैंने उससे वादा लिया कि वह मुझ पर विश्वास करेगा और मैंने उससे झूठ बोला। मैंने उससे कहा कि मैं आज शाम अपने बूढ़े पिता कुज़्मा कुज़्मिच के साथ बिताने जा रही हूँ और देर रात तक उनके पैसे गिनती रहूँगी। मैं हर हफ्ते एक पूरी शाम उनके साथ उनके हिसाब-किताब करने में बिताती हूँ। हम खुद को कमरे में बंद कर लेते हैं और वह हिसाब-किताब की माला पर पैसे गिनते हैं जबकि मैं बैठकर हिसाब-किताब लिखती हूँ। वह सिर्फ मुझ पर ही भरोसा करते हैं। मित्या को लगता है कि मैं वहाँ हूँ, लेकिन मैं वापस आ गई हूँ और यहाँ बंद होकर किसी खबर का इंतज़ार कर रही हूँ। फेन्या ने तुम्हें अंदर कैसे आने दिया? फेन्या, फेन्या, बाहर गेट पर जाओ, उसे खोलो और देखो कि कप्तान कहीं दिख तो नहीं रहा! शायद वह छुपकर जासूसी कर रहा हो, मैं बहुत डरी हुई हूँ।”
"वहाँ कोई नहीं है, अग्रफेना अलेक्जेंड्रोवना, मैंने अभी बाहर देखा है, मैं बार-बार दरार से झाँकने के लिए दौड़ रही हूँ, मैं डरी हुई हूँ और खुद काँप रही हूँ।"
“क्या खिड़कियाँ बंद हैं, फेन्या? और हमें पर्दे खींचने होंगे—”
“अब ठीक है!” उसने खुद ही भारी पर्दे खींच दिए। “रोशनी देखते ही वो तुरंत अंदर आ जाएगा। आज मुझे तुम्हारे भाई मित्या से डर लग रहा है, अलेयोशा।”
ग्रुशेंका जोर से बोली, और हालांकि वह घबराई हुई थी, फिर भी वह बहुत सतर्क लग रही थी।
किसी बात से खुश होना।
“आज तुम मित्या से इतना क्यों डर रहे हो?” रकितिन ने पूछा। “मुझे डरना चाहिए।”
अगर मुझे लगता कि तुम उससे डरते नहीं हो, तो तुम उसे अपनी उंगली पर नचा सकते थे।
मैं आपको बता दूं, मुझे खबर की उम्मीद है, अनमोल खबर की, इसलिए मुझे मित्या नहीं चाहिए।
बिल्कुल भी नहीं। और मुझे लगता है कि उन्हें यकीन नहीं था कि मुझे कुज़्मा कुज़्मिच के यहाँ रुकना चाहिए। वह अभी फ्योदोर पावलोविच के पीछे, बगीचे में, घात लगाकर बैठे होंगे और मेरा इंतज़ार कर रहे होंगे। और अगर वह वहाँ हैं, तो यहाँ नहीं आएँगे, अच्छा ही है! लेकिन मैं सचमुच कुज़्मा कुज़्मिच के यहाँ गई थी, मित्या मुझे वहाँ ले गया था। मैंने उससे कहा था कि मुझे आधी रात तक वहीं रुकना चाहिए, और मैंने उससे कहा था

कि वह आधी रात को मुझे घर लेने ज़रूर आए। वह चला गया और मैं कुज़्मा कुज़्मिच के साथ दस मिनट बैठी और फिर वापस यहाँ आ गई। उफ़, मैं डर गई थी, मैं उससे मिलने के डर से भाग गई।
“और तुम इतने सजे-धजे क्यों हो? तुमने कितनी अजीब टोपी पहन रखी है!”
“राकितिन, तुम तो खुद ही कितने जिज्ञासु हो! मैं तुम्हें बता दूं, मैं एक बच्चे की उम्मीद कर रही हूँ।”
संदेश। अगर संदेश आया, तो मैं उड़ जाऊंगा, सरपट भाग जाऊंगा और तुम मुझे फिर कभी नहीं देख पाओगे। इसीलिए मैंने तैयार रहने के लिए कपड़े पहने हैं।
और आप कहाँ जा रहे हैं?
"अगर आपको बहुत ज्यादा ज्ञान हो जाएगा, तो आप बहुत जल्दी बूढ़े हो जाएंगे।"
“अरे वाह! आप तो बेहद खुश हैं... मैंने आपको पहले कभी इतना खुश नहीं देखा।”
"तुम पहले से ही ऐसी लग रही हो। तुमने ऐसे कपड़े पहने हैं जैसे किसी पार्टी में जा रही हो।" रकितिन ने उसे ऊपर से नीचे तक देखा।
"गेंदों के बारे में आपको बहुत कुछ पता है।"
और क्या आप उनके बारे में बहुत कुछ जानते हैं?
“मैंने एक गेंद देखी है। पिछले से पिछले साल, कुज़्मा कुज़्मिच का बेटा था।
मैं शादीशुदा थी और गैलरी से देख रही थी। क्या तुम्हें लगता है कि मैं तुमसे बात करना चाहूँगी, रकितिन, जबकि यहाँ ऐसा राजकुमार खड़ा है? कैसा मेहमान! अलेयोशा, मेरे प्यारे बेटे, मैं तुम्हें देखती रहती हूँ और अपनी आँखों पर विश्वास नहीं कर पाती। हे भगवान, क्या तुम मुझसे मिलने आए हो! सच कहूँ तो, मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि मैं तुमसे मिलूँगी और न ही मैंने कभी सोचा था कि तुम मुझसे मिलने आओगे। हालाँकि अभी सही समय नहीं है, फिर भी तुम्हें देखकर मुझे बहुत खुशी हो रही है। सोफे पर बैठो, यहाँ, ठीक है, मेरे प्यारे युवा चाँद। मुझे अभी भी यकीन नहीं हो रहा... आह, रकितिन, काश तुम उसे कल या परसों लाए होते! लेकिन मैं जैसी हूँ वैसी ही खुश हूँ! शायद अच्छा ही हुआ कि वह अभी, ऐसे समय में आया है, न कि परसों।
वह खुशी-खुशी सोफे पर अलेयोशा के बगल में बैठ गई और उसे देखने लगी।
वह बेहद खुश थी। और सचमुच खुश थी, जब उसने ऐसा कहा तो वह झूठ नहीं बोल रही थी। उसकी आँखें चमक रही थीं, उसके होंठ खिले हुए थे, लेकिन यह एक सच्ची, दिल से निकली हुई हँसी थी। अलेयोशा ने उसके चेहरे पर ऐसा भाव देखने की उम्मीद नहीं की थी... वह उससे कल तक मुश्किल से ही मिला था, उसके बारे में उसके मन में एक बुरी धारणा बन गई थी, और कल कैटरीना इवानोव्ना के साथ उसने जो द्वेषपूर्ण और कपटपूर्ण चाल चली थी, उससे वह बहुत दुखी हुआ था। उसे यह देखकर बहुत आश्चर्य हुआ कि अब वह उसकी अपेक्षा से बिल्कुल अलग थी। और, अपने दुख से चूर होकर, उसकी आँखें अनायास ही उस पर टिक गईं। कल से उसका पूरा व्यवहार बेहतर लग रहा था, उसकी बातों में वह बनावटी मिठास, उसके हाव-भाव में वह मोहक कोमलता लगभग गायब हो गई थी। सब कुछ सरल और सौम्य था, उसके हाव-भाव तेज, सीधे और भरोसेमंद थे, लेकिन वह बहुत उत्साहित थी।
“अरे वाह, आज तो सब कुछ कितना बढ़िया हो गया!” वह लगातार बड़बड़ाती रही।
फिर से। “और मैं तुम्हें देखकर इतनी खुश क्यों हूँ, अलेयोशा, यह मैं खुद नहीं कह सकती! अगर तुम मुझसे पूछोगे, तो मैं तुम्हें बता नहीं पाऊँगी।”
“अरे, क्या तुम्हें पता नहीं कि तुम खुश क्यों हो?” रकितिन ने मुस्कुराते हुए कहा। “तुम
वह हमेशा मुझे उसे लाने के लिए परेशान करता रहता था, शायद आपको कोई आपत्ति होगी।"
“पहले मेरा एक अलग लक्ष्य था, लेकिन अब वह खत्म हो गया है, यह वह लक्ष्य नहीं है।”
एक पल। मैं कहती हूँ, मैं चाहती हूँ कि तुम्हें कुछ अच्छा मिले। मैं आज बहुत अच्छे स्वभाव की हूँ। तुम भी बैठ जाओ, रकितिन; तुम खड़े क्यों हो? तुम बैठ तो गए? रकितिन के खुद का ध्यान रखना भूल जाने का कोई डर नहीं है। देखो, अलेयोशा, वह हमारे सामने बैठा है, इतना नाराज़ है कि मैंने उसे तुमसे पहले बैठने के लिए नहीं कहा। उफ़, रकितिन तो बहुत जल्दी नाराज़ हो जाता है!” ग्रुशेंका हँसी। “गुस्सा मत हो, रकितिन, मैं आज दयालु हूँ। तुम इतने उदास क्यों हो, अलेयोशा? क्या तुम मुझसे डरते हो?” उसने शरारती अंदाज़ में उसकी आँखों में देखा।
“वह दुखी है। उसे पदोन्नति नहीं मिली है,” रकितिन ने गरजते हुए कहा। “कौन सी पदोन्नति?”
उसका बड़ा भाई बदबूदार है।

“क्या? तुम बकवास कर रहे हो, तुम कुछ कहना चाहते हो।”
बदतमीज़ी! चुप रहो, बेवकूफ! मुझे अपनी गोद में बैठने दो, अलेयोशा, ऐसे ही।” वह अचानक आगे बढ़ी और हंसते हुए उसकी गोद में ऐसे बैठ गई जैसे कोई बिल्ली का बच्चा हो, और अपना दाहिना हाथ उसकी गर्दन पर रख दिया। “मैं तुम्हें खुश कर दूंगी, मेरे नेक लड़के। हाँ, सच में, क्या तुम मुझे अपनी गोद में बैठने दोगे? तुम गुस्सा नहीं करोगे? अगर तुम कहोगे, तो मैं उतर जाऊंगी।”
अलियोशा कुछ नहीं बोला। वह हिलने से भी डरकर बैठा रहा, उसने उसके शब्द सुने, “अगर
“तुम बताओ, मैं उतर जाऊँगा,” पर उसने कोई जवाब नहीं दिया। लेकिन उसके दिल में ऐसा कुछ भी नहीं था जैसा राकितिन, जो कोने से उसे बुरी निगाहों से देख रहा था, उम्मीद कर सकता था या सोच सकता था। उसके दिल में गहरे दुःख ने हर उस भावना को निगल लिया जो जागृत हो सकती थी, और अगर वह उस क्षण स्पष्ट रूप से सोच पाता, तो उसे एहसास होता कि अब उसके पास हर वासना और प्रलोभन से खुद को बचाने के लिए सबसे मजबूत कवच है। फिर भी, अपनी आध्यात्मिक स्थिति की अस्पष्ट अनुक्रियाहीनता और उस पर हावी दुःख के बावजूद, वह अपने दिल में एक नई और अजीब सी अनुभूति पर आश्चर्यचकित हुए बिना नहीं रह सका। इस स्त्री, इस “भयानक” स्त्री, से अब उसे कोई डर नहीं था, उस डर का कोई भी अंश नहीं जो किसी भी स्त्री के विचार मात्र से उसकी आत्मा में उमड़ता था। इसके विपरीत, यह स्त्री, जो सभी स्त्रियों से अधिक भयभीत करने वाली थी, अब उसकी गोद में बैठी, उसे अपनी बाहों में लिए हुए, उसके भीतर एक बिल्कुल अलग, अप्रत्याशित, विचित्र भावना जगा रही थी, एक ऐसी भावना जो अत्यंत तीव्र और शुद्ध रुचि की थी, जिसमें उसके पूर्व के भय का कोई अंश नहीं था। यही वह सहज भावना थी जिसने उसे उसे आश्चर्य हुआ।
“तुमने बहुत बकवास कर ली,” रकितिन चिल्लाया, “तुम्हारे लिए बेहतर होगा कि तुम कुछ और करो।”
हमें थोड़ी शैम्पेन दो। तुम पर मेरा एहसान है, तुम जानते हो ना!
“हाँ, मैं सचमुच ऐसा करता हूँ। क्या तुम्हें पता है, अलेयोशा, मैंने उससे शैम्पेन का वादा किया था।
सबसे ऊपर, अगर वो तुम्हें ले आए तो? मुझे भी थोड़ा चाहिए! फेन्या, फेन्या, मित्या की छोड़ी हुई बोतल ले आओ! जल्दी करो! हालाँकि मैं बहुत कंजूस हूँ, फिर भी एक बोतल पी लूँगा, तुम्हारे लिए नहीं, रकितिन, तुम तो एक मशरूम हो, लेकिन वो तो बाज़ है! और हालाँकि मेरा दिल किसी और ही भावना से भरा है, तो ठीक है, मैं तुम्हारे साथ पीऊँगा। मुझे थोड़ा मौज-मस्ती करने की बहुत इच्छा है।
लेकिन आपको क्या हुआ है? और क्या मैं पूछ सकता हूँ कि यह संदेश क्या है?
या फिर यह कोई रहस्य है?” रकितिन ने उत्सुकता से पूछा, और लगातार हो रही उपेक्षाओं को अनसुना करने का नाटक करने की पूरी कोशिश की।
“अरे, ये कोई राज़ नहीं है, और तुम भी ये जानते हो,” ग्रुशेंका ने धीमी आवाज़ में कहा।
अचानक चिंतित होकर, उसने अपना सिर रकितिन की ओर घुमाया और अलेयोशा से थोड़ा दूर हट गई, हालाँकि वह अब भी उसकी गोद में बैठी थी और उसकी गर्दन में हाथ डाले हुए थी। "मेरा अधिकारी आ रहा है, रकितिन, मेरा अधिकारी आ रहा है।"
मैंने सुना था कि वह आ रहा है, लेकिन क्या वह इतना पास है?
“वह इस समय मोक्रो में है; वह वहाँ से एक दूत भेजेगा, उसने ऐसा लिखा था; मैं
मुझे आज उनसे एक पत्र मिला। मैं हर मिनट उस संदेशवाहक का इंतजार कर रही हूँ।
“अरे वाह! मोक्रो में ही क्यों?”
"यह एक लंबी कहानी है, मैंने आपको काफी कुछ बता दिया है।"
“अब मित्या कुछ न कुछ जरूर करेगा—मुझे लगता है! उसे पता है या नहीं?”
वह?"
“उसे पता है! बिल्कुल नहीं पता होगा। अगर उसे पता होता, तो हत्या हो जाती।”
लेकिन अब मुझे उससे डर नहीं लगता, मुझे उसकी छुरी से डर नहीं लगता। चुप रहो, राकितिन, मुझे दिमित्री फ्योदोरोविच की याद मत दिलाओ, उसने मेरे दिल को चोट पहुँचाई है। और मैं इस समय उसके बारे में सोचना नहीं चाहती। मैं यहाँ अलेयोशा के बारे में सोच सकती हूँ, मैं अलेयोशा को देख सकती हूँ... मुझ पर मुस्कुराओ, प्यारे, खुश हो जाओ, मेरी नादानी पर, मेरी खुशी पर मुस्कुराओ... आह, वह मुस्कुरा रहा है, वह मुस्कुरा रहा है! कितनी दयालुता से वह मुझे देख रहा है! और तुम्हें पता है, अलेयोशा, मैं इस पूरे समय सोच रही थी कि तुम मुझसे नाराज़ थे, परसों की वजह से, उस युवती की वजह से। मैं एक कमीना था, यही सच है...

लेकिन अच्छा हुआ कि ऐसा हुआ। यह एक भयानक घटना थी, लेकिन अच्छी भी थी। ग्रुशेंका ने स्वप्निल मुस्कान के साथ कहा, "मित्या ने मुझे बताया कि वह चिल्लाई थी कि मुझे 'कोड़े मारने चाहिए।' मैंने उसका बहुत अपमान किया था। उसने मुझे बुलवाया, वह मुझे जीतना चाहती थी, मुझे अपनी चॉकलेट से मोहित करना चाहती थी... नहीं, अच्छा हुआ कि बात यहीं खत्म हो गई।" वह फिर मुस्कुराई। "लेकिन मुझे अब भी आपके क्रोधित होने का डर है।"
"हां, यह बिल्कुल सच है," रकितिन ने अचानक वास्तविक आश्चर्य के साथ कहा।
"अलोशा, वह तुम्हारे जैसे मुर्गे से सचमुच बहुत डरती है।"
“राकितिन, वह तुम्हारे लिए एक मुर्गे के समान है... क्योंकि तुम्हारे पास कोई अंतरात्मा नहीं है।”
बात यही है! देखो, मैं उससे पूरे दिल से प्यार करती हूँ, बस यही सच है! अलेयोशा, क्या तुम्हें यकीन है कि मैं तुमसे पूरे दिल से प्यार करती हूँ?
“अरे, तुम कितनी बेशर्म औरत हो! वो तुमसे ऐलान करवा रही है, एलेक्सी!”
"अच्छा, तो क्या हुआ, मैं उससे प्यार करती हूँ!"
और आपके अधिकारी के बारे में क्या? और वह अनमोल संदेश जो उन्होंने भेजा था।
गीला?"
“यह बिल्कुल अलग है।”
“महिलाओं का यही नजरिया होता है!”
“मुझे गुस्सा मत दिलाओ, रकितिन।” ग्रुशेंका ने गुस्से में उसे फटकारा।
“यह बिलकुल अलग है। मैं अलेयोशा से अलग तरह से प्यार करती हूँ। यह सच है, अलेयोशा, पहले मेरे मन में तुम्हारे लिए बुरे इरादे थे। क्योंकि मैं एक भयानक, हिंसक प्राणी हूँ। लेकिन कई बार मैंने तुम्हें, अलेयोशा, अपनी अंतरात्मा की तरह समझा है। मैं सोचती रही हूँ कि ‘तुम्हारे जैसे इंसान को मुझ जैसे बुरे इंसान से कितनी नफ़रत होगी।’ मैंने परसों भी यही सोचा था, जब मैं उस युवती के घर से भागकर आ रही थी। अलेयोशा, मैं लंबे समय से तुम्हारे बारे में इसी तरह सोचती रही हूँ, और मित्या जानता है, मैंने उससे इस बारे में बात की है। मित्या समझता है। यकीन मानो, कभी-कभी मैं तुम्हें देखती हूँ और शर्म महसूस करती हूँ, खुद पर बहुत शर्म आती है... और कब से, और कैसे, मैंने तुम्हारे बारे में इस तरह सोचना शुरू किया, मैं कह नहीं सकती, मुझे याद नहीं...”
फेन्या अंदर आई और एक ट्रे में ढक्कन खुली बोतल और तीन गिलास रख दिए।
टेबल पर शैंपेन रखी हुई है।
“ये लो शैंपेन!” रकितिन चिल्लाया। “तुम बहुत उत्साहित हो, अग्रफेना।”
एलेक्जेंड्रोवना, तुम नहीं। शैम्पेन का एक गिलास पीने के बाद तुम नाचने के लिए तैयार हो जाओगी। अरे, ये तो ठीक से नाच भी नहीं सकतीं,” उसने बोतल की तरफ देखते हुए कहा। “बुढ़िया ने इसे रसोई में उड़ेल दिया है और बोतल गरम-गरम और बिना ढक्कन के लाई गई है। चलो, मुझे भी थोड़ी पीने दो।”
वह मेज के पास गया, एक गिलास उठाया, उसे एक ही घूंट में खाली कर दिया और पानी उड़ेल दिया। उसने खुद को दूसरे से बाहर कर लिया।
"शैम्पेन यूं ही आसानी से नहीं मिल जाती," उसने अपने होंठ चाटते हुए कहा।
“अब, अलेयोशा, एक गिलास लो, दिखाओ कि तुम क्या कर सकते हो! हम किसके लिए पिएं? स्वर्ग के द्वार? एक गिलास लो, ग्रुशेंका, तुम भी स्वर्ग के द्वार के लिए पियो।”
“स्वर्ग के द्वार कौन से हैं?”
उसने एक गिलास उठाया, अलेयोशा ने अपना गिलास लिया, उसे चखा और वापस रख दिया। "नहीं, मुझे ऐसा नहीं करना चाहिए," उसने धीरे से मुस्कुराते हुए कहा।
“और तुमने शेखी मारी!” रकितिन चिल्लाया।
“अच्छा, अगर ऐसा है तो मैं भी नहीं करूंगी,” ग्रुशेंका ने बीच में कहा, “मैं सचमुच नहीं चाहती।”
कोई बात नहीं। रकितिन, तुम पूरी बोतल अकेले पी सकते हो। अगर अलेयोशा के पास थोड़ी बची है, तो मैं पी लूंगा।
“कितनी मार्मिक भावुकता है!” रकितिन ने ताना मारते हुए कहा; “और वह तो...”

वो भी उसकी गोद में बैठा है! उसे तो दुख मनाने का कारण है, पर तुम्हें क्या हो गया है? वो अपने भगवान के खिलाफ़ बगावत कर रहा है और सॉसेज खाने को तैयार है...
“ऐसा कैसे?”
"उनके बड़े भाई, संत फादर ज़ोसिमा का आज निधन हो गया।"
“तो फादर ज़ोसिमा मर गए!” ग्रुशेंका रोते हुए बोली। “हे भगवान! मैंने तो...”
“पता है!” उसने श्रद्धापूर्वक क्रॉस का निशान बनाया। “हे भगवान! मैं इस समय उनकी गोद में इस तरह क्यों बैठी थी!” वह घबराहट में जैसे उठी, झट से उनकी गोद से उतरी और सोफे पर बैठ गई।
अलियोशा ने उसे लंबे समय तक आश्चर्य भरी नजरों से देखा और मानो एक रोशनी सी चमक उठी। उसके चेहरे पर सूर्योदय की चमक थी।
“राकितिन,” उसने अचानक, दृढ़ और ऊँची आवाज़ में कहा; “मुझे ताना मत मारो।”
मैंने ईश्वर के विरुद्ध विद्रोह किया है। मैं तुमसे नाराज़ नहीं होना चाहती, इसलिए तुम्हें भी थोड़ा दयालु होना चाहिए। मैंने एक ऐसा अनमोल रत्न खो दिया है जो तुम्हारे पास कभी नहीं था, और तुम अब मेरा न्याय नहीं कर सकते। तुम्हें उसे देखना चाहिए—क्या तुम देख रहे हो कि वह मुझ पर कितनी दया दिखा रही है? मैं यहाँ एक दुष्ट आत्मा को खोजने आई थी—मैं बुराई की ओर आकर्षित हुई क्योंकि मैं स्वयं नीच और दुष्ट थी, और मुझे एक सच्ची बहन मिल गई है, मुझे एक अनमोल रत्न मिल गया है—एक प्रेममय हृदय। उसने अभी मुझ पर दया दिखाई... अग्रफेना अलेक्जेंड्रोवना, मैं तुम्हारे बारे में बात कर रही हूँ। तुमने मेरी आत्मा को अंधकार की गहराइयों से ऊपर उठाया है।
अलियोशा के होंठ कांप रहे थे और उसने गहरी सांस ली। "लगता है उसने तुम्हें बचा लिया है," रकितिन ने चिढ़कर हंसते हुए कहा। "और वह
उसका मकसद तुम्हें अपने चंगुल में फंसाना है, क्या तुम्हें इस बात का एहसास है?
“रुको, रकितिन।” ग्रुशेंका उछल पड़ी। “चुप रहो, तुम दोनों। अब मैं बताऊँगी।”
तुम सब इसके बारे में बात कर रहे हो। चुप रहो, अलेयोशा, तुम्हारी बातों से मुझे शर्म आती है, क्योंकि मैं बुरा हूँ, अच्छा नहीं—मैं सच में बुरा हूँ। और तुम भी चुप रहो, रकितिन, क्योंकि तुम झूठ बोल रहे हो। मैंने उसे अपने चंगुल में फंसाने की कोशिश की थी, लेकिन अब तुम झूठ बोल रहे हो, अब सब कुछ बदल गया है। और मुझे तुमसे कुछ और सुनने को न मिले, रकितिन।
ग्रुशेंका ने ये सब बातें अत्यंत भावुकता से कही। रकितिन ने उन्हें आश्चर्य से देखते हुए कहा, "ये दोनों पागल हैं।"
ऐसा लग रहा है जैसे मैं पागलखाने में हूँ। वे दोनों इतने कमजोर होते जा रहे हैं कि एक मिनट में रोने लगेंगे।
“मैं रोने लगूँगी, मैं रोने लगूँगी,” ग्रुशेंका ने दोहराया। “उसने मुझे अपना कहा था।”
मैं और मेरी बहन इसे कभी नहीं भूलेंगे। बस इतना जान लो, रकितिन, हालांकि मैं बुरी हूं, मैंने एक प्याज दान में दिया था।
“एक प्याज? हद हो गई, तुम सच में पागल हो।”
रकितिन को उनके उत्साह पर आश्चर्य हुआ। वह दुखी और नाराज था।
हालांकि उसने शायद यह सोचा होगा कि उनमें से प्रत्येक व्यक्ति एक ऐसे आध्यात्मिक संकट से गुजर रहा था जो जीवन में बार-बार नहीं आता। लेकिन हालांकि रकितिन अपने से संबंधित हर बात को लेकर बहुत संवेदनशील था, वह दूसरों की भावनाओं और संवेदनाओं को समझने में बहुत अनभिज्ञ था—कुछ हद तक अपनी युवावस्था और अनुभवहीनता के कारण, और कुछ हद तक अपने तीव्र अहंकार के कारण।
“देखो, अलेयोशा,” ग्रुशेंका ने घबराई हुई हंसी के साथ उसकी ओर मुड़कर कहा। “मैं
जब मैंने रकितिन को बताया कि मैंने एक प्याज दान कर दिया था, तो वह शेखी बघार रही थी, लेकिन मैं आपको यह कहानी शेखी बघारने के लिए नहीं बता रही हूँ। यह तो बस एक कहानी है, पर एक प्यारी कहानी। मैं इसे बचपन में अपनी रसोइया मैट्रयोना से सुनती थी, जो अब भी मेरे साथ है। कहानी कुछ इस प्रकार है। एक समय की बात है, एक किसान स्त्री थी, और वह बहुत दुष्ट थी। उसकी मृत्यु हो गई और उसने अपने पीछे एक भी अच्छा काम नहीं छोड़ा। शैतानों ने उसे पकड़ लिया और आग की झील में फेंक दिया। तब उसका रक्षक देवदूत खड़ा होकर सोचने लगा कि वह उसके किस अच्छे काम को याद कर सकता है जिसे वह ईश्वर को बता सके; उसने कहा, 'उसने एक बार अपने बगीचे से एक प्याज उखाड़ा और उसे एक

भिखारी स्त्री को दे दिया।' और ईश्वर ने उत्तर दिया: 'तो तुम उस प्याज को लो, उसे झील में उसके सामने रखो, और उसे पकड़ने दो और वह बाहर निकल आएगी।' और अगर तुम उसे झील से बाहर निकाल सको, तो उसे स्वर्ग में आने दो, लेकिन अगर प्याज टूट जाए, तो उस स्त्री को वहीं रहना होगा।' स्वर्गदूत उस स्त्री के पास दौड़ा और उसे प्याज पकड़ा दिया। उसने कहा, 'आओ, इसे पकड़ो, मैं तुम्हें बाहर निकाल लेता हूँ।' और वह सावधानी से उसे बाहर खींचने लगा। जैसे ही उसने उसे पूरी तरह बाहर निकाला, झील में मौजूद दूसरे पापी, उसे बाहर निकलते देख, उसके साथ बाहर निकलने के लिए उसे पकड़ने लगे। लेकिन वह बहुत दुष्ट स्त्री थी और उसने उन्हें लात मारना शुरू कर दिया। 'मुझे बाहर निकाला जाना है, तुम्हें नहीं। यह मेरा प्याज है, तुम्हारा नहीं।' जैसे ही उसने यह कहा, प्याज टूट गया। और वह स्त्री झील में गिर गई और आज तक वहीं जल रही है। तो स्वर्गदूत रोया और चला गया। तो यही कहानी है, अलेयोशा; मुझे यह कंठस्थ है, क्योंकि मैं स्वयं वही दुष्ट स्त्री हूँ। मैंने रकितिन के सामने शेखी मारी थी कि मैंने एक प्याज दान में दिया है, लेकिन तुमसे मैं कहूँगी: 'मैंने अपने पूरे जीवन में एक प्याज दान करने के अलावा कुछ नहीं किया, यही मेरा एकमात्र अच्छा कर्म है।' इसलिए मेरी प्रशंसा मत करो, अलेयोशा, मुझे अच्छा मत समझो, मैं बुरी हूँ, मैं एक दुष्ट स्त्री हूँ और मेरी प्रशंसा करके तुम मुझे शर्मिंदा करोगे। उफ़, मुझे सब कुछ स्वीकार करना होगा। सुनो, अलेयोशा। मैं तुमसे मिलने के लिए इतनी बेचैन थी कि मैंने रकितिन से पच्चीस रूबल का वादा किया था अगर वह तुम्हें मेरे पास ले आए। रुको, रकितिन, प्रतीक्षा करो!
वह तेज़ी से कदमों से मेज की ओर गई, एक दराज खोला और उसमें से एक चीज़ निकाली।
उसने पर्स से पच्चीस रूबल का नोट निकाला।
“ये क्या बकवास है! ये क्या बकवास है!” रकितिन घबराकर चिल्लाया। “इसे ले लो। रकितिन, मैं तुम्हारा एहसानमंद हूँ, तुम्हारे मना करने का कोई डर नहीं है, तुम
"तुमने खुद ही मांगा था।" और उसने वह नोट उसकी तरफ फेंक दिया।
"शायद मुझे इसे अस्वीकार कर देना चाहिए," रकितिन ने स्पष्ट रूप से शर्मिंदा होकर कहा, लेकिन अपनी उलझन को बड़े ही आत्मविश्वास के साथ छिपाते हुए, उसने कहा, "यह बहुत काम आएगा; मूर्ख तो बुद्धिमानों के लाभ के लिए ही बने होते हैं।"
और अब चुप रहो, रकितिन, मैं अब जो कहने जा रहा हूँ वह सही नहीं है।
अपने कानों के लिए। उस कोने में बैठ जाओ और चुप रहो। तुम हमें पसंद नहीं करते, इसलिए चुप रहो।
“मुझे तुम क्यों पसंद आओगे?” रकितिन ने गुस्से से कहा, अपनी दुर्भावना को छिपाए बिना।
हास्यबोध। उसने पच्चीस रूबल का नोट अपनी जेब में रख लिया और अलेयोशा के इसे देख लेने पर उसे शर्मिंदगी महसूस हुई। उसने सोचा था कि उसे अपना भुगतान बाद में, अलेयोशा को बिना बताए मिल जाएगा, और अब शर्मिंदगी महसूस करते हुए वह क्रोधित हो गया। उस क्षण तक उसने ग्रुशेंका के तिरस्कार के बावजूद उससे सीधे तौर पर बहस न करना ही उचित समझा था, क्योंकि उसे उससे कुछ हासिल करना था। लेकिन अब वह भी क्रोधित था:
“लोग किसी न किसी कारण से लोगों से प्यार करते हैं, लेकिन आप दोनों ने ऐसा क्या किया है?
मुझे?"
"आपको बिना किसी कारण के लोगों से प्यार करना चाहिए, जैसा कि अलेयोशा करता है।"
“वह तुमसे कैसे प्यार करता है? उसने यह कैसे दिखाया है कि तुम ऐसा करती हो?
इस पर इतना हंगामा क्यों?
ग्रुशेंका कमरे के बीचोंबीच खड़ी थी; वह जोश से बोल रही थी।
और उसकी आवाज में उन्माद के स्वर थे।
“चुप रहो, रकितिन, तुम हमारे बारे में कुछ नहीं जानते! और हमसे बात करने की हिम्मत मत करना।”
फिर से ऐसा क्यों? तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई इतनी बेबाकी से पेश आने की! उस कोने में बैठो और चुप रहो, मानो तुम मेरे नौकर हो! और अब, अलेयोशा, मैं तुम्हें पूरी सच्चाई बताऊँगी, ताकि तुम देख सको कि मैं कितनी नीच हूँ! मैं रकितिन से नहीं, बल्कि तुमसे बात कर रही हूँ। अलेयोशा, मैं तुम्हें बर्बाद करना चाहती थी, यही पवित्र सत्य है; मेरा इरादा यही था। मैं इतना चाहती थी कि मैंने रकितिन को रिश्वत देकर तुम्हें यहाँ लाया। और मैंने ऐसा क्यों करना चाहा? अलेयोशा, तुम्हें इसके बारे में कुछ पता नहीं था, तुम मुझसे मुँह फेर लेते थे; अगर तुम मेरे पास से गुज़रते, तो अपनी नज़रें झुका लेते थे। और मैंने आज से पहले तुम्हें सौ बार देखा है; मैंने

हर किसी से तुम्हारे बारे में पूछना शुरू कर दिया। तुम्हारा चेहरा मेरे दिल में बस गया था। 'वह मुझसे नफ़रत करता है,' मैंने सोचा, 'वह मेरी तरफ देखता भी नहीं।' और मुझे यह इतना ज़्यादा महसूस हुआ कि मैं खुद पर हैरान थी कि मैं एक लड़के से इतना डर क्यों गई। मैं उसे अपने चंगुल में फँसाऊँगी और उस पर हँसूँगी। मैं नफ़रत और गुस्से से भरी हुई थी। यकीन मानो, यहाँ कोई भी अग्राफेना अलेक्जेंड्रोवना के पास बुरे इरादे से आने की हिम्मत नहीं करता। बूढ़ा कुज़्मा ही एकमात्र ऐसा आदमी है जिससे मेरा यहाँ कोई वास्ता है; मुझे बांधकर उसे बेच दिया गया था; शैतान ने हम दोनों को मिलाया था, लेकिन उसके अलावा कोई और नहीं था। लेकिन तुम्हें देखकर मैंने सोचा, मैं उसे अपने चंगुल में ले लूँगी और उस पर हँसूँगी। देखो मैं कितनी दुष्ट हूँ, और तुमने मुझे अपनी बहन कहा था! और अब वह आदमी जिसने मेरे साथ अन्याय किया, आ गया है; मैं यहाँ उसके संदेश का इंतज़ार कर रही हूँ। और क्या तुम जानती हो कि वह आदमी मेरे साथ क्या करता था? पाँच साल पहले, जब कुज़्मा मुझे यहाँ लाया था, मैं खुद को कमरे में बंद कर लेती थी, ताकि कोई मुझे देख या सुन न सके। मैं एक भोली-भाली लड़की थी; मैं यहाँ बैठकर रोती रहती थी; मैं रात भर जागती रहती थी, सोचती रहती थी: 'वह आदमी कहाँ है जिसने मेरे साथ अन्याय किया? वह शायद किसी दूसरी औरत के साथ मुझ पर हँस रहा होगा।' काश मैं उसे देख पाती, काश मैं उससे फिर मिल पाती, मैं उससे बदला ले लेती, मैं उससे बदला ले लेती!' रात को मैं अंधेरे में तकिये पर सिर रखकर सिसकियाँ भरती रहती, और उस बात पर सोचती रहती; मैं जानबूझकर अपना दिल तोड़ती और अपने गुस्से पर गर्व करती। 'मैं उससे बदला ले लूँगी, मैं उससे बदला ले लूँगी!' अंधेरे में मैं यही चिल्लाती रहती। और जब अचानक मुझे लगता कि मुझे उसके साथ कुछ नहीं करना चाहिए, और वह मुझ पर हँस रहा है, या शायद मुझे पूरी तरह से भूल गया है, तो मैं ज़मीन पर गिर पड़ती, बेबस होकर रोने लगती और सुबह तक काँपती रहती। सुबह मैं कुत्ते से भी ज़्यादा गुस्से में उठती, पूरी दुनिया को टुकड़े-टुकड़े करने को तैयार। और फिर क्या हुआ? मैंने पैसे बचाना शुरू कर दिया, मैं कठोर दिल हो गई, मोटी हो गई—समझदार हो गई, क्या आप कहेंगे? नहीं, पूरी दुनिया में कोई इसे नहीं देखता, कोई इसे नहीं जानता, लेकिन जब रात होती है, तो मैं कभी-कभी वैसे ही लेट जाती हूँ जैसे पाँच साल पहले, जब मैं एक नासमझ लड़की थी, दाँत पीसकर पूरी रात रोती रहती थी, सोचती रहती थी, 'मैं उससे बदला लूँगी, मैं उससे बदला लूँगी!' क्या तुम सुन रहे हो? अच्छा, तो अब तुम मुझे समझ गए। एक महीने पहले मुझे एक पत्र मिला—वह आ रहा था, वह विधवा था, वह मुझसे मिलना चाहता था। यह सुनकर मेरी साँसें थम गईं; फिर अचानक मेरे मन में ख्याल आया: 'अगर वह आए और मुझे बुलाने के लिए सीटी बजाए, तो मैं एक हारे हुए कुत्ते की तरह उसके पास वापस चली जाऊँगी।' मुझे खुद पर विश्वास नहीं हो रहा था। क्या मैं इतनी नीच हूँ? क्या मुझे उसके पास भागना चाहिए या नहीं? और मैं इस पूरे महीने खुद पर इतना गुस्सा रही हूँ कि मैं पाँच साल पहले से भी बदतर हो गई हूँ। अब तुम देख रहे हो, अलेयोशा, मैं कितनी हिंसक, प्रतिशोधी प्राणी हूँ? मैंने तुम्हें पूरी सच्चाई दिखा दी है! मैंने मित्या के साथ इसलिए खेला ताकि मैं उस दूसरे के पास न भाग जाऊँ। चुप रहो, रकितिन, तुम्हें मेरा न्याय करने का अधिकार नहीं है, मैं तुमसे बात नहीं कर रही हूँ। तुम्हारे आने से पहले, मैं यहाँ लेटी इंतज़ार कर रही थी, सोच-विचार कर रही थी, अपने पूरे भविष्य के बारे में फैसला कर रही थी, और तुम कभी नहीं जान सकते कि मेरे दिल में क्या चल रहा था। हाँ, अलेयोशा, अपनी प्रेमिका से कहो कि परसों जो हुआ उसके लिए मुझसे नाराज़ न हो... पूरी दुनिया में कोई नहीं जानता कि मैं इस समय किस दौर से गुज़र रही हूँ, और कोई कभी जान भी नहीं सकता... क्योंकि शायद आज मैं अपने साथ चाकू लेकर चलूँ, मैं फैसला नहीं कर पा रही हूँ...

और इस "दुखद" वाक्यांश को सुनकर ग्रुशेंका फूट-फूट कर रो पड़ीं, उन्होंने अपना चेहरा अपने चेहरे में छिपा लिया।

उसने अपने हाथ सोफे के तकियों पर पटक दिए और एक छोटे बच्चे की तरह रोने लगी।

अलियोशा उठा और रकितिन के पास गया।

“मिशा,” उसने कहा, “गुस्सा मत हो। उसने तुम्हें चोट पहुँचाई है, लेकिन गुस्सा मत करो।”

गुस्से में। तुमने अभी-अभी उसकी बात सुनी? इंसान की सहनशीलता से बहुत ज्यादा उम्मीद नहीं रखनी चाहिए, दयालु होना जरूरी है।

अलोशा ने यह बात अपने हृदय की सहज प्रेरणा से कही। उसे ऐसा महसूस हुआ।

बोलने के लिए विवश होकर वह राकितिन की ओर मुड़ा। अगर राकितिन वहाँ न होता, तो वह हवा से ही बात करता। लेकिन राकितिन ने उसे व्यंग्य भरी नज़रों से देखा और अलेयोशा अचानक रुक गया।

“कल रात तुम अपने बड़ों की शिक्षाओं से इतने प्रभावित हो गए थे कि अब
"तुम्हें अपना गुस्सा मुझ पर निकालना होगा, एलेक्सी, हे ईश्वर के बंदे!" रकितिन ने घृणा भरी मुस्कान के साथ कहा।
“रकीतिन, हंसो मत, मुस्कुराओ मत, मरे हुए के बारे में बात मत करो—वह बेहतर था।”
“दुनिया में किसी से भी ज़्यादा!” अलेयोशा रोते हुए बोला। “मैंने तुमसे न्यायाधीश की तरह नहीं, बल्कि सबसे निचले दर्जे के व्यक्ति की तरह बात की है। मैं उसके सामने क्या हूँ? मैं यहाँ अपनी बर्बादी की तलाश में आया था, और अपनी कायरता में मैंने खुद से कहा, ‘क्या फर्क पड़ता है?’ लेकिन वह, पाँच साल की पीड़ा के बाद, जैसे ही कोई उससे दिल से एक शब्द कहता है—वह सब कुछ भुला देती है, सब कुछ माफ कर देती है, आँसुओं में! जिस आदमी ने उसके साथ अन्याय किया है, वह वापस आया है, उसने उसे बुलवाया है और वह उसे सब कुछ माफ कर देती है, और खुशी-खुशी उससे मिलने दौड़ पड़ती है और वह अपने साथ चाकू नहीं ले जाएगी। वह नहीं लेगी! नहीं, मैं ऐसा नहीं हूँ। मुझे नहीं पता कि तुम हो या नहीं, मीशा, लेकिन मैं ऐसा नहीं हूँ। यह मेरे लिए एक सबक है... वह हम सबसे ज़्यादा प्रेम करने वाली है... क्या तुमने उसे पहले कभी इस बारे में बात करते सुना है जो उसने अभी हमें बताया है? नहीं, तुमने नहीं सुना; अगर सुना होता, तो तुम उसे बहुत पहले समझ गए होते... और परसों अपमानित हुई व्यक्ति को भी उसे क्षमा करना होगा! वह तब क्षमा करेगी जब उसे पता चलेगा... और उसे पता चल ही जाएगा... यह आत्मा अभी तक स्वयं से शांत नहीं है, इसके प्रति कोमल भाव रखना चाहिए... शायद इस आत्मा में कोई खजाना छिपा हो...
अलोशा रुक गया, क्योंकि उसने गहरी सांस ली। अपनी खराब हालत के बावजूद...
रकितिन ने आश्चर्य से उसकी ओर देखा। उसने कभी भी सौम्य अलेयोशा से इस तरह के तीखे भाषण की उम्मीद नहीं की थी।
उसे अपना पक्ष रखने वाला कोई मिल गया है! अरे, क्या तुम उससे प्यार करते हो?
वह? अग्रफेना अलेक्जेंड्रोवना, हमारे भिक्षु सचमुच तुमसे प्यार करते हैं, तुमने तो जीत हासिल कर ली है!” वह कर्कश हंसी के साथ चिल्लाया।
ग्रुशेंका ने तकिए से अपना सिर उठाया और अलेयोशा की ओर देखा।
उसके आंसुओं से भीगे चेहरे पर कोमल मुस्कान चमक रही थी।
“हे अलेयोशा, मेरे प्यारे, उसे अकेला छोड़ दो; तुम जानते हो कि वह कैसा है, वह कोई
“आपसे बात करने के लिए एक व्यक्ति हैं। मिखाइल ओसिपोविच,” वह रकितिन की ओर मुड़ी, “मैं आपसे अपने असभ्य व्यवहार के लिए क्षमा मांगना चाहती थी, लेकिन अब मैं ऐसा नहीं करना चाहती। अलेयोशा, मेरे पास आओ, यहाँ बैठो।” उसने मुस्कुराते हुए उसे इशारा किया। “ठीक है, यहाँ बैठो। मुझे बताओ,” उसने उसका हाथ हिलाया और मुस्कुराते हुए उसके चेहरे की ओर देखा, “मुझे बताओ, क्या मैं उस आदमी से प्यार करती हूँ या नहीं? जिस आदमी ने मेरे साथ अन्याय किया, क्या मैं उससे प्यार करती हूँ या नहीं? आपके आने से पहले, मैं यहाँ अंधेरे में लेटी हुई थी, अपने दिल से पूछ रही थी कि क्या मैं उससे प्यार करती हूँ। मेरे लिए फैसला करो, अलेयोशा, समय आ गया है, जैसा तुम कहोगे वैसा ही होगा। क्या मुझे उसे माफ करना चाहिए या नहीं?”
“लेकिन तुमने तो उसे पहले ही माफ कर दिया है,” अलेयोशा ने मुस्कुराते हुए कहा। “हाँ, मैंने सचमुच उसे माफ कर दिया है,” ग्रुशेंका ने सोच-विचार करते हुए धीरे से कहा।
“कितना निर्दयी हृदय है! हे मेरे निर्दयी हृदय!” उसने मेज से गिलास उठाया, एक ही घूंट में खाली कर दिया, हवा में उछाला और ज़मीन पर फेंक दिया। गिलास ज़ोर से टूट गया। उसकी मुस्कान में एक हल्की सी क्रूरता झलक उठी।
“शायद मैंने उसे अभी तक माफ नहीं किया है,” उसने कुछ इस तरह के भाव से कहा।
उसकी आवाज़ में धमकी थी, और उसने अपनी नज़रें ज़मीन पर झुका लीं, मानो वह खुद से बात कर रही हो।
“शायद मेरा दिल अभी माफ़ करने के लिए तैयार हो रहा है। मुझे अपने दिल से संघर्ष करना होगा। देखो, अलेयोशा, इन पाँच सालों में मुझे अपने आँसुओं से प्यार हो गया है... शायद मैं सिर्फ़ अपनी नाराज़गी से प्यार करती हूँ, उससे नहीं...”
“खैर, मैं उसकी जगह पर होना नहीं चाहूंगा,” रकितिन ने फुफकारा। “खैर, तुम कभी उसकी जगह पर नहीं होगे, रकितिन, तुम कभी उसकी जगह पर नहीं होगे। तुम...

मेरे जूते काले कर दो, रकितिन, यही वह जगह है जहाँ तुम रहने लायक हो। तुम्हें मेरे जैसी औरत कभी नहीं मिलेगी... और शायद उसे भी नहीं मिलेगी...
“क्या वो नहीं करेगा? तो फिर तुमने ऐसे कपड़े क्यों पहने हैं?” रकितिन ने हैरानी से कहा।
विषैली उपहास।
“मुझे सजने-संवरने को लेकर ताना मत मारो, रकितिन, तुम्हें पता नहीं है कि इसमें क्या-क्या है।”
मेरा दिल! अगर मैं अपने सारे वस्त्र उतारना चाहूँ, तो अभी इसी वक्त उतार दूँगी,” वह गूंजती हुई आवाज़ में चिल्लाई। “तुम्हें नहीं पता कि ये वस्त्र किसलिए हैं, रकितिन! शायद मैं उससे मिलूँ और कहूँ: ‘क्या तुमने मुझे पहले कभी इस हालत में देखा है?’ उसने मुझे सत्रह साल की दुबली-पतली, तपेदिक से पीड़ित रोने वाली बच्ची बना दिया। मैं उसके पास बैठूँगी, उसे मोहित करूँगी और उसे उत्तेजित करूँगी। ‘देखो मैं अब कैसी दिखती हूँ?’ मैं उससे कहूँगी; ‘अच्छा, और यही तुम्हारे लिए काफी है, मेरे प्रिय महोदय, प्याले और होंठ के बीच बहुत सी चूक होती है!’ शायद यही इन वस्त्रों का उद्देश्य है, रकितिन।” ग्रुशेंका ने एक द्वेषपूर्ण हंसी के साथ अपनी बात समाप्त की। “मैं हिंसक और द्वेषपूर्ण हूँ, अलेयोशा, मैं अपने वस्त्र उतार दूँगी, मैं अपनी सुंदरता को नष्ट कर दूँगी, मैं अपना चेहरा जला दूँगी, उसे चाकू से काट दूँगी और भिखारी बन जाऊँगी।”
अगर मैं चाहूँ तो अब किसी से मिलने कहीं नहीं जाऊँगी। अगर मैं चाहूँ तो कल ही कुज़्मा को वो सब कुछ लौटा दूँगी जो उसने मुझे दिया है, उसका सारा पैसा भी, और बाकी की ज़िंदगी भर गद्दी पर गुज़ारूँगी। तुम्हें क्या लगता है कि मैं ऐसा नहीं करूँगी, रकितिन, कि मैं ऐसा करने की हिम्मत नहीं करूँगी? मैं कर सकती हूँ, मैं कर सकती हूँ, मैं सीधे कर सकती हूँ, बस मुझे गुस्सा मत दिलाओ... और मैं उसे उसके काम से भगा दूँगी, मैं उसके मुँह पर उंगली चटकाऊँगी, वो मुझे फिर कभी नहीं देख पाएगा!
उसने चीखते हुए अपने आखिरी शब्द कहे, लेकिन फिर टूट गई।
उसने फिर से अपना चेहरा अपने हाथों में छिपा लिया, उसे तकिए में दबा लिया और सिसकियों से कांपने लगी।
रकितिन उठ खड़ा हुआ।
“अब हमें निकलना चाहिए,” उसने कहा, “बहुत देर हो चुकी है, हमें बाहर निकाल दिया जाएगा।”
मठ।
ग्रुशेंका अपनी जगह से उछल पड़ी।
“यकीनन तुम जाना नहीं चाहते, अलेयोशा!” वह शोकपूर्ण आश्चर्य के साथ चिल्लाई।
“तुम मेरे साथ क्या कर रहे हो? तुमने मेरी भावनाओं को भड़काया है, मुझे यातना दी है, और अब तुम मुझे इस रात का अकेले सामना करने के लिए छोड़ दोगे!”
“वो तुम्हारे साथ रात मुश्किल से ही बिता पाएगा! हालाँकि अगर वो चाहे तो, उसे बिताने दो।”
“उसे! मैं अकेला जाऊंगा,” रकितिन ने उपहासपूर्वक कहा।
“चुप रहो, बुरी ज़बान!” ग्रुशेंका ने गुस्से से उस पर चिल्लाते हुए कहा; “तुमने कभी नहीं कहा”
वह मुझसे ऐसी ही बातें कहने आया है।
“उसने तुमसे ऐसा क्या खास कहा?” रकितिन ने चिड़चिड़ाते हुए पूछा। “मैं नहीं बता सकती, मुझे नहीं पता। मुझे नहीं पता उसने मुझसे क्या कहा, बस यूं ही बात खत्म हो गई।”
सीधे मेरे दिल को छू गया; उसने मेरा दिल निचोड़ दिया... वही पहला, इकलौता इंसान है जिसने मुझ पर तरस खाया है, बस यही बात है। तुम पहले क्यों नहीं आए, हे फरिश्ते?” वह अचानक उन्माद में आकर उसके सामने घुटनों के बल गिर पड़ी। “मैं पूरी जिंदगी तुम्हारे जैसे किसी का इंतजार करती रही, मुझे पता था कि तुम्हारे जैसा कोई आएगा और मुझे माफ कर देगा। मुझे विश्वास था कि मैं चाहे कितनी भी बुरी क्यों न हूँ, कोई तो मुझसे सच्चा प्यार करेगा, सिर्फ शर्मनाक प्यार नहीं!”
“मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है?” अलेयोशा ने झुकते हुए उससे पूछा।
कोमल मुस्कान के साथ, और धीरे से उसके हाथ पकड़ते हुए; "मैंने तुम्हें सिर्फ एक प्याज दिया था, बस एक छोटा सा प्याज, बस इतना ही!"
यह कहते हुए उनकी आंखों में भी आंसू आ गए। उस क्षण एक
गलियारे में अचानक शोर हुआ, कोई हॉल में आया। ग्रुशेंका घबराकर उछल पड़ी, मानो बहुत डर गई हो। फेन्या शोर मचाते हुए कमरे में भागी और चिल्लाई:

“मालकिन, प्रिय मालकिन, एक संदेशवाहक घोड़े पर सवार होकर आया है,” वह चिल्लाई।
सांस फूल रही थी और खुशी भी थी। "मोक्रो से आपके लिए एक गाड़ी आई है, ड्राइवर टिमोफे है, तीन घोड़ों के साथ, अभी-अभी नए घोड़े लगाए जा रहे हैं... एक पत्र, ये रहा पत्र, मालकिन।"
उसके हाथ में एक पत्र था और वह उसे लगातार हवा में लहरा रही थी।
ग्रुशेंका ने उससे चिट्ठी छीन ली और उसे मोमबत्ती के पास ले गई। वह महज़ एक छोटा सा नोट था, कुछ ही पंक्तियाँ। उसने उसे एक ही पल में पढ़ लिया।
“उन्होंने मुझे बुलवाया है,” वह रोई, उसका चेहरा पीला और विकृत था, और आँखों में उदासी थी।
मुस्कुराओ; “वो सीटी बजाता है! पीछे हट जाओ, नन्हे कुत्ते!”
लेकिन वह केवल एक पल के लिए हिचकिचाती हुई खड़ी रही; अचानक
उसके सिर में खून का दौरा तेज हो गया और उसके गालों पर एक अलग ही चमक आ गई।
“मैं जा रही हूँ,” वह रोते हुए बोली; “मेरे जीवन के पाँच साल! अलविदा! अलविदा!”
अलेयोशा, मेरा भाग्य तय हो चुका है। जाओ, जाओ, तुम सब मुझे अकेला छोड़ दो, मुझे फिर कभी मत देखना! ग्रुशेंका एक नए जीवन की ओर उड़ रही है... राकितिन, क्या तुम्हें मेरे प्रति की गई बुराई भी याद नहीं है? शायद मैं मौत की ओर जा रही हूँ! उफ़! मुझे ऐसा लग रहा है जैसे मैं नशे में हूँ!
वह अचानक उन्हें छोड़कर अपने बेडरूम में भाग गई।
“अब तो उसे हमारी कोई परवाह ही नहीं!” रकितिन बड़बड़ाया। “चलो चलते हैं, वरना...”
हमें शायद फिर से वो स्त्री की चीख सुनाई दे। मैं इन आंसुओं और चीखों से तंग आ चुका हूँ।
अलोशा ने यंत्रवत रूप से खुद को बाहर ले जाने दिया। आँगन में एक ढका हुआ बरामदा था।
गाड़ी। घोड़ों को शाफ्ट से बाहर निकाला जा रहा था, आदमी लालटेन लेकर इधर-उधर दौड़ रहे थे। खुले द्वार से तीन नए घोड़े अंदर लाए जा रहे थे। लेकिन जब अलेयोशा और राकितिन सीढ़ियों के नीचे पहुँचे, तो अचानक ग्रुशेंका के शयनकक्ष की खिड़की खुली और उसने तेज़ आवाज़ में अलेयोशा को पुकारा:
“अलोशा, अपने भाई मित्या को मेरा नमस्कार कहना और उससे कहना कि वह ऐसा न करे...”
मेरे प्रति बुराई को याद रखना, भले ही मैंने उसे दुख दिया हो। और उसे मेरे शब्दों में यह भी कहना: ‘ग्रुशेंका एक दुष्ट के वश में आई है, न कि तुम्हारे, हे नेक हृदय।’ और यह भी कहना कि ग्रुशेंका ने उसे केवल एक घंटे के लिए, केवल एक छोटे से घंटे के लिए प्यार किया था—इसलिए उसे वह घंटा जीवन भर याद रखना—कहना, ‘ग्रुशेंका तुमसे यही कहती है!’
उसकी आवाज़ सिसकियों से भर उठी। खिड़की ज़ोर से बंद हो गई। "हम्म, हम्म!" रकितिन हंसते हुए गुर्राया, "उसने तुम्हारे भाई मित्या की हत्या कर दी।"
और फिर उसे कहता है कि इसे जीवन भर याद रखना! कितनी क्रूरता है!
अलोशा ने कोई जवाब नहीं दिया, ऐसा लगा जैसे उसने सुना ही न हो। वह तेज़ी से चलने लगा।
रकीतिन के बगल में ग्रुशेंका जैसे कोई बहुत जल्दी में था। वह विचारों में डूबा हुआ था और यंत्रवत रूप से चल रहा था। रकीतिन को अचानक एक चुभन महसूस हुई, मानो किसी खुले घाव पर छू लिया गया हो। ग्रुशेंका और अलेयोशा को मिलाने से उसने कुछ और ही उम्मीद की थी। लेकिन जो हुआ वह उसकी उम्मीदों से बिल्कुल अलग था।
“वह एक पोलिश नागरिक है, उसका वह अधिकारी,” उसने खुद को संयमित करते हुए फिर से कहना शुरू किया;
और सच में, अब वह कोई अधिकारी नहीं है। उसने साइबेरिया में सीमा शुल्क विभाग में काम किया, चीन की सीमा पर कहीं, कोई मामूली सा भिखारी पोलिश आदमी, जैसा कि मुझे लगता है। कहते हैं कि उसकी नौकरी चली गई। अब उसने सुना है कि ग्रुशेंका ने कुछ पैसे बचा लिए हैं, इसलिए वह फिर से सामने आ गया है—यही इस रहस्य का हल है।
फिर से अलेयोशा अनसुना सा लग रहा था। रकितिन खुद को रोक नहीं पाया। "तो तुमने पापी को बचा लिया?" वह चिढ़कर हँसा। "क्या तुमने...?"
क्या तुमने मैरी मैग्डलीन को सही रास्ते पर ला दिया? सातों शैतानों को भगा दिया, है ना? तो अब तुम देख रहे हो कि जिन चमत्कारों का तुम इंतज़ार कर रहे थे, वे हो चुके हैं!

“चुप रहो, रकितिन,” अलेयोशा ने दुखी हृदय से उत्तर दिया। “तो अब तुम मुझे उन पच्चीस रूबल के लिए तुच्छ समझते हो? मैंने तो अपना सब कुछ बेच दिया है।”
मित्र, तुम ऐसा सोचते हो। लेकिन तुम ईसा मसीह नहीं हो, और मैं यहूदा नहीं हूँ।
“ओह, रकितिन, मैं तुम्हें यकीन दिलाता हूँ कि मैं इसके बारे में भूल गया था,” अलेयोशा चिल्लाया, “तुम मुझे खुद ही याद दिला देना...
लेकिन यह रकितिन के लिए आखिरी झटका साबित हुआ।
“तुम सब नरक में जाओ!” वह अचानक चिल्लाया, “क्यों?”
मैंने तुम्हें किस शैतान की तरह ऊपर उठाया? अब से मैं तुम्हें जानना नहीं चाहता। अकेले जाओ, तुम्हारा रास्ता वही है!
और वह अचानक दूसरी गली में मुड़ गया, अलेयोशा को वहीं अकेला छोड़कर।
अंधेरा छा गया। अलेयोशा कस्बे से बाहर निकला और खेतों को पार करते हुए मठ की ओर चल पड़ा।

अध्याय 4

गलील का काना

मठ के रीति-रिवाजों के अनुसार, जब अलेयोशा आश्रम लौटा तो काफी रात हो चुकी थी; द्वारपाल ने उसे एक विशेष द्वार से अंदर जाने दिया। नौ बज चुके थे—सभी के लिए दिनभर की भागदौड़ के बाद विश्राम और आराम का समय। अलेयोशा ने संकोच से दरवाजा खोला और बड़े भिक्षु की कोठरी में गया जहाँ उसका ताबूत रखा था। कोठरी में फादर पैसी के अलावा कोई नहीं था, जो ताबूत के ऊपर एकांत में बाइबल पढ़ रहे थे, और युवा भिक्षु पोर्फिरी, जो पिछली रात की बातचीत और दिन भर की परेशान करने वाली घटनाओं से थका हुआ था, दूसरे कमरे के फर्श पर गहरी नींद में सो रहा था। हालाँकि फादर पैसी ने अलेयोशा को अंदर आते सुना, लेकिन उन्होंने उसकी ओर देखा तक नहीं। अलेयोशा दरवाजे से दाहिनी ओर कोने की तरफ मुड़ा, घुटनों के बल बैठ गया और प्रार्थना करने लगा।
उनकी आत्मा भावनाओं से भरी हुई थी, लेकिन मिश्रित भावनाओं से; किसी एक भावना से नहीं।
वह स्पष्ट रूप से अलग दिखाई दे रहा था; इसके विपरीत, एक धीमी, निरंतर चक्र में एक दूसरे को बाहर धकेल रहा था। लेकिन उसके हृदय में एक मिठास थी और, आश्चर्यजनक रूप से, अलेयोशा को इस पर आश्चर्य नहीं हुआ। उसने फिर से अपने सामने उस ताबूत को देखा, वह छिपा हुआ मृत शरीर जो उसके लिए इतना कीमती था, लेकिन सुबह का विलाप और गहरा दुख अब उसकी आत्मा को पीड़ा नहीं दे रहा था। जैसे ही वह अंदर आया, वह ताबूत के सामने ऐसे गिर पड़ा जैसे किसी पवित्र स्थान के सामने, लेकिन आनंद, आनंद उसके मन और हृदय में चमक रहा था। कोठरी की इकलौती खिड़की खुली थी, हवा ताज़ी और ठंडी थी। "तो अगर उन्होंने खिड़की खोली है तो गंध और तेज़ हो गई होगी," अलेयोशा ने सोचा। लेकिन सड़न की इस गंध का विचार भी, जो कुछ घंटे पहले उसे इतना भयानक और अपमानजनक लग रहा था, अब उसे दुखी या क्रोधित नहीं कर रहा था। उसने चुपचाप प्रार्थना करना शुरू किया, लेकिन जल्द ही उसे लगा कि वह लगभग यंत्रवत प्रार्थना कर रहा है। उसके मन में विचारों के अंश तैरते, तारों की तरह चमकते और तुरंत गायब हो जाते, फिर उनकी जगह नए विचार आ जाते। फिर भी, उसके मन में संपूर्णता का बोध व्याप्त था—कुछ अटल और सुकून देने वाला—और वह स्वयं भी इससे अवगत था। कभी-कभी वह भावपूर्वक प्रार्थना करने लगता, वह अपनी कृतज्ञता और प्रेम को प्रकट करने के लिए व्याकुल हो जाता...
लेकिन जब उन्होंने प्रार्थना शुरू की, तो अचानक उनका ध्यान किसी और बात पर चला गया और वे विचारों में डूब गए, प्रार्थना और उसे बाधित करने वाली घटना दोनों को भूल गए। उन्होंने फादर पैसी द्वारा पढ़ी जा रही बातों को सुनना शुरू किया, लेकिन थकान से चूर होकर वे धीरे-धीरे ऊंघने लगे।
“और तीसरे दिन गलील के काना में एक विवाह समारोह था;”
फादर पैसी। “और यीशु की माता वहाँ थी; और यीशु और उसके शिष्यों को विवाह में बुलाया गया था।”
“शादी? वो क्या होती है?... शादी!” ये आवाज़ गूंजती हुई चारों ओर फैल गई।
अलेयोशा के मन में विचार चल रहे थे, “उसके लिए भी खुशी है... वह दावत में गई है... नहीं, उसने चाकू नहीं लिया है... वह तो बस एक दुखद वाक्य था... खैर... दुखद वाक्यों को क्षमा कर देना चाहिए, अवश्य ही। दुखद वाक्य हृदय को सुकून देते हैं... उनके बिना, मनुष्य के लिए दुःख असहनीय हो जाएगा। रकितिन गली में चला गया है। जब तक रकितिन अपने पापों पर विचार करता रहेगा, वह हमेशा गली में ही जाता रहेगा... लेकिन मुख्य मार्ग... वह मार्ग चौड़ा, सीधा और क्रिस्टल की तरह चमकीला है, और उसके अंत में सूर्य है... आह!... क्या पढ़ा जा रहा है?”
और जब उन्हें दाखमधु की आवश्यकता हुई, तो यीशु की माता ने उससे कहा, ‘वे
शराब मत रखो... अलेयोशा ने सुना।
“अरे हाँ, मुझे इसकी कमी खल रही थी, और मैं इसे खोना नहीं चाहता था, मुझे यह बहुत पसंद है।”
अंश: यह गलीलिया का काना है, पहला चमत्कार... आह, वह चमत्कार! आह, वह प्यारा चमत्कार! यह मनुष्यों का दुःख नहीं, बल्कि उनका आनंद था जब मसीह वहाँ गए, उन्होंने मनुष्यों की खुशी में सहायता करने के लिए अपना पहला चमत्कार किया... 'जो मनुष्यों से प्रेम करता है, वह उनकी खुशी से भी प्रेम करता है'... वह

हमेशा यही दोहराते थे, यह उनके प्रमुख विचारों में से एक था... 'आनंद के बिना जीवन संभव नहीं है,' मित्या कहते हैं... हाँ, मित्या... 'जो कुछ भी सत्य और अच्छा है, वह हमेशा क्षमा से भरा होता है,' वह यह भी कहा करते थे।
“यीशु ने उससे कहा, हे स्त्री, इससे तुझसे या मुझसे क्या लेना-देना है?” मेरा
अभी वह घड़ी नहीं आई है।
“उसकी माँ ने नौकरों से कहा, वह तुमसे जो कुछ भी कहे, तुम वही करो।”
यह"। । ।
“करो... खुशी, किसी गरीब, बहुत गरीब की खुशी।”
लोग... ज़ाहिर है वे गरीब थे, क्योंकि उनके पास शादी में भी पर्याप्त शराब नहीं थी... इतिहासकार लिखते हैं कि उन दिनों गेनेसेरेट झील के आसपास रहने वाले लोग कल्पना से परे सबसे गरीब थे... और एक और महान हृदय, वह दूसरा महान व्यक्तित्व, उनकी माता, जानती थीं कि वे केवल अपना महान और भयानक बलिदान देने नहीं आए थे। वह जानती थीं कि उनका हृदय कुछ गुमनाम और अनपढ़ लोगों के सरल, सहज आनंद के लिए भी खुला था, जिन्होंने उन्हें अपनी गरीब शादी में गर्मजोशी से आमंत्रित किया था। 'मेरा समय अभी नहीं आया है,' उन्होंने कोमल मुस्कान के साथ कहा (उन्होंने शायद उन्हें देखकर हल्की मुस्कान दी होगी)। और, क्या वे वास्तव में गरीब शादियों में शराब की प्रचुरता करने के लिए ही धरती पर आए थे? फिर भी वे गए और उन्होंने वही किया जो उनकी माता ने उनसे कहा था... आह, वे फिर से पढ़ रहे हैं।
“यीशु ने उनसे कहा, ‘पानी से बर्तन भर दो।’ और उन्होंने उन्हें भर दिया।”
उन्हें पूरी तरह से भर दें।
और उसने उनसे कहा, अब इन्हें निकालो और राज्यपाल के पास ले जाओ।
दावत। और वे इसे सहते हैं।
जब भोज के मुखिया ने उस पानी का स्वाद चखा जो शराब में बदल गया था,
और उन्हें पता नहीं था कि यह पानी कहाँ से आया था; (परन्तु पानी भरने वाले सेवकों को पता था;) भोज के मुखिया ने दूल्हे को बुलाया,
और उसने उससे कहा, प्रत्येक मनुष्य आरंभ में अच्छी बातें करता है
शराब; और जब लोग अच्छी तरह पी लेते हैं, तो जो खराब होता है; परन्तु तूने अच्छी शराब अब तक बचाकर रखी है।
“लेकिन ये क्या है, ये क्या है? कमरा चौड़ा क्यों होता जा रहा है? . . . आह,
हाँ... शादी है, विवाह समारोह... हाँ, बिल्कुल। यहाँ मेहमान हैं, यहाँ नवविवाहित जोड़ा बैठा है, और आनंदित भीड़... और... दावत का बुद्धिमान संचालक कहाँ है? लेकिन यह कौन है? कौन? दीवारें फिर से धुंधली हो रही हैं... बड़ी मेज से कौन उठ रहा है? क्या!... वह भी यहाँ है? लेकिन वह तो ताबूत में है... लेकिन वह भी यहाँ है। वह खड़ा हो गया है, वह मुझे देख रहा है, वह यहाँ आ रहा है... हे भगवान!
हाँ, वह उसके पास आया, उसके पास, वह छोटा, पतला बूढ़ा आदमी, छोटे-छोटे
उसके चेहरे पर झुर्रियाँ थीं, वह प्रसन्न था और धीरे से हँस रहा था। अब कोई ताबूत नहीं था, और उसने वही कपड़े पहने थे जो उसने कल पहने थे, जब वह उनके साथ बैठा था और आगंतुक उसके चारों ओर जमा हो गए थे। उसका चेहरा खुला था, उसकी आँखें चमक रही थीं। तो फिर यह कैसे हुआ? उसे भी दावत में बुलाया गया था। उसे भी गलीलिया के काना में हुए विवाह में...
“हां, मेरे प्रिय, मुझे भी बुलाया गया है, बुलाया गया है और आदेश दिया गया है,” उसने एक कोमल आवाज सुनी।
उसके ऊपर से एक आवाज आई, “तुम यहाँ क्यों छुप गए हो? तुम भी आओ और हमारे साथ शामिल हो जाओ।”
यह उनकी ही आवाज़ थी, फादर ज़ोसिमा की आवाज़। और यह वही होने चाहिए, क्योंकि
उसने उसे फोन किया!
बुजुर्ग ने अलेयोशा का हाथ पकड़कर उसे उठाया और वह घुटनों के बल से उठ खड़ा हुआ। दुबले-पतले बूढ़े ने आगे कहा, “हम खुशी मना रहे हैं। हम पी रहे हैं।”

नई शराब, नई, अपार खुशी की शराब; क्या तुम देख रहे हो कितने मेहमान हैं? यहाँ दूल्हा-दुल्हन हैं, यहाँ भोज का बुद्धिमान संचालक है, वह नई शराब चख रहा है। तुम मुझ पर आश्चर्य क्यों कर रहे हो? मैंने एक भिखारी को प्याज दिया था, इसलिए मैं भी यहाँ हूँ। और यहाँ बहुतों ने केवल एक-एक प्याज दिया है— केवल एक छोटा सा प्याज... हमारे सारे कर्म क्या हैं? और तुम, मेरे प्यारे, तुम, मेरे दयालु बालक, तुमने भी आज एक भूखी स्त्री को प्याज दिया है। अपना काम शुरू करो, प्यारे, शुरू करो, प्यारे! ... क्या तुम हमारे पुत्र को देख रहे हो, क्या तुम उसे देख रहे हो?
“मुझे डर लग रहा है... मैं देखने की हिम्मत नहीं कर पा रहा,” अलेयोशा ने फुसफुसाते हुए कहा। “उससे मत डरो। वह अपनी महानता में भयानक है, अपनी उदात्तता में विस्मयकारी है।”
लेकिन वह असीम दयालु है। उसने प्रेम से स्वयं को हमारे समान बना लिया है और हमारे साथ आनंदित होता है। वह पानी को शराब में बदल रहा है ताकि मेहमानों का आनंद कम न हो। वह नए मेहमानों की प्रतीक्षा कर रहा है, वह निरंतर नए लोगों को बुला रहा है... देखो, वे नई शराब ला रहे हैं। क्या तुम देख रहे हो कि वे बर्तन ला रहे हैं...
अलेयोशा के दिल में कुछ चमक उठा, कुछ ऐसा जो उसे इतना भर गया कि वह दर्द से भर गया।
आनंद के आँसू उसकी आत्मा से उमड़ पड़े... उसने अपने हाथ फैलाए, एक चीख निकाली और जाग उठा।
फिर वही ताबूत, खुली खिड़की, और कोमल, गंभीर, विशिष्ट
सुसमाचार का पाठ चल रहा था। लेकिन अलेयोशा ने पाठ पर ध्यान नहीं दिया। यह अजीब था, वह घुटनों के बल सो गया था, लेकिन अब वह खड़ा हो गया था, और अचानक, जैसे आगे की ओर फेंका गया हो, तीन तेज़ कदमों से वह ताबूत तक पहुँच गया। उसका कंधा फादर पैसी से छू गया, बिना उसे पता चले। फादर पैसी ने एक पल के लिए अपनी किताब से नज़रें उठाईं, लेकिन लड़के के साथ कुछ अजीब होते देख तुरंत ही नज़रें हटा लीं। अलेयोशा आधे मिनट तक ताबूत को देखता रहा, उस ढके हुए, बेजान मृत व्यक्ति को जो ताबूत में पड़ा था, जिसकी छाती पर मूर्ति थी और सिर पर अष्टकोणीय क्रॉस वाली टोपी थी। उसने अभी-अभी उसकी आवाज़ सुनी थी, और वह आवाज़ अभी भी उसके कानों में गूँज रही थी। वह सुन रहा था, अभी भी और शब्दों की प्रतीक्षा कर रहा था, लेकिन अचानक वह तेज़ी से मुड़ा और कोठरी से बाहर निकल गया।
वह सीढ़ियों पर भी नहीं रुका, बल्कि तेजी से नीचे उतर गया; उसकी आत्मा,
परमानंद से ओतप्रोत, वह स्वतंत्रता, खुलेपन और विशालता की लालसा कर रहा था। कोमल, चमकते तारों से भरा आकाश उसके ऊपर विशाल और अथाह फैला हुआ था। आकाशगंगा दो हल्की धाराओं में शीर्ष से क्षितिज तक बह रही थी। ताज़ा, स्थिर, शांत रात ने धरती को अपने घेरे में ले रखा था। गिरजाघर के सफेद बुर्ज और सुनहरे गुंबद नीले आकाश में चमक रहे थे। घर के चारों ओर क्यारियों में खिले खूबसूरत शरद ऋतु के फूल सुबह तक सो रहे थे। धरती की खामोशी आकाश की खामोशी में विलीन होती प्रतीत हो रही थी। धरती का रहस्य तारों के रहस्य में विलीन हो गया था...
अलियोशा खड़ा रहा, देखता रहा और अचानक धरती पर गिर पड़ा।
उसे नहीं पता था कि उसने इसे क्यों गले लगाया। वह यह भी नहीं बता सकता था कि उसे इसे चूमने की, इसे पूरी तरह चूमने की इतनी तीव्र इच्छा क्यों हुई। लेकिन उसने रोते-सिसकते, सिसकते हुए इसे चूमा और अपने आँसुओं से सींचा, और पूरे दिल से इसे हमेशा-हमेशा के लिए प्यार करने का वादा किया। "अपनी खुशी के आँसुओं से धरती को सींचो और उन आँसुओं से प्यार करो," ये शब्द उसकी आत्मा में गूंज रहे थे।
वह किसलिए रो रहा था?
ओह! वह अपने परमानंद में उन तारों पर भी रो रहा था, जो थे
अंतरिक्ष की असीम गहराई से प्रकाश उसके ऊपर चमक रहा था, और "उसे उस परमानंद पर कोई शर्म नहीं थी।" ऐसा लग रहा था मानो ईश्वर के उन असंख्य लोकों से धागे उसकी आत्मा को जोड़ रहे हों, और वह "अन्य लोकों के संपर्क में" पूरी तरह कांप रही थी। वह हर किसी को और हर चीज़ के लिए क्षमा करना चाहता था, और क्षमा मांगना चाहता था। ओह, अपने लिए नहीं, बल्कि सभी मनुष्यों के लिए, सभी के लिए और हर चीज़ के लिए। "और दूसरे भी मेरे लिए प्रार्थना कर रहे हैं," यह गूंज उसकी आत्मा में बार-बार गूंज रही थी। लेकिन हर पल वह स्पष्ट रूप से और मानो स्पर्शनीय रूप से महसूस कर रहा था कि स्वर्ग के उस विशाल गुंबद के समान कुछ दृढ़ और अविचल उसकी आत्मा में प्रवेश कर गया है। ऐसा लग रहा था मानो किसी विचार ने उसके मन पर प्रभुत्व जमा लिया हो—और यह उसके पूरे जीवन और हमेशा-हमेशा के लिए था। वह धरती

पर एक कमजोर लड़के के रूप में गिरा था, लेकिन एक दृढ़ योद्धा बनकर उठा, और उसने इसे अपने परमानंद के क्षण में अचानक जान लिया और महसूस किया। और अलेयोशा उस पल को कभी नहीं भूल सका, अपने पूरे जीवन भर।
“उस घड़ी में किसी ने मेरी आत्मा से मुलाकात की,” वह बाद में कहा करते थे।
उनके शब्दों पर अटूट विश्वास।
तीन दिनों के भीतर ही उसने मठ छोड़ दिया, जैसा कि कहा गया था।
उनके बड़े भाई ने उन्हें "संसार में घूमने" के लिए कहा था।

पुस्तक 8

मित्या

अध्याय 1

कुज़्मा सैमसोनोव

लेकिन दिमित्री, जिसे ग्रुशेंका ने नए जीवन की ओर प्रस्थान करते हुए अंतिम संदेश दिया था और उससे अपने प्रेम के क्षणों को हमेशा याद रखने का आग्रह किया था, उसे ग्रुशेंका के साथ हुई घटना के बारे में कुछ भी पता नहीं था और उस समय वह अत्यधिक बेचैनी और घबराहट की स्थिति में था। पिछले दो दिनों से उसकी मानसिक स्थिति इतनी अकल्पनीय थी कि उसे आसानी से मस्तिष्क ज्वर हो सकता था, जैसा कि उसने स्वयं बाद में कहा। अलेयोशा उसे पिछली सुबह नहीं ढूंढ पाया था और इवान भी उसी दिन सराय में उससे मिलने में सफल नहीं हुआ था। उसके ठहरने वाले लोगों ने उसके आदेश पर उसकी गतिविधियों को छुपा रखा था। उसने वे दो दिन सचमुच हर दिशा में भागदौड़ करते हुए बिताए थे।
बाद में उन्होंने स्वयं कहा, "मैं अपने भाग्य से जूझ रहा था और खुद को बचाने की कोशिश कर रहा था।" कुछ घंटों के लिए तो वे एक जरूरी काम से शहर से बाहर भी चले गए, क्योंकि ग्रुशेंका को एक पल के लिए भी नज़रों से ओझल होना उनके लिए बेहद भयानक था। बाद में इन सभी बातों का विस्तार से वर्णन किया गया और दस्तावेजी साक्ष्यों से इसकी पुष्टि भी हुई; लेकिन फिलहाल हम उन दो भयानक दिनों की सबसे महत्वपूर्ण घटनाओं का ही उल्लेख करेंगे जो उस भयानक त्रासदी से ठीक पहले घटी थीं, जो उन पर अचानक आ पड़ी थी।
हालांकि यह सच है कि ग्रुशेंका ने एक घंटे के लिए उससे सच्चा प्यार किया था, और
ईमानदारी से, फिर भी वह कभी-कभी उसे बेरहमी और निर्दयता से प्रताड़ित करती थी। सबसे बुरी बात यह थी कि वह कभी यह नहीं जान पाता था कि वह क्या करने वाली है। बल या दया से उसे मनाना भी असंभव था: वह किसी भी बात पर नहीं झुकती थी। वह केवल क्रोधित हो जाती और उससे पूरी तरह मुंह मोड़ लेती, यह वह अच्छी तरह जानता था। उसे बिल्कुल सही संदेह था कि वह भी आंतरिक संघर्ष से गुजर रही है, और असाधारण दुविधा की स्थिति में है, कि वह किसी बात का फैसला कर रही है, लेकिन उस पर निर्णय नहीं ले पा रही है। और इसलिए, उचित कारण के साथ, उसने डूबते दिल से अनुमान लगाया कि कभी-कभी वह उससे और उसके जुनून से नफरत करती होगी। और शायद ऐसा ही था, लेकिन ग्रुशेंका को क्या परेशान कर रहा था, यह वह समझ नहीं पा रहा था। उसके लिए यह सारा परेशान करने वाला सवाल उसके और फ्योदोर पावलोविच के बीच था।
यहां हमें एक बात अवश्य ध्यान में रखनी चाहिए: वह दृढ़तापूर्वक
मित्या को पूरा यकीन था कि फ्योदोर पावलोविच ग्रुशेंका को वैध विवाह का प्रस्ताव देगा, या शायद दे चुका होगा, और उसे ज़रा भी विश्वास नहीं था कि वह बूढ़ा विलासी तीन हज़ार रूबल में अपना लक्ष्य हासिल करना चाहता है। मित्या इस निष्कर्ष पर ग्रुशेंका और उसके स्वभाव के बारे में अपनी जानकारी के आधार पर पहुँचा था। इसी वजह से वह कभी-कभी यह मान लेता था कि ग्रुशेंका की सारी बेचैनी इस बात से पैदा हुई थी कि उसे समझ नहीं आ रहा था कि वह उनमें से किसे चुने, जो उसके लिए सबसे ज़्यादा फ़ायदेमंद हो।
आश्चर्य की बात है, उन दिनों में उनके मन में कभी यह विचार नहीं आया कि
उस "अधिकारी" की वापसी निकट थी, यानी उस व्यक्ति की, जिसने ग्रुशेंका के जीवन में इतना घातक प्रभाव डाला था, और जिसके आने का वह बड़ी भावना और भय के साथ इंतज़ार कर रही थी। यह सच है कि हाल ही में ग्रुशेंका इस बारे में बहुत चुप रही थी। फिर भी, उसे उस पत्र की पूरी जानकारी थी जो उसे एक महीने पहले उसके बहकाने वाले से मिला था, और उसने यह बात खुद ग्रुशेंका से सुनी थी। उसे यह भी कुछ हद तक पता था कि पत्र में क्या लिखा था। गुस्से में आकर ग्रुशेंका ने उसे वह पत्र दिखाया था, लेकिन उसे आश्चर्य हुआ कि उसने उस पर कोई खास ध्यान नहीं दिया। यह कहना मुश्किल होगा कि ऐसा क्यों था। शायद, इस स्त्री के लिए अपने पिता के साथ हुए भयानक संघर्ष के बोझ तले दबे होने के कारण, वह उस समय किसी और

भयानक खतरे की कल्पना करने में असमर्थ था। उसे पांच साल के गायब रहने के बाद अचानक वापस आने वाले प्रेमी पर विश्वास ही नहीं हो रहा था, और उससे भी कम उसकी शीघ्र वापसी पर। इसके अलावा, मित्या को दिखाए गए "अधिकारी" के पहले पत्र में, उसके नए प्रतिद्वंद्वी के आगमन की संभावना का संकेत बहुत अस्पष्ट रूप से दिया गया था। पत्र बहुत ही अनिश्चित, आडंबरपूर्ण और भावुकता से भरा हुआ था। यह ध्यान देने योग्य है कि ग्रुशेंका ने उससे पत्र की अंतिम पंक्तियाँ छिपा रखी थीं, जिनमें उसके लौटने का स्पष्ट संकेत था। इसके अलावा, मित्या को बाद में याद आया कि उसने उस समय ग्रुशेंका के चेहरे पर साइबेरिया से आए इस पत्र के प्रति एक प्रकार का अनायास ही गर्व और तिरस्कार देखा था। ग्रुशेंका ने उसे अपने और इस प्रतिद्वंद्वी के बीच बाद में हुई बातचीत के बारे में कुछ नहीं बताया; इसलिए धीरे-धीरे वह अधिकारी के अस्तित्व को पूरी तरह से भूल गया था।
उन्हें लगा कि आगे जो भी हो, हालात चाहे जो भी मोड़ लें,
फ्योदोर पावलोविच के साथ उनका अंतिम संघर्ष निकट था, और इसे सबसे पहले तय करना आवश्यक था। डूबते दिल से वे हर पल ग्रुशेंका के फैसले का इंतजार कर रहे थे, उन्हें हमेशा यही विश्वास था कि यह अचानक, क्षणिक आवेग में आएगा। अचानक वह उनसे कहेंगी: "मुझे अपना लो, मैं हमेशा के लिए तुम्हारी हूँ," और सब कुछ खत्म हो जाएगा। वे उसे पकड़ लेंगे और तुरंत उसे दुनिया के छोर तक ले जाएंगे। ओह, फिर वे उसे तुरंत ले जाएंगे, जितना संभव हो उतना दूर; रूस के सबसे दूर छोर तक, यदि पृथ्वी के नहीं, तो फिर वे उससे शादी करेंगे और उसके साथ छुपकर बस जाएंगे, ताकि उनके बारे में कोई कुछ न जान सके, न यहाँ, न वहाँ, न कहीं और। फिर, ओह, फिर, एक नया जीवन तुरंत शुरू हो जाएगा!
इस भिन्न, सुधरे हुए और “सद्गुणी” जीवन के बारे में (“यह अवश्य होना चाहिए, यह अवश्य होना चाहिए”) “सद्गुणी” होने का सपना वह हर पल देखता रहता था। वह उस सुधार और नवजीवन के लिए तड़पता था। जिस गंदे दलदल में वह अपनी मर्ज़ी से डूब गया था, वह उसे बेहद घृणित लगता था, और ऐसे हालात में बहुत से लोगों की तरह, वह सबसे पहले स्थान परिवर्तन की आशा रखता था। काश ये लोग न होते, काश ये परिस्थितियाँ न होतीं, काश वह इस शापित जगह से भाग पाता—तो उसका पूर्ण पुनर्जन्म हो जाता, वह एक नए मार्ग पर चल पड़ता। यही उसका विश्वास था, और यही उसकी दिली तमन्ना थी।
लेकिन यह सब केवल पहली शर्त पर ही संभव हो सकता है, यानी सुखद समाधान की शर्त पर।
सवाल। एक और संभावना थी, एक अलग और भयानक अंत। अचानक वह उससे कह सकती थी: “चले जाओ। मैंने अभी-अभी फ्योदोर पावलोविच से समझौता किया है। मैं उससे शादी करने जा रही हूँ और तुम्हें नहीं चाहती”—और फिर... लेकिन फिर... लेकिन मित्या नहीं जानता था कि तब क्या होगा। आखिरी पल तक उसे पता नहीं था। यह उसकी अच्छाई थी। उसके कोई निश्चित इरादे नहीं थे, उसने किसी अपराध की योजना नहीं बनाई थी। वह बस पीड़ा में देख रहा था और जासूसी कर रहा था, जबकि वह अपने भाग्य के पहले, सुखद समाधान के लिए खुद को तैयार कर रहा था। उसने वास्तव में हर दूसरे विचार को दूर भगा दिया था। लेकिन उस अंत के लिए एक बिल्कुल अलग चिंता पैदा हुई, एक नई, आकस्मिक, लेकिन फिर भी घातक और अनसुलझी समस्या सामने आई।
अगर वह उससे कहे: “मैं तुम्हारी हूँ; मुझे अपने साथ ले जाओ,” तो वह उसे कैसे ले जा सकता है?
उसे अपने साथ ले जाना? उसके पास ऐसा करने के लिए साधन, पैसा कहाँ से आया? ठीक इसी समय फ्योदोर पावलोविच से मिलने वाली आय के सभी स्रोत, जो इतने वर्षों से बिना किसी रुकावट के जारी थे, बंद हो गए। ग्रुशेंका के पास पैसा तो था ही, लेकिन इस मामले में मित्या ने अचानक असाधारण अहंकार दिखाया; वह उसे अपने साथ ले जाना चाहता था और उसके साथ खुद अपने खर्चे पर एक नया जीवन शुरू करना चाहता था, न कि उसके खर्चे पर। वह उसके पैसे लेने की कल्पना भी नहीं कर सकता था, और इस विचार मात्र से ही उसे तीव्र घृणा का अनुभव हुआ। मैं इस तथ्य पर विस्तार से चर्चा या विश्लेषण नहीं करूँगा, बल्कि केवल इतना ही कहूँगा कि उस समय उसका यही रवैया था। यह सब अप्रत्यक्ष रूप से और अनजाने में उसके अंतरात्मा की उस गुप्त पीड़ा से उत्पन्न हुआ होगा, जो उसने बेईमानी से कैटेरिना इवानोव्ना के पैसे को हड़पने के लिए महसूस की थी। "मैंने उनमें से एक के साथ बदमाशी की है, और मैं दूसरे के साथ भी सीधे तौर पर बदमाशी करूंगा," उस समय उनकी यही भावना थी, जैसा कि उन्होंने बाद में समझाया: "और जब ग्रुशेंका को पता चलेगा, तो वह ऐसे बदमाश की परवाह नहीं करेगी।"
तो फिर उसे साधन कहाँ से मिलते, उसे वह भाग्य कहाँ से मिलता

पैसा? इसके बिना सब कुछ बर्बाद हो जाएगा और कुछ भी नहीं किया जा सकेगा, "और वह भी सिर्फ इसलिए क्योंकि मेरे पास पैसा नहीं था। ओह, कितनी शर्म की बात है!"
चीजों का अनुमान लगाना: शायद उसे पता था कि पैसा कहाँ से मिलेगा।
शायद उस समय उसे पता था कि वह रकम कहाँ है। मैं यहाँ इसके बारे में और कुछ नहीं कहूँगा, क्योंकि बाद में सब स्पष्ट हो जाएगा। लेकिन उसकी मुख्य समस्या, मुझे समझाना ही होगा, चाहे कितना भी अस्पष्ट क्यों न हो, इस तथ्य में थी कि उस रकम को पाने के लिए, उसे लेने का अधिकार पाने के लिए, उसे पहले कैटेरिना इवानोव्ना के तीन हज़ार लौटाने होंगे—अन्यथा, "मैं एक आम जेबकतरा हूँ, मैं एक बदमाश हूँ, और मैं एक बदमाश के रूप में नया जीवन शुरू नहीं करना चाहता," मित्या ने फैसला किया। और इसलिए उसने कैटेरिना इवानोव्ना को वह तीन हज़ार लौटाने के लिए हर संभव प्रयास करने का निश्चय किया, और वह भी सबसे पहले। इस फैसले का अंतिम चरण, एक तरह से कहें तो, आखिरी घंटों में ही आया था, यानी दो दिन पहले, राजमार्ग पर अलेयोशा के साथ हुई आखिरी मुलाकात के बाद, उस शाम जब ग्रुशेंका ने कैटेरिना इवानोव्ना का अपमान किया था। अलेयोशा से घटना का ब्योरा सुनने के बाद, मित्या ने स्वीकार किया था कि वह एक बदमाश है और उससे कहा था कि अगर कैटेरिना इवानोव्ना को इससे कुछ तसल्ली मिले तो वह उन्हें यह बात बता दे। उस रात अपने भाई से विदा होने के बाद, उसने गुस्से में आकर सोचा था कि "किसी का खून करना और लूटना, कैत्या का कर्ज न चुकाने से बेहतर होगा। मैं चाहता हूँ कि हर कोई मुझे लुटेरा और हत्यारा समझे, मैं साइबेरिया चला जाऊँ, बजाय इसके कि कैत्या को यह कहने का हक हो कि मैंने उसे धोखा दिया और उसका पैसा चुराया, और उसके पैसे से ग्रुशेंका के साथ भाग गया और एक नई जिंदगी शुरू की! मैं ऐसा नहीं कर सकता!" मित्या ने दांत पीसते हुए ऐसा फैसला किया, और उसे कई बार ऐसा लगा होगा कि उसका दिमाग जवाब दे देगा। लेकिन इस बीच वह संघर्ष करता रहा... .
यह कहना अजीब है, हालांकि किसी ने सोचा होगा कि अब कुछ भी नहीं बचा है।
उसके लिए निराशा के सिवा कुछ नहीं था—आखिर दुनिया में कुछ भी न होने पर इतनी बड़ी रकम जुटाने की भली-भांति संभावना क्या थी?—फिर भी अंत तक वह यही उम्मीद लगाए बैठा रहा कि उसे वो तीन हज़ार मिल जाएँगे, कि पैसा किसी न किसी तरह अपने आप उसके पास आ जाएगा, मानो आसमान से बरस रहा हो। दिमित्री जैसे लोगों के साथ ठीक ऐसा ही होता है, जिनका पैसे से कभी कोई वास्ता नहीं रहा, सिवाय विरासत में मिले धन को बिना किसी मेहनत के लुटाने के, और जिन्हें यह भी नहीं पता कि पैसा कैसे कमाया जाता है। दो दिन पहले अलेयोशा से विदा होने के तुरंत बाद उसके दिमाग में तरह-तरह के अजीबोगरीब विचार उमड़ पड़े और उसके विचार उलझन में पड़ गए। इसी वजह से उसने सबसे पहले एक बिलकुल ही बेतुके काम में हाथ डाला। और शायद ऐसे हालात में ऐसे लोगों के दिमाग में सबसे पहले असंभव, बेतुकी योजनाएँ ही आती हैं, और वही सबसे व्यावहारिक लगती हैं।
उसने अचानक सैमसनोव, उस व्यापारी के पास जाने का निश्चय किया जो
ग्रुशेंका के संरक्षक से संपर्क करके, उसे एक "योजना" प्रस्तावित करना और उसके माध्यम से उससे तुरंत पूरी राशि प्राप्त करना। उसे अपनी योजना के व्यावसायिक मूल्य पर ज़रा भी संदेह नहीं था, और वह केवल इस बात को लेकर अनिश्चित था कि अगर सैमसनोव इसे व्यावसायिक दृष्टिकोण के अलावा किसी और नज़रिए से देखे तो वह इसे कैसे समझेगा। हालाँकि मित्या व्यापारी को जानता था, लेकिन उससे उसका कोई गहरा परिचय नहीं था और उसने उससे कभी बात भी नहीं की थी। लेकिन किसी अज्ञात कारण से उसे लंबे समय से यह विश्वास था कि मृत्यु के कगार पर पड़ा वह बूढ़ा बदमाश शायद अब ग्रुशेंका के एक प्रतिष्ठित पद प्राप्त करने और एक भरोसेमंद व्यक्ति से शादी करने पर कोई आपत्ति नहीं करेगा। और उसे न केवल यह विश्वास था कि वह आपत्ति नहीं करेगा, बल्कि यही उसकी इच्छा थी, और यदि अवसर मिला तो वह मदद करने के लिए भी तैयार रहेगा। किसी अफवाह से, या शायद ग्रुशेंका के किसी अनकहे शब्द से, उसे यह भी पता चला था कि बूढ़ा व्यक्ति शायद ग्रुशेंका के लिए फ्योदोर पावलोविच की बजाय उसे पसंद करेगा।
संभवतः मेरे उपन्यास के कई पाठक यह महसूस करेंगे कि हिसाब लगाते समय
ऐसी सहायता प्राप्त करके और अपनी दुल्हन को, एक तरह से, उसके संरक्षक के हाथों से छीनने के लिए तैयार होकर, दिमित्री ने बड़ी क्रूरता और शालीनता का अभाव दिखाया। मैं केवल इतना ही कहना चाहूँगा कि मित्या ग्रुशेंका के अतीत को पूरी तरह से समाप्त मान लेता था। वह उस अतीत को असीम दया से देखता था और अपने प्रेम के पूरे जोश से यह संकल्प करता था कि जब ग्रुशेंका उसे बताएगी कि वह उससे प्यार करती

है और उससे शादी करेगी, तो इसका अर्थ होगा एक नई ग्रुशेंका और एक नए दिमित्री का जन्म, जो हर बुराई से मुक्त होगा। वे एक-दूसरे को क्षमा कर देंगे और अपने जीवन की नई शुरुआत करेंगे। जहाँ तक कुज़्मा सैमसनोव की बात है, दिमित्री उसे एक ऐसे व्यक्ति के रूप में देखता था जिसने ग्रुशेंका के सुदूर अतीत में एक घातक प्रभाव डाला था, हालाँकि ग्रुशेंका ने उससे कभी प्यार नहीं किया था, और जो अब स्वयं अतीत की बात हो चुका था, पूरी तरह से समाप्त हो चुका था, और एक तरह से अस्तित्वहीन था। इसके अलावा, मित्या उसे एक आदमी के रूप में मुश्किल से ही देखता था, क्योंकि कस्बे में हर कोई जानता था कि वह केवल एक टूटा हुआ इंसान था, जिसके ग्रुशेंका के साथ संबंध बदल गए थे और अब केवल पिता तुल्य रह गए थे, और यह स्थिति लंबे समय से बनी हुई थी।

बहरहाल, इस सबमें मित्या की ओर से बहुत सरलता थी, क्योंकि

अपनी तमाम बुराइयों के बावजूद, वह एक अत्यंत सरल हृदय का व्यक्ति था। उसकी इसी सरलता का उदाहरण यह था कि मित्या को दृढ़ विश्वास हो गया था कि परलोक जाने की पूर्व संध्या पर, बूढ़े कुज़्मा को ग्रुशेंका के साथ अपने अतीत के संबंधों पर अवश्य पश्चाताप होगा, और इस दुनिया में ग्रुशेंका का इससे अधिक समर्पित मित्र और रक्षक कोई नहीं होगा, जितना कि अब निर्दोष हो चुका यह बूढ़ा व्यक्ति।

चौराहे पर अलेयोशा से हुई बातचीत के बाद, वह मुश्किल से ही सो पाया।

पूरी रात जागने के बाद, अगली सुबह दस बजे वह सैमसनोव के घर पर था और नौकर को अपने आने की सूचना देने को कह रहा था। वह दो मंजिला, बहुत बड़ा और उदास सा पुराना मकान था, जिसमें एक छोटा कमरा और अन्य कमरे भी थे। निचली मंजिल पर सैमसनोव के दो विवाहित बेटे अपने परिवारों के साथ, उसकी बूढ़ी बहन और उसकी अविवाहित बेटी रहती थीं। छोटे कमरे में उसके दो क्लर्क रहते थे, जिनमें से एक का भी बड़ा परिवार था। कमरा और निचली मंजिल दोनों ही खचाखच भरी थीं, लेकिन बूढ़े ने ऊपरी मंजिल अपने लिए ही रखी थी और अपनी बेटी को भी वहाँ रहने नहीं दिया था, हालाँकि वह उसकी सेवा करती थी और अस्थमा होने के बावजूद, निश्चित समय पर और जब भी वह उसे बुलाता, उसे नीचे से दौड़कर ऊपर आना पड़ता था।

इस ऊपरी मंजिल पर कई बड़े कमरे थे जो पूरी तरह से इसके लिए रखे गए थे।

कमरा पुराने ज़माने के व्यापारी शैली में सजा हुआ था, दीवारों के साथ-साथ महोगनी की कुर्सियों की लंबी, नीरस कतारें थीं, पर्दों के नीचे कांच के झूमर लगे थे और दीवारों पर धुंधले से शीशे थे। ये सभी कमरे पूरी तरह से खाली और अनुपयोगी थे, क्योंकि बूढ़ा आदमी एक ही कमरे में रहता था, एक छोटा, एकांत कमरा, जहाँ उसकी सेवा एक बूढ़ी नौकरानी करती थी जिसके सिर पर रुमाल बंधा होता था, और एक लड़का जो गलियारे में बने लॉकर पर बैठा रहता था। सूजे हुए पैरों के कारण बूढ़ा आदमी मुश्किल से चल पाता था, और उसे उसकी चमड़े की कुर्सी से शायद ही कभी उठाया जाता था, जब बूढ़ी औरत उसे सहारा देकर कमरे में एक-दो बार ऊपर-नीचे ले जाती थी। वह इस बूढ़ी औरत के साथ भी उदास और कम बोलने वाला रहता था।

जब उन्हें “कप्तान” के आगमन की सूचना मिली, तो उन्होंने तुरंत इनकार कर दिया।

उससे मिलने के लिए। लेकिन मित्या ने ज़िद की और उसका नाम दोबारा लिखवाया। सैमसनोव ने लड़के से बारीकी से पूछताछ की: वह कैसा दिखता है? क्या वह नशे में है? क्या वह हंगामा करने वाला है? उसे जवाब मिला: वह होश में है, लेकिन जाने को तैयार नहीं है। बूढ़े आदमी ने फिर उससे मिलने से इनकार कर दिया। तब मित्या, जिसने यह पहले ही भांप लिया था और जानबूझकर अपने साथ पेंसिल और कागज लाया था, ने कागज के टुकड़े पर साफ-साफ लिखा: "अग्राफेना अलेक्जेंड्रोवना से संबंधित अत्यंत महत्वपूर्ण कार्य के लिए," और उसे बूढ़े आदमी को भेज दिया।

थोड़ा सोचने के बाद सैमसनोव ने लड़के से आगंतुक को ले जाने के लिए कहा।

ड्राइंग रूम में जाकर, उन्होंने बूढ़ी औरत को नीचे भेजा और अपने छोटे बेटे को तुरंत ऊपर आने का आदेश दिया। उनका छोटा बेटा, जो छह फुट से भी लंबा और असाधारण शारीरिक शक्ति वाला था, दाढ़ी-मूंछ साफ किए हुए और यूरोपीय शैली के कपड़े पहने हुए था, जबकि उनके पिता अभी भी कफ्तान और दाढ़ी रखते थे, बिना कुछ कहे तुरंत आ गया। पूरा परिवार पिता के सामने कांप उठा। बूढ़े ने इस विशालकाय व्यक्ति को इसलिए नहीं बुलवाया था कि वह "कैप्टन" से डरते थे (वे किसी भी तरह से डरपोक स्वभाव के नहीं थे), बल्कि किसी आपात स्थिति में गवाह के रूप में मौजूद रहने के लिए। अपने बेटे और नौकर के सहारे, वह अंततः ड्राइंग रूम में लड़खड़ाते हुए पहुंचे। यह माना जा सकता है कि उनके मन में काफी जिज्ञासा थी। जिस ड्राइंग

रूम में मित्या उनका इंतजार कर रहा था, वह एक विशाल, उदास कमरा था जो मन में उदासी का भाव भर देता था। उसमें खिड़कियों की दोहरी कतार, एक गैलरी, संगमरमर की दीवारें और तीन विशाल झूमर थे जिन पर शीशे लगे थे और शेड से ढके हुए थे।
मित्या प्रवेश द्वार पर एक छोटी सी कुर्सी पर बैठा अपने भाग्य की प्रतीक्षा कर रहा था।
घबराहट और बेचैनी। जब बूढ़ा आदमी सत्तर फीट दूर, सामने वाले दरवाजे पर दिखाई दिया, तो मित्या तुरंत उठ खड़ा हुआ और अपने लंबे, फौजी कदमों से उससे मिलने के लिए चल पड़ा। मित्या ने अच्छे कपड़े पहने थे, बटन बंद फ्रॉक-कोट, गोल टोपी और हाथों में काले दस्ताने, ठीक वैसे ही जैसे तीन दिन पहले अपने पिता और भाइयों के साथ पारिवारिक बैठक में बड़े के घर पर था। बूढ़ा आदमी गरिमापूर्ण और अडिग खड़ा उसका इंतजार कर रहा था, और मित्या को तुरंत महसूस हुआ कि जैसे-जैसे वह आगे बढ़ा, उसने उसे अंदर तक परख लिया। मित्या सैमसनोव के बेहद सूजे हुए चेहरे से भी बहुत प्रभावित हुआ। उसका निचला होंठ, जो हमेशा मोटा रहता था, अब नीचे लटक रहा था, मानो जूड़ा हो। उन्होंने गरिमापूर्ण मौन में अपने अतिथि को प्रणाम किया, उन्हें सोफे के पास एक नीची कुर्सी पर बैठने का इशारा किया, और अपने बेटे की बांह पर झुककर दर्द से कराहते हुए सामने वाले सोफे पर बैठने लगे, जिससे मित्या, उनके दर्द भरे प्रयासों को देखकर, तुरंत पश्चाताप से भर गया और उस प्रतिष्ठित व्यक्ति की उपस्थिति में अपनी तुच्छता के प्रति संवेदनशील हो गया, जिसे उन्होंने परेशान करने का साहस किया था।
“आप मुझसे क्या चाहते हैं, महोदय?” बूढ़े व्यक्ति ने जानबूझकर कहा।
जब वह अंततः बैठ गया, तो उसने स्पष्ट रूप से, सख्ती से, लेकिन विनम्रतापूर्वक कहा।
मित्या चौंक गया, उछल पड़ा, लेकिन फिर बैठ गया। फिर उसने तुरंत बोलना शुरू किया।
तेज़, घबराहट भरी जल्दबाजी में बोलते हुए, हाव-भाव करते हुए और मानो उन्माद में, वह स्पष्ट रूप से एक ऐसे व्यक्ति थे जो हताश होकर कोने में धकेल दिए गए थे, बर्बादी के कगार पर थे, आखिरी उम्मीद की किरण पकड़े हुए थे, और असफल होने पर डूबने को तैयार थे। बूढ़े सैमसनोव ने शायद यह सब एक पल में समझ लिया था, हालांकि उनका चेहरा मूर्ति की तरह ठंडा और स्थिर बना रहा।
“महोदय महोदय, कुज़्मा कुज़्मिच, आपने निस्संदेह सुना होगा, और भी बहुत कुछ।”
एक से अधिक बार, मेरे पिता फ्योदोर पावलोविच करामाज़ोव के साथ मेरे विवादों के बारे में, जिन्होंने मेरी माँ से मिली मेरी विरासत मुझसे छीन ली... पूरे शहर में इसकी चर्चा हो रही है... क्योंकि यहाँ हर कोई उन बातों की चर्चा कर रहा है जो उन्हें नहीं करनी चाहिए... और इसके अलावा, यह ग्रुशेंका के माध्यम से आप तक पहुँच सकती थी... क्षमा करें, अग्रफेना अलेक्जेंड्रोवना के माध्यम से... अग्रफेना अलेक्जेंड्रोवना, वह महिला जिनके लिए मेरे मन में सर्वोच्च आदर और सम्मान है...
तो मित्या ने बोलना शुरू किया, और पहले ही वाक्य पर रुक गया। हम नहीं करेंगे
मैं उनके भाषण को शब्दशः दोहरा रहा हूँ, लेकिन उसका सार संक्षेप में ही बताऊँगा। उन्होंने कहा, तीन महीने पहले उन्होंने प्रांत के प्रमुख शहर में एक वकील से स्पष्ट इरादे से (मित्या ने जानबूझकर "इरादे से" के स्थान पर इन शब्दों का प्रयोग किया) परामर्श लिया था, "एक प्रतिष्ठित वकील, कुज़्मा कुज़्मिच, पावेल पावलोविच कोर्नेप्लोडोव। आपने शायद उनके बारे में सुना होगा? एक विशाल बुद्धि के धनी, एक राजनेता की तरह सोचने वाले व्यक्ति... वे आपको भी जानते हैं... उन्होंने आपके बारे में बहुत अच्छी बातें कही हैं..." मित्या फिर से भावुक हो गए। लेकिन इन विरामों ने उन्हें रोका नहीं। वे तुरंत बीच के अंतरालों को पार करते हुए आगे बढ़ते रहे।
कोर्नेप्लोदोव ने उससे बारीकी से पूछताछ करने और निरीक्षण करने के बाद,
जो दस्तावेज़ वह उसके लिए ला सका (मित्या ने इन दस्तावेज़ों का कुछ अस्पष्ट रूप से उल्लेख किया और विशेष जल्दबाजी में विषय को टाल दिया), उनसे पता चला कि वे निश्चित रूप से चेरमाश्न्या गाँव के संबंध में कार्यवाही कर सकते हैं, जो उसके अनुसार, उसकी माँ से उसे, मित्या को मिलना चाहिए था, और इस तरह उसके पिता, उस पुराने दुष्ट को मात दे सकते थे... "क्योंकि हर दरवाजा बंद नहीं था और न्याय को अभी भी कोई न कोई रास्ता मिल सकता था।" वास्तव में, वह फ्योदोर पावलोविच से छह या सात हजार रूबल की अतिरिक्त राशि की उम्मीद कर सकता था, क्योंकि चेरमाश्न्या की कीमत कम से कम पच्चीस हजार थी, वह अट्ठाईस हजार कह सकता था, वास्तव में, "तीस, तीस, कुज़्मा कुज़्मिच, और क्या आप विश्वास करेंगे, मुझे उस निर्दयी आदमी से सत्रह भी नहीं मिले!" तो मित्या ने, कानून के बारे में कुछ भी न जानते हुए, फिलहाल

कारोबार को रोक दिया था, लेकिन यहाँ आकर उस पर लगाए गए एक झूठे दावे से वह अवाक रह गया (यहाँ मित्या फिर से बहक गया और एक छलांग लगाकर आगे बढ़ा), “तो क्या आप, आदरणीय और श्रेष्ठ कुज़्मा कुज़्मिच, उस अप्राकृतिक राक्षस के खिलाफ मेरे सभी दावों को स्वीकार करने और मुझे केवल तीन हज़ार की अग्रिम राशि देने के लिए तैयार नहीं होंगे? ... देखिए, आप किसी भी हालत में इसमें हार नहीं मानेंगे। मैं अपनी कसम खाता हूँ, अपनी कसम। बल्कि इसके विपरीत, आप तीन हज़ार के बजाय छह या सात हज़ार कमा सकते हैं।” सबसे बढ़कर, वह चाहता था कि यह मामला उसी दिन सुलझ जाए।
मैं आपके साथ नोटरी के यहाँ या जो भी हो, काम निपटा लूँगा... वास्तव में,
मैं कुछ भी करने को तैयार हूँ... मैं सारे दस्तावेज़ सौंप दूँगा... आप जो चाहें, किसी भी चीज़ पर हस्ताक्षर कर दें... और हम तुरंत समझौता कर सकते हैं... और अगर मुमकिन हो, काश, उसी सुबह... आप मुझे वो तीन हज़ार दे दें, क्योंकि इस शहर में आपके जैसा कोई पूंजीपति नहीं है, और इस तरह आप मुझे बचा लेंगे... असल में मुझे बचा लेंगे... एक अच्छे, बल्कि कहूँ तो एक सम्मानजनक काम के लिए... क्योंकि मैं एक खास व्यक्ति के लिए बेहद सम्मानजनक भावनाएँ रखता हूँ, जिसे आप अच्छी तरह जानते हैं, और जिसकी आप पिता समान देखभाल करते हैं। अगर पिता होने का नाते न होता, तो मैं आता ही नहीं। और, सच में, इस धंधे में तीन लोगों की लड़ाई है, क्योंकि ये किस्मत है—ये तो एक भयानक बात है, कुज़्मा कुज़्मिच! एक त्रासदी, कुज़्मा कुज़्मिच, एक त्रासदी! और चूंकि तुम बहुत पहले ही पढ़ाई छोड़ चुके हो, अब दो लोगों के बीच रस्साकशी चल रही है। शायद मैं इसे ठीक से व्यक्त नहीं कर पा रहा हूँ, लेकिन मैं साहित्य का जानकार नहीं हूँ। देखो, मैं एक तरफ हूँ और वह राक्षस दूसरी तरफ। तो तुम्हें चुनना होगा। या तो मैं या वह राक्षस। सब कुछ तुम्हारे हाथों में है—तीन जिंदगियों का भाग्य और दो जिंदगियों की खुशी... माफ करना, मैं बात को उलझा रहा हूँ, लेकिन तुम समझ गए हो... तुम्हारी श्रद्धापूर्ण आँखों से मुझे समझ आ रहा है... और अगर तुम नहीं समझे, तो मेरा काम तमाम... तो समझ गए!
मित्या ने अपनी अटपटी बात को यह कहते हुए रोक दिया, "तो आप देख ही रहे हैं!" और उछल पड़ा।
वह अपनी सीट से उठ खड़ा हुआ और अपने मूर्खतापूर्ण प्रस्ताव के उत्तर की प्रतीक्षा करने लगा। आखिरी वाक्य बोलते ही उसे अचानक यह एहसास हो गया कि उसका सारा प्रयास विफल हो गया है, और सबसे बढ़कर, वह सरासर बकवास कर रहा था।
“यह कितना अजीब है! यहाँ आते समय तो सब ठीक लग रहा था, और अब तो...”
"यह सब सरासर बकवास है।" यह विचार अचानक उसके निराशाग्रस्त मन में आया।
जब तक वह बोल रहा था, बूढ़ा आदमी बिना हिले-डुले बैठा देखता रहा।
उसकी आँखों में बर्फीली सी चमक थी। उसे कुछ पल के लिए सस्पेंस में रखने के बाद, कुज़्मा कुज़्मिच ने अंत में अत्यंत सकारात्मक और भयावह स्वर में कहा:
“माफ़ कीजिए, हम ऐसा कोई काम नहीं करते।” मित्या को अचानक लगा कि उसके पैर कांप रहे हैं। “अब मैं क्या करूँ, कुज़्मा कुज़्मिच?” उसने फीके चेहरे के साथ बुदबुदाया।
मुस्कुराते हुए। "मुझे लगता है कि अब सब कुछ मुझ पर निर्भर करता है—आप क्या सोचते हैं?"
"माफ़ करें। । ।"
मित्या स्थिर खड़ा रहा, बिना हिले-डुले घूरता रहा। अचानक उसकी नज़र किसी चीज़ पर पड़ी।
बूढ़े आदमी के चेहरे पर हलचल हुई। वह चौंक गया।
“देखिए साहब, इस तरह का कारोबार हमारे बस की बात नहीं है,” बूढ़े आदमी ने कहा।
धीरे-धीरे। “वहाँ अदालत है, और वकील हैं—यह तो पूरी तरह से मुसीबत है। लेकिन अगर आप चाहें, तो यहाँ एक आदमी है जिससे आप संपर्क कर सकते हैं।”
“हे भगवान! ये कौन है? तुम ही तो मेरे उद्धारक हो, कुज़्मा कुज़्मिच!”
मित्या लड़खड़ा गया।
“वह यहाँ नहीं रहता, और अभी यहाँ नहीं है। वह एक किसान है।”
ल्यागावी लकड़ी का व्यापार करता है। उसका नाम ल्यागावी है। वह पिछले एक साल से चेरमाश्न्या स्थित आपके जंगल को लेकर फ्योदोर पावलोविच से मोलभाव कर रहा है। कीमत पर सहमति नहीं बन पा रही है, शायद आपने सुना होगा? अब वह फिर से आया है और वोलोव्या स्टेशन से लगभग बारह वर्स्ट दूर इल्यिंस्कोए में पुजारी के साथ ठहरा है। उसने मुझे भी जंगल के सौदे के बारे में पत्र लिखा था और मेरी सलाह मांगी थी।

फ्योदोर पावलोविच खुद उससे मिलने जाना चाहते हैं। इसलिए यदि आप फ्योदोर पावलोविच से पहले ही बात कर लें और ल्यागावी को वही प्रस्ताव दें जो आपने मुझे दिया है, तो शायद वह मान जाए।
“शानदार विचार!” मित्या ने उत्साह से बीच में ही कहा। “वह बिल्कुल सही आदमी है,
यह उसके लिए बिल्कुल सही रहेगा। वह इसके लिए उससे मोलभाव कर रहा है, उससे बहुत ज्यादा मांग की जा रही है, और यहाँ उसके पास संपत्ति पर अपना अधिकार साबित करने वाले सभी दस्तावेज होंगे। हा हा हा!
और मित्या अचानक अपनी छोटी, बनावटी हंसी हंसने लगा, जिससे सब चौंक गए।
सैमसनोव।
“कुज़्मा कुज़्मिच, मैं आपका शुक्रिया कैसे अदा करूँ?” मित्या ने भावुक होकर कहा। “कोई बात नहीं,” सैमसनोव ने सिर झुकाते हुए कहा। “लेकिन आप नहीं जानते, आपने मेरी जान बचाई है। ओह, यह सचमुच एक पूर्वसूचना थी।”
आप ही मुझे यहाँ लाए हैं... तो अब इस पादरी के पास चलते हैं!
"धन्यवाद की कोई आवश्यकता नहीं है।"
मैं जल्दी से वहां उड़कर जाऊंगा। मुझे डर है कि मैंने आपकी ताकत का बहुत ज्यादा इस्तेमाल कर लिया है। मैं इसे कभी नहीं भूलूंगा। यह एक रूसी कहता है, कुज़्मा कुज़्मिच, एक रूसी!
"सुनिश्चित होना!"
मित्या ने उसका हाथ पकड़कर दबाने की कोशिश की, लेकिन उसकी आँखों में एक द्वेषपूर्ण चमक थी। बूढ़े आदमी की आँख। मित्या ने अपना हाथ पीछे खींच लिया, लेकिन तुरंत ही अपने अविश्वास के लिए खुद को दोषी ठहराया।
"ऐसा इसलिए है क्योंकि वह थका हुआ है," उसने सोचा।
“उसके लिए! उसके लिए, कुज़्मा कुज़्मिच! तुम समझते हो कि यह
“उसके लिए,” वह चिल्लाया, उसकी आवाज़ कमरे में गूंज उठी। उसने झुककर प्रणाम किया, तेज़ी से मुड़ा और बिना पीछे देखे उसी लंबे कदमों से दरवाजे की ओर चल दिया। वह खुशी से कांप रहा था।
"सब कुछ बर्बाद होने की कगार पर था और मेरे रक्षक देवदूत ने मुझे बचा लिया।"
उसके मन में यही विचार चल रहा था। और अगर सैमसनोव जैसा व्यापारी (एक अत्यंत सम्मानित और गरिमापूर्ण बुजुर्ग!) ने यह सुझाव दिया है, तो... सफलता निश्चित है। वह तुरंत उड़ान भरेगा। "मैं रात से पहले लौट आऊंगा, रात तक लौट आऊंगा और काम हो जाएगा। क्या वह बुजुर्ग मुझ पर हंस रहे थे?" मित्या ने अपने कमरे की ओर बढ़ते हुए कहा। वह यही सोच सकता था कि व्यापार की समझ रखने वाले, ल्यगावी (अजीब उपनाम!) को समझने वाले "ऐसे व्यापारी" की सलाह व्यावहारिक ही होगी। या फिर—वह बुजुर्ग उस पर हंस रहे थे।
अफसोस! दूसरा विकल्प ही सही था। बहुत समय बाद, जब
विपत्ति आ चुकी थी, बूढ़े सैमसनोव ने खुद हंसते हुए कबूल किया कि उसने "कप्तान" को मूर्ख बना दिया था। वह एक निर्मम, द्वेषपूर्ण और व्यंग्यपूर्ण व्यक्ति था, जो हिंसक शत्रुता के लिए प्रवण था। चाहे वह "कप्तान" का उत्तेजित चेहरा हो, या उस "अय्याश और फिजूलखर्च" का मूर्खतापूर्ण विश्वास कि सैमसनोव उसकी मनगढ़ंत कहानी पर विश्वास कर लेगा, या ग्रुशेंका से उसकी ईर्ष्या, जिसके नाम पर इस "बदमाश" ने उससे पैसे मांगने के लिए ऐसी कहानी गढ़ी थी—बूढ़े पर किस बात का असर हुआ, यह मैं नहीं कह सकता। लेकिन जिस क्षण मित्या उसके सामने खड़ा हुआ, अपने पैरों को कमजोर महसूस करते हुए और पागलों की तरह चिल्लाते हुए कि वह बर्बाद हो गया है, उसी क्षण बूढ़े ने उसे तीव्र द्वेष से देखा और उसे हंसी का पात्र बनाने का निश्चय कर लिया। जब मित्या चला गया, तो कुज़्मा कुज़्मिच गुस्से से लाल हो उठा और अपने बेटे की ओर मुड़ा और उसे आदेश दिया कि वह यह सुनिश्चित करे कि वह भिखारी फिर कभी दिखाई न दे, और उसे कभी भी घर के आंगन में भी प्रवेश न करने दिया जाए, अन्यथा वह—
उसने अपनी धमकी को ज़ुबान से नहीं कहा। लेकिन उसका बेटा भी, जो अक्सर उससे मिलता था, इस बात से सहमत था।
क्रोधित होकर वह भय से कांपने लगा। उसके बाद पूरे एक घंटे तक वह बूढ़ा व्यक्ति क्रोध से कांपता रहा, और शाम तक उसकी हालत और बिगड़ गई, इसलिए उसने डॉक्टर को बुलवाया।

अध्याय दो

ल्यागावी

इसलिए उसे पूरी रफ्तार से गाड़ी चलानी पड़ी, और उसके पास घोड़ों के लिए पैसे नहीं थे। उसके पास चालीस कोपेक थे, बस इतना ही, इतने सालों की समृद्धि के बाद यही बचा था! लेकिन उसके घर में एक पुरानी चांदी की घड़ी थी जो काफी समय से खराब पड़ी थी। उसने उसे उठाया और बाज़ार में दुकान चलाने वाले एक यहूदी घड़ीसाज़ के पास ले गया। यहूदी ने उसे इसके लिए छह रूबल दिए।
“और मुझे इसकी उम्मीद नहीं थी,” मित्या ने उत्साह से चिल्लाते हुए कहा। (वह अभी भी एक (अत्यंत प्रसन्नता की अवस्था में।) उसने अपने छह रूबल उठाए और घर की ओर भागा। घर पहुँचकर उसने घरवालों से तीन रूबल उधार लिए, जो उससे इतना प्यार करते थे कि उन्होंने उसे खुशी-खुशी दे दिए, हालाँकि उनके पास बस इतना ही था। मित्या ने उत्तेजना में आकर उन्हें वहीं बताया कि उसी दिन उसके भाग्य का फैसला होगा, और उसने बड़ी जल्दबाजी में सैमसनोव के सामने रखी अपनी पूरी योजना, सैमसनोव का फैसला, भविष्य के लिए अपनी आशाएँ, आदि सब कुछ बताया। इन लोगों को पहले भी अपने किराएदार के कई रहस्य पता थे, इसलिए वे उसे एक ऐसे सज्जन के रूप में देखते थे जो बिल्कुल भी घमंडी नहीं था, और लगभग अपने जैसा ही था। इस प्रकार नौ रूबल इकट्ठा करने के बाद मित्या ने उसे वोलोव्या स्टेशन ले जाने के लिए डाक-घोड़ों को बुलवाया। इस तरह यह बात याद रखी गई और स्थापित हुई कि "घटना से एक दिन पहले दोपहर में, मित्या के पास एक पैसा भी नहीं था, और उसने पैसे जुटाने के लिए अपनी घड़ी बेच दी थी और गवाहों की उपस्थिति में अपने मकान मालिक से तीन रूबल उधार लिए थे।"
मैं इस तथ्य को नोट करता हूँ, बाद में यह स्पष्ट हो जाएगा कि मैं ऐसा क्यों करता हूँ। हालाँकि वह इस आनंदमय आशा से प्रज्वलित था कि अंततः वह ऐसा कर पाएगा।
अपनी सारी मुश्किलें हल करने के बावजूद, वोलोव्या स्टेशन के पास पहुँचते ही, उसे इस बात का डर सताने लगा कि उसकी गैरमौजूदगी में ग्रुशेंका क्या कर रही होगी। क्या पता आज ही उसने फ्योदोर पावलोविच के पास जाने का फैसला कर लिया हो? इसीलिए वह उसे बिना बताए चला गया था और इसीलिए उसने मकान मालकिन को हिदायत दी थी कि अगर कोई उसके बारे में पूछताछ करने आए तो उसे उसके जाने की जगह न बताए।
“मुझे आज रात ही वापस जाना होगा,” उसने झटके खाते हुए दोहराया।
"और मुझे लगता है कि मुझे इस ल्यगावी को वापस यहाँ लाना होगा... समझौता तैयार करने के लिए।"
धड़कते दिल से मित्या ने ऐसा सोचा, लेकिन अफसोस! उसके सपने पूरे होने के लिए नहीं थे।
सबसे पहले तो, वह वोलोव्या स्टेशन से शॉर्टकट लेने के कारण देर से पहुंचा था।
जो बारह वर्स्ट के बजाय अठारह वर्स्ट निकला। दूसरी बात, उसे इलिंस्कोए में पुजारी घर पर नहीं मिला; वह पास के एक गाँव में चला गया था। जब मित्या उन्हीं थके हुए घोड़ों के साथ उसकी तलाश में वहाँ गया, तब तक लगभग अंधेरा हो चुका था।
शर्मीले और मिलनसार दिखने वाले छोटे कद के पुजारी ने तुरंत उसे सूचित कर दिया।
हालांकि ल्यागवी पहले उसके साथ रह रहा था, लेकिन अब वह सुहोय पोस्योलोक में था, और वनपाल की कुटिया में रात बिता रहा था, क्योंकि वह वहाँ से लकड़ी भी खरीद रहा था। मित्या के बार-बार अनुरोध पर कि वह उसे तुरंत ल्यागवी के पास ले जाए, और इस तरह उसे "बचा ले", पुजारी कुछ हिचकिचाहट के बाद उसे सुहोय पोस्योलोक ले जाने के लिए सहमत हो गया; जाहिर है, उसकी जिज्ञासा बढ़ गई थी। लेकिन, दुर्भाग्य से, उसने पैदल चलने की सलाह दी, क्योंकि यह एक वर्स्ट से "ज़्यादा दूर" नहीं होगा। मित्या, बेशक, मान गया, और अपने लंबे-लंबे कदमों से चल पड़ा, जिससे बेचारा पुजारी लगभग उसके पीछे दौड़ पड़ा। वह बहुत सतर्क व्यक्ति था, हालांकि बूढ़ा नहीं था।
मित्या ने भी घबराते हुए और तुरंत ही अपनी योजनाओं के बारे में उससे बात करना शुरू कर दिया।
मित्या ल्यगावी के बारे में उत्साहपूर्वक सलाह मांग रहा था और लगातार बातें करता जा रहा था। पुजारी ध्यान से सुन रहा था, लेकिन उसने कोई खास सलाह नहीं दी। वह मित्या के सवालों को यह कहकर टाल देता था:

"मुझे नहीं पता। आह, मैं कुछ कह नहीं सकता। मैं कैसे बता सकता हूँ?" इत्यादि। जब मित्या ने अपने पिता के साथ विरासत को लेकर हुए झगड़े के बारे में बताना शुरू किया, तो पुजारी सचमुच चिंतित हो गया, क्योंकि वह किसी न किसी तरह फ्योदोर पावलोविच पर निर्भर था। हालांकि, उसने आश्चर्य से पूछा कि वह किसान-व्यापारी गोरस्टकिन को ल्यगावी क्यों कहता है, और मित्या को विनम्रतापूर्वक समझाया कि यद्यपि उस व्यक्ति का असली नाम ल्यगावी था, उसे कभी इस नाम से नहीं पुकारा जाता था, क्योंकि वह इस नाम से बहुत आहत होगा, और उसे उसे गोरस्टकिन ही पुकारना चाहिए, "वरना तुम उससे कुछ नहीं कर पाओगे; वह तुम्हारी बात भी नहीं सुनेगा," पुजारी ने अंत में कहा।
मित्या एक पल के लिए थोड़ा हैरान हुआ और उसने समझाया कि
सैमसनोव ने उसे यही नाम दिया था। यह सुनकर पुजारी ने बात वहीं खत्म कर दी, हालांकि उसे अपने संदेह को शब्दों में व्यक्त करना चाहिए था कि क्या सैमसनोव ने उसे ल्यगावी कहकर उस किसान के पास भेजा था, और कहीं वह उसका मज़ाक तो नहीं उड़ा रहा था। लेकिन मित्या के पास ऐसी छोटी-मोटी बातों पर सोचने का समय नहीं था। वह जल्दी से आगे बढ़ा और जब वह सुहोय पोस्सियोलोक पहुँचा, तब उसे एहसास हुआ कि वे एक वर्स्ट नहीं, डेढ़ वर्स्ट नहीं, बल्कि कम से कम तीन वर्स्ट चल चुके हैं। इससे उसे गुस्सा आया, लेकिन उसने खुद को संभाला।
वे झोपड़ी में दाखिल हुए। वनपाल झोपड़ी के एक हिस्से में रहता था, और गोरस्टकिन दूसरे हिस्से में, गलियारे के दूसरी ओर बने बेहतर कमरे में ठहरा हुआ था। वे उस कमरे में गए और एक मोमबत्ती जलाई। झोपड़ी बेहद गर्म थी। मेज पर एक बुझा हुआ समोवर, प्यालों से भरी एक ट्रे, रम की एक खाली बोतल, आधी भरी वोदका की एक बोतल और गेहूं की रोटी के कुछ आधे खाए हुए टुकड़े पड़े थे। आगंतुक खुद बेंच पर पूरी लंबाई में लेटा हुआ था, अपने कोट को तकिए की तरह सिर के नीचे दबाकर ज़ोर-ज़ोर से खर्राटे ले रहा था। मित्या असमंजस में खड़ा था।
“बेशक मुझे उसे जगाना ही होगा। मेरा काम बहुत ज़रूरी है। मैं अंदर आ गया हूँ।”
“इतनी जल्दी! मुझे आज ही वापस जाना है,” उसने बड़ी घबराहट में कहा। लेकिन पुजारी और वनपाल चुपचाप खड़े रहे, उन्होंने कोई राय नहीं दी। मित्या ऊपर गया और उसे जगाने की कोशिश करने लगा; उसने बहुत कोशिश की, लेकिन सो रहा व्यक्ति नहीं जागा।
“वो नशे में है,” मित्या ने फैसला किया। “हे भगवान! मैं क्या करूँ? मैं क्या करूँ?”
क्या करें?” और, बेहद अधीर होकर, वह उसे बांहों और टांगों से खींचने लगा, उसका सिर हिलाने लगा, उसे उठाकर बेंच पर बिठाने लगा। फिर भी, लंबे प्रयासों के बाद भी, वह नशे में धुत व्यक्ति से केवल बेतुकी आवाज़ें और हिंसक, लेकिन अस्पष्ट गालियाँ ही निकलवा सका।
“नहीं, आपको थोड़ा इंतजार करना होगा,” पुजारी ने अंत में कहा, “क्योंकि वह...”
स्पष्ट रूप से स्वस्थ अवस्था में नहीं हैं।
“वह पूरे दिन शराब पीता रहा है,” वनपाल ने कहा। “हे भगवान!” मित्या चिल्लाया। “काश आपको पता होता कि यह कितना महत्वपूर्ण है कि
मैं और मेरी बेबसी!
“नहीं, सुबह तक इंतज़ार करना बेहतर होगा,” पुजारी ने दोहराया। “सुबह तक? हे भगवान! यह तो नामुमकिन है!”
और अपनी निराशा में वह सोए हुए आदमी पर हमला करने ही वाला था।
फिर से प्रयास किया, लेकिन व्यर्थ प्रयास का अहसास होते ही तुरंत रुक गया। पुजारी ने कुछ नहीं कहा, नींद में डूबा वनपाल उदास दिख रहा था।
"वास्तविक जीवन लोगों के लिए कितनी भयानक त्रासदियाँ रचता है," मित्या ने कहा।
घोर निराशा। उसके चेहरे से पसीना बह रहा था। पुजारी ने मौके का फायदा उठाते हुए बड़ी तर्कसंगतता से उसे समझाया कि अगर वह उसे जगाने में कामयाब भी हो जाए, तो भी वह नशे में होगा और बात करने में असमर्थ होगा। “और आपका काम ज़रूरी है,” उसने कहा, “इसलिए बेहतर होगा कि आप इसे सुबह तक टाल दें।” निराशा भरे भाव से मित्या मान गया।
“पिताजी, मैं यहाँ एक दीपक लेकर रहूँगा और अनुकूल क्षण का लाभ उठाऊँगा।”

जैसे ही वह जागेगा, मैं शुरू कर दूंगा। मैं आपको रोशनी के लिए भुगतान कर दूंगा," उसने वनपाल से कहा, "रात के ठहरने के लिए भी; आपको दिमित्री करामाज़ोव याद रहेगा। बस, पिताजी, मुझे नहीं पता कि हम आपके साथ क्या करें। आप कहाँ सोएंगे?"
"नहीं, मैं घर जा रहा हूँ। मैं उसका घोड़ा लेकर घर पहुँच जाऊँगा," उसने कहा।
वनपाल की ओर इशारा करते हुए, "और अब मैं आपसे विदा लेता हूँ। मैं आप सभी की सफलता की कामना करता हूँ।"
तो बात तय हो गई। पुजारी वनपाल के घोड़े पर सवार होकर प्रसन्नतापूर्वक रवाना हो गया।
हालांकि वह बेचैनी से अपना सिर हिलाते हुए भाग निकला, यह सोचते हुए कि क्या उसे अगले दिन अपने संरक्षक फ्योदोर पावलोविच को इस विचित्र घटना के बारे में सूचित नहीं करना चाहिए, "वरना वह किसी अशुभ घड़ी में इसके बारे में सुनकर क्रोधित हो सकते हैं और अपना समर्थन वापस ले सकते हैं।"
वनपाल खुजली करते हुए बिना कुछ कहे अपने कमरे में लौट गया।
और मित्या, जैसा कि उसने कहा, "अनुकूल क्षण की प्रतीक्षा" करने के लिए बेंच पर बैठ गया। उसके मन पर गहरे अंधकार का घना साया छाया हुआ था। एक गहरा, तीव्र अंधकार! वह सोचता रहा, पर किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुँच सका। मोमबत्ती धीमी जल रही थी, एक झिंगुर चहचहा रहा था; कमरे की अत्यधिक गर्मी असहनीय हो गई थी। अचानक उसे बगीचा, बगीचे के पीछे का रास्ता, अपने पिता के घर का दरवाजा रहस्यमय तरीके से खुलता हुआ और ग्रुशेंका का अंदर भागना दिखाई दिया। वह बेंच से उछल पड़ा।
"यह तो एक त्रासदी है!" उसने दांत पीसते हुए कहा। वह बिना किसी भावना के ऊपर चला गया।
मित्या ने सोए हुए व्यक्ति को देखा और उसके चेहरे की ओर गौर किया। वह दुबला-पतला, अधेड़ उम्र का किसान था, जिसका चेहरा लंबा था, सुनहरे घुंघराले बाल थे और लंबी, पतली, लाल रंग की दाढ़ी थी। उसने नीली सूती कमीज और काली जैकेट पहनी हुई थी, जिसकी जेब से चांदी की घड़ी की चेन झाँक रही थी।
मित्या ने घृणा से उसके चेहरे को देखा, और किसी अज्ञात कारण से उसके घुंघराले बाल उसे विशेष रूप से परेशान कर रहे थे।
सबसे शर्मनाक बात यह थी कि ऐसी चीजों को छोड़ने के बाद
इतनी अहमियत और इतने बलिदान देने के बावजूद, पूरी तरह से थका हुआ मित्या, इतने जरूरी काम के साथ उस मूर्ख के ऊपर खड़ा था जिस पर उसका पूरा भाग्य निर्भर था, जबकि वह ऐसे खर्राटे ले रहा था मानो कुछ हुआ ही न हो, मानो वह किसी दूसरे ग्रह से आया हो।
"किस्मत का कितना अजीब खेल है!" मित्या चिल्लाया और अपना आपा खोकर गिर पड़ा।
फिर उसने नशे में धुत किसान को जगाने की कोशिश की। उसने उसे बड़ी क्रूरता से जगाया, खींचा, धक्का दिया, यहाँ तक कि पीटा भी; लेकिन पाँच मिनट के व्यर्थ प्रयासों के बाद, वह हताशा में अपनी बेंच पर लौट आया और बैठ गया।
"बेवकूफी! बेवकूफी!" मित्या चिल्लाया। "और यह सब कितना शर्मनाक है!"
किसी बात ने उसे कुछ और कहने पर मजबूर कर दिया। उसका सिर बुरी तरह दुखने लगा। "क्या उसे सब कुछ भूलकर चले जाना चाहिए?" उसने सोचा। "नहीं, कल तक रुको। मैं जानबूझकर यहीं रुकूंगा। आखिर आया क्या था? वैसे भी, मेरे पास जाने का कोई साधन नहीं है। अब मैं यहाँ से कैसे जाऊँगा? धिक्कार है इस सब पर!"
लेकिन उसके सिर का दर्द बढ़ता ही जा रहा था। वह बिना हिले-डुले बैठा रहा, और
वह अनजाने में ही ऊंघ गया और बैठे-बैठे सो गया। ऐसा लग रहा था जैसे वह दो घंटे या उससे अधिक सोया हो। उसका सिर इतना असहनीय दर्द कर रहा था कि वह चीखने ही वाला था, तभी उसकी नींद खुली। उसकी कनपटी में तेज दर्द हो रहा था और सिर के ऊपरी हिस्से में भी तेज दर्द था। काफी देर बाद वह पूरी तरह से होश में आया और समझ पाया कि उसके साथ क्या हुआ था।
अंततः उसे एहसास हुआ कि कमरा कोयले के धुएं से भरा हुआ था।
चूल्हा जल रहा था और उसे घुटन से मरने का डर था। शराबी किसान अभी भी खर्राटे ले रहा था। मोमबत्ती बुझने ही वाली थी। मित्या चिल्लाया और लड़खड़ाते हुए गलियारे से होते हुए वनपाल के कमरे में भागा।
वनपाल तुरंत जाग गया, लेकिन यह सुनकर कि दूसरा कमरा धुएं से भरा हुआ है, मित्या को आश्चर्य और

झुंझलाहट हुई, उसने इस बात को अजीब उदासीनता से स्वीकार कर लिया, हालांकि वह सफाई करने चला गया।
“लेकिन वो तो मर गया! वो मर गया! और... फिर मैं क्या करूँ?” मित्या रोते हुए बोला।
बेतहाशा।
उन्होंने दरवाजे खोल दिए, खिड़की खोल दी और चिमनी भी खोल दी। मित्या
वह गलियारे से पानी की बाल्टी लाया। पहले उसने अपना सिर गीला किया, फिर किसी तरह का एक कपड़ा ढूंढकर उसे पानी में डुबोया और ल्यागवी के सिर पर डाल दिया। वनपाल ने फिर भी इस मामले को तिरस्कारपूर्ण ढंग से लिया और खिड़की खोलते हुए चिढ़कर कहा:
अब सब ठीक हो जाएगा।
वह मित्या के लिए जलती हुई लालटेन छोड़कर वापस सो गया। मित्या परेशान हो गया।
आधे घंटे तक नशे में धुत किसान के बारे में सोचता रहा, उसका सिर गीला करता रहा और उसने ठान लिया कि वह पूरी रात नहीं सोएगा। लेकिन वह इतना थका हुआ था कि जब वह सांस लेने के लिए एक पल के लिए बैठा, तो उसने अपनी आँखें बंद कर लीं, अनजाने में ही बेंच पर पूरी तरह लेट गया और मुर्दे की तरह सो गया।
जब वह जागा तो बहुत देर हो चुकी थी। लगभग नौ बज रहे थे।
समय हो रहा था। झोपड़ी की दो छोटी खिड़कियों से सूरज की तेज़ रोशनी अंदर आ रही थी। घुंघराले बालों वाला किसान बेंच पर बैठा था और उसने अपना कोट पहना हुआ था। उसके सामने एक और समोवर और एक और बोतल रखी थी। कल वाली बोतल खत्म हो चुकी थी और नई वाली आधी से ज़्यादा खाली थी। मित्या उछल पड़ा और उसने तुरंत देखा कि वह मनहूस किसान फिर से बुरी तरह नशे में धुत था, बुरी तरह और जिसका इलाज संभव नहीं था। उसने एक पल के लिए आँखें फाड़कर उसे घूरा। किसान चुपचाप और चालाकी से उसे देख रहा था, अपमानजनक शांति के साथ, और यहाँ तक कि एक तरह की तिरस्कारपूर्ण हेकड़ी के साथ, जैसा कि मित्या को लगा। वह दौड़कर उसके पास गया।
क्षमा कीजिए, देखिए... मैंने... आपने शायद वनपाल से सुना होगा।
मैं यहीं झोपड़ी में हूँ। मैं लेफ्टिनेंट दिमित्री करामाज़ोव हूँ, उस बूढ़े करामाज़ोव का बेटा, जिसकी झोपड़ी आप खरीद रहे हैं।
“यह झूठ है!” किसान ने शांत और आत्मविश्वास से कहा। “झूठ? आप फ्योदोर पावलोविच को जानते हैं?”
“मैं तुम्हारे किसी फ्योदोर पावलोविच को नहीं जानता,” किसान ने कहा।
अस्पष्ट रूप से बोलना।
“तुम उससे झाड़ियों के लिए, झाड़ियों के लिए सौदेबाजी कर रहे हो। जाग जाओ।”
और खुद को संभालो। इल्यिंस्कोए के फादर पावेल मुझे यहाँ लाए हैं। आपने सैमसनोव को पत्र लिखा था, और उन्होंने मुझे आपके पास भेजा है,” मित्या हांफते हुए बोला।
“तुम झूठ बोल रहे हो!” ल्यागवी फिर से भड़क उठी। मित्या के पैर ठंडे पड़ गए। “हे भगवान! ये कोई मज़ाक नहीं है! शायद तुम नशे में हो। फिर भी तुम...”
बोलो और समझो... वरना... मुझे कुछ समझ नहीं आएगा!
“तुम एक चित्रकार हो!”
“हे भगवान! मैं करामाज़ोव हूँ, दिमित्री करामाज़ोव। मेरे पास एक प्रस्ताव है।
मैं आपको एक लाभप्रद प्रस्ताव देना चाहता हूँ... एक बहुत ही लाभप्रद प्रस्ताव, उस झाड़ी के संबंध में!
किसान ने बड़े गर्व से अपनी दाढ़ी सहलाई।
नहीं, तुमने तो काम का ठेका लिया था और एक बदमाश को निकाल दिया। तुम एक
बदमाश!”
“मैं आपको यकीन दिलाता हूँ कि आप गलतफहमी में हैं,” मित्या ने हाथ मलते हुए कहा।
निराशा। किसान अब भी अपनी दाढ़ी सहला रहा था, और अचानक उसने चालाकी से अपनी आँखें सिकोड़ लीं।
नहीं, आप मुझे यह दिखाइए: आप मुझे वह कानून बताइए जो गुंडागर्दी की अनुमति देता है। क्या आप सुना? तुम बदमाश हो! क्या तुम्हें यह समझ आया?
मित्या उदास होकर पीछे हट गया, और अचानक "जैसे किसी चीज़ ने उसे झकझोर दिया हो।"

"उसके सिर पर," जैसा कि उसने बाद में कहा। पल भर में उसके दिमाग में एक रोशनी कौंध गई, "एक प्रकाश प्रज्वलित हुआ और मुझे सब समझ आ गया।" वह स्तब्ध खड़ा था, सोच रहा था कि आखिर वह, एक बुद्धिमान व्यक्ति, ऐसी मूर्खता में कैसे पड़ गया, ऐसे दुस्साहस में कैसे बह गया, और लगभग चौबीस घंटे तक उस ल्यगावी के पीछे भागता रहा, उसका सिर गीला करता रहा।
"अरे, वो आदमी तो नशे में धुत है, बुरी तरह नशे में है, और अब वो थोड़ी देर और पीता रहेगा।"
एक हफ़्ता हो गया; यहाँ इंतज़ार करने का क्या फ़ायदा? और अगर सैमसनोव ने मुझे जानबूझकर यहाँ भेजा हो तो? अगर वो खुद हो तो? . . . हे भगवान, मैंने क्या कर दिया?
किसान उसे देखता हुआ मुस्कुरा रहा था। अगली बार मित्या शायद...
उसने गुस्से में आकर उस मूर्ख को मार डाला होता, लेकिन अब वह एक बच्चे की तरह कमजोर महसूस कर रहा था। वह चुपचाप बेंच पर गया, अपना ओवरकोट उठाया, बिना कुछ कहे उसे पहना और झोपड़ी से बाहर निकल गया। उसे अगले कमरे में वनपाल नहीं मिला; वहाँ कोई नहीं था। उसने अपनी जेब से पचास कोपेक निकाले और रात के ठहरने, मोमबत्ती और अपनी परेशानी के लिए मेज पर रख दिए। झोपड़ी से बाहर निकलते ही उसे चारों ओर केवल जंगल ही जंगल दिखाई दिया। वह बेखबर चल रहा था, उसे नहीं पता था कि झोपड़ी से किस तरफ मुड़ना है, दाएँ या बाएँ। पिछली शाम पुजारी के साथ जल्दी में आते समय उसने सड़क पर ध्यान नहीं दिया था। उसके दिल में किसी के लिए, यहाँ तक कि सैमसनोव के लिए भी, कोई बदले की भावना नहीं थी। वह एक संकरे जंगल के रास्ते पर बेतरतीब, अचेतन अवस्था में, बिना यह देखे कि वह कहाँ जा रहा है, चलता रहा। एक बच्चा भी उसे गिरा सकता था, वह शरीर और मन से इतना कमजोर था। हालांकि, वह किसी तरह जंगल से बाहर निकल आया, और फसल कटाई के बाद खाली पड़े खेतों का एक विशाल दृश्य दूर-दूर तक फैला हुआ था।
“कितनी निराशा! चारों ओर मौत ही मौत!” वह लगातार आगे बढ़ते हुए यही दोहराता रहा। तभी उसकी जान बच गई जब उसकी मुलाकात एक बूढ़े व्यापारी से हुई जिसे गाड़ी से पार ले जाया जा रहा था।
एक किराए की गाड़ी में सवार होकर मित्या वोलोव्या जा रहा था। जब मित्या ने उसे पकड़ लिया, तो उसने रास्ता पूछा और पता चला कि वह बूढ़ा व्यापारी भी वोलोव्या जा रहा था। कुछ बातचीत के बाद मित्या गाड़ी में बैठ गया। तीन घंटे बाद वे वोलोव्या पहुँचे। वोलोव्या पहुँचकर मित्या ने तुरंत घोड़ों को शहर की ओर जाने का आदेश दिया और अचानक उसे एहसास हुआ कि उसे बहुत भूख लगी है। जब घोड़ों को जोता जा रहा था, उसके लिए एक आमलेट तैयार किया गया। उसने उसे झटपट खा लिया, रोटी का एक बड़ा टुकड़ा खाया, एक सॉसेज खाया और तीन गिलास वोदका पी ली। खाने के बाद उसका मन हल्का हो गया। वह शहर की ओर भागा, ड्राइवर को आगे बढ़ने के लिए उकसाया और अचानक शाम से पहले उस "मनहूस पैसे" को हासिल करने की एक नई और "अटूट" योजना बना ली। "सोचो, सिर्फ सोचो कि उस मामूली तीन हजार के लिए किसी आदमी की जिंदगी बर्बाद हो जाए!" वह तिरस्कार से चिल्लाया। "मैं इसे आज ही निपटा दूंगा।"
और अगर ग्रुशेंका और उसके साथ क्या हो सकता था, इस बात का ख्याल उसके मन से कभी न निकलता, तो शायद वह फिर से काफी खुश हो जाता... लेकिन उसका ख्याल हर पल उसके दिल में तेज चाकू की तरह चुभ रहा था।
अंततः वे पहुँच गए, और मित्या तुरंत ग्रुशेंका की ओर दौड़ा।

अध्याय 3

सोने की खदानें

यह वही मित्या का आगमन था जिसके बारे में ग्रुशेंका ने रकितिन से इतनी दहशत के साथ बात की थी। वह उस समय "संदेश" की प्रतीक्षा कर रही थी और इस बात से बहुत राहत महसूस कर रही थी कि मित्या उस दिन या उससे पहले वाले दिन उससे मिलने नहीं आया था। उसने आशा की थी कि "भगवान करे वह मेरे जाने से पहले न आए," और तभी वह अचानक उसके कमरे में घुस आया। बाकी की कहानी तो हम पहले से ही जानते हैं। उससे पीछा छुड़ाने के लिए उसने तुरंत सुझाव दिया कि वह उसके साथ सैमसनोव के घर चले, जहाँ उसने कहा कि उसे "उसके हिसाब-किताब निपटाने" के लिए जाना ही होगा। जब मित्या तुरंत उसके साथ चला, तो उसने द्वार पर ही उसे अलविदा कहा और उससे वादा लिया कि वह उसे वापस घर ले जाने के लिए बारह बजे आएगा। मित्या भी इस व्यवस्था से बहुत खुश हुआ। अगर वह सैमसनोव के घर बैठी है तो वह फ्योदोर पावलोविच के घर नहीं जा सकती, "अगर वह झूठ नहीं बोल रही है," उसने तुरंत कहा। लेकिन उसने जो देखा उससे उसे लगा कि वह झूठ नहीं बोल रही है।
वह उस तरह का ईर्ष्यालु व्यक्ति था जो अपनी प्रेमिका की अनुपस्थिति में भड़क उठता था।
वह स्त्री तुरंत ही अपने साथ होने वाली हर तरह की भयानक कल्पनाएँ गढ़ने लगती है, और सोचने लगती है कि वह उसे धोखा दे रही है, लेकिन जब वह हिल जाता है, उसका दिल टूट जाता है, और उसे उसकी बेवफाई का पूरा यकीन हो जाता है, तो वह उसके पास वापस दौड़ता है; उसके चेहरे की पहली झलक देखते ही, उसके हंसमुख, हंसमुख, स्नेही चेहरे को देखते ही, वह तुरंत पुनर्जीवित हो जाता है, सभी संदेहों को दूर कर देता है और खुशी से शर्मिंदा होकर अपनी ईर्ष्या के लिए खुद को कोसता है।
ग्रुशेंका को द्वार पर छोड़कर वह जल्दी से घर की ओर भागा। ओह, उसे बहुत कुछ याद आ रहा था।
उस दिन अभी बहुत कुछ करना बाकी था! लेकिन फिर भी, उसके दिल से एक बोझ उतर गया था।
अब मुझे जल्दी करनी होगी और स्मरद्याकोव से पता लगाना होगा कि क्या
"कल रात वहां कुछ हुआ था क्या, क्या वह गलती से फ्योदोर पावलोविच के पास गई थी; उफ़!" ये विचार उसके मन में गूंज रहे थे।
अपने ठहरने की जगह तक पहुँचने से पहले ही, ईर्ष्या फिर से भड़क उठी थी।
उसका बेचैन दिल।
ईर्ष्या! पुश्किन ने टिप्पणी की, "ओथेलो ईर्ष्यालु नहीं था, वह भरोसेमंद था।"
और यह टिप्पणी ही हमारे महान कवि की गहरी अंतर्दृष्टि को दर्शाने के लिए पर्याप्त है। ओथेलो की आत्मा चकनाचूर हो गई और उसका पूरा दृष्टिकोण अंधकारमय हो गया, क्योंकि उसका आदर्श चकनाचूर हो गया था। लेकिन ओथेलो ने छिपना, जासूसी करना या ताक-झांक करना शुरू नहीं किया। वह भरोसेमंद था। इसके विपरीत, उसे धोखे के विचार को स्वीकार करने से पहले बड़ी मुश्किल से उकसाया गया, प्रेरित किया गया और उत्तेजित किया गया। सच्चा ईर्ष्यालु व्यक्ति ऐसा नहीं होता। ईर्ष्यालु व्यक्ति जिस शर्म और नैतिक पतन तक गिर सकता है, उसकी कल्पना करना असंभव है, भले ही उसे अंतरात्मा की कोई झिझक न हो। फिर भी ऐसा नहीं है कि सभी ईर्ष्यालु लोग अशिष्ट और नीच आत्माएं हों। इसके विपरीत, उच्च भावनाओं वाला व्यक्ति, जिसका प्रेम शुद्ध और आत्म-बलिदान से भरा हो, वह भी मेजों के नीचे छिप सकता है, सबसे नीच लोगों को रिश्वत दे सकता है, और जासूसी और छिपकर बातें सुनने जैसी सबसे नीच हरकतों से परिचित हो सकता है।
ओथेलो बेवफाई का फैसला करने में असमर्थ था—नहीं
वह इसे माफ करने में असमर्थ था, लेकिन उसने इस पर मन बना लिया था—यद्यपि उसकी आत्मा एक शिशु की तरह निर्दोष और द्वेष रहित थी। लेकिन सच्चे ईर्ष्यालु पुरुष के साथ ऐसा नहीं होता। यह कल्पना करना कठिन है कि कुछ ईर्ष्यालु पुरुष क्या-क्या कर सकते हैं, क्या-क्या अनदेखा कर सकते हैं और क्या-क्या माफ कर सकते हैं! ईर्ष्यालु पुरुष सबसे जल्दी माफ कर देते हैं, और सभी महिलाएं यह जानती हैं। ईर्ष्यालु पुरुष असाधारण रूप से जल्दी माफ कर सकता है (हालांकि, निश्चित रूप से, एक हिंसक घटना के बाद), और वह

लगभग निर्णायक रूप से सिद्ध बेवफाई को भी माफ कर सकता है, यहां तक कि उन चुंबनों और आलिंगनों को भी जो उसने देखे हैं, बशर्ते उसे किसी तरह यह विश्वास दिलाया जा सके कि यह सब "आखिरी बार" हुआ है, और उसका प्रतिद्वंद्वी उस दिन से गायब हो जाएगा, पृथ्वी के छोर पर चला जाएगा, या वह स्वयं उसे कहीं दूर ले जाएगा, जहां वह खूंखार प्रतिद्वंद्वी उसके पास नहीं पहुंच पाएगा। बेशक, यह सुलह केवल एक घंटे के लिए होती है। क्योंकि, अगर प्रतिद्वंद्वी अगले दिन गायब भी हो जाए, तो वह एक और प्रतिद्वंद्वी बना लेगा और उससे ईर्ष्या करने लगेगा। और कोई सोच सकता है कि ऐसे प्रेम में क्या सच्चाई है जिसकी इतनी कड़ी निगरानी करनी पड़ती है, ऐसे प्रेम का क्या महत्व है जिसे इतनी सख्ती से सुरक्षित रखना पड़े। लेकिन ईर्ष्यालु लोग इसे कभी नहीं समझ पाएंगे। फिर भी उनमें नेक हृदय वाले लोग भी हैं। यह भी उल्लेखनीय है कि वही नेक हृदय वाले लोग, किसी कोठरी में छिपकर, छुपकर और जासूसी करते हुए, उस क्षण कभी अंतरात्मा की पीड़ा महसूस नहीं करते, हालांकि वे अपने "नेक हृदय" से यह अच्छी तरह समझते हैं कि वे स्वेच्छा से कितनी शर्मनाक गहराई में गिर गए हैं।
ग्रुशेंका को देखते ही मित्या की ईर्ष्या गायब हो गई, और एक पल के लिए
वह भरोसेमंद और उदार बन गया, और अपने बुरे विचारों के लिए खुद से घृणा करने लगा। लेकिन इससे केवल यही साबित हुआ कि उस स्त्री के प्रति उसके प्रेम में कुछ ऐसा था जो उसकी कल्पना से कहीं अधिक गहरा था, कि यह केवल एक कामुक जुनून नहीं था, केवल उसके शरीर की सुंदरता नहीं थी, जिसके बारे में उसने अलेयोशा से बात की थी। लेकिन जैसे ही ग्रुशेंका चली गई, मित्या को उस पर विश्वासघात की नीच चालों का संदेह होने लगा, और उसे इस बात का ज़रा भी पछतावा नहीं हुआ।
और इस तरह उसके मन में ईर्ष्या फिर से भड़क उठी। उसे किसी भी हालत में जल्दी करनी थी। सबसे पहले तो उसे कम से कम एक छोटा, अस्थायी ऋण लेना था। उसके नौ रूबल लगभग पूरे अभियान में खर्च हो चुके थे। और जैसा कि हम सब जानते हैं, बिना पैसे के कोई कदम नहीं उठाया जा सकता। लेकिन उसने गाड़ी में बैठकर सोचा कि उसे ऋण कहाँ से मिल सकता है। उसके पास एक बक्से में दो बेहतरीन द्वंद्वयुद्ध पिस्तौलें थीं, जिन्हें उसने अब तक गिरवी नहीं रखा था क्योंकि वह उन्हें अपनी सभी संपत्तियों से अधिक महत्व देता था।
"मेट्रोपोलिस" सराय में, जहाँ उनकी कुछ समय पहले ही जान-पहचान हुई थी।
एक युवा अधिकारी से मुलाकात के दौरान मित्या को पता चला कि यह धनी कुंवारा व्यक्ति हथियारों का बेहद शौकीन था। वह पिस्तौल, रिवॉल्वर और कटारें खरीदता, उन्हें अपनी दीवार पर टांगता और अपने परिचितों को दिखाता था। उसे इन हथियारों पर बहुत गर्व था और वह रिवॉल्वर की कार्यप्रणाली का विशेषज्ञ था। मित्या ने बिना सोचे-समझे सीधे उसके पास जाकर अपनी पिस्तौलें दस रूबल में गिरवी रखने का प्रस्ताव रखा। अधिकारी प्रसन्न हुआ और उसे पिस्तौलें सीधे बेचने के लिए मनाने लगा। लेकिन मित्या नहीं माना, इसलिए युवक ने उसे दस रूबल दे दिए और कहा कि वह ब्याज नहीं लेगा। वे दोस्त बनकर विदा हुए।
मित्या जल्दी में था; वह पीछे से फ्योदोर पावलोविच के घर की ओर दौड़ पड़ा।
वह अपने बगीचे की ओर गया, ताकि स्मरद्याकोव को जल्द से जल्द पकड़ सके। इस तरह यह बात सामने आई कि एक घटना से तीन-चार घंटे पहले, जिसके बारे में मैं आगे बात करूंगा, मित्या के पास एक पैसा भी नहीं था, और उसने अपनी कीमती संपत्ति दस रूबल में गिरवी रख दी थी, हालांकि तीन घंटे बाद उसके पास हजारों रूबल थे... लेकिन मैं अभी आगे की बात कर रहा हूं। मारिया कोंद्रत्येवना (फ्योदोर पावलोविच के घर के पास रहने वाली महिला) से उसे स्मरद्याकोव की बीमारी की बेहद परेशान करने वाली बात पता चली। उसने तहखाने में गिरने, दौरे पड़ने, डॉक्टर के आने, फ्योदोर पावलोविच की चिंता की कहानी सुनी; उसने यह भी दिलचस्पी से सुना कि उसका भाई इवान उसी सुबह मॉस्को के लिए रवाना हो गया था।
“तो फिर वह मुझसे पहले वोलोव्या से होकर गुजरा होगा,” मैंने सोचा।
दिमित्री तो ठीक था, लेकिन वह स्मरद्याकोव को लेकर बेहद चिंतित था। “अब क्या होगा? मेरी रक्षा कौन करेगा? मुझे खबर कौन देगा?” वह सोचने लगा। उसने महिलाओं से उत्सुकतापूर्वक पूछना शुरू किया कि क्या उन्होंने पिछली शाम कुछ देखा था। वे उसकी बात को अच्छी तरह समझ गईं और उसे पूरी तरह आश्वस्त कर दिया। वहाँ कोई नहीं था। इवान फ्योदोरोविच उस रात वहाँ था; सब कुछ बिल्कुल सामान्य था। मित्या सोचने लगा। उसे आज पहरा देना ही होगा, लेकिन कहाँ? यहाँ या सैमसनोव के द्वार पर? उसने फैसला किया कि उसे यहाँ और वहाँ दोनों जगह नज़र रखनी होगी, और इस बीच... इस बीच... मुश्किल यह थी कि उसे

वापसी यात्रा में बनाई गई अपनी नई योजना को पूरा करना था। उसे इसकी सफलता का पूरा भरोसा था, लेकिन उसे इस पर अमल करने में देरी नहीं करनी चाहिए। मित्या ने इसके लिए एक घंटा कुर्बान करने का निश्चय किया: “एक घंटे में मुझे सब कुछ पता चल जाएगा, मैं सब कुछ सुलझा लूंगा, और फिर, सबसे पहले सैमसनोव के यहाँ जाऊँगा। मैं पता लगाऊंगा कि ग्रुशेंका वहाँ है या नहीं और तुरंत वापस यहाँ आ जाऊंगा, ग्यारह बजे तक रुकूंगा, और फिर उसे घर लाने के लिए सैमसनोव के यहाँ दोबारा जाऊंगा।” उसने यही तय किया था।
वह घर वापस आया, नहाया, बाल संवारे, कपड़े साफ किए और तैयार हो गया।
और वह मैडम होहलाकोव के पास गया। अफसोस! उसने अपनी सारी उम्मीदें उन्हीं पर टिका रखी थीं। उसने उस महिला से तीन हज़ार उधार लेने का निश्चय किया था। और तो और, उसे अचानक यह विश्वास हो गया कि वह उसे उधार देने से इनकार नहीं करेंगी। यह आश्चर्य की बात हो सकती है कि अगर उसे इतना यकीन था, तो वह पहले उन्हीं के पास क्यों नहीं गया, जो उसके ही वर्ग की थीं, बल्कि सैमसनोव के पास गया, जिसे वह जानता भी नहीं था, जो उसके वर्ग का नहीं था, और जिससे बात करना भी उसे मुश्किल से आता था। लेकिन सच्चाई यह थी कि वह मैडम होहलाकोव को कभी अच्छी तरह से नहीं जानता था, और
पिछले एक महीने से उसका उससे कोई वास्ता नहीं था, और वह जानता था कि वह उसे बर्दाश्त नहीं कर सकती। वह शुरू से ही उससे नफरत करती थी क्योंकि उसकी सगाई कैटेरिना इवानोव्ना से हो चुकी थी, जबकि किसी कारणवश अचानक उसके मन में यह इच्छा जाग उठी थी कि कैटेरिना इवानोव्ना उसे छोड़ दे और "मनमोहक, शिष्ट और सभ्य इवान से शादी कर ले, जिसके शिष्टाचार बहुत अच्छे हैं।" मित्या के शिष्टाचार से उसे घृणा थी। मित्या उस पर खुलकर हंसता था, और एक बार उसके बारे में कहा था कि वह जितनी चंचल और सहज है, उतनी ही असभ्य भी है। लेकिन उस सुबह गाड़ी में उसके मन में एक शानदार विचार आया: "अगर वह इतनी चिंतित है कि मैं कैटेरिना इवानोव्ना से शादी न करूँ" (और वह जानता था कि इस विषय पर वह बहुत परेशान थी) "तो अब वह मुझे तीन हजार रुपये देने से क्यों मना करे, सिर्फ इसलिए कि मैं कैत्या को छोड़कर उससे हमेशा के लिए दूर हो जाऊँ। ये बिगड़ी हुई औरतें, अगर किसी चीज पर दिल लगा लें, तो अपनी सनक पूरी करने के लिए कोई कसर नहीं छोड़तीं। इसके अलावा, वह इतनी अमीर है," मित्या ने तर्क दिया।
जहां तक उसकी "योजना" की बात है, वह पहले जैसी ही थी; उसमें प्रस्ताव शामिल था।
मित्या ने चेरमाश्न्या पर अपने अधिकार का त्याग कर दिया—लेकिन व्यावसायिक उद्देश्य से नहीं, जैसा कि सैमसनोव के मामले में था, न ही छह या सात हज़ार के लाभ की संभावना से महिला को लुभाने की कोशिश में —बल्कि केवल ऋण की सुरक्षा के रूप में। जैसे-जैसे वह इस नए विचार पर काम कर रहा था, मित्या इससे मोहित होता गया, लेकिन ऐसा हमेशा उसके साथ उसके सभी उपक्रमों, उसके सभी अचानक निर्णयों में होता था। वह हर नए विचार को पूरे जोश के साथ अपनाता था। फिर भी, जब वह मैडम होहलाकोव के घर की सीढ़ियों पर चढ़ा, तो उसकी रीढ़ की हड्डी में डर की एक सिहरन दौड़ गई। उस क्षण उसने गणितीय निश्चितता के साथ पूरी तरह से देख लिया कि यही उसकी आखिरी उम्मीद है, कि अगर यह भी टूट गई, तो दुनिया में उसके पास तीन हज़ार के लिए किसी को लूटने और हत्या करने के अलावा और कुछ नहीं बचेगा। जब उसने घंटी बजाई तो साढ़े सात बज रहे थे।
शुरू में तो ऐसा लगा जैसे किस्मत उस पर मेहरबान हो। जैसे ही वह
जैसे ही उसने घोषणा की, उसका असाधारण शीघ्रता से स्वागत किया गया। "जैसे कि वह मेरा इंतज़ार कर रही हो," मित्या ने सोचा, और जैसे ही उसे ड्राइंग रूम में ले जाया गया, घर की मालकिन स्वयं अंदर दौड़ी आई और तुरंत घोषणा की कि वह उसका इंतज़ार कर रही थी।
मुझे तुम्हारा इंतज़ार था! मुझे तुम्हारा इंतज़ार था! हालाँकि मेरे पास कोई कारण नहीं था
मुझे लगा था कि आप मुझसे मिलने आएंगे, जैसा कि आप खुद भी मानेंगे। फिर भी, मुझे आपकी उम्मीद थी। दिमित्री फ्योदोरोविच, आप मेरी इस सहज प्रवृत्ति पर आश्चर्य कर सकते हैं, लेकिन मुझे पूरी सुबह से यकीन था कि आप आएंगे।
“यह तो वाकई बहुत बढ़िया है, महोदया,” मित्या ने बैठते हुए कहा।
बेजान स्वर में, "लेकिन मैं आपके पास एक अत्यंत महत्वपूर्ण मामले के लिए आया हूँ... मेरे लिए, यानी मेरे लिए, अत्यंत महत्वपूर्ण मामले के लिए... केवल मेरे लिए... और मुझे जल्दी है..."

“मुझे पता है कि आप बहुत महत्वपूर्ण काम से आए हैं, दिमित्री फ्योदोरोविच;
यह पूर्वाभास का मामला नहीं है, न ही चमत्कारों की ओर प्रतिक्रियावादी वापसी का (क्या आपने फादर ज़ोस्सिमा के बारे में सुना है?)। यह गणित का मामला है: कैटेरिना इवानोव्ना के साथ जो कुछ भी हुआ है, उसके बाद आप आने से बच नहीं सकते थे; आप नहीं बच सकते थे, आप नहीं बच सकते थे, यह गणितीय रूप से निश्चित है।
“महोदया, यह असल जिंदगी की वास्तविकता है। लेकिन मुझे अनुमति दीजिए...”
व्याख्या करना-"
“वास्तव में यथार्थवाद, दिमित्री फ्योदोरोविच। मैं अब पूरी तरह से यथार्थवाद का समर्थक हूँ।
आपने चमत्कारों को बहुत ज्यादा देख लिया है। आपने सुना है कि फादर ज़ोसिमा का निधन हो गया है?
“नहीं महोदया, मैंने इसके बारे में पहली बार सुना है।” मित्या थोड़ा
आश्चर्यचकित होकर, उसके मन में अलेयोशा की छवि उभर आई।
"कल रात, और ज़रा कल्पना कीजिए..."
“महोदया,” मित्या ने कहा, “मैं इसके अलावा और कुछ कल्पना नहीं कर सकता कि मैं एक
मैं बेहद मुश्किल स्थिति में हूँ, और अगर आप मेरी मदद नहीं करेंगे तो सब कुछ बर्बाद हो जाएगा, और सबसे पहले मैं। मेरे इस मामूली शब्द के लिए मुझे क्षमा करें, लेकिन मुझे बुखार है...
मुझे पता है, मुझे पता है कि तुम्हें बुखार है। ऐसा हो ही नहीं सकता कि तुम्हें बुखार न हो, और
आप मुझसे जो कुछ भी कहें, मुझे पहले से ही पता है। दिमित्री फ्योदोरोविच, मैं लंबे समय से आपके भाग्य के बारे में सोच रहा हूँ, मैं उस पर नज़र रख रहा हूँ और उसका अध्ययन कर रहा हूँ... यकीन मानिए, मैं आत्मा का एक अनुभवी चिकित्सक हूँ, दिमित्री फ्योदोरोविच।
“महोदया, यदि आप एक अनुभवी चिकित्सक हैं, तो मैं निश्चित रूप से एक अनुभवी रोगी हूँ,” मित्या ने विनम्रता का प्रयास करते हुए कहा, “और मुझे लगता है कि यदि आप इस प्रकार मेरे भाग्य पर नजर रख रही हैं, तो आप मेरी बर्बादी में मेरी सहायता करेंगी, इसलिए मुझे कम से कम आपको वह योजना समझाने की अनुमति दें जिसके साथ मैं आपके पास आने का साहस कर रहा हूँ... और मैं आपसे क्या आशा रखता हूँ... मैं आ गया हूँ, महोदया...”
“इसे समझाने की ज़रूरत नहीं है। यह गौण है। लेकिन जहाँ तक मदद की बात है, आप...”
दिमित्री फ्योदोरोविच, यह पहली बार नहीं है जब मैंने किसी की मदद की है। आपने मेरी चचेरी बहन, मैडम बेलमेसोव के बारे में तो सुना ही होगा। उनके पति बर्बाद हो गए थे, जैसा कि आप हमेशा कहते हैं, दिमित्री फ्योदोरोविच, उन्हें बहुत दुख झेलना पड़ा था। मैंने उन्हें घुड़सवारी करने की सलाह दी थी, और अब वे अच्छा कर रहे हैं। दिमित्री फ्योदोरोविच, क्या आपको घुड़सवारी के बारे में कुछ जानकारी है?
“बिल्कुल भी नहीं, महोदया; आह, महोदया, बिल्कुल भी नहीं!” मित्या चिल्लाया।
घबराहट और बेचैनी से, वह अपनी सीट से लगभग उठ खड़ा हुआ। “मैं आपसे बस यही विनती करता हूँ, महोदया, कृपया मेरी बात सुनिए। मुझे बोलने के लिए बस दो मिनट दीजिए ताकि मैं आपको सब कुछ समझा सकूँ, जिस योजना के साथ मैं आया हूँ। इसके अलावा, मेरे पास समय कम है। मैं बहुत जल्दी में हूँ,” मित्या हिस्टीरिया में चिल्लाया, उसे लग रहा था कि वह फिर से बोलना शुरू कर देगी, और वह उसे रोकना चाहता था। “मैं हताशा में आया हूँ... हताशा की आखिरी साँस लेते हुए, आपसे तीन हज़ार की राशि उधार देने की भीख माँगने आया हूँ, लेकिन पूरी तरह से सुरक्षित, सबसे सुरक्षित गारंटी के साथ, महोदया! बस मुझे समझाने दीजिए...”
“आपको ये सब मुझे बाद में, बाद में बताना होगा!” मैडम होहलाकोव
उन्होंने इशारे से चुप्पी साधने का आदेश देते हुए कहा, "और आप मुझे जो कुछ भी बताएं, मुझे पहले से ही सब पता है; मैं आपको पहले ही बता चुकी हूं। आप एक निश्चित राशि, तीन हजार मांग रहे हैं, लेकिन मैं आपको इससे कहीं अधिक दे सकती हूं, बेहिसाब अधिक, मैं आपको बचाऊंगी, दिमित्री फ्योदोरोविच, लेकिन आपको मेरी बात सुननी होगी।"
मित्या अपनी सीट से फिर से उठ खड़ा हुआ।
“महोदया, क्या आप सचमुच इतनी अच्छी होंगी!” उसने अत्यंत भावुक होकर कहा।

“हे भगवान, आपने मुझे बचा लिया! आपने एक व्यक्ति को हिंसक मौत से, गोली से बचा लिया... मैं आपका सदा आभारी रहूंगा...”
“मैं तुम्हें तीन हजार से भी कहीं अधिक दूंगा!” चिल्लाकर बोला।
मैडम होहलाकोव, मित्या के परमानंद को देखकर एक उज्ज्वल मुस्कान के साथ।
“अनंत? लेकिन मुझे इतनी ज़रूरत नहीं है। मुझे बस वो घातक तीन चाहिए।”
हजार, और मैं अपनी ओर से उस राशि की गारंटी असीम कृतज्ञता के साथ दे सकता हूँ, और मैं एक योजना प्रस्तावित करता हूँ जो...
“बस करो, दिमित्री फ्योदोरोविच, बात खत्म।” मैडम होहलाकोव
उन्होंने विनम्रतापूर्वक और परोपकार की भावना से उन्हें रोकते हुए कहा: “मैंने तुम्हें बचाने का वादा किया है, और मैं तुम्हें बचाऊंगा। मैं तुम्हें वैसे ही बचाऊंगा जैसे मैंने बेलमेसोव को बचाया था। दिमित्री फ्योदोरोविच, सोने की खानों के बारे में तुम्हारा क्या विचार है?”
“सोने की खानों के बारे में, महोदया? मैंने तो कभी इसके बारे में सोचा ही नहीं।”
उन्हें।"
लेकिन मैंने तुम्हारे लिए उनके बारे में सोचा है। बार-बार उनके बारे में सोचा है।
फिर से। मैं पिछले एक महीने से तुम्हें देख रहा हूँ। मैंने तुम्हें सौ बार गुजरते हुए देखा है और मन ही मन कहा है: यह तो ऊर्जा से भरपूर आदमी है जिसे सोने की खानों में होना चाहिए। मैंने तुम्हारी चाल का अध्ययन किया है और इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ: यही वह आदमी है जो सोना खोज लेगा।
“मेरी चाल से, महोदया?” मित्या ने मुस्कुराते हुए कहा। “जी हाँ, आपकी चाल से। आप इस बात से इनकार नहीं कर सकते कि चरित्र का पता लगाया जा सकता है।”
क्या चाल-ढाल से, दिमित्री फ्योदोरोविच? विज्ञान इस विचार का समर्थन करता है। अब मैं विज्ञान और यथार्थवाद का पूर्ण समर्थक हूँ। फादर ज़ोस्सिमा के साथ हुए उस पूरे मामले के बाद, जिसने मुझे इतना परेशान किया, आज से मैं एक यथार्थवादी हूँ और मैं अपना पूरा ध्यान व्यावहारिक उपयोगिता पर केंद्रित करना चाहता हूँ। मैं ठीक हो गया हूँ। 'बस बहुत हो गया!' जैसा कि तुर्गेनेव कहते हैं।
लेकिन, महोदया, आपने जो तीन हजार रुपये उधार देने का इतना उदारतापूर्वक वादा किया था, उसका क्या होगा?
मुझे । । ।"
“यह आपका है, दिमित्री फ्योदोरोविच,” मैडम होहलाकोव ने तुरंत बीच में टोकते हुए कहा।
“पैसा तो मानो तुम्हारी जेब में है, तीन हज़ार नहीं, बल्कि तीन मिलियन, दिमित्री फ्योदोरोविच, देखते ही देखते। मैं तुम्हें एक विचार का उपहार देता हूँ: तुम सोने की खदानें खोजोगे, लाखों कमाओगे, लौटकर एक अग्रणी व्यक्ति बनोगे, और हमें जगाकर बेहतर भविष्य की ओर ले जाओगे। क्या हम सब कुछ यहूदियों के भरोसे छोड़ देंगे? तुम हर तरह की संस्थाएँ और उद्यम स्थापित करोगे। तुम गरीबों की मदद करोगे, और वे तुम्हें आशीर्वाद देंगे। यह रेल युग है, दिमित्री फ्योदोरोविच। तुम प्रसिद्ध हो जाओगे और वित्त विभाग के लिए अपरिहार्य बन जाओगे, जिसकी हालत इस समय बहुत खराब है। रूबल का अवमूल्यन मुझे रातों को सोने नहीं देता, दिमित्री फ्योदोरोविच; लोग मेरे इस पहलू को नहीं जानते...”
“महोदया, महोदया!” दिमित्री ने बेचैनी भरी आशंका के साथ बीच में ही टोकते हुए कहा। “मैं महोदया, मैं सचमुच आपकी सलाह, आपकी बुद्धिमत्तापूर्ण सलाह का पालन करूँगा... मैं शायद सोने की खानों की ओर निकल पड़ूँगा... मैं इस बारे में आपसे फिर मिलूँगा... कई बार, सचमुच... लेकिन अब, वह तीन हज़ार जो आपने इतनी उदारता से दिए... ओह, उससे तो मैं मुक्त हो जाऊँगा, और अगर आप आज ही दे सकें... देखिए, मेरे पास आज एक मिनट भी गंवाने का समय नहीं है...
“बस करो, दिमित्री फ्योदोरोविच, बस करो!” मैडम होहलाकोव
उसने बीच में ही बात काटते हुए जोर देकर कहा, “सवाल यह है कि क्या तुम सोने की खानों में जाओगे या नहीं; क्या तुमने अपना मन पक्का कर लिया है? हां या ना में जवाब दो।”
“मैं बाद में जाऊँगा, महोदया... मैं वहाँ जाऊँगा जहाँ आप चाहें... लेकिन अभी...”
.”
“रुको!” मैडम होहलाकोव चिल्लाईं। और उछलकर एक

कई छोटी-छोटी दराजों वाली एक सुंदर अलमारी को देखकर, वह बेताब होकर एक के बाद एक दराजें खोलने लगी और कुछ ढूंढने लगी।
“तीन हज़ार,” मित्या ने सोचा, उसका दिल लगभग रुक गया था, “और
पल भर में... बिना किसी कागजी कार्रवाई या औपचारिकता के... इसे कहते हैं सज्जनतापूर्ण ढंग से काम करना! वह एक शानदार महिला हैं, काश वह इतनी ज्यादा न बोलतीं!
“यहाँ!” मैडम होहलाकोव खुशी से मित्या की ओर दौड़ते हुए चिल्लाईं, “यहाँ!”
जिसकी मुझे तलाश थी वह है!"
यह एक डोरी पर लगा हुआ चांदी का एक छोटा सा प्रतीक था, जैसा कि कभी-कभी गले में पहना जाता है। त्वचा पर क्रॉस का निशान।
“यह कीव से है, दिमित्री फ्योदोरोविच,” उसने आदरपूर्वक आगे कहा।
“पवित्र शहीद वरवारा के अवशेषों से। मैं इसे स्वयं आपके गले में पहनाता हूँ, और इसके साथ ही आपको एक नए जीवन, एक नए करियर के लिए समर्पित करता हूँ।”
और उसने सचमुच उसके गले में रस्सी डाल दी और उसे व्यवस्थित करने लगी।
अत्यधिक शर्मिंदगी महसूस करते हुए, मित्या नीचे झुका और उसकी मदद की, और आखिरकार उसने उसे अपनी टाई और कॉलर के नीचे से अपनी कमीज के रास्ते अपनी छाती तक पहुँचा लिया।
“अब आप जा सकते हैं,” मैडम होहलाकोव ने बैठते हुए कहा।
विजयी होकर वह एक बार फिर अपने स्थान पर आसीन हो गईं।
“महोदया, मैं बहुत भावुक हो गया हूँ। मुझे नहीं पता कि मैं आपका धन्यवाद कैसे करूँ।”
सचमुच... आपकी इतनी दयालुता के लिए, लेकिन... काश आप जानतीं कि मेरे लिए समय कितना कीमती है... वह धनराशि, जिसके लिए मैं आपकी उदारता का ऋणी रहूंगा... ओह, महोदया, चूंकि आप मुझ पर इतनी दयालु और इतनी उदार हैं," मित्या ने आवेग में कहा, "तो मुझे आपको यह बताने दीजिए... हालांकि, बेशक, आप इसे बहुत पहले से जानती हैं... कि मैं यहां किसी से प्यार करता हूं... मैंने कात्या के प्रति बेवफाई की है... मुझे कहना चाहिए कैटेरिना इवानोवना... ओह, मैंने उसके साथ अमानवीय, अपमानजनक व्यवहार किया है, लेकिन मुझे यहां एक दूसरी महिला से प्यार हो गया है... एक ऐसी महिला जिसे आप, महोदया, शायद तुच्छ समझती हों, क्योंकि आप पहले से ही सब कुछ जानती हैं, लेकिन जिसे मैं किसी भी कीमत पर नहीं छोड़ सकता, और इसलिए वह तीन हजार अब..."
“सब कुछ छोड़ दो, दिमित्री फ्योदोरोविच,” मैडम होहलाकोव
उन्होंने अत्यंत दृढ़ स्वर में बात काटते हुए कहा, “सब कुछ छोड़ दो, विशेषकर स्त्री-पुरुष। तुम्हारा लक्ष्य सोने की खदानें हैं, और वहाँ स्त्री-पुरुषों के लिए कोई स्थान नहीं है। बाद में, जब तुम धनवान और प्रसिद्ध होकर लौटोगे, तो तुम्हें अपने दिल की लड़की समाज के उच्च वर्गों में मिलेगी। वह एक आधुनिक लड़की होगी, शिक्षित और प्रगतिशील विचारों वाली लड़की। तब तक स्त्री-प्रधान प्रश्न जोर पकड़ चुका होगा, और एक नई स्त्री का उदय हो चुका होगा।”
“महोदया, बात ये नहीं है, बिलकुल भी नहीं...” मित्या ने अपने हाथ जोड़ लिए।
विनती।
“जी हां, दिमित्री फ्योदोरोविच, यही तो आपको चाहिए; बिलकुल वही चीज है जिसकी आपको जरूरत है।” आप जिस चीज की चाहत रखते हैं, भले ही आपको खुद इसका एहसास न हो। दिमित्री फ्योदोरोविच, मैं वर्तमान नारी आंदोलन का बिल्कुल भी विरोध नहीं करती। नारी का विकास, और निकट भविष्य में नारी की राजनीतिक मुक्ति—यही मेरा आदर्श है। दिमित्री फ्योदोरोविच, मेरी भी एक बेटी है, लोग मेरे इस पहलू को नहीं जानते। मैंने इस विषय पर लेखक श्शेड्रिन को एक पत्र लिखा था। उन्होंने मुझे नारीत्व के कर्तव्य के बारे में बहुत कुछ सिखाया है। इसलिए पिछले साल मैंने उन्हें दो पंक्तियों का एक गुमनाम पत्र भेजा: 'मैं आपको चूमती और गले लगाती हूँ, मेरे गुरु, आधुनिक नारी के लिए। दृढ़ रहें।' और मैंने अपने हस्ताक्षर 'एक माँ' के रूप में किए। मैंने अपने हस्ताक्षर 'एक समकालीन माँ' के रूप में करने के बारे में सोचा, और हिचकिचाई, लेकिन मैंने केवल 'माँ' ही लिखा; दिमित्री फ्योदोरोविच, इसमें अधिक नैतिक सुंदरता है। और 'समकालीन' शब्द ने शायद उन्हें 'द कंटेंपररी' की याद दिला दी होगी—सेंसरशिप के कारण एक दर्दनाक याद... हे भगवान! आखिर क्या बात है!

“महोदया!” मित्या अंततः उठ खड़ा हुआ और उनके सामने हाथ जोड़कर चिल्लाया।
असहाय विनती में। "यदि आप अपनी इतनी उदारता को विलंबित करेंगे तो आप मुझे रुला देंगे..."
“ओह, रोओ, दिमित्री फ्योदोरोविच, रोओ! यह तो महान बात है।”
ऐसा एहसास... तुम्हारे सामने एक सुनहरा रास्ता खुला है! आँसू तुम्हारे दिल को सुकून देंगे, और बाद में तुम खुशी से लौटोगे। तुम साइबेरिया से खास तौर पर मेरे पास आओगे, ताकि अपनी खुशी मुझसे बाँट सको...
“लेकिन मुझे भी अनुमति दीजिए!” मित्या अचानक चिल्लाया। “आखिरी बार मैं विनती करता हूँ...”
आप मुझे बताइए, क्या मुझे वह राशि मिल सकती है जिसका आपने आज मुझसे वादा किया था? यदि नहीं, तो मैं इसे लेने कब आ सकता हूँ?
“क्या रकम है, दिमित्री फ्योदोरोविच?”
“वे तीन हजार जो आपने मुझसे वादा किया था... जो आपने इतनी उदारता से दिए...”
“तीन हजार? रूबल? ओह, नहीं, मेरे पास तीन हजार नहीं हैं।”
मैडम होहलाकोव ने शांत आश्चर्य के साथ घोषणा की। मित्या अवाक रह गया।
“क्यों, आपने अभी कहा था... आपने कहा था... आपने कहा था कि यह लगभग वैसा ही अच्छा है जैसा कि मेरे हाथ। । ।"
“ओह, नहीं, आपने मुझे गलत समझा, दिमित्री फ्योदोरोविच। उस स्थिति में आप
मुझे गलत समझा। मैं सोने की खानों की बात कर रहा था। यह सच है कि मैंने आपसे तीन हजार से कहीं अधिक का वादा किया था, मुझे अब सब याद है, लेकिन मेरा मतलब सोने की खानों से ही था।
“लेकिन वो पैसा? तीन हजार?” मित्या ने असहज होकर कहा।
“ओह, अगर तुम्हारा मतलब पैसों से है, तो मेरे पास पैसे नहीं हैं। मेरे पास एक पैसा भी नहीं है, दिमित्री।” फ्योदोरोविच। मैं इस बारे में अपने प्रबंधक से झगड़ रहा हूँ, और मैंने अभी-अभी मियूसोव से पाँच सौ रूबल उधार लिए हैं। नहीं, नहीं, मेरे पास पैसे नहीं हैं। और, जानते हो दिमित्री फ्योदोरोविच, अगर मेरे पास होते भी, तो मैं तुम्हें नहीं देता। पहली बात तो यह है कि मैं कभी उधार नहीं देता। उधार देने का मतलब है दोस्त खोना। और मैं तुम्हें खास तौर पर नहीं देता। मैं तुम्हें इसलिए नहीं देता, क्योंकि मैं तुम्हें पसंद करता हूँ और तुम्हें बचाना चाहता हूँ, क्योंकि तुम्हें तो बस सोने की खानों की ज़रूरत है, सोने की खानों की, सोने की खानों की!
“अरे, शैतान!” मित्या दहाड़ा और पूरी ताकत से मुक्का मारा।
मेज पर नीचे।
“आए! आए!” मैडम होहलाकोव घबराकर चिल्लाईं और दूसरी ओर भाग गईं।
ड्राइंग रूम का अंतिम छोर।
मित्या ने ज़मीन पर थूका और तेज़ी से कमरे से बाहर निकल गया।
घर से निकलकर, गली में, अँधेरे में! वह पागलों की तरह चल रहा था और अपनी छाती पीट रहा था, उसी जगह पर जहाँ उसने दो दिन पहले अलेयोशा के सामने, अँधेरे में सड़क पर आखिरी बार खुद को मारा था। उस जगह पर छाती पर लगे उन प्रहारों का क्या अर्थ था, और उसका क्या इरादा था—यह उस समय एक रहस्य था जो दुनिया में किसी को नहीं पता था, और अलेयोशा को भी नहीं बताया गया था। लेकिन उस रहस्य का उसके लिए अपमान से कहीं अधिक महत्व था; इसका अर्थ था बर्बादी, आत्महत्या। उसने ठान लिया था कि अगर उसे वो तीन हज़ार नहीं मिले जो कैटेरिना इवानोव्ना का कर्ज़ चुका देंगे, और इस तरह उसकी छाती से, उसकी छाती के उस हिस्से से, उस शर्म को नहीं मिटा देंगे जो उसके अंतरात्मा पर बोझ बनी हुई थी, तो वह ऐसा नहीं करेगा। यह सब पाठक को बाद में विस्तार से समझाया जाएगा, लेकिन अब जब उसकी आखिरी उम्मीद भी खत्म हो गई थी, तो दिखने में इतना मजबूत यह आदमी, होहलकोव के घर से कुछ कदम दूर, एक छोटे बच्चे की तरह रोने लगा। वह चलता रहा, और अनजाने में अपने आँसू मुट्ठी से पोंछता रहा। इस तरह वह चौक पर पहुँचा, और अचानक उसे एहसास हुआ कि वह किसी चीज़ से टकरा गया है। उसने एक बूढ़ी औरत की चीख सुनी, जिसे उसने लगभग गिरा ही दिया था।
हे भगवान! तुमने तो मुझे लगभग मार ही डाला! ज़रा देखो तुम कहाँ हो?
जा रहे हो, भगोड़े?
“अरे, ये तो तुम हो!” अंधेरे में बूढ़ी औरत को पहचानते हुए मित्या चिल्लाया।
वह बूढ़ा नौकर था जो सैमसनोव की सेवा करता था, जिसे मित्या ने एक दिन पहले विशेष रूप से देखा था।

“और आप कौन हैं, मेरे भले?” बूढ़ी औरत ने काफी उत्सुकता से पूछा।
अलग आवाज। "मैं तुम्हें अंधेरे में नहीं पहचानता।"
“तुम कुज़्मा कुज़्मिच के यहाँ रहते हो। तुम वहाँ नौकर हो?”
जी हाँ, महोदय, मैं तो बस प्रोहोरिट्च के यहाँ ही जा रहा था... लेकिन मुझे नहीं पता
अब आप।"
“बताइए, मेरी प्यारी महिला, क्या अग्रफेना अलेक्जेंड्रोवना अभी वहाँ हैं?”
मित्या उत्सुकता से बेहाल था। "मैंने उसे कुछ देर पहले घर तक छोड़ा था।"
“वह वहाँ आई थी, महोदय। वह थोड़ी देर रुकी और फिर चली गई।”
“क्या? चली गई?” मित्या चिल्लाया। “वह कब गई?”
“क्यों, जैसे ही वह आई। वह सिर्फ एक मिनट रुकी। उसने बस इतना ही कहा।
कुज़्मा कुज़्मिच ने एक कहानी सुनाई जिससे वह हँस पड़ा, और फिर वह भाग गई।
“तुम झूठ बोल रहे हो, धिक्कार है तुम पर!” मित्या दहाड़ा।
“ऐ! ऐ!” बूढ़ी औरत चीखी, लेकिन मित्या गायब हो चुका था। वह पूरी ताकत से उस घर की ओर भागा जहाँ ग्रुशेंका रहती थी।
जैसे ही वह वहाँ पहुँचा, ग्रुशेंका मोक्रोए के लिए रवाना हो चुकी थी। उसके जाने के पंद्रह मिनट से भी कम समय बीता था।
फेन्या अपनी दादी, बूढ़ी रसोइया मैट्रयोना के साथ बैठी थी।
रसोई में तभी "कैप्टन" दौड़ता हुआ आया। उसे देखते ही फेन्या ने चीख मारी।
“तुम चिल्ला रहे हो?” मित्या दहाड़ा, “वह कहाँ है?” लेकिन भयभीत फेन्या को एक शब्द भी बोलने का समय दिए बिना ही वह गिर पड़ा।
सब कुछ उसके पैरों के पास ढेर हो गया था।
"फेन्या, भगवान के लिए, मुझे बताओ, वह कहाँ है?"
मुझे नहीं पता। दिमित्री फ्योदोरोविच, मेरे प्रिय, मुझे नहीं पता। आप शायद
मुझे मार डालो, लेकिन मैं तुम्हें नहीं बता सकती।” फेन्या ने कसम खाते हुए विरोध किया। “तुम खुद कुछ समय पहले उसके साथ बाहर गई थी...”
“वह वापस आ गई!”
"सचमुच वह नहीं लौटी। भगवान की कसम, वह वापस नहीं आई।"
“तुम झूठ बोल रहे हो!” मित्या चिल्लाया। “तुम्हारे डर से मुझे पता चल गया है कि वह कहाँ है।” वह झट से भाग गया। फेन्या डर के मारे इस बात से खुश थी कि वह इतनी आसानी से बच गई।
लेकिन वह भली-भांति जानती थी कि यह सब उसकी जल्दबाजी का नतीजा था, वरना शायद उसका हाल इतना बुरा होता। दौड़ते हुए उसने एक अप्रत्याशित हरकत से फेन्या और बूढ़ी मैट्रयोना दोनों को चौंका दिया।
मेज पर पीतल का एक ओखली रखा था, जिसमें एक छोटा सा मूसल था, जो मुश्किल से छह इंच लंबा था।
मित्या ने एक हाथ से दरवाजा खोल ही दिया था कि दूसरे हाथ से उसने मूसल उठाया और उसे अपनी जेब में डाल लिया।
“हे भगवान! वो किसी का खून करने वाला है!” फेन्या चिल्लाई और उल्टी कर दी।
उसके हाथ।

अध्याय 4

अंधेरे में

वह कहाँ भाग रहा था? “वह फ्योदोर पावलोविच के घर के अलावा और कहाँ हो सकती थी? वह सैमसनोव के घर से सीधे उसके पास ही भागी होगी, यह अब स्पष्ट था। सारा षड्यंत्र, सारा छल स्पष्ट था।”... यह सब उसके दिमाग में तेज़ी से घूमने लगा। वह मारिया कोंद्रत्येवना के घर नहीं भागा। “वहाँ जाने की कोई ज़रूरत नहीं थी... ज़रा भी ज़रूरत नहीं... उसे कोई शोर नहीं मचाना चाहिए... वे दौड़कर सीधे बता देंगे... मारिया कोंद्रत्येवना स्पष्ट रूप से इस साज़िश में शामिल थी, स्मरद्याकोव भी, वह भी, सभी को खरीद लिया गया था!” उसने एक और योजना बनाई: वह फ्योदोर के चारों ओर से लंबा रास्ता तय करके भागा।
पावलोविच के घर से गली पार करके, दिमित्रोव्स्की स्ट्रीट से नीचे दौड़ते हुए, फिर छोटे पुल को पार करके, वह सीधे पीछे की सुनसान गली में आ गया, जो खाली और निर्जन थी। एक तरफ पड़ोसी के रसोईघर की बाड़ थी, दूसरी तरफ फ्योदोर पावलोविच के बगीचे के चारों ओर बनी मजबूत ऊंची बाड़ थी। यहाँ उसने एक जगह चुनी, जाहिरा तौर पर वही जगह, जहाँ परंपरा के अनुसार, वह जानता था कि लिज़ावेटा कभी उस पर चढ़ी थी: "अगर वह इस पर चढ़ सकती है," पता नहीं क्यों, उसके मन में यह विचार आया, "तो मैं भी जरूर चढ़ सकता हूँ।" वह सचमुच उछल पड़ा और तुरंत बाड़ के ऊपरी हिस्से को पकड़ लिया। फिर उसने ज़ोर लगाकर खुद को ऊपर खींचा और उस पर बैठ गया। पास ही बगीचे में स्नानघर था, लेकिन बाड़ से वह घर की रोशन खिड़कियाँ भी देख सकता था।
“हाँ, बूढ़े आदमी का कमरा रोशन है। वह वहीं है!” और वह उछल पड़ा।
बाड़ से बगीचे में। हालांकि वह जानता था कि ग्रिगोरी बीमार है और संभवतः स्मरद्याकोव भी, और यह भी कि उसे सुनने वाला कोई नहीं है, फिर भी उसने सहज रूप से खुद को छिपा लिया, स्थिर खड़ा रहा और सुनने लगा। लेकिन चारों ओर सन्नाटा छाया हुआ था और मानो जानबूझकर, पूरी तरह से खामोशी छाई हुई थी, हवा का हल्का सा झोंका भी नहीं।
“और फुसफुसाती खामोशी के सिवा कुछ नहीं,” ये पंक्ति अचानक ऊँची हो गई।
उसके मन में विचार आया, “काश, मुझे बाड़ फांदते हुए किसी ने न सुना हो! मुझे नहीं लगता।” एक मिनट तक स्थिर खड़े रहकर, वह बगीचे की घास पर धीरे-धीरे चलने लगा, पेड़ों और झाड़ियों से बचते हुए। वह धीरे-धीरे, हर कदम पर दबे पांव, अपने कदमों की आहट सुनता हुआ चल रहा था। रोशन खिड़की तक पहुँचने में उसे पाँच मिनट लगे। उसे याद आया कि खिड़की के ठीक नीचे एल्डर और व्हाइटबीम की कई घनी और ऊँची झाड़ियाँ थीं। घर से बगीचे में बाईं ओर का दरवाजा बंद था; उसने गुजरते समय जानबूझकर ध्यान से देखा था। आखिरकार वह झाड़ियों तक पहुँचा और उनके पीछे छिप गया। उसने अपनी साँस रोक ली। “मुझे अब इंतजार करना होगा,” उसने सोचा, “उन्हें आश्वस्त करने के लिए, कहीं उन्होंने मेरे कदमों की आहट न सुन ली हो और सुन रहे हों... काश मैं खाँसूँ या छींक न दूँ।”
उसने दो मिनट इंतजार किया। उसका दिल तेजी से धड़क रहा था, और
कुछ क्षणों के लिए, उसकी साँसें रुक-रुक कर चल रही थीं। “नहीं, मेरे दिल की यह धड़कन रुकने वाली नहीं है,” उसने सोचा। “मैं अब और इंतज़ार नहीं कर सकता।” वह एक झाड़ी के पीछे छाया में खड़ा था। खिड़की की रोशनी झाड़ी के अगले हिस्से पर पड़ रही थी।
“व्हाइटबीम के फल कितने लाल हैं!” उसने बुदबुदाते हुए कहा, हालांकि उसे खुद नहीं पता था कि वह ऐसा क्यों कर रहा है।
धीरे-धीरे और चुपचाप, कदम-दर-कदम, वह खिड़की के पास पहुँचा और अपने पैर की उंगलियों के बल खड़ा हो गया। फ्योदोर पावलोविच का पूरा शयनकक्ष उसके सामने खुला हुआ था। कमरा बड़ा नहीं था और एक लाल पर्दे से दो हिस्सों में बँटा हुआ था, जिसे फ्योदोर पावलोविच "चीनी" कहा करते थे। "चीनी" शब्द मित्या के मन में कौंध गया, "और इस पर्दे के पीछे ग्रुशेंका है," मित्या ने सोचा। वह फ्योदोर पावलोविच को देखने लगा, जिसने अपना नया धारीदार रेशमी गाउन पहना हुआ था, जिसे मित्या ने पहले कभी नहीं देखा था, और कमर पर लटकन वाली रेशमी डोरी बाँधी हुई थी। गाउन के कॉलर के नीचे से सोने के स्टड वाली एक

साफ-सुथरी, सजी-धजी बढ़िया लिनेन की कमीज झाँक रही थी। फ्योदोर पावलोविच के सिर पर वही लाल पट्टी बंधी थी जो अलेयोशा ने देखी थी।
“वह उठ खड़ा हुआ है,” मित्या ने सोचा।
उसके पिता खिड़की के पास खड़े थे, मानो सोच में डूबे हुए हों।
अचानक उसने अपना सिर झटक कर ऊपर उठाया, एक पल के लिए सुना, और कुछ न सुनकर मेज के पास गया, एक बड़े गिलास ब्रांडी में से आधा गिलास ब्रांडी उंडेला और उसे पी गया। फिर उसने एक गहरी आह भरी, एक पल के लिए फिर से स्थिर खड़ा रहा, लापरवाही से दीवार पर लगे शीशे के पास गया, अपने दाहिने हाथ से माथे पर बंधी लाल पट्टी को थोड़ा सा उठाया, और अपने उन घावों और निशानों को देखने लगा जो अभी तक मिटे नहीं थे।
“वह अकेला है,” मित्या ने सोचा, “पूरी संभावना है कि वह अकेला ही है।” फ्योदोर पावलोविच दर्पण से दूर हट गया, अचानक मुड़ गया।
वह खिड़की के पास गया और बाहर देखने लगा। मित्या तुरंत छाया में गायब हो गया।
“हो सकता है वो पर्दे के पीछे हो। शायद वो अब तक सो गई हो,” उसने कहा।
उसके दिल में एक कसक सी उठ उठी और उसने सोचा। फ्योदोर पावलोविच खिड़की से थोड़ा दूर हट गया।
“वह खिड़की से उसे ढूंढ रहा है, तो वह वहाँ नहीं है। उसे अंधेरे में बाहर क्यों घूरना चाहिए? वह बेचैनी से पागल हो रहा है।”... मित्या तुरंत वापस खिड़की की ओर झुक गया और फिर से खिड़की से अंदर देखने लगा।
बूढ़ा आदमी मेज पर बैठा था, जाहिर तौर पर निराश। अंत में उसने अपनी कोहनी मेज पर रखी और अपना दाहिना गाल हाथ पर टिका लिया। मित्या उसे उत्सुकता से देखता रहा।
“वह अकेला है, वह अकेला है!” उसने फिर दोहराया। “अगर वह यहाँ होती, तो उसका चेहरा
यह अलग होगा।
अजीब बात है, उसके दिल में एक विचित्र, अतार्किक झुंझलाहट पैदा हो गई कि वह
वह यहाँ नहीं थी। “ऐसा नहीं है कि वह यहाँ नहीं है,” उसने तुरंत खुद से कहा, “बल्कि मैं निश्चित रूप से नहीं कह सकता कि वह है या नहीं।” मित्या को बाद में याद आया कि उस क्षण उसका दिमाग असाधारण रूप से स्पष्ट था, उसने हर छोटी से छोटी बात को ध्यान से सुना था और कोई भी बात नहीं चूकी थी। लेकिन उसके दिल में हर पल एक उदासी, अनिश्चितता और असमंजस की उदासी बढ़ती जा रही थी। “क्या वह यहाँ है या नहीं?” गुस्से भरे संदेह ने उसके दिल को भर दिया, और अचानक, मन बना कर, उसने अपना हाथ बढ़ाया और खिड़की के फ्रेम पर धीरे से दस्तक दी। उसने वह संकेत दिया जो बूढ़े आदमी ने स्मरद्याकोव के साथ तय किया था, दो बार धीरे से और फिर तीन बार तेज़ी से, वह संकेत जिसका मतलब था “ग्रुशेंका यहाँ है!”
बूढ़ा आदमी चौंक गया, उसने अपना सिर झटक कर ऊपर उठाया और झट से उठकर दौड़ पड़ा।
खिड़की। मित्या छाया में गायब हो गया। फ्योदोर पावलोविच ने खिड़की खोली और अपना पूरा सिर बाहर निकाल दिया।
“ग्रुशेंका, क्या तुम हो? क्या तुम हो?” उसने कांपती हुई आधी-अधूरी आवाज़ में कहा।
फुसफुसाते हुए। "तुम कहाँ हो, मेरी परी, तुम कहाँ हो?" वह भयभीत और व्याकुल था।
“वह अकेला है,” मित्या ने फैसला किया।
“तुम कहाँ हो?” बूढ़े ने फिर से पुकारा; और उसने अपना सिर बाहर निकाला
उसने अपना हाथ कंधों तक फैलाया और दाएं-बाएं चारों ओर देखने लगा। "इधर आओ, तुम्हारे लिए मेरे पास एक छोटा सा तोहफा है। आओ, मैं तुम्हें दिखाता हूँ..."
“उसका मतलब तीन हज़ार से है,” मित्या ने सोचा। “लेकिन तुम कहाँ हो? क्या तुम दरवाज़े पर हो? मैं अभी खोलता हूँ।” और बूढ़ा आदमी लगभग खिड़की से बाहर निकल आया, बाहर झाँकते हुए।
ठीक वहीं, जहाँ बगीचे में जाने का दरवाज़ा था, और वह अँधेरे में देखने की कोशिश कर रहा था। एक पल में ही वह ग्रुशेंका के जवाब का इंतज़ार किए बिना दरवाज़ा खोलने के लिए दौड़ पड़ता।
मित्या बिना हिले-डुले बगल से उसे देखता रहा। बूढ़े आदमी का...
वह चेहरा जिससे मित्या को घोर घृणा थी - उसका उभरा हुआ कंठ, उसकी टेढ़ी नाक, उसके होंठ जो लालच भरी उम्मीद से मुस्कुराते थे - कमरे के बाईं ओर से आ रही तिरछी रोशनी में सब कुछ चमक रहा था। मित्या के हृदय में अचानक घृणा का एक भयानक क्रोध उमड़ पड़ा: "वह रहा, उसका प्रतिद्वंद्वी, वह आदमी जिसने

उसे सताया था, जिसने उसका जीवन बर्बाद कर दिया था!" यह वही अचानक, प्रचंड, प्रतिशोध से भरा क्रोध था जिसके बारे में उसने चार दिन पहले मंडप में अलेयोशा से कहा था, मानो उसे पहले से ही इसका पूर्वाभास हो, जब अलेयोशा ने उससे पूछा था, "तुम कैसे कह सकते हो कि तुम हमारे पिता को मार डालोगे?" तब उसने कहा था, "मुझे नहीं पता, मुझे नहीं पता।" "शायद मैं उसे न मारूँ, शायद मार दूँ। मुझे डर है कि उस पल वह मुझे अचानक बहुत घृणित लगने लगेगा। मुझे उसकी दोहरी ठुड्डी, उसकी नाक, उसकी आँखें, उसकी बेशर्म मुस्कान से नफ़रत है। मुझे उससे घृणा हो रही है। मुझे इसी बात का डर है, यही मेरे लिए असहनीय हो सकता है।"... यह घृणा असहनीय होती जा रही थी। मित्या आपा खो बैठा, उसने अचानक अपनी जेब से पीतल का मूसल निकाल लिया।
बाद में मित्या ने स्वयं कहा, "उस समय ईश्वर मेरी रक्षा कर रहे थे।"
उसी क्षण ग्रिगोरी अपनी बीमारी के बिस्तर पर जाग उठा। शाम को उसने वही उपचार करवाया था जिसका वर्णन स्मरद्याकोव ने इवान को किया था। उसने अपने पूरे शरीर पर वोदका को एक गुप्त, बहुत ही तेज़ काढ़े में मिलाकर मल लिया था, और अपनी पत्नी द्वारा उस पर एक विशेष प्रार्थना दोहराए जाने के दौरान बचे हुए मिश्रण को पी लिया था, जिसके बाद वह बिस्तर पर चला गया था। मार्फा इग्नात्येवना ने भी उस मिश्रण का स्वाद चखा था, और तेज़ शराब पीने की आदत न होने के कारण, वह अपने पति के बगल में बेसुध सो गई थी। लेकिन ग्रिगोरी रात में अचानक जाग गया, और कुछ देर बाद
कुछ पल सोचने के बाद, हालांकि उसे तुरंत अपनी पीठ में तेज दर्द महसूस हुआ, वह बिस्तर पर उठ बैठा। फिर उसने दोबारा सोचा, उठा और जल्दी से कपड़े पहने। शायद उसका मन इस बात से बेचैन था कि "ऐसे खतरनाक समय में" घर की सुरक्षा न होने पर सोना ठीक नहीं है। दौरे से थका हुआ स्मरद्याकोव बगल के कमरे में बेसुध पड़ा था। मार्फा इग्नात्येवना हिली भी नहीं। "औरत के लिए यह सब कुछ ज़्यादा ही हो गया है," ग्रिगोरी ने उसकी तरफ देखते हुए सोचा और कराहते हुए सीढ़ियों पर चला गया। निस्संदेह उसका इरादा सिर्फ सीढ़ियों से बाहर देखने का था, क्योंकि वह मुश्किल से चल पा रहा था, उसकी पीठ और दाहिने पैर का दर्द असहनीय था। लेकिन उसे अचानक याद आया कि उसने उस शाम बगीचे का छोटा सा गेट बंद नहीं किया था। वह बेहद समय का पाबंद और सटीक व्यक्ति था, एक ऐसा आदमी जो एक अटल दिनचर्या और वर्षों पुरानी आदतों का पालन करता था। दर्द से कराहते और लंगड़ाते हुए वह सीढ़ियों से नीचे उतरा और बगीचे की ओर गया। हाँ, गेट खुला ही था। वह यंत्रवत रूप से बगीचे में दाखिल हुआ। शायद उसे कुछ अच्छा लगा, शायद उसने कोई आवाज़ सुनी, और बाईं ओर देखते हुए उसने अपने मालिक की खिड़की खुली देखी। उस समय कोई भी खिड़की से बाहर नहीं देख रहा था।
"यह किसलिए खुला है? अभी गर्मी का मौसम नहीं है," ग्रिगरी ने सोचा, और अचानक, उसी क्षण उसकी नज़र बगीचे में अपने सामने कुछ असाधारण चीज़ पर पड़ी। उससे चालीस कदम आगे एक आदमी अंधेरे में दौड़ता हुआ प्रतीत हो रहा था, एक तरह की परछाई बहुत तेज़ी से चल रही थी।
"हे भगवान!" ग्रिगरी गुस्से से चिल्लाया, और अपने दर्द को भूलकर बोला।
उसकी पीठ की ओर देखते हुए, वह भागते हुए व्यक्ति को रोकने के लिए तेजी से दौड़ा। उसने एक छोटा रास्ता लिया, जाहिर है वह बगीचे को बेहतर जानता था; भागता हुआ व्यक्ति स्नानघर की ओर गया, ग्रिगोरी उसके पीछे भागा और बगीचे की बाड़ की ओर दौड़ पड़ा। ग्रिगोरी ने उसका पीछा किया, उसे नज़रों से ओझल नहीं होने दिया, और सब कुछ भूलकर दौड़ पड़ा। वह ठीक उसी समय बाड़ पर पहुँचा जब वह आदमी उस पर चढ़ रहा था। ग्रिगोरी गुस्से से चिल्ला उठा, उस पर झपटा और अपने दोनों हाथों से उसकी टांग पकड़ ली।
हाँ, उसका पूर्वाभास गलत नहीं था। उसने उसे पहचान लिया, वह वही था।
वह "राक्षस", वह "पितृहस्पति हत्यारा"।
"पितृहस्पति'!" बूढ़े आदमी ने इतनी जोर से चिल्लाया कि पूरा पड़ोस सुन सके।
उसने सुना, लेकिन उसे और चिल्लाने का समय नहीं मिला, वह तुरंत गिर पड़ा, मानो बिजली गिर गई हो। मित्या वापस बगीचे में कूद गया और गिरे हुए आदमी के ऊपर झुक गया।
मित्या के हाथों में पीतल का मूसल था, और उसने उसे बेमन से घास पर फेंक दिया। मूसल ग्रिगोरी से दो कदम दूर, घास में नहीं बल्कि रास्ते पर, एक बहुत ही स्पष्ट जगह पर गिरा। कुछ सेकंड तक उसने अपने सामने लेटे हुए व्यक्ति को देखा। बूढ़े आदमी का सिर खून से लथपथ था। मित्या ने अपना हाथ बढ़ाया और

उसे महसूस करने लगा। उसे बाद में स्पष्ट रूप से याद आया कि वह यह सुनिश्चित करने के लिए बहुत बेचैन था कि उसने बूढ़े आदमी की खोपड़ी तोड़ दी है या केवल मूसल से उसे बेहोश कर दिया है। लेकिन खून भयानक रूप से बह रहा था; और एक पल में मित्या की उंगलियां गर्म धार से भीग गईं। उसे याद आया कि उसने अपनी जेब से वह साफ सफेद रुमाल निकाला जो वह मैडम होहलाकोव से मिलने के लिए लाया था, और उसे बूढ़े आदमी के सिर पर रखकर उसके चेहरे और कनपटी से खून पोंछने की कोशिश की। लेकिन रुमाल तुरंत खून से भीग गया।
“हे भगवान! मैं ये सब क्यों कर रहा हूँ?” मित्या ने अचानक सोचा।
खुद को संभालते हुए, उसने निराशा से कहा, “अगर मैंने उसकी खोपड़ी तोड़ दी है, तो अब मुझे कैसे पता चलेगा? और अब इससे क्या फर्क पड़ता है?” “अगर मैंने उसे मार डाला है, तो मार डाला है... बूढ़े, तुम्हें दुख झेलना ही होगा!” वह ज़ोर से बोला। और अचानक बाड़ की ओर मुड़कर, वह उसे फांदकर गली में कूद गया और दौड़ने लगा—खून से लथपथ रूमाल उसके दाहिने हाथ की मुट्ठी में दबा हुआ था, जिसे वह कुचलकर अपनी कोट की पिछली जेब में डाल रहा था। वह बेतहाशा भागा, और अंधेरे में सड़कों पर उससे मिलने वाले कुछ राहगीरों को बाद में याद आया कि उन्होंने उस रात एक भागते हुए आदमी को देखा था। वह फिर से विधवा मोरोज़ोव के घर की ओर भागा।
उस शाम उसके जाने के तुरंत बाद, फेन्या दौड़कर वहाँ पहुँच गई।
मुख्य कुली, नज़र इवानोविच के पास जाकर, मैंने उनसे विनती की, "भगवान के नाम पर, कप्तान को आज या कल फिर अंदर न आने दें।" नज़र इवानोविच ने वादा किया, लेकिन अचानक बुलाए जाने पर वे अपनी मालकिन के पास ऊपर चले गए। रास्ते में उनकी मुलाकात अपने बीस वर्षीय भतीजे से हुई, जो हाल ही में गाँव से आया था। उन्होंने उसे अपनी जगह लेने के लिए कहा, लेकिन कप्तान का ज़िक्र करना भूल गए। मित्या दौड़कर द्वार तक पहुँचा और उसने दस्तक दी। लड़के ने उसे तुरंत पहचान लिया, क्योंकि मित्या ने उसे कई बार रिश्वत दी थी। उसने तुरंत द्वार खोलकर उसे अंदर आने दिया और मुस्कुराते हुए जल्दी से बताया कि "आपको पता है, अग्रफेना अलेक्जेंड्रोवना अभी घर पर नहीं हैं।"
“तो फिर वो कहाँ है, प्रोहोर?” मित्या ने अचानक रुकते हुए पूछा। “वो आज शाम, लगभग दो घंटे पहले, तिमोफे के साथ रवाना हुई थी।”
गीला।"
“किसलिए?” मित्या चिल्लाया।
मैं यह नहीं कह सकता। किसी अधिकारी को देखने के लिए। किसी ने उसे और घोड़ों को आमंत्रित किया था। उन्हें उसे लाने के लिए भेजा गया था।
मित्या उसे छोड़कर पागलों की तरह फेन्या की ओर भागा।

अध्याय 5

एक अचानक संकल्प

वह अपनी दादी के साथ रसोई में बैठी थी; दोनों सोने जा रही थीं। नज़र इवानोविच पर भरोसा करते हुए, उन्होंने खुद को अंदर बंद नहीं किया था। मित्या दौड़कर अंदर आया, फेन्या पर झपटा और उसका गला पकड़ लिया।
“तुर बताओ! वह कहाँ है? वह इस समय मोक्रोए में किसके साथ है?”
भयंकर क्रोध से दहाड़ा।
दोनों महिलाएं चीख पड़ीं।
“अरे! मैं तुम्हें बताऊँगी। अरे! दिमित्री फ्योदोरोविच, प्रिय, मैं तुम्हें बताऊँगी।”
“मैं सब कुछ सीधे-सीधे बताऊंगी, कुछ नहीं छिपाऊंगी,” फेन्या ने डर के मारे हड़बड़ाते हुए कहा; “वह मोक्रोए के पास, अपने अधिकारी के पास गई है।”
“कौन सा अधिकारी?” मित्या दहाड़ा।
“अपने उस अधिकारी के पास, जिसे वह पहले जानती थी, जिसने उसे फेंक दिया था
“पांच साल से भी पहले,” फेन्या ने जितनी तेजी से बोल सकती थी, उतनी तेजी से खिलखिलाते हुए कहा।
मित्या ने उन हाथों को पीछे खींच लिया जिनसे वह उसका गला दबा रहा था।
वह उसके सामने खड़ा था, मौत की तरह पीला पड़ा हुआ, एक शब्द भी नहीं बोल पा रहा था, लेकिन उसकी आँखों से लग रहा था कि वह सब कुछ समझ गया है, पहले शब्द से ही, और पूरी स्थिति का अंदाज़ा लगा चुका है। बेचारी फेन्या उस समय यह देखने की हालत में नहीं थी कि वह समझ रहा है या नहीं। वह उसी तरह संदूक पर बैठी रही जैसे वह कमरे में आने पर बैठी थी, पूरी तरह कांप रही थी, अपने हाथों को आगे फैलाए हुए मानो खुद का बचाव कर रही हो। वह उस स्थिति में जैसे अकड़ गई हो। उसकी चौड़ी, डरी हुई आँखें उस पर टिकी हुई थीं। और स्थिति को और भी बदतर बनाने के लिए, उसके दोनों हाथ खून से सने हुए थे। दौड़ते समय, उसने पसीना पोंछने के लिए शायद अपने माथे को हाथों से छुआ होगा, जिससे उसके माथे और दाहिने गाल पर खून के धब्बे पड़ गए थे। फेन्या लगभग सदमे में थी। बूढ़ी रसोइया उछल पड़ी थी और पागल औरत की तरह उसे घूर रही थी, डर से लगभग बेहोश हो गई थी।
मित्या एक पल के लिए खड़ा रहा, फिर यंत्रवत रूप से बगल वाली कुर्सी पर बैठ गया।
फेन्या। वह बैठा रहा, सोच-विचार नहीं कर रहा था, मानो भयभीत और सुन्न हो गया हो। फिर भी सब कुछ स्पष्ट था: वह उस अधिकारी के बारे में जानता था, सब कुछ अच्छी तरह जानता था, उसे खुद ग्रुशेंका से पता चला था, उसे पता था कि एक महीने पहले उससे एक पत्र आया था। यानी पूरे एक महीने तक, यह सब उससे गुप्त रूप से चलता रहा, उस नए आदमी के आने तक, और उसने उसके बारे में कभी सोचा भी नहीं! लेकिन वह कैसे सोच सकता था, वह उसके बारे में कैसे नहीं सोच सकता था? वह उस अधिकारी को ऐसे क्यों भूल गया, जैसे ही उसने उसके बारे में सुना, उसे भूल गया? यही सवाल उसके सामने किसी भयानक चीज़ की तरह खड़ा था। और वह उस भयानक चीज़ को भय से देखता रहा, भय से कांपता हुआ।
लेकिन अचानक, एक कोमल और स्नेही बच्चे की तरह धीरे और सौम्यता से, उसने
वह फेन्या से ऐसे बात करने लगा मानो वह पूरी तरह भूल गया हो कि उसने अभी-अभी उसे कितना डराया और चोट पहुँचाई थी। उसने फेन्या से अत्यंत सटीकता से प्रश्न पूछना शुरू कर दिया, जो उसकी स्थिति को देखते हुए आश्चर्यजनक था। हालाँकि लड़की उसके खून से सने हाथों को घूर रही थी, फिर भी उसने भी बड़ी तत्परता और शीघ्रता से हर प्रश्न का उत्तर दिया, मानो वह उसके सामने पूरी सच्चाई और केवल सच्चाई ही रखना चाहती हो। धीरे-धीरे, एक प्रकार के आनंद के साथ, वह हर विवरण बताने लगी, वह उसे परेशान नहीं करना चाहती थी, बल्कि मानो उसकी पूरी सेवा करना चाहती थी। उसने उस दिन की सारी घटनाएँ विस्तार से बताईं, रकितिन और अलेयोशा के आने का, कैसे फेन्या ने पहरा दिया था, कैसे मालकिन चली गई थी, और कैसे उसने खिड़की से अलेयोशा को मित्या को अपना अभिवादन देने के लिए पुकारा था, और उससे कहा था कि "वह हमेशा याद रखे कि उसने एक घंटे के लिए उससे कितना प्रेम किया था।"

यह संदेश सुनकर मित्या अचानक मुस्कुरा उठा और उसके चेहरे पर लाली छा गई।
उसके पीले गालों पर रंगत आ गई। उसी क्षण फेन्या ने उससे कहा, अब जिज्ञासा दिखाने से जरा भी नहीं डरते हुए:
“अपने हाथों को देखो, दिमित्री फ्योदोरोविच। ये तो खून से सने हुए हैं!”
“हाँ,” मित्या ने बेपरवाही से जवाब दिया। उसने अपने हाथों की ओर देखा।
और वह तुरंत उन्हें और फेन्या के सवाल को भूल गई।
वह फिर से खामोश हो गया। दौड़े हुए बीस मिनट बीत चुके थे।
उसका पहला भयानक अनुभव समाप्त हो गया था, लेकिन जाहिर तौर पर उसके भीतर कोई नया दृढ़ संकल्प जागृत हो गया था। वह अचानक खड़ा हो गया, स्वप्निल मुस्कान के साथ।
“आपको क्या हुआ है, श्रीमान?” फेन्या ने अपने हाथों की ओर इशारा करते हुए कहा।
फिर से। उसने सहानुभूति से कहा, मानो वह उसके दुख में उसके बहुत करीब महसूस कर रही हो। मित्या ने फिर से अपने हाथों की ओर देखा।
"ये खून है, फेन्या," उसने अजीब भाव से उसकी ओर देखते हुए कहा।
“ये तो इंसानी खून है, और हे भगवान! ये क्यों बहाया गया? लेकिन... फेन्या... यहाँ एक बाड़ है” (उसने उसे ऐसे देखा जैसे कोई पहेली पूछ रहा हो), “ऊँची बाड़, और देखने में भयानक। लेकिन कल सुबह, जब सूरज निकलेगा, मित्या उस बाड़ को फांदकर निकल जाएगी... तुम नहीं समझती कि कौन सी बाड़ है, फेन्या, और कोई बात नहीं... तुम कल सुनोगी और समझ जाओगी... और अब, अलविदा। मैं उसके रास्ते में नहीं आऊँगा। मैं हट जाऊँगा, मुझे हटना आता है। जियो, मेरी खुशी... तुमने मुझे एक पल के लिए प्यार किया, मित्येंका करामाज़ोव को हमेशा याद रखना... वो हमेशा मुझे मित्येंका कहकर बुलाती थी, याद है?”
और ये कहते ही वह अचानक रसोई से बाहर चला गया। फेन्या थी।
वह उसके अचानक चले जाने से उससे भी ज्यादा भयभीत थी जितनी वह तब थी जब वह अंदर घुस आया और उस पर हमला किया था।
ठीक दस मिनट बाद दिमित्री युवा प्योत्र इल्यिच पेरहोटिन के पास गया।
वह अधिकारी जिसके पास उसने अपनी पिस्तौलें गिरवी रखी थीं। अब साढ़े आठ बज चुके थे, और प्योत्र इल्यिच ने अपनी शाम की चाय खत्म कर ली थी, और बिलियर्ड्स खेलने के लिए "मेट्रोपोलिस" जाने के लिए उसने अभी-अभी अपना कोट पहना था। मित्या ने उसे बाहर आते हुए पकड़ लिया।
उसका चेहरा खून से लथपथ देखकर युवक ने कहा...
आश्चर्य की एक चीख।
हे भगवान! क्या बात है?
“मैं अपनी पिस्तौलें लेने आया हूँ,” मित्या ने कहा, “और आपके लिए पैसे लाया हूँ।”
और बहुत-बहुत धन्यवाद। मुझे जल्दी है, प्योत्र इल्यिच, कृपया जल्दी करें।
प्योत्र इल्यिच का आश्चर्य बढ़ता ही गया; अचानक उसकी नज़र एक चीज़ पर पड़ी...
मित्या के हाथ में नोटों का एक बंडल था, और उससे भी बड़ी बात यह थी कि वह नोटों को इस तरह पकड़े हुए अंदर आया था जैसे कोई आम आदमी नहीं आता और न ही कोई पैसे लेकर आता है: उसने उन्हें अपने दाहिने हाथ में पकड़ा हुआ था और उन्हें इस तरह फैला रखा था मानो दिखा रहा हो। पेरहोतिन के नौकर, जो गलियारे में मित्या से मिला था, ने बाद में बताया कि वह भी उसी तरह हाथ में पैसे फैलाए गलियारे में आया था, इसलिए वह सड़कों पर भी उन्हें इसी तरह लेकर चलता होगा। वे सभी इंद्रधनुषी रंगों के सौ-रूबल के नोट थे, और उन्हें पकड़े हुए उंगलियां खून से सनी हुई थीं।
बाद में जब प्योत्र इल्यिच से धनराशि के बारे में पूछताछ की गई, तो उसने
उन्होंने कहा कि पहली नज़र में अंदाज़ा लगाना मुश्किल था, लेकिन शायद दो हज़ार या तीन हज़ार का गट्ठा था, पर वह एक बड़ा, मोटा गट्ठा था। बाद में उन्होंने गवाही दी, "दिमित्री फ्योदोरोविच भी अपने स्वभाव से अलग लग रहे थे; नशे में तो नहीं थे, लेकिन मानो किसी उत्कट अवस्था में थे, सब कुछ भूले हुए, लेकिन साथ ही साथ मानो किसी चीज़ में लीन थे, जैसे किसी बात पर विचार कर रहे हों, कुछ खोज रहे हों और किसी निर्णय पर न पहुँच पा रहे हों। वे बहुत जल्दबाज़ी में थे, अचानक और बहुत अजीब तरीके से जवाब दे रहे थे, और कभी-कभी तो बिल्कुल भी उदास नहीं बल्कि बेहद खुश नज़र आ रहे थे।"

“लेकिन तुम्हें क्या हुआ है? क्या परेशानी है?” प्योत्र इल्यिच चिल्लाया।
अपने मेहमान को घूरते हुए उसने कहा, “तुम पूरे खून से लथपथ कैसे हो? क्या तुम गिर गए थे? खुद को देखो!”
उसने उसकी कोहनी पकड़ी और उसे गिलास के पास ले गया। उसका खून से सना चेहरा देखकर मित्या चौंक गया और गुस्से से भौंहें चढ़ा लीं। "धिक्कार है! हद हो गई!" उसने गुस्से में जल्दी से बुदबुदाया।
उसने अपने दाहिने हाथ से नोटों को बाएं हाथ में लिया और आवेग में आकर अपनी जेब से रूमाल निकाला। लेकिन रूमाल भी खून से लथपथ निकला (यह वही रूमाल था जिससे उसने ग्रिगोरी का चेहरा पोंछा था)। उस पर मुश्किल से ही कोई सफेद धब्बा बचा था, और वह न केवल सूखने लगा था, बल्कि सिकुड़कर एक गेंद जैसा बन गया था जिसे अलग नहीं किया जा सकता था। मित्या ने गुस्से में उसे ज़मीन पर फेंक दिया।
“अरे यार!” उसने कहा। “क्या तुम्हारे पास कोई कपड़ा नहीं है... जिससे मैं अपना पोंछ सकूँ?”
चेहरा?"
“तो तुम पर सिर्फ दाग लगे हैं, घाव नहीं? बेहतर होगा कि तुम नहा लो,” प्योत्र ने कहा।
इलिच। “ये रहा एक वॉश-स्टैंड। मैं आपको थोड़ा पानी दे देता हूँ।”
“कपड़े धोने की स्टैंड? ठीक है... लेकिन इसे कहाँ रखूँ?” अजीब सी उलझन के साथ उसने अपने सौ-रूबल के बंडल की ओर इशारा किया।
नोट्स, प्योत्र इल्यिच की ओर जिज्ञासा भरी निगाहों से देखते हुए, मानो यह फैसला करना उन्हीं का काम हो कि मित्या अपने पैसे का क्या करेगा।
"आपकी जेब में या यहाँ मेज पर। वे खोएंगे नहीं।"
“मेरी जेब में? हाँ, मेरी जेब में। ठीक है... लेकिन मैं कहता हूँ, बस इतना ही।”
“बकवास!” वह अचानक अपनी तल्लीनता से बाहर आते हुए चिल्लाया। “देखो, पहले पिस्तौलों का मामला सुलझा लेते हैं। मुझे वापस दे दो। ये लो तुम्हारा पैसा... क्योंकि मुझे इनकी बहुत ज़रूरत है... और मेरे पास एक मिनट भी नहीं है।”
और उसने बंडल में से सबसे ऊपर वाला स्वर निकालकर प्योत्र की ओर बढ़ाया।
इलिच.
लेकिन मेरे पास पर्याप्त खुले पैसे नहीं होंगे। क्या आपके पास कम नहीं हैं?
“नहीं,” मित्या ने बंडल को दोबारा देखते हुए कहा, मानो उसे पता ही न हो
अपने ही शब्दों पर भरोसा करते हुए उसने सबसे ऊपर के दो-तीन पन्नों को पलट दिया।
“नहीं, ये सब एक जैसे हैं,” उन्होंने आगे कहा और फिर से जिज्ञासा भरी नजरों से देखा।
प्योत्र इल्यिच।
“तुम इतने अमीर कैसे हो गए?” दूसरे ने पूछा। “रुको, मैं अपना भेज देता हूँ।”
"लड़के, प्लॉट्निकोव की दुकान पर चलो, वे देर से खुलते हैं—देखते हैं कहीं वे इसे बदल तो नहीं देते। इधर आओ, मीशा!" उसने गलियारे में आवाज़ लगाई।
“प्लोटनिकोव की दुकान पर जाओ—बेहतरीन!” मित्या चिल्लाया, मानो उसे किसी बात का गहरा एहसास हुआ हो।
विचार आया। "मिशा," उसने अंदर आते ही लड़के की ओर मुड़कर कहा, "देखो, प्लॉट्निकोव के यहाँ जाओ और उन्हें बताओ कि दिमित्री फ्योदोरोविच ने तुम्हें नमस्कार भेजा है और वह तुरंत आ रहे हैं... लेकिन सुनो, सुनो, उन्हें कहो कि मेरे आने से पहले तीन दर्जन शैंपेन की बोतलें तैयार रखें, और उन्हें वैसे ही पैक कर दें जैसे मोक्रो ले जाने के लिए रखी थीं। मैंने तब चार दर्जन बोतलें अपने साथ ली थीं," उसने (अचानक प्योत्र इल्यिच को संबोधित करते हुए) कहा; "वे सब जानते हैं, तुम चिंता मत करो, मिशा," उसने फिर लड़के की ओर मुड़कर कहा। “रुको, सुनो; उनसे कहो कि पनीर, स्ट्रासबर्ग पाई, स्मोक्ड मछली, हैम, कैवियार और जो कुछ भी उनके पास है, सब कुछ, सौ रूबल तक या पहले की तरह एक सौ बीस रूबल तक, सब कुछ डाल दें... लेकिन रुको: मिठाई, नाशपाती, तरबूज, दो या तीन या चार—नहीं, एक तरबूज ही काफी है—और चॉकलेट, कैंडी, टॉफी, फोंडेंट; वास्तव में, जो कुछ भी मैं पहले मोक्रो ले गया था, शैम्पेन के साथ तीन सौ रूबल का... उसे फिर से बिल्कुल वैसा ही होने दो। और याद रखना, मीशा, अगर तुम्हारा नाम मीशा है—उसका नाम मीशा है, है ना?” वह फिर से प्योत्र इल्यिच की ओर मुड़ा।

“एक मिनट रुकिए,” प्रोत्र इल्यिच ने बीच में दखल देते हुए कहा, उनकी बात सुनते और देखते हुए।
बेचैनी से बोला, "बेहतर होगा कि तुम खुद जाकर उन्हें बता दो। वो सब गड़बड़ कर देगा।"
“वो करेगा, मुझे लगता है वो करेगा! अरे, मीशा! अरे, मैं तो तुम्हें चूमने ही वाला था।”
कमीशन... अगर तुमने कोई गलती नहीं की, तो तुम्हारे लिए दस रूबल हैं, जाओ जल्दी करो... शैंपेन सबसे ज़रूरी है, शैंपेन लाओ। और ब्रांडी भी, और लाल और सफेद शराब, और वो सब जो मैंने तब पिया था... उन्हें पता है मैंने तब क्या पिया था।
“लेकिन सुनो!” प्योत्र इल्यिच ने कुछ अधीरता से बीच में ही टोकते हुए कहा। “मैं कहता हूँ, चलो
उसे बस दौड़कर पैसे बदलवाने और उन्हें दुकान बंद न करने के लिए कहने को कहो, और तुम जाकर उन्हें बता दो... उसे अपना नोट दे दो। चलो, मीशा! पूरी ताकत से आगे बढ़ो!
प्योत्र इल्यिच ने मीशा को जानबूझकर जल्दी विदा किया, क्योंकि लड़का
वह मुंह और आंखें चौड़ी करके खड़ा रहा, जाहिर तौर पर मित्या के आदेशों को कुछ भी समझ नहीं पा रहा था, अपने खून से सने चेहरे और नोट पकड़े हुए कांपती हुई खून से सनी उंगलियों को आश्चर्य और आतंक से घूर रहा था।
“अच्छा, अब आओ और नहा लो,” प्योत्र इल्यिच ने सख्ती से कहा। “पैसे डालो।”
मेज पर या फिर अपनी जेब में... ठीक है, चलो। लेकिन अपना कोट उतार दो।
और उसका कोट उतारने में उसकी मदद करते हुए, वह फिर चिल्लाया: "देखो, तुम्हारा कोट भी खून से सना हुआ है!"
“वो... वो कोट नहीं है। बस आस्तीन पर थोड़ा सा है... और
“यह तो बस यहीं है जहाँ रुमाल पड़ा था। यह ज़रूर भीग गया होगा। मैं फेन्या के यहाँ रुमाल पर बैठ गया था, और खून उसमें से रिस गया होगा,” मित्या ने एक पल में ही चौंका देने वाली बचकानी नासमझी के साथ समझाया। प्योत्र इल्यिच भौंहें चढ़ाकर सुनता रहा।
"अच्छा, तुमने कुछ तो गड़बड़ की होगी; तुमने कुछ तो किया ही होगा।"
“किसी से लड़ रहा हूँ,” उसने बुदबुदाते हुए कहा।
उन्होंने धोना शुरू किया। प्योत्र इल्यिच ने घड़ा पकड़ा और पानी उंडेल दिया।
मित्या ने हड़बड़ी में अपने हाथों पर मुश्किल से साबुन लगाया (उसके हाथ कांप रहे थे, और प्योत्र इल्यिच को यह बात बाद में याद आई)। लेकिन उस नौजवान अधिकारी ने ज़ोर देकर कहा कि वह उसके हाथों पर अच्छी तरह साबुन लगाए और उन्हें खूब रगड़े। समय बीतने के साथ-साथ मित्या पर उसका प्रभाव बढ़ता ही जा रहा था। यह भी उल्लेखनीय है कि वह एक दृढ़ चरित्र का युवक था।
“देखो, तुम्हारे नाखून साफ नहीं हैं। अब अपना चेहरा रगड़ो; यहाँ, पर
तुम्हारे कनपटी, तुम्हारे कान के पास... क्या तुम इस कमीज़ में जाओगे? कहाँ जा रहे हो? देखो, तुम्हारी दाहिनी आस्तीन का पूरा कफ खून से सना हुआ है।
“हाँ, ये तो पूरी तरह से खून से सना हुआ है,” मित्या ने अपनी कमीज़ की कलाई की ओर देखते हुए कहा। “तो फिर अपनी कमीज़ बदल लो।”
“मेरे पास समय नहीं है। आप देखिए, मैं...” मित्या ने वही बात दोहराई।
बड़ी मासूमियत से, तौलिए से अपना चेहरा और हाथ पोंछते हुए, उसने अपना कोट पहन लिया। "मैं इसे कलाई से मोड़ लूंगा। कोट के नीचे दिखेगा नहीं... देखा!"
अब बताओ, तुम कौन सा खेल खेल रहे थे? क्या तुम लड़ रहे थे?
किसी के साथ? फिर से सराय में, पहले की तरह? क्या तुमने उस कप्तान को फिर से पीटा है?” प्योत्र इल्यिच ने उससे फटकारते हुए पूछा। “अब तुम किसे पीट रहे हो... या शायद मार रहे हो?”
“बकवास!” मित्या ने कहा।
“‘बकवास’ क्यों?”
“चिंता मत करो,” मित्या ने कहा और अचानक हंस पड़ा। “मैंने एक पुराने को तोड़ दिया।”
अभी बाजार में एक महिला।
“कुचल दिया? एक बूढ़ी औरत?”
“एक बूढ़ा आदमी!” मित्या ने प्योत्र इल्यिच की आँखों में सीधे देखते हुए कहा।

हंसते हुए और उस पर चिल्लाते हुए मानो वह बहरा हो।
"अरे बाप रे! एक बूढ़ी औरत, एक बूढ़ा आदमी... क्या तुमने किसी को मार डाला है?"
एक?"
“हमने इसे मनगढ़ंत बनाया। हमारा झगड़ा हुआ और हमने इसे मनगढ़ंत बना लिया। एक ऐसी जगह पर जिसे मैं जानता हूँ।”
हम दोस्त बनकर बिछड़े। एक मूर्ख... उसने मुझे माफ कर दिया है... अब तक तो उसने मुझे माफ कर ही दिया होगा... अगर वह उठ खड़ा होता, तो मुझे माफ नहीं करता”— मित्या ने अचानक आँख मारी—“बस उसे धिक्कार है, तुम जानते हो, मैं कहता हूँ, प्योत्र इल्यिच, उसे धिक्कार है! उसकी चिंता मत करो! मैं अभी नहीं करना चाहता!” मित्या ने दृढ़ता से कहा।
“तुम्हें हर किसी से झगड़ा करने की क्या ज़रूरत है? . . . ठीक वैसे ही जैसे तुमने उस कप्तान से किसी छोटी-मोटी बात पर झगड़ा किया था . . . तुम लड़ रहे थे और अब मौज-मस्ती करने निकल पड़े हो—ये तो तुम्हारी पुरानी आदत है! तीन दर्जन शैम्पेन—ये सब तुम्हें किसलिए चाहिए?”
“शाबाश! अब मुझे पिस्तौलें दो। कसम से, मेरे पास अब समय नहीं है।
"मैं तुमसे बात करना चाहता हूँ, मेरे प्यारे बेटे, लेकिन मेरे पास समय नहीं है। और बात करने की कोई ज़रूरत भी नहीं है, अब बहुत देर हो चुकी है। मेरा पैसा कहाँ है? मैंने उसे कहाँ रख दिया है?" वह चिल्लाया और अपने हाथ जेबों में डाल दिए।
“तुमने इसे मेज पर रखा था... खुद... ये रहा। क्या तुम भूल गए थे?”
लगता है, पैसा तुम्हारे लिए मिट्टी या पानी जैसा है। ये लो तुम्हारी पिस्तौलें। अजीब बात है, शाम छह बजे तुमने इन्हें दस रूबल में गिरवी रखा था, और अब तुम्हारे पास हज़ारों हैं। दो-तीन ही सही।
“तीन, बिल्कुल,” मित्या हँसते हुए बोला और नोटों को बगल की जेब में ठूंस दिया।
उसकी पतलून का।
“तुम इसे ऐसे ही खो दोगे। क्या तुम्हें कोई सोने की खान मिल गई है?”
“खदानें? सोने की खदानें?” मित्या ने पूरी ताकत से चिल्लाते हुए कहा और
वह ज़ोर से हंसने लगा। “पेरहोतिन, क्या तुम खानों में जाना चाहोगे? यहाँ एक महिला है जो तुम्हारे लिए तीन हज़ार रुपये देगी, बस तुम चले जाओ। उसने मेरे लिए भी ऐसा किया था, उसे सोने की खानों से बहुत लगाव है। क्या तुम मैडम होहलाकोव को जानते हो?”
मैं उसे नहीं जानती, लेकिन मैंने उसके बारे में सुना है और उसे देखा है। क्या वह सचमुच...
“क्या उसने तुम्हें तीन हजार दिए? क्या उसने सचमुच ऐसा किया?” प्योत्र इल्यिच ने उसे संदेह भरी नजरों से देखते हुए कहा।
“कल जैसे ही सूरज उगेगा, जैसे ही फ़ीबस, जो हमेशा जवान रहता है,
अगर वो ऊपर की ओर उड़ती हुई ईश्वर की स्तुति और महिमा कर रही है, तो तुम मैडम होहलाकोव के पास जाओ और उनसे पूछो कि क्या उन्होंने वो तीन हजार रुपये दिए थे या नहीं। पता लगाने की कोशिश करो।
मुझे नहीं पता कि आपके क्या संबंध हैं... चूंकि आप इसे इतने सकारात्मक ढंग से कह रहे हैं, इसलिए मैं मान लो उसने तुम्हें पैसे दे दिए। तुम्हारे हाथ में पैसे हैं, लेकिन साइबेरिया जाने के बजाय तुम उन्हें सारा खर्च कर रहे हो... अब तुम असल में कहाँ जा रहे हो?
“मोक्रो को।”
“मोक्रो के लिए? लेकिन अभी तो रात है!”
“एक समय था जब लड़के के पास सब कुछ था, अब उसके पास कुछ नहीं है,” मित्या अचानक चिल्लाया।
“कैसा ‘कुछ नहीं’? तुम उन हजारों के बारे में ऐसा कह रहे हो!”
मैं हजारों की बात नहीं कर रहा हूँ। हजारों की तो बात ही छोड़ो! मैं तो बात कर रहा हूँ...
महिला पात्र।
स्त्री का हृदय चंचल होता है
विश्वासघाती और बुराइयों से भरा हुआ;
मैं यूलिसिस से सहमत हूँ। वह यही कहता है।
"मुझे आपकी बात समझ नहीं आई!"

क्या मैं नशे में हूँ?
"नशे में तो नहीं था, लेकिन हालत और भी खराब थी।"
“मैं आत्मा से मदहोश हूँ, प्योत्र इल्यिच, आत्मा से मदहोश! लेकिन इतना ही काफी है!”
तुम क्या कर रहे हो, पिस्तौल में गोलियां भर रहे हो?
मैं पिस्तौल लोड कर रहा हूँ।
पिस्तौल का खोलकर, मित्या ने वास्तव में बारूद का डिब्बा खोल दिया, और
उसने सावधानीपूर्वक पाउडर छिड़का और उसे अंदर ठूंस दिया। फिर उसने गोली ली और उसे डालने से पहले मोमबत्ती के सामने दो उंगलियों में पकड़कर रखा।
"तुम गोली को क्यों देख रहे हो?" प्योत्र इल्यिच ने उसे देखते हुए पूछा।
बेचैन जिज्ञासा के साथ।
“अरे वाह! अगर तुम्हारा इरादा उस गोली को अपने दिमाग में मारने का था, तो क्या होता?”
आप इसे देखते हैं या नहीं?
“इसे क्यों देखना चाहिए?”
"यह मेरे दिमाग में जा रहा है, इसलिए यह देखना दिलचस्प होगा कि यह क्या है।"
पसंद है। लेकिन ये तो मूर्खता है, पल भर की मूर्खता। अब ये हो गया,” उसने गोली अंदर डालते हुए और रॉड से उसे पूरी तरह ठोकते हुए कहा। “प्योत्र इल्यिच, मेरे प्यारे दोस्त, ये सब बकवास है, पूरी तरह बकवास, और काश तुम्हें पता होता कि ये कितनी बकवास है! मुझे अभी एक छोटा सा कागज़ का टुकड़ा दो।”
“ये लो कुछ कागज।”
“नहीं, एक साफ नया कागज। बिल्कुल सही।” और मेज से कलम उठाकर, मित्या ने तेजी से दो पंक्तियाँ लिखीं, मोड़कर।
उसने कागज को चार टुकड़ों में फाड़ा और अपनी जैकेट की जेब में डाल लिया। उसने पिस्तौलें केस में रखीं, उसे बंद किया और हाथ में ही रखा। फिर उसने प्योत्र इल्यिच की ओर धीमी, विचारशील मुस्कान के साथ देखा।
अब चलिए चलते हैं।
हम कहाँ जा रहे हैं? नहीं, एक मिनट रुको... क्या तुम सोच रहे हो कि...
"शायद उस गोली को तुम्हारे दिमाग में डाल देंगे?" प्योत्र इल्यिच ने बेचैनी से पूछा।
मैं गोली के बारे में मज़ाक कर रहा था! मैं जीना चाहता हूँ। मुझे ज़िंदगी से प्यार है! आप शायद...
मुझे इस बात का पूरा यकीन है। मुझे सुनहरे बालों वाला फोबस और उसकी गर्मजोशी भरी रोशनी बहुत पसंद है... प्यारे प्योत्र इल्यिच, क्या आप जानते हैं कि एक तरफ कैसे हटना है?
“‘एक तरफ हट जाने’ से आपका क्या मतलब है?”
“रास्ता बनाना। एक प्रिय प्राणी के लिए, और एक ऐसे प्राणी के लिए जिससे मुझे घृणा है, रास्ता बनाना। और जिसे मैं घृणा करता हूँ, उसे प्रिय बना देना—रास्ता बनाने का यही अर्थ है! और उनसे कहना: ईश्वर आपका भला करे, आप अपने रास्ते जाओ, आगे बढ़ो, जबकि मैं...”
"जबकि तुम?"
बस, इतना काफी है, चलिए चलते हैं।
“मैं कसम खाता हूँ। मैं किसी को कहूँगा कि वह तुम्हें वहाँ जाने से रोके,” उसने कहा।
प्योत्र इल्यिच ने उसकी ओर देखते हुए कहा, "अब तुम मोक्रोए क्यों जा रहे हो?"
“वहाँ एक महिला है, एक महिला। बस इतना ही काफी है तुम्हारे लिए। तुम चुप हो जाओ।”
ऊपर।"
सुनो, तुम चाहे कितने भी क्रूर क्यों न हो, मुझे तुम हमेशा से पसंद रहे हो... मुझे ऐसा लगता है
चिंतित।"
“धन्यवाद, मेरे दोस्त। तुम कहते हो कि मैं जंगली हूँ। जंगली, जंगली! बस यही तो है।”
मैं हमेशा यही कहता हूं। जाहिल लोग! अरे, मीशा आ गया! मैं उसे भूल ही गया था।
मीशा हड़बड़ी में कुछ खुले पैसे लेकर अंदर भागी और रिपोर्ट दी

प्लॉट्निकोव के घर पर हर कोई चहल-पहल में था; “वे बोतलें, मछली और चाय नीचे ला रहे हैं; सब कुछ अभी तैयार हो जाएगा।” मित्या ने दस रूबल लिए और प्योत्र इल्यिच को दे दिए, फिर एक और दस रूबल का नोट मीशा की ओर उछाल दिया।
“ऐसा करने की हिम्मत मत करो!” प्योत्र इल्यिच चिल्लाया। “मैं इसे बर्दाश्त नहीं करूँगा।”
मेरे घर में, ये एक बुरी, मनोबल गिराने वाली आदत है। अपने पैसे संभाल कर रखो। लो, यहाँ रखो, क्यों बर्बाद कर रहे हो? ये कल काम आ जाएँगे, और मुझे यकीन है कि तुम मुझसे फिर से दस रूबल उधार लेने आओगे। तुम नोट अपनी जेब में क्यों रखते रहते हो? अरे, खो जाओगे!
“मैं कहता हूँ, मेरे प्यारे दोस्त, चलो साथ में मोक्रो चलते हैं।”
मुझे क्या चुनना चाहिए?
मैं कहता हूँ, चलो एक बोतल खोलते हैं और जीवन के लिए पीते हैं! मैं पीना चाहता हूँ, और खासकर तुम्हारे साथ पीने के लिए। मैंने तुम्हारे साथ कभी नहीं पिया है, है ना?
“बहुत अच्छा, हम ‘महानगर’ जा सकते हैं। मैं अभी वहीं जा रहा था।”
“मेरे पास इसके लिए समय नहीं है। चलो प्लॉट्निकोव के घर पर, पीछे वाले कमरे में बैठकर पीते हैं।”
क्या मैं आपसे एक पहेली पूछूं?
"पूछ लेना।"
मित्या ने अपनी जैकेट की जेब से कागज का टुकड़ा निकाला और उसे खोला।
और उसने उसे दिखाया। बड़े और स्पष्ट अक्षरों में लिखा था: "मैं अपने पूरे जीवन के लिए खुद को दंडित करता हूँ, मैं अपने पूरे जीवन भर खुद को दंडित करता हूँ!"
“मैं किसी से जरूर बात करूंगा, मैं तुरंत जाऊंगा,” प्योत्र इल्यिच ने कहा।
लेख पढ़ने के बाद।
“तुम्हारे पास समय नहीं होगा, प्यारे लड़के, आओ और एक ड्रिंक ले लो। मार्च!”
प्लॉट्निकोव की दुकान गली के कोने पर थी, ठीक बगल वाली दुकान से एक घर छोड़कर।
प्योत्र इल्यिच की दुकान। यह हमारे कस्बे की सबसे बड़ी किराने की दुकान थी, और किसी भी तरह से खराब नहीं थी, क्योंकि यह कुछ धनी व्यापारियों की थी। वे सेंट पीटर्सबर्ग की किसी भी दुकान में मिलने वाली हर चीज़ रखते थे, हर तरह का किराना सामान, "एलिसेयेव भाइयों द्वारा बोतलबंद शराब", फल, सिगार, चाय, कॉफी, चीनी, इत्यादि। दुकान में हमेशा तीन दुकानदार और दो छोटे-मोटे काम करने वाले लड़के काम करते थे। हालाँकि हमारे इलाके में गरीबी बढ़ गई थी, जमींदार चले गए थे, और व्यापार भी खराब हो गया था, फिर भी किराने की दुकानें पहले की तरह ही फल-फूल रही थीं, हर साल समृद्धि बढ़ती जा रही थी; उनके सामान के खरीदार भरपूर थे।
वे दुकान में बेसब्री से मित्या का इंतजार कर रहे थे। उनके मन में स्पष्ट विचार थे।
लोगों को याद था कि कैसे उसने तीन-चार हफ्ते पहले सैकड़ों रूबल की शराब और तरह-तरह का सामान नकद में खरीदा था (ज़ाहिर है, वे उसे उधार पर कुछ भी नहीं देते थे)। उन्हें याद था कि तब भी और अब भी उसके हाथ में सौ-सौ रूबल के नोटों का एक बंडल होता था, जिसे वह बिना मोलभाव किए, बिना सोचे-समझे, या इस बात की परवाह किए बिना कि इतनी शराब और खाने-पीने का सामान उसके किस काम आएगा, बेतरतीब ढंग से लुटा देता था। पूरे कस्बे में यह कहानी फैली हुई थी कि ग्रुशेंका के साथ मोक्रो जाते समय उसने "एक ही रात और अगले दिन तीन हज़ार रूबल खर्च कर दिए थे, और बिना एक पैसा बचे वापस लौटा था।" उसने अपने साथ खानाबदोशों का एक पूरा समूह (जो उस समय हमारे पड़ोस में डेरा डाले हुए थे) को ले लिया था, जिन्होंने दो दिनों तक उससे जमकर पैसे लिए, जब वह नशे में था, और खूब महंगी शराब पी। लोग मित्या पर हंसते हुए बताते थे कि कैसे उसने गंदे हाथों वाले किसानों को शराब पिलाई थी और गांव की महिलाओं और लड़कियों को मिठाइयों और स्ट्रासबर्ग पाई की दावत दी थी। हालांकि मित्या के सामने हंसना थोड़ा जोखिम भरा था, फिर भी उसकी पीठ पीछे खूब हंसी-मजाक होता था, खासकर सराय में, जब वह खुद बड़ी भोली-भाली तरह से सार्वजनिक रूप से स्वीकार करता था कि इस "कारनामे" से उसे ग्रुशेंका से बस इतना ही मिला था कि "उसके पैर चूमने की इजाजत मिली थी, और यही सबसे बड़ी बात थी जो उसने उसे करने दी थी।"
जब तक मित्या और प्योत्र इल्यिच दुकान पर पहुँचे, तब तक उन्हें वहाँ एक गाड़ी मिली।

तीन घोड़े घंटियों से बंधे हुए एक साथ जुते हुए थे, और सारथी आंद्रेई प्रवेश द्वार पर मित्या का इंतज़ार कर रहा था। दुकान में उन्होंने राशन का एक डिब्बा लगभग पूरा पैक कर लिया था, और केवल मित्या के आने का इंतज़ार कर रहे थे ताकि उसे ठोककर गाड़ी में रख सकें। प्योत्र इल्यिच चकित रह गया।
“यह गाड़ी इतनी जल्दी में कहाँ से आ गई?” उसने मित्या से पूछा। “मैं तुम्हारी तरफ दौड़ते हुए आया और रास्ते में एंड्री से मिला, और मैंने उसे सीधे यहाँ लाने को कहा।”
दुकान। समय बर्बाद करने का कोई समय नहीं है। पिछली बार मैं टिमोफे के साथ गाड़ी चला रहा था, लेकिन टिमोफे अब उस चुड़ैल के साथ मुझसे पहले चला गया है। क्या हमें बहुत देर हो जाएगी, एंड्री?
वे हमसे ज़्यादा से ज़्यादा एक घंटा पहले ही वहाँ पहुँचेंगे, शायद उससे भी कम समय में।
मैंने टिमोफे को शुरू करने के लिए तैयार कर दिया है। मुझे पता है कि वह कैसे दौड़ेगा। उनकी रफ़्तार हमारी रफ़्तार नहीं होगी, दिमित्री फ्योदोरोविच। ऐसा कैसे हो सकता है? वे एक घंटा पहले नहीं पहुँचेंगे!” लंबे कद के, लाल बालों वाले, अधेड़ उम्र के ड्राइवर आंद्रेई ने, जो पूरी स्कर्ट वाला कोट पहने हुए था और हाथ में कफ्तान लिए हुए था, गर्मजोशी से जवाब दिया।
"अगर हम उनसे सिर्फ एक घंटा पीछे हैं तो वोडका के लिए पचास रूबल लगेंगे।"
“मैं समय का हकदार हूँ, दिमित्री फ्योदोरोविच। उफ़, वे आधे भी नहीं होंगे।”
हमसे एक घंटा पहले की बात है, एक घंटे की तो बात ही छोड़िए।
हालांकि मित्या चीजों की देखरेख में व्यस्त रहता था, फिर भी वह अपने आदेश देता था।
अजीबोगरीब ढंग से, मानो असंबद्ध और असंगत रूप से। उसने एक वाक्य शुरू किया और उसका अंत भूल गया। प्योत्र इल्यिच को उसकी मदद के लिए आगे आना पड़ा।
“चार सौ रूबल के बराबर, चार सौ रूबल से कम नहीं।”
“कीमत उतनी ही होनी चाहिए जितनी तब थी,” मित्या ने आदेश दिया। “चार दर्जन शैंपेन, एक बोतल भी कम नहीं।”
“तुम्हें इतनी सारी चीज़ों की क्या ज़रूरत है? ये किसलिए हैं? यहीं रहो!” प्योत्र चिल्लाया।
इल्यिच। “यह डिब्बा क्या है? इसमें क्या है? इसमें चार सौ रूबल तो नहीं होंगे?”
उन दखलंदाज़ दुकानदारों ने चिकनी-चुपड़ी विनम्रता से समझाना शुरू किया कि
पहले बक्से में केवल आधा दर्जन शैंपेन की बोतलें थीं, और केवल "सबसे आवश्यक वस्तुएँ," जैसे नमकीन, मिठाई, टॉफी आदि। लेकिन ऑर्डर किए गए सामान का मुख्य भाग, पिछली बार की तरह, तीन घोड़ों वाली एक विशेष गाड़ी में पैक करके भेजा जाएगा, जो पूरी गति से चलेगी, ताकि वह दिमित्री फ्योदोरोविच के पहुँचने से एक घंटे से अधिक देरी से न पहुँचे।
“एक घंटे से ज़्यादा नहीं! एक घंटे से ज़्यादा नहीं! और ज़्यादा टॉफ़ी डालो।”
और फ़ॉन्डैंट। वहाँ की लड़कियाँ इसे बहुत पसंद करती हैं,” मित्या ने जोश में कहा।
“फॉन्डैंट तो ठीक हैं। लेकिन चार दर्जन से आपको क्या चाहिए?”
“शैम्पेन? एक ही काफी होगी,” प्योत्र इल्यिच ने लगभग गुस्से में कहा। उन्होंने मोलभाव शुरू कर दिया, सामान का बिल मांगा और संतुष्ट होने से इनकार कर दिया। लेकिन वे सिर्फ सौ रूबल ही बचा पाए। अंत में यह तय हुआ कि केवल तीन सौ रूबल का सामान ही भेजा जाए।
“खैर, तुम भाड़ में जाओ!” प्योत्र इल्यिच ने दोबारा सोचते हुए कहा।
इससे मुझे क्या लेना-देना? अपने पैसे बर्बाद कर दो, क्योंकि इसमें तुम्हारा कुछ खर्च नहीं हुआ है।
“इस तरफ, मेरे अर्थशास्त्री, इस तरफ, गुस्सा मत करो।” मित्या ने उसे खींचा।
दुकान के पीछे वाले कमरे में। “वे हमें यहीं एक बोतल देंगे। हम इसे चखेंगे। उफ़, प्योत्र इल्यिच, मेरे साथ आओ, क्योंकि तुम एक अच्छे इंसान हो, बिल्कुल वैसे ही जैसे मुझे पसंद हैं।”
मित्या एक छोटी सी मेज के सामने, एक बेंत की कुर्सी पर बैठ गया, जो एक चादर से ढकी हुई थी।
गंदा डिनर नैपकिन। प्योत्र इल्यिच सामने बैठ गए, और थोड़ी ही देर में शैंपेन आ गई, और सज्जनों को सीपियाँ परोसने का सुझाव दिया गया। "बेहतरीन सीपियाँ, आखिरी बैच की।"
“सीपियों को लटका दो। मैं उन्हें नहीं खाता। और हमें किसी चीज की जरूरत नहीं है,” चिल्लाते हुए उसने कहा।
प्योत्र इल्यिच ने लगभग क्रोधित होकर कहा।

“सीप खाने का समय नहीं है,” मित्या ने कहा। “और मुझे भूख भी नहीं है। क्या आपको भूख है?”
“जान लो, दोस्त,” उसने अचानक भावुक होकर कहा, “मुझे यह सारी अव्यवस्था कभी पसंद नहीं आई।”
किसे पसंद आएगा? किसानों के लिए तीन दर्जन शैंपेन, मेरी तरफ से
वाह, ये तो किसी को भी गुस्सा दिलाने के लिए काफी है!
“मेरा मतलब वो नहीं है। मैं एक उच्च कोटि की बात कर रहा हूँ। कोई कोटि नहीं है।”
मुझमें कोई उच्च कोटि नहीं थी। लेकिन... वो सब खत्म हो गया। अब इसके लिए शोक करने की कोई जरूरत नहीं। बहुत देर हो चुकी है! मेरा पूरा जीवन अव्यवस्था से भरा रहा है, और इसे व्यवस्थित करना ही होगा। क्या ये कोई व्यंग्य है?
“तुम बड़बड़ा रहे हो, चुटकुले नहीं बना रहे!”
स्वर्ग में परमेश्वर की महिमा हो,
मुझमें ईश्वर की महिमा हो...
“वो पंक्ति एक बार मेरे दिल से निकली थी, वो कोई पंक्ति नहीं, बल्कि एक आंसू थी...
मैंने इसे खुद बनाया है... लेकिन कप्तान की दाढ़ी खींचते समय नहीं...
"तुम उसे अचानक क्यों बुला रहे हो?"
मैं उसे क्यों बुला रहा हूँ? मूर्खता! हर चीज़ का अंत होता है; हर चीज़ का।
सब बराबर हैं। बस यही बात है।
"मुझे तुम्हारी पिस्तौलें याद आती रहती हैं।"
“ये सब भी मूर्खता है! पियो, और कल्पनाओं में मत खो जाओ। मुझे जीवन से प्यार है। मैंने
मैंने जीवन से हद से ज़्यादा प्यार किया, शर्मनाक हद तक। बस बहुत हो गया! चलो, जीवन के लिए जाम उठाते हैं, मेरे प्यारे, मैं जाम उठाता हूँ। मैं खुद से इतना खुश क्यों हूँ? मैं एक बदमाश हूँ, लेकिन मैं खुद से संतुष्ट हूँ। और फिर भी, यह सोचकर मुझे पीड़ा होती है कि मैं एक बदमाश हूँ, लेकिन खुद से संतुष्ट हूँ। मैं सृष्टि को आशीर्वाद देता हूँ। मैं सीधे ईश्वर और उनकी सृष्टि को आशीर्वाद देने के लिए तैयार हूँ, लेकिन... मुझे एक हानिकारक कीड़े को मारना होगा, कहीं वह रेंगकर दूसरों का जीवन खराब न कर दे... चलो, जीवन के लिए जाम उठाते हैं, मेरे प्यारे भाई। जीवन से बढ़कर कीमती क्या हो सकता है? कुछ नहीं! जीवन के लिए, और रानियों की रानी के लिए!
“चलो जीवन के लिए और अगर तुम चाहो तो तुम्हारी रानी के लिए भी जाम पीते हैं।” उन्होंने एक-एक गिलास पिया। हालाँकि मित्या उत्साहित और भावुक था,
फिर भी वह उदास भी था। ऐसा लग रहा था मानो कोई भारी, असहनीय चिंता उस पर हावी हो रही हो।
“मिशा... ये लो तुम्हारा मिशा! मिशा, इधर आओ, मेरे बच्चे, पियो।”
यह गिलास सुनहरे बालों वाले फोबस को समर्पित है, जो कल सुबह का देवता होगा...
“तुम उसे ये क्यों दे रहे हो?” प्योत्र इल्यिच ने चिढ़कर कहा। “हाँ, हाँ, हाँ, मुझे देने दो! मैं देना चाहता हूँ!”
“मैं—मैं!”
मीशा ने गिलास खाली किया, झुककर प्रणाम किया और बाहर भाग गई।
“उसे बाद में याद रहेगा,” मित्या ने कहा। “औरत, मैं तुमसे प्यार करता हूँ।”
स्त्री! स्त्री क्या है? सृष्टि की रानी! मेरा हृदय उदास है, मेरा हृदय उदास है, प्योत्र इल्यिच। क्या तुम्हें हैमलेट याद है? 'मुझे बहुत खेद है, अच्छे होरेशियो! हाय, बेचारा यॉरिक!' शायद मैं ही यॉरिक हूँ? हाँ, मैं अब यॉरिक हूँ, और बाद में एक खोपड़ी।
प्योत्र इल्यिच चुपचाप सुनता रहा। मित्या भी कुछ देर चुप रहा। उसने दुकानदार से अनायास ही पूछा, "यहाँ कौन सा कुत्ता है?"
कोने में बैठी एक प्यारी सी छोटी सी गोद में बैठने वाली कुतिया, जिसकी आंखें काली थीं, पर मेरी नज़र पड़ी।
“यह मालकिन वरवारा एलेक्सीवना की है,” क्लर्क ने उत्तर दिया।
वह इसे यहाँ लाई और भूल गई। इसे उसे वापस ले जाना होगा।
“मैंने रेजिमेंट में ऐसा ही एक देखा था...” मित्या ने स्वप्निल स्वर में बुदबुदाया।
“बस उसी का पिछला पैर टूटा हुआ था... वैसे, प्योत्र इल्यिच, मैं आपसे पूछना चाहता था: क्या आपने कभी अपने जीवन में कुछ चुराया है?”

“क्या सवाल है!”
“ओह, मेरा ऐसा कोई इरादा नहीं था। किसी की जेब से, आप जानते हैं। मैं
मेरा मतलब सरकारी पैसों से नहीं है, हर कोई उसे चुराता है, और निस्संदेह आप भी ऐसा करते होंगे...
तुम शैतान के पास जाओगे।
मैं दूसरों के पैसों की बात कर रहा हूँ। सीधे जेब से चोरी करना?
पर्स से निकाला है, है ना?
“जब मैं नौ साल का था, तब मैंने अपनी माँ से बीस कोपेक चुरा लिए थे।
मैंने उसे चुपके से मेज से उठाया और अपने हाथ में कसकर पकड़ लिया।
"अच्छा, तो फिर क्या हुआ?"
“अरे, कुछ नहीं। मैंने इसे तीन दिन तक छिपाए रखा, फिर मुझे शर्म महसूस हुई, मैंने कबूल कर लिया, और मैंने इसे वापस कर दिया।
“और फिर क्या?”
“स्वाभाविक रूप से मेरी पिटाई हुई। लेकिन आप क्यों पूछ रहे हैं? क्या आपने कुछ चुराया है?”
“मैंने किया है,” मित्या ने शरारती अंदाज में आँख मारते हुए कहा।
“तुमने क्या चुराया है?” प्योत्र इल्यिच ने उत्सुकता से पूछा। “मैंने नौ साल की उम्र में अपनी माँ से बीस कोपेक चुराए थे, और
मैंने इसे तीन दिन बाद लौटा दिया।
जैसे ही उसने यह कहा, मित्या अचानक उठ खड़ा हुआ।
“दिमित्री फ्योदोरोविच, क्या आप अभी नहीं आएंगे?” एंड्री ने पुकारा।
दुकान का दरवाजा।
“क्या तुम तैयार हो? हम आ रहे हैं!” मित्या ने कहना शुरू किया। “कुछ और आखिरी शब्द।”
और... एंड्री, शुरुआत में एक गिलास वोदका। उसे थोड़ी ब्रांडी भी दे दो! वो डिब्बा (जिसमें पिस्तौलें हैं) मेरी सीट के नीचे रख दो। अलविदा, प्योत्र इल्यिच, मेरे खिलाफ किए गए बुरे कामों को याद मत रखना।
लेकिन आप कल वापस आ रहे हैं?
"बिल्कुल।"
“क्या आप अभी यह छोटा सा बिल चुका देंगे?” क्लर्क ने आगे बढ़कर कहा। “ओह, जी हाँ, बिल। बिल्कुल।”
उसने अपनी जेब से नोटों का बंडल फिर से निकाला और उसमें से तीन नोट निकाले।
सौ रूबल लेकर उसने काउंटर पर फेंके और जल्दी से दुकान से बाहर भाग गया। हर कोई उसके पीछे-पीछे निकला, झुककर उसे शुभकामनाएं दीं। एंड्री, जो अभी-अभी पी गई ब्रांडी के कारण खांस रहा था, डिब्बे पर उछल पड़ा। लेकिन मित्या अभी अपनी जगह पर बैठा ही था कि अचानक, आश्चर्य से, उसने अपने सामने फेन्या को देखा। वह हांफती हुई दौड़ी, उसके सामने हाथ जोड़कर रोई और उसके पैरों पर बैठ गई।
“दिमित्री फ्योदोरोविच, प्रिय भले दिमित्री फ्योदोरोविच, मुझे नुकसान मत पहुँचाओ।”
मालकिन। और मैंने ही तुम्हें इसके बारे में सब कुछ बताया था... और उसकी हत्या मत करो, वह पहले आया था, वह उसका है! अब उसकी शादी अग्रफेना अलेक्जेंड्रोवना से होगी। इसीलिए वह साइबेरिया से वापस आया है। दिमित्री फ्योदोरोविच, प्रिय, किसी साथी प्राणी की जान मत लो!
“अरे बाप रे! बस इतना ही? तो तुम वहाँ जाकर हंगामा करने वाले हो!”
प्योत्र इल्यिच बुदबुदाया। “अब सब कुछ स्पष्ट है, दिन के उजाले की तरह साफ। दिमित्री फ्योदोरोविच, अगर तुम मर्दों की तरह व्यवहार करना चाहते हो तो मुझे तुरंत अपनी पिस्तौलें दे दो,” उसने मित्या पर चिल्लाते हुए कहा। “क्या तुम सुन रहे हो, दिमित्री?”
पिस्तौलें? ज़रा रुको भाई, मैं उन्हें पूल में फेंक दूँगा।
“सड़क पर,” मित्या ने उत्तर दिया। “फेन्या, उठो, मेरे सामने मत झुको। मित्या किसी को चोट नहीं पहुँचाएगा, वह मूर्ख फिर कभी किसी को चोट नहीं पहुँचाएगा। लेकिन मैं कहता हूँ, फेन्या,” अपनी सीट पर बैठने के बाद वह चिल्लाया। “मैंने अभी तुम्हें चोट पहुँचाई है, इसलिए मुझे माफ़ कर दो और मुझ पर दया करो, एक बदमाश को माफ़ कर दो... लेकिन अगर तुम नहीं भी करती हो तो कोई बात नहीं। अब सब एक जैसा है। अब, एंड्री, होश में आओ, पूरी गति से उड़ो!”

एंड्री ने घोड़ों को चाबुक मारा और घंटियाँ बजने लगीं। “अलविदा, प्योत्र इल्यिच! मेरा आखिरी आँसू तुम्हारे लिए है!...”
“वह नशे में नहीं है, लेकिन पागलों की तरह बड़बड़ा रहा है,” प्योत्र इल्यिच ने कहा।
उसे जाते हुए देखकर वह सोचने लगा। उसका आधा मन तो रुककर बची हुई शराब और राशन से भरी गाड़ी देखने का था, क्योंकि वह जानता था कि वे मित्या को धोखा देंगे। लेकिन अचानक खुद पर गुस्सा होकर उसने एक गाली दी और बिलियर्ड्स खेलने के लिए सराय चला गया।
“वह मूर्ख है, हालांकि वह अच्छा आदमी है,” जाते हुए वह बुदबुदाया। “मैंने
मैंने उस अधिकारी के बारे में सुना है, ग्रुशेंका का पुराना प्रेमी। खैर, अगर वो आ गया है... उफ़, ये पिस्तौलें! धिक्कार है! मैं उसकी नर्स नहीं हूँ! उन्हें जो करना है करने दो! वैसे भी, सब बेकार है। ये तो बस झगड़ालू लोग हैं, बस। ये शराब पिएंगे और लड़ेंगे, लड़ेंगे और फिर दोस्त बन जाएंगे। ये ऐसे लोग नहीं हैं जो कुछ असली काम करते हों। 'मैं पीछे हट रहा हूँ, मैं खुद को सज़ा दे रहा हूँ' का क्या मतलब है? सब बेकार है! उसने शराबखानों में नशे में धुत होकर हज़ार बार ऐसे वाक्य चिल्लाए हैं। लेकिन अब वो नशे में नहीं है। 'मन में नशे में'—ये बदमाश लोग बड़े-बड़े जुमलों के शौकीन हैं। क्या मैं उसकी नर्स हूँ? वो ज़रूर लड़ रहा होगा, उसका चेहरा खून से लथपथ था। किसके साथ? मैं 'मेट्रोपोलिस' में पता लगाऊँगी। और उसका रूमाल खून से भीगा हुआ था... वो अभी भी मेरे फर्श पर पड़ा है... धिक्कार है!
वह खराब मूड में सराय पहुंचा और तुरंत एक खेल बना लिया।
खेल ने उसका उत्साह बढ़ा दिया। उसने दूसरा खेल खेला और अचानक अपने एक साथी को बताने लगा कि दिमित्री करामाज़ोव फिर से कुछ पैसे लेने आया था—लगभग तीन हज़ार रूबल, और वह ग्रुशेंका के साथ खर्च करने के लिए फिर से मोक्रो गया था... इस खबर ने उसके सुनने वालों में असाधारण रुचि जगा दी। वे सब इस बारे में बात करने लगे, हँसे नहीं, बल्कि एक अजीब गंभीरता के साथ। उन्होंने खेलना बंद कर दिया।
“तीन हज़ार? लेकिन उसे तीन हज़ार कहाँ से मिले?” सवाल पूछे गए। मैडम होहलकोव के उपहार की कहानी कुछ इस प्रकार थी...
इसे संदेह के साथ स्वीकार किया गया।
“क्या उसने अपने बूढ़े पिता को लूटा नहीं है? यही सवाल है।”
“तीन हजार! इसमें कुछ अजीब बात है।”
“उसने जोर-जोर से शेखी मारी कि वह अपने पिता को मार डालेगा; हम सबने उसे यहीं सुना।”
और उन्होंने तीन हजार की बात की थी...
प्योत्र इल्यिच ने सुना। अचानक ही वह संक्षिप्त और रूखे स्वर में बोलने लगा।
उन्होंने मित्या के चेहरे और हाथों पर लगे खून के बारे में एक शब्द भी नहीं कहा, हालांकि पहले तो उनका इरादा इसके बारे में बोलने का था।
उन्होंने तीसरा खेल शुरू किया, और धीरे-धीरे मित्या के बारे में चर्चा बंद हो गई।
लेकिन तीसरे खेल के अंत तक, प्योत्र इल्यिच को बिलियर्ड्स खेलने की कोई इच्छा नहीं रही; उसने क्यू नीचे रख दिया, और अपने इरादे के अनुसार रात का खाना खाए बिना ही सराय से बाहर निकल गया। जब वह बाज़ार पहुँचा तो असमंजस में खड़ा रह गया, खुद पर आश्चर्य कर रहा था। उसे एहसास हुआ कि वह फ्योदोर पावलोविच के घर जाना चाहता था और पता लगाना चाहता था कि वहाँ कुछ हुआ है या नहीं। "किसी बेवकूफी भरी बात के लिए—जैसा कि निश्चित रूप से होगा—क्या मैं घरवालों को जगाकर हंगामा खड़ा करने जा रहा हूँ? धत् तेरे की! क्या उनकी देखभाल करना मेरा काम है?"
वह बहुत ही खराब मूड में सीधे घर चला गया, और अचानक उसे याद आया
फेन्या। “धिक्कार है! मुझे उससे अभी पूछताछ कर लेनी चाहिए थी,” उसने झुंझलाहट से सोचा, “मुझे सब कुछ पता चल जाता।” उससे बात करने और सच्चाई जानने की इच्छा इतनी प्रबल और ज़ोरदार हो गई कि जब वह आधे रास्ते घर पहुँचा तो अचानक मुड़कर ग्रुशेंका के घर की ओर चल पड़ा। द्वार तक पहुँचकर उसने दस्तक दी। रात के सन्नाटे में दस्तक की आवाज़ ने उसे चौंका दिया और उसे गुस्सा दिला दिया। किसी ने जवाब नहीं दिया; घर में सब सो रहे थे।
“और मैं खूब हंगामा मचाऊंगा!” उसने सकारात्मक भावना के साथ सोचा।

बेचैनी। लेकिन पूरी तरह से चले जाने के बजाय, वह फिर से पूरी ताकत से दस्तक देने लगा, जिससे गली शोरगुल से भर गई।
“नहीं आ रहे? कोई बात नहीं, मैं उन्हें गर्भवती कर दूंगा!” वह हर एक से बुदबुदाता रहा।
वह खुद पर क्रोधित होते हुए दरवाजे पर दस्तक देने लगा, लेकिन साथ ही साथ उसने दरवाजे पर दस्तक देने की गति भी दोगुनी कर दी।

अध्याय 6

"मैं भी आ रहा हूँ!"

लेकिन दिमित्री फ्योदोरोविच तेज़ी से सड़क पर आगे बढ़ रहे थे। मोक्रोए की दूरी बीस वर्स्ट से कुछ ज़्यादा थी, लेकिन आंद्रेई के तीनों घोड़े इतनी तेज़ी से दौड़ रहे थे कि यह दूरी सवा घंटे में तय हो सकती थी। इस तेज़ गति ने मित्या को नई ऊर्जा दी। हवा ताज़ी और ठंडी थी, आकाश में बड़े-बड़े तारे चमक रहे थे। यह वही रात थी, और शायद वही घड़ी थी, जब अलेयोशा धरती पर गिरे थे, और उन्होंने प्रेम से भरे स्वर में इसे हमेशा-हमेशा के लिए प्यार करने की कसम खाई थी।
मित्या की आत्मा में सब कुछ उलझन भरा था, लेकिन हालांकि कई चीजें
उसके दिल में बेचैनी थी, उस पल उसका पूरा अस्तित्व अपनी रानी के लिए तड़प रहा था, जिसके दर्शन के लिए वह आखिरी बार उड़ान भर रहा था। एक बात मैं निश्चित रूप से कह सकता हूँ; उसका दिल एक पल के लिए भी नहीं डगमगाया। शायद लोग मेरी बात पर विश्वास न करें जब मैं कहूँ कि इस ईर्ष्यालु प्रेमी को इस नए प्रतिद्वंद्वी से ज़रा भी ईर्ष्या नहीं हुई, जो मानो धरती से ही प्रकट हुआ था। अगर कोई और होता, तो वह तुरंत ईर्ष्या करता और शायद अपने क्रूर हाथों को फिर से खून से रंग देता। लेकिन जैसे ही वह रात में उड़ रहा था, उसे उस आदमी के लिए कोई ईर्ष्या, कोई दुश्मनी भी महसूस नहीं हुई जो उसका पहला प्रेमी था... यह सच है कि उसने उसे अभी तक देखा नहीं था।
“यहाँ विवाद की कोई गुंजाइश नहीं थी: यह उसका और उसका अधिकार था; यही था।”
उसका पहला प्यार, जिसे वह पाँच साल बाद भी नहीं भूली थी; यानी उसने उसे सिर्फ़ उन पाँच सालों तक ही प्यार किया था, और मैं, इसमें मेरा क्या लेना-देना? मुझे क्या हक़ है? हट जाओ, मित्या, रास्ता दो! मैं अब क्या हूँ? अब सब कुछ खत्म हो गया है, सिवाय उस अधिकारी के—अगर वह न भी आता, तो भी सब कुछ खत्म हो जाता...
यदि वह होता तो ये शब्द मोटे तौर पर उसकी भावनाओं को व्यक्त कर देते।
वह तर्क करने में सक्षम था। लेकिन उस क्षण वह तर्क नहीं कर पा रहा था। उसकी वर्तमान कार्य योजना बिना तर्क के ही उत्पन्न हुई थी। फेन्या के पहले शब्दों से ही यह भावना से उपजी थी और क्षण भर में, अपने सभी परिणामों के साथ, अपना ली गई थी। फिर भी, अपने दृढ़ संकल्प के बावजूद, उसकी आत्मा में एक पीड़ादायक उलझन थी: उसके संकल्प ने उसे शांति नहीं दी। उसके पीछे बहुत कुछ था जो उसे सता रहा था। और कभी-कभी उसे यह सोचना अजीब लगता था कि उसने कलम और कागज से अपनी मृत्यु का फैसला खुद लिखा है: "मैं खुद को दंडित करता हूँ," और कागज उसकी जेब में तैयार पड़ा था; पिस्तौल भरी हुई थी; उसने पहले ही तय कर लिया था कि अगली सुबह वह "सुनहरे बालों वाले फोबस" की पहली गर्म किरण का सामना कैसे करेगा।
फिर भी वह अतीत से, उन सभी चीजों से जो उसने पीछे छोड़ दी थीं, पूरी तरह से छुटकारा नहीं पा सका। और यह बात उसे अंदर ही अंदर तड़पा रही थी। वह बुरी तरह से दुखी था, और यह सोच उसके दिल में निराशा भर रही थी। एक पल के लिए उसके मन में आया कि वह एंड्री को रोक दे, गाड़ी से कूद जाए, अपनी भरी हुई पिस्तौल निकाल ले और भोर का इंतज़ार किए बिना सब कुछ खत्म कर दे। लेकिन वह पल एक चिंगारी की तरह बीत गया। घोड़े सरपट दौड़ते चले गए, मानो जगह को निगल रहे हों, और जैसे ही वह अपने लक्ष्य के करीब पहुँचा, फिर से उसका, सिर्फ उसका ख्याल, उसकी आत्मा पर पूरी तरह हावी हो गया, और उन भयानक छवियों को दूर भगा दिया जो उसे सता रही थीं। ओह, वह उसे देखने के लिए कितना तरस रहा था, बस एक पल के लिए, बस दूर से ही सही!
“अब वो उसके साथ है,” उसने सोचा, “अब मुझे देखना होगा कि वो कैसी दिखती है।”
उसके साथ, उसके पहले प्यार के साथ, और बस यही मैं चाहता हूँ।” इस स्त्री ने, जिसने उसके जीवन में इतना महत्वपूर्ण प्रभाव डाला था, उसके हृदय में कभी ऐसा प्रेम, ऐसी नई और अनजानी भावनाएँ नहीं जगाई थीं, जो स्वयं उसके लिए भी आश्चर्यजनक थीं, एक ऐसी भावना जो भक्ति से भरी थी, उसके सामने आत्म-त्याग की भावना! “मैं स्वयं को मिटा दूँगा!” उसने लगभग उन्मादपूर्ण परमानंद में कहा।

वे लगभग एक घंटे से सरपट दौड़ रहे थे। मित्या चुप था, और हालांकि
आम तौर पर बातूनी किसान एंड्री ने एक शब्द भी नहीं बोला। वह बोलने से डरता हुआ प्रतीत हुआ, उसने बस अपने तीन दुबले-पतले, लेकिन जोशीले भूरे घोड़ों को तेज़ी से चाबुक मारा। अचानक मित्या भयानक घबराहट में चिल्ला उठा:
“एंड्री! अगर वे सो रहे हों तो क्या होगा?”
यह विचार उस पर एक झटके की तरह आया। उसे यह ख्याल कभी आया ही नहीं था।
पहले।
“हो सकता है कि वे अब तक सो गए हों, दिमित्री फ्योदोरोविच।” मित्या ने दर्द से कराहते हुए माथे पर शिकन डाली। हाँ, बिल्कुल... वह जल्दी से वहाँ जा रहा था।
... ऐसी भावनाओं के साथ ... जब वे सो रहे थे ... शायद वह भी वहीं सो रही थी ... उसके दिल में क्रोध की भावना उमड़ पड़ी।
“आगे बढ़ो, एंड्री! उन्हें जोश दिलाओ! चुस्त रहो!” वह बगल में चिल्लाया।
वह स्वयं।
“लेकिन शायद वे बिस्तर पर नहीं हैं!” थोड़ी देर रुकने के बाद एंड्री ने आगे कहा।
“टिमोफे ने कहा कि वहां उनमें से बहुत सारे लोग थे...”
“स्टेशन पर?”
“डाकघर पर नहीं, बल्कि प्लास्टुनोव के यहाँ, सराय में, जहाँ वे किराए पर देते हैं
घोड़ों को भी बाहर निकालो।"
“मुझे पता है। तो आप कह रहे हैं कि वे बहुत सारे हैं? कैसे? वे कौन हैं?”
“वे?” मित्या ने इस अप्रत्याशित खबर से बेहद निराश होकर कहा।
“खैर, टिमोफे कह रहा था कि वे सब भले लोग हैं। हमारे कस्बे से दो लोग—
वे कौन हैं, मैं नहीं कह सकता—और वहाँ दो और लोग हैं, अजनबी, शायद और भी हों। मैंने उनसे खास तौर पर नहीं पूछा। टिमोफे ने बताया कि वे ताश खेलने लगे हैं।
“कार्ड?”
तो, हो सकता है कि अगर वे ताश खेल रहे हों तो वे बिस्तर पर न हों। इसकी संभावना बहुत कम है।
ग्यारह से अधिक।"
“जल्दी करो, एंड्री! जल्दी करो!” मित्या ने घबराकर फिर से कहा। “क्या मैं आपसे कुछ पूछ सकता हूँ, महोदय?” एंड्री ने थोड़ी देर रुककर कहा। “लेकिन मैं...
मुझे डर है कि कहीं आप नाराज न हो जाएं, महोदय।
"यह क्या है?"
“क्यों, फेन्या ने अभी-अभी आपके चरणों में गिरकर आपसे विनती की कि आप ऐसा न करें।”
अपनी मालकिन को नुकसान पहुंचाना, और किसी और को भी... तो आप देख रहे हैं, महोदय... मैं आपको वहाँ ले जा रहा हूँ... मुझे क्षमा करें, महोदय, यह मेरी अंतरात्मा है... शायद इसके बारे में बोलना मेरी मूर्खता है...
मित्या ने अचानक पीछे से उसके कंधे पकड़ लिए। "क्या तुम ड्राइवर हो?" उसने घबराकर पूछा।
"जी श्रीमान । । ।"
“तब आपको पता चल जाएगा कि किसी एक को रास्ता देना होगा। आप किसी दूसरे से क्या कहेंगे?”
क्या वो ड्राइवर जो किसी को रास्ता नहीं देता, बस गाड़ी चलाता रहता है और लोगों को कुचल देता है? नहीं, ड्राइवर को लोगों को कुचलना नहीं चाहिए। कोई किसी इंसान को कुचल नहीं सकता। कोई लोगों की जिंदगी बर्बाद नहीं कर सकता। और अगर तुमने किसी की जिंदगी बर्बाद की है तो खुद को सजा दो... अगर तुमने सिर्फ एक की जिंदगी बर्बाद की है तो खुद को सजा दो और चले जाओ।
ये वाक्य मित्या के मुँह से लगभग उन्माद की स्थिति में फूट पड़े। हालाँकि एंड्री
वह उस पर आश्चर्यचकित था, फिर भी उसने बातचीत जारी रखी।
“हाँ, दिमित्री फ्योदोरोविच, आप बिल्कुल सही हैं, किसी को कुचलना नहीं चाहिए।”

न तो किसी मनुष्य को, न ही किसी भी प्राणी को सताया जाए, क्योंकि हर प्राणी ईश्वर द्वारा बनाया गया है। उदाहरण के लिए, एक घोड़े को ही ले लीजिए, क्योंकि कुछ लोग, यहाँ तक कि हम जैसे ड्राइवरों में भी, मनमानी से गाड़ी चलाते हैं। उन्हें कोई रोक नहीं सकता, वे बस उसे जबरदस्ती दौड़ाते रहते हैं।
“नरक में?” मित्या ने बीच में ही टोकते हुए कहा और अचानक, छोटी सी हंसी हंसने लगा।
“एंड्री, भोले-भाले इंसान,” उसने फिर से उसके कंधों को पकड़ लिया, “मुझे बताओ, क्या दिमित्री फ्योदोरोविच करामाज़ोव नरक में जाएगा या नहीं, तुम क्या सोचते हो?”
“मुझे नहीं पता, प्रिय, यह आप पर निर्भर करता है, क्योंकि आप... देखिए, महोदय,
जब परमेश्वर के पुत्र को क्रूस पर कीलों से ठोका गया और उनकी मृत्यु हुई, तो वे क्रूस से सीधे नरक में गए और पीड़ा में तड़प रहे सभी पापियों को मुक्त कर दिया। शैतान कराह उठा, क्योंकि उसने सोचा कि उसे नरक में और कोई पापी नहीं मिलेगा। तब परमेश्वर ने उससे कहा, “कराह मत, क्योंकि पृथ्वी के सभी बलवान, शासक, प्रधान न्यायाधीश और धनी लोग तुम्हें मिलेंगे, और तुम युगों-युगों तक जैसे भरे रहे हो, वैसे ही भरते रहोगे, जब तक मैं फिर से न आ जाऊँ।” ये उनके ही शब्द थे...
“एक किसान किंवदंती! शानदार! वामपंथियों को भड़काओ, एंड्री!”
“तो आप देख ही रहे हैं, महोदय, नरक किसके लिए है,” एंड्री ने बाईं ओर इशारा करते हुए कहा।
घोड़ा, "लेकिन तुम तो एक छोटे बच्चे की तरह हो... हम तुम्हें इसी नजरिए से देखते हैं... और हालांकि तुम जल्दी गुस्सा हो जाते हो, महोदय, फिर भी भगवान तुम्हारे दयालु हृदय के लिए तुम्हें क्षमा कर देंगे।"
और क्या तुम मुझे माफ करोगे, एंड्री?
“मैं आपको किस बात के लिए माफ करूं, महोदय? आपने मुझे कभी कोई नुकसान नहीं पहुंचाया है।”
नहीं, हर एक के लिए, हर एक के लिए, तुम यहाँ अकेले, सड़क पर, क्या तुम
क्या तुम मुझे हर बात के लिए माफ कर दोगे? बोलो, सीधे-सादे किसान के दिल!
“ओह, महोदय! मुझे आपको गाड़ी में ले जाने से डर लग रहा है, आपकी बातें बहुत अजीब हैं।” लेकिन मित्या ने नहीं सुना। वह बेचैनी से प्रार्थना कर रहा था और कुछ बुदबुदा रहा था।
वह स्वयं।
“हे प्रभु, मेरी समस्त अधार्मिकता सहित मुझे स्वीकार कर और मुझे दोषी न ठहरा।
हे प्रभु, मुझे अपने न्याय से मुक्त कर दो... मुझे दोषी मत ठहराओ, क्योंकि मैंने स्वयं को दोषी ठहराया है; मुझे दोषी मत ठहराओ, क्योंकि मैं तुमसे प्रेम करता हूँ, हे प्रभु। मैं पापी हूँ, पर मैं तुमसे प्रेम करता हूँ। यदि तुम मुझे नरक में भेज दो, तो मैं वहाँ भी तुमसे प्रेम करूँगा, और वहाँ से मैं पुकारूँगा कि मैं तुमसे सदा-सदा प्रेम करता रहूँगा... परन्तु मुझे अंत तक प्रेम करने दो... यहीं और अभी, केवल पाँच घंटे के लिए... तुम्हारे दिन के पहले प्रकाश तक... क्योंकि मैं अपनी आत्मा की रानी से प्रेम करता हूँ... मैं उससे प्रेम करता हूँ और मैं उससे प्रेम किए बिना नहीं रह सकता। तुम मेरे पूरे हृदय को देखते हो... मैं दौड़कर आऊँगा, मैं उसके सामने गिरूँगा और कहूँगा, 'तुम्हारा आगे बढ़ना और मुझे छोड़ना सही है। अलविदा और अपने शिकार को भूल जाओ... मेरे बारे में कभी चिंता मत करो!'
“मोक्रो!” एंड्री ने अपनी चाबुक से आगे की ओर इशारा करते हुए चिल्लाया। रात के धुंधले अंधेरे में एक ठोस काला पिंड दिखाई दिया।
विशाल मैदान में इमारतें मानो गिरी पड़ी थीं। मोक्रोए गाँव की आबादी दो हज़ार थी, लेकिन उस समय सभी सो रहे थे, और केवल कहीं-कहीं कुछ बत्तियाँ ही टिमटिमा रही थीं।
“आगे बढ़ो, एंड्री, मैं आ रहा हूँ!” मित्या ने उत्तेजित होकर कहा। “वे सो नहीं रहे हैं,” एंड्री ने फिर कहा और अपनी चाबुक से इशारा किया।
प्लास्टुनोव का सराय, जो गांव के प्रवेश द्वार पर स्थित था। सड़क की ओर खुलने वाली उसकी छहों खिड़कियां जगमगा रही थीं।
“वे सो नहीं रहे हैं,” मित्या ने खुशी से दोहराया। “जल्दी करो, एंड्री!”
सरपट दौड़ो! तेज़ी से आ जाओ! घंटियाँ बजा दो! सबको बता दो कि मैं आ गया हूँ। मैं आ रहा हूँ! मैं भी आ रहा हूँ!
एंड्री ने अपनी थकी हुई टीम को सरपट दौड़ाया, पूरी ताकत से आगे बढ़ा और
उसने अपने भाप से धुएँ से भरे, हाँफते घोड़ों को ऊँची सीढ़ियों पर रोक दिया।

मित्या गाड़ी से ठीक उसी समय कूद गया जब सराय का मालिक सोने जा रहा था।
वह उत्सुकता से सीढ़ियों से बाहर झाँककर देखने लगा कि कौन आया है।
“ट्रिफॉन बोरिसोविच, क्या यह आप हैं?”
सराय मालिक नीचे झुका, ध्यान से देखा, सीढ़ियों से नीचे भागा, और
अत्यंत विनम्रता और प्रसन्नता के साथ अतिथि के पास दौड़कर गया।
“दिमित्री फ्योदोरोविच, महाराज! क्या हम आपको फिर से देख रहे हैं?” ट्रिफॉन बोरिसोविच एक हट्टे-कट्टे, स्वस्थ किसान थे, जिनकी लंबाई मध्यम थी।
उसका चेहरा कुछ मोटा था। उसका भाव कठोर और अडिग था, खासकर मोकरोए के किसानों के प्रति, लेकिन जब उसे जरा भी लगता कि यह उसके हित में है, तो वह अत्यंत विनम्र भाव भी अपना लेता था। वह रूसी शैली में कपड़े पहनता था, जिसमें एक तरफ से बटन वाली कमीज और पूरी स्कर्ट वाला कोट होता था। उसने अच्छी खासी रकम बचा रखी थी, लेकिन वह हमेशा अपनी स्थिति सुधारने का सपना देखता रहता था। आधे से अधिक किसान उसके चंगुल में थे, आस-पास का हर कोई उसका कर्जदार था। वह पड़ोसी जमींदारों से जमीनें खरीदता और किराए पर लेता था, जिन पर किसान खेती करते थे, ताकि वे उन कर्जों को चुका सकें जिन्हें वे कभी चुका नहीं सकते थे। वह विधुर था, उसकी चार वयस्क बेटियां थीं। उनमें से एक विधवा थी और अपने दो बच्चों, यानी उसके पोते-पोतियों के साथ सराय में रहती थी और उसके लिए सफाईकर्मी की तरह काम करती थी। उनकी एक और बेटी की शादी एक छोटे अधिकारी से हुई थी, और सराय के एक कमरे में, दीवार पर पारिवारिक तस्वीरों के बीच, उस अधिकारी की वर्दी और आधिकारिक एपॉलेट्स वाली एक छोटी सी तस्वीर देखी जा सकती थी। दोनों छोटी बेटियाँ चर्च के त्योहारों पर या जब वे किसी से मिलने जाती थीं, तो पीछे से चुस्त और एक गज लंबी ट्रेल वाली फैशनेबल नीली या हरी पोशाकें पहनती थीं। लेकिन अगली सुबह वे हमेशा की तरह भोर में उठ जातीं, कमरों को बर्च की झाड़ू से साफ करतीं, कूड़ा-करकट हटातीं और मेहमानों के बाद सफाई करतीं।
हजारों रूबल बचाने के बावजूद, ट्रिफॉन बोरिसोविच
उसे शराबी मेहमान की जेबें खाली करने का बहुत शौक था, और यह याद करते हुए कि एक महीने पहले ही उसने ग्रुशेंका के साथ अपने कारनामे के दौरान दिमित्री से चौबीस घंटों में दो सौ नहीं तो तीन सौ रूबल कमा लिए थे, उसने अब उत्सुकता से उसका स्वागत किया, जैसे ही मित्या सीढ़ियों पर गाड़ी लेकर आया, उसने अपने शिकार की गंध पहचान ली।
“दिमित्री फ्योदोरोविच, महोदय, हम आपसे एक बार फिर मिलेंगे!”
“रुको, ट्रिफॉन बोरिसोविच,” मित्या ने शुरू किया, “सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण बात, कहाँ है? वह?"
“अग्राफेना अलेक्जेंड्रोवना?” सराय मालिक तुरंत समझ गया और देखने लगा।
उसने मित्या के चेहरे की ओर तीखी निगाहों से देखते हुए कहा, "वह भी यहाँ है..."
“किसके साथ? किसके साथ?”
कुछ अजनबी। उनमें से एक सरकारी अधिकारी है, पोलिश नागरिक, जैसा कि उसके हावभाव से लगता है। भाषण। उसने उसके लिए घोड़े यहीं से भेजे; और उसके साथ एक और है, उसका दोस्त या सहयात्री, कुछ कहा नहीं जा सकता। उन्होंने आम नागरिकों जैसे कपड़े पहने हैं।
"क्या वे दावत कर रहे हैं? क्या उनके पास पैसा है?"
“बेकार दावत थी! दिमित्री फ्योदोरोविच, इस पर गर्व करने लायक कुछ नहीं है।”
“गर्व करने लायक कुछ नहीं? और बाकी लोग कौन हैं?”
“वे कस्बे के दो सज्जन हैं... वे वापस आ गए हैं
चेर्नी के रहने वाले हैं और यहाँ ठहरे हुए हैं। एक तो काफी नौजवान हैं, श्री मियूसोव के रिश्तेदार होंगे, लेकिन मैं उनका नाम भूल गया हूँ... और मुझे उम्मीद है कि आप दूसरे को भी जानते होंगे, उनका नाम मैक्सिमोव है। उनका कहना है कि वे तीर्थयात्रा पर शहर के मठ गए थे। वे श्री मियूसोव के इस नौजवान रिश्तेदार के साथ यात्रा कर रहे हैं।
"बस इतना ही?"
"हाँ।"

"रुको, सुनो, ट्रिफॉन बोरिसोविच। मुझे मुख्य बात बताओ: उसका क्या हुआ?"
वह कैसी है?
“ओह, वह अभी-अभी आई है। वह उनके साथ बैठी है।”
क्या वह खुश है? क्या वह हंस रही है?
नहीं, मुझे लगता है कि वह ज्यादा हंस नहीं रही है। वह काफी उदास बैठी है।
उस युवक के बालों में कंघी करते हुए।
“पोलिश अधिकारी?”
“वह जवान नहीं है, और न ही वह कोई अधिकारी है। वह नहीं, महोदय। यह तो...”
"युवक, वह श्री मियूसोव के रिश्तेदार हैं... मैं उनका नाम भूल गया हूँ।"
“कल्गानोव।”
बस, कल्गानोव!
ठीक है। मैं खुद देख लेता हूँ। क्या वे ताश खेल रहे हैं?
“वे खेल रहे थे, लेकिन उन्होंने खेलना बंद कर दिया है। वे शराब पी रहे हैं।”
"चाय के बदले में उस अधिकारी ने शराब मांगी।"
“रुको, ट्रिफॉन बोरिसोविच, रुको, मेरी नेक आत्मा, मैं खुद देख लूंगा। अब
एक और सवाल का जवाब दीजिए: क्या जिप्सी लोग यहाँ हैं?
“अब आप जिप्सियों को नहीं रख सकते, दिमित्री फ्योदोरोविच। अधिकारियों के अधिकार क्षेत्र में कोई विकल्प नहीं है।”
हमने उन्हें भगा दिया है। लेकिन हमारे गांव में कुछ यहूदी हैं जो झांझ और वायलिन बजाते हैं, इसलिए उन्हें बुलवाया जा सकता है। वे आ जाएंगे।
“उन्हें बुलवाओ। ज़रूर बुलवाओ!” मित्या चिल्लाया। “और तुम कर सकते हो
लड़कियों को वैसे ही इकट्ठा करो जैसे तुमने तब किया था, खासकर मार्या को, स्टेपानिडा को भी और अरिना को। एक कोरस के लिए दो सौ रूबल!
"अरे, इतनी रकम में तो मैं पूरे गाँव को इकट्ठा कर सकता हूँ, हालाँकि अब तक तो ऐसा ही होगा।"
वे सो रहे हैं। दिमित्री फ्योदोरोविच, क्या यहाँ के किसान या लड़कियाँ इतनी दया के लायक हैं? ऐसी अशिष्टता और बदतमीज़ी पर इतनी बड़ी रकम खर्च करना! एक किसान को सिगार पिलाने का क्या फायदा, बदबूदार बदमाश! और लड़कियाँ तो सब गंदी हैं। वैसे भी, मैं अपनी बेटियों को मुफ्त में उठा लेता हूँ, इतनी बड़ी रकम की तो बात ही छोड़ो। वे अभी-अभी सोई हैं, मैं उन्हें एक लात मारकर तुम्हारे लिए गाने को मजबूर कर दूँगा। तुमने तो परसों किसानों को शराब पिलाई थी, छी!
मित्या के प्रति अपनी दिखावटी सहानुभूति के बावजूद, ट्रिफॉन बोरिसोविच के पास
पिछली बार उसने आधा दर्जन शैंपेन की बोतलें छिपा दी थीं, और मेज के नीचे से एक सौ रूबल का नोट उठा लिया था, जो अभी भी उसके पास ही था।
“ट्रिफॉन बोरिसोविच, पिछली बार जब मैंने ऐसा किया था तो मैंने एक हजार से अधिक लोगों को उड़ा दिया था।”
मैं यहाँ था। क्या तुम्हें याद है?
“तुमने ही उसे हवा में उछाला था। मुझे अच्छी तरह याद है। तुमने कम से कम तीन छोड़े होंगे।”
आपके पीछे हज़ार लोग हैं।
“अच्छा, मैं वही काम दोबारा करने आया हूँ, समझे?” और उसने अपने नोटों का बंडल निकाला और उसे सबके सामने लहराया।
सराय मालिक की नाक।
“अब सुनो और याद रखो। एक घंटे में शराब आ जाएगी।”
नमकीन, पाई और मिठाई—सब एक साथ लाओ। एंड्री के पास जो डिब्बा है, उसे भी तुरंत लाना है। उसे खोलो और तुरंत शैम्पेन दो। और लड़कियाँ, हमें लड़कियाँ भी चाहिए, खासकर मार्या।
वह गाड़ी की ओर मुड़ा और पिस्तौलों का डिब्बा निकाला। “लो, एंड्री, हिसाब बराबर कर लेते हैं। ये लो गाड़ी के लिए पंद्रह रूबल, और पचास

वोदका के लिए... तुम्हारी तत्परता के लिए, तुम्हारे प्यार के लिए... करामाज़ोव को याद रखना!
“मुझे खेद है, महोदय,” एंड्री हिचकिचाते हुए बोला। “मुझे पाँच रूबल अतिरिक्त दीजिए, लेकिन और भी बहुत कुछ।”
मैं नहीं लूंगा। ट्रिफॉन बोरिसोविच, गवाह रहो। मेरे मूर्खतापूर्ण शब्दों के लिए मुझे क्षमा करें...
“तुम्हें किस बात का डर है?” मित्या ने उसे देखते हुए पूछा। “अच्छा, चलो चलते हैं।”
“अगर यही बात है तो शैतान!” वह चिल्लाया और उसे पाँच रूबल फेंक दिए। “अब, ट्रिफॉन बोरिसोविच, मुझे चुपचाप ऊपर ले चलो और पहले मुझे उन्हें देखने दो, ताकि वे मुझे न देख सकें। वे कहाँ हैं? नीले कमरे में?”
ट्रिफॉन बोरिसोविच ने आशंका भरी निगाहों से मित्या की ओर देखा, लेकिन तुरंत ही
उसने आज्ञा का पालन किया। उसे गलियारे में ले जाकर, वह स्वयं आगंतुकों के कमरे से सटे पहले बड़े कमरे में गया और रोशनी बुझा दी। फिर वह चुपके से मित्या को अंदर ले गया और उसे अंधेरे में एक कोने में खड़ा कर दिया, जहाँ से वह बिना किसी की नज़र में आए सभी लोगों को देख सकता था। लेकिन मित्या ने ज्यादा देर तक नहीं देखा, और वास्तव में, वह उन्हें देख नहीं सका, उसने उसे देखा, उसका दिल ज़ोर से धड़कने लगा, और उसकी आँखों के सामने सब कुछ अंधेरा हो गया।
वह एक नीची कुर्सी पर मेज के किनारे बैठी थी, और उसके बगल में,
सोफे पर बैठा था सुंदर युवक कल्गानोव। वह उसका हाथ पकड़े हुए हंस रही थी, जबकि वह परेशान लग रहा था और उसकी तरफ देखे बिना ऊँची आवाज़ में मैक्सिमोव से कुछ कह रहा था, जो मेज के दूसरी तरफ ग्रुशेंका के सामने बैठा था। मैक्सिमोव किसी बात पर ज़ोर-ज़ोर से हंस रहा था। सोफे पर वह बैठा था, और सोफे के पास वाली कुर्सी पर एक और अजनबी बैठा था। सोफे पर बैठा व्यक्ति पीछे की ओर झुका हुआ पाइप पी रहा था, और मित्या को लगा कि वह एक हट्टा-कट्टा, चौड़े चेहरे वाला, छोटा कद का आदमी है, जो जाहिर तौर पर किसी बात पर नाराज़ है। उसका दोस्त, दूसरा अजनबी, मित्या को असाधारण रूप से लंबा लगा, लेकिन वह इससे ज़्यादा कुछ नहीं समझ पाया। उसने गहरी सांस ली। वह एक मिनट भी बर्दाश्त नहीं कर सका, उसने पिस्तौल का खोल एक संदूक पर रखा, और धड़कते दिल के साथ, पूरे शरीर में ठंड महसूस करते हुए, सीधे नीले कमरे में कंपनी का सामना करने के लिए चला गया।
"ऐ!" ग्रुशेंका चीखी, जिसने सबसे पहले उसे देखा था।

अध्याय 7

पहला और सच्चा प्रेमी

अपने लंबे और तेज़ कदमों से मित्या सीधे मेज की ओर बढ़ा।
“सज्जनों,” उसने ऊँची आवाज़ में कहा, लगभग चिल्लाते हुए, फिर भी हकलाते हुए।
हर शब्द पर, “मैं... मैं ठीक हूँ! डरो मत!” उसने कहा, “मैं— कोई बात नहीं,” वह अचानक ग्रुशेंका की ओर मुड़ा, जो कल्गानोव की ओर अपनी कुर्सी पर पीछे हट गई थी, और उसका हाथ कसकर पकड़ लिया। “मैं... मैं भी आ रहा हूँ। मैं सुबह तक यहीं रहूँगा। सज्जनों, क्या मैं सुबह तक आपके साथ रह सकता हूँ? केवल सुबह तक, आखिरी बार, इसी कमरे में?”
तो उसने अपनी बात समाप्त की और पाइप लिए बैठे उस मोटे से छोटे आदमी की ओर मुड़ गया।
सोफा। बाद वाले ने गरिमा के साथ अपने होठों से पाइप हटाया और गंभीरता से कहा:
“पानी, हम यहाँ अकेले में हैं। यहाँ और भी कमरे हैं।”
“अरे, आप हैं दिमित्री फ्योदोरोविच! आपका क्या मतलब है?” उत्तर दिया।
कल्गानोव ने अचानक कहा, “हमारे साथ बैठिए। आप कैसे हैं?”
आपको देखकर बहुत खुशी हुई, प्रिय... और प्यारे साथी, मैंने हमेशा यही सोचा था।
"आपमें से बहुत से लोग।" मित्या ने खुशी और उत्सुकता से जवाब दिया और तुरंत मेज के उस पार अपना हाथ बढ़ा दिया।
“अरे! तुमने तो बहुत जोर से दबा दिया! मेरी उंगलियां तो टूट ही गई हैं!”
कालगानोव हँस पड़ा।
“वह हमेशा ऐसे ही दबाता है, हमेशा,” ग्रुशेंका ने खुशी से कहा।
झिझकती हुई मुस्कान, मानो मित्या के चेहरे को देखकर उसे अचानक यकीन हो गया हो कि वह कोई हंगामा नहीं करेगा। वह उसे गहरी जिज्ञासा और कुछ बेचैनी के साथ देख रही थी। वह उसके बारे में किसी बात से प्रभावित थी, और वास्तव में उसने उससे यही उम्मीद नहीं की थी कि वह इस समय आकर इस तरह बोलेगा।
“शुभ संध्या,” मैक्सिमोव ने बाईं ओर बेपरवाही से कहा। मित्या तेजी से भागा।
यह भी उन पर निर्भर करता है।
शुभ संध्या। आप भी यहाँ हैं! आपको यहाँ देखकर मुझे बहुत खुशी हुई!
सज्जनों, सज्जनों, मैं... (उन्होंने फिर से पाइप लिए पोलिश सज्जन को संबोधित किया, जाहिर तौर पर उन्हें उपस्थित लोगों में सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति मानते हुए।) "मैं यहाँ उड़कर आया हूँ... मैं अपना आखिरी दिन, अपना आखिरी घंटा इसी कमरे में, इसी कमरे में बिताना चाहता था... जहाँ मैंने भी... अपनी रानी... की पूजा की थी... मुझे क्षमा करें, प्रिये," वह बेतहाशा चिल्लाया, "मैं यहाँ उड़कर आया और प्रतिज्ञा की... अरे, डरो मत, यह मेरी आखिरी रात है! चलो अपनी अच्छी समझ के लिए पीते हैं। वे तुरंत शराब लाएँगे... मैं इसे अपने साथ लाया हूँ।" (किसी बात ने उन्हें अपने नोटों का बंडल निकालने के लिए प्रेरित किया।) "मुझे अनुमति दें, प्रिये! मैं संगीत, गायन, उत्सव चाहता हूँ, जैसा हमने पहले किया था। लेकिन वह कीड़ा, वह अनावश्यक कीड़ा, रेंग कर चला जाएगा, और उसका कोई अस्तित्व नहीं रहेगा। मैं अपनी खुशी के दिन को अपनी आखिरी रात में मनाऊँगा।"
उसका दम घुट रहा था। उसे बहुत कुछ कहना था, बहुत कुछ।
लेकिन उसके होठों से केवल अजीबोगरीब उद्गार ही निकले। पोलिश महिला उसे और उसके हाथ में मौजूद नोटों के बंडल को टकटकी लगाकर देखती रही; ग्रुशेंका की ओर देखा और स्पष्ट रूप से असमंजस में थी।
“अगर मेरी परम स्वामी अनुमति दें तो...” वह शुरू कर रहा था। “‘सुवेरिन’ का क्या मतलब है? मेरा अनुमान है, ‘संप्रभु’?” बीच में ही टोकते हुए उसने पूछा।
ग्रुशेंका। “तुम्हारे बात करने के तरीके पर मुझे हंसी आ रही है। बैठ जाओ, मित्या, तुम क्या बात कर रहे हो? हमें डराओ मत, प्लीज़। तुम हमें डराओगे नहीं, है ना? अगर नहीं डराओगे, तो मुझे तुम्हें देखकर खुशी हुई...”
“मैं, मैं तुम्हें डरा सकता हूँ?” मित्या चिल्लाया और अपने हाथ ऊपर उठा लिए। “अरे, रहने दो।”

मुझे जाने दो, तुम अपने रास्ते जाओ, मैं तुम्हें नहीं रोकूंगा!
और अचानक उसने सबको, और निस्संदेह खुद को भी, चौंका दिया।
वह कुर्सी पर गिर पड़ा और फूट-फूटकर रोने लगा, अपना सिर सामने वाली दीवार की ओर घुमा लिया, जबकि उसकी बाहें कुर्सी के पिछले हिस्से को कसकर पकड़े हुए थीं, मानो उसे गले लगा रहा हो।
“अरे, अरे, तुम तो बड़े ही बड़े आदमी हो!” ग्रुशेंका ने तिरस्कारपूर्वक कहा।
“वो मुझसे ऐसे ही मिलने आता है—बातें शुरू कर देता है, और मुझे समझ ही नहीं आता कि वो क्या कहना चाहता है। पहले भी एक बार ऐसे ही रोया था, और अब फिर रो रहा है! ये तो शर्मनाक है! तुम क्यों रो रहे हो? जैसे रोने की कोई वजह ही हो!” उसने रहस्यमय लहजे में कहा, हर शब्द पर थोड़ी झुंझलाहट के साथ ज़ोर देते हुए।
“मैं... मैं रो नहीं रहा हूँ... अच्छा, शुभ संध्या!” वह तुरंत मुड़ गया।
वह अपनी कुर्सी पर घूम गया और अचानक हंस पड़ा, उसकी वह बेजान, अचानक वाली हंसी नहीं, बल्कि एक लंबी, कांपती हुई, अस्पष्ट, घबराहट भरी हंसी थी।
“देखो, तुम फिर आ गए... चलो, खुश हो जाओ, खुश हो जाओ!” ग्रुशेंका
उसने उसे समझाते हुए कहा, “मुझे बहुत खुशी है कि तुम आए हो, बहुत खुशी है, मित्या, सुन रहे हो ना, मुझे बहुत खुशी है! मैं चाहती हूँ कि वह यहीं हमारे साथ रहे,” उसने पूरे समूह को संबोधित करते हुए दृढ़ता से कहा, हालाँकि उसके शब्द स्पष्ट रूप से सोफे पर बैठे व्यक्ति के लिए थे। “काश ऐसा हो, काश ऐसा हो! और अगर वह चला गया तो मैं भी चली जाऊँगी!” उसने चमकती आँखों से कहा।
“मेरी रानी का आदेश ही कानून है!” पोलिश व्यक्ति ने विनम्रतापूर्वक ग्रुशेंका का हाथ चूमते हुए कहा। “मैं आपसे विनती करता हूँ, पानी, हमारे दल में शामिल हो जाइए,” उसने विनम्रता से मित्या को संबोधित करते हुए कहा।
मित्या एक और प्रसव करने के स्पष्ट इरादे से उछल रहा था।
मैंने बहुत गुस्से में भाषण दिया, लेकिन शब्द नहीं निकले।
भाषण देने के बजाय उसने अचानक बोल दिया, "चलो पीते हैं, यार।"
एक व्यक्ति हँस पड़ा।
“हे भगवान! मुझे लगा कि वह फिर से शुरू करने वाला है!” ग्रुशेंका
वह घबराकर बोली, “सुना तुमने, मित्या,” वह ज़ोर देकर बोली, “इधर-उधर मत उछलो, पर अच्छा लगा कि तुम शैम्पेन लाए हो। मुझे भी थोड़ी चाहिए, और मुझे शराब बिल्कुल पसंद नहीं। और सबसे अच्छी बात तो यह है कि तुम खुद आए हो। हम यहाँ बहुत उबाऊ थे... लगता है तुम फिर से मौज-मस्ती करने आए हो? पर पैसे जेब में रखो। इतने सारे पैसे कहाँ से आए?”
इतने समय से मित्या उस मुड़े हुए बंडल को अपने हाथ में पकड़े हुए था।
उन नोटों पर सबकी निगाहें टिकी हुई थीं, विशेषकर पोलैंडवासियों की। घबराहट में उसने उन्हें जल्दी से अपनी जेब में डाल लिया। उसका चेहरा लाल हो गया। उसी क्षण सराय मालिक एक खुली बोतल और गिलास एक ट्रे में लेकर आया। मित्या ने बोतल उठा ली, लेकिन वह इतना घबराया हुआ था कि उसे समझ नहीं आ रहा था कि वह क्या करे। कालगानोव ने उससे बोतल ले ली और उसमें से शैम्पेन उड़ेल दी।
“एक और! एक और बोतल!” मित्या ने सराय मालिक से चिल्लाकर कहा, और यह भूलकर कि
जिस पोलिश व्यक्ति को उन्होंने बड़ी गंभीरता से उनके सौहार्द के लिए पीने का निमंत्रण दिया था, उनके साथ गिलास टकराने के लिए, उन्होंने किसी और का इंतज़ार किए बिना अपना गिलास खाली कर दिया। उनका पूरा चेहरा अचानक बदल गया। जिस गंभीर और दुखद भाव के साथ वे आए थे, वह पूरी तरह गायब हो गया और उनके चेहरे पर एक मासूमियत छा गई। वे अचानक कोमल और शांत हो गए। वे हर किसी को शरमाते हुए और खुशी से देख रहे थे, लगातार एक नर्वस हंसी हंस रहे थे, और उनके चेहरे पर उस कुत्ते जैसी खुशी थी जिसने कोई गलती की हो, सजा पाई हो और फिर माफ कर दिया गया हो। ऐसा लग रहा था जैसे वे सब कुछ भूल गए हों और हर किसी को एक मासूम सी मुस्कान के साथ देख रहे थे। वे लगातार हंसते हुए ग्रुशेंका को देख रहे थे और अपनी कुर्सी उसके पास खींच लाए। धीरे-धीरे उन्हें उन दोनों पोलिश लोगों के बारे में कुछ अंदाजा हो गया था, हालांकि अभी तक उनके बारे में उनकी कोई पक्की राय नहीं बनी थी।
सोफे पर बैठे पोलिश व्यक्ति के गरिमापूर्ण व्यवहार और उनके

पोलिश लहजा; और सबसे बढ़कर, उसकी पाइप। "अच्छा, तो क्या हुआ? अच्छा है कि वह पाइप पी रहा है," उसने सोचा। पोलिश व्यक्ति का फूला हुआ, अधेड़ उम्र का चेहरा, छोटी सी नाक और दो पतली, नुकीली, रंगी हुई और उद्दंड दिखने वाली मूंछें, मित्या के मन में अब तक जरा सा भी संदेह पैदा नहीं कर पाई थीं। साइबेरिया में बनी पोलिश व्यक्ति की बेतुकी विग, जिसमें बालों की लटें मूर्खतापूर्ण ढंग से कनपटी पर आगे की ओर कंघी की हुई थीं, ने भी उसे खास प्रभावित नहीं किया था। "मुझे लगता है कि ठीक है, क्योंकि वह विग पहनता है," वह आनंदित होकर सोचता रहा। दूसरा, युवा पोलिश व्यक्ति, जो कंपनी को अभद्र और चुनौती भरे अंदाज में घूर रहा था और चुपचाप तिरस्कार के साथ बातचीत सुन रहा था, मित्या को केवल अपनी विशाल लंबाई से ही प्रभावित कर पाया, जो सोफे पर बैठे पोलिश व्यक्ति के बिल्कुल विपरीत थी। "अगर वह खड़ा हो जाए तो वह छह फुट तीन इंच का होगा।" यह विचार मित्या के मन में कौंधा। उसके मन में यह भी ख्याल आया कि यह पोलिश व्यक्ति दूसरे का मित्र होगा, मानो एक "अंगरक्षक", और निस्संदेह वह बड़ा पोलिश व्यक्ति पाइप पीने वाले छोटे पोलिश व्यक्ति की सेवा में तत्पर होगा। लेकिन मित्या को यह सब बिल्कुल सही लगा और इस पर सवाल उठाने की कोई जरूरत नहीं थी। उसकी कुत्ते जैसी आज्ञाकारिता की भावना में प्रतिद्वंद्विता की सारी भावना समाप्त हो गई थी।
ग्रुशेंका का मिजाज और उनके कुछ शब्दों का रहस्यमय लहजा...
वह बिल्कुल समझ नहीं पाया। रोमांचित हृदय से वह बस इतना ही समझ पाया कि वह उसके प्रति दयालु थी, उसने उसे क्षमा कर दिया था और उसे अपने पास बैठा लिया था। शैम्पेन का गिलास पीते हुए उसे देखकर वह आनंद से फूला नहीं समा रहा था। हालाँकि, वहाँ की खामोशी उसे कुछ झकझोर रही थी और उसने आशा भरी निगाहों से सबकी ओर देखा।
“हम यहाँ क्यों बैठे हैं, सज्जनों? आप ही शुरुआत क्यों नहीं करते?
“कुछ कर रहे हो?” उसकी मुस्कुराती आँखें मानो पूछ रही थीं।
“वह लगातार बेतुकी बातें कर रहा था, और हम सब हंस रहे थे,” कल्गानोव ने कहना शुरू किया।
अचानक, मानो उसके मन की बात जान ली हो, और मैक्सिमोव की ओर इशारा किया।
मित्या ने तुरंत कालगानोव और फिर मैक्सिमोव को घूरकर देखा। "क्या वह बकवास कर रहा है?" वह हँसा, उसकी छोटी, बनावटी हँसी, मानो...
अचानक किसी बात पर खुशी से झूम उठा—“हा हा!”
“हाँ। क्या आप विश्वास करेंगे, वह यह सुनिश्चित करेगा कि हमारे सभी घुड़सवार अधिकारी
बीसवीं सदी में उन्होंने पोलिश महिलाओं से शादी की। यह कितनी घिनौनी बात है, है ना?
“पोलिश महिलाएं?” मित्या ने अत्यंत प्रसन्नता से दोहराया। कालगानोव, ग्रुशेंका के प्रति मित्या के रवैये से भलीभांति परिचित था, और वह
उसने पोलिश व्यक्ति के बारे में भी अनुमान लगाया था, लेकिन उसमें उसकी कोई खास दिलचस्पी नहीं थी, शायद बिल्कुल भी नहीं; उसकी दिलचस्पी मैक्सिमोव में थी। वह मैक्सिमोव के साथ संयोग से यहाँ आया था, और इस सराय में पहली बार पोलिश लोगों से मिला था। ग्रुशेंका को वह पहले से जानता था, और एक बार किसी के साथ उससे मिलने गया था; लेकिन उसने उसे पसंद नहीं किया था। लेकिन यहाँ वह उसे बहुत स्नेह से देख रही थी: मित्या के आने से पहले, वह उसकी बहुत तारीफ कर रही थी, लेकिन मित्या पर इसका कोई असर नहीं हुआ था। वह बीस साल से कम उम्र का लड़का था, फैशनेबल कपड़े पहने हुए, बेहद आकर्षक गोरे चेहरे और शानदार घने सुनहरे बालों वाला। उसके गोरे चेहरे से सुंदर हल्की नीली आँखें झाँक रही थीं, जिनमें उसकी उम्र से कहीं अधिक समझदार और कभी-कभी गहरी अभिव्यक्ति थी, हालाँकि वह युवक कभी-कभी बच्चों जैसा दिखता और बोलता था, और उसे इस बात का ज़रा भी अफ़सोस नहीं था, यहाँ तक कि जब वह खुद इस बात से वाकिफ़ था तब भी। आमतौर पर वह बहुत ज़िद्दी, यहाँ तक कि मनमौजी भी था, हालाँकि हमेशा मिलनसार था। कभी-कभी उनके चेहरे पर एक तरह की दृढ़ता और हठ दिखाई देता था। वे आपकी ओर देखते और सुनते, मानो लगातार किसी और चीज़ के बारे में सोचते रहते हों। अक्सर वे सुस्त और आलसी रहते थे, तो कभी-कभी वे उत्साहित हो जाते थे, कभी-कभी तो मामूली बातों पर भी।
"ज़रा सोचिए, मैं पिछले चार सालों से उसे अपने साथ लेकर घूम रहा हूँ।"
“कई दिनों से,” वह आलस भरे अंदाज़ में, बड़ी सहजता से, बिना किसी बनावट के, बोलते रहे। “जब से तुम्हारे भाई ने, तुम्हें याद है ना, उसे गाड़ी से धक्का देकर गिरा दिया था। उसी से मुझे उसमें दिलचस्पी हुई और मैं

उसे गाँव ले गया, लेकिन वह इतनी बकवास करता है कि मुझे उसके साथ रहने में शर्म आती है। मैं उसे वापस ले जा रहा हूँ।"
“उस सज्जन ने पोलिश महिलाओं को नहीं देखा है, और जो मन में आता है वही कह देते हैं।”
"असंभव," पाइप पकड़े हुए पोलिश व्यक्ति ने मैक्सिमोव से कहा।
वह रूसी भाषा काफी अच्छी तरह से बोलता था, बल्कि जितना वह होने का दिखावा करता था, उससे कहीं बेहतर बोलता था।
यदि वह रूसी शब्दों का प्रयोग करता था, तो वह हमेशा उन्हें पोलिश रूप में बदल देता था।
“लेकिन मेरी शादी भी एक पोलिश महिला से हुई थी,” मैक्सिमोव हँसते हुए बोला। “लेकिन क्या आपने घुड़सवार सेना में सेवा की थी? आप घुड़सवार सेना की बात कर रहे थे।”
“क्या आप घुड़सवार सेना के अधिकारी थे?” कल्गानोव ने तुरंत पूछा।
“क्या वह सचमुच घुड़सवार सेना का अधिकारी था? हा हा!” यह सुनकर मित्या चिल्लाया।
उत्सुकता से, और बोलते समय अपनी जिज्ञासु निगाहों से प्रत्येक की ओर घुमाते हुए, मानो उसे पता ही न हो कि वह प्रत्येक से क्या सुन सकता है।
“नहीं, देखो,” मैक्सिमोव उसकी ओर मुड़ा। “मेरा मतलब यह है कि वे
सुंदर पोलिश महिलाएं... जब वे हमारे उहलानों के साथ मज़ुर्का नृत्य करती हैं... जब उनमें से कोई एक उहलान के साथ मज़ुर्का नृत्य करती है, तो वह बिल्ली के बच्चे की तरह उसकी गोद में उछल पड़ती है... एक नन्ही सफेद बिल्ली... और सर्वपिता और सर्वमाता देखते रहते हैं और इसकी अनुमति देते हैं... वे इसकी अनुमति देते हैं... और अगले दिन उहलान आता है और उसे अपना हाथ देता है... ऐसा ही होता है... उसे अपना हाथ देता है, ही-ही!” मैक्सिमोव खिलखिलाते हुए बोले।
“यह पैन एक लाजडक है!” कुर्सी पर बैठा लंबा पोलिश व्यक्ति अचानक गुर्राया और
एक पैर दूसरे के ऊपर रखा हुआ था। मित्या की नज़र उसके बड़े, चिकने बूट पर पड़ी, जिसका मोटा, गंदा तलवा था। दोनों पोलिश लोगों के कपड़े भी काफी चिकने लग रहे थे।
“अच्छा, अब तो मज़ा आ गया! वो किस बात पर डांट रहा है?” ग्रुशेंका ने अचानक चिढ़कर कहा।
“पानी एग्रीपिना, पोलैंड में उस सज्जन ने जो देखा, वे नौकरानियां थीं।”
और वे अच्छे खानदान की महिलाएं नहीं थीं,” पाइप पकड़े हुए पोलिश व्यक्ति ने ग्रुशेंका से कहा।
“तुम इस बात को समझ लो,” लंबे कद के पोलिश व्यक्ति ने तिरस्कारपूर्वक कहा। “अब आगे क्या! उसे बोलने दो! लोग बोलते हैं, उन्हें क्यों रोकना? इससे बात बिगड़ जाती है।”
"खुशमिजाज," ग्रुशेंका ने चिढ़कर कहा।
"मैं उन्हें नहीं रोक रहा हूँ, पानी," विग पहने पोलिश व्यक्ति ने लंबी भौंहों के साथ कहा।
ग्रुशेंका की ओर देखते हुए, वह फिर से गरिमापूर्ण चुप्पी में डूब गया और उसने दोबारा अपनी पाइप से कश खींची।
“नहीं, नहीं। पोलिश सज्जन ने सच कहा था।” कालगानोव उत्साहित हो गया।
फिर से, मानो यह कोई अत्यंत महत्वपूर्ण प्रश्न हो।
“वह कभी पोलैंड नहीं गया, तो वह इसके बारे में कैसे बात कर सकता है? मुझे लगता है कि आप
आप लोगों की शादी पोलैंड में तो नहीं हुई थी?
नहीं, स्मोलेंस्क प्रांत में। बस, एक उहलान उसे यहाँ लेकर आया था।
उससे पहले रूस में, मेरी होने वाली पत्नी, उसकी माँ और चाची, और एक और रिश्तेदार, जिसका एक वयस्क बेटा था, के साथ आई थी। वह उसे सीधे पोलैंड से लेकर आया और मुझे सौंप दिया। वह हमारी रेजिमेंट में लेफ्टिनेंट था, एक बहुत ही अच्छा नौजवान। पहले तो वह खुद उससे शादी करना चाहता था। लेकिन उसने उससे शादी नहीं की, क्योंकि वह लंगड़ी निकली।
“तो तुमने एक लंगड़ी औरत से शादी की?” कालगानोव चिल्लाया। “हाँ। उस समय उन दोनों ने मुझे थोड़ा धोखा दिया और इसे छुपाया। मैं
मुझे लगा कि वह उछल-कूद कर रही है; वह उछलती ही रही... मुझे लगा कि वह मजे के लिए उछल रही है।
“मुझे बहुत खुशी हुई कि वह तुमसे शादी करने वाली थी!” कालगानोव ने बुलंद आवाज में चिल्लाते हुए कहा।
बचकानी आवाज।

“हां, मुझे बहुत खुशी हुई। लेकिन यह एक बिल्कुल अलग मुद्दा निकला।”
बाद में, जब हमारी शादी हुई, शादी के बाद, उसी शाम, उसने कबूल किया और बड़े ही भावुक अंदाज में माफी मांगी। उसने कहा, "बचपन में एक बार मैं पानी के गड्ढे के ऊपर से कूद गई थी और मेरे पैर में चोट लग गई थी।" हा हा हा!
कालगानोव बेहद बचकानी हंसी हंसने लगा और लगभग गिरते-गिरते बचा।
सोफे पर। ग्रुशेंका भी हंस पड़ी। मित्या परम प्रसन्न था।
“क्या तुम्हें पता है, यही सच है, वह अब झूठ नहीं बोल रहा है,” उसने हैरानी से कहा।
कालगानोव ने मित्या की ओर मुड़ते हुए कहा, "और क्या तुम जानते हो, उसकी दो बार शादी हो चुकी है; वह अपनी पहली पत्नी के बारे में बात कर रहा है। लेकिन उसकी दूसरी पत्नी, क्या तुम जानते हो, भाग गई थी और अब जीवित है।"
“क्या यह संभव है?” मित्या ने मैक्सिमोव की ओर मुड़ते हुए कहा।
अत्यंत आश्चर्य की अभिव्यक्ति।
“हाँ। वो भाग गई थी। मुझे भी ऐसा ही अप्रिय अनुभव हुआ था,” मैक्सिमोव ने विनम्रता से सहमति जताते हुए कहा, “एक सज्जन के साथ। और उससे भी बुरा ये था कि उसने मेरी सारी छोटी-मोटी संपत्ति पहले ही अपने नाम करवा ली थी। ‘आप पढ़े-लिखे आदमी हैं,’ उसने मुझसे कहा। ‘आप हमेशा अपना गुजारा कर सकते हैं।’ उसने मेरा काम-काज इसी बात पर निपटा दिया। एक आदरणीय बिशप ने एक बार मुझसे कहा था: ‘आपकी एक पत्नी लंगड़ी थी, लेकिन दूसरी बहुत फुर्तीली थी।’ हा हा हा!”
“सुनो, सुनो!” कालगानोव गुस्से से चिल्लाया, “अगर वह झूठ बोल रहा है तो—”
और वो अक्सर ऐसा ही करता है—वो बस हम सबको हंसाने के लिए ऐसा करता है। इसमें कोई बुराई नहीं है, है ना? जानते हो, कभी-कभी मुझे वो अच्छा लगता है। वो बहुत ही घटिया है, लेकिन ये उसका स्वभाव है, है ना? तुम्हें नहीं लगता? कुछ लोग स्वार्थ के कारण घटिया होते हैं, लेकिन वो तो स्वभाव से ही ऐसा है। ज़रा सोचो, वो दावा करता है (कल पूरे रास्ते इसी बात पर बहस करता रहा) कि गोगोल ने 'डेड सोल्स' उसी के बारे में लिखा था। याद है ना, उसमें मैक्सिमोव नाम का एक ज़मींदार है, जिसे नोज़द्योव ने बुरी तरह पीटा था। उस पर आरोप लगा था, याद है ना, 'नशे की हालत में ज़मींदार मैक्सिमोव को लाठियों से शारीरिक चोट पहुंचाने का।' यकीन मानो, वो दावा करता है कि वो खुद मैक्सिमोव था और उसे पीटा गया था! क्या ऐसा हो सकता है? चितचिकोव ने अपनी यात्रा ज़्यादा से ज़्यादा बीसवीं सदी की शुरुआत में की थी, इसलिए तारीखें मेल नहीं खातीं। उस समय उसकी पिटाई नहीं हो सकती थी, हो ही नहीं सकती थी, है ना?
यह कल्पना करना मुश्किल था कि कालगानोव किस बात को लेकर उत्साहित थे, लेकिन उनका उत्साह वास्तविक था। मित्या ने बिना किसी विरोध के उसका अनुसरण किया।
“अच्छा, लेकिन अगर उन्होंने उसे पीटा होता!” वह हंसते हुए चिल्लाया। “ऐसा नहीं है कि उन्होंने मुझे पीटा, लेकिन मेरा मतलब है...”
मैक्सिमोव।
“तुम्हारा मतलब क्या है? या तो उन्होंने तुम्हारी पिटाई की या नहीं की।”
“कितने बजे हैं, दोस्त?” पाइप पीते हुए पोलिश व्यक्ति ने अपने लंबे दोस्त से पूछा।
एक ऊबे हुए चेहरे के साथ। दूसरे ने जवाब में कंधे उचका दिए। दोनों में से किसी के पास घड़ी नहीं थी।
“क्यों न बात करें? दूसरों को बोलने दो। क्या दूसरों को बोलना नहीं चाहिए?
“तुम ऊब गए हो?” ग्रुशेंका ने स्पष्ट रूप से दोष ढूंढने के इरादे से उस पर झल्लाकर कहा। मित्या के मन में पहली बार कुछ विचार आया। इस बार पोलिश व्यक्ति ने स्पष्ट चिड़चिड़ाहट के साथ जवाब दिया।
“पानी, मैंने इसका विरोध नहीं किया। मैंने कुछ नहीं कहा।”
“ठीक है, तो आओ, हमें अपनी कहानी सुनाओ,” ग्रुशेंका ने मैक्सिमोव से कहा।
आप सब चुप क्यों हैं?
“बताने के लिए कुछ नहीं है, यह सब बहुत मूर्खतापूर्ण है,” मैक्सिमोव ने तुरंत उत्तर दिया।
स्पष्ट संतुष्टि के साथ, थोड़ा नज़ाकत दिखाते हुए। “इसके अलावा, गोगोल की रचनाओं में ये सब रूपक के तौर पर ही हैं, क्योंकि उन्होंने हर नाम को एक अर्थ दिया है। नोज़द्योव का असली नाम नोसोव था, और कुवशीनिकोव का नाम बिल्कुल अलग था, उन्हें श्कोर्नेव कहा जाता था। फेनार्डी का असली नाम फेनार्डी ही

था, बस वो इतालवी नहीं बल्कि रूसी थे, और मम्सेल फेनार्डी एक सुंदर लड़की थी, जिसकी छोटी-छोटी टांगें टाइट्स में थीं, और उसने चमकीले झिलमिलाते हुए एक छोटी सी स्कर्ट पहनी थी, और वो गोल-गोल घूमती रहती थी, लेकिन चार घंटे नहीं बल्कि सिर्फ चार मिनट के लिए, और वो हर किसी को मोहित कर लेती थी...”
“लेकिन तुम्हें किसलिए पीटा गया?” कालगानोव चिल्लाया। “पिरोन के लिए!” मैक्सिमोव ने उत्तर दिया।
“क्या पिरोन?” मित्या चिल्लाया।
“प्रसिद्ध फ्रांसीसी लेखक, पिरोन। हम सब उस समय शराब पी रहे थे, एक बड़ी पार्टी।
हम सब लोग उसी मेले में एक सराय में थे। उन्होंने मुझे आमंत्रित किया था, और सबसे पहले मैंने चुटकुलों का पाठ करना शुरू किया। 'क्या तुम हो, बोइल्यू? क्या अजीब पहनावा है!' और बोइल्यू ने जवाब दिया कि वह एक मुखौटा पार्टी में जा रहा है, यानी स्नानघर में, हा हा हा! और उन्होंने इसे अपने मन में ही ले लिया, इसलिए मैंने जल्दी से एक और बहुत ही व्यंग्यात्मक चुटकुला दोहराया, जो सभी शिक्षित लोगों को अच्छी तरह से पता था:
'हाँ, हम ही सैफो और फाओन हैं!'
लेकिन एक दुःख मुझे सता रहा है।
आपको समुद्र का रास्ता नहीं पता!
वे और भी अधिक नाराज हो गए और इसके लिए मुझे बेहद अभद्र तरीके से गाली देने लगे। और दुर्भाग्यवश, मामले को सुलझाने के लिए, मैंने पिरोन के बारे में एक बहुत ही सलीके से गढ़ी गई कहानी सुनाना शुरू कर दिया, कि कैसे उन्हें फ्रांसीसी अकादमी में स्वीकार नहीं किया गया था, और उन्होंने बदला लेने के लिए अपनी समाधि पर खुद ही लेख लिख दिया था।
'यहाँ पिरोन लेटा है, जो कुछ भी नहीं था,'
यहां तक कि कोई शिक्षाविद भी नहीं।
उन्होंने मुझे पकड़ लिया और मेरी पिटाई की।
“लेकिन किसलिए? किसलिए?”
“मेरी शिक्षा के लिए। लोग किसी भी बात पर किसी आदमी को पीट सकते हैं,” मैक्सिमोव संक्षेप में और सारगर्भित ढंग से निष्कर्ष निकाला।
“बस करो! ये सब बकवास है, मैं सुनना नहीं चाहता। मुझे लगा था कि...”
यह मनोरंजक होगा,” ग्रुशेंका ने अचानक उनकी बात काटते हुए कहा।
मित्या चौंक गया और तुरंत हंसना बंद कर दिया। लंबा पोलिश व्यक्ति उठ खड़ा हुआ।
वह अपने पैरों पर खड़ा रहा और एक ऊबे हुए और अपने माहौल से बाहर के व्यक्ति के घमंडी अंदाज में, अपने हाथों को पीठ के पीछे बांधकर कमरे के एक कोने से दूसरे कोने तक चक्कर लगाने लगा।
“अरे, यह तो एक जगह शांत नहीं बैठ सकता,” ग्रुशेंका ने उसे तिरस्कार भरी नजरों से देखते हुए कहा।
मित्या को चिंता होने लगी। उसने यह भी देखा कि सोफे पर बैठा पोलिश व्यक्ति उसे चिड़चिड़े भाव से देख रहा था।
“पानी!” मित्या चिल्लाया, “चलो पीते हैं! और दूसरा प्याला भी! चलो पीते हैं।” पलक झपकते ही उसने तीन गिलास अपनी ओर खींचे और उन्हें भर दिया।
शैम्पेन।
“पोलैंड के लिए, पानोवी, मैं तुम्हारे पोलैंड के लिए पीता हूँ!” मित्या चिल्लाया। “मुझे बहुत खुशी होगी, पानी,” सोफे पर बैठे पोलिश व्यक्ति ने गरिमा के साथ कहा।
उसने विनम्रतापूर्वक विनम्रता दिखाई और अपना गिलास उठा लिया।
और दूसरा पात्र, उसका नाम क्या है? पीजिए, हे महानुभाव, अपना ले लीजिए।
कांच!” मित्या ने आग्रह किया।
“पान व्रुबलेव्स्की,” सोफे पर बैठे पोलिश व्यक्ति ने कहा। पान व्रुबलेव्स्की लड़खड़ाते हुए मेज के पास आया।
“पोलैंड के लिए, पानोवी!” मित्या ने अपना गिलास उठाते हुए कहा। “हुर्रा!” तीनों ने पिया। मित्या ने बोतल पकड़ी और फिर से तीन गिलास भर दिए।
चश्मा।
अब रूस चलते हैं, पानोवी, और चलो हम भाई बन जाएं!

“हमारे लिए भी थोड़ा सा निकाल दो,” ग्रुशेंका ने कहा; “मैं भी रूस के लिए पीऊँगी!”
“मैं भी ऐसा ही करूंगा,” कल्गानोव ने कहा।
“और मैं भी... रूस जाऊंगी, मेरी बूढ़ी दादी!” खिलखिलाकर हंसते हुए बोली।
मैक्सिमोव।
“सब! सब!” मित्या चिल्लाया। “ट्रिफॉन बोरिसोविच, कुछ और बोतलें!” मित्या अपने साथ लाई हुई बाकी तीन बोतलें भी रख दी गईं।
मेज पर। मित्या ने गिलास भर दिए।
“रूस जिंदाबाद! हुर्रे!” उसने फिर से चिल्लाया। सभी ने टोस्ट पी लिया सिवाय उसके।
पोलैंड के लोगों में से ग्रुशेंका ने अपना पूरा गिलास एक ही बार में खाली कर दिया। पोलैंड के लोगों ने अपने गिलास को छुआ तक नहीं।
“ये कैसा है, पैनोवी?” मित्या चिल्लाया, “क्या तुम इसे नहीं पियोगे?” पैन व्रुबलेव्स्की ने गिलास उठाया, उसे ऊपर उठाया और गूंजती हुई आवाज़ में कहा: “1772 से पहले के रूस के लिए।”
“चलो, अब ठीक है!” दूसरे पोलिश व्यक्ति ने चिल्लाकर कहा, और दोनों ने अपने
एक साथ गिलास।
"तुम मूर्ख हो, तुम पानोवी!" मित्या अचानक बोल पड़ा। "पानी!" दोनों पोलिश लोग धमकी भरे लहजे में चिल्लाए और मित्या पर टूट पड़े।
कुछ मुर्गे। पैन व्रुबलेव्स्की विशेष रूप से क्रोधित थे।
“क्या कोई अपने देश से प्रेम करने से बच सकता है?” वह चिल्लाया। “चुप रहो! झगड़ा मत करो! मैं कोई झगड़ा नहीं होने दूंगी!” ग्रुशेंका ने रौब दिखाते हुए कहा और अपना पैर ज़मीन पर पटका। उसका चेहरा दमक रहा था, उसकी आँखें चमक रही थीं। उसने अभी जो शराब पी थी, उसका असर साफ दिख रहा था।
मित्या बुरी तरह घबरा गया।
“पानोवी, मुझे क्षमा कर दो! यह मेरी गलती थी, मुझे खेद है। व्रुबलेव्स्की, पानी
व्रुबलेव्स्की, मुझे खेद है।"
“अपनी ज़बान बंद रखो, तुम! बैठ जाओ, बेवकूफ!” ग्रुशेंका
उसने क्रोधित होकर डांट लगाई।
सभी लोग बैठ गए, सब चुप थे, एक-दूसरे को देख रहे थे। "सज्जनों, इन सब का कारण मैं ही था," मित्या ने फिर से बोलना शुरू किया, लेकिन वह बोल नहीं पा रहा था।
ग्रुशेंका के शब्दों का जो भी अर्थ निकाल लें। “आइए, हम यहाँ क्यों बैठे हैं? हम क्या करें... अपना मनोरंजन करने के लिए?”
“अरे, ये तो बिलकुल भी मज़ेदार नहीं है!” कालगानोव ने आलस भरे स्वर में बुदबुदाया। “चलो फिर से फ़ारो खेलते हैं, जैसे अभी खेला था,” मैक्सिमोव अचानक खिलखिलाकर हँस पड़ा। “फ़ारो? शानदार!” मित्या चिल्लाया। “काश, पैनोवी भी...”
सोफे पर बैठे पोलिश व्यक्ति ने मानो जवाब दिया, "यह लाइट है, पैनोवी।"
अनिच्छा से।
“यह सच है,” पैन व्रुबलेव्स्की ने सहमति जताते हुए कहा।
“हल्का? ‘हल्का’ से तुम्हारा क्या मतलब है?” ग्रुशेंका ने पूछा। “देर से, पानी! मेरा मतलब है, देर रात,” सोफे पर बैठी पोलिश महिला ने समझाया। “उनके साथ तो हमेशा देर ही होती है। वे कभी कुछ कर ही नहीं पाते!”
ग्रुशेंका
वह गुस्से में लगभग चीख पड़ी। “ये लोग खुद ही मंदबुद्धि हैं, इसलिए दूसरों को भी मंदबुद्धि बनाना चाहते हैं। मित्या, तुम्हारे आने से पहले भी ये लोग इतने ही चुप रहते थे और मुझे नीचा दिखाते रहते थे।”
सोफे पर बैठे पोलिश व्यक्ति ने चिल्लाकर कहा, "मेरी देवी! मुझे लगता है कि आपकी तबीयत ठीक नहीं है।"
“मुझे ऐसा लग रहा है, इसीलिए मैं उदास हूँ। मैं तैयार हूँ, पानी,” उसने मित्या को संबोधित करते हुए कहा।
“शुरू करो, पनी,” मित्या ने सहमति जताते हुए अपनी जेब से नोट निकाले, और
मेज पर दो सौ रूबल के नोट रखते हुए। "मैं तुमसे बहुत कुछ हारना चाहता हूँ। अपने कार्ड निकालो। पैसे जमा करो।"

“हमें मकान मालिक से कार्ड मिल जाएंगे, दोस्त,” उस छोटे पोलिश लड़के ने गंभीरता से कहा।
और पूरी दृढ़ता के साथ।
“यही सबसे अच्छा तरीका है,” पैन व्रुबलेव्स्की ने कहा। “मकान मालिक से? बहुत बढ़िया, मैं समझ गया, चलो उनसे ही ले लेते हैं।”
"कार्ड!" मित्या ने मकान मालिक से चिल्लाकर कहा।
मकान मालिक एक नया, बंद पैकेट लेकर आया और मित्या को बताया कि
लड़कियाँ तैयार हो रही थीं, और यह उम्मीद थी कि झांझ बजाने वाले यहूदी जल्द ही यहाँ पहुँच जाएँगे; लेकिन राशन से भरी गाड़ी अभी तक नहीं आई थी। मित्या मेज़ से उछलकर अगले कमरे में आदेश देने के लिए भागा, लेकिन केवल तीन लड़कियाँ ही पहुँची थीं, और मार्या अभी तक नहीं आई थी। उसे खुद समझ नहीं आ रहा था कि क्या आदेश दे और वह क्यों भागा। उसने बस इतना कहा कि बक्से से लड़कियों के लिए उपहार, मिठाइयाँ, टॉफ़ी और फ़ॉन्डैंट निकालो। “और एंड्री के लिए वोदका, एंड्री के लिए वोदका!” वह जल्दी से चिल्लाया। “मैंने एंड्री के साथ बदतमीज़ी की!”
अचानक मैक्सिमोव, जो उसके पीछे-पीछे बाहर आया था, ने उसे छू लिया।
कंधा।
“मुझे पाँच रूबल दो,” उसने मित्या से फुसफुसाते हुए कहा। “मैं कुछ दांव पर लगाऊंगा।”
फारो भी, ही-ही!
“शानदार! बेहतरीन! यहाँ से दस ले लो!”
उसने फिर अपनी जेब से सारे नोट निकाले और उनमें से दस का एक नोट निकाला।
रूबल। "और अगर आप वह भी हार जाते हैं, तो फिर आइए, फिर आइए।"
"बहुत बढ़िया," मैक्सिमोव ने खुशी से फुसफुसाया और वह वापस दौड़ पड़ा।
मित्या भी लौट आया और उन्हें इंतज़ार कराने के लिए माफ़ी माँगी। पोलिश लोग पहले ही बैठ चुके थे और उन्होंने सिगरेट का पैकेट खोल लिया था। वे पहले से कहीं ज़्यादा मिलनसार और सौहार्दपूर्ण लग रहे थे। सोफ़े पर बैठे पोलिश व्यक्ति ने एक और पाइप जलाया और उसे फेंकने की तैयारी कर रहा था। उसके चेहरे पर गंभीरता का भाव था।
“अपनी-अपनी जगह पर जाइए, सज्जनों,” पैन व्रुबलेव्स्की चिल्लाया। “नहीं, मैं अब और नहीं खेलूंगा,”
कालगानोव ने कहा, “मैं हार गया हूँ।”
अभी उन्हें पचास रूबल दे दो।
“उस पैन की किस्मत अच्छी नहीं रही, शायद इस बार उसकी किस्मत अच्छी हो,” पोलिश व्यक्ति ने कहा।
सोफा उसकी ओर देखा गया।
“बैंक में कितने पैसे हैं? हिसाब-किताब करने के लिए?” मित्या ने पूछा। “ठीक है, शायद सौ, शायद दो सौ।”
जितना आप दांव लगाएंगे।"
“दस लाख!” मित्या हँसते हुए बोला।
"शायद पैन कैप्टन ने पैन पोड्विसोत्स्की के बारे में सुना होगा?"
“पोड्विसोत्स्की कौन?”
"वारसॉ में एक बैंक था और कोई भी आकर उसमें दांव लगा सकता था।"
पोड्विसोत्स्की आता है, एक हजार सोने के सिक्के देखता है और बैंक के बदले उन्हें दांव पर लगा देता है। बैंकर कहता है, 'पाने पोड्विसोत्स्की, क्या आप सोना दांव पर लगा रहे हैं, या हमें आपकी ईमानदारी पर भरोसा करना होगा?' पोड्विसोत्स्की कहता है, 'अपनी ईमानदारी पर, पाने। और यही बेहतर है।' बैंकर पासा फेंकता है। पोड्विसोत्स्की जीत जाता है। बैंकर कहता है, 'ले लो, पाने,' और दराज खोलकर उसे दस लाख दे देता है। 'ले लो, पाने, यह तुम्हारा लाभ है।' बैंक में दस लाख थे। पोड्विसोत्स्की कहता है, 'मुझे यह पता नहीं था।' बैंकर कहता है, 'पाने पोड्विसोत्स्की, आपने अपनी ईमानदारी दांव पर लगाई और हमने अपनी।' पोड्विसोत्स्की दस लाख ले लेता है।
"यह सच नहीं है," कल्गानोव ने कहा।
"पानी कालगानोव, सभ्य समाज में ऐसी बातें नहीं कही जातीं।"
“जैसे कोई पोलिश जुआरी दस लाख रुपये लुटा देगा!” मित्या चिल्लाया, लेकिन

उसने तुरंत खुद को संभाला। "मुझे माफ़ कर दो, पानी, फिर से मेरी ही गलती है, वह दस लाख रुपये दे देगा, सम्मान के लिए, पोलिश सम्मान के लिए। देखो मैं कैसे पोलिश बोलता हूँ, हा हा! लो, मैं दस रूबल दांव पर लगाता हूँ, बदमाश आगे आता है।"
और मैंने रानी पर एक रूबल लगाया, दिलों की रानी पर, उस प्यारी सी छोटी सी रानी पर।
"पैनीनोचका, ही-ही!" मैक्सिमोव हँसते हुए अपनी रानी निकाल ली, और मानो इसे सबसे छिपाने की कोशिश कर रहा हो, वह एकदम पास गया और मेज के नीचे जल्दी से क्रॉस का निशान बना लिया। मित्या जीत गया। रूबल भी जीत गया।
“एक कोना!” मित्या चिल्लाया।
“मैं एक और रूबल की शर्त लगाऊंगा, एक ‘सिंगल’ दांव,” मैक्सिमोव ने खुशी से बुदबुदाया।
रूबल जीतने पर बेहद प्रसन्न।
“हार गया!” मित्या चिल्लाया। “सात पर ‘डबल’!” सात भी हार गया।
"रुको!" कल्गानोव अचानक चिल्लाया।
“दुगुना! दुगुना!” मित्या ने अपनी बाजी दुगुनी कर दी, और हर बार दुगुना करते हुए
दांव पर जो लगा, उसके हिसाब से जो कार्ड उसने दोगुना किया, उसे पोलैंड ने मात दे दी। रूबल का दांव जीतता रहा।
"जल्दी करो!" मित्या ने गुस्से से चिल्लाया।
“तुम दो सौ हार गए हो, दोस्त। क्या तुम एक और सौ दांव पर लगाओगे?”
सोफे पर बैठे पोल ने पूछा।
“क्या? पहले ही दो सौ का नुकसान हो गया? फिर दो सौ और! सब कुछ
दुगुना!”
और अपनी जेब से पैसे निकालते हुए, मित्या दो सिक्के फेंकने ही वाला था।
रानी पर सौ रूबल रखे थे, लेकिन कालगानोव ने उसे अपने हाथ से ढक लिया।
“बस करो!” उसने अपनी बुलंद आवाज में चिल्लाते हुए कहा। “क्या बात है?” मित्या उसे घूर रहा था।
बस करो! मैं नहीं चाहता कि तुम अब और खेलो। मत खेलो!
"क्यों?"
क्योंकि मैं नहीं। छोड़ो, चले जाओ। इसीलिए। मैं तुम्हें जाने नहीं दूंगा।
खेलने पर।"
मित्या ने हैरानी से उसकी ओर देखा।
“इसे छोड़ दो, मित्या। हो सकता है वह सही हो। तुम पहले ही बहुत कुछ खो चुके हो,” उसने कहा।
ग्रुशेंका ने अपनी आवाज में एक अजीब सा स्वर भरते हुए कहा। दोनों पोलिश नागरिक बेहद नाराज भाव से अपनी सीटों से उठ खड़े हुए।
“क्या तुम मजाक कर रहे हो, बेवकूफ?” छोटे कद के आदमी ने घूरते हुए कहा।
कल्गानोव।
“तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई!” पैन व्रुबलेव्स्की ने भी कालगानोव पर गुर्राते हुए कहा। “इस तरह चिल्लाने की हिम्मत मत करो,” ग्रुशेंका चिल्लाई। “अरे, तुम बेवकूफ-
मुर्गा के!"
मित्या ने बारी-बारी से उन सभी को देखा। लेकिन ग्रुशेंका के चेहरे पर कुछ ऐसा था...
अचानक उसका चेहरा उसकी नजरों के सामने आ गया, और उसी क्षण उसके दिमाग में कुछ नया कौंधा—एक अजीब सा नया विचार!
“पानी एग्रीपिना,” छोटी पोलिश लड़की गुस्से से लाल होकर बोलने लगी।
तभी मित्या अचानक उसके पास गया और उसके कंधे पर एक थप्पड़ मार दिया।
"आप बहुत ही प्रतिभाशाली हैं, आपसे दो शब्द कहना चाहूंगा।"
"आप क्या चाहते हैं?"
“अगले कमरे में, मुझे आपसे दो बातें कहनी हैं, कुछ सुखद बातें,
बहुत सुखद। आपको यह सुनकर खुशी होगी।

छोटा सा बर्तन चौंक गया और उसने आशंका भरी निगाहों से मित्या की ओर देखा।
हालांकि, वे तुरंत इस शर्त पर सहमत हो गए कि पैन व्रुबलेव्स्की उनके साथ जाएंगे।
“अंगरक्षक? उसे आने दो, और मुझे वह भी चाहिए। मुझे वह चाहिए ही चाहिए!”
मित्या चिल्लाया, "चलिए, आगे बढ़िए!"
“तुम कहाँ जा रहे हो?” ग्रुशेंका ने चिंता से पूछा। “हम एक पल में वापस आ जाएँगे,” मित्या ने उत्तर दिया।
उसकी आँखों में एक प्रकार का साहस और अचानक आत्मविश्वास झलक रहा था।
एक घंटे पहले जब वह कमरे में दाखिल हुआ था, तब उसका चेहरा बिल्कुल अलग दिख रहा था।
वह पोलिश लोगों को उस बड़े कमरे में नहीं ले गया जहाँ लड़कियों का समूह गा रहा था।
सामान इकट्ठा किया जा रहा था और मेज़ लगाई जा रही थी, लेकिन दाईं ओर के शयनकक्ष में, जहाँ बक्से और सामान रखे थे, दो बड़े पलंग थे, जिन पर सूती तकियों के ढेर लगे थे। कोने में एक छोटी सी लकड़ी की मेज़ पर एक जलती हुई मोमबत्ती थी। छोटा आदमी और मित्या इस मेज़ पर आमने-सामने बैठ गए, जबकि विशालकाय व्रुबलेव्स्की उनके बगल में हाथ पीछे करके खड़ा था। पोलिश लोग गंभीर दिख रहे थे, लेकिन स्पष्ट रूप से जिज्ञासु थे।
“मैं आपके लिए क्या कर सकता हूँ, पानी?” छोटे पोलिश लड़के ने तुतलाते हुए कहा। “देखो, पानी, मैं तुम्हें ज़्यादा देर नहीं रोकूँगा। तुम्हारे लिए पैसे हैं।”
उसने अपने नोट निकाले। “क्या आपको तीन हजार चाहिए? लीजिए और आप जाइए।”
पोलिश व्यक्ति ने खुली आँखों से मित्या को गहरी निगाहों से देखा। “तीन हज़ार, पनी?” उसने व्रुबलेव्स्की से नज़रें मिलाईं। “तीन, पनोवी, तीन! सुनो, पनी, मुझे लगता है तुम समझदार आदमी हो। ले लो।”
तीन हज़ार और भाड़ में जाओ, और व्रुबलेव्स्की भी तुम्हारे साथ हो—सुना? लेकिन, अभी इसी वक्त, और हमेशा के लिए। समझ गए ना, दोस्त, हमेशा के लिए। ये रहा दरवाज़ा, तुम बाहर जाओ। तुम्हारे पास क्या है, ओवरकोट, फर कोट? मैं उसे तुम्हारे लिए बाहर लाता हूँ। वे घोड़ों को तुरंत बाहर निकाल लेंगे, और फिर—अलविदा, दोस्त!
मित्या ने पूरे विश्वास के साथ उत्तर की प्रतीक्षा की। उसे कोई संदेह नहीं था।
उस पोलिश व्यक्ति के चेहरे पर असाधारण दृढ़ संकल्प का भाव झलक रहा था।
और पैसे का क्या, दोस्त?
“पैसे? मैं तुम्हें अभी पाँच सौ रूबल दे दूँगा।”
"यात्रा, और पहली किस्त के रूप में, और कल शहर में ढाई हजार - मैं अपनी इज्जत की कसम खाता हूँ, मैं इसे हासिल करूँगा, मैं इसे किसी भी कीमत पर हासिल करूँगा!" मित्या चिल्लाया।
पोलिश लोगों ने एक बार फिर एक-दूसरे की ओर देखा। उस छोटे कद के आदमी का चेहरा पहले से ज़्यादा बदल गया था।
निषेध करना।
“सात सौ, सात सौ, पांच सौ नहीं, एक साथ, इसी मिनट।”
“पैसे दे दो!” मित्या को कुछ गड़बड़ महसूस हो रही थी, उसने कहा। “क्या बात है, पानी? क्या तुम्हें मुझ पर भरोसा नहीं है? मैं तुम्हें पूरे तीन हज़ार एक साथ नहीं दे सकता। अगर मैं दे दूं, तो तुम कल फिर उसके पास आ सकते हो... इसके अलावा, मेरे पास तीन हज़ार नहीं हैं। वो मेरे घर पर हैं, कस्बे में,” मित्या लड़खड़ाते हुए बोला, उसके हर शब्द के साथ उसका मनोबल गिरता जा रहा था। “मेरी कसम, पैसे वहीं हैं, छिपे हुए।”
पल भर में ही व्यक्तिगत गरिमा की एक असाधारण भावना प्रकट हुई।
उस छोटे आदमी का चेहरा।
“अब आगे क्या?” उसने व्यंग्यपूर्वक पूछा। “शर्म की बात है!” और उसने फर्श पर थूक दिया।
श्री व्रुबलेव्स्की भी सोने चले गए।
“तुम ऐसा करो, पानी,” मित्या ने निराशा के साथ यह समझते हुए कहा कि सब कुछ असंभव था।
“क्योंकि तुम ग्रुशेंका से और अधिक लाभ कमाने की उम्मीद कर रहे हो? तुम दोनों बिल्कुल धूर्त हो, बस यही हो तुम!”
“यह तो घोर अपमान है!” छोटा पोलिश लड़का केकड़े की तरह लाल हो गया, और वह

वह तेज़ी से कमरे से बाहर निकल गया, मानो एक और शब्द भी सुनना न चाहता हो। व्रुबलेव्स्की उसके पीछे-पीछे चला गया, और मित्या भी भ्रमित और निराश होकर उसके पीछे-पीछे गया। वह ग्रुशेंका से डरा हुआ था, इस डर से कि कहीं वह बर्तन देखते ही देखते शोर न मचा दे। और सचमुच ऐसा ही हुआ। पोलिश व्यक्ति कमरे में आया और नाटकीय अंदाज़ में ग्रुशेंका के सामने झुक गया।
“पानी एग्रीपिना, मुझे घोर अपमान का सामना करना पड़ा है!” उसने कहा। लेकिन
ग्रुशेंका ने अचानक अपना सारा धैर्य खो दिया, मानो उन्होंने उसे सबसे नाजुक जगह पर चोट पहुंचाई हो।
“रूसी बोलो! रूसी बोलो!” वह चिल्लाई, “पोलिश का एक भी शब्द मत बोलो! तुम पहले रूसी बोलते थे। पाँच साल में तुम इसे भूल नहीं सकते।”
वह आवेश से लाल हो गई थी।
“पानी एग्रीपिना—”
“मेरा नाम अग्रफेना ग्रुशेंका है, रूसी बोलो वरना मैं नहीं सुनूंगी!” पोलिश महिला ने अपमानित गरिमा के साथ हांफते हुए कहा, और जल्दी से और आडंबरपूर्ण ढंग से
उन्होंने टूटी-फूटी रूसी भाषा में अपना पक्ष रखा:
“पानी अग्रफेना, मैं यहाँ अतीत को भुलाने और उसे क्षमा करने आया हूँ, उसे भूलने आया हूँ।”
आज तक जो कुछ भी हुआ है...
“माफ़ कर दूँ? मुझे माफ़ करने आए हो?” ग्रुशेंका ने बीच में ही टोकते हुए कहा।
वह अपनी सीट से उठ खड़ी हुई।
“बिल्कुल, पानी, मैं डरपोक नहीं हूँ, मैं उदार हूँ। लेकिन मैं था
तुम्हारे प्रेमियों को देखकर मैं दंग रह गया। पान मित्या ने मुझे दूसरे कमरे में तीन हजार रुपये देकर जाने को कहा। मैंने पान के चेहरे पर थूक दिया।
“क्या? उसने मेरे लिए तुम्हें पैसे देने की पेशकश की?” ग्रुशेंका ने हिस्टीरिया में चिल्लाते हुए कहा।
“क्या यह सच है, मित्या? तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई? क्या मैं बिकने के लिए तैयार हूँ?”
“पानी, पानी!” मित्या चिल्लाया, “वह पवित्र और तेजस्वी है, और मैंने उसे कभी नहीं देखा।”
उसका प्रेमी रहा हूँ! ये झूठ है...
“तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई उसके सामने मेरा बचाव करने की?” ग्रुशेंका चीखी। “ऐसा नहीं था
सदाचार ने मुझे पवित्र बनाए रखा, और ऐसा नहीं था कि मैं कुज़्मा से डरता था, बल्कि इसलिए कि जब मैं उससे मिलूँ तो गर्व से अपना सिर ऊँचा करके उसे बता सकूँ कि वह एक बदमाश है। और उसने सचमुच पैसे लेने से इनकार कर दिया?
“उसने ले लिया! उसने ले लिया!” मित्या चिल्लाया; “उसे तो बस पूरा ही चाहिए था।”
तीन हजार एक ही बार में, और मैं उसे सीधे तौर पर केवल सात सौ ही दे सका।"
“अब समझ में आया: उसने सुना था कि मेरे पास पैसा है, और मुझसे शादी करने के लिए यहाँ आया!”
“पानी एग्रीपिना!” नन्हे पोलिश लड़के ने चिल्लाकर कहा। “मैं—एक शूरवीर हूँ, मैं—एक
एक कुलीन महिला, कोई साधारण व्यक्ति नहीं। मैं तुम्हें अपनी पत्नी बनाने आया था, लेकिन तुम्हें एक अलग ही औरत, विकृत और बेशर्म औरत पाया।
“अरे, जहाँ से आए हो वहीं वापस चले जाओ! मैं उनसे कहूँगा कि तुम्हें बाहर निकाल दें और
“तुम्हें निकाल दिया जाएगा,” ग्रुशेंका गुस्से से चिल्लाई। “मैं मूर्ख थी, मूर्ख, जो इन पाँच सालों तक दुखी रही! और यह उसके लिए नहीं था, बल्कि मेरे गुस्से ने मुझे दुखी किया। और यह बिल्कुल भी वह नहीं है! क्या वह ऐसा था? यह उसका पिता हो सकता है! तुमने यह विग कहाँ से ली? वह तो बाज़ था, लेकिन यह तो हंस है। वह मेरे लिए हँसता और गाता था... और मैं पाँच साल तक रोती रही, धिक्कार है मुझ पर मूर्खता की, मैं कितनी नीच और निर्लज्ज थी!”
वह अपनी नीची कुर्सी पर पीछे की ओर धंस गई और अपना चेहरा हाथों में छिपा लिया।
उसी क्षण बाईं ओर के कमरे में मोक्रोए के गायकों का समूह एक जोशीला नृत्य गीत गाने लगा।
“बिल्कुल सोडोम!” व्रुबलेव्स्की अचानक दहाड़ा। “मकान मालिक, भेजो...”
बेशर्म औरतें दूर हो जाओ!
मकान मालिक, जो कुछ समय से उत्सुकतापूर्वक अंदर झाँक रहा था

दरवाजे पर खड़े होकर, चिल्लाने की आवाज सुनकर और यह अनुमान लगाते हुए कि उसके मेहमान आपस में झगड़ रहे हैं, वह तुरंत कमरे में दाखिल हुआ।
“तुम किसलिए चिल्ला रहे हो? क्या तुम अपना गला फाड़ना चाहते हो?” उसने कहा।
वरबलेव्स्की को संबोधित करते हुए, आश्चर्यजनक रूप से असभ्यतापूर्ण लहजे में।
"जानवर!" पैन व्रुबलेव्स्की दहाड़ा।
“जानवर? और अभी तुम किस तरह के कार्ड से खेल रहे थे? मैं
मैंने तुम्हें एक पैकेट दिया और तुमने उसे छिपा दिया। तुमने निशान लगे पत्तों से खेला! नकली पत्तों से खेलने के लिए मैं तुम्हें साइबेरिया भेज सकता हूँ, क्या तुम्हें पता है? क्योंकि यह नकली नोटों के बराबर ही है...
सोफे के पास जाकर उसने अपनी उंगलियाँ सोफे के पीछे और बीच में डाल दीं।
उसने कुशन हटाया और उसमें से ताश के पत्तों का एक बंद पैकेट निकाला।
“ये रहा मेरा पैकेट, अभी तक खुला नहीं है!”
उसने उसे ऊपर उठाया और कमरे में मौजूद सभी लोगों को दिखाया। “मैं जहाँ खड़ा था, वहाँ से मुझे ऐसा लग रहा था कि मैं
मैंने उसे मेरा बैग चुपके से ले जाते और उसकी जगह अपना बैग रखते हुए देखा—तुम धोखेबाज हो, सज्जन नहीं!
“और मैंने दो बार पैन को कार्ड बदलते देखा!” कालगानोव चिल्लाया। “कितनी शर्मनाक! कितनी शर्मनाक!”
ग्रुशेंका ने अपने हाथ पकड़ते हुए कहा।
हाथ ऊपर करके, और सचमुच शर्म से चेहरा लाल करते हुए। "हे भगवान, वह इस हद तक पहुँच गया है!"
“मुझे भी यही लगा!” मित्या ने कहा। लेकिन इससे पहले कि वह ये शब्द बोल पाता,
व्रुबलेव्स्की ने भ्रमित और क्रोधित चेहरे के साथ ग्रुशेंका पर मुट्ठी तानते हुए चिल्लाया:
“तुम नीच वेश्या हो!”
मित्या तुरंत उस पर झपटा, उसे दोनों हाथों से पकड़ लिया और अपनी बाहों में उठा लिया।
हवा में, और एक ही पल में उसे दाहिनी ओर के उस कमरे में ले गए, जहाँ से वे अभी-अभी आए थे।
“मैंने उसे वहीं फर्श पर लिटा दिया है,” उसने तुरंत लौटते हुए घोषणा की।
उत्साह से हांफते हुए। “वह संघर्ष कर रहा है, बदमाश! लेकिन वह वापस नहीं आएगा, इसकी कोई आशंका नहीं! . . .”
उसने तह वाले दरवाजों का एक हिस्सा बंद कर दिया और दूसरे हिस्से को थोड़ा खुला रखते हुए पुकारा।
छोटे पोल के लिए:
"महान महोदय, क्या आप भी सेवानिवृत्त होना चाहेंगे?"
“मेरे प्रिय दिमित्री फ्योदोरोविच,” ट्रिफॉन बोरिसोविच ने कहा, “उन्हें बनाओ।”
आपको आपके खोए हुए पैसे वापस कर दिए जाएंगे। यह तो मानो आपसे चोरी हो गए हों।
"मुझे अपने पचास रूबल वापस नहीं चाहिए," कालगानोव ने अचानक घोषणा की।
“मुझे अपने दो सौ रुपये भी नहीं चाहिए,” मित्या चिल्लाया, “मैं उन्हें नहीं लूंगा।”
किसी भी कीमत पर! उसे इसे सांत्वना के रूप में रखने दो।
“शाबाश, मित्या! तुम कमाल हो, मित्या!” ग्रुशेंका चिल्लाई, और वहाँ था
उस विस्मयबोध में तीव्र क्रोध का भाव था।
क्रोध से लाल हुआ वह छोटा सा बर्तन, लेकिन फिर भी अपनी गरिमा का ध्यान रखते हुए, था...
वह दरवाजे की ओर बढ़ रहा था, लेकिन अचानक रुक गया और ग्रुशेंका से कहा:
“पानी, अगर तुम मेरे साथ आना चाहते हो, तो आ जाओ। नहीं तो अलविदा।” और आक्रोश और अहमियत से फूलते हुए वह दरवाजे की ओर चल पड़ा।
वह चरित्रवान व्यक्ति था: उसका अपने बारे में इतना अच्छा विचार था कि सब कुछ हो जाने के बाद भी, उसे अब भी उम्मीद थी कि वह उससे शादी करेगी। मित्या ने उसके पीछे दरवाजा जोर से बंद कर दिया।
“इसे ताला लगा दो,” कल्गानोव ने कहा। लेकिन चाबी दूसरी तरफ से खटक गई, उनके पास
इसे अंदर से बंद कर दिया।
“वाह! क्या बात है!” ग्रुशेंका ने दृढ़ता से कहा। “उनके साथ यही होना चाहिए था!”

अध्याय 8

प्रलाप

इसके बाद जो कुछ हुआ वह लगभग एक उन्मादपूर्ण उत्सव जैसा था, एक ऐसी दावत जिसमें सभी का स्वागत था। ग्रुशेंका ने सबसे पहले शराब मंगाई।
मैं पीना चाहता हूँ। मैं पूरी तरह से नशे में धुत होना चाहता हूँ, जैसा कि हम पहले थे। क्या तुम
मित्या, याद है ना कि पिछली बार हमने यहाँ कैसे दोस्त बनाए थे!
मित्या स्वयं लगभग उन्माद में था, उसे लग रहा था कि उसकी खुशी चरम पर है।
लेकिन ग्रुशेंका लगातार उसे खुद से दूर भेज रही थी।
जाओ और आनंद लो। उनसे कहो कि नाचें, मौज-मस्ती करें, 'उन्हें
"चूल्हे और झोपड़ी में नाच; जैसा हमने पिछली बार किया था," वह बार-बार चिल्ला रही थी। वह बेहद उत्साहित थी। और मित्या उसकी बात मानने के लिए तुरंत तैयार हो गया। गायक मंडली अगले कमरे में थी। जिस कमरे में वे अब तक बैठे थे, वह बहुत छोटा था और सूती पर्दों से दो हिस्सों में बंटा हुआ था, जिसके पीछे एक बड़ा सा पलंग था जिस पर मुलायम पंखों का गद्दा और सूती तकियों का ढेर लगा था। मेहमानों के लिए बने चार कमरों में भी पलंग थे। ग्रुशेंका दरवाजे के ठीक पास बैठ गई। मित्या ने उसके लिए एक आरामकुर्सी लगा दी। वह "पिछली बार" भी नाच-गाना देखने के लिए इसी जगह बैठी थी, जब उन्होंने वहाँ खूब मौज-मस्ती की थी। उस समय भी सभी लड़कियाँ वहाँ मौजूद थीं; वायलिन और वीणा बजाने वाला यहूदी बैंड भी आ चुका था, और अंत में लंबे समय से प्रतीक्षित शराब और खाने-पीने का सामान लेकर गाड़ी भी आ गई थी।
मित्या इधर-उधर भागदौड़ कर रहा था। तरह-तरह के लोग कमरे में आने लगे।
किसान और उनकी स्त्रियाँ, जो नींद से जागकर एक और शानदार मनोरंजन की उम्मीद में उमड़ पड़े थे, देख रहे थे। मित्या को उनके चेहरे याद थे, और उसने हर परिचित का अभिवादन किया और गले लगाया। उसने बोतलें खोलीं और उपस्थित होने वाले हर व्यक्ति के लिए शराब परोसी। केवल लड़कियाँ ही शैम्पेन के लिए बहुत उत्सुक थीं। पुरुषों को रम, ब्रांडी और सबसे बढ़कर गरमा गरम पंच पसंद था। मित्या ने सभी लड़कियों के लिए चॉकलेट बनवाई और आदेश दिया कि तीन समोवर रात भर उबलते रहें ताकि हर कोई अपनी इच्छानुसार चाय और पंच ले सके।
इसके बाद एक बेतुकी, अराजक और अफरा-तफरी मच गई, लेकिन मित्या अपने स्वाभाविक स्वभाव में था। वह एक अजीबोगरीब स्थिति में था, और जैसे-जैसे वह और भी मूर्खतापूर्ण होता गया, उसका उत्साह बढ़ता गया। अगर उस समय किसान उससे पैसे मांगते, तो वह अपने नोट निकालकर उन्हें धड़ल्ले से बाँट देता। शायद यही कारण था कि जमींदार ट्रिफॉन बोरिसोविच, मित्या की रक्षा के लिए उसके आसपास मंडराता रहता था। ऐसा लगता था कि उसने उस रात सोने का विचार ही छोड़ दिया था, हालाँकि उसने बहुत कम पिया, केवल एक गिलास पंच, और अपने तरीके से मित्या के हितों पर पैनी नजर रखी। उसने ठीक समय पर हस्तक्षेप किया, और विनम्रतापूर्वक और चापलूसी से मित्या को समझाया कि वह किसानों को "सिगार और राइन वाइन" न दे, और सबसे बढ़कर, पैसे न बाँटे जैसा उसने पहले किया था। वह किसान लड़कियों के शराब पीने और मिठाई खाने पर भी बहुत नाराज था।
"ये लोग बहुत ही घटिया हैं, दिमित्री फ्योदोरोविच," उन्होंने कहा। "मैं उन्हें एक
उनमें से हर एक को लात मारो, और वे इसे एक सम्मान के रूप में स्वीकार करेंगे—बस यही उनकी कीमत है!
मित्या को फिर से एंड्री की याद आई और उसने पंच मंग भेजने का आदेश दिया।
"मैंने अभी उसके साथ बदतमीज़ी की," उसने धीमी, नरम आवाज़ में दोहराया। कालगानोव पीना नहीं चाहता था, और पहले तो उसे लड़कियों का गाना पसंद नहीं आया; लेकिन शैम्पेन के दो-चार गिलास पीने के बाद वह असाधारण रूप से जीवंत हो उठा, कमरे में इधर-उधर घूमने लगा, हँसने लगा और संगीत और गानों की तारीफ़ करने लगा, हर किसी और हर चीज़ की प्रशंसा करने लगा। मैक्सिमोव, मदहोश होकर, उसके पास से नहीं हटा। ग्रुशेंका को भी नशा चढ़ने लगा था। कालगानोव की ओर इशारा करते हुए उसने मित्या से कहा:

“वह कितना प्यारा और आकर्षक लड़का है!”
और मित्या प्रसन्न होकर कलगानोव और मैक्सिमोव को चूमने के लिए दौड़ पड़ा। ओह, कितना बढ़िया! उसकी यही उम्मीदें थीं! उसने अभी तक कुछ नहीं कहा था, और ऐसा लग रहा था मानो वह जानबूझकर चुप रहना चाहती हो। लेकिन वह बीच-बीच में उसे स्नेह भरी और भावुक निगाहों से देखती रहती थी। अंत में उसने अचानक उसका हाथ पकड़ा और उसे ज़ोर से अपनी ओर खींच लिया। उस समय वह दरवाजे के पास रखी नीची कुर्सी पर बैठी थी।
“तुम अभी-अभी कैसे आए, है ना? क्या तुम अंदर आ गए! . . . मैं था
डरी हुई। तो तुम मुझे उसके हवाले करना चाहती थी, है ना? क्या तुम सचमुच ऐसा करना चाहती थी?
“मैं तुम्हारी खुशी खराब नहीं करना चाहता था!” मित्या ने आनंद से भरे स्वर में लड़खड़ाते हुए कहा। लेकिन उसे उसके जवाब की जरूरत नहीं थी।
“अच्छा, जाओ और मज़े करो...” उसने उसे एक बार फिर विदा कर दिया। “मत करो।”
रोना मत, मैं तुम्हें फिर से कॉल करूंगा।
वह भाग जाता था, और वह गाना सुनती और देखती रहती थी।
नाचते हुए, उसकी निगाहें हर जगह उसका पीछा करती रहीं। लेकिन पंद्रह मिनट बाद वह उसे फिर से पुकारेगी और वह फिर से उसके पास दौड़कर लौट आएगा।
"आओ, मेरे पास बैठो, मुझे बताओ, तुमने मेरे बारे में कैसे सुना, और मेरे बारे में कैसे सुना?"
क्या आप कल यहाँ आए थे? आपको यह बात सबसे पहले किससे पता चली?
और मित्या उसे इसके बारे में सब कुछ बताने लगा, बेतरतीब ढंग से, असंगत तरीके से।
वह बहुत बेचैन था। वह अजीब तरह से बोलता था, अक्सर भौंहें चढ़ाता था और अचानक रुक जाता था।
“तुम किस बात पर भौंहें चढ़ा रहे हो?” उसने पूछा।
कुछ नहीं... मैंने एक आदमी को वहाँ बीमार छोड़ दिया। मैं उसके लिए अपने जीवन के दस साल कुर्बान कर देता।
ठीक हो जाना, यह जानना कि वह ठीक है!
खैर, अगर वो बीमार है तो उसे छोड़ो। तो क्या तुम खुद को गोली मारना चाहते थे?
कल! कितना बेवकूफ लड़का है! किसलिए? मुझे तुम्हारे जैसे लापरवाह लोग पसंद हैं,” उसने तुतलाते हुए, थोड़ी लड़खड़ाती ज़बान से कहा। “तो तुम मेरे लिए कुछ भी करोगे, है ना? क्या तुम सच में कल खुद को गोली मारना चाहते हो, बेवकूफ? नहीं, थोड़ा रुको। कल मुझे तुमसे कुछ कहना हो सकता है... मैं आज नहीं कहूँगी, कल कहूँगी। क्या तुम चाहते हो कि आज कहूँ? नहीं, मैं आज नहीं कहना चाहती। चलो, जाओ, जाकर अपना मनोरंजन करो।”
लेकिन एक बार उसने मानो उलझन और बेचैनी से उसे फोन किया। “तुम उदास क्यों हो? मैं देख रही हूँ कि तुम उदास हो... हाँ, मैं देख रही हूँ,” उसने आगे कहा।
उसकी आँखों में गहराई से देखते हुए, "भले ही तुम किसानों को चूमते और चिल्लाते रहो, मुझे कुछ तो दिख रहा है। नहीं, खुश रहो। मैं खुश हूँ; तुम भी खुश रहो... मैं यहाँ किसी से प्यार करती हूँ। अंदाज़ा लगाओ कौन है। अरे, देखो, मेरा बेटा सो गया है, बेचारा, वह नशे में है।"
उसका मतलब कालगानोव से था। दरअसल, वह नशे में था और सो गया था।
कुछ पल सोफे पर बैठे रहे। लेकिन वह सिर्फ शराब के नशे में ऊंघ नहीं रहे थे; उन्हें अचानक उदासी महसूस होने लगी, या जैसा उन्होंने कहा, "ऊब" जाने का एहसास हुआ। लड़कियों के गाने उन्हें बेहद परेशान कर रहे थे, जो शराब के साथ-साथ धीरे-धीरे भद्दे और बेपरवाह होते जा रहे थे। और नाच भी उतने ही बुरे थे। दो लड़कियां भालू के वेश में थीं, और स्टेपानिडा नाम की एक चंचल लड़की, हाथ में छड़ी लिए, रखवाली करने वाली की भूमिका निभा रही थी, और उन्हें "दिखाने" लगी।
"मरिया, होश में आओ, वरना तुम्हें छड़ी से मार पड़ेगी!"
अंत में भालू अत्यंत अशोभनीय ढंग से जमीन पर लोटने लगे।
पुरुषों और महिलाओं की घनी भीड़ से खिलखिलाती हंसी के बीच।
“ठीक है, करने दो! करने दो!” ग्रुशेंका ने गंभीर स्वर में कहा।

उसके चेहरे पर खुशी का भाव था। "जब लोगों को मौज-मस्ती करने का मौका मिलता है, तो वे खुश क्यों न हों?"
कालगानोव का चेहरा ऐसा लग रहा था मानो वह मिट्टी से सना हुआ हो। "यह सब किसानों की मूर्खता है, यह सब घिनौना है," वह बुदबुदाते हुए दूर हट गया;
"यह वह खेल है जो वे गर्मियों में रात भर उजाला रहने पर खेलते हैं।"
उन्हें एक चंचल नृत्य धुन पर आधारित एक "नया" गाना विशेष रूप से नापसंद था।
उन्होंने बताया कि कैसे एक सज्जन व्यक्ति आया और लड़कियों के साथ अपनी किस्मत आजमाने लगा, यह देखने के लिए कि क्या वे उससे प्यार करेंगी।
“गुरु लड़कियों को परखने आया: क्या वे उससे प्यार करेंगी या नहीं?”
लेकिन लड़कियां गुरु से प्रेम नहीं कर सकती थीं:
वह मुझे बेरहमी से पीटता था
और ऐसा प्यार मुझे मंजूर नहीं है।"
फिर एक जिप्सी आता है और वह भी कोशिश करता है:
“जिप्सी लड़कियों को आजमाने आया था:
क्या वे उससे प्यार करेंगे, या नहीं करेंगे?
लेकिन वे जिप्सी से भी प्यार नहीं कर सकते थे:
मुझे डर है कि वह चोर होगा।
और इससे मुझे बहुत आंसू बहाने पड़ते।
और कई और लोग अपनी किस्मत आजमाने आते हैं, उनमें एक सैनिक भी शामिल होता है:
“सैनिक लड़कियों की परीक्षा लेने आया था:
क्या वे उससे प्यार करेंगे, या नहीं करेंगे?
लेकिन सैनिक को दो अभद्र पंक्तियों में तिरस्कारपूर्वक अस्वीकार कर दिया जाता है, जिन्हें गाया जाता है। पूर्ण स्पष्टता के साथ और दर्शकों में हलचल मचाते हुए। गीत एक व्यापारी के साथ समाप्त होता है:
“व्यापारी लड़कियों को परखने आया था:
क्या वे उससे प्यार करेंगे, या नहीं करेंगे?
और ऐसा प्रतीत होता है कि वह उनका प्यार इसलिए जीत लेता है क्योंकि:
व्यापारी मेरे लिए सोना बनाएगा
और मैं खुशी-खुशी उसकी रानी बनूंगी।
कलवानोव बेहद आक्रोशित थे।
“ये तो बीते जमाने का गाना है,” उसने जोर से कहा। “ऐसा कौन लिखता है?”
उनके लिए क्या था? वे चाहें तो किसी रेलकर्मी या यहूदी को भी लड़कियों के साथ अपनी किस्मत आजमाने के लिए बुला सकते थे; वे सब कुछ अपने साथ ले जाते।
और, मानो यह कोई व्यक्तिगत अपमान हो, उन्होंने घोषणा की,
उसे ऊब महसूस हो रही थी, इसलिए वह सोफे पर बैठ गया और तुरंत सो गया। उसका प्यारा सा छोटा चेहरा सोफे के कुशन पर पीछे की ओर गिरते हुए काफी पीला पड़ गया था।
“देखो, यह कितना सुंदर है,” ग्रुशेंका ने मित्या को उसके पास ले जाते हुए कहा। “मैं
वह अभी अपने बाल संवार रहा था; उसके बाल अलसी जैसे हैं, और बहुत घने हैं...
और, कोमलता से झुककर, उसने उसके माथे को चूमा। कल्गानोव
उसने तुरंत अपनी आँखें खोलीं, उसकी ओर देखा, खड़ा हो गया और अत्यंत चिंतित भाव से पूछा कि मैक्सिमोव कहाँ है?
“तो आप यही चाहते हैं?” ग्रुशेंका हंस पड़ीं। “मेरे साथ रुकिए।”
एक मिनट। मित्या, दौड़ो और मैक्सिमोव को ढूंढो।"
ऐसा प्रतीत होता था कि मैक्सिमोव खुद को लड़कियों से दूर नहीं कर पा रहा था, बल्कि

वह बार-बार उठकर अपने लिए एक गिलास शराब उड़ेल रहा था। उसने चॉकलेट के दो प्याले पी लिए थे। उसका चेहरा लाल था, और नाक भी लाल थी; उसकी आँखें नम और भावुकता से भरी हुई थीं। वह दौड़कर उठा और घोषणा की कि वह "सबोटियर" नृत्य करने जा रहा है।
"जब मैं छोटी थी तब उन्होंने मुझे वे सभी सभ्य, कुलीन नृत्य सिखाए थे।"
थोड़ा । । ।"
“जाओ, उसके साथ जाओ, मित्या, और मैं यहीं से देखूंगी कि वह कैसे नाचता है,” उसने कहा।
ग्रुशेंका.
“नहीं, नहीं, मैं भी देखने आ रहा हूँ,” कालगानोव ने कहा और अपने बालों को झाड़ लिया।
ग्रुशेंका के साथ बैठने के प्रस्ताव को मैक्सिमोव ने बड़ी भोली-भाली शैली में ठुकरा दिया। वे सब देखने चले गए। मैक्सिमोव ने अपना नृत्य किया। लेकिन मित्या के अलावा किसी को भी इससे कोई खास प्रशंसा नहीं हुई। नृत्य में बस उछलना-कूदना, पैर ऊपर उठाना और हर उछलने पर मैक्सिमोव का अपने पैर के तलवे पर थपकी मारना शामिल था। कालगानोव को यह बिल्कुल पसंद नहीं आया, लेकिन मित्या ने नर्तक को चूम लिया।
“धन्यवाद। शायद आप थके हुए हैं? आप यहाँ क्या ढूंढ रहे हैं? क्या
क्या आपको कुछ मीठा पसंद है? शायद एक सिगार?
"एक सिगरेट।"
क्या आप कुछ पीना नहीं चाहेंगे?
मैं बस एक लिकर लूंगा... क्या आपके पास कोई चॉकलेट है?
“हाँ, वहाँ मेज पर ढेर सारे रखे हैं। एक चुन लो, मेरी प्यारी।”
आत्मा!"
मुझे वेनिला वाला पसंद है... बूढ़े लोगों के लिए। हा हा हा!
“नहीं भाई, हमारे पास उस तरह की कोई विशेष चीज नहीं है।”
“मैं कहता हूँ,” बूढ़े आदमी ने झुककर मित्या के कान में फुसफुसाते हुए कहा। “वह लड़की
देखो, छोटी मार्या, ही-ही! अगर तुम मुझे उससे दोस्ती करने में मदद करो तो कैसा रहेगा?
“तो यही तो तुम चाहते हो! नहीं भाई, ऐसा नहीं चलेगा!”
“मैं किसी को कोई नुकसान नहीं पहुँचाऊँगा,” मैक्सिमोव ने उदास स्वर में बुदबुदाया। “ओह, ठीक है, ठीक है। वे यहाँ केवल नाचने-गाने के लिए आते हैं।”
मुझे पता है भाई। लेकिन ज़रा रुको! . . . इस बीच खाओ-पियो और मौज करो। क्या तुम्हें पैसे नहीं चाहिए?
"शायद बाद में," मैक्सिमोव मुस्कुराया।
“ठीक है, ठीक है...”
मित्या का सिर जल रहा था। वह बाहर लकड़ी की बालकनी में चला गया।
जो इमारत के भीतरी हिस्से में, आंगन की ओर खुलती हुई पूरी इमारत के चारों ओर घूमती थी। ताज़ी हवा ने उसे तरोताज़ा कर दिया। वह एक अंधेरे कोने में अकेला खड़ा था, और अचानक उसने अपने दोनों हाथों से अपना सिर पकड़ लिया। उसके बिखरे हुए विचार एक साथ आ गए; उसकी संवेदनाएँ एक संपूर्ण रूप में घुलमिल गईं और उसके मन में अचानक एक प्रकाश उत्पन्न हुआ। एक भयानक और डरावना प्रकाश!
"अगर मुझे खुद को गोली मारनी है, तो अभी क्यों नहीं?" उसके मन में आया। "क्यों न पिस्तौलें ले आऊं, उन्हें यहाँ लाऊं, और यहीं, इस अंधेरे गंदे कोने में, अपना अंत कर दूं?" लगभग एक मिनट तक वह असमंजस में खड़ा रहा। कुछ घंटे पहले, जब वह यहाँ भागा था, तो बदनामी, उसके द्वारा की गई चोरी, और वह खून, वह खून उसका पीछा कर रहा था! ... लेकिन फिर भी तब उसके लिए यह आसान था। तब सब कुछ खत्म हो गया था: उसने उसे खो दिया था, उसे त्याग दिया था। वह उसके लिए चली गई थी—ओह, तब उसकी मृत्यु की सजा उसके लिए आसान थी; कम से कम यह आवश्यक, अपरिहार्य लग रही थी, क्योंकि उसे धरती पर रहने का क्या मतलब था?
लेकिन अब? क्या यह तब जैसा ही था? अब कम से कम एक प्रेत, एक आतंक तो है।
सब कुछ खत्म हो गया था: वह पहला, सच्चा प्रेमी, वह मनहूस शख्स गायब हो गया था, कोई निशान नहीं छोड़ा था। वह भयानक प्रेत एक छोटी सी, हास्यास्पद सी चीज़ में बदल गया था; उसे शयनकक्ष में ले जाकर

बंद कर दिया गया था। वह कभी वापस नहीं आएगा। वह शर्मिंदा थी, और उसकी आँखों से वह देख सकता था कि वह किससे प्यार करती है। अब उसके पास जीवन को खुशहाल बनाने के लिए सब कुछ था... लेकिन वह जीना जारी नहीं रख सकता था, बिल्कुल नहीं; ओह, धिक्कार है! "हे भगवान! उस आदमी को फिर से जीवित कर दो जिसे मैंने बाड़ पर गिरा दिया था! इस भयानक प्याले को मुझसे दूर कर दो! हे प्रभु, तूने मुझ जैसे पापियों के लिए चमत्कार किए हैं! लेकिन क्या, क्या होगा अगर वह बूढ़ा आदमी जीवित हो? ओह, तब मैं दूसरे अपमान की शर्म मिटा दूँगा। मैं चुराया हुआ पैसा लौटा दूँगा। मैं उसे वापस कर दूँगा; मैं उसे किसी भी तरह हासिल कर लूँगा... उस शर्म का कोई निशान नहीं बचेगा, सिवाय मेरे दिल में हमेशा के लिए! लेकिन नहीं, नहीं; ओह, असंभव कायर सपने! ओह, धिक्कार है!"
फिर भी उसके अंधकार में आशा की एक किरण थी। वह उछल पड़ा और
वह दौड़कर कमरे में वापस गया—उसके पास, उसके पास, जो हमेशा के लिए उसकी रानी थी! क्या उसके प्यार का एक पल भी उसके पूरे जीवन के लिए, अपमान की पीड़ा में भी, कीमती नहीं था? यह बेकाबू सवाल उसके दिल को जकड़ रहा था। "उसके पास, सिर्फ उसके पास, उसे देखने के लिए, उसकी आवाज़ सुनने के लिए, कुछ भी न सोचने के लिए, सब कुछ भूल जाने के लिए, बस उस रात के लिए, एक घंटे के लिए, एक पल के लिए!" जैसे ही वह बालकनी से गलियारे में मुड़ा, उसकी मुलाकात मकान मालिक ट्रिफॉन बोरिसोविच से हुई। उसने सोचा कि वह उदास और चिंतित दिख रहा है, और उसे लगा कि वह उसे ढूंढने आया है।
"क्या बात है, ट्रिफॉन बोरिसोविच? क्या आप मुझे ढूंढ रहे हैं?"
"जी नहीं, महोदय।" मकान मालिक थोड़ा परेशान लग रहा था। "मुझे क्यों देखना चाहिए?"
तुम्हारे लिए? तुम कहाँ थे?
तुम इतने उदास क्यों दिख रहे हो? कहीं तुम नाराज़ तो नहीं हो? ज़रा रुको, तुम
मैं जल्द ही सोने जा रहा हूँ... समय क्या हुआ है?
"तीन बज रहे होंगे। तीन बज चुके होंगे, जरूर।"
हम जल्द ही समाप्त करेंगे। हम समाप्त करेंगे।
"इसका जिक्र मत करो; इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। जब तक चाहो इसे जारी रखो..."
"उसे क्या हुआ है?" मित्या ने एक पल के लिए सोचा, और फिर
मित्या दौड़कर उस कमरे में गया जहाँ लड़कियाँ नाच रही थीं। लेकिन वह वहाँ नहीं थी। वह नीले कमरे में भी नहीं थी; सोफे पर कल्गानोव के सिवा कोई नहीं सोया था। मित्या ने पर्दे के पीछे से झाँका—वह वहीं थी। वह कोने में एक संदूक पर बैठी थी। आगे की ओर झुकी हुई, सिर और बाँहें पास ही रखे बिस्तर पर रखे, वह फूट-फूटकर रो रही थी, अपनी सिसकियों को दबाने की पूरी कोशिश कर रही थी ताकि कोई उसे सुन न सके। मित्या को देखकर उसने उसे अपने पास बुलाया, और जब वह दौड़कर उसके पास आया, तो उसने उसका हाथ कसकर पकड़ लिया।
"मित्या, मित्या, मैं उससे प्यार करती थी, तुम्हें पता है। इन पांच सालों में मैंने उससे कितना प्यार किया है।" इतने साल, इतना समय! क्या मैं उससे प्यार करती थी या सिर्फ अपने गुस्से से? नहीं, उससे, उससे! यह झूठ है कि मैंने अपने गुस्से से प्यार किया, उससे नहीं। मित्या, मैं तब सिर्फ सत्रह साल की थी; वह मेरे प्रति बहुत दयालु, बहुत हंसमुख था; वह मेरे लिए गीत गाया करता था... या कम से कम मुझ जैसी भोली लड़की को तो ऐसा ही लगता था... और अब, हे भगवान, वह वही आदमी नहीं है। उसका चेहरा भी नहीं बदला; वह बिल्कुल अलग है। मैं उसे पहचान भी नहीं सकती थी। मैं तिमोफे के साथ यहाँ आई थी, और पूरे रास्ते मैं सोचती रही कि मैं उससे कैसे मिलूँगी, उससे क्या कहूँगी, हम एक-दूसरे को कैसे देखेंगे। मेरी आत्मा कमजोर थी, और अचानक ऐसा लगा जैसे उसने मुझ पर गंदे पानी की बाल्टी उंडेल दी हो। उसने मुझसे एक शिक्षक की तरह बात की, एकदम गंभीर और विद्वान; उसने मुझसे इतनी गंभीरता से बात की कि मैं अवाक रह गई। मैं एक शब्द भी नहीं बोल पाई। पहले तो मुझे लगा कि वह अपने उस बड़े से साथी के सामने बोलने में शर्म महसूस कर रहा है। मैं उसे घूरती रही और सोचती रही कि अब मैं उससे एक शब्द भी क्यों नहीं कह पा रही हूँ। ज़रूर उसकी पत्नी ने ही उसे बर्बाद किया होगा; तुम्हें पता है, उसने मुझे शादी के लिए छोड़ दिया था। उसने ही उसे ऐसा बदल दिया होगा। मित्या, कितनी शर्मनाक बात है! ओह, मित्या, मुझे शर्म आ रही है, मुझे पूरी ज़िंदगी शर्म आ रही है। धिक्कार है उन पाँच सालों पर!
और फिर से वो फूट-फूट कर रोने लगी, लेकिन उसने मित्या का हाथ कसकर पकड़ लिया और...

इसे जाने मत दो।
“मित्या, प्रिय, यहीं रहो, कहीं मत जाओ। मैं तुमसे एक बात कहना चाहती हूँ।”
उसने फुसफुसाते हुए कहा और अचानक अपना चेहरा उसकी ओर उठाया। “सुनो, मुझे बताओ कि मैं किससे प्यार करती हूँ? मैं यहाँ एक आदमी से प्यार करती हूँ। वह आदमी कौन है? यही तुम्हें मुझे बताना होगा।”
रोने से सूजे हुए उसके चेहरे पर एक मुस्कान खिल उठी, और उसकी आँखें
अर्धअंधेरे में चमक रहा था।
“एक बाज़ उड़कर आया, और मेरा दिल बैठ गया। ‘बेवकूफ! यही तो वो आदमी है जिससे तुम प्यार करती हो!’”
यही बात मेरे दिल ने मुझसे फुसफुसाई। तुम अंदर आए और सब कुछ रोशन हो गया। उसे किस बात का डर है? मैंने सोचा। क्योंकि तुम डरी हुई थी; तुम बोल नहीं पा रही थी। उसे उनसे डर नहीं लग रहा—क्या तुम्हें किसी से भी डर लग सकता है? उसे मुझसे डर लग रहा है, मैंने सोचा, सिर्फ मुझसे। तो फेन्या ने तुम्हें बताया, तुम छोटी सी नादान, कि मैंने खिड़की से अलेयोशा को पुकार कर कहा था कि मैंने मित्येंका से एक घंटे के लिए प्यार किया था, और अब मैं किसी और से प्यार करने जा रही हूँ...। मित्या, मित्या, मैं इतनी मूर्ख कैसे हो सकती हूँ कि तुम्हारे बाद किसी और से प्यार करने के बारे में सोचूँ? क्या तुम मुझे माफ करोगे, मित्या? क्या तुम मुझे माफ करोगे या नहीं? क्या तुम मुझसे प्यार करते हो? क्या तुम मुझसे प्यार करते हो?” वह उछल पड़ी और दोनों हाथों से उसके कंधों पर हाथ रख दिए। मित्या, आनंद से अवाक, उसकी आँखों में, उसके चेहरे पर, उसकी मुस्कान पर देखता रहा, और अचानक उसे अपनी बाहों में कसकर पकड़ लिया और उसे जोश से चूम लिया।
“क्या तुम मुझे तुम्हें सताने के लिए क्षमा करोगे? मैंने यह द्वेषवश किया था।”
मैंने तुम सबको सताया। मैंने बदले की भावना से उस बूढ़े को पागल कर दिया... तुम्हें याद है कैसे एक दिन तुमने मेरे घर पर शराब पी थी और शराब का गिलास तोड़ दिया था? मुझे वो याद आया और मैंने आज एक गिलास तोड़ दिया और 'अपने नीच दिल' के लिए पी लिया। मित्या, मेरे बाज़, तुम मुझे क्यों नहीं चूमते? उसने मुझे एक बार चूमा, और अब वो पीछे हट जाता है और देखता और सुनता है। मेरी बात क्यों सुनते हो? मुझे चूमो, मुझे ज़ोर से चूमो, यही सही है। अगर तुम प्यार करते हो, तो प्यार करो! मैं अब तुम्हारी गुलाम बन जाऊंगी, जीवन भर तुम्हारी गुलाम। गुलाम होना अच्छा लगता है। मुझे चूमो! मुझे मारो, मेरे साथ बुरा बर्ताव करो, मेरे साथ जो चाहो करो... और मैं सच में कष्ट सहने की हकदार हूं। रुको, इंतज़ार करो, बाद में, मैं यह बर्दाश्त नहीं करूंगी..." उसने अचानक उसे धक्का देकर दूर कर दिया। "जाओ, मित्या, मैं आती हूं और थोड़ी शराब पीती हूं, मैं नशे में धुत होना चाहती हूं, मैं नशे में धुत होकर नाचूंगी; मुझे नाचना ही है, मुझे नाचना ही है!" वह उससे खुद को छुड़ाकर पर्दे के पीछे गायब हो गई। मित्या नशे में धुत आदमी की तरह उसके पीछे-पीछे गया।
हाँ, चाहे कुछ भी हो जाए—अब जो भी हो जाए, एक मिनट के लिए मैं
“पूरी दुनिया दे दो,” उसने सोचा। ग्रुशेंका ने सचमुच एक ही घूंट में पूरा गिलास शैम्पेन पी डाला और तुरंत मदहोश हो गई। वह पहले वाली कुर्सी पर बैठ गई, उसके चेहरे पर एक आनंदमय मुस्कान थी। उसके गाल दमक रहे थे, होंठ लाल थे, उसकी चमकती आँखें नम थीं; उसकी आँखों में एक जोशीला आकर्षण था। यहाँ तक कि कालगानोव के दिल में भी हलचल मच गई और वह उसके पास गया।
“क्या तुम्हें महसूस हुआ कि मैंने अभी सोते समय तुम्हें कैसे चूमा?”
उसने भारी स्वर में कहा, “मैं नशे में हूँ, बस यही बात है... और क्या तुम नशे में नहीं हो? और मित्या क्यों नहीं पी रहा? तुम क्यों नहीं पीते, मित्या? मैं नशे में हूँ, और तुम नहीं पीते...”
मैं नशे में हूँ! मैं पहले से ही नशे में हूँ... तुम्हारे साथ नशे में हूँ... और अब मैं और भी नशे में हो जाऊँगा।
शराब के नशे में चूर।
उसने एक और गिलास पिया, और उसे खुद भी यह अजीब लगा कि
एक गिलास ने उसे पूरी तरह मदहोश कर दिया। वह अचानक नशे में चूर हो गया, हालाँकि उस पल तक वह पूरी तरह होश में था, उसे याद था। उस पल से उसके चारों ओर सब कुछ घूमने लगा, मानो वह बेहोश हो गया हो। वह चलता, हँसता, सबसे बात करता, बिना यह जाने कि वह क्या कर रहा है। केवल एक लगातार जलन

महसूस होती रही, "जैसे उसके दिल में एक धधकता हुआ कोयला हो," उसने बाद में कहा। वह उसके पास गया, उसके बगल में बैठ गया, उसे निहारता रहा, उसकी बातें सुनता रहा... वह बहुत बातूनी हो गई, सबको अपने पास बुलाती रही, और समूह की अलग-अलग लड़कियों को इशारे करती रही। जब कोई लड़की आती, तो वह या तो उसे चूमता, या उसके ऊपर क्रॉस का निशान बनाता। एक मिनट में वह रो भी सकती थी। वह "छोटे बूढ़े आदमी" से बहुत खुश थी, जैसा कि वह मैक्सिमोव को बुलाती थी। वह हर मिनट दौड़कर उसके हाथों को चूमता, "हर छोटी उंगली को," और अंत में उसने एक पुराने गाने पर एक और नृत्य किया, जिसे उसने खुद गाया था। उसने मुखड़े पर विशेष जोश के साथ नृत्य किया:
छोटा सुअर कहता है—उम्फ! उम्फ! उम्फ!
नन्हा बछड़ा कहता है—मूं, मूं, मूं
छोटी बत्तख कहती है—क्वैक, क्वैक, क्वैक
नन्हा हंस कहता है—गा, गा, गा।
मुर्गी बरामदे से इतराते हुए निकलती है;
टू-रू-रू-रू-रू, वो कहेगी,
टू-रू-रू-रू-रू, वो कहेगी!
“मित्या, उसे कुछ दो,” ग्रुशेंका ने कहा। “उसे एक उपहार दो।”
वो गरीब है, तुम्हें पता है। आह, बेचारे, अपमानित! . . . क्या तुम्हें पता है, मित्या, मैं मठ में जाऊंगी। नहीं, मैं सचमुच एक दिन जाऊंगी, अलेयोशा ने आज मुझसे कुछ ऐसा कहा जो मुझे जीवन भर याद रहेगा . . . हाँ . . . लेकिन आज चलो नाचते हैं। कल मठ जाना है, लेकिन आज नाचेंगे। मैं आज खेलना चाहती हूँ, भले लोगों, और इसमें क्या बुराई है? भगवान हमें माफ कर देंगे। अगर मैं भगवान होता, तो मैं सबको माफ कर देता: 'मेरे प्यारे पापी लोगो, आज से मैं तुम्हें माफ करता हूँ।' मैं माफी माँगने जा रही हूँ: 'मुझे माफ कर दो, भले लोगों, मैं एक मूर्ख लड़की हूँ।' मैं एक जानवर हूँ, बस यही हूँ। लेकिन मैं प्रार्थना करना चाहती हूँ। मैंने एक छोटा सा प्याज दिया। चाहे मैं कितनी भी दुष्ट रही हूँ, मैं प्रार्थना करना चाहती हूँ। मित्या, उन्हें नाचने दो, उन्हें मत रोको। दुनिया में हर कोई अच्छा है। हर कोई—यहाँ तक कि सबसे बुरे भी। दुनिया एक अच्छी जगह है। हालाँकि हम बुरे हैं, दुनिया ठीक है। हम अच्छे भी हैं और बुरे भी, अच्छे भी हैं और बुरे भी... आओ, मुझे बताओ, मुझे तुमसे कुछ पूछना है: सब लोग यहाँ आओ, और मैं तुमसे पूछूँगा: मैं इतना अच्छा क्यों हूँ? तुम जानते हो कि मैं अच्छा हूँ। मैं बहुत अच्छा हूँ... आओ, मैं इतना अच्छा क्यों हूँ?
ग्रुशेंका बड़बड़ाती रही और धीरे-धीरे नशे में धुत होती गई। आखिरकार वह
उसने घोषणा की कि वह भी नाचने जा रही है। वह लड़खड़ाते हुए अपनी कुर्सी से उठी। “मित्या, मुझे और शराब मत दो—अगर मैं तुमसे मांगूं तो मुझे मत देना। शराब से शांति नहीं मिलती। सब कुछ घूम रहा है, चूल्हा, और सब कुछ। मैं नाचना चाहती हूं। सबको देखने दो कि मैं कैसे नाचती हूं... सबको देखने दो कि मैं कितनी खूबसूरती से नाचती हूं...”
उसका इरादा सचमुच यही था। उसने अपने रुमाल से एक सफेद कैम्ब्रिक रुमाल निकाला।
ग्रुशेंका ने अपनी जेब से एक वस्तु निकाली और उसे अपने दाहिने हाथ के एक कोने से पकड़कर नाचते हुए लहराने लगी। मित्या इधर-उधर दौड़ रहा था, लड़कियाँ शांत थीं और पहले इशारे पर नाचने के लिए तैयार थीं। मैक्सिमोव ने जब सुना कि ग्रुशेंका नाचना चाहती है, तो वह खुशी से चिल्ला उठा और गुनगुनाते हुए उसके आगे उछलने-कूदने लगा।
"इतनी पतली टांगों और इतनी सुडौल कमर के साथ।"
और उसकी छोटी पूंछ कसकर मुड़ी हुई थी।
लेकिन ग्रुशेंका ने अपना रूमाल लहराकर उसे भगा दिया। “चुप रहो! मित्या, वे क्यों नहीं आते? सबको आने दो... देखने के लिए।”
उन्हें भी अंदर बुलाओ जो अंदर बंद थे... तुमने उन्हें अंदर क्यों बंद किया? उन्हें बताओ कि मैं नाचने जा रही हूँ। उन्हें भी देखने दो...
मित्या नशे में धुत होकर अकड़ते हुए बंद दरवाजे की ओर बढ़ा और शुरू किया
उसने मुट्ठी से पोलैंडवासियों को धक्का दिया।
“अरे, आप... पोड्विसोत्स्की! आइए, वह नाचने जा रही है। वह आपको बुला रही है।”

“लाजडक!” एक पोलिश व्यक्ति ने जवाब में चिल्लाकर कहा। “तुम खुद लाजडक हो! तुम एक छोटे बदमाश हो, बस यही तो तुम हो।”
हैं।"
“पोलैंड पर हंसना बंद करो,” कालगानोव ने गंभीर स्वर में कहा। वह भी
वह नशे में था।
“चुप रहो, लड़के! अगर मैं उसे बदमाश कहता हूँ, तो इसका मतलब यह नहीं है कि मैंने सभी को बदमाश कहा है।”
पोलैंड ऐसा ही है। एक लाजडक (एक तरह की मिठाई) से पोलैंड नहीं बन जाता। चुप रहो, मेरे प्यारे लड़के, मिठाई खाओ।
अरे, ये कैसे लोग हैं! मानो ये इंसान ही न हों। ये क्यों नहीं मानेंगे?
“दोस्त बनाओगे?” ग्रुशेंका ने कहा और नाचने के लिए आगे बढ़ गई। कोरस ने “आह, मेरा बरामदा, मेरा नया बरामदा!” गाना शुरू कर दिया। ग्रुशेंका ने अपना सिर पीछे की ओर झुकाया, अपने होंठ आधे खोले, मुस्कुराई, अपना रूमाल लहराया और अचानक, एक ज़ोरदार झटके के साथ, कमरे के बीच में खड़ी हो गई, हैरान-परेशान सी दिख रही थी।
“मैं कमजोर हूँ...” उसने थकी हुई आवाज़ में कहा। “मुझे माफ़ कर दीजिए... मैं
मैं कमजोर हूँ, मैं नहीं कर सकता... मुझे खेद है।"
उसने समूह के सदस्यों के सामने सिर झुकाया, और फिर सभी दिशाओं में सिर झुकाने लगी। "मुझे खेद है... मुझे क्षमा कर दीजिए..."
“वह महिला शराब पी रही है। वह खूबसूरत महिला शराब पी रही है,” आवाजें सुनाई देती हैं।
उन्हें ऐसा कहते हुए सुना गया।
“ये महिला बहुत ज्यादा नशे में है,” मैक्सिमोव ने हंसते हुए लड़कियों को समझाया। “मित्या, मुझे यहाँ से ले चलो... मुझे ले जाओ,” ग्रुशेंका ने बेबसी से कहा। मित्या
उसने उस पर झपट्टा मारा, उसे अपनी बाहों में उठा लिया और उस अनमोल बोझ को पर्दों के पार ले गया।
“अच्छा, अब मैं चलता हूँ,” कालगानोव ने सोचा और अचानक नीले आसमान से बाहर निकल गया।
कमरे से बाहर निकलते ही उसने दरवाज़े के दोनों हिस्से बंद कर दिए। लेकिन बड़े कमरे में चल रही अय्याशी जारी रही और उसकी आवाज़ बढ़ती ही गई। मित्या ने ग्रुशेंका को बिस्तर पर लिटाया और उसके होठों पर चुंबन किया।
“मुझे मत छुओ...” उसने लड़खड़ाती आवाज़ में विनती भरे स्वर में कहा। “मुझे मत छुओ”
जब तक मैं तुम्हारी न हो जाऊं... मैंने तुमसे कहा है कि मैं तुम्हारी हूं, लेकिन मुझे मत छूना... मुझे बख्श दो... उनके यहां होने पर, उनके करीब होने पर, तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिए। वह यहां है। यहां का माहौल खराब है...
“मैं आपकी आज्ञा का पालन करूंगा! मैं इसके बारे में सोचूंगा भी नहीं... मैं आपकी पूजा करता हूं!” मित्या ने बुदबुदाते हुए कहा।
"हां, यहां बहुत बुरा हाल है, घिनौना है।"
और उसे अभी भी अपनी बाहों में लिए हुए, वह बिस्तर के किनारे घुटनों के बल बैठ गया।
“मैं जानती हूँ, तुम क्रूर तो हो, लेकिन उदार भी हो,” ग्रुशेंका ने कहा।
बड़ी मुश्किल से। “यह सम्मानजनक होना चाहिए... यह भविष्य के लिए सम्मानजनक होगा... और हमें ईमानदार होना चाहिए, हमें अच्छा होना चाहिए, क्रूर नहीं, बल्कि अच्छे... मुझे दूर ले जाओ, मुझे बहुत दूर ले जाओ, क्या तुम सुन रहे हो? मैं इसे यहाँ नहीं चाहता, बल्कि बहुत दूर...”
“ओह, हाँ, हाँ, यह ज़रूर होगा!” मित्या ने उसे अपनी बाहों में भरते हुए कहा। “मैं
मैं तुम्हें ले चलूंगा और हम उड़ जाएंगे... ओह, मैं उस खून के बारे में जानने के लिए अपना पूरा जीवन एक साल के लिए दे दूंगा!
"कौन सा खून?" ग्रुशेंका ने अचंभित होकर पूछा।
“कुछ नहीं,” मित्या ने दांत पीसते हुए बुदबुदाया। “ग्रुशा, तुम तो यही चाहते थे कि...”
सच कहूँ तो, मैं चोर हूँ। मैंने कात्या से पैसे चुराए हैं... शर्मनाक, बेहद शर्मनाक!

“कात्या से, उस युवती से? नहीं, तुमने इसे चुराया नहीं है। उसे दे दो।”
वापस, मेरी बात मानो... क्यों हंगामा करना? अब मेरी हर चीज़ तुम्हारी है। पैसे का क्या मतलब? हम वैसे भी उसे बर्बाद कर देंगे... हम जैसे लोग तो पैसे बर्बाद करने के लिए ही बने हैं। लेकिन बेहतर होगा कि हम जाकर ज़मीन जोतें। मैं अपने हाथों से ज़मीन खोदना चाहती हूँ। हमें काम करना ही होगा, समझे? अलेयोशा ने कहा था। मैं तुम्हारी रखैल नहीं बनूँगी, मैं तुम्हारे प्रति वफ़ादार रहूँगी, मैं तुम्हारी दासी बनूँगी, मैं तुम्हारे लिए काम करूँगी। हम उस युवती के पास जाएँगे और उसके सामने झुकेंगे, ताकि वह हमें माफ़ कर दे, और फिर हम चले जाएँगे। और अगर वह हमें माफ़ नहीं करती, तो भी हम चले जाएँगे। उसे उसका पैसा दे दो और मुझसे प्यार करो... उससे प्यार मत करो... उससे अब और प्यार मत करो। अगर तुम उससे प्यार करोगे, तो मैं उसका गला घोंट दूँगी... मैं सुई से उसकी दोनों आँखें निकाल दूँगी...
मैं तुमसे प्यार करता हूँ। मैं सिर्फ तुमसे प्यार करता हूँ। मैं साइबेरिया में भी तुमसे प्यार करूँगा...
साइबेरिया ही क्यों? कोई बात नहीं, साइबेरिया, अगर आपको पसंद है तो। मुझे परवाह नहीं... हम काम... साइबेरिया में बर्फ़ पड़ रही है... मुझे बर्फ़ में गाड़ी चलाना बहुत पसंद है... और घंटियाँ तो होनी ही चाहिए... क्या तुम्हें घंटी की आवाज़ सुनाई दे रही है? वो घंटी कहाँ बज रही है? लोग आ रहे हैं... अब तो घंटी बजना बंद हो गई है।
वह थकी हुई सी अपनी आंखें बंद कर लीं और अचानक एक पल के लिए सो गई।
दूर से घंटी की आवाज़ ज़रूर आई थी, लेकिन बजना बंद हो गया था। मित्या ने अपना सिर उसके सीने पर टिका दिया। उसे न तो घंटी बजना बंद होने का एहसास हुआ, न ही गाने बंद होने का, और घर में गाने और नशे में धुत लोगों के शोरगुल की जगह एकदम सन्नाटा छा गया था। ग्रुशेंका ने अपनी आँखें खोलीं।
“क्या बात है? क्या मैं सो रहा था? हाँ... एक घंटी बजी... मैं सो रहा था।”
मैंने सपना देखा कि मैं घंटियों वाली गाड़ी से बर्फ पर चल रही थी और मुझे नींद आ गई। मैं अपने प्रिय के साथ थी, तुम्हारे साथ। और बहुत दूर, बहुत दूर। मैं तुम्हें पकड़े हुए थी और चूम रही थी, तुम्हारे करीब सिमटी हुई थी। मुझे ठंड लग रही थी और बर्फ चमक रही थी... तुम्हें पता है ना, रात में चाँद की रोशनी में बर्फ कैसे चमकती है। ऐसा लग रहा था जैसे मैं धरती पर ही नहीं हूँ। मैं जाग उठी और मेरी प्रियतमा मेरे पास थी। कितना प्यारा है!
“तुम्हारे करीब,” मित्या ने फुसफुसाते हुए उसके कपड़े, उसके सीने और उसके शरीर को चूमा।
हाथों में। और अचानक उसके मन में एक अजीब सी कल्पना आई: उसे लगा कि वह सीधे अपने सामने देख रही है, उसकी ओर नहीं, उसके चेहरे की ओर नहीं, बल्कि उसके सिर के ऊपर, एक गहन, लगभग रहस्यमय स्थिरता के साथ। उसके चेहरे पर अचानक आश्चर्य, लगभग घबराहट का भाव आ गया।
“मित्या, हमें कौन देख रहा है?” उसने फुसफुसाते हुए कहा। मित्या मुड़ा और देखा कि वास्तव में किसी ने पर्दे हटाकर अंदर झाँक लिया था।
ऐसा लग रहा था कि कोई उन्हें देख रहा है। और ऐसा लग रहा था कि कोई अकेला व्यक्ति नहीं देख रहा था। वह उछलकर खड़ा हुआ और घुसपैठिए की ओर तेज़ी से बढ़ा। "यहाँ आओ, हमारे पास आओ, इधर आओ," एक आवाज़ ने कहा, जो ज़ोर से नहीं, बल्कि धीमी थी।
दृढ़तापूर्वक और हठपूर्वक।
मित्या पर्दे के दूसरी तरफ चला गया और एकदम स्थिर खड़ा हो गया।
कमरा लोगों से भरा हुआ था, लेकिन उनमें से कोई भी पहले यहाँ नहीं आया था। उसकी पीठ में एक झनझनाहट दौड़ गई और वह काँप उठा। उसने उन सभी लोगों को तुरंत पहचान लिया। ओवरकोट और टोपी पहने वह लंबा, हट्टा-कट्टा बूढ़ा आदमी, जिस पर एक कॉकेड लगा था—पुलिस कप्तान मिखाइल मकारोविच था। और वह "शीत क्षीण दिखने वाला" चुस्त-दुरुस्त आदमी, "जो हमेशा इतने चमकीले जूते पहनता है"—वह डिप्टी प्रॉसिक्यूटर था। "उसके पास चार सौ रूबल की घड़ी है; उसने मुझे दिखाई थी।" और चश्मा पहने वह छोटा सा युवक... मित्या उसका उपनाम भूल गया, हालाँकि वह उसे जानता था, उसे देखा था: वह "कानून के स्कूल" का "जांच वकील" था, जो हाल ही में शहर आया था। और यह आदमी—पुलिस इंस्पेक्टर, मावरिकी मावरिक्येविच, जिसे वह अच्छी तरह जानता था। और पीतल की प्लेटें पहने वे लोग, वे यहाँ क्यों हैं? और वे दो अन्य... किसान... और वहाँ दरवाजे पर कालगानोव ट्रिफॉन बोरिसोविच के साथ खड़े थे...

“सज्जनों! यह किसलिए है?” मित्या ने कहना शुरू किया, लेकिन अचानक,
मानो वह अपना आपा खो बैठा हो, उसे पता ही न हो कि वह क्या कर रहा है, वह जोर-जोर से चिल्लाने लगा, अपनी पूरी आवाज में:
मैं खड़ा हूँ!
चश्मा पहने युवक अचानक आगे बढ़ा और कदम बढ़ाते हुए
मित्या से बातचीत गरिमापूर्ण ढंग से शुरू हुई, हालांकि जल्दबाजी में:
हमें करना होगा... संक्षेप में, मैं आपसे विनती करता हूँ कि आप इस तरफ आइए, इस तरफ आइए।
सोफा... आपको इसका स्पष्टीकरण देना अत्यंत आवश्यक है।"
“बूढ़ा आदमी!” मित्या ने घबराकर चिल्लाया। “बूढ़ा आदमी और उसका खून! ... मैं समझ गया।”
और वह पास ही रखी एक कुर्सी पर लगभग गिर पड़ा, मानो वह
दरांती से काट डाला गया।
“समझे? वो समझता है! राक्षस और पितृहत्यारा! तुम्हारा
"पिता का खून तुम्हारे खिलाफ चीख रहा है!" बूढ़ा पुलिस कप्तान अचानक गरजते हुए मित्या की ओर बढ़ा।
वह व्याकुल था, चेहरा लाल हो गया था और पूरा शरीर कांप रहा था। "यह असंभव है!" उस छोटे युवक ने चिल्लाकर कहा। "मिहाइल मकारोविच,"
मिहाइल मकारोविच, यह बर्दाश्त नहीं किया जाएगा! ... मैं आपसे विनती करता हूँ कि मुझे बोलने की अनुमति दें। मुझे आपसे ऐसे व्यवहार की कभी उम्मीद नहीं थी...
“यह प्रलाप है, सज्जनों, घोर प्रलाप,” कप्तान चिल्लाया।
पुलिस; “इसे देखो: रात के इस समय नशे में धुत, एक बदनाम औरत के साथ, अपने पिता के खून से सने हाथों के साथ... यह तो पागलपन है!...”
“प्रिय मिखाइल मकारोविच, मैं आपसे अत्यंत विनम्रतापूर्वक विनती करता हूँ कि आप अपने संयम को बनाए रखें।”
“भावनाओं,” अभियोक्ता ने बूढ़े पुलिस कप्तान से फुसफुसाते हुए कहा, “वरना मुझे मजबूर होकर सहारा लेना पड़ेगा...”
लेकिन उस छोटे वकील ने उसे बात पूरी नहीं करने दी। वह मित्या की ओर मुड़ा, और
उन्होंने बुलंद, दृढ़ और गरिमामय आवाज में अपनी बात रखी:
“पूर्व लेफ्टिनेंट करामाज़ोव, मेरा कर्तव्य है कि मैं आपको सूचित करूं कि आप
आप पर आज रात आपके पिता, फ्योदोर पावलोविच करामाज़ोव की हत्या का आरोप है...
उन्होंने कुछ और कहा, और अभियोजक ने भी कुछ जोड़ा, लेकिन
हालांकि मित्या ने उनकी बातें सुनीं, लेकिन वह उन्हें समझ नहीं पाया। वह उन सभी को बेतहाशा घूरता रहा।

पुस्तक 9

प्रारंभिक जांच

अध्याय 1

पेरहोटिन के आधिकारिक करियर की शुरुआत
आजीविका

प्योत्र इल्यिच पेरहोतिन, जिसे हमने विधवा मोरोज़ोव के घर के मज़बूत ताले लगे दरवाज़ों पर दस्तक देते हुए छोड़ा था, आख़िरकार अपनी आवाज़ सुनाने में कामयाब हो गया। फेन्या, जो दो घंटे पहले हुए हादसे से अभी भी सहमी हुई थी और इतनी परेशान थी कि सो नहीं पा रही थी, दरवाज़े पर ज़ोरदार दस्तक सुनकर लगभग हिस्टीरिया की हालत में पहुँच गई। हालाँकि उसने खुद उसे गाड़ी चलाते हुए जाते देखा था, फिर भी उसे लगा कि दिमित्री फ्योदोरोविच ही दोबारा दस्तक दे रहा होगा, कोई और इतनी बेरहमी से दस्तक नहीं दे सकता। वह घर के चौकीदार के पास दौड़ी, जो पहले ही जाग चुका था और दरवाज़े पर चला गया था, और उससे दरवाज़ा न खोलने की विनती करने लगी। लेकिन प्योत्र इल्यिच से पूछताछ करने और यह जानने के बाद कि वह फेन्या से किसी बहुत ज़रूरी काम से मिलना चाहता है, उसने आख़िरकार दरवाज़ा खोलने का फ़ैसला कर लिया। प्योत्र इल्यिच को फेन्या की रसोई में जाने दिया गया, लेकिन लड़की ने उससे विनती की कि चौकीदार को भी अंदर रहने दिया जाए, "क्योंकि उसे कुछ आशंका थी।" उसने उससे पूछताछ शुरू की और तुरंत ही सबसे महत्वपूर्ण तथ्य का पता चला, अर्थात्, जब दिमित्री फ्योदोरोविच ग्रुशेंका को ढूंढने के लिए बाहर गया था, तो उसने ओखली से एक मूसल उठा लिया था, और जब वह लौटा, तो मूसल उसके पास नहीं था और उसके हाथ खून से सने हुए थे।
और खून बस बह रहा था, उससे टपक रहा था, टपक रहा था!
फेन्या लगातार चीखती रही। यह भयानक विवरण महज़ उसकी अव्यवस्थित कल्पना की उपज थी। हालाँकि खून टपक नहीं रहा था, फिर भी प्योत्र इल्यिच ने खुद उन खून से सने हाथों को देखा था और उन्हें धोने में मदद की थी। इसके अलावा, उसे यह तय करना था कि खून कितनी जल्दी सूखा, यह नहीं, बल्कि दिमित्री फ्योदोरोविच मूसल लेकर कहाँ भागा था, या यूँ कहें कि क्या वह सचमुच फ्योदोर पावलोविच के घर गया था, और वह इसका संतोषजनक पता कैसे लगा सकता था। प्योत्र इल्यिच इस बात पर अड़ा रहा, और यद्यपि उसे कोई निर्णायक जानकारी नहीं मिली, फिर भी उसे यह विश्वास हो गया कि दिमित्री फ्योदोरोविच अपने पिता के घर के अलावा कहीं और नहीं गया होगा, और इसलिए वहाँ कुछ न कुछ ज़रूर हुआ होगा।
“और जब वह वापस आया,” फेन्या ने उत्साह से कहा, “मैंने उसे पूरी कहानी सुनाई, और फिर उससे पूछने लगी, ‘दिमित्री फ्योदोरोविच, तुम्हारे हाथों पर खून क्यों लगा है?’ उसने जवाब दिया कि वह इंसानी खून था, और उसने अभी-अभी किसी को मारा है। उसने मुझसे सब कुछ कबूल कर लिया, और अचानक पागलों की तरह भाग गया। मैं बैठ गई और सोचने लगी, अब वह पागलों की तरह कहाँ भागा है? मैंने सोचा, वह मोक्रोए जाएगा, और वहाँ मेरी प्रेमिका को मार डालेगा। मैं उससे विनती करने के लिए बाहर भागी कि वह उसे न मारे। मैं उसके कमरे की ओर भाग रही थी, लेकिन मैंने प्लॉट्निकोव की दुकान पर नज़र डाली, और उसे वहाँ से निकलते हुए देखा, और तब उसके हाथों पर खून नहीं था।” (फेन्या ने यह देखा था और उसे याद था।)
फेन्या की बूढ़ी दादी ने जहाँ तक हो सका, उसके बयान की पुष्टि की। कुछ और सवाल पूछने के बाद, प्योत्र इल्यिच घर से निकल गया, और अंदर आने के समय से भी ज़्यादा परेशान और बेचैन था।
उसके लिए सबसे सीधा और आसान तरीका यह होता कि वह...
सीधे फ्योदोर पावलोविच के घर जाना था, यह पता लगाने के लिए कि वहाँ कुछ हुआ था या नहीं, और अगर हुआ था तो क्या; और पुलिस कप्तान के पास तभी जाना था, जैसा कि प्योत्र इल्यिच ने दृढ़ता से इरादा किया था, जब वह तथ्यों से संतुष्ट हो जाए। लेकिन रात अँधेरी थी, फ्योदोर पावलोविच के द्वार मजबूत थे, और उसे फिर से दस्तक देनी पड़ती। फ्योदोर पावलोविच से उसकी जान-पहचान नाममात्र की थी, और क्या पता, दस्तक देने के बाद, द्वार खुल जाए और कुछ भी न हुआ हो, और फ्योदोर पावलोविच अपने व्यंग्यपूर्ण अंदाज

में पूरे शहर में यह कहानी सुनाने लगे कि कैसे पेरहोतिन नाम का एक अजनबी आधी रात को उसके घर में घुस आया और पूछने लगा कि क्या किसी ने उसकी हत्या की है। इससे बदनामी हो जाएगी। और बदनामी ही वह चीज थी जिससे प्योत्र इल्यिच दुनिया में सबसे ज्यादा डरता था।
फिर भी, उसके भीतर जो भावना थी वह इतनी प्रबल थी कि यद्यपि वह
उसने गुस्से से पैर पटका और खुद को कोसते हुए फिर से चल पड़ा, फ्योदोर पावलोविच के घर नहीं, बल्कि मैडम होहलाकोव के घर। उसने तय किया कि अगर वह दिमित्री फ्योदोरोविच को तीन हजार रूबल देने से इनकार करती है, तो वह सीधे पुलिस कप्तान के पास जाएगा, लेकिन अगर वह पैसे देने की बात मान लेती है, तो वह घर लौट जाएगा और अगली सुबह तक इस मामले को यहीं छोड़ देगा।
यह तो बिल्कुल स्पष्ट है कि इसकी संभावना और भी अधिक थी।
रात ग्यारह बजे एक संभ्रांत महिला, जो बिल्कुल अजनबी थी, के पास जाकर और शायद उसे बिस्तर से जगाकर कोई चौंकाने वाला सवाल पूछकर हंगामा खड़ा करना, फ्योदोर पावलोविच के पास जाने से कहीं ज्यादा खतरनाक था। लेकिन कभी-कभी, खासकर इस तरह के मामलों में, सबसे सटीक और शांत स्वभाव वाले लोगों के फैसले भी ऐसे ही होते हैं। उस समय प्योत्र इल्यिच बिल्कुल भी शांत स्वभाव के नहीं थे। उन्हें जीवन भर याद था कि कैसे एक बेचैनी धीरे-धीरे उन पर हावी होती जा रही थी, जो बढ़ती ही जा रही थी और उन्हें उनकी इच्छा के विरुद्ध आगे बढ़ा रही थी। फिर भी, उस महिला के पास जाने के लिए वे खुद को कोसते रहे, लेकिन "मैं इसकी तह तक जाऊंगा, ज़रूर जाऊंगा!" उन्होंने दसवीं बार दांत पीसते हुए दोहराया और अपने इरादे को अंजाम दिया।
जब वह मैडम होहलाकोव के यहाँ दाखिल हुआ तो ठीक ग्यारह बज रहे थे।
घर। उसे आंगन में जल्दी ही प्रवेश मिल गया, लेकिन जब उसने पूछा कि क्या महिला अभी भी जाग रही है, तो चौकीदार कोई जवाब नहीं दे सका, सिवाय इसके कि वह आमतौर पर उस समय तक बिस्तर पर होती है। सीढ़ियों के ऊपर पूछिए। अगर महिला आपसे मिलना चाहेगी, तो वह मिल लेगी।
अगर वो आपका स्वागत नहीं करेगी, तो नहीं करेगी।
प्योत्र इल्यिच ऊपर गया, लेकिन यहाँ चीजें इतनी आसान नहीं थीं। नौकर
प्योत्र इल्यिच ने उसका नाम बताने से इनकार कर दिया, लेकिन अंततः एक नौकरानी को बुलाया। उसने विनम्रतापूर्वक लेकिन दृढ़ता से नौकरानी से विनती की कि वह अपनी मालकिन को सूचित करे कि शहर में रहने वाला एक अधिकारी, जिसका नाम पेरहोतिन है, किसी विशेष कार्य से आया है, और यदि यह अत्यंत महत्वपूर्ण न होता तो वह आने का साहस न करता। उसने नौकरानी से कहा, "उसे ठीक इन्हीं शब्दों में बताओ, बिल्कुल इन्हीं शब्दों में।"
वह चली गई। वह प्रवेश द्वार पर इंतजार करता रहा। मैडम होहलाकोव
वह खुद अपने बेडरूम में थी, हालांकि अभी सोई नहीं थी। मित्या के आने के बाद से वह परेशान थी और उसे आशंका थी कि इस तरह की उत्तेजना के बाद होने वाले सिरदर्द के बिना वह रात नहीं गुजार पाएगी।
नौकरानी की घोषणा सुनकर वह चौंक गई। हालांकि उसने चिड़चिड़ाकर उससे मिलने से इनकार कर दिया, लेकिन इस समय एक ऐसे "अधिकारी" का अचानक आना, जो शहर में रहता था और बिल्कुल अजनबी था, उसकी स्त्री जिज्ञासा को तीव्र कर रहा था। लेकिन इस बार प्योत्र इल्यिच खच्चर की तरह अड़ियल था। उसने नौकरानी से अत्यंत विनम्रतापूर्वक इन शब्दों में एक और संदेश ले जाने की विनती की:
“वह अत्यंत महत्वपूर्ण कार्य से आया था, और
अगर मैडम होहलाकोव अभी उनसे मिलने से इनकार करती हैं, तो उन्हें बाद में पछतावा हो सकता है।
बाद में उन्होंने बताया, "मैं पूरी तरह से बेतहाशा कूद पड़ा।" नौकरानी उन्हें हैरानी से देखती हुई दोबारा उनका संदेश लेने चली गई।
मैडम होहलाकोव प्रभावित हुईं। उन्होंने कुछ देर सोचा, पूछा कि वह कैसे दिखते हैं, और उन्हें पता चला कि वह "बहुत अच्छे कपड़े पहने हुए, युवा और बेहद विनम्र" थे। यह भी ध्यान देने योग्य है कि प्योत्र इल्यिच एक आकर्षक युवक थे और इस बात से भलीभांति परिचित थे। मैडम होहलाकोव ने उनसे मिलने का निश्चय किया। उन्होंने ड्रेसिंग गाउन और चप्पलें पहनी हुई थीं, लेकिन उन्होंने अपने कंधों पर एक काला शॉल डाल लिया। "अधिकारी" को ड्राइंग रूम में आने के लिए कहा गया, वही कमरा जिसमें कुछ देर पहले मित्या का

स्वागत किया गया था। महिला अपने आगंतुक से मिलने के लिए एक गंभीर और जिज्ञासु चेहरे के साथ आईं, और उन्हें बैठने के लिए कहे बिना ही सीधे सवाल पूछना शुरू कर दिया:
"आप क्या चाहते हैं?"
“महोदया, मैं आपको हमारे एक मामले के संबंध में परेशान करने का साहस कर रहा हूँ।”
"मेरा एक परिचित था, दिमित्री फ्योदोरोविच करामाज़ोव," पेरहोटिन ने बात शुरू की।
लेकिन जैसे ही उसने नाम लिया, महिला के चेहरे पर कुछ संकेत दिखाई दिए।
अत्यधिक चिड़चिड़ाहट के कारण। वह लगभग चीख पड़ी और गुस्से में आकर उसे बीच में ही रोक दिया:
“मुझे उस भयानक आदमी की चिंता कब तक करनी पड़ेगी?” वह रो पड़ी।
वह बेकाबू होकर बोली, “आपकी हिम्मत कैसे हुई, महोदय, आपने इतनी रात को एक अजनबी महिला को उसके घर में परेशान करने की हिम्मत कैसे की! ...और आप उस पर दबाव डालकर उससे उस आदमी के बारे में बुलवा रहे हैं जो तीन घंटे पहले इसी ड्राइंग रूम में मुझे जान से मारने आया था और फिर ऐसे पैर पटकते हुए कमरे से बाहर चला गया जैसे कोई सभ्य घर से बाहर नहीं जाता। महोदय, मैं आपसे शिकायत दर्ज कराऊंगी, मैं इसे ऐसे ही नहीं जाने दूंगी। कृपया मुझे तुरंत छोड़ दीजिए... मैं एक माँ हूँ... मैं... मैं...”
“हत्या! तो उसने तुम्हारी भी हत्या करने की कोशिश की?”
“क्या उसने किसी और को मार डाला है?” मैडम होहलाकोव ने पूछा।
आवेगवश।
“यदि आप कृपया थोड़ी देर के लिए मेरी बात सुन लें, महोदया, तो मैं सब कुछ समझा देता हूँ।”
“संक्षेप में बता दूं,” पेरहोटिन ने दृढ़ता से उत्तर दिया। “आज दोपहर पांच बजे दिमित्री फ्योदोरोविच ने मुझसे दस रूबल उधार लिए थे, और मुझे पता है कि उसके पास पैसे नहीं थे। फिर भी नौ बजे वह मेरे पास सौ-सौ रूबल के नोटों का एक बंडल लेकर आया, लगभग दो या तीन हजार रूबल। उसके हाथ और चेहरा खून से सना हुआ था, और वह पागलों जैसा लग रहा था। जब मैंने उससे पूछा कि उसे इतना पैसा कहां से मिला, तो उसने जवाब दिया कि उसे अभी-अभी आपसे मिला है, कि आपने उसे सोने की खानों में जाने के लिए तीन हजार रूबल दिए थे...”
मैडम होहलाकोव के चेहरे पर तीव्र और पीड़ादायक भाव उभर आए।
उत्तेजना।
“हे भगवान! उसने अपने बूढ़े पिता को मार डाला होगा!” वह चिल्लाई, अपने हाथों को थामते हुए।
हाथों से। “मैंने उसे कभी पैसे नहीं दिए, कभी नहीं! अरे, भागो, भागो! ... एक शब्द भी मत बोलो! बूढ़े को बचाओ... उसके पिता के पास भागो... भागो!”
“माफ़ कीजिए महोदया, तो आपने उसे पैसे नहीं दिए? आपको याद है ना?”
क्या आपने उसे कोई पैसा नहीं दिया था?
“नहीं, मैंने नहीं दिया, मैंने नहीं दिया! मैंने उसे देने से इनकार कर दिया, क्योंकि वह ऐसा नहीं कर सकता था।”
शुक्रिया। वह गुस्से में पैर पटकते हुए बाहर भागा। उसने मेरी तरफ झपट्टा मारा, लेकिन मैं बच निकला... और मैं आपको बता दूं, क्योंकि मैं अब आपसे कुछ भी छिपाना नहीं चाहता, कि उसने सचमुच मुझ पर थूका।
सोचिए! लेकिन हम खड़े क्यों हैं? अरे, बैठ जाइए... माफ कीजिए, मैं... या बेहतर होगा कि भागो, भागो, तुम्हें भागना होगा और उस बेचारे बूढ़े को भयानक मौत से बचाना होगा!
लेकिन अगर उसने उसे पहले ही मार डाला हो तो?
अरे वाह, जी हाँ! तो अब हम क्या करें? आप क्या करें?
हमें अभी क्या करना चाहिए?
इसी बीच उसने प्योत्र इल्यिच को बिठाया और खुद भी बैठ गई।
उसके सामने खड़ी होकर, प्योत्र इल्यिच ने संक्षेप में, लेकिन काफी स्पष्ट रूप से, उसे उस घटना का पूरा इतिहास बताया, कम से कम वह हिस्सा जिसका वह स्वयं गवाह था। उसने फेन्या की अपनी यात्रा का भी वर्णन किया और उसे मूसल के बारे में बताया। इन सभी विवरणों का उस विचलित महिला पर गहरा प्रभाव पड़ा, जो लगातार चीखती रही और अपने चेहरे को हाथों से ढकती रही...
“विश्वास कीजिएगा, मैंने यह सब पहले ही देख लिया था! मुझमें वह विशेष क्षमता है।”

मैं जो भी कल्पना करती हूँ, वही सच हो जाता है। और मैंने उस भयानक आदमी को कितनी बार देखा है और हमेशा सोचा है कि वह अंत में मेरी हत्या कर देगा। और अब ऐसा हो गया है... यानी, अगर उसने मेरी हत्या नहीं की, बल्कि अपने ही पिता की हत्या की है, तो यह केवल ईश्वर की कृपा से ही संभव हुआ है, और इससे भी बड़ी बात यह है कि उसे मेरी हत्या करने में शर्म आ रही थी क्योंकि इसी स्थान पर मैंने संत वरवारा के अवशेषों से पवित्र प्रतिमा उसके गले में रखी थी... और सोचो, उस पल मैं मौत के कितने करीब थी, मैं उसके पास गई और उसने अपनी गर्दन मेरी ओर बढ़ा दी! ... क्या आप जानते हैं, प्योत्र इल्यिच (मुझे लगता है आपने अपना नाम प्योत्र इल्यिच बताया था), मैं चमत्कारों में विश्वास नहीं करती, लेकिन वह प्रतिमा और मेरे साथ हुआ यह स्पष्ट चमत्कार मुझे झकझोर देता है, और मैं आपकी किसी भी बात पर विश्वास करने को तैयार हूँ। क्या आपने फादर ज़ोस्सिमा के बारे में सुना है? ... लेकिन मुझे नहीं पता मैं क्या कह रही हूँ... और बस कल्पना कीजिए, अपनी गर्दन पर उस मूर्ति के साथ उसने मुझ पर थूका... उसने सिर्फ थूका, यह सच है, उसने मेरी हत्या नहीं की और... वह भाग गया! लेकिन अब हम क्या करें, हमें क्या करना चाहिए? आप क्या सोचते हैं? प्योत्र इल्यिच उठे और घोषणा की कि वे सीधे जा रहे हैं।
पुलिस कप्तान को, उसे इस बारे में सब कुछ बता देना और फिर उसे जो उचित लगे वह करने के लिए छोड़ देना।
“ओह, वह एक बेहतरीन आदमी हैं, बेहतरीन! मिहाइल मकारोविच, मैं उन्हें जानता हूँ।”
बेशक, उनसे ही सलाह लेनी चाहिए। प्योत्र इल्यिच, आप कितने व्यावहारिक हैं! आपने हर चीज़ का कितना अच्छा ध्यान रखा है! आपकी जगह मैं होता तो कभी सोच भी नहीं पाता!
“खासकर इसलिए क्योंकि मैं पुलिस कप्तान को भी बहुत अच्छी तरह जानता हूँ,” प्योत्र ने कहा।
इल्यिच अभी भी खड़ा था, और जाहिर तौर पर उस उग्र महिला से जल्द से जल्द भागने के लिए बेचैन था, जो उसे अलविदा कहकर जाने नहीं दे रही थी।
“और हां, जरूर,” वह लगातार बोलती रही, “वापस आकर मुझे बताना कि क्या हुआ।”
आप वहाँ जो देखते हैं, और जो आपको पता चलता है... जो सामने आता है... वे उस पर कैसे मुकदमा चलाएंगे... और उसे क्या सज़ा मिलेगी... बताइए, हमारे यहाँ मृत्युदंड नहीं है, है ना? लेकिन ज़रूर आना, चाहे रात के तीन बजे हों, चार बजे हों, साढ़े चार बजे हों... उनसे कहना कि मुझे जगा दें, मुझे हिला दें, अगर मैं न उठूँ... लेकिन हे भगवान, मैं सो नहीं पाऊँगी! लेकिन रुकिए, क्या मुझे आपके साथ नहीं आना चाहिए?
“नहीं—नहीं। लेकिन अगर आप अपने हाथ से तीन पंक्तियाँ लिखें, तो यह बताते हुए कि
आपने दिमित्री फ्योदोरोविच को पैसे नहीं दिए, शायद यह काम आ जाए... अगर इसकी जरूरत पड़े तो...
“बिल्कुल!” मैडम होहलाकोव खुशी से उछलती हुई अपनी अलमारी की ओर गईं।
और आप जानते हैं, मैं आपकी सूझबूझ और ऐसे मामलों में आपकी सूझबूझ से सचमुच चकित और प्रभावित हूँ। क्या आप यहाँ सेवा में हैं? यह जानकर मुझे बहुत खुशी हुई कि आप यहाँ सेवा में हैं!
और बोलते-बोलते उसने नोटपैड के आधे पन्ने पर कुछ लिख दिया।
निम्नलिखित पंक्तियाँ:
मैंने अपने जीवन में कभी भी उस दुखी व्यक्ति, दिमित्री फ्योदोरोविच को उधार नहीं दिया।
करामाज़ोव (क्योंकि वह सब कुछ के बावजूद दुखी है), आज तीन हज़ार रूबल। मैंने उसे कभी पैसे नहीं दिए, कभी नहीं! मैं पवित्रतम चीज़ों की कसम खाता हूँ!
के. होहलाकोव।"
“ये रहा नोट!” वह झट से प्योत्र इल्यिच की ओर मुड़ी। “जाओ, उसे बचाओ।”
यह आपकी ओर से एक सराहनीय कार्य है!
और उसने उसके ऊपर तीन बार क्रॉस का निशान बनाया। वह दौड़कर बाहर चली गई।
उसके साथ गलियारे तक चलें।
मैं आपका कितना आभारी हूँ! आप कल्पना भी नहीं कर सकते कि मैं आपका कितना आभारी हूँ।
सबसे पहले मुझसे मिलने आए हो। मैं तुमसे पहले क्यों नहीं मिला? भविष्य में तुम्हें अपने घर पर देखकर मुझे बहुत खुशी होगी। कितना अच्छा लग रहा है कि तुम यहाँ रह रहे हो! . . . कितनी सटीकता! कितनी व्यावहारिक क्षमता! . . . वे तुम्हारी सराहना करते होंगे, तुम्हें समझते होंगे। अगर मैं कुछ कर सकता हूँ, तो

यकीन मानो . . . ओह, मुझे युवा लोग बहुत पसंद हैं! मैं युवाओं के प्यार में पागल हूँ! युवा पीढ़ी हमारे पीड़ित देश का एकमात्र सहारा है। उसकी एकमात्र आशा . . . ओह, आगे बढ़ो, आगे बढ़ो!
लेकिन प्योत्र इल्यिच पहले ही भाग चुका था, वरना वह उसे जाने नहीं देती।
इतनी जल्दी। फिर भी, मैडम होहलाकोव ने उन पर काफी सुखद प्रभाव डाला था, जिससे इस अप्रिय मामले में घसीटे जाने की उनकी चिंता कुछ हद तक कम हो गई थी। जैसा कि हम सब जानते हैं, पसंद अलग-अलग होती हैं। "वह इतनी बूढ़ी बिल्कुल नहीं हैं," उन्होंने मन ही मन प्रसन्नता से सोचा, "इसके विपरीत, मुझे तो लगा था कि वह उनकी बेटी हैं।"
जहां तक मैडम होहलाकोव की बात है, वह उस युवक से पूरी तरह मोहित हो गई थीं।
“कितनी समझदारी! कितनी सटीकता! इतने कम उम्र में! हमारे ज़माने में! और वो भी इतने सलीके और दिखावट के साथ! लोग कहते हैं कि आजकल के नौजवान किसी काम के नहीं, पर ये रहा एक उदाहरण!” इत्यादि। इस तरह वो इस “भयानक घटना” को भूल गई, और जब वो बिस्तर पर लेटने लगी, तभी अचानक उसे याद आया कि वो “मौत के कितने करीब आ गई थी,” और उसने कहा: “आह, ये तो बहुत भयानक है!” लेकिन वह तुरंत गहरी, मीठी नींद में सो गई।
हालांकि, मैं ऐसे तुच्छ और अप्रासंगिक विवरणों पर ध्यान नहीं देता।
अगर उस नौजवान अधिकारी की अधेड़ उम्र की विधवा से हुई यह अनोखी मुलाकात बाद में उस व्यावहारिक और सटीक नौजवान के पूरे करियर की नींव न बनी होती, तो क्या ही होता! आज भी हमारे कस्बे में उनकी कहानी को बड़े आश्चर्य से याद किया जाता है, और शायद करामाज़ोव बंधुओं के अपने लंबे इतिहास को पूरा करने के बाद मैं इस बारे में कुछ कह पाऊँगा।

अध्याय दो

अलार्म

हमारे पुलिस कप्तान, मिखाइल मकारोविच मकारोव, जो एक सेवानिवृत्त लेफ्टिनेंट-कर्नल थे, विधवा थे और एक बेहतरीन इंसान थे। वे तीन साल पहले ही हमारे यहाँ आए थे, लेकिन सबका दिल जीत चुके थे, मुख्यतः इसलिए क्योंकि वे "समाज को एकजुट रखना जानते थे"। उनके पास हमेशा मेहमान आते रहते थे, और उनके बिना उनका काम नहीं चल सकता था। कोई न कोई हमेशा उनके साथ भोजन करता था; वे कभी भी मेहमानों के बिना भोजन नहीं करते थे। वे नियमित रूप से दावतें भी देते थे, हर तरह के मौकों पर, कभी-कभी तो बिल्कुल अप्रत्याशित मौकों पर भी। हालाँकि खाना बहुत शानदार नहीं होता था, फिर भी भरपूर होता था। मछली के पाई लाजवाब होते थे, और शराब की मात्रा उसकी गुणवत्ता की कमी को पूरा कर देती थी। उनके मेहमानों ने जिस पहले कमरे में प्रवेश किया, वह एक सुसज्जित बिलियर्ड रूम था, जिसमें दीवारों पर काले फ्रेम में अंग्रेजी घुड़दौड़ के घोड़ों की तस्वीरें लगी थीं, जो कि जैसा कि हम सब जानते हैं, कुंवारे लोगों के बिलियर्ड रूम की एक ज़रूरी सजावट होती है। उनके घर पर हर शाम ताश खेला जाता था, भले ही सिर्फ एक ही मेज पर। लेकिन अक्सर हमारे शहर के सारे समाज के लोग, जिनमें माताएँ और युवतियाँ भी शामिल थीं, उनके घर पर नाचने के लिए इकट्ठा होते थे। हालाँकि मिखाइल मकारोविच विधुर थे, फिर भी वे अकेले नहीं रहते थे। उनकी विधवा बेटी अपनी दो अविवाहित बेटियों के साथ उनके साथ रहती थी, जो वयस्क हो चुकी थीं और अपनी शिक्षा पूरी कर चुकी थीं। वे देखने में सुंदर और स्वभाव से हंसमुख थीं, और यद्यपि सभी जानते थे कि उन्हें दहेज नहीं मिलेगा, फिर भी वे अपने दादा के घर में सभी फैशनेबल युवकों को आकर्षित करती थीं।

हालांकि, मिहाइल मकारोविच अपने काम में बिल्कुल भी कुशल नहीं थे।

उन्होंने अपना कर्तव्य कई अन्य लोगों से कमतर नहीं निभाया। सीधे शब्दों में कहें तो, उनकी शिक्षा सीमित थी। प्रशासनिक शक्तियों की सीमाओं के बारे में उनकी समझ पर हमेशा भरोसा नहीं किया जा सकता था। यह बात इतनी गंभीर नहीं थी कि वे वर्तमान शासनकाल में लागू किए गए कुछ सुधारों को समझ नहीं पाए, बल्कि उनकी व्याख्या में उन्होंने स्पष्ट गलतियाँ कीं। यह उनकी बुद्धि की कमी के कारण नहीं, बल्कि लापरवाही के कारण था, क्योंकि वे विषय पर चर्चा करने में हमेशा बहुत जल्दबाजी करते थे।

“मेरे अंदर एक सैनिक का दिल है, नागरिक का नहीं,” वह अक्सर कहा करते थे।

स्वयं भी। उन्हें दासों की मुक्ति से जुड़े सुधारों के मूलभूत सिद्धांतों का कोई निश्चित ज्ञान नहीं था, और वे इसे धीरे-धीरे, मानो हर साल अभ्यास से अनजाने में बढ़ाते गए। फिर भी वे स्वयं एक जमींदार थे। प्योत्र इल्यिच को निश्चित रूप से पता था कि उस शाम उनकी मुलाकात मिखाइल मकारोविच के कुछ आगंतुकों से होगी, लेकिन उन्हें यह नहीं पता था कि किनसे। संयोगवश, उसी समय अभियोजक और हमारे जिला चिकित्सक वारविंस्की, जो चिकित्सा अकादमी से उत्कृष्ट डिग्री प्राप्त करके अभी-अभी पीटर्सबर्ग से हमारे पास आए थे, पुलिस कप्तान के यहाँ व्हिस्ट खेल रहे थे। अभियोजक इप्पोलिट किरिलोविच (वास्तव में वे उप अभियोजक थे, लेकिन हम उन्हें हमेशा अभियोजक ही कहते थे) लगभग पैंतीस वर्ष के एक विचित्र व्यक्ति थे, जिन्हें तपेदिक की बीमारी थी और उनकी पत्नी मोटी और निःसंतान थीं। वे घमंडी और चिड़चिड़े स्वभाव के थे, हालांकि उनकी बुद्धि अच्छी थी और हृदय दयालु भी था। ऐसा लगता था कि उसकी एकमात्र कमी यह थी कि वह अपनी क्षमता से कहीं अधिक खुद को श्रेष्ठ समझता था। और इसी वजह से वह हमेशा बेचैन रहता था। इसके अलावा, उसमें कुछ उच्च, यहाँ तक कि कलात्मक झुकाव भी थे, जैसे मनोविज्ञान, मानव हृदय का विशेष अध्ययन, अपराधी और उसके अपराध का विशेष ज्ञान। वह इस बात को लेकर मन में दबी हुई शिकायत रखता था, क्योंकि उसे लगता था कि सेवा में उसे नजरअंदाज किया गया है, और उसे पूरा विश्वास था कि उच्च पदों पर उसकी उचित सराहना नहीं हुई है और उसके दुश्मन हैं। निराशा के क्षणों में वह अपनी नौकरी छोड़ने और आपराधिक मामलों में वकील के रूप में वकालत करने की धमकी तक दे देता था। अप्रत्याशित करामाज़ोव मामले ने उसे बहुत परेशान कर दिया: "यह एक ऐसा मामला था जिसकी चर्चा पूरे रूस में हो सकती थी।" लेकिन मैं अभी आगे की बात कर रहा हूँ।

निकोले परफेनोविच नेल्युडोव, युवा जांच वकील, जो
दो महीने पहले ही पीटर्सबर्ग से आए एक सज्जन, बगल वाले कमरे में युवतियों के साथ बैठे थे। बाद में लोगों ने इस बारे में चर्चा की और आश्चर्य जताया कि "अपराध" की शाम को सभी सज्जन, मानो जानबूझकर, कार्यकारी अधिकारी के घर पर क्यों एकत्रित हुए थे। जबकि यह बिल्कुल सरल था और स्वाभाविक रूप से घटित हुआ था।
इप्पोलिट किरिलोविच की पत्नी को पिछले दो दिनों से दांत में दर्द हो रहा था, और
उसकी कराहटों से बचने के लिए उसे बाहर जाना पड़ा। डॉक्टर स्वभाव से ही शाम को ताश खेलने के अलावा और कुछ नहीं कर सकता था। निकोले पारफेनोविच नेल्युडोव तीन दिन पहले से ही मिहाइल मकारोविच के घर उस शाम को अचानक जाने की योजना बना रहा था, ताकि सबसे बड़ी पोती ओल्गा मिहाइलोवना को यह दिखाकर चौंका सके कि वह उसका रहस्य जानता है, कि उसे पता है कि उसका जन्मदिन है, और वह जानबूझकर इसे छिपा रही है ताकि उसे नृत्य न करना पड़े। उसे बहुत हंसी-मजाक, उसकी उम्र को लेकर कई मज़ाकिया चुटकुले, और उसके इसे बताने से डरने, उसके रहस्य को जानने और सबको बताने आदि की उम्मीद थी। वह आकर्षक युवक इस तरह की शरारतों में माहिर था; महिलाओं ने उसे "शरारती आदमी" का नाम दिया था, और वह इस नाम से खुश लगता था। वह बेहद सभ्य परिवार से थे, अच्छे संस्कार प्राप्त थे और उनके भाव भी उत्तम थे। हालाँकि वे विलासितापूर्ण जीवन जीते थे, फिर भी उनकी बातें हमेशा निर्दोष और शालीन होती थीं। उनका कद छोटा और दुबला-पतला था। उनकी सफेद, पतली, छोटी उंगलियों में हमेशा कई बड़ी, चमकीली अंगूठियां होती थीं। जब वे अपने आधिकारिक कर्तव्यों में व्यस्त होते थे, तो वे असाधारण रूप से गंभीर हो जाते थे, मानो उन्हें अपने पद और अपने ऊपर सौंपे गए दायित्वों की पवित्रता का अहसास हो। पूछताछ के दौरान हत्यारों और किसान वर्ग के अन्य अपराधियों को भ्रमित करने की उनमें एक विशेष प्रतिभा थी, और यदि वे उनका सम्मान नहीं जीत पाते थे, तो निश्चित रूप से उन्हें आश्चर्यचकित करने में सफल हो जाते थे।
प्योत्र इल्यिच पुलिस स्टेशन जाते समय पूरी तरह से अचंभित रह गया।
कप्तान के यहाँ पहुँचते ही उसने तुरंत समझ लिया कि सबको पता चल गया है। सबने अपने पत्ते फेंक दिए थे, सब खड़े होकर बातें कर रहे थे। यहाँ तक कि निकोले पार्फेनोविच भी युवतियों को छोड़कर अंदर भागा आया, चुस्त-दुरुस्त और कार्रवाई के लिए तैयार दिख रहा था। प्योत्र इल्यिच को यह चौंकाने वाली खबर मिली कि बूढ़े फ्योदोर पावलोविच की उसी शाम उनके घर में हत्या कर दी गई थी, उनका शव लूट लिया गया था। यह खबर उन तक अभी-अभी इस तरह पहुँची थी।
बूढ़े ग्रिगोरी की पत्नी मार्फा इग्नात्येवना, जिसे धक्का लगा था।
बाड़ के पास बेसुध पड़ी मार्फा इग्नात्येवना अपने बिस्तर पर गहरी नींद में सो रही थी और शायद उसने जो दवा ली थी, उसके असर से वह सुबह तक सोती रहती। लेकिन अचानक ही वह जाग उठी, शायद बगल के कमरे में बेहोश पड़े स्मरद्याकोव की भयानक मिर्गी की चीख से। वह चीख हमेशा उसके दौरे से पहले आती थी और हमेशा मार्फा इग्नात्येवना को डरा देती थी। वह कभी भी उस चीख की आदी नहीं हो पाई थी। वह उछलकर उठी और आधी नींद में ही स्मरद्याकोव के कमरे की ओर भागी। लेकिन वहाँ अँधेरा था और वह केवल बीमार व्यक्ति के हांफने और छटपटाने की आवाज़ ही सुन पाई। फिर मार्फा इग्नात्येवना खुद चीखी और अपने पति को बुलाने ही वाली थी कि अचानक उसे एहसास हुआ कि जब वह उठी तो वह उसके बगल में बिस्तर पर नहीं था। वह वापस पलंग के पास भागी और हाथों से टटोलने लगी, लेकिन बिस्तर सचमुच खाली था। तो वह बाहर गया होगा—कहाँ? वह सीढ़ियों की ओर भागी और डरते-डरते उसे पुकारा। उसे कोई जवाब तो नहीं मिला, लेकिन अंधेरे में दूर बगीचे से कराहने की आवाज़ सुनाई दी। उसने ध्यान से सुना। कराहें बार-बार सुनाई दे रही थीं, और यह स्पष्ट था कि वे बगीचे से आ रही थीं।
“हे भगवान! बिल्कुल वैसा ही जैसा लिज़ावेटा स्मर्द्यास्तचाया के साथ हुआ था!” उसने सोचा
वह अनमने ढंग से सीढ़ियों से नीचे उतरी और देखा कि बगीचे का द्वार खुला हुआ था।
“बेचारा कहीं बाहर होगा,” उसने सोचा। वह गेट तक गई।
और अचानक ही उसे स्पष्ट रूप से ग्रिगोरी की कमजोर, कराहती हुई, भयानक आवाज में उसका नाम पुकारने की आवाज सुनाई दी, "मार्फा! मार्फा!"
“हे प्रभु, हमें हानि से बचाओ!” मार्फा इग्नात्येवना ने बुदबुदाते हुए कहा और दौड़ पड़ी।

आवाज की ओर बढ़ते हुए, उसे ग्रिगोरी मिल गया। लेकिन वह उसे उस बाड़ के पास नहीं मिला जहाँ उसे गिराया गया था, बल्कि लगभग बीस कदम दूर मिला। बाद में पता चला कि होश में आने पर वह रेंगता हुआ दूर चला गया था, और शायद इतनी दूर आने में उसे काफी समय लगा होगा, इस दौरान वह कई बार बेहोश भी हो गया था। उसने तुरंत देखा कि वह खून से लथपथ था, और वह जोर से चिल्लाई। ग्रिगोरी अस्पष्ट रूप से कुछ बुदबुदा रहा था:
“उसने हत्या की है... उसके पिता ने हत्या की है... चीख क्यों रहे हो, मूर्ख... भाग जाओ।”
किसी को बुलाओ...
लेकिन मार्फा चीखती रही, और अपने मालिक की खिड़की को देखकर
खिड़की खुली थी और उसमें मोमबत्ती जल रही थी, यह देखकर वह दौड़कर वहाँ गई और फ्योदोर पावलोविच को पुकारने लगी। लेकिन खिड़की से झाँकते हुए उसने एक भयानक दृश्य देखा। उसका मालिक ज़मीन पर पीठ के बल बेसुध पड़ा था। उसका हल्के रंग का गाउन और सफेद कमीज़ खून से लथपथ थे। मेज पर जलती मोमबत्ती की रोशनी में खून और फ्योदोर पावलोविच का बेजान चेहरा चमक रहा था। दहशत से कांपते हुए मार्फा खिड़की से दूर भागी, बगीचे से बाहर निकली, बड़े गेट की कुंडी खोली और पीछे के रास्ते से पड़ोसी मार्या कोंद्रत्येवना के घर की ओर दौड़ पड़ी। माँ और बेटी दोनों सो रही थीं, लेकिन मार्फा की बेताब चीख-पुकार और शटर पर दस्तक से वे जाग उठीं। मार्फा चीखती-चिल्लाती हुई बेसुध आवाज़ में उन्हें मुख्य बात बताने और मदद की गुहार लगाने में कामयाब रही। दरअसल, फोमा अपनी यात्रा से लौट आया था और उनके साथ रात बिता रहा था। उन्होंने उसे तुरंत उठाया और तीनों घटनास्थल की ओर दौड़े। रास्ते में, मार्या कोंड्राट्येवना को याद आया कि लगभग आठ बजे उसने अपने बगीचे से एक भयानक चीख सुनी थी, और यह निस्संदेह ग्रिगोरी की चीख थी, "पितृहत्या!" जो उसने मित्या का पैर पकड़ते हुए कही थी।
“किसी ने चीख मारी और फिर चुप हो गया,” मार्या ने कहा।
कोंड्राट्येवना दौड़ते हुए समझा रही थी। ग्रिगोरी जहाँ पड़ा था, वहाँ दौड़कर दोनों महिलाएँ फोमा की मदद से उसे झोपड़ी में ले गईं। उन्होंने मोमबत्ती जलाई और देखा कि स्मरद्याकोव की हालत में कोई सुधार नहीं हुआ था, वह ऐंठन से तड़प रहा था, उसकी आँखें तिरछी थीं और उसके होठों से झाग बह रहा था। उन्होंने सिरके मिले पानी से ग्रिगोरी के माथे को गीला किया और पानी से उसे तुरंत होश आ गया। उसने तुरंत पूछा:
क्या गुरु की हत्या कर दी गई है?
फिर फोमा और दोनों महिलाएं घर की ओर दौड़ीं और इस बार उन्होंने देखा कि
न केवल खिड़की, बल्कि बगीचे का दरवाज़ा भी खुला था, हालाँकि फ्योदोर पावलोविच पिछले एक हफ्ते से हर रात खुद को कमरे में बंद कर लेता था और ग्रिगोरी को भी किसी बहाने से अंदर नहीं आने देता था। दरवाज़ा खुला देखकर वे फ्योदोर पावलोविच के पास जाने से डर रहे थे, "कहीं बाद में कुछ हो न जाए।" और जब वे ग्रिगोरी के पास लौटे, तो बूढ़े ने उन्हें सीधे पुलिस प्रमुख के पास जाने को कहा। मार्या कोंद्रत्येवना दौड़कर वहाँ पहुँची और पुलिस प्रमुख के कार्यालय में सभी को सूचना दी। वह प्योत्र इल्यिच से केवल पाँच मिनट पहले पहुँची, इसलिए उसकी कहानी, उसके अपने अनुमान और सिद्धांत के रूप में नहीं, बल्कि एक गवाह द्वारा, अपराधी की पहचान के बारे में सभी के सिद्धांत की प्रत्यक्ष पुष्टि के रूप में सामने आई (एक सिद्धांत जिसे वह उस क्षण तक अपने मन में मानने से इनकार करता रहा था)।
पूरी ऊर्जा के साथ कार्रवाई करने का संकल्प लिया गया। पुलिस उप निरीक्षक ने कहा कि
शहर को चार गवाहों को पकड़ने, फ्योदोर पावलोविच के घर में प्रवेश करने और वहां नियमित प्रक्रियाओं के अनुसार मौके पर ही जांच शुरू करने का आदेश दिया गया था, जिसका विवरण मैं यहां नहीं दूंगा। ज़िला डॉक्टर, जो अपने काम में नया था और काफी उत्साही था, ने पुलिस कप्तान, अभियोक्ता और जांच वकील के साथ जाने पर लगभग ज़ोर दिया।
मैं संक्षेप में यह उल्लेख करना चाहूंगा कि फ्योदोर पावलोविच मृत पाए गए थे।
उसकी खोपड़ी बुरी तरह से क्षतिग्रस्त थी। लेकिन किससे? संभवतः उसी हथियार से जिससे ग्रिगोरी पर हमला किया गया था। जैसे ही वह हथियार मिला, ग्रिगोरी को तुरंत हर संभव चिकित्सा सहायता दी गई। उसने कमजोर और कांपती हुई आवाज में बताया कि उसे कैसे गिराया गया था। उन्होंने बाड़ के पास लालटेन से तलाश शुरू की और बगीचे के रास्ते पर एक बहुत ही प्रमुख स्थान पर पीतल का मूसल गिरा हुआ पाया। जिस कमरे में फ्योदोर पावलोविच लेटा हुआ था, वहां किसी प्रकार की गड़बड़ी के कोई संकेत नहीं थे।

लेकिन बिस्तर के पास, पर्दे के पीछे, उन्होंने फर्श से एक बड़ा और मोटा लिफाफा उठाया जिस पर लिखा था: "मेरी परी ग्रुशेंका के लिए तीन हजार रूबल का उपहार, यदि वह आने को तैयार हो।" और नीचे फ्योदोर पावलोविच ने जोड़ा था, "मेरी छोटी मुर्गी के लिए।" लिफाफे पर लाल रंग की तीन मुहरें लगी थीं, लेकिन उसे फाड़कर खोला गया था और वह खाली था: पैसे निकाल लिए गए थे। उन्हें फर्श पर गुलाबी रंग का एक पतला रिबन भी मिला, जिससे लिफाफा बांधा गया था।
प्योत्र इल्यिच के एक साक्ष्य ने अभियोजक और जांच मजिस्ट्रेट पर गहरा प्रभाव डाला, वह साक्ष्य था दिमित्री फ्योदोरोविच का यह विचार कि वह सूर्योदय से पहले आत्महत्या कर लेगा, उसने ऐसा करने का निश्चय कर लिया था, इल्यिच से इस बारे में बात की थी, पिस्तौलें ले ली थीं, उन्हें इल्यिच के सामने लोड कर लिया था, एक पत्र लिखा था, उसे अपनी जेब में रख लिया था, इत्यादि। जब प्योत्र इल्यिच, हालांकि अभी भी इस पर विश्वास करने को तैयार नहीं था, ने आत्महत्या को रोकने के लिए किसी को बताने की धमकी दी, तो मित्या ने मुस्कुराते हुए उत्तर दिया: "तब तक बहुत देर हो जाएगी।" इसलिए उन्हें अपराधी को ढूंढने के लिए मोक्रोए के लिए शीघ्र प्रस्थान करना होगा, इससे पहले कि वह वास्तव में आत्महत्या कर ले।
“यह स्पष्ट है, यह स्पष्ट है!” अभियोक्ता ने बड़े उत्साह से दोहराया।
“ऐसे पागलों का यही तरीका होता है: ‘मैं कल खुद को मार डालूंगा, इसलिए मरने तक मौज-मस्ती करूंगा!’” उसने शराब और अन्य सामान कैसे खरीदा, इसकी कहानी ने सबको रोमांचित कर दिया।
अभियोजक को पहले से कहीं अधिक जरूरत है।
क्या आपको वह आदमी याद है जिसने एक व्यापारी की हत्या की थी?
ओल्सुफयेव, सज्जनों? उसने पंद्रह सौ चुराए, तुरंत अपने बाल कर्ल करवाने गया, और फिर, पैसे को बिना छिपाए, लगभग उसी तरह हाथ में लिए हुए, लड़कियों के पास चला गया।
हालांकि, जांच, तलाशी और अन्य कारणों से सभी कार्यों में देरी हुई।
फ्योदोर पावलोविच के घर में औपचारिकताओं आदि का पालन किया जा रहा था। इसमें समय लग रहा था, इसलिए रवाना होने से दो घंटे पहले उन्होंने ग्रामीण पुलिस अधिकारी मावरिकी मावरिक्येविच श्मर्टसोव को मोक्रो भेज दिया, जो अपना वेतन लेने के लिए पिछली सुबह ही कस्बे में आ गए थे। उन्हें निर्देश दिया गया था कि मोक्रो पहुँचने पर किसी को सूचित न करें, बल्कि उचित अधिकारियों के आने तक "अपराधी" पर लगातार नज़र रखें, साथ ही गिरफ्तारी के लिए गवाह, पुलिस कांस्टेबल आदि भी जुटाएँ। मावरिकी मावरिक्येविच ने निर्देशानुसार कार्य किया, अपनी पहचान छुपाए रखी और अपने पुराने परिचित ट्रिफॉन बोरिसोविच के अलावा किसी को भी अपने गुप्त कार्य का जरा सा भी आभास नहीं होने दिया। मित्या के बालकनी में मकान मालिक से मिलने से ठीक पहले, जब मित्या अंधेरे में उसे ढूंढ रहा था, तब मावरिकी ने ट्रिफॉन बोरिसोविच से बात की थी और तुरंत ही उसके चेहरे और आवाज में बदलाव महसूस किया था। इसलिए न तो मित्या और न ही किसी और को पता चला कि उस पर नज़र रखी जा रही है। पिस्तौलों वाला बक्सा ट्रिफॉन बोरिसोविच ले गया था और उसे एक उपयुक्त स्थान पर रख दिया था। लगभग सूर्योदय के समय, चार बजे के बाद ही, सभी अधिकारी, पुलिस कप्तान, अभियोक्ता और जांच वकील, तीन-तीन घोड़ों द्वारा खींची जाने वाली दो गाड़ियों में वहाँ पहुँचे। डॉक्टर अगले दिन शव का पोस्टमार्टम करने के लिए फ्योदोर पावलोविच के घर पर ही रुका रहा। लेकिन उसकी विशेष रुचि नौकर स्मरद्याकोव की हालत जानने में थी।
“इस तरह के हिंसक और लंबे समय तक चलने वाले मिर्गी के दौरे, जो लगातार होते रहते हैं
"चौबीस घंटे बहुत कम देखने को मिलते हैं और विज्ञान के लिए ये बेहद महत्वपूर्ण हैं," उन्होंने उत्साहपूर्वक अपने साथियों से कहा, और जब वे जाने लगे तो उन्होंने हंसते हुए उनकी खोज पर उन्हें बधाई दी।
अभियोजक और जांच वकील को डॉक्टर की यह बात अच्छी तरह याद थी कि स्मरद्याकोव रात भर जीवित नहीं रह पाएगा।
इन लंबी, लेकिन मुझे लगता है कि आवश्यक व्याख्याओं के बाद, हम वापस लौटेंगे।
हमारी कहानी का वह क्षण जब हमने कहानी को बीच में ही रोक दिया।

अध्याय 3

एक आत्मा के कष्ट। पहला भाग
कठिन परीक्षा

और इस तरह मित्या अपने आस-पास के लोगों को बेतहाशा देखता रहा, उसे समझ नहीं आ रहा था कि उससे क्या कहा जा रहा है। अचानक वह उठा, अपने हाथ ऊपर उठाए और जोर से चिल्लाया:
मैं दोषी नहीं हूँ! मैं उस खून का दोषी नहीं हूँ! मैं अपने किसी भी अपराध का दोषी नहीं हूँ।
पिता का खून... मेरा इरादा उसे जान से मारने का था। लेकिन मैं दोषी नहीं हूँ। मैं नहीं।"
लेकिन उसने अभी इतना ही कहा था कि ग्रुशेंका पीछे से दौड़कर आ गई।
उसने पर्दा हटाया और पुलिस कप्तान के पैरों में जा गिरी।
“यह मेरी गलती थी! मेरी! मेरी दुष्टता!” वह दिल दहला देने वाली आवाज़ में रोई।
आँसुओं से भीगी हुई आवाज़ में, उसने अपने जुड़े हुए हाथों को उनकी ओर फैलाते हुए कहा, “उसने यह सब मेरे ज़रिए किया। मैंने उसे प्रताड़ित किया और उसे इस स्थिति तक पहुँचाया। मैंने उस बेचारे बूढ़े आदमी को भी, जो अब इस दुनिया में नहीं है, अपनी दुष्टता में प्रताड़ित किया और उसे इस हालत में पहुँचाया! यह मेरी गलती है, सबसे पहले मेरी, सबसे ज़्यादा मेरी, मेरी ही गलती!”
“हाँ, ये तुम्हारी ही गलती है! तुम ही मुख्य अपराधी हो! तुम क्रोध की देवी हो! तुम वेश्या हो!”
“सबसे ज़्यादा दोष तुम्हारा है!” पुलिस कप्तान ने हाथ से इशारा करते हुए चिल्लाकर कहा। लेकिन उसे तुरंत और दृढ़ता से काबू में कर लिया गया। अभियोजक ने उसे पूरी तरह से पकड़ लिया।
“यह बिल्कुल अनियमित है, मिखाइल मकारोविच!” वह चिल्लाया। “तुम
आप जांच में सरासर बाधा डाल रहे हैं... आप मामले को बर्बाद कर रहे हैं..." वह लगभग हांफते हुए बोला।
“नियमित मार्ग का अनुसरण करो! नियमित मार्ग का अनुसरण करो!” निकोले चिल्लाया।
पार्फेनोविच भी भयभीत और उत्साहित होकर बोले, "अन्यथा यह बिल्कुल असंभव है! ..."
“हम सबका एक साथ न्याय करो!” ग्रुशेंका घुटनों के बल बैठी हुई घबराकर चिल्लाई। “हमें सज़ा दो।”
हम साथ-साथ। मैं अब उसके साथ चलूंगा, चाहे इसके लिए मौत ही क्यों न देनी पड़े!
“ग्रुशा, मेरे जीवन, मेरे रक्त, मेरे पवित्र!” मित्या घुटनों के बल गिर पड़ा।
उसके बगल में जाकर उसने उसे अपनी बाहों में कसकर पकड़ लिया। “उसकी बात पर विश्वास मत करो,” वह चिल्लाया, “वह किसी भी चीज़ की दोषी नहीं है, किसी भी खून की नहीं, किसी भी चीज़ की नहीं!”
बाद में उसे याद आया कि कई आदमियों ने उसे जबरदस्ती उससे अलग कर दिया था, और उसे बाहर ले जाया गया था, और जब उसे होश आया तो वह मेज पर बैठा था। उसके बगल में और पीछे धातु की प्लेटें लिए हुए आदमी खड़े थे। मेज के दूसरी ओर उसके सामने जांच वकील निकोले पारफेनोविच बैठे थे। वे उसे मेज पर रखे गिलास से थोड़ा पानी पीने के लिए बार-बार मना रहे थे।
इससे आपको ताजगी मिलेगी, इससे आपको शांति मिलेगी। शांत रहें, परेशान न हों।
“डरा हुआ,” उसने अत्यंत विनम्रता से कहा। मित्या (उसे बाद में याद आया) अचानक अपनी बड़ी अंगूठियों में गहरी दिलचस्पी लेने लगा, एक में नीलम जड़ा था और दूसरी में एक पारदर्शी चमकदार पीले रंग का पत्थर, जो बहुत ही चमकीला था। और बहुत समय बाद उसे आश्चर्य से याद आया कि कैसे उन अंगूठियों ने पूछताछ के उन भयानक घंटों के दौरान उसका ध्यान अपनी ओर खींच लिया था, जिससे वह उनसे नज़रें नहीं हटा पा रहा था और उन्हें अपनी स्थिति से बेमेल समझकर नज़रअंदाज़ नहीं कर पा रहा था। मित्या के बाईं ओर, जहाँ मैक्सिमोव शाम की शुरुआत में बैठा था, अब अभियोक्ता बैठा था, और मित्या के दाईं ओर, जहाँ ग्रुशेंका बैठी थी, एक गुलाबी गालों वाला युवक एक फटी-पुरानी जैकेट पहने बैठा था, जिसके सामने स्याही और कागज़ थे। यह जांच वकील का सचिव था, जो उसे अपने साथ लाया था। पुलिस कप्तान अब कमरे के दूसरे छोर पर खिड़की के पास, वहाँ बैठे कालगानोव के बगल में खड़ा था।
जांच करने वाले वकील ने दसवीं बार धीमी आवाज़ में कहा, "थोड़ा पानी पी लो।"
समय।

मैंने इसे पी लिया है, सज्जनों, मैंने पी लिया है... लेकिन... आइए, सज्जनों, इसे कुचल दीजिए।
"मुझे, मुझे सजा दो, मेरा फैसला करो!" मित्या ने जांच कर रहे वकील को भयानक रूप से खुली आंखों से घूरते हुए चिल्लाकर कहा।
इसलिए आप स्पष्ट रूप से घोषणा करते हैं कि आप अपने प्रियजन की मृत्यु के दोषी नहीं हैं।
“पिताजी, फ्योदोर पावलोविच?” जांच करने वाले वकील ने धीमी लेकिन दृढ़ता से पूछा।
मैं दोषी नहीं हूँ। मैं एक बूढ़े आदमी के खून का दोषी हूँ, लेकिन किसी और का नहीं।
मेरे पिता का। और मैं इसके लिए रोता हूँ! मैंने हत्या की, मैंने उस बूढ़े को मार डाला और उसे नीचे गिरा दिया... लेकिन उस हत्या के लिए दूसरी हत्या का जवाब देना कितना मुश्किल है, एक ऐसी भयानक हत्या जिसका मैं दोषी नहीं हूँ... यह एक भयानक आरोप है, सज्जनों, एक करारा झटका। लेकिन मेरे पिता को किसने मारा है, किसने मारा है? अगर मैंने नहीं मारा तो उन्हें कौन मार सकता है? यह आश्चर्यजनक है, असाधारण है, असंभव है।
“हां, उसे किसने मारा होगा?” जांच करने वाले वकील ने पूछा।
बात शुरू ही हुई थी कि अभियोजक इप्पोलिट किरिलोविच ने उसकी ओर देखते हुए मित्या से बात की।
“तुम्हें बूढ़े नौकर ग्रिगरी के बारे में चिंता करने की ज़रूरत नहीं है।”
वासिलीविच। वह जीवित हैं, वे ठीक हो गए हैं, और आपके और उनके स्वयं के साक्ष्य के अनुसार, आपके द्वारा पहुँचाई गई भयानक चोटों के बावजूद, इसमें कोई संदेह नहीं है कि वे जीवित रहेंगे, कम से कम डॉक्टर तो यही कहते हैं।
“जिंदा है? वह जिंदा है?” मित्या चिल्लाया और अपने हाथ ऊपर उठा लिए। उसका चेहरा
वह खुशी से झूम उठा। “हे प्रभु, तूने मेरे जैसे पापी और दुष्ट के लिए जो चमत्कार किया है, उसके लिए मैं तेरा धन्यवाद करता हूँ। यही मेरी प्रार्थना का उत्तर है। मैं पूरी रात प्रार्थना करता रहा।” और उसने तीन बार क्रॉस का निशान बनाया। उसकी साँसें लगभग रुक गई थीं।
“इसलिए ग्रिगोरी से हमें इतने महत्वपूर्ण साक्ष्य प्राप्त हुए हैं।”
आपके बारे में, वह...” अभियोक्ता आगे बोलना ही चाहता था, लेकिन मित्या अचानक अपनी कुर्सी से उठ खड़ा हुआ।
“एक मिनट रुकिए, सज्जनों, भगवान के लिए, एक मिनट; मैं उसके पास दौड़ कर आती हूँ।”
—”
“माफ़ कीजिए, इस समय यह बिल्कुल असंभव है,” निकोले ने कहा।
पार्फेनोविच लगभग चीख पड़ा। वह भी उछलकर खड़ा हो गया। धातु की प्लेट लिए हुए आदमियों ने मित्या को पकड़ लिया, लेकिन वह अपनी मर्जी से बैठ गया...
“सज्जनों, कितना अफसोस की बात है! मैं उसे सिर्फ एक मिनट के लिए देखना चाहता था; मैं
मैं उसे बताना चाहता था कि वो खून धुल गया है, चला गया है, जो रात भर मेरे दिल पर बोझ बना हुआ था, और अब मैं हत्यारा नहीं हूँ! सज्जनों, वह मेरी मंगेतर है!” उसने उत्साह और श्रद्धा से उन सभी की ओर देखते हुए कहा। “ओह, धन्यवाद सज्जनों! ओह, एक ही पल में आपने मुझे नया जीवन, नया दिल दे दिया! ... वो बूढ़ा आदमी मुझे अपनी बाहों में उठाया करता था, सज्जनों। जब मैं तीन साल का बच्चा था, जिसे सबने छोड़ दिया था, तब वो मुझे टब में नहलाता था, वो मेरे लिए पिता समान था! ..."
“और इसलिए आप...” जांच वकील ने कहना शुरू किया। “मुझे अनुमति दीजिए, सज्जनों, मुझे एक मिनट और दीजिए,” मित्या ने बीच में ही कहा।
अपनी कोहनियों को मेज पर टिकाकर और हाथों से अपना चेहरा ढकते हुए, उन्होंने कहा, “मुझे सोचने के लिए थोड़ा समय दीजिए, मुझे सांस लेने दीजिए, सज्जनों। यह सब बेहद परेशान करने वाला है, बेहद। मनुष्य कोई ढोल नहीं है, सज्जनों!”
“थोड़ा और पानी पी लो,” निकोले पारफेनोविच ने धीरे से कहा। मित्या ने अपने चेहरे से हाथ हटाए और हँस पड़ा। उसकी आँखें
आत्मविश्वास से भरा हुआ। मानो पल भर में उसका पूरा रूप बदल गया हो। उसका पूरा व्यवहार बदल गया था; वह एक बार फिर उन सभी लोगों के बराबर हो गया था, जिनसे वह परिचित था, मानो वे सब कल ही किसी सामाजिक समारोह में मिले हों, जब कुछ हुआ ही न हो। यह भी ध्यान देने योग्य है कि, पहली बार आने

पर, मित्या का पुलिस कप्तान के यहाँ बहुत स्वागत किया गया था, लेकिन बाद में, खासकर पिछले महीने के दौरान, मित्या शायद ही कभी आया हो, और जब पुलिस कप्तान उससे सड़क पर मिलता था, उदाहरण के लिए, मित्या ने देखा कि वह भौंहें चढ़ा लेता था और केवल शिष्टाचारवश झुकता था। अभियोक्ता से उसका परिचय उतना घनिष्ठ नहीं था, हालाँकि वह कभी-कभी उसकी पत्नी, जो एक घबराई हुई और कल्पनाशील महिला थी, से शिष्टाचारवश मिलने जाता था, बिना यह जाने कि क्यों, और वह हमेशा उसका सहृदयता से स्वागत करती थी और किसी कारणवश, अंत तक उसमें रुचि रखती थी। उसे जांच वकील को जानने का समय नहीं मिला था, हालाँकि वह उससे दो बार मिला था और बात की थी, हर बार महिलाओं के बारे में।
“मुझे लगता है, निकोले पार्फेनोविच, आप एक बहुत ही कुशल वकील हैं,” चिल्लाकर बोले।
मित्या खिलखिलाते हुए हँसा, “लेकिन मैं अब आपकी मदद कर सकता हूँ। ओह, सज्जनों, मैं बिल्कुल तरोताज़ा महसूस कर रहा हूँ, और मेरे आपसे इतनी सरलता और सीधेपन से बात करने पर नाराज़ न हों। मैं थोड़ा नशे में भी हूँ, यह मैं आपको खुलकर बता रहा हूँ। मुझे लगता है कि मुझे अपने रिश्तेदार मियूसोव के यहाँ आपसे, निकोले पार्फेनोविच, मिलने का सौभाग्य और खुशी मिली है। सज्जनों, सज्जनों, मैं आपसे बराबरी का व्यवहार करने का दिखावा नहीं करता। मैं समझता हूँ कि मैं किस रूप में आपके सामने बैठा हूँ। ओह, बेशक, मुझ पर एक भयानक संदेह मंडरा रहा है... कि क्या ग्रिगोरी ने गवाही दी है... एक भयानक संदेह! यह भयानक है, भयानक, मैं समझता हूँ! लेकिन मुद्दे की बात पर आते हैं, सज्जनों, मैं तैयार हूँ, और हम इसे एक पल में समाप्त कर देंगे; क्योंकि, सुनिए, सुनिए, सज्जनों! चूंकि मैं जानता हूँ कि मैं निर्दोष हूँ, हम इसे एक मिनट में समाप्त कर सकते हैं। क्या हम नहीं कर सकते? क्या हम नहीं कर सकते?”
मित्या बहुत तेज़ी से, घबराकर और भावुकता से बोलता रहा, मानो वह
वह अपने श्रोताओं को अपना सबसे अच्छा दोस्त मानता था।
इसलिए, फिलहाल हम यह लिखेंगे कि आप इस आरोप को पूरी तरह से नकारते हैं।
“आपके खिलाफ लाया गया है,” निकोले परफेनोविच ने प्रभावशाली ढंग से कहा, और सचिव की ओर झुकते हुए, धीमी आवाज़ में उसे बताया कि क्या लिखना है।
“इसे लिख लो? क्या तुम इसे लिखना चाहते हो? ठीक है, लिख लो; मैं सहमत हूँ।”
मैं अपनी पूरी सहमति देता हूँ, सज्जनों, बस... समझे?... रुकिए, रुकिए, यह लिखिए। मैं दुर्व्यवहार का दोषी हूँ, एक बूढ़े बेचारे पर हिंसा का दोषी हूँ। और मेरे दिल की गहराई में कुछ और भी है, जिसका मैं दोषी हूँ—पर वह आपको लिखने की ज़रूरत नहीं है” (वह अचानक सचिव की ओर मुड़ा); “वह मेरा निजी जीवन है, सज्जनों, उससे आपका कोई लेना-देना नहीं है, मेरे दिल की गहराई... लेकिन मैं अपने बूढ़े पिता की हत्या का दोषी नहीं हूँ। यह एक बेतुका विचार है। यह बिल्कुल बेतुका विचार है!... मैं आपको यह साबित कर दूँगा और आप तुरंत आश्वस्त हो जाएँगे... आप हँसेंगे, सज्जनों। आप अपने संदेह पर खुद ही हँसेंगे!...”
“शांत रहिए, दिमित्री फ्योदोरोविच,” जांच करने वाले वकील ने कहा।
अपनी संयमित मुद्रा से मित्या की उत्तेजना को शांत करने का प्रयास करते हुए, उन्होंने कहा, “इससे पहले कि हम अपनी पूछताछ आगे बढ़ाएं, यदि आप उत्तर देने के लिए सहमत हों, तो मैं आपसे यह पुष्टि सुनना चाहूंगा कि आप अपने पिता, फ्योदोर पावलोविच को नापसंद करते थे और उनके साथ आपके लगातार विवाद होते रहते थे। कम से कम पंद्रह मिनट पहले, आपने कहा था कि आप उन्हें जान से मारना चाहते थे: ‘मैंने उन्हें नहीं मारा,’ आपने कहा, ‘लेकिन मैं उन्हें मारना चाहता था।’”
क्या मैंने ऐसा कहा था? ओह, ऐसा हो सकता है, सज्जनों! हाँ, दुर्भाग्य से, मैंने कहा था।
मैं उसे जान से मारना चाहता था... कई बार मेरा मन हुआ... दुर्भाग्य से, बहुत दुर्भाग्य से!
“आप ऐसा चाहते थे। क्या आप कृपया अपने उद्देश्यों को स्पष्ट रूप से समझाएंगे?”
क्या इसी वजह से आपके मन में अपने माता-पिता के प्रति इतनी नफरत की भावना पैदा हुई?
“इसमें समझाने जैसी क्या बात है, सज्जनों?” मित्या ने कंधे उचकाते हुए कहा।
उदास होकर, नीचे देखते हुए। “मैंने कभी अपनी भावनाओं को नहीं छिपाया। पूरे शहर को इसके बारे में पता है—सराय में हर कोई जानता है। अभी हाल ही में मैंने फादर ज़ोस्सिमा की कोठरी में उन्हें ज़ाहिर किया... और उसी दिन शाम को मैंने अपने पिता को पीटा। मैंने लगभग उन्हें मार ही डाला था, और मैंने गवाहों के सामने कसम खाई थी कि मैं फिर आऊँगा और उन्हें मार डालूँगा... ओह, हज़ार गवाह! मैं पिछले एक महीने से ज़ोर-ज़ोर से चिल्ला रहा हूँ, कोई भी आपको बता सकता है!... सच्चाई आपके सामने है, यह खुद बोलती है,

यह ज़ोर से पुकारती है, लेकिन भावनाएँ, सज्जनों, भावनाएँ एक अलग बात हैं। देखिए, सज्जनों"—मित्या ने भौंहें चढ़ाईं—"मुझे लगता है कि भावनाओं के बारे में मुझसे सवाल करने का आपको कोई अधिकार नहीं है। मैं जानता हूँ कि आप अपने पद से बंधे हैं, मैं यह अच्छी तरह समझता हूँ, लेकिन यह मेरा मामला है, मेरा निजी, अंतरंग मामला, फिर भी... क्योंकि मैंने अतीत में अपनी भावनाओं को नहीं छिपाया है... सराय में, उदाहरण के लिए, मैंने सबसे बात की है, इसलिए... अब मैं इसे छुपाऊंगा नहीं। देखिए, सज्जनों, मैं समझता हूं कि इस मामले में मेरे खिलाफ भयानक तथ्य हैं। मैंने सबको बताया था कि मैं उसे मार डालूंगा, और अब, अचानक, उसकी हत्या कर दी गई है। तो यह मैंने ही किया होगा! हा हा! मैं आप लोगों के लिए रियायत दे सकता हूं, सज्जनों, मैं पूरी तरह से रियायत दे सकता हूं। मैं खुद पूरी तरह से हैरान हूं, क्योंकि अगर मैंने नहीं तो उसकी हत्या किसने की होगी? बात यहीं आकर रुकती है, है ना? अगर मैंने नहीं, तो कौन हो सकता है, कौन? सज्जनों, मैं जानना चाहता हूं, मैं जानना चाहता हूं!" वह अचानक चिल्लाया। "उसकी हत्या कहां हुई? उसकी हत्या कैसे हुई? कैसे और किससे? मुझे बताइए," उसने दोनों वकीलों की ओर देखते हुए जल्दी से पूछा।
"हमने उसे उसके अध्ययन कक्ष में फर्श पर पीठ के बल लेटा हुआ पाया, उसके साथ
अभियोजक ने कहा, "सिर बुरी तरह से कुचला गया था।"
"यह तो भयानक है!" मित्या सिहर उठा और अपनी कोहनियों को मेज पर टिकाते हुए बोला,
उसने अपना चेहरा अपने दाहिने हाथ से छिपा लिया।
"हम जारी रखेंगे," निकोले पारफेनोविच ने बीच में कहा। "तो बात क्या थी?"
किस बात ने आपको इस घृणा की भावना की ओर प्रेरित किया? मुझे लगता है कि आपने सार्वजनिक रूप से यह दावा किया है कि यह ईर्ष्या पर आधारित थी?
"हाँ, ईर्ष्या। और केवल ईर्ष्या ही नहीं।"
"पैसे को लेकर विवाद?"
"हां, पैसों के बारे में भी।"
मुझे लगता है कि तीन हजार रूबल को लेकर विवाद था, जिसके बारे में आप
क्या आपने इसे अपनी विरासत के हिस्से के रूप में दावा किया है?
"तीन हज़ार! और, और," मित्या गुस्से से चिल्लाया; "छह से भी ज़्यादा।"
हज़ार, दस हज़ार से भी ज़्यादा, शायद। मैंने सबको यही कहा, चिल्लाकर कहा। लेकिन मैंने तीन हज़ार पर ही इसे जाने देने का फैसला कर लिया। मुझे उन तीन हज़ार की सख्त ज़रूरत थी... इसलिए तीन हज़ार के नोटों का वो बंडल जो मुझे पता था कि वो ग्रुशेंका के लिए अपने तकिए के नीचे रखता था, मैंने उसे सीधे-सीधे चोरी समझा। जी हाँ, सज्जनों, मैंने उसे अपना ही समझा, अपनी ही संपत्ति समझा...
अभियोजक ने जांच वकील पर विशेष ध्यान दिया, और
अब चुपके से उसे आँख मारने का समय आ गया है।
"हम इस विषय पर बाद में चर्चा करेंगे," वकील ने तुरंत कहा। "आप
क्या इससे हमें उस बात को नोट करने और लिख लेने की अनुमति मिलेगी; कि आपने उस पैसे को अपनी निजी संपत्ति माना था?
"इसे लिख लो, बिल्कुल। मुझे पता है कि यह एक और तथ्य है जो इसके विरुद्ध जाता है।
मैं, लेकिन मैं तथ्यों से नहीं डरता और मैं उन्हें अपने विरुद्ध ही बताता हूँ। क्या आप सुन रहे हैं? क्या आप जानते हैं, सज्जनों, आप मुझे उस तरह का आदमी समझते हैं जैसा मैं वास्तव में नहीं हूँ," उन्होंने अचानक उदास और निराश होकर कहा। "आपको एक सम्मानित व्यक्ति से निपटना है, सर्वोच्च सम्मान वाले व्यक्ति से; सबसे बढ़कर—इसे मत भूलिए—एक ऐसे व्यक्ति से जिसने बहुत से घिनौने काम किए हैं, लेकिन हमेशा से, और आज भी, अपने भीतर से सम्माननीय रहा है। मुझे नहीं पता कि इसे कैसे व्यक्त करूँ। यही वह बात है जिसने मुझे जीवन भर दुखी रखा है, कि मैं सम्माननीय होने की लालसा रखता था, कि मैं, एक तरह से, सम्मान की भावना का शहीद था, डायोजेन्स के लालटेन से उसकी तलाश करता था, और फिर भी जीवन भर मैं हम सभी की तरह गंदे काम करता रहा हूँ, सज्जनों... यह केवल मुझमें ही है। यह एक गलती थी, केवल मुझमें ही, केवल मुझमें ही!... महोदय, मेरा सिर दर्द कर रहा है... दर्द से उनकी भौंहें तन गईं। "देखिए महोदय, मैं उसे

देख भी नहीं सकता था, उसमें कुछ नीच, ढीठ, पवित्रता का हनन करने वाला, उपहासपूर्ण और अनादरपूर्ण, घृणित, बेहद घिनौना था। लेकिन अब जब वह मर चुका है, तो मेरी भावनाएँ बदल गई हैं।"
आपका क्या मतलब है?
"मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता, लेकिन काश मैंने उससे इतनी नफरत न की होती।"
"क्या आपको पश्चाताप हो रहा है?"
“नहीं, पश्चाताप नहीं, ऐसा मत लिखो। मैं खुद भी कोई खास अच्छी नहीं हूँ, मैं खूबसूरत भी नहीं हूँ, इसलिए मुझे उसे घृणित समझने का कोई अधिकार नहीं था। मेरा मतलब यही है। अगर चाहो तो लिख लो।”
यह कहते हुए मित्या बहुत दुखी हो गया। वह दिन-ब-दिन और भी उदास होता जा रहा था।
जांच जारी रहने के कारण माहौल निराशाजनक बना रहा।
उसी क्षण एक और अप्रत्याशित दृश्य सामने आया। हालाँकि ग्रुशेंका
उसे वहाँ से हटा दिया गया था, उसे ज़्यादा दूर नहीं ले जाया गया था, बस नीले कमरे से ठीक बगल वाले कमरे में ले जाया गया था, जहाँ परीक्षा चल रही थी। वह एक छोटा सा कमरा था जिसमें एक खिड़की थी, उस बड़े कमरे के ठीक आगे जहाँ उन्होंने खूब नाच-गाना और दावत की थी। वह वहाँ बैठी थी, उसके पास मैक्सिमोव के अलावा कोई नहीं था, जो बहुत उदास और डरा हुआ था, और सुरक्षा के लिए उससे लिपटा हुआ था। उनके दरवाजे पर एक किसान खड़ा था जिसकी छाती पर धातु की प्लेट लगी थी। ग्रुशेंका रो रही थी, और अचानक उसका दुख असहनीय हो गया, वह उछल पड़ी, अपनी बाहें ऊपर उठाईं और ज़ोर-ज़ोर से रोते हुए कमरे से बाहर निकलकर अपने मित्या की ओर दौड़ी, इतनी अचानक कि उन्हें उसे रोकने का समय ही नहीं मिला। मित्या, उसकी चीख सुनकर काँप उठा, उछल पड़ा और चिल्लाते हुए बेतहाशा उसकी ओर दौड़ा, उसे पता ही नहीं था कि वह क्या कर रहा है। लेकिन उन्हें एक-दूसरे के पास आने की इजाज़त नहीं थी, हालाँकि उन्होंने एक-दूसरे को देख लिया था। उसे बाहों से पकड़ लिया गया। वह छटपटाया और खुद को छुड़ाने की कोशिश की। उसे पकड़ने के लिए तीन-चार आदमियों की ज़रूरत पड़ी। उसे भी पकड़ लिया गया और उसने देखा कि जब वे उसे ले जा रहे थे तो वह अपनी बाहें उसकी ओर फैलाकर ज़ोर-ज़ोर से रो रही थी। जब सब कुछ शांत हो गया, तो उसे होश आया और वह पहले की तरह उसी जगह पर, जांच कर रहे वकील के सामने बैठा था और उनसे गुहार लगा रहा था:
तुम उससे क्या चाहते हो? उसे क्यों सता रहे हो? उसका काम हो चुका है।
कुछ भी नहीं कुछ भी नहीं! । । ।"
वकीलों ने उसे शांत करने की कोशिश की। लगभग दस मिनट इसी तरह बीत गए।
अंत में, अनुपस्थित रहे मिखाइल मकारोविच जल्दी से कमरे में आए और अभियोक्ता से ऊँची और उत्तेजित आवाज में बोले:
“उसे हटा दिया गया है, वह नीचे है। क्या आप मुझे एक शब्द कहने की अनुमति देंगे?”
इस दुखी व्यक्ति के लिए एक संदेश, सज्जनों? आपकी उपस्थिति में, सज्जनों, आपकी उपस्थिति में।
“बिल्कुल, मिखाइल मकारोविच,” जांच करने वाले वकील ने जवाब दिया।
"वर्तमान मामले में हमें इसके खिलाफ कुछ भी नहीं है।"
“सुनो, दिमित्री फ्योदोरोविच, मेरे प्रिय मित्र,” पुलिस ने कहना शुरू किया।
कप्तान के चेहरे पर उस बदकिस्मत कैदी के लिए गर्मजोशी भरा, लगभग पिता तुल्य भाव झलक रहा था। “मैं तुम्हारी अग्रफेना अलेक्जेंड्रोवना को खुद नीचे ले गया और उसे मकान मालिक की बेटियों के भरोसे छोड़ दिया, और वह बूढ़ा मैक्सिमोव हर समय उसके साथ है। और मैंने उसे समझाया, सुना तुमने? मैंने उसे समझाया और शांत किया। मैंने उसे समझाया कि तुम्हें खुद को बेगुनाह साबित करना है, इसलिए उसे तुम्हें रोकना नहीं चाहिए, तुम्हें निराश नहीं करना चाहिए, वरना तुम अपना आपा खो सकते हो और गवाही में गलत बात कह सकते हो। दरअसल, मैंने उससे बात की और वह समझ गई। वह एक समझदार लड़की है, मेरे बेटे, एक नेक दिल लड़की, वह तुम्हारे लिए मदद मांगने के लिए मेरे बूढ़े हाथों को चूम लेती। उसने मुझे खुद भेजा है, ताकि मैं तुम्हें बताऊं कि तुम उसके बारे में चिंता मत करो। और मुझे जाना होगा, मेरे प्यारे दोस्त, मुझे जाकर उसे बताना होगा कि तुम उसके बारे में शांत और निश्चिंत हो। इसलिए तुम्हें भी शांत रहना चाहिए, समझे? मैंने उसके साथ अन्याय किया; वह एक नेक आत्मा है, सज्जनों, हाँ, मैं आपको बता रहा हूँ, वह एक

कोमल आत्मा है, और किसी भी चीज़ के लिए दोषी नहीं है। तो मैं उसे क्या बताऊं, दिमित्री फ्योदोरोविच, क्या आप चुपचाप बैठेंगे या नहीं?
उस नेक दिल पुलिस कप्तान ने कई ऐसी बातें कहीं जो अनियमित थीं, लेकिन
ग्रुशेंका की पीड़ा, एक साथी प्राणी की पीड़ा, ने उसके दयालु हृदय को झकझोर दिया और उसकी आँखों में आँसू आ गए। मित्या उछलकर उसकी ओर दौड़ा।
"मुझे क्षमा करें, सज्जनों, ओह, मुझे अनुमति दें, मुझे अनुमति दें!" वह चिल्लाया। "आपने
एक देवदूत का हृदय, एक देवदूत, मिखाइल मकारोविच, मैं उसके लिए आपका धन्यवाद करता हूँ। मैं शांत रहूँगा, वास्तव में प्रसन्न रहूँगा। उसे अपने हृदय की दयालुता से बताएँ कि मैं प्रसन्न हूँ, बहुत प्रसन्न हूँ, कि मैं एक मिनट में हँसने लगूँगा, यह जानकर कि उसके पास आप जैसा संरक्षक देवदूत है। मैं यह सब तुरंत निपटा दूँगा, और जैसे ही मैं मुक्त हो जाऊँगा, मैं उसके साथ रहूँगा, वह देख लेगी, उसे प्रतीक्षा करने दें। सज्जनों," उसने दोनों वकीलों की ओर मुड़ते हुए कहा, "अब मैं अपना पूरा दिल आपके सामने खोल दूँगा; मैं सब कुछ उगल दूँगा। हम इसे तुरंत, खुशी-खुशी समाप्त कर देंगे। अंत में हम इस पर हँसेंगे, है ना? लेकिन, सज्जनों, वह महिला मेरे दिल की रानी है। ओह, मुझे आपको यह बताने दीजिए। वह एक बात जो मैं आपको अभी बता रहा हूँ... मैं देखता हूँ कि मैं सम्मानित पुरुषों के साथ हूँ। वह मेरी रोशनी है, वह मेरी पवित्र है, और काश आप जानते! क्या आपने उसकी ये पुकार सुनी, 'मैं तुम्हारे साथ मर जाऊंगी'? और मैंने, एक कंगाल भिखारी ने, उसके लिए क्या किया है? मेरे लिए इतना प्यार क्यों? मुझ जैसे भद्दे, बदसूरत, जानवर जैसे इंसान को, मेरे बदसूरत चेहरे के साथ, ऐसा प्यार कैसे मिल सकता है कि वह मेरे साथ निर्वासन में जाने को तैयार है? और अभी-अभी वह मेरे लिए आपके चरणों में गिर पड़ी! ...और फिर भी वह घमंडी है और उसने कुछ नहीं किया! मैं उसकी पूजा करने से कैसे खुद को रोक सकता हूँ, मैं अभी-अभी की तरह उसके पास दौड़ने और पुकारने से कैसे खुद को रोक सकता हूँ? सज्जनों, मुझे क्षमा करें! लेकिन अब, अब मुझे सुकून मिला है।
और वह अपनी कुर्सी पर पीछे की ओर झुक गया और अपने हाथों से अपना चेहरा ढक लिया।
वह फूट-फूटकर रोने लगा। लेकिन ये खुशी के आंसू थे। उसने तुरंत खुद को संभाल लिया। बूढ़ा पुलिस कप्तान और वकील दोनों बहुत खुश दिखे। उन्हें लगा कि जांच एक नए चरण में प्रवेश कर रही है। जब पुलिस कप्तान बाहर गया, तो मित्या बेहद खुश था।
"अब, सज्जनों, मैं पूरी तरह से आपकी सेवा में तत्पर हूं। और
अगर ये सारी छोटी-मोटी बातें न होतीं, तो हम एक-दूसरे को पल भर में समझ लेते। मैं फिर से उन्हीं छोटी-मोटी बातों पर आ गया हूँ। मैं आपकी सेवा में तत्पर हूँ, सज्जनों, लेकिन मैं स्पष्ट कर देना चाहता हूँ कि हम दोनों को एक-दूसरे पर भरोसा होना चाहिए, आप मुझ पर और मैं आप पर, वरना यह सिलसिला कभी खत्म नहीं होगा। मैं आपके हित में बोल रहा हूँ। चलिए काम की बात करते हैं, सज्जनों, काम की बात करते हैं, और मेरे मन में झाँकने की कोशिश मत कीजिए; मुझे छोटी-मोटी बातों से परेशान मत कीजिए, बल्कि सिर्फ तथ्यों और ज़रूरी बातों के बारे में पूछिए, और मैं आपको तुरंत संतुष्ट कर दूँगा। और इन छोटी-मोटी बातों को छोड़िए!
मित्या ने ऐसा कहा। पूछताछ फिर से शुरू हो गई।

अध्याय 4

दूसरी परीक्षा

“दिमित्री फ्योदोरोविच, आप अपने जवाब देने की तत्परता से हमें कितना प्रोत्साहित कर रहे हैं, यह आप नहीं जानते,” निकोले पारफेनोविच ने जोश से भरे स्वर में कहा, और उनकी उभरी हुई, कमज़ोर नज़र वाली, हल्के भूरे रंग की आँखों में स्पष्ट संतुष्टि झलक रही थी, जिनसे उन्होंने कुछ क्षण पहले ही अपना चश्मा उतारा था। “आपने आपसी विश्वास के बारे में बहुत सटीक टिप्पणी की है, जिसके बिना ऐसे महत्वपूर्ण मामलों में आगे बढ़ना कभी-कभी लगभग असंभव हो जाता है, यदि संदिग्ध पक्ष वास्तव में अपना बचाव करना चाहता है और ऐसा करने की स्थिति में है। हम अपनी ओर से पूरी कोशिश करेंगे, और आप स्वयं देख सकते हैं कि हम इस मामले को कैसे चला रहे हैं। क्या आप सहमत हैं, इप्पोलिट किरिलोविच?” उन्होंने अभियोक्ता की ओर रुख किया।
“ओह, बिल्कुल,” अभियोक्ता ने उत्तर दिया। उनका लहजा कुछ ठंडा था।
निकोले पार्फेनोविच की आवेगशीलता की तुलना में।
मैं एक बार फिर यह उल्लेख करना चाहूंगा कि निकोले पारफेनोविच, जो हाल ही में
हमारे बीच आने वाले निकोले पारफेनोविच, शुरू से ही हमारे अभियोक्ता इप्पोलिट किरिलोविच के प्रति गहरा सम्मान रखते थे और लगभग उनके घनिष्ठ मित्र बन गए थे। वे लगभग एकमात्र ऐसे व्यक्ति थे जिन्हें मनोवैज्ञानिक और वक्ता के रूप में इप्पोलिट किरिलोविच की असाधारण प्रतिभा और उनकी शिकायत की सच्चाई पर पूरा भरोसा था। उन्होंने उनके बारे में सेंट पीटर्सबर्ग में सुना था। दूसरी ओर, युवा निकोले पारफेनोविच ही एकमात्र ऐसे व्यक्ति थे जिन्हें हमारे "अपुष्ट" अभियोक्ता सचमुच पसंद करते थे। मोक्रोए जाते समय उन्हें वर्तमान मामले को समझने का समय मिला। और अब जब वे मेज पर बैठे थे, तो तेज बुद्धि वाले कनिष्ठ कनिष्ठ ने अपने वरिष्ठ सहकर्मी के चेहरे के हर संकेत को पकड़ लिया और उसकी व्याख्या कर ली—आधा शब्द, एक नजर या एक पलक झपकाना।
“सज्जनों, मुझे बस अपनी कहानी सुनाने दीजिए और मुझे बीच में मत टोकिए।
“मामूली सवाल हैं और मैं आपको थोड़ी देर में सब कुछ बता दूंगा,” मित्या ने उत्साह से कहा।
“बहुत बढ़िया! धन्यवाद। लेकिन इससे पहले कि हम आपकी बात सुनें...”
क्या आप मुझे एक और महत्वपूर्ण तथ्य के बारे में पूछने की अनुमति देंगे? मेरा मतलब है, कल शाम लगभग पांच बजे आपने अपने मित्र प्योत्र इल्यिच पेरहोतिन से अपनी पिस्तौल गिरवी रखकर जो दस रूबल उधार लिए थे।
“मैंने उन्हें गिरवी रखा है, सज्जनों। मैंने उन्हें दस रूबल के लिए गिरवी रखा है। इससे ज्यादा क्या?”
बस इतना ही। शहर लौटते ही मैंने उनसे वादा कर दिया।
“आप शहर वापस आ गए? तो आप शहर से बाहर गए हुए थे?”
“हाँ, मैं देश के भीतर चालीस वर्स्ट की यात्रा पर गया था। क्या आप नहीं गए थे?”
जानना?"
अभियोजक और निकोले पारफेनोविच ने एक-दूसरे की ओर देखा। "अच्छा, अगर आप अपनी कहानी की शुरुआत एक व्यवस्थित तरीके से करें तो कैसा रहेगा?"
कल सुबह से लेकर अब तक आपने जो कुछ भी किया, उसका पूरा विवरण दीजिए? उदाहरण के लिए, हमें यह जानने दीजिए कि आप शहर से बाहर क्यों थे, आप कब गए और कब वापस आए—ये सभी तथ्य।
“तुम्हें मुझसे शुरू से ही इस तरह पूछना चाहिए था,” मित्या चिल्लाया।
जोर से हंसते हुए, “और अगर आप चाहें तो हम कल से नहीं, बल्कि परसों की सुबह से शुरू करेंगे; तब आपको समझ आ जाएगा कि मैं कैसे, क्यों और कहाँ गया था। सज्जनों, मैं परसों सैमसनोव नाम के एक व्यापारी के पास तीन हजार रूबल उधार लेने गया था। सज्जनों, यह एक जरूरी मामला था, यह अचानक की आवश्यकता थी।”
“मुझे आपको बीच में टोकने की अनुमति दें,” अभियोक्ता ने विनम्रतापूर्वक कहा। “क्यों थे

क्या आपको तीन हजार रुपये की इतनी सख्त जरूरत है?
"ओह, सज्जनों, आपको विस्तार से बताने की आवश्यकता नहीं है कि कैसे, कब और क्यों, और
इतना पैसा, इतना कम, और ये सब झंझट। ये तो तीन खंडों में छपेगा, और फिर आपको उपसंहार भी चाहिए होगा!
मित्या ने यह सब एक मिलनसार लेकिन अधीर व्यक्ति की सहजता से कहा।
वह व्यक्ति जो पूरी सच्चाई बताने के लिए उत्सुक है और जिसके इरादे नेक हैं।
“सज्जनों!”—उन्होंने जल्दी से खुद को सुधारते हुए कहा—“परेशान मत होइए
मेरी बेचैनी के लिए क्षमा करें, मैं आपसे एक बार फिर विनती करता हूँ। एक बार फिर विश्वास कीजिए, मैं आपका बहुत सम्मान करता हूँ और स्थिति को भलीभांति समझता हूँ। यह मत सोचिए कि मैं नशे में हूँ। मैं अब पूरी तरह होश में हूँ। और वैसे भी, नशे में होना मेरे लिए कोई बाधा नहीं है। आप जानते हैं, मेरे साथ कहावत है: 'जब वह होश में होता है, तो वह मूर्ख होता है; जब वह नशे में होता है, तो वह बुद्धिमान होता है।' हा हा! लेकिन मैं समझता हूँ, सज्जनों, जब तक हमें स्पष्टीकरण नहीं मिल जाता, तब तक आपसे मज़ाक करना उचित नहीं है। और मुझे अपनी गरिमा भी बनाए रखनी है। मैं फिलहाल इस अंतर को समझता हूँ। आखिरकार, मैं एक अपराधी की स्थिति में हूँ, और इसलिए, आपके बराबर होने से बहुत दूर हूँ। और मुझ पर नज़र रखना आपका काम है। मैं आपसे यह उम्मीद नहीं कर सकता कि आप ग्रिगरी के साथ मैंने जो किया उसके लिए मेरी पीठ थपथपाएँगे, क्योंकि बूढ़े लोगों का सिर फोड़ने पर कोई छूट नहीं सकता। मुझे लगता है कि आप मुझे उसके बदले छह महीने या शायद एक साल के लिए सुधारगृह में भेज देंगे। मुझे नहीं पता कि सज़ा क्या होगी—पर यह मेरे पद के अधिकारों को खोए बिना, मेरे पद को खोए बिना होगी, है ना? तो देखिए, सज्जनों, मैं हमारे बीच का अंतर समझता हूँ... लेकिन आपको यह समझना होगा कि आप ऐसे सवालों से स्वयं भगवान को भी उलझन में डाल सकते हैं। 'आपने कैसे कदम रखा? आपने कहाँ कदम रखा? आपने कब कदम रखा? और आपने किस पर कदम रखा?' अगर आप इसी तरह पूछते रहे तो मैं उलझ जाऊँगा, और आप सब कुछ मेरे खिलाफ़ लगा देंगे। और इसका क्या नतीजा होगा? कुछ नहीं! और भले ही मैं अभी बकवास कर रहा हूँ, मुझे अपनी बात पूरी करने दीजिए, और आप, सज्जनों, सम्मान और शिष्टाचार के धनी होने के नाते, मुझे क्षमा कर देंगे! मैं आपसे यह कहकर अपनी बात समाप्त करता हूँ, सज्जनों, कि कृपया प्रश्न पूछने की इस पारंपरिक पद्धति को छोड़ दें। मतलब, किसी मामूली सी बात से शुरू करके, जैसे मैं कैसे उठा, नाश्ते में क्या खाया, कैसे थूका और कहाँ थूका, और इस तरह अपराधी का ध्यान भटकाकर, अचानक उससे एक ज़बरदस्त सवाल पूछकर उसे चौंका देना, ‘तुमने किसका खून किया? तुमने किसे लूटा?’ हा हा! यही तो तुम्हारा तरीका है, यही तो तुम्हारी सारी चालाकी है। तुम किसानों को तो ऐसे ही बेखबर कर सकते हो, पर मुझे नहीं। मुझे चालें पता हैं। मैं भी नौकरानी रह चुका हूँ। हा हा हा! आप नाराज़ नहीं हैं, सज्जनों? मेरी गुस्ताखी माफ़ कर देंगे?” वह लगभग हैरान करने वाले सौम्य भाव से उनकी तरफ देखते हुए चिल्लाया। “मैं तो मित्या करामाज़ोव हूँ, इसलिए आप इसे नज़रअंदाज़ कर सकते हैं। एक समझदार आदमी के लिए यह माफ़ करने लायक नहीं होता; लेकिन मित्या के मामले में आप इसे माफ़ कर सकते हैं। हा हा!”
निकोले पारफेनोविच ने सुना और हँसे भी। हालाँकि अभियोजक
वह हंसा नहीं, उसने अपनी निगाहें मित्या पर टकटकी लगाए रखीं, मानो वह उसके चेहरे के किसी भी भाव का एक भी अक्षर, एक भी हल्की हरकत, एक भी छोटी सी हरकत न चूकना चाहता हो।
“हम शुरू से ही आपके साथ ऐसा ही व्यवहार करते आए हैं,” निकोले ने कहा।
पार्फेनोविच, अब भी हंसते हुए। "हमने आपसे सुबह कैसे उठे और नाश्ते में क्या खाया, ये पूछकर आपको परेशान करने की कोशिश नहीं की। दरअसल, हमने सबसे महत्वपूर्ण सवालों से ही शुरुआत की।"
“मैं समझता हूँ। मैंने इसे देखा और सराहा, और अब मैं इसे और भी अधिक सराहता हूँ।
आप मुझ पर जो कृपा कर रहे हैं, वह अभूतपूर्व है, आपके नेक हृदय के योग्य है। हम तीनों यहाँ सज्जन हैं, और आइए हम सब शिक्षित, सुसंस्कृत लोगों के बीच आपसी विश्वास के आधार पर कार्य करें, जो उच्च कुल में जन्मे और सम्मानित हैं। वैसे भी, इस समय, जब मेरे सम्मान पर संकट मंडरा रहा है, मैं आप सबको अपना सबसे अच्छा मित्र मानता हूँ। क्या इससे आपको कोई आपत्ति है?
इसके विपरीत। दिमित्री, आपने यह सब बहुत अच्छे से व्यक्त किया है।
“फ्योदोरोविच,” निकोले परफेनोविच ने गरिमापूर्ण स्वीकृति के साथ उत्तर दिया।

और सज्जनों, इन तुच्छ सवालों को छोड़िए, इन सभी पेचीदा सवालों को छोड़िए।
“सवाल!” मित्या ने उत्साह से कहा। “या फिर पता ही नहीं चलेगा कि हम कहाँ पहुँचेंगे! है क्या?”
“मैं आपकी समझदारी भरी सलाह का पूरी तरह पालन करूंगा,” अभियोक्ता ने हस्तक्षेप करते हुए कहा। मित्या को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा, “मैं अपना प्रश्न वापस नहीं लेता। अब हमारे लिए यह जानना अत्यंत महत्वपूर्ण है कि आपको उस राशि की आवश्यकता क्यों थी, मेरा मतलब है ठीक तीन हजार।”
मुझे इसकी ज़रूरत क्यों थी? . . . ओह, एक बात तो यह थी कि . . . खैर, बात यह थी कि
कर्ज चुकाना।
“किसका कर्ज?”
“मैं इसका जवाब देने से बिल्कुल इनकार करता हूँ, सज्जनों। इसलिए नहीं कि मैं जवाब नहीं दे सकता, या तो इसलिए कि मुझे ऐसा करने की हिम्मत नहीं करनी चाहिए, या इसलिए कि यह नुकसानदायक होगा, क्योंकि यह सब एक तुच्छ और बिल्कुल मामूली बात है, लेकिन—मैं ऐसा नहीं करूँगा, क्योंकि यह सिद्धांत का मामला है: यह मेरा निजी जीवन है, और मैं अपने निजी जीवन में किसी भी तरह की दखलअंदाजी बर्दाश्त नहीं करूँगा। यही मेरा सिद्धांत है। आपके प्रश्न का इस मामले से कोई लेना-देना नहीं है, और जो कुछ भी इस मामले से संबंधित नहीं है, वह मेरा निजी मामला है। मैं एक कर्ज चुकाना चाहता था। मैं सम्मान का कर्ज चुकाना चाहता था, लेकिन किसका, यह मैं नहीं बताऊँगा।
“मुझे इसे नोट करने दीजिए,” अभियोक्ता ने कहा। “ज़रूर। लिख लीजिए कि मैं नहीं बोलूंगा, मैं नहीं बोलूंगा। लिख लीजिए कि मैं
ऐसा कहना अपमानजनक होगा। छी! आप इसे लिख सकते हैं; आपके पास अपने समय का सदुपयोग करने के लिए और कुछ नहीं है।
"माननीय, मुझे आपको आगाह करने की अनुमति दें, और आपको एक बार फिर याद दिलाना चाहता हूँ, यदि आप..."
“मुझे इस बात की जानकारी नहीं है,” अभियोक्ता ने एक विशिष्ट और कठोर स्वर में कहना शुरू किया, “कि आपको अभी पूछे गए प्रश्नों का उत्तर न देने का पूर्ण अधिकार है, और यदि आप किसी कारणवश उत्तर देने से इनकार करते हैं, तो हमें आपसे जबरदस्ती उत्तर निकलवाने का कोई अधिकार नहीं है। यह पूरी तरह से आपका व्यक्तिगत निर्णय है। लेकिन दूसरी ओर, ऐसे मामलों में, हमारा कर्तव्य है कि हम आपको यह समझाएं और बताएं कि किसी भी प्रकार का साक्ष्य देने से इनकार करके आप स्वयं को कितना नुकसान पहुंचाएंगे। इसके बाद मैं आपसे कार्यवाही जारी रखने का अनुरोध करूंगा।”
“सज्जनों, मैं क्रोधित नहीं हूँ... मैं...” मित्या ने कुछ बुदबुदाते हुए कहा।
असंतुष्ट स्वर में। "अच्छा, सज्जनों, आप देखिए, वह सैमसनोव जिसके पास मैं तब गया था..."
हम निश्चित रूप से उनके द्वारा ज्ञात बातों के विवरण को यहाँ प्रस्तुत नहीं करेंगे।
पाठक पहले से ही। मित्या एक भी छोटी से छोटी बात न छोड़ना चाहता था, इसलिए वह बहुत बेचैन था। साथ ही, वह इसे जल्द से जल्द निपटाना चाहता था। लेकिन चूंकि उसने अपनी गवाही दी थी, इसलिए उसे लिख लिया गया था, और इसलिए उन्हें बार-बार उसकी गलती सुधारनी पड़ रही थी। मित्या को यह पसंद नहीं था, लेकिन उसने सहन किया; हालांकि उसका स्वभाव अभी भी सौम्य था, फिर भी उसे गुस्सा आया। यह सच है कि वह समय-समय पर कहता था, "सज्जनों, यह तो धैर्य को भी देवदूत बना देता है!" या, "सज्जनों, मुझे परेशान करने का कोई फायदा नहीं है।"
लेकिन हालांकि उन्होंने हैरानी जताई, फिर भी उन्होंने कुछ समय के लिए अपना सौम्य स्वभाव बरकरार रखा।
उसका मूड काफी खुशनुमा था। इसलिए उसने उन्हें बताया कि कैसे सैमसनोव ने दो दिन पहले उसे मूर्ख बनाया था। (अब तक उसे पूरी तरह से एहसास हो चुका था कि उसे बेवकूफ बनाया गया है।) यात्रा के लिए पैसे जुटाने के लिए अपनी घड़ी को छह रूबल में बेचना वकीलों के लिए एक नई बात थी। वे तुरंत बहुत दिलचस्पी लेने लगे, और मित्या के तीव्र आक्रोश के बावजूद, उन्होंने इस तथ्य को लिखना आवश्यक समझा, ताकि यह इस बात की दूसरी पुष्टि हो सके कि उस समय उसकी जेब में मुश्किल से एक पैसा भी नहीं था।
धीरे-धीरे मित्या चिड़चिड़ा होने लगा। फिर, ल्यागावी से मिलने की अपनी यात्रा, घुटन भरी झोपड़ी में बिताई

रात, आदि का वर्णन करने के बाद, वह शहर लौटने की बात पर आया। यहाँ उसने, बिना किसी विशेष आग्रह के, ग्रुशेंका के कारण अपने द्वारा सहन की गई ईर्ष्या की पीड़ाओं का विस्तृत विवरण देना शुरू कर दिया। उनकी बात ध्यानपूर्वक सुनी गई। उन्होंने विशेष रूप से पूछताछ की।
फ्योदोर पावलोविच के बगीचे के पीछे स्थित मार्या कोंद्रत्येवना के घर में घात लगाकर ग्रुशेंका पर नज़र रखने की उसकी योजना और स्मरद्याकोव द्वारा उसे सूचना पहुँचाने की बात का उन्होंने विशेष रूप से उल्लेख किया। उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया और इसे नोट कर लिया। अपनी ईर्ष्या के बारे में उसने बड़े उत्साह से और विस्तार से बात की, और यद्यपि अपने सबसे अंतरंग भावों को, एक तरह से, "सार्वजनिक अपमान" के लिए प्रकट करने पर वह मन ही मन शर्मिंदा था, फिर भी उसने स्पष्ट रूप से अपनी शर्म को काबू में रखकर सच बताया। जब वह अपनी कहानी सुना रहा था, तब जांचकर्ता वकील और उससे भी अधिक अभियोजक द्वारा जिस निर्मम गंभीरता से उसे घूरा गया, उससे वह अंततः काफी विचलित हो गया।
“वो लड़का, निकोले पारफेनोविच, जिससे मैं बेतुकी बातें कर रहा था”
“कुछ ही दिन पहले जिन महिलाओं से मेरी मुलाकात हुई थी, और उस बीमार अभियोक्ता को ये सब बताना मेरे लिए उचित नहीं है,” उसने उदास होकर सोचा। “ये शर्मनाक है। ‘धैर्य रखो, विनम्र रहो, चुप रहो।’” उसने अपनी बात इसी वाक्य के साथ समाप्त की। लेकिन उसने खुद को संभाला और आगे बढ़ने की हिम्मत जुटाई। जब वह मैडम होहलाकोव से अपनी मुलाकात के बारे में बताने लगा, तो उसका हौसला वापस आ गया और उसने उस महिला से जुड़ा एक छोटा सा किस्सा भी सुनाने की इच्छा जताई, जिसका इस मामले से कोई लेना-देना नहीं था। लेकिन जांच करने वाले वकील ने उसे रोक दिया और विनम्रता से सुझाव दिया कि उसे “अधिक महत्वपूर्ण मामलों” पर आगे बढ़ना चाहिए। अंत में, जब उसने अपनी निराशा व्यक्त की और बताया कि मैडम होहलाकोव के घर से निकलते समय उसने सोचा था कि “अगर इसके लिए उसे किसी की हत्या भी करनी पड़े तो उसे तीन हजार मिल जाएंगे,” तो उन्होंने उसे फिर से रोक दिया और लिख लिया कि “उसका इरादा किसी की हत्या करने का था।” मित्या ने बिना किसी विरोध के उन्हें इसे लिखने दिया। अंततः वह अपनी कहानी के उस मोड़ पर पहुँचा जहाँ उसे पता चला कि ग्रुशेंका ने उसे धोखा दिया था और सैमसनोव के यहाँ से उसके जाने के तुरंत बाद लौट आई थी, जबकि उसने कहा था कि वह आधी रात तक वहीं रहेगी।
“अगर मैंने उस समय फेन्या को नहीं मारा, तो सज्जनों, इसका कारण केवल यही था कि मैंने ऐसा नहीं किया था।”
"समय," ये शब्द अचानक उसकी कहानी के उस मोड़ पर आकर रुक गए। इसे भी सावधानीपूर्वक लिख लिया गया था। मित्या उदास होकर इंतज़ार कर रहा था, और जब वह बताने लगा कि कैसे वह अपने पिता के बगीचे में भागा, तभी जांच करने वाले वकील ने उसे अचानक रोक दिया, और उसके बगल में सोफे पर पड़े बड़े पोर्टफोलियो को खोलकर पीतल का मूसल निकाला।
“क्या तुम इस वस्तु को पहचानते हो?” उसने मित्या को वह वस्तु दिखाते हुए पूछा। “ओह, हाँ,” वह उदास होकर हँसा। “बेशक मैं इसे पहचानता हूँ। मुझे इसे लेने दो।”
इसे देख लो... धिक्कार है, छोड़ो!
“आप इसका ज़िक्र करना भूल गए,” जांच वकील ने कहा। “अरे यार, मुझे आपसे यह बात छुपानी नहीं चाहिए थी। क्या आपको लगता है कि मैं
क्या इसके बिना भी काम चल सकता था? यह बात मेरे दिमाग से निकल ही गई थी।
कृपया हमें यह स्पष्ट रूप से बताएं कि आपने स्वयं को इन हथियारों से लैस कैसे किया।
यह।"
"ज़रूर, मैं ऐसा ही अच्छा व्यवहार करूंगा, सज्जनों।"
और मित्या ने बताया कि कैसे उसने मूसल उठाया और भाग गया। “लेकिन तुमने इस तरह के हथियार से खुद को लैस करने के पीछे क्या उद्देश्य रखा था?”
हथियार?
“कौन सी वस्तु? कोई वस्तु नहीं। मैंने बस उसे उठाया और भाग गया।”
"अगर तुम्हारा कोई उद्देश्य ही न हो तो फिर क्यों?"
मित्या का क्रोध भड़क उठा। उसने उस लड़के को ध्यान से देखा और मुस्कुराया।

वह उदास और द्वेषपूर्ण भाव से। उसे इस बात पर और भी अधिक शर्म आ रही थी कि उसने "ऐसे लोगों" को अपनी ईर्ष्या की कहानी इतनी ईमानदारी और सहजता से सुनाई थी।
“ओखली को छोड़ो!” अचानक उसके मुँह से आवाज़ निकली। “लेकिन फिर भी...”
“ओह, कुत्तों को दूर रखने के लिए... ओह, क्योंकि अंधेरा था... कहीं कुछ हो न जाए
होना।"
लेकिन क्या आपने पहले कभी अपने साथ हथियार ले जाया है?
जब तुम बाहर जाते हो, क्योंकि तुम्हें अंधेरे से डर लगता है?
उफ़! धिक्कार है इन सज्जनों पर! इनसे बात करना बिलकुल भी संभव नहीं है!
मित्या बेहद क्रोधित होकर चिल्लाया और गुस्से से लाल होकर सचिव की ओर मुड़ते हुए, उसने क्रोध भरे स्वर में जल्दी से कहा:
“तुरंत लिखो... तुरंत... कि मैंने अपने पिता... फ्योदोर पावलोविच... को मारने के लिए मूसल उठाया... और उसे सिर पर मारकर जान से मार डाला!’ अच्छा, अब आप संतुष्ट हैं, सज्जनों? क्या आपके मन को शांति मिली?” उसने वकीलों को घूरते हुए चुनौती भरे लहजे में कहा।
हम पूरी तरह समझते हैं कि आपने अभी-अभी वह बयान दिया है।
"आप हमसे और हमारे द्वारा आपसे पूछे गए सवालों से नाराज हैं, जिन्हें आप तुच्छ समझते हैं, हालांकि वे वास्तव में आवश्यक हैं," अभियोजक ने शुष्क लहजे में जवाब दिया।
“जी हाँ, सज्जनों! मैंने मूसल उठा लिया... इसका क्या मतलब है?”
ऐसे क्षणों में कोई चीज़ें क्यों उठाता है? मुझे नहीं पता किसलिए। मैंने उसे झट से उठाया और भाग गया—बस इतना ही। क्योंकि सज्जनों, मुझे कुछ बताओ, वरना मैं आपको और कुछ नहीं बताऊंगा।
वह कोहनियों को मेज पर टिकाकर और सिर को हाथ में रखकर बैठा था।
वह उनकी ओर झुक गया और दीवार को घूरने लगा, मतली की भावना से जूझते हुए। वास्तव में, उसके मन में उठकर यह घोषणा करने की तीव्र इच्छा हो रही थी कि वह एक शब्द भी नहीं बोलेगा, "चाहे इसके लिए मुझे फांसी ही क्यों न दे दी जाए।"
अंत में, उन्होंने बड़ी मुश्किल से खुद को संभालते हुए कहा, "देखिए सज्जनों,"
“देखो। मैं तुम्हारी बातें सुनता हूँ और एक सपने से परेशान रहता हूँ... ये सपना मुझे कभी-कभी आता है, तुम्हें पता है... अक्सर आता है—ये हमेशा एक जैसा होता है... कि कोई मेरा पीछा कर रहा है, कोई जिससे मैं बहुत डरता हूँ... कि वो अंधेरे में, रात में मेरा पीछा कर रहा है... मेरा पीछा कर रहा है, और मैं उससे कहीं छिप जाता हूँ, किसी दरवाजे या अलमारी के पीछे, अपमानजनक तरीके से छिप जाता हूँ, और सबसे बुरी बात ये है कि उसे हमेशा पता होता है कि मैं कहाँ हूँ, लेकिन वो जानबूझकर अनजान होने का नाटक करता है, मेरी पीड़ा को बढ़ाने के लिए, मेरे डर का आनंद लेने के लिए... तुम भी अभी यही कर रहे हो। बिलकुल ऐसा ही है!”
“क्या तुम ऐसे ही सपने देखते हो?” अभियोक्ता ने पूछा। “हाँ, ऐसा ही है। क्या तुम इसे लिखना नहीं चाहते?” मित्या ने मुस्कुराते हुए कहा।
विकृत मुस्कान।
“नहीं; इसे लिखने की कोई ज़रूरत नहीं है। लेकिन फिर भी आपको कुछ अजीब सपने तो आते ही हैं।”
“अब सपनों का सवाल नहीं है, सज्जनों—यह यथार्थवाद है, यह
असल जिंदगी! मैं एक भेड़िया हूँ और तुम शिकारी हो। तो, उसका शिकार करो!
“इस तरह की तुलना करना आपकी गलती है...” निकोले ने कहना शुरू किया।
परफेनोविच, असाधारण कोमलता के साथ।
“नहीं, मैं गलत नहीं हूँ, बिलकुल भी नहीं!” मित्या फिर भड़क उठा, हालाँकि उसका
क्रोध के विस्फोट ने स्पष्ट रूप से उसके दिल को राहत दी थी। हर शब्द के साथ उसका मिजाज और भी बेहतर होता गया। “आप किसी अपराधी या आपके सवालों से परेशान मुकदमे में फंसे व्यक्ति पर भरोसा नहीं कर सकते, लेकिन एक सम्मानित व्यक्ति, हृदय की सम्मानित भावनाएं (मैं यह साहसपूर्वक कहता हूँ!)—नहीं! आपको यह मानना होगा कि वास्तव में आपको कोई अधिकार नहीं है... लेकिन—
'शांत रहो, हृदय,'
धैर्य रखो, विनम्र रहो, शांत रहो।

अच्छा, क्या मैं आगे बोलूं?" उसने उदास स्वर में बात अधूरी छोड़ दी।
"यदि आप इतनी कृपा करेंगे," निकोले परफेनोविच ने उत्तर दिया।

अध्याय 5

तीसरी परीक्षा

हालांकि मित्या उदास स्वर में बोल रहा था, यह स्पष्ट था कि वह अपनी कहानी का एक भी अंश न भूलने या चूकने की पूरी कोशिश कर रहा था। उसने उन्हें बताया कि कैसे वह बाड़ फांदकर अपने पिता के बगीचे में गया था; कैसे वह खिड़की तक गया था; खिड़की के नीचे जो कुछ भी हुआ था, उसने सब कुछ बताया। स्पष्ट रूप से, सटीक रूप से, साफ-साफ, उसने उन भावनाओं का वर्णन किया जो बगीचे में उन पलों के दौरान उसे परेशान कर रही थीं, जब वह यह जानने के लिए बेताब था कि ग्रुशेंका उसके पिता के साथ है या नहीं। लेकिन, हैरानी की बात यह है कि दोनों वकील अब एक भयानक संवेदनहीनता के साथ सुन रहे थे, उसे ठंडी निगाहों से देख रहे थे, और बहुत कम सवाल पूछ रहे थे। मित्या उनके चेहरों से कुछ भी समझ नहीं पा रहा था।
"वे नाराज़ और अपमानित हैं," उसने सोचा। "तो चलो, उन्हें परेशान करते हैं!" जब उसने बताया कि कैसे उसने अंततः यह निर्णय लिया कि वह ऐसा करेगा
अपने पिता को यह संकेत देने के लिए कि ग्रुशेंका आ गई है, ताकि वे खिड़की खोल दें, वकीलों ने "संकेत" शब्द पर बिल्कुल ध्यान नहीं दिया, मानो वे इस संदर्भ में इस शब्द का अर्थ पूरी तरह से समझ ही न पाए हों: इतना कि मित्या ने इसे महसूस कर लिया। अंत में, जब उसने अपने पिता को खिड़की से बाहर झांकते देखा, तो उसका गुस्सा भड़क उठा और उसने अपनी जेब से मूसल निकाला, तभी वह अचानक, मानो जानबूझकर, रुक गया। वह दीवार को घूरता रहा और उसे एहसास था कि सबकी निगाहें उस पर टिकी हुई हैं।
"तो?" जांच करने वाले वकील ने पूछा। "आपने हथियार निकाला था।"
और... उसके बाद क्या हुआ?
"तो फिर? फिर मैंने उसकी हत्या कर दी... उसके सिर पर वार किया और उसे चकनाचूर कर दिया।"
उसकी खोपड़ी... मुझे लगता है यही तुम्हारी कहानी है। बस इतना ही!
उसकी आँखों में अचानक चमक आ गई। उसका सारा दबा हुआ क्रोध अचानक भड़क उठा।
उसकी आत्मा में असाधारण हिंसा व्याप्त थी।
"हमारी कहानी?" निकोले पार्फेनोविच ने दोहराया। "अच्छा—और आपकी?" मित्या ने अपनी नज़रें झुका लीं और काफी देर तक चुप रहा। "मेरी कहानी, सज्जनों? खैर, यह कुछ इस तरह थी," उसने धीरे से कहना शुरू किया।
"पता नहीं, किसी के आँसू थे, या मेरी माँ ने भगवान से प्रार्थना की, या किसी अच्छे फ़रिश्ते ने उसी क्षण मुझे चूमा। लेकिन शैतान हार गया था। मैं खिड़की से कूदकर बाड़ की ओर भागा। मेरे पिता घबरा गए और पहली बार मुझे देखकर चिल्लाए और खिड़की से पीछे हट गए। मुझे वह सब अच्छी तरह याद है। मैं बगीचे से होते हुए बाड़ तक भागा... और वहाँ ग्रिगोरी ने मुझे पकड़ लिया, जब मैं बाड़ पर बैठा था।"
उस समय उन्होंने अंततः अपनी आँखें ऊपर उठाईं और अपने श्रोताओं की ओर देखा।
ऐसा लग रहा था मानो वह उसे बिल्कुल शांत भाव से घूर रहा हो। मित्या के मन में अचानक आक्रोश की लहर दौड़ गई।

“अरे, इस समय तो आप लोग मुझ पर ही हंस रहे हैं!” उसने बात अधूरी छोड़ दी।
अचानक।
“आपको ऐसा क्यों लगता है?” निकोले पारफेनोविच ने पूछा। “आप एक शब्द पर भी विश्वास नहीं करते—इसीलिए! मैं समझता हूँ, बेशक।”
मैं अब अहम मुद्दे पर आ गया हूँ। बूढ़ा आदमी टूटी खोपड़ी के साथ वहीं पड़ा है, और मैं—उसे जान से मारने की अपनी इच्छा और मूसल उठाने की अपनी कोशिशों का नाटकीय वर्णन करने के बाद—अचानक खिड़की से भाग जाता हूँ। वाह! क्या प्रेम कहानी है! मानो कोई किसी की बात पर यकीन कर ले। हा हा! आप लोग तो मज़ाक उड़ा रहे हैं, सज्जनों!
और वह कुर्सी पर इस तरह घूमा कि कुर्सी चरमरा उठी। "और क्या आपने ध्यान दिया?" अभियोक्ता ने अचानक पूछा, मानो उसे पता ही न हो।
मित्या के उत्साह को देखकर, "जब तुम खिड़की से भागे थे, तो क्या तुमने ध्यान दिया था कि बगीचे का दरवाजा खुला था या नहीं?"
नहीं, यह खुला नहीं था।
“क्या ऐसा नहीं था?”
“यह बंद था। और इसे कौन खोल सकता था? धत्! दरवाजा! ज़रा रुको!”
वह अचानक सोचने लगा, और लगभग चौंकते हुए:
"क्या आपको दरवाजा खुला मिला?"
"हां, यह खुला था।"
"अगर आपने इसे खुद नहीं खोला तो इसे कौन खोल सकता था?"
मित्या अत्यंत आश्चर्यचकित होकर चिल्लाया।
दरवाजा खुला था, और तुम्हारे पिता का हत्यारा निस्संदेह अंदर गया होगा।
“उसी दरवाजे से, और अपराध को अंजाम देने के बाद, उसी दरवाजे से बाहर निकल गया,” अभियोक्ता ने जानबूझकर, मानो हर शब्द को अलग-अलग तराशते हुए कहा। “यह बिल्कुल स्पष्ट है। हत्या कमरे में ही की गई थी, खिड़की से नहीं; यह जांच से, शव की स्थिति से और बाकी सब बातों से बिल्कुल निश्चित है। इस बात में कोई संदेह नहीं हो सकता।”
मित्या पूरी तरह से अवाक रह गया।
“लेकिन यह तो बिलकुल असंभव है!” वह पूरी तरह से हताश होकर चिल्लाया। “मैं... मैं
मैं अंदर नहीं गया... मैं आपको यकीन से कहता हूँ, बिल्कुल, जब तक मैं बगीचे में था और जब मैं बगीचे से बाहर भागा, तब तक दरवाजा बंद ही था। मैं बस खिड़की पर खड़ा रहा और उसे खिड़की से देखता रहा। बस इतना ही, बस इतना ही... मुझे आखिरी मिनट तक याद है। और अगर मुझे याद नहीं भी होता, तो भी यही बात होती। मुझे पता है, क्योंकि स्मरद्याकोव, मेरे और उस मरे हुए आदमी के अलावा किसी को भी उन संकेतों का पता नहीं था। और वह संकेतों के बिना दुनिया में किसी के लिए भी दरवाजा नहीं खोलता।
“संकेत? कौन से संकेत?” अभियोक्ता ने लालची, लगभग
उन्माद और जिज्ञासा से भर उठा। उसने पल भर में अपना संयम और गरिमा खो दी। उसने दबी हुई झिझक के साथ सवाल पूछा। उसे किसी ऐसे महत्वपूर्ण तथ्य का आभास हो गया था जिसके बारे में उसे कुछ भी पता नहीं था, और उसे पहले से ही इस बात का डर सता रहा था कि मित्या शायद इसे बताने से कतराए।
“तो तुम्हें पता नहीं था!” मित्या ने शरारती अंदाज़ में आँख मारते हुए कहा।
व्यंग्यात्मक मुस्कान। “अगर मैं तुम्हें न बताऊँ तो क्या होगा? तुम्हें किससे पता चलेगा? मेरे पिता, स्मरद्याकोव और मेरे अलावा किसी को भी संकेतों के बारे में पता नहीं था: बस इतना ही। स्वर्ग को भी पता था, लेकिन वह तुम्हें नहीं बताएगा। लेकिन यह एक दिलचस्प तथ्य है। पता नहीं तुम इस पर क्या-क्या गढ़ सकते हो। हा हा! तसल्ली रखिए, सज्जनों, मैं इसे बता दूँगा। आपके मन में कुछ मूर्खतापूर्ण विचार हैं। आप उस व्यक्ति को नहीं जानते जिससे आपको निपटना है! आपको एक ऐसे कैदी से निपटना है जो अपने ही खिलाफ गवाही देता है, अपने ही नुकसान के लिए! हाँ, क्योंकि मैं एक सम्माननीय व्यक्ति हूँ और आप नहीं।”
अभियोक्ता ने बिना कुछ कहे इसे सह लिया। वह कांप रहा था।

नई बात जानने के लिए वह बेसब्र था। मित्या ने उन्हें फ्योदोर पावलोविच द्वारा स्मेरद्याकोव के लिए बनाए गए संकेतों के बारे में विस्तार से बताया। उसने उन्हें खिड़की पर हर दस्तक का सटीक अर्थ समझाया, मेज पर संकेतों को थपथपाकर दिखाया, और जब निकोले पार्फेनोविच ने कहा कि उन्हें लगता है कि मित्या ने अपने पिता को संकेत देते समय "ग्रुशेंका आ गई है" का संकेत दिया था, तो उसने स्पष्ट रूप से उत्तर दिया कि उसने वही संकेत दिया था, कि "ग्रुशेंका आ गई है"।
“तो अब तुम अपना टावर बना सकते हो,” मित्या ने बात अधूरी छोड़ दी, और फिर
उन्होंने तिरस्कारपूर्वक उनसे मुंह फेर लिया।
"तो उन संकेतों के बारे में तुम्हारे मृत पिता, तुम और नौकर के अलावा किसी को पता नहीं था।"
"स्मर्ड्याकोव? और कोई नहीं?" निकोले परफेनोविच ने एक बार फिर पूछा।
“हाँ। नौकर स्मरद्याकोव और स्वर्ग। स्वर्ग के बारे में लिखो।”
यह उपयोगी हो सकता है। इसके अलावा, आपको स्वयं भी ईश्वर की आवश्यकता होगी।
और उन्होंने इसे लिखना शुरू भी कर दिया था। लेकिन जब वे
अभियोजक ने अचानक कहा, मानो कोई नया विचार पेश कर रहा हो:
लेकिन अगर स्मरद्याकोव को भी इन संकेतों की जानकारी थी और आप अपने पिता की मृत्यु की सारी जिम्मेदारी से पूरी तरह इनकार करते हैं, तो क्या यह संभव नहीं था कि उसने ही तय किए गए संकेत को खटखटाया हो, आपके पिता को दरवाजा खोलने के लिए राजी किया हो, और फिर... अपराध को अंजाम दिया हो?
मित्या ने गहरी व्यंग्य और तीव्र घृणा से भरी नज़र से उसकी ओर देखा।
वह खामोश निगाहें इतनी देर तक टिकी रहीं कि अभियोक्ता को पलकें झपकानी पड़ीं।
अंत में मित्या ने टिप्पणी की, "तुमने लोमड़ी को फिर से पकड़ लिया है; तुमने उसे पकड़ लिया है।"
जानवर को पूंछ से पकड़ो। हा हा! मैं आपको अच्छी तरह समझ गया हूँ, श्रीमान अभियोक्ता। आपने सोचा होगा कि मैं तुरंत आपकी बात मान लूँगा, आपके इशारे पर काम करूँगा और पूरी ताकत से चिल्लाऊँगा, 'अरे! यह तो स्मरद्याकोव है; यही हत्यारा है।' मान लीजिए कि आपने यही सोचा था। मान लीजिए, और मैं आगे बढ़ूँगा।
लेकिन अभियोजक ने अपना जुर्म कबूल नहीं किया। वह चुप रहा और इंतजार करता रहा। “आप गलतफहमी में हैं। मैं चिल्लाकर यह नहीं कहने वाला कि ‘यह स्मरद्याकोव है’,” उसने कहा।
मित्या।
“और आपको उस पर जरा भी शक नहीं है?”
"क्यों, क्या आपको उस पर शक है?"
उस पर भी संदेह है।
मित्या ने अपनी निगाहें फर्श पर टिका दीं।
“मज़ाक छोड़ो,” उसने उदास स्वर में कहा। “सुनो। बिल्कुल शुरुआत से ही।”
जब से मैं पर्दे के पीछे से निकलकर आपके पास आया हूँ, तब से मेरे मन में स्मरद्याकोव का ही ख्याल घूम रहा है। मैं यहाँ बैठा हूँ, चिल्ला रहा हूँ कि मैं निर्दोष हूँ और हर पल 'स्मरद्याकोव!' सोच रहा हूँ। स्मरद्याकोव मेरे दिमाग से निकल ही नहीं रहा। सच तो यह है कि अभी-अभी भी मुझे स्मरद्याकोव का ख्याल आया; लेकिन बस एक पल के लिए। लगभग तुरंत ही मैंने सोचा, 'नहीं, यह स्मरद्याकोव नहीं है।' यह उसका काम नहीं है, सज्जनों।
“तो क्या आपको किसी और पर भी शक है?” निकोले पारफेनोविच
सावधानीपूर्वक पूछताछ की।
मुझे नहीं पता कि यह कौन हो सकता है, चाहे यह ईश्वर का हाथ हो या कुछ और।
"शैतान, लेकिन... स्मर्ड्याकोव नहीं," मित्या ने दृढ़ता से कहा।
लेकिन आप इतने आत्मविश्वास और दृढ़ता से यह क्यों कह रहे हैं कि यह...
क्या वह नहीं?
“मेरी दृढ़ धारणा से—मेरी राय से। क्योंकि स्मर्ड्याकोव एक आदमी है

बेहद नीच चरित्र और कायर। वह कायर नहीं, बल्कि दो पैरों पर चलने वाली दुनिया की सारी कायरता की मूर्ति है। उसका दिल मुर्गे जैसा है। जब वह मुझसे बात करता था, तो हमेशा इस डर से कांपता रहता था कि कहीं मैं उसे मार न डालूँ, हालाँकि मैंने कभी उस पर हाथ नहीं उठाया। वह मेरे पैरों पर गिरकर रोने लगा; उसने सचमुच मेरे इन जूतों को चूमा, मुझसे विनती करते हुए कि 'उसे डराओ मत।' सुना तुमने? 'उसे डराओ मत।' कैसी बात है! मैंने तो उसे पैसे भी दिए थे। वह एक मुर्गे जैसा है—बीमार, मिर्गी का रोगी, कमजोर दिमाग वाला—आठ साल का बच्चा भी उसे पीट सकता है। उसका चरित्र किसी काम का नहीं। यह स्मरद्याकोव नहीं है, सज्जनों। उसे पैसे की परवाह नहीं; उसने मेरे उपहार भी नहीं लिए। इसके अलावा, बूढ़े आदमी की हत्या करने का उसका मकसद क्या था? अरे, वह शायद उसका बेटा है, तुम्हें पता है—उसका सगा बेटा। क्या तुम्हें यह पता है?
“हमने वो किंवदंती सुनी है। लेकिन तुम भी तो अपने पिता के पुत्र हो।”
आप जानते हैं; फिर भी आपने खुद सबको बताया था कि आप उसकी हत्या करने का इरादा रखते हैं।
“यह तो एक जोरदार प्रहार है! और वह भी बहुत ही बुरा और घिनौना! मैं डरता नहीं हूँ! ओह,”
महोदय, क्या मेरे सामने ऐसा कहना आपकी नीचता नहीं है? यह नीचता है, क्योंकि मैंने खुद आपको यह बताया था। मैं न केवल उसे जान से मारना चाहता था, बल्कि शायद मार भी देता। और तो और, मैंने अपनी मर्ज़ी से आपको यह भी बताया कि मैंने लगभग उसे मार ही डाला था। लेकिन देखिए, मैंने उसे नहीं मारा; देखिए, मेरे रक्षक देवदूत ने मुझे बचा लिया—यही बात आपने नज़रअंदाज़ की है। और इसीलिए यह आपकी नीचता है। क्योंकि मैंने उसे नहीं मारा, मैंने उसे नहीं मारा! क्या आप सुन रहे हैं, मैंने उसे नहीं मारा?
उसका दम घुट रहा था। इससे पहले वह कभी इतना भावुक नहीं हुआ था।
पूरी पूछताछ।
“और उसने आपको क्या बताया है, सज्जनों—मेरा मतलब स्मरद्याकोव से है?”
कुछ देर रुकने के बाद अचानक उसने पूछा, "क्या मैं यह सवाल पूछ सकता हूँ?"
“आप कोई भी प्रश्न पूछ सकते हैं,” अभियोक्ता ने कठोर स्वर में उत्तर दिया।
मामले के तथ्यों से संबंधित कोई भी प्रश्न हो, और हम दोहराते हैं, आपके द्वारा पूछे गए प्रत्येक प्रश्न का उत्तर देने के लिए बाध्य हैं। हमने नौकर स्मरद्याकोव को, जिसके बारे में आप पूछताछ कर रहे हैं, अपने बिस्तर पर बेहोश पाया। उसे मिर्गी का अत्यंत गंभीर दौरा पड़ा था, जो संभवतः दस बार आ चुका था। हमारे साथ मौजूद डॉक्टर ने उसे देखने के बाद बताया कि संभवतः वह रात भर जीवित नहीं रह पाएगा।
“अच्छा, अगर ऐसा है तो शैतान ने ही उसे मारा होगा,” उसने अचानक बात काटते हुए कहा।
मित्या, मानो उस क्षण तक खुद से पूछ रहा था: "क्या यह स्मरद्याकोव था या नहीं?"
“हम इस पर बाद में चर्चा करेंगे,” निकोले पारफेनोविच ने निर्णय लिया। “अभी,
क्या आप अपना बयान जारी रखना चाहेंगे?
मित्या ने विश्राम करने का अनुरोध किया। उनका अनुरोध विनम्रतापूर्वक स्वीकार कर लिया गया। इसके बाद विश्राम करते हुए, उसने अपनी कहानी जारी रखी। लेकिन वह स्पष्ट रूप से उदास था। वह थका हुआ, अपमानित और नैतिक रूप से विचलित था। स्थिति को और भी बदतर बनाने के लिए, अभियोजक ने जानबूझकर "मामूली बातों" पर बार-बार टोकने से उसे और भी परेशान कर दिया। मित्या ने अभी ठीक से बताया ही नहीं था कि कैसे दीवार पर बैठे हुए उसने ग्रिगोरी के सिर पर मूसल से प्रहार किया, जबकि बूढ़े ने उसका बायां पैर पकड़ रखा था, और कैसे वह नीचे कूदकर उसे देखने लगा, तभी अभियोजक ने उसे रोककर पूछा कि वह दीवार पर ठीक-ठीक कैसे बैठा था। मित्या आश्चर्यचकित रह गया।
“ओह, मैं इस तरह बैठा था, पैरों को फैलाकर, एक पैर दीवार के एक तरफ रखकर और
एक दूसरे पर।"
और मूसल?
"मेरे हाथ में मूसल था।"
“तुम्हारी जेब में नहीं था? क्या तुम्हें ठीक से याद है? क्या यह हिंसक घटना थी?
तुमने उसे जो झटका दिया?
“यह एक हिंसक घटना रही होगी। लेकिन आप क्यों पूछ रहे हैं?”
"क्या आपको कोई आपत्ति होगी अगर आप उसी कुर्सी पर बैठ जाएं जैसे आप तब दीवार पर बैठे थे?"

और हमें यह दिखाओ कि तुमने अपना हाथ कैसे और किस दिशा में हिलाया?
“तुम मेरा मजाक उड़ा रहे हो, है ना?” मित्या ने घमंडी नजरों से देखते हुए पूछा।
वक्ता की ओर देखा गया; लेकिन वक्ता जरा भी विचलित नहीं हुआ।
मित्या अचानक मुड़ा, अपनी कुर्सी पर चढ़ गया और अपना हाथ घुमाया। “मैंने उसे ऐसे मारा था! मैंने उसे ऐसे गिराया था! क्या
आपको और कितना चाहिए?
“धन्यवाद। क्या मैं अब आपसे यह पूछ सकता हूँ कि आपने नीचे छलांग क्यों लगाई?”
आपका उद्देश्य क्या था और आप क्या लक्ष्य लेकर चल रहे थे?
“अरे छोड़ो! . . . मैं उस आदमी को देखने के लिए नीचे कूदा जिसे मैंने चोट पहुँचाई थी . . . मुझे नहीं पता
पता नहीं कि किसलिए!
"हालांकि तुम इतने उत्साहित थे और भाग रहे थे?"
"हां, हालांकि मैं उत्साहित थी और भाग रही थी।"
"तुम उसकी मदद करना चाहते थे?"
“मदद करो! . . . हाँ, शायद मैं उसकी मदद करना चाहता था . . . मुझे याद नहीं है।”
“तुम्हें याद नहीं है? तो तुम्हें ठीक से पता ही नहीं था कि तुम क्या थे।”
कर रहा है?"
बिल्कुल नहीं। मुझे सब कुछ याद है—हर एक बात। मैं नीचे कूद गया था।
मैंने उसकी तरफ देखा और अपने रूमाल से उसका चेहरा पोंछा।
“हमने आपका रुमाल देखा है। क्या आपको उम्मीद थी कि आप उसे वापस ला सकेंगे?
चेतना?"
मुझे नहीं पता कि मैंने इसकी उम्मीद की थी या नहीं। मैं बस यह सुनिश्चित करना चाहता था कि क्या
वह जीवित था या नहीं।
“अरे! आप पक्का करना चाहते थे? अच्छा, तो फिर क्या?”
“मैं डॉक्टर नहीं हूँ। मैं फैसला नहीं कर पा रही थी। मुझे लगा कि मैंने उसे मार डाला है, इसलिए मैं भाग गई।”
और अब वह ठीक हो गया है।
“उत्कृष्ट,” अभियोक्ता ने टिप्पणी की। “धन्यवाद। बस इतना ही।
आवश्यकता है। कृपया आगे बढ़ें।
अफसोस! मित्या के मन में उन्हें यह बात बताने का ख्याल ही नहीं आया, हालांकि उसे याद था।
वह इतना दुखी हुआ कि दया से पीछे हट गया, और ज़मीन पर पड़े उस व्यक्ति के ऊपर खड़े होकर उसने खेद के कुछ शब्द भी कहे: "बुजुर्ग, तुम्हें दुख झेलना पड़ा है - अब कोई उपाय नहीं है। खैर, तुम्हें यहीं लेटना होगा।"
अभियोजक केवल एक ही निष्कर्ष निकाल सका: कि उस व्यक्ति ने
“ऐसे क्षण में और इतनी उत्तेजना में, केवल यह पता लगाने के उद्देश्य से कि उसके अपराध का एकमात्र गवाह मर गया है या नहीं, वह पीछे हट गया; इसलिए वह ऐसे क्षण में भी बहुत मजबूत, शांत, दृढ़ निश्चयी और दूरदर्शी व्यक्ति रहा होगा,”... इत्यादि। अभियोजक संतुष्ट था: “मैंने ‘मामूली बातों’ से इस घबराए हुए व्यक्ति को उकसाया है और उसने अपनी इच्छा से अधिक बोल दिया है।”
बड़ी मुश्किल से मित्या आगे बढ़ा। लेकिन इस बार उसे ऊपर खींच लिया गया।
निकोले पारफेनोविच द्वारा तुरंत।
“फेदोस्या मार्कोवना, तुम अपनी नौकरानी के पास क्यों दौड़कर गई थीं?”
आपके हाथ खून से लथपथ हैं, और ऐसा लगता है कि आपका चेहरा भी?
“अरे, उस समय तो मुझे खून बिल्कुल भी दिखाई नहीं दिया,” मित्या ने जवाब दिया। “ऐसा होना मुमकिन है। कभी-कभी ऐसा हो जाता है।” अभियोक्ता
निकोले पारफेनोविच के साथ नजरों का आदान-प्रदान हुआ।
“मैंने ध्यान ही नहीं दिया। आप बिल्कुल सही कह रहे हैं, अभियोक्ता,” मित्या
अचानक सहमति दे दी।

इसके बाद मित्या के अचानक "पद छोड़ने" के दृढ़ निश्चय का वर्णन आया।
और उनकी खुशी के लिए रास्ता बना दिया। लेकिन वह पहले की तरह उनके सामने अपना दिल खोलकर उन्हें "अपनी आत्मा की रानी" के बारे में बताने का मन नहीं बना पा रहा था। उसे इन ठंडे लोगों के सामने उसके बारे में बात करना पसंद नहीं था, "जो उस पर कीड़ों की तरह चिपक गए थे।" इसलिए उनके बार-बार पूछे गए सवालों के जवाब में उसने संक्षेप में और अचानक जवाब दिया:
“खैर, मैंने खुद को मारने का फैसला कर लिया था। मेरे पास जीने के लिए बचा ही क्या था?”
वह सवाल मेरे सामने खड़ा था। उसका सच्चा प्रेमी लौट आया था, वह आदमी जिसने उसके साथ अन्याय किया था, लेकिन पाँच साल बाद अपना प्यार जताने और शादी करके उस गलती का प्रायश्चित करने के लिए वापस आया था... इसलिए मुझे पता था कि मेरे लिए सब कुछ खत्म हो गया है... और मेरे पीछे बदनामी और वह खून—ग्रिगोरी का... अब जीने का क्या मतलब था? इसलिए मैं गिरवी रखी पिस्तौलें वापस लेने गया, उन्हें लोड करने और कल अपने दिमाग में गोली मारने के लिए।
और उससे एक रात पहले एक भव्य दावत?
“हाँ, पिछली रात एक भव्य दावत थी। धिक्कार है, सज्जनों! जल्दी करो और इसे खत्म करो। मेरा इरादा यहाँ से कुछ दूर, गाँव के उस पार, खुद को गोली मारने का था, और मैंने सुबह पाँच बजे ऐसा करने की योजना बनाई थी। और मेरी जेब में पहले से ही एक नोट था। मैंने इसे पेरहोटिन के यहाँ पिस्तौल भरते समय लिखा था। ये रहा पत्र। इसे पढ़ो! मैं तुम्हें बता रहा हूँ, यह तुम्हारे लिए नहीं है,” उसने तिरस्कारपूर्वक कहा। उसने उसे अपनी जैकेट की जेब से निकाला और मेज पर फेंक दिया। वकीलों ने उसे उत्सुकता से पढ़ा, और हमेशा की तरह, उसे मामले से जुड़े कागजातों में शामिल कर लिया।
“और तुमने पेरहोटिन में हाथ धोने के बारे में सोचा भी नहीं?
तब क्या वे संदेह पैदा होने से नहीं डरते थे?
“कैसा संदेह? संदेह हो या न हो, मुझे तो बस यहीं घोड़े दौड़ाकर आ जाना चाहिए था।”
मैंने भी ऐसा ही किया था, और मैंने शाम पाँच बजे खुद को गोली मार ली थी, और तुम कुछ भी करने के लिए समय पर नहीं पहुँच पाते। अगर मेरे पिता के साथ जो हुआ वो न हुआ होता, तो तुम्हें इसके बारे में कुछ भी पता न होता, और तुम यहाँ न आते। ओह, ये तो शैतान का काम है। शैतान ने ही मेरे पिता की हत्या की, और शैतान के ज़रिए ही तुम्हें इतनी जल्दी पता चला। तुम इतनी जल्दी यहाँ कैसे पहुँच गए? ये तो कमाल है, एक सपना!
श्री पेरहोटिन ने हमें बताया कि जब आप उनके पास आए, तो आपने अपने
हाथ... तुम्हारे खून से सने हाथ... तुम्हारा पैसा... बहुत सारा पैसा... सौ-रूबल के नोटों का एक बंडल, और यह कि उसके नौकर लड़के ने भी इसे देखा था।"
“जी हां, सज्जनों। मुझे याद है कि ऐसा ही था।”
अब, एक छोटा सा मुद्दा सामने आता है। क्या आप हमें इसके बारे में बता सकते हैं?
निकोले पार्फेनोविच ने अत्यंत विनम्रता से पूछा, "आपको अचानक इतना पैसा कहाँ से मिला, जबकि तथ्यों से, समय की गणना से, ऐसा प्रतीत होता है कि आप घर पर नहीं थे?"
पूछे गए प्रश्न को सुनकर अभियोक्ता की भौंहें तन गईं।
स्पष्ट रूप से, लेकिन उन्होंने निकोले पारफेनोविच की बात नहीं काटी।
“नहीं, मैं घर नहीं गया,” मित्या ने बिल्कुल सही अंदाज़ में जवाब दिया।
शांत, लेकिन फर्श की ओर देख रहा था।
“तो मुझे अपना प्रश्न दोहराने की अनुमति दें,” निकोले परफेनोविच ने आगे कहा।
जैसे धीरे-धीरे विषय की ओर बढ़ते हुए। "तुम इतनी बड़ी रकम एक साथ कहाँ से जुटा पाए, जबकि तुम्हारे अपने ही बयान के अनुसार, उसी दिन शाम पाँच बजे तुमने—"
मुझे दस रूबल की जरूरत थी और मैंने अपनी पिस्तौलें पेरहोटिन के पास गिरवी रख दीं, और
फिर मैं मैडम होहलाकोव के पास तीन हज़ार उधार लेने गया, जो उन्होंने मुझे नहीं दिए, और इसी तरह आगे भी बहुत कुछ हुआ,” मित्या ने तीखे स्वर में बात काटते हुए कहा। “जी हाँ, सज्जनों, मुझे पैसों की ज़रूरत थी, और अचानक हज़ारों रुपये मिल गए, है ना? क्या आप जानते हैं, सज्जनों, आप दोनों अब डर रहे हैं कि ‘अगर वह हमें यह न बताए कि उसे ये पैसे कहाँ से मिले तो क्या होगा?’ बात बस इतनी सी है। मैं आपको नहीं बताने

वाला, सज्जनों। आपने सही अनुमान लगाया है। आपको कभी पता नहीं चलेगा," मित्या ने असाधारण दृढ़ता से हर शब्द को अलग-अलग बोलते हुए कहा। वकील एक पल के लिए चुप हो गए।
"श्री करामाज़ोव, आपको यह समझना होगा कि यह अत्यंत महत्वपूर्ण है
"हमें यह जानने के लिए," निकोले परफेनोविच ने नरमी और विनम्रता से कहा।
मैं समझती हूँ; लेकिन फिर भी मैं आपको नहीं बताऊँगी।
अभियोजक ने भी हस्तक्षेप किया और कैदी को फिर से याद दिलाया कि वह
यदि वह अपने हित में समझता तो प्रश्नों का उत्तर देने से इनकार करने के लिए स्वतंत्र था, इत्यादि। लेकिन अपनी चुप्पी से वह स्वयं को जो नुकसान पहुंचा सकता था, उसे देखते हुए, विशेषकर ऐसे महत्वपूर्ण मामले में...
"और इसी तरह, सज्जनों, और इसी तरह। बस करो! मैंने यह सब बकवास सुन ली है।"
"इससे पहले," मित्या ने फिर से बात काटते हुए कहा। "मैं खुद देख सकता हूँ कि यह कितना महत्वपूर्ण है, और यही सबसे अहम मुद्दा है, फिर भी मैं कुछ नहीं कहूँगा।"
इससे हमें क्या लेना-देना? यह हमारा काम नहीं है, बल्कि आपका है। आप जो कर रहे हैं, वह आप ही कर रहे हैं।
"खुद को नुकसान पहुंचाओ," निकोले परफेनोविच ने घबराते हुए कहा।
"देखिए सज्जनों, मजाक को छोड़ दें तो"—मित्या ने अपनी आँखें ऊपर उठाईं और देखा
उन दोनों पर दृढ़ता से चिल्लाते हुए—"मुझे शुरू से ही आभास था कि हम इस बिंदु पर मतभेद में पड़ जाएँगे। लेकिन जब मैंने शुरू में अपनी गवाही देना शुरू किया, तो सब कुछ बहुत दूर और धुंधला था; सब कुछ अनिश्चित था, और मैं इतना भोला था कि मैंने हमारे बीच आपसी विश्वास की धारणा से शुरुआत की। अब मैं खुद देख सकता हूँ कि ऐसा विश्वास संभव ही नहीं है, क्योंकि किसी भी हालत में हमें इस दुर्भाग्यपूर्ण बाधा का सामना करना ही था। और अब हम यहाँ आ ही गए हैं! यह असंभव है और यहीं इसका अंत होता है! लेकिन मैं आपको दोष नहीं देता। आप केवल मेरी बात पर विश्वास नहीं कर सकते। मैं यह समझता हूँ, बिल्कुल।"
वह फिर से घोर निराशा में डूब गया।
क्या आप चुप रहने के अपने संकल्प को छोड़े बिना ऐसा नहीं कर सकते थे?
मुख्य बात यह है कि क्या आप साथ ही साथ हमें उन कारणों की प्रकृति के बारे में कुछ संकेत नहीं दे सकते जो आपको इतने खतरनाक संकट के समय जवाब देने से इनकार करने के लिए प्रेरित करने के लिए पर्याप्त मजबूत हैं?
मित्या ने उदास, लगभग स्वप्निल भाव से मुस्कुराया।
"मैं जितना आप सोचते हैं उससे कहीं अधिक मिलनसार हूँ, सज्जनों। मैं आपको बताता हूँ।"
मैं आपको इसका कारण बताऊँगा और थोड़ा सा संकेत भी दूँगा, हालाँकि आप इसके लायक नहीं हैं। मैं इस बारे में बात नहीं करूँगा, सज्जनों, क्योंकि यह मेरी प्रतिष्ठा पर धब्बा होगा। अगर मैंने अपने पिता की हत्या और लूट की होती, तो इस सवाल का जवाब देना कि मुझे पैसा कहाँ से मिला, मुझे उनकी हत्या और लूट से भी कहीं अधिक बदनामी दिलाएगा। इसीलिए मैं आपको नहीं बता सकता। बदनामी के डर से नहीं बता सकता।
क्या, सज्जनों, आप इसे लिखेंगे?
"हाँ, हम इसे लिख लेंगे," निकोले पारफेनोविच ने तुतलाते हुए कहा। "आपको 'अपमान' वाली बात नहीं लिखनी चाहिए। मैंने तो बस इतना ही कहा था।"
मैंने ये सब नेक इरादे से किया। मुझे तुम्हें बताने की ज़रूरत नहीं थी। मैंने तुम्हें ये तोहफ़ा दिया, और तुमने तुरंत उस पर झपट्टा मार डाला। खैर, लिखो—जो चाहो लिखो," उसने तिरस्कार और घृणा भरे लहजे में कहा।
"मैं तुमसे डरता नहीं हूँ और तुम्हारे सामने सिर ऊँचा करके खड़ा रह सकता हूँ।"
"और क्या आप हमें उस अपमान की प्रकृति नहीं बता सकते?" निकोले
परफेनोविच ने जोखिम उठाया।
अभियोजक ने गुस्से से भौंहें चढ़ा लीं।
नहीं, नहीं, बस हो गया, परेशान मत होइए। इसे गंदा करने का कोई फायदा नहीं है।
मैंने अपने हाथ गंदे कर लिए हैं। तुम्हारे कारण मैं पहले ही बहुत गंदा हो चुकी हूँ। तुम इसके लायक नहीं हो —कोई भी नहीं है... बस करो, सज्जनों। मैं अब और नहीं बोलूंगी।

यह बात बहुत ही कठोर लहजे में कही गई थी। निकोले पारफेनोविच ने इस पर जोर नहीं दिया।
इसके अलावा, इप्पोलिट किरिलोविच की आंखों से उन्होंने देखा कि उन्होंने उम्मीद नहीं छोड़ी थी।
"क्या आप कम से कम हमें यह तो बता सकते हैं कि आपके पास उस समय कितनी रकम थी जब आपने..."
श्री पेरहोटिन के यहाँ कितने रूबल गए थे?
मैं आपको यह नहीं बता सकता।
"मुझे लगता है कि आपने श्री पेरहोटिन से बात की थी, जिन्होंने तीन प्राप्त किए थे।"
मैडम होहलाकोव से एक हजार।
"शायद मैंने लिया था। बस करो, सज्जनों। मैं यह नहीं बताऊंगा कि मैंने कितना लिया था।"
तो क्या आप कृपया हमें यह बताएँगे कि आप यहाँ कैसे आए और आपने क्या किया?
आपके आने के बाद से आपने क्या किया है?
“ओह! आप यहाँ के लोगों से इसके बारे में पूछ सकते हैं। लेकिन अगर आप चाहें तो मैं आपको बता दूँगा। पसंद करना।"
उन्होंने ऐसा किया, लेकिन हम उनकी कहानी दोहराएंगे नहीं। उन्होंने इसे नीरस ढंग से सुनाया।
और संक्षिप्त रूप से। अपने प्रेम के उन्माद के बारे में उन्होंने कुछ नहीं कहा, बस इतना बताया कि उन्होंने "मामले में नए कारकों" के कारण खुद को गोली मारने का इरादा छोड़ दिया। उन्होंने बिना किसी मकसद या विवरण में जाए पूरी कहानी सुनाई। और इस बार वकीलों ने उन्हें ज्यादा परेशान नहीं किया। यह स्पष्ट था कि उनके लिए इसमें कोई महत्वपूर्ण बात नहीं थी।
हम इन सब बातों की पुष्टि करेंगे। हम इस पर बाद में फिर से विचार करेंगे।
“गवाहों की पूछताछ, जो निश्चित रूप से आपकी उपस्थिति में होगी,” निकोले पारफेनोविच ने अंत में कहा।
“और अब मुझे आपसे अनुरोध करने की अनुमति दें कि आप अपने पास मौजूद सभी चीजें, विशेष रूप से आपके पास मौजूद सभी धन, मेज पर रख दें।”
“मेरा पैसा, सज्जनों? बिल्कुल। मैं समझता हूँ कि यह आवश्यक है।”
मुझे वाकई हैरानी है कि आपने इसके बारे में पहले पूछताछ नहीं की। यह सच है कि मैं कहीं जा नहीं सका। मैं यहीं बैठा हूँ जहाँ मुझे देखा जा सकता है। लेकिन ये रहे मेरे पैसे—गिन लो—ले लो। बस, मुझे लगता है इतना ही।
उसने अपनी जेबों से सब कुछ बाहर निकाल दिया; यहाँ तक कि छोटे सिक्के भी—दो सिक्के
उसने अपनी जैकेट की जेब से बीस कोपेक निकाले। उन्होंने पैसे गिने, जो कुल मिलाकर आठ सौ छत्तीस रूबल और चालीस कोपेक थे।
“और बस इतना ही?” जांच करने वाले वकील ने पूछा। “हां।”
आपने अभी-अभी अपने बयान में कहा है कि आपने तीन सौ खर्च किए हैं।
प्लॉट्निकोव्स के यहाँ रूबल। आपने पेरहोटिन को दस दिए, अपने ड्राइवर को बीस, यहाँ आपने दो सौ खो दिए, फिर...
निकोले पारफेनोविच ने सब हिसाब लगाया। मित्या ने सहर्ष उसकी मदद की।
उन्होंने एक-एक पैसा याद करके हिसाब में शामिल कर लिया। निकोले परफेनोविच ने जल्दी से कुल योग जोड़ दिया।
“इन आठ सौ के साथ आपके पास लगभग पंद्रह सौ रहे होंगे।”
पहला?"
“मुझे लगता है ऐसा ही है,” मित्या ने झट से कहा।
"वे सभी यह दावा कैसे करते हैं कि इससे कहीं अधिक था?"
उन्हें इसे साबित करने दो।
लेकिन आपने खुद ही इस बात की पुष्टि की थी।
“हां, मैंने भी किया।”
हम इन सभी बातों की तुलना उन अन्य व्यक्तियों के साक्ष्यों से करेंगे जिनके साक्ष्य अभी तक सामने नहीं आए हैं।

जांच हो चुकी है। अपने पैसों को लेकर चिंता न करें। उनका ठीक से ध्यान रखा जाएगा और . . . जो अभी शुरू हो रहा है, उसके पूरा होने पर वे आपके लिए उपलब्ध होंगे, अगर यह साबित हो जाता है कि इस पर आपका निर्विवाद अधिकार है। अच्छा, और अब . . .
निकोले पारफेनोविच अचानक उठ खड़ा हुआ और उसने मित्या को दृढ़ता से बताया कि
आपके कपड़ों और बाकी सभी चीजों की बारीकी से और पूरी तरह से तलाशी लेना उनका कर्तव्य और दायित्व था।
“जी हां, सज्जनों। अगर आप चाहें तो मैं अपनी सारी जेबें खाली कर दूंगा।” और सचमुच, उन्होंने अपनी जेबें खाली करना शुरू कर दिया। “आपको अपने कपड़े भी उतारने पड़ेंगे।”
“क्या! कपड़े उतारो? उफ़! धिक्कार है! मुझे ऐसे ही तलाशी क्यों नहीं लेते! नहीं कर सकते।”
आप?"
“यह बिलकुल असंभव है, दिमित्री फ्योदोरोविच। आपको अपने कपड़े उतारने ही होंगे।”
“जैसा आपको पसंद हो,” मित्या ने उदास स्वर में कहा; “बस, कृपया यहाँ नहीं, बल्कि
पर्दों के पीछे। उनकी तलाशी कौन लेगा?
"पर्दे के पीछे, बिल्कुल।"
निकोले पारफेनोविच ने सहमति में अपना सिर झुकाया। उनके छोटे से चेहरे पर एक भाव था।
विशेष गंभीरता की अभिव्यक्ति।

अध्याय 6

अभियोजक ने मित्या को पकड़ लिया

इसके बाद मित्या के लिए कुछ ऐसा हुआ जो बिल्कुल अप्रत्याशित और चौंकाने वाला था। उसने एक मिनट पहले भी कल्पना नहीं की थी कि कोई उसके साथ, मित्या करामाज़ोव के साथ, ऐसा व्यवहार कर सकता है। सबसे बुरी बात यह थी कि इसमें कुछ अपमानजनक था, और उनकी ओर से कुछ "घमंडी और तिरस्कारपूर्ण" था। कोट उतारना कोई बड़ी बात नहीं थी, लेकिन उसे और कपड़े उतारने के लिए कहा गया, या यूँ कहें कि कहा नहीं गया बल्कि "आदेश" दिया गया, वह यह बात अच्छी तरह समझ गया था। स्वाभिमान और तिरस्कार के कारण उसने बिना कुछ कहे समर्पण कर दिया। कई किसान वकीलों के साथ आए और पर्दे के दूसरी तरफ खड़े रहे। "बल प्रयोग की आवश्यकता पड़ने पर तैयार रहने के लिए," मित्या ने सोचा, "और शायद किसी अन्य कारण से भी।"

“तो क्या मुझे अपनी कमीज़ भी उतारनी पड़ेगी?” उसने तीखे स्वर में पूछा, लेकिन निकोले पार्फेनोविच ने कोई जवाब नहीं दिया। वह अभियोक्ता के साथ कोट, पतलून, जैकेट और टोपी की जांच में व्यस्त था; और यह स्पष्ट था कि दोनों ही इस जांच में बहुत रुचि रखते थे। "ये लोग इस बारे में कोई छिपाव नहीं रखते," मित्या ने सोचा, "ये लोग बुनियादी शिष्टाचार का भी पालन नहीं करते।"

“मैं आपसे दोबारा पूछता हूँ—क्या मुझे अपनी कमीज़ उतारनी चाहिए या नहीं?”

उसने और भी तीखे और चिड़चिड़े स्वर में कहा।

“आप चिंता न करें। हम आपको बता देंगे कि क्या करना है,” निकोले ने कहा।

परफेनोविच ने कहा, और उनकी आवाज में एक तरह का दृढ़ संकल्प झलक रहा था, या कम से कम मित्या को तो ऐसा ही लगा।

इस बीच दबे स्वर में परामर्श प्रक्रिया चल रही थी।

वकीलों ने जांच शुरू की। कोट पर, खासकर पीछे की बाईं ओर, खून का एक बड़ा धब्बा था, जो सूखा और अभी भी जमा हुआ था। पतलून पर भी खून के धब्बे थे। इसके अलावा, निकोले पारफेनोविच ने किसान गवाहों की मौजूदगी में कॉलर, कफ और कोट व पतलून की सभी सिलाई पर उंगलियां फिराईं, जाहिर तौर पर कुछ ढूंढ रहा था—पैसा, निश्चित रूप से। उसने मित्या से भी यह शक नहीं छिपाया कि वह अपने कपड़ों में पैसे सिलने में सक्षम था।

“वह मेरे साथ एक अधिकारी की तरह नहीं, बल्कि एक चोर की तरह व्यवहार करता है,” मित्या ने बुदबुदाते हुए कहा।

वे दोनों एक-दूसरे से आश्चर्यजनक स्पष्टता के साथ अपने विचार साझा कर रहे थे। उदाहरण के लिए, सचिव, जो पर्दे के पीछे रहकर इधर-उधर देख रहा था और सुन रहा था, ने निकोले पार्फेनोविच का ध्यान टोपी की ओर दिलाया, जिसे वे दोनों छू रहे थे।

“आपको कॉपी करने वाले क्लर्क ग्रिडियेन्को याद होंगे,” सचिव ने कहा।

“पिछली गर्मियों में उसे पूरे दफ्तर की तनख्वाह मिली और उसने शराब के नशे में पैसे खो देने का बहाना बनाया। और वो पैसे कहाँ मिले? अरे, उसकी टोपी में लगी ऐसी ही एक पाइपिंग में। सौ-रूबल के नोटों को छोटे-छोटे रोल में लपेटकर पाइपिंग में सिल दिया गया था।”

दोनों वकीलों को ग्रिडियेन्को का मामला पूरी तरह से याद था, और इसलिए उन्होंने अपनी दलीलें पेश कीं। मित्या की टोपी को एक तरफ रख दिया और फैसला किया कि उसके सभी कपड़ों की बाद में और अधिक गहनता से जांच की जानी चाहिए।

“माफ़ कीजिए,” निकोले परफेनोविच ने अचानक चिल्लाकर कहा, जब उन्होंने देखा कि मित्या की कमीज का दाहिना कफ अंदर की ओर मुड़ा हुआ था और खून से सना हुआ था, "माफ़ कीजिए, यह क्या है, खून है क्या?"

“हां,” मित्या ने झटके से कहा।

“मतलब, कौन सा खून? . . . और कलाई अंदर की ओर क्यों मुड़ी हुई है?” मित्या ने उसे बताया कि उसकी आस्तीन खून से कैसे सनी हुई थी।
ग्रिगोरी के बाद, और उसने पेरहोटिन के यहाँ हाथ धोते समय इसे अंदर रख दिया था।
आपको अपनी कमीज भी उतारनी होगी। सामग्री के लिहाज से यह बहुत महत्वपूर्ण है।
प्रमाण।"
मित्या का चेहरा लाल हो गया और वह गुस्से से आग बबूला हो गया।
“क्या मुझे नंगा ही रहना पड़ेगा?” वह चिल्लाया।
“आप परेशान न हों। हम कुछ व्यवस्था कर लेंगे। और इस बीच
अपने मोजे उतार दो।
“क्या तुम मज़ाक कर रहे हो? क्या सच में इसकी ज़रूरत है?” मित्या की आँखों में गुस्सा झलक रहा था। “हम मज़ाक करने के मूड में नहीं हैं,” निकोले पारफेनोविच ने सख्ती से जवाब दिया। “ठीक है, अगर ज़रूरी है तो...” मित्या बुदबुदाया और बिस्तर पर बैठते हुए, वह
उसने अपने मोज़े उतार दिए। उसे असहनीय असहजता महसूस हुई। सभी ने कपड़े पहने हुए थे, जबकि वह नंगा था, और अजीब बात यह है कि कपड़े उतारने के बाद उसे उनके सामने किसी तरह का अपराधबोध महसूस हुआ, और वह लगभग यह मानने को तैयार था कि वह उनसे हीन है, और अब उन्हें उसका तिरस्कार करने का पूरा अधिकार है।
जब सभी नग्न होते हैं, तो किसी को शर्म नहीं आती, लेकिन जब कोई...
“मैं अकेला हूँ जो कपड़े उतार रहा हूँ और सब मुझे देख रहे हैं, यह कितना अपमानजनक है,” वह बार-बार अपने मन में दोहराता रहा। “यह एक सपने जैसा है, मैंने कई बार ऐसे अपमानजनक हालातों में होने के सपने देखे हैं।” अपने मोज़े उतारना उसके लिए असहनीय था। वे बहुत गंदे थे, और उसके अंतर्वस्त्र भी, और अब हर कोई इसे देख सकता था। और इससे भी बुरा यह था कि उसे अपने पैर नापसंद थे। जीवन भर उसने अपने दोनों अंगूठों को बदसूरत समझा था। उसे विशेष रूप से दाहिने अंगूठे का खुरदुरा, चपटा, टेढ़ा नाखून नापसंद था, और अब सब उसे देख लेंगे। असहनीय शर्मिंदगी ने उसे तुरंत और जानबूझकर और भी कठोर बना दिया। उसने खुद ही अपनी कमीज़ उतार दी।
"अगर आपको शर्म न हो तो क्या आप कहीं और देखना चाहेंगे?"
"नहीं, फिलहाल इसकी कोई आवश्यकता नहीं है।"
“तो क्या मुझे ऐसे ही नंगा रहना पड़ेगा?” उसने क्रूरता से कहा। “हाँ, फिलहाल तो कोई चारा नहीं है... कृपया यहाँ बैठ जाइए।”
आप बिस्तर से रजाई ओढ़कर खुद को लपेट सकते हैं, और मैं... मैं इन सब चीजों का ध्यान रखूंगा।
सभी चीजें गवाहों को दिखाई गईं। तलाशी की रिपोर्ट थी।
कपड़े खींचे गए, और आखिरकार निकोले पारफेनोविच बाहर चले गए, और उनके पीछे-पीछे कपड़े भी बाहर ले जाए गए। इप्पोलिट किरिलोविच भी बाहर चले गए। मित्या किसानों के साथ अकेला रह गया, जो चुपचाप खड़े थे, अपनी निगाहें उससे हटाए बिना। मित्या ने खुद को रजाई में लपेट लिया। उसे ठंड लग रही थी। उसके नंगे पैर बाहर निकले हुए थे, और वह रजाई को इतना ऊपर नहीं खींच पा रहा था कि उन्हें ढक सके। निकोले पारफेनोविच को गए काफी देर हो गई थी, "असहनीय समय।" "वह मुझे एक पिल्ले की तरह समझता है," मित्या ने दांत पीसते हुए सोचा। "वह सड़ा हुआ अभियोक्ता भी चला गया, निस्संदेह तिरस्कार से भरा हुआ, मुझे नंगा देखकर उसे घिन आती है!"
हालांकि, मित्या ने कल्पना की कि उसके कपड़ों की जांच की जाएगी और
वह उसके पास लौट आया। लेकिन जब निकोले पार्फेनोविच बिल्कुल अलग कपड़े पहनकर वापस आया, जिसे एक किसान उसके पीछे लेकर आया था, तो उसकी नाराजगी का ठिकाना नहीं रहा।
“ये रहे तुम्हारे लिए कपड़े,” उसने संतुष्ट भाव से कहा।
अपने मिशन की सफलता पर उन्होंने कहा, “श्री कालगानोव ने इस असाधारण आपात स्थिति के लिए ये चीजें और साथ ही एक साफ कमीज भी उपलब्ध कराई है। सौभाग्य से ये सब उनके ट्रंक में मौजूद थे। आप अपने मोजे और अंतर्वस्त्र अपने पास रख सकते हैं।”
मित्या आवेश में आ गया।

“मैं दूसरों के कपड़े नहीं पहनूंगा!” उसने धमकी भरे लहजे में चिल्लाते हुए कहा, “मुझे दे दो।”
अपने मन!"
“यह असंभव है!”
“मुझे मेरा सामान दो। कल्गानोव और उसके कपड़े दोनों ही बेकार हैं!” उन्हें मनाने में उन्हें काफी समय लगा। लेकिन आखिरकार वे सफल हो गए।
किसी तरह उसे शांत करने के लिए, उन्होंने उसे समझाया कि उसके कपड़े खून से सने होने के कारण "अन्य साक्ष्यों के साथ शामिल किए जाने चाहिए" और "मामले के संभावित परिणाम को देखते हुए, अब उन्हें ये कपड़े उसे देने का भी अधिकार नहीं है।" मित्या को अंततः यह बात समझ आ गई। वह गहरी चुप्पी में डूब गया और जल्दी से कपड़े पहने। कपड़े पहनते समय उसने बस इतना ही कहा कि ये कपड़े उसके पुराने कपड़ों से कहीं बेहतर हैं और उसे "बदलाव से लाभ उठाना" पसंद नहीं है। इसके अलावा, कोट "बेहद तंग" था। "क्या मुझे आपके मनोरंजन के लिए मूर्ख की तरह कपड़े पहनाए जाएँगे?"
उन्होंने उसे फिर से समझाया कि वह अतिशयोक्ति कर रहा है, कि कालगानोव
वह मुझसे बस थोड़ा ही लंबा था, इसलिए शायद पतलून थोड़ी लंबी हो सकती थी। लेकिन कोट कंधों पर बहुत तंग निकला।
“धिक्कार है! मैं इसे मुश्किल से बटन लगा पा रहा हूँ,” मित्या बड़बड़ाया। “कृपा करके इसे बटन लगा दो।”
श्री कल्गानोव को मेरी ओर से बता देना कि मैंने उनके कपड़े नहीं मांगे थे, और मुझे जोकर की तरह कपड़े पहनाने में मेरा कोई हाथ नहीं है।"
“वह यह बात समझता है, और उसे खेद है... मेरा मतलब है, आपको अपना सामान उधार देने का उसे कोई खेद नहीं है।”
कपड़े तो ठीक हैं, लेकिन इस सब झंझट के लिए मुझे खेद है,” निकोले पारफेनोविच ने बुदबुदाते हुए कहा।
“उसकी मुसीबत धिक्कार है! अब क्या करूँ? क्या मैं यहीं बैठा रहूँ?” उसे “दूसरे कमरे” में वापस जाने के लिए कहा गया। मित्या गुस्से से मुँह बनाते हुए अंदर चला गया।
गुस्से से भरे हुए और किसी की ओर देखने से बचते हुए, वह खुद को अपमानित महसूस कर रहा था, यहाँ तक कि किसानों और ट्रिफॉन बोरिसोविच की नज़रों में भी, जिसका चेहरा किसी कारणवश दरवाजे पर दिखाई दिया और तुरंत गायब हो गया। "वह मुझे सजे-धजे देखने आया है," मित्या ने सोचा। वह पहले वाली कुर्सी पर ही बैठ गया। उसे एक अजीब सा डरावना एहसास हो रहा था, मानो वह पागल हो गया हो।
“अब क्या? क्या तुम मुझे कोड़े मारोगे? बस यही बचा है मेरे लिए।”
“तुम,” उसने दांत भींचते हुए अभियोक्ता को संबोधित किया। वह निकोले पारफेनोविच की ओर मुड़ा नहीं, मानो वह उससे बात करने से कतराता हो।
उसने मेरी मोजों को बहुत ध्यान से देखा और उन्हें उल्टा कर दिया।
उनका मकसद सबको यह दिखाना था कि वे कितने गंदे थे—वह बदमाश!
“ठीक है, अब हमें गवाहों की जांच शुरू करनी चाहिए,” उन्होंने कहा।
निकोले परफेनोविच, मानो मित्या के प्रश्न का उत्तर दे रहे हों।
“हाँ,” अभियोक्ता ने सोच-विचार करते हुए कहा, मानो वह इस पर विचार कर रहा हो।
कुछ।
“हमने आपके हित में वह सब कुछ किया जो हम कर सकते थे, दिमित्री फ्योदोरोविच।”
निकोले परफेनोविच ने आगे कहा, "लेकिन आपके द्वारा हमें उस स्रोत के बारे में स्पष्टीकरण देने से साफ इनकार करने के बाद, जिससे आपको मिली धनराशि प्राप्त हुई, हम इस समय..."
“तुम्हारी अंगूठी में कौन सा पत्थर है?” मित्या ने अचानक बीच में ही टोकते हुए पूछा, मानो
एक तल्लीनता से जागते हुए। उन्होंने निकोले पार्फेनोविच के दाहिने हाथ में सजी तीन बड़ी अंगूठियों में से एक की ओर इशारा किया।
“अंगूठी?” निकोले पार्फेनोविच ने आश्चर्य से दोहराया। “हाँ, वही वाली... तुम्हारी बीच वाली उंगली पर, जिसमें छोटी-छोटी नसें दिखती हैं, क्या?”
"यह कौन सा पत्थर है?" मित्या एक चिड़चिड़े बच्चे की तरह अड़ियल रवैया अपनाते हुए पूछता रहा।
“यह एक स्मोकी पुखराज है,” निकोले पारफेनोविच ने मुस्कुराते हुए कहा। “क्या...”

क्या आप इसे देखना पसंद करते हैं? मैं इसे उतार देता हूँ...
“नहीं, इसे मत उतारो,” मित्या अचानक जागते हुए गुस्से से चिल्लाया, और
खुद पर गुस्सा। “इसे मत उतारो... कोई ज़रूरत नहीं है... धिक्कार है! ... सज्जनों, आपने मेरे दिल को कलंकित कर दिया है! क्या आप सोच सकते हैं कि अगर मैंने सचमुच अपने पिता को मार डाला होता, तो मैं इसे आपसे छुपाता, क्या मैं टालमटोल करता, झूठ बोलता और खुद को छिपाता? नहीं, यह दिमित्री करामाज़ोव जैसा नहीं है, वह ऐसा नहीं कर सकता था, और अगर मैं दोषी होता, तो मैं कसम खाता हूँ कि मैं आपके आने का या सूर्योदय का इंतज़ार नहीं करता जैसा कि मैंने पहले सोचा था, बल्कि भोर का इंतज़ार किए बिना इससे पहले ही खुद को मार डालता! अब मैं अपने बारे में यह जानता हूँ। बीस वर्षों में भी मैं उतना नहीं सीख पाता जितना मैंने इस शापित रात में सीखा है! ... और अगर मैं इस रात, इस पल, आपके साथ बैठा होता, क्या मैं इस तरह बात कर पाता, क्या मैं इस तरह चल पाता, क्या मैं आपको और दुनिया को इस तरह देख पाता, अगर मैं सचमुच अपने पिता का हत्यारा होता, जब... ग्रिगोरी को अनजाने में मार डालने के ख्याल ने मुझे पूरी रात चैन नहीं लेने दिया—डर से नहीं—अरे, सिर्फ़ आपकी सज़ा के डर से नहीं! कितनी शर्मनाक बात है! और आप मुझसे उम्मीद करते हैं कि मैं आप जैसे न देखने वाले, न मानने वाले, अंधे और मज़ाक उड़ाने वालों के सामने सब कुछ बता दूँ, और आपको अपनी एक और घिनौनी करतूत, एक और शर्मनाक बात बता दूँ, भले ही इससे मैं आपके आरोप से बच जाऊँ! नहीं, साइबेरिया जाना बेहतर है! जिस आदमी ने मेरे पिता के लिए दरवाज़ा खोला और उस दरवाज़े से अंदर गया, उसने उन्हें मार डाला, उन्हें लूट लिया। वह कौन था? मैं बहुत सोच रही हूँ, लेकिन समझ नहीं आ रहा कि कौन था। लेकिन मैं आपको बता सकती हूँ कि वह दिमित्री करामाज़ोव नहीं था, और बस इतना ही मैं आपको बता सकती हूँ, और बस इतना ही काफ़ी है, बस, मुझे अकेला छोड़ दो... मुझे देश निकाला दे दो, मुझे सज़ा दो, लेकिन अब मुझे और परेशान मत करो। मैं और कुछ नहीं कहूँगी। अपने गवाहों को बुलाओ!
मित्या ने अपना अचानक बोला गया एकालाप इस प्रकार व्यक्त किया मानो वह दृढ़ निश्चयी हो।
आगे के लिए बिल्कुल चुप रहो। अभियोजक ने उसे लगातार देखा और जब उसने बोलना बंद कर दिया, तभी उसने अत्यंत संयमित और शांत भाव से, मानो यह कोई सामान्य बात हो, टिप्पणी की:
"ओह, जिस खुले दरवाजे की आपने अभी बात की, उसके बारे में हम बात कर ही लेते हैं।"
वैसे, अब मैं आपको एक अत्यंत महत्वपूर्ण और रोचक साक्ष्य के बारे में सूचित करना चाहता हूँ, जो हमें ग्रिगोरी नामक उस बूढ़े व्यक्ति से प्राप्त हुआ है जिसे आपने घायल किया था। ठीक होने पर, उसने हमारे प्रश्नों के उत्तर में स्पष्ट और ज़ोर देकर कहा कि जब वह सीढ़ियों पर आया और बगीचे में शोर सुना, तो उसने खुले हुए छोटे द्वार से अंदर जाने का निर्णय लिया। इससे पहले कि वह आपको, जैसा कि आपने हमें पहले ही बताया है, अंधेरे में खुली खिड़की से भागते हुए देखता, जहाँ आपने अपने पिता को देखा था, ग्रिगोरी ने बाईं ओर देखा और खुली खिड़की को देखते हुए, उसी समय अपने बहुत करीब, खुले हुए दरवाजे को भी देखा - वही दरवाजा जिसके बारे में आपने कहा है कि बगीचे में रहने के दौरान वह पूरे समय बंद था। मैं आपसे यह बात नहीं छिपाऊंगा कि ग्रिगोरी स्वयं विश्वासपूर्वक पुष्टि करता है और गवाही देता है कि आप उस दरवाजे से भागे होंगे, हालांकि, निश्चित रूप से, उसने आपको अपनी आंखों से ऐसा करते हुए नहीं देखा, क्योंकि उसने आपको सबसे पहले बगीचे में कुछ दूरी पर बाड़ की ओर भागते हुए देखा था।
मित्या भाषण के बीच में ही अपनी कुर्सी से उछल पड़ा। "बकवास!" वह अचानक गुस्से में चिल्लाया, "यह सरासर झूठ है।"
दरवाजा बंद था इसलिए उसे खुलते हुए देखना मुमकिन नहीं था। वह झूठ बोल रहा है!
मैं यह दोहराना अपना कर्तव्य समझता हूं कि वह अपने बयान पर अडिग हैं।
वह विचलित नहीं होता। वह इस पर अडिग है। हमने उससे कई बार जिरह की है।
“बिल्कुल सही। मैंने उनसे कई बार जिरह की है,” निकोले ने कहा।
पार्फेनोविच ने सहर्ष इसकी पुष्टि की।
“यह झूठ है, झूठ! यह या तो मुझे बदनाम करने की कोशिश है, या फिर मतिभ्रम।”
“पागलपन की वजह से,” मित्या चिल्लाता रहा। “वह खून की कमी और घाव के कारण बेसुध होकर बड़बड़ा रहा है। होश में आने पर उसने शायद ऐसा सोचा होगा... वह बेसुध होकर बड़बड़ा रहा है।”
“हाँ, लेकिन उसने खुला दरवाजा तब नहीं देखा जब वह होश में आया।

चोटें तो आईं, लेकिन उससे पहले, जैसे ही वह लॉज से बगीचे में गया।"
“लेकिन यह झूठ है, यह झूठ है! ऐसा नहीं हो सकता! वह मुझ पर झूठे आरोप लगा रहा है।”
द्वेष... वह इसे देख नहीं सकता था... मैं दरवाजे से नहीं आया था," मित्या हांफते हुए बोला।
अभियोजक ने निकोले पारफेनोविच की ओर मुड़कर उनसे कहा
प्रभावशाली ढंग से:
"उसे इस बारे में बताओ।"
क्या आप इस वस्तु को पहचानते हैं?
निकोले पारफेनोविच ने मेज पर एक बड़ा और मोटा आधिकारिक दस्तावेज रख दिया।
एक लिफाफा, जिस पर तीन मुहरें अभी भी सही सलामत थीं। लिफाफा खाली था और एक तरफ से फटा हुआ था। मित्या उसे खुली आँखों से घूर रहा था।
“यह... यह मेरे पिता का लिफाफा होना चाहिए, वह लिफाफा जो
उसमें तीन हजार रूबल थे... और अगर उस पर लिखा है, तो मुझे कहने दीजिए, 'मेरी छोटी मुर्गी के लिए'... हाँ —तीन हजार!" वह चिल्लाया, "देखा, तीन हजार, देखा?"
“हाँ, हमने देखा। लेकिन हमें उसमें पैसे नहीं मिले। वह खाली था और पर्दे के पीछे, बिस्तर के पास फर्श पर पड़ा था।”
कुछ सेकंड के लिए मित्या स्तब्ध खड़ा रहा। "सज्जनों, यह स्मरद्याकोव है!" उसने अचानक अपनी पूरी ताकत से चिल्लाया।
आवाज। “उसी ने उसकी हत्या की है! उसी ने उसे लूटा है! किसी और को नहीं पता था कि बूढ़े ने लिफाफा कहाँ छिपाया था। यह स्मरद्याकोव ही है, अब यह स्पष्ट है!”
लेकिन आपको भी उस लिफाफे के बारे में पता था और यह भी कि वह तकिए के नीचे था।
मुझे इसके बारे में कभी पता नहीं था। मैंने इसे कभी नहीं देखा। यह पहली बार है जब मैंने इसे देखा है। मैंने इसके बारे में सिर्फ स्मरद्याकोव से सुना था... वही एकमात्र व्यक्ति था जिसे पता था कि बूढ़े आदमी ने इसे कहाँ छिपा रखा है, मुझे नहीं पता था..." मित्या पूरी तरह से हांफ रहा था।
लेकिन आपने खुद हमें बताया था कि लिफाफा आपके दिवंगत के पास था।
पिताजी का तकिया। आपने विशेष रूप से कहा था कि यह तकिए के नीचे था, इसलिए आपको इसके बारे में पता होना चाहिए था।
“हमने इसे लिख रखा है,” निकोले पारफेनोविच ने पुष्टि की। “बकवास! यह बेतुका है! मुझे बिल्कुल भी पता नहीं था कि यह तकिए के नीचे था। और शायद
वह तकिए के नीचे बिल्कुल नहीं था... यह तो बस एक संयोग था कि वह तकिए के नीचे था। स्मर्ड्याकोव क्या कहता है? क्या तुमने उससे पूछा है कि वह कहाँ था? स्मर्ड्याकोव क्या कहता है? यही मुख्य बात है... और मैंने जानबूझकर अपने खिलाफ झूठ बोला... मैंने बिना सोचे समझे तुम्हें बताया कि वह तकिए के नीचे था, और अब तुम... ओह, तुम जानते हो कि कैसे कोई अनजाने में गलत बात कह देता है। स्मर्ड्याकोव के अलावा किसी को नहीं पता था, सिर्फ स्मर्ड्याकोव को, और किसी को नहीं... उसने मुझे यह भी नहीं बताया कि वह कहाँ था! लेकिन यह उसी का किया-धरा है, उसी का किया-धरा; इसमें कोई शक नहीं, उसने ही उसकी हत्या की है, यह अब दिन के उजाले की तरह साफ है,” मित्या और भी ज्यादा घबराकर चिल्लाया, अपनी बात को बेतरतीब ढंग से दोहराता रहा, और उसका गुस्सा और उत्तेजना बढ़ती जा रही थी। “तुम्हें यह समझना होगा, और उसे तुरंत गिरफ्तार करना होगा... जब मैं भाग रहा था और ग्रिगरी बेहोश था, तभी उसने उसे मार डाला होगा, यह अब स्पष्ट है... उसने इशारा किया और पिता ने उसके लिए दरवाजा खोल दिया... क्योंकि उस इशारे को सिर्फ वही जानता था, और इशारे के बिना पिता कभी दरवाजा नहीं खोलते...
“लेकिन आप फिर से परिस्थिति को भूल रहे हैं,” अभियोक्ता ने टिप्पणी की।
अभी भी उसी संयम के साथ बोलते हुए, हालांकि विजय के भाव के साथ, "कि अगर आपके वहां होने पर, बगीचे में रहते हुए, दरवाजा पहले से ही खुला था, तो संकेत देने की कोई आवश्यकता नहीं थी..."
“दरवाजा, दरवाजा,” मित्या ने बुदबुदाते हुए कहा और वह अवाक होकर दरवाजे को घूरने लगा।
अभियोक्ता। वह असहाय होकर अपनी कुर्सी पर वापस बैठ गया। सब चुप थे।

“हाँ, दरवाजा! . . . यह तो एक बुरा सपना है! भगवान मेरे खिलाफ हैं!” वह पूरी तरह से अचंभित होकर अपने सामने घूरते हुए चिल्लाया।
“देखिए,” अभियोक्ता ने गरिमापूर्ण लहजे में आगे कहा, “और आप कर सकते हैं
दिमित्री फ्योदोरोविच, आप खुद ही फैसला कीजिए। एक तरफ तो हमारे सामने उस खुले दरवाजे का सबूत है जिससे आप बाहर निकले, एक ऐसा तथ्य जो आपको और हमें दोनों को हैरान कर देता है। दूसरी तरफ, उस स्रोत के बारे में आपकी समझ से परे, लगातार और एक तरह से हठधर्मी चुप्पी है जहाँ से आपको वह पैसा मिला जो अचानक आपके हाथों में दिखाई दिया, जबकि सिर्फ तीन घंटे पहले ही, आपके ही बयान के अनुसार, आपने दस रूबल के लिए अपनी पिस्तौलें गिरवी रख दी थीं! इन सभी तथ्यों को देखते हुए, आप खुद ही फैसला कीजिए। हम किस पर विश्वास करें और किस पर भरोसा करें? और हमें 'उदासीन, निंदक, उपहास करने वाले लोग' होने का आरोप मत लगाइए, जो आपके दिल की उदार भावनाओं पर विश्वास करने में असमर्थ हैं... हमारी स्थिति को समझने की कोशिश कीजिए...
मित्या बेहद बेचैन था। उसका चेहरा पीला पड़ गया। "बहुत खूब!" वह अचानक बोला। "मैं तुम्हें अपना रहस्य बताऊंगा। मैं बताऊंगा।"
मुझे पैसे कहाँ से मिले, यह तुम ही बताओ! ... मैं अपनी शर्मिंदगी ज़ाहिर कर देता हूँ, ताकि भविष्य में मुझे न तो खुद को और न ही तुम्हें दोष देना पड़े।
“और मेरा विश्वास करो, दिमित्री फ्योदोरोविच,” निकोले पारफेनोविच ने कहा।
लगभग दयनीय आनंद से भरी आवाज में, "कि इस समय आपकी ओर से किया गया हर सच्चा और पूर्ण स्वीकारोक्ति, बाद में आपके पक्ष में बहुत बड़ा प्रभाव डाल सकता है, और वास्तव में, इसके अलावा—"
लेकिन अभियोक्ता ने मेज के नीचे उसे हल्का सा धक्का दिया, और वह
समय रहते उसने खुद को संभाल लिया। यह सच है कि मित्या ने उसकी बात नहीं सुनी थी।

अध्याय 7

मित्या का महान रहस्य। साथ में प्राप्त हुआ।
फुफकार

“सज्जनों,” उसने उसी घबराहट भरे लहजे में कहना शुरू किया, “मैं पूरी तरह से कबूल करना चाहता हूँ: वह पैसा मेरा अपना था।”
वकीलों के चेहरे उतर गए। उन्हें इसकी बिल्कुल भी उम्मीद नहीं थी। "आपका क्या मतलब है?" निकोले पारफेनोविच लड़खड़ाते हुए बोले, "जब पाँच बजे
उसी दिन ठीक उसी समय, आपके स्वयं के स्वीकारोक्ति से...
“धिक्कार है, उसी दिन शाम पांच बजे और मेरा खुद का कबूलनामा! बस यही है।”
अब इससे कोई लेना-देना नहीं! वो पैसा मेरा अपना था, मेरा अपना, मतलब, मेरे द्वारा चुराया गया... मेरा नहीं, मतलब, मेरे द्वारा चुराया गया था, और वो पंद्रह सौ रूबल थे, और वो हर समय मेरे पास ही रहते थे, हर समय...
"लेकिन यह तुम्हें कहाँ से मिला?"
“मैंने इसे अपने गले से उतारा है, सज्जनों, इसी गले से... यह यहीं था।”
मेरे गले में, एक चिथड़े में सिला हुआ, और मैंने इसे लंबे समय से अपने गले में रखा हुआ था, इसे पहने हुए एक महीना हो गया है... मेरे लिए शर्म और अपमान की बात है!
और आपने इसे किससे लिया...?
“तुम्हारा मतलब है, ‘इसे चुराना’? अब साफ-साफ बोलो। हाँ, मैं मानता हूँ कि मैं
मैंने इसे लगभग चुरा लिया था, लेकिन अगर आप चाहें तो कह सकते हैं कि मैंने इसे 'अपना बना लिया'। मैं इसे चुराया हुआ मानता हूँ। और कल रात मैंने आखिरकार इसे चुरा ही लिया।
“कल रात? लेकिन आपने कहा था कि इसे प्राप्त किए हुए एक महीना हो गया है...”
.”
“हाँ। लेकिन मेरे पिता से नहीं। मेरे पिता से नहीं, चिंता मत करो। मैं
मैंने इसे अपने पिता से नहीं, बल्कि उससे चुराया था। बिना बात काटे मैं आपको बताता हूँ। आप जानते हैं, ऐसा करना मुश्किल है। दरअसल, एक महीने पहले मुझे मेरी मंगेतर कैटेरिना इवानोव्ना ने बुलवाया था। क्या आप उसे जानते हैं?
"हाँ बिल्कुल।"
“मुझे पता है कि आप उसे जानते हैं। वह एक नेक इंसान है, सबसे नेक इंसान। लेकिन
वह मुझे बहुत लंबे समय से नफरत करती रही है, ओह, बहुत लंबे समय से... और उसके नफरत करने का अच्छा कारण है, अच्छा कारण है!
“कैटरीना इवानोव्ना!” निकोले पार्फेनोविच ने आश्चर्य से कहा।
अभियोक्ता भी घूरता रहा।
"अरे, उसका नाम व्यर्थ में मत लो! उसे इसमें घसीटकर मैं बदमाश बन गया हूँ।"
हाँ, मैंने देखा है कि वह मुझसे नफ़रत करती थी... काफ़ी समय से... शुरू से ही, यहाँ तक कि उस शाम मेरे कमरे में भी... लेकिन बस, बस। तुम इसके लायक भी नहीं हो कि तुम्हें यह पता हो। इसकी कोई ज़रूरत नहीं है... मुझे बस इतना बताना है कि उसने मुझे एक महीने पहले बुलवाया, मुझे तीन हज़ार रूबल दिए ताकि मैं उन्हें मॉस्को में उसकी बहन और एक और रिश्तेदार को भेज दूँ (जैसे कि वह खुद नहीं भेज सकती थी!), और मैं... यह मेरे जीवन का वह घातक क्षण था जब मैं... दरअसल, जब मुझे किसी और से प्यार हो गया था, उससे, वह अभी नीचे बैठी है, ग्रुशेंका। मैं उसे यहाँ मोक्रो ले आया, और यहाँ दो दिनों में उस तीन हज़ार में से आधा उड़ा दिया, लेकिन बाकी आधा मैंने अपने पास रखा। खैर, मैंने वह दूसरा आधा, वह पंद्रह सौ, अपने गले में लॉकेट की तरह रखा था, लेकिन कल मैंने उसे खोल दिया और खर्च कर दिया। जो कुछ बचा है, यानी आठ

सौ रूबल, वो अब आपके हाथ में है, निकोले पारफेनोविच। ये कल मेरे पास मौजूद पंद्रह सौ रूबल में से बचे हुए पैसे हैं।
माफ़ कीजिए। ये कैसे? जब आप एक महीने पहले यहाँ थे, तब तो आपने...
तीन हजार खर्च किए, पंद्रह सौ नहीं, यह तो सबको पता है।
“कौन जानता है? किसने पैसे गिने? क्या मैंने किसी को गिनने दिया?”
“क्यों, तुमने खुद ही सबको बताया था कि तुमने ठीक तीन खर्च किए थे
हज़ार।"
“यह सच है, मैंने किया। मैंने पूरे शहर को बताया और पूरे शहर ने यही कहा।”
और यहाँ, मोक्रो में भी, हर कोई यही कह रहा था कि यह तीन हज़ार है। लेकिन मैंने तीन हज़ार नहीं, बल्कि पंद्रह सौ खर्च किए। और बाकी के पंद्रह सौ मैंने एक छोटी थैली में सिल दिए। बात कुछ ऐसी ही थी, सज्जनों। कल मुझे वो पैसा वहीं से मिला था...
“यह तो लगभग चमत्कार ही है,” निकोले पारफेनोविच ने धीरे से कहा। “मुझे पूछने की अनुमति दीजिए,”
अभियोक्ता ने अंत में कहा, “क्या आपने
क्या आपने इस परिस्थिति के बारे में पहले किसी को भी बताया था, मेरा मतलब है कि एक महीने पहले आपके पास लगभग पंद्रह सौ रुपये बचे थे?
मैंने किसी को नहीं बताया।
“यह तो अजीब बात है। क्या आपका मतलब है कि बिल्कुल कोई नहीं?”
"बिल्कुल कोई नहीं। कोई भी नहीं।"
आपकी इस चुप्पी का कारण क्या था? आपका मकसद क्या था?
इसे इतना गुप्त रखना? और स्पष्ट रूप से कहें तो: आपने अंततः हमें अपना रहस्य बता दिया है, आपके शब्दों में, इतना 'शर्मनाक', हालांकि वास्तव में—अर्थात तुलनात्मक रूप से—यह कार्य, अर्थात् किसी और के तीन हजार रूबल का गबन, और वह भी केवल थोड़े समय के लिए, मेरी राय में, केवल घोर लापरवाही का कार्य है और आपके चरित्र को ध्यान में रखते हुए इतना शर्मनाक नहीं है... यह मानते हुए भी कि यह अत्यंत निंदनीय कार्य था, फिर भी निंदनीय 'शर्मनाक' नहीं होता... पिछले महीने के दौरान कई लोगों ने पहले ही अनुमान लगा लिया था कि आपने कैटेरिना इवानोव्ना के तीन हजार रूबल खर्च कर दिए हैं, और मैंने स्वयं यह अफवाह सुनी है, आपके स्वीकारोक्ति के अलावा... उदाहरण के लिए, मिखाइल मकारोविच ने भी इसे सुना था, इसलिए वास्तव में, यह शायद ही कोई अफवाह थी, बल्कि पूरे शहर की गपशप थी। अगर मैं गलत नहीं हूँ, तो ऐसे संकेत भी हैं कि आपने खुद किसी के सामने यह बात कबूल की थी, मेरा मतलब है कि पैसा कैटेरिना इवानोव्ना का था, और इसलिए, मुझे यह बेहद आश्चर्यजनक लगता है कि अब तक, यानी अभी तक, आपने उन पंद्रह सौ डॉलर को, जिन्हें आपने बचाकर रखा था, इतना गुप्त रखा है, और ऐसा लगता है कि आप उस रहस्य से घोर भयभीत हैं... यह मानना आसान नहीं है कि इस तरह का रहस्य कबूल करने में आपको इतनी तकलीफ हो सकती है... आपने अभी-अभी चिल्लाकर कहा कि इसे कबूल करने से बेहतर साइबेरिया जाना होगा...
अभियोजक ने बोलना बंद कर दिया। उन्हें उकसाया गया था। उन्होंने कुछ छिपाया नहीं।
उसकी झुंझलाहट, जो लगभग क्रोध में बदल गई थी, और उसने अपने भीतर दबी सारी भ्रांति को बिना शब्दों का चुनाव किए, असंबद्ध और असंगत तरीके से प्रकट कर दिया।
“पंद्रह सौ की संख्या शर्मनाक नहीं है, बल्कि यह शर्मनाक है कि मैंने इसे अलग रख दिया।”
"बाकी तीन हजार में से," मित्या ने दृढ़ता से कहा।
“क्यों?” अभियोक्ता ने चिढ़कर मुस्कुराते हुए पूछा। “इसमें शर्मनाक क्या है?”
आपने तीन हज़ार में से आधा हिस्सा अलग क्यों रख दिया, जिसे आपने शर्मनाक तरीके से, या कहें तो 'अपमानजनक' ढंग से हड़प लिया था? तीन हज़ार लेना, आपने उसके साथ क्या किया, उससे ज़्यादा महत्वपूर्ण है। और वैसे, आपने ऐसा क्यों किया—आपने वह आधा हिस्सा क्यों अलग रखा, किस उद्देश्य से, किस मकसद से? क्या आप हमें यह समझा सकते हैं?
“ओह, सज्जनों, असली बात तो उद्देश्य है!” मित्या चिल्लाया। “मैंने इसे रखा है

मैं इसलिए अलग हो गया क्योंकि मैं नीच था, यानी क्योंकि मैं चालाक था, और ऐसे मामले में चालाक होना नीचता है... और वह नीचता पूरे एक महीने से चल रही है।"
"यह समझ के बाहर है।"
मुझे आप पर आश्चर्य होता है। लेकिन मैं इसे और स्पष्ट कर देता हूँ। शायद यह सचमुच ऐसा ही है।
समझ से परे। देखो, मेरी बात ध्यान से सुनो। मैं अपने सम्मान के लिए रखे गए तीन हज़ार रुपये ले लेता हूँ, उसे फिजूलखर्ची में उड़ा देता हूँ, मान लो कि मैंने सारे पैसे उड़ा दिए, और अगली सुबह उसके पास जाकर कहता हूँ, 'कात्या, मैंने गलती की है, मैंने तुम्हारे तीन हज़ार रुपये बर्बाद कर दिए,' क्या यह सही है? नहीं, यह सही नहीं है—यह बेईमानी और कायरता है, मैं एक जानवर हूँ, एक जानवर से भी कम आत्म-नियंत्रण वाला, है ना? लेकिन फिर भी मैं चोर नहीं हूँ? पक्का चोर तो नहीं, तुम मानोगे! मैंने उसे उड़ा दिया, लेकिन चुराया नहीं। अब दूसरा, कुछ बेहतर विकल्प: ध्यान से सुनो, वरना मैं फिर से भ्रमित हो सकता हूँ—मेरा सिर घूम रहा है—और इसलिए, दूसरे विकल्प के लिए: मैं यहाँ तीन हज़ार में से केवल पंद्रह सौ खर्च करता हूँ, यानी केवल आधा। अगले दिन मैं जाकर वह आधा हिस्सा उसके पास ले गया: 'कात्या, मुझसे ये पंद्रह सौ रुपये ले लो, मैं एक नीच और बेईमान बदमाश हूँ, क्योंकि मैंने आधा पैसा बर्बाद कर दिया है, और इसे भी बर्बाद कर दूँगा, इसलिए मुझे प्रलोभन से बचाओ!' अच्छा, उस विकल्प का क्या? मैं एक नीच और बदमाश होता, और जो चाहो कह लो; लेकिन चोर नहीं, पूरी तरह से चोर नहीं, या मैं बचा हुआ पैसा वापस नहीं लाता, बल्कि उसे भी रख लेता। वह तुरंत समझ जाती कि चूंकि मैं आधा पैसा वापस लाया हूँ, इसलिए मुझे खर्च किया हुआ पैसा चुकाना चाहिए, कि मुझे कोशिश करना कभी नहीं छोड़ना चाहिए, कि मुझे इसे कमाने और चुकाने के लिए काम करना चाहिए। तो उस स्थिति में मैं बदमाश होता, लेकिन चोर नहीं, तुम जो चाहो कह लो, चोर नहीं!
अभियोजक ने कहा, "मैं मानता हूं कि इसमें एक निश्चित अंतर है।"
ठंडी मुस्कान। "लेकिन यह अजीब बात है कि आपको इतना महत्वपूर्ण अंतर दिखाई देता है।"
“हाँ, मुझे एक महत्वपूर्ण अंतर दिखाई देता है! हर आदमी बदमाश हो सकता है, और
शायद हर इंसान बदमाश होता है, लेकिन हर कोई चोर नहीं हो सकता, चोर बनने के लिए तो घोर बदमाश होना पड़ता है। ओह, बेशक, मुझे ये बारीक अंतर करना नहीं आता... लेकिन चोर बदमाश से नीच होता है, यही मेरा मानना है। सुनो, मैं पूरे महीने पैसे अपने साथ रखता हूँ, हो सकता है कल मैं उसे लौटाने का मन बना लूँ, और फिर मैं बदमाश न रहूँ, लेकिन मैं अपना मन नहीं बना पा रहा हूँ, तुम देखो, हालाँकि मैं हर दिन मन बना रहा हूँ, हर दिन खुद को ऐसा करने के लिए प्रेरित कर रहा हूँ, फिर भी पूरे महीने मैं ऐसा नहीं कर पा रहा हूँ, तुम देखो। क्या यह तुम्हारी सोच के अनुसार सही है, क्या यह सही है?
"बिल्कुल, यह सही नहीं है, यह मैं पूरी तरह समझ सकता हूँ, और यह कि मैं नहीं समझता।"
“विवाद,” अभियोक्ता ने संयम से उत्तर दिया। “चलिए इन पेचीदगियों और भेदों पर चर्चा बंद करते हैं और कृपया मुद्दे पर लौटते हैं। मुद्दा यह है कि आपने अभी तक हमें यह नहीं बताया है, बल्कि हमने आपसे कई बार पूछा है, कि आपने आखिर पैसे को आधा क्यों किया, एक हिस्सा बर्बाद कर दिया और दूसरा छिपा दिया? आपने इसे किस उद्देश्य से छिपाया, उस पंद्रह सौ का आप क्या करने वाले थे? मैं इस प्रश्न पर जोर देता हूँ, दिमित्री फ्योदोरोविच।”
“हाँ, बिल्कुल!” मित्या ने अपने माथे पर हाथ मारते हुए कहा; “माफ़ कर दो।”
मैं आपको परेशान कर रहा हूँ, और मुख्य बात नहीं समझा पा रहा हूँ, वरना आप एक मिनट में समझ जाते, क्योंकि असल शर्मनाक तो इसके पीछे का मकसद है! देखिए, यह सब मेरे प्यारे पिता जी के कारण हुआ था। वे हमेशा अग्रफेना अलेक्जेंड्रोवना को परेशान करते रहते थे, और मुझे जलन होती थी; मुझे लगता था कि वह मेरे और उनके बीच दुविधा में है। इसलिए मैं हर दिन सोचता रहता था, मान लीजिए कि वह अचानक अपना मन बना ले, मान लीजिए कि वह मुझे सताना बंद कर दे, और अचानक मुझसे कहे, 'मैं तुमसे प्यार करती हूँ, उससे नहीं; मुझे दुनिया के दूसरे छोर पर ले चलो।' और मेरे पास केवल चालीस कोपेक हों; मैं उसे कैसे ले जा सकता था, मैं क्या कर सकता था? मैं तो बिल्कुल ही खो जाता। देखिए, मैं उसे तब नहीं जानता था, मैं उसे नहीं समझता था, मुझे लगता था कि उसे पैसे चाहिए, और वह मेरी गरीबी को माफ नहीं करेगी। और इसलिए मैंने उस तीन हज़ार में से आधा हिस्सा बड़ी बेरहमी से गिना, उसे सिल दिया, हिसाब-किताब लगाकर, नशे में धुत होने से पहले ही सिल दिया, और सिलने के बाद बाकी बचे हुए पैसे से शराब पीने चला गया। हाँ, यह बहुत ही घटिया हरकत थी। अब समझे?

दोनों वकील जोर से हंस पड़े।
"मुझे लगता है कि आपका ऐसा न करना समझदारी और नैतिकता की दृष्टि से उचित होता।"
“सब कुछ बर्बाद कर दिया,” निकोले पार्फेनोविच ने हंसते हुए कहा, “आखिरकार इसका मतलब क्या है?”
“अरे, मैंने इसे चुराया है, बात तो यही है! हे भगवान, तुम मुझे डरा देते हो।”
समझ न पाने की वजह से! हर दिन जब तक वो पंद्रह सौ मेरे गले में सिला हुआ था, हर दिन और हर घंटे मैं खुद से कहता था, 'तुम चोर हो! तुम चोर हो!' हाँ, इसीलिए मैं इस पूरे महीने इतना हिंसक रहा, इसीलिए मैंने शराबखाने में लड़ाई की, इसीलिए मैंने अपने पिता पर हमला किया, क्योंकि मुझे लगता था कि मैं चोर हूँ। मैं फैसला नहीं कर पा रहा था, मैंने अपने भाई अलेयोशा को भी उस पंद्रह सौ के बारे में बताने की हिम्मत नहीं की: मुझे लगता था कि मैं कितना बड़ा बदमाश और जेबकतरा हूँ। लेकिन, क्या आप जानते हैं, जब तक मैं उसे पहने रहता था, मैं हर घंटे खुद से कहता था: 'नहीं, दिमित्री फ्योदोरोविच, तुम शायद चोर नहीं हो।' क्यों? क्योंकि मैं अगले दिन जाकर कात्या को वो पंद्रह सौ लौटा सकता था। और कल ही मैंने फेन्या के यहाँ से पेरहोतिन जाते समय अपने गले से ताबीज उतारने का फैसला किया। उस पल तक मैं ऐसा करने की हिम्मत नहीं जुटा पाया था। और जब मैंने उसे फाड़ डाला, तभी मैं एक पक्का चोर बन गया, जीवन भर के लिए एक चोर और बेईमान आदमी। क्यों? क्योंकि, इसके साथ ही मैंने कात्या के पास जाकर यह कहने का अपना सपना भी तोड़ दिया, 'मैं बदमाश हूँ, लेकिन चोर नहीं!' क्या अब समझे? क्या समझे?
“कल आपने ऐसा करने का फैसला क्यों किया?” निकोले
परफेनोविच ने बीच में ही बात काट दी।
“क्यों? यह पूछना बेतुका है। क्योंकि मैंने खुद को मरने की सजा दे दी थी।
आज सुबह पांच बजे, यहीं, भोर में। मैंने सोचा था कि चोर बनकर मरना कोई मायने नहीं रखता, इज्जतदार आदमी बनकर। लेकिन अब मुझे पता चला है कि ऐसा नहीं है, फर्क पड़ता है। यकीन मानिए, सज्जनों, इस रात मुझे सबसे ज्यादा सताने वाली बात यह नहीं थी कि मैंने उस बूढ़े नौकर को मार डाला, और साइबेरिया जाने का खतरा मंडरा रहा था, ठीक उसी समय जब मेरे प्यार का फल मिल रहा था और मेरे लिए स्वर्ग के द्वार फिर से खुल रहे थे। ओह, उस बात ने भी मुझे सताया, लेकिन उस तरह से नहीं: उस घिनौने एहसास से ज्यादा नहीं कि मैंने आखिरकार अपनी छाती से वह पैसा निकाल कर खर्च कर दिया और एक पक्का चोर बन गया! ओह, सज्जनों, मैं फिर से आपसे कहता हूँ, भारी मन से, मैंने इस रात बहुत कुछ सीखा है। मैंने सीखा है कि बदमाश बनकर जीना ही नहीं, बल्कि बदमाश बनकर मरना भी नामुमकिन है... नहीं, सज्जनों, ईमानदारी से मरना चाहिए...
मित्या का चेहरा पीला पड़ गया था। उसके चेहरे पर थकावट और उदासी साफ झलक रही थी।
उसका अत्यधिक उत्साहित होना।
“मैं अब आपको समझने लगा हूँ, दिमित्री फ्योदोरोविच,”
अभियोक्ता ने धीरे-धीरे, कोमल और लगभग सहानुभूतिपूर्ण स्वर में कहा, “लेकिन यह सब, अगर आप मुझे ऐसा कहने की अनुमति दें, तो मेरी राय में मानसिक तनाव का मामला है... आपके अत्यधिक तनावग्रस्त तंत्रिकाओं का, बस यही है। और उदाहरण के लिए, आपने उस महिला को पंद्रह सौ लौटाकर, जिसने आपको वह राशि सौंपी थी, लगभग एक महीने की इस पीड़ा से खुद को क्यों नहीं बचाया? और आपने उसे सब कुछ क्यों नहीं समझाया, और आपकी स्थिति को देखते हुए, जिसे आप इतना दयनीय बताते हैं, आपने उस योजना का सहारा क्यों नहीं लिया जो स्वाभाविक रूप से किसी के मन में आती, यानी, अपनी गलतियों को ईमानदारी से स्वीकार करने के बाद, आपने उससे अपने खर्चों के लिए आवश्यक राशि उधार क्यों नहीं मांगी, जिसे वह अपने उदार हृदय से निश्चित रूप से आपकी संकट की स्थिति में मना नहीं करती, खासकर अगर यह किसी गारंटी के साथ होती, या व्यापारी सैमसनोव और मैडम होहलाकोव को दी गई आपकी जमानत पर भी? मुझे लगता है कि आप अभी भी उस जमानत को मूल्यवान मानते हैं?”
मित्या का चेहरा अचानक लाल हो गया।
“क्या आप मुझे इतना बड़ा बदमाश समझते हैं?
"क्या आप सच में ऐसा कह रहे हैं?" उसने अभियोक्ता की आंखों में सीधे देखते हुए और अपने कानों पर विश्वास न कर पाने की स्थिति में गुस्से से कहा।
मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि मैं गंभीर हूं... आपको ऐसा क्यों लगता है कि मैं गंभीर नहीं हूं?

अब अभियोक्ता की बारी थी आश्चर्यचकित होने की।
“ओह, यह कितना नीच होता! सज्जनों, क्या आप जानते हैं, आप
मुझे यातना दे रहे हो! मैं तुम्हें सब कुछ बता दूँ, ठीक है। मैं अपने सारे घिनौने गुनाह कबूल कर लूँगा, लेकिन तुम्हें शर्मिंदा करने के लिए, और तुम खुद हैरान हो जाओगे कि इंसानी जुनून किस हद तक नीचता में डूब सकते हैं। तुम्हें पता होना चाहिए कि मैंने खुद भी वही योजना बनाई थी, वही योजना जिसकी बात तुमने अभी की, अभियोक्ता! जी हाँ, सज्जनों, यह विचार मेरे मन में भी इस पूरे महीने से चल रहा था, यहाँ तक कि मैं कात्या के पास जाने का फैसला करने ही वाला था—मैं इतना नीच था कि ऐसा कर सकता था। लेकिन उसके पास जाना, उसे अपने धोखे के बारे में बताना, और उसी धोखे के लिए उसे अंजाम देना, उस धोखे के खर्चे के लिए कात्या से पैसे माँगना (भीख माँगना, समझे? भीख माँगना), और फिर सीधे उससे भागकर दूसरी, प्रतिद्वंद्वी के पास जाना, जिसने उससे नफरत की और उसका अपमान किया—सोचो! तुम पागल हो गए हो, अभियोक्ता!
मैं पागल तो नहीं हूँ, लेकिन मैंने जल्दबाजी में बिना सोचे-समझे बोल दिया...
स्त्री-सुलभ ईर्ष्या... अगर इस मामले में ईर्ष्या हो सकती है, जैसा कि आप दावा करते हैं... हाँ, शायद कुछ ऐसा ही है," अभियोक्ता ने मुस्कुराते हुए कहा।
“लेकिन ऐसा होता तो कितनी बदनामी होती!” मित्या ने अपनी मुट्ठी नीचे पटकी।
मेज पर गुस्से से पटकते हुए। “यह तो हद से ज़्यादा घिनौना होता! हाँ, क्या आप जानते हैं कि वह मुझे वह पैसा दे सकती थी, हाँ, और वह दे भी देती; वह ज़रूर देती, मुझसे बदला लेने के लिए, वह अपना प्रतिशोध पूरा करने के लिए, मेरे प्रति अपना तिरस्कार दिखाने के लिए, क्योंकि उसका स्वभाव भी नश्वर है, और वह बहुत क्रोधी स्त्री है। मैं भी पैसा ले लेता, ओह, मुझे ले लेना चाहिए था; मुझे ले लेना चाहिए था, और फिर, मेरे बाकी जीवन के लिए... हे भगवान! मुझे क्षमा करें, सज्जनों, मैं इतना रो रहा हूँ क्योंकि यह विचार मेरे मन में हाल ही में आया है, परसों ही, उस रात जब मुझे ल्यागवी के साथ वह सब परेशानी हो रही थी, और उसके बाद कल, पूरे दिन, मुझे याद है, जब तक वह घटना नहीं हुई...”
“किस समय तक क्या हुआ?” निकोले पार्फेनोविच ने उत्सुकता से पूछा, लेकिन
मित्या ने इसे नहीं सुना।
“मैंने तुमसे एक भयानक बात कबूल की है,” मित्या ने उदास स्वर में कहा।
निष्कर्ष। “आपको इसकी सराहना करनी चाहिए, और उससे भी बढ़कर, आपको इसका सम्मान करना चाहिए, क्योंकि अगर नहीं, अगर इससे आपकी आत्माएं अप्रभावित रहती हैं, तो सज्जनों, आपमें मेरे लिए कोई सम्मान नहीं है, मैं आपको बता रहा हूँ, और आप जैसे लोगों के सामने यह स्वीकार करने पर मैं शर्म से मर जाऊँगा! ओह, मैं खुद को गोली मार लूँगा! हाँ, मैं समझ गया, मैं पहले ही समझ गया हूँ कि आप मुझ पर विश्वास नहीं करते। क्या, आप इसे भी लिखना चाहते हैं?” वह निराशा में चिल्लाया।
“हाँ, आपने अभी जो कहा,” निकोले पारफेनोविच ने देखते हुए कहा।
आश्चर्य से उसने उससे कहा, "यानी, अंतिम क्षण तक तुम कैटेरिना इवानोवना के पास जाकर उससे वह रकम मांगने के बारे में सोच रहे थे... मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ, यह हमारे लिए, दिमित्री फ्योदोरोविच, एक बहुत ही महत्वपूर्ण सबूत है, मेरा मतलब है पूरे मामले के लिए... और विशेष रूप से तुम्हारे लिए, तुम्हारे लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण है।"
“हे भगवान!” मित्या ने हाथ ऊपर उठाते हुए कहा। “ऐसा मत लिखो।”
खैर, थोड़ी शर्म तो करो। मैंने तुम्हारे सामने अपना दिल टुकड़े-टुकड़े कर दिया है, और तुम इस मौके का फायदा उठाकर दोनों हिस्सों के घावों को कुरेद रहे हो... हे भगवान!
हताशा में उसने अपना चेहरा अपने हाथों में छिपा लिया।
“दिमित्री फ्योदोरोविच, आप इतनी चिंता न करें,” उन्होंने कहा।
अभियोजक ने कहा, “जो कुछ भी लिखा गया है, वह बाद में आपको पढ़कर सुनाया जाएगा, और जिस बात से आप सहमत नहीं होंगे, उसे हम आपकी इच्छानुसार बदल देंगे। लेकिन अब मैं आपसे एक छोटा सा सवाल दोबारा पूछता हूँ। क्या किसी ने भी, बिल्कुल किसी ने भी, उस पैसे के बारे में आपसे कुछ नहीं सुना जो आपने हड़प लिया था? मुझे आपको बताना होगा, इस पर विश्वास करना लगभग असंभव है।”
“कोई नहीं, कोई नहीं, मैंने तुम्हें पहले भी बताया था, या फिर तुम समझ नहीं पाए।”

कुछ भी! मुझे अकेला छोड़ दो!
“बहुत अच्छा, इस मामले की व्याख्या अवश्य ही की जाएगी, और इसके लिए पर्याप्त सबूत मौजूद हैं।”
इसके लिए समय है, लेकिन इस बीच, विचार कीजिए; हमारे पास शायद एक दर्जन गवाह हैं कि आपने खुद यह बात फैलाई, और यहाँ तक कि आपने यहाँ खर्च किए गए तीन हज़ार के बारे में लगभग हर जगह चिल्ला-चिल्लाकर बताया; तीन हज़ार, पंद्रह सौ नहीं। और अब भी, जब आपको कल का पैसा मिला, तो आपने कई लोगों को यह विश्वास दिलाया कि आप अपने साथ तीन हज़ार लाए थे।
आपके पास दर्जनों नहीं, बल्कि सैकड़ों गवाह हैं, दो सौ।
"गवाहों, दो सौ ने इसे सुना है, हजारों ने सुना है!" मित्या चिल्लाया।
“देखिए, सभी इसकी गवाही देते हैं। और 'सभी' शब्द का अर्थ है...”
कुछ।"
“इसका कोई मतलब नहीं है। मैंने बकवास की, और सब लोग उसे दोहराने लगे।”
"लेकिन आपको 'बकवास करने' की क्या ज़रूरत थी, जैसा कि आप इसे कहते हैं?"
“शैतान ही जाने। शायद शेखी बघारने के कारण... इतना कुछ बर्बाद करने के बाद
पैसा... शायद उस पैसे को भुलाने की कोशिश में जो मैंने गँवा लिया था... हाँ, यही वजह थी... धिक्कार है... तुम मुझसे यह सवाल कितनी बार पूछोगे? खैर, मैंने झूठ बोला, और बात वहीं खत्म हो गई, एक बार झूठ बोल देने के बाद मुझे उसे सुधारने की परवाह नहीं थी। आखिर कभी-कभी इंसान झूठ क्यों बोलता है?
दिमित्री फ्योदोरोविच, यह तय करना बहुत मुश्किल है कि किसी पुरुष को क्या बनाता है।
“झूठ बोलो,” अभियोक्ता ने प्रभावशाली ढंग से कहा। “लेकिन मुझे बताओ, क्या वह ‘ताबीज’, जैसा कि तुम इसे कहते हो, जो तुम्हारे गले में है, कोई बड़ी बात थी?”
नहीं, ज्यादा बड़ा नहीं।
"उदाहरण के लिए, कितना बड़ा?"
"अगर आप सौ रूबल के नोट को आधा मोड़ दें, तो उसका आकार इतना होगा।"
“बेहतर होगा कि आप हमें इसके अवशेष दिखाएं। आपके पास वे अवश्य होंगे।”
कहीं।"
"धिक्कार है, यह क्या बकवास है! मुझे नहीं पता वे कहाँ हैं।"
लेकिन मुझे माफ कीजिए: आपने इसे अपने गले से कहाँ और कब उतारा था?
आपके अपने ही सबूतों के अनुसार आप घर नहीं गए थे।
“जब मैं फेन्या के यहाँ से पेरहोटिन के यहाँ जा रहा था, तो रास्ते में मैंने इसे फाड़ दिया।”
मैंने अपनी गर्दन पर हाथ रखा और पैसे निकाल लिए।
“अंधेरे में?”
मुझे रोशनी की क्या जरूरत है? मैंने तो इसे अपनी उंगलियों से एक मिनट में कर लिया।
"बिना कैंची के, सड़क पर?"
“बाजार में, मुझे लगता है। कैंची क्यों? यह एक पुराना कपड़ा था।
एक मिनट में ही सब कुछ बिखर गया।
"बाद में तुमने इसे कहाँ रखा?"
मैंने इसे वहीं गिरा दिया था।
"यह ठीक कहाँ था?"
बाज़ार में, बाज़ार में! शैतान ही जानता है
आप किसलिए जानना चाहते हैं?
“यह बेहद महत्वपूर्ण है, दिमित्री फ्योदोरोविच। यह ठोस सबूत होगा।”
आपके पक्ष में सबूत हैं। आपको यह बात समझ क्यों नहीं आ रही? एक महीने पहले इसे सिलने में आपकी मदद किसने की थी?
“किसी ने मेरी मदद नहीं की। मैंने यह सब खुद किया।”
"क्या आप सिलाई कर सकते हैं?"
“एक सैनिक को सिलाई करना आना चाहिए। इसके लिए किसी ज्ञान की आवश्यकता नहीं थी।

वह।"
“तुम्हें वह सामग्री कहाँ से मिली, यानी वह फटा हुआ कपड़ा जिसमें तुमने सिलाई की?”
धन?"
"क्या तुम इस समय हंस रहे हो?"
“बिल्कुल नहीं। और दिमित्री फ्योदोरोविच, हम हंसने के मूड में नहीं हैं।”
मुझे नहीं पता कि मुझे यह कपड़ा कहाँ से मिला—कहीं से तो मिला ही होगा, शायद।"
मुझे लगा था कि तुम इसे भूल नहीं सकते?
"सच कहूँ तो, मुझे याद नहीं है। शायद मैंने अपने कपड़े का एक टुकड़ा फाड़ दिया था।"
लिनन।"
“यह बहुत दिलचस्प है। हो सकता है कि कल हमें आपके ठहरने की जगह पर वह चीज़ मिल जाए।”
वह कमीज़ या जो भी कपड़ा था जिससे तुमने वह चिथड़ा फाड़ा था। वह किस तरह का चिथड़ा था, कपड़ा या लिनन?
“पता नहीं वो क्या था। ज़रा रुकिए... मुझे लगता है मैंने उसे किसी चीज़ से नहीं फाड़ा था। वो कैलिको का एक टुकड़ा था... मुझे लगता है मैंने उसे अपनी मकान मालकिन की टोपी में सिल दिया था।”
"क्या आपकी मकान मालकिन की टोपी में?"
“हां। मैंने इसे उससे ले लिया था।”
"किस प्रकार तुमने यह पाया?"
"देखो, मुझे याद है एक बार मैंने टोपी को कपड़े की तरह इस्तेमाल किया था, शायद अपने चेहरे को पोंछने के लिए।"
पेन चालू था। मैंने बिना पूछे ही उसे ले लिया, क्योंकि वह एक बेकार सा कपड़ा था। मैंने उसे फाड़ दिया और उसमें लिखे नोट्स सिल दिए। मुझे लगता है कि मैंने उन्हें उसी कपड़े में सिला था। एक पुराना कैलिको का टुकड़ा, जिसे हज़ार बार धोया जा चुका था।
"और अब आपको यह बात निश्चित रूप से याद है?"
मुझे पक्का पता नहीं है। मुझे लगता है कि यह टोपी में था। लेकिन छोड़ो,
इससे क्या फर्क पड़ता है?
"तो फिर आपकी मकान मालकिन को याद रहेगा कि वह चीज खो गई थी?"
“नहीं, वो नहीं भूलेगी, उसे इसकी कमी महसूस नहीं हुई। ये तो एक पुराना फटा हुआ कपड़ा था, मैं तुम्हें बता रही हूँ, एक पुराना।”
"फटा हुआ कपड़ा जिसकी कोई कीमत नहीं है।"
“और आपको सुई और धागा कहाँ से मिला?”
“मैं अब रुकता हूँ। मैं और कुछ नहीं कहूँगा। बस बहुत हो गया!” मित्या ने हार मानते हुए कहा।
अंततः उसका गुस्सा फूट पड़ा।
“यह अजीब बात है कि आप पूरी तरह से भूल गए कि आप कहाँ थे।”
उन्होंने उन टुकड़ों को बाजार में फेंक दिया।
"कल बाजार की सफाई का आदेश दें, और शायद
“तुम्हें मिल जाएगा,” मित्या ने ताना मारते हुए कहा। “बस करो, सज्जनों, बस करो!” उसने थकी हुई आवाज़ में कहा। “मुझे लगता है कि आप मुझ पर विश्वास नहीं करते! एक पल के लिए भी नहीं! यह मेरी गलती है, आपकी नहीं। मुझे इतना तैयार नहीं होना चाहिए था। क्यों, क्यों मैंने अपना राज़ आपको बताकर खुद को नीचा दिखाया? यह आपके लिए एक मज़ाक है। मैं आपकी आँखों से देख सकता हूँ। आपने ही मुझे इसमें फंसाया, अभियोक्ता? अगर हो सके तो जीत का गीत गाओ... धिक्कार है तुम पर, तुम यातना देने वालों!”
उसने अपना सिर झुकाया और अपना चेहरा हाथों में छिपा लिया। वकील चुप रहे।
एक मिनट बाद उसने अपना सिर उठाया और लगभग खाली नज़र से उनकी ओर देखा। उसके चेहरे पर अब घोर निराशा और हताशा झलक रही थी, और वह चुपचाप और निष्क्रिय बैठा था, मानो उसे इस बात का ज़रा भी एहसास न हो कि क्या हो रहा है। इस बीच, उन्हें अपना काम पूरा करना था। उन्हें तुरंत गवाहों से पूछताछ शुरू करनी थी। अब सुबह के आठ बज चुके थे। बत्तियाँ बहुत पहले ही बुझ चुकी थीं। मिखाइल मकारोविच

और कालगानोव, जो पूछताछ के दौरान लगातार कमरे में आते-जाते रहे थे, अब दोनों फिर से बाहर चले गए थे। वकील भी बहुत थके हुए लग रहे थे। यह एक भयानक सुबह थी, पूरा आसमान बादलों से घिरा था, और मूसलाधार बारिश हो रही थी। मित्या खिड़की से बाहर खाली नज़र से देखता रहा।
“क्या मैं खिड़की से बाहर देख सकता हूँ?” उसने निकोले पार्फेनोविच से पूछा।
अचानक।
“ओह, जितना आप चाहें,” दूसरे ने जवाब दिया।
मित्या उठा और खिड़की के पास गया। बारिश की बूँदें छोटी खिड़की पर ज़ोर से पड़ रही थीं।
खिड़की के हरे रंग के शीशे। खिड़की के ठीक नीचे उसे कीचड़ भरी सड़क दिखाई दे रही थी, और दूर, बारिश की धुंध में, गरीब, काली, जर्जर झोपड़ियों की एक कतार, जो बारिश में और भी काली और दयनीय लग रही थी। मित्या को सुनहरे बालों वाले फोबस की याद आई, और कैसे उसने सूरज की पहली किरण पड़ते ही खुद को गोली मारने का सोचा था। "शायद ऐसी सुबह में यह और भी बेहतर होता," उसने मुस्कुराते हुए सोचा, और अचानक, अपना हाथ नीचे की ओर झटकते हुए, वह अपने "यातना देने वालों" की ओर मुड़ा।
“सज्जनों,” वह चिल्लाया, “मुझे लगता है मैं हार गया हूँ! लेकिन वह? मुझे उसके बारे में बताइए।”
मैं आपसे विनती करता हूँ। क्या उसे मेरे साथ बर्बाद होने की ज़रूरत है? वह निर्दोष है, आप जानते हैं, कल रात जब वह रोते हुए बोली, 'यह सब मेरी गलती है!', तो वह होश में नहीं थी। उसने कुछ नहीं किया, कुछ भी नहीं! मैं पूरी रात आपके साथ बैठकर उसके लिए दुखी रहा... क्या आप मुझे बता सकते हैं कि अब आप उसके साथ क्या करने वाले हैं?
“दिमित्री, इस मामले में आप पूरी तरह निश्चिंत हो सकते हैं।”
“फ्योदोरोविच,” अभियोक्ता ने तुरंत और स्पष्ट तत्परता से उत्तर दिया। “हमारे पास अभी तक उस महिला के मामले में हस्तक्षेप करने का कोई आधार नहीं है जिसमें आपकी इतनी रुचि है। मुझे उम्मीद है कि मामले की आगे की कार्यवाही में भी यही स्थिति रहेगी... इसके विपरीत, हम इस मामले में अपनी पूरी शक्ति लगा देंगे। आप निश्चिंत रहें।”
“सज्जनों, मैं आप सबका धन्यवाद करता हूँ। मुझे पता था कि आप ईमानदार और सीधे-सादे हैं।
सब कुछ के बावजूद लोग। आपने मेरे दिल से बोझ उतार दिया... अब हम क्या करें? मैं तैयार हूँ।
“खैर, हमें जल्दी करनी चाहिए। हमें जाँच-पड़ताल शुरू करनी होगी।”
गवाहों को बिना देरी किए। यह आपकी उपस्थिति में किया जाना चाहिए और इसलिए—"
“क्या हमें पहले चाय नहीं पी लेनी चाहिए?” निकोले पारफेनोविच ने बीच में कहा, “मैं
हमें लगता है कि हम इसके हकदार थे!
उन्होंने फैसला किया कि अगर नीचे चाय तैयार हो (मिहाइल मकारोविच)
(निःसंदेह, वे कुछ लेने नीचे गए होंगे) वे एक गिलास पीते और फिर "लगातार पीते रहते", अपना नाश्ता किसी बेहतर अवसर के लिए टालते रहते। चाय सचमुच नीचे तैयार थी, और जल्दी ही ऊपर लाई गई। मित्या ने पहले तो निकोले पार्फेनोविच द्वारा विनम्रतापूर्वक दिए गए गिलास को लेने से इनकार कर दिया, लेकिन बाद में उसने खुद ही गिलास मांगा और लालच से पी लिया। वह आश्चर्यजनक रूप से थका हुआ लग रहा था। उसकी असाधारण शक्ति को देखते हुए यह अनुमान लगाया जा सकता था कि एक रात की मौज-मस्ती, चाहे कितनी भी उग्र भावनाएं क्यों न हों, उस पर शायद ही कोई असर डालती। लेकिन उसे ऐसा लग रहा था कि वह मुश्किल से अपना सिर ऊपर उठा पा रहा है, और समय-समय पर उसके आसपास की सभी वस्तुएं उसकी आंखों के सामने हिलती-डुलती और नाचती हुई प्रतीत हो रही थीं। "थोड़ा और पी लिया तो मैं पागल हो जाऊंगा," उसने खुद से कहा।

अध्याय 8

गवाहों के साक्ष्य।
बच्चा

गवाहों की पूछताछ शुरू हुई। लेकिन हम अपनी कहानी को पहले की तरह विस्तार से नहीं बताएंगे। इसलिए हम इस बात पर भी ध्यान नहीं देंगे कि निकोले पारफेनोविच ने हर गवाह को कैसे समझाया कि उसे सच्चाई और अंतरात्मा के अनुसार गवाही देनी होगी, और बाद में उसे शपथ लेकर अपनी गवाही दोहरानी होगी, हर गवाह को अपनी गवाही के प्रोटोकॉल पर हस्ताक्षर करने के लिए कहा गया, इत्यादि। हम केवल इतना ही कहेंगे कि पूछताछ में मुख्य रूप से तीन हजार रूबल के सवाल पर जोर दिया गया, यानी क्या मित्या ने एक महीने पहले, मोक्रोए में, पहली बार तीन हजार रूबल खर्च किए थे या पंद्रह हजार? और क्या उसने कल भी तीन हजार रूबल खर्च किए थे? अफसोस की बात है कि सभी गवाहों द्वारा दी गई गवाही मित्या के खिलाफ निकली। उसके पक्ष में एक भी गवाही नहीं थी, और कुछ गवाहों ने मित्या की कहानी के विपरीत नए, लगभग निर्णायक तथ्य पेश किए।
सबसे पहले ट्रिफॉन बोरिसोविच का गवाह था। वह उपस्थित नहीं था।
वकीलों के सामने खड़े होकर भी वह ज़रा भी शर्मिंदा नहीं थे। इसके विपरीत, उनके चेहरे पर आरोपी के प्रति कड़ा और तीव्र आक्रोश झलक रहा था, जिससे वे सत्यनिष्ठ और गरिमापूर्ण प्रतीत हो रहे थे। उन्होंने कम ही बोला और संयम से अपने प्रश्नों का उत्तर देने का इंतज़ार किया, फिर सटीक और सोच-समझकर जवाब दिए। दृढ़तापूर्वक और बिना किसी झिझक के उन्होंने गवाही दी कि एक महीने पहले खर्च की गई राशि तीन हज़ार से कम नहीं हो सकती थी, और यहाँ के सभी किसान गवाही देंगे कि उन्होंने दिमित्री फ्योदोरोविच से ही तीन हज़ार की राशि का ज़िक्र सुना था। “उन्होंने अकेले जिप्सी लड़कियों पर कितना पैसा लुटा दिया! मुझे यकीन है कि उन्होंने अकेले उन पर ही एक हज़ार रुपये बर्बाद कर दिए।”
“मुझे विश्वास नहीं होता कि मैंने उन्हें पाँच सौ रुपये दिए,” मित्या ने उदास स्वर में कहा।
इस पर टिप्पणी करें। “यह अफसोस की बात है कि मैंने उस समय पैसे नहीं गिने, लेकिन मैं नशे में था...”
मित्या पर्दे की ओर पीठ करके एक तरफ बैठा था। वह सुन रहा था।
उदास, हताश और थके हुए स्वर में, मानो वह कहना चाह रहा हो:
"जो चाहो कह लो। अब इससे कोई फर्क नहीं पड़ता।"
“दिमित्री फ्योदोरोविच, उन पर एक हजार से अधिक लोग सवार हुए थे,” जवाब दिया गया।
ट्रिफॉन बोरिसोविच दृढ़ता से बोले, “तुमने इसे यूँ ही इधर-उधर फेंक दिया और उन्होंने उठा लिया। वे बदमाश, चोर और घोड़े चुराने वाले थे। उन्हें यहाँ से भगा दिया गया है, या शायद वे खुद गवाही देंगे कि उन्होंने तुमसे कितना लूटा। मैंने खुद तुम्हारे हाथों में रकम देखी थी—गिनती तो नहीं की, तुमने मुझे गिनने नहीं दिया —लेकिन देखकर तो लगता है कि वह पंद्रह सौ से कहीं ज़्यादा थी... पंद्रह सौ, सच में! हमने भी पैसे देखे हैं। हम रकम का अंदाज़ा लगा सकते हैं...”
कल खर्च की गई राशि के बारे में उन्होंने दावा किया कि दिमित्री फ्योदोरोविच ने
उसने पहुंचते ही उसे बताया कि वह अपने साथ तीन हजार लोग लाया है।
“क्या सच में ऐसा है, ट्रिफॉन बोरिसोविच?” मित्या ने उत्तर दिया। “ज़रूर मैं
मैंने इतने पक्के तौर पर यह घोषणा नहीं की थी कि मैं तीन हजार लाया था?
“आपने ऐसा कहा था, दिमित्री फ्योदोरोविच। आपने एंड्री से पहले भी ऐसा कहा था।”
एंड्री खुद अभी भी यहीं है। उसे बुलाओ। और जब तुम हॉल में गायक मंडली का भाषण दे रहे थे, तो तुमने सीधे चिल्लाकर कहा था कि तुम अपना छठा हज़ार यहीं छोड़ जाओगे—यानी जो तुमने पहले खर्च किया था, हमें यही समझना चाहिए। स्टेपन और सेम्योन ने यह सुना था, और प्योत्र फोमिच कालगानोव भी उस समय तुम्हारे बगल में खड़ा था। शायद उसे याद हो...
छठे हजार के बारे में मिले सबूतों ने असाधारण स्थिति पैदा कर दी।

दोनों वकीलों पर इसका गहरा प्रभाव पड़ा। वे गणना के इस नए तरीके से बेहद खुश थे; तीन और तीन मिलकर छह होते हैं, यानी तब तीन हजार और अब तीन मिलकर छह होते हैं, यह बात स्पष्ट थी।
उन्होंने ट्रिफॉन बोरिसोविच द्वारा सुझाए गए सभी किसानों से पूछताछ की।
स्टेपन और सेम्योन, ड्राइवर आंद्रेई और कालगानोव। किसानों और ड्राइवर ने बिना किसी हिचकिचाहट के ट्रिफॉन बोरिसोविच के बयान की पुष्टि की। उन्होंने विशेष ध्यान से आंद्रेई द्वारा सड़क पर मित्या के साथ हुई बातचीत का विवरण लिखा: "'मैं, दिमित्री फ्योदोरोविच, कहाँ जा रहा हूँ, स्वर्ग या नरक, और क्या मुझे परलोक में क्षमा मिलेगी या नहीं?'"
मनोवैज्ञानिक इप्पोलिट किरिलोविच ने यह बात हल्की मुस्कान के साथ सुनी, और
उन्होंने यह सुझाव देते हुए अपनी बात समाप्त की कि दिमित्री फ्योदोरोविच कहाँ जाएँगे, इस संबंध में की गई इन टिप्पणियों को "मामले में शामिल किया जाना चाहिए।"
बुलाए जाने पर कालगानोव अनिच्छा से, तेवर चढ़ाए और चिड़चिड़े मूड में अंदर आया।
और उसने वकीलों से ऐसे बात की मानो वह उनसे जीवन में पहले कभी नहीं मिला हो, जबकि वे उसके परिचित थे जिनसे वह लंबे समय से हर दिन मिलता रहा था। उसने यह कहकर बात शुरू की कि "उसे इसके बारे में कुछ नहीं पता और वह जानना भी नहीं चाहता।" लेकिन ऐसा प्रतीत हुआ कि उसने "छठे" हज़ार के बारे में सुना था, और उसने स्वीकार किया कि वह उस समय वहीं पास में खड़ा था। जहाँ तक वह देख सकता था, उसे "पता नहीं था" कि मित्या के पास कितना पैसा था। उसने पुष्टि की कि पोलिश लोगों ने ताश में धोखा दिया था। बार-बार पूछे गए सवालों के जवाब में उसने कहा कि पोलिश लोगों के बाहर होने के बाद, अग्राफेना अलेक्जेंड्रोवना के साथ मित्या के संबंध निश्चित रूप से सुधर गए थे, और उसने कहा था कि वह उससे प्यार करती है। उसने अग्राफेना अलेक्जेंड्रोवना के बारे में संयम और सम्मान के साथ बात की, मानो वह उच्च समाज की कोई महिला हो, और उसने एक बार भी उसे ग्रुशेंका कहकर पुकारने की अनुमति नहीं दी। गवाही देने के प्रति युवक की स्पष्ट अनिच्छा के बावजूद, इप्पोलिट किरिलोविच ने उससे काफी देर तक पूछताछ की और उसी से उस रात मित्या के "रोमांस" के सभी विवरण प्राप्त किए। मित्या ने कालगानोव को एक बार भी टोका नहीं। अंत में उन्होंने युवक को जाने दिया और वह खुलेआम आक्रोश के साथ कमरे से बाहर निकल गया।
पोलैंडवासियों की भी जाँच की गई। हालाँकि वे अपने-अपने कमरों में सो चुके थे।
कमरे में पहुँचते ही वे पूरी रात सोए नहीं थे, और पुलिस अधिकारियों के आते ही उन्होंने जल्दी से कपड़े पहने और तैयार हो गए, क्योंकि उन्हें पता था कि उन्हें ज़रूर बुलाया जाएगा। उन्होंने गरिमा के साथ गवाही दी, हालाँकि थोड़ी घबराहट भी थी। पता चला कि वह छोटा पोलिश व्यक्ति बारहवीं कक्षा का एक सेवानिवृत्त अधिकारी था, जिसने साइबेरिया में पशु चिकित्सक के रूप में सेवा की थी। उसका नाम मुस्यालोविच था। पैन वुबलेव्स्की एक अप्रमाणित दंत चिकित्सक निकला। हालाँकि निकोले पारफेनोविच ने कमरे में प्रवेश करते ही उनसे सवाल पूछे, लेकिन दोनों ने अपने जवाब मिखाइल मकारोविच को दिए, जो एक तरफ खड़े थे, क्योंकि वे अपनी अज्ञानता में उन्हें सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति और कमांडर समझ रहे थे, और हर शब्द पर उन्हें "पैन कर्नल" कहकर संबोधित कर रहे थे। मिखाइल मकारोविच की कई फटकारों के बाद ही उन्हें समझ आया कि उन्हें अपने जवाब केवल निकोले पारफेनोविच को ही देने हैं। पता चला कि वे कुछ शब्दों में उच्चारण की गड़बड़ी को छोड़कर रूसी भाषा काफी अच्छी तरह से बोल सकते थे। पैन मुस्यालोविच ने ग्रुशेंका के साथ अपने पुराने और वर्तमान संबंधों के बारे में गर्व और उत्साह से बात की, जिससे मित्या तुरंत भड़क उठा और बोला कि वह उस "बदमाश" को अपने सामने इस तरह बोलने नहीं देगा! पैन मुस्यालोविच ने तुरंत "बदमाश" शब्द की ओर ध्यान दिलाया और अनुरोध किया कि इसे प्रोटोकॉल में लिख दिया जाए। मित्या गुस्से से आग बबूला हो गया।
"वह बदमाश है! बदमाश! आप इसे लिख सकते हैं। और लिख सकते हैं।"
और प्रोटोकॉल के बावजूद मैं अब भी घोषणा करता हूँ कि वह एक बदमाश है!" वह चिल्लाया।
हालांकि निकोले पारफेनोविच ने इसे प्रोटोकॉल में शामिल किया था, लेकिन उन्होंने दिखाया
अत्यंत प्रशंसनीय सूझबूझ और प्रबंधन। मित्या को कड़ी फटकार लगाने के बाद, उन्होंने मामले के रोमांटिक पहलू की आगे की सभी पूछताछ रोक दी और आवश्यक बातों पर आ गए। पोलिश लोगों द्वारा दिए गए एक साक्ष्य ने वकीलों का विशेष ध्यान आकर्षित किया: वह यह था कि उसी कमरे में, मित्या ने पान मुस्यालोविच

को रिश्वत देने की कोशिश की थी और उन्हें अपने दावे छोड़ने के लिए तीन हजार रूबल की पेशकश की थी, जिसमें से सात सौ रूबल अग्रिम और शेष दो हजार तीन सौ रूबल "अगले दिन शहर में भुगतान करने" के लिए थे। उन्होंने उस समय शपथ ली थी कि उनके पास मोक्रो में पूरी रकम नहीं है, बल्कि उनका पैसा शहर में है। मित्या ने गुस्से में कहा कि उन्होंने यह नहीं कहा था कि वह अगले दिन शहर में शेष राशि का भुगतान अवश्य करेंगे। लेकिन पान ब्रुबलेव्स्की ने इस कथन की पुष्टि की, और मित्या ने एक क्षण सोचने के बाद, भौंहें चढ़ाते हुए स्वीकार किया कि यह वही रहा होगा जो पोलिश लोगों ने कहा था, कि वह उस समय उत्तेजित थे, और शायद उन्होंने ऐसा कहा भी हो।
अभियोजक ने इस सबूत पर तुरंत प्रतिक्रिया दी। ऐसा प्रतीत हुआ
अभियोजन पक्ष के लिए यह साबित करने के लिए (और वास्तव में उन्होंने इसी आधार पर यह निष्कर्ष निकाला) कि मित्या के हाथ में आए तीन हज़ार रूबल में से आधे या कुछ रूबल वास्तव में कस्बे में कहीं छिपाए गए होंगे, या शायद यहीं मोकरो में कहीं। इससे अभियोजन पक्ष के लिए हैरान करने वाली यह परिस्थिति स्पष्ट हो जाती कि मित्या के पास केवल आठ सौ रूबल ही क्यों मिले। यह एकमात्र सबूत था, जो भले ही महत्वहीन था, लेकिन अब तक कुछ हद तक मित्या के पक्ष में था। अब उसके पक्ष में यह एकमात्र सबूत भी टूट गया था। अभियोजक के इस प्रश्न के उत्तर में कि शेष दो हज़ार तीन सौ रूबल उसे कहाँ से मिले, जबकि उसने स्वयं पंद्रह सौ से अधिक रूबल होने से इनकार किया था, मित्या ने आत्मविश्वास से उत्तर दिया कि उसका इरादा उस "छोटे लड़के" को पैसे नहीं, बल्कि चेरमाश्न्या गाँव पर अपने अधिकारों का एक औपचारिक हस्तांतरण विलेख देने का था, वे अधिकार जो वह पहले ही सैमसनोव और मैडम होहलाकोव को दे चुका था। अभियोजक ने "इस छल की निर्दोषता" पर सकारात्मक मुस्कान बिखेरी।
और आप कल्पना कीजिए कि वह इस तरह के कृत्य को विकल्प के रूप में स्वीकार कर लेता।
क्या आप दो हजार तीन सौ रूबल नकद में लेंगे?
“वह इसे अवश्य स्वीकार कर लेता,” मित्या ने गर्मजोशी से कहा। “क्यों,
देखो, वह इसके लिए दो हजार नहीं, बल्कि चार या छह हजार ही हथिया सकता था। वह अपने वकीलों, पोलिश और यहूदी वकीलों को काम पर लगा देता और शायद तीन हजार नहीं, बल्कि उस बूढ़े आदमी की पूरी संपत्ति ही हथिया लेता।
पैन मुस्यालोविच के साक्ष्य को, निश्चित रूप से, दर्ज किया गया था।
प्रोटोकॉल का पूरा विवरण दिया गया। फिर उन्होंने पोलिश लोगों को जाने दिया। ताश में धोखाधड़ी की घटना पर शायद ही कोई चर्चा हुई। निकोले पार्फेनोविच उनसे पहले से ही बहुत खुश थे और उन्हें छोटी-मोटी बातों में उलझाना नहीं चाहते थे, वैसे भी, यह ताश को लेकर एक मूर्खतापूर्ण, नशे में धुत होकर किया गया झगड़ा मात्र था। उस रात पहले ही बहुत शराबखोरी और अव्यवस्था हो चुकी थी... इसलिए दो सौ रूबल पोलिश लोगों की जेब में ही रह गए।
फिर बूढ़े मैक्सिमोव को बुलाया गया। वह दबे स्वर में अंदर आया, पास पहुँचा।
छोटे-छोटे कदमों से, बेहद अस्त-व्यस्त और उदास दिखते हुए, मैक्सिमोव नीचे आ रहे थे। इतने समय से वे ग्रुशेंका के पास नीचे शरण लिए बैठे थे, चुपचाप उनके बगल में बैठे रहते थे, और "बीच-बीच में वे उनके ऊपर रोने लगते और नीले चेक वाले रूमाल से अपनी आँखें पोंछते," जैसा कि मिखाइल मकारोविच ने बाद में वर्णन किया। इसलिए ग्रुशेंका खुद उन्हें शांत करने और दिलासा देने की कोशिश करने लगीं। बूढ़े व्यक्ति ने तुरंत स्वीकार किया कि उन्होंने गलती की है, कि उन्होंने दिमित्री फ्योदोरोविच से "अपनी गरीबी में दस रूबल" उधार लिए थे, और वे इसे चुकाने के लिए तैयार थे। निकोले पारफेनोविच के सीधे सवाल पर कि क्या उन्होंने ध्यान दिया था कि दिमित्री फ्योदोरोविच के हाथ में कितने पैसे थे, क्योंकि नोट लेते समय उन्हें वह रकम किसी और से बेहतर दिखाई देनी चाहिए थी, मैक्सिमोव ने अत्यंत दृढ़ता से कहा कि बीस हजार थे।
"क्या आपने इससे पहले कभी बीस हजार की संख्या देखी है?"
निकोले परफेनोविच ने मुस्कुराते हुए पूछा।
"सच कहूँ तो मेरे पास बीस नहीं, बल्कि सात हैं, जब मेरी पत्नी ने मेरी संपत्ति गिरवी रख दी थी।"
बहुत कम संपत्ति थी। वह मुझे बस दूर से ही देखने देती थी और उसके बारे में बढ़-चढ़कर बातें करती थी। वह बहुत मोटा बंडल था, जिसमें इंद्रधनुषी रंगों के नोट भरे थे। और दिमित्री फ्योदोरोविच के नोट तो सभी इंद्रधनुषी रंगों के थे...

उन्हें ज्यादा देर तक नहीं रखा गया। अंत में ग्रुशेंका की बारी आई। निकोले
पारफेनोविच स्पष्ट रूप से इस बात से आशंकित थे कि ग्रुशेंका के आने का मित्या पर क्या प्रभाव पड़ेगा, और उन्होंने उसे कुछ चेतावनी भरे शब्द कहे, लेकिन मित्या ने चुपचाप सिर झुका लिया, जिससे उन्हें यह समझ आ गया कि "वह कोई हंगामा नहीं करेगा।" मिखाइल मकारोविच स्वयं ग्रुशेंका को अंदर लेकर आए। वह गंभीर और उदास चेहरे के साथ अंदर आईं, जो लगभग संयमित लग रहा था, और निकोले पारफेनोविच द्वारा दी गई कुर्सी पर चुपचाप बैठ गईं। वह बहुत पीली पड़ गई थीं, उन्हें ठंड लग रही थी, और उन्होंने अपने शानदार काले शॉल को कसकर लपेट रखा था। उन्हें हल्का बुखार था - उस रात के बाद होने वाली लंबी बीमारी का पहला लक्षण। उनका गंभीर भाव, उनकी सीधी और गंभीर नज़र और शांत व्यवहार ने सभी पर बहुत अच्छा प्रभाव डाला। निकोले पारफेनोविच तो थोड़ा "आकर्षित" भी हो गए थे। बाद में इस बारे में बात करते हुए उन्होंने स्वयं स्वीकार किया कि तभी उन्हें "उस महिला की सुंदरता" का एहसास हुआ, क्योंकि हालांकि उन्होंने उसे पहले भी कई बार देखा था, लेकिन वह हमेशा उसे एक "देहाती वेश्या" ही समझते थे।
“उसके तौर-तरीके उच्च समाज की महिलाओं जैसे हैं,” उसने उत्साह से कहा और महिलाओं के समूह में उसके बारे में कानाफूसी करने लगा। लेकिन महिलाओं ने इस पर घोर नाराजगी जताई और तुरंत उसे “शरारती आदमी” कह दिया, जिससे उसे बहुत संतुष्टि मिली।
जैसे ही वह कमरे में दाखिल हुई, ग्रुशेंका ने एक पल के लिए ही उस ओर देखा।
मित्या ने उसे बेचैनी से देखा। लेकिन उसके चेहरे के भाव ने उसे तुरंत आश्वस्त कर दिया। शुरुआती स्वाभाविक पूछताछ और चेतावनियों के बाद, निकोले पार्फेनोविच ने थोड़ा हिचकिचाते हुए, लेकिन अत्यंत विनम्रता से, उससे पूछा कि सेवानिवृत्त लेफ्टिनेंट दिमित्री फ्योदोरोविच करामाज़ोव के साथ उसके क्या संबंध हैं। इस पर ग्रुशेंका ने दृढ़ता और शांत भाव से उत्तर दिया:
“वह मेरा परिचित था। वह मुझसे एक परिचित के तौर पर मिलने आया था।
पिछले महीने।" आगे पूछे गए जिज्ञासु प्रश्नों के उत्तर में उसने स्पष्ट और पूरी ईमानदारी से कहा कि यद्यपि "कभी-कभी" वह उसे आकर्षक समझती थी, पर उसने उससे प्रेम नहीं किया था, बल्कि "अपनी बुरी ईर्ष्या" में उसका और उसके बूढ़े पिता का दिल जीत लिया था। उसने यह भी देखा था कि मित्या, फ्योदोर पावलोविच और बाकी सभी से बहुत ईर्ष्या करता था; लेकिन इससे उसे केवल मनोरंजन हुआ था। उसका कभी भी फ्योदोर पावलोविच के पास जाने का इरादा नहीं था, वह तो बस उस पर हंस रही थी।
“पिछले पूरे महीने मैंने उन दोनों के बारे में बिल्कुल नहीं सोचा। मैं उम्मीद कर रहा था कि...
एक और आदमी जिसने मेरे साथ अन्याय किया था। लेकिन मुझे लगता है,” उसने अंत में कहा, “कि आपको इसके बारे में पूछताछ करने की कोई आवश्यकता नहीं है, न ही मुझे आपको जवाब देने की, क्योंकि यह मेरा निजी मामला है।”
निकोले पारफेनोविच ने इस संकेत पर तुरंत अमल किया। उन्होंने फिर
उन्होंने मामले के "रोमांटिक" पहलू को खारिज करते हुए गंभीर मुद्दे, यानी सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न, यानी तीन हजार रूबल से संबंधित मुद्दे पर ध्यान केंद्रित किया। ग्रुशेंका ने इस बात की पुष्टि की कि मोक्रोए में पहली दावत में निश्चित रूप से तीन हजार रूबल खर्च किए गए थे, और यद्यपि उन्होंने स्वयं पैसों की गिनती नहीं की थी, लेकिन उन्होंने दिमित्री फ्योदोरोविच के मुख से ही सुना था कि यह राशि तीन हजार थी।
“क्या उसने यह बात तुम्हें अकेले बताई, या किसी और के सामने, या तुमने केवल
"क्या आपने उसे आपकी उपस्थिति में दूसरों से इसके बारे में बात करते सुना है?" अभियोजक ने तुरंत पूछा।
इस पर ग्रुशेंका ने जवाब दिया कि उसने उसे पहले भी ऐसा कहते सुना था।
लोगों ने उसे अकेले में ऐसा कहते हुए सुना था।
“क्या उसने यह बात तुमसे अकेले में एक बार कही थी, या कई बार?” उसने पूछा।
अभियोजक से बात करते हुए, उन्हें पता चला कि उन्होंने ग्रुशेंका को यह बात कई बार कही थी।
इप्पोलिट किरिलोविच इस सबूत से पूरी तरह संतुष्ट थे।
आगे की जांच से पता चला कि ग्रुशेंका को भी पता था कि वह पैसा कहां से आया था, और दिमित्री फ्योदोरोविच को वह पैसा कटेरीना इवानोवना से मिला था।
और क्या आपने कभी यह नहीं सुना कि एक महीने पहले खर्च किया गया पैसा

तीन हजार नहीं, बल्कि उससे भी कम, और दिमित्री फ्योदोरोविच ने उस राशि का आधा हिस्सा अपने निजी उपयोग के लिए बचा लिया था?
“नहीं, मैंने ऐसा कभी नहीं सुना,” ग्रुशेंका ने उत्तर दिया। आगे बताया गया कि इसके विपरीत, मित्या ने उसे अक्सर ऐसा कहा था।
उसके पास एक पैसा भी नहीं था।
ग्रुशेंका ने कहा, "वह हमेशा अपने पिता से कुछ पाने की उम्मीद रखता था।"
निष्कर्ष के तौर पर।
“क्या उसने तुम्हारे सामने कभी ऐसा नहीं कहा... लापरवाही से, या चिड़चिड़ेपन के क्षण में?”
निकोले पार्फेनोविच ने अचानक कहा, "क्या उसका इरादा अपने पिता की जान लेने का था?"
“आह, उसने ऐसा कहा था,” ग्रुशेंका ने आह भरी।
“एक बार या कई बार?”
"उसने कई बार इसका जिक्र किया, और हर बार गुस्से में।"
और क्या आपको विश्वास था कि वह ऐसा करेगा?
“नहीं, मैंने कभी इस पर विश्वास नहीं किया,” उसने दृढ़ता से उत्तर दिया। “मुझे उसकी महानता पर भरोसा था।”
दिल।"
“सज्जनों, मुझे अनुमति दीजिए,” मित्या अचानक चिल्लाया, “मुझे एक बात कहने की अनुमति दीजिए।”
आपकी उपस्थिति में, अग्राफेना अलेक्जेंड्रोवना को एक संदेश।
“तुम बोल सकते हो,” निकोले पारफेनोविच ने सहमति जताई। “अग्राफेना अलेक्जेंड्रोवना!” मित्या अपनी कुर्सी से उठ खड़ा हुआ, “विश्वास रखो।”
ईश्वर और मुझमें। मैं अपने पिता की हत्या का दोषी नहीं हूँ!
ये शब्द कहकर मित्या अपनी कुर्सी पर वापस बैठ गया।
ग्रुशेंका खड़ी हुई और प्रतिमा के सामने श्रद्धापूर्वक क्रॉस का चिन्ह बनाया।
“हे प्रभु, आपका धन्यवाद,” उसने भावुक स्वर में कहा।
और वहीं खड़ी रहते हुए, उसने निकोले पार्फेनोविच की ओर मुड़कर कहा:
“उसने अभी जो कहा है, उस पर विश्वास करो! मैं उसे जानता हूँ। वह एक के रूप में कुछ भी कह सकता है।” चाहे मजाक में हो या हठ के चलते, वह कभी भी अपने अंतरात्मा के विरुद्ध आपको धोखा नहीं देगा। वह पूरी सच्चाई बता रहा है, आप उस पर विश्वास कर सकते हैं।
"धन्यवाद, अग्रफेना अलेक्जेंड्रोवना, आपने मुझे नया साहस दिया है।"
मित्या ने कांपती हुई आवाज में उत्तर दिया।
पिछले दिन खर्च किए गए पैसों के बारे में उन्होंने कहा कि उन्हें इसकी जानकारी नहीं है।
उसे रकम का तो पता नहीं था, लेकिन उसने कई लोगों को यह कहते सुना था कि उसके पास तीन हज़ार हैं।
जब उससे पूछा गया कि उसे पैसे कहाँ से मिले, तो उसने बताया कि उसने कहा था कि उसने ये पैसे कैटेरिना इवानोव्ना से "चुराए" हैं, और उसने जवाब दिया था कि उसने पैसे नहीं चुराए हैं, और उसे अगले दिन पैसे वापस करने होंगे। जब अभियोजक ने उससे ज़ोर देकर पूछा कि क्या कैटेरिना इवानोव्ना से चुराए गए पैसे वही थे जो उसने कल खर्च किए थे, या जो उसने एक महीने पहले यहाँ लुटा दिए थे, तो उसने कहा कि उसका मतलब एक महीने पहले खर्च किए गए पैसे से था, और उसने उसे इसी तरह समझा था।
अंततः ग्रुशेंका को रिहा कर दिया गया, और निकोले पार्फेनोविच ने उसे सूचित किया।
उसने अचानक ही उससे कहा कि वह तुरंत शहर लौट जाए और अगर वह उसकी किसी भी तरह से मदद कर सके, उदाहरण के लिए घोड़ों के साथ, या अगर वह किसी अंगरक्षक की परवाह करे, तो वह... मदद करेगा...
ग्रुशेंका ने झुककर उनसे कहा, "मैं आपका तहे दिल से शुक्रिया अदा करती हूँ। मैं जा रही हूँ।"
मैं इस बुजुर्ग सज्जन को अपने साथ वापस शहर ले जा रहा हूँ, और इस बीच, यदि आप मुझे अनुमति दें, तो मैं नीचे इंतजार करूँगा यह सुनने के लिए कि आप दिमित्री फ्योदोरोविच के बारे में क्या निर्णय लेते हैं।
वह बाहर चली गई। मित्या शांत था, और पहले से ज़्यादा खुश भी लग रहा था, लेकिन बस इतना ही।

एक पल के लिए। उसे एक अजीब शारीरिक कमजोरी का एहसास होने लगा। थकान से उसकी आँखें बंद होने लगीं। गवाहों की पूछताछ आखिरकार समाप्त हो गई। वे प्रोटोकॉल के अंतिम संशोधन की ओर बढ़े। मित्या उठा, अपनी कुर्सी से पर्दे के पास कोने में गया, एक बड़े कालीन से ढके संदूक पर लेट गया और तुरंत सो गया।
उसे एक अजीब सपना आया, जो उस जगह और उस माहौल से बिलकुल मेल नहीं खाता था।
समय।
वह मैदानी इलाकों में कहीं गाड़ी चला रहा था, जहाँ उसकी तैनाती थी।
बहुत समय पहले की बात है, एक किसान उसे दो घोड़ों वाली गाड़ी में बिठाकर बर्फ और ओलों के बीच से ले जा रहा था। उसे ठंड लग रही थी, नवंबर का महीना शुरू ही हुआ था, और बर्फ बड़े-बड़े गीले टुकड़ों में गिर रही थी, जो ज़मीन पर गिरते ही पिघल जाते थे। किसान उसे तेज़ी से चला रहा था, उसकी दाढ़ी लंबी और सुनहरी थी। वह बूढ़ा नहीं था, लगभग पचास साल का होगा, और उसने भूरे रंग का किसान का कुर्ता पहना हुआ था। पास ही एक गाँव था, उसे काली झोपड़ियाँ दिखाई दे रही थीं, और आधी झोपड़ियाँ जलकर राख हो चुकी थीं, केवल जली हुई लकड़ियाँ ही बची थीं। जैसे ही वे गाँव में पहुँचे, सड़क के किनारे किसान स्त्रियाँ खड़ी थीं, बहुत सारी स्त्रियाँ, पूरी एक कतार, सभी दुबली-पतली और पीली, उनके चेहरे कुछ भूरे रंग के थे, खासकर किनारे पर खड़ी एक लंबी, दुबली-पतली महिला, जो चालीस साल की लग रही थी, लेकिन शायद बीस साल की ही होगी, उसका चेहरा लंबा और पतला था। उसकी गोद में एक छोटा बच्चा रो रहा था। और उसके स्तन इतने सूखे हुए लग रहे थे कि उनमें दूध की एक बूँद भी नहीं थी। और बच्चा रोता रहा, रोता रहा और अपनी छोटी-छोटी नंगी बाहें फैलाए रहा, ठंड से उसकी मुट्ठियां नीली पड़ गई थीं।
“ये क्यों रो रहे हैं? ये क्यों रो रहे हैं?” मित्या ने पूछा, जैसे ही वे
तेजी से हंसते हुए गुजर गया।
“ये तो बच्चा है,” ड्राइवर ने जवाब दिया, “रोता हुआ बच्चा।” और मित्या को उसके देहाती लहजे में “बच्चे” कहने पर आश्चर्य हुआ।
उसे किसान द्वारा उसे "बच्चा" कहना अच्छा लगा। इसमें अधिक दया भाव प्रतीत हुआ।
“लेकिन यह रो क्यों रहा है?” मित्या ने मूर्खतापूर्ण ढंग से पूछा, “इसके छोटे-छोटे क्यों रो रहे हैं?”
बाजू खुले क्यों? वे उन्हें लपेटते क्यों नहीं?
"बच्चे को ठंड लग रही है, उसके छोटे कपड़े जम गए हैं और उसे गर्मी नहीं दे रहे हैं।"
“लेकिन ऐसा क्यों है? क्यों?” मूर्ख मित्या अभी भी अड़ा रहा। “वे गरीब लोग हैं, जले-बुझे हैं। उनके पास रोटी नहीं है। वे...”
वे भीख मांग रहे हैं क्योंकि वे पूरी तरह से थक चुके हैं।
“नहीं, नहीं,” मित्या को मानो अभी भी समझ नहीं आया था। “मुझे बताओ कि ऐसा क्यों है।”
वे बेचारी माताएँ वहाँ क्यों खड़ी हैं? लोग गरीब क्यों हैं? बच्चा गरीब क्यों है? मैदान बंजर क्यों है? वे एक-दूसरे को गले क्यों नहीं लगाते और चूमते क्यों नहीं? वे खुशी के गीत क्यों नहीं गाते? वे घोर दुख से इतने काले क्यों हैं? वे बच्चे को दूध क्यों नहीं पिलाते?
और उसे लगा कि यद्यपि उसके प्रश्न अतार्किक और निरर्थक थे,
फिर भी वह यही पूछना चाहता था, और उसे यही पूछना था। और उसने महसूस किया कि उसके हृदय में करुणा का ऐसा भाव उमड़ रहा है जैसा उसने पहले कभी नहीं जाना था, वह रोना चाहता था, वह उन सबके लिए कुछ करना चाहता था, ताकि बच्चा फिर कभी न रोए, ताकि उदास चेहरे वाली, मुरझाई हुई माँ न रोए, ताकि उस पल से कोई भी फिर कभी आँसू न बहाए, और वह यह सब तुरंत, हर बाधा की परवाह किए बिना, करामाज़ोव परिवार की तरह बेपरवाह होकर करना चाहता था।
और मैं तुम्हारे साथ आ रहा हूँ। मैं अब तुम्हें जीवन भर के लिए नहीं छोड़ूंगा।
“जीवन, मैं तुम्हारे साथ आ रहा हूँ,” उसके ठीक बगल से ग्रुशेंका की कोमल, भावपूर्ण आवाज़ सुनाई दी।
उसका हृदय प्रज्वलित हुआ, वह प्रकाश की ओर आगे बढ़ा, और जीने की तीव्र इच्छा से भर उठा, उस नए, पुकारते प्रकाश की ओर निरंतर बढ़ते रहने की, और जल्दी करो, जल्दी करो, अभी, तुरंत!
“क्या! कहाँ?” उसने आँखें खोलते हुए और उठकर बैठते हुए कहा।

मित्या सीने पर ऐसे झुके हुए थे मानो बेहोशी से जागे हों, और उनके चेहरे पर एक बड़ी मुस्कान थी। निकोले पारफेनोविच उनके ऊपर खड़े थे और उन्हें प्रोटोकॉल पढ़कर सुनाने और उस पर हस्ताक्षर करने का सुझाव दे रहे थे। मित्या को लगा कि वह एक घंटे या उससे अधिक समय से सो रहे थे, लेकिन उन्होंने निकोले पारफेनोविच की बात नहीं सुनी। उन्हें अचानक इस बात का एहसास हुआ कि उनके सिर के नीचे एक तकिया था, जो तब नहीं था जब वह थककर सीने पर झुके थे।
“मेरे सिर के नीचे वो तकिया किसने रखा? कौन इतना दयालु था?” वह भावुक कृतज्ञता और आँसुओं से भरी आवाज में चिल्लाया, मानो उस पर कोई बहुत बड़ी कृपा की गई हो।
उसे कभी पता नहीं चला कि यह दयालु व्यक्ति कौन था; शायद वह किसानों में से एक था।
गवाहों ने, या निकोले पार्फेनोविच के छोटे सचिव ने, दया दिखाते हुए उनके सिर के नीचे तकिया रख दिया था; लेकिन उनका पूरा मन आंसुओं से कांप रहा था। वे मेज पर गए और बोले कि वे जो चाहें उस पर हस्ताक्षर कर देंगे।
“मुझे एक अच्छा सपना आया, सज्जनों,” उसने एक अजीब सी आवाज में कहा।
उसके चेहरे पर मानो खुशी की एक नई चमक दिखाई दी।

अध्याय 9

वे मित्या को अपने साथ ले जाते हैं

जब प्रोटोकॉल पर हस्ताक्षर हो गए, तो निकोले पारफेनोविच ने गंभीरता से कैदी की ओर मुड़कर उसे "गिरफ्तारी का आदेश" पढ़कर सुनाया, जिसमें लिखा था कि फलां वर्ष, फलां दिन, फलां स्थान पर, फलां जिला न्यायालय के जांच वकील ने फलां व्यक्ति (अर्थात मित्या) से, जिस पर इस और उस आरोप का अभियोग लगाया गया था (सभी आरोप सावधानीपूर्वक लिखे गए थे), पूछताछ करने के बाद यह पाया कि अभियोक्ता ने अपने ऊपर लगे आरोपों को स्वीकार नहीं किया है और अपने बचाव में कुछ भी प्रस्तुत नहीं किया है, जबकि फलां गवाह और फलां परिस्थितियां उसके विरुद्ध गवाही देती हैं, और इसी प्रकार विधि पुस्तक के फलां अनुच्छेदों के अनुसार कार्य करते हुए, यह निर्णय लिया है कि फलां व्यक्ति (मित्या) को पीछा करने और न्याय से बचने के सभी साधनों से रोकने के लिए उसे फलां जेल में रखा जाए, जिसकी सूचना वह अभियोक्ता को देता है और इस "गिरफ्तारी के आदेश" की एक प्रति उप अभियोजक को भेजता है, इत्यादि। पर।
संक्षेप में, मित्या को सूचित किया गया कि उस क्षण से वह एक कैदी है।
और उसे तुरंत शहर ले जाया जाएगा और वहाँ एक बहुत ही अप्रिय जगह पर बंद कर दिया जाएगा। मित्या ने ध्यान से सुना और केवल अपने कंधे उचका दिए।
“खैर, सज्जनों, मैं आपको दोष नहीं देता। मैं तैयार हूँ... मैं समझता हूँ कि
अब आपके पास करने के लिए और कुछ नहीं है।"
निकोले पारफेनोविच ने उन्हें विनम्रतापूर्वक सूचित किया कि उन्हें ले जाया जाएगा।
एक बार ग्रामीण पुलिस अधिकारी मावरिकी मावरिक्येविच द्वारा, जो संयोगवश मौके पर मौजूद थे...
"रुको," मित्या ने अचानक, अनियंत्रित आवेग से प्रेरित होकर कहा।
उन्होंने कमरे में मौजूद सभी लोगों को संबोधित करते हुए अपनी भावना व्यक्त की:
“सज्जनों, हम सब क्रूर हैं, हम सब राक्षस हैं, हम सब पुरुषों को रुलाते हैं।”

और माताओं, और स्तनपान करने वाले शिशुओं, लेकिन इन सब में, यह बात यहीं, अभी तय हो जानी चाहिए, कि मैं सबसे नीच प्राणी हूँ! मैंने सुधार करने की कसम खाई है, और हर दिन मैंने वही घिनौने काम किए हैं। अब मैं समझता हूँ कि मुझ जैसे लोगों को एक प्रहार की ज़रूरत है, नियति का एक प्रहार जो उन्हें फंदे की तरह जकड़ ले, और बाहरी शक्ति से उन्हें बांध दे। मुझे कभी भी, कभी भी अपनी इच्छा से ऊपर नहीं उठना चाहिए था! लेकिन बिजली गिर चुकी है। मैं आरोप की यातना और अपनी सार्वजनिक बदनामी को स्वीकार करता हूँ, मैं पीड़ा सहना चाहता हूँ और पीड़ा सहकर ही मैं शुद्ध हो जाऊँगा। शायद मैं शुद्ध हो जाऊँ, सज्जनों? लेकिन सुनिए, आखिरी बार, मैं अपने पिता के खून का दोषी नहीं हूँ। मैं अपनी सज़ा स्वीकार करता हूँ, इसलिए नहीं कि मैंने उन्हें मारा, बल्कि इसलिए कि मेरा इरादा उन्हें मारने का था, और शायद मैं सचमुच उन्हें मार सकता था। फिर भी मैं आपसे लड़ूँगा। मैं आपको इसकी चेतावनी देता हूँ। मैं आपसे अंत तक लड़ूँगा, और फिर ईश्वर फैसला करेगा। अलविदा सज्जनों, परीक्षा के दौरान आप पर चिल्लाने के लिए मुझसे नारीज़ मत होना। ओह, मैं तब कितना मूर्ख था... एक पल में मैं कैदी बन जाऊंगा, लेकिन अभी, आखिरी बार, एक स्वतंत्र व्यक्ति के रूप में, दिमित्री करामाज़ोव आपको अपना हाथ सौंपता है। आपको अलविदा कहते हुए, मैं सभी मनुष्यों को अलविदा कहता हूं।
उसकी आवाज कांप रही थी और उसने अपना हाथ बढ़ाया, लेकिन निकोले ने
पारफेनोविच, जो संयोगवश उसके सबसे करीब खड़ा था, ने अचानक, लगभग घबराए हुए अंदाज़ में, अपने हाथ अपनी पीठ के पीछे छिपा लिए। मित्या ने तुरंत यह देखा और चौंक गया। उसने अपना फैला हुआ हाथ तुरंत नीचे गिरा लिया।
“प्रारंभिक जांच अभी पूरी नहीं हुई है,” निकोले परफेनोविच हिचकिचाते हुए बोले।
कुछ शर्मिंदा होकर। “हम इसे शहर में जारी रखेंगे, और मैं, अपनी ओर से, निश्चित रूप से, आपकी सफलता की कामना करता हूँ... आपके बचाव में... वास्तव में, दिमित्री फ्योदोरोविच, मैं हमेशा से आपको, एक तरह से, दोषी से अधिक दुर्भाग्यशाली मानता आया हूँ। हम सभी यहाँ, अगर मैं सभी की ओर से बोलने का साहस करूँ, तो हम सभी यह मानने को तैयार हैं कि आप मूल रूप से एक सम्मानित युवक हैं, लेकिन, अफसोस, कुछ जुनूनों में कुछ हद तक बहक गए हैं...”
निकोले परफेनोविच की छोटी सी आकृति उस समय तक सचमुच राजसी हो गई थी।
उसकी बात खत्म हो चुकी थी। मित्या को लगा कि एक मिनट में यह "लड़का" उसका हाथ पकड़कर उसे दूसरे कोने में ले जाएगा और "लड़कियों" के बारे में उनकी बातचीत फिर से शुरू कर देगा। लेकिन फांसी के लिए ले जाए जा रहे कैदी के मन में भी कई बेतुके और अनुचित विचार आ जाते हैं।
“सज्जनों, आप अच्छे हैं, आप दयालु हैं, क्या मैं उन्हें ‘अच्छा’ कहते हुए देख सकता हूँ?”
"आखिरी बार अलविदा?" मित्या ने पूछा।
“निश्चित रूप से, लेकिन विचार करते हुए... वास्तव में, अब यह असंभव है सिवाय इसके कि...
की उपस्थिति...
"खैर, अगर ऐसा होना ही है तो ठीक है!"
ग्रुशेंका को लाया गया, लेकिन विदाई संक्षिप्त थी और कुछ ही शब्दों में संपन्न हुई।
और इससे निकोले पार्फेनोविच बिल्कुल भी संतुष्ट नहीं हुए। ग्रुशेंका ने मित्या के सामने गहरा प्रणाम किया।
मैंने तुमसे कहा है कि मैं तुम्हारा हूँ, और मैं तुम्हारा ही रहूँगा। मैं तुम्हारा अनुसरण करूँगा।
चाहे वे तुम्हें कहीं भी भेजें, अलविदा; तुम निर्दोष हो, भले ही तुम्हारी बर्बादी तुम्हारी ही गलती हो।
उसके होंठ कांपने लगे, उसकी आंखों से आंसू बहने लगे।
“ग्रुशा, मुझे मेरे प्रेम के लिए क्षमा कर दो, मेरे प्रेम से तुम्हें भी बर्बाद करने के लिए।” मित्या कुछ और कहना चाहता था, लेकिन वह रुक गया और बाहर चला गया।
उसे तुरंत ही उन आदमियों ने घेर लिया जो उस पर लगातार नज़र रख रहे थे। जिस सीढ़ी पर वह एक दिन पहले आंद्रेई के तीन घोड़ों के साथ तेज़ी से चढ़ा था, उसके नीचे दो गाड़ियाँ तैयार खड़ी थीं। मावरिकी मावरिक्येविच, एक हट्टा-कट्टा, गठीला और झुर्रियों वाला आदमी, किसी बात से नाराज़ था, किसी अचानक हुई गड़बड़ी से। वह गुस्से से चिल्ला रहा था। उसने कुछ ज़्यादा ही चिड़चिड़ेपन से मित्या को गाड़ी में बैठने को कहा।
जब मैंने उसे सराय में शराब पिलाई, तो उस आदमी का रवैया बिल्कुल अलग था।

“चेहरा,” मित्या ने अंदर आते ही सोचा। द्वार पर लोगों की भीड़ थी, किसान, महिलाएं और ड्राइवर। ट्रिफॉन बोरिसोविच भी सीढ़ियों से नीचे उतरे। सभी मित्या को घूर रहे थे।
“बिछड़ते समय मुझे क्षमा कर देना, भले लोगों!” मित्या ने अचानक चिल्लाकर कहा।
गाड़ी।
“हमें भी क्षमा कर दो!” उसने दो-तीन आवाज़ें सुनीं। “तुम्हें भी अलविदा, ट्रिफॉन बोरिसोविच!”
लेकिन ट्रिफॉन बोरिसोविच ने मुड़कर भी नहीं देखा। शायद वह बहुत ज्यादा सतर्क थे।
व्यस्त। वह भी किसी बात पर चिल्ला रहा था और हंगामा कर रहा था। ऐसा लग रहा था कि दूसरी गाड़ी में अभी सब कुछ तैयार नहीं था, जिसमें दो कांस्टेबल मावरिकी मावरिक्येविच के साथ जाने वाले थे। दूसरी गाड़ी चलाने का आदेश प्राप्त किसान अपनी कमीज़ खींचते हुए दृढ़ता से कह रहा था कि जाने की बारी उसकी नहीं, बल्कि अकीम की है। लेकिन अकीम कहीं नज़र नहीं आ रहा था। वे उसे ढूंढने दौड़े। किसान अड़ा रहा और उनसे रुकने की विनती करता रहा।
“देखो हमारे किसान कैसे हैं, मावरिकी मावरिक्येविच। उनके पास कुछ भी नहीं है।”
"शर्मनाक!" ट्रिफॉन बोरिसोविच चिल्लाया। "अकीम ने तुम्हें परसों पच्चीस कोपेक दिए थे। तुमने सब पी लिया और अब तुम रो रहे हो। मावरिकी मावरिक्येविच, हमारे जैसे गरीब किसानों के प्रति तुम्हारी दयालुता देखकर मैं बस हैरान हूँ, मैं और कुछ नहीं कह सकता।"
“लेकिन हमें दूसरी गाड़ी की क्या ज़रूरत है?” मित्या ने पूछा। “चलिए शुरू करते हैं...”
वही, मावरिकी मावरिक्येविच। मैं उद्दंड नहीं बनूंगा, मैं तुमसे भागूंगा नहीं, मेरे दोस्त। हमें सुरक्षाकर्मी की क्या ज़रूरत है?
"अगर आप मुझसे कभी बात नहीं कर पाए हैं, तो मैं आपको परेशान करूँगा, महोदय, कृपया मुझसे बात करने का तरीका सीख लें।"
मैंने तुम्हें सिखाया है। मैं तुम्हारे लिए 'बूढ़ा आदमी' नहीं हूँ, और तुम अपनी सलाह किसी और समय के लिए रख लो!” मावरिकी मावरिक्येविच ने क्रोध से कहा, मानो अपना गुस्सा निकालने में उसे खुशी हो रही हो।
मित्या एकदम चुप हो गया। उसका चेहरा शर्म से लाल हो गया। कुछ ही देर बाद...
अचानक उसे बहुत ठंड लगने लगी। बारिश रुक गई थी, लेकिन आसमान अभी भी बादलों से घिरा हुआ था और तेज हवा सीधे उसके चेहरे पर लग रही थी।
“मुझे ठंड लग गई है,” मित्या ने अपने कंधे हिलाते हुए सोचा। आखिरकार मावरिकी मावरिक्येविच भी गाड़ी में चढ़ गया और भारी मन से बैठ गया।
और, मानो अनजाने में ही, मित्या को कोने में धकेल दिया। यह सच है कि वह उदास था और उसे सौंपा गया काम उसे बिल्कुल पसंद नहीं था।
“अलविदा, ट्रिफॉन बोरिसोविच!” मित्या ने फिर से चिल्लाया और खुद को महसूस किया,
कि उसने इस बार अच्छे स्वभाव से नहीं, बल्कि अनजाने में, आक्रोश से प्रेरित होकर पुकारा था।
लेकिन ट्रिफॉन बोरिसोविच गर्व से दोनों हाथ पीठ के पीछे करके खड़ा था।
और गुस्से भरे और कठोर चेहरे से सीधे मित्या की ओर देखते हुए, उसने कोई जवाब नहीं दिया।
“अलविदा, दिमित्री फ्योदोरोविच, अलविदा!” उसने अचानक ये आवाज़ सुनी।
कलगानोव की आवाज़ सुनाई दी, जो अचानक बाहर निकल आया था। गाड़ी की ओर दौड़ते हुए उसने मित्या की ओर हाथ बढ़ाया। उसके सिर पर टोपी नहीं थी।
मित्या के पास उसका हाथ पकड़ने और दबाने का समय था।
“अलविदा, प्रिय मित्र! मैं तुम्हारी उदारता को कभी नहीं भूलूंगा,” वह रोते हुए बोला।
हार्दिक रूप से।
लेकिन गाड़ी चलने लगी और उनके हाथ अलग हो गए। घंटी बजने लगी और
मित्या को गाड़ी में बिठाकर ले जाया गया।
कालगानोव वापस भागा, एक कोने में बैठ गया, अपना सिर झुकाया और अपना चेहरा छिपा लिया।
अपने हाथ थामकर वह फूट-फूटकर रोने लगा। काफी देर तक वह उसी तरह बैठा रहा, मानो बीस साल के युवक की जगह कोई छोटा बच्चा रो रहा हो। ओह, उसे लगभग पूरा यकीन था कि मित्या दोषी है।
“ये लोग कौन हैं? इसके बाद इंसान क्या रह सकता है?” उसने हैरानी से कहा।

वह असंतुलित ढंग से, घोर निराशा में, लगभग हताशा में बोल रहा था। उस क्षण उसे जीने की कोई इच्छा नहीं थी।
“क्या यह सब करने लायक है? क्या यह सब करने लायक है?” लड़के ने अपने दुख में कहा।

भाग चार

पुस्तक 10

लड़के

अध्याय 1

कोल्या क्रासोटकिन

नवंबर की शुरुआत थी। कड़ाके की ठंड पड़ी थी, तापमान ग्यारह डिग्री रेउमुर था, बर्फ नहीं गिरी थी, लेकिन रात भर जमी हुई ज़मीन पर थोड़ी सूखी बर्फ गिरी थी, और तेज़ सूखी हवा उसे उठाकर हमारे कस्बे की सुनसान सड़कों पर, खासकर बाज़ार के आसपास, उड़ा रही थी। सुबह धुंधली थी, लेकिन बर्फबारी रुक चुकी थी।

बाज़ार से कुछ ही दूरी पर, प्लॉट्निकोव की दुकान के पास, एक दुकान थी।

छोटा सा घर, अंदर और बाहर दोनों तरफ से बेहद साफ-सुथरा। यह मैडम क्रासोटकिन का था, जो एक पूर्व प्रांतीय सचिव की विधवा थीं, जिनकी मृत्यु चौदह वर्ष पहले हो गई थी। उनकी विधवा, जो अब भी बत्तीस वर्ष की सुंदर महिला थीं, अपने निजी साधनों से अपने साफ-सुथरे छोटे से घर में रहती थीं। वह शालीनता से एकांत में रहती थीं; उनका स्वभाव कोमल लेकिन काफी हंसमुख था। अपने पति की मृत्यु के समय उनकी आयु लगभग अठारह वर्ष थी; उनकी शादी को केवल एक वर्ष हुआ था और उन्होंने अभी-अभी एक पुत्र को जन्म दिया था। उनकी मृत्यु के दिन से ही उन्होंने अपना सारा ध्यान अपने अनमोल खजाने, अपने बेटे कोलिया के पालन-पोषण में लगा दिया था। हालांकि उन्होंने उन चौदह वर्षों में उससे बहुत प्यार किया था, लेकिन उसने उन्हें सुख से कहीं अधिक दुख दिया था। वह लगभग हर दिन डर से कांपती और बेहोश हो जाती थीं, इस डर से कि वह बीमार पड़ जाएगा, उसे सर्दी लग जाएगी, कोई शरारत कर देगा, कुर्सी पर चढ़कर गिर जाएगा, इत्यादि। जब कोलिया स्कूल जाने लगा, तो माँ ने उसकी मदद करने और उसके पाठों को दोहराने के लिए उसके साथ सभी विज्ञानों का अध्ययन करने में अपना पूरा समय लगा दिया। वह शिक्षकों और उनकी पत्नियों से जान-पहचान बनाने में जुट गई, यहाँ तक कि कोल्या के सहपाठियों से भी दोस्ती कर ली और उनकी चापलूसी करने लगी, इस उम्मीद में कि इससे कोल्या को उनके द्वारा चिढ़ाए जाने, हँसे जाने या पीटे जाने से बचाया जा सकेगा। उसने हद पार कर दी, यहाँ तक कि लड़के उसके कारण कोल्या का मज़ाक उड़ाने लगे और उसे "माँ का लाडला" कहकर ताना मारने लगे।

लेकिन लड़का अपनी भूमिका निभा सकता था। वह एक दृढ़ निश्चयी लड़का था।

उनकी कक्षा में यह अफवाह थी कि वे "अत्यंत बलवान" थे, और जल्द ही यह बात सच साबित हो गई; वे फुर्तीले, दृढ़ निश्चयी और साहसी एवं उद्यमशील स्वभाव के थे। वे पढ़ाई में अच्छे थे, और विद्यालय में यह अफवाह थी कि वे गणित और सार्वभौमिक इतिहास में शिक्षक डारडानेलोव को भी हरा सकते हैं। यद्यपि वे सभी को नीचा समझते थे, फिर भी वे अच्छे सहपाठी थे और घमंडी नहीं थे। वे अपने सहपाठियों के सम्मान को अपना हक समझते थे, लेकिन उनके साथ दोस्ताना व्यवहार रखते थे। सबसे बढ़कर, वे सीमा रेखा जानते थे। वे कभी-कभी खुद पर नियंत्रण रख सकते थे, और शिक्षकों के साथ अपने संबंधों में उन्होंने कभी भी उस अंतिम सीमा को पार नहीं किया, जिसके आगे कोई शरारत अनुशासन का अक्षम्य उल्लंघन बन जाती है। लेकिन वे हर संभव अवसर पर शरारत करने के उतने ही शौकीन थे जितने कि विद्यालय के सबसे छोटे बच्चे, और यह शरारत करने के लिए उतना नहीं, बल्कि सनसनी पैदा करने, कुछ नया, कुछ प्रभावशाली और उल्लेखनीय आविष्कार करने के लिए था। वे बेहद अभिमानी थे। वे जानते थे कि अपनी माँ को भी अपने आगे झुकने के लिए कैसे राजी किया जाए; उसका उस पर नियंत्रण लगभग तानाशाही जैसा था। वह उसके आगे झुक जाती थी, सालों से झुकती आ रही थी। उसके लिए असहनीय बात यही थी कि उसके बेटे को उससे कोई गहरा प्यार नहीं था। वह हमेशा सोचती रहती थी कि कोलिया उसके प्रति "भावनाहीन" है, और कभी-कभी, हिस्टीरिया के आँसुओं में डूबकर, वह उसकी इस बेरुखी के लिए उसे ताना मारती थी। लड़के को यह बात

पसंद नहीं थी, और उससे जितनी अधिक भावनाओं को व्यक्त करने की अपेक्षा की जाती, वह उतना ही जानबूझकर उनसे बचने की कोशिश करता प्रतीत होता था। फिर भी यह उसकी ओर से जानबूझकर नहीं बल्कि सहज प्रवृत्ति थी—यह उसका स्वभाव था। उसकी माँ गलत थी; वह उससे बहुत प्यार करता था। उसे केवल "भेड़िये जैसी भावुकता" नापसंद थी, जैसा कि वह अपनी स्कूली भाषा में कहता था।
घर में एक किताबों की अलमारी थी जिसमें कुछ किताबें रखी हुई थीं।
अपने पिता की किताबें। कोल्या को पढ़ने का बहुत शौक था और उसने खुद ही कई किताबें पढ़ ली थीं। उसकी माँ को इससे कोई आपत्ति नहीं थी और वह कभी-कभी बस इस बात पर हैरान हो जाती थी कि लड़का खेलने जाने के बजाय घंटों किताबों की अलमारी के पास खड़ा होकर किताब पढ़ता रहता है। और इस तरह कोल्या ने कुछ ऐसी किताबें भी पढ़ लीं जो उसकी उम्र के लिए उपयुक्त नहीं थीं।
हालांकि लड़का आमतौर पर अपनी शरारतों की सीमा जानता था,
हाल ही में उसने ऐसी शरारतें शुरू कर दी थीं जिनसे उसकी माँ बहुत चिंतित हो गई थी। यह सच है कि उसकी हरकतों में कोई दुर्भावना नहीं थी, बल्कि एक बेतहाशा लापरवाही थी।
जुलाई के उस महीने में, गर्मियों की छुट्टियों के दौरान, माँ और
मेरा बेटा एक दूर के रिश्तेदार के साथ एक सप्ताह बिताने के लिए दूसरे जिले में गया, जो 45 मील दूर था। उस रिश्तेदार का पति रेलवे स्टेशन पर अधिकारी था (वही स्टेशन, जो हमारे कस्बे के सबसे नजदीक था, जहाँ से एक महीने बाद इवान फ्योदोरोविच करामाज़ोव मॉस्को के लिए रवाना हुए थे)। वहाँ कोल्या ने रेलवे से जुड़ी हर छोटी-बड़ी बात की बारीकी से छानबीन शुरू कर दी, यह जानते हुए कि घर लौटने पर वह अपने नए ज्ञान से अपने सहपाठियों को प्रभावित कर सकेगा। लेकिन संयोग से वहाँ कुछ और लड़के भी थे जिनसे उसकी जल्द ही दोस्ती हो गई। उनमें से कुछ स्टेशन पर रहते थे, कुछ आस-पास के इलाके में; वे छह-सात थे, सभी बारह से पंद्रह वर्ष की आयु के थे, और उनमें से दो हमारे कस्बे से आए थे। लड़के साथ खेलते थे, और कोल्या के स्टेशन पर रहने के चौथे-पाँचवें दिन, उन नासमझ लड़कों ने एक अजीब सी शर्त लगा ली। कोल्या, जो उस टोली में लगभग सबसे छोटा था और इसी वजह से बाकी लोग उसे नीचा समझते थे, ने अपने घमंड या फिर बेपरवाह बहादुरी के चलते उनसे दो रूबल की शर्त लगाई कि वह रात में ग्यारह बजे वाली ट्रेन के आने के समय पटरियों के बीच लेट जाएगा और ट्रेन के पूरी रफ्तार से गुजरने पर भी बिना हिले-डुले वहीं लेटा रहेगा। यह सच है कि उन्होंने पहले थोड़ी जाँच-पड़ताल की, जिससे पता चला कि पटरियों के बीच इस तरह लेटना मुमकिन है कि ट्रेन बिना छुए ऊपर से गुज़र जाए, लेकिन वहाँ लेटना कोई मज़ाक नहीं था! कोल्या ने अपनी बात पर अड़ा रहा। पहले तो वे उस पर हँसे, उसे छोटा झूठा और शेखीबाज़ कहा, लेकिन इससे उसका जोश और बढ़ गया। उसे सबसे ज़्यादा गुस्सा इस बात पर आया कि पंद्रह साल के ये लड़के उसे बहुत ही घमंडी नज़रों से देखते थे और पहले तो उसे "छोटा लड़का" समझते थे, अपने साथ रहने लायक नहीं समझते थे, और यह उसके लिए असहनीय अपमान था।
और इसलिए शाम को स्टेशन से आधा मील दूर जाने का निर्णय लिया गया।
ताकि स्टेशन से निकलने के बाद ट्रेन को पूरी रफ्तार पकड़ने का समय मिल सके। लड़के इकट्ठा हो गए। रात घोर अंधेरी थी, चाँद नहीं निकला था। तय समय पर, कोलिया पटरियों के बीच लेट गया। शर्त लगाने वाले बाकी पाँच लोग तटबंध के नीचे झाड़ियों में इंतज़ार कर रहे थे, उनके दिल बेचैनी से धड़क रहे थे, जिसके बाद डर और पछतावा छा गया। आखिरकार उन्हें दूर से स्टेशन से ट्रेन के निकलने की गड़गड़ाहट सुनाई दी। अँधेरे में से दो लाल बत्तियाँ चमक उठीं; जैसे ही वह राक्षस पास आया, वह दहाड़ उठा।
“पटरियों से भागो, भागो,” लड़कों ने झाड़ियों से कोल्या को पुकारा।
भय से बेहाल। लेकिन बहुत देर हो चुकी थी: ट्रेन तेज़ी से आई और निकल गई। लड़के कोल्या के पास दौड़े। वह बेसुध पड़ा था। वे उसे खींचने और उठाने लगे। वह अचानक उठा और बिना कुछ कहे चला गया। फिर उसने बताया कि वह उन्हें डराने के लिए बेहोशी का नाटक कर रहा था, लेकिन असलियत यह थी कि वह सचमुच बेहोश हो गया था, जैसा कि उसने बहुत बाद में अपनी माँ को बताया। इस तरह "एक खतरनाक व्यक्ति" के रूप में उसकी बदनामी हमेशा के लिए पक्की हो गई। वह स्टेशन पर अपने घर लौटा तो उसका चेहरा पीला पड़ गया था। अगले दिन उसे हल्का बुखार आया, लेकिन वह बहुत खुश था और खुद से संतुष्ट था। यह घटना तुरंत सबको पता नहीं चली, लेकिन जब वे वापस शहर लौटे तो यह स्कूल तक पहुँच गई और यहाँ तक कि शिक्षकों के कानों तक भी। लेकिन तब कोल्या की माँ ने अपने बेटे की ओर से शिक्षकों से विनती

की, और अंत में एक सम्मानित और प्रभावशाली शिक्षक डारडानेलोव ने उसके पक्ष में हस्तक्षेप किया, और मामला दबा दिया गया।
डारडानेलोव एक अधेड़ उम्र का कुंवारा व्यक्ति था, जो बेहद भावुक था।
कोलिया कई वर्षों से मैडम क्रासोटकिन से प्रेम करता था, और लगभग एक वर्ष पहले, भय और अपनी भावनाओं की कोमलता से कांपते हुए, उसने अत्यंत आदरपूर्वक उन्हें विवाह का प्रस्ताव दिया था। लेकिन उन्होंने दृढ़ता से इनकार कर दिया, क्योंकि उन्हें लगा कि उन्हें स्वीकार करना उनके बेटे के साथ विश्वासघात होगा, हालांकि कुछ रहस्यमय लक्षणों से यह अनुमान लगाया जा सकता था कि डारडानेलोव उस आकर्षक लेकिन अत्यंत पवित्र और कोमल हृदय वाली विधवा के लिए घृणा का पात्र नहीं था। कोलिया की इस शरारत ने मानो बर्फ पिघला दी, और डारडानेलोव को उसके हस्तक्षेप के लिए आशा की एक किरण मिली। यह सच है कि आशा की किरण धुंधली थी, लेकिन डारडानेलोव पवित्रता और कोमलता का ऐसा आदर्श था कि उस क्षण के लिए यह उसे पूरी तरह से प्रसन्न करने के लिए पर्याप्त था। वह लड़के को पसंद करता था, हालांकि उसे जीतने की कोशिश करना उसे अपने लिए उचित नहीं लगता था, और कक्षा में उसके साथ कठोर और सख्त व्यवहार करता था। कोलिया भी उससे सम्मानजनक दूरी बनाए रखता था। उसने अपने पाठों को भली-भांति सीखा; वह अपनी कक्षा में दूसरे स्थान पर था, डारडानेलोव से उसका व्यवहार थोड़ा संकोच भरा था, और पूरी कक्षा को पक्का यकीन था कि कोल्या को सार्वभौमिक इतिहास का इतना अच्छा ज्ञान है कि वह डारडानेलोव को भी "हरा" सकता है। कोल्या ने सचमुच उससे यह सवाल पूछा, "ट्रॉय की स्थापना किसने की?" जिसका डारडानेलोव ने बहुत ही अस्पष्ट जवाब दिया, जिसमें उसने विभिन्न जातियों के आवागमन और प्रवास, उस काल की प्राचीनता और पौराणिक कथाओं का हवाला दिया। लेकिन "ट्रॉय की स्थापना किसने की थी?" यानी किन व्यक्तियों ने, इस सवाल का जवाब वह नहीं दे सका, और किसी कारणवश उसने इस सवाल को व्यर्थ और तुच्छ समझा। लेकिन लड़के इस बात पर अडिग रहे कि डारडानेलोव को नहीं पता कि ट्रॉय की स्थापना किसने की थी। कोल्या ने स्मारागदोव में ट्रॉय के संस्थापकों के बारे में पढ़ा था, जिसका इतिहास उसके पिता की किताबों की अलमारी में मौजूद था। अंत में सभी लड़कों को इस सवाल में दिलचस्पी हो गई कि ट्रॉय की स्थापना किसने की थी, लेकिन क्रासोटकिन ने अपना रहस्य नहीं बताया, और ज्ञान के मामले में उसकी प्रतिष्ठा अडिग रही।
रेलवे दुर्घटना के बाद कोल्या के व्यक्तित्व में कुछ बदलाव आ गया।
अपनी माँ के प्रति उसका रवैया। जब अन्ना फ्योदोरोव्ना (मैडम क्रासोटकिन) को अपने बेटे की इस हरकत के बारे में पता चला, तो वह डर के मारे लगभग पागल हो गईं। उन्हें कई दिनों तक रुक-रुक कर इतने भयानक हिस्टीरिया के दौरे पड़ते रहे कि कोल्या आखिरकार गंभीर रूप से घबरा गया और उसने अपनी इज्जत की कसम खाकर वादा किया कि वह ऐसी शरारतें दोबारा कभी नहीं करेगा। उसने मैडम क्रासोटकिन के कहने पर पवित्र मूर्ति के सामने घुटने टेककर अपने पिता की याद में शपथ ली और "मर्दाना" कोल्या छह साल के बच्चे की तरह फूट-फूट कर रोने लगा। उस पूरे दिन माँ और बेटा लगातार एक-दूसरे के आलिंगन में गिरकर रोते रहे। अगले दिन कोल्या पहले की तरह ही "भावहीन" उठा, लेकिन वह पहले से ज्यादा शांत, विनम्र, गंभीर और विचारशील हो गया था।
छह सप्ताह बाद, यह सच है कि वह एक और मुसीबत में फंस गया, जिसने उसे और भी परेशान कर दिया। उसका नाम हमारे शांति न्यायाधीश के कानों तक पहुँच गया, लेकिन यह एक बिल्कुल अलग तरह की घटना थी, मनोरंजक, मूर्खतापूर्ण, और जैसा कि बाद में पता चला, उसने इसमें मुख्य भूमिका नहीं निभाई थी, बल्कि केवल इसमें शामिल था। लेकिन इस बारे में बाद में बात करेंगे। उसकी माँ अब भी चिंतित और काँप रही थी, लेकिन उसकी बेचैनी बढ़ती ही जा रही थी, डारडानेलोव की उम्मीदें भी बढ़ती जा रही थीं। यह ध्यान देने योग्य है कि कोलिया डारडानेलोव के दिल की बात समझता था और निश्चित रूप से उसकी "भावनाओं" के लिए उससे गहरी घृणा करता था; अतीत में वह इतना असंवेदनशील रहा था कि अपनी माँ के सामने भी यह तिरस्कार दिखाता था, अस्पष्ट रूप से यह संकेत देते हुए कि वह जानता है कि डारडानेलोव क्या चाहता है। लेकिन रेलवे दुर्घटना के बाद से इस मामले में भी उसका व्यवहार बदल गया; उसने इस विषय पर दूर-दूर तक कोई बात नहीं की और अपनी माँ के सामने डारडानेलोव के बारे में अधिक सम्मानपूर्वक बोलने लगा, जिसे उस संवेदनशील महिला ने असीम कृतज्ञता के साथ तुरंत स्वीकार किया। लेकिन कोल्या की मौजूदगी में अगर कोई आगंतुक डारडानेलोव का ज़िक्र भी कर देता, तो वह गुलाब की तरह लाल हो जाती। ऐसे क्षणों में

कोल्या या तो खिड़की से बाहर घूरता, या अपने जूतों की हालत देखता, या फिर गुस्से से "पेरेज़वॉन" को पुकारता, जो उसका बड़ा, रोएंदार, बीमार सा कुत्ता था, जिसे वह एक महीने पहले लाया था, घर ले आया था और किसी कारणवश चुपके से घर के अंदर रखता था, उसे अपने किसी भी सहपाठी को नहीं दिखाता था। वह उसे बुरी तरह तंग करता था, उसे तरह-तरह की तरकीबें सिखाता था, जिससे बेचारा कुत्ता उसके स्कूल से अनुपस्थित रहने पर उसके लिए भौंकता था, और जब वह आता था, तो खुशी से कराहता था, पागलों की तरह इधर-उधर भागता था, भीख मांगता था, मरने का नाटक करते हुए ज़मीन पर लेट जाता था, और इसी तरह की हरकतें करता था; वास्तव में, वह उसे सिखाई गई सभी तरकीबें दिखाता था, आदेश पर नहीं, बल्कि अपने उत्साहित और कृतज्ञ हृदय के उत्साह से।
वैसे, मैं यह बताना भूल गया था कि कोल्या क्रासोटकिन ही थे।
एक लड़के को चाकू से गोद दिया गया, जिसे पाठक पहले से ही कैप्टन स्नेगिरिओव के बेटे के रूप में जानते हैं। इलुशा अपने पिता का बचाव कर रहा था जब स्कूली लड़कों ने उसका मजाक उड़ाया और उसे "रूई का टुकड़ा" कहकर पुकारा।

अध्याय दो

बच्चे

नवंबर के उस बर्फीले, ठंडे और तूफानी दिन, कोल्या क्रासोटकिन घर पर बैठे थे। रविवार का दिन था और स्कूल की छुट्टी थी। ग्यारह बज चुके थे और वे "बहुत ज़रूरी काम" से बाहर जाना चाहते थे, लेकिन घर की ज़िम्मेदारी उन पर ही थी, क्योंकि अचानक हुई एक अनोखी घटना के कारण घर के सभी बड़े-बुजुर्ग अनुपस्थित थे। मैडम क्रासोटकिन ने घर के बाकी हिस्से से अलग एक गलियारे से जुड़े दो छोटे कमरे एक डॉक्टर की पत्नी और उसके दो छोटे बच्चों को किराए पर दिए थे। यह महिला अन्ना फ्योदोरोव्ना की ही उम्र की थी और उनकी गहरी दोस्त थी। उनके पति, डॉक्टर, बारह महीने पहले चले गए थे, पहले ओरेनबर्ग और फिर ताशकेंद, और पिछले छह महीनों से उनकी कोई खबर नहीं मिली थी। अगर मैडम क्रासोटकिन के साथ उनकी दोस्ती न होती, जो उस अकेली महिला के लिए कुछ हद तक सहारा थी, तो वह निश्चित रूप से आँसुओं में डूब जाती। और अब, उनकी बदकिस्मती में एक और मोड़ आ गया, जब उनकी इकलौती नौकरानी कैटेरिना ने पिछली शाम अचानक अपनी मालकिन को चौंकाते हुए बताया कि वह सुबह होने से पहले ही बच्चे को जन्म देने वाली है। यह लगभग चमत्कार जैसा ही था कि किसी ने भी इससे पहले इसकी संभावना पर ध्यान नहीं दिया था। स्तब्ध डॉक्टर की पत्नी ने कैटेरिना को समय रहते शहर के एक ऐसे अस्पताल में ले जाने का फैसला किया, जहाँ ऐसी आपात स्थितियों के लिए एक दाई का काम होता था। अपनी नौकरानी पर बहुत भरोसा होने के कारण, उन्होंने तुरंत इस योजना को अंजाम दिया और वहीं रहकर उसकी देखभाल करने लगीं। सुबह तक मैडम क्रासोटकिन की सारी सहानुभूति और ऊर्जा इस मामले में मदद करने और किसी से सहायता मांगने में जुट गई।
तो दोनों महिलाएं घर से अनुपस्थित थीं, क्रासोटकिन्स की नौकरानी,
अगाफ्या बाज़ार गई हुई थी, और इसलिए कोल्या को कुछ समय के लिए "बच्चों" की देखभाल और रखवाली का जिम्मा सौंपा गया था, यानी डॉक्टर की पत्नी के बेटे और बेटी की, जो घर में अकेले रह गए थे। कोल्या को घर की देखभाल करने में कोई झिझक नहीं थी, इसके अलावा उसके पास पेरेज़वॉन भी था, जिसे हॉल में बेंच के नीचे बिना हिले-डुले लेटे रहने के लिए कहा गया था। हर बार जब कोल्या कमरों में इधर-उधर घूमते हुए हॉल में आता, तो कुत्ता अपना सिर हिलाता और अपनी पूंछ से ज़मीन पर दो ज़ोरदार थपथपाहट करता, लेकिन अफ़सोस! उसे छोड़ने के लिए सीटी नहीं बजी। कोल्या ने उस बदकिस्मत कुत्ते को गुस्से से देखा, जो

फिर से आज्ञाकारी होकर अकड़ गया। कोल्या को बस "बच्चों" की चिंता सता रही थी। बेशक, वह कैटेरिना के इस अचानक हुए कारनामे को घोर तिरस्कार से देख रहा था, लेकिन वह दुखी "बच्चों" से बहुत प्यार करता था, और उनके लिए एक चित्र पुस्तक भी ले आया था। आठ साल की बड़ी बेटी नास्त्या पढ़ सकती थी, और सात साल का छोटा बेटा कोस्त्या उससे कहानियां सुनना बहुत पसंद करता था। क्रासोटकिन बेशक उनके लिए और भी मनोरंजक चीजें कर सकते थे। वे उन्हें साथ खड़ा करके सिपाही-सैनिकों का खेल खिला सकते थे, या उन्हें पूरे घर में छिपा सकते थे। उन्होंने ऐसा पहले भी कई बार किया था और उन्हें ऐसा करने में कोई हिचक नहीं थी, यहां तक कि एक बार स्कूल में यह अफवाह भी फैल गई थी कि क्रासोटकिन घर में रहने वाले छोटे बच्चों के साथ घोड़े-घोड़े का खेल खेलते थे, और एक तरफ सिर झुकाकर ऐसे उछलते थे जैसे कोई घोड़ा दौड़ रहा हो। लेकिन क्रासोटकिन ने बड़े घमंड से इस बात को खारिज कर दिया और कहा कि तेरह साल के लड़कों के साथ घोड़े-घोड़े का खेल खेलना "आजकल" शर्मनाक माना जाएगा, लेकिन उन्होंने यह "बच्चों" के लिए किया क्योंकि वे उन्हें पसंद करते थे, और किसी को भी उनके इस व्यवहार पर सवाल उठाने का अधिकार नहीं था। दोनों "बच्चे" उन्हें बहुत प्यार करते थे।
लेकिन इस मौके पर उनका खेल खेलने का कोई मूड नहीं था। उनका मूड बहुत खराब था।
उसके सामने अपना कोई ज़रूरी काम था, कुछ रहस्यमय सा। इस बीच समय बीतता जा रहा था और अगाफ्या, जिसके पास वह बच्चों को छोड़ सकता था, बाज़ार से वापस नहीं आई थी। वह कई बार गलियारे से गुज़रकर किराएदारों के कमरे का दरवाज़ा खोलकर उन बच्चों को चिंता से देखता, जो उसकी आज्ञा के अनुसार किताब पर बैठे थे। हर बार जब वह दरवाज़ा खोलता, तो बच्चे उसे देखकर मुस्कुराते, इस उम्मीद में कि वह अंदर आएगा और कुछ मज़ेदार और मनोरंजक करेगा। लेकिन कोल्या परेशान था और अंदर नहीं गया।
अंततः ग्यारह बज गए और उसने हमेशा के लिए यह निश्चय कर लिया कि यदि ऐसा हुआ तो
अगर अगाफ्या दस मिनट के अंदर वापस नहीं आती, तो उसे उसका इंतज़ार किए बिना ही बाहर जाना चाहिए था। उसने बच्चों से वादा भी लिया कि जब वह दूर रहेगा, तो वे बहादुरी दिखाएंगे, शरारत नहीं करेंगे और डर के मारे रोएंगे नहीं। इसी सोच के साथ उसने बिल्ली की खाल के कॉलर वाला अपना मोटा सर्दियों का ओवरकोट पहना, अपना थैला कंधे पर टांगा और अपनी माँ की बार-बार की मिन्नतों की परवाह किए बिना कि उसे इतनी ठंड में हमेशा गोलोश पहनना चाहिए, उसने उन्हें तिरस्कार भरी नज़रों से देखा और हॉल पार करके केवल अपने जूते पहने ही बाहर चला गया। पेरेज़वोन ने उसे बाहर के कपड़ों में देखकर घबराकर अपनी पूंछ ज़मीन पर ज़ोर-ज़ोर से पटकना शुरू कर दिया। उसका पूरा शरीर कांप रहा था और वह दर्द भरी आवाज़ में रोने भी लगा। लेकिन कोलिया ने अपने कुत्ते की इस बेचैनी को देखकर सोचा कि यह अनुशासन का उल्लंघन है, इसलिए उसने उसे एक मिनट के लिए बेंच के नीचे रोके रखा और जब उसने गलियारे का दरवाज़ा खोला, तब उसने सीटी बजाकर उसे बुलाया। कुत्ता पागलों की तरह उछल पड़ा और खुशी से झूमते हुए उसके आगे दौड़ने लगा।
कोल्या ने बच्चों को देखने के लिए दरवाजा खोला। वे दोनों बैठे हुए थे।
कुछ देर पहले, बच्चे मेज पर बैठे थे, पढ़ नहीं रहे थे, बल्कि किसी बात पर गरमागरम बहस कर रहे थे। बच्चे अक्सर जीवन के विभिन्न दिलचस्प मुद्दों पर आपस में बहस करते थे, और नास्त्या, बड़ी होने के नाते, हमेशा जीत जाती थी। अगर कोस्त्या उससे सहमत नहीं होता, तो वह लगभग हमेशा कोल्या क्रासोटकिन से सलाह लेता था, और दोनों ही उसके फैसले को अचूक मानते थे। इस बार बच्चों की चर्चा में क्रासोटकिन को दिलचस्पी हो गई, और वह सुनने के लिए गलियारे में ही रुक गया। बच्चों ने देखा कि वह सुन रहा है, और इससे उनकी बहस और भी ज़ोरदार हो गई।
“मैं कभी भी, कभी भी विश्वास नहीं करूंगी,” नास्त्या बड़बड़ाते हुए बोली, “कि बूढ़ी औरतें पाती हैं
रसोई के बगीचे में पत्तागोभी के बीच बच्चे। अब सर्दी का मौसम है और पत्तागोभी नहीं है, इसलिए बूढ़ी औरत कैटेरिना को बेटी नहीं दे सकती थी।
कोल्या ने मन ही मन सीटी बजाई।
या शायद वे कहीं से बच्चे लाते हों, लेकिन केवल उन्हीं लोगों के लिए
जो विवाहित हैं।"

कोस्त्या ने नास्त्या को घूरते हुए ध्यान से सुना और गहराई से सोचने लगा। अंत में उसने दृढ़ता और शांति से कहा, "नास्त्या, तुम कितनी मूर्ख हो! कितनी मूर्ख हो!"
क्या कैटरीना अविवाहित रहते हुए बच्चा पैदा कर सकती है?
नास्त्या बहुत परेशान थी।
“तुम्हें इसके बारे में कुछ नहीं पता,” उसने चिढ़कर कहा। “शायद उसके पास एक
उसका पति जेल में है, इसलिए अब उसे एक बच्चे की जिम्मेदारी लेनी पड़ी है।"
“लेकिन क्या उसका पति जेल में है?” कोस्त्या ने सहज भाव से पूछा।
गंभीरता से।
“या फिर, मैं तुम्हें बताती हूँ,” नास्त्या ने आवेग में आकर, पूरी तरह से बात काटते हुए कहा।
अपनी पहली परिकल्पना को खारिज करते हुए और उसे भूलते हुए। "उसका कोई पति नहीं है, आप सही कह रहे हैं, लेकिन वह शादी करना चाहती है, और इसलिए वह शादी के बारे में सोच रही थी, और सोचती-सोचती रही, और अब उसे मिल गया है, यानी पति नहीं, बल्कि एक बच्चा।"
“हाँ, शायद ऐसा ही हो,” कोस्त्या ने पूरी तरह हार मानते हुए सहमति जताई। “लेकिन तुमने ऐसा नहीं किया।”
पहले ही बता दो। तो मुझे कैसे पता चलेगा?
“आओ बच्चों,” कोल्या ने कमरे में कदम रखते हुए कहा। “तुम लोग बहुत शरारती हो।”
मुझे लोग दिख रहे हैं।
"और पेरेज़वॉन भी तुम्हारे साथ!" कोस्त्या मुस्कुराया और उंगलियां चटकाते हुए पेरेज़वॉन को बुलाने लगा।
“मैं मुश्किल में हूँ, बच्चों,” क्रासोटकिन ने गंभीरता से कहना शुरू किया, “और आपको अवश्य ही
मेरी मदद करो। अगाफ्या की टांग टूट गई होगी, क्योंकि वो अभी तक नहीं आई है, ये तो पक्का है। मुझे बाहर जाना होगा। क्या तुम मुझे जाने दोगे?
बच्चे एक-दूसरे को चिंता से देख रहे थे। उनके मुस्कुराते चेहरे
उनमें बेचैनी के लक्षण दिखाई दिए, लेकिन वे अभी तक पूरी तरह से यह नहीं समझ पाए थे कि उनसे क्या अपेक्षा की जा रही है।
“मेरे जाने के बाद तुम शरारत नहीं करोगे? तुम ऊपर नहीं चढ़ोगे?”
क्या तुम अलमारी में घुसकर अपने पैर तोड़ लोगे? क्या तुम अकेले डरकर रोओगे नहीं?
बच्चों के चेहरों पर गहरी निराशा छा गई। "और मैं तुम्हें इनाम के तौर पर कुछ दिखा सकता हूँ, एक छोटी सी तांबे की तोप।"
जिसे असली बारूद से दागा जा सकता है।"
बच्चों के चेहरे तुरंत खिल उठे। "हमें तोप दिखाओ," उसने कहा।
कोस्त्या के चेहरे पर खुशी की लहर दौड़ रही थी।
क्रासोटकिन ने अपना हाथ अपने थैले में डाला और उसमें से एक छोटी सी कांसे की वस्तु निकाली।
तोप ने उसे मेज पर रख दिया।
“अरे, आप यही तो पूछेंगे! देखिए, इसमें पहिए लगे हैं।” उसने खिलौने को लुढ़काया।
मेज पर आगे बढ़ते हुए। "और इसे दागा भी जा सकता है। इसमें गोलियां भरकर दागी जा सकती हैं।"
और क्या इससे किसी की भी जान जा सकती है?
“यह किसी को भी मार सकता है; आपको बस किसी पर भी निशाना लगाना है,” और क्रासोटकिन
उन्होंने समझाया कि बारूद कहाँ डालना है, गोली कहाँ से डालनी है, एक छोटे से छेद को दिखाया जो स्पर्श छेद जैसा था, और उन्हें बताया कि गोली चलाने पर झटका लगता है।
बच्चों ने बड़ी दिलचस्पी से सुना। उन्हें सबसे ज्यादा प्रभावित करने वाली बात यह थी कि...
यह कल्पना थी कि तोप ने लात मारी।
“और क्या आपके पास पाउडर है?” नास्त्या ने पूछा। “हाँ।”
“हमें बारूद भी दिखाओ,” उसने विनती भरी मुस्कान के साथ धीमी आवाज़ में कहा। क्रासोटकिन ने फिर से अपने थैले में हाथ डाला और एक छोटी सी बोतल निकाली।
उसमें थोड़ा सा असली बारूद था। उसके पास कागज के एक टुकड़े में कुछ गोलियां भी थीं। उसने बोतल का ढक्कन खोलकर थोड़ा सा बारूद अपनी हथेली पर भी निकाला।

“आसपास आग न लगी हो, इस बात का ध्यान रखना होगा, वरना विस्फोट हो जाएगा और जान चली जाएगी।”
“हम सभी,” क्रासोटकिन ने सनसनीखेज ढंग से उन्हें चेतावनी दी।
बच्चे उस पाउडर को विस्मय और भय से देख रहे थे, मानो वे केवल
इससे उनका आनंद और बढ़ गया। लेकिन कोस्त्या को शॉट ज्यादा पसंद आया।
“और क्या गोली लगने पर जलन होती है?” उसने पूछा।
नहीं, ऐसा नहीं है।
“मुझे थोड़ा सा इंजेक्शन दे दो,” उसने गिड़गिड़ाते स्वर में कहा। “मैं तुम्हें थोड़ा सा इंजेक्शन देता हूँ; लो, इसे पी लो, लेकिन अपनी माँ को मत दिखाना।”
जब तक मैं वापस न आ जाऊं, वरना वह पक्का सोचेगी कि यह बारूद है और डर के मारे मर जाएगी और तुम्हारी खूब पिटाई करेगी।"
“माँ हमें कभी मारती नहीं,” नास्त्या ने तुरंत कहा। “मुझे पता है, मैंने तो बस वाक्य पूरा करने के लिए ऐसा कहा था। और तुम कभी धोखा मत देना।”
बस इस बार के लिए, जब तक मैं वापस नहीं आ जाती, तुम सब मेरी माँ हो। तो बच्चों, क्या मैं बाहर जा सकती हूँ? मेरे जाने पर तुम डरोगे नहीं और रोओगे नहीं?
“हम सब रोएंगे,” कोस्त्या ने लगभग रोते हुए धीमी आवाज़ में कहा। “हम रोएंगे, हम ज़रूर रोएंगे,” नास्त्या ने झिझकते हुए कहा।
जल्दी।
“ओह, बच्चों, बच्चों, तुम्हारे ये साल कितने खतरों से भरे हैं!
कोई चारा नहीं, मुर्गियाँ, मुझे तुम्हारे साथ पता नहीं कब तक रहना पड़ेगा। और समय बीतता जा रहा है, समय बीतता जा रहा है, उफ़!
“पेरेज़वॉन से कहो कि वह मरने का नाटक करे!” कोस्त्या ने विनती की। “कोई चारा नहीं है, हमें पेरेज़वॉन की मदद लेनी ही होगी।
पेरेज़वॉन।" और कोल्या कुत्ते को आदेश देने लगा, जिसने अपने सारे करतब दिखाए।
वह मध्यम आकार का, खुरदुरे बालों वाला कुत्ता था, जिसके शरीर पर एक खास तरह का रोआं था।
बैंगनी-भूरे रंग का। उसकी दाहिनी आँख अंधी थी और बायाँ कान फटा हुआ था। वह कराहता और उछलता, अपने पिछले पैरों पर खड़ा होता और चलता, अपने पंजों को हवा में उठाकर पीठ के बल लेट जाता, मानो मरा हुआ हो। जब यह आखिरी प्रदर्शन चल रहा था, दरवाजा खुला और मैडम क्रासोटकिन की नौकरानी, अगाफ्या, जो चालीस साल की हष्ट-पुष्ट महिला थी और चेचक के निशान थे, दरवाजे पर दिखाई दी। वह बाजार से लौटी थी और उसके हाथ में राशन से भरा थैला था। अपने बाएँ हाथ में राशन का थैला पकड़े हुए वह कुत्ते को देखने के लिए वहीं खड़ी रही। हालाँकि कोलिया उसके लौटने के लिए बहुत उत्सुक था, उसने प्रदर्शन को बीच में नहीं रोका और पेरेज़वॉन को सामान्य समय तक मृत रखने के बाद, अंत में उसने उसे सीटी बजाई। कुत्ता उछल पड़ा और अपना कर्तव्य पूरा करने की खुशी में उछलने-कूदने लगा।
“ज़रा सोचो, एक कुत्ता!” अगाफ़्या ने गंभीर स्वर में कहा। “देर क्यों हुई, स्त्री?” क्रासोटकिन ने कड़े स्वर में पूछा। “स्त्री, जी हाँ! जाओ यहाँ से, बदमाश!”
“शरारती बच्चा?”
“हाँ, शरारती बच्ची। अगर मैं देर से आती हूँ तो तुम्हें क्या फर्क पड़ता है; अगर मैं देर से आती हूँ, तो यकीन मानो मेरे पास कोई ठोस वजह होगी,” अगाफ्या ने चूल्हे पर काम करते हुए बुदबुदाया, उसकी आवाज़ में गुस्से या नाराज़गी का कोई निशान नहीं था। दरअसल, वह अपने हंसमुख युवा मालिक के साथ इस तरह की नोकझोंक का आनंद ले रही थी।
“सुनो, तुम चंचल युवती,” क्रासोटकिन उठते हुए कहने लगे।
सोफे से, "क्या तुम दुनिया में जिन चीजों को तुम पवित्र मानते हो और उनके अलावा किसी और चीज की कसम खाकर कह सकते हो कि मेरी अनुपस्थिति में तुम बच्चों का ध्यान रखोगे? मैं बाहर जा रहा हूँ।"
“और मैं किस बात की कसम खाऊँगी?” अगाफ्या हँसते हुए बोली। “मैं ध्यान रखूँगी
उन्हें इसके बिना।"
“नहीं, तुम्हें अपनी शाश्वत मुक्ति की शपथ लेनी होगी। अन्यथा मैं नहीं जाऊँगा।”

“अच्छा, तो फिर मत जाओ। मुझे इससे क्या फर्क पड़ता है? बाहर ठंड है; यहीं रहो।”
घर।"
“बच्चों,” कोल्या ने बच्चों की ओर मुड़कर कहा, “यह महिला तुम्हारे साथ तब तक रहेगी।”
मैं वापस आ जाऊं या तुम्हारी मां आ जाए, क्योंकि उसे तो बहुत पहले ही वापस आ जाना चाहिए था। वो तुम्हें दोपहर का खाना भी देगी। तुम भी उन्हें कुछ दोगी, अगाफ्या, है ना?
मैं यह कर सकता हूँ।
“अलविदा, मुर्गियों, मैं अपने मन की शांति के साथ जा रहा हूँ। और आपको भी, दादी,” उसने कहा।
अगाफ्या के पास से गुज़रते हुए उसने गंभीर स्वर में, दबी आवाज़ में कहा, “मुझे उम्मीद है कि तुम उनके कोमल वर्षों का ख्याल रखोगी और उन्हें कैटेरिना के बारे में अपनी बुढ़िया की बकवास नहीं बताओगी। इकी, पेरेज़वोन!”
"दफा हो जाओ!" अगाफ्या ने इस बार सचमुच गुस्से में जवाब दिया।
“बेवकूफ लड़के! ऐसी बातें कहने के लिए तुम्हें कोड़े पड़ने चाहिए, यही तुम चाहते हो!”

अध्याय 3

स्कूल का लड़का

लेकिन कोल्या ने उसकी बात नहीं सुनी। आखिरकार वह बाहर जा सका। गेट से बाहर निकलते ही उसने चारों ओर देखा, कंधे उचकाए और कहा, "बहुत ठंड है," और सीधे गली में चला गया और बाज़ार की ओर दाहिनी ओर मुड़ गया। बाज़ार से एक घर पहले वाले घर पर पहुँचकर वह गेट पर रुका, अपनी जेब से सीटी निकाली और पूरी ताकत से सीटी बजाई, मानो कोई संकेत दे रहा हो। उसे एक मिनट से भी कम इंतज़ार करना पड़ा कि करीब ग्यारह साल का एक गुलाबी गालों वाला लड़का, गर्म, साफ-सुथरा और स्टाइलिश कोट पहने हुए, उससे मिलने के लिए दौड़कर बाहर आया। यह स्मुरोव था, जो प्रारंभिक कक्षा (कोल्या क्रासोटकिन से दो कक्षा नीचे) में पढ़ता था और एक संपन्न अधिकारी का बेटा था। जाहिर है, उसके माता-पिता ने उसे क्रासोटकिन से मिलने से मना किया था, जो अपनी शरारतों के लिए मशहूर था, इसलिए स्मुरोव छुपकर बाहर निकला था। यदि पाठक को याद हो तो बता दें कि वह उन लड़कों के समूह में से एक था जिन्होंने दो महीने पहले इलुशा पर पत्थर फेंके थे। उसी ने अलेयोशा करामाज़ोव को इलुशा के बारे में बताया था।
“क्रासोटकिन, मैं पिछले एक घंटे से तुम्हारा इंतजार कर रहा हूँ,” स्मुरोव ने कहा।
दृढ़ता से खड़े होकर, लड़के बाजार की ओर चल पड़े।
“मुझे देर हो गई,” क्रासोटकिन ने उत्तर दिया। “मैं परिस्थितियोंवश रुका हुआ था।”
मेरे साथ आने पर तुम्हारी पिटाई तो नहीं होगी?
“आओ, मैं कहता हूँ, मैं कभी हारता नहीं! और तुम्हारे साथ पेरेज़वॉन भी है?”
"हाँ।"
"तुम उसे भी साथ ले जा रहे हो?"
"हाँ।"
“आह! काश वो झुल्का ही होती!”
“यह असंभव है। झुल्का का कोई अस्तित्व नहीं है। झुल्का कहीं खो गई है।”
अस्पष्टता के कोहरे में डूबा हुआ।
“अरे! क्या हम ऐसा नहीं कर सकते?” स्मुरोव अचानक रुक गया। “देखो।”
इलूशा का कहना है कि झुल्का पेरेज़वॉन की तरह ही रोएंदार, भूरे रंग का और धुएँ के रंग जैसा दिखने वाला कुत्ता था। क्या आप उसे यह नहीं बता सकते कि यह झुल्का है, शायद वह आपकी बात मान ले?
“लड़के, झूठ से दूर रहो, यह एक बात है; भले ही उसका उद्देश्य अच्छा हो—वह दूसरी बात है।”
एक और बात। सबसे बढ़कर, मुझे उम्मीद है कि आपने उन्हें मेरे आने के बारे में कुछ नहीं बताया होगा।
"भगवान न करे! मुझे पता है मैं क्या कर रहा हूँ। लेकिन तुम उसे दिलासा नहीं दोगे।"
“पेरेज़वॉन के साथ,” स्मुरोव ने आह भरते हुए कहा। “तुम्हें पता है, उसके पिता, कप्तान, ‘सांस का पतला-दुबला’, ने हमें बताया था कि वह आज उसके लिए एक असली मास्टिफ़ पिल्ला ला रहे हैं, जिसकी नाक काली होगी। उन्हें लगता है कि इससे इलुशा को तसल्ली मिलेगी; लेकिन मुझे इस पर संदेह है।”
“और इलूशा कैसी है?”
“अरे, उसकी हालत बहुत ख़राब है! मुझे लगता है उसे टीबी है: वह काफी बीमार है।”
होश में तो है, पर उसकी साँसें! उसकी साँसें गड़बड़ हो गई हैं। पिछले दिन उसने कमरे में घूमने के लिए अपने जूते पहनने को कहा। उसने चलने की कोशिश की, पर खड़ा नहीं हो सका। “अरे, मैंने आपको पहले भी बताया था, पिताजी,” उसने कहा, “कि ये जूते ठीक नहीं हैं। मैं इनमें कभी ठीक से चल नहीं पाता।” उसे लगा कि जूतों की वजह से वह लड़खड़ा रहा है, लेकिन असल में यह सिर्फ़ कमज़ोरी थी। वह एक हफ़्ते भी नहीं जी पाएगा। हर्ज़ेनस्टुबे उसकी देखभाल कर रहा है। अब वे फिर से अमीर हो गए हैं— उनके पास बहुत सारा पैसा है।”
वे बदमाश हैं।
“बदमाश कौन होते हैं?”

“डॉक्टर और नीम-हकीमों का पूरा दल, और साथ ही, निश्चित रूप से,
व्यक्तिगत रूप से। मुझे चिकित्सा में विश्वास नहीं है। यह एक बेकार संस्था है। मैं इस बारे में विस्तार से बात करना चाहता हूँ। लेकिन ऊपर आप लोगों में यह भावुकता किस बात की है? ऐसा लगता है कि पूरी कक्षा हर दिन वहाँ मौजूद रहती है।
“पूरी कक्षा नहीं: हमारे केवल दस सहपाठी ही उनसे मिलने जाते हैं।”
हर दिन। इसमें कुछ भी खास नहीं है।
मुझे इस सब में जो बात समझ नहीं आ रही है, वह यह है कि एलेक्सी करामाज़ोव की भूमिका क्या है। वह इस सब में डूबा हुआ है। उसके भाई पर कल या परसों ऐसे ही अपराध के लिए मुकदमा चलने वाला है, और फिर भी उसके पास लड़कों के साथ भावुकता में समय बिताने का इतना समय है।
“इसमें कोई भावुकता नहीं है। अब आपको खुद ही इसे बनाना है।”
इसे इलुशा के साथ साझा करो।"
“उससे सुलह कर लें? यह तो कितना बेतुका वाक्य है! लेकिन मैं किसी को इसकी इजाज़त नहीं देता।”
अपने कार्यों का विश्लेषण करने के लिए।"
“और इलुशा आपको देखकर कितना प्रसन्न होगा! उसे तो पता ही नहीं कि आप
आ रहे हो। ऐसा क्यों था, ऐसा क्यों था कि तुम इतने समय तक नहीं आए?” स्मुरोव अचानक भावुक होकर रो पड़ा।
“मेरे प्यारे बेटे, ये मेरा मामला है, तुम्हारा नहीं। मैं खुद जा रहा हूँ।”
क्योंकि मैंने ऐसा चुना है, लेकिन आप सभी को एलेक्सी करामाज़ोव वहाँ ले गया है—इसमें फर्क है, आप जानते हैं। और आपको कैसे पता? हो सकता है मैं इसे मनगढ़ंत न बना रहा हूँ। यह एक बेवकूफी भरा मुहावरा है।
“इसमें करामाज़ोव का कोई हाथ नहीं है; ये उसकी करतूत नहीं है। हमारे साथी खुद ही वहाँ जाने लगे। बेशक, पहले तो वे करामाज़ोव के साथ ही गए थे। और ऐसी कोई बात नहीं हुई—कोई बेवकूफी नहीं। पहले एक गया, फिर दूसरा। उसके पिता हमें देखकर बहुत खुश हुए। आप जानते हैं कि अगर इलूशा मर गया तो वो पागल हो जाएँगे। वो देख रहे हैं कि इलूशा मर रहा है। और ऐसा लग रहा है कि उन्हें बहुत खुशी है कि हमने इलूशा से सुलह कर ली है। इलूशा ने बस आपके बारे में पूछा, बस इतना ही। वो बस पूछता है और कुछ नहीं कहता। उसके पिता पागल हो जाएँगे या खुद को फांसी लगा लेंगे। पहले तो वो पागलों जैसा बर्ताव करते थे। आप जानते हैं कि वो बहुत ही भले आदमी हैं। तब हमसे गलती हो गई थी। ये सब उस कातिल की गलती है जिसने तब उसे पीटा था।”
“कारामाज़ोव मेरे लिए अब भी एक पहेली है। शायद मैंने उसकी
मेरी उनसे जान-पहचान बहुत पहले हुई थी, लेकिन कुछ मामलों में मुझे उचित गर्व महसूस करना अच्छा लगता है। इसके अलावा, उनके बारे में मेरा एक सिद्धांत है जिस पर मुझे काम करना होगा और उसकी पुष्टि करनी होगी।
कोल्या गंभीर मौन में डूब गया। स्मुरोव भी चुप था। स्मुरोव,
बेशक, वह क्रासोटकिन की पूजा करता था और कभी सपने में भी खुद को उसके बराबर नहीं समझता था। अब कोल्या के यह कहने पर कि वह इलुशा से मिलने "स्वयं जा रहा है", उसे बहुत उत्सुकता हुई। उसे लगा कि कोल्या के अचानक उस दिन उससे मिलने जाने के पीछे कोई रहस्य जरूर है। वे बाजार से गुजरे, जहाँ उस समय देश से आई हुई कई माल से लदी गाड़ियाँ और बड़ी संख्या में जीवित मुर्गे मौजूद थे। बाजार की औरतें अपनी दुकानों में रुई, सूती कपड़े और धागे आदि बेच रही थीं। शहर में इन रविवार के बाजारों को भोलेपन से "मेला" कहा जाता था, और साल भर में ऐसे कई मेले लगते थे।
पेरेज़वॉन बेहद उत्तेजित होकर इधर-उधर भाग रहा था, पहले एक तरफ सूंघ रहा था,
फिर दूसरा। जब वह दूसरे कुत्तों से मिलता था, तो वे कुत्ते के शिष्टाचार के नियमों के अनुसार एक-दूसरे को उत्सुकतापूर्वक सूंघते थे।
"मुझे ऐसे यथार्थवादी दृश्य देखना पसंद है, स्मुरोव," कोल्या ने अचानक कहा।
“क्या आपने कभी गौर किया है कि कुत्ते मिलते ही एक-दूसरे को सूंघते हैं? ऐसा लगता है जैसे यह उनकी प्रकृति का नियम है।”

"हां; यह एक अजीब आदत है।"
नहीं, यह मज़ाकिया नहीं है; आप गलत हैं। इसमें कुछ भी मज़ाकिया नहीं है।
प्रकृति, चाहे वह पूर्वाग्रहों से ग्रस्त मनुष्य को कितनी भी हास्यास्पद क्यों न लगे। अगर कुत्ते तर्क कर सकते और हमारी आलोचना कर सकते, तो वे अपने स्वामियों, मनुष्यों के सामाजिक संबंधों में भी उतना ही, बल्कि उससे कहीं अधिक, हास्यास्पद पाते—वास्तव में कहीं अधिक। मैं यह बात दोहरा रहा हूँ, क्योंकि मुझे विश्वास है कि हममें कहीं अधिक मूर्खता है। यह राकितिन का विचार है—एक अद्भुत विचार। मैं समाजवादी हूँ, स्मुरोव।
"और समाजवादी क्या होता है?" स्मुरोव ने पूछा।
“तभी सब बराबर होते हैं और सबकी साझा संपत्ति होती है, तब सब कुछ बराबर होता है।”
यहां शादियां नहीं होतीं, हर कोई अपने मनपसंद धर्म और कानूनों का पालन करता है, और बाकी सब कुछ वैसा ही है। तुम अभी इतने बड़े नहीं हो कि यह सब समझ सको। वैसे, यहां ठंड बहुत है।
“हाँ, बारह डिग्री पाला पड़ा है। पिताजी ने थर्मामीटर पर नज़र डाली।
अब।"
"स्मुरोव, क्या तुमने गौर किया है कि सर्दियों के बीच में हमें ठंड नहीं लगती?"
इतनी ठंड तब भी लगती है जब तापमान पंद्रह या अठारह डिग्री होता है, जैसा कि अभी सर्दियों की शुरुआत में होता है, जब अचानक बारह डिग्री का पाला पड़ जाता है, खासकर तब जब बर्फ ज्यादा नहीं गिरी होती। ऐसा इसलिए है क्योंकि लोग इसके आदी नहीं हैं। सब कुछ इंसानों की आदत पर निर्भर करता है, यहां तक कि उनके सामाजिक और राजनीतिक संबंधों में भी। आदत ही सबसे बड़ी प्रेरक शक्ति है। कितना अजीब सा दिखने वाला किसान है!
कोल्या ने एक लंबे कद के किसान की ओर इशारा किया, जिसका चेहरा सौम्य था।
भेड़ की खाल का लंबा कोट पहने एक व्यक्ति अपनी गाड़ी के पास खड़ा था, अपने हाथों को गर्म करने के लिए बेढंगे चमड़े के दस्तानों में ही ताली बजा रहा था। उसकी लंबी, सुनहरी दाढ़ी पाले से पूरी तरह सफेद हो गई थी।
“उस किसान की दाढ़ी जम गई है,” कोल्या ने ऊँची और उत्तेजक आवाज़ में चिल्लाकर कहा।
जब वह उसके पास से गुज़रा।
“बहुत से लोगों की दाढ़ियाँ जम गई हैं,” किसान ने शांत भाव से उत्तर दिया।
उपदेशात्मक ढंग से।
"उसे उकसाओ मत," स्मुरोव ने कहा।
कोई बात नहीं; वो नाराज़ नहीं होगा; वो अच्छा आदमी है। अलविदा, मात्वे।
"अलविदा।"
“क्या आपका नाम मात्वे है?”
“जी हाँ। क्या आपको पता नहीं था?”
“नहीं, मैंने ऐसा नहीं किया। यह सिर्फ एक अनुमान था।”
“ऐसा कहना गलत होगा! लगता है तुम अभी स्कूली बच्चे हो?”
"हाँ।"
"मुझे लगता है कि तुम्हारी पिटाई होगी?"
"कभी-कभी तो कुछ खास नहीं होता।"
"दर्द हो रहा है क्या?"
"जी हां, ऐसा ही है।"
“अरे बाप रे, कैसी जिंदगी है!” किसान ने गहरी साँस ली।
दिल।
अलविदा, मात्वे।
“अलविदा। तुम वाकई अच्छे इंसान हो।” लड़के आगे बढ़ गए।
“वह किसान तो अच्छा था,” कोल्या ने स्मुरोव से कहा। “मुझे उससे बात करना अच्छा लगता है।”
मैं किसानों का हितैषी हूं, और उनके साथ न्याय करने में मुझे हमेशा खुशी होती है।"

"तुमने झूठ क्यों बोला, यह दिखावा क्यों किया कि हम हार गए हैं?" स्मुरोव ने पूछा। "मुझे उसे खुश करने के लिए ऐसा कहना पड़ा।"
आपका क्या मतलब है?
“आप जानते हैं, स्मुरोव, मुझे एक ही बात दो बार पूछे जाना पसंद नहीं है।
मैं चाहता हूँ कि लोग पहली ही बात में समझ जाएँ। कुछ बातें समझाई नहीं जा सकतीं। एक किसान की सोच के अनुसार, स्कूली बच्चों को कोड़े मारे जाते हैं, और मारे जाने ही चाहिए। अगर एक स्कूली बच्चे को कोड़े न मारे जाएँ तो वह कैसा होगा? और अगर मैं उससे कहूँ कि हम उसे कोड़े नहीं मार रहे हैं, तो वह निराश हो जाएगा। लेकिन आप यह बात नहीं समझते। किसानों से बात करने का तरीका जानना ज़रूरी है।
कृपया उन्हें चिढ़ाएँ नहीं, वरना आप फिर से मुसीबत में पड़ जाएँगे।
मैंने उस हंस के बारे में क्या किया?
तो क्या तुम डर रहे हो?
“हंसो मत, कोल्या। बिल्कुल, मुझे डर है। मेरे पिताजी बहुत नाराज़ होंगे।”
मुझे तुम्हारे साथ बाहर जाने की सख्त मनाही है।
“चिंता मत करो, इस बार कुछ नहीं होगा। हैलो नताशा!”
उसने एक स्टॉल में बैठी एक महिला को चिल्लाकर कहा।
“मुझे नताशा कहो! अब आगे क्या! मेरा नाम मार्या है,” अधेड़ उम्र की महिला ने कहा।
बाजार में काम करने वाली महिला उस पर चिल्लाई।
मुझे बहुत खुशी है कि यह मार्या है। अलविदा!
“अरे, तुम बदमाश बच्चे! तुम जैसे नटखट बच्चे को इस तरह नखरे करने की क्या ज़रूरत है!”
“मुझे जल्दी है। मैं अभी नहीं रुक सकता। आप मुझे अगले रविवार को बताएँगे।” कोल्या
उसने उसकी ओर हाथ हिलाया, मानो उसने उस पर हमला नहीं किया हो बल्कि उसने ही उस पर हमला किया हो।
अगले रविवार को मुझे तुम्हें कुछ नहीं बताना है। तुम मुझ पर टूट पड़े, तुम धृष्ट हो।
“छोटे बंदर। मैंने कुछ नहीं कहा,” मार्या चिल्लाई। “तुम्हें मार खानी है, यही चाहो, तुम बदतमीज़ बंदर!”
उसके आसपास मौजूद अन्य बाजार की महिलाओं में ठहाके की आवाज गूंज उठी।
अचानक पास की दुकानों की कतार से एक उग्र व्यक्ति गुस्से में बाहर निकला। वह एक युवक था, कस्बे का निवासी नहीं था, उसके बाल काले और घुंघराले थे, और उसका चेहरा लंबा और पीला था, जिस पर चेचक के निशान थे। उसने एक लंबा नीला कोट और टोपी पहन रखी थी, और वह किसी व्यापारी के क्लर्क जैसा लग रहा था। वह मूर्खतापूर्ण उत्तेजना में था और उसने कोलिया पर मुक्का लहराया।
“मैं तुम्हें जानता हूँ!” वह गुस्से से चिल्लाया, “मैं तुम्हें जानता हूँ!” कोल्या उसे घूरता रहा। उसे याद नहीं आ रहा था कि उसने कभी झगड़ा किया हो।
उस आदमी के साथ। लेकिन वह सड़क पर इतने झगड़ों में पड़ चुका था कि उसे वे सभी याद नहीं थे।
“क्या तुम ऐसा करते हो?” उसने व्यंग्यपूर्वक पूछा।
“मैं तुम्हें जानता हूँ! मैं तुम्हें जानता हूँ!” उस आदमी ने मूर्खतापूर्ण ढंग से दोहराया। “तुम्हारे लिए तो और भी अच्छा है। खैर, अब मुझे जाना चाहिए। अलविदा!”
“तुम फिर से अपनी शरारतें कर रहे हो?” आदमी चिल्लाया। “तुम फिर से अपनी शरारतें कर रहे हो।”
फिर से शरारती हरकतें? मुझे पता है, तुम फिर से वही कर रहे हो!
“भाई, अगर मैं फिर से अपनी शरारतें करूँ तो इससे तुम्हारा कोई लेना-देना नहीं है,” उसने कहा।
कोल्या स्थिर खड़ी होकर उसे ध्यान से देख रही थी।
"यह मेरा काम नहीं है?"
नहीं; यह आपका मामला नहीं है।
“तो फिर किसका? तो फिर किसका? तो फिर किसका?”
"यह ट्रिफॉन निकिटिच का मामला है, आपका नहीं।"
“ट्रिफॉन निकिटिच क्या है?” युवक ने अभद्र निगाहों से घूरते हुए पूछा।
कोल्या को देखकर अचंभित तो था, लेकिन अब भी उतना ही गुस्सा था जितना पहले था।

कोल्या ने गंभीरता से उसकी ओर देखा।
“क्या आप चर्च ऑफ द असेंशन गए हैं?” उसने अचानक पूछा।
उसे, कड़े शब्दों में।
“चर्च ऑफ असेंशन कौन सा? किसलिए? नहीं, मैं वहां नहीं गया हूँ,” युवक ने कहा।
वह व्यक्ति कुछ हद तक अचंभित रह गया।
“क्या आप सबानेयेव को जानते हैं?” कोल्या ने और भी ज़ोर देकर पूछा और
और भी अधिक गंभीर रूप से।
“कौन सा सबानेयेव? नहीं, मैं उसे नहीं जानता।”
“तो फिर तुम शैतान के पास जाओ,” कोल्या ने बात काटते हुए कहा।
बातचीत; और तेज़ी से दाईं ओर मुड़कर वह तेज़ी से अपने रास्ते पर चल पड़ा, मानो वह उस मूर्ख से और बातचीत करने से कतराता हो जो सबानेयेव को जानता भी नहीं था।
“रुको, हे! सबानेयेव कौन?” युवक ने अपनी स्थिति संभाली।
कुछ पल के लिए वह अचंभित हुआ, लेकिन फिर पहले की तरह ही उत्साहित हो गया। "उसने क्या कहा?" उसने बाजार की महिलाओं की ओर मूर्खतापूर्ण निगाहों से देखा।
महिलाएं हंस पड़ीं।
उनमें से एक ने कहा, "यह कभी पता नहीं चल सकता कि वह क्या चाहता है।" युवक ने फिर दोहराया, "वह किस सबानेयेव की बात कर रहा है?"
वह बेहद क्रोधित था और अपना दाहिना हाथ लहरा रहा था।
"यह ज़रूर कोई सबानेयेव होगा जिसने कुज़मित्वोव परिवार के लिए काम किया होगा, वही है यह।"
"ज़रूर होगा," महिलाओं में से एक ने सुझाव दिया।
वह युवक उसे बेतहाशा घूर रहा था।
“कुज़मित्वोव परिवार के लिए?” एक और महिला ने दोहराया। “लेकिन उसका नाम तो था ही नहीं।”
ट्रिफॉन। उसका नाम कुज़्मा है, ट्रिफॉन नहीं; लेकिन लड़के ने ट्रिफॉन निकितिच कहा, इसलिए यह एक ही नाम नहीं हो सकता।
“उनका नाम ट्रिफॉन या सबानेयेव नहीं, चिज़ोव है,” उन्होंने कहा।
अचानक एक तीसरी महिला, जो अब तक चुप थी, गंभीरता से सुनने लगी। "उसका नाम एलेक्सी इवानिच है। चिज़ोव, एलेक्सी इवानिच।"
“इसमें कोई शक नहीं, यह चिज़ोव ही है,” चौथी महिला ने ज़ोर देकर कहा।
इस बयान की पुष्टि की गई।
अचंभित युवक ने एक-दूसरे को घूरते हुए कहा, “लेकिन उसने क्या माँगा था, हे भले लोगों?” वह चिल्लाया। लगभग हताशा में। "'क्या आप सबानेयेव को जानते हैं?' वह पूछता है। और भला कौन जानेगा कि सबानेयेव कौन है?"
“तुम एक मूर्ख हो। मैं तुमसे कहता हूँ कि यह सबानेयेव नहीं, बल्कि चिज़ोव है।”
"यह एलेक्सी इवानिच चिज़ोव है!" महिलाओं में से एक ने प्रभावशाली ढंग से चिल्लाते हुए उससे कहा।
“चिज़ोव कौन है? वो कौन है? अगर तुम्हें पता हो तो बताओ।”
“वह लंबा, रोने वाला आदमी जो बाजार में बैठा करता था
गर्मी।"
"और तुम लोगों को मुझसे क्या लेना-देना है, चिज़ोव को?"
“मैं कैसे पता लगाऊं कि वह तुम्हारे साथ क्या करने वाला है?” दूसरे ने पूछा। “तुम्हें चाहिए...”
खुद को जानो कि तुम उससे क्या चाहती हो, अगर तुम उसके बारे में इतना शोर मचा रही हो। उसने तुमसे बात की, हमसे नहीं, बेवकूफ। क्या तुम उसे सच में नहीं जानती?
“किसे जानते हो?”
“चिज़ोव।”
“शैतान चिज़ोव और तुम्हें अपने साथ ले जाए। मैं उसकी ऐसी पिटाई करूँगा कि मैं...”
विल। वह मुझ पर हंस रहा था!

“चिज़ोव की पिटाई करेंगे! ज़्यादा संभावना है कि वो तुम्हारी पिटाई करेगा। तुम
तुम मूर्ख हो, बस यही तो हो!
“चिज़ोव नहीं, चिज़ोव नहीं, तुम दुष्ट, शरारती औरत। मैं
उस लड़के की पिटाई करो। उसे पकड़ो, उसे पकड़ो, वह मुझ पर हंस रहा था!
महिला ठहाका लगाकर हंस पड़ी। लेकिन कोल्या अब काफी दूर निकल चुका था, आगे बढ़ रहा था।
एक विजयी भाव के साथ। स्मुरोव उसके बगल में चल रहा था, और पीछे दूर चिल्लाते हुए समूह की ओर देख रहा था। वह भी बहुत खुश था, हालाँकि उसे अब भी कोल्या की संगति में किसी मुसीबत में पड़ने का डर था।
“तुम्हारा मतलब किस सबानेयेव से था?” उसने कोल्या से पूछा, यह अनुमान लगाते हुए कि उसका क्या होने वाला है।
उत्तर होगा।
मुझे कैसे पता चलेगा? अब तो दिन भर उनमें शोर-शराबा रहेगा। मुझे पसंद है
समाज के हर वर्ग के मूर्खों को भड़काने के लिए। एक और मूर्ख है वो किसान। आप जानते हैं, लोग कहते हैं कि 'एक मूर्ख फ्रांसीसी से बड़ा कोई मूर्ख नहीं होता,' लेकिन एक मूर्ख रूसी भी अपने चेहरे से उतना ही मूर्खता दिखाता है। क्या आपको उस किसान के चेहरे पर साफ-साफ नहीं दिख रहा कि वो मूर्ख है?
“उसे अकेला छोड़ दो, कोल्या। चलो आगे बढ़ते हैं।”
“मुझे कोई नहीं रोक सकता, अब मैं एक बार फिर से निकल गया हूँ। अरे, सुप्रभात।”
किसान!
एक हट्टा-कट्टा दिखने वाला किसान, जिसका गोल, सरल चेहरा और सफ़ेद दाढ़ी थी।
वहाँ से गुजर रहे एक व्यक्ति ने अपना सिर उठाया और लड़के की ओर देखा। वह पूरी तरह होश में नहीं लग रहा था।
“सुप्रभात, अगर आप मुझ पर हंस नहीं रहे हैं,” उसने जानबूझकर कहा।
जवाब।
“और अगर मैं हूँ तो?” कोल्या हँसते हुए बोला।
खैर, मजाक तो मजाक होता है। खूब हंसो। मुझे कोई आपत्ति नहीं है। हंसने में कोई बुराई नहीं है।
चुटकुला।"
"माफ़ कीजिए भाई, यह एक मज़ाक था।"
खैर, भगवान तुम्हें माफ करे!
"क्या तुम भी मुझे माफ कर दोगे?"
मैं तुम्हें पूरी तरह से माफ कर देता हूँ। जाओ।
“मैं कहता हूँ, तुम एक चतुर किसान लगते हो।”
“तुमसे ज्यादा चतुर,” किसान ने अप्रत्याशित रूप से उसी लहजे में उत्तर दिया।
गुरुत्वाकर्षण।
“मुझे इस पर संदेह है,” कोल्या ने कुछ आश्चर्यचकित होते हुए कहा। “लेकिन यह सच है।”
"शायद ऐसा ही हो।"
“हाँ, भाई।”
अलविदा, किसान!
"अलविदा!"
“यहाँ हर तरह के किसान हैं,” कोल्या ने थोड़ी देर बाद स्मुरोव से कहा।
सन्नाटा। "मुझे कैसे पता चलता कि मैंने एक चतुर व्यक्ति को ढूंढ निकाला है? मैं तो किसानों में भी बुद्धिमत्ता पहचानने के लिए हमेशा तैयार रहता हूँ।"
दूर गिरजाघर की घड़ी में साढ़े ग्यारह बज गए। लड़के
उन्होंने जल्दी की और कप्तान स्नेगिरिओव के आवास तक, जो काफी दूर था, वे तेजी से और लगभग चुपचाप चले। घर से बीस कदम पहले कोल्या रुका और स्मुरोव से आगे जाकर करामाज़ोव को बाहर आने के लिए कहने को कहा।

“पहले थोड़ा छानबीन कर लेनी चाहिए,” उसने स्मुरोव से कहा। “उसे बाहर आने के लिए क्यों कह रहे हो?”
स्मुरोव ने आपत्ति जताई। “तुम अंदर जाओ; वे तुम्हें देखकर बहुत खुश होंगे। बाहर कड़ाके की ठंड में दोस्ती करने का क्या फायदा?”
“मुझे पता है मैं उसे यहाँ ठंड में क्यों देखना चाहता हूँ,” कोल्या ने उसे बीच में ही रोकते हुए कहा।
उसने वही निरंकुश लहजा अपनाया जो वह "छोटे लड़कों" के साथ अक्सर इस्तेमाल करता था, और स्मुरोव उसकी आज्ञा का पालन करने के लिए दौड़ पड़ा।

अध्याय 4

खोया हुआ कुत्ता

कोल्या गरिमापूर्ण भाव से बाड़ के सहारे खड़ा होकर अलेयोशा के आने का इंतज़ार कर रहा था। हाँ, वह उससे मिलने की बहुत इच्छा रखता था। उसने लड़कों से उसके बारे में बहुत कुछ सुना था, लेकिन अब तक जब भी उसका ज़िक्र होता, वह हमेशा उपेक्षा और उदासीनता का भाव दिखाता था, और यहाँ तक कि उसने अलेयोशा के बारे में सुनी बातों की "आलोचना" भी की थी। लेकिन मन ही मन वह उससे मिलने के लिए बहुत उत्सुक था; अलेयोशा के बारे में उसे जो कुछ भी बताया गया था, उसमें कुछ सहानुभूतिपूर्ण और आकर्षक था। इसलिए यह पल महत्वपूर्ण था: सबसे पहले, उसे अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करना था, अपनी स्वतंत्रता दिखानी थी। “नहीं तो वो मुझे तेरह साल की समझेगा और बाकी सब की तरह लड़का ही समझेगा। और ये लड़के उसके लिए क्या मायने रखते हैं? मैं उससे तब पूछूंगी जब मैं उसे जान लूंगी। वैसे तो मेरी लंबाई कम है, ये अफ़सोस की बात है। तुज़िकोव मुझसे छोटा है, फिर भी मुझसे आधा सिर लंबा है। लेकिन मेरा चेहरा चालाक है। मैं सुंदर नहीं हूँ। मुझे पता है मैं बदसूरत हूँ, लेकिन मेरा चेहरा चालाक है। मुझे ज़्यादा खुलकर नहीं बोलना चाहिए; अगर मैं एकदम से उसकी बाहों में गिर गई, तो वो सोच सकता है... छी! कितना भयानक होगा अगर वो सोचे...!”
कोल्या के मन में ऐसे ही विचार चल रहे थे जब वह अपना काम कर रहा था।
वह पूरी कोशिश करता था कि वह सबसे स्वतंत्र दिखे। उसे सबसे ज़्यादा दुख अपने छोटे कद से होता था; उसे अपने "भयानक" चेहरे से ज़्यादा अपने छोटे कद की चिंता थी। घर के एक कोने में दीवार पर उसने पिछले साल पेंसिल से अपनी लंबाई का निशान बनाया था, और तब से हर दो महीने में वह उत्सुकता से अपनी लंबाई नापता था यह देखने के लिए कि उसकी लंबाई कितनी बढ़ी है। लेकिन अफ़सोस! उसकी लंबाई बहुत धीमी थी, और कभी-कभी यह बात उसे लगभग निराश कर देती थी। उसका चेहरा वास्तव में "भयानक" बिल्कुल नहीं था; बल्कि, वह काफ़ी आकर्षक था, गोरी, पीली त्वचा और झाइयों वाला। उसकी छोटी, जीवंत भूरी आँखों में निडरता झलकती थी, और अक्सर वे भावनाओं से चमक उठती थीं। उसकी गाल की हड्डियाँ उभरी हुई थीं; होंठ छोटे, बहुत लाल, लेकिन बहुत मोटे नहीं थे; उसकी नाक छोटी और स्पष्ट रूप से ऊपर उठी हुई थी। "मेरी नाक एकदम पक्के कुत्ते जैसी है, एकदम पक्के कुत्ते जैसी," कोल्या अक्सर शीशे में देखकर खुद से बुदबुदाता था, और हमेशा गुस्से में शीशा छोड़ देता था। "लेकिन शायद मेरा चेहरा इतना आकर्षक नहीं है?" कभी-कभी वह इस बात पर भी संदेह करता था। लेकिन यह नहीं माना जा सकता कि उसका मन अपने चेहरे और कद को लेकर चिंतित रहता था। इसके विपरीत, चाहे दर्पण के सामने के क्षण उसके लिए कितने भी कड़वे क्यों न रहे हों, वह उन्हें जल्दी ही भूल जाता था, और लंबे समय तक भूला रहता

था, "स्वयं को पूरी तरह से विचारों और वास्तविक जीवन में समर्पित कर देता था," जैसा कि उसने स्वयं से कहा था।
अलियोशा जल्दी से बाहर निकला और कोल्या की ओर दौड़ पड़ा। उसके पहुँचने से पहले ही
कोल्या ने देखा कि वह बहुत प्रसन्न था। “क्या वह मुझे देखकर इतना खुश हो सकता है?” कोल्या ने प्रसन्नता से सोचा। यहाँ यह बताना ज़रूरी है कि पिछली बार जब हमने अलेयोशा को देखा था, तब से उसके रूप में पूरी तरह बदलाव आ चुका था। उसने अपना चोगा उतार दिया था और अब वह एक अच्छी तरह से सिला हुआ कोट, एक मुलायम, गोल टोपी पहने हुए था, और उसके बाल छोटे कटे हुए थे। यह सब उस पर बहुत जँच रहा था और वह बहुत सुंदर लग रहा था। उसके आकर्षक चेहरे पर हमेशा एक हंसमुख भाव रहता था;
लेकिन उसकी इस हंसमुखता में एक कोमलता और शांति थी। कोल्या को आश्चर्य हुआ कि अलेयोशा बिना ओवरकोट के, जैसे था वैसे ही उसके पास आ गया। वह स्पष्ट रूप से जल्दी में आया था। उसने तुरंत कोल्या की ओर हाथ बढ़ाया।
“आखिरकार आप आ ही गए! हम आपको देखने के लिए कितने बेताब थे!”
इसके कुछ कारण थे, जो आपको सीधे पता चलेंगे। खैर, मुझे खुशी है।
आपसे मिलकर खुशी हुई। मैं लंबे समय से इस अवसर की प्रतीक्षा कर रहा था, और मैंने आपके बारे में बहुत कुछ सुना है,” कोल्या ने थोड़ी हांफते हुए धीरे से कहा।
“हमारी मुलाकात तो होनी ही थी। मैंने आपके बारे में भी बहुत कुछ सुना है;
लेकिन आपको यहां आने में काफी समय लग गया है।"
"बताइए, सब कैसा चल रहा है?"
“इलुशा बहुत बीमार है। वह निश्चित रूप से मर रहा है।”
“कितना भयानक! आपको मानना ही पड़ेगा कि चिकित्सा एक धोखा है, करामाज़ोव।”
कोल्या ने गर्मजोशी से कहा।
“इलुशा ने तुम्हारा जिक्र अक्सर किया है, बहुत बार, यहां तक कि नींद में भी।”
आप जानते हैं, वह एक तरह का भ्रम था। कोई भी देख सकता है कि आप उसके लिए बहुत प्यारे हुआ करते थे... उस घटना से पहले... चाकू वाली घटना से पहले... फिर एक और कारण है... बताइए, क्या वह आपका कुत्ता है?
“जी हां, पेरेज़वॉन।”
“झुल्का नहीं?” अलेयोशा ने दया भरी निगाहों से कोल्या की ओर देखा। “क्या वह है?”
क्या वह हमेशा के लिए खो गया?
मुझे पता है आप सभी चाहेंगे कि इसका नाम झुचका हो। मैंने इसके बारे में सब कुछ सुन लिया है।
कोल्या ने रहस्यमयी मुस्कान के साथ कहा, “सुनो, करामाज़ोव, मैं तुम्हें सब कुछ बताऊंगा। मैं इसीलिए तो आया हूँ; मैंने तुम्हें यहाँ इसीलिए बुलाया है ताकि अंदर जाने से पहले मैं तुम्हें पूरी घटना समझा सकूँ,” उसने जोश से कहना शुरू किया। “देखो, करामाज़ोव, इलुशा पिछली बसंत में तैयारी कक्षा में आया था। खैर, तुम जानते हो कि हमारी तैयारी कक्षा कैसी होती है—बहुत सारे छोटे लड़के। उन्होंने तुरंत इलुशा को चिढ़ाना शुरू कर दिया। मैं दो कक्षा ऊपर हूँ, और ज़ाहिर है, मैं उन्हें दूर से ही देखता रहता हूँ। मैंने देखा कि लड़का कमज़ोर और छोटा था, लेकिन उसने उनकी बात नहीं मानी; उसने उनसे लड़ाई की। मैंने देखा कि वह स्वाभिमानी था, और उसकी आँखों में जोश भरा था। मुझे ऐसे बच्चे पसंद हैं। और उन्होंने उसे और भी ज़्यादा चिढ़ाया। सबसे बुरी बात यह थी कि उस समय उसने बहुत ही खराब कपड़े पहने थे, उसकी पैंट उसके लिए बहुत छोटी थी, और उसके जूतों में छेद थे। उन्होंने उसे इस बात से परेशान किया; उन्होंने उसका मज़ाक उड़ाया। यह मुझे बर्दाश्त नहीं हुआ। मैं तुरंत उसके लिए खड़ा हो गया, और उन्हें जमकर सबक सिखाया। मैंने उन्हें पीटा, लेकिन वे मुझे पूजते हैं, जानते हो, करामाज़ोव?” कोल्या ने आवेग में आकर शेखी बघारी;
“लेकिन मुझे हमेशा से बच्चे बहुत प्यारे रहे हैं। मेरे घर पर अभी दो मुर्गियाँ हैं—आज मुझे उन्हीं की वजह से यहाँ रुकना पड़ा। इलूशा को पीटना बंद करने के बाद मैंने उसे अपनी सुरक्षा में ले लिया। मैंने देखा कि लड़का घमंडी था। सच कहूँ तो, वह घमंडी था; लेकिन अंत में वह पूरी तरह से मेरा भक्त बन गया: वह मेरी हर छोटी से छोटी बात मानता था, मेरी आज्ञा का पालन ऐसे करता था जैसे मैं भगवान हूँ, मेरी नकल करने की कोशिश करता था। कक्षाओं के बीच के अंतराल में वह सीधे मेरे पास दौड़कर आता था, और मैं उसके साथ

घूमने जाता था। रविवार को भी। लोग हमेशा हँसते हैं जब कोई बड़ा लड़का किसी छोटे लड़के से इस तरह दोस्ती करता है; लेकिन यह एक पूर्वाग्रह है। अगर यह मेरी इच्छा है, तो बस इतना ही काफी है। मैं उसे सिखा रहा हूँ, उसका विकास कर रहा हूँ। अगर मैं उसे पसंद करता हूँ तो उसका विकास क्यों न करूँ? देखो, करामाज़ोव, तुम इन सभी नन्हे-मुन्नों के साथ समय बिता रहे हो। मैं देख रहा हूँ कि तुम युवा पीढ़ी को प्रभावित करना चाहते हो—उनका विकास करना चाहते हो, उनके काम आना चाहते हो, और मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ कि तुम्हारे चरित्र का यह गुण, जिसके बारे में मैंने सुनी-सुनाई बातों से जाना था, मुझे बहुत आकर्षित करता है। सबसे बढ़कर। चलिए मुद्दे पर आते हैं। मैंने देखा कि लड़के में एक तरह की कोमलता और भावुकता आ रही थी, और आप जानते हैं कि मुझे इस दब्बू भावुकता से सख्त नफरत है, और यह मुझमें बचपन से ही है। उसमें विरोधाभास भी थे: वह गर्वित था, लेकिन वह मेरे प्रति पूरी तरह समर्पित था, और फिर भी अचानक उसकी आँखें चमक उठतीं और वह मुझसे सहमत होने से इनकार कर देता; वह बहस करता, क्रोध में आ जाता। मैं कभी-कभी कुछ विचार रखती थी; मैं समझ सकती थी कि ऐसा नहीं था कि वह विचारों से असहमत था, बल्कि वह मेरे खिलाफ विद्रोह कर रहा था, क्योंकि मैं उसके प्यार भरे शब्दों का जवाब ठंडेपन से देती थी। और इसलिए, उसे सही ढंग से प्रशिक्षित करने के लिए, वह जितना कोमल होता, मैं उतनी ही कठोर होती जाती। मैंने जानबूझकर ऐसा किया: यही मेरा विचार था। मेरा उद्देश्य उसके चरित्र का निर्माण करना, उसे सही राह दिखाना, उसे एक सच्चा आदमी बनाना था... और इसके अलावा... निस्संदेह, आप मेरी बात समझ गए होंगे। अचानक मैंने देखा कि लगातार तीन दिनों तक वह मैं उदास और निराश था, मेरी बेरुखी की वजह से नहीं, बल्कि किसी और वजह से, किसी ज़्यादा महत्वपूर्ण वजह से। मैं सोच रहा था कि आखिर त्रासदी क्या थी। मैंने उससे पूछताछ की और पता चला कि वह किसी तरह स्मरद्याकोव को जानता था, जो तुम्हारे दिवंगत पिता का नौकर था—यह उनकी मृत्यु से पहले की बात है—और उसने उस छोटे मूर्ख को एक बेवकूफी भरी चाल सिखाई—यानी एक क्रूर, घिनौनी चाल। उसने उसे रोटी का एक टुकड़ा लेने, उसमें एक पिन चुभोने और उसे उन भूखे कुत्तों में से किसी एक को फेंकने को कहा जो बिना काटे कुछ भी झपट लेते हैं, और फिर देखने को कहा कि क्या होता है। तो उन्होंने उसी तरह रोटी का एक टुकड़ा तैयार किया और उसे झुल्का को फेंक दिया, उस रोएंदार कुत्ते को जिसके बारे में इतना हंगामा हो रहा है। जिस घर का वह कुत्ता था, उसके मालिक उसे कभी खाना नहीं देते थे, हालांकि वह दिन भर भौंकता रहता था। (क्या तुम्हें वह बेवकूफी भरी भौंक पसंद है, करामाज़ोव? मुझे तो बिलकुल नहीं।) तो वह रोटी पर झपटा, उसे निगल गया और चीखने लगा; वह गोल-गोल घूमा और चीखता हुआ भाग गया। वह मेरी नज़रों से ओझल हो गया। यह इलुशा का खुद का बयान था। उसने मुझसे यह बात कबूल की और फूट-फूटकर रोया। वह मुझे गले लगाकर कांप रहा था। वह बार-बार दोहरा रहा था, 'वह चीखता हुआ भाग गया': वह दृश्य उसे सता रहा था। मैं देख सकता था कि वह पछतावे से व्याकुल था। मैंने इसे गंभीरता से लिया। मैंने ठान लिया कि उसे अन्य बातों के लिए भी सबक सिखाऊंगा। इसलिए मुझे यह स्वीकार करना होगा कि मैं पूरी तरह से स्पष्ट नहीं था, और शायद जितना गुस्सा था उससे कहीं ज्यादा गुस्से का दिखावा किया। मैंने कहा, 'तुमने बहुत बुरा काम किया है, तुम एक बदमाश हो। मैं बेशक किसी को नहीं बताऊंगा, लेकिन कुछ समय के लिए मैं तुमसे कोई वास्ता नहीं रखूंगा। मैं इस बारे में सोचूंगा और स्मुरोव के माध्यम से तुम्हें बताऊंगा'—वह लड़का जो अभी मेरे साथ आया है; वह हमेशा मेरे लिए कुछ भी करने को तैयार रहता है—'कि भविष्य में मैं तुमसे कोई वास्ता रखूंगा या तुम्हें हमेशा के लिए बदमाश मानकर छोड़ दूंगा।' वह बहुत परेशान हो गया। मुझे यह स्वीकार करना होगा कि बोलते समय मुझे लगा कि मैंने कुछ ज़्यादा ही बोल दिया है, लेकिन कोई चारा नहीं था। मैंने वही किया जो मुझे उस समय सही लगा। एक-दो दिन बाद, मैंने स्मुरोव को यह बताने के लिए भेजा कि मैं उससे फिर कभी बात नहीं करूँगा। जब दो सहपाठी एक-दूसरे से कोई वास्ता न रखने का फैसला कर लेते हैं, तो उसे यही कहते हैं। असल में मेरा इरादा उसे कुछ दिनों के लिए कोवेंट्री भेजने का था और फिर, अगर मुझे पश्चाताप के संकेत दिखते, तो मैं उससे फिर से दोस्ती का हाथ बढ़ा देता। यही मेरा इरादा था। लेकिन आपको क्या लगता है क्या हुआ? उसने स्मुरोव का संदेश सुना, उसकी आँखें गुस्से से लाल हो गईं। 'क्रासोटकिन को मेरी तरफ से बता देना,' वह चिल्लाया, 'कि मैं सभी कुत्तों को—सभी को—सभी को—कील ठूँस कर रोटी खिला दूँगा!'

‘तो वो थोड़ा गुस्सा दिखा रहा है। हमें उसका गुस्सा शांत करना होगा।’ और मैंने उसके साथ तिरस्कारपूर्ण व्यवहार करना शुरू कर दिया; जब भी मैं उससे मिलता, मैं मुँह फेर लेता या व्यंग्य भरी मुस्कान देता। और ठीक उसी समय उसके पिता के साथ वो घटना घटी। आपको याद है? आपको पता होना चाहिए कि जो कुछ

हुआ था, उससे वो बुरी तरह परेशान था। लड़कों ने देखा कि मैंने उसे छोड़ दिया है, तो वे उस पर टूट पड़े और उसे चिढ़ाने लगे, चिल्लाते हुए, 'पतला सा लड़का, पतला सा लड़का!' और जल्द ही उनके साथ उसकी नियमित झड़पें होने लगीं, जिसके लिए मुझे बहुत खेद है। ऐसा लगता है कि उन्होंने उसे एक बार बहुत बुरी तरह पीटा था। एक दिन जब वे सब स्कूल से बाहर आ रहे थे, तो वो उन पर टूट पड़ा। मैं कुछ गज़ की दूरी पर खड़ा देख रहा था। और, कसम से, मुझे याद नहीं कि मैं हँसा था; बल्कि इसके विपरीत, मुझे उसके लिए बहुत दुख हुआ, एक मिनट और होता तो मैं उसकी जगह लेने के लिए दौड़ पड़ता। लेकिन अचानक उसकी नज़रें मुझसे मिलीं। मुझे नहीं पता कि उसके मन में क्या चल रहा था; लेकिन उसने एक छोटा चाकू निकाला, मेरी ओर झपटा और मेरी जांघ पर, मेरे दाहिने पैर पर वार किया। मैं हिला तक नहीं। करामाज़ोव, मैं मानता हूँ कि मैं कभी-कभी साहसी हो जाता हूँ। मैंने उसे तिरस्कार भरी नज़रों से देखा, मानो कह रहा हो, 'मेरी सारी भलाई का यही बदला है! अगर चाहो तो फिर से करो, मैं तुम्हारी सेवा में हाज़िर हूँ।' लेकिन उसने मुझे दोबारा चाकू नहीं मारा; वह टूट गया, उसे अपने किए पर डर लग गया, उसने चाकू फेंक दिया, फूट-फूट कर रोने लगा और भाग गया। ज़ाहिर है, मैं चुपके से उसके पास नहीं गया और मैंने सबको चुप रहने को कहा ताकि यह बात आकाओं तक न पहुँचे। मैंने अपनी माँ को भी तब तक नहीं बताया जब तक घाव ठीक नहीं हो गया। और ज़ख्म तो बस एक मामूली खरोंच था। और फिर मैंने सुना कि उसी दिन वह पत्थर फेंक रहा था और उसने तुम्हारी उंगली काट ली थी—लेकिन अब तुम समझ सकते हो कि उसकी क्या हालत थी! खैर, अब कुछ नहीं किया जा सकता: जब वह बीमार पड़ा था, तब उससे माफी न मांगना—यानी उससे सुलह न करना—मेरी मूर्खता थी। अब मुझे इसका पछतावा है। लेकिन मेरे पास एक खास वजह थी। तो अब मैंने आपको सब कुछ बता दिया है... लेकिन मुझे अफसोस है कि यह मेरी मूर्खता थी।

“ओह, कितना अफसोस की बात है,” अलेयोशा ने भावुक होकर कहा, “कि मुझे पता नहीं था।”

आपको पता है कि आपके उससे क्या संबंध थे, वरना मैं बहुत पहले ही आपके पास आकर आपसे विनती करती कि आप मेरे साथ उसके पास चलें। यकीन मानिए, जब उसे बुखार था, तब वह बेहोशी की हालत में आपके बारे में ही बातें कर रहा था। मुझे पता ही नहीं था कि आप उसके लिए कितनी खास थीं! और क्या आप उस कुत्ते को ढूंढने में वाकई कामयाब नहीं हुईं? उसके पिता और बाकी लड़के पूरे शहर में उसे ढूंढ रहे हैं। यकीन मानिए, जब से वह बीमार है, मैंने तीन बार उसे रोते हुए यह कहते सुना है, 'पिताजी, मैंने झुचका को मार डाला, इसीलिए मैं बीमार हूँ। भगवान मुझे इसकी सजा दे रहे हैं।' वह इस बात को अपने दिमाग से निकाल ही नहीं पा रहा है। और अगर कुत्ता मिल जाए और जिंदा साबित हो जाए, तो शायद खुशी से वह ठीक हो जाएगा। हम सबने अपनी सारी उम्मीदें आप पर टिका रखी हैं।

"मुझे बताओ, तुम्हें ऐसा क्यों लगा कि मैं ही उसे ढूंढूं?"

कोल्या ने बड़ी उत्सुकता से पूछा, "आपने किसी और के बजाय मुझ पर ही भरोसा क्यों किया?"

“ऐसी ख़बर थी कि आप कुत्ते की तलाश कर रहे थे, और यह कि आप

जब तुम्हें मिल जाए तो उसे ले आना। स्मुरोव ने भी कुछ ऐसा ही कहा था। हम सब इलुशा को समझाने की कोशिश कर रहे हैं कि कुत्ता ज़िंदा है, उसे देखा गया है। लड़के उसके लिए एक ज़िंदा खरगोश लाए; उसने बस उसे देखा, हल्की सी मुस्कान के साथ, और उनसे उसे खेतों में छोड़ देने को कहा। और हमने वैसा ही किया। उसके पिता अभी-अभी वापस आए हैं, उसके लिए एक मास्टिफ़ पिल्ला लाए हैं, उम्मीद है कि इससे उसे तसल्ली मिलेगी; लेकिन मुझे लगता है कि इससे बात और बिगड़ जाएगी।

“मुझे बताओ, करामाज़ोव, पिता किस तरह का आदमी है? मैं उसे जानता हूँ, लेकिन

आप उसके बारे में क्या सोचते हैं—एक धोखेबाज, एक मसखरा?

“ओह, नहीं; ऐसे लोग भी हैं जो गहरी भावनाओं से ग्रस्त हैं और किसी न किसी तरह प्रभावित हुए हैं।”

कुचल दिया गया। उनमें जो मसखरापन है, वह उन लोगों के प्रति एक प्रकार का द्वेषपूर्ण व्यंग्य है, जिनसे वे सच बोलने की हिम्मत नहीं करते, क्योंकि वर्षों से उन्हें अपमानित और डराया-धमकाया गया है। यकीन मानिए, क्रासोटकिन, इस तरह का मसखरापन कभी-कभी बेहद दुखद होता है। अब उनका पूरा जीवन इलुशा के इर्द-गिर्द घूमता है, और अगर इलुशा की मृत्यु हो जाती है, तो वे या तो शोक से पागल हो जाएंगे या आत्महत्या कर लेंगे। उन्हें देखकर मुझे लगभग यही यकीन हो जाता है।

“मैं तुम्हें समझता हूँ, करामाज़ोव। मुझे लगता है कि तुम मानव स्वभाव को समझते हो।”

कोल्या ने भावुक होकर कहा।

और जैसे ही मैंने तुम्हें कुत्ते के साथ देखा, मुझे लगा कि यह झुत्वका है।
ला रहे थे।
“थोड़ा इंतज़ार करो, करामाज़ोव, शायद हमें यह मिल जाए; लेकिन यह
पेरेज़वॉन। मैं उसे अभी अंदर जाने देता हूँ, शायद इससे इलुशा को मास्टिफ़ पिल्ले से ज़्यादा मज़ा आएगा। ज़रा रुको, करामाज़ोव, तुम्हें एक मिनट में कुछ पता चल जाएगा। लेकिन, मैं कहता हूँ, मैं तुम्हें यहीं रखूँगा!”
कोल्या अचानक चिल्लाया। “इस कड़ाके की ठंड में तुमने ओवरकोट नहीं पहना है। देखो मैं कितना स्वार्थी हूँ। ओह, हम सब स्वार्थी हैं, करामाज़ोव!”
“चिंता मत करो; ठंड तो है, लेकिन मुझे अक्सर सर्दी नहीं लगती। चलो अंदर चलते हैं।”
वैसे, आपका नाम क्या है? मुझे पता है कि आपको कोलिया कहते हैं, लेकिन और क्या?
“निकोले—निकोले इवानोविच क्रासोटकिन, या, जैसा कि आधिकारिक भाषा में कहा जाता है
दस्तावेजों में, 'क्रासोटकिन का बेटा' लिखा है।" कोल्या किसी कारणवश हँस पड़ा, लेकिन अचानक बोला,
"बेशक मुझे अपना नाम निकोले पसंद नहीं है।"
"ऐसा किस लिए?"
"यह बहुत ही मामूली बात है, बहुत ही साधारण।"
“तुम तेरह साल के हो?” अलेयोशा ने पूछा।
नहीं, चौदह—मतलब, मैं बहुत जल्द, दो सप्ताह में चौदह साल का हो जाऊँगा।
करामाज़ोव, मैं अपनी एक कमजोरी कबूल करता हूँ, सिर्फ आपसे, क्योंकि यह हमारी पहली मुलाकात है, ताकि आप मेरे स्वभाव को तुरंत समझ सकें। मुझे अपनी उम्र पूछे जाने से नफरत है, उससे भी ज्यादा... और सच कहूँ तो... मेरे बारे में एक झूठी कहानी फैली हुई है कि पिछले हफ्ते मैंने तैयारी स्कूल के लड़कों के साथ लुटेरे का खेल खेला था। यह सच है कि मैंने उनके साथ खेला था, लेकिन यह कहना सरासर झूठ है कि मैंने यह सिर्फ अपने मनोरंजन के लिए किया था। मुझे यकीन है कि आपने यह कहानी सुनी होगी; लेकिन मैं अपने मनोरंजन के लिए नहीं खेल रहा था, बल्कि बच्चों के लिए खेल रहा था, क्योंकि उन्हें खुद कुछ करने का मन नहीं कर रहा था। लेकिन उनके पास हमेशा कोई न कोई बेतुकी कहानी होती है। मैं आपको बता सकता हूँ, यह शहर गपशप के लिए बहुत बुरा है।
लेकिन अगर आप सिर्फ अपने मनोरंजन के लिए खेल रहे होते, तो क्या होता?
चोट?"
“आओ, मैं तो बस अपने मनोरंजन के लिए ही सही! तुम लोग घोड़ों का खेल तो नहीं खेलते ना?”
“लेकिन आपको इसे इस तरह देखना चाहिए,” अलेयोशा ने मुस्कुराते हुए कहा। “एक वयस्क की तरह”
लोग थिएटर जाते हैं और वहाँ तरह-तरह के नायकों के कारनामे दिखाए जाते हैं—कभी-कभी लुटेरे और लड़ाइयाँ भी होती हैं—और क्या ये सब एक ही चीज़ नहीं है, बस अलग रूप में? और खेल-खेल में युवाओं द्वारा खेले जाने वाले सिपाही या लुटेरे वाले खेल भी कला का प्रारंभिक चरण हैं। आप जानते हैं, ये खेल युवाओं की बढ़ती कलात्मक प्रवृत्ति से जन्म लेते हैं। और कभी-कभी ये खेल थिएटर के प्रदर्शनों से कहीं बेहतर होते हैं, फर्क सिर्फ इतना है कि लोग थिएटर में अभिनेताओं को देखने जाते हैं, जबकि इन खेलों में युवा खुद ही अभिनेता होते हैं। लेकिन यह तो स्वाभाविक ही है।
“क्या तुम्हें ऐसा लगता है? क्या यही तुम्हारा विचार है?” कोल्या ने उसे गौर से देखा। “ओह,”
आप जानते हैं, यह तो वाकई दिलचस्प विचार है। घर जाकर इस पर विचार करूंगा। मैं मानता हूं कि मुझे लगा था कि मैं आपसे कुछ सीख सकता हूं। मैं आपके बारे में जानने आया हूं, करामाज़ोव,” कोल्या ने सहज भाव से भरी आवाज में अपनी बात समाप्त की।
“और मैं भी तुमसे,” अलेयोशा ने मुस्कुराते हुए और उसका हाथ दबाते हुए कहा। कोल्या अलेयोशा से बहुत प्रसन्न हुआ। उसे सबसे ज्यादा प्रभावित करने वाली बात यह थी कि
उन्होंने उसके साथ बिल्कुल बराबरी का व्यवहार किया और उससे ऐसे बात की जैसे वह "पूरी तरह से वयस्क" हो।
“मैं तुम्हें सीधे तौर पर कुछ दिखाऊंगा, करामाज़ोव; यह एक नाट्य प्रस्तुति है।”
“प्रदर्शन भी,” उन्होंने घबराकर हंसते हुए कहा। “इसीलिए तो मैं आया हूँ।”
“चलिए पहले बाईं ओर घर के लोगों के पास चलते हैं। सभी लड़के चले जाते हैं।”

उन्हें अपने कोट वहीं रखने होंगे, क्योंकि कमरा छोटा और गर्म है।
“ओह, मैं तो बस एक मिनट के लिए अंदर आ रहा हूँ। मैं अपना ओवरकोट पहने रहूँगा।”
पेरेज़वॉन यहीं गलियारे में पड़ा रहेगा और मर जाएगा। इक्की, पेरेज़वॉन, लेट जाओ और मर जाओ! देखो वो कैसे मरता है। मैं पहले अंदर जाकर छानबीन करूँगा, फिर जब मुझे ठीक लगेगा तो मैं उसे सीटी बजाकर बुलाऊँगा, और तुम देखोगे, वो पागलों की तरह अंदर दौड़ेगा। बस स्मुरोव को उस समय दरवाजा खोलना नहीं भूलना चाहिए। मैं सब कुछ व्यवस्थित कर दूँगा और तुम कुछ देखोगे।

अध्याय 5

इलुशा के बिस्तर के पास

सेवानिवृत्त कप्तान स्नेगिरिओव के परिवार का कमरा पाठक के लिए पहले से ही परिचित है। उस समय वह कमरा तंग और कई आगंतुकों से भरा हुआ था। कई लड़के इलुशा के साथ बैठे थे, और हालांकि वे सभी, स्मुरोव की तरह, इस बात से इनकार करने को तैयार थे कि उन्हें अलेयोशा ने लाया था और इलुशा से उनका मेल कराया था, लेकिन सच्चाई यही थी। अलेयोशा ने बड़ी चतुराई से उन्हें एक-एक करके इलुशा के पास ले गया था, बिना किसी बनावटी भावुकता के, मानो यह सब उसने सहजता से और बिना किसी योजना के किया हो। यह इलुशा के दुख में एक बड़ी सांत्वना थी। अपने शत्रु रहे इन लड़कों द्वारा दिखाए गए कोमल स्नेह और सहानुभूति को देखकर वह बहुत भावुक हो गया था। क्रासोटकिन ही वहाँ नहीं था और उसकी अनुपस्थिति इलुशा के दिल पर भारी बोझ थी। शायद उसकी सभी कड़वी यादों में सबसे कड़वी याद क्रासोटकिन को चाकू मारना था, जो उसका एकमात्र मित्र और रक्षक था। चतुर छोटे स्मुरोव, जिसने सबसे पहले इलुशा से सुलह की थी, ने यही सोचा था। लेकिन जब स्मुरोव ने क्रासोटकिन को संकेत दिया कि अलेयोशा किसी बात पर उनसे मिलने आना चाहता है, तो क्रासोटकिन ने उन्हें बीच में ही रोक दिया और स्मुरोव को आदेश दिया कि वे तुरंत "करामाज़ोव" से कहें कि उन्हें सबसे अच्छी तरह पता है कि क्या करना है, उन्हें किसी की सलाह नहीं चाहिए, और अगर वे इलुशा से मिलने जाते हैं, तो वे अपना समय खुद चुनेंगे क्योंकि उनके "अपने कारण" हैं।
यह इस रविवार से दो हफ्ते पहले की बात है। इसीलिए अलेयोशा ने ऐसा नहीं किया था।
जैसा कि उसने तय किया था, वह उससे मिलने गया था। लेकिन इंतज़ार करने के बावजूद, उसने स्मुरोव को दो बार फिर उसके पास भेजा। दोनों बार क्रासोटकिन ने उसे रूखे और अधीरता भरे अंदाज़ में मना कर दिया और अलेयोशा को संदेश भेज दिया कि वह उसे और परेशान न करे, और अगर वह खुद आया, तो क्रासोटकिन इलुशा बिल्कुल नहीं जाएगा। आखिरी दिन तक, स्मुरोव को पता नहीं था कि कोल्या उस सुबह इलुशा जाने वाला है, और पिछली शाम को ही, जब वह स्मुरोव से विदा हुआ, कोल्या ने अचानक उससे कहा कि वह अगली सुबह घर पर उसका इंतज़ार करे, क्योंकि वह उसके साथ स्नेगिरियोव के घर जाएगा, लेकिन उसे चेतावनी दी कि वह किसी भी हालत में यह न बताए कि वह आ रहा है, क्योंकि वह बस यूं ही मिलने जाना चाहता था। स्मुरोव ने बात मान ली। स्मुरोव का यह भ्रम कि कोल्या खोए हुए कुत्ते को वापस ले आएगा, कोल्या के कहे शब्दों पर आधारित था कि "अगर कुत्ता ज़िंदा है, तो उसे न ढूंढने वाले मूर्ख ही होंगे।" जब स्मुरोव ने मौके की तलाश में, कुत्ते के बारे में अपने अनुमान का दबे स्वर में इशारा किया, तो क्रासोटकिन भड़क उठे।

“मैं इतना मूर्ख नहीं हूँ कि दूसरों के कुत्तों को ढूंढने के लिए शहर भर में भटकूँ, जबकि मेरे पास खुद का कुत्ता है! और आप कैसे सोच सकते हैं कि कोई कुत्ता पिन निगलने के बाद ज़िंदा रह सकता है? ये तो बस भोली-भाली भावना है!”
पिछले दो सप्ताह से इलुशा मूर्तियों के नीचे अपने छोटे से बिस्तर से नहीं उठी थी।
कोने में। जिस दिन वह अलेयोशा से मिला और उसकी उंगली काट ली, तब से वह स्कूल नहीं गया था। उसी दिन वह बीमार पड़ गया, हालांकि उसके बाद एक महीने तक वह कभी-कभी उठकर कमरे और गलियारे में चल-फिर पाता था। लेकिन बाद में वह इतना कमजोर हो गया कि अपने पिता की मदद के बिना हिल भी नहीं पाता था। उसके पिता को उसकी बहुत चिंता थी। उन्होंने शराब पीना भी छोड़ दिया था और इस डर से लगभग पागल हो गए थे कि कहीं उनका बेटा मर न जाए। और अक्सर, खासकर उसे बांहों में उठाकर कमरे में घुमाने और वापस बिस्तर पर लिटाने के बाद, वह गलियारे के एक अंधेरे कोने में भाग जाते और दीवार से सिर टिकाकर ज़ोर-ज़ोर से रोने लगते, अपनी सिसकियों को दबाते ताकि इलूशा उन्हें न सुन सके।
कमरे में लौटकर, वह आमतौर पर कुछ न कुछ करने लगता था।
अपने प्यारे बेटे का मनोरंजन और उसे दिलासा देने के लिए, वह उसे कहानियाँ, मज़ेदार किस्से सुनाता, या जिन हास्यप्रद लोगों से वह मिला होता, उनकी नकल करता, यहाँ तक कि जानवरों की आवाज़ों और चीखों की भी नकल करता। लेकिन इलुशा अपने पिता को इस तरह मूर्खता करते और मसखरापन करते देखना सहन नहीं कर पाता था। हालाँकि लड़के ने अपनी नापसंदगी ज़ाहिर न करने की कोशिश की, लेकिन उसने दुखी मन से देखा कि उसके पिता तिरस्कार के पात्र बन गए हैं, और वह लगातार उस "सूअर के तिनके" और उस "भयानक दिन" की यादों से परेशान रहता था।
इलूशा की कोमल, अपंग बहन नीना को अपने पिता की मसखरी पसंद नहीं थी।
(वरवारा कुछ समय पहले ही पीटर्सबर्ग विश्वविद्यालय में पढ़ाई करने गई थी)। लेकिन जब उसका पति उछल-कूद करता या कुछ करतब दिखाता, तो वह थोड़ी मंदबुद्धि माँ बहुत खुश होती और दिल खोलकर हँसती। यही उसका एकमात्र मनोरंजन का तरीका था; बाकी सारा समय वह बड़बड़ाती और शिकायत करती रहती कि अब सब उसे भूल गए हैं, कोई उसका सम्मान नहीं करता, उसकी उपेक्षा की जाती है, इत्यादि।
लेकिन पिछले कुछ दिनों में वह पूरी तरह बदल गई थी। वह कोने में इलूशा के बिस्तर को लगातार देखती रहती और विचारों में खोई हुई सी लगती। वह अधिक शांत और चुप रहने लगी, और अगर रोती भी तो इतनी धीरे रोती कि किसी को सुनाई न दे। कप्तान ने उसके इस बदलाव को बड़े दुख और हैरानी से देखा। लड़कों के आने से पहले तो उसे गुस्सा आता था, लेकिन बाद में उनकी हँसी-मजाक और कहानियाँ उसे खुश करने लगीं, और अंत में उसे वे इतने अच्छे लगने लगे कि अगर लड़के आना बंद कर देते, तो वह उनके बिना उदास हो जाती। जब बच्चे कोई कहानी सुनाते या कोई खेल खेलते, तो वह हँसती और ताली बजाती। उसने उनमें से कुछ को अपने पास बुलाया और उन्हें चूमा। वह स्मुरोव को विशेष रूप से पसंद करती थी।
कप्तान के कमरे में उन बच्चों की मौजूदगी, जो आए थे
इलूशा को खुश करो, ये सोचकर उसका दिल शुरू से ही आनंद से भर गया। उसे उम्मीद थी कि इलूशा अब अपने अवसाद से उबर जाएगा और इससे उसकी सेहत में सुधार आएगा। इलूशा को लेकर चिंतित होने के बावजूद, हाल तक उसे अपने बेटे के पूरी तरह ठीक होने पर जरा भी संदेह नहीं था।
उन्होंने अपने नन्हे-मुन्नों का आदरपूर्वक स्वागत किया और उनकी हर संभव सेवा की।
वह उनका घोड़ा बनने को तैयार था और उन्हें अपनी पीठ पर सवारी भी कराने लगा, लेकिन इलुशा को यह खेल पसंद नहीं आया और इसे छोड़ दिया गया। वह उनके लिए छोटी-छोटी चीजें, जैसे जिंजरब्रेड और मेवे खरीदने लगा, उन्हें चाय पिलाता और सैंडविच काटकर देता। यह ध्यान देने योग्य है कि इस पूरे समय उसके पास पर्याप्त धन था। उसने अलेयोशा की भविष्यवाणी के अनुसार ही कैटेरिना इवानोव्ना से दो सौ रूबल ले लिए थे। बाद में, कैटेरिना इवानोव्ना को उनकी परिस्थितियों और इलुशा की बीमारी के बारे में अधिक जानकारी मिली, तो वह स्वयं उनसे मिलने गई, परिवार से जान-पहचान बनाई और अर्ध-मंदबुद्धि माँ को प्रभावित करने में सफल रही। तब से वह उनकी मदद करने में उदार हो गई, और कप्तान, अपने बेटे के मरने के डर से सहमकर, अपना अहंकार भूल गया और विनम्रतापूर्वक उसकी सहायता स्वीकार कर ली।
इस पूरे समय डॉक्टर हर्ज़ेनस्टुबे, जिन्हें कैटेरिना ने बुलाया था, मौजूद थे।

इवानोव्ना हर दूसरे दिन समय पर आती थीं, लेकिन उनके आने से कोई खास फायदा नहीं होता था और वे बीमार को बेरहमी से दवाइयाँ देती थीं। लेकिन उस रविवार की सुबह एक नए डॉक्टर के आने की उम्मीद थी, जो मॉस्को से आए थे, जहाँ उनकी बहुत ख्याति थी। कैटेरिना इवानोव्ना ने उन्हें मॉस्को से बहुत खर्च करके बुलवाया था, विशेष रूप से इलुशा के लिए नहीं, बल्कि किसी और उद्देश्य से, जिसके बारे में आगे विस्तार से बताया जाएगा। लेकिन, चूंकि वे आए थे, इसलिए उन्होंने उनसे इलुशा को भी देखने के लिए कहा था, और कप्तान को भी उनके आने की सूचना दे दी गई थी। उन्हें ज़रा भी अंदाज़ा नहीं था कि कोल्या क्रासोटकिन आ रहे हैं, हालाँकि वे लंबे समय से उस लड़के के आने की कामना कर रहे थे जिसके लिए इलुशा चिंतित थी।
जिस क्षण क्रासोटकिन ने दरवाजा खोला और अंदर आया
कमरे में, कप्तान और सभी लड़के इलुशा के बिस्तर के चारों ओर बैठे एक नन्हे से मास्टिफ़ पिल्ले को देख रहे थे, जो एक दिन पहले ही पैदा हुआ था, हालाँकि कप्तान ने इसे एक हफ़्ते पहले ही इलुशा को दिलासा देने और उसका मनोरंजन करने के लिए मंगवाया था, जो अभी भी खोई हुई और शायद मर चुकी झुल्का के गम में डूबा हुआ था। इलुशा, जिसने तीन दिन पहले सुना था कि उसे एक पिल्ला भेंट किया जाएगा, कोई साधारण पिल्ला नहीं, बल्कि एक नस्ल वाला मास्टिफ़ (ज़ाहिर है, यह एक बहुत महत्वपूर्ण बात थी), अपनी भावनाओं को काबू में रखते हुए खुश होने का नाटक कर रहा था। लेकिन उसके पिता और लड़के यह देखे बिना नहीं रह सके कि पिल्ला उसके छोटे से दिल में उस दुखी कुत्ते की याद दिला रहा था जिसे उसने मार डाला था। पिल्ला उसके बगल में बेजान सा पड़ा था और वह उदास मुस्कान के साथ अपने पतले, पीले, कमजोर हाथ से उसे सहला रहा था। ज़ाहिर है, उसे पिल्ला पसंद था, लेकिन... वह झुल्का नहीं था; अगर उसे झुल्का और पिल्ला दोनों मिल जाते, तो वह पूरी तरह से खुश होता।
“क्रासोटकिन!” लड़कों में से एक ने अचानक चिल्लाया। वह सबसे पहले देखने वाला था।
उसे अंदर आने दो।
क्रासोटकिन के प्रवेश से चारों ओर सनसनी फैल गई; लड़के वहां से हट गए।
और वह पलंग के दोनों ओर खड़ा हो गया, ताकि उसे इलुशा का पूरा दृश्य दिखाई दे सके। कप्तान उत्सुकता से कोल्या से मिलने दौड़ा।
“कृपया अंदर आइए... आपका स्वागत है!” उसने जल्दी से कहा। “इलुशा,”
श्री क्रासोटकिन आपसे मिलने आए हैं!
लेकिन क्रासोटकिन ने जल्दबाजी में उनसे हाथ मिलाते हुए तुरंत ही अपना
उन्हें शिष्ट समाज के तौर-तरीकों का पूर्ण ज्ञान था। सबसे पहले उन्होंने कप्तान की पत्नी की ओर रुख किया, जो अपनी कुर्सी पर बैठी थीं और उस समय बहुत चिड़चिड़ी थीं। वे बड़बड़ा रही थीं कि लड़के उनके और इलुशा के बिस्तर के बीच खड़े हैं और उन्हें नए पिल्ले को देखने नहीं दे रहे हैं। उन्होंने अत्यंत विनम्रता से उन्हें प्रणाम किया, अपना पैर ज़मीन से रगड़ा, और फिर नीना की ओर मुड़कर, जो वहाँ उपस्थित एकमात्र दूसरी महिला थीं, उन्हें भी इसी तरह प्रणाम किया। इस विनम्र व्यवहार से उस चिड़चिड़ी महिला पर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा।
"वहाँ, आप तुरंत देख सकते हैं कि वह एक ऐसा युवक है जो अच्छी तरह से प्रशिक्षित है।"
“उठाकर लाया गया,” उसने हाथ ऊपर उठाते हुए जोर से कहा; “लेकिन हमारे बाकी मेहमान तो एक के ऊपर एक करके आते हैं।”
"माँ, तुम्हारा मतलब क्या है, एक के ऊपर एक, ये कैसा है?"
कप्तान ने स्नेहपूर्वक बुदबुदाते हुए कहा, हालांकि वह उसके कारण थोड़ा चिंतित भी था।
“वे इसी तरह अंदर आते हैं। वे एक दूसरे के कंधों पर चढ़ जाते हैं।”
किसी संभ्रांत परिवार के घर में इस तरह शान से घुस आना। अजीब तरह के मेहमान!
"लेकिन इस तरह अंदर कौन आया है, माँ?"
“अरे, वो लड़का तो उसकी पीठ पर सवार होकर आया और ये वाला उसकी पीठ पर।”
किसी का।"
कोल्या पहले से ही इलुशा के बिस्तर के पास थी। बीमार लड़का स्पष्ट रूप से करवट बदल रहा था। उसका चेहरा पीला पड़ गया था। वह बिस्तर पर उठा और कोल्या को ध्यान से देखने लगा। कोल्या ने अपने छोटे दोस्त को दो महीने से नहीं देखा था, और उसे देखकर वह स्तब्ध रह गया। उसने कभी कल्पना भी नहीं

की थी कि वह इतना मुरझाया हुआ, पीला चेहरा, इतनी बड़ी-बड़ी, बुखार से चमकती आँखें और इतने पतले छोटे हाथ देखेगा। उसने दुखी आश्चर्य के साथ इलुशा की तेज़, कठोर साँसें और सूखे होंठ देखे। वह उसके पास गया, अपना हाथ बढ़ाया, और लगभग स्तब्ध होकर बोला:
“अच्छा, बूढ़े आदमी... कैसे हो?” लेकिन उसकी आवाज़ लड़खड़ा गई, वह बोल नहीं पाया।
सहजता का आभास देने के प्रयास में, अचानक उसका चेहरा फड़क उठा और उसके होंठों के कोने कांपने लगे। इलुशा ने दयनीय सी मुस्कान बिखेरी, लेकिन वह अभी भी एक शब्द भी नहीं बोल पा रही थी। किसी बात ने कोल्या को प्रेरित किया और उसने अपना हाथ उठाकर इलुशा के बालों पर फेर दिया।
“कोई बात नहीं!” उसने उसे खुश करने के लिए धीरे से कहा, या शायद
पता नहीं उसने ऐसा क्यों कहा। एक मिनट के लिए वे फिर चुप हो गए।
“हेलो, तो तुमने एक नया पिल्ला लिया है?” कोल्या ने अचानक, बेहद ही भावुक लहजे में कहा।
निर्मम आवाज।
“जी हाँ,” इलुशा ने लंबी फुसफुसाहट में, साँस फूलते हुए जवाब दिया। “काली नाक, इसका मतलब है कि वह खूंखार होगा, एक अच्छा घरेलू कुत्ता,” कोल्या ने कहा।
वह गंभीर और भावहीन भाव से देखता रहा, मानो उसे सिर्फ उस पिल्ले और उसकी काली नाक की ही परवाह हो। लेकिन असल में उसे अपने भावनाओं को काबू में रखने की पूरी कोशिश करनी पड़ी ताकि वह बच्चे की तरह रोने न लगे, और चाहे वह कितना भी कोशिश कर ले, वह उन्हें रोक नहीं सका। "जब यह बड़ा हो जाएगा, तो मुझे यकीन है कि आपको इसे जंजीर से बांधकर रखना पड़ेगा।"
“वह बहुत बड़ा कुत्ता बनेगा!” लड़कों में से एक चिल्लाया।
“बेशक वह करेगा,” “एक मास्टिफ़,” “बड़ा,” “इस तरह,” “एक बछड़े जितना बड़ा,”
कई आवाजों ने चिल्लाकर कहा।
“बिल्कुल बछड़े जितना बड़ा, एकदम असली बछड़े जितना,” कप्तान ने कहा। “मेरे पास भी ऐसा ही एक है।”
जानबूझकर, सबसे खूंखार नस्लों में से एक, और उसके माता-पिता विशाल और बहुत खूंखार हैं, वे ज़मीन से इतनी ऊँचाई तक खड़े हैं... यहाँ इलुशा के बिस्तर पर या यहाँ बेंच पर बैठ जाइए। आपका स्वागत है, हम आपको बहुत समय से देखने की उम्मीद कर रहे थे... एलेक्सी फ्योदोरोविच के साथ आने की कृपा हुई?
क्रासोटकिन पलंग के किनारे, इलुशा के पैरों के पास बैठा था। हालाँकि उसके पास
शायद उसने रास्ते में बातचीत शुरू करने के लिए एक सहज और सरल शुरुआत की तैयारी की थी, लेकिन अब वह बातचीत का क्रम पूरी तरह से भूल गया है।
“नहीं... मैं पेरेज़वॉन के साथ आया था। अब मेरे पास एक कुत्ता है, जिसका नाम पेरेज़वॉन है।
स्लावोनिक नाम। वह वहीं कहीं है... अगर मैं सीटी बजाऊँगा, तो वह दौड़कर अंदर आ जाएगा। मैं एक कुत्ता भी लाया हूँ,” उसने अचानक इलुशा से कहा। “क्या तुम्हें झुचका याद है, बूढ़े?” उसने अचानक उससे पूछा।
इलूशा का छोटा सा चेहरा कांप उठा। उसने पीड़ा भरे भाव से देखा।
कोल्या। दरवाजे पर खड़े अलेयोशा ने भौंहें चढ़ाकर कोल्या को इशारा किया कि वह झुत्वका के बारे में बात न करे, लेकिन कोल्या ने इस पर ध्यान नहीं दिया या देना नहीं चाहा।
“झुत्वका कहाँ है?” इलुशा ने टूटी हुई आवाज़ में पूछा। “ओह, मेरे बच्चे, तुम्हारा झुत्वका खो गया है और उसका अंत हो गया है!” इलुशा कुछ नहीं बोला, लेकिन उसने एक बार फिर कोल्या पर ध्यान से देखा।
कोलिया की नजरें अपनी ओर खींचते हुए, अलेयोशा ने एक बार फिर उसे इशारे से संकेत दिया, लेकिन कोलिया ने अनसुना करने का नाटक करते हुए अपनी नजरें फेर लीं।
“यह भागकर कहीं मर गया होगा। यह किसी दुर्घटना के बाद मरा होगा।
“ऐसा खाना,” कोल्या ने निर्ममता से कहा, हालाँकि वह थोड़ा हाँफता हुआ लग रहा था। “लेकिन मेरे पास एक कुत्ता है, पेरेज़वॉन... एक स्लावोनिक नाम... मैं उसे आपको दिखाने के लिए लाया हूँ।”
“मुझे वह नहीं चाहिए!” इलुशा ने अचानक कहा।
“नहीं, नहीं, आपको उसे ज़रूर देखना चाहिए... आपको मज़ा आएगा। मैं उसे लेकर आया हूँ।”
जानबूझकर... वह भी उसी तरह का आवारा कुत्ता है... क्या आप मुझे अपने कुत्ते को अंदर बुलाने की अनुमति देंगी, महोदया?" उसने अचानक मैडम स्नेगिरिओव से बात की, उसके हावभाव में एक अजीब सी उत्तेजना थी।

“मैं उसे नहीं चाहती, मैं उसे नहीं चाहती!” इलुशा ने शोक भरे स्वर में कहा।
उसकी आवाज में कंपन था। उसकी आँखों में तिरस्कार का भाव था।
“तुम्हें ऐसा करना ही होगा,” कप्तान दीवार के पास रखे संदूक से उठते हुए बोला।
जिस कमरे में वह अभी बैठा ही था, "बेहतर होगा... किसी और समय," उसने बुदबुदाते हुए कहा, लेकिन कोल्या को रोका नहीं जा सका। उसने जल्दी से स्मुरोव को चिल्लाकर कहा, "दरवाजा खोलो," और जैसे ही दरवाजा खुला, उसने सीटी बजा दी। पेरेज़वॉन धड़ाम से कमरे में घुस गया।
“उछलो, पेरेज़वॉन, भीख मांगो! भीख मांगो!” कोल्या चिल्लाते हुए उछल पड़ा, और कुत्ता
पेरेज़वॉन इलुशा के बिस्तर के पास अपने पिछले पैरों पर सीधा खड़ा हो गया। इसके बाद जो हुआ वह सभी के लिए आश्चर्यजनक था: इलुशा चौंक गई, अचानक आगे की ओर झुक गई, पेरेज़वॉन पर झुक गई और चिंता से बेहाल होकर उसे घूरने लगी।
“यह... झुल्का है!” वह अचानक खुशी से कांपती आवाज में चिल्लाया।
कष्ट।
“और तुम्हें क्या लगता है कि वह कौन था?” क्रासोटकिन ने अपनी पूरी ताकत से चिल्लाते हुए कहा।
एक बुलंद, प्रसन्न आवाज में, झुककर उसने कुत्ते को पकड़ा और उसे उठाकर इलुशा के पास ले गया।
“देखो, बूढ़े आदमी, तुम एक आँख से अंधे हो और बायाँ कान फटा हुआ है, बस
आपने जिन निशानों का ज़िक्र किया था, उन्हीं से मुझे वो मिला। मैंने उसे सीधे तौर पर पाया। वो किसी का नहीं था!” उसने कप्तान, उसकी पत्नी, अलेयोशा और फिर इलुशा की ओर मुड़ते हुए समझाया। “वो फेडोटोव परिवार के पिछवाड़े में रहता था। हालाँकि उसने वहाँ अपना घर बना लिया था, लेकिन वे उसे खाना नहीं देते थे। वो एक आवारा कुत्ता था जो गाँव से भाग गया था... मैंने उसे पाया... देखिए, बूढ़े, वो आपने जो दिया था उसे निगल नहीं सकता था। अगर निगल लेता, तो मर जाता, ज़रूर मर जाता! इसलिए उसने उसे थूक दिया होगा, क्योंकि वो ज़िंदा है। आपने उसे ऐसा करते नहीं देखा। लेकिन सुई उसकी जीभ में चुभ गई थी, इसीलिए वो चीखा। वो चीखता हुआ भाग गया और आपको लगा कि उसने निगल लिया है। वो चीख सकता है, क्योंकि कुत्तों के मुँह की त्वचा बहुत कोमल होती है... इंसानों से भी ज़्यादा कोमल, बहुत ज़्यादा कोमल!” कोल्या बेतहाशा रोने लगा, उसका चेहरा खुशी से दमक रहा था। इलुशा कुछ बोल नहीं सका। उसका चेहरा पीला पड़ गया था, वह मुंह खुला रखकर कोल्या को देखता रहा, उसकी बड़ी-बड़ी आंखें मानो बाहर निकल आ रही थीं। और अगर क्रासोटकिन, जिसे इस बात का ज़रा भी आभास नहीं था, यह जानता कि ऐसे क्षण का बीमार बच्चे के स्वास्थ्य पर कितना विनाशकारी और घातक प्रभाव पड़ सकता है, तो वह कभी भी उसके साथ ऐसा मज़ाक नहीं करता। लेकिन शायद कमरे में अलेयोशा ही एकमात्र व्यक्ति था जिसने यह बात समझी। कप्तान तो एक छोटे बच्चे की तरह व्यवहार कर रहा था।
“झुल्का! यह झुल्का है!” वह आनंदित स्वर में चिल्लाया, “इलुशा, यह है
झुल्का, तुम्हारी झुल्का! माँ, ये झुल्का है!” वह लगभग रोने लगा था।
“और मैंने कभी सोचा भी नहीं था!” स्मुरोव ने खेद से कहा। “शाबाश, क्रासोटकिन! मैं
उसने कहा था कि वह कुत्ते को ढूंढ लेगा और देखो, उसने उसे ढूंढ लिया है।
“देखो, उसे मिल गया!” एक और लड़के ने खुशी से दोहराया। “क्रासोटकिन तो ईंट जैसा मजबूत है!” तीसरी आवाज ने कहा।
“वो ईंट है, वो ईंट है!” दूसरे लड़कों ने चिल्लाते हुए कहा और वे शुरू हो गए
ताली बजाना।
“रुको, रुको,” क्रासोटकिन ने उन सभी के ऊपर चिल्लाते हुए अपनी पूरी ताकत लगा दी। “मैं बताता हूँ।” आपको बताइए कि यह सब कैसे हुआ, यही तो असली बात है। मैंने उसे पाया, घर ले आया और तुरंत छिपा दिया। मैंने उसे घर में बंद रखा और आज तक किसी को नहीं दिखाया। पिछले दो हफ़्तों से सिर्फ़ स्मुरोव को पता है, लेकिन मैंने उसे यकीन दिलाया कि इस कुत्ते का नाम पेरेज़वॉन है और उसने अंदाज़ा नहीं लगाया। और इस बीच मैंने कुत्ते को तरह-तरह के करतब सिखाए। आपको बस देखना चाहिए कि वह क्या-क्या कर सकता है! मैंने उसे इस तरह से प्रशिक्षित किया है कि मैं आपको एक अच्छी तरह से प्रशिक्षित, स्वस्थ कुत्ता दे सकूँ, बूढ़े आदमी, ताकि मैं आपसे कह सकूँ, 'देखो, बूढ़े आदमी, तुम्हारा झुल्का कितना बढ़िया कुत्ता है!' क्या

आपके पास थोड़ा सा मांस नहीं है? वह आपको ऐसा करतब दिखाएगा कि आप हँसी से लोटपोट हो जाएँगे। मांस का एक टुकड़ा, क्या आपके पास नहीं है?
कप्तान दौड़कर गलियारे से होते हुए मकान मालकिन के पास गया, जहाँ उनका खाना पकाया जा रहा था। काम हो गया। कीमती समय बर्बाद न करने के लिए, कोल्या ने हड़बड़ी में पेरेज़वॉन को चिल्लाकर कहा, "मर गया!" और कुत्ता तुरंत पलट गया और अपने चारों पंजे हवा में उठाकर पीठ के बल लेट गया। लड़के हंसने लगे। इलुशा भी उसी दर्द भरी मुस्कान के साथ देख रही थी, लेकिन कुत्ते के इस करतब से सबसे ज़्यादा खुश "मम्मी" थीं। वह कुत्ते पर हंसने लगीं और उंगलियां चटकाते हुए उसे "पेरेज़वॉन, पेरेज़वॉन!" कहने लगीं।
“उसे कोई भी चीज नहीं उठा सकती, कोई भी चीज नहीं!” कोल्या ने विजयी स्वर में कहा।
अपनी सफलता पर गर्व करते हुए, कप्तान ने कहा, “दुनिया भर के शोर-शराबे पर भी वह हिलता नहीं, लेकिन अगर मैं उसे पुकारूँ तो वह एक मिनट में उछल पड़ता है। इकी, पेरेज़वॉन!” कुत्ता उछल पड़ा और खुशी से मूँदते हुए इधर-उधर भागने लगा। कप्तान पका हुआ गोमांस का एक टुकड़ा लेकर वापस भागा।
“क्या गर्मी है?” कोल्या ने जल्दबाजी में, व्यावसायिक लहजे में पूछा, और
मांस। “कुत्तों को गर्म चीजें पसंद नहीं होतीं। नहीं, कोई बात नहीं। देखो, सब लोग, देखो, इलुशा, देखो, बूढ़े आदमी; तुम क्यों नहीं देख रहे हो? वह उसकी तरफ नहीं देख रहा है, अब मैं उसे ले आया हूँ।”
नई तरकीब में कुत्ते को बिना हिले-डुले खड़ा रखना शामिल था।
मालिक ने नाक बाहर निकालकर मांस का एक आकर्षक टुकड़ा ठीक उसकी नाक पर रख दिया। बेचारे कुत्ते को मांस को नाक पर रखे बिना, तब तक बिना हिले-डुले खड़ा रहना पड़ा, जब तक उसका मालिक उसे रखना चाहता था, शायद आधे घंटे तक। लेकिन मालिक ने पेरेज़वॉन को केवल कुछ ही क्षणों के लिए रखा।
“भुगतान हो गया!” कोल्या चिल्लाया, और मांस पलक झपकते ही कुत्ते के हाथ से निकलकर उसके पास पहुँच गया।
नाक मुंह तक। दर्शक स्वाभाविक रूप से उत्साह और आश्चर्य व्यक्त कर रहे थे।
क्या आप वाकई सिर्फ प्रशिक्षण देने के लिए इतने समय तक आने में देरी करते रहे?
"कुत्ता?" अलेयोशा ने अनजाने में ही अपने स्वर में तिरस्कार का भाव लिए हुए कहा।
“बस इसी वजह से!” कोल्या ने बड़ी सरलता से जवाब दिया। “मैं चाहता था कि
उसे उसकी पूरी महिमा में दिखाओ।
"पेरेज़वॉन! पेरेज़वॉन," इलुषा ने अचानक अपनी पतली उंगलियाँ चटकाते हुए कहा
और कुत्ते को इशारा करते हुए।
“क्या बात है? उसे बिस्तर पर कूदने दो! इकी, पेरेज़वोन!” कोल्या ने थप्पड़ मारा।
पेरेज़वॉन बिस्तर से उछलकर इलुशा के पास आ गया। लड़के ने अपने दोनों हाथ उसके सिर के चारों ओर लपेट लिए और पेरेज़वॉन ने तुरंत उसका गाल चाट लिया। इलुशा उसके करीब सरक गया, बिस्तर पर लेट गया और अपना चेहरा कुत्ते के घने बालों में छिपा लिया।
“हे भगवान!” कप्तान बार-बार चिल्ला रहा था। कोल्या फिर से बैठ गया।
बिस्तर का किनारा।
“इलुशा, मैं तुम्हें एक और तरकीब दिखा सकता हूँ। मैं तुम्हारे लिए एक छोटी सी तोप लाया हूँ।”
आपको याद होगा, मैंने आपको इसके बारे में पहले भी बताया था और आपने कहा था कि आप इसे देखना चाहते हैं। तो लीजिए, मैं इसे आपके लिए ले आया हूँ।
और कोल्या ने जल्दी से अपने थैले से छोटी पीतल की तोप निकाली।
वह जल्दी में था, क्योंकि वह खुद खुश था। किसी और समय होता तो वह पेरेज़वॉन के कारण पैदा हुई सनसनी के शांत होने का इंतज़ार करता, लेकिन अब वह सारी परवाह किए बिना जल्दी में आगे बढ़ गया।
"अब तुम सब खुश हो," उसने सोचा, "तो लो, कुछ ऐसा जो तुम्हें और खुश कर दे!" वह खुद पूरी तरह से आनंदित था।
मैं इस चीज़ को बहुत समय से पाने की इच्छा रखता था; यह तुम्हारे लिए है, बूढ़े आदमी, यह तुम्हारे लिए है। तुम्हारे लिए। यह मोरोज़ोव की थी, उसके किसी काम की नहीं थी, उसे अपने भाई से मिली थी। मैंने पिताजी की किताबों की अलमारी से एक किताब लेकर उसे दिया था, 'अ किंसमैन ऑफ मोहम्मद' या 'सैल्यूटरी

फ़ॉली', एक विवादास्पद किताब जो सौ साल पहले मॉस्को में प्रकाशित हुई थी, जब वहां कोई सेंसरशिप नहीं थी। और मोरोज़ोव को ऐसी किताबों का शौक था। वह मेरा आभारी भी था...
कोल्या ने तोप को अपने हाथ में इस तरह पकड़ा हुआ था कि सभी उसे देख सकें और उसकी प्रशंसा कर सकें।
इलूशा उठा और अपने दाहिने हाथ से कुत्ते को पकड़े हुए, खिलौने को मंत्रमुग्ध होकर देखने लगा। उसकी खुशी तब और बढ़ गई जब कोलिया ने बताया कि उसके पास बारूद भी है और अगर "महिलाओं को डर न लगे तो" इसे तुरंत चलाया जा सकता है। "मम्मा" ने तुरंत खिलौने को करीब से देखने की इच्छा जताई और उनकी इच्छा पूरी कर दी गई। पहियों वाली छोटी पीतल की तोप देखकर वह बहुत खुश हुईं और उसे अपनी गोद में आगे-पीछे घुमाने लगीं। उन्होंने बिना कुछ समझे ही तोप चलाने की अनुमति दे दी। कोलिया ने बारूद और गोला दिखाया। कप्तान, एक सैनिक होने के नाते, उसमें थोड़ी मात्रा में बारूद भरकर उसे लोड करने लगा। उसने अनुरोध किया कि गोला बाद में चलाया जाए। तोप को फर्श पर रखा गया, कमरे के एक खाली हिस्से की ओर निशाना साधा गया, माचिस की तीली में तीन दाने बारूद डाला गया और माचिस जला दी गई। एक जोरदार धमाका हुआ। मम्मा चौंक गईं, लेकिन तुरंत खुशी से हंस पड़ीं। लड़के अवाक होकर जीत का न्योता देते रहे। लेकिन कप्तान, इलुशा को देखकर उन सभी से कहीं अधिक मोहित हो गया। कोल्या ने तोप उठाई और तुरंत उसे बारूद और गोले सहित इलुशा को भेंट कर दिया।
“मैंने इसे तुम्हारे लिए लिया है, तुम्हारे लिए! मैं इसे तुम्हारे लिए बहुत समय से संभाल कर रखा था,” उसने कहा।
उसने प्रसन्नता से एक बार फिर दोहराया।
“ओह, मुझे दे दो! नहीं, मुझे तोप दे दो!” माँ गिड़गिड़ाने लगी।
एक नन्हे बच्चे की तरह। उसके चेहरे पर दयनीय भय झलक रहा था कि उसे वह नहीं मिलेगा। कोलिया परेशान हो गई। कप्तान बेचैनी से इधर-उधर हाथ-पैर हिला रहा था।
“माँ, माँ,” वह दौड़कर उसके पास गया, “तोप तो तुम्हारी ही है, लेकिन
इसे इलूशा को दे दो, क्योंकि यह उसके लिए एक उपहार है, लेकिन यह उतना ही अच्छा है जितना तुम्हारा। इलूशा हमेशा तुम्हें इससे खेलने देगा; यह तुम दोनों का होगा, तुम दोनों का।
नहीं, मैं नहीं चाहती कि यह हम दोनों का हो, मैं चाहती हूँ कि यह सिर्फ मेरा हो।
“बिल्कुल भी नहीं, इलुशा का नहीं,” माँ ने लगभग रोते हुए कहा।
“इसे ले लो, माँ, इसे अपने पास रखो!” इलुशा रोते हुए बोला। “क्रासोटकिन, क्या मैं इसे अपनी माँ को दे सकता हूँ?” उसने क्रासोटकिन की ओर विनती भरे चेहरे से पूछा, मानो उसे डर हो कि कहीं क्रासोटकिन को बुरा न लग जाए कि वह अपना उपहार किसी और को दे रहा है।
“बिल्कुल आप कर सकते हैं,” क्रासोटकिन ने हार्दिक सहमति व्यक्त की, और
उसने इलूशा से तोप लाकर स्वयं माँ को झुककर प्रणाम किया। माँ इतनी भावुक हो गईं कि उनकी आँखों में आँसू आ गए।
“प्यारे इलूशा, वही तो अपनी माँ से प्यार करता है!” उसने स्नेह से कहा।
और उसने तुरंत ही तोप को अपनी गोद में आगे-पीछे घुमाना शुरू कर दिया।
“माँ, मुझे आपका हाथ चूमने दीजिए।” कप्तान तुरंत उसकी ओर दौड़ा।
और उन्होंने ऐसा ही किया।
“और मैंने इस प्यारे लड़के जैसा आकर्षक साथी कभी नहीं देखा,” उसने कहा।
कृतज्ञ महिला ने क्रासोटकिन की ओर इशारा करते हुए कहा।
“और मैं तुम्हारे लिए जितना चाहो उतना पाउडर ला दूँगा, इलुशा। हम बनाते हैं
अब हम खुद ही पाउडर बना लेते हैं। बोरोविकोव ने पता लगाया कि इसे कैसे बनाया जाता है—24 भाग सॉल्टपीटर, 10 भाग गंधक और 6 भाग बर्चवुड चारकोल। इन सबको एक साथ पीसा जाता है, पानी में मिलाकर पेस्ट बनाया जाता है और फिर छलनी से छाना जाता है—बस इसी तरह से इसे बनाया जाता है।
"स्मुरोव ने मुझे तुम्हारे पाउडर के बारे में बताया था, लेकिन पिताजी कहते हैं कि यह असली नहीं है।"
"बारूद," इलुशा ने जवाब दिया।
“असली नहीं?” कोल्या का चेहरा लाल हो गया। “इसमें जलन होती है। मुझे तो पता नहीं।”

“नहीं, मेरा मतलब वो नहीं था,” कप्तान ने दोषी चेहरे के साथ कहा। “मैंने तो बस इतना ही कहा था।”
उन्होंने कहा कि असली पाउडर इस तरह नहीं बनता, लेकिन यह कोई बड़ी बात नहीं है, इसे इस तरह बनाया जा सकता है।
मुझे नहीं पता, आप बेहतर जानते हैं। हमने आलू के गमले में कुछ जलाया था,
वह शानदार ढंग से जला, सब कुछ जलकर राख हो गया, बस थोड़ी सी राख बची। लेकिन वह तो बस पेस्ट था, और अगर आप उसे रगड़ें... लेकिन बेशक आप बेहतर जानते हैं, मुझे नहीं पता... और बुलकिन के पिता ने हमारे बारूद की वजह से उसकी पिटाई की, क्या आपने सुना?” वह इलुशा की ओर मुड़ा।
“हाँ,” इलुशा ने उत्तर दिया। उसने कोल्या की बात बड़े चाव से सुनी और
आनंद।
“हमने इसकी पूरी एक बोतल तैयार कर रखी थी और वह इसे अपने नीचे छिपाकर रखता था।”
बिस्तर। उसके पिता ने उसे देख लिया। उन्होंने कहा कि यह फट सकता है, और उसे वहीं पीट दिया। वे मेरे खिलाफ़ मास्टर्स से शिकायत करने वाले थे। अब उसे मेरे साथ घूमने की इजाज़त नहीं है, किसी को भी मेरे साथ घूमने की इजाज़त नहीं है। स्मुरोव को भी नहीं, मेरी सबके साथ बदनामी हो गई है। सब कहते हैं कि मैं एक 'बेशर्म आदमी' हूँ," कोल्या ने तिरस्कार भरी मुस्कान के साथ कहा। "यह सब रेलवे ट्रैक पर हुई घटना से शुरू हुआ।"
“अरे, हमने भी तुम्हारे उस कारनामे के बारे में सुना है,” कप्तान चिल्लाया। “तुम पटरी पर कैसे स्थिर लेटे रहे? क्या यह संभव है कि तुम्हें ट्रेन के नीचे लेटे हुए ज़रा भी डर नहीं लगा? क्या तुम भयभीत नहीं हुए?”
कप्तान कोल्या की चापलूसी करने में हद से ज्यादा मशगूल था। "खास तौर पर नहीं," कोल्या ने लापरवाही से जवाब दिया। "मुझे तो इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि..."
“यहाँ सबसे ज़्यादा अहमियत उस मनहूस हंस की थी,” उसने इलुशा की ओर मुड़ते हुए कहा। हालाँकि बोलते समय उसने बेपरवाही का भाव दिखाया, फिर भी वह खुद पर काबू नहीं रख सका और जिस सुर को बनाए रखने की कोशिश कर रहा था, उसमें लगातार चूकता रहा।
“अरे! मैंने हंस के बारे में सुना था!” इलुशा खिलखिलाते हुए हंस पड़ी। “वे
उन्होंने मुझे बताया, लेकिन मुझे समझ नहीं आया। क्या वे सचमुच आपको अदालत ले गए थे?
उन्होंने तिल का ताड़ बना दिया, यह एक बेहद मूर्खतापूर्ण और तुच्छ मामला था।
“वे हमेशा ऐसा ही करते हैं,” कोल्या ने लापरवाही से कहना शुरू किया। “एक दिन मैं यहाँ के बाज़ार से गुज़र रहा था, ठीक उसी समय जब वे हंसों को अंदर लाए थे। मैं रुक गया और उन्हें देखने लगा। अचानक एक लड़का, जो अब प्लॉट्निकोव के यहाँ काम करता है, मेरी तरफ़ देखकर बोला, ‘तुम हंसों को क्यों देख रहे हो?’ मैंने उसकी तरफ़ देखा; वह बीस साल का एक मूर्ख, गोल-मटोल चेहरे वाला लड़का था। मैं हमेशा किसानों के पक्ष में रहता हूँ, तुम्हें पता है। मुझे किसानों से बात करना अच्छा लगता है... हम किसानों से पीछे रह गए हैं—यह एक सर्वविदित सत्य है। मुझे लगता है तुम हँस रहे हो, करामाज़ोव?”
“नहीं, भगवान न करे, मैं सुन रहा हूँ,” अलेयोशा ने बड़ी विनम्रता से कहा।
प्रकृति की ताज़ी हवा से संवेदनशील कोल्या को तुरंत तसल्ली मिल गई।
“मेरा सिद्धांत, करामाज़ोव, स्पष्ट और सरल है,” उसने फिर जल्दी से कहा।
प्रसन्न दिख रहा है। “मैं जनता पर विश्वास करता हूँ और उन्हें उनका हक देने में हमेशा प्रसन्न रहता हूँ, लेकिन मैं उन्हें बिगाड़ने के पक्ष में नहीं हूँ, यह एक अनिवार्य शर्त है... लेकिन मैं आपको हंस के बारे में बता रहा था। तो मैंने उस मूर्ख की ओर मुड़कर उत्तर दिया, ‘मैं सोच रहा हूँ कि हंस क्या सोच रहा होगा।’ उसने मुझे बड़ी मूर्खता से देखा, ‘और हंस क्या सोच रहा है?’ उसने पूछा। ‘क्या तुम जई से भरी वह गाड़ी देख रहे हो?’ मैंने कहा। ‘जई बोरी से गिर रही है, और हंस उन्हें चट करने के लिए अपनी गर्दन पहिये के ठीक नीचे कर रहा है —देख रहे हो?’ ‘मैं इसे अच्छी तरह देख रहा हूँ,’ उसने कहा। ‘अच्छा,’ मैंने कहा, ‘अगर वह गाड़ी थोड़ी आगे बढ़ जाए, तो क्या हंस की गर्दन टूट जाएगी या नहीं?’ ‘ज़रूर टूट जाएगी,’ और वह बहुत खुश होकर मुस्कुराया। ‘चलो फिर,’ मैंने कहा, ‘कोशिश करते हैं।’ ‘चलो,’ उसने कहा। और हमें ज्यादा समय नहीं लगा। व्यवस्था करने के लिए: वह चुपचाप लगाम के पास खड़ा था, और मैं हंस को दिशा देने के लिए एक तरफ खड़ा था। मालिक देख नहीं रहा था, वह किसी से बात कर रहा था, इसलिए मुझे कुछ करने को नहीं था। हंस ने अपने ही जई के दाने के पीछे, गाड़ी के नीचे, पहिये के ठीक नीचे अपना सिर घुसा दिया। मैंने लड़के को

आँख मारी, उसने लगाम खींची, और धड़ाम! हंस की गर्दन बीच से टूट गई। और, किस्मत से, उसी क्षण सभी किसानों ने हमें देख लिया और वे तुरंत हंगामा करने लगे। 'तुमने जानबूझकर किया!' 'नहीं, जानबूझकर नहीं।' 'हाँ, तुमने किया, जानबूझकर!' वे चिल्लाए, 'इसे न्यायधीश के पास ले चलो!' वे मुझे भी ले गए। 'तुम भी वहाँ थे,' उन्होंने कहा, 'तुमने मदद की, तुम पूरे बाजार में जाने जाते हो!' और, किसी कारण से, मैं सचमुच पूरे बाजार में जाना जाता हूँ," कोल्या ने घमंड से कहा। हम सब न्यायधीश के पास गए, वे हंस को भी साथ ले गए। वह आदमी बुरी तरह रो रहा था, बिल्कुल औरत की तरह सिसक रहा था। और किसान चिल्लाता रहा कि इस तरह से तो कितने भी हंस मारे जा सकते हैं। खैर, गवाह तो थे ही। शांति न्यायाधीश ने एक मिनट में फैसला कर दिया कि किसान को हंस के बदले एक रूबल दिया जाएगा और हंस उस आदमी के पास रहेगा। और उसे चेतावनी दी गई कि वह फिर कभी ऐसी शरारत न करे। और वह आदमी औरत की तरह सिसकता रहा। 'यह मैंने नहीं किया,' उसने कहा, 'उसने मुझे उकसाया था,' और उसने मेरी तरफ इशारा किया। मैंने अत्यंत शांत भाव से उत्तर दिया कि मैंने उसे नहीं उकसाया था, मैंने तो बस सामान्य बात कही थी, काल्पनिक रूप से कहा था। शांति न्यायाधीश मुस्कुराया और फिर मुस्कुराने पर तुरंत खुद से नाराज़ हो गया। 'मैं तुम्हारे आकाओं से तुम्हारी शिकायत करूंगा, ताकि भविष्य में तुम लोग ऐसे सामान्य प्रस्तावों पर अपना समय बर्बाद न करो, बल्कि बैठकर शांति से बैठो।' अपनी किताबों पर ध्यान दो और अपने पाठ सीखो।' उसने उस्तादों से शिकायत नहीं की, यह तो एक मज़ाक था, लेकिन बात फैल गई और उस्तादों के कानों तक पहुँच गई। उनके कान तो बड़े तेज़ होते हैं, जानते हो! शास्त्रीय शिक्षक कोल्बास्निकोव तो इससे विशेष रूप से हैरान थे, लेकिन डारडानेलोव ने मुझे फिर से बचा लिया। लेकिन कोल्बास्निकोव अब हर किसी के साथ हरे गधे की तरह क्रूर व्यवहार करता है। क्या तुम्हें पता है, इलुशा, उसकी अभी-अभी शादी हुई है, उसे एक हज़ार रूबल का दहेज मिला है, और उसकी दुल्हन तो पहली और आखिरी दर्जे की डरावनी औरत है। तीसरे दर्जे के साथियों ने इस पर एक चुटकुला लिखा है:
कक्षा में चौंकाने वाली खबर पहुंची है।
कोल्बास्निकोव एक मूर्ख रहा है।
और इसी तरह, बहुत ही मजेदार बातें हैं, मैं आपको बाद में बताऊंगा। मैं डारडानेलोव के खिलाफ कुछ नहीं कह रहा, वह एक विद्वान व्यक्ति हैं, इसमें कोई शक नहीं। मैं उनके जैसे लोगों का सम्मान करता हूं और यह इसलिए नहीं है कि उन्होंने मेरा साथ दिया।
“लेकिन आपने तो उसे ट्रॉय के संस्थापकों के बारे में गलत जानकारी दी थी!” स्मुरोव ने कहा।
अचानक, ऐसे समय में क्रासोटकिन पर उन्हें स्पष्ट रूप से गर्व महसूस हुआ। वे हंस की कहानी से विशेष रूप से प्रसन्न थे।
“क्या तुमने सचमुच उसे मार गिराया?” कप्तान ने चापलूसी भरे लहजे में पूछा। “ट्रॉय की स्थापना किसने की, इस सवाल पर? हमने इसके बारे में सुना था, इलुशा ने मुझे उस समय इसके बारे में बताया था।”
“पिताजी, वह सब कुछ जानता है, वह हम सब से कहीं अधिक जानता है!”
इलूशा; “वह सिर्फ ऐसा होने का दिखावा करता है, लेकिन वास्तव में वह हर विषय में सर्वोपरि है...”
इलूशा ने असीम प्रसन्नता से कोल्या की ओर देखा। “अरे, ट्रॉय के बारे में यह सब बकवास है, एक तुच्छ मामला है। मैं इसे एक
“मामूली सवाल,” कोल्या ने घमंडी विनम्रता से कहा। अब तक उसने अपनी गरिमा पूरी तरह से वापस पा ली थी, हालाँकि वह अभी भी थोड़ा बेचैन था। उसे लग रहा था कि वह बहुत उत्तेजित हो गया था और उसने हंस के बारे में, उदाहरण के लिए, बहुत कम संयम से बात की थी, जबकि अलेयोशा गंभीर दिख रहा था और पूरे समय एक शब्द भी नहीं बोला था। और उस अभिमानी लड़के को धीरे-धीरे यह डर सताने लगा कि अलेयोशा इसलिए चुप है क्योंकि वह उसे तुच्छ समझता है और सोचता है कि वह उसके सामने दिखावा कर रहा है। अगर उसने ऐसा कुछ भी सोचने की हिम्मत की तो कोल्या...
“मैं इस प्रश्न को काफी तुच्छ मानता हूँ,” उसने फिर से दोहराया।
गर्व से।
“और मुझे पता है कि ट्रॉय की स्थापना किसने की थी,” एक लड़के ने कहा, जो इससे पहले कभी नहीं बोला था।

अचानक, सब लोगों को चौंकाते हुए उसने कहा। वह चुप था और शरमाया हुआ लग रहा था। वह लगभग ग्यारह साल का एक सुंदर लड़का था, जिसका नाम कार्तशोव था। वह दरवाजे के पास बैठा था। कोल्या ने गरिमापूर्ण आश्चर्य से उसकी ओर देखा।
असल बात यह थी कि ट्रॉय के संस्थापकों की पहचान एक रहस्य बन चुकी थी।
पूरे स्कूल के लिए एक रहस्य, एक ऐसा रहस्य जिसे केवल स्मारागदोव को पढ़कर ही जाना जा सकता था, और स्मारागदोव केवल कोलिया के पास था। एक दिन, जब कोलिया की पीठ मुड़ी हुई थी, कार्तशोव ने जल्दी से स्मारागदोव खोला, जो कोलिया की किताबों के बीच पड़ा था, और तुरंत ही ट्रॉय की स्थापना से संबंधित अंश पर उसकी नज़र पड़ी। यह बहुत पहले की बात है, लेकिन वह बेचैन था और सार्वजनिक रूप से यह घोषणा करने की हिम्मत नहीं कर पा रहा था कि वह भी जानता है कि ट्रॉय की स्थापना किसने की थी, क्योंकि उसे डर था कि क्या होगा और क्रासोटकिन किसी तरह उसे शर्मिंदा कर देगा। लेकिन अब वह इसे कहने से खुद को रोक नहीं सका। हफ्तों से वह ऐसा करने के लिए तरस रहा था।
“अच्छा, तो इसे किसने खोजा?” कोल्या ने घमंडी लहजे में उसकी ओर मुड़ते हुए पूछा।
अहंकार। उसने उसके चेहरे से देखा कि वह सचमुच जानता था और उसने तुरंत तय कर लिया कि इसे कैसे लेना है। सामान्य सामंजस्य में मानो एक बेमेल स्वर था।
"ट्रॉय की स्थापना ट्यूसर, डार्डेनस, इलियस और ट्रोस ने की थी," वह लड़का
उसने झट से अपनी बात कह दी, और उसी क्षण वह शर्म से लाल हो गया, इतना लाल कि उसे देखना भी कष्टदायक था। लेकिन लड़के उसे घूरते रहे, पूरे एक मिनट तक घूरते रहे, और फिर सबकी निगाहें अचानक कोल्या पर टिक गईं, जो अब भी उस दुस्साहसी लड़के को तिरस्कारपूर्ण भाव से देख रहा था।
“उन्होंने इसे किस अर्थ में पाया?” उन्होंने अंततः टिप्पणी करने की कृपा की। “और
किसी शहर या राज्य की स्थापना से क्या तात्पर्य है? वे क्या करते हैं? क्या वे जाकर एक-एक ईंट रखते हैं, आपके विचार से?
हंसी की आवाज गूंजी। शरारती लड़के का चेहरा गुलाबी से लाल हो गया।
वह चुप था और उसकी आँखों में आंसू आने ही वाले थे। कोल्या ने उसे एक मिनट तक ऐसे ही पकड़े रखा।
इससे पहले कि आप किसी ऐतिहासिक घटना जैसे कि नींव रखने की बात करें,
“राष्ट्रीयता, पहले आपको यह समझना होगा कि इससे आपका क्या तात्पर्य है,” उन्होंने कठोर और तीखे स्वर में उसे फटकारा। “लेकिन मैं इन पुरानी कहावतों को कोई महत्व नहीं देता और सामान्य तौर पर सार्वभौमिक इतिहास को भी मैं ज्यादा महत्व नहीं देता,” उन्होंने लापरवाही से सभी उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए कहा।
“सार्वभौमिक इतिहास?” कप्तान ने लगभग भयभीत होकर पूछा। “हाँ, सार्वभौमिक इतिहास! यह तो एक के बाद एक होने वाली मूर्खताओं का अध्ययन है।”
“मानव जाति और कुछ नहीं। मैं केवल गणित और प्राकृतिक विज्ञान का सम्मान करता हूँ,” कोल्या ने कहा।
वह अपनी बड़ाई कर रहा था और उसने अलेयोशा पर एक नज़र डाली; वहाँ केवल अलेयोशा की राय से ही वह डरता था। लेकिन अलेयोशा अभी भी चुप था और पहले की तरह गंभीर था। अगर अलेयोशा ने एक शब्द भी कहा होता तो वह रुक जाता, लेकिन अलेयोशा चुप था और “शायद यह तिरस्कार की चुप्पी थी,” और यही बात अंततः कोल्या को चिढ़ा गई।
“शास्त्रीय भाषाएँ भी... वे तो सरासर पागलपन हैं, कुछ भी नहीं।”
और भी। लगता है करामाज़ोव, तुम मुझसे फिर असहमत हो गए हो?
“मैं सहमत नहीं हूँ,” अलेयोशा ने हल्की मुस्कान के साथ कहा। “शास्त्रों का अध्ययन, अगर आप मेरी राय पूछें, तो बस एक पुलिस की तरह है।”
“मामला सुलझाने के लिए ही तो इसे हमारे स्कूलों में शामिल किया गया है।” धीरे-धीरे कोल्या की सांस फिर से फूलने लगी। “लैटिन और ग्रीक को इसलिए शामिल किया गया क्योंकि वे उबाऊ हैं और बुद्धि को सुस्त कर देते हैं। पहले से ही नीरस था, तो उसे और नीरस बनाने के लिए वे क्या कर सकते थे? पहले से ही बेतुका था, तो उसे और बेतुका बनाने के लिए वे क्या कर सकते थे? इसलिए उन्होंने ग्रीक और लैटिन का सहारा लिया। यही मेरी राय है, और मुझे उम्मीद है कि मैं इसे कभी नहीं बदलूंगा,” कोल्या ने अचानक अपनी बात खत्म की। उसके गाल लाल हो गए थे।

“यह सच है,” स्मुरोव ने अचानक एक बुलंद स्वर में सहमति व्यक्त की।
दृढ़ विश्वास। उसने ध्यान से सुना था।
“और फिर भी वह खुद लैटिन में प्रथम स्थान पर है,” लड़कों के समूह में से एक ने चिल्लाकर कहा।
अचानक।
“हां पिताजी, वह ऐसा कहता है और फिर भी वह लैटिन में प्रथम स्थान पर है,” इलुशा ने दोहराया।
“तो क्या हुआ?” कोल्या ने अपना बचाव करते हुए कहा, हालाँकि प्रशंसा तो सामान्य थी।
मैं उससे बहुत प्यार से पेश आई। “मैं लैटिन भाषा का अध्ययन इसलिए कर रही हूँ क्योंकि मुझे करना ही है, क्योंकि मैंने अपनी माँ से परीक्षा पास करने का वादा किया है, और मुझे लगता है कि आप जो भी करें, उसे अच्छे से करना चाहिए। लेकिन मेरे मन में शास्त्रीय साहित्य और उस सब धोखे के प्रति गहरी घृणा है... क्या आप सहमत नहीं हैं, करामाज़ोव?”
“धोखाधड़ी क्यों?” अलेयोशा फिर मुस्कुराया।
“खैर, सभी शास्त्रीय लेखकों का सभी भाषाओं में अनुवाद हो चुका है।”
इसलिए उन्होंने लैटिन भाषा को शास्त्रीय साहित्य के अध्ययन के उद्देश्य से नहीं, बल्कि केवल एक पुलिस उपाय के रूप में, बुद्धि को कुंद करने के लिए शामिल किया। तो इसे धोखाधड़ी के अलावा और क्या कहा जा सकता है?
“अरे, ये सब तुम्हें किसने सिखाया?” अलेयोशा ने आखिरकार आश्चर्यचकित होकर कहा। “पहली बात तो ये है कि मैं बिना किसी की मदद के खुद सोच सकता हूँ।”
पढ़ाया गया। इसके अलावा, क्लासिक ग्रंथों के अनुवाद के बारे में मैंने अभी जो कहा, वह हमारे शिक्षक कोल्बास्निकोव ने तीसरी कक्षा के सभी विद्यार्थियों को बताया है।
“डॉक्टर आ गए!” नीना चिल्लाई, जो तब तक चुप थी। मैडम होहलाकोव की एक गाड़ी गेट पर आकर रुकी। कप्तान, जो सुबह से डॉक्टर का इंतज़ार कर रहा था, उनसे मिलने के लिए तेज़ी से बाहर भागा। "मम्मा" ने खुद को संभाला और गरिमापूर्ण व्यवहार किया। अलेयोशा इलुशा के पास गया और उसके तकिए ठीक करने लगा। नीना, अपनी बीमार कुर्सी पर बैठी, उसे बिस्तर ठीक करते हुए उत्सुकता से देखती रही। लड़के जल्दी से चले गए। उनमें से कुछ ने शाम को फिर आने का वादा किया। कोलिया ने पेरेज़वोन को पुकारा और कुत्ता बिस्तर से कूद गया।
“मैं नहीं जाऊँगा, मैं नहीं जाऊँगा,” कोल्या ने जल्दी से इलुशा से कहा। “मैं
गलियारे में इंतजार करो और डॉक्टर के जाने के बाद वापस आना, मैं पेरेज़वॉन के साथ वापस आऊंगा।
लेकिन तब तक डॉक्टर अंदर आ चुके थे, एक महत्वपूर्ण दिखने वाले व्यक्ति।
लंबी, काली मूंछें और चमकदार, मुंडी हुई ठुड्डी, भालू की खाल का कोट पहने हुए। दहलीज पार करते ही वह चौंककर रुक गया; शायद उसे लगा कि वह गलत जगह आ गया है। "यह क्या है? मैं कहाँ हूँ?" उसने बुदबुदाते हुए कहा, न तो अपना कोट उतारा और न ही सील की खाल की टोपी। भीड़, कमरे की गरीबी, कोने में रस्सी पर टंगे कपड़े, सबने उसे उलझन में डाल दिया। कप्तान, कमर झुकाए उसके सामने झुक रहा था।
“यह रहा, महोदय, यह रहा, महोदय,” उसने दबे स्वर में बुदबुदाते हुए कहा; “यह रहा, आप आ गए हैं।”
ठीक है, आप हमारे पास आ रहे थे...
“स्नेगिर्योव?” डॉक्टर ने ऊँची और शान से कहा। “श्री स्नेगिर्योव
-क्या वह तुम हो?"
“जी हां, मैं ही हूं!”
आह!”
डॉक्टर ने एक बार फिर झिझक भरे भाव से कमरे में चारों ओर देखा और
उसने अपना कोट उतार दिया, जिससे उसकी गर्दन पर लगा भव्य आभूषण सबके सामने प्रदर्शित हो गया।
कप्तान ने हवा में ही फर का कोट पकड़ लिया, और डॉक्टर ने अपनी टोपी उतार दी।
“मरीज कहाँ है?” उसने जोर देकर पूछा।

अध्याय 6

जल्दबाज़ी

“तुम्हें क्या लगता है डॉक्टर उससे क्या कहेंगे?” कोल्या ने झट से पूछा। “कितना घिनौना चेहरा है उसका, है ना? मैं दवाइयाँ बर्दाश्त नहीं कर सकती!”
“इलुशा मर रही है। मुझे लगता है यह निश्चित है,” अलेयोशा ने शोक भरे स्वर में उत्तर दिया। “वे बदमाश हैं! दवाइयाँ धोखा हैं! मुझे खुशी है कि मैंने आपकी मदद की।”
वैसे, करामाज़ोव, मैं आपसे परिचित हूँ। मैं आपको लंबे समय से जानना चाहता था। मुझे बस इस बात का दुख है कि हमारी मुलाकात इतनी दुखद परिस्थितियों में हुई।
कोल्या की इच्छा थी कि वह इससे भी अधिक स्नेहपूर्ण और कुछ और कहे।
वह भावुक तो था, लेकिन असहज महसूस कर रहा था। अलेयोशा ने यह देखा, मुस्कुराया और उसका हाथ दबाया।
“मैंने आपको एक असाधारण व्यक्ति के रूप में सम्मान देना बहुत पहले ही सीख लिया है,” कोल्या ने धीरे से कहा।
फिर से लड़खड़ाते और अनिश्चित स्वर में। "मैंने सुना है कि आप एक रहस्यवादी हैं और मठ में रहे हैं। मैं जानता हूँ कि आप एक रहस्यवादी हैं, लेकिन... इससे मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता। वास्तविक जीवन से संपर्क आपको ठीक कर देगा... आपके जैसे लोगों के साथ हमेशा ऐसा ही होता है।"
“रहस्यवादी से तुम्हारा क्या मतलब है? मुझे किस बीमारी से ठीक करोगे?” अलेयोशा थोड़ा हैरान था। आश्चर्यचकित।
"हे भगवान, और बाकी सब कुछ।"
“क्या, तुम भगवान में विश्वास नहीं करते?”
“ओह, मुझे भगवान से कोई आपत्ति नहीं है। बेशक, भगवान तो केवल एक परिकल्पना है।”
लेकिन... मैं मानता हूँ कि उनकी आवश्यकता है... ब्रह्मांड की व्यवस्था और बाकी सब चीजों के लिए... और अगर ईश्वर न होते तो उन्हें गढ़ा जाता," कोल्या ने शरमाते हुए कहा। उसे अचानक लगा कि अलेयोशा शायद सोच रहा होगा कि वह अपना ज्ञान प्रदर्शित करने और यह साबित करने की कोशिश कर रहा है कि वह "बड़ा हो गया है।"
“मुझे उसके सामने अपना ज्ञान प्रदर्शित करने की ज़रा भी इच्छा नहीं है,” कोल्या ने मन ही मन गुस्से से सोचा। और अचानक उसे बहुत गुस्सा आया।
उन्होंने कहा, "मुझे यह स्वीकार करना होगा कि मैं इस तरह की चर्चाओं में शामिल होना बर्दाश्त नहीं कर सकता।"
अंत में उसने कहा, “क्या यह संभव है कि कोई व्यक्ति जो ईश्वर में विश्वास नहीं करता, वह भी मानवता से प्रेम करे? क्या आपको ऐसा नहीं लगता? वोल्टेयर ईश्वर में विश्वास नहीं करते थे और फिर भी मानवता से प्रेम करते थे?” (“मैं फिर से वही गलती कर रहा हूँ,” उसने मन ही मन सोचा।)
“वोल्टेयर ईश्वर में विश्वास करते थे, हालांकि मुझे लगता है कि बहुत ज्यादा नहीं, और मुझे नहीं लगता कि वे मानवता से बहुत प्रेम करते थे,” अलेयोशा ने शांत, सौम्य और सहजता से कहा, मानो वह अपने हमउम्र या उससे भी बड़े किसी व्यक्ति से बात कर रहा हो। अलेयोशा की वोल्टेयर के बारे में राय को लेकर दिखाई देने वाली झिझक कोलिया को विशेष रूप से आश्चर्य हुआ। ऐसा लग रहा था मानो वह इस प्रश्न का उत्तर नन्हे कोलिया पर ही छोड़ रहा हो।
“क्या आपने वोल्टेयर को पढ़ा है?” अलेयोशा ने पूछा।
नहीं, पढ़ने की बात नहीं कर रहा... लेकिन मैंने कैंडाइड का रूसी अनुवाद पढ़ा है।
...एक बेतुके, विचित्र, पुराने अनुवाद में... (फिर से वही! फिर से!)
और क्या आपको यह समझ आया?
“ओह, हाँ, सब कुछ... मतलब... आपको क्या लगता है कि मुझे ऐसा क्यों नहीं करना चाहिए?”

समझ में आया? इसमें बेशक बहुत सारी बुराई है... बेशक मैं समझ सकता हूँ कि यह एक दार्शनिक उपन्यास है और एक विचार का समर्थन करने के लिए लिखा गया है..." कोल्या अब उलझन में पड़ रहा था। "मैं एक समाजवादी हूँ, करामाज़ोव, मैं एक कट्टर समाजवादी हूँ," उसने अचानक, बिना किसी संदर्भ के, घोषणा कर दी।
“एक समाजवादी?” अलेयोशा हँसते हुए बोला। “लेकिन तुम्हें इसके लिए समय कब मिला है?”
एक बन जाना? अरे, मुझे लगा तुम तो सिर्फ तेरह साल के हो?
कोल्या दर्द से कराह उठा।
“सबसे पहले तो मैं तेरह साल का नहीं, बल्कि चौदह साल का हूँ, चौदह साल का...
दो सप्ताह,” वह गुस्से से लाल हो गया, “और दूसरी बात, मुझे यह बिल्कुल समझ नहीं आ रहा है कि मेरी उम्र का इससे क्या लेना-देना है? सवाल यह है कि मेरे विश्वास क्या हैं, न कि मेरी उम्र क्या है, है ना?”
जब आप बड़े हो जाएंगे, तब आपको खुद ही उम्र के प्रभाव का एहसास हो जाएगा।
अपनी मान्यताओं पर। मुझे भी लगा कि आप अपने विचार व्यक्त नहीं कर रहे थे,” अलेयोशा ने शांत और विनम्रता से उत्तर दिया, लेकिन कोल्या ने उसे बीच में ही रोकते हुए गुस्से से कहा:
“आओ, तुम आज्ञाकारिता और रहस्यवाद चाहते हो। तुम्हें यह स्वीकार करना होगा कि
उदाहरण के लिए, ईसाई धर्म का उपयोग केवल अमीरों और शक्तिशाली लोगों को ही निम्न वर्गों को गुलामी में रखने के लिए हुआ है। है ना?
“अरे, मुझे याद है तुमने यह कहाँ पढ़ा था, और मुझे यकीन है कि किसी ने तुम्हें यह बताया भी होगा!” अलोशा चिल्लाया।
मैं कहता हूँ, आपको ऐसा क्यों लगता है कि मैंने इसे पढ़ा है? और निश्चित रूप से किसी ने मुझे ऐसा नहीं बताया।
मैं अपने लिए सोच सकता हूँ... अगर आप चाहें तो कह सकते हैं कि मैं ईसा मसीह का विरोधी नहीं हूँ। वे एक अत्यंत मानवीय व्यक्ति थे, और यदि वे आज जीवित होते, तो वे क्रांतिकारियों की कतारों में पाए जाते, और शायद एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते... इसमें कोई संदेह नहीं है।
अरे, ये तुम्हें कहाँ से मिला? तुमने किस बेवकूफ को फंसा दिया!
“किसके दोस्त?” अलेयोशा ने हैरानी से पूछा।
“सच सामने आएगा ही! संयोगवश मेरी श्री रकितिन से अक्सर बातचीत होती रही है, लेकिन... पुराने बायलिंस्की ने भी यही कहा था, ऐसा कहते हैं।”
“बायलिंस्की? मुझे याद नहीं। उन्होंने यह कहीं नहीं लिखा है।”
“अगर उसने इसे नहीं लिखा, तो लोग कहते हैं कि उसने इसे कहा है। मैंने यह बात एक... से सुनी है।”
कोई बात नहीं।"
"और क्या आपने बायलिंस्की को पढ़ा है?"
“खैर, नहीं... मैंने उनकी पूरी रचना नहीं पढ़ी है, लेकिन... मैंने लगभग यह अंश पढ़ा है।”
तात्याना, वह ओन्येगिन के साथ क्यों नहीं चली गई?
“क्या तुम ओन्येगिन के साथ नहीं गए थे? तुम तो बिल्कुल भी नहीं समझते हो...”
पहले से?"
“अरे, लगता है तुम मुझे छोटा स्मुरोव समझ रहे हो,” कोल्या ने मुस्कुराते हुए कहा।
चिड़चिड़ाहट से। “लेकिन कृपया यह न समझें कि मैं कोई क्रांतिकारी हूँ। मैं अक्सर श्री राकितिन से असहमत रहती हूँ। हालाँकि मैं तात्याना का ज़िक्र करती हूँ, मैं महिलाओं की मुक्ति के पक्ष में बिल्कुल नहीं हूँ। मैं मानती हूँ कि महिलाएं एक अधीन जाति हैं और उन्हें आज्ञा माननी चाहिए। नेपोलियन के शब्दों में, 'लेस फेम्स ट्राइकोटेंट'।” कोलिया, किसी कारणवश, मुस्कुराई, “और कम से कम इस सवाल पर तो मैं उस तथाकथित महान व्यक्ति से पूरी तरह सहमत हूँ। मुझे भी लगता है कि अपना देश छोड़कर अमेरिका जाना नीचता है, नीचता से भी बदतर—बेवकूफी है। अमेरिका क्यों जाना जब यहाँ मानवता की इतनी बड़ी सेवा की जा सकती है? खासकर अब। हमारे लिए उपयोगी गतिविधियों का एक विशाल भंडार खुला है। यही मैंने उत्तर दिया।”
आपका क्या मतलब है? किसे जवाब दिया? क्या किसी ने आपको सुझाव दिया है?
क्या आप अभी से अमेरिका जा रहे हैं?

मुझे यह स्वीकार करना होगा कि उन्होंने मुझे जाने के लिए कहा था, लेकिन मैंने मना कर दिया। यह बीच की बात है।
हम स्वयं, बेशक, करामाज़ोव; क्या आप सुन रहे हैं, किसी से एक शब्द भी नहीं। मैं यह केवल आपसे कह रहा हूँ। मैं बिल्कुल भी गुप्त पुलिस के चंगुल में नहीं पड़ना चाहता और न ही चेन ब्रिज पर सबक लेना चाहता हूँ।
आप इसे लंबे समय तक याद रखेंगे
चेन ब्रिज पर स्थित घर।
क्या तुम्हें याद है? यह बहुत बढ़िया है। तुम क्यों हंस रहे हो? तुम्हें नहीं लगता कि मैं झूठ बोल रहा हूँ? ("अगर उन्हें पता चल जाए कि पिताजी की किताबों की अलमारी में मेरे पास 'द बेल' का सिर्फ़ वही एक अंक है और मैंने इसके आगे कुछ नहीं पढ़ा है तो क्या होगा?" कोल्या ने कांपते हुए सोचा।)
"अरे नहीं, मैं हंस नहीं रहा हूँ और एक पल के लिए भी यह मत सोचिए कि आप हंस रहे हैं।"
झूठ। नहीं, बिलकुल नहीं, मैं ऐसा नहीं मान सकता, क्योंकि अफसोस! यह सब बिल्कुल सच है। लेकिन बताइए, क्या आपने पुश्किन को पढ़ा है—उदाहरण के लिए ओन्येगिन को? ... आपने अभी-अभी तात्याना के बारे में बात की थी।
"नहीं, मैंने इसे अभी तक नहीं पढ़ा है, लेकिन मैं इसे पढ़ना चाहता हूँ। मेरे मन में कोई पूर्वाग्रह नहीं है।"
करामाज़ोव; मैं दोनों पक्षों की बात सुनना चाहता हूँ। आप ऐसा क्यों पूछ रहे हैं?
"ओह कुछ नहीं।"
"मुझे बताओ, करामाज़ोव, क्या तुम मुझसे घोर घृणा करते हो?" कोल्या
वह अचानक बोल पड़ा और अलेयोशा के सामने ऐसे खड़ा हो गया जैसे कोई अभ्यास कर रहा हो। "कृपा करके मुझे सीधे-सीधे बता दीजिए, घुमा-फिराकर बात न कीजिए।"
"क्या मैं तुमसे घृणा करता हूँ?" अलेयोशा ने आश्चर्य से उसकी ओर देखा। "क्या?"
किसलिए? मुझे तो बस इस बात का दुख है कि आपके जैसे मनमोहक स्वभाव को जीवन शुरू होने से पहले ही इस तरह की भद्दी बकवास से विकृत कर दिया जाए।
"मेरे स्वभाव को लेकर चिंतित मत हो," कोल्या ने बीच में ही टोकते हुए कहा, "लेकिन ऐसा करने से वह हिचकिचाया नहीं था।"
आत्मसंतुष्टि। "लेकिन यह सच है कि मैं बेवजह संवेदनशील हूँ, हद से ज़्यादा संवेदनशील। अभी-अभी तुम मुस्कुराईं, और मुझे लगा कि तुम..."
"ओह, मेरी मुस्कान का मतलब कुछ और ही था। मैं आपको बताती हूँ क्यों।"
मुस्कुराया। कुछ समय पहले मैंने रूस में रह चुके एक जर्मन व्यक्ति की आज के छात्रों और स्कूली बच्चों पर की गई आलोचना पढ़ी थी। उन्होंने लिखा था, "किसी रूसी स्कूली बच्चे को तारों का नक्शा दिखाओ, जिसके बारे में उसे कुछ भी नहीं पता, और वह अगले दिन आपको वही नक्शा सुधार के साथ वापस कर देगा।" ज्ञान का अभाव और असीमित अहंकार—जर्मन व्यक्ति का रूसी स्कूली बच्चे के बारे में यही कहना था।
"हां, बिलकुल सही," कोल्या अचानक हंसते हुए बोली, "बिल्कुल सही!"
जर्मन को शाबाश! लेकिन उसने अच्छा पक्ष नहीं देखा, आपका क्या विचार है? शायद घमंड हो, जो जवानी में आता है, ज़रूरत पड़ने पर सुधारा जा सकता है, लेकिन दूसरी ओर, उसमें बचपन से ही एक स्वतंत्र भावना, विचारों की निडरता और दृढ़ विश्वास है, न कि इन चापलूसों की तरह जो सत्ता के सामने गिड़गिड़ाते हैं...
लेकिन जर्मन फिर भी सही था। जर्मन को शाबाश! लेकिन जर्मनों को तो गला घोंटकर मार देना ही चाहिए। हालाँकि वे विज्ञान और ज्ञान में इतने अच्छे हैं, फिर भी उनका गला घोंटना ही चाहिए।
"गला घोंटकर मारा गया, किसलिए?" अलेयोशा ने मुस्कुराते हुए पूछा।
"खैर, शायद मैं बकवास कर रहा हूँ, मैं मानता हूँ। मैं बहुत बचकाना हूँ।"
कभी-कभी, और जब मैं किसी बात से खुश होती हूँ तो खुद को रोक नहीं पाती और कुछ भी बोलने को तैयार हो जाती हूँ। लेकिन, मैं कहती हूँ, हम यहाँ बेकार की बातें कर रहे हैं, और वो डॉक्टर काफी देर से अंदर है। लेकिन शायद वो माँ और उस बेचारी अपाहिज नीना की जाँच कर रहा हो। मुझे नीना बहुत पसंद थी, तुम्हें पता है। जब मैं जा रही थी तो उसने अचानक मेरे कान में फुसफुसाकर कहा, 'तुम पहले क्यों नहीं आई?' और वो भी इतने गुस्से से, इतने नाराज़गी भरे लहजे में! मुझे लगता है वो बहुत प्यारी और दयालु है।

“जी हाँ, जी हाँ! अच्छा, तुम अक्सर आते रहोगे, तुम्हें पता चल जाएगा कि वह कैसी है। ऐसे लोगों को जानना तुम्हारे लिए बहुत फायदेमंद होगा, तुम्हें बहुत सी चीजों की कदर करना सीखने को मिलेगा, जो तुम्हें इन लोगों से मिलकर पता चलेगा,” अलेयोशा ने गर्मजोशी से कहा। “इसका तुम पर सबसे ज्यादा असर होगा।”
"ओह, मुझे कितना पछतावा है और मैं खुद को दोष देता हूँ कि मैं पहले क्यों नहीं आया!"
कोल्या ने कड़वे भाव से कहा।
“हाँ, यह बहुत दुख की बात है। आपने खुद देखा कि गरीब लोग कितने प्रसन्न हुए थे।
बच्चा आपसे मिलने के लिए बेताब था। और वह आपके आने का बेसब्री से इंतजार कर रहा था!
मुझे मत बताओ! तुम इसे और बिगाड़ रहे हो! लेकिन यही मेरे लिए सही है। क्या बात थी जिसने मुझे रोक रखा था?
मेरे आगे बढ़ने में बाधा मेरा अहंकार, मेरा घमंड और मेरी पशुवत हठधर्मिता थी, जिससे मैं कभी छुटकारा नहीं पा सका, हालांकि मैं जीवन भर इससे जूझता रहा। अब मुझे यह समझ आ गया है। मैं कई मायनों में एक जानवर हूँ, करामाज़ोव!
नहीं, आपका स्वभाव आकर्षक है, हालांकि यह विकृत हो गया है, और मैं काफी हद तक
"मैं समझता हूँ कि तुमने इस उदार, अति संवेदनशील लड़के पर इतना प्रभाव क्यों डाला है," अलेयोशा ने गर्मजोशी से जवाब दिया।
“और तुम मुझसे ऐसा कहते हो!” कोल्या चिल्लाया; “और क्या तुम विश्वास करोगे, मैं
मैंने सोचा—यहाँ आने के बाद से कई बार सोचा है—कि तुम मुझसे नफरत करते हो! काश तुम्हें पता होता कि मैं तुम्हारी राय को कितना महत्व देता हूँ!
लेकिन क्या आप सचमुच इतने संवेदनशील हैं? आपकी उम्र में! क्या आप विश्वास करेंगे, बस
अब, जब आप अपनी कहानी सुना रहे थे, तो आपको देखते हुए मुझे लगा कि आप बहुत संवेदनशील होंगे!
“क्या तुम्हें ऐसा लगा? तुम्हारी नज़र तो कमाल की है! मुझे यकीन है कि तभी मैंने
मैं हंस के बारे में बात कर रहा था। ठीक उसी समय मुझे लगा कि दिखावा करने की मेरी जल्दबाजी देखकर आपको मुझसे बहुत घृणा हो रही है, और एक पल के लिए मुझे आपसे नफरत भी हुई, और मैं मूर्खों की तरह बातें करने लगा। फिर मुझे लगा—अभी, यहीं—जब मैंने कहा कि अगर भगवान नहीं है तो उसे गढ़ना पड़ेगा, तो मैं अपना ज्ञान दिखाने की बहुत जल्दी में था, खासकर इसलिए कि मैंने वह वाक्य एक किताब से लिया था। लेकिन मैं कसम खाता हूँ कि मैं घमंड से दिखावा नहीं कर रहा था, हालाँकि मुझे सच में नहीं पता क्यों, क्योंकि मैं बहुत खुश था, हाँ, मुझे लगता है कि मैं बहुत खुश था... हालाँकि किसी के लिए भी खुश होते ही खुशी जाहिर करना बेहद शर्मनाक होता है, मैं यह जानता हूँ। लेकिन अब मुझे यकीन है कि आप मुझसे नफरत नहीं करते; यह सब मेरी कल्पना थी। ओह, करामाज़ोव, मैं बहुत दुखी हूँ। कभी-कभी मुझे तरह-तरह की बातें सूझती हैं, कि हर कोई मुझ पर हंस रहा है, पूरी दुनिया, और फिर मुझे लगता है कि मैं सारी व्यवस्था उलट-पुलट कर दूंगा।
“और तुम सबको अपने बारे में चिंतित करते हो,” अलेयोशा मुस्कुराते हुए बोला। “हाँ, मैं सबको अपने बारे में चिंतित करता हूँ, खासकर अपनी माँ को। करामाज़ोव।”
मुझे बताओ, क्या मैं अब बहुत हास्यास्पद लग रहा हूँ?
“उसके बारे में मत सोचो, बिल्कुल भी मत सोचो!” अलेयोशा चिल्लाया। “और
हास्यास्पद का क्या अर्थ है? क्या हर कोई लगातार हास्यास्पद नहीं होता या हास्यास्पद प्रतीत नहीं होता? इसके अलावा, आजकल लगभग सभी बुद्धिमान लोग हास्यास्पद होने से बहुत डरते हैं, और यही बात उन्हें दुखी करती है। मुझे बस इस बात पर आश्चर्य है कि तुम इतनी जल्दी ऐसा महसूस करने लगे हो, हालाँकि मैंने इसे कुछ समय पहले से देखा है, और केवल तुममें ही नहीं। आजकल तो बच्चे भी इससे पीड़ित होने लगे हैं। यह लगभग एक प्रकार का पागलपन है। शैतान ने उस घमंड का रूप धारण कर लिया है और पूरी पीढ़ी में प्रवेश कर गया है; यह बस शैतान है,” अलेयोशा ने बिना किसी मुस्कान के कहा, जबकि कोल्या, जो उसे घूर रहा था, उससे ऐसी ही मुस्कान की उम्मीद कर रहा था। “तुम भी बाकी सब लोगों की तरह हो,” अलेयोशा ने अंत में कहा, “यानी, बहुत से अन्य लोगों की तरह। बस तुम्हें बाकी सब लोगों की तरह नहीं होना चाहिए, बस इतना ही।”
"अगर हर कोई ऐसा ही हो तो भी?"

“हाँ, भले ही सब लोग ऐसे हों। तुम अकेले ऐसे होगे जो ऐसे नहीं होगे। तुम
सचमुच, तुम बाकियों से अलग हो, यहाँ तुम्हें अपनी बुरी और हास्यास्पद बातों को स्वीकार करने में शर्म नहीं आती। और आजकल इतनी बातें कौन स्वीकार करेगा? कोई नहीं। और लोगों में आत्म-आलोचना की भावना भी कम हो गई है। बाकियों की तरह मत बनो, भले ही तुम अकेले ही क्यों न हो।
“शानदार! मैंने आपको गलत नहीं समझा। आप जानते हैं कि किसी को कैसे सांत्वना देनी है।”
ओह, करामाज़ोव, मैं आपसे मिलने के लिए कितना तरस रहा था! मैं इस मुलाकात के लिए लंबे समय से उत्सुक था। क्या आपने भी मेरे बारे में सोचा होगा? आपने अभी कहा कि आपने भी मेरे बारे में सोचा था।
“हाँ, मैंने आपके बारे में सुना था और आपके बारे में सोचा भी था... और अगर यह आंशिक रूप से है तो वह घमंड जो आपको यह पूछने पर मजबूर कर देता है, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता।
“क्या आप जानते हैं, करामाज़ोव, हमारी बातचीत एक तरह की घोषणा रही है...”
"प्यार," कोल्या ने शर्मीली और कोमल आवाज़ में कहा। "यह हास्यास्पद तो नहीं है, है ना?"
"बिल्कुल भी हास्यास्पद नहीं है, और अगर होता भी तो कोई फर्क नहीं पड़ता, क्योंकि यह..."
यह अच्छी बात रही है।” अलेयोशा ने मुस्कुराते हुए कहा।
लेकिन क्या आप जानते हैं, करामाज़ोव, आपको यह मानना होगा कि आप थोड़े से
अब खुद को शर्मिंदा करो... मैं तुम्हारी आंखों से देख सकता हूँ।" कोल्या ने एक तरह की धूर्त खुशी के साथ मुस्कुराया।
"शर्म क्यों?"
"तो फिर तुम शर्मा क्यों रहे हो?"
"तुम्हारे कारण ही मैं शरमा गया," अलेयोशा हँसते हुए बोला, और वह सचमुच शरमा गया था।
“ओह, खैर, मैं थोड़ा सा, पता नहीं क्यों, मुझे नहीं पता...” उसने लगभग शर्मिंदा होते हुए बुदबुदाया।
“ओह, इस पल मैं तुमसे कितना प्यार करता हूँ और तुम्हारी कितनी प्रशंसा करता हूँ, सिर्फ इसलिए कि तुम थोड़े शर्मिंदा हो! क्योंकि तुम बिल्कुल मेरे जैसे हो,” कोल्या ने परमानंद में कहा। उसके गाल चमक रहे थे, उसकी आँखें दमक रही थीं।
“कोलिया, तुम्हें पता है, तुम अपने जीवन में बहुत दुखी रहोगे,” कुछ ऐसा ही
अलेयोशा ने अचानक कहा।
“मुझे पता है, मुझे पता है। तुम्हें यह सब पहले से कैसे पता होता है!” कोल्या ने सहमति जताते हुए कहा।
एक बार।
लेकिन फिर भी आप जीवन को समग्र रूप से आशीर्वाद देंगे।
“बिल्कुल सही, वाह! आप एक पैगंबर हैं। ओह, हम साथ मिलकर आगे बढ़ेंगे।”
करामाज़ोव! जानते हो, मुझे सबसे ज़्यादा खुशी इस बात से होती है कि तुम मुझे बराबरी का दर्जा देते हो। लेकिन हम बराबर नहीं हैं, बिलकुल नहीं, तुम मुझसे बेहतर हो! पर हम आगे बढ़ेंगे। जानते हो, पिछले पूरे महीने मैं खुद से यही कहता रहा हूँ, 'या तो हम तुरंत, हमेशा के लिए दोस्त बन जाएँगे, या फिर हम कब्र तक दुश्मन बनकर अलग हो जाएँगे!'
“और हाँ, बेशक, तुम मुझसे प्यार करते थे,” अलेयोशा खिलखिलाकर हँसा। “हाँ, करता था। मैं तुमसे बहुत प्यार करता था। मैं तुमसे प्यार करता था और तुम्हारे सपने देखता था। और
आपको यह सब पहले से कैसे पता था? अरे, डॉक्टर आ गए! हे भगवान! वे हमें क्या बताएंगे? उनका चेहरा तो देखो!

अध्याय 7

इलुशा

डॉक्टर अपने फर कोट में लिपटे हुए कमरे से बाहर आए और
उसके सिर पर टोपी थी। उसका चेहरा लगभग गुस्से और घृणा से भरा हुआ लग रहा था, मानो
उसे गंदा होने का डर था। उसने गलियारे में सरसरी नजर डाली।
ऐसा करते हुए उसने अलेयोशा और कोलिया को घूरकर देखा। अलेयोशा ने हाथ हिलाकर अभिवादन किया।
कोचवान का दरवाजा, और वह गाड़ी जिसमें डॉक्टर को लाया गया था
गाड़ी ऊपर आ गई। कप्तान डॉक्टर के पीछे दौड़ा और झुककर अभिवादन किया।
माफी मांगते हुए, उसने उसे रोककर आखिरी बात कहने की कोशिश की। बेचारा आदमी देख रहा था।
वह पूरी तरह से टूट गया था; उसकी आँखों में डर का भाव था।
“महामहिम, महामहिम... क्या यह संभव है?” उन्होंने पूछना शुरू किया, लेकिन
वह आगे नहीं बढ़ सका और निराशा में अपने हाथ जोड़ लिए। फिर भी वह देखता रहा।
डॉक्टर से विनती करते हुए, मानो उनके एक शब्द से ही सब कुछ बदल जाए।
उस बेचारे लड़के का क्या हाल हुआ।
“मैं कुछ नहीं कर सकता, मैं भगवान तो नहीं हूँ!” डॉक्टर ने बेपरवाही से जवाब दिया।
अपनी प्रथागत प्रभावशालीता के साथ।
“डॉक्टर... महामहिम... और क्या यह जल्द ही होगा, जल्द ही?”
“आपको किसी भी स्थिति के लिए तैयार रहना होगा,” डॉक्टर ने जोर देकर कहा।
तीखे स्वर में, और अपनी नज़रें झुकाकर, वह बाहर निकलने ही वाला था।
प्रशिक्षक।
“महामहिम, ईश्वर के नाम पर!” भयभीत कप्तान ने कहा।
उसे फिर रोक दिया। “महामहिम! लेकिन कुछ भी नहीं, बिलकुल कुछ भी नहीं।”
क्या अब उसे बचाना चाहिए?
डॉक्टर ने अधीरता से कहा, "अब यह मेरे हाथ में नहीं है, लेकिन
हम्म...” वह अचानक रुक गया। “अगर आप कर सकें, तो
उदाहरण के लिए... अपने मरीज को... तुरंत, बिना देरी किए भेजें" (शब्दों
“तुरंत, बिना देरी किए,” डॉक्टर ने लगभग क्रोध भरे स्वर में कहा।
(कठोरता जिसने कप्तान को चौंका दिया) "सिरैक्यूज़ के लिए, नए में बदलाव"
लाभकारी जलवायु परिस्थितियाँ संभवतः प्रभावित कर सकती हैं...
“सिरैक्यूज़ के लिए!” कप्तान चिल्लाया, उसे समझ नहीं आ रहा था कि क्या कहा जा रहा है। “सिरैक्यूज़
सिसिली में है,” कोल्या ने अचानक स्पष्टीकरण देते हुए कहा।
डॉक्टर ने उसकी ओर देखा।
“सिसिली! महामहिम,” कप्तान लड़खड़ाते हुए बोला, “लेकिन आपने देखा है”—
उसने अपने हाथ फैलाकर अपने आस-पास की ओर इशारा किया—“माँ और मेरी माँ
परिवार?"
“नहीं, सिसिली परिवार के लिए उपयुक्त जगह नहीं है, परिवार को कहीं और जाना चाहिए।”
वसंत ऋतु के आरंभ में काकेशस... आपकी बेटी को काकेशस जाना चाहिए।
और आपकी पत्नी... काकेशस के जलमार्ग के बाद उसके लिए
गठिया... उसे सीधे पेरिस में मानसिक विशेषज्ञ के पास भेजा जाना चाहिए।
लेपेलेटियर; मैं आपको उनके लिए एक नोट दे सकता हूँ, और फिर... शायद कुछ हो जाए।
परिवर्तन । । ।"
“डॉक्टर, डॉक्टर! लेकिन आप देखिए!” कप्तान ने अपने हाथ फैला दिए।

एक बार फिर निराशा से, उसने गलियारे की नंगी लकड़ी की दीवारों की ओर इशारा किया।
“खैर, ये मेरा काम नहीं है,” डॉक्टर ने मुस्कुराते हुए कहा। “मैंने तो बस इतना ही बताया है।”
आपके प्रश्न का चिकित्सा विज्ञान से संभावित उत्तर क्या हो सकता है?
उपचार। बाकी के लिए, मुझे खेद है...
“डरो मत, वैद्य, मेरा कुत्ता तुम्हें नहीं काटेगा,” कोल्या ने रैप करते हुए कहा।
डॉक्टर की पेरेज़वॉन की ओर कुछ असहज नज़र देखकर वह ज़ोर से बोला,
वह दरवाजे पर खड़ा था। कोल्या की आवाज में क्रोध का भाव था।
उन्होंने जानबूझकर डॉक्टर के बजाय औषधालय शब्द का प्रयोग किया, और, जैसा कि उन्होंने
बाद में उन्होंने बताया कि उन्होंने इसका इस्तेमाल "उनका अपमान करने के लिए" किया था।
“यह क्या है?” डॉक्टर ने हैरानी से अपना सिर ऊपर उठाया और घूरने लगा।
कोल्या। "यह कौन है?" उसने अलेयोशा से पूछा, मानो उससे पूछ रहा हो।
व्याख्या करना।
“यह पेरेज़वॉन का मालिक है, मेरी चिंता मत करो,” कोल्या ने कहा।
एक बार फिर तीक्ष्णता से।
“पेरेज़वॉन?” डॉक्टर ने हड़बड़ी में दोहराया। “उसे घंटी की आवाज़ सुनाई दे रही है, लेकिन वह बता नहीं पा रहा कि घंटी कहाँ बज रही है। अलविदा, हम चलते हैं।”
सिराक्यूज़ में मिलें।"
“ये कौन है? ये कौन है?” डॉक्टर भयंकर क्रोध से भड़क उठे। “ये एक स्कूली बच्चा है, डॉक्टर साहब, ये एक शरारती लड़का है; इस पर ध्यान मत दीजिए।”
“उसे,” अलेयोशा ने भौंहें चढ़ाते हुए और जल्दी से बोलते हुए कहा। “कोल्या, रुको, अपने
"जीभ!" उसने क्रासोटकिन से चिल्लाकर कहा। "डॉक्टर, उसकी बातों पर ध्यान मत दीजिए," उसने
उसने कुछ अधीरता से दोहराया।
“इसे तो मार पड़नी चाहिए, अच्छी खासी मार!” डॉक्टर ने पैर पटकते हुए कहा।
पूर्ण क्रोध।
“और तुम्हें पता है, वैद्य जी, मेरा पेरेज़वॉन काट भी सकता है!” कोल्या ने कहा।
चेहरा पीला पड़ गया, आवाज कांप रही थी और आंखें चमक रही थीं। "इकी, पेरेज़वॉन!"
“कोल्या, अगर तुमने एक और शब्द कहा, तो मैं तुमसे कोई वास्ता नहीं रखूंगा।”
“तुम,” अलेयोशा ने दृढ़ता से चिल्लाकर कहा।
दुनिया में केवल एक ही आदमी है जो निकोले को आदेश दे सकता है।
“क्रासोटकिन—यही वह व्यक्ति है”; कोल्या ने अलेयोशा की ओर इशारा किया। “मैं उसकी आज्ञा मानता हूँ।”
अलविदा!"
वह आगे बढ़ा, दरवाजा खोला और तेजी से अंदर चला गया।
कमरे में। पेरेज़वॉन उसके पीछे भागा। डॉक्टर पांच सेकंड तक स्थिर खड़ा रहा।
अलेयोशा को देखकर वह अचंभित हुआ; फिर एक अपशब्द कहते हुए वह जल्दी से बाहर चला गया।
गाड़ी में बैठे व्यक्ति ने बार-बार दोहराया, “यह... यह... मुझे नहीं पता यह क्या है।”
है!” कप्तान उसे गाड़ी में बिठाने के लिए तेजी से आगे बढ़ा। अलेयोशा
कोल्या के पीछे-पीछे कमरे में गया। वह पहले से ही इलुशा के बिस्तर के पास था।
बीमार लड़का उसका हाथ पकड़े अपने पिता को पुकार रहा था। एक मिनट बाद...
कप्तान भी वापस आ गया।
“पिताजी, पिताजी, आइए... हम...” इलुशा हिंसक रूप से लड़खड़ा गई
उत्तेजना तो थी, लेकिन जाहिर तौर पर आगे बढ़ने में असमर्थ होकर उसने अपनी कमजोर बाहों को फेंक दिया।
अपने पिता और कोलिया के चारों ओर, उन्हें एक आलिंगन में एकजुट करते हुए, और गले लगाते हुए
उसने उन्हें जितना हो सके कसकर पकड़ लिया। कप्तान अचानक कांपने लगा।
कोलिया सिसकियाँ भर रही थी और उसके होंठ और ठोड़ी फड़क रहे थे।

“पिताजी, पिताजी! मुझे आपके लिए कितना दुख हो रहा है!” इलुशा कराहते हुए बोली। “इलुशा... मेरी प्यारी... डॉक्टर ने कहा था... तुम ठीक हो जाओगी...”
हम खुश होंगे... डॉक्टर..." कप्तान ने कहना शुरू किया।
“अरे पिताजी! मुझे पता है नए डॉक्टर ने मेरे बारे में आपसे क्या कहा था... मैं
"देखा!" इलूशा चिल्लाया, और उसने फिर से उन दोनों को अपनी पूरी ताकत से गले लगा लिया।
उसने अपना चेहरा अपने पिता के कंधे पर छिपा लिया।
“पिताजी, रोना मत, और मेरे मरने के बाद एक अच्छा बेटा लाना।”
उनमें से एक... एक अच्छा लड़का चुन लो, उसका नाम इलुशा रखो और उससे प्यार करो।
मेरी जगह...
“चुप रहो, बूढ़े आदमी, तुम ठीक हो जाओगे,” क्रासोटकिन अचानक चिल्लाया।
आवाज में गुस्सा झलक रहा था।
“लेकिन पिताजी, मुझे कभी मत भूलना,” इलुशा ने आगे कहा, “मेरे पास आना।”
कब्र... और पिताजी, मुझे हमारे उस बड़े पत्थर के पास दफना देना, जहाँ हम अक्सर जाया करते थे।
हमारी सैर, और शाम को क्रासोटकिन के साथ वहाँ मेरे पास आना... और
पेरेज़वॉन... मैं आपका इंतज़ार करूँगा... पिताजी, पिताजी!
उसकी आवाज भर्रा गई। वे तीनों चुप थे, अभी भी एक-दूसरे को गले लगाए हुए थे। नीना थी।
वह अपनी कुर्सी पर चुपचाप रो रही थी, और अंत में उन सभी को रोते हुए देखकर बोली, "मम्मा।"
वह भी फूट-फूटकर रोने लगी।
“इलुशा! इलुशा!” वह चिल्लाई।
क्रासोटकिन ने अचानक इलुशा के आलिंगन से खुद को छुड़ा लिया। "अलविदा, बूढ़े, माँ रात के खाने पर मेरा इंतज़ार कर रही है," उसने कहा।
जल्दी से। “कितनी अफ़सोस की बात है कि मैंने उसे नहीं बताया! वह बहुत बुरी तरह से नाराज़ होगी।”
चिंतित... लेकिन रात के खाने के बाद मैं पूरे दिन के लिए तुम्हारे पास वापस आऊंगा, क्योंकि
पूरी शाम, और मैं आपको तरह-तरह की बातें बताऊंगा, तरह-तरह की बातें।
और मैं पेरेज़वॉन को लाऊंगा, लेकिन अभी मैं उसे अपने साथ ले जाऊंगा, क्योंकि वह
मेरे जाने पर तुम लोग भौंकना शुरू कर देते हो और परेशान करते हो। अलविदा!
और वह गलियारे में भाग गया। वह रोना नहीं चाहता था, लेकिन उस स्थिति में...
वह फूट-फूटकर रोने लगा। अलेयोशा ने उसे रोते हुए पाया।
“कोल्या, तुम्हें अपना वचन निभाकर अवश्य आना होगा, अन्यथा वह
"बेहद निराश हूं," अलेयोशा ने जोर देकर कहा।
मैं जरूर आऊंगा! ओह, मुझे पहले न आने पर कितना अफसोस हो रहा है!
कोलिया रोते हुए बुदबुदाई, और अब उसे इस बात का कोई अफसोस नहीं था।
उसी क्षण कप्तान कमरे से बाहर भागा और तुरंत दरवाजा बंद कर दिया।
उसके पीछे दरवाजा था। उसका चेहरा उन्मादी लग रहा था, उसके होंठ कांप रहे थे।
वह उन दोनों के सामने खड़ा हो गया और उसने अपनी बाहें ऊपर उठा दीं।
“मुझे अच्छा लड़का नहीं चाहिए! मुझे एक और लड़का नहीं चाहिए!” उसने बुदबुदाते हुए कहा।
दांत भींचते हुए, एक कर्कश फुसफुसाहट में उसने कहा, "अगर मैं तुझे भूल जाऊं, हे यरूशलेम, तो मेरी जीभ...” वह सिसकते हुए रुक गया और घुटनों के बल बैठ गया।
लकड़ी की बेंच पर। अपने सिर पर मुट्ठियाँ दबाते हुए, वह रोने लगा।
बेतुकी सिसकियाँ भरते हुए, वह पूरी कोशिश कर रहा था कि उसकी चीखें अनसुनी न हो जाएँ।
कमरे में सुनाई दिया।
कोल्या दौड़कर सड़क पर निकल गई।
“अलविदा, करामाज़ोव! क्या तुम खुद आओगे?” उसने तीखी आवाज में कहा।
और गुस्से से अलेयोशा से कहा।
मैं शाम को जरूर आऊंगा।

“उसने यरूशलेम के बारे में क्या कहा था? ... उसका मतलब क्या था?”
वह?"
“यह बाइबिल से है। ‘यदि मैं तुझे भूल जाऊं, यरूशलेम,’ यानी, यदि मैं सब कुछ भूल जाऊं
जो मेरे लिए सबसे कीमती है, अगर मैं किसी और चीज को उसकी जगह लेने दूं, तो शायद...
“मैं समझ गया, बस इतना ही काफी है! ध्यान रहे, आना! इकी, पेरेज़वॉन!”
वह कुत्ते पर पूरी क्रूरता से चिल्लाया और तेजी से कदम बढ़ाते हुए चला गया।
घर।
7. अर्थात्, घंटियों की झंकार।

पुस्तक 11

इवान

अध्याय 1

ग्रुशेंका के यहाँ

अलेयोशा गिरजाघर चौक की ओर विधवा मोरोज़ोव के घर ग्रुशेंका से मिलने गया, जिसने सुबह-सुबह फेन्या को उसके पास एक ज़रूरी संदेश देकर भेजा था और उससे आने की गुहार लगाई थी। फेन्या से पूछताछ करने पर अलेयोशा को पता चला कि उसकी मालकिन पिछले दिन से बहुत परेशान थी। मित्या की गिरफ्तारी के बाद बीते दो महीनों में अलेयोशा अक्सर विधवा मोरोज़ोव के घर जाता रहता था, कभी अपनी इच्छा से तो कभी मित्या के लिए संदेश पहुँचाने के लिए। मित्या की गिरफ्तारी के तीन दिन बाद ग्रुशेंका बहुत बीमार पड़ गई और लगभग पाँच सप्ताह तक बीमार रही। एक पूरा सप्ताह वह बेहोश रही। उसका रूप बहुत बदल गया था—वह दुबली-पतली और थोड़ी पीली पड़ गई थी, हालाँकि पिछले दो सप्ताह से वह बाहर जाने लायक ठीक थी। लेकिन अलेयोशा को उसका चेहरा पहले से भी ज़्यादा आकर्षक लगा और जब वह उसके पास जाता तो उसकी आँखों में आँखें मिलाना उसे अच्छा लगता था। उसके चेहरे पर दृढ़ता और समझदारी भरे इरादे का भाव आ गया था। उसमें आध्यात्मिक परिवर्तन के लक्षण दिखाई दे रहे थे, और एक दृढ़, सौम्य और विनम्र संकल्प झलक रहा था जिसे कोई भी हिला नहीं सकता था। उसकी भौहों के बीच एक हल्की सी सीधी रेखा थी जो उसके आकर्षक चेहरे को गहन चिंतन का भाव देती थी, पहली नज़र में लगभग गंभीर। उसकी पूर्व की चंचलता का कोई नामोनिशान नहीं था।
अलेयोशा को भी यह बात अजीब लगी कि इतनी बड़ी विपत्ति के बावजूद
एक भयानक अपराध के लिए गिरफ्तार हुए व्यक्ति से सगाई करने वाली उस बेचारी लड़की पर, सगाई के ठीक बाद ही, दुख का साया छा गया था। अपनी बीमारी और मित्या पर मंडरा रही लगभग अपरिहार्य सजा के बावजूद, ग्रुशेंका ने अपनी युवावस्था की प्रसन्नता नहीं खोई थी। कभी गर्व से भरी उसकी आँखों में एक कोमल चमक थी, हालाँकि कभी-कभी जब उसके दिल में एक परेशान करने वाला विचार पहले से कहीं अधिक प्रबल हो जाता था, तो वे पुरानी प्रतिशोध की आग से चमक उठती थीं। उस बेचैनी का कारण हमेशा की तरह

वही था - कटेरीना इवानोव्ना, जिसके बारे में ग्रुशेंका ने प्रलाप की अवस्था में भी बड़बड़ाया था। अलेयोशा जानता था कि वह उससे बुरी तरह ईर्ष्या करती थी। फिर भी कटेरीना इवानोव्ना ने मित्या से उसकी जेल में एक बार भी मुलाकात नहीं की थी, हालाँकि वह जब चाहे तब ऐसा कर सकती थी। इन सब बातों ने अलेयोशा के लिए एक कठिन समस्या खड़ी कर दी थी, क्योंकि वह एकमात्र व्यक्ति था जिससे ग्रुशेंका अपने दिल की बात कहती थी और जिससे वह लगातार सलाह मांगती रहती थी। कभी-कभी वह कुछ भी कहने में असमर्थ होता था।
चिंता से भरा हुआ वह उसके कमरे में दाखिल हुआ। वह घर पर थी।
आधे घंटे पहले मित्या से मिलकर लौटी मैक्सिमोव, जिस तेज़ी से अपनी कुर्सी से उठकर उससे मिलने आई, उससे समझ गई कि वह बेसब्री से उसका इंतज़ार कर रही थी। मेज़ पर ताश के पत्तों का एक गट्ठा पड़ा था, जो किसी खेल के लिए बाँटा गया था। दूसरी तरफ चमड़े के सोफे पर बिस्तर लगा हुआ था और मैक्सिमोव आधा लेटा हुआ था। उसने ड्रेसिंग गाउन और सूती टोपी पहन रखी थी और ज़ाहिर तौर पर बीमार और कमज़ोर लग रहा था, हालाँकि उसके चेहरे पर एक प्यारी सी मुस्कान थी। दो महीने पहले जब बेघर बूढ़ा ग्रुशेंका को मोक्रोए से लेकर लौटा था, तब से वह वहीं रुक गया था और अब भी उसके साथ ही रह रहा था। वह बारिश और ओले में उसके साथ पहुँचा, भीगा हुआ और डरा हुआ सोफे पर बैठ गया और एक दबी हुई, विनती भरी मुस्कान के साथ चुपचाप उसे देखता रहा। ग्रुशेंका, जो गहरे शोक में थी और बुखार के शुरुआती चरण में थी, अपने आने के बाद पहले आधे घंटे में अपने कामों में व्यस्त होने के कारण लगभग उसकी मौजूदगी को भूल ही गई थी। अचानक उसकी नज़र उस पर पड़ी: वह दयनीय, असहाय सी छोटी सी हंसी हंसा। उसने फेन्या को बुलाया और उसे कुछ खाने को देने को कहा। सारा दिन वह लगभग बिना हिले-डुले उसी जगह बैठा रहा। जब अंधेरा हो गया और खिड़कियां बंद हो गईं, तो फेन्या ने अपनी मालकिन से पूछा: "क्या ये सज्जन आज रात यहीं रुकेंगे, मालकिन?"
“हाँ; सोफे पर उसके लिए बिस्तर बना दो,” ग्रुशेंका ने उत्तर दिया। उससे और अधिक विस्तार से पूछताछ करने पर, ग्रुशेंका को पता चला कि वह
मेरे पास सचमुच कहीं जाने की जगह नहीं थी, और "मेरे संरक्षक श्री कालगानोव ने मुझसे साफ-साफ कह दिया कि वह मुझे दोबारा स्वीकार नहीं करेंगे और मुझे पांच रूबल दिए।"
“खैर, भगवान आपका भला करे, तो बेहतर होगा कि आप यहीं रुकें,” ग्रुशेंका ने फैसला सुनाया।
उसके दुःख को देखकर, वह उस पर दया भरी मुस्कान बिखेर रही थी। उसकी मुस्कान ने बूढ़े आदमी के दिल को छू लिया और कृतज्ञता के आँसू उसके होंठों से बहने लगे। और तब से वह बेसहारा यात्री उसके साथ ही रहने लगा। यहाँ तक कि जब वह बीमार थी तब भी वह घर से बाहर नहीं गया। फेन्या और उसकी दादी, जो रसोइया थीं, ने उसे घर से नहीं निकाला, बल्कि उसे खाना खिलाती रहीं और सोफे पर उसका बिस्तर लगाती रहीं। ग्रुशेंका को उसकी आदत हो गई थी, और मित्या से मिलने के बाद (जिससे वह पूरी तरह ठीक होने से पहले ही जेल में मिलने जाने लगी थी) वह बैठ जाती और "मैक्सिमुष्का" से छोटी-मोटी बातें करने लगती, ताकि वह अपने दुःख को भूल सके। बूढ़ा आदमी कभी-कभी अच्छी कहानियाँ सुनाने में माहिर था, इसलिए अंततः वह उसके लिए ज़रूरी हो गया। ग्रुशेंका अलेयोशा के अलावा शायद ही किसी और से मिलती थी, जो हर दिन नहीं आता था और कभी भी ज़्यादा देर नहीं रुकता था। उसका बूढ़ा व्यापारी उस समय गंभीर रूप से बीमार था, जैसा कि कस्बे में कहा जाता था, "अपनी आखिरी साँसें ले रहा था", और वास्तव में मित्या के मुकदमे के एक हफ्ते बाद उसकी मृत्यु हो गई। अपनी मृत्यु से तीन सप्ताह पहले, अंत निकट आते देख, उन्होंने अपने पुत्रों, उनकी पत्नियों और बच्चों को अंत में अपने पास ऊपर बुलाया और उनसे कहा कि वे फिर कभी उन्हें छोड़कर न जाएँ। उसी क्षण से उन्होंने अपने नौकरों को सख्त आदेश दिया कि वे ग्रुशेंका को अंदर न आने दें और यदि वह आए तो उससे कहें, “स्वामी जी आपको दीर्घायु और सुख की कामना करते हैं और कहते हैं कि मुझे भूल जाओ।” लेकिन ग्रुशेंका लगभग हर दिन उनसे मिलने आती थीं।
“आखिरकार तुम आ ही गए!” उसने खुशी से चिल्लाते हुए ताश के पत्ते नीचे फेंक दिए।
अलेयोशा का अभिवादन करते हुए, “मैक्सिमुष्का मुझे डरा रही थी कि शायद तुम नहीं आओगे। आह, मुझे तुम्हारी कितनी ज़रूरत है! मेज पर बैठो। क्या लोगे—कॉफी?”
“जी हाँ, कृपया,” अलेयोशा ने मेज पर बैठते हुए कहा। “मैं बहुत
भूखा।"

“बिल्कुल सही। फेन्या, फेन्या, कॉफी,” ग्रुशेंका चिल्लाई। “इसे बना दिया गया है।”
बहुत दिनों से आपके लिए तैयार कर रही थी। और कुछ छोटी-छोटी पाई भी लाना, ध्यान रखना कि वो गरम हों। पता है, आज उन पाई को लेकर बहुत बवाल हो गया। मैं उन्हें उसके लिए जेल ले गई थी, और यकीन मानो, उसने उन्हें वापस मेरी तरफ फेंक दिया: उसने उन्हें खाया ही नहीं। उसने एक पाई ज़मीन पर फेंक दी और उसे पैर से कुचल दिया। तो मैंने उससे कहा: ‘मैं इन्हें जेलर के पास छोड़ देती हूँ; अगर तुमने शाम से पहले इन्हें नहीं खाया, तो तुम्हारी ये ज़हरीली नफ़रत ही तुम्हारे लिए काफ़ी होगी!’ इतना कहकर मैं चली गई। यकीन मानो, हमारा फिर झगड़ा हो गया? मैं जहाँ भी जाती हूँ, झगड़ा हो ही जाता है।
ग्रुशेंका ने घबराहट में यह सब एक ही सांस में कह दिया। मैक्सिमोव को यह महसूस हुआ।
घबराई हुई सी, उसने तुरंत मुस्कुराया और फर्श की ओर देखने लगी।
“इस बार किस बात पर झगड़ा हुआ?” अलेयोशा ने पूछा। “मुझे इसकी बिल्कुल भी उम्मीद नहीं थी। बस, लगता है वो पोलिश से जलता है।”
“तुम उसे क्यों रख रही हो?” उसने कहा। “तो तुमने उसे रखना शुरू कर दिया है।” वह ईर्ष्यालु है, हर समय मुझसे ईर्ष्या करता है, खाने-पीने और सोने से भी! पिछले हफ्ते तो उसने कुज़्मा से भी ईर्ष्या करने का ठान लिया था।
"लेकिन क्या वह पहले से ही उस पोलिश व्यक्ति के बारे में जानता था?"
“हां, लेकिन बात यही है। वह उसके बारे में शुरू से ही जानता है।”
लेकिन आज वो अचानक उठ खड़ा हुआ और उसे कोसने लगा। मुझे शर्म आ रही है कि मैं उसके कहे शब्द दोहरा सकूँ। बेवकूफ! जब मैं बाहर आई तो रकितिन अंदर चला गया। शायद रकितिन उसे उकसा रहा है। आपको क्या लगता है?” उसने लापरवाही से कहा।
“वह तुमसे प्यार करता है, बस यही बात है: वह तुमसे बहुत प्यार करता है। और अब वह...”
विशेष रूप से चिंतित।"
मुझे लगता है कि कल की सुनवाई को देखते हुए शायद वो चिंतित होंगे। और मैं उनसे कल के बारे में कुछ कहने गई थी, क्योंकि मुझे डर है कि तब क्या होगा। आप कहते हैं कि वो चिंतित हैं, लेकिन मैं कितनी चिंतित हूँ! और वो पोलिश लोगों के बारे में बातें करते हैं! वो कितने मूर्ख हैं! वैसे भी, अभी तक उन्हें मैक्सिमुष्का से जलन नहीं है।
“मेरी पत्नी भी मुझसे बेहद ईर्ष्या करती थी,” मैक्सिमोव ने अपने पत्र में लिखा।
शब्द।
“तुमसे जलन हो रही है?” ग्रुशेंका खुद पर काबू न रख पाने के कारण हंस पड़ी। “किससे?”
क्या वह ईर्ष्या कर रही होगी?
“नौकरानियों की।”
“अपनी ज़बान संभालो, मैक्सिमुष्का, मैं अभी हंसने के मूड में नहीं हूँ; मुझे ऐसा लग रहा है
गुस्से में। पाई को घूरना बंद करो। मैं तुम्हें एक भी नहीं दूंगी; ये तुम्हारे लिए अच्छी नहीं हैं, और मैं तुम्हें वोदका भी नहीं दूंगी। मुझे उसकी भी देखभाल करनी है, जैसे कि मैं कोई अनाथालय चलाती हूँ,” वह हंसते हुए बोली।
“मैं तुम्हारी दया के लायक नहीं हूँ। मैं एक निकम्मा प्राणी हूँ,” उसने कहा।
मैक्सिमोव की आवाज़ में आंसू थे। "तुम अपनी दया मुझ से ज़्यादा उपयोगी लोगों पर खर्च करो तो बेहतर होगा।"
“अरे, मैक्सिमुष्का, हर कोई काम का है, और हम कैसे बता सकते हैं कि कौन काम का है?”
सबसे ज़्यादा फ़ायदा? काश वो पोलिश होता ही नहीं, अलेयोशा। उसने भी आज बीमार पड़ने का नाटक कर लिया है। मैं उससे मिलने भी गया था। और मैं जानबूझकर उसे कुछ पाई भी भेजूँगा। मैंने उसे पाई नहीं भेजी थी, लेकिन मित्या ने मुझ पर आरोप लगा दिया, इसलिए अब मैं भेजूँगा! अरे, फेन्या एक चिट्ठी लेकर आई है! हाँ, ये पोलिश लोगों की तरफ से है—फिर से भीख माँग रहे हैं!
पैन मुस्यालोविच ने वास्तव में एक बहुत लंबा संदेश भेजा था और
एक वाक्पटुतापूर्ण पत्र में उसने ग्रुशेंका से तीन रूबल उधार देने की विनती की। पत्र के साथ राशि की रसीद भी संलग्न थी, जिस पर तीन महीने के भीतर चुकाने का वादा था और पान व्रुबलेव्स्की के हस्ताक्षर भी थे।
ग्रुशेंका को अपने पूर्व प्रेमी से अपनी बीमारी से उबरने के पखवाड़े के दौरान ऐसे कई पत्र और रसीदें मिली

थीं। लेकिन वह जानती थी कि दोनों पोलिश लोग उसकी बीमारी के दौरान उसका हालचाल पूछने आए थे। उनसे मिला पहला पत्र लंबा था, बड़े नोटपैड पर लिखा हुआ था और मुहर पर एक बड़ा पारिवारिक प्रतीक चिन्ह बना हुआ था। यह इतना अस्पष्ट और अलंकारिक था कि ग्रुशेंका ने आधा पढ़ने से पहले ही उसे रख दिया, क्योंकि वह उसे समझ नहीं पाई। उस समय वह पत्रों पर ध्यान नहीं दे पा रही थी। पहले पत्र के अगले दिन एक और पत्र आया जिसमें पान मुस्यालोविच ने उससे बहुत कम समय के लिए दो हज़ार रूबल उधार मांगे। ग्रुशेंका ने उस पत्र का भी उत्तर नहीं दिया। इसके बाद पत्रों की एक पूरी श्रृंखला आई—लगभग हर दिन एक—सभी आडंबरपूर्ण और अलंकारिक थे, लेकिन मांगी गई ऋण राशि धीरे-धीरे कम होती गई, पहले सौ रूबल, फिर पच्चीस, फिर दस और अंत में ग्रुशेंका को एक पत्र मिला जिसमें दोनों पोलिश नागरिकों ने उससे केवल एक रूबल की भीख मांगी और साथ में दोनों द्वारा हस्ताक्षरित एक रसीद भी शामिल थी।
फिर अचानक ग्रुशेंका को उन पर दया आ गई, और शाम ढलते ही वह चली गई
ग्रुशेंका उनके ठहरने की जगह पर पहुँची। उसने देखा कि दोनों पोलिश लोग घोर गरीबी में जी रहे थे, लगभग कंगाली की हालत में, उनके पास न खाना था, न ईंधन, न सिगरेट, और वे मकान मालकिन के कर्जदार थे। मोक्रोए में मित्या से लिए गए दो सौ रूबल जल्द ही गायब हो गए थे। लेकिन ग्रुशेंका यह देखकर हैरान रह गई कि वे उससे इतने घमंडी और आत्मविश्वास से भरे अंदाज में, बड़ी सलीके से और बड़े-बड़े भाषणों के साथ मिले। ग्रुशेंका बस हँसी और अपने पुराने चाहने वाले को दस रूबल दे दिए। फिर हँसते हुए उसने मित्या को इसके बारे में बताया और मित्या को ज़रा भी जलन नहीं हुई। लेकिन तब से, पोलिश लोग ग्रुशेंका से चिपके रहने लगे और रोज़ाना उससे पैसे माँगते रहते, और वह हमेशा उन्हें छोटी-छोटी रकम भेजती रहती। और आज उस दिन मित्या को बहुत ज़्यादा जलन होने लगी थी।
“मूर्खता की तरह, मैं उससे मिलने जाते समय बस एक मिनट के लिए उसके पास चला गया।”
“मित्या, क्योंकि वह भी बीमार है, मेरा पोल,” ग्रुशेंका ने घबराहट भरी जल्दबाजी में फिर से कहना शुरू किया। “मैं हंस रही थी, मित्या को इसके बारे में बता रही थी। ‘वाह,’ मैंने कहा, ‘मेरे पोल को मेरे लिए गिटार पर अपने पुराने गाने गाने का अच्छा ख्याल आया। उसे लगा कि मैं पिघल जाऊंगी और उससे शादी कर लूंगी!’ मित्या उछल पड़ा और गाली देने लगा... तो, मैं उन्हें पाई भेज देती हूँ! फेन्या, क्या वही छोटी लड़की है जिसे उन्होंने भेजा है? लो, उसे तीन रूबल दे दो और एक दर्जन पाई कागज में लपेटकर उसे दे दो। और तुम, अलेयोशा, मित्या को जरूर बता देना कि मैंने उन्हें पाई भेज दी हैं।”
“मैं उसे किसी भी कीमत पर नहीं बताऊंगी,” अलेयोशा ने मुस्कुराते हुए कहा। “अरे! तुम्हें लगता है कि वह इससे नाखुश है? अरे, वह तो जानबूझकर जलन कर रहा है।”
"उसे कोई परवाह नहीं है," ग्रुशेंका ने कड़वाहट से कहा।
“जानबूझकर?” अलेयोशा ने पूछा।
“मैं तुमसे कहता हूँ, अलेयोशा, तुम मूर्ख हो। तुम्हें इसके बारे में कुछ भी नहीं पता।
आपकी चालाकी। मुझे इस बात से कोई आपत्ति नहीं है कि वह मुझ जैसी लड़की से जलता है। अगर वह जलन न करता तो मुझे आपत्ति होती। मैं ऐसी ही हूँ। मुझे जलन से कोई आपत्ति नहीं है। मेरा दिल भी बहुत मजबूत है। मैं खुद भी जलन महसूस कर सकती हूँ। मुझे बस इस बात से आपत्ति है कि वह मुझसे बिल्कुल भी प्यार नहीं करता। मैं आपको बता दूँ कि वह जानबूझकर जलन कर रहा है। क्या मैं अंधी हूँ? क्या मुझे दिखाई नहीं दे रहा? अभी-अभी वह मुझसे उस औरत, कैटेरिना के बारे में बात करने लगा, कह रहा था कि वह ऐसी-वैसी थी, उसने उसके लिए मॉस्को से डॉक्टर मंगवाया था, ताकि उसे बचाया जा सके; उसने सबसे अच्छे, सबसे विद्वान वकील को भी बुलाया था। तो वह उससे प्यार करता है, अगर वह मेरे सामने उसकी तारीफ करेगा, तो उसे और शर्म आनी चाहिए! उसने खुद मेरे साथ बुरा बर्ताव किया है, इसलिए उसने मुझ पर हमला किया, ताकि पहले मुझे दोषी ठहरा सके और सारा दोष मुझ पर डाल सके। 'तुम मुझसे पहले अपने पोलिश साथी के साथ थी, इसलिए कैटेरिना के लिए मुझे दोषी नहीं ठहराया जा सकता,' बात बस इतनी सी है। वह सारा दोष मुझ पर डालना चाहता है। उसने जानबूझकर मुझ पर हमला किया, मैं तुम्हें बता रहा हूँ, लेकिन मैं...
ग्रुशेंका अपनी बात पूरी नहीं कर पाई। उसने अपनी आँखें छुपा लीं।
उसने अपने रूमाल में अपना चेहरा लपेटा और फूट-फूटकर रोने लगी।
“वह कैटेरिना इवानोवना से प्यार नहीं करता,” अलेयोशा ने दृढ़ता से कहा। “खैर, चाहे वह उससे प्यार करता हो या नहीं, मुझे जल्द ही खुद पता चल जाएगा,” अलेयोशा ने कहा।

ग्रुशेंका ने धमकी भरे स्वर में अपनी आँखों से रूमाल हटाते हुए कहा, उसका चेहरा विकृत हो गया था।
अलेयोशा ने दुखपूर्वक देखा कि सौम्य और शांत रहने के बजाय उसका चेहरा उदास और द्वेषपूर्ण हो गया था।
“बस करो ये सब बेवकूफी,” उसने अचानक कहा; “मैंने तुम्हें इसलिए नहीं भेजा था।”
तुम्हारे लिए। अलेयोशा, प्रिय, कल—कल क्या होगा? यही बात मुझे परेशान कर रही है! और यह चिंता सिर्फ मुझे है! मैं सबको देखती हूँ और कोई इसके बारे में नहीं सोच रहा। किसी को परवाह नहीं। क्या तुम भी इसके बारे में सोच रही हो? कल उसका मुकदमा चलेगा, तुम्हें पता है। बताओ, उसका मुकदमा कैसे चलेगा? तुम्हें पता है कि नौकर ने ही उसे मारा है! हे भगवान! क्या वे नौकर की जगह उसे दोषी ठहरा सकते हैं और क्या कोई उसके लिए खड़ा नहीं होगा? उन्होंने नौकर को तो ज़रा भी परेशान नहीं किया, है ना?
“उनसे कड़ी पूछताछ की गई है,” अलेयोशा ने सोच-समझकर टिप्पणी की;
“लेकिन सभी इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि वह वह नहीं था। अब वह बहुत बीमार पड़ा है। उस हमले के बाद से ही वह बीमार है। सचमुच बहुत बीमार है,” अलेयोशा ने आगे कहा।
अरे! क्या आप खुद उस वकील के पास जाकर उसे यह बात नहीं बता सकते?
क्या तुमने ये सब खुद किया? लोग कहते हैं कि उसे पीटर्सबर्ग से तीन हजार रूबल में लाया गया है।
“हमने इन तीनों हजार लोगों को एक साथ दिया—इवान, कटेरीना इवानोवना, और
लेकिन उसने मॉस्को से आए डॉक्टर के लिए खुद दो हज़ार डॉलर दिए। वकील फेत्युकोविच इससे ज़्यादा फीस लेते, लेकिन मामला पूरे रूस में मशहूर हो चुका है; सभी अखबारों और पत्रिकाओं में इसकी चर्चा हो रही है। फेत्युकोविच इस मामले की प्रसिद्धि के लिए आने को राज़ी हुए, क्योंकि मामला इतना कुख्यात हो चुका है। मैंने उन्हें कल देखा था।
“तो? क्या तुमने उससे बात की?” ग्रुशेंका ने उत्सुकता से पूछा। “उसने सुना और कुछ नहीं कहा। उसने मुझे बताया कि उसने पहले ही फैसला कर लिया है।”
उनकी राय अलग थी। लेकिन उन्होंने मेरी बातों पर विचार करने का वादा किया।
“विचार करो! अरे, ये तो धोखेबाज हैं! ये उसे बर्बाद कर देंगे। और ऐसा क्यों हुआ?”
क्या उसने डॉक्टर को बुलवाया?
“एक विशेषज्ञ के तौर पर। वे यह साबित करना चाहते हैं कि मित्या पागल है और उसने अनजाने में हत्या की है”; अलेयोशा ने धीरे से मुस्कुराते हुए कहा; “लेकिन मित्या इसके लिए सहमत नहीं होगा।”
“हाँ; लेकिन अगर उसने उसे मार डाला होता तो यही सच होता!” ग्रुशेंका चिल्लाई।
“वो उस समय पागल था, बिलकुल पागल, और ये सब मेरी गलती थी, मैं कितना अभागा हूँ! लेकिन, ज़ाहिर है, उसने ये नहीं किया, उसने ये नहीं किया! और सब उसके खिलाफ हैं, पूरा शहर। यहाँ तक कि फेन्या की गवाही से भी साबित हो गया कि उसने ही ये किया था। और दुकान के लोग, वो अधिकारी, और सराय में भी, पहले लोगों ने उसे ऐसा कहते सुना था! सब उसके खिलाफ हैं, सब उसके खिलाफ आवाज़ उठा रहे हैं।”
“हाँ, सबूतों का भयावह संचय हो रहा है,” अलेयोशा ने टिप्पणी की।
गंभीर रूप से।
और ग्रिगोरी—ग्रिगोरी वासिलीविच—अपनी इस कहानी पर अड़ा हुआ है कि दरवाजा
वह खुलेआम बोलता है, अपनी बात पर अड़ा रहता है कि उसने इसे देखा है—उसे मनाना नामुमकिन है। मैं खुद जाकर उससे बात की। वह इस बारे में भी बदतमीजी से पेश आया।
“हाँ, शायद यही उसके खिलाफ सबसे मजबूत सबूत है,” अलेयोशा ने कहा। “और जहाँ तक मित्या के पागल होने की बात है, वह अब निश्चित रूप से पागल ही लगता है।”
ग्रुशेंका ने एक अजीब तरह की चिंता और रहस्यमय भाव के साथ शुरुआत की। “जानते हो, अलेयोशा, मैं तुमसे इस बारे में बहुत दिनों से बात करना चाहता था। मैं रोज़ उसके पास जाता हूँ और उसे देखकर बस हैरान रह जाता हूँ। अब बताओ, तुम्हें क्या लगता है वो हमेशा किस बारे में बात करता रहता है? वो बोलता ही रहता है और मुझे कुछ समझ नहीं आता। मुझे लगा कि वो किसी बौद्धिक विषय पर बात कर रहा है जिसे मैं अपनी नासमझी में समझ नहीं पा रहा था। तभी अचानक वो मुझसे एक बच्चे के बारे में बात करने लगा—मतलब, किसी बच्चे के बारे में। ‘ये बच्चा गरीब क्यों है?’ उसने कहा। ‘इसी बच्चे के लिए मैं साइबेरिया जा रहा हूँ। मैं हत्यारा नहीं हूँ, लेकिन मुझे साइबेरिया जाना ही होगा!’ इसका क्या मतलब था, कौन सा बच्चा, मुझे

बिल्कुल समझ नहीं आया। बस जब उसने ये कहा तो मैं रो पड़ा, क्योंकि उसने ये बहुत प्यार से कहा था। वो खुद भी रोया, और मैं भी रो पड़ा। उसने अचानक मुझे चूमा और मेरे ऊपर क्रॉस का निशान बनाया। इसका क्या मतलब था, अलेयोशा, बताओ? ये बच्चा कौन है?"
"ज़रूर रकितिन ही होगा, जो आजकल उससे मिलने जाता है," मुस्कुराते हुए कहा।
अलेयोशा ने कहा, "हालाँकि... इसमें रकितिन का हाथ नहीं है। मैंने कल मित्या को नहीं देखा। मैं उसे आज देख लूँगा।"
"नहीं, यह राकितिन नहीं है; यह उसका भाई इवान फ्योदोरोविच है जो उसे परेशान कर रहा है।"
"वह उससे मिलने जा रहा है, बस यही बात है," ग्रुशेंका ने कहना शुरू किया और अचानक रुक गई।
अलेयोशा ने हैरानी से उसकी ओर देखा।
"इवान जा रहा है? क्या वह उससे मिलने गया था? मित्या ने मुझे खुद बताया था कि इवान
ऐसा एक बार भी नहीं हुआ है।
"अरे... अरे! मैं कितनी नादान हूँ! बिना सोचे-समझे बोल देती हूँ!" ग्रुशेंका ने उलझन में और अचानक शरमाते हुए कहा। "रुको, अलेयोशा, चुप रहो! मैंने इतना कुछ कह दिया है तो मैं पूरी सच्चाई बता देती हूँ—वह उससे दो बार मिलने गया था, पहली बार तो उसके आते ही। ज़ाहिर है, मेरे बीमार पड़ने से पहले ही वह तुरंत मॉस्को से घोड़े पर सवार होकर यहाँ आ गया था; और दूसरी बार एक हफ़्ते पहले। उसने मित्या से कहा था कि वह तुम्हें इसके बारे में किसी भी हालत में न बताए; और वास्तव में किसी को भी न बताए। वह चुपके से आया था।"
अलेयोशा गहरी सोच में डूबा बैठा था, किसी बात पर विचार कर रहा था। खबर
जाहिर तौर पर वह इससे प्रभावित हुआ।
"इवान मुझसे मित्या के मामले के बारे में बात नहीं करता," उसने धीरे से कहा। "उसने कहा है कि
पिछले दो महीनों में उसने मुझसे बहुत कम बात की है। और जब भी मैं उससे मिलने जाता हूँ, वह मेरे आने से नाराज़ लगता है, इसलिए मैं पिछले तीन हफ़्तों से उससे मिलने नहीं गया हूँ। हम्म! ... अगर वह एक हफ़्ते पहले यहाँ था... तो इस हफ़्ते मित्या में ज़रूर बदलाव आया है।
"बदलाव आया है," ग्रुशेंका ने तुरंत सहमति जताते हुए कहा। "उनके पास एक है
कोई राज़ है, उनके पास कोई राज़ है! मित्या ने खुद मुझे बताया कि कोई राज़ है, और ऐसा राज़ कि मित्या को चैन नहीं आता। इससे पहले तो वह खुशमिजाज था—और सच में, अब भी खुशमिजाज है—लेकिन जब वह इस तरह सिर हिलाता है, और कमरे में इधर-उधर घूमता है और अपने दाहिने हाथ से अपनी दाहिनी कनपटी के बाल खींचता रहता है, तो मैं समझ जाती हूँ कि उसके मन में कोई बात खटक रही है... मैं जानती हूँ! वह पहले भी खुशमिजाज था, और सच में, आज भी खुशमिजाज है।
लेकिन आपने कहा था कि वह चिंतित था।
"हाँ, वह चिंतित है और फिर भी खुश है। वह लगातार चिड़चिड़ाता रहता है।
कभी एकदम शांत, कभी खुशमिजाज, कभी फिर चिड़चिड़े। और जानते हो, अलेयोशा, मैं उसे देखकर हमेशा हैरान रह जाता हूँ—उसके ऊपर यह भयानक बोझ मंडरा रहा है, फिर भी वह कभी-कभी छोटी-छोटी बातों पर ऐसे हँसता है मानो वह खुद एक बच्चा हो।
"और क्या उसने सचमुच तुमसे कहा था कि मुझे इवान के बारे में मत बताना? क्या उसने कहा था, 'मत बताना'?"
उसे बताओ?
"हां, उसने मुझसे कहा, 'उसे मत बताना।' मित्या को सबसे ज्यादा डर तुमसे ही लगता है।"
क्योंकि यह एक रहस्य है: उसने खुद कहा था कि यह एक रहस्य है। अलेयोशा, प्यारे, जाओ उसके पास और पता लगाओ कि उनका रहस्य क्या है और आकर मुझे बताओ," ग्रुशेंका ने अचानक उत्सुकता से उससे विनती की। "मुझे आश्वस्त करो ताकि मुझे पता चल सके कि मेरे लिए सबसे बुरा क्या होने वाला है। इसीलिए मैंने तुम्हें बुलवाया है।"
"तुम्हें लगता है कि इसका तुमसे कुछ लेना-देना है? अगर होता तो वो ऐसा नहीं करता।"
मैंने तुमसे कहा था कि इसमें एक रहस्य है।
मुझे नहीं पता। शायद वह मुझे बताना चाहता है, लेकिन हिम्मत नहीं कर पा रहा है।

वह मुझे चेतावनी देता है। वह मुझे बताता है कि एक रहस्य है, लेकिन वह मुझे यह नहीं बताएगा कि वह क्या है।
आप खुद क्या सोचते हैं?
मैं क्या सोचता हूँ? मेरे लिए तो यह अंत है, मैं यही सोचता हूँ। वे तीनों
मेरी मौत की साजिश रची जा रही है, क्योंकि इसमें कैटेरिना का हाथ है। सब कुछ कैटेरिना की वजह से है, सब कुछ उसी से जुड़ा है। वो ये सब वो है, और इसका मतलब है कि मैं वो नहीं हूँ। वो मुझे पहले ही बता देता है—मुझे चेतावनी देता है। वो मुझे धोखा देने की योजना बना रहा है, यही सारा राज़ है। उन तीनों ने मिलकर ये योजना बनाई है—मित्या, कैटेरिना और इवान फ्योदोरोविच। अलेयोशा, मैं तुमसे बहुत दिनों से पूछना चाहता था। एक हफ्ते पहले उसने अचानक मुझे बताया कि इवान कैटेरिना से प्यार करता है, क्योंकि वो अक्सर उससे मिलने जाता है। क्या उसने मुझे सच बताया या नहीं? मुझे बताओ, अपने ज़मीर की कसम, मुझे सबसे बुरी बात बताओ।
मैं तुमसे झूठ नहीं बोलूंगी। इवान, कैटेरिना इवानोवना से प्यार नहीं करता।
सोचना।"
“ओह, मुझे भी यही लगा था! वह मुझसे झूठ बोल रहा है, बेशर्म धोखेबाज है।”
ये क्या है! और अभी-अभी वो मुझसे जल रहा था, ताकि बाद में सारा दोष मुझ पर डाल सके। वो बेवकूफ है, वो जो कर रहा है उसे छुपा नहीं सकता; वो कितना खुला है, तुम्हें पता है... लेकिन मैं उसे ये बता दूँगी, मैं उसे ये बता दूँगी! 'तुम्हें लगता है मैंने ये किया है,' उसने कहा। उसने मुझसे ये कहा, मुझसे। उसने मुझे इस बात से दोषी ठहराया! भगवान उसे माफ करे! रुको, मैं मुकदमे में कैटेरिना के लिए इसे गरमा दूँगी! मैं बस एक शब्द कहूँगी... मैं तब सब कुछ बता दूँगी!
और फिर वह फूट-फूटकर रोने लगी।
“ग्रुशेंका, यह बात मैं तुम्हें निश्चित रूप से बता सकता हूँ,” अलेयोशा उठते हुए बोला।
“पहली बात तो ये है कि वो तुमसे प्यार करता है, दुनिया में सबसे ज़्यादा, और सिर्फ़ तुमसे ही, यकीन मानो। मुझे पता है। मुझे पक्का पता है। दूसरी बात ये है कि मैं उससे उसका राज़ उगलवाना नहीं चाहती, लेकिन अगर वो आज मुझे अपने बारे में बता दे, तो मैं उसे साफ़-साफ़ बता दूँगी कि मैंने तुमसे वादा किया है। फिर मैं आज ही तुम्हारे पास आकर तुम्हें बता दूँगी। बस... मुझे लगता है... कैटेरिना इवानोव्ना का इससे कोई लेना-देना नहीं है, और ये राज़ किसी और चीज़ के बारे में है। ये तो पक्का है। मुझे नहीं लगता कि ये कैटेरिना इवानोव्ना के बारे में है। अभी के लिए अलविदा।”
अलेयोशा ने उससे हाथ मिलाया। ग्रुशेंका अभी भी रो रही थी। उसने देखा कि
उसे उसकी सांत्वना पर ज़्यादा भरोसा नहीं था, लेकिन अपने दुख को व्यक्त करने और उसके बारे में बात करने से उसे कुछ राहत मिली। उसे उसे इस हालत में छोड़कर जाने का दुख था, लेकिन वह जल्दी में था। उसे अभी बहुत सारे काम करने थे।

अध्याय दो

घायल पैर

इनमें से पहला काम मैडम होहलाकोव के घर पर था, और वह इसे जल्द से जल्द निपटाने के लिए जल्दी से वहाँ पहुँच गया ताकि मित्या के लिए देर न हो जाए। मैडम होहलाकोव पिछले तीन हफ्तों से थोड़ी बीमार थीं: किसी कारण से उनका पैर सूज गया था, और हालाँकि वह बिस्तर पर नहीं थीं, फिर भी वह दिन भर अपने शयनकक्ष में सोफे पर आधी लेटी रहती थीं, एक आकर्षक लेकिन शालीन पोशाक में। अलेयोशा ने एक बार मासूमियत भरी हंसी के साथ देखा था कि अपनी बीमारी के बावजूद, मैडम होहलाकोव कुछ ज्यादा ही सजने-संवरने लगी थीं - बालों का जूड़ा, रिबन, ढीले लबादे, सब कुछ दिखने लगा था, और उसे इसका कुछ कारण समझ में आया, हालाँकि उसने ऐसे विचारों को तुच्छ समझकर मन से निकाल दिया। पिछले दो महीनों में युवा अधिकारी, पेरहोटिन, उनके घर नियमित रूप से आने-जाने लगा था।
अलियोशा ने चार दिनों से फोन नहीं किया था और वह सीधे जाने के लिए जल्दी में था।
लीज़ से बात करना ज़रूरी था, क्योंकि लीज़ ने पिछले दिन एक नौकरानी को उसके पास भेजा था, और खास तौर पर उसे "किसी बहुत ज़रूरी बात" के लिए बुलाया था। यह अनुरोध कुछ कारणों से अलेयोशा के लिए महत्वपूर्ण था। लेकिन जब नौकरानी लीज़ को उसका नाम बताने गई, तो किसी ने मैडम होहलाकोव को उसके आने की खबर दी और तुरंत उसे "बस एक मिनट के लिए" आने की विनती करने के लिए भेजा। अलेयोशा ने सोचा कि माँ का अनुरोध मान लेना ही बेहतर होगा, वरना वह उसके वहाँ रहने के हर मिनट लीज़ के कमरे में भेजती रहेंगी। मैडम होहलाकोव एक सोफे पर लेटी हुई थीं। उन्होंने बहुत ही सलीके से कपड़े पहने थे और स्पष्ट रूप से वे बहुत घबराई हुई और उत्तेजित थीं। उन्होंने खुशी से चिल्लाते हुए अलेयोशा का स्वागत किया।
“तुम्हें देखे हुए सदियां बीत गईं, बिलकुल सही समय! पूरा एक हफ्ता बीत गया है—”
ज़रा सोचो! आह, लेकिन आप चार दिन पहले, बुधवार को यहाँ आए थे। आप लीज़ से मिलने आए थे। मुझे यकीन है कि आप चुपके से उसके कमरे में घुसना चाहते थे, बिना मेरी सुने। मेरे प्यारे, प्यारे एलेक्सी फ्योदोरोविच, काश आपको पता होता कि मैं उसके बारे में कितनी चिंतित हूँ! लेकिन उस बारे में बाद में बात करेंगे, हालाँकि सबसे ज़रूरी बात वही है। प्यारे एलेक्सी फ्योदोरोविच, मैं लीज़ के मामले में आप पर पूरी तरह भरोसा करती हूँ। फादर ज़ोस्सिमा के निधन के बाद से—भगवान उनकी आत्मा को शांति दे!” (उसने खुद को क्रॉस का निशान बनाया)—मैं आपको एक साधु की तरह देखती हूँ, हालाँकि आप अपने नए सूट में बहुत आकर्षक लग रहे हैं। आपको इस इलाके में ऐसा दर्जी कहाँ मिला? नहीं, नहीं, यह मुख्य बात नहीं है—उसके बारे में बाद में बात करेंगे। मुझे माफ़ करना कि मैं कभी-कभी आपको अलेयोशा कह देती हूँ; मुझ जैसी बूढ़ी औरत को थोड़ी छूट मिल सकती है,” वह नज़ाकत से मुस्कुराई; “लेकिन वो बाद में भी चलेगा। ज़रूरी बात ये है कि मैं ज़रूरी बातों को न भूलूँ। कृपया मुझे खुद याद दिला दीजिए। जैसे ही मेरी ज़बान बेकाबू हो जाती है, आप बस कह देते हैं, ‘ज़रूरी बात?’ उफ़! अब मुझे कैसे पता चलेगा कि सबसे ज़रूरी क्या है? जब से लीज़ ने आपसे शादी करने का अपना वादा—अपना बचकाना वादा, एलेक्सी फ्योदोरोविच—वापस लिया है, तब से आपको समझ आ गया होगा कि ये तो बस एक बीमार बच्ची की चंचल कल्पना थी जो इतने लंबे समय से कुर्सी पर बैठी थी—भगवान का शुक्र है, अब वो चल सकती है! ... आपके दुखी भाई के लिए कात्या ने मॉस्को से उस नए डॉक्टर को बुलाया है, जो कल—लेकिन कल की बात क्यों करें? मैं तो कल के ख्याल से ही मरने को तैयार हूँ। जिज्ञासा से मरने को तैयार... वो डॉक्टर कल हमारे साथ थे और उन्होंने लीज़ को देखा... मैंने उन्हें मुलाक़ात के लिए पचास रूबल दिए। लेकिन बात ये नहीं है, बात ये नहीं है। देखिए, मैं सब कुछ गड़बड़ कर रही हूँ। मैं मुझे इतनी जल्दी क्यों है? समझ नहीं आ रहा। ये कितना बुरा है कि मुझे कुछ भी समझ नहीं आ रहा। सब कुछ उलझा हुआ सा लग रहा है। मुझे डर है कि तुम इतनी ऊब गई हो कि उठकर भाग जाओगी, और फिर मैं तुम्हें देख ही नहीं पाऊँगी। हे भगवान! हम यहाँ बैठे हैं और कॉफी भी नहीं है? यूलिया, ग्लाफिरा, कॉफी लाओ!
अलियोशा ने जल्दी से उसे धन्यवाद दिया और कहा कि वह अभी-अभी

कॉफी।
"कहाँ?"
“अग्रफ़ेना अलेक्सांद्रोव्ना के यहाँ।”
“उस औरत के यहाँ? आह, उसी ने तो सबका विनाश किया है।
मुझे इसके बारे में कुछ नहीं पता। लोग कहते हैं कि वह संत बन गई हैं, हालांकि अब बहुत देर हो चुकी है। उन्हें पहले ही ऐसा कर लेना चाहिए था। अब इसका क्या फायदा? चुप रहो, चुप रहो, एलेक्सी फ्योदोरोविच, क्योंकि मुझे तुमसे इतना कुछ कहना है कि मुझे डर है कि मैं तुम्हें कुछ भी नहीं बता पाऊँगी। यह भयानक मुकदमा... मैं ज़रूर जाऊँगी, मैं इंतज़ाम कर रही हूँ। मुझे मेरी कुर्सी पर बिठाकर ले जाया जाएगा; वैसे भी मैं बैठ सकती हूँ। मेरे साथ लोग होंगे। और, तुम्हें पता है, मैं गवाह हूँ। मैं कैसे बोलूँ, कैसे बोलूँ? मुझे नहीं पता कि मैं क्या कहूँगी। शपथ तो लेनी ही पड़ती है, है ना?
“हां; लेकिन मुझे नहीं लगता कि आप जा पाएंगे।”
मैं उठकर बैठ सकता हूँ। आह, तुमने मुझे बेहोश कर दिया! आह! यह मुकदमा, यह बर्बर कृत्य, और फिर वे सब साइबेरिया जा रहे हैं, कुछ की शादी हो रही है, और यह सब इतनी जल्दी, इतनी जल्दी, सब कुछ बदल रहा है, और अंत में—कुछ नहीं। सब बूढ़े हो जाते हैं और मौत का सामना करना पड़ता है। खैर, जो होगा सो होगा! मैं थक गया हूँ। इस कात्या, इस प्यारी सी लड़की ने मेरी सारी उम्मीदें तोड़ दी हैं। अब वह तुम्हारे एक भाई के पीछे साइबेरिया जा रही है, और तुम्हारा दूसरा भाई भी उसके पीछे जाएगा, और पास के शहर में रहेंगे, और वे सब एक-दूसरे को सताएंगे। मेरा दिमाग खराब हो रहा है। सबसे बुरा तो—इसकी पब्लिसिटी है। यह कहानी मॉस्को और पीटर्सबर्ग के सभी अखबारों में लाखों बार छप चुकी है। आह! हाँ, यकीन मानिए, एक पैराग्राफ में लिखा है कि मैं तुम्हारे भाई का 'प्यारा दोस्त' था—, मैं वह घिनौना शब्द दोहरा नहीं सकता। सोचो ज़रा, सोचो ज़रा!
“असंभव! वो पैराग्राफ कहाँ था? उसमें क्या लिखा था?”
मैं आपको सीधे दिखाऊंगा। मुझे कल अखबार मिला और मैंने उसे पढ़ा। यहाँ,
पीटर्सबर्ग का अखबार 'गॉसिप'। यह अखबार इसी साल छपना शुरू हुआ है। मुझे गपशप बहुत पसंद है, मैं इसे पढ़ता हूँ, और अब इससे मुझे फायदा हो रहा है—गॉसिप का यही हाल है! लीजिए, यह अंश। इसे पढ़िए।
और उसने अलेयोशा को अखबार का एक पन्ना दिया जो नीचे दबा हुआ था।
उसका तकिया।
ऐसा नहीं था कि वह परेशान थी, बल्कि वह अभिभूत लग रही थी, और
शायद उसके दिमाग में सब कुछ सचमुच उलझ गया था। वह पैराग्राफ बहुत ही सामान्य था, और उसके लिए बहुत बड़ा झटका रहा होगा, लेकिन शायद सौभाग्य से, उस समय वह किसी एक विषय पर ध्यान केंद्रित नहीं कर पा रही थी, और इसलिए हो सकता है कि एक मिनट में ही उसका ध्यान किसी और चीज़ पर चला जाए और वह अखबार को पूरी तरह भूल जाए।
अलियोशा को अच्छी तरह पता था कि उस भयानक घटना की कहानी हर जगह फैल चुकी थी।
रूस के ऊपर। और, हे भगवान! उन दो महीनों के दौरान उन्होंने अपने भाई, करामाज़ोव परिवार और खुद के बारे में कितनी ही बेबुनियाद अफवाहें पढ़ी थीं, और भी कई विश्वसनीय खबरें थीं! एक अखबार ने तो यहाँ तक कह दिया था कि अपने भाई के अपराध से भयभीत होकर वे एक मठ में जाकर भिक्षु बन गए थे। दूसरे ने इसका खंडन करते हुए कहा कि उन्होंने और उनके बड़े, फादर ज़ोसिमा ने मठ के संदूक में सेंध लगाई और "मठ से भाग गए"। गॉसिप अखबार में यह पैराग्राफ "स्कोटोप्रिगोन्येव्स्क में करामाज़ोव मामला" शीर्षक के अंतर्गत था। (अफ़सोस! यही हमारे छोटे से कस्बे का नाम था। मैंने इसे अब तक छुपा रखा था।) यह संक्षिप्त था, और इसमें मैडम होहलाकोव का सीधे तौर पर कोई ज़िक्र नहीं था। वास्तव में, किसी का नाम भी नहीं आया था। इसमें बस इतना ही कहा गया था कि वह अपराधी, जिसका आगामी मुकदमा सनसनीखेज बना हुआ था—सेवानिवृत्त सेना कप्तान, एक निकम्मा और अभिमानी व्यक्ति—लगातार प्रेम प्रसंगों में लिप्त रहता था और विशेष रूप से कुछ ऐसी महिलाओं के बीच लोकप्रिय था जो "अकेलेपन में तड़प रही थीं।" ऐसी ही एक महिला, एक विधवा, जो अपनी वयस्क बेटी होने के बावजूद जवान दिखने की कोशिश करती थी, उससे इतनी मोहित थी कि अपराध से केवल दो घंटे पहले उसने उसे तीन हजार रूबल की पेशकश की, इस शर्त पर कि वह उसके साथ सोने की खानों में भाग जाए। लेकिन अपराधी, सजा से बचने की उम्मीद में, अपनी

तड़पती प्रेमिका के साथ साइबेरिया जाने के बजाय तीन हजार रूबल पाने के लिए अपने पिता की हत्या करना बेहतर समझा। यह मजाकिया अनुच्छेद, निश्चित रूप से, पितृहत्या की बुराई और हाल ही में समाप्त की गई दास प्रथा पर भारी आक्रोश के साथ समाप्त हुआ। उत्सुकता से इसे पढ़ते हुए, अलेयोशा ने कागज को मोड़कर मैडम होहलाकोव को वापस दे दिया।
“खैर, यह तो मैं ही हूँगी,” वह फिर जल्दी से बोली। “बेशक, मुझे ही होना चाहिए।”
एक घंटे पहले ही मैंने उसे सोने की खानों का सुझाव दिया था, और यहाँ वे 'मध्यम आयु के आकर्षण' की बात ऐसे कर रहे हैं मानो यही मेरा मकसद हो! वह यह सब द्वेषवश लिख रहा है! सर्वशक्तिमान ईश्वर उसे उसके मध्यम आयु के आकर्षण के लिए क्षमा करे, जैसे मैं उसे क्षमा करता हूँ! तुम जानते हो कि यह कौन है? क्या तुम जानते हो कि यह कौन है? यह तुम्हारा दोस्त रकितिन है।
“शायद,” अलेयोशा ने कहा, “हालांकि मैंने इसके बारे में कुछ नहीं सुना है।”
“यह वही है, यह वही है! इसमें कोई शक नहीं। आप जानते हैं कि मैंने ही उसे वहाँ से निकाला था।”
घर... आपको तो यह सारी कहानी पता ही है, है ना?
मुझे पता है कि आपने उनसे भविष्य में आपसे मिलने न आने के लिए कहा था, लेकिन ऐसा क्यों?
मैंने आपसे तो कम से कम कुछ नहीं सुना है।
“अरे, तो तुमने ये बात उससे ही सुनी है! लगता है वो मुझे गाली देता है, गाली देता है।”
मुझे बुरी तरह से?
“हाँ, वह करता है; लेकिन फिर वह सबका अपमान करता है। लेकिन तुमने उसे यह क्यों दिया है?
मुझे भी उससे कोई खबर नहीं मिली है। सच कहूं तो अब उससे मिलना बहुत ही कम होता है। हम दोस्त नहीं हैं।
“अच्छा, तो मैं आपको इसके बारे में सब कुछ बताता हूँ। मैं स्वीकार करता हूँ कि इसका कोई उपाय नहीं है।” क्योंकि एक बात है जिसमें शायद मेरी गलती थी। बस एक छोटी सी बात, इतनी छोटी कि शायद मायने ही न रखती हो। देखो, मेरे प्यारे बेटे”— मैडम होहलाकोव अचानक चिढ़ गईं और उनके होठों पर एक मनमोहक, हालांकि रहस्यमयी, मुस्कान खिल उठी—“देखो, मुझे शक है... तुम्हें मुझे माफ करना होगा, अलेयोशा। मैं तुम्हारे लिए माँ जैसी हूँ... नहीं, नहीं; बिलकुल इसके विपरीत। मैं तुमसे अभी ऐसे बात कर रही हूँ जैसे तुम मेरे पिता हो—माँ कहना तो बिलकुल बेमानी है। खैर, ऐसा लग रहा है जैसे मैं फादर ज़ोस्सिमा के सामने कबूलनामा कर रही हूँ, बस यही बात है। मैंने अभी तुम्हें साधु कहा। खैर, वह बेचारा नौजवान, तुम्हारा दोस्त, रकितिन (हम पर दया करो! मैं उस पर गुस्सा नहीं कर सकती। मुझे गुस्सा आ रहा है, लेकिन बहुत ज्यादा नहीं), वह चंचल नौजवान, यकीन मानो, लगता है उसे मुझसे प्यार हो गया है। मुझे तो बाद में ही पता चला। शुरुआत में—एक महीने पहले—वह मुझसे मिलने अक्सर आने लगा, लगभग हर दिन; हालाँकि, हम पहले से ही एक-दूसरे को जानते थे। मुझे इसके बारे में कुछ पता नहीं था... और अचानक मुझे एहसास हुआ, और मैं चीजों को हैरानी से देखने लगी। तुम्हें पता है, दो महीने पहले, वह विनम्र, आकर्षक, उत्कृष्ट युवक, प्योत्र इल्यिच पेरहोतिन, जो यहाँ काम करता है, घर पर नियमित रूप से आने लगा। तुम भी उससे यहाँ कई बार मिल चुकी हो। और वह एक उत्कृष्ट, मेहनती युवक है, है ना? वह हर तीन दिन में एक बार आता है, हर दिन नहीं (हालाँकि मुझे उसे हर दिन देखकर खुशी होगी), और हमेशा बहुत अच्छे कपड़े पहने रहता है। कुल मिलाकर, मुझे युवा लोग पसंद हैं, अलेयोशा, प्रतिभाशाली, विनम्र, तुम्हारी तरह, और उसमें लगभग एक राजनेता की बुद्धि है, वह इतनी आकर्षक ढंग से बात करता है, और मैं निश्चित रूप से, निश्चित रूप से उसके लिए पदोन्नति दिलाने की कोशिश करूँगी। वह भविष्य का राजनयिक है। उस भयानक दिन उसने रात में आकर मुझे लगभग मौत से बचा लिया था। और तुम्हारा दोस्त रकितिन ऐसे बूट पहनकर आता है, और हमेशा उन्हें कालीन पर फैलाकर रखता है... असल में, वो अपने दिल की बात इशारों में कहने लगा था, और एक दिन जाते-जाते उसने मेरा हाथ ज़ोर से दबा दिया। उसके ऐसा करने के तुरंत बाद मेरा पैर सूजने लगा। वो यहाँ पहले भी प्योत्र इल्यिच से मिल चुका था, और यकीन मानो, वो हमेशा उसे ताने मारता रहता है, किसी वजह से उस पर गुर्राता रहता है। मैं बस उन दोनों को साथ चलते हुए देखता रहा और मन ही मन हँसता रहा। तो मैं यहाँ अकेला बैठा था—नहीं, मैं बीमार पड़ा था। खैर, मैं यहाँ अकेला लेटा था और अचानक रकितिन आया, और सोचो! मेरे लिए अपनी लिखी कुछ कविताएँ लाया—एक छोटी सी कविता, मेरे खराब पैर पर: मतलब, उसने कविता में मेरे पैर का वर्णन किया। एक मिनट रुको—कैसी थी वो?

‘एक मनमोहक छोटा सा पैर।’
बात कुछ ऐसे ही शुरू हुई। मुझे कविताएँ कभी याद नहीं रहतीं। मेरे पास ये यहाँ है। मैं तुम्हें बाद में दिखाऊँगा। पर ये बहुत प्यारी है—सचमुच; और, तुम्हें पता है, ये सिर्फ़ पैर के बारे में नहीं है, इसमें एक अच्छा नैतिक संदेश भी है, एक प्यारा विचार, बस मैं भूल गया हूँ; असल में, ये किसी एल्बम के लिए एकदम सही थी। तो, ज़ाहिर है, मैंने उन्हें धन्यवाद दिया, और वो साफ़ तौर पर खुश हुए। मैंने मुश्किल से ही उन्हें धन्यवाद दिया था कि प्योत्र इल्यिच आ गए, और रकितिन अचानक रात की तरह काले पड़ गए। मैं समझ गया था कि प्योत्र इल्यिच बीच में आ रहे हैं, क्योंकि रकितिन मुझे कविताएँ देने के बाद कुछ कहना चाहते थे। मुझे इसका पूर्वाभास हो गया था; लेकिन प्योत्र इल्यिच आ गए। मैंने प्योत्र इल्यिच को कविताएँ दिखाईं और लेखक का नाम नहीं बताया। लेकिन मुझे यकीन है कि उन्होंने अंदाज़ा लगा लिया होगा, हालाँकि वो आज तक इसे स्वीकार नहीं करते, और कहते हैं कि उन्हें कोई अंदाज़ा नहीं था। लेकिन वो जानबूझकर ऐसा कहते हैं। प्योत्र इल्यिच तुरंत हंसने लगे और उसकी आलोचना करने लगे। उन्होंने कहा, 'बेहद घटिया कविताएं हैं, किसी धर्मशास्त्र के विद्यार्थी ने लिखी होंगी,' और बड़े ही उग्र ढंग से! फिर हंसने के बजाय, आपका मित्र क्रोधित हो उठा। मैंने सोचा, 'हे भगवान! ये तो आपस में ही भिड़ जाएंगे।' उन्होंने कहा, 'मैंने ही इन्हें लिखा है। मैंने इन्हें मजाक के तौर पर लिखा था, क्योंकि मुझे कविताएं लिखना अपमानजनक लगता है... लेकिन ये अच्छी कविताएं हैं। वे तुम्हारे पुश्किन के लिए स्मारक बनाना चाहते हैं क्योंकि उसने महिलाओं के पैरों के बारे में लिखा है, जबकि मैंने नैतिक उद्देश्य से लिखा है, और तुम,' उन्होंने कहा, 'दास प्रथा के समर्थक हो। तुम्हारे पास कोई मानवीय विचार नहीं हैं,' उन्होंने कहा। 'तुम्हारे पास आधुनिक प्रबुद्ध भावनाएं नहीं हैं, तुम प्रगति से अप्रभावित हो, तुम सिर्फ एक अधिकारी हो,' उन्होंने कहा, 'और तुम रिश्वत लेते हो।' तब मैं चीखने और उनसे विनती करने लगा। और, आप जानते हैं, प्योत्र इल्यिच कायर बिल्कुल नहीं थे। उन्होंने तुरंत ही अत्यंत शालीन लहजा अपनाया, व्यंग्य भरी निगाहों से उसकी ओर देखा, सुना और माफी मांगी। उन्होंने कहा, 'मुझे बिल्कुल अंदाजा नहीं था। अगर मुझे पता होता तो मैं ऐसा नहीं कहता। मैं तो उसकी प्रशंसा करता। कवि तो सब इतने चिड़चिड़े होते हैं।' संक्षेप में, उन्होंने अत्यंत शालीन लहजे की आड़ में उस पर हंस दिया। बाद में उन्होंने मुझे समझाया कि यह सब व्यंग्य था। मुझे लगा कि वह सच कह रहे हैं। लेकिन जब मैं वहां लेटा हुआ था, ठीक वैसे ही जैसे अब आपके सामने, मैं सोच रहा था, 'क्या मेरे लिए रकितिन को घर से बाहर निकाल देना उचित होगा, क्योंकि उसने मेरे घर आए मेहमान पर इतनी बदतमीजी से चिल्लाया?' और, आप विश्वास करेंगे, मैं यहां लेटा रहा, आंखें बंद कीं और सोचता रहा कि क्या यह उचित होगा या नहीं। मैं लगातार चिंता करता रहा, मेरा दिल ज़ोर से धड़कने लगा और मैं तय नहीं कर पा रहा था कि शोर मचाऊं या नहीं। एक आवाज़ मुझे कह रही थी, 'बोलो,' और दूसरी 'नहीं, मत बोलो।' और दूसरी आवाज़ के ऐसा कहते ही मैं चीख पड़ी और बेहोश हो गई। ज़ाहिर है, हंगामा मच गया। मैं अचानक उठी और राकितिन से कहा, 'यह कहना मेरे लिए दर्दनाक है, लेकिन मैं तुम्हें अपने घर में दोबारा नहीं देखना चाहती।' तो मैंने उसे बाहर निकाल दिया। आह! एलेक्सी फ्योदोरोविच, मैं जानती हूँ मैंने गलती की। मैं नाटक कर रही थी। मैं उससे बिल्कुल भी नाराज़ नहीं थी, सच में; लेकिन अचानक मुझे लगा—बस यही बात थी—कि यह एक शानदार दृश्य होगा... और फिर भी, यकीन मानिए, यह बिल्कुल स्वाभाविक था, क्योंकि मैं सचमुच कई दिनों तक रोती रही, और फिर अचानक, एक दोपहर, मैं सब कुछ भूल गई। तो उसे यहाँ आए हुए दो हफ्ते हो गए हैं, और मैं सोचती रही कि क्या वह फिर आएगा। मैंने कल भी यही सोचा, फिर अचानक कल रात यह गॉसिप आई। मैंने इसे पढ़ा और चौंक गई। इसे किसने लिखा होगा? ज़रूर उसी ने लिखा होगा। वो घर गया, बैठ गया, वहीं पर लिख डाला, भेज दिया, और उन्होंने उसे शामिल कर लिया। ये दो हफ्ते पहले की बात है। लेकिन, अलेयोशा, ये कितना बुरा है कि मैं बोलती ही रहती हूँ और जो कहना चाहती हूँ वो कह ही नहीं पाती। आह! शब्द अपने आप निकल आते हैं!
"आज समय पर अपने भाई से मिलना मेरे लिए बहुत महत्वपूर्ण है।"
अलोशा लड़खड़ा गया।
“बिल्कुल, बिल्कुल! तुम मुझे सब याद दिला दो। सुनो, यह क्या है?”
विसंगति?
“कैसी विसंगति?” अलेयोशा ने आश्चर्य से पूछा। “कानूनी अर्थ में। एक ऐसी विसंगति जिसमें सब कुछ क्षमा योग्य है।”
आप जो भी करें, आपको तुरंत बरी कर दिया जाएगा।

"आपका क्या मतलब है?"
मैं आपको बताता हूँ। यह कात्या... आह! वह एक बहुत ही आकर्षक प्राणी है।
मुझे समझ ही नहीं आता कि वो किससे प्यार करती है। कुछ समय पहले वो मेरे साथ थी और मैं उससे कुछ भी नहीं जान पाया। खासकर अब तो वो मुझसे सिर्फ ऊपरी बातें ही करती है। वो हमेशा मेरी सेहत के बारे में ही बात करती है, और मुझसे भी उसी लहजे में बात करती है। मैंने मन ही मन कहा, 'ठीक है, जो होगा देखा जाएगा। मुझे परवाह नहीं।'... ओह, हाँ। मैं विकृति की बात कर रहा था। एक डॉक्टर आया है। तुम्हें पता है डॉक्टर आया है? बिल्कुल, तुम्हें पता होगा - पागलों का पता लगाने वाला डॉक्टर। तुमने उसके लिए लिखा था। नहीं, तुमने नहीं, कात्या ने लिखा था। ये सब कात्या का किया-धरा है। देखो, एक आदमी बिल्कुल स्वस्थ बैठा हो सकता है और अचानक उसमें विकृति आ सकती है। वो होश में हो सकता है और जानता हो कि वो क्या कर रहा है, फिर भी विकृति की स्थिति में हो सकता है। और इसमें कोई शक नहीं कि दिमित्री फ्योदोरोविच विकृति से पीड़ित थे। कानून अदालतों में सुधार होते ही उन्हें विकृति के बारे में पता चल गया था। यह सब अदालतों में हुए सुधारों का अच्छा नतीजा है। डॉक्टर यहाँ आए थे और उन्होंने मुझसे उस शाम के बारे में, सोने की खानों के बारे में पूछताछ की। उन्होंने मुझसे पूछा, 'वह उस समय कैसा लग रहा था?' वह ज़रूर किसी मानसिक विकार में रहा होगा। वह चिल्लाते हुए आया, 'पैसा, पैसा, तीन हज़ार! मुझे तीन हज़ार दो!' और फिर जाकर उसने तुरंत हत्या कर दी। उसने कहा, 'मैं उसकी हत्या नहीं करना चाहता,' और अचानक जाकर उसने उसकी हत्या कर दी। इसीलिए उसे बरी कर दिया जाएगा, क्योंकि उसने इसका विरोध किया और फिर भी उसने उसकी हत्या कर दी।
“लेकिन उसने उसकी हत्या नहीं की,” अलेयोशा ने तीखे स्वर में बीच में ही टोकते हुए कहा। उसे ऐसा महसूस हुआ।
चिंता और अधीरता से और भी अधिक बीमार होते जा रहे हैं।
"हां, मुझे पता है कि उस बूढ़े ग्रिगरी ने ही उसकी हत्या की थी।"
“ग्रिगोरी?” अलेयोशा चिल्लाया।
“हाँ, हाँ; वह ग्रिगोरी था। दिमित्री फ्योदोरोविच के प्रहार के दौरान वह वहीं पड़ा रहा।
वह नीचे गिरा, फिर उठा, देखा कि दरवाजा खुला है, अंदर गया और फ्योदोर पावलोविच को मार डाला।
लेकिन क्यों, क्यों?
“विकृति से पीड़ित। दिमित्री फ्योदोरोविच द्वारा सिर पर किए गए प्रहार से उबरने के बाद, वह विकृति से पीड़ित था; उसने जाकर हत्या कर दी। जहाँ तक उसके यह कहने की बात है कि उसने ऐसा नहीं किया, तो संभवतः उसे याद ही नहीं है। लेकिन, आप जानते हैं, यह बेहतर होगा, बहुत बेहतर होगा, अगर दिमित्री फ्योदोरोविच ने उसकी हत्या की हो। और ऐसा ही हुआ होगा, हालाँकि मैं कहता हूँ कि यह ग्रिगोरी ने किया था। यह निश्चित रूप से दिमित्री फ्योदोरोविच ने ही किया था, और यह बेहतर है, बहुत बेहतर! ओह, यह बेहतर नहीं है कि एक बेटे ने अपने पिता की हत्या की हो, मैं इसका बचाव नहीं करता। बच्चों को अपने माता-पिता का सम्मान करना चाहिए, और फिर भी यह बेहतर होता अगर यह उसने किया होता, क्योंकि तब आपके पास रोने के लिए कुछ नहीं होता, क्योंकि उसने यह तब किया जब वह बेहोश था या यूँ कहें कि जब वह होश में था, लेकिन उसे पता नहीं था कि वह क्या कर रहा है। उन्हें उसे बरी कर देना चाहिए—यह कितना मानवीय है, और यह दिखाएगा कि सुधारित कानून अदालतें कितनी वरदान हैं। मुझे इसके बारे में कुछ नहीं पता था, लेकिन वे कहते हैं कि वे इतने बहुत समय हो गया। और जब मैंने कल यह सुना, तो मैं इतना प्रभावित हुआ कि मैंने तुम्हें तुरंत बुलवाना चाहा। और अगर वह बरी हो जाता है, तो उसे सीधे अदालतों से मेरे साथ रात के खाने पर बुला लेना, और मैं दोस्तों की एक पार्टी रखूंगा, और हम सुधरी हुई अदालतों के लिए जश्न मनाएंगे। मुझे नहीं लगता कि वह खतरनाक होगा; इसके अलावा, मैं बहुत सारे दोस्तों को आमंत्रित करूंगा, ताकि अगर उसने कुछ किया तो उसे आसानी से पकड़ा जा सके। और फिर उसे किसी दूसरे शहर में शांति न्यायाधीश या कुछ और बना दिया जा सकता है, क्योंकि जो लोग खुद मुसीबत में पड़ चुके होते हैं, वे सबसे अच्छे न्यायाधीश बनते हैं। और, इसके अलावा, आजकल कौन विक्षिप्तता से पीड़ित नहीं है?—तुम, मैं, हम सब विक्षिप्तता की स्थिति में हैं, और इसके अनगिनत उदाहरण हैं: एक आदमी गाना गा रहा होता है, अचानक उसे कुछ परेशान करता है, वह पिस्तौल उठाता है और सामने आने वाले पहले व्यक्ति को गोली मार देता है, और कोई उसे इसके लिए दोषी नहीं ठहराता। मैंने यह हाल ही में पढ़ा था, और सभी डॉक्टर

इसकी पुष्टि करते हैं। डॉक्टर हमेशा पुष्टि करते रहते हैं; वे किसी भी बात की पुष्टि कर देते हैं। अरे, मेरी लिज़ तो... वह एक अजीब सी मानसिक स्थिति में है। उसने कल फिर मुझे रुला दिया, परसों भी, और आज अचानक मुझे एहसास हुआ कि यह सब उसकी मानसिक स्थिति के कारण है। ओह, लीज़ मुझे कितना दुखी करती है! मुझे लगता है कि वह बिल्कुल पागल है। उसने तुम्हें क्यों बुलवाया? क्या उसने तुम्हें बुलवाया था या तुम खुद आए थे?
“हां, उन्होंने मुझे बुलवाया है, और मैं अभी उनके पास जा रहा हूँ।” अलेयोशा उठ खड़ा हुआ।
दृढ़तापूर्वक।
"ओह, मेरे प्यारे एलेक्सी फ्योदोरोविच, शायद यही सबसे महत्वपूर्ण बात है।"
“बहुत ज़रूरी है,” मैडम होहलाकोव अचानक रोते हुए बोलीं। “भगवान जानता है कि मैं लीज़ को पूरे दिल से आपके भरोसे छोड़ती हूँ, और चाहे वो चुपके से अपनी माँ को बताए बिना आपको बुला ले, कोई बात नहीं। लेकिन मुझे माफ़ कर दीजिए, मैं अपनी बेटी को आपके भाई इवान फ्योदोरोविच के भरोसे इतनी आसानी से नहीं छोड़ सकती, हालाँकि मैं अब भी उन्हें सबसे नेक नौजवान मानती हूँ। लेकिन सोचिए, वो लीज़ से मिलने गए थे और मुझे पता भी नहीं चला!”
“कैसे? क्या? कब?” अलेयोशा बेहद हैरान था। उसने ऐसा कभी नहीं देखा था।
फिर से बैठ गया और खड़े होकर सुनने लगा।
मैं आपको बताऊंगा; शायद इसीलिए मैंने आपको आने के लिए कहा था, क्योंकि मैं नहीं
अब समझ गए होंगे कि मैंने आपको क्यों बुलाया था। दरअसल, इवान फ्योदोरोविच मॉस्को से लौटने के बाद मुझसे दो बार मिलने आए हैं। पहली बार वे एक दोस्त के रूप में मुझसे मिलने आए थे, और दूसरी बार कात्या यहाँ थी और वे इसलिए आए क्योंकि उन्होंने सुना था कि वह यहाँ है। ज़ाहिर है, मुझे उनसे बार-बार आने की उम्मीद नहीं थी, क्योंकि मुझे पता है कि उनके पास पहले से ही कितना काम है। लेकिन अचानक मुझे पता चला कि वे फिर से यहाँ आए थे, मुझसे मिलने नहीं बल्कि लीज़ से मिलने। अब से छह दिन पहले की बात है। वे आए, पाँच मिनट रुके और चले गए। और मुझे इसके बारे में तीन दिन बाद ग्लाफिरा से पता चला, इसलिए यह मेरे लिए बहुत बड़ा झटका था। मैंने तुरंत लीज़ को बुलवाया। वह हँसी। उसने कहा, 'उन्हें लगा कि आप सो रहे हैं, और वे मेरी सेहत के बारे में पूछने आए।' ज़ाहिर है, ऐसा ही हुआ था। लेकिन लीज़, लीज़, हे भगवान, वह मुझे कितना परेशान करती है! क्या आप विश्वास करेंगे, चार दिन पहले, एक रात, जब आपने उसे आखिरी बार देखा था और आप चले गए थे, अचानक उसे दौरा पड़ा, चीखने-चिल्लाने लगी, वह हिस्टीरिया से पीड़ित हो गई! मुझे तो कभी हिस्टीरिया क्यों नहीं होता? फिर अगले दिन उसे फिर दौरा पड़ा, और तीसरे दिन भी वही हुआ, और कल भी, और फिर कल वह अजीब घटना हुई। वह अचानक चिल्लाई, 'मैं इवान फ्योदोरोविच से नफरत करती हूँ। मैं चाहती हूँ कि आप उसे फिर कभी घर न आने दें।' मैं इन चौंकाने वाले शब्दों को सुनकर अवाक रह गया, और मैंने जवाब दिया, 'मैं ऐसे उत्कृष्ट, इतने विद्वान और इतने दुर्भाग्यशाली युवक से मिलने से कैसे इनकार कर सकता हूँ?' - क्योंकि यह सब दुर्भाग्य ही तो है, है ना? वह अचानक मेरी बात सुनकर जोर से हंस पड़ी, और बहुत ही अशिष्टता से, आप जानते हैं। खैर, मुझे खुशी हुई; मैंने सोचा कि मैंने उसका मनोरंजन कर दिया है और दौरे बंद हो जाएंगे, खासकर इसलिए क्योंकि मैं वैसे भी इवान फ्योदोरोविच से मिलने से इनकार करना चाहता था, क्योंकि वह मेरी जानकारी के बिना अजीबोगरीब बार-बार आता था, और मैं उससे इसका स्पष्टीकरण माँगने वाला था। लेकिन आज सुबह-सुबह लीज़ उठी और युलिया पर भड़क उठी, और यकीन मानिए, उसने युलिया के चेहरे पर थप्पड़ मार दिया। यह तो घिनौना है; मैं तो हमेशा अपने नौकरों के साथ विनम्रता से पेश आती हूँ। और एक घंटे बाद वह युलिया के पैर चूम रही थी। उसने मुझे संदेश भेजा कि वह अब मेरे पास बिल्कुल नहीं आएगी, और कभी मुझसे मिलने नहीं आएगी। जब मैं घसीटते हुए उसके पास गई, तो वह रोते हुए मुझे चूमने दौड़ी, और चूमते ही उसने बिना कुछ कहे मुझे कमरे से बाहर धकेल दिया, इसलिए मैं पता नहीं लगा पाई कि क्या हुआ था। अब, प्रिय एलेक्सी फ्योदोरोविच, मेरी सारी उम्मीदें आप पर टिकी हैं, और बेशक, मेरा पूरा जीवन आपके हाथों में है। मैं आपसे बस यही विनती करती हूँ कि आप लीज़ के पास जाइए और उससे सब कुछ पता कीजिए, क्योंकि केवल आप ही कर सकते हैं, और वापस आकर मुझे बताइए—मुझे, उसकी माँ को, क्योंकि आप समझते हैं कि अगर ऐसा ही चलता रहा तो यह मेरे लिए मौत के समान होगा, बस मेरी मौत के समान, वरना मैं भाग जाऊँगी। मैं अब और बर्दाश्त नहीं कर सकती। मुझमें धैर्य है; लेकिन मेरा सब्र टूट सकता है, और फिर... फिर कुछ भयानक हो जाएगा। अरे बाप रे!

आख़िरकार, प्योत्र इल्यिच! मैडम होहलाकोव ने पेरहोतिन को कमरे में आते देख खुशी से चिल्लाते हुए कहा। "आप देर से आए हैं, आप देर से आए हैं! चलिए, बैठिए, बोलिए, हमें सस्पेंस से बाहर निकालिए। परिषद क्या कहती है? आप कहाँ जा रहे हैं, एलेक्सी फ्योदोरोविच?"
"लिसे को।"
“ओह, हाँ। आप भूलेंगे नहीं, आप भूलेंगे नहीं कि मैंने आपसे क्या पूछा था? यह एक
जीवन और मृत्यु का प्रश्न!
“बेशक, मैं नहीं भूलूंगा, अगर मैं भूल सकता हूँ... लेकिन मुझे बहुत देर हो चुकी है,” बुदबुदाते हुए कहा।
अलोशा तेजी से पीछे हट गया।
नहीं, ज़रूर आइए, ज़रूर आइए; यह मत कहिए कि ‘अगर आप आ सकते हैं’। अगर आप नहीं आए तो मैं मर जाऊँगा।
“नहीं,” मैडम होहलाकोव ने उसके पीछे से आवाज़ लगाई, लेकिन अलेयोशा पहले ही कमरे से निकल चुका था।

अध्याय 3

एक छोटा शैतान

लीज़ के पास जाकर उसने देखा कि वह उस कुर्सी पर आधी लेटी हुई थी, जिस पर उसे तब बिठाया जाता था जब वह चलने में असमर्थ थी। वह उसकी ओर हिली नहीं, लेकिन उसकी पैनी, उत्सुक निगाहें बस उसके चेहरे पर टिकी हुई थीं। उसकी आँखों में बुखार का भाव था, उसका चेहरा पीला पड़ गया था। अलेयोशा तीन दिनों में उसमें आए बदलाव को देखकर चकित रह गया। वह सचमुच दुबली हो गई थी। उसने उसकी ओर हाथ नहीं बढ़ाया। उसने उसकी पोशाक पर पड़ी पतली, लंबी उंगलियों को छुआ, फिर बिना कुछ कहे उसके सामने बैठ गया।
“मुझे पता है कि आपको जेल जाने की जल्दी है,” लिज़ ने रूखेपन से कहा, “और
मम्मी ने तुम्हें वहां घंटों तक रोके रखा है; वो बस तुम्हें मेरे और यूलिया के बारे में बता रही थीं।
“तुम्हें कैसे पता?” अलेयोशा ने पूछा।
मैं सुन रहा हूँ। तुम मुझे क्यों घूर रहे हो? मैं सुनना चाहता हूँ और सुन भी रहा हूँ।
सुनो, इसमें कोई बुराई नहीं है। मैं माफी नहीं मांगता।
"क्या तुम किसी बात से परेशान हो?"
इसके विपरीत, मैं बहुत खुश हूँ। मैं अभी-अभी इस बारे में सोच-विचार कर रहा था।
तीसवीं बार, कितना अच्छा हुआ कि मैंने तुम्हें मना कर दिया और मैं तुम्हारी पत्नी नहीं बनूँगी। तुम पति बनने के लायक नहीं हो। अगर मैं तुमसे शादी कर लूँ और तुम्हें एक चिट्ठी दूँ जो तुम मेरे बाद मेरे प्रेमी को दे दो, तो तुम उसे ले जाओगे और उसे ज़रूर दोगे और जवाब भी लेकर आओगे। अगर तुम चालीस साल के भी हो जाओगे, तो भी मेरे लिए प्रेम पत्र ले जाते रहोगे।
वह अचानक हंस पड़ी।
“तुममें कुछ द्वेषपूर्ण और फिर भी खुले दिल का भाव है,” अलेयोशा ने कहा।
उसने उसकी ओर मुस्कुराया।

“खुले दिल का मतलब यही है कि मुझे अपने आप पर शर्म नहीं आती”
तुम। और तो और, मैं तुम्हारे साथ शर्म महसूस नहीं करना चाहता, सिर्फ तुम्हारे साथ। अलेयोशा, मैं तुम्हारा सम्मान क्यों नहीं करता? मैं तुम्हें बहुत पसंद करता हूँ, लेकिन तुम्हारा सम्मान नहीं करता। अगर मैं तुम्हारा सम्मान करता, तो मैं तुमसे बिना शर्म के बात नहीं करता, है ना?
"नहीं।"
लेकिन क्या आपको लगता है कि मुझे आपसे शर्म नहीं आती?
नहीं, मुझे इस पर विश्वास नहीं है।
लिसे फिर से घबराकर हंस पड़ी; वह तेजी से बोली, "मैंने तुम्हारे भाई दिमित्री फ्योदोरोविच को जेल में कुछ मिठाइयाँ भेजी हैं।"
अलेयोशा, तुम्हें पता है, तुम बहुत खूबसूरत हो! तुमने मुझे इतनी जल्दी तुमसे प्यार करना बंद करने की इजाजत क्यों दी, इसके लिए मैं तुमसे बहुत प्यार करूंगा।
"लीज़, तुमने आज मुझे क्यों बुलवाया?"
मैं आपको अपनी एक दिली तमन्ना के बारे में बताना चाहती थी। मैं चाहती हूँ कि कोई मुझसे बात करे। मुझे यातना दो, मुझसे शादी करो और फिर मुझे यातना दो, मुझे धोखा दो और चले जाओ। मैं खुश नहीं रहना चाहती।
"क्या आपको अव्यवस्था से प्यार है?"
“हाँ, मुझे अव्यवस्था चाहिए। मेरा मन करता है कि घर में आग लगा दूं।
मैं सोच रहा हूँ कि कैसे मैं चुपके से घर में आग लगा दूँगा; यह सब चुपके से ही करना होगा। वे आग बुझाने की कोशिश करेंगे, लेकिन वह जलती रहेगी। और मुझे पता भी चलेगा और मैं कुछ नहीं कहूँगा। आह, कितनी मूर्खता है! और मैं कितना ऊब गया हूँ!
उसने घृणा भरे भाव से हाथ हिलाया।
“ये तो तुम्हारी विलासितापूर्ण जीवनशैली है,” अलेयोशा ने धीमी आवाज़ में कहा। “तो क्या गरीब होना बेहतर है?”
“हां, यह बेहतर है।”
“यही तो तुम्हारे साधु ने तुम्हें सिखाया है। यह सच नहीं है। मुझे अमीर बनने दो और
बाकी सब गरीब हैं, मैं मिठाई खाऊंगी और मलाई पीऊंगी और किसी को कुछ नहीं दूंगी। आह, कुछ मत बोलो, कुछ मत कहो,” उसने अपना हाथ हिलाकर उससे कहा, हालांकि अलेयोशा ने अपना मुंह नहीं खोला था। “तुम मुझे ये सब पहले भी बता चुके हो, मुझे ये सब मुंह ज़बानी याद है। मुझे इससे ऊब होती है। अगर मैं कभी गरीब हुई, तो मैं किसी का खून कर दूंगी, और अगर मैं अमीर भी हुई, तो शायद मैं किसी का खून कर दूंगी—कुछ न करने का क्या फायदा! लेकिन क्या तुम जानते हो, मुझे फसल काटना, राई काटना अच्छा लगेगा? मैं तुमसे शादी करूंगी, और तुम किसान बन जाओगे, एक असली किसान; हम एक बछड़ा पालेंगे, ठीक है? क्या तुम कालगानोव को जानते हो?”
"हाँ।"
वह हमेशा इधर-उधर भटकता रहता है, सपने देखता रहता है। वह कहता है, 'वास्तविक दुनिया में क्यों जिएं?'
जीवन? सपने देखना बेहतर है। सपने में कितने सुखद पल देखे जा सकते हैं, लेकिन असल ज़िंदगी तो उबाऊ है। लेकिन फिर भी उसकी जल्द ही शादी होने वाली है; वो मुझसे पहले ही प्यार कर चुका है। क्या तुम लट्टू घुमा सकती हो?
"हाँ।"
"खैर, वह एक लट्टू की तरह है: उसे घुमाना और नचाना अच्छा लगता है।"
और फिर कोड़े से लगातार कोड़े मारे जाएँगे। अगर मैं उससे शादी कर लूँगी, तो मैं उसे पूरी ज़िंदगी कोड़े मारती रहूँगी। क्या तुम्हें मेरे साथ रहने में शर्म नहीं आती?
"नहीं।"
“तुम बहुत नाराज़ हो, क्योंकि मैं पवित्र बातों के बारे में बात नहीं करता। मैं नहीं करता।”

पवित्र बनना चाहते हैं। परलोक में सबसे बड़े पाप के लिए क्या किया जाएगा? आपको इसके बारे में सब कुछ जानना चाहिए।
“ईश्वर तुम्हें दंडित करेगा।” अलेयोशा उसे लगातार देख रहा था। “मैं यही तो चाहता हूँ। मैं ऊपर जाऊँगा और वे मुझे दंडित करेंगे।”
मैं, और मैं उनके सामने ही जोर से हंसने लगता। अलेयोशा, मेरा तो घर में आग लगाने का बहुत मन कर रहा है; तुम्हें अब भी यकीन नहीं हो रहा?
“क्यों? बारह साल के बच्चे भी हैं, जो अपने सपनों को पूरा करने की चाह रखते हैं।”
किसी चीज में आग लगने पर वे सचमुच चीजों में आग लगा देते हैं। यह एक तरह की बीमारी है।
“यह सच नहीं है, यह सच नहीं है; बच्चे हो सकते हैं, लेकिन यह सच नहीं है।”
मेरा क्या मतलब है।"
“तुम बुराई को अच्छाई समझ लेते हो; यह एक क्षणिक संकट है, यह तुम्हारे कर्मों का परिणाम है।”
शायद बीमारी हो।
“तुम मुझसे नफरत तो करते हो! बात बस इतनी सी है कि मैं अच्छा काम करना नहीं चाहता, मैं बुराई करने की इच्छा होती है, और इसका बीमारी से कोई लेना-देना नहीं है।"
“बुराई क्यों करें?”
ताकि सब कुछ नष्ट हो जाए। आह, कितना अच्छा होता अगर
सब कुछ तबाह हो गया! जानते हो, अलेयोशा, मैं कभी-कभी बहुत नुकसान और बुराई करने के बारे में सोचता हूँ, और मैं इसे लंबे समय तक चुपके से करता रहूँ और अचानक सबको पता चल जाए। सब मेरे चारों ओर खड़े होकर मुझ पर उंगली उठाएंगे और मैं उन सबको देखूंगा। यह बहुत अच्छा होगा। अलेयोशा, यह इतना अच्छा क्यों होगा?
मुझे नहीं पता। यह किसी अच्छी चीज को नष्ट करने की लालसा है या, जैसा कि आप कहते हैं, किसी चीज में आग लगाना। ऐसा कभी-कभी हो जाता है।
मैं न केवल यह कहता हूं, बल्कि मैं इसे करके भी दिखाऊंगा।
"मुझे आप पर विश्वास है।"
“आह, मुझे बहुत अच्छा लगा कि तुमने कहा कि तुम मुझ पर विश्वास करते हो। और तुम झूठ नहीं बोल रहे हो।”
थोड़ा सा। लेकिन शायद आपको लगता है कि मैं ये सब जानबूझकर आपको परेशान करने के लिए कह रहा हूँ?
नहीं, मुझे ऐसा नहीं लगता... हालाँकि शायद ऐसा करने की थोड़ी इच्छा हो।
वह भी इसमें शामिल है।
“थोड़ा सा है। मैं तुमसे कभी झूठ नहीं बोल सकती,” उसने कहा।
उसकी आँखों में एक अजीब सी चमक थी।
अलेयोशा को सबसे ज्यादा प्रभावित करने वाली बात उसकी लगन थी।
अब उनके चेहरे पर हास्य या मजाक का कोई निशान नहीं है, हालांकि पुराने दिनों में, उनके सबसे "गंभीर" क्षणों में भी मस्ती और उल्लास ने उन्हें कभी नहीं छोड़ा।
“ऐसे क्षण भी आते हैं जब लोग अपराध से प्यार करने लगते हैं,” अलेयोशा ने कहा।
सोच समजकर।
“जी हां! आपने बिल्कुल सही कहा; उन्हें अपराध करना पसंद है, सभी को।”
उन्हें अपराध से प्यार है, उन्हें हमेशा से प्यार रहा है, किसी खास 'क्षण' में नहीं। आप जानते हैं, ऐसा लगता है जैसे लोगों ने इसके बारे में झूठ बोलने का समझौता कर लिया है और तब से वे झूठ बोलते आ रहे हैं। वे सब कहते हैं कि उन्हें बुराई से नफरत है, लेकिन चुपके से वे सब इसे पसंद करते हैं।
"और क्या तुम अब भी गंदी किताबें पढ़ते हो?"
“हाँ, मैं हूँ। माँ उन्हें पढ़ती हैं और अपने तकिए के नीचे छिपा देती हैं और मैं
उन्हें चुरा लो।
"क्या तुम्हें खुद को बर्बाद करने में शर्म नहीं आती?"

“मैं खुद को नष्ट करना चाहता हूँ। यहाँ एक लड़का है, जो बीच में लेट गया।
जब ट्रेन गुजर रही थी तब वह रेल की पटरियों के पास था। किस्मत वाला! सुनो, तुम्हारे भाई पर अपने पिता की हत्या का मुकदमा चल रहा है और हर कोई उसे उसके पिता का हत्यारा होने के कारण पसंद करता है।
"क्या उसे अपने पिता की हत्या करने से प्यार है?"
“हाँ, सबको पसंद है; सबको पसंद है! सब कहते हैं कि यह बहुत बुरा है, लेकिन
वे छुपके से इसे बहुत पसंद करते हैं। मैं भी इसे बहुत पसंद करता हूँ।
“आप हर किसी के बारे में जो कहते हैं उसमें कुछ सच्चाई तो है ही,” अलेयोशा ने कहा।
नरमी से।
“अरे वाह, आपके पास तो क्या-क्या विचार हैं!” लिज़ खुशी से चिल्लाई। “और आप एक भिक्षु हैं,
वाह! अलेयोशा, तुम झूठ न बोलने के लिए मेरा कितना सम्मान करते हो, यह तुम नहीं जानते। ओह, मुझे तुम्हें अपना एक मज़ेदार सपना सुनाना है। मैं कभी-कभी शैतानों का सपना देखता हूँ। रात होती है; मैं अपने कमरे में मोमबत्ती जलाकर बैठा होता हूँ और अचानक चारों ओर, हर कोने में, मेज़ के नीचे शैतान दिखाई देते हैं, और वे दरवाज़े खोल देते हैं; दरवाज़ों के पीछे शैतानों की भीड़ होती है और वे आकर मुझे पकड़ना चाहते हैं। और वे बस आ ही रहे होते हैं, बस मुझे पकड़ने ही वाले होते हैं। लेकिन मैं अचानक अपने ऊपर क्रॉस का निशान बनाता हूँ और वे सब पीछे हट जाते हैं, हालाँकि वे पूरी तरह से गायब नहीं होते, वे दरवाज़ों और कोनों में खड़े होकर इंतज़ार करते रहते हैं। और अचानक मुझे ज़ोर से भगवान को गाली देने की ज़बरदस्त इच्छा होती है, और मैं शुरू कर देता हूँ, और फिर वे खुशी से मेरे पास वापस आते हैं, और मुझे फिर से पकड़ लेते हैं, और मैं फिर से अपने ऊपर क्रॉस का निशान बनाता हूँ और वे सब पीछे हट जाते हैं। यह बहुत ही मज़ेदार होता है। यह साँस रोक देने वाला होता है।
“मुझे भी वही सपना आया था,” अलेयोशा ने अचानक कहा। “सच में?” लीज़ ने हैरानी से कहा। “अलेयोशा, हंसो मत, यह...”
यह बेहद महत्वपूर्ण है। क्या दो अलग-अलग लोगों का सपना एक जैसा हो सकता है?
ऐसा लगता है कि वे ऐसा कर सकते हैं।
“एल्योशा, मैं तुमसे कहती हूँ, यह बहुत ज़रूरी है,” लिज़ ने सचमुच उत्साह से आगे कहा।
अत्यधिक आश्चर्य। “सपना महत्वपूर्ण नहीं है, महत्वपूर्ण यह है कि तुम भी वही सपना देख रहे हो जो मैं देख रहा हूँ। तुम मुझसे कभी झूठ नहीं बोलते, अब भी झूठ मत बोलो: क्या यह सच है? तुम हंस नहीं रहे हो?”
“यह सच है।”
लिज़ बेहद प्रभावित लग रही थी और आधे मिनट के लिए वह
चुपचाप।
“अलोशा, मुझसे मिलने आओ, मुझसे अक्सर मिलने आओ,” उसने कहा।
अचानक, विनती भरे स्वर में।
“मैं जीवन भर तुमसे मिलने आता रहूंगा,” अलेयोशा ने दृढ़ता से उत्तर दिया। “तुम ही एकमात्र व्यक्ति हो जिससे मैं बात कर सकती हूं,” लिसे ने फिर से कहना शुरू किया। “मैं
मैं सिर्फ तुमसे और अपने अलावा किसी से बात नहीं करता। पूरी दुनिया में सिर्फ तुमसे। और तुमसे मैं खुद से भी ज्यादा आसानी से बात करता हूँ। और मुझे तुमसे ज़रा भी शर्म नहीं है, ज़रा भी नहीं। अलेयोशा, मुझे तुमसे ज़रा भी शर्म क्यों नहीं है? अलेयोशा, क्या यह सच है कि ईस्टर पर यहूदी एक बच्चे को चुराकर मार डालते हैं?
"मुझें नहीं पता।"
“यहाँ एक किताब है जिसमें मैंने एक यहूदी के मुकदमे के बारे में पढ़ा, जिसने एक
उसने चार साल के बच्चे की दोनों उंगलियां काट दीं, फिर उसे दीवार पर सूली पर चढ़ा दिया, उसमें कीलें ठोक दीं और उसे लटकाए रखा। बाद में जब उस पर मुकदमा चला, तो उसने कहा कि बच्चा चार घंटे के भीतर ही मर गया। अरे वाह, कितनी जल्दी! उसने कहा कि बच्चा कराहता रहा, लगातार कराहता रहा और वह उसे निहारता रहा। वाह!
"अच्छा?"
“अच्छा; कभी-कभी मुझे लगता है कि मैंने ही उसे सूली पर चढ़ाया था। वह

वह वहीं कराहता रहता और मैं उसके सामने बैठकर अनानास का कंपोट खाती रहती। मुझे अनानास का कंपोट बहुत पसंद है। क्या आपको भी पसंद है?
अलेयोशा चुपचाप उसे देखती रही। उसका पीला, मुरझाया हुआ चेहरा अचानक बदल गया।
उसका चेहरा विकृत हो गया था, उसकी आँखें जल रही थीं।
“जब मैंने उस यहूदी के बारे में पढ़ा तो मैं पूरी रात सिसक-सिसक कर रोती रही।
मैं उस नन्ही बच्ची के रोने और कराहने के बारे में सोचती रही (चार साल का बच्चा समझता है ना?), और इस सब के बीच अनानास के कंपोट का ख्याल मेरे मन में घूमता रहा। सुबह मैंने एक खास व्यक्ति को चिट्ठी लिखी, उससे खास तौर पर मिलने आने की गुहार लगाई। वह आया और मैंने अचानक उसे उस बच्ची और अनानास के कंपोट के बारे में सब कुछ बता दिया। सब कुछ, सब कुछ, और कहा कि वह स्वादिष्ट था। वह हँसा और कहा कि वाकई स्वादिष्ट था। फिर वह उठा और चला गया। वह सिर्फ पाँच मिनट ही रुका। क्या उसने मुझे तुच्छ समझा? क्या उसने मुझे तुच्छ समझा? बताओ, बताओ, अलेयोशा, क्या उसने मुझे तुच्छ समझा या नहीं?” वह चमकती आँखों से सोफे पर बैठ गई।
“बताओ,” अलेयोशा ने चिंता से पूछा, “क्या तुमने उस व्यक्ति को बुलवाया था?”
"हाँ मैंने किया।"
क्या आपने उसे पत्र भेजा था?
"हाँ।"
"क्या सिर्फ उस बच्चे के बारे में पूछने के लिए?"
“नहीं, उस बारे में बिल्कुल नहीं। लेकिन जब वह आया, तो मैंने उससे उस बारे में पूछा था।
एक बार। उसने जवाब दिया, हँसा, उठा और चला गया।
“उस व्यक्ति ने सम्मानजनक व्यवहार किया,” अलेयोशा ने धीरे से कहा। “और क्या उसने मेरा अपमान किया? क्या वह मुझ पर हँसा?”
नहीं, शायद वह खुद अनानास के कंपोट में विश्वास करता हो।
लिसे, तुम भी अब बहुत बीमार हो।
“हाँ, वह इसमें विश्वास करता है,” लीज़ ने चमकती आँखों से कहा। “वह किसी से घृणा नहीं करता,” अलेयोशा ने आगे कहा। “बस वह नहीं करता
किसी पर भी विश्वास करो। अगर वह लोगों पर विश्वास नहीं करता, तो निश्चित रूप से वह उनसे नफरत करता है।
“तो क्या वह मुझसे घृणा करता है?”
"आप भी।"
“अच्छा,” लिसे ने दांत पीसते हुए कहा। “जब वह हंसते हुए बाहर गया, तो मैं
उसे लगता था कि तिरस्कृत होना अच्छा है। उंगलियां कटी हुई बच्ची अच्छी लगती है, और तिरस्कृत होना अच्छा लगता है...
और वह अलेयोशा के चेहरे पर एक उग्र, द्वेषपूर्ण हंसी हंस पड़ी। "क्या तुम जानते हो, अलेयोशा, क्या तुम जानते हो, मैं चाहूंगी... अलेयोशा, बचाओ"
मैं!” वह अचानक सोफे से उछली, उसकी ओर दौड़ी और दोनों हाथों से उसे पकड़ लिया। “मुझे बचाओ!” वह लगभग कराह उठी। “क्या दुनिया में कोई ऐसा है जिसे मैं वो सब बता सकूँ जो मैंने तुम्हें बताया है? मैंने तुम्हें सच बताया है, सच। मैं खुद को मार डालूँगी, क्योंकि मुझे हर चीज़ से नफरत है! मैं जीना नहीं चाहती, क्योंकि मुझे हर चीज़ से नफरत है! मुझे हर चीज़ से नफरत है, हर चीज़ से। अलेयोशा, तुम मुझसे ज़रा भी प्यार क्यों नहीं करते?” उसने उन्माद में अपनी बात खत्म की।
“पर मैं तुमसे प्यार करता हूँ!” अलेयोशा ने स्नेहपूर्वक उत्तर दिया। “और क्या तुम मेरे लिए रोओगे?”
"हाँ।"
"इसलिए नहीं कि मैं तुम्हारी पत्नी नहीं बनूंगी, बल्कि इसलिए कि तुम मेरे लिए रोओगे?"
"हाँ।"
“धन्यवाद! मुझे तो बस तुम्हारे आँसू चाहिए। बाकी सब मुझे सज़ा दे सकते हैं।”

और मुझे पैरों तले रौंद डालो, सब के सब, किसी को भी मत छोड़ो। क्योंकि मैं किसी से प्रेम नहीं करती। सुन रहे हो, किसी से भी नहीं! बल्कि, मैं उससे घृणा करती हूँ! जाओ, अलेयोशा; अब तुम्हारे भाई के पास जाने का समय हो गया है"; वह अचानक उससे अलग हो गई।
"मैं तुम्हें ऐसे कैसे छोड़ सकता हूँ?" अलेयोशा ने लगभग घबराते हुए कहा। "अपने भाई के पास जाओ, जेल बंद हो जाएगी; जाओ, ये लो तुम्हारी टोपी।
मित्या को मेरा प्यार, जाओ, जाओ!
और उसने लगभग जबरदस्ती अलेयोशा को दरवाजे से बाहर धकेल दिया। उसने देखा
उसे दर्द भरी हैरानी हुई, तभी अचानक उसे अपने दाहिने हाथ में एक छोटा सा पत्र दिखाई दिया, जो कसकर मोड़ा और सीलबंद था। उसने उस पर नज़र डाली और तुरंत पता पढ़ा, "इवान फ्योदोरोविच करामाज़ोव को।" उसने जल्दी से लिसे की ओर देखा। उसका चेहरा लगभग भयभीत हो गया था।
"उसे दे दो, तुम्हें उसे देना ही होगा!" उसने कांपते हुए उसे आदेश दिया।
और वह गुस्से से बेकाबू हो गई। "आज ही, तुरंत, वरना मैं खुद को जहर दे दूंगी! इसीलिए मैंने तुम्हें बुलवाया है।"
और उसने जल्दी से दरवाजा पटक दिया। कुंडी की आवाज आई। अलेयोशा ने दरवाजा बंद कर दिया। अलेयोशा ने अपनी जेब में नोट रखा और मैडम होहलाकोव के पास वापस जाए बिना सीधे नीचे चला गया; असल में, वह उन्हें भूल ही गया था। अलेयोशा के जाते ही, लिसे ने दरवाज़े की कुंडी खोली, उसे थोड़ा सा खोला, दरार में अपनी उंगली डाली और पूरी ताकत से दरवाज़ा बंद कर दिया, जिससे उसकी उंगली दब गई। दस सेकंड बाद, उंगली छुड़ाकर, वह धीरे-धीरे अपनी कुर्सी तक गई, उस पर सीधी बैठ गई और अपनी काली पड़ी उंगली और नाखून के नीचे से रिसते खून को ध्यान से देखने लगी। उसके होंठ कांप रहे थे और वह लगातार खुद से फुसफुसा रही थी:
मैं एक अभागा हूँ, अभागा हूँ, अभागा हूँ, अभागा हूँ!

अध्याय 4

एक भजन और एक रहस्य

काफी रात हो चुकी थी (नवंबर में दिन छोटे होते हैं) जब अलेयोशा ने जेल के द्वार की घंटी बजाई। शाम ढलने लगी थी। लेकिन अलेयोशा को पता था कि उसे बिना किसी कठिनाई के प्रवेश मिल जाएगा। हमारे छोटे से कस्बे में भी, बाकी जगहों की तरह ही, व्यवस्था बनी हुई थी। शुरुआत में, ज़ाहिर है, प्रारंभिक पूछताछ पूरी होने के बाद, रिश्तेदार और कुछ अन्य लोग मित्या से मिलने के लिए कुछ अनिवार्य औपचारिकताओं का पालन किए बिना नहीं रह सकते थे। लेकिन बाद में, हालांकि औपचारिकताओं में ढील नहीं दी गई, कम से कम मित्या से मिलने आने वालों में से कुछ के लिए छूट दी गई। इतना ही नहीं, कभी-कभी कैदी से मुलाकात के लिए निर्धारित कमरे में आमने-सामने की बातचीत भी होती थी।
हालांकि, ये अपवाद संख्या में बहुत कम थे; केवल ग्रुशेंका ही थीं।
अलेयोशा और रकितिन के साथ ऐसा ही बर्ताव किया गया। लेकिन पुलिस कप्तान मिखाइल मिखाइलोविच का ग्रुशेंका के प्रति बहुत नरम रवैया था। मोक्रोए में उसके साथ हुए दुर्व्यवहार का बोझ बूढ़े आदमी के अंतरात्मा पर था, और जब उसे पूरी कहानी पता चली, तो उसके प्रति उसका नज़रिया पूरी तरह बदल गया। और हैरानी की बात यह है कि, हालांकि वह अपने अपराध के प्रति पूरी तरह आश्वस्त था, फिर भी मित्या के जेल जाने के बाद, बूढ़े आदमी का उसके प्रति रवैया धीरे-धीरे नरम होता गया। उसने सोचा, "शायद वह अच्छे दिल का आदमी था, जो शराब और अय्याशी के कारण मुसीबत में पड़ गया था।" उसकी पहली घृणा दया में बदल गई थी। अलेयोशा की बात करें तो, पुलिस कप्तान उसे बहुत पसंद करता था और उसे लंबे समय से जानता था। रकितिन, जो हाल ही में कैदी से मिलने अक्सर आने लगा था, पुलिस कप्तान की "युवतियों" (जैसा कि वह उन्हें कहता था) के सबसे करीबी परिचितों में से एक था, और हमेशा उनके घर के आसपास मंडराता रहता था। वह जेल अधीक्षक के घर में भी शिक्षा देता था, जो अपने कर्तव्यों का पालन करने में अत्यंत सजग होने के साथ-साथ एक दयालु बुजुर्ग भी थे। अलेयोशा की अधीक्षक से लंबे समय से घनिष्ठ जान-पहचान थी, जो उससे बातें करना पसंद करते थे, आमतौर पर धार्मिक विषयों पर। वह इवान फ्योदोरोविच का आदर करते थे और उनकी राय को बहुत महत्व देते थे, हालांकि स्वयं एक महान दार्शनिक थे; बेशक, उन्होंने स्वयं ही ज्ञान प्राप्त किया था। लेकिन अलेयोशा उनके प्रति एक अटूट आकर्षण महसूस करते थे। पिछले एक साल से बुजुर्ग ने अपोक्रिफल गॉस्पेल का अध्ययन करना शुरू कर दिया था और अपने युवा मित्र के साथ लगातार अपने विचारों पर चर्चा करते रहते थे। वह मठ में उनसे मिलने आते थे और उनके साथ-साथ भिक्षुओं के साथ घंटों चर्चा करते थे। इसलिए, अगर अलेयोशा जेल में देर से भी पहुँचते थे, तो उन्हें बस अधीक्षक के पास जाना होता था और सब कुछ आसान हो जाता था। इसके अलावा, जेल में हर कोई, यहाँ तक कि सबसे विनम्र वार्डर भी, अलेयोशा से परिचित हो चुका था। जब तक अधिकारी संतुष्ट रहते थे, संतरी भी उन्हें परेशान नहीं करता था।
जब भी मित्या को उसकी कोठरी से बुलाया जाता था, वह हमेशा नीचे की ओर जाता था।
साक्षात्कार के लिए निर्धारित स्थान पर पहुँचते ही अलेयोशा कमरे में दाखिल हुए और उनकी मुलाकात राकितिन से हुई, जो मित्या से विदा ले रहे थे। दोनों ज़ोर-ज़ोर से बातें कर रहे थे। मित्या उन्हें विदा करते हुए दिल खोलकर हँस रहे थे, जबकि राकितिन कुछ बुदबुदाते हुए लग रहे थे। राकितिन को अलेयोशा से मिलना पसंद नहीं था, खासकर हाल के दिनों में। वह उनसे मुश्किल से ही बात करते थे और अकड़कर उन्हें प्रणाम करते थे। अलेयोशा को आते देख, उन्होंने भौंहें चढ़ा लीं और नज़रें फेर लीं, मानो वे अपने बड़े, गर्म, फर से सजे ओवरकोट के बटन लगाने में पूरी तरह मग्न हों। फिर वे तुरंत अपना छाता ढूंढने लगे।
“मुझे अपना सामान न भूलने का ध्यान रखना होगा,” उसने धीरे से कहा, बस इतना कहने के लिए। कुछ।
“ध्यान रखना, दूसरों का सामान मत भूलना,” मित्या ने कहा।
मजाक सुनकर, वह तुरंत अपनी ही चतुराई पर हंस पड़ा। रकितिन तुरंत जोश में आ गया।
"बेहतर होगा कि आप यह सलाह अपने परिवार को दें, जो हमेशा से ही

“ये तो गुलामों से काम करवाने वाले लोग हैं, और वो भी रकितिन के पास नहीं,” वह अचानक गुस्से से कांपते हुए चिल्लाया।
“क्या बात है? मैं तो मज़ाक कर रहा था,” मित्या चिल्लाया। “धिक्कार है! वे तो हैं ही।”
“सब कुछ ऐसे ही हो गया,” उसने अलेयोशा की ओर मुड़कर, रकितिन की तेज़ी से जाती हुई आकृति की ओर इशारा करते हुए कहा। “वह यहाँ बैठा हँस रहा था, खुश था, और अचानक ऐसे उबल पड़ा। उसने तुम्हें देखकर सिर भी नहीं हिलाया। क्या तुमने उससे पूरी तरह नाता तोड़ लिया है? इतनी देर क्यों हो गई? मैं सुबह से तुम्हारा इंतज़ार ही नहीं कर रहा था, बल्कि तुम्हारे लिए तड़प रहा था। खैर, कोई बात नहीं। अब हम इसकी भरपाई कर लेंगे।”
“वह यहाँ इतनी बार क्यों आता है? आप तो इतने महान तो नहीं होंगे।”
“दोस्त?” अलेयोशा ने पूछा। उसने भी उस दरवाजे की ओर इशारा किया जिससे होकर राकितिन गायब हो गया था।
“राकितिन के साथ बहुत अच्छे दोस्त? नहीं, उतना नहीं। क्या यह संभव है—एक सुअर
क्या सच में? वो मुझे... बदमाश समझता है। उन्हें मज़ाक भी समझ नहीं आता, यही तो ऐसे लोगों की सबसे बुरी बात है। उन्हें कभी मज़ाक समझ नहीं आता, और उनकी आत्मा सूखी, बेजान और सपाट होती है; जब मुझे पहली बार यहाँ लाया गया था, तब वे मुझे जेल की दीवारों की याद दिलाते थे। लेकिन वो बहुत चालाक आदमी है, बहुत ही चालाक। खैर, एलेक्सी, अब तो मेरा काम तमाम हो गया।
वह बेंच पर बैठ गया और अलेयोशा को भी अपने बगल में बैठा दिया। “हाँ, कल सुनवाई है। क्या तुम इतने निराश हो, भाई?” अलेयोशा
उसने आशंका भरे भाव से कहा।
“तुम किस बारे में बात कर रहे हो?” मित्या ने उसकी ओर देखते हुए कहा।
अनिश्चितता से। “ओह, तुम्हारा मतलब मुकदमे से है! धिक्कार है! अब तक हम उन चीजों के बारे में बात कर रहे थे जिनका कोई महत्व नहीं है, इस मुकदमे के बारे में, लेकिन मैंने तुमसे मुख्य बात के बारे में एक शब्द भी नहीं कहा। हाँ, मुकदमा कल है; लेकिन जब मैंने कहा था कि मेरा सब कुछ खत्म हो गया है, तो मेरा मतलब मुकदमे से नहीं था। तुम मुझे इतनी आलोचनात्मक निगाहों से क्यों देख रहे हो?”
"तुम्हारा क्या मतलब है, मित्या?"
“विचार, विचार, बस इतना ही! नैतिकता! नैतिकता क्या है?”
“नैतिकता?” अलेयोशा ने आश्चर्य से पूछा।
“हां; क्या यह विज्ञान है?”
“हाँ, ऐसा विज्ञान मौजूद है... लेकिन... मैं स्वीकार करता हूँ कि मैं आपको समझा नहीं सकता।”
यह किस प्रकार का विज्ञान है।
“राकितिन जानता है। राकितिन बहुत कुछ जानता है, धिक्कार है उसे! वह ऐसा नहीं करने वाला है।”
साधु। उसका इरादा पीटर्सबर्ग जाने का है। वहाँ वह आलोचना के एक ऐसे रूप में उभरेगा जो उत्थानकारी हो। कौन जाने, शायद वह उपयोगी साबित हो और अपना करियर भी बना ले। उफ़! ये लोग तो करियर बनाने में माहिर हैं! नैतिकता भाड़ में जाए, मैं तो गई काम से, एलेक्सी, हे ईश्वर के बंदे! मैं तुमसे सबसे ज़्यादा प्यार करती हूँ। तुम्हें देखकर मेरा दिल व्याकुल हो जाता है। कार्ल बर्नार्ड कौन था?
“कार्ल बर्नार्ड?” अलेयोशा फिर से चौंक गया। “नहीं, कार्ल नहीं। रुको, मुझसे गलती हो गई। क्लाउड बर्नार्ड। वह कौन था?”
रसायनज्ञ या फिर क्या?
“वह अवश्य ही एक विद्वान होगा,” अलेयोशा ने उत्तर दिया; “लेकिन मैं स्वीकार करता हूँ कि मैं आपको बता नहीं सकता।”
मुझे उनके बारे में ज्यादा जानकारी नहीं है। मैंने उनके बारे में एक विलक्षण प्रतिभा के रूप में सुना है, लेकिन किस तरह की विलक्षण प्रतिभा, यह मुझे नहीं पता।
“अच्छा, तो फिर उसे धिक्कार है! मुझे भी नहीं पता,” मित्या ने कसम खाते हुए कहा। “ए
किसी न किसी तरह का बदमाश, शायद। ये सब बदमाश ही हैं। और रकितिन अपना रास्ता बना लेगा। रकितिन कहीं भी पहुँच जाएगा; वह भी एक बर्नार्ड ही है। उफ़, ये बर्नार्ड! ये तो हर जगह फैले हुए हैं।

“लेकिन बात क्या है?” अलेयोशा ने ज़ोर देकर पूछा। “वह मेरे बारे में, मेरे मामले के बारे में एक लेख लिखना चाहता है, और इस तरह अपनी शुरुआत करना चाहता है।”
साहित्यिक करियर। वो इसी के लिए आया है; उसने खुद ऐसा कहा है। वो कोई सिद्धांत साबित करना चाहता है। वो कहना चाहता है कि 'वो अपने पिता की हत्या करने से खुद को रोक नहीं सका, वो अपने परिवेश से प्रभावित हो गया था,' वगैरह। उसने मुझे सब कुछ समझाया। वो कहता है कि वो इसमें समाजवाद का पुट डालेगा। लेकिन भाड़ में जाए ये आदमी, चाहे जो डाले, मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता। वो इवान को बर्दाश्त नहीं कर सकता, उससे नफरत करता है। तुम्हें भी वो पसंद नहीं करता। लेकिन मैं उसे बाहर नहीं निकालता, क्योंकि वो होशियार है। हालांकि, हद से ज्यादा घमंडी है। मैंने अभी उससे कहा, 'करामाज़ोव बदमाश नहीं, बल्कि दार्शनिक हैं; क्योंकि सभी सच्चे रूसी दार्शनिक होते हैं, और तुमने पढ़ाई तो की है, लेकिन तुम दार्शनिक नहीं हो—तुम एक नीच आदमी हो।' वो बड़ी शरारत से हँसा। और मैंने उससे कहा, 'विचारों पर बहस नहीं हो सकती।' है ना ये काफी अच्छा? मैं क्लासिक बनने की तैयारी कर सकता हूँ, देखो!” मित्या अचानक हँस पड़ा।
“तुम्हारे साथ सब कुछ खत्म क्यों हो गया? तुमने अभी-अभी तो यही कहा था,” अलेयोशा बीच में हस्तक्षेप किया।
“मेरे साथ यह सब क्यों खत्म हो गया? हम्म! ... असल बात तो यह है कि... अगर आप इसे लेते हैं कुल मिलाकर, मुझे ईश्वर को खोने का दुख है—यही कारण है।
“‘भगवान को खोने का दुख’ से आपका क्या मतलब है?”
कल्पना कीजिए: अंदर, नसों में, सिर में—अर्थात, ये नसें हैं दिमाग में... (धिक्कार है उन पर!) वहाँ छोटी-छोटी पूंछें होती हैं, उन नसों की छोटी-छोटी पूंछें, और जैसे ही वे कांपने लगती हैं... यानी, देखो, मैं अपनी आँखों से किसी चीज़ को देखता हूँ और फिर वे छोटी पूंछें कांपने लगती हैं... और जब वे कांपती हैं, तो एक छवि दिखाई देती है... यह तुरंत नहीं दिखाई देती, बल्कि एक पल, एक सेकंड बीत जाता है... और फिर एक क्षण जैसा कुछ दिखाई देता है; यानी, एक क्षण नहीं—उस क्षण को धिक्कार है!—बल्कि एक छवि; यानी, एक वस्तु, या एक क्रिया, धिक्कार है! इसीलिए मैं देखता हूँ और फिर सोचता हूँ, उन पूंछों के कारण, इसलिए बिल्कुल नहीं कि मेरे पास आत्मा है, और मैं किसी प्रकार की छवि या समानता हूँ। यह सब बकवास है! राकितिन ने कल मुझे यह सब समझाया, भाई, और इसने मुझे पूरी तरह से चकित कर दिया। यह अद्भुत है, अलेयोशा, यह विज्ञान! एक नए मनुष्य का उदय हो रहा है—यह मैं समझता हूँ... फिर भी मुझे ईश्वर को खोने का दुख है!
“खैर, ये तो अच्छी बात है,” अलेयोशा ने कहा। “कि मुझे भगवान को खोने का दुख है? ये तो रसायन विज्ञान है, भाई, रसायन विज्ञान!”
कोई चारा नहीं है, महाराज, आपको रसायन शास्त्र के लिए रास्ता बनाना ही होगा। और रकितिन को ईश्वर से घृणा है। उफ़! क्या उन्हें ईश्वर से घृणा नहीं है! यही तो उन सब की सबसे बड़ी समस्या है। लेकिन वे इसे छुपाते हैं। वे झूठ बोलते हैं। वे दिखावा करते हैं। 'क्या आप अपनी समीक्षाओं में इसका प्रचार करेंगे?' मैंने उनसे पूछा। 'ओह, अगर मैं इसे खुलेआम करूँ, तो वे इसे प्रकाशित नहीं होने देंगे,' उन्होंने कहा। वे हँसे। 'लेकिन फिर मनुष्यों का क्या होगा?' मैंने उनसे पूछा, 'ईश्वर और अमर जीवन के बिना? तब सब कुछ जायज़ होगा, वे जो चाहें कर सकते हैं?' 'क्या आपको नहीं पता?' वे हँसते हुए बोले, 'एक चतुर व्यक्ति जो चाहे कर सकता है।' 'एक चतुर व्यक्ति को अपने रास्ते की अच्छी समझ होती है, लेकिन आपने हत्या करके अपना पैर फंसा लिया है, और अब आप जेल में सड़ रहे हैं।' वे यह बात मेरे सामने कहते हैं! बिलकुल घटिया! मैं ऐसे लोगों को पहले निकाल देता था, लेकिन अब मैं उनकी बात सुनता हूँ। वे बहुत समझदारी की बातें भी करते हैं। अच्छा लिखते हैं। उन्होंने पिछले सप्ताह मुझे एक लेख पढ़कर सुनाना शुरू किया। मैंने उसकी तीन पंक्तियाँ लिख लीं। एक मिनट रुकिए। ये लीजिए।
मित्या ने जल्दी से अपनी जेब से एक कागज का टुकड़ा निकाला और पढ़ा: “‘इस प्रश्न का उत्तर देने के लिए, सबसे पहले अपने मन को लगाना आवश्यक है...
'व्यक्तित्व उसकी वास्तविकता के विपरीत होता है।' क्या आप इसे समझते हैं?
“नहीं, मैं नहीं जानता,” अलेयोशा ने कहा। उसने मित्या की ओर देखा और उसकी बात सुनी। जिज्ञासा के साथ।

मुझे भी समझ नहीं आ रहा। यह अंधकारमय और अस्पष्ट है, लेकिन बौद्धिक है। 'हर
आजकल लोग ऐसे ही लिखते हैं,' वह कहता है, 'यह उनके परिवेश का प्रभाव है।' वे परिवेश से डरते हैं। वह बदमाश कविता भी लिखता है। उसने मैडम होहलाकोव के पैर के सम्मान में कविता लिखी है। हा हा हा!
"मैंने इसके बारे में सुना है," अलेयोशा ने कहा।
"क्या आपने सुना है? और क्या आपने कविता सुनी है?"
"नहीं।"
मुझे मिल गया। ये रहा। मैं तुम्हें पढ़कर सुनाता हूँ। तुम्हें नहीं पता—मुझे भी नहीं पता।
मैंने तुम्हें बताया था—इसके पीछे एक दिलचस्प कहानी है। वो बड़ा बदमाश है! तीन हफ्ते पहले उसने मुझे चिढ़ाना शुरू किया। 'तुमने तीन हज़ार के चक्कर में खुद को बेवकूफों की तरह मुसीबत में डाल लिया है, लेकिन मैं तो डेढ़ लाख हड़प लूँगा। मैं एक विधवा से शादी करूँगा और सेंट पीटर्सबर्ग में एक घर खरीदूँगा।' और उसने मुझे बताया कि वो मैडम होहलाकोव को रिझाने की कोशिश कर रहा है। जवानी में वो ज़्यादा समझदार नहीं थीं, और अब चालीस साल की उम्र में वो जो कुछ बचा था वो भी खो चुकी हैं। 'लेकिन वो बहुत भावुक हैं,' वो कहता है; 'इसी तरह मैं उन्हें पटा लूँगा। उनसे शादी करके मैं उन्हें सेंट पीटर्सबर्ग ले जाऊँगा और वहाँ एक अखबार शुरू करूँगा।' और उसके मुँह में पानी आ रहा था, उस दरिंदे के मुँह में, विधवा के लिए नहीं, बल्कि डेढ़ लाख के लिए। और उसने मुझे यकीन दिला दिया। वो मुझसे हर दिन मिलने आता था। 'वो मान रही है,' वो कहता था। वो खुशी से फूला नहीं समा रहा था। और फिर, अचानक, उसे घर से निकाल दिया गया। पेरहोटिन तो कमाल कर रहा है, वाह! उस बूढ़े बेवकूफ को घर से निकालने के लिए मैं उसे गले लगाना चाहता हूँ। और उसने ये घटिया कविता लिखी है। 'पहली बार कविता लिखने में हाथ गंदे किए हैं,' उसने कहा। 'उसका दिल जीतने के लिए, तो ये एक नेक काम है। जब मुझे उस बेवकूफ औरत की दौलत मिल जाएगी, तो मैं समाज के लिए बहुत उपयोगी साबित हो सकता हूँ।' ये लोग अपने हर बुरे काम के लिए कोई न कोई सामाजिक बहाना ढूंढ ही लेते हैं! 'खैर, ये तुम्हारी पुश्किन की कविता से तो बेहतर है,' उसने कहा, 'क्योंकि मैंने उसमें भी ज्ञान का प्रचार कर दिया है।' मैं समझता हूँ कि पुश्किन के बारे में उसका क्या मतलब है, मैं ये बात अच्छी तरह समझता हूँ, अगर वो सच में प्रतिभाशाली था और सिर्फ औरतों के पैरों के बारे में ही लिखता था। लेकिन राकितिन अपनी घटिया कविता को लेकर कितना घमंडी था! इन लोगों का घमंड! 'मेरी प्रेमिका के सूजे हुए पैर के ठीक होने पर'—ये शीर्षक उसने सोच लिया। बड़ा मज़ाकिया आदमी है।

'एक मनमोहक छोटा पैर,
हालांकि, यह सूजा हुआ, लाल और कोमल है!
डॉक्टर आते हैं और प्लास्टर लगा देते हैं।
लेकिन फिर भी वे उसे ठीक नहीं कर सकते।
फिर भी, मुझे उसके पैर से डर नहीं लगता—
पुश्किन की प्रेरणा के लिए इससे अधिक उपयुक्त विषय—
यह उसका पैर नहीं, उसका सिर है:
मुझे उसकी बुद्धि खो जाने पर बहुत दुख हो रहा है!
क्योंकि, अजीब बात है, उसका पैर सूज जाता है,
उसकी बुद्धि का स्तर गिर रहा है—
हे भगवान, कृपया कोई उपाय बताएं।
इससे पैर और दिमाग दोनों ठीक हो सकते हैं!

वो एक घटिया सूअर है, एकदम आम सूअर, लेकिन बड़ा ही धूर्त है! और उसने वाकई एक प्रगतिशील विचार रखा है। और जब उसने उसे बाहर निकाल दिया तो वो कितना गुस्सा हुआ था! वो तो दांत पीस रहा था!
"उसने अपना बदला ले लिया है," अलेयोशा ने कहा। "उसने एक पत्र लिखा है।
मैडम होहलाकोव के बारे में पैराग्राफ।"
और अलेयोशा ने उसे गॉसिप में लिखे पैराग्राफ के बारे में संक्षेप में बताया। "यह उसी का किया-धरा है, यह उसी का किया-धरा है!" मित्या ने भौंहें चढ़ाते हुए सहमति जताई। "यह..."

उसे! ये पैराग्राफ... मुझे पता है... ग्रुशेंका के बारे में जो अपमानजनक बातें लिखी गई हैं, उदाहरण के लिए... और कात्या के बारे में भी... हम्म!
वह परेशान चेहरे के साथ कमरे में चला गया। "भाई, मैं ज्यादा देर नहीं रुक सकता," अलेयोशा ने कुछ देर रुककर कहा। "कल।"
वह दिन तुम्हारे लिए बहुत भयानक और बड़ा होगा, परमेश्वर का न्याय पूरा होगा... मैं तुम पर आश्चर्यचकित हूँ, तुम यहाँ-वहाँ घूमते फिरते हो और न जाने क्या-क्या बातें करते हो...
“नहीं, मुझ पर आश्चर्य मत करो,” मित्या ने गर्मजोशी से बीच में कहा। “क्या मुझे इस बारे में बात करने का अधिकार है?”
वो बदबूदार कुत्ता? उस हत्यारे का? हम उसके बारे में बहुत बात कर चुके हैं। मैं उस बदबूदार लिज़ावेटा के बेटे के बारे में और कुछ नहीं कहना चाहता! भगवान उसे मार डालेगा, तुम देखोगे। चुप रहो!
वह उत्तेजित होकर अलेयोशा के पास गया और उसे चूम लिया। उसकी आँखें चमक रही थीं। “राकितिन इसे नहीं समझेगा,” उसने एक प्रकार के उत्साह में कहना शुरू किया; “लेकिन
तुम, तुम सब समझ जाओगे। इसीलिए तो मैं तुम्हारे लिए तरस रहा था। देखो, इन जर्जर दीवारों के भीतर, मैं तुम्हें बहुत कुछ बताना चाहता था, लेकिन जो सबसे ज़रूरी है, उसके बारे में मैंने एक शब्द भी नहीं कहा; वह पल कभी आया ही नहीं। अब और इंतज़ार नहीं कर सकता। मुझे अपना दिल तुम्हारे सामने खोल देना चाहिए। भाई, पिछले दो महीनों में मैंने अपने अंदर एक नया इंसान पाया है। मेरे अंदर एक नया इंसान जाग उठा है। वह मेरे अंदर छिपा हुआ था, लेकिन अगर ऊपर से यह प्रहार न होता, तो वह कभी बाहर न आता। मैं डर रहा हूँ! और मुझे क्या फ़र्क पड़ता है अगर मैं बीस साल खानों में हथौड़े से अयस्क तोड़ता रहूँ? मुझे उससे ज़रा भी डर नहीं है—अब मुझे किसी और चीज़ से डर लग रहा है: कि वह नया इंसान मुझे छोड़ न दे। वहाँ भी, खानों में, ज़मीन के नीचे, मुझे अपने बगल में किसी दूसरे कैदी और हत्यारे में एक इंसान का दिल मिल सकता है, और मैं उससे दोस्ती कर सकता हूँ, क्योंकि वहाँ भी इंसान जी सकता है, प्यार कर सकता है और दुख सह सकता है। कोई उस कैदी के जमे हुए दिल को पिघलाकर उसमें नई जान डाल सकता है, सालों तक उसकी सेवा कर सकता है, और अंत में अंधकार की गहराइयों से एक महान आत्मा, एक संवेदनशील, पीड़ा सहने वाले प्राणी को बाहर ला सकता है; कोई एक देवदूत को जन्म दे सकता है, एक नायक का निर्माण कर सकता है! ऐसे बहुत से लोग हैं, सैकड़ों, और हम सब उनके लिए ज़िम्मेदार हैं। मैंने उस ‘बच्चे’ का सपना ऐसे क्षण में क्यों देखा? ‘वह बच्चा इतना गरीब क्यों है?’ उस क्षण मुझे यही संकेत मिला। मैं उस बच्चे के लिए जा रहा हूँ। क्योंकि हम सब सबके लिए ज़िम्मेदार हैं। सभी ‘बच्चों’ के लिए, क्योंकि बड़े बच्चे भी हैं और छोटे बच्चे भी। सभी ‘बच्चे’ हैं। मैं सबके लिए जा रहा हूँ, क्योंकि किसी न किसी को तो सबके लिए जाना ही होगा। मैंने पिता को नहीं मारा, लेकिन मुझे जाना ही होगा। मैं इसे स्वीकार करता हूँ। यह सब मुझे यहीं, इन उखड़ती दीवारों के भीतर समझ में आ गया है। वहाँ उनमें से कई हैं, सैकड़ों भूमिगत हैं, हाथों में हथौड़े लिए। हाँ, हम जंजीरों में जकड़े रहेंगे और कोई आज़ादी नहीं होगी, लेकिन फिर, अपने गहरे दुख में, हम फिर से आनंद की ओर उठेंगे, जिसके बिना मनुष्य का जीवन न तो संभव है और न ही ईश्वर का अस्तित्व, क्योंकि ईश्वर आनंद देता है: यह उनका विशेषाधिकार है—एक महान विशेषाधिकार। आह, मनुष्य को प्रार्थना में लीन हो जाना चाहिए! ईश्वर के बिना मैं वहाँ भूमिगत क्या रहूँगा? रकितिन हँस रहा है! यदि वे ईश्वर को पृथ्वी से निकाल दें, तो हम उन्हें भूमिगत शरण देंगे। ईश्वर के बिना कोई जेल में नहीं रह सकता; यह जेल से बाहर रहने से भी अधिक असंभव है। और फिर हम भूमिगत मनुष्य पृथ्वी की गहराई से ईश्वर के लिए एक गौरवशाली भजन गाएँगे, जिनके साथ आनंद है। ईश्वर और उनके आनंद की जय हो! मैं उनसे प्रेम करता हूँ!
मित्या अपनी उग्र बातों को बोलते हुए लगभग हांफ रहा था।
उसका चेहरा पीला पड़ गया, उसके होंठ कांपने लगे और उसकी आंखों से आंसू बहने लगे।
“हां, जीवन परिपूर्ण है, जमीन के नीचे भी जीवन है,” उन्होंने फिर से कहना शुरू किया। “तुम्हें यकीन नहीं होगा, एलेक्सी, मैं अब कैसे जीना चाहती हूँ, इन उखड़ती दीवारों के भीतर मेरे अंदर अस्तित्व और चेतना की कितनी प्यास जाग उठी है। रकितिन यह नहीं समझता; उसे तो बस घर बनाने और फ्लैट किराए पर देने की फ़िक्र है। लेकिन मैं तुम्हारे लिए तरस रही हूँ। और दुख क्या है? मैं इससे नहीं डरती, चाहे वह कितना भी अथाह क्यों न हो। मैं अब इससे नहीं डरती। मैं पहले इससे डरती थी। क्या तुम जानते हो, शायद मैं मुकदमे में जवाब ही न दूँ... और अब मुझमें इतनी शक्ति आ गई है कि मुझे लगता है मैं कुछ भी, कोई भी दुख सह

सकती हूँ, बस हर पल खुद से यह कहने और दोहराने के लिए, 'मैं मौजूद हूँ।' हज़ारों पीड़ाओं में—मैं मौजूद हूँ। मुझे यातना दी जा रही है—लेकिन मैं मौजूद हूँ! चाहे मैं खंभे पर अकेली बैठी हूँ—मैं मौजूद हूँ! मैं सूरज को देखती हूँ, और अगर मैं सूरज को नहीं देखती, तो भी मुझे पता है कि वह वहाँ है। और उस ज्ञान में ही पूरा जीवन समाया है, कि सूरज वहाँ है। अलेयोशा," मेरे प्यारे, ये सारी विचारधाराएँ मेरी मृत्यु का कारण हैं। धिक्कार है इन पर! भाई इवान...

"भाई इवान का क्या हुआ?" अलेयोशा ने बीच में ही टोकते हुए पूछा, लेकिन मित्या ने नहीं सुना। "देखो, मुझे पहले कभी ये संदेह नहीं थे, लेकिन ये सब बातें छिपी हुई थीं।"

मेरे भीतर कहीं खोई हुई बातें थीं। शायद इसीलिए मैं शराब पीता था, लड़ता था और गुस्से में पागल हो जाता था। मैं उन्हें अपने भीतर दबाता था, शांत करता था, उन्हें कुचल देता था। इवान, राकितिन नहीं है, उसके भीतर एक विचार है। इवान एक रहस्यमयी और शांत है; वह हमेशा शांत रहता है। मुझे ईश्वर की चिंता सता रही है। बस यही एक बात है जो मुझे परेशान कर रही है। क्या होगा अगर ईश्वर का अस्तित्व ही न हो? क्या होगा अगर राकितिन सही हो—कि यह मनुष्यों द्वारा गढ़ा गया एक विचार है? फिर अगर ईश्वर का अस्तित्व ही न हो, तो मनुष्य ही पृथ्वी का, ब्रह्मांड का मुखिया होगा। कितना अद्भुत! लेकिन ईश्वर के बिना वह अच्छा कैसे होगा? यही सवाल है। मैं हमेशा इसी सवाल पर लौट आता हूँ। फिर मनुष्य किससे प्रेम करेगा? वह किसका आभारी होगा? वह किसके लिए भजन गाएगा? राकितिन हंसता है। राकितिन कहता है कि ईश्वर के बिना भी मानवता से प्रेम किया जा सकता है। खैर, ऐसा तो केवल एक मूर्ख ही कह सकता है। मैं इसे समझ नहीं पा रहा हूँ। रकितिन के लिए जीवन आसान है। 'तुम्हें नागरिक अधिकारों के विस्तार या मांस की कीमतों को कम करने के बारे में सोचना चाहिए। दर्शनशास्त्र की तुलना में इससे तुम मानवता के प्रति अपना प्रेम अधिक सरलता और प्रत्यक्ष रूप से प्रकट करोगे।' मैंने उसे उत्तर दिया, 'ठीक है, लेकिन तुम, बिना ईश्वर के, अगर तुम्हें उचित लगे तो मांस की कीमत बढ़ा दोगे और हर कोपेक पर एक रूबल कमाओगे।' वह भड़क गया। लेकिन आखिर अच्छाई क्या है? मुझे इसका उत्तर दो, एलेक्सी। मेरे लिए अच्छाई एक बात है और एक चीनी के लिए दूसरी, इसलिए यह सापेक्षिक है। या नहीं? क्या यह सापेक्षिक नहीं है? एक पेचीदा सवाल! अगर मैं तुम्हें बताऊं कि इसने मुझे दो रातों तक जगाए रखा है, तो तुम हंसोगे नहीं। अब मैं बस यही सोचता हूं कि लोग कैसे जी सकते हैं और इसके बारे में कुछ नहीं सोचते। घमंड! इवान का कोई ईश्वर नहीं है। उसके पास एक विचार है। यह मेरी समझ से परे है। लेकिन वह चुप है। मुझे लगता है कि वह एक फ्रीमेसन है। मैंने उससे पूछा, लेकिन वह चुप है। मैं उनकी आत्मा के झरनों से पानी पीना चाहता था—वे चुप रहे। लेकिन एक बार उन्होंने एक शब्द कहा।

"उसने क्या कहा?" अलेयोशा ने तुरंत बात आगे बढ़ाते हुए कहा, "मैंने उससे कहा, 'अगर ऐसा है तो सब कुछ जायज़ है?' वह भौंहें चढ़ा बैठा।"

उन्होंने कहा, "हमारे पिता फ्योदोर पावलोविच एक सूअर थे, लेकिन उनके विचार काफी हद तक सही थे।" उन्होंने बस इतना ही कहा। उन्होंने बस इतना ही कहा। यह राकितिन से भी कहीं बेहतर था।

"हां," अलेयोशा ने कड़वाहट से सहमति जताई। "वह तुम्हारे साथ कब था?"

उस बारे में बाद में बात करेंगे; अभी मुझे किसी और विषय पर बात करनी है। मैंने अभी तक कुछ नहीं कहा है।

मैंने इवान के बारे में आपसे पहले ही बात कर ली थी। मैंने इसे आखिर तक टाल दिया था। जब यहाँ मेरा काम खत्म हो जाएगा और फैसला आ जाएगा, तब मैं आपको कुछ बताऊँगा। मैं आपको सब कुछ बताऊँगा। हमारे सामने एक बहुत बड़ा मामला है... और आप ही इसके फैसले करेंगे। लेकिन अभी इसके बारे में बात शुरू मत कीजिए; चुप रहिए। आप कल की बात कर रहे हैं, मुकदमे की; लेकिन यकीन मानिए, मुझे इसके बारे में कुछ नहीं पता।

क्या आपने वकील से बात की है?

"वकील की क्या ज़रूरत है? मैंने उसे सब कुछ बता दिया है। वो तो नरम दिल और शहरी है।"

बदमाश नस्ल का—एक बर्नार्ड! लेकिन वह मुझ पर विश्वास नहीं करता—बिल्कुल भी नहीं। ज़रा सोचो, अगर वह मान ले कि मैंने ही किया है। मैं देख सकता हूँ। 'तो फिर,' मैंने उससे पूछा, 'तुम मेरा बचाव करने क्यों आए हो?' सबको धिक्कार है! उन्होंने एक डॉक्टर को भी मार गिराया है, साबित करना चाहते हैं कि मैं पागल हूँ। मैं यह बर्दाश्त नहीं करूँगा! कैटेरिना इवानोव्ना अपना 'कर्तव्य' अंत तक निभाना चाहती है, चाहे कितनी भी

मुश्किल हो!" मित्या कड़वाहट से मुस्कुराया। "वह बिल्ली! कठोर हृदय वाली! वह जानती है कि मैंने मोक्रो में उसके बारे में कहा था कि वह 'अत्यधिक क्रोधी' है। उन्होंने इसे दोहराया। हाँ, मेरे विरुद्ध तथ्य समुद्र की रेत के समान असंख्य हो गए हैं। ग्रिगोरी अपनी बात पर अड़ा है। ग्रिगोरी ईमानदार है, लेकिन मूर्ख है। बहुत से लोग ईमानदार इसलिए होते हैं क्योंकि वे मूर्ख होते हैं: यह राकितिन का विचार है। ग्रिगोरी मेरा दुश्मन है। और कुछ लोग ऐसे होते हैं जो मित्रता से अधिक शत्रुता के रूप में बेहतर होते हैं। मेरा मतलब है कैटेरिना इवानोव्ना। मुझे डर लग रहा है, ओह, मुझे डर लग रहा है कि वो बता देगी कि उन चार हज़ार के बाद उसने कैसे ज़मीन पर सिर झुकाया था। वो एक-एक पैसा चुकाएगी। मैं उसका बलिदान नहीं चाहता; मुक़दमे में मेरी बेइज्ज़ती हो जाएगी। समझ नहीं आ रहा कि मैं ये सब कैसे सह पाऊँगा। जाओ उसके पास, अलेयोशा, उससे कहो कि वो अदालत में इस बारे में बात न करे, क्या तुम नहीं कर सकते? लेकिन धिक्कार है, कोई बात नहीं! मैं किसी तरह इससे निपट लूँगा। मुझे उस पर दया नहीं आती। ये उसकी अपनी करनी है। उसे जो मिल रहा है वो उसी की है। मेरी भी अपनी कहानी होगी, एलेक्सी।" वो फिर से कड़वी मुस्कान के साथ बोला। "सिर्फ़... सिर्फ़ ग्रुशा, ग्रुशा! हे भगवान! उसे इतना दुख क्यों सहना पड़ रहा है?" वो अचानक आँसुओं के साथ बोला। "ग्रुशा मुझे मार रही है; उसका ख्याल ही मुझे मार रहा है, मार रहा है। वो अभी मेरे साथ थी..."
"उसने मुझे बताया कि वह आज तुम्हारे कारण बहुत दुखी थी।"
मुझे पता है। धिक्कार है मेरे गुस्से पर! यह ईर्ष्या थी। मुझे खेद है, मैंने उसे चूमा।
जब वह जा रही थी, मैंने उससे माफी नहीं मांगी।
"तुमने ऐसा क्यों नहीं किया?" अलेयोशा ने हैरानी से कहा।
अचानक मित्या लगभग हर्षोल्लास से हंस पड़ा।
"हे मेरे प्यारे बेटे, ईश्वर तुम्हें कभी भी किसी गलती के लिए क्षमा मांगने से बचाए।"
जिस स्त्री से आप प्रेम करते हैं, उससे गलती स्वीकार करवाना। खासकर जिससे आप प्रेम करते हैं, उससे, चाहे आपकी गलती कितनी भी बड़ी क्यों न हो। स्त्री—सारा शैतान ही जानता है कि स्त्री क्या होती है! मैं उनके बारे में कुछ तो जानता हूँ। लेकिन किसी स्त्री के सामने अपनी गलती स्वीकार करने की कोशिश कीजिए। कहिए, 'मुझे खेद है, मुझे क्षमा कर दीजिए,' और फिर निंदाओं की बौछार हो जाएगी! कोई भी बात उसे सीधे-सीधे माफ करने के लिए मजबूर नहीं करेगी, वह आपको धूल में मिला देगी, ऐसी बातें सामने लाएगी जो कभी हुई ही नहीं, सब कुछ याद दिलाएगी, कुछ भी नहीं भूलेगी, अपनी तरफ से कुछ जोड़ देगी, और तभी आपको माफ करेगी। और यहाँ तक कि सबसे अच्छी स्त्रीएँ भी, सबसे अच्छी स्त्रीयाँ भी ऐसा ही करती हैं। वह आपके सारे दोष इकट्ठा करके आपके सिर पर लाद देगी। मैं आपको बता रहा हूँ, वे सब आपको जिंदा छीलने को तैयार हैं, वे सब, वे सभी देवदूत जिनके बिना हम जी नहीं सकते! मैं आपको साफ-साफ और खुलेआम बता रहा हूँ, प्यारे लड़के, हर भले आदमी को किसी न किसी स्त्री के वश में होना चाहिए। यह मेरा विश्वास है —विश्वास नहीं, बल्कि भावना। एक पुरुष को उदार होना चाहिए, और यह एक पुरुष के लिए कोई शर्म की बात नहीं है! किसी हीरो के लिए कोई अपमान नहीं, यहाँ तक कि सीज़र के लिए भी नहीं! लेकिन फिर भी उससे कभी किसी बात के लिए माफ़ी मत माँगना। अपने भाई मित्या का दिया हुआ वो नियम याद रखना, जो औरतों की वजह से बर्बाद हो गया। नहीं, मुझे ग्रुशा को किसी तरह मनाना होगा, माफ़ी माँगे बिना। मैं उसकी पूजा करता हूँ, एलेक्सी, उसकी पूजा करता हूँ। बस वो इसे नहीं समझती। नहीं, वो अब भी सोचती है कि मैं उससे उतना प्यार नहीं करता। और वो मुझे तड़पाती है, अपने प्यार से तड़पाती है। अतीत कुछ भी नहीं था! अतीत में तो बस उसके वो भयानक कर्ल्स ही मुझे तड़पाते थे, लेकिन अब मैंने उसकी आत्मा को अपनी आत्मा में समा लिया है और उसके ज़रिए मैं खुद मर्द बन गया हूँ। क्या वे हमारी शादी करवाएँगे? अगर नहीं, तो मैं ईर्ष्या से मर जाऊँगा। मैं हर दिन कुछ न कुछ सोचता हूँ... उसने मेरे बारे में तुमसे क्या कहा?
अलेयोशा ने ग्रुशेंका द्वारा उस दिन कही गई सभी बातें दोहराईं। मित्या
उसने उसकी बात सुनी, उससे बातें दोहराने को कहा और वह खुश लग रहा था।
"तो क्या वो मेरे ईर्ष्यालु होने पर नाराज़ नहीं है?" उसने हैरानी से कहा। "वो एक
एक आम औरत! 'मेरा दिल भी बहुत जोशीला है!' आह, मुझे ऐसे जोशीले दिल बहुत पसंद हैं, हालाँकि मैं किसी की जलन बर्दाश्त नहीं कर सकती। मैं इसे सहन नहीं कर सकती। हम लड़ेंगे। लेकिन मैं उससे प्यार करूंगी, मैं उससे असीम प्यार करूंगी। क्या वे हमारी शादी करवाएंगे? क्या कैदियों को शादी करने की इजाज़त होती है? यही सवाल है। और उसके बिना मेरा कोई अस्तित्व नहीं है...

मित्या तेवर चढ़ाए कमरे में इधर-उधर घूम रहा था। लगभग अंधेरा हो चुका था।
अचानक वह बेहद चिंतित प्रतीत होने लगी।
“तो कोई राज़ है?” वह कहती है, “कोई राज़? हमने एक साजिश रची है।”
उसे लगता है कि कात्या भी इसमें शामिल है। नहीं, मेरी प्यारी ग्रुशेंका, ऐसा नहीं है। तुम अपनी नादान स्त्री-सुलभ सोच में बिलकुल गलत हो। अलेयोशा, प्यारे, चलो शुरू करते हैं! मैं तुम्हें हमारा राज़ बता दूँगी!
उसने चारों ओर देखा और जल्दी से अलेयोशा के पास गया, जो खड़ा था।
उसके सामने आकर, उन्होंने रहस्यमय लहजे में उसके कान में फुसफुसाया, हालांकि वास्तव में उन्हें कोई सुन नहीं सकता था: बूढ़ा पहरेदार कोने में ऊंघ रहा था, और पहरे पर तैनात सैनिकों के कानों तक एक शब्द भी नहीं पहुंच सका।
“मैं तुम्हें हमारा सारा राज़ बता दूंगा,” मित्या ने जल्दी से फुसफुसाते हुए कहा। “मेरा मतलब था...”
मैं तुम्हें बाद में बताऊँगी, क्योंकि तुम्हारे बिना मैं किसी भी बात का फैसला कैसे कर सकती हूँ? तुम मेरे लिए सब कुछ हो। हालाँकि मैं कहती हूँ कि इवान हमसे श्रेष्ठ है, तुम मेरी फ़रिश्ता हो। तुम्हारा फैसला ही निर्णायक होगा। शायद तुम ही श्रेष्ठ हो, इवान नहीं। देखो, यह अंतरात्मा का सवाल है, उच्चतर अंतरात्मा का सवाल—यह रहस्य इतना महत्वपूर्ण है कि मैं इसे स्वयं हल नहीं कर सकती, और मैंने इसे तुमसे बात करने तक टाल दिया है। लेकिन वैसे भी अभी फैसला करना जल्दबाजी होगी, क्योंकि हमें फैसले का इंतजार करना होगा। जैसे ही फैसला सुनाया जाएगा, तुम मेरा भाग्य तय करोगी। अभी फैसला मत करो। मैं तुम्हें अभी बता दूँगी। तुम सुनो, लेकिन फैसला मत करो। खड़े रहो और चुप रहो। मैं तुम्हें सब कुछ नहीं बताऊँगी। मैं तुम्हें केवल संक्षेप में बताऊँगी, बिना विस्तार के, और तुम चुप रहो। न कोई सवाल, न कोई हरकत। तुम सहमत हो? लेकिन, हे भगवान, मैं तुम्हारी आँखों का क्या करूँ? मुझे डर है कि तुम्हारी आँखें ही मुझे तुम्हारा फैसला बता देंगी, भले ही तुम कुछ न बोलो। ओह! मुझे डर लग रहा है! अलेयोशा, सुनो! इवान मुझे भागने का सुझाव देता है। मैं तुम्हें सारी बातें नहीं बताऊँगा: सब कुछ सोच-समझकर तय किया गया है; सब कुछ व्यवस्थित हो जाएगा। चुप रहो, फैसला मत करो। मुझे ग्रुशा के साथ अमेरिका जाना चाहिए। तुम जानते हो कि मैं ग्रुशा के बिना नहीं रह सकता! क्या होगा अगर वे उसे साइबेरिया मेरे साथ आने न दें? क्या कैदियों को शादी करने की इजाज़त होती है? इवान को नहीं लगता। और ग्रुशा के बिना मैं वहाँ ज़मीन के नीचे हथौड़े से क्या करूँगा? मैं तो बस हथौड़े से अपनी खोपड़ी ही तोड़ लूँगा! लेकिन, दूसरी तरफ, मेरा ज़मीर? मुझे तो दुख से भाग जाना चाहिए था। एक संकेत आया है, मैं उस संकेत को ठुकरा देता हूँ। मेरे पास मुक्ति का एक रास्ता है और मैं उससे मुँह मोड़ लेता हूँ। इवान कहता है कि अमेरिका में, 'सद्भावना के साथ,' मैं ज़मीन के नीचे रहने से ज़्यादा उपयोगी हो सकता हूँ। लेकिन ज़मीन के नीचे से हमारे भजन का क्या होगा? अमेरिका क्या है? अमेरिका फिर से व्यर्थ है! और मुझे लगता है कि अमेरिका में बहुत धोखाधड़ी भी होती है। मुझे तो सूली से भाग जाना चाहिए था! मैं तुमसे कहता हूँ, एलेक्सी, क्योंकि तुम ही हो जो इसे समझ सकते हो। और कोई नहीं। दूसरों के लिए यह सब मूर्खता है, पागलपन है, जो मैंने तुम्हें भजन के बारे में बताया है। वे कहेंगे कि मैं पागल हो गया हूँ या मूर्ख हूँ। मैं पागल नहीं हूँ और मूर्ख भी नहीं हूँ। इवान भी भजन के बारे में समझता है। वह समझता है, बस वह जवाब नहीं देता—वह बोलता नहीं। वह भजन में विश्वास नहीं करता। मत बोलो, मत बोलो। मैं देख रहा हूँ कि तुम कैसे दिख रहे हो! तुमने पहले ही फैसला कर लिया है। फैसला मत करो, मुझे छोड़ दो! मैं ग्रुशा के बिना नहीं रह सकता। मुकदमे के बाद तक इंतज़ार करो!
मित्या अपने आप पर काबू नहीं रख पाया। उसने अलेयोशा को दोनों हाथों से पकड़ रखा था।
उसके कंधे झुके हुए थे, और उसकी तड़पती हुई, बेचैन आँखें अपने भाई पर टिकी हुई थीं।
“वे कैदियों को शादी करने नहीं देते, है ना?” उसने तीसरी बार दोहराया।
विनती भरे स्वर में।
अलोशा ने अत्यंत आश्चर्य से सुना और वह बहुत भावुक हो गया। उसने कहा, "मुझे एक बात बताओ। क्या इवान इस विचार को लेकर बहुत उत्सुक है, और यह किसका विचार है?"
यह था?"
“यह उनका है, और वे इसके लिए बहुत उत्सुक हैं। वे पहले मुझसे मिलने नहीं आए थे।”
फिर वो अचानक एक हफ्ते पहले आया और उसने तुरंत इस बारे में बात शुरू कर दी। वो इसके लिए बहुत उत्सुक है। वो मुझसे पूछता नहीं, बल्कि मुझे भागने का हुक्म देता है। उसे मेरे आज्ञा मानने पर कोई शक नहीं

है, हालाँकि मैंने उसे अपने सारे दिल की बात बता दी है, जैसे मैंने तुम्हें बताई है, और उसे भजन के बारे में भी बताया है। उसने कहा कि वो इसका इंतज़ाम कर देगा; उसे सब पता चल गया है। लेकिन उस बारे में बाद में बात करेंगे। वो बस इस पर अड़ा हुआ है। सारा मामला पैसों का है: वो भागने के लिए दस हज़ार देगा और मुझे अमेरिका जाने के लिए बीस हज़ार देगा। और वो कहता है कि हम दस हज़ार में एक शानदार भागने का इंतज़ाम कर सकते हैं।
“और उसने तुम्हें मुझसे किसी भी हालत में न बताने के लिए कहा?” अलेयोशा ने फिर पूछा। “किसी को भी न बताने के लिए, और विशेष रूप से तुम्हें नहीं; किसी भी हालत में तुम्हें न बताने के लिए। वह
मुझे डर है, इसमें कोई शक नहीं, कि तुम मेरे सामने मेरी अंतरात्मा बनकर खड़ी हो जाओगी। उसे मत बताना कि मैंने तुम्हें बताया है। उसे बिल्कुल मत बताना।
“तुम सही कह रहे हो,” अलेयोशा ने कहा; “निर्णय लेना असंभव है।”
मुकदमे की सुनवाई खत्म होने से पहले कुछ भी मत सोचो। सुनवाई के बाद तुम खुद फैसला करोगे। फिर तुम अपने अंदर के उस नए इंसान को पाओगे और वही फैसला करेगा।
“एक नया आदमी, या एक बर्नार्ड जो बर्नार्ड की तरह फैसला करेगा, क्योंकि मेरा मानना है कि मैं हूँ
"मैं खुद एक नीच बर्नार्ड हूँ," मित्या ने कड़वी मुस्कान के साथ कहा।
“लेकिन भाई, क्या तुम्हें बरी होने की कोई उम्मीद नहीं है?” मित्या ने घबराकर कंधे उचकाए और सिर हिलाया। “अल्योशा, प्यारे, अब तुम्हारे जाने का समय हो गया है,” उसने अचानक कहा।
जल्दी करो। “आंगन में अधीक्षक चिल्ला रहे हैं। वो अभी आते हैं। हमें देर हो गई है; यह अनियमित है। जल्दी से मुझे गले लगाओ। मुझे चूमो! मुझे क्रॉस का निशान बना दो, प्रिय, उस क्रॉस के लिए जो मुझे कल उठाना है।”
उन्होंने एक-दूसरे को गले लगाया और चुंबन किया।
"इवान," मित्या ने अचानक कहा, "मेरे भागने का सुझाव देता है; लेकिन, बेशक, वह मानता है कि मैंने ही ऐसा किया है।"
उसके होठों पर एक उदास मुस्कान आ गई।
“क्या तुमने उससे पूछा है कि क्या वह इस पर विश्वास करता है?” अलेयोशा ने पूछा। “नहीं, मैंने नहीं पूछा। मैं पूछना चाहता था, लेकिन नहीं कर सका। मुझमें हिम्मत नहीं थी। लेकिन मैं
मैंने इसे उसकी आँखों से देखा। अच्छा, अलविदा!
उन्होंने एक बार फिर जल्दबाजी में चुंबन किया, और अलेयोशा बस बाहर जाने ही वाला था कि
मित्या ने अचानक उसे वापस फोन किया।
“मेरे सामने खड़े हो जाओ! ठीक है!” और उसने फिर से अलेयोशा को पकड़ लिया और उसे खड़ा कर दिया। दोनों हाथ कंधों पर रखे हुए। उसका चेहरा अचानक पीला पड़ गया, इतना कि बढ़ती हुई अंधेरे में भी वह भयावह रूप से स्पष्ट दिखाई दे रहा था। उसके होंठ फड़फड़ाए, उसकी निगाहें अलेयोशा पर टिकी हुई थीं।
“अलोशा, मुझे पूरी सच्चाई बताओ, जैसे तुम ईश्वर के सामने बताते हो। क्या तुम
“क्या आपको विश्वास है कि मैंने यह किया? क्या आपको, क्या आपको स्वयं पर विश्वास है? पूरा सच बताओ, झूठ मत बोलो!” वह हताशा से चिल्लाया।
अलोशा के सामने सब कुछ हिलता हुआ सा लग रहा था, और उसे कुछ ऐसा महसूस हो रहा था जैसे... उसके दिल में छुरा घोंपा।
“चुप रहो! तुम्हारा क्या मतलब है?” वह असहाय होकर लड़खड़ाते हुए बोला। “पूरी सच्चाई बताओ, पूरी सच्चाई, झूठ मत बोलो!” मित्या ने दोहराया। “मैंने एक पल के लिए भी यह नहीं माना कि तुम हत्यारे हो!” अलोशा के सीने से कांपती हुई आवाज में उसने कहा, और उसने अपना दाहिना हाथ हवा में उठाया, मानो वह ईश्वर को अपने शब्दों का साक्षी बनने के लिए बुला रहा हो।
मित्या का पूरा चेहरा आनंद से दमक उठा था।
“धन्यवाद!” उसने धीमी आवाज़ में कहा, मानो एक आह भर रहा हो।
बेहोश होने के बाद, मित्या ने कहा, “अब तुमने मुझे नया जीवन दिया है। यकीन मानो, इस पल तक मैं तुमसे, तुमसे, यहाँ तक कि तुमसे भी कुछ माँगने से डरता रहा हूँ। चलो, जाओ! तुमने मुझे कल के लिए शक्ति दी है। भगवान तुम्हारा भला करे! आओ, जाओ! प्यार से, इवान!” ये मित्या के आखिरी शब्द थे।

अलोशा रोते हुए बाहर चला गया। मित्या पर इतना अविश्वास, इतनी कमी...
यहां तक कि अलेयोशा को भी विश्वास था—यह सब अचानक अलेयोशा के सामने उसके दुखी भाई की आत्मा में छिपी असीम पीड़ा और हताशा की एक अनपेक्षित गहराई को खोल बैठा। तीव्र, असीम करुणा ने उसे तुरंत घेर लिया। उसके टूटे हुए दिल में एक गहरा दर्द था। "इवान से प्यार करो!"—उसे अचानक मित्या के शब्द याद आ गए। और वह इवान के पास जा रहा था। वह पूरे दिन इवान को देखने के लिए बेताब था। वह मित्या के साथ-साथ इवान के बारे में भी उतना ही चिंतित था, और अब पहले से कहीं अधिक।

अध्याय 5

तुम नहीं, तुम नहीं!

इवान के घर जाते समय उसे उस घर के पास से गुज़रना पड़ा जहाँ कैटेरिना इवानोव्ना रहती थीं। खिड़कियों में रोशनी थी। वह अचानक रुक गया और अंदर जाने का फैसला किया। उसने एक हफ्ते से ज़्यादा समय से कैटेरिना इवानोव्ना को नहीं देखा था। लेकिन अब उसे लगा कि इवान उसके साथ हो सकता है, खासकर उस भयानक दिन की पूर्व संध्या पर। घंटी बजाते हुए और चीनी लालटेन की हल्की रोशनी में सीढ़ियाँ चढ़ते हुए, उसने एक आदमी को नीचे आते देखा, और मिलते ही उसने उसे अपने भाई के रूप में पहचान लिया। तो वह कैटेरिना इवानोव्ना के घर से ही आ रहा था।
“अरे, ये तो तुम हो,” इवान ने रूखेपन से कहा। “अच्छा, अलविदा! तुम जा रहे हो...”
उसकी?"
"हाँ।"
“मैं आपको ऐसा करने की सलाह नहीं देता; वह परेशान है और आप उसे और परेशान कर देंगे।” तभी ऊपर से एक दरवाजा ज़ोर से खुला और अचानक एक आवाज़ आई: “नहीं, नहीं! एलेक्सी फ्योदोरोविच, क्या आप उससे आए हैं?”
"हां, मैं उसके साथ रहा हूं।"
“क्या उसने मुझे कोई संदेश भेजा है? अलेयोशा, तुम ऊपर आओ, इवान।”
फ्योदोरोविच, आपको वापस आना ही होगा, अवश्य। क्या आप सुन रहे हैं?
कात्या की आवाज़ में इतना दृढ़ स्वर था कि इवान, कुछ देर बाद
एक पल की झिझक के बाद, उसने अलेयोशा के साथ वापस जाने का फैसला कर लिया।
“वह सुन रही थी,” उसने गुस्से में खुद से बुदबुदाया, लेकिन अलेयोशा ने सुन लिया।
यह।
इवान ने अंदर जाते हुए कहा, "माफ़ कीजिएगा, मैंने अपना ओवरकोट अभी तक पहन रखा है।"
ड्राइंग रूम में। “मैं नहीं बैठूंगा। मैं एक मिनट से ज्यादा नहीं रुकूंगा।”
“बैठ जाओ, एलेक्सी फ्योदोरोविच,” कैटेरिना इवानोव्ना ने कहा, हालाँकि वह
वह खड़ी रही। इस दौरान उसमें बहुत कम बदलाव आया था, लेकिन उसकी काली आँखों में एक अशुभ सी चमक थी। अलेयोशा को बाद में याद आया कि उस समय वह उसे विशेष रूप से सुंदर लगी थी।
“उसने आपसे मुझे क्या बताने को कहा?”

“सिर्फ एक बात,” अलेयोशा ने उसकी आँखों में सीधे देखते हुए कहा, “कि
आप खुद को बचा लेंगे और उस बात के मुकदमे में कुछ नहीं कहेंगे जो (वह थोड़ा उलझन में था) "...आप दोनों के बीच...आपकी पहली मुलाकात के समय...उस शहर में हुई थी।"
“अरे! उस पैसे के लिए तो मैं ज़मीन पर झुक गई थी!” वह फूट-फूटकर रोने लगी।
कड़वी हंसी। "क्यों, क्या वह मुझसे डर रहा है या खुद से? वह मुझसे किसे बख्शने के लिए कह रहा है? उसे या मुझे? बताओ, एलेक्सी फ्योदोरोविच!"
अलेयोशा उसे ध्यान से देख रहा था, समझने की कोशिश कर रहा था। "तुम और वह दोनों," उसने धीरे से उत्तर दिया।
“मुझे यह सुनकर खुशी हुई,” उसने चिढ़कर कहा, और अचानक
वह शरमा गई।
"तुम मुझे अभी तक नहीं जानते, एलेक्सी फ्योदोरोविच," उसने धमकी भरे लहजे में कहा।
और मुझे खुद भी अभी तक पता नहीं है। शायद कल मेरी परीक्षा के बाद आप मुझे पैरों तले रौंदना चाहेंगे।
“आप सम्मानपूर्वक अपनी गवाही देंगे,” अलेयोशा ने कहा; “बस इतना ही।”
जिसकी जरूरत है।
“महिलाएं अक्सर बेईमान होती हैं,” उसने गुस्से से कहा। “अभी एक घंटे पहले ही मैं
मुझे लगा कि उस राक्षस को छूने से भी डर लग रहा था... मानो वह कोई सरीसृप हो... लेकिन नहीं, वह मेरे लिए अभी भी एक इंसान है! लेकिन क्या उसने ही यह किया? क्या वही हत्यारा है?” वह अचानक, हिस्टीरिया में चिल्लाई और इवान की ओर मुड़ गई। अलेयोशा ने तुरंत देखा कि उसने इवान से यह सवाल पहले भी पूछा था, शायद उसके आने से ठीक पहले, और यह पहली बार नहीं बल्कि सौवीं बार था, और उनकी बात झगड़े पर खत्म हुई थी।
मैं स्मरद्याकोव से मिलने गया था... आपने ही मुझे राजी किया था।
“उसने अपने पिता की हत्या की थी। मैंने सिर्फ तुम पर ही विश्वास किया था!” वह इवान से बात करते हुए बोली। इवान ने उसे एक बनावटी मुस्कान दी। अलेयोशा उसकी आवाज़ सुनकर चौंक गया। उसे उनके बीच इतनी घनिष्ठता का अंदाज़ा नहीं था।
“खैर, इतना काफी है,” इवान ने बातचीत को बीच में ही रोकते हुए कहा। “मैं हूँ
मैं जा रहा हूँ। मैं कल आऊँगा।” और तुरंत मुड़कर वह कमरे से बाहर निकल गया और सीधे नीचे चला गया।
एक दबंग भाव से, कैटेरिना इवानोव्ना ने अलेयोशा को दोनों हाथों से पकड़ लिया।
हाथ।
“उसका पीछा करो! उसे पीछे छोड़ दो! उसे एक मिनट के लिए भी अकेला मत छोड़ो!”
उसने फुसफुसाते हुए जल्दी से कहा, “वह पागल है! क्या तुम्हें नहीं पता कि वह पागल है? उसे बुखार है, घबराहट का बुखार। डॉक्टर ने मुझे बताया है। जाओ, उसके पीछे भागो...”
अलियोशा उछलकर इवान के पीछे भागा, जो उससे पचास कदम से भी कम दूरी पर था।
उसे।
“तुम क्या चाहते हो?” यह देखकर वह अलेयोशा की ओर तेज़ी से मुड़ा कि वह
उसके पीछे दौड़ते हुए, उसने चिड़चिड़ाते हुए कहा, "उसने तुमसे कहा था कि मुझे पकड़ लो, क्योंकि मैं गुस्से में हूँ। मुझे सब कुछ मुंह ज़बानी याद है।"
“वह बेशक गलत है; लेकिन वह इस बात में सही है कि तुम बीमार हो,” उसने कहा।
अलेयोशा। “मैं अभी तुम्हारा चेहरा देख रहा था। तुम बहुत बीमार लग रहे हो, इवान।”
इवान बिना रुके चलता रहा। अलेयोशा उसके पीछे-पीछे गया। “और क्या तुम जानते हो, एलेक्सी फ्योदोरोविच, कि लोग किस हद तक चले जाते हैं?”
"कोई आपत्ति है?" इवान ने अचानक शांत स्वर में पूछा, जिसमें झुंझलाहट का कोई निशान नहीं था, बल्कि केवल सरल जिज्ञासा का भाव था।
नहीं, मुझे ऐसा नहीं लगता। मेरा मानना है कि पागलपन के भी कई प्रकार होते हैं।
और क्या कोई खुद को पागल होते हुए देख सकता है?
मुझे लगता है कि ऐसी परिस्थितियों में कोई व्यक्ति खुद को स्पष्ट रूप से नहीं देख पाता है।

अलोशा ने आश्चर्य से जवाब दिया।
इवान आधे मिनट के लिए रुका।
“अगर तुम मुझसे बात करना चाहते हो, तो कृपया विषय बदल लो,” उसने अचानक कहा। “ओह, जब तक मैं इस बारे में सोचता हूँ, मेरे पास तुम्हारे लिए एक पत्र है,” अलेयोशा ने झिझकते हुए कहा।
और उसने अपनी जेब से लीज़ का नोट निकाला और इवान को दे दिया। वे एक लैंपपोस्ट के ठीक नीचे खड़े थे। इवान ने लिखावट को तुरंत पहचान लिया।
“अरे, उस छोटे शैतान से!” वह शरारती हंसी हंसा, और बिना किसी हिचकिचाहट के
लिफाफा खोलकर उसने उसे टुकड़ों में फाड़ दिया और हवा में फेंक दिया। टुकड़े हवा से बिखर गए।
उन्होंने कहा, "मुझे लगता है कि वह अभी सोलह साल की भी नहीं हुई है और अभी से खुद को पेश कर रही है।"
तिरस्कारपूर्वक, वह फिर से सड़क पर चलने लगा।
“स्वयं को प्रस्तुत करने का तुम्हारा क्या मतलब है?” अलेयोशा ने हैरानी से कहा। “जैसे व्यभिचारी स्त्रियाँ स्वयं को प्रस्तुत करती हैं, वैसे ही।”
“इवान, तुम ऐसा कैसे कर सकते हो? तुम ऐसा कैसे कर सकते हो?” अलेयोशा ने दुखी स्वर में रोते हुए कहा।
आवाज: “वह एक बच्ची है; तुम एक बच्ची का अपमान कर रहे हो! वह बीमार है; वह बहुत बीमार है। वह शायद पागलपन की कगार पर भी है... मुझे उम्मीद थी कि तुमसे कुछ ऐसा सुनने को मिलेगा... जिससे उसकी जान बच सके।”
“मेरी तरफ से आपको कुछ भी सुनने को नहीं मिलेगा। अगर वह बच्ची है तो मैं उसकी नर्स नहीं हूँ।
चुप रहो, एलेक्सी। उसके बारे में बात करना बंद करो। मैं उसके बारे में सोच भी नहीं रहा हूँ।
वे एक पल के लिए फिर चुप हो गए।
वह अब पूरी रात ईश्वर की माता से प्रार्थना करेगी कि वह उसे रास्ता दिखाए।
“कल मुकदमे में कैसे व्यवहार करना है,” उन्होंने फिर से तीखे और गुस्से भरे लहजे में कहा।
“आप... आपका मतलब कैटेरिना इवानोवना से है?”
“हाँ। चाहे वो मित्या को बचाए या उसे बर्बाद कर दे। वो प्रकाश के लिए प्रार्थना करेगी।”
ऊपर से। आप जानते हैं, वह खुद फैसला नहीं कर पा रही है। उसे अभी फैसला करने का समय नहीं मिला है। वह मुझे अपनी नर्स मानती है। वह चाहती है कि मैं उसे लोरी सुनाऊं।
“कैटरीना इवानोव्ना तुमसे प्यार करती हैं, भाई,” अलेयोशा ने उदास होकर कहा।
"शायद; लेकिन मुझे उसमें कोई खास दिलचस्पी नहीं है।"
“वह तकलीफ में है। तुम कभी-कभी उससे ऐसी बातें क्यों कह देते हो जिससे उसे और तकलीफ होती है?”
“उसकी उम्मीद?” अलेयोशा ने दबी हुई शिकायत के साथ आगे कहा। “मुझे पता है कि आपने उसे उम्मीद दी है। इस तरह आपसे बात करने के लिए मुझे क्षमा करें,” उसने जोड़ा।
मैं उसके साथ वैसा व्यवहार नहीं कर सकता जैसा मुझे करना चाहिए—मुझे उससे पूरी तरह से रिश्ता तोड़कर उसे यह बात बता देनी चाहिए।
“सीधे-सीधे कह दो,” इवान ने चिड़चिड़ाते हुए कहा। “मुझे हत्यारे के फैसले का इंतज़ार करना होगा। अगर मैं अभी उससे रिश्ता तोड़ देता हूँ, तो वह कल मुकदमे में उस बदमाश को बर्बाद करके मुझसे बदला लेगी, क्योंकि वह उससे नफरत करती है और जानती है कि वह उससे नफरत करती है। यह सब झूठ है—झूठ पर झूठ! जब तक मैं उससे रिश्ता नहीं तोड़ता, वह उम्मीद बनाए रखेगी, और वह उस राक्षस को बर्बाद नहीं करेगी, यह जानते हुए कि मैं उसे मुसीबत से बाहर निकालना चाहता हूँ। काश, वह मनहूस फैसला आ जाए!”
अलेयोशा के मन में "हत्यारा" और "राक्षस" जैसे शब्द दर्दनाक रूप से गूंज रहे थे।
दिल।
"लेकिन वह मित्या को कैसे बर्बाद कर सकती है?" उसने इवान के शब्दों पर विचार करते हुए पूछा।
"वह ऐसा क्या सबूत दे सकती है जिससे मित्या बर्बाद हो जाए?"
“तुम्हें अभी यह पता नहीं है। उसके हाथों में एक दस्तावेज़ है।”
मित्या के स्वयं के लेखन से यह निर्णायक रूप से सिद्ध होता है कि उसने फ्योदोर पावलोविच की हत्या की थी।"

“यह असंभव है!” अलेयोशा चिल्लाया।
“यह असंभव क्यों है? मैंने खुद इसे पढ़ा है।”
“ऐसा कोई दस्तावेज़ हो ही नहीं सकता!” अलेयोशा ने उत्साहपूर्वक दोहराया। “ऐसा कोई दस्तावेज़ हो ही नहीं सकता।
ऐसा हो ही नहीं सकता, क्योंकि वो हत्यारा नहीं है। उसने मेरे पिता की हत्या नहीं की, उसने नहीं!
इवान अचानक रुक गया।
“तो फिर आपके अनुसार हत्यारा कौन है?” उसने स्पष्ट रूप से पूछा।
उदासीनता। उसकी आवाज में एक घमंडीपन का भाव भी था।
“तुम जानते हो कौन,” अलेयोशा ने धीमी, तीखी आवाज़ में कहा। “कौन? तुम्हारा मतलब उस पागल बेवकूफ, मिर्गी के रोगी के बारे में मिथक से है?”
स्मर्ड्याकोव?
अलेयोशा अचानक कांपने लगा। "तुम जानते हो कौन?", उसके मुंह से बेबसी से निकला। वह मुश्किल से बोल पा रहा था।
साँस लेना।
“कौन? कौन?” इवान लगभग गुस्से से चिल्लाया। उसका सारा संयम अचानक टूट गया।
गायब हो गया।
“मुझे सिर्फ एक बात पता है,” अलेयोशा ने लगभग फुसफुसाते हुए कहा, “यह
क्या आपकी हत्या नहीं हुई थी पिताजी?
“‘तुम नहीं’! ‘तुम नहीं’ से तुम्हारा क्या मतलब है?” इवान स्तब्ध रह गया। “पिताजी को तुमने नहीं मारा, तुमने नहीं!” अलेयोशा ने दृढ़ता से दोहराया।
आधे मिनट तक सन्नाटा छाया रहा।
“मुझे पता है मैंने नहीं किया। क्या तुम पागल हो रहे हो?” इवान ने फीकी, विकृत आँखों से कहा।
मुस्कुराई। उसकी निगाहें अलेयोशा पर टिकी हुई थीं। वे फिर से एक लैंपपोस्ट के नीचे खड़े थे।
“नहीं, इवान। तुमने खुद से कई बार कहा है कि तुम ही हो।”
मार डालनेवाला।"
“मैंने ऐसा कब कहा? मैं मॉस्को में था... मैंने ऐसा कब कहा?” इवान
वह बेबस होकर लड़खड़ा गया।
"जब आप अकेले थे, तब आपने खुद से कई बार ऐसा कहा है।"
“ये दो भयानक महीने,” अलेयोशा पहले की तरह ही शांत और स्पष्ट स्वर में बोलता रहा। फिर भी, अब वह मानो अपने बारे में नहीं, अपनी इच्छा से नहीं, बल्कि किसी अप्रतिरोध्य आदेश का पालन करते हुए बोल रहा था। “तुमने खुद पर आरोप लगाया है और खुद से स्वीकार किया है कि तुम ही हत्यारे हो, कोई और नहीं। लेकिन तुमने यह नहीं किया: तुम गलत हो; तुम हत्यारे नहीं हो। क्या तुम सुन रहे हो? यह तुमने नहीं किया! ईश्वर ने मुझे तुम्हें यह बताने के लिए भेजा है।”
वे दोनों चुप थे। यह चुप्पी पूरे एक मिनट तक बनी रही।
दोनों स्थिर खड़े थे, एक-दूसरे की आँखों में देख रहे थे। दोनों का चेहरा पीला पड़ गया था। अचानक इवान का पूरा शरीर कांपने लगा और उसने अलेयोशा का कंधा पकड़ लिया।
“तुम मेरे कमरे में आए थे!” उसने धीमी, कर्कश आवाज़ में कहा। “तुम वहाँ थे।”
रात में, जब वह आया... कबूल करो... क्या तुमने उसे देखा है, क्या तुमने उसे देखा है?
“तुम्हारा मतलब किससे है—मित्या से?” अलेयोशा ने अचंभित होकर पूछा। “उसे नहीं, धिक्कार है उस राक्षस को!” इवान उन्माद में चिल्लाया। “क्या तुम जानते हो?”
क्या आपको पता है कि वह मुझसे मिलने आता है? आपको कैसे पता चला? बोलो!
“ये कौन है! मुझे नहीं पता कि तुम किसके बारे में बात कर रहे हो,” अलेयोशा ने कहा।
वह डगमगाने लगा, और उसे चिंता होने लगी।
“हाँ, आपको पता है... वरना कैसे पता चल सकता है...? यह असंभव है कि आपको पता हो।”
पता नहीं।"

अचानक जैसे उसने खुद को रोका हो। वह स्थिर खड़ा हो गया और मानो...
चिंतन करते हुए, उसके होठों पर एक अजीब सी मुस्कान फैल गई।
“भाई,” अलेयोशा ने कांपती हुई आवाज़ में फिर से कहना शुरू किया, “मैंने यह बात कही है
तुम, क्योंकि तुम मेरी बात मानोगे, मुझे पता है। मैं तुमसे एक बार और हमेशा के लिए कहता हूँ, यह तुम्हारी गलती नहीं है। सुनो, एक बार और हमेशा के लिए! ईश्वर ने मेरे हृदय में यह बात डाली है कि मैं तुमसे यह कहूँ, भले ही इससे तुम इस क्षण से मुझसे नफरत करने लगो।
लेकिन अब तक इवान ने अपना आत्म-नियंत्रण वापस पा लिया था। "एलेक्सी फ्योदोरोविच," उसने ठंडी मुस्कान के साथ कहा, "मैं इसे सहन नहीं कर सकता।"
पैगंबरों और मिर्गी के रोगियों—खासकर ईश्वर के दूतों—और आप यह भली-भांति जानते हैं। मैं इस क्षण से और शायद हमेशा के लिए आपसे सभी संबंध तोड़ता हूँ। मैं आपसे विनती करता हूँ कि आप मुझे इस मोड़ पर छोड़ दें। यह आपके ठहरने का रास्ता भी है। आज मेरे पास आने में आपको विशेष सावधानी बरतनी चाहिए! क्या आप सुन रहे हैं?
वह मुड़ा और दृढ़ कदमों से आगे बढ़ गया, पीछे मुड़कर नहीं देखा। “भाई,” अलेयोशा ने उसे पुकारा, “अगर आज तुम्हें कुछ हो गया तो...”
सबसे पहले मेरी ओर मुड़ो!
लेकिन इवान ने कोई जवाब नहीं दिया। अलेयोशा क्रॉस के पास लगे दीपक के नीचे खड़ा रहा।
इवान अंधेरे में ओझल हो जाने तक सड़कों पर चलता रहा। फिर वह मुड़ा और धीरे-धीरे घर की ओर चल पड़ा। अलेयोशा और इवान दोनों किराए के मकानों में रहते थे; उनमें से कोई भी फ्योदोर पावलोविच के खाली घर में रहने को तैयार नहीं था। अलेयोशा के पास कुछ कामगारों के घर में एक सुसज्जित कमरा था। इवान उससे कुछ दूरी पर रहता था। उसने एक संपन्न महिला, जो एक अधिकारी की विधवा थी, के आलीशान घर से लगा हुआ एक बड़ा और आरामदायक कमरा किराए पर लिया था। लेकिन उसकी इकलौती नौकरानी एक बहरी और गठिया से पीड़ित बूढ़ी औरत थी जो हर शाम छह बजे सोती और सुबह छह बजे उठती थी। इवान हाल ही में अपनी सुख-सुविधाओं के प्रति काफी उदासीन हो गया था और अकेले रहना उसे बहुत पसंद था। वह अपने एक ही कमरे में सब कुछ खुद ही करता था और अपने घर के दूसरे कमरों में शायद ही कभी जाता था।
वह घर के द्वार पर पहुंचा और घंटी पर हाथ रखा ही था कि तभी...
अचानक रुक गया। उसे लगा जैसे वह क्रोध से कांप रहा हो। अचानक उसने घंटी छोड़ दी, गाली देते हुए पीछे मुड़ा और तेज़ी से विपरीत दिशा में चल पड़ा। वह डेढ़ मील चलकर एक छोटे, ढलानदार, लकड़ी के घर तक पहुँचा, जो लगभग झोपड़ी जैसा था। वहाँ मार्या कोंद्रत्येवना रह रही थी, जो उसकी पड़ोसी थी और फ्योदोर पावलोविच की रसोई में सूप पीने आती थी। स्मरद्याकोव ने कभी उसे अपने गीत सुनाए थे और गिटार बजाया था। उसने अपना छोटा सा घर बेच दिया था और अब अपनी माँ के साथ यहाँ रह रही थी। स्मरद्याकोव, जो बीमार था—लगभग मरणासन्न—फ्योदोर पावलोविच की मृत्यु के बाद से उनके साथ ही था। इवान अब उसी के पास जा रहा था, एक अचानक और अनवरत प्रेरणा से खिंचा चला।

अध्याय 6

स्मरद्याकोव के साथ पहला साक्षात्कार

मॉस्को से लौटने के बाद इवान तीसरी बार स्मरद्याकोव से मिलने गया था। पहली बार जब वह उनसे मिला और बात की, तो वह उनके आगमन के पहले दिन था, फिर दो सप्ताह बाद वह उनसे दोबारा मिलने गया। लेकिन उनकी मुलाकातें उस दूसरी मुलाकात के साथ ही समाप्त हो गईं, इसलिए अब एक महीने से अधिक समय हो गया था जब उन्होंने उन्हें देखा था। और उनके बारे में उसे शायद ही कुछ पता चला था।
इवान अपने पिता की मृत्यु के पाँच दिन बाद ही लौटा था, इसलिए वह
वह अंतिम संस्कार में उपस्थित नहीं थे, जो उनके लौटने से एक दिन पहले हुआ था। उनकी देरी का कारण यह था कि अलेयोशा को उनका मॉस्को का पता नहीं पता था, इसलिए उन्हें कैटेरिना इवानोव्ना से उन्हें टेलीग्राम भेजने का अनुरोध करना पड़ा। कैटेरिना को भी उनका पता नहीं पता था, इसलिए उन्होंने अपनी बहन और चाची को टेलीग्राम भेजा, यह सोचकर कि इवान मॉस्को पहुँचते ही उनसे मिलने जाएंगे। लेकिन वे अपने आगमन के चार दिन बाद तक उनसे मिलने नहीं गए। जब उन्हें टेलीग्राम मिला, तब तक वे तुरंत हमारे शहर के लिए रवाना हो चुके थे। सबसे पहले उनसे अलेयोशा मिले, और इवान यह देखकर बहुत आश्चर्यचकित हुए कि शहर की आम राय के विपरीत, उन्होंने मित्या पर संदेह करने से इनकार कर दिया और खुलेआम स्मेरद्याकोव को हत्यारा बताया। बाद में, पुलिस कप्तान और अभियोक्ता से मिलने और आरोप और गिरफ्तारी का विवरण सुनने के बाद, वे अलेयोशा पर और भी अधिक आश्चर्यचकित हुए, और उनके इस विचार का कारण केवल मित्या के प्रति उनकी अतिरंजित भाईचारे की भावना और सहानुभूति को माना, जिससे अलेयोशा, जैसा कि इवान जानते थे, बहुत स्नेह करते थे।
वैसे, आइए इवान की भावनाओं को उसके भाई तक पहुँचाने के लिए कुछ शब्द कहें।
दिमित्री। वह उसे बिल्कुल नापसंद करता था, ज़्यादा से ज़्यादा कभी-कभार उसके लिए दया भाव रखता था, और वह भी घोर तिरस्कार, लगभग घृणा से भरा हुआ था। मित्या का पूरा व्यक्तित्व, यहाँ तक कि उसका रूप-रंग भी, उसे बेहद अरुचिकर लगता था। इवान अपने भाई के प्रति कैटेरिना इवानोव्ना के प्रेम को देखकर आक्रोशित था। फिर भी, वह अपने आगमन के पहले ही दिन मित्या से मिलने गया, और उस मुलाकात ने उसके अपराध के बारे में इवान के विश्वास को हिलाने के बजाय और भी मज़बूत कर दिया। उसने अपने भाई को बेचैन और घबराया हुआ पाया। मित्या बातूनी तो था, लेकिन बहुत ही खोया-खोया और अस्पष्ट बातें कर रहा था। उसने हिंसक भाषा का प्रयोग किया, स्मेरद्याकोव पर आरोप लगाए, और बुरी तरह उलझन में था। उसने मुख्य रूप से तीन हज़ार रूबल के बारे में बात की, जिसके बारे में उसने कहा कि उसके पिता ने उससे "चुरा लिया" था।
“पैसा मेरा था, मेरा पैसा था,” मित्या बार-बार दोहराता रहा। “यहाँ तक कि
अगर मैंने इसे चुराया होता, तो मुझे ऐसा करने का अधिकार होना चाहिए था।"
उन्होंने अपने खिलाफ सबूतों का शायद ही विरोध किया, और अगर उन्होंने इसे पलटने की कोशिश की तो... अपने फायदे के लिए, उसने यह सब बेतुके और असंगत तरीके से किया। ऐसा लग रहा था मानो वह इवान या किसी और के सामने अपना बचाव करना ही नहीं चाहता हो। बल्कि इसके विपरीत, वह अपने ऊपर लगे आरोपों से क्रोधित और घमंडी था; वह लगातार भड़क रहा था और हर किसी को गाली दे रहा था। उसने खुले दरवाजे के बारे में ग्रिगोरी के बयान पर केवल तिरस्कारपूर्वक हँसा और कहा कि "शैतान ने इसे खोला है।" लेकिन वह इस तथ्य का कोई तर्कसंगत स्पष्टीकरण नहीं दे सका। यहाँ तक कि अपनी पहली मुलाकात के दौरान उसने इवान का अपमान भी कर दिया, उसे तीखे शब्दों में कहा कि जो लोग यह कहते हैं कि "सब कुछ जायज़ है," उन्हें उस पर शक करने और सवाल उठाने का अधिकार नहीं है। कुल मिलाकर, उस मौके पर वह इवान के साथ बिल्कुल भी दोस्ताना नहीं था। मित्या के साथ उस मुलाकात के तुरंत बाद, इवान पहली बार स्मरद्याकोव से मिलने गया।
मॉस्को से लौटते समय रेलगाड़ी में वह लगातार यही सोचता रहा।

स्मरद्याकोव और उनके जाने से एक शाम पहले उनसे हुई आखिरी बातचीत के बारे में इवान को बहुत कुछ समझ नहीं आया। कई बातें उसे उलझन भरी और संदिग्ध लगीं। लेकिन जब उसने जांच वकील को अपना बयान दिया, तो उसने उस बातचीत के बारे में फिलहाल कुछ नहीं कहा। उसने इसे तब तक के लिए टाल दिया जब तक वह स्मरद्याकोव से नहीं मिल लेता, जो उस समय अस्पताल में भर्ती थे।
डॉक्टर हर्ज़ेनस्टुबे और वारविंस्की, जिनसे उनकी मुलाकात अस्पताल में हुई थी,
इवान के लगातार सवालों के जवाब में, उन्होंने आत्मविश्वास से कहा कि स्मरद्याकोव का मिर्गी का दौरा पूरी तरह से वास्तविक था, और इवान के यह पूछने पर वे वास्तव में आश्चर्यचकित थे कि क्या वह उस दिन नाटक तो नहीं कर रहे थे। उन्होंने उसे समझाया कि यह दौरा एक असाधारण घटना थी, दौरे लगातार कई बार दोहराए गए, जिससे रोगी का जीवन वास्तव में खतरे में था, और अब, उपचार करने के बाद ही वे विश्वासपूर्वक कह सकते हैं कि रोगी बच जाएगा। डॉक्टर हर्ज़ेनस्टुबे ने आगे कहा, "हालांकि यह संभव है कि उसकी मानसिक क्षमता काफी समय के लिए, या शायद स्थायी रूप से, प्रभावित हो जाए।" इवान के अधीरता से यह पूछने पर कि क्या इसका मतलब यह है कि वह अब पागल हो गया है, उन्होंने उसे बताया कि अभी ऐसा पूरी तरह से नहीं है, लेकिन कुछ असामान्य लक्षण दिखाई दे रहे हैं। इवान ने स्वयं पता लगाने का फैसला किया कि वे असामान्य लक्षण क्या थे।
अस्पताल पहुँचते ही उन्हें मरीज़ से मिलने की अनुमति मिल गई। स्मर्ज्याकोव एक अलग वार्ड में एक छोटे से पलंग पर लेटे हुए थे। कमरे में केवल एक और पलंग था, और उस पर कस्बे का एक व्यापारी लेटा हुआ था, जो जलोदर रोग से ग्रस्त था और स्पष्ट रूप से मृत्यु के कगार पर था; वह उनकी बातचीत में कोई बाधा नहीं बन सकता था। इवान को देखकर स्मर्ज्याकोव ने अनिश्चित मुस्कान दी और पहली नज़र में घबराए हुए लग रहे थे। कम से कम इवान को तो ऐसा ही लगा। लेकिन यह क्षणिक ही था। इसके विपरीत, बाकी समय स्मर्ज्याकोव की शांति देखकर इवान अचंभित रह गए। पहली नज़र में ही इवान को कोई संदेह नहीं था कि वह बहुत बीमार हैं। वह बहुत कमज़ोर थे; वह धीरे-धीरे बोलते थे, मानो अपनी जीभ को बड़ी मुश्किल से हिला पा रहे हों; वह बहुत दुबले-पतले और पीले पड़ गए थे। बीस मिनट तक चली मुलाकात के दौरान, वह लगातार सिरदर्द और अपने सभी अंगों में दर्द की शिकायत करते रहे। उनका पतला, नपुंसक चेहरा बहुत छोटा सा लग रहा था; उनके बाल बिखरे हुए थे, और सामने की घुंघराली लटें एक पतले गुच्छे की तरह खड़ी थीं। लेकिन बाईं आंख में, जो सिकुड़ी हुई थी और मानो कुछ इशारा कर रही हो, स्मरद्याकोव ने अपना रूप नहीं बदला। "एक चतुर व्यक्ति से बात करना हमेशा फायदेमंद होता है।" इवान को यह बात तुरंत याद आ गई। वह उसके पैरों के पास रखी कुर्सी पर बैठ गया। स्मरद्याकोव ने बड़ी मुश्किल से बिस्तर पर अपनी स्थिति बदली, लेकिन बोलने वाला वह पहला व्यक्ति नहीं था। वह चुप रहा और उसे कोई खास दिलचस्पी भी नहीं दिखी।
इवान ने पूछा, "क्या आप मुझसे बात कर सकते हैं? मैं आपको ज्यादा नहीं थकाऊंगा।"
“ज़रूर कर सकता हूँ,” स्मर्ज्याकोव ने धीमी आवाज़ में कहा। “क्या महाराज को लौटे हुए काफ़ी समय हो गया है?” उसने बड़े ही शिष्टतापूर्ण लहजे में पूछा, मानो
एक घबराए हुए आगंतुक को प्रोत्साहित करना।
“मैं तो आज ही आया हूँ... और यहाँ तुम्हारी ये हालत देखकर मुझे बहुत दुख हुआ है।” स्मर्ज्याकोव ने आह भरी।
“तुम आहें क्यों भर रहे हो, तुम्हें तो सब पता था?” इवान ने अचानक कहा। स्मर्ज्याकोव कुछ देर तक खामोश रहा।
मुझे कैसे पता था? यह तो पहले से ही स्पष्ट था। लेकिन मैं कैसे जान सकता था?
क्या आपको पता था कि ऐसा होगा?
“परिणाम क्या होगा? टालमटोल मत करो! तुमने पहले ही कह दिया था कि तुम्हारे पास एक होगा।”
ठीक है; तहखाने की ओर नीचे जाते समय, आप जानते हैं। आपने बिल्कुल उसी जगह का जिक्र किया था।
"क्या आपने परीक्षा में ऐसा कहा है?" स्मर्ज्याकोव ने पूछा।
संयम।
इवान को अचानक गुस्सा आ गया।
“नहीं, मैंने अभी तक नहीं किया है, लेकिन मैं ज़रूर करूँगा। आपको बहुत कुछ समझाना होगा।”

मैं, मेरे दोस्त; और मैं आपको बता दूं, मैं आपको मेरे साथ खेलने नहीं दूंगी!
“जब मैं तुम पर पूरा भरोसा करता हूँ, तो मैं तुम्हारे साथ क्यों खेलूँ?”
"सर्वशक्तिमान ईश्वर?" स्मर्ड्याकोव ने उसी संयम के साथ कहा, केवल एक क्षण के लिए अपनी आँखें बंद करते हुए।
“सबसे पहले तो,” इवान ने कहना शुरू किया, “मुझे पता है कि मिर्गी के दौरे को बताया नहीं जा सकता।” पहले से। मैंने पूछताछ कर ली है; मुझे बेवकूफ बनाने की कोशिश मत करो। तुम दिन और घंटे का पहले से अनुमान नहीं लगा सकते। तुमने मुझे दिन और घंटे के बारे में पहले से कैसे बताया, और तहखाने के बारे में भी? अगर तुमने जानबूझकर दौरे का नाटक नहीं किया, तो तुम्हें कैसे पता चला कि तुम दौरे के कारण तहखाने की सीढ़ियों से गिर जाओगे?
"मुझे वैसे भी तहखाने में जाना पड़ता था, दिन में कई बार, सचमुच।"
स्मर्ड्याकोव ने जानबूझकर धीमी आवाज़ में कहा, “ठीक एक साल पहले मैं अटारी से इसी तरह गिर गया था। यह बिल्कुल सच है कि आप दौरे का दिन और समय पहले से नहीं बता सकते, लेकिन आपको हमेशा इसका पूर्वाभास हो सकता है।”
लेकिन आपने तो दिन और घंटे की भविष्यवाणी कर दी थी!
“महोदय, मेरी मिर्गी के बारे में, बेहतर होगा कि आप इस बारे में पूछताछ करें...”
यहां डॉक्टर मौजूद हैं। आप उनसे पूछ सकते हैं कि यह वाकई दौरा था या सिर्फ दिखावा; इस बारे में और कुछ कहने का कोई फायदा नहीं है।
और तहखाना? तहखाने के बारे में आपको पहले से कैसे पता चल सकता था?
“लगता है तुम उस तहखाने को पार नहीं कर पा रहे हो! जब मैं नीचे जा रहा था...”
तहखाने में, मैं भयानक भय और संदेह से ग्रस्त था। मुझे सबसे ज़्यादा डर इस बात का था कि मैं तुम्हें खो दूँगा और दुनिया में बिना किसी बचाव के रह जाऊँगा। इसलिए मैं तहखाने में यह सोचते हुए गया, 'यहाँ, यह सीधे मुझ पर हमला करेगा, यह सीधे मुझ पर वार करेगा, क्या मैं गिर जाऊँगा?' और इसी डर के कारण मुझे अचानक वह ऐंठन महसूस हुई जो हमेशा होती है... और मैं उड़ गया। यह सब और पिछली शाम द्वार पर तुमसे हुई मेरी सारी बातचीत, जब मैंने तुम्हें बताया था कि मैं कितना डरा हुआ था और तहखाने के बारे में बात की थी, मैंने यह सब डॉक्टर हर्ज़ेनस्टुबे और जांच वकील निकोले पारफेनोविच को बताया था, और यह सब प्रोटोकॉल में लिखा गया है। और यहाँ के डॉक्टर, श्री वारविंस्की ने उन सभी से कहा कि यह सिर्फ़ इसके बारे में सोचने मात्र से, इस आशंका से हुआ कि मैं गिर सकता हूँ। ठीक उसी समय मुझे दौरा पड़ा। और इसलिए उन्होंने इसे लिख लिया है कि यह बस इसी तरह हुआ होगा, सिर्फ़ मेरे डर से।
अपनी बात खत्म करते ही स्मरद्याकोव ने गहरी सांस ली, मानो वह थक गया हो। "तो क्या तुमने अपनी गवाही में ये सब कह दिया है?" इवान ने कुछ हिचकिचाहट के साथ कहा।
स्तब्ध।
उसका इरादा उन्हें डराने का था, ताकि वे उनके द्वारा दोहराई गई घटना को दोहरा न दें।
बातचीत हुई, और ऐसा प्रतीत हुआ कि स्मर्ड्याकोव ने यह सब खुद ही बता दिया था।
मुझे किस बात का डर है? उन्हें पूरी सच्चाई लिख डालने दो।
स्मर्ड्याकोव ने दृढ़ता से उच्चारण किया।
"और क्या आपने उन्हें द्वार पर हुई हमारी बातचीत का हर शब्द बताया है?"
नहीं, हर एक शब्द कहना नहीं है।
और क्या तुमने उन्हें बताया था कि तुम नखरे करने का नाटक कर सकते हो, जैसा कि तुमने तब शेखी मारी थी?
नहीं, मैंने उन्हें यह बात भी नहीं बताई थी।
"अब मुझे बताओ, तुमने मुझे चेरमाश्न्या क्यों भेजा?"
मुझे डर था कि तुम मॉस्को चले जाओगे; चेरमाश्न्या पास है।
फिर भी।"
“तुम झूठ बोल रहे हो; तुमने खुद मुझे जाने का सुझाव दिया था; तुमने ही मुझसे कहा था कि मुसीबत के रास्ते से हट जाओ।

“यह सब बस स्नेह और आपके प्रति मेरी सच्ची निष्ठा के कारण था।”
घर में आने वाली मुसीबत को भांपते हुए, मैंने तुम्हें बचाने के लिए ऐसा किया। लेकिन मैं खुद को उससे भी ज्यादा बचाना चाहता था। इसीलिए मैंने तुमसे कहा कि तुम खतरे से दूर रहो, ताकि तुम समझ जाओ कि घर में मुसीबत आने वाली है, और अपने पिता की रक्षा के लिए घर पर ही रहो।
“तुम सीधे-सीधे कह सकते थे, बेवकूफ!” इवान अचानक बोला
जल उठना।
“तब मैं इसे और सीधे शब्दों में कैसे कह सकता था? यह बस मेरा डर था कि
मुझे बोलने पर मजबूर होना पड़ा, और शायद आपको भी गुस्सा आया होगा। मुझे डर था कि दिमित्री फ्योदोरोविच हंगामा करेगा और वह पैसा लेकर भाग जाएगा, क्योंकि वह उसे अपना ही समझता था, लेकिन कौन सोच सकता था कि इसका अंत इस तरह की हत्या में होगा? मैंने सोचा था कि वह मालिक के गद्दे के नीचे लिफाफे में रखे तीन हजार ही ले जाएगा, और देखिए, उसने उसकी हत्या कर दी। आप भी इसका अंदाज़ा कैसे लगा सकते थे, महोदय?
लेकिन अगर आप खुद कहते हैं कि इसका अनुमान नहीं लगाया जा सकता था, तो मैं कैसे लगा सकता था?
"अंदाजा लगाया और घर पर ही रहे? तुम खुद अपनी बात का खंडन कर रहे हो!" इवान ने सोचते हुए कहा।
"आपको शायद मेरे द्वारा आपको चेरमाश्न्या भेजने से यह अंदाजा लग गया होगा और
मॉस्को नहीं।
मैं इससे यह कैसे अनुमान लगा सकता था?
स्मर्ज्याकोव काफी थका हुआ लग रहा था, और वह फिर से कुछ देर चुप रहा।
मिनट।
"मैंने आपसे न जाने के लिए कहा था, इससे आपको शायद अंदाजा हो गया होगा कि..."
मैंने तुम्हें मॉस्को भेजा था, लेकिन चेरमाश्न्या को, कि मैं तुम्हें पास रखना चाहती थी, क्योंकि मॉस्को बहुत दूर है, और दिमित्री फ्योदोरोविच, यह जानते हुए कि तुम पास ही हो, इतनी हिम्मत नहीं करेगा। और अगर कुछ हो जाता, तो तुम मेरी रक्षा के लिए भी आ सकते थे, क्योंकि मैंने तुम्हें ग्रिगोरी वासिलीविच की बीमारी के बारे में चेतावनी दी थी, और यह भी बताया था कि मुझे दौरा पड़ने का डर है। और जब मैंने तुम्हें उन दस्तक के बारे में बताया, जिनके ज़रिए कोई मृतक के पास जा सकता था, और यह कि दिमित्री फ्योदोरोविच को मेरे ज़रिए उन सबके बारे में पता चल गया था, तो मुझे लगा कि तुम खुद ही समझ जाओगे कि वह ज़रूर कुछ करेगा, और इसलिए चेरमाश्न्या भी नहीं जाओगे, बल्कि यहीं रुक जाओगे।
इवान ने सोचा, "वह बहुत ही सुसंगत ढंग से बोलता है, हालांकि वह कभी-कभी अस्पष्ट बोलता है।"
हर्ज़ेनस्टुबे ने जिस मानसिक विकार की बात की थी, वह क्या है?
“तुम मुझसे चालाकी कर रहे हो, धिक्कार है तुम पर!” उसने गुस्से में कहा। “लेकिन उस समय मुझे लगा था कि तुमने सही अनुमान लगा लिया था,” स्मर्ज्याकोव ने बात को टालते हुए कहा।
सबसे सरल हवा के साथ।
“अगर मुझे पहले से पता होता, तो मैं वहीं रुक जाता,” इवान रोते हुए बोला। “क्यों, मुझे लगा कि तुम्हारे अनुमान के कारण ही तुम चले गए थे।”
इतनी जल्दबाजी, सिर्फ मुसीबत से निकलने के लिए, सिर्फ डर के मारे भाग जाने और खुद को बचाने के लिए।"
"क्या तुम्हें लगता है कि हर कोई तुम्हारी तरह ही कायर है?"
मुझे माफ कर दीजिए, मुझे लगा कि आप भी मेरी तरह हैं।
“बेशक, मुझे अंदाजा लगा लेना चाहिए था,” इवान ने घबराहट में कहा; “और मैंने लगा भी लिया था।”
लगता है तुम्हारी तरफ से कोई शरारत चल रही थी... लेकिन तुम झूठ बोल रहे हो, फिर से झूठ बोल रहे हो,” वह अचानक याद करते हुए चिल्लाया। “तुम्हें याद है कैसे तुम गाड़ी के पास गए थे और मुझसे कहा था, ‘एक चतुर व्यक्ति से बात करना हमेशा फायदेमंद होता है’? तो तुम खुश थे कि मैं चला गया, क्योंकि तुमने मेरी तारीफ की थी?”
स्मर्ज्याकोव ने बार-बार आह भरी। उसके चेहरे पर थोड़ी सी रौनक लौट आई।
चेहरा।

“अगर मैं खुश था,” उन्होंने कुछ हांफते हुए कहा, “तो बस यही बात थी।”
क्योंकि तुम मॉस्को न जाकर चेरमाश्न्या जाने के लिए राजी हो गए थे। वैसे भी वो पास ही था। लेकिन जब मैंने तुमसे ये बातें कही थीं, तो तारीफ के तौर पर नहीं, बल्कि फटकार के तौर पर। तुम समझ नहीं पाए।
“कौन सी निंदा?”
“तुमने ऐसी विपत्ति को भांपते हुए अपने पिता को क्यों त्याग दिया?”
और वे हमारी रक्षा नहीं करते, क्योंकि मुझे किसी भी समय उन तीन हजार की चोरी के आरोप में गिरफ्तार किया जा सकता था।"
“तुम्हें धिक्कार है!” इवान ने फिर से गाली दी। “रुको, क्या तुमने अभियोक्ता को बताया और
क्या जांच करने वाले वकील ने उन दस्तक के बारे में बताया था?
मैंने उन्हें सब कुछ वैसे ही बता दिया जैसा था।
इवान ने मन ही मन फिर से सोचना शुरू किया।
“अगर मैंने उस समय कुछ सोचा भी था,” उसने फिर से कहना शुरू किया, “तो वह केवल किसी और चीज़ के बारे में था।”
यह तुम्हारी ओर से दुष्टता है। दिमित्री उसे मार सकता था, लेकिन वह चोरी करेगा—मुझे तब इस पर विश्वास नहीं था... लेकिन मैं तुमसे किसी भी प्रकार की दुष्टता के लिए तैयार था। तुमने खुद मुझसे कहा था कि तुम नखरे का नाटक कर सकते हो। तुमने ऐसा क्यों कहा था?
"यह सब मेरी सादगी के कारण था, और मैंने कभी भी दिखावटी गुस्सा नहीं दिखाया।"
मेरे जीवन का उद्देश्य। और मैंने तब तो बस तुम्हें शेखी बघारने के लिए ऐसा कहा था। यह सरासर मूर्खता थी। मैं तुम्हें तब बहुत पसंद करता था और तुम्हारे प्रति बहुत खुले दिल का था।
"मेरा भाई सीधे तौर पर आप पर हत्या और चोरी का आरोप लगाता है।"
"उसके पास करने के लिए और क्या बचा है?" स्मर्ड्याकोव ने कड़वी मुस्कान के साथ कहा।
“और उसके खिलाफ इतने सारे सबूतों के बावजूद कौन उस पर विश्वास करेगा? ग्रिगोरी वासिलीविच ने दरवाजा खुला देखा। उसके बाद वह क्या कह सकता है? लेकिन उसे छोड़ो! वह खुद को बचाने के लिए कांप रहा है।”
वह धीरे-धीरे चुप हो गया; फिर अचानक, मानो कुछ सोच-विचार करने के बाद,
जोड़ा गया:
और यहाँ फिर से देखो। वह इसे मुझ पर थोपना चाहता है और यह जताना चाहता है कि यह
मेरे हाथों का काम—ये तो मैं पहले ही सुन चुका हूँ। लेकिन जहाँ तक मेरे नाटक करने की चतुराई की बात है: अगर सच में मेरे मन में तुम्हारे पिता के खिलाफ ऐसी कोई योजना होती, तो क्या मुझे तुम्हें पहले से बताना चाहिए था कि मैं नाटक कर सकता हूँ? अगर मैं ऐसी हत्या की योजना बना रहा होता, तो क्या मैं इतना मूर्ख हो सकता था कि पहले से ही अपने खिलाफ ऐसी गवाही दे देता? और वो भी उनके बेटे को! कसम से! क्या ऐसा हो सकता है? ऐसा तो कभी हुआ ही नहीं। अब हमारी ये बातें कोई नहीं सुन रहा, सिवाय स्वयं ईश्वर के, और अगर तुम ये बात अभियोक्ता और निकोले पार्फेनोविच को बता दो, तो तुम ऐसा करके मेरा पूरी तरह बचाव कर सकते हो, क्योंकि भला कौन ऐसा अपराधी होगा जो पहले से ही इतना खुले दिल का हो? ये तो हर कोई देख सकता है।
“अच्छा,” और इवान बातचीत को बीच में ही रोकने के लिए उठ खड़ा हुआ, वह इस बात से हैरान था कि स्मरद्याकोव का अंतिम कथन: “मुझे आप पर ज़रा भी शक नहीं है, और वास्तव में आप पर शक करना बेतुका है। इसके विपरीत, आपने मेरा मन शांत कर दिया, इसके लिए मैं आपका आभारी हूँ। अब मैं जा रहा हूँ, लेकिन फिर आऊँगा। तब तक के लिए अलविदा। जल्दी स्वस्थ हो जाओ। क्या आपको कुछ चाहिए?”
मैं हर चीज के लिए बहुत आभारी हूं। मार्फा इग्नात्येवना इसे कभी नहीं भूलतीं।
वह मेरी मदद करती है और अपनी दयालुता के अनुसार मुझे मेरी हर इच्छा पूरी करती है। अच्छे लोग हर दिन मुझसे मिलने आते हैं।
अलविदा। लेकिन मैं तुम्हारे नाटक करने की क्षमता के बारे में कुछ नहीं कहूंगा।
और मैं आपको भी ऐसा करने की सलाह नहीं देता,” इवान ने अचानक कहा।
मैं अच्छी तरह समझता हूँ। और अगर आप इस बारे में बात नहीं करेंगे, तो मैं कुछ नहीं कहूँगा।

द्वार पर हमारी हुई उस बातचीत के बारे में।"
फिर ऐसा हुआ कि इवान बाहर चला गया, और जब वह चला गया तभी...
गलियारे में कुछ कदम चलने के बाद, उसे अचानक लगा कि स्मरद्याकोव के आखिरी शब्दों में एक अपमानजनक अर्थ छिपा है। वह लगभग वापस मुड़ने ही वाला था, लेकिन यह महज़ एक क्षणिक आवेग था, और "बकवास!" बुदबुदाते हुए वह अस्पताल से बाहर निकल गया।
उनकी सबसे बड़ी भावना राहत की थी, क्योंकि हत्या करने वाला स्मरद्याकोव नहीं, बल्कि मित्या था, हालाँकि उनसे इसके विपरीत भावना की उम्मीद की जा सकती थी। वे इस भावना के कारण का विश्लेषण नहीं करना चाहते थे, और यहाँ तक कि अपनी भावनाओं की पड़ताल करने से भी घृणा महसूस कर रहे थे। उन्हें ऐसा लग रहा था जैसे वे कुछ जल्दी से भूल जाना चाहते हों। अगले दिनों में, जैसे-जैसे उन्हें मित्या के विरुद्ध सभी सबूतों का पता चला, वे उसके अपराध के प्रति आश्वस्त होते गए। कुछ ऐसे लोगों के भी सबूत थे जिनका कोई महत्व नहीं था, जैसे कि फेन्या और उसकी माँ, लेकिन उनका प्रभाव लगभग असहनीय था। पेरहोतिन, सराय में मौजूद लोग, प्लॉट्निकोव की दुकान पर मौजूद लोग, साथ ही मोक्रोए में मौजूद गवाहों के बयान निर्णायक प्रतीत हो रहे थे। असल में, विवरण ही इतने निर्णायक थे। दस्तक की गुप्त प्रक्रिया ने वकीलों को लगभग उतना ही प्रभावित किया जितना ग्रिगोरी के खुले दरवाजे के सबूत ने। इवान के सवालों के जवाब में ग्रिगोरी की पत्नी मार्फा ने बताया कि स्मर्ड्याकोव पूरी रात विभाजन दीवार के दूसरी तरफ लेटा रहा। "वह हमारे बिस्तर से तीन कदम से भी कम दूरी पर था," और हालांकि वह गहरी नींद सोती थी, फिर भी वह कई बार जाग गई और उसे कराहते हुए सुना, "वह पूरी रात कराहता रहा, लगातार कराहता रहा।"
हर्ज़ेनस्टुबे से बात करते हुए, और यह राय देते हुए कि स्मर्ड्याकोव
इवान पागल नहीं था, बल्कि काफी कमजोर था, बूढ़े आदमी के चेहरे पर केवल एक हल्की सी मुस्कान ही आ पाई।
“क्या आपको पता है कि वह आजकल अपना समय कैसे बिताता है?” उसने पूछा, “सूचियाँ बनाने में।”
उसे फ्रेंच शब्द कंठस्थ याद हैं। उसके तकिए के नीचे एक अभ्यास पुस्तिका है जिसमें किसी ने उसके लिए रूसी अक्षरों में फ्रेंच शब्द लिखे हैं, ही ही ही!
इवान ने सभी शंकाओं को दूर करते हुए अपनी बात समाप्त की। वह दिमित्री के बारे में सोच भी नहीं सकता था।
बिना किसी घृणा के। हालांकि, एक बात अजीब थी। अलेयोशा इस बात पर अड़ा रहा कि दिमित्री हत्यारा नहीं था, और "पूरी संभावना" है कि स्मरद्याकोव ही हत्यारा था। इवान हमेशा महसूस करता था कि अलेयोशा की राय उसके लिए बहुत मायने रखती है, इसलिए अब वह इस बात पर आश्चर्यचकित था। एक और अजीब बात यह थी कि अलेयोशा ने इवान से मित्या के बारे में बात करने की कोई कोशिश नहीं की, उसने कभी इस विषय पर चर्चा शुरू नहीं की और केवल उसके सवालों के जवाब दिए। यह बात भी इवान को विशेष रूप से खटक रही थी।
लेकिन उस समय वह किसी और ही बात में बहुत व्यस्त थे।
इसके अलावा, मॉस्को से लौटने पर, वह कैटेरिना इवानोव्ना के प्रति अपने पागलपन भरे और प्रबल प्रेम में पूरी तरह डूब गया। इवान के इस नए जुनून के बारे में बात करने का यह सही समय नहीं है, जिसने उसके पूरे जीवन पर अपनी छाप छोड़ी: यह एक और उपन्यास का विषय बन जाएगा, जिसे शायद मैं कभी न लिखूँ। लेकिन मैं यहाँ यह उल्लेख किए बिना नहीं रह सकता कि जब इवान ने कैटेरिना इवानोव्ना को अलेयोशा के साथ छोड़कर, जैसा कि मैंने पहले ही बताया है, उससे कहा, "मुझे उसमें कोई दिलचस्पी नहीं है," तो यह सरासर झूठ था: वह उससे बेइंतहा प्यार करता था, हालाँकि कभी-कभी वह उससे इतनी नफरत करता था कि उसकी हत्या कर देना चाहता था। इस भावना के उत्पन्न होने में कई कारणों का योगदान था। मित्या के साथ जो हुआ था, उससे टूट चुकी कैटेरिना इवानोव्ना, इवान के लौटने पर उससे मिलने के लिए दौड़ी, क्योंकि वही उसका एकमात्र सहारा था। वह आहत, अपमानित और आहत थी। और यहाँ वह व्यक्ति उसके पास लौट आया था, जिसने पहले उससे इतना प्रेम किया था (ओह! वह यह बात अच्छी तरह जानती थी), और जिसके हृदय और बुद्धि को वह अपने से कहीं श्रेष्ठ मानती थी। लेकिन उस दृढ़ निश्चयी और गुणी लड़की ने अपने प्रेमी के प्रति पूर्णतः समर्पण नहीं किया, करामाज़ोव के उग्र प्रेम और उसके प्रति गहरे आकर्षण के बावजूद। वह मित्या को छोड़ने के पश्चाताप से लगातार व्याकुल रहती थी, और मतभेद और क्रोध के क्षणों में

(और ऐसे क्षण अनेक थे) वह इवान को स्पष्ट-स्पष्ट रूप से सब कुछ बता देती थी। इसी को इवान ने अलेयोशा से "झूठ पर झूठ" कहा था। बेशक, इसमें बहुत कुछ झूठ था, और इसी बात ने इवान को सबसे अधिक क्रोधित किया... लेकिन इन सब बातों पर बाद में चर्चा करेंगे।
दरअसल, एक समय के लिए वह लगभग स्मरद्याकोव के अस्तित्व को ही भूल गया था, और
फिर भी, उससे पहली मुलाकात के दो हफ्ते बाद, उसे फिर से वही अजीबोगरीब विचार सताने लगे। इतना कहना ही काफी है कि वह लगातार खुद से पूछ रहा था, आखिर क्यों उस आखिरी रात फ्योदोर पावलोविच के घर में वह चोर की तरह सीढ़ियों पर चुपके से निकल गया और नीचे अपने पिता की बातें सुनने लगा? बाद में उसे वह बात इतनी घृणा से क्यों याद आई; अगली सुबह यात्रा के दौरान वह अचानक इतना उदास क्यों हो गया; मॉस्को पहुँचते ही उसने खुद से क्यों कहा, "मैं एक बदमाश हूँ"? और अब उसे लगभग लगने लगा था कि ये परेशान करने वाले विचार उसे कैटेरिना इवानोव्ना को भी भुला देंगे, क्योंकि वे उस पर पूरी तरह हावी हो गए थे। ठीक इसी सोच के बाद, उसकी मुलाकात सड़क पर अलेयोशा से हुई। उसने उसे तुरंत रोका और उससे एक सवाल पूछा:
“क्या आपको याद है जब दिमित्री रात के खाने के बाद अंदर घुस आया और पिताजी की पिटाई की थी?”
और बाद में मैंने तुम्हें आंगन में बताया कि मैंने ‘इच्छा करने का अधिकार’ सुरक्षित रखा था? . . . मुझे बताओ, क्या तब तुम्हें लगा था कि मैं पिता की मृत्यु चाहता था या नहीं?
“मुझे भी ऐसा ही लगा,” अलेयोशा ने धीमी आवाज़ में उत्तर दिया।
“यह सच था; इसमें अनुमान लगाने की कोई बात नहीं थी। लेकिन क्या आपको यह पसंद नहीं आया?”
तो फिर मेरी यही इच्छा थी कि ‘एक सरीसृप दूसरे सरीसृप को खा जाए’; यानी, दिमित्री पिताजी को जल्द से जल्द मार डाले... और मैं खुद भी ऐसा करने में मदद करने के लिए तैयार था?
अलेयोशा का चेहरा पीला पड़ गया और वह चुपचाप अपने भाई के चेहरे को देखने लगा। “बोलो!” इवान चिल्लाया, “मैं सबसे पहले यह जानना चाहता हूँ कि तुमने उस समय क्या सोचा था। मुझे सच जानना है, सच!”
जवाब देने से पहले उसने गहरी सांस ली और गुस्से से अलेयोशा की ओर देखा।
आया।
“मुझे माफ कर दो, मैंने भी उस समय यही सोचा था,” अलेयोशा ने फुसफुसाते हुए कहा, और
उन्होंने नरमी बरतने वाला एक भी शब्द नहीं जोड़ा।
“धन्यवाद,” इवान ने झट से कहा और अलेयोशा को छोड़कर तेज़ी से अपने रास्ते चला गया।
उस समय से अलेयोशा ने गौर किया कि इवान उससे बचने लगा था और मानो उसे नापसंद करने लगा था, यहाँ तक कि अलेयोशा ने उससे मिलना भी छोड़ दिया। उस मुलाकात के तुरंत बाद, इवान घर नहीं गया, बल्कि सीधे स्मरद्याकोव के पास वापस चला गया।

अध्याय 7

स्मरद्याकोव की दूसरी यात्रा

तब तक स्मरद्याकोव अस्पताल से डिस्चार्ज हो चुके थे। इवान अपने नए ठिकाने को अच्छी तरह जानता था, वह जर्जर सा छोटा सा लकड़ी का मकान, जो एक गलियारे से दो हिस्सों में बंटा हुआ था। एक तरफ मारिया कोंद्रत्येवना और उनकी मां रहती थीं, और दूसरी तरफ स्मरद्याकोव। किसी को नहीं पता था कि वह उनके साथ किस तरह रहते थे, दोस्त के रूप में या किराएदार के रूप में। बाद में यह माना गया कि वह मारिया कोंद्रत्येवना के मंगेतर के रूप में उनके साथ रहने आए थे और कुछ समय तक बिना भोजन या भोजन का किराया दिए वहां रह रहे थे। मां और बेटी दोनों उनका बहुत सम्मान करती थीं और उन्हें खुद से कहीं बेहतर समझती थीं।
इवान ने दरवाजा खटखटाया और दरवाजा खुलते ही वह सीधे अंदर चला गया।
मार्ग। मार्या कोंद्रत्येवना के निर्देशानुसार वह सीधे बाईं ओर के बेहतर कमरे में गया, जिसमें स्मरद्याकोव ठहरे हुए थे। कमरे में टाइलों का चूल्हा था और वह बहुत गर्म था। दीवारें नीले रंग के वॉलपेपर से सजी थीं, जो काफी घिसा-पिटा था, और उसके नीचे की दरारों में तिलचट्टे बड़ी संख्या में भरे हुए थे, जिससे लगातार सरसराहट की आवाज आ रही थी। फर्नीचर बहुत कम था: प्रत्येक दीवार के सहारे दो बेंच और मेज के पास दो कुर्सियाँ। सादी लकड़ी की मेज पर गुलाबी पैटर्न वाला कपड़ा बिछा हुआ था। दोनों छोटी खिड़कियों पर गेरेनियम के गमले रखे थे। कोने में मूर्तियों का एक डिब्बा था। मेज पर कई धंसे हुए तांबे का एक छोटा सा समोवर और दो कपों वाली एक ट्रे रखी थी। लेकिन स्मरद्याकोव चाय पी चुके थे और समोवर बाहर रखा था। वह मेज पर एक बेंच पर बैठे थे। वह एक अभ्यास पुस्तिका देख रहे थे और धीरे-धीरे कलम से लिख रहे थे। उनके पास स्याही की एक बोतल और लोहे का एक सपाट मोमबत्ती स्टैंड था, लेकिन उसमें मिश्रित मोमबत्ती लगी थी। इवान ने स्मरद्याकोव के चेहरे से तुरंत समझ लिया कि वह अपनी बीमारी से पूरी तरह ठीक हो गया है। उसका चेहरा पहले से ज़्यादा तरोताज़ा और भरा-भरा लग रहा था, बाल सामने से लहराते हुए खड़े थे और किनारों से चिपके हुए थे। वह रंग-बिरंगे, गद्दीदार ड्रेसिंग गाउन में बैठा था, जो कुछ हद तक गंदा और फटा हुआ था। उसकी नाक पर चश्मा लगा हुआ था, जिसे इवान ने उसे पहले कभी पहने हुए नहीं देखा था। इस मामूली सी बात ने इवान के गुस्से को और बढ़ा दिया: "ऐसा आदमी चश्मा पहने हुए!"
स्मर्ड्याकोव ने धीरे से अपना सिर उठाया और अपने आगंतुक को ध्यान से देखा।
उसने अपने चश्मे से देखा; फिर धीरे से चश्मा उतारा और बेंच से उठा, लेकिन ज़रा भी सम्मानपूर्वक नहीं, बल्कि लगभग आलस्य से, सामान्य शिष्टाचार के लिए आवश्यक न्यूनतम कार्य करते हुए। यह सब देखकर इवान तुरंत चौंक गया; उसने सब कुछ समझ लिया और तुरंत ध्यान दिया—खासकर स्मरद्याकोव की आँखों में जो स्पष्ट रूप से द्वेषपूर्ण, अशिष्ट और अभिमानी भाव था। मानो कह रही हो, “तुम यहाँ क्यों दखल दे रहे हो? हमने तब सब कुछ सुलझा लिया था; तुम फिर क्यों आए हो?” इवान खुद को मुश्किल से ही संभाल पाया।
“यहाँ बहुत गर्मी है,” उसने खड़े-खड़े कहा और अपने ओवरकोट के बटन खोल दिए। “अपना कोट उतार दो,” स्मरद्याकोव मान गया।
इवान ने कांपते हाथों से अपना कोट उतारा और बेंच पर फेंक दिया।
एक कुर्सी ली, उसे जल्दी से मेज के पास ले गया और बैठ गया। स्मर्ड्याकोव भी उससे पहले अपनी बेंच पर बैठ गया।
“सबसे पहले तो, क्या हम अकेले हैं?” इवान ने सख्ती और आवेग में आकर पूछा।
"क्या वे अंदर हमारी बातें सुन सकते हैं?"
“कोई कुछ नहीं सुन सकता। आपने खुद देखा है: वहाँ एक
रास्ता।"
"सुनो, मेरे भले दोस्त, जब मैं जा रहा था तो तुमने क्या बड़बड़ाया था?"
क्या आप अस्पताल में हैं, और अगर मैंने आपके नाटक करने की क्षमता के बारे में कुछ नहीं कहा, तो क्या आप जांच करने वाले वकील को गेट पर हुई हमारी सारी बातचीत नहीं बता देंगे? सारी से आपका क्या

मतलब है? आपका इससे क्या तात्पर्य हो सकता है? क्या आप मुझे धमकी दे रहे थे? क्या मैंने आपके साथ किसी तरह का समझौता किया है? क्या आपको लगता है कि मैं आपसे डरता हूँ?
इवान ने यह बात घोर क्रोध में कही, जिससे उसे स्पष्ट रूप से समझ आ गया।
उसका इरादा किसी भी छल या अप्रत्यक्षता को नकारना था और वह अपने पत्ते खोलना चाहता था।
स्मर्ड्याकोव की आँखों में द्वेष की चमक थी, उसकी बाईं आँख झपकी और उसने अपनी आदत के अनुसार शांत और सोच-समझकर जवाब दिया: "तुम सब कुछ साफ-साफ चाहते हो; ठीक है, तुम्हें मिल जाएगा," मानो वह कह रहा हो।
“मेरा मतलब यही था, और इसीलिए मैंने ऐसा कहा था, कि आप, यह जानते हुए
अपने ही माता-पिता की इस हत्या से पहले, मैंने उन्हें उनके भाग्य पर छोड़ दिया था, और इसलिए कि लोग उसके बाद आपकी भावनाओं और शायद किसी और बात के बारे में कोई गलत निष्कर्ष न निकालें—यही वह बात है जो मैंने अधिकारियों को न बताने का वादा किया था।"
हालांकि स्मर्ड्याकोव ने बिना जल्दबाजी के और स्पष्ट रूप से संयमित स्वर में बात की।
स्वयं में कोई भाव न होते हुए भी, उसकी आवाज़ में कुछ दृढ़ता और ज़ोर था, नाराज़गी और उद्दंडता का भाव। उसने इवान को बेशर्मी से घूरा। इवान की आँखों के सामने पहले क्षण में एक धुंध छा गई।
“कैसे? क्या? क्या तुम पागल हो गए हो?”
मैं पूरी तरह से होश में हूं और मेरी सभी इंद्रियां सुचारू रूप से काम कर रही हैं।
“क्या तुम्हें लगता है कि मुझे हत्या के बारे में पता था?” इवान अंत में चिल्लाया, और वह
उसने गुस्से में मुट्ठी मेज पर पटकी। "तुम्हारा 'कुछ और भी' से क्या मतलब है? बोलो, बदमाश!"
स्मर्ड्याकोव चुप था और उसी उद्दंड भाव से इवान को घूरता रहा।
घूरना।
"बोलो, तुम बदबूदार बदमाश, वह 'कुछ और भी' क्या है?"
“‘कुछ और’ से मेरा मतलब यह था कि शायद आप भी बहुत कुछ थे।”
अपने माता-पिता की मृत्यु की कामना करना।"
इवान उछलकर खड़ा हुआ और उसने पूरी ताकत से उसके कंधे पर प्रहार किया, इसलिए
वह दीवार के सहारे पीछे गिर पड़ा। पल भर में उसका चेहरा आंसुओं से भीग गया। "महोदय, बीमार आदमी पर हाथ उठाना शर्मनाक है," कहते हुए उसने एक बेहद गंदे नीले चेक वाले रूमाल से अपनी आँखें पोंछीं और चुपचाप रोने लगा। एक मिनट बीत गया।
“बस करो! बंद करो,” इवान ने सख्ती से कहा और फिर से बैठ गया।
मुझे बिल्कुल भी धैर्य खोने की नौबत मत लाओ।
स्मर्ड्याकोव ने अपनी आँखों से कपड़ा हटाया। उसके सिकुड़े हुए चेहरे की हर रेखा
उसके मन में अभी-अभी हुए अपमान का भाव झलक रहा था।
तो फिर तुमने सोचा था, बदमाश, कि दिमित्री के साथ मेरा मतलब था
मेरे पिता को मारने के लिए?
“मुझे नहीं पता था कि उस समय तुम्हारे मन में क्या विचार चल रहे थे,” उसने कहा।
स्मरद्याकोव ने नाराज़गी से कहा, "और इसलिए मैंने आपको द्वार पर रोककर इसी मुद्दे पर आपकी राय ली।"
“क्या आवाज निकालने के लिए?”
“क्यों, वही परिस्थिति, चाहे आप अपने पिता को चाहते हों या नहीं
हत्या हुई हो या नहीं।
इवान को सबसे ज्यादा गुस्सा दिलाने वाली बात आक्रामक और उद्दंड रवैया था।
जिस लहजे का स्मर्ड्याकोव लगातार पालन करता रहा।
“क्या तुमने ही उसकी हत्या की थी?” वह अचानक चिल्लाया। स्मर्ड्याकोव ने तिरस्कारपूर्ण मुस्कान के साथ जवाब दिया।
“तुम खुद जानते हो कि मैंने उसकी हत्या नहीं की थी। और मैं
मुझे लगा था कि एक समझदार व्यक्ति को इस बारे में दोबारा बोलने की कोई जरूरत नहीं है।
"लेकिन क्यों, उस समय आपको मुझ पर इतना संदेह क्यों था?"

जैसा कि आप पहले से ही जानते हैं, यह केवल डर के कारण था। क्योंकि मैं ऐसी स्थिति में था...
मैं भय से कांप रहा था, और मुझे हर किसी पर शक था। मैंने तुमसे भी बात करने का फैसला किया, क्योंकि मुझे लगा कि अगर तुम भी अपने भाई की तरह वही चाहते हो, तो मामला सुलझ गया है और मैं भी मक्खी की तरह कुचल दिया जाऊंगा।
"देखो, तुमने दो हफ्ते पहले ऐसा नहीं कहा था।"
"जब मैंने अस्पताल में आपसे बात की थी, तब मेरा मतलब भी यही था, बस मैंने सोचा था..."
आप बिना ज्यादा शब्द खर्च किए समझ जाएंगे, और चूंकि आप इतने समझदार व्यक्ति हैं, इसलिए आप इस बारे में खुलेआम बात करना पसंद नहीं करेंगे।"
“अब आगे क्या! जवाब दो, मैं ज़ोर देकर कहता हूँ: आखिर हुआ क्या था... मैं क्या कर सकता था?”
आपने ऐसा क्या किया है जिससे आपके नीच मन में इतना घिनौना संदेह पैदा हो गया है?
“जहां तक हत्या की बात है, आप ऐसा नहीं कर सकते थे और न ही करना चाहते थे, लेकिन
जहां तक किसी और से यह काम करवाने की बात है, तो यह बस वही था जो आप चाहते थे।"
और वो कितनी सहजता से, कितनी सहजता से बोलता है! लेकिन मुझे ऐसा क्यों चाहना चाहिए था?
इसे चाहने का मेरे पास क्या आधार था?
“तुम्हारे पास क्या आधार थे? विरासत का क्या हुआ?” स्मरद्याकोव ने कहा।
व्यंग्यपूर्ण ढंग से, और मानो प्रतिशोध की भावना से, उसने कहा, “तुम्हारे माता-पिता की मृत्यु के बाद तुममें से प्रत्येक को कम से कम चालीस हज़ार मिलने थे, और शायद इससे भी अधिक, लेकिन अगर फ्योदोर पावलोविच ने उस महिला, अग्रफेना अलेक्जेंड्रोवना से शादी कर ली होती, तो शादी के तुरंत बाद उसकी सारी पूंजी उसे मिल जाती, क्योंकि वह बहुत समझदार है, और तुम्हारे माता-पिता तुम तीनों के लिए दो रूबल भी नहीं छोड़ते। और क्या उनकी शादी में कोई खास बदलाव नहीं आया? बिलकुल भी नहीं: उस महिला को बस अपनी छोटी उंगली उठानी थी और वह जीभ बाहर निकालकर उसके पीछे चर्च तक दौड़ पड़ता।”
इवान ने बड़ी पीड़ादायक कोशिश से खुद को रोका।
अंत में उन्होंने कहा, "बहुत बढ़िया। देखिए, मैं उछला नहीं हूँ, मैं..."
मैंने तुम्हें गिराया नहीं है, मैंने तुम्हें मारा नहीं है। बोलते रहो। तो, तुम्हारे अनुसार, मैंने दिमित्री को यह काम सौंपा था; मैं उसी पर भरोसा कर रहा था?
“आप उस पर शक करने से कैसे बच सकते हैं? अगर उसने उसे मार डाला, तो वह
दिमित्री फ्योदोरोविच एक रईस के सारे अधिकार, पद और संपत्ति खो देगा और निर्वासन में चला जाएगा; इसलिए विरासत में उसका हिस्सा आपको और आपके भाई एलेक्सी फ्योदोरोविच को बराबर-बराबर मिलेगा; इस तरह आप दोनों को चालीस नहीं, बल्कि साठ-साठ हजार मिलेंगे। इसमें कोई शक नहीं कि आपने दिमित्री फ्योदोरोविच पर भरोसा किया था।
“मैंने तुमसे क्या-क्या सहा है! सुनो, बदमाश, अगर मैंने यह अनुमान लगाया होता तो...”
उस समय कोई भी होता, तो यह सब तुम्हारी गलती होती, दिमित्री की नहीं, और मैं कसम खाता हूँ कि मुझे तुमसे कुछ दुष्टता की उम्मीद थी... उस समय... मुझे अपनी धारणा याद है!
मुझे भी उस समय एक पल के लिए लगा था कि तुम मुझ पर भरोसा कर रहे हो।
“और हाँ,” स्मर्ड्याकोव ने व्यंग्यात्मक मुस्कान के साथ कहा। “तो बस इसी से तुमने मुझे अपने मन की बात बता दी। क्योंकि अगर तुम्हें मेरे बारे में कोई आशंका थी और फिर भी तुम चले गए, तो तुमने मानो मुझसे कहा, ‘तुम मेरे माता-पिता की हत्या कर सकते हो, मैं तुम्हें नहीं रोकूंगा!’”
“अरे बदमाश! तो तुमने इसे इस तरह समझा!”
“यह सब चेरमाश्न्या जाने की वजह से था। अरे! तुम तो जाने वाले थे ना?”
तुम मॉस्को चली गईं और अपने पिता की चेरमाश्न्या जाने की तमाम मिन्नतों को ठुकरा दिया— और महज़ मेरी एक मूर्खतापूर्ण बात पर तुम तुरंत मान गईं! चेरमाश्न्या जाने की तुम्हारी क्या वजह थी? चूंकि तुम बिना किसी कारण के, सिर्फ़ मेरी बात मानकर चेरमाश्न्या चली गईं, इससे पता चलता है कि तुम्हें मुझसे कुछ उम्मीद रही होगी।
“नहीं, कसम से मैंने नहीं किया!” इवान दांत पीसते हुए चिल्लाया। “नहीं किया? तो अपने बाप के बेटे होने के नाते तुम्हें मुझसे संबंध बनाना चाहिए था।”

मेरे शब्दों के लिए मुझे तुरंत लॉकअप ले जाकर पीटा जाता... या कम से कम वहीं पर मेरे चेहरे पर एक घूंसा मारा जाता, लेकिन आप ज़रा भी नाराज़ नहीं हुए, और तुरंत दोस्ताना अंदाज़ में मेरी मूर्खतापूर्ण बात पर अमल करते हुए चले गए, जो सरासर बेतुका था, क्योंकि आपको अपने माता-पिता की जान बचाने के लिए वहीं रुकना चाहिए था। मैं अपने निष्कर्ष निकालने से कैसे बच सकता था?
इवान गुस्से से घूरता हुआ बैठा था, उसकी दोनों मुट्ठियाँ उसके घुटनों पर कसकर दबी हुई थीं। "हाँ, मुझे माफ़ करना कि मैंने तुम्हारे चेहरे पर घूंसा नहीं मारा," उसने कड़वाहट से कहा।
मुस्कुराते हुए उसने कहा, “मैं तुम्हें उस समय लॉकअप में नहीं ले जा सकता था। कौन मेरी बात मानता और मैं तुम पर क्या आरोप लगाता? लेकिन मुक्का... ओह, मुझे माफ़ करना, मुझे यह ख्याल नहीं आया। हालाँकि मारना मना है, फिर भी मैं तुम्हारे बदसूरत चेहरे को पीट-पीटकर चूर-चूर कर देता।”
स्मरद्याकोव ने लगभग आनंद से उसकी ओर देखा। "जीवन के सामान्य अवसरों में," उसने उसी आत्मसंतुष्ट और
उन्होंने उपदेशात्मक लहजे में ग्रिगोरी का मज़ाक उड़ाया था और फ्योदोर पावलोविच की मेज पर धर्म के बारे में उनसे बहस की थी, "जीवन के सामान्य अवसरों में, आजकल कानून द्वारा चेहरे पर प्रहार करना निषिद्ध है, और लोगों ने इसे त्याग दिया है, लेकिन जीवन के असाधारण अवसरों में लोग अभी भी मारपीट पर उतर आते हैं, न केवल हमारे बीच बल्कि पूरी दुनिया में, चाहे वह फ्रांस का पूर्ण गणराज्य ही क्यों न हो, ठीक वैसे ही जैसे आदम और हव्वा के समय में था, और वे इसे कभी नहीं छोड़ेंगे, लेकिन आपने, एक असाधारण मामले में भी, ऐसा करने का साहस नहीं किया।"
“तुम फ्रेंच शब्द किसलिए सीख रहे हो?” इवान ने उसकी ओर सिर हिलाया।
अभ्यास पुस्तिका मेज पर पड़ी हुई है।
"अगर ऐसा हो तो, अपनी शिक्षा को बेहतर बनाने के लिए मुझे इन्हें क्यों नहीं सीखना चाहिए?"
क्या मुझे भी किसी दिन यूरोप के उन सुखद हिस्सों में जाने का मौका मिल सकता है?
“सुनो, राक्षस।” इवान की आँखों में चमक आ गई और वह पूरी तरह काँप उठा। “मैं हूँ
मुझे तुम्हारे आरोपों से डर नहीं लगता; तुम मेरे बारे में जो चाहो कह सकते हो, और अगर मैं तुम्हें पीट-पीटकर जान से नहीं मार देता, तो इसका सीधा सा कारण यह है कि मुझे तुम पर उस अपराध का शक है और मैं तुम्हें न्याय के कटघरे में खड़ा करूँगा। मैं तुम्हारा पर्दाफाश करूँगा।
मेरे विचार से तो बेहतर यही होगा कि तुम चुप रहो, आखिर तुम मुझ पर आरोप क्या लगा सकते हो?
मेरी पूर्ण निर्दोषता को देखते हुए; और आप पर कौन विश्वास करेगा? अगर आप शुरू करेंगे, तो मैं भी सब कुछ बता दूंगा, क्योंकि मुझे अपना बचाव करना होगा।
"क्या तुम्हें लगता है कि अब मैं तुमसे डरता हूँ?"
“अगर अदालत मेरी कही हुई सारी बातों पर विश्वास नहीं करती है, तो जनता
ऐसा करोगे तो तुम्हें शर्म आएगी।
इसका मतलब यह है कि, 'किसी से बात करना हमेशा फायदेमंद होता है'
"समझदार आदमी, है ना?" इवान गुस्से से बोला।
“तुमने बिल्कुल सही कहा। और तुम्हें समझदारी से काम लेना चाहिए।” इवान गुस्से से कांपते हुए उठा, अपना कोट पहना और
स्मरद्याकोव को आगे कुछ जवाब दिए बिना, उसकी ओर देखे बिना ही, इवान तेज़ी से झोपड़ी से बाहर निकल गया। शाम की ठंडी हवा ने उसे तरोताज़ा कर दिया। आकाश में चमकीला चाँद था। विचारों और संवेदनाओं का एक दुःस्वप्न उसके मन में उमड़ रहा था। “क्या मैं तुरंत जाकर स्मरद्याकोव के खिलाफ़ सूचना दे दूँ? लेकिन मैं क्या सूचना दूँ? वह वैसे भी दोषी नहीं है। इसके विपरीत, वह मुझ पर आरोप लगाएगा। और वास्तव में, मैं चेरमाश्न्या के लिए निकला ही क्यों था? किसलिए? किसलिए?” इवान ने खुद से पूछा। “हाँ, बिल्कुल, मुझे किसी बात का डर था और वह सही है...” और उसे सौवीं बार याद आया कि कैसे अपने पिता के घर में आखिरी रात उसने सीढ़ियों पर छिपकर बातें सुनी थीं। लेकिन अब उसे यह याद इतनी पीड़ादायक थी कि वह वहीं जम गया, मानो उसे किसी ने छुरा घोंप दिया हो। “हाँ, मुझे तब यही उम्मीद थी, यह सच है! मैं हत्या चाहता था, मैं सचमुच हत्या चाहता था! क्या मैं हत्या चाहता था? क्या मैं सच में चाहता था? मुझे स्मरद्याकोव को मारना ही होगा! अगर मैं अब स्मरद्याकोव को मारने की हिम्मत नहीं करता, तो जीवन जीने लायक नहीं है!”

इवान घर नहीं गया, बल्कि सीधे कैटेरिना इवानोव्ना के पास गया और
उसके हावभाव देखकर वह घबरा गई। वह पागलों जैसा लग रहा था। उसने स्मरद्याकोव के साथ हुई सारी बातचीत को दोहराया, एक-एक शब्द। उसे शांत करना नामुमकिन था, चाहे उसने कितनी भी कोशिश की हो: वह कमरे में इधर-उधर घूमता रहा, अजीबोगरीब, बेतरतीब बातें करता रहा। अंत में वह बैठ गया, कोहनियाँ मेज पर रखीं, सिर हाथों पर टिकाया और यह अजीब वाक्य बोला: “अगर हत्यारा दिमित्री नहीं, बल्कि स्मरद्याकोव है, तो मैं भी उसके अपराध में भागीदार हूँ, क्योंकि मैंने ही उसे उकसाया था। मैंने ऐसा किया या नहीं, यह मुझे अभी पता नहीं है। लेकिन अगर हत्यारा दिमित्री नहीं, बल्कि स्मरद्याकोव है, तो बेशक मैं भी हत्यारा हूँ।”
जब कैटेरिना इवानोव्ना ने यह सुना, तो वह बिना कुछ कहे अपनी सीट से उठ उठी।
वर्ड, अपनी लेखन-मेज पर गई, उस पर रखे एक बक्से को खोला, उसमें से एक कागज़ निकाला और इवान के सामने रख दिया। यही वह दस्तावेज़ था जिसके बारे में इवान ने बाद में अलेयोशा से दिमित्री द्वारा अपने पिता की हत्या के "पुख्ता सबूत" के रूप में बात की थी। यह वही पत्र था जो मित्या ने कैटेरिना इवानोव्ना को नशे की हालत में लिखा था, उसी शाम जब वह कैटेरिना इवानोव्ना के घर पर हुए झगड़े के बाद, जब ग्रुशेंका ने उनका अपमान किया था, मठ जाते समय चौराहे पर अलेयोशा से मिला था। फिर, अलेयोशा से विदा लेकर मित्या ग्रुशेंका के पास भागा। मुझे नहीं पता कि उसने उसे देखा था या नहीं, लेकिन उस शाम वह "मेट्रोपोलिस" में था, जहाँ वह बुरी तरह नशे में धुत हो गया। फिर उसने कलम और कागज़ माँगे और अपने लिए एक महत्वपूर्ण दस्तावेज़ लिखा। यह शब्दों से भरा, बेतरतीब, उन्मादपूर्ण पत्र था, वास्तव में नशे में लिखा गया पत्र। यह किसी शराबी आदमी की बातों जैसा था, जो घर लौटकर अपनी पत्नी या घर के किसी सदस्य को बड़े गुस्से से बताने लगता है कि उसका अपमान कैसे हुआ, किस बदमाश ने उसका अपमान किया, वह खुद कितना अच्छा आदमी है, और वह उस बदमाश को कैसे सबक सिखाएगा; और यह सब वह बहुत लंबी-चौड़ी, उत्तेजित और बेतरतीब आवाज़ में, नशे में रोते हुए और मेज पर मुक्के मारते हुए कहता है। यह पत्र सबसे सस्ते और गंदे कागज़ पर लिखा गया था। यह कागज़ सराय ने दिया था और इसके पीछे कुछ लिखा हुआ था। जाहिर है, उसकी नशे में लिखी बातों के लिए जगह कम पड़ गई थी और मित्या ने न सिर्फ हाशिये भर दिए थे, बल्कि आखिरी पंक्ति बाकी पन्नों के ऊपर ही लिख दी थी। पत्र कुछ इस प्रकार था:

घातक कात्या: कल मैं पैसे लेकर आ जाऊंगी और तुम्हारे तीन हजार रुपये चुका दूंगी।

अलविदा, क्रोध की देवी, लेकिन अलविदा, मेरी भी।
प्यार! चलो इसे खत्म करते हैं! कल मैं हर किसी से इसे लेने की कोशिश करूँगा, और अगर मैं इसे उधार नहीं ले सका, तो मैं तुम्हें वचन देता हूँ कि मैं अपने पिता के पास जाऊँगा और उनका सिर फोड़ दूँगा और तकिए के नीचे से पैसे निकाल लूँगा, बशर्ते इवान चला गया हो। अगर इसके लिए मुझे साइबेरिया भी जाना पड़े, तो मैं तुम्हें तुम्हारे तीन हज़ार लौटा दूँगा। और अलविदा। मैं तुम्हारे सामने ज़मीन पर झुकता हूँ, क्योंकि मैंने तुम्हारे साथ बुरा बर्ताव किया है। मुझे माफ़ कर दो! नहीं, मुझे माफ़ मत करो, तुम खुश रहोगी और मैं भी! तुम्हारे प्यार से साइबेरिया बेहतर है, क्योंकि मैं किसी और औरत से प्यार करता हूँ और आज तुम उसे बहुत अच्छी तरह जान चुकी हो, तो तुम मुझे कैसे माफ़ कर सकती हो? मैं उस आदमी को मार डालूँगा जिसने मुझे लूटा है! मैं तुम सबको छोड़कर पूरब चला जाऊँगा ताकि फिर कभी किसी को न देखूँ। उसे भी नहीं, क्योंकि तुम ही मेरी अकेली सताने वाली नहीं हो; वह भी है। अलविदा!
पी.एस.—मैं अपनी गाली लिख रही हूँ, लेकिन मैं तुम्हें बहुत प्यार करती हूँ! मैं इसे अपने दिल में सुनती हूँ। दिल। एक तार बचा है, और वो धड़क रहा है। बेहतर होगा कि मैं अपना दिल दो टुकड़ों में फाड़ दूं! मैं खुद को मार डालूंगा, लेकिन पहले उस कमीने को। मैं उससे तीन हज़ार रुपये छीनकर तुम्हें दे दूंगा। हालांकि मैं तुम्हारे साथ बदमाशी करता रहा हूं, लेकिन मैं चोर नहीं हूं! तुम तीन हज़ार रुपये ले सकती हो। वो कमीना उसे अपने गद्दे के नीचे गुलाबी रिबन में बांधकर रखता है। मैं चोर नहीं हूं, लेकिन मैं अपने चोर का कत्ल कर दूंगा। कात्या, तिरस्कार भरी नजरों से मत देखो। दिमित्री चोर नहीं है! बल्कि कातिल है! उसने अपने पिता का कत्ल किया और तुम्हारे घमंड को सहने के बजाय अपनी बात मनवाने के लिए खुद को बर्बाद कर लिया। और वो तुमसे प्यार नहीं करता।
पी.पी.एस.—मैं आपके चरणों को चूमता हूँ, विदाई! पी.पी.पी.एस.—कात्या,

भगवान से प्रार्थना करो कि कोई मुझे पैसे दे दे। तब मैं खून में लथपथ नहीं होऊंगा, और अगर कोई नहीं देता तो मैं खुद ही कर लूंगा! मुझे मार डालो!
तुम्हारा दास और शत्रु,
डी. करामाज़ोव.
जब इवान ने यह "दस्तावेज़" पढ़ा तो वह आश्वस्त हो गया। फिर यह उसका फैसला था।
भाई, स्मरद्याकोव नहीं। और अगर स्मरद्याकोव नहीं, तो वो भी नहीं, इवान। यह पत्र देखते ही उसकी नज़र में एक तार्किक प्रमाण बन गया। मित्या के अपराध पर अब ज़रा भी संदेह नहीं रह गया था। वैसे, इवान को कभी यह शक नहीं हुआ था कि मित्या ने स्मरद्याकोव के साथ मिलकर हत्या की होगी, और वास्तव में, यह सिद्धांत तथ्यों से मेल नहीं खाता था। इवान पूरी तरह से आश्वस्त हो गया। अगली सुबह उसने केवल स्मरद्याकोव और उसके ताने-बाने को तिरस्कार से याद किया। कुछ दिनों बाद उसे सचमुच आश्चर्य हुआ कि वह अपने संदेहों को लेकर इतना परेशान क्यों हो गया था। उसने उसे तिरस्कार से भुला देने का निश्चय किया। इस तरह एक महीना बीत गया। उसने स्मरद्याकोव के बारे में कोई और पूछताछ नहीं की, लेकिन दो बार उसे खबर मिली कि वह बहुत बीमार है और उसका मानसिक संतुलन बिगड़ा हुआ है।
“उसका अंत पागलपन में होगा,” युवा डॉक्टर वारविंस्की ने उसके बारे में टिप्पणी की।
उसे, और इवान को यह बात याद थी। उस महीने के आखिरी सप्ताह में इवान खुद बहुत बीमार महसूस करने लगा। वह मॉस्को के उस डॉक्टर से सलाह लेने गया जिसे कैटरीना इवानोव्ना ने मुकदमे से ठीक पहले बुलाया था। और ठीक उसी समय कैटरीना इवानोव्ना के साथ उसके रिश्ते बेहद तनावपूर्ण हो गए। वे दो दुश्मनों की तरह थे जो एक-दूसरे से प्यार करते थे। कैटरीना इवानोव्ना का मित्या के प्रति "वापसी", यानी उसके प्रति उसकी भावनाओं का संक्षिप्त लेकिन तीव्र उलटफेर, इवान को पूरी तरह से पागल कर देता था। हैरानी की बात है कि ऊपर वर्णित आखिरी दृश्य तक, जब अलेयोशा मित्या से कैटरीना इवानोव्ना के पास आया, उस पूरे महीने में इवान ने एक बार भी कैटरीना को मित्या के अपराध पर संदेह व्यक्त करते नहीं सुना था, उन "वापसी" के बावजूद जो उसे इतनी घृणित लगती थीं। यह भी उल्लेखनीय है कि जहाँ एक ओर उसे हर दिन मित्या के प्रति नफरत बढ़ती महसूस हो रही थी, वहीं उसे यह एहसास भी हुआ कि वह उससे कैटरीना की "वापसी" के कारण नहीं, बल्कि इसलिए नफरत कर रहा था क्योंकि वह उसके पिता का हत्यारा था। वह इस बात से अवगत था और उसने इसे स्वयं पूरी तरह से स्वीकार किया था।
फिर भी, वह मुकदमे से दस दिन पहले मित्या से मिलने गया और
उसे भागने की एक योजना बताई गई—एक ऐसी योजना जिस पर उसने स्पष्ट रूप से लंबे समय तक विचार किया था। वह ऐसा करने के लिए आंशिक रूप से स्मर्ज्याकोव के उस कथन से प्रेरित था, जिसमें उसने कहा था कि उसके भाई को दोषी ठहराया जाना उसके, इवान के, हित में है, क्योंकि इससे उसकी और अलेयोशा की विरासत चालीस हजार रूबल से बढ़कर साठ हजार रूबल हो जाएगी। उसने मित्या को भगाने के लिए तीस हजार रूबल कुर्बान करने का निश्चय किया। उससे मिलने के बाद लौटने पर वह बहुत दुखी और निराश था; उसे अचानक महसूस होने लगा कि वह मित्या के भागने के लिए न केवल तीस हजार रूबल कुर्बान करके उस घाव को भरने के लिए चिंतित है, बल्कि एक और कारण से भी। "क्या इसलिए कि मैं भी दिल से उतना ही कातिल हूँ?" उसने खुद से पूछा। उसकी आत्मा में कहीं गहरी आग जल रही थी और चुभ रही थी। उस पूरे महीने उसका अहंकार सबसे ज्यादा आहत हुआ। लेकिन उस बारे में बाद में...
अलेयोशा से बातचीत के बाद, इवान ने अचानक फैसला किया कि...
स्मरद्याकोव जाने के लिए अपने लॉज की घंटी पर हाथ रखते हुए, उसने अचानक गुस्से की एक अजीब सी लहर का पालन किया। उसे अचानक याद आया कि कैसे कैटेरिना इवानोव्ना ने अलेयोशा की मौजूदगी में उससे कहा था: "तुम ही थे, तुमने ही मुझे उसके" (यानी मित्या के) "दोष का यकीन दिलाया!" यह याद आते ही इवान स्तब्ध रह गया। उसने कभी भी उसे यह समझाने की कोशिश नहीं की थी कि मित्या हत्यारा है; इसके विपरीत, स्मरद्याकोव से लौटने के बाद उसने खुद उसके सामने शक किया था। वही थी, वही थी जिसने वह "दस्तावेज़" पेश किया था और उसके भाई के अपराध को साबित किया था। और अब वह अचानक चिल्लाई: "मैं खुद स्मरद्याकोव के यहाँ थी!" वह वहाँ कब थी? इवान को इसके बारे में कुछ भी पता नहीं था। तो वह मित्या के अपराध को लेकर इतनी आश्वस्त नहीं थी! और स्मरद्याकोव ने उसे क्या बताया होगा? उसने उससे क्या कहा होगा? उसका दिल भयंकर गुस्से से जल रहा था। उसे समझ नहीं आ रहा था कि आधे घंटे

पहले उसने उन शब्दों को कैसे अनसुना कर दिया और उस समय चीख क्यों नहीं निकाली। उसने घंटी छोड़ दी और स्मरद्याकोव की ओर दौड़ पड़ा। रास्ते में उसने सोचा, "शायद इस बार मैं उसे मार डालूंगा।"

अध्याय 8

तीसरा और अंतिम साक्षात्कार
स्मर्ड्याकोव

जब वह आधे रास्ते तक पहुंचा, तो सुबह से चल रही तेज़ सूखी हवा फिर से चलने लगी और बारीक सूखी बर्फ़ तेज़ी से गिरने लगी। बर्फ़ ज़मीन पर नहीं जम रही थी, बल्कि हवा से उड़ रही थी, और जल्द ही एक ज़ोरदार हिमपात शुरू हो गया। कस्बे के उस हिस्से में जहाँ स्मेरद्याकोव रहता था, वहाँ मुश्किल से ही कोई लैंपपोस्ट थे। इवान अंधेरे में अकेला चल रहा था, तूफ़ान से बेखबर, सहज रूप से अपना रास्ता चुन रहा था। उसके सिर में दर्द हो रहा था और कनपटी में तेज़ धड़कन हो रही थी। उसे महसूस हो रहा था कि उसके हाथ बेतरतीब ढंग से फड़फड़ा रहे हैं। मार्या कोंद्रत्येवना की कुटिया से कुछ ही दूरी पर, इवान अचानक एक अकेले, नशे में धुत छोटे किसान से मिला। उसने एक खुरदुरा और पैबंद लगा हुआ कोट पहना हुआ था, और वह टेढ़े-मेढ़े रास्तों पर चल रहा था, खुद से बड़बड़ा रहा था और गालियाँ दे रहा था। फिर अचानक वह कर्कश, नशे में धुत आवाज़ में गाने लगता:
“अरे, वांका पीटर्सबर्ग चली गई है;
मैं उसके वापस आने का इंतजार नहीं करूंगा।
लेकिन वह हर बार दूसरी पंक्ति पर रुक जाता और फिर से गालियाँ देने लगता; फिर वही गाना दोबारा शुरू कर देता। इवान को उसके बारे में सोचने से पहले ही उससे तीव्र घृणा होने लगी थी। अचानक उसे उसकी उपस्थिति का एहसास हुआ और उसे नीचे गिराने की एक अनियंत्रित इच्छा हुई। उसी क्षण वे टकराए, और किसान एक ज़ोरदार झटके के साथ इवान पर गिर पड़ा, जिसने उसे गुस्से से पीछे धकेल दिया। किसान पीछे की ओर उड़ता हुआ बर्फीली ज़मीन पर लकड़ी के लट्ठे की तरह गिर गया। उसने एक दर्द भरी आवाज़ में "ओह!" कहा और फिर चुप हो गया। इवान उसके पास गया। वह पीठ के बल पड़ा था, बिना हिले-डुले और बिना होश के। "वह जम गया होगा," इवान ने सोचा, और वह स्मरद्याकोव के घर की ओर चल पड़ा।
उस गलियारे में, मार्या कोंड्राट्येवना, जो दरवाजा खोलने के लिए बाहर भागी थी,
हाथ में मोमबत्ती लिए, उसने फुसफुसाते हुए कहा कि स्मर्ड्याकोव बहुत बीमार है, "ऐसा नहीं है कि वह बिस्तर पर पड़ा है, लेकिन वह पहले जैसा नहीं लग रहा है, और उसने तो हमें चाय भी हटाने को कहा; उसने चाय नहीं पी।"
“क्या वो शोर मचाता है?” इवान ने रूखेपन से पूछा। “अरे नहीं, बिलकुल उल्टा, वो बहुत शांत है। बस कृपया बात मत करना।”
“उसे बहुत देर हो गई है,” मार्या कोंड्राट्येवना ने उससे विनती की। इवान ने दरवाजा खोला और कमरे में कदम रखा।
पहले की तरह ही बहुत गर्मी थी, लेकिन कमरे में कुछ बदलाव हुए थे। उनमें से एक
किनारे की बेंचें हटा दी गई थीं, और उनकी जगह एक बड़ा पुराना महोगनी चमड़े का सोफा रखा गया था, जिस पर साफ-सुथरे सफेद तकियों वाला बिस्तर लगाया गया था। स्मर्ड्याकोव उसी ड्रेसिंग गाउन में सोफे पर बैठा था। मेज को सोफे के सामने इस तरह लाया गया था कि हिलने-डुलने की भी जगह नहीं बची थी। मेज पर

पीले कवर वाली एक मोटी किताब पड़ी थी, लेकिन स्मर्ज्याकोव उसे नहीं पढ़ रहा था। ऐसा लग रहा था मानो वह कुछ नहीं कर रहा हो। उसने इवान को धीमी, खामोश निगाहों से देखा, और जाहिर तौर पर उसके आने पर उसे जरा भी हैरानी नहीं हुई। उसके चेहरे में बहुत बदलाव आ गया था; वह बहुत दुबला और पीला पड़ गया था। उसकी आंखें धंसी हुई थीं और उनके नीचे नीले निशान थे।
“क्या सच में तुम बीमार हो?” इवान अचानक रुक गया। “मैं तुम्हें ज़्यादा देर नहीं रोकूंगा, मैं
मैं अपना कोट भी नहीं उतार रहा। बैठ कहाँ जाऊँ?
वह मेज के दूसरे छोर पर गया, एक कुर्सी खिसकाई और बैठ गया।
यह।
“तुम बिना बोले मुझे क्यों देख रहे हो? मैं तो सिर्फ एक ही चीज़ लेकर आया हूँ।”
सवाल है, और मैं कसम खाता हूँ कि मैं बिना जवाब दिए नहीं जाऊंगा। क्या युवती, कैटेरिना इवानोवना, आपके साथ थीं?
स्मरद्याकोव अभी भी चुप रहा, पहले की तरह चुपचाप इवान को देखता रहा।
अचानक, उसने हाथ के इशारे से अपना चेहरा दूसरी ओर मोड़ लिया।
“तुम्हें क्या हुआ है?” इवान चिल्लाया।
"कुछ नहीं।"
“‘कुछ नहीं’ से आपका क्या मतलब है?”
“हां, उसने किया है। इससे तुम्हें कोई फर्क नहीं पड़ता। मुझे अकेला छोड़ दो।”
“नहीं, मैं तुम्हें अकेला नहीं छोड़ूंगा। मुझे बताओ, वह यहाँ कब आई थी?”
"अरे, मैं तो उसके बारे में बिल्कुल भूल ही गया था," स्मर्ज्याकोव ने तिरस्कारपूर्ण लहजे में कहा।
मुस्कुराया और अपना चेहरा फिर से इवान की ओर मोड़ते हुए, उसने उसे उन्मादी घृणा भरी निगाहों से देखा, ठीक वैसी ही निगाहों से जैसी उसने एक महीने पहले उनके आखिरी साक्षात्कार में उसे देखा था।
“आप स्वयं बहुत बीमार लग रहे हैं, आपका चेहरा पिचका हुआ है; आप पहले जैसे नहीं दिखते।”
“तुम खुद,” उसने इवान से कहा।
"मेरी सेहत की चिंता मत करो, मुझे वही बताओ जो मैं तुमसे पूछ रहा हूँ।"
“लेकिन तुम्हारी आँखें इतनी पीली क्यों हैं? सफेदी तो काफी पीली है। क्या तुम
"इतने चिंतित हो?" उसने तिरस्कारपूर्ण मुस्कान के साथ कहा और अचानक खुलकर हंस पड़ा।
“सुनो; मैंने तुमसे कहा है कि मैं जवाब मिले बिना नहीं जाऊंगा!” इवान चिल्लाया।
बेहद चिढ़ गया।
“तुम मुझे क्यों परेशान करते रहते हो? तुम मुझे क्यों सताते हो?”
स्मरद्याकोव, पीड़ा के भाव से।
“धिक्कार है! मेरा तुमसे कोई लेना-देना नहीं है। बस मेरे सवाल का जवाब दो और मैं...”
दूर जाओ।"
“मेरे पास आपको देने के लिए कोई जवाब नहीं है,” स्मरद्याकोव ने फिर से नीचे देखते हुए कहा। “आप निश्चिंत रहें, मैं आपसे जवाब जरूर लूंगा!”
“तुम इतने बेचैन क्यों हो?” स्मर्ज्याकोव ने उसे घूरकर देखा, न केवल
तिरस्कार के भाव से, लेकिन लगभग घृणा से। "क्या यह इसलिए है क्योंकि कल से मुकदमा शुरू हो रहा है? तुम्हारा कुछ नहीं होगा; क्या तुम्हें आखिरकार इस बात पर यकीन नहीं हो रहा? घर जाओ, बिस्तर पर जाओ और चैन से सो जाओ, किसी बात से मत डरो।"
मुझे आपकी बात समझ नहीं आ रही... कल मुझे किस बात का डर है?
इवान ने हैरानी से कहा, और अचानक उसके मन में भय की एक सिहरन दौड़ गई। स्मर्ज्याकोव ने उसे अपनी आँखों से परखा।
“तुम्हें समझ नहीं आया?” उसने तिरस्कार भरे लहजे में कहा। “यह एक अजीब बात है।”
एक समझदार व्यक्ति को ही इस तरह का तमाशा खेलने की परवाह करनी चाहिए!
इवान उसे अवाक होकर देखता रहा। चौंकाने वाला, अविश्वसनीय रूप से घमंडी

कभी उनके नौकर रहे इस व्यक्ति का लहजा अपने आप में असाधारण था। पिछली मुलाकात में भी उन्होंने ऐसा लहजा नहीं अपनाया था।
मैं तुमसे कहता हूँ, तुम्हें डरने की कोई ज़रूरत नहीं है। मैं इस बारे में कुछ नहीं कहूँगा।
तुम; तुम्हारे खिलाफ कोई सबूत नहीं है। मैं कहता हूँ, तुम्हारे हाथ कैसे काँप रहे हैं! तुम्हारी उंगलियाँ इस तरह क्यों हिल रही हैं? घर जाओ, तुमने उसका खून नहीं किया है।
इवान चौंक गया। उसे अलेयोशा की याद आ गई।
“मुझे पता है कि यह मैंने नहीं किया,” वह हिचकिचाते हुए बोला।
“क्या तुम?” स्मर्ड्याकोव ने फिर उससे सवाल किया।
इवान उछल पड़ा और उसने उसे कंधे से पकड़ लिया। “मुझे सब कुछ बताओ, तुम साँप! मुझे सब कुछ बताओ!” स्मर्ड्याकोव ज़रा भी नहीं डरा। उसने बस अपनी निगाहें उस पर गड़ा दीं।
इवान के मन में घोर घृणा थी।
“ठीक है, अगर यही बात है तो तुमने ही उसकी हत्या की है,” उसने फुसफुसाते हुए कहा।
उग्रता से।
इवान कुर्सी पर पीछे की ओर झुक गया, मानो कुछ सोच रहा हो। वह हँसा।
घातक रूप से।
“तुम्हारा मतलब मेरे चले जाने से है। पिछली बार तुमने इसी बारे में बात की थी?”
“पिछली बार तुम मेरे सामने खड़े हुए थे और सब कुछ समझ गए थे, और तुम
अब इसे समझ लो।
मुझे बस इतना समझ में आया है कि तुम पागल हो।
“क्या तुम इससे थक नहीं गए? हम आमने-सामने हैं; जाने का क्या फायदा?”
क्या तुम अब भी सारा दोष मुझ पर, मेरे सामने, डालने की कोशिश कर रहे हो? तुमने उसकी हत्या की; तुम ही असली हत्यारे हो, मैं तो बस तुम्हारा मोहरा था, तुम्हारा वफादार सेवक था, और मैंने तुम्हारे कहे अनुसार ही यह सब किया।
“क्या तुमने ऐसा किया? क्यों, क्या तुमने उसकी हत्या की?” इवान एकदम ठंडा पड़ गया। उसके दिमाग में जैसे कुछ गड़बड़ हो गई और वह पूरी तरह कांप उठा।
ठंड से सिहरन के साथ। फिर स्मर्ड्याकोव ने भी आश्चर्य से उसकी ओर देखा; शायद इवान के भय की वास्तविकता ने उसे झकझोर दिया।
“क्या आपका मतलब यह है कि आपको सचमुच पता नहीं था?” वह हिचकिचाया।
अविश्वास भरी निगाहों से, बनावटी मुस्कान के साथ उसकी आँखों में देखते हुए। इवान अब भी उसे घूर रहा था और मानो कुछ बोल ही नहीं पा रहा था।
“अरे, वांका पीटर्सबर्ग चली गई है।”
मैं उसके वापस आने का इंतजार नहीं करूंगा।
अचानक उसके दिमाग में यह बात गूंज उठी।
“क्या तुम्हें पता है, मुझे डर है कि तुम एक सपना हो, एक प्रेत हो जो बैठा है।”
“मेरे सामने,” उसने बुदबुदाते हुए कहा।
“यहाँ कोई प्रेत नहीं है, बस हम दोनों और एक और व्यक्ति है। इसमें कोई शक नहीं कि वह
वह तीसरा व्यक्ति, जो हमारे बीच में है, यहीं पर है।"
“यह कौन है? यहाँ कौन है? तीसरा व्यक्ति कौन है?” इवान ने घबराकर चिल्लाया।
वह अपने चारों ओर देख रहा था, उसकी आँखें जल्दबाजी में हर कोने में खोज रही थीं।
“वह तीसरा स्वयं ईश्वर है—ईश्वरीय कृपा। वह अब हमारे साथ तीसरा है।”
बस, उसे ढूंढने की कोशिश मत करो, वह तुम्हें नहीं मिलेगा।
“तुमने उसे मारा, यह झूठ है!” इवान पागलों की तरह चिल्लाया। “तुम पागल हो, या
मुझे फिर से चिढ़ा रहे हो!
स्मरद्याकोव पहले की तरह ही उत्सुकता से उसे देख रहा था, उसमें डर का कोई संकेत नहीं था।

वह अब भी अपने अविश्वास से उबर नहीं पा रहा था; उसे अब भी लगता था कि इवान सब कुछ जानता है और "सब कुछ उसके मुंह पर थोपने" की कोशिश कर रहा है।
“एक मिनट रुको,” उसने अंततः कमजोर आवाज में कहा, और अचानक उसे रोकते हुए
मेज के नीचे से अपना बायां पैर ऊपर उठाते हुए, उसने अपनी पतलून का पाँव ऊपर करना शुरू किया। उसने लंबी सफेद मोज़े और चप्पलें पहन रखी थीं। धीरे-धीरे उसने अपना गार्टर उतारा और अपने मोज़े के निचले हिस्से तक टटोला। इवान उसे देखता रहा और अचानक डर के मारे कांप उठा।
“वह पागल है!” वह चिल्लाया, और तेज़ी से उछलकर पीछे हट गया, ताकि वह
इवान दीवार से पीठ टकराकर सीधा खड़ा हो गया। उसने भयानक भय से स्मरद्याकोव को देखा, जो उसके भय से बिल्कुल अप्रभावित होकर अपनी मोज़े में कुछ टटोलता रहा, मानो कुछ पकड़ने और बाहर निकालने की कोशिश कर रहा हो। आखिरकार उसने उसे पकड़ लिया और बाहर खींचने लगा। इवान ने देखा कि वह कागज़ का एक टुकड़ा था, या शायद कागज़ों का बंडल। स्मरद्याकोव ने उसे बाहर निकाला और मेज पर रख दिया।
“यहाँ,” उसने धीमी आवाज़ में कहा।
“यह क्या है?” इवान ने कांपते हुए पूछा।
“कृपया इसे देख लीजिए,” स्मरद्याकोव ने उसी धीमी आवाज़ में उत्तर दिया। इवान मेज के पास गया, कागज़ों का बंडल उठाया और शुरू किया।
उसे खोलते हुए, लेकिन अचानक उसने अपनी उंगलियां पीछे खींच लीं, मानो किसी घृणित सरीसृप के संपर्क से।
"तुम्हारे हाथ लगातार फड़क रहे हैं," स्मर्ड्याकोव ने कहा, और उसने
उसने जानबूझकर खुद ही बंडल खोला। रैपर के नीचे सौ-सौ रूबल के नोटों के तीन पैकेट थे।
“ये सब यहीं हैं, पूरे तीन हजार रूबल; आपको गिनने की जरूरत नहीं है।”
“इन्हें ले लो,” स्मरद्याकोव ने नोटों की ओर इशारा करते हुए इवान को सुझाव दिया। इवान अपनी कुर्सी पर पीछे की ओर धंस गया। उसका चेहरा रुमाल की तरह सफेद पड़ गया था।
“तुमने मुझे डरा दिया... अपनी मोजे से,” उसने एक अजीब से लहजे में कहा।
मुस्कुराना।
“क्या आपको अब तक वाकई पता नहीं था?” स्मर्ड्याकोव ने एक बार पूछा।
अधिक।
“नहीं, मुझे नहीं पता था। मैं दिमित्री के बारे में सोचती रही। भाई, भाई! आह!”
उसने अचानक अपने दोनों हाथों से अपना सिर पकड़ लिया।
“सुनो। क्या तुमने उसे अकेले मारा? मेरे भाई की मदद से या उसके बिना?”
“सिर्फ तुम्हारे साथ, तुम्हारी मदद से ही मैंने उसे मारा, और दिमित्री
फ्योदोरोविच बिल्कुल निर्दोष हैं।
ठीक है, ठीक है। मेरे बारे में बाद में बात करना। मैं इतना कांप क्यों रहा हूँ?
ठीक से बोल नहीं सकता।
“तब आपमें काफी साहस था। आपने कहा था कि ‘सब कुछ वैध है,’ और
“अब तुम कितने डरे हुए हो,” स्मरद्याकोव ने हैरानी से बुदबुदाया। “क्या तुम थोड़ा नींबू पानी नहीं लोगे? मैं अभी लाता हूँ। यह बहुत ताज़गी देता है। बस मुझे इसे पहले छुपाना होगा।”
और फिर उसने नोटों की ओर इशारा किया। वह बस उठकर फोन करने ही वाला था।
इवान मार्या कोंद्रत्येवना के दरवाजे पर नींबू पानी बनाने और उन्हें देने के लिए रुका, लेकिन नोटों को छुपाने के लिए कुछ ढूंढते हुए ताकि वो उन्हें देख न सके, उसने पहले अपना रुमाल निकाला, और चूंकि वह बहुत गंदा निकला, उसने मेज पर पड़ी उस बड़ी पीली किताब को उठाया जिसे इवान ने पहले ही देख लिया था, और उसे नोटों के ऊपर रख दिया। वह किताब 'पवित्र पिता इसहाक सीरियाई के वचन' थी। इवान ने उसे यंत्रवत पढ़ा।
“मुझे नींबू पानी नहीं चाहिए,” उसने कहा। “बाद में बात करेंगे। बैठो और
मुझे बताओ तुमने यह कैसे किया। मुझे इसके बारे में सब कुछ बताओ।

“बेहतर होगा कि तुम अपना ओवरकोट उतार दो, वरना तुम्हें बहुत गर्मी लगेगी।” इवान ने कहा।
हालांकि उसे अभी-अभी यह ख्याल आया था, उसने अपना कोट उतारा और अपनी कुर्सी से उठे बिना ही उसे बेंच पर फेंक दिया।
“कृपया बोलिए, बोलिए।”
वह शांत लग रहा था। वह इंतजार कर रहा था, उसे पूरा यकीन था कि स्मर्ज्याकोव बता देगा।
उसे इसके बारे में सब कुछ बता दिया।
“यह कैसे हुआ?” स्मर्ज्याकोव ने आह भरी। “यह बहुत ही स्वाभाविक तरीके से हुआ।”
मैं आपके ही शब्दों का अनुसरण कर रहा हूँ।
“मेरी बात का जवाब बाद में,” इवान ने फिर से बीच में टोकते हुए कहा, मानो पूरी तरह से
संयमित होकर, दृढ़ता से अपने शब्दों को कहते हुए, और पहले की तरह चिल्लाते हुए नहीं, उन्होंने कहा,
“मुझे बस विस्तार से बताओ कि तुमने यह कैसे किया। सब कुछ, जैसा हुआ। कुछ भी मत भूलना। सबसे बढ़कर, विवरण, विवरण, मैं तुमसे विनती करता हूँ।”
"तुम चले गए थे, फिर मैं तहखाने में गिर गया।"
“क्या वह सच में दौरे में था या दिखावटी दौरे में?”
“स्वाभाविक रूप से, यह एक दिखावा था। मैंने सब कुछ दिखावा किया। मैं चुपचाप सीढ़ियों से नीचे उतर गया।
मैं बिल्कुल तल तक गया और चुपचाप लेट गया, और जैसे ही मैं लेटा, मैंने चीख मारी और तब तक संघर्ष करता रहा जब तक कि वे मुझे बाहर नहीं ले आए।"
“रुको! और क्या तुम शुरू से लेकर अंत तक, और फिर भी नाटक कर रहे थे?”
अस्पताल?"
“नहीं, बिलकुल नहीं। अगले दिन सुबह, मुझे ले जाने से पहले...”
अस्पताल में मुझे एक गंभीर दौरा पड़ा, जो पिछले कई सालों में आए दौरों से कहीं ज्यादा हिंसक था। मैं दो दिनों तक पूरी तरह बेहोश रहा।
“ठीक है, ठीक है। आगे बढ़ो।”
“उन्होंने मुझे बिस्तर पर लिटा दिया। मुझे पता था कि मैं विभाजन के दूसरी तरफ रहूंगा।”
जब भी मैं बीमार होती थी, मार्फा इग्नात्येवना मुझे उनके पास ही लिटा देती थीं। जन्म से ही वह मेरे प्रति बहुत दयालु रही हैं। रात को मैं धीरे-धीरे कराहती थी। मुझे हमेशा दिमित्री फ्योदोरोविच के आने की उम्मीद रहती थी।
“क्या आप उसकी उम्मीद कर रही थीं? कि वह आपके पास आएगा?”
“मेरे लिए नहीं। मुझे उम्मीद थी कि वह घर में आएगा, क्योंकि मुझे इसमें कोई संदेह नहीं था कि
वह उस रात जरूर आएगा, क्योंकि मेरे बिना रहने और कोई खबर न मिलने पर, वह हमेशा की तरह बाड़ फांदकर आएगा और कुछ न कुछ करेगा।
और अगर वह नहीं आता तो?
“तब तो कुछ भी नहीं होता। मुझे उसे लाना ही नहीं चाहिए था।”
मैं उसके बिना ही यह काम खुद कर लूंगी।
“ठीक है, ठीक है... और स्पष्ट रूप से बोलो, जल्दी मत करो; सबसे बढ़कर,
कुछ भी मत छोड़ना!
मुझे उम्मीद थी कि वह फ्योदोर पावलोविच को मार डालेगा। मुझे लगा कि यह निश्चित है, क्योंकि
मैंने उसे इसके लिए पहले से ही तैयार कर दिया था... पिछले कुछ दिनों से... उसे खटखटाहट के बारे में पता था, यही सबसे महत्वपूर्ण बात थी। उसकी शंका और उन दिनों से उसके अंदर पनप रहे गुस्से के कारण, वह उन नलों के रास्ते ही घर में घुसने वाला था। यह अपरिहार्य था, इसलिए मैं उसके आने की उम्मीद कर रहा था।
“रुको,” इवान ने बीच में ही टोकते हुए कहा; “अगर उसने उसे मार डाला होता, तो वह उसे ले जाता।”
आपने पैसे लेकर चले गए; आपने इस बारे में जरूर सोचा होगा। बाद में आपको उससे क्या मिलता? मुझे तो समझ नहीं आता।

“लेकिन उसे कभी पैसे नहीं मिलते। मैंने उसे बस इतना ही बताया था।”
उसे बताया गया कि पैसा गद्दे के नीचे है। लेकिन यह सच नहीं था। पैसा एक बक्से में रखा था। बाद में मैंने फ्योदोर पावलोविच को सुझाव दिया, क्योंकि मैं ही एकमात्र ऐसा व्यक्ति था जिस पर वह भरोसा करता था, कि नोटों वाला लिफाफा मूर्तियों के पीछे कोने में छिपा दे, क्योंकि कोई भी उस जगह का अंदाज़ा नहीं लगा सकता था, खासकर अगर वे जल्दी में आते। तो लिफाफा वहीं पड़ा था, मूर्तियों के पीछे कोने में। उसे गद्दे के नीचे रखना बेवकूफी होती; वैसे भी, बक्सा बंद किया जा सकता था। लेकिन सभी मानते हैं कि वह गद्दे के नीचे था। एक मूर्खतापूर्ण विश्वास। तो अगर दिमित्री फ्योदोरोविच ने हत्या की होती और उसे कुछ नहीं मिला होता, तो वह या तो हर आवाज़ से डरकर जल्दी से भाग जाता, जैसा कि हत्यारों के साथ हमेशा होता है, या उसे गिरफ्तार कर लिया जाता। इसलिए मैं अगली सुबह या उसी रात मूर्तियों पर चढ़कर पैसा ले जा सकता था, और सारा दोष दिमित्री फ्योदोरोविच पर डाल दिया जाता। मैं इस बात पर भरोसा कर सकता था।
"लेकिन क्या होगा अगर उसने उसे मारा नहीं, बल्कि केवल उसे गिरा दिया?"
"अगर उसने उसे नहीं मारा होता, तो बेशक मैं यह कदम उठाने की हिम्मत नहीं करता।"
अगर मुझे पैसे मिल जाते, तो कुछ भी नहीं होता। लेकिन मैंने सोचा कि वो उसे बुरी तरह पीटेगा, और तब मुझे पैसे लेने का समय मिल जाएगा, और फिर मैं फ्योदोर पावलोविच को बता दूंगा कि उसे पीटने के बाद पैसे लेने वाला कोई और नहीं बल्कि दिमित्री फ्योदोरोविच था।
“रुको... मैं उलझन में पड़ रहा हूँ। आखिर दिमित्री ने ही तो हत्या की थी।”
तुमने उससे सिर्फ पैसे लिए?
“नहीं, उसने उसे नहीं मारा। खैर, मैं तुम्हें अभी ही बता देती कि वही हत्यारा है... लेकिन मैं अब तुमसे झूठ नहीं बोलना चाहती, क्योंकि... क्योंकि अगर तुम अब तक नहीं समझे हो, जैसा कि मैं खुद देख रही हूँ, और दिखावा नहीं कर रहे हो ताकि अपना दोष मुझ पर थोप सको, तो भी तुम ही इसके लिए ज़िम्मेदार हो, क्योंकि तुम्हें हत्या की जानकारी थी और तुमने मुझे यह करने का आदेश दिया, और सब कुछ जानते हुए भी तुम चले गए। इसलिए मैं आज शाम तुम्हारे सामने यह साबित करना चाहती हूँ कि इस पूरे मामले में असली हत्यारा तुम ही हो, और मैं नहीं, हालाँकि मैंने ही उसे मारा है। असली हत्यारा तुम ही हो।”
“क्यों, क्यों, क्या मैं हत्यारा हूँ? हे भगवान!” इवान चीख पड़ा, खुद को रोक नहीं पा रहा था।
आखिरकार, वह खुद से बात करने लगा, और यह भूल गया कि उसने अपने बारे में चर्चा को बातचीत के अंत तक टाल दिया था। "क्या अब भी तुम्हारा मतलब चेरमाश्न्या से है? रुको, मुझे बताओ, अगर तुमने सचमुच चेरमाश्न्या से सहमति ली थी, तो तुम्हें मेरी सहमति क्यों चाहिए थी? अब तुम इसका क्या स्पष्टीकरण दोगे?"
आपकी सहमति का आश्वासन होने पर, मुझे यह जान लेना चाहिए था कि आप ऐसा नहीं करेंगे।
उन तीन हज़ार लोगों के खो जाने पर मैंने हंगामा मचा दिया होता, भले ही दिमित्री फ्योदोरोविच के बजाय मुझ पर या उसके साथी होने का संदेह होता; इसके विपरीत, तुम मुझे दूसरों से बचाते... और जब तुम्हें अपनी विरासत मिलती, तो तुम मुझे अपनी शेष जीवनभर, जब भी संभव होता, पुरस्कृत करते। क्योंकि तुम्हें अपनी विरासत मेरे माध्यम से मिलती, यह देखते हुए कि अगर उसने अग्रफेना अलेक्जेंड्रोवना से शादी की होती, तो तुम्हें एक पैसा भी नहीं मिलता।
“अरे! तो फिर तुम मुझे पूरी जिंदगी परेशान करना चाहते हो,” उसने गुस्से से कहा।
इवान। "और अगर मैं तब वहां से नहीं जाता, बल्कि तुम्हारे खिलाफ मुखबिरी कर देता तो क्या होता?"
“तुम क्या बता सकते थे? कि मैंने तुम्हें जाने के लिए राजी किया था?”
चेरमाश्न्या? ये सब बकवास है। वैसे भी, हमारी बातचीत के बाद तुम या तो चले जाते या रुक जाते। अगर तुम रुक जाते, तो कुछ नहीं होता। मुझे समझ जाना चाहिए था कि तुम ऐसा नहीं चाहते थे, और मुझे कुछ भी करने की कोशिश नहीं करनी चाहिए थी। तुम्हारे जाने का मतलब था कि तुमने मुझे भरोसा दिलाया कि तुम मुकदमे में मेरे खिलाफ गवाही देने की हिम्मत नहीं करोगे, और मेरे पास तीन हज़ार होने की बात को नज़रअंदाज़ कर दोगे। और, सच में, तुम बाद में मुझ पर मुकदमा नहीं चला सकते थे, क्योंकि तब मुझे अदालत में सब कुछ बता देना पड़ता; यानी, यह नहीं कि मैंने पैसे चुराए थे या उसे मारा था—मुझे यह नहीं कहना चाहिए था—बल्कि यह कि तुमने मुझे चोरी और हत्या के लिए उकसाया था, जबकि मैंने इसके लिए सहमति नहीं दी थी। इसीलिए मुझे तुम्हारी सहमति चाहिए थी, ताकि तुम बाद में मुझे घेर न सको, क्योंकि तुम्हारे पास क्या सबूत

होता? मैं तुम्हें हमेशा घेर सकता था, तुम्हारे पिता की मौत के लिए तुम्हारी उत्सुकता का पर्दाफाश कर सकता था, और मैं तुम्हें बता दूं कि जनता इस पर विश्वास कर लेती, और तुम जीवन भर शर्मिंदा रहते।
“क्या मैं तब इतना उत्सुक था?” इवान फिर गुर्राया। “ज़रूर था, और तुम्हारी सहमति से तुमने चुपचाप मेरी इस हरकत को मंज़ूरी दे दी।”
"मैं इसे कर रहा हूँ।" स्मर्ड्याकोव ने दृढ़ता से इवान की ओर देखा। वह बहुत कमजोर था और धीरे-धीरे और थकी हुई आवाज़ में बोल रहा था, लेकिन कोई छिपी हुई आंतरिक शक्ति उसे आगे बढ़ने के लिए प्रेरित कर रही थी। जाहिर तौर पर उसकी कोई योजना थी। इवान को यह महसूस हुआ।
“बताओ,” उसने कहा। “मुझे बताओ कि उस रात क्या हुआ था।”
अब और क्या बताऊं! मैं वहीं लेटा रहा और मुझे लगा जैसे मैंने गुरु की आवाज सुनी।
चीख। और उससे पहले ग्रिगोरी वासिलीविच अचानक उठकर बाहर आ गया, और उसने अचानक चीख मारी, और फिर सब सन्नाटा और अंधेरा छा गया। मैं वहीं लेटा इंतज़ार करता रहा, मेरा दिल ज़ोर से धड़क रहा था; मैं इसे सहन नहीं कर पा रहा था। आखिरकार मैं उठा, बाहर गया। मैंने बाईं ओर बगीचे की ओर खिड़की खुली देखी, और मैं यह सुनने के लिए बाईं ओर गया कि क्या वह वहाँ जीवित बैठा है, और मैंने गुरुजी को इधर-उधर घूमते और आहें भरते सुना, इसलिए मुझे पता चल गया कि वह जीवित है। उफ़! मैंने सोचा। मैं खिड़की के पास गया और गुरुजी को चिल्लाकर कहा, 'मैं हूँ।' और उन्होंने मुझे चिल्लाकर कहा, 'वह आया था, वह आया था; वह भाग गया है।' उनका मतलब था कि दिमित्री फ्योदोरोविच आया था। 'उसने ग्रिगोरी को मार डाला!' 'कहाँ?' मैंने फुसफुसाकर पूछा। 'वहाँ, कोने में,' उन्होंने इशारा किया। वह भी फुसफुसा रहे थे। 'थोड़ा रुको,' मैंने कहा। मैं बगीचे के कोने में देखने गया, और वहाँ मैंने ग्रिगोरी वासिलीविच को दीवार के पास खून से लथपथ, बेसुध पड़ा पाया। तो यह सच है कि दिमित्री फ्योदोरोविच यहाँ आया था, यही विचार मेरे मन में आया, और मैंने उसी क्षण इसे खत्म करने का निश्चय कर लिया, क्योंकि ग्रिगोरी वासिलीविच, अगर जीवित भी होते, तो भी उन्हें कुछ दिखाई नहीं देता, क्योंकि वे वहाँ बेसुध पड़े थे। एकमात्र खतरा यह था कि मार्फा इग्नात्येवना जाग सकती थीं। मुझे उस क्षण यह महसूस हुआ, लेकिन इसे जल्द से जल्द खत्म करने की तीव्र इच्छा मुझ पर हावी हो गई, यहाँ तक कि मेरी साँसें भी फूलने लगीं। मैं वापस खिड़की के पास मालिक के पास गया और कहा, 'वह यहाँ है, वह आ गई है; अग्रफेना अलेक्जेंड्रोवना आई है, अंदर आना चाहती है।' और वह एक बच्चे की तरह चौंक गया। 'वह कहाँ है?' वह लगभग हाँफते हुए बोला, लेकिन उसे विश्वास नहीं हो रहा था। मैंने कहा, ‘वह वहीं खड़ी है, दरवाज़ा खोलो।’ उसने खिड़की से मेरी तरफ देखा, आधा यकीन और आधा शक के साथ, लेकिन दरवाज़ा खोलने से डर रहा था। ‘अरे, अब तो वह मुझसे भी डर रहा है,’ मैंने सोचा। और यह अजीब था। मुझे याद आया कि खिड़की के फ्रेम पर उन नलों को खटखटाऊं जिन पर हम सहमत हुए थे, ताकि उसे संकेत मिल जाए कि ग्रुशेंका उसके सामने, उसकी आंखों के सामने आ गई है। उसे मेरी बात पर यकीन नहीं हुआ, लेकिन जैसे ही उसने नलों की आवाज़ सुनी, वह तुरंत दरवाज़ा खोलने के लिए दौड़ा। उसने दरवाज़ा खोल दिया। मैं अंदर जाना चाहती थी, लेकिन वह मेरे रास्ते में खड़ा हो गया। ‘वह कहां है? वह कहां है?’ उसने कांपते हुए मेरी तरफ देखा। मैंने सोचा, अगर वह मुझसे इतना डरता है, तो यह अच्छी बात नहीं है! और डर से मेरे पैर कांपने लगे कि कहीं वह मुझे अंदर न आने दे या मुझे पुकार न दे, या मार्फा इग्नात्येवना दौड़कर न आ जाए, या कुछ और न हो जाए। मुझे अब याद नहीं, लेकिन मैं उसके सामने पीली पड़ गई थी। मैंने उससे फुसफुसाकर कहा, 'अरे, वो तो वहीं है, खिड़की के नीचे; तुम्हें वो दिख क्यों नहीं रही?' मैंने कहा, 'उसे बुलाओ, बुलाओ।' मैंने कहा, 'वो डर गई है; शोर सुनकर डर गई है, झाड़ियों में छिपी है; जाओ और स्टडी रूम से खुद उसे बुलाओ।' वो खिड़की की तरफ दौड़ा, मोमबत्ती खिड़की में रख दी। 'ग्रुशेंका,' वो चिल्लाया, 'ग्रुशेंका, क्या तुम यहाँ हो?' हालाँकि वो चिल्लाया, लेकिन वो खिड़की से बाहर झुकना नहीं चाहता था, मुझसे दूर नहीं जाना चाहता था, क्योंकि वो घबराया हुआ था; वो इतना डरा हुआ था कि मेरी तरफ पीठ करने की हिम्मत भी नहीं कर पा रहा था। 'अरे, ये रही वो,' मैंने कहा। मैं खिड़की के पास गई और पूरी तरह बाहर झुक गई। 'ये रही वो; वो झाड़ी में है, तुम पर हंस रही है, क्या तुम्हें वो दिख नहीं रही?' अचानक उसे यकीन हो गया; वह बुरी तरह कांप रहा था—वह उसके लिए बुरी तरह पागल था—और खिड़की से बाहर झुक गया। मैंने उसकी मेज से वह लोहे का पेपर वेट उठा लिया; याद है, उसका वज़न लगभग तीन पाउंड था? मैंने उसे घुमाया और उसके कोने से उसकी खोपड़ी पर ज़ोर से मारा। वह चीखा भी नहीं। वह अचानक नीचे गिर गया, और मैंने उसे फिर से मारा, और तीसरी बार भी। और तीसरी बार मुझे पता चल गया कि मैंने

उसकी खोपड़ी तोड़ दी है। वह अचानक पीठ के बल लुढ़क गया, चेहरा ऊपर की ओर, खून से लथपथ। मैंने चारों ओर देखा। मुझ पर खून का एक धब्बा भी नहीं था। मैंने पेपर वेट को पोंछा, वापस रख दिया, मूर्तियों के पास गई, लिफाफे से पैसे निकाले, और लिफाफे को ज़मीन पर और गुलाबी रिबन को उसके बगल में फेंक दिया। मैं कांपते हुए बगीचे में गई, सीधे उस सेब के पेड़ के पास जिसमें एक खोखला हिस्सा था—आप जानते हैं वह खोखला हिस्सा। मैंने उसे बहुत पहले ही चिह्नित कर लिया था और उसमें एक कपड़ा और कागज़ का एक टुकड़ा तैयार रखा था। मैंने सारे नोटों को कपड़े में लपेटकर गड्ढे में गहराई तक ठूंस दिया। और वह वहाँ दो सप्ताह से अधिक समय तक पड़ा रहा। बाद में, जब मैं अस्पताल से बाहर आया, तो मैंने उसे बाहर निकाला। मैं अपने बिस्तर पर वापस गया, लेट गया और सोचने लगा, 'अगर ग्रिगोरी वासिलीविच की तुरंत हत्या कर दी गई है, तो मेरे लिए यह बुरा होगा, लेकिन अगर वह नहीं मारा गया और ठीक हो जाता है, तो यह बहुत अच्छा होगा, क्योंकि तब वह गवाही देगा कि दिमित्री फ्योदोरोविच यहाँ आया था, और इसलिए उसने ही उसे मारा होगा और पैसे लिए होंगे।' फिर मैं बेचैनी और घबराहट से कराहने लगा, ताकि मार्फा इग्नात्येवना को जल्द से जल्द जगा सकूँ। आखिरकार वह उठी और मेरी ओर दौड़ी, लेकिन जब उसने देखा कि ग्रिगोरी वासिलीविच वहाँ नहीं है, तो वह बाहर भाग गई, और मैंने बगीचे में उसकी चीख सुनी। और उसी से सब कुछ शुरू हुआ और मेरा मन शांत हो गया।
वह रुक गया। इवान पूरी तरह से खामोशी से सुनता रहा।
कभी वह हिलता तो कभी उससे नज़रें हटा लेता। अपनी कहानी सुनाते समय स्मरद्याकोव बीच-बीच में उसकी ओर देखता रहा, लेकिन ज़्यादातर समय उसने अपनी नज़रें हटा रखी थीं। कहानी खत्म होने पर वह स्पष्ट रूप से बेचैन था और उसकी साँसें तेज़ चल रही थीं। उसके चेहरे पर पसीना साफ झलक रहा था। लेकिन यह बताना मुश्किल था कि वह पश्चाताप महसूस कर रहा था या कुछ और।
“रुको,” इवान ने सोचते हुए कहा। “दरवाजे का क्या? अगर वह खोल दे तो?
तुम्हारे लिए जो दरवाजा खुला था, ग्रिगरी ने उसे पहले खुला कैसे देखा होगा? क्योंकि ग्रिगरी ने तो तुम्हारे जाने से पहले ही उसे देख लिया था।
यह उल्लेखनीय था कि इवान ने काफी सौहार्दपूर्ण ढंग से, एक अलग लहजे में बात की, न कि
वे पहले की तरह ही गुस्से में थे, इसलिए अगर उस समय किसी ने दरवाजा खोलकर अंदर झाँका होता, तो वह निश्चित रूप से यही निष्कर्ष निकालता कि वे किसी साधारण, हालांकि रोचक विषय पर शांतिपूर्वक बातचीत कर रहे थे।
“जहां तक उस दरवाजे और ग्रिगरी वासिल्येविच द्वारा उसे खुला देखने की बात है, वह...
“महज़ उसकी कल्पना,” स्मरद्याकोव ने व्यंग्यात्मक मुस्कान के साथ कहा। “मैं आपको यकीन दिलाता हूँ कि वह एक इंसान नहीं, बल्कि एक हठी खच्चर है। उसने इसे देखा नहीं, लेकिन उसे लगा कि उसने इसे देखा है, और अब उसे हिलाना नामुमकिन है। यह तो हमारी बदकिस्मती है कि उसने इस बात को अपने दिमाग में बिठा लिया, क्योंकि इसके बाद दिमित्री फ्योदोरोविच को दोषी ठहराने में कोई कसर नहीं छोड़ी जा सकती।”
“सुनो...” इवान ने कहा, वह फिर से उलझन में दिखने लगा था और कुछ बुदबुदा रहा था।
किसी बात को समझने की कोशिश। “सुनो। मैं तुमसे बहुत से सवाल पूछना चाहता हूँ, लेकिन भूल जाता हूँ... मैं बार-बार भूल जाता हूँ और उलझन में पड़ जाता हूँ। हाँ। कम से कम इतना तो बताओ, तुमने लिफाफा खोलकर उसे ज़मीन पर क्यों छोड़ दिया? तुम उसे उठाकर क्यों नहीं ले गए?... जब तुम मुझे बता रहे थे, तो मुझे लगा जैसे तुम सही काम कर रहे थे... लेकिन क्यों, मेरी समझ में नहीं आ रहा...”
मैंने ऐसा एक अच्छे कारण से किया। क्योंकि अगर किसी व्यक्ति को इसके बारे में सब कुछ पता होता, जैसा कि मुझे पता था।
उदाहरण के लिए, अगर उसने वे नोट पहले देखे होते, और शायद उन्हें खुद उस लिफाफे में डाला होता, और लिफाफे को सील बंद और पता लिखा हुआ अपनी आँखों से देखा होता, अगर ऐसे आदमी ने हत्या की होती, तो बाद में लिफाफे को फाड़ने की क्या ज़रूरत थी, खासकर इतनी जल्दबाजी में, जबकि उसे पक्का पता था कि नोट लिफाफे में ही होंगे? नहीं, अगर लुटेरा मेरे जैसा कोई होता, तो वह सीधे लिफाफे को अपनी जेब में डालता और जितनी जल्दी हो सके भाग जाता। लेकिन दिमित्री फ्योदोरोविच के मामले में मामला बिल्कुल अलग होता। उसे लिफाफे के बारे में सिर्फ सुनी-सुनाई बातों से पता था; उसने उसे कभी देखा नहीं था, और अगर उसे वह, मान लीजिए, गद्दे के नीचे मिल भी जाता, तो वह नोटों की पुष्टि करने के लिए उसे जितनी जल्दी

हो सके फाड़ देता। और वह लिफाफे को नीचे फेंक देता, यह सोचे बिना कि यह उसके खिलाफ सबूत बन सकता है। क्योंकि वह आदतन चोर नहीं था और उसने पहले कभी सीधे तौर पर कुछ चुराया भी नहीं था, क्योंकि वह खानदानी सज्जन था, और अगर उसने चोरी करने का फैसला भी किया होता, तो वह सामान्य चोरी नहीं होती, बल्कि केवल अपनी ही चीज़ लेना होता, क्योंकि उसने पूरे शहर को पहले ही बता दिया था कि वह ऐसा करने वाला है, और यहाँ तक कि सबके सामने शेखी भी मारी थी कि वह जाकर फ्योदोर पावलोविच से अपनी संपत्ति वापस ले लेगा। मैंने पूछताछ के दौरान अभियोक्ता से यह बात खुलकर नहीं कही, बल्कि इसके विपरीत, मैंने उसे इशारे से इस ओर आकर्षित किया, मानो मैंने खुद इसे नहीं देखा हो, और मानो उसने खुद ही इसके बारे में सोचा हो और मैंने उसे उकसाया न हो; इसलिए मेरी बात सुनकर अभियोक्ता के मुँह में पानी आ गया।
“लेकिन क्या तुम ये सब बातें मौके पर ही सोच सकते थे?” इवान चिल्लाया।
आश्चर्य से अभिभूत होकर, उसने घबराहट भरी निगाहों से स्मरद्याकोव की ओर फिर देखा।
हे भगवान! क्या कोई इतनी जल्दबाजी में इन सब बातों के बारे में सोच सकता है?
यह सब पहले से ही तय था।
“अच्छा... अच्छा, शैतान ने ही तुम्हारी मदद की!” इवान फिर चिल्लाया। “नहीं, तुम
तुम मूर्ख नहीं हो, तुम मेरी सोच से कहीं ज्यादा चतुर हो...
वह उठा, जाहिर तौर पर कमरे के उस पार जाने का इरादा था। वह अंदर था।
अत्यंत पीड़ा। लेकिन मेज ने उसका रास्ता रोक रखा था, और मेज़ और दीवार के बीच से निकलने की जगह न के बराबर थी, इसलिए वह जहाँ खड़ा था वहीं घूमकर फिर से बैठ गया। शायद हिलने-डुलने में असमर्थता ने उसे चिढ़ा दिया, क्योंकि वह अचानक पहले की तरह ही उग्रता से चिल्ला उठा।
सुनो, तुम नीच, घृणित प्राणी! क्या तुम्हें समझ नहीं आता?
अगर मैंने तुम्हें नहीं मारा है, तो बस इसलिए कि मैं तुम्हें कल मुक़दमे में जवाब देने के लिए रोक रहा हूँ। ईश्वर सब देख रहा है,” इवान ने हाथ उठाया, “शायद मैं भी दोषी था; शायद मेरे मन में सचमुच अपने पिता की मृत्यु की गुप्त इच्छा थी... लेकिन मैं कसम खाता हूँ कि मैं उतना दोषी नहीं था जितना तुम सोचते हो, और शायद मैंने तुम्हें बिल्कुल भी उकसाया नहीं था। नहीं, नहीं, मैंने तुम्हें उकसाया नहीं था! लेकिन कोई बात नहीं, मैं कल मुक़दमे में अपने खिलाफ गवाही दूँगा। मैंने ठान लिया है! मैं सब कुछ बताऊँगा, सब कुछ। लेकिन हम साथ-साथ पेश होंगे। और मुक़दमे में तुम मेरे खिलाफ जो कुछ भी कहोगे, जो भी सबूत दोगे, मैं उसका सामना करूँगा; मैं तुमसे नहीं डरता। मैं खुद सब कुछ साबित कर दूँगा! लेकिन तुम्हें भी कबूल करना होगा! तुम्हें करना ही होगा, तुम्हें करना ही होगा; हम साथ चलेंगे। ऐसा ही होगा!”
इवान ने यह बात पूरी गंभीरता और दृढ़ता से कही, और वह भी केवल अपनी चमकती आँखों से।
ऐसा प्रतीत होता था।
“मुझे लगता है कि तुम बीमार हो; तुम बहुत बीमार हो। तुम्हारी आँखें पीली पड़ गई हैं,” स्मरद्याकोव ने कहा। उन्होंने जरा भी व्यंग्य किए बिना, बल्कि स्पष्ट सहानुभूति के साथ टिप्पणी की।
“हम साथ चलेंगे,” इवान ने दोहराया। “और अगर तुम नहीं जाओगे, तो कोई बात नहीं, मैं चला जाऊंगा।”
अकेले ही जाना।"
स्मर्ज्याकोव कुछ देर रुका, मानो सोच-विचार कर रहा हो।
अंत में उसने कहा, "ऐसा कुछ नहीं होगा, और तुम नहीं जाओगे।"
सकारात्मक रूप से।
“तुम मुझे समझते नहीं हो,” इवान ने फटकारते हुए कहा। “अगर तुम सब कुछ कबूल कर लोगे तो तुम्हें बहुत शर्म आएगी। और तो और, इससे भी बुरी बात यह है कि...”
इसका कोई फायदा नहीं होगा, क्योंकि मैं सीधे-सीधे कह देता हूँ कि मैंने तुमसे कभी ऐसी कोई बात नहीं कही, और या तो तुम बीमार हो (और ऐसा लगता भी है), या फिर तुम्हें अपने भाई के लिए इतना दुख है कि तुम उसे बचाने के लिए खुद को कुर्बान कर रहे हो और मेरे खिलाफ ये सब मनगढ़ंत कहानी बना रहे हो, क्योंकि तुमने हमेशा मुझे एक मक्खी से ज्यादा कुछ नहीं समझा। और कौन तुम्हारी बात पर यकीन करेगा, और तुम्हारे पास इसका क्या सबूत है?

“सुनो, तुमने मुझे यकीन दिलाने के लिए अभी-अभी वो नोट्स दिखाए थे।” स्मर्ड्याकोव ने नोट्स वाली किताब को उठाया और एक तरफ रख दिया। “वो पैसे अपने साथ ले जाओ,” स्मर्ड्याकोव ने आह भरी। “ज़रूर, मैं ले जाऊँगा। लेकिन अगर तुम मुझे पैसे दे रहे हो, तो क्यों दे रहे हो?”
"क्या उसने सिर्फ मजे के लिए हत्या की?" इवान ने उसे बड़े आश्चर्य से देखा।
“मुझे यह नहीं चाहिए,” स्मर्ड्याकोव ने कांपती हुई आवाज में कहा।
अस्वीकृति का भाव। “मैंने उस पैसे से मॉस्को में या उससे भी बेहतर, विदेश में एक नई जिंदगी शुरू करने का सोचा था। मैंने इसका सपना देखा था, मुख्य रूप से इसलिए क्योंकि ‘सब कुछ जायज़ है।’ आपने मुझे जो सिखाया था, वह बिल्कुल सही था, क्योंकि आपने मुझसे इस बारे में बहुत बातें की थीं। क्योंकि अगर कोई शाश्वत ईश्वर नहीं है, तो सद्गुण जैसी कोई चीज नहीं है, और उसकी कोई आवश्यकता भी नहीं है। आप बिल्कुल सही थे। इसलिए मैंने इसे इसी तरह समझा।”
“क्या तुम इस नतीजे पर खुद पहुंचे?” इवान ने व्यंग्यात्मक मुस्कान के साथ पूछा। “तुम्हारे मार्गदर्शन से।”
और अब, मुझे लगता है, आप भगवान में विश्वास करते हैं, क्योंकि आप इसे वापस दे रहे हैं।
धन?"
“नहीं, मुझे विश्वास नहीं है,” स्मर्ड्याकोव ने फुसफुसाते हुए कहा। “तो फिर आप इसे वापस क्यों दे रहे हैं?”
“बस करो... बहुत हो गया!” स्मर्ड्याकोव ने फिर से हाथ हिलाया। “तुम
तुम खुद कहते थे कि सब कुछ जायज़ था, तो अब इतना परेशान क्यों हो रहे हो? तुम तो खुद अपने खिलाफ गवाही देने भी जाना चाहते हो... लेकिन ऐसा कुछ नहीं होगा! तुम गवाही देने नहीं जाओगे," स्मर्ड्याकोव ने दृढ़ निश्चय से कहा।
“तुम देख लोगे,” इवान ने कहा।
“यह संभव नहीं है। तुम बहुत चालाक हो। मुझे पता है कि तुम्हें पैसों का बहुत शौक है।”
आप भी सम्मान पाना चाहते हैं, क्योंकि आप बहुत अभिमानी हैं; आप स्त्री-आकर्षण के भी बहुत बड़े दीवाने हैं, और सबसे बढ़कर आप किसी पर निर्भर हुए बिना, शांतिपूर्वक और आराम से रहना चाहते हैं—यही आपके लिए सबसे महत्वपूर्ण है। आप अपने ऊपर ऐसा कलंक लगाकर अपना जीवन हमेशा के लिए बर्बाद नहीं करना चाहेंगे। आप फ्योदोर पावलोविच जैसे हैं, आप उनके किसी भी बच्चे से ज़्यादा उनके जैसे हैं; आपकी आत्मा उन्हीं जैसी है।
“तुम मूर्ख नहीं हो,” इवान ने चौंकते हुए कहा। उसके चेहरे पर खून का दौरा तेज हो गया।
चेहरा। "अब तुम गंभीर हो गए हो!" उसने अचानक स्मरद्याकोव की ओर एक अलग भाव से देखते हुए कहा।
“तुम्हारे घमंड ने ही तुम्हें मुझे मूर्ख समझने पर मजबूर किया। ये पैसे ले लो।” इवान ने नोटों के तीनों बंडल लिए और उन्हें बिना कुछ कहे अपनी जेब में रख लिया।
उन्हें किसी भी चीज में लपेटना।
“मैं उन्हें कल अदालत में दिखाऊंगा,” उसने कहा। “कोई भी तुम पर विश्वास नहीं करेगा, क्योंकि तुम्हारे पास खुद का बहुत पैसा है; तुम
हो सकता है कि आपने इसे सीधे आपके कैश बॉक्स से निकालकर अदालत में पेश किया हो।"
इवान अपनी सीट से उठ खड़ा हुआ।
“मैं दोहराता हूँ,” उसने कहा, “मैंने तुम्हें इसलिए नहीं मारा क्योंकि मुझे ज़रूरत है।”
कल के लिए, इसे याद रखना, भूलना मत!
“ठीक है, मुझे मार डालो। मुझे अभी मार डालो,” स्मर्ड्याकोव ने अचानक देखते हुए कहा।
इवान की ओर अजीब नज़र से देखते हुए, उसने कड़वी मुस्कान के साथ कहा, "तुम तो ऐसा करने की हिम्मत भी नहीं करोगे! तुम, जो कभी इतने साहसी हुआ करते थे, अब कुछ भी करने की हिम्मत नहीं करोगे!"
“कल तक,” इवान चिल्लाया और बाहर जाने लगा। “एक पल रुकिए... मुझे वो नोट्स फिर से दिखाइए।”
इवान ने नोट्स निकाले और उसे दिखाए। स्मर्ड्याकोव ने उन्हें देखा।
उन्हें दस सेकंड के लिए।
“ठीक है, तुम जा सकते हो,” उसने हाथ हिलाते हुए कहा। “इवान
"फ्योदोरोविच!" उसने फिर से उसे पुकारा।
“तुम्हें क्या चाहिए?” इवान बिना रुके मुड़ा। “अलविदा!”

“कल मिलते हैं!” इवान फिर चिल्लाया और झोपड़ी से बाहर निकल गया। बर्फीला तूफान अभी भी जारी था। उसने कुछ कदम हिम्मत से बढ़ाए,
लेकिन अचानक वह लड़खड़ाने लगा। "कुछ शारीरिक समस्या है," उसने मुस्कुराते हुए सोचा। उसके दिल में खुशी की लहर दौड़ रही थी। उसे अटूट दृढ़ संकल्प का एहसास हुआ; वह उस दुविधा का अंत करेगा जिसने उसे हाल ही में इतना परेशान किया था। उसने अपना निश्चय कर लिया था, "और अब यह नहीं बदलेगा," उसने राहत की सांस लेते हुए सोचा। उसी क्षण वह किसी चीज से टकराया और लगभग गिर ही गया, रुकते ही उसने अपने पैरों के पास उस किसान को देखा जिसे उसने गिरा दिया था, वह अभी भी बेसुध और गतिहीन पड़ा था। बर्फ ने लगभग उसका चेहरा ढक लिया था। इवान ने उसे पकड़ा और अपनी बाहों में उठा लिया। दाईं ओर के छोटे से घर में रोशनी देखकर वह ऊपर गया, खिड़कियों पर दस्तक दी और घर के मालिक से किसान को पुलिस स्टेशन ले जाने में मदद करने के लिए कहा, और उसे तीन रूबल देने का वादा किया। वह आदमी तैयार हुआ और बाहर आया। मैं विस्तार से वर्णन नहीं करूंगा कि इवान अपने उद्देश्य में कैसे सफल हुआ, किसान को पुलिस स्टेशन ले गया और तुरंत डॉक्टर से उसकी जांच करवाई, और खर्चों के लिए उदारतापूर्वक पैसे दिए। मैं बस इतना ही कहूंगा कि इस काम में पूरा एक घंटा लग गया, लेकिन इवान इससे पूरी तरह संतुष्ट था। उसका मन लगातार विचारों में खोया रहा और काम करता रहा।
“अगर मैंने कल के लिए अपना फैसला इतना पक्का न लिया होता,” उन्होंने सोचा।
संतोष के साथ, "मुझे किसान की देखभाल करने के लिए पूरा एक घंटा नहीं रुकना चाहिए था, बल्कि उसकी ठंड से ठिठुरने की परवाह किए बिना आगे बढ़ जाना चाहिए था। वैसे, मैं खुद को अच्छी तरह से संभाल सकता हूँ," उसने उसी क्षण और भी अधिक संतोष के साथ सोचा, "भले ही उन्होंने यह तय कर लिया है कि मैं पागल हो रहा हूँ!"
जैसे ही वह अपने घर पहुंचा, वह अचानक रुक गया और खुद से पूछने लगा।
अचानक उसे लगा कि क्या उसे तुरंत अभियोक्ता के पास जाकर सब कुछ नहीं बता देना चाहिए? घर की ओर मुड़ते हुए उसने इस सवाल का फैसला किया। "कल सब ठीक हो जाएगा!" उसने मन ही मन फुसफुसाया, और हैरानी की बात है कि उसकी लगभग सारी खुशी और आत्मसंतुष्टि एक पल में गायब हो गई।
जैसे ही वह अपने कमरे में दाखिल हुआ, उसे अपने ऊपर बर्फ के स्पर्श जैसा कुछ महसूस हुआ।
उसका दिल किसी याद या, ज़्यादा सटीक कहें तो, किसी दर्दनाक और घिनौनी चीज़ की याद दिला रहा था जो उस कमरे में उस पल मौजूद थी, और पहले भी मौजूद थी। वह थका हुआ सा सोफे पर बैठ गया। बुढ़िया उसके लिए समोवर लाई; उसने चाय बनाई, लेकिन उसे छुआ तक नहीं। वह सोफे पर बैठा रहा और उसे चक्कर आने लगे। उसे लगा कि वह बीमार और बेबस है। उसे नींद आने लगी थी, लेकिन वह बेचैनी से उठा और अपनी नींद भगाने के लिए कमरे में इधर-उधर चला गया। कुछ पलों के लिए उसे लगा कि वह बेहोश है, लेकिन उसके दिमाग में सबसे ज़्यादा बीमारी का ख्याल नहीं आ रहा था। दोबारा बैठते हुए, वह चारों ओर देखने लगा, मानो कुछ खोज रहा हो। ऐसा कई बार हुआ। आखिरकार उसकी नज़रें एक बिंदु पर टिक गईं। इवान मुस्कुराया, लेकिन उसके चेहरे पर गुस्से की लाली छा गई। वह काफी देर तक अपनी जगह पर बैठा रहा, अपना सिर दोनों हाथों पर टिकाए हुए, हालांकि वह बगल में उसी बिंदु पर, सामने वाली दीवार से लगे सोफे पर देखता रहा। जाहिर तौर पर वहां कोई चीज, कोई वस्तु थी जो उसे वहां परेशान कर रही थी, उसे चिंतित कर रही थी और उसे पीड़ा दे रही थी।

अध्याय 9

शैतान। इवान का दुःस्वप्न

मैं डॉक्टर नहीं हूँ, फिर भी मुझे लगता है कि वह समय आ गया है जब मुझे यह करना ही होगा।
इससे पाठक को इवान की बीमारी की प्रकृति के बारे में कुछ जानकारी अवश्य मिलेगी।
घटनाओं का अनुमान लगाते हुए मैं कम से कम एक बात कह सकता हूँ: वह उस समय
मस्तिष्क ज्वर के दौरे की पूर्व संध्या पर। हालाँकि उनका स्वास्थ्य लंबे समय से ठीक था।
प्रभावित होने के बावजूद, इसने बुखार के प्रति एक दृढ़ प्रतिरोध दिखाया, जो अंततः
मैंने इस पर पूर्ण महारत हासिल कर ली है। हालाँकि मुझे चिकित्सा के बारे में कुछ भी नहीं पता, फिर भी मैं
यह सुझाव देने का साहस करना कि शायद वह वास्तव में किसी भयानक कारण से
इच्छाशक्ति के प्रयास से, हमले को कुछ समय के लिए टालने में सफलता मिली, इस उम्मीद में कि...
बेशक, इसकी पूरी तरह से जांच करनी थी। वह जानता था कि वह बीमार है, लेकिन उसे इससे नफरत थी।
उस घातक समय में, उसके जीवन में आने वाले संकट के समय बीमार होने का विचार उसे भयभीत कर रहा
था।
जीवन में, जब उसे अपनी पूरी बुद्धि का इस्तेमाल करते हुए वह कहना था जो उसे कहना था।
साहस और दृढ़ता से कहें और "खुद को अपने आप में सही ठहराएं।"
हालांकि, उन्होंने नए डॉक्टर से सलाह ली थी, जिन्हें लाया गया था।
मॉस्को से, कैटेरिना इवानोव्ना के एक शानदार विचार के कारण, जिससे मैं सहमत हूँ।
पहले ही संदर्भित किया जा चुका है। उसकी बात सुनने और उसकी जांच करने के बाद डॉक्टर ने
इस निष्कर्ष पर पहुंचा गया कि वह वास्तव में किसी विकार से पीड़ित था।
मस्तिष्क के बारे में, और इवान द्वारा स्वीकार की गई बात से उसे बिल्कुल भी आश्चर्य नहीं हुआ था।
अनिच्छा से उसे ऐसा करने के लिए मजबूर किया। "आपकी स्थिति में मतिभ्रम होने की काफी संभावना है।"
डॉक्टर ने राय दी, "हालांकि उनकी पुष्टि करना बेहतर होगा... आपको अवश्य करना चाहिए।"
बिना एक पल की भी देरी किए तुरंत कदम उठाएं, वरना हालात बिगड़ जाएंगे।
तुम।" लेकिन इवान ने इस समझदारी भरी सलाह को नहीं माना और अपने
मुझे बिस्तर पर देखभाल के लिए ले जाया जाएगा। "मैं चल-फिर रही हूँ, इसलिए मैं काफी मजबूत हूँ, अगर मैं
गिर भी जाऊँ तो..."
तब सब कुछ अलग होगा, जो चाहे मेरी देखभाल कर सकता है," उसने फैसला किया।
इस विषय को खारिज करते हुए।
और इस प्रकार वह लगभग स्वयं अपने प्रलाप के प्रति सचेत होकर बैठा था, और
जैसा कि मैंने पहले ही कहा है, सोफे पर किसी वस्तु को लगातार देखते रहना
सामने वाली दीवार के सहारे। ऐसा प्रतीत हो रहा था कि वहाँ कोई बैठा है।
भगवान ही जाने वह अंदर कैसे आया, क्योंकि वह कमरे में था ही नहीं।
जब इवान स्मरद्याकोव से लौटने के बाद इसमें आया, तब वह एक व्यक्ति था।
या, अधिक सटीक रूप से कहें तो, एक विशेष प्रकार का रूसी सज्जन, नहीं
लंबे समय तक युवा दिखने वाली, जो पचास के दशक में थी, जैसा कि फ्रांसीसी कहते हैं, बल्कि
लंबे, घने, काले बाल, जिनमें हल्के भूरे रंग की धारियाँ हैं और एक छोटा नुकीला सिरा है।
दाढ़ी। उसने भूरे रंग की, काफी जर्जर सी दिखने वाली, गांजे की जैकेट पहन रखी थी।
हालांकि, इसे एक अच्छे दर्जी ने बनाया हो, और यह कम से कम तीन साल पुराने फैशन का हो,
पिछले दो वर्षों से बुद्धिमान और धनी लोगों द्वारा इसे नजरअंदाज किया जा रहा था।
उनके लिनेन के वस्त्र और उनकी लंबी स्कार्फ जैसी टाई, सब कुछ वैसा ही था जैसा कि पहना जाता है।
जो लोग स्टाइलिश दिखना चाहते हैं, लेकिन करीब से देखने पर पता चला कि उनका लिनेन वैसा नहीं था।
बहुत साफ-सुथरा और उसका चौड़ा स्कार्फ बहुत ही फटा हुआ था। आगंतुक की जाँच

पतलून की कटिंग तो बहुत अच्छी थी, लेकिन उसका रंग बहुत हल्का था और वह बहुत तंग थी।
वर्तमान फैशन के अनुरूप। उनकी मुलायम, रोएँदार सफेद टोपी फैशन से मेल नहीं खा रही थी।
मौसम।
संक्षेप में कहें तो, तंगहाली में भी शालीनता के सभी लक्षण दिखाई दे रहे थे।
ऐसा प्रतीत होता था मानो वह सज्जन आलसी वर्ग से ताल्लुक रखते हों।
वे जमींदार जो दास प्रथा के समय में फलते-फूलते थे। उनके पास था
निस्संदेह, किसी समय, अच्छे और फैशनेबल समाज में रहा था
एक समय उनके अच्छे संबंध थे, संभवतः उन्होंने उन्हें बनाए भी रखा था, लेकिन बाद में
एक समलैंगिक युवक, जो उन्मूलन के बाद धीरे-धीरे गरीब होता जा रहा है।
दासता से उबरकर वह उच्च वर्ग के एक गरीब रिश्तेदार की स्थिति में आ गया था।
एक पुराने दोस्त से दूसरे अच्छे दोस्त के पास भटकते हुए और उनके द्वारा स्वागत किए जाने के कारण
उनका मिलनसार और सहूलियत वाला स्वभाव और अंततः,
एक सज्जन व्यक्ति, जिसे किसी के भी साथ बैठने के लिए कहा जा सकता था, हालांकि,
बेशक, सम्मान के स्थान पर नहीं। ऐसे मिलनसार सज्जन।
स्वभाव और आश्रित स्थिति, जो कहानी सुना सकता है, ताश खेल सकता है,
और जिन्हें किसी भी प्रकार के ऐसे कर्तव्यों से घोर घृणा है जो उन पर थोपे जा सकते हैं।
वे आम तौर पर एकांतप्रिय प्राणी होते हैं, या तो अविवाहित या विधवा।
कभी-कभी उनके बच्चे होते हैं, लेकिन अगर होते भी हैं तो बच्चों को हमेशा पाला-पोसा जाता है।
कुछ दूर, किसी चाची के घर में पली-बढ़ी, जिनसे ये सज्जन कभी नहीं मिले।
वे सभ्य समाज में इशारों में बात करते हैं, रिश्ते को लेकर शर्मिंदा प्रतीत होते हैं।
धीरे-धीरे वे अपने बच्चों को पूरी तरह से नज़र से ओझल कर देते हैं, हालाँकि बीच-बीच में वे उनसे संपर्क बनाए रखते हैं।
उनसे जन्मदिन या क्रिसमस का पत्र प्राप्त करना और कभी-कभी तो...
इसका जवाब दो।
अचानक आए उस मेहमान का चेहरा कुछ खास अच्छा नहीं लग रहा था।
स्वभाव से मिलनसार और किसी भी सौहार्दपूर्ण भाव को अपनाने के लिए तत्पर
जैसे-जैसे अवसर आता, उसके पास घड़ी तो नहीं थी, लेकिन उसके पास कछुए की खोल थी।
काले रिबन पर लोरग्नेट। उसके दाहिने हाथ की मध्यमा उंगली पर एक
एक विशाल सोने की अंगूठी जिसमें एक सस्ता ओपल पत्थर जड़ा हुआ है।
इवान गुस्से में चुप रहा और बातचीत शुरू करने को तैयार नहीं था।
आगंतुक ने प्रतीक्षा की और ठीक उसी तरह बैठ गया जैसे कोई गरीब रिश्तेदार नीचे आया हो।
वह अपने कमरे से चाय पर अपने मेजबान का साथ देने के लिए निकला और विवेकपूर्ण ढंग से चुप रहा।
यह देखकर कि उसका मेज़बान नाराज़ और चिंतित था, वह तैयार था।
जैसे ही मेज़बान कोई सौहार्दपूर्ण बातचीत शुरू करे, वह तुरंत ही उससे बातचीत शुरू कर देता है।
उसके चेहरे पर अचानक चिंता के भाव प्रकट हुए।
“मैंने कहा,” उसने इवान से कहना शुरू किया, “माफ़ कीजिए, मैंने इसका ज़िक्र सिर्फ़ याद दिलाने के लिए किया था।”
तुम। तुम कैटरीना इवानोव्ना के बारे में पता लगाने के लिए स्मरद्याकोव के यहाँ गए थे, लेकिन
आप उसके बारे में कुछ भी पता लगाए बिना ही चले गए, शायद
भूल गया। । ।"
“आह, हाँ,” इवान के मुँह से निकला और उसका चेहरा उदास हो गया।
बेचैनी। “हाँ, मैं भूल गया था... लेकिन अब कोई बात नहीं, कोई फर्क नहीं पड़ता।”
“कल तक,” उसने खुद से बुदबुदाते हुए कहा, “और तुम,” उसने आगे कहा।
उसके आगंतुक ने कहा, "मुझे खुद भी एक मिनट में यह याद आ जाना चाहिए था, क्योंकि
यही तो मुझे परेशान कर रहा था! तुम दखल क्यों दे रहे हो, मानो मुझे दखल देना चाहिए।

क्या आपको लगता है कि आपने मुझे उकसाया था, और मुझे खुद से याद नहीं था?
“तो फिर इस पर विश्वास मत करो,” उस सज्जन ने सौहार्दपूर्ण मुस्कान के साथ कहा।
अपनी इच्छा के विरुद्ध विश्वास करने का क्या लाभ? इसके अलावा, सबूत तो कोई मायने नहीं रखते।
विश्वास करने में मदद, विशेषकर भौतिक प्रमाण। थॉमस का मानना था, न कि
क्योंकि उसने पुनर्जीवित मसीह को देखा था, बल्कि इसलिए कि वह विश्वास करना चाहता था, इससे पहले कि वह
देखा। उदाहरण के लिए, अध्यात्मवादियों को देखिए... मुझे वे बहुत पसंद हैं।
उन्हें... केवल कल्पना है, वे सोचते हैं कि वे किसी उद्देश्य की सेवा कर रहे हैं।
धर्म, क्योंकि शैतान उन्हें परलोक से अपने सींग दिखाते हैं।
उनका कहना है कि यह एक तरह से किसी अन्य के अस्तित्व का ठोस प्रमाण है।
दुनिया। दूसरी दुनिया और भौतिक प्रमाण, आगे क्या! और अगर आप आते हैं
तो क्या शैतान के अस्तित्व को साबित करने से ईश्वर के अस्तित्व का भी प्रमाण मिलता है? मैं जानना चाहता हूँ
मैं एक आदर्शवादी समाज में शामिल होऊंगा, मैं उसमें विपक्ष का नेतृत्व करूंगा, मैं कहूंगा कि मैं एक यथार्थवादी हूं।
लेकिन मैं भौतिकवादी नहीं हूँ, हा हा!
“सुनो,” इवान अचानक मेज से उठ खड़ा हुआ। “मुझे लगता है कि मैं
मैं बेहोश हूँ... मैं सचमुच बेहोश हूँ, आप जो चाहें बकवास कर लें, मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता।
परवाह करो! तुम मुझे पिछली बार की तरह क्रोधित नहीं करोगे। लेकिन मुझे कुछ अजीब सा लग रहा है।
शर्मिंदा... मैं कमरे में इधर-उधर घूमना चाहता हूँ... कभी-कभी मैं तुम्हें देख भी नहीं पाता।
और मुझे तुम्हारी आवाज़ भी सुनाई नहीं देती, जैसा कि पिछली बार हुआ था, लेकिन मैं हमेशा अनुमान लगा लेता हूँ कि क्या
तुम बकवास कर रहे हो, क्योंकि मैं बोल रहा हूँ, मैं खुद, तुम नहीं। बस मुझे नहीं पता।
पिछली बार मैंने सपना देखा था या सचमुच तुम्हें देखा था। मैं पेशाब कर दूँगा।
मैं तौलिया अपने सिर पर रख लूँगा और शायद तुम हवा में गायब हो जाओगे।"
इवान कोने में गया, एक तौलिया लिया, और जैसा उसने कहा था वैसा ही किया, और एक
सिर पर गीला तौलिया रखे हुए वह कमरे में इधर-उधर घूमने लगा।
“मुझे बहुत खुशी है कि आप मुझसे इतना आत्मीय व्यवहार करते हैं,” आगंतुक ने कहना शुरू किया। “मूर्ख,”
इवान हँसते हुए बोला, “क्या तुम्हें लगता है कि मुझे औपचारिकता निभानी चाहिए?”
क्या आप मेरे साथ हैं? मैं अभी अच्छे मूड में हूँ, हालाँकि मेरे पैर में थोड़ा दर्द है।
माथे पर... और सिर के ऊपरी हिस्से में... बस कृपया बात मत करो।
दर्शनशास्त्र, जैसा आपने पिछली बार किया था। अगर आप खुद को इससे अलग नहीं कर सकते, तो बात ही छोड़िए।
कुछ मनोरंजक। गपशप करो, तुम गरीब रिश्तेदार हो, तुम्हें बात करनी चाहिए।
गपशप। कितना बुरा सपना है! लेकिन मैं तुमसे नहीं डरती। मैं इसे संभाल लूंगी।
तुम बेहतर हो। मुझे पागलखाने नहीं ले जाया जाएगा!
“यह बहुत प्यारा है, बेचारे रिश्तेदार। हाँ, मैं अपने स्वाभाविक रूप में हूँ।
इस दुनिया में मैं एक गरीब रिश्तेदार के अलावा और क्या हूँ? वैसे, मैं आपकी बात सुन रहा हूँ।
और मुझे यह जानकर काफी आश्चर्य हुआ कि आप वास्तव में मुझे हल्के में लेने लगे हैं।
कुछ वास्तविक, न कि केवल आपकी कल्पना, जैसा कि आपने पिछले हफ्ते बार-बार कहा था
समय। । ।"
“मैंने तुम्हें कभी एक पल के लिए भी वास्तविकता नहीं माना,” इवान रोते हुए बोला।
एक तरह का क्रोध। “तुम झूठ हो, तुम मेरी बीमारी हो, तुम एक प्रेत हो। यह
बस मुझे यह नहीं पता कि तुम्हें कैसे नष्ट करूं और मुझे लगता है कि मुझे इसके लिए कष्ट सहना पड़ेगा।
समय। तुम मेरी मतिभ्रम हो। तुम मेरा ही अवतार हो, लेकिन
मेरे व्यक्तित्व के केवल एक पहलू का... मेरे विचारों और भावनाओं का, लेकिन केवल एक ही पहलू का।

उनमें से सबसे घटिया और मूर्ख। उस दृष्टिकोण से आप शायद सहमत होंगे।
मुझे तुममें दिलचस्पी है, काश मेरे पास तुम्हारे लिए समय होता...
माफ़ कीजिए, माफ़ कीजिए, मैं आपको पकड़ लूँगा। जब आप उड़ान भरेंगे
आज शाम अलेयोशा लैंपपोस्ट के नीचे खड़ा था और उसने चिल्लाकर उससे कहा, 'तुमने सीख लिया है।'
यह उससे! आपको कैसे पता कि वह मुझसे मिलने आता है?' आप सोच रहे थे
तब मैं। तो एक क्षण के लिए आपने यह मान लिया था कि मेरा सचमुच अस्तित्व है,"
सज्जन ने भावहीन ढंग से हँसा।
“हाँ, वह कमजोरी का क्षण था... लेकिन मैं विश्वास नहीं कर सका।
तुम। मुझे नहीं पता कि पिछली बार मैं सो रहा था या जाग रहा था। शायद मैं
तब तो मैं सिर्फ सपना देख रहा था और मैंने तुम्हें सचमुच देखा ही नहीं था...
“और अभी तुम अलेयोशा के साथ इतने चिड़चिड़े क्यों थे? वह तो प्यारा है;
मैंने फादर ज़ोसिमा के मामले में उसके साथ बुरा बर्ताव किया है।"
“अलोशा की बात मत करो! तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई, चापलूस!” इवान हँसा।
दोबारा।
“तुम मुझे डांटते हो, लेकिन हंसते भी हो—यह एक अच्छा संकेत है। लेकिन तुम हमेशा
आप पिछली बार की तुलना में कहीं अधिक विनम्र हैं और मुझे पता है क्यों: वह महान
आपका संकल्प...
“मेरे संकल्प की बात मत करो,” इवान ने क्रोध से चिल्लाते हुए कहा। “मैं समझता हूँ, मैं समझता हूँ, यह महान है, यह आकर्षक है, तुम हो।”
अपने भाई की रक्षा करने और खुद को कुर्बान करने जा रहे हैं... यही बात है।
वीर।
"चुप रहो, मैं तुम्हें लात मारूंगा!"
मुझे बिल्कुल भी अफसोस नहीं होगा, क्योंकि तब मेरा उद्देश्य पूरा हो जाएगा। अगर
अगर तुम मुझे लात मारते हो, तो तुम्हें मेरी वास्तविकता पर विश्वास करना होगा, क्योंकि लोग भूतों को लात नहीं मारते।
मज़ाक छोड़िए, मुझे इससे कोई फर्क नहीं पड़ता, अगर आप चाहें तो डांट सकते हैं, हालांकि चुप रहना बेहतर है।
मुझसे भी थोड़ी सी विनम्रता से पेश आओ। ‘मूर्ख, चापलूस!’ कैसे शब्द हैं!
“तुम्हें डांटते हुए, मैं खुद को डांट रहा हूँ,” इवान फिर हँसा, “तुम तो मैं ही हो।”
मैं खुद, बस एक अलग चेहरे के साथ। तुम वही कह रहे हो जो मैं सोच रहा हूँ... और
वे कुछ भी नया कहने में असमर्थ हैं!
“अगर मेरी सोच भी आपकी तरह है, तो यह सब मेरी ही देन है,”
उस सज्जन ने बड़ी ही नजाकत और गरिमा के साथ घोषणा की।
“तुम सिर्फ मेरे सबसे बुरे विचारों को ही चुनते हो, और इतना ही नहीं,
बेवकूफों। तुम बेवकूफ और अभद्र हो। तुम हद से ज्यादा बेवकूफ हो। नहीं, मैं नहीं कर सकता।
मैं तुम्हें कैसे बर्दाश्त करूँ! मैं क्या करूँ, मैं क्या करूँ?” इवान ने अपने मुँह से कहा।
दांत भींचे हुए।
मेरे प्रिय मित्र, मैं सबसे बढ़कर एक सज्जन व्यक्ति की तरह व्यवहार करना चाहता हूँ।
और इस रूप में पहचाना जाना,” आगंतुक ने अतिशयोक्तिपूर्ण लहजे में कहना शुरू किया।
एक गरीब रिश्तेदार की तरह, तुच्छ और सरल हृदय वाला गर्व। "मैं हूँ
गरीब, लेकिन... मैं यह तो नहीं कहूंगा कि बहुत ईमानदार, लेकिन... यह एक सर्वमान्य सत्य है।
समाज ने मुझे एक पतित देवदूत के रूप में स्वीकार कर लिया है। मैं निश्चित रूप से यह समझ नहीं पा रहा हूँ कि ऐसा कैसे हो सकता है।
मैं कभी फरिश्ता रही हो सकती थी। अगर मैं कभी थी भी, तो बहुत समय पहले की बात होगी।
इसे भूल जाने में कोई हर्ज नहीं है। अब मैं केवल प्रतिष्ठा को ही महत्व देता हूँ।

एक सभ्य व्यक्ति बनकर और यथासंभव जीवन जीकर, मैं स्वयं को बेहतर बनाने का प्रयास करता हूँ।
सहमत हूँ। मैं सचमुच पुरुषों से प्यार करती हूँ, मुझे बहुत बदनाम किया गया है! यहाँ
जब मैं समय-समय पर आपके साथ रहता हूँ, तो मेरे जीवन में एक प्रकार की वास्तविकता आ जाती है और
मुझे यही सबसे ज्यादा पसंद है। देखो, तुम्हारी तरह मैं भी कल्पनाओं में खोया रहता हूँ।
और इसलिए मुझे पृथ्वी की यथार्थता पसंद है। यहाँ, तुम्हारे साथ, सब कुछ है
परिसीमित, यहाँ सब कुछ सूत्रबद्ध और ज्यामितीय है, जबकि हमारे पास है
केवल अनिश्चित समीकरण! मैं यहाँ-वहाँ सपने देखते हुए घूमता रहता हूँ। मुझे अच्छा लगता है।
सपने देख रहा हूँ। वैसे भी, धरती पर मैं अंधविश्वासी हो जाता हूँ। कृपया हँसो मत।
मुझे अंधविश्वासी होना बहुत पसंद है। मैं आपकी सारी आदतें अपना लेता हूँ।
मुझे सार्वजनिक स्नानघरों में जाना अच्छा लगने लगा है, क्या आप विश्वास करेंगे? और मैं
मैं व्यापारियों और पुजारियों के साथ जाकर खुद को तल्लीन कर लूँगा। मेरा सपना है कि...
किसी न किसी रूप में एक बार और अपरिवर्तनीय रूप से अवतरित होना
व्यापारी की पत्नी का वजन अठारह स्टोन था, और वह सब कुछ मानती थी जो वह मानती थी।
मेरा मानना है। मेरा आदर्श है कि मैं चर्च जाऊं और सरल मन से एक मोमबत्ती अर्पित करूं।
विश्वास करो, मेरी बात मानो। तब मेरे कष्टों का अंत हो जाएगा।
डॉक्टर से इलाज करवाना भी पसंद था; वसंत ऋतु में चेचक का प्रकोप फैल गया था।
और मैं एक अनाथालय में जाकर टीका लगवाया—काश आपको पता होता
उस दिन मुझे कितना आनंद आया। मैंने दस रूबल का दान दिया।
स्लावो! . . . लेकिन तुम सुन नहीं रहे हो। क्या तुम्हें पता है, तुम बिल्कुल भी ठीक नहीं हो।
आज शाम? मुझे पता है कि आप कल उस डॉक्टर के पास गए थे... अच्छा, क्या?
आपकी सेहत के बारे में? डॉक्टर ने क्या कहा?
“बेवकूफ!” इवान गुस्से से बोला।
लेकिन तुम वैसे भी चतुर हो। फिर से डांटने लगे? मैंने तो तुम्हें डेट पर नहीं बुलाया था।
सहानुभूति के कारण। आपको उत्तर देने की आवश्यकता नहीं है। अब गठिया आ गया है।
दोबारा । । ।"
“मूर्ख!” इवान ने दोहराया।
“तुम बार-बार वही बात दोहरा रहे हो; लेकिन मुझे ऐसा दौरा पड़ा था
मुझे पिछले साल गठिया हुआ था, जो मुझे आज भी याद है।
शैतान को गठिया हो जाए!
“अगर मैं कभी-कभी शारीरिक रूप धारण कर लूँ तो क्यों नहीं? मैं शारीरिक रूप धारण कर लेता हूँ।”
और मैं इसके परिणाम भुगतने को तैयार हूँ। मैं शैतान हूँ और मेरे लिए कोई भी मानवीय चीज़ पराई नहीं है।
मुझे भी ऐसा ही लगता है।
“क्या, क्या, शैतान मानव का कुछ भी नहीं है... यह बुरा नहीं है
शैतान!"
मुझे खुशी है कि आखिरकार मैंने आपको प्रसन्न कर दिया।
“लेकिन यह बात तुम्हें मुझसे नहीं मिली।” इवान अचानक रुक गया, मानो...
चौंक गया। "यह बात मेरे दिमाग में कभी नहीं आई, यह अजीब है।"
“यह नया है, है ना? इस बार मैं ईमानदारी से काम करूंगा और
मैं आपको समझाता हूँ। सुनो, सपनों में और खासकर बुरे सपनों में,
अपच हो या कुछ और, कभी-कभी मनुष्य को ऐसे कलात्मक दृश्य दिखाई देते हैं, जैसे
जटिल और वास्तविक वास्तविकता, ऐसी घटनाएं, यहां तक कि घटनाओं का एक पूरा संसार,
इस तरह के कथानक में, सबसे अप्रत्याशित विवरणों के साथ,
मैंने कसम खाई है कि लियो टॉल्स्टॉय ने हर छोटी से छोटी बात को बहुत महत्व दिया है।
कभी आविष्कार नहीं किया गया। फिर भी ऐसे सपने कभी-कभी लेखकों द्वारा नहीं, बल्कि
आम लोग, अधिकारी, पत्रकार, पुजारी... विषय यह है कि...

एक पूर्ण रहस्य। एक राजनेता ने मुझसे स्वीकार किया था कि उनके सभी सर्वश्रेष्ठ
उन्हें सोते समय विचार आते थे। खैर, अब तो यही हाल है।
मैं तुम्हारा भ्रम हूँ, फिर भी बुरे सपने की तरह, मैं मौलिक बातें कहता हूँ।
जो आपके दिमाग में पहले नहीं आया था। इसलिए मैं आपके विचारों को दोहराता नहीं हूँ, फिर भी मैं
मैं सिर्फ तुम्हारा बुरा सपना हूँ, इससे ज्यादा कुछ नहीं।
“तुम झूठ बोल रहे हो, तुम्हारा मकसद मुझे यह यकीन दिलाना है कि तुम अलग अस्तित्व रखते हो और
यह मेरा बुरा सपना नहीं है, और अब आप दावा कर रहे हैं कि आप एक सपना हैं।"
मेरे प्रिय मित्र, मैंने आज एक विशेष विधि अपनाई है, मैं इसे समझाऊंगा।
बाद में आपसे बात करते हैं। रुकिए, मैंने कहाँ बात अधूरी छोड़ी थी? अरे हाँ! मुझे सर्दी लग गई थी।
तब, यहाँ नहीं बल्कि वहाँ।"
वह कहाँ है? बताओ, क्या तुम यहाँ लंबे समय तक रहोगे? क्या तुम जा नहीं सकते?
“दूर?” इवान ने लगभग निराशा में कहा। वह इधर-उधर चलना बंद कर दिया।
वह सोफे पर बैठ गया, अपनी कोहनियों को फिर से मेज पर टिकाया और अपने हाथ को पकड़े रहा।
उसने अपना सिर दोनों हाथों से कसकर पकड़ रखा था। उसने गीला तौलिया खींचकर दूर फेंक दिया।
झुंझलाहट। जाहिर तौर पर इसका कोई फायदा नहीं हुआ।
“तुम्हारी नसें ठीक नहीं हैं,” उस सज्जन ने कहा।
बेहद सहज, लेकिन पूरी तरह से विनम्र भाव। "तुम मुझसे नाराज़ हो, फिर भी..."
मुझे सर्दी लगने की संभावना है, हालांकि यह बहुत ही स्वाभाविक तरीके से हुआ।
वह उस समय एक उच्च कोटि की महिला के घर पर आयोजित राजनयिक समारोह में जल्दी में थे।
सेंट पीटर्सबर्ग में एक उच्च पदस्थ व्यक्ति, जिसका उद्देश्य मंत्रालय में प्रभाव प्राप्त करना था। खैर, एक
शाम का सूट, सफेद टाई, दस्ताने, हालांकि मैं न जाने कहाँ था और मुझे ये सब पहनना पड़ा।
अंतरिक्ष में उड़कर अपनी पृथ्वी तक पहुँचो... बेशक, इसमें केवल एक पल लगा।
लेकिन आपको पता है कि सूर्य से प्रकाश की एक किरण को पूरे आठ मिनट लगते हैं, और
शाम के सूट और खुली जैकेट में शानदार दिखें। आत्माएं जमती नहीं हैं, लेकिन जब
एक व्यक्ति शारीरिक रूप में है, खैर... संक्षेप में, मैंने नहीं सोचा, और चल पड़ा, और आप
उन अलौकिक स्थानों में, आकाश के ऊपर मौजूद जल में, जान लो,
इतनी ठंड है... कम से कम इसे ठंड तो नहीं कह सकते, आप कल्पना कर सकते हैं, 150
शून्य से नीचे डिग्री! आपको पता ही है गांव की लड़कियां कौन सा खेल खेलती हैं—वे
तीस डिग्री की ठंड में किसी अनजान व्यक्ति को कुल्हाड़ी चाटने के लिए आमंत्रित करना, जीभ
वह तुरंत उस पर जम जाता है और नकली व्यक्ति त्वचा को फाड़ देता है, जिससे खून बहने लगता है। लेकिन
यह तो सिर्फ 30 डिग्री के लिए है, 150 डिग्री में तो शायद इतना काफी होगा।
कुल्हाड़ी पर उंगली रख दो और सब खत्म हो जाएगा... काश ऐसा होता
वहां कुल्हाड़ी हो सकती है।
“और क्या वहाँ कोई कुल्हाड़ी हो सकती है?” इवान ने लापरवाही से बीच में ही टोकते हुए कहा।
तिरस्कारपूर्वक। वह पूरी कोशिश कर रहा था कि वह इस बात पर विश्वास न करे।
भ्रम से बाहर निकलना और पूर्णतः पागलपन में न डूबना।
"कुल्हाड़ी?" अतिथि ने आश्चर्य से बीच में ही टोकते हुए कहा।
“हाँ, वहाँ कुल्हाड़ी का क्या होगा?” इवान अचानक चिल्लाया।
एक प्रकार की बर्बर और दृढ़ हठधर्मिता के साथ।
अंतरिक्ष में कुल्हाड़ी का क्या होगा? क्या विचार है! अगर ऐसा होता तो
किसी भी दूरी से गिरने पर, मुझे लगता है, यह पृथ्वी के चारों ओर उड़ने लगेगा।
यह जानते हुए कि ऐसा क्यों हो रहा है, जैसे कोई उपग्रह। खगोलविद उदय की गणना करेंगे।
और कुल्हाड़ी चलाने की तारीख, गात्जुक उसे अपने कैलेंडर में दर्ज कर लेता था, बस इतना ही।
“तुम बेवकूफ हो, हद से ज्यादा बेवकूफ,” इवान ने चिढ़कर कहा। “झूठ बोलना बंद करो।”
चालाकी से, वरना मैं नहीं सुनूंगा। तुम यथार्थवाद के नाम पर मुझसे बेहतर बनना चाहते हो,

मुझे यकीन दिलाओ कि तुम मौजूद हो, लेकिन मैं तुम्हारे अस्तित्व पर विश्वास नहीं करना चाहता! मैं नहीं करूँगा
इस पर विश्वास करो!"
लेकिन मैं झूठ नहीं बोल रहा, यह सब सच है; दुर्भाग्य से सच बहुत मुश्किल है।
हमेशा मनोरंजक। मैं देख रहा हूँ कि आप मुझसे कुछ बड़ी उम्मीदें लगाए बैठे हैं, और
शायद कुछ अच्छा। यह तो बड़े दुख की बात है, क्योंकि मैं उतना ही दे सकता हूँ जितना मैं दे सकता हूँ...
"दर्शन की बातें मत करो, बेवकूफ!"
"दर्शनशास्त्र, वास्तव में, जब मेरा पूरा दाहिना हिस्सा सुन्न हो जाता है और मैं
कराहना और आहें भरना। मैंने सभी चिकित्सा संकाय से संपर्क किया है: वे कर सकते हैं
वे बहुत ही सटीक निदान करते हैं, उन्हें आपकी बीमारी के सभी लक्षण पता होते हैं।
वे कुछ सुझाव तो देते हैं, लेकिन उन्हें यह नहीं पता कि आपका इलाज कैसे करें। वहाँ एक उत्साही छोटा बच्चा था।
यहां एक छात्र था, उसने कहा, 'तुम मर सकते हो, लेकिन तुम्हें पूरी तरह से पता होगा कि क्या हुआ।'
'तुम इसी बीमारी से मर रहे हो!' और फिर लोगों को भेजने का उनका तरीका भी क्या है!
विशेषज्ञों के पास जाओ! वे कहते हैं, 'हम तो सिर्फ निदान करते हैं, लेकिन फलां-फलां विशेषज्ञ के पास जाओ।'
'विशेषज्ञ, वो तुम्हें ठीक कर देगा।' बूढ़ा डॉक्टर जो हर तरह के मरीजों का इलाज करता था
यह बीमारी पूरी तरह से गायब हो गई है, मैं आपको विश्वास दिलाता हूं, अब केवल कुछ ही बचे हैं।
विशेषज्ञ हैं और वे सभी अखबारों में विज्ञापन देते हैं। अगर कुछ भी गलत है तो।
वे आपको आपकी नाक के सहारे पेरिस भेज देंगे: वहाँ, वे कहते हैं, एक यूरोपीय है
नाक का इलाज करने वाला विशेषज्ञ। अगर आप पेरिस जाएँगे, तो वह आपकी नाक देखेगा;
वो तुमसे कहेगा, मैं सिर्फ तुम्हारी दाहिनी नाक का इलाज कर सकता हूँ, क्योंकि मैं बाईं नाक का इलाज नहीं कर सकता।
नाक के नथुने, ये मेरी विशेषज्ञता नहीं है, लेकिन वियना जाओ, वहाँ एक विशेषज्ञ मिल जाएगा।
तुम्हारी बाईं नाक का इलाज कौन करेगा? अब तुम क्या करोगे? मैंने लोकप्रिय उपायों का सहारा लिया।
उपचार के तौर पर, एक जर्मन डॉक्टर ने मुझे शहद और नमक से मालिश करने की सलाह दी।
स्नानघर में। सिर्फ़ एक और स्नान करने के लिए मैं गया, और अपने पूरे शरीर पर मल लिया।
यह सब खत्म हो गया और इससे मुझे कोई फायदा नहीं हुआ। निराशा में मैंने काउंट मत्तेई को लिखा।
मिलान। उसने मुझे एक किताब और कुछ बूंदें भेजीं, भगवान उसका भला करे, और, ज़रा सोचिए,
हॉफ के माल्ट एक्सट्रैक्ट ने मुझे ठीक कर दिया! मैंने इसे गलती से खरीद लिया, एक बोतल पी ली और...
इसका आधा हिस्सा, और मैं नाचने के लिए तैयार थी, इसने मेरा सारा उत्साह छीन लिया। मैंने इसकी भरपाई की।
अखबारों को पत्र लिखकर उन्हें धन्यवाद देने का मेरा मन हुआ, लेकिन एक भावना ने मुझे ऐसा करने के लिए प्रेरित किया।
कृतज्ञता का भाव, और मात्र कल्पना, इससे अंतहीन परेशानी हुई: एक भी कागज नहीं
मेरा पत्र स्वीकार नहीं किया जाएगा। उन्होंने कहा, 'यह बहुत ही प्रतिगामी होगा, कोई भी नहीं।'
लोग इस पर विश्वास करेंगे। Le diable n’existe point. बेहतर होगा कि आप गुमनाम ही रहें।
उन्होंने मुझे सलाह दी। गुमनाम धन्यवाद पत्र का क्या फायदा?
अखबार के दफ्तर में मौजूद लोगों के साथ हँसते हुए उसने कहा, 'यह मानना प्रतिगामी है।'
मैंने कहा, ‘हमारे दिनों में ईश्वर में विश्वास है, लेकिन मैं शैतान हूँ, ताकि लोग मुझ पर विश्वास कर सकें।’
उन्होंने कहा, 'हम यह बात अच्छी तरह समझते हैं। शैतान पर कौन विश्वास नहीं करता?'
लेकिन यह ठीक नहीं है, इससे हमारी प्रतिष्ठा को नुकसान पहुँच सकता है। मज़ाक के तौर पर, अगर आप चाहें तो। लेकिन मैं
मुझे लगा कि मजाक के तौर पर यह ज्यादा मजेदार नहीं होगा। इसलिए इसे छापा नहीं गया। और क्या
आप जानते हैं, मुझे आज तक इस बात का दुख है। मेरी सबसे अच्छी भावनाएँ, कृतज्ञता,

उदाहरण के लिए, मुझे मेरी सामाजिक स्थिति के कारण ही सचमुच इन चीजों से वंचित किया जा सकता है।"
“फिर से दार्शनिक चिंतन?” इवान ने चिढ़कर कहा। “भगवान मुझे इससे बचाए, लेकिन शिकायत किए बिना रहा नहीं जा सकता।”
कभी-कभी। मैं बदनाम आदमी हूँ। तुम हर पल मुझे कोसते रहते हो।
बेवकूफी कर रहे हो। साफ दिख रहा है कि तुम जवान हो। मेरे प्यारे दोस्त, बुद्धिमत्ता।
सिर्फ यही नहीं! मेरा स्वभाव दयालु और हंसमुख है। मैं लिखती भी हूँ।
हर तरह के वाडेविल शो।’ ऐसा लगता है जैसे आप मुझे बूढ़ा हलेस्ताकोव समझ रहे हैं।
लेकिन मेरा भाग्य कहीं अधिक गंभीर है। समय से पहले, किसी आदेश से
जिसे मैं कभी समझ नहीं पाया, मुझे 'अस्वीकार करने' के लिए पूर्वनिर्धारित किया गया था और फिर भी मैं कर रहा हूँ।
सचमुच नेक दिल और बिल्कुल भी नकारात्मकता की ओर झुकाव नहीं रखने वाला। 'नहीं, आपको अवश्य ही जाओ और खंडन करो, खंडन के बिना कोई आलोचना नहीं होती और एक पत्रिका का क्या मतलब होगा?
आलोचना के स्तंभ के बिना क्या संभव है? आलोचना के बिना तो कुछ भी नहीं।
लेकिन एक ‘होसन्ना’। लेकिन जीवन के लिए होसन्ना के अलावा कुछ भी पर्याप्त नहीं है।
होसन्ना को संदेह की कसौटी पर परखा जाना चाहिए, इत्यादि।
शैली। लेकिन मैं इसमें दखल नहीं देता, मैंने इसे नहीं बनाया है, मैं इसके लिए जवाबदेह नहीं हूं।
खैर, उन्होंने अपना बलि का बकरा चुन लिया है, उन्होंने मुझसे ही लिखवाया है।
आलोचना का स्तंभ और इस प्रकार जीवन संभव हो सका। हम समझते हैं कि
कॉमेडी; उदाहरण के लिए, मैं तो सीधे-सीधे विनाश की मांग करता हूँ। नहीं, मुझे बताया जाता है कि जियो।
क्योंकि तुम्हारे बिना कुछ भी नहीं होगा। अगर ब्रह्मांड में सब कुछ होता
समझदारी से काम लें, कुछ नहीं होगा। आपके बिना कोई कार्यक्रम नहीं होगा।
और घटनाएँ अवश्य होंगी। इसलिए, लीक से हटकर, मैं घटनाओं को घटित करने का काम करता हूँ।
और मैं वो करता हूँ जो तर्कहीन है क्योंकि मुझे ऐसा करने का आदेश दिया गया है। उनके सभी प्रयासों के बावजूद
निर्विवाद बुद्धिमत्ता के बावजूद, लोग इस प्रहसन को गंभीरता से लेते हैं, और
यही उनकी त्रासदी है। वे दुख झेलते हैं, बेशक... लेकिन फिर भी वे जीते हैं, वे जीते हैं।
एक वास्तविक जीवन, काल्पनिक नहीं, क्योंकि दुख ही जीवन है। दुख के बिना क्या?
इसका आनंद क्या होगा? यह एक अंतहीन में परिवर्तित हो जाएगा।
चर्च में प्रार्थना सभा; यह पवित्र तो होगी, लेकिन उबाऊ भी। लेकिन मेरा क्या? मैं तो कष्ट सहता हूँ।
लेकिन फिर भी, मैं जीवित नहीं हूँ। मैं एक अनिश्चित समीकरण में x हूँ। मैं एक प्रकार का...
जीवन में एक प्रेत जो अपना आरंभ और अंत खो चुका है, और जिसने यहाँ तक कि
वह अपना नाम ही भूल गया। तुम हंस रहे हो—नहीं, तुम हंस नहीं रहे हो, तुम
तुम फिर से गुस्से में हो। तुम तो हमेशा गुस्से में रहते हो, तुम्हें सिर्फ बुद्धिमत्ता की परवाह है।
लेकिन मैं फिर से दोहराता हूँ कि मैं यह सारा शानदार जीवन, सब कुछ त्याग दूंगा।
पद और सम्मान, बस एक व्यापारी की आत्मा में परिवर्तित होने के लिए।
अठारह स्टोन वजन वाली पत्नी ने भगवान के मंदिर में मोमबत्तियां जलाईं।
“तो फिर तुम भी भगवान पर विश्वास नहीं करते?” इवान ने मुस्कुराते हुए कहा।
नफरत।
“मैं क्या कहूँ?—मतलब, अगर आप सच में गंभीर हैं तो...”
“क्या ईश्वर है या नहीं?” इवान ने उसी उग्र स्वर में पूछा। “अरे, तो तुम सच में गंभीर हो! मेरे प्रिय मित्र, कसम से, मैं नहीं मानता।”
मुझे पता है। लो! मैंने कह दिया!
“तुम्हें पता नहीं है, लेकिन क्या तुम ईश्वर को देखते हो? नहीं, तुम कोई अलग-थलग व्यक्ति नहीं हो।”
तुम मैं ही हो, तुम मैं हो और कुछ नहीं! तुम कचरा हो, तुम मेरे हो।
कल्पना!"

"ठीक है, अगर आप चाहें तो, मेरी भी वही विचारधारा है जो आपकी है, तो यह होगा..."
सच है। Je pense, donc je suis, मुझे यह बात पक्के तौर पर पता है; बाकी सब, ये सब
संसार, ईश्वर और यहाँ तक कि शैतान—मेरी राय में ये सब सिद्ध नहीं हुआ है। क्या सब कुछ
क्या यह स्वयं अस्तित्व में है, या यह केवल मेरा ही एक प्रकटीकरण है, एक तार्किक
मेरे अहंकार का विकास जो केवल शाश्वत रूप से विद्यमान है: लेकिन मैं जल्दी करता हूँ
रुक जाओ, क्योंकि मुझे लगता है कि तुम सीधे मुझे पीटने के लिए उठ खड़े होगे।"
“बेहतर होगा कि तुम मुझे कोई किस्सा सुनाओ!” इवान ने उदास होकर कहा। “हमारे विषय पर एक किस्सा है, या यूँ कहें कि एक किंवदंती है, लेकिन
एक किस्सा। आप मुझ पर अविश्वास का आरोप लगाते हैं, आप कहते हैं, फिर भी आप
विश्वास नहीं होता। लेकिन, मेरे प्रिय मित्र, मैं अकेला ऐसा नहीं हूँ। हम सब हैं।
वहाँ सब कुछ गड़बड़ है और आपके विज्ञान के कारण भी। एक बार वहाँ पहुँचने पर
पहले परमाणु, पांच इंद्रियां, चार तत्व हुआ करते थे, और फिर सब कुछ अधर में लटक गया।
किसी तरह एक साथ। प्राचीन दुनिया में भी परमाणु थे, लेकिन तब से
हमें पता चला है कि आपने रासायनिक अणु की खोज कर ली है और
प्रोटोप्लाज्म और न जाने क्या-क्या, हमें अपना शिखर नीचे करना पड़ा।
नियमित गड़बड़ी, और सबसे बढ़कर, अंधविश्वास, बदनामी; इतना ही है
हमारे बीच भी और आपके बीच भी, जैसा कि आप जानते हैं; बल्कि थोड़ा और ज्यादा, घोटाला है।
जासूसी, वास्तव में, क्योंकि हमारे पास हमारा गुप्त पुलिस विभाग है जहाँ निजी
जानकारी प्राप्त हुई। खैर, यह मनगढ़ंत कहानी हमारे मध्य युग की है।
—तुम्हारा नहीं, बल्कि हमारा —और हममें से भी कोई इस पर विश्वास नहीं करता, सिवाय उसके।
अठारह स्टोन (लगभग 18 किलो) वजन वाली बूढ़ी औरतें, मेरा मतलब आपकी बूढ़ी औरतों से नहीं है, बल्कि हमारी बूढ़ी औरतों से है। हमारे पास
तुम्हारे पास जो कुछ भी है, मैं दोस्ती के नाते हमारे रहस्यों में से एक का खुलासा कर रहा हूँ।
तुम्हारे लिए; हालाँकि यह वर्जित है। यह किंवदंती स्वर्ग के बारे में है। वहाँ था,
कहते हैं, इस धरती पर एक विचारक और दार्शनिक आया। उसने सब कुछ त्याग दिया।
‘कानून, अंतरात्मा, आस्था,’ और सबसे बढ़कर, भविष्य का जीवन। उनकी मृत्यु हो गई;
उसे सीधे अंधकार और मृत्यु की ओर जाने की उम्मीद थी, लेकिन उसे एक नया जीवन मिल गया।
उसके सामने। वह स्तब्ध और क्रोधित था। 'यह मेरे विरुद्ध है'
'सिद्धांत!' उसने कहा। और उसे इसके लिए दंडित किया गया... यानी, आपको अवश्य
क्षमा कीजिए, मैं बस वही दोहरा रहा हूँ जो मैंने खुद सुना है, यह केवल एक
किंवदंती... उसे अंधेरे में एक खरब किलोमीटर पैदल चलने की सजा सुनाई गई थी।
(हमने मीट्रिक प्रणाली अपना ली है, आपको पता ही है) और जब वह समाप्त कर लेता है
उस खरबों के लिए, स्वर्ग के द्वार उसके लिए खुल जाएंगे और वह
क्षमा कर दिया गया...
और परलोक में तुम्हें किन-किन यातनाओं का सामना करना पड़ेगा?
"क्वाड्रिलियन किलोमीटर?" इवान ने एक अजीब सी उत्सुकता के साथ पूछा।
“किस तरह की यातनाएँ? अरे, मत पूछो। पुराने ज़माने में तो हर तरह की यातनाएँ होती थीं, लेकिन अब
उन्होंने मुख्य रूप से नैतिक दंडों—‘अंतरात्मा की पीड़ा’—को अपनाया है।
और वो सब बकवास। वो भी हमें आपसे ही मिली, आपके नरम रवैये से।
अपने शिष्टाचार सुधारें। और इससे किसे फायदा होता है? केवल उन्हें जिनके पास कोई शिष्टाचार नहीं है।
अंतरात्मा, क्योंकि जब उनके पास है तो वे अंतरात्मा से कैसे पीड़ित हो सकते हैं?
कोई नहीं? लेकिन ऐसे भले लोग जिनके पास विवेक और सम्मान की भावना हो।
इसके लिए भुगतना पड़ता है। सुधारों को तब तक नहीं अपनाया जा सकता जब तक उनके लिए ज़मीन तैयार न हो।
विशेषकर यदि वे विदेशों से नकल किए गए संस्थान हैं, तो कुछ न करें सिवाय

शरारत! प्राचीन आग बेहतर थी। खैर, यह आदमी, जिसे दोषी ठहराया गया था...
अरबों किलोमीटर तक, स्थिर खड़ा रहा, चारों ओर देखा और लेट गया।
सड़क के उस पार। 'मैं नहीं जाऊँगा, मैं सिद्धांत के आधार पर मना करता हूँ!' एक की आत्मा ले लो
प्रबुद्ध रूसी नास्तिक को पैगंबर योना की आत्मा के साथ मिला दें।
जो व्हेल के पेट में तीन दिन और तीन रात तक रूठ कर बैठा रहा, और आपको मिलता है
सड़क के उस पार लेटे उस विचारक का चरित्र।"
वह वहां किस चीज पर लेटा था?
“खैर, मुझे लगता है कि लेटने के लिए कुछ तो था। तुम नहीं हो
हँसना?"
“वाह!” इवान उसी अजीब उत्साह के साथ चिल्लाया। अब वह
वह अप्रत्याशित जिज्ञासा से सुन रहा था। "अच्छा, क्या वह अभी वहीं लेटा हुआ है?"
“यही तो मुद्दा है, कि वह जीवित नहीं है। वह लगभग एक हजार साल तक वहीं पड़ा रहा।
और फिर वह उठा और आगे बढ़ गया।
“कितना बेवकूफ है!” इवान घबराकर हंसते हुए चिल्लाया और अभी भी ऐसा लग रहा था जैसे...
किसी बात पर गहन चिंतन करते हुए। "क्या इससे कोई फर्क पड़ता है कि वह
क्या वह हमेशा के लिए वहीं पड़ा रहेगा या अरबों किलोमीटर की दूरी तय करेगा? इसमें समय लगेगा...
इसे पैदल तय करने में अरबों साल लगेंगे?
“इससे कहीं अधिक। मेरे पास पेंसिल और कागज नहीं है, वरना मैं कर सकता था।
इसका हल निकालो। लेकिन वह वहां बहुत पहले ही पहुंच गया था, और यहीं से कहानी शुरू होती है।"
“क्या, वो वहाँ पहुँच गया? लेकिन उसे वहाँ पहुँचने में अरबों साल कैसे लगे?”
“अरे, तुम तो हमारी वर्तमान पृथ्वी के बारे में ही सोचते रहते हो! लेकिन हमारी वर्तमान पृथ्वी
इसे शायद एक अरब बार दोहराया गया होगा। क्यों, यह विलुप्त हो गया है,
जमा हुआ; दरार पड़ा हुआ, टुकड़ों में टूटा हुआ, अपने तत्वों में विघटित, फिर से 'द'
आकाश के ऊपर पानी,' फिर एक धूमकेतु, फिर एक सूर्य, फिर से
सूर्य पृथ्वी में परिवर्तित हो जाता है—और यही क्रम दोहराया गया होगा।
अंतहीन और हर विवरण में बिल्कुल एक जैसा, अत्यंत अशोभनीय और
बेहद उबाऊ...
"अच्छा, अच्छा, उसके आने पर क्या हुआ?"
“जब जन्नत के द्वार खुले और वह अंदर दाखिल हुआ,
उसके वहाँ पहुँचने से दो सेकंड पहले ही, उसकी घड़ी के अनुसार (हालाँकि मेरे अनुसार)
यह सोचते हुए कि उसकी घड़ी रास्ते में ही अपने घटकों में विघटित हो गई होगी।
उसने चिल्लाकर कहा कि वे दो सेकंड चलने के लायक थे, न कि एक क्वाड्रिलियन चलने के।
किलोमीटर लेकिन एक क्वाड्रिलियन का क्वाड्रिलियन, क्वाड्रिलियनवें तक बढ़ाया गया
शक्ति! दरअसल, उन्होंने 'होसन्ना' गाया और इतना अधिक गाया कि कुछ लोगों को
ऊंचे विचारों वाले लोग पहले तो उससे हाथ नहीं मिलाते थे—वह बन गया था
उन्होंने कहा, ये बहुत तेजी से प्रतिक्रियावादी हैं। रूसी स्वभाव। मैं दोहराता हूँ, ये है
एक महान हस्ती। मैं इसे इसकी अहमियत के हिसाब से मानता हूँ। तो ये कुछ ऐसे विचार हैं जो हमारे पास हैं।
ऐसे विषयों पर आज भी चर्चा जारी है।
“मैंने तुम्हें पकड़ लिया!” इवान लगभग बचकाने उत्साह से चिल्लाया,
हालांकि अंततः उसे कुछ याद आ गया था। “वह
एक खरब वर्षों के बारे में एक किस्सा, जो मैंने खुद बनाया था! मैं सत्रह साल का था।
तब मैं हाई स्कूल में था। मैंने वह किस्सा गढ़ा और एक को सुनाया।
कोरोवकिन नाम का एक सहपाठी था, यह घटना मॉस्को में हुई थी... यह किस्सा कुछ इस तरह है।
यह एक ऐसी विशेषता है जिसे मैं कहीं से भी नहीं ले सकता था। मुझे लगा कि मैं
मैं इसे भूल गया था... लेकिन मुझे अनजाने में याद आ गया—मुझे खुद याद आया—यह

ये बात तुमने नहीं कही थी! हजारों बातें अनजाने में याद रह जाती हैं।
ठीक वैसे ही जैसे लोगों को फांसी के लिए ले जाते समय भी... यह फिर से लौट आया है।
तुम मुझे सपने में दिखाई दिए। तुम वही सपना हो! तुम एक सपना हो, कोई जीवित व्यक्ति नहीं।
प्राणी!"
“जिस ज़ोर-शोर से तुम मेरे अस्तित्व को नकारते हो,” हंसते हुए बोला।
उस सज्जन ने कहा, "मुझे पूरा विश्वास है कि आप मुझ पर भरोसा करते हैं।"
बिलकुल भी नहीं! मुझे इस बात पर ज़रा सा भी भरोसा नहीं है।
आप!"
लेकिन आपके पास एक दाने का हज़ारवां हिस्सा है। शायद होम्योपैथिक खुराक।
सबसे शक्तिशाली हैं। स्वीकार करो कि तुम्हें दस हजारवें हिस्से तक भी विश्वास है।
एक तिनका।"
“एक मिनट के लिए भी नहीं,” इवान गुस्से से चिल्लाया। “लेकिन मैं चाहूँगा कि
मुझे तुम पर भरोसा है,” उसने अजीबोगरीब ढंग से कहा।
“अहा! ये तो कबूलनामा है! लेकिन मैं तो नेक दिल हूँ। मैं आऊँगा।”
आपकी सहायता के लिए फिर से धन्यवाद। सुनो, मैंने तुम्हें पकड़ा था, तुमने मुझे नहीं। मैंने तुम्हें बताया था।
वह किस्सा जिसे आप जानबूझकर भूल गए थे, ताकि आपके विश्वास को नष्ट कर सकें।
मुझे पूरी तरह से।
“तुम झूठ बोल रहे हो। तुम्हारे आने का मकसद मुझे अपने विश्वास के लिए राजी करना है।”
अस्तित्व!"
“बिल्कुल सही। लेकिन झिझक, अनिश्चितता, विश्वास और
अविश्वास—कभी-कभी आप जैसे ईमानदार व्यक्ति के लिए भी बहुत बड़ी यातना होती है।
यह जानते हुए कि आप ऐसा करने के लिए प्रवृत्त हैं, बेहतर है कि आप तुरंत फांसी लगा लें।
मुझ पर विश्वास करने के लिए, मैंने आपको यह बताकर कुछ अविश्वास पैदा किया कि
एक किस्सा। मैं आपको बारी-बारी से विश्वास और अविश्वास की ओर ले जाता हूँ, और मेरा एक मकसद है।
इसमें। यह नया तरीका है। जैसे ही आप मुझ पर पूरी तरह से अविश्वास करने लगेंगे,
तुम मेरे सामने ही मुझे आश्वस्त करना शुरू कर दोगे कि मैं सपना नहीं बल्कि हकीकत हूँ।
मैं तुम्हें जान लूँगा। तब मैं अपना उद्देश्य प्राप्त कर लूँगा, जो कि एक सम्मानजनक पद है।
मैं तुममें विश्वास का एक छोटा सा दाना बोऊंगा और वह एक विशाल बीज में बदल जाएगा।
बलूत का पेड़—और ऐसा बलूत का पेड़ कि उस पर बैठकर आपका मन स्वर्ग में प्रवेश करने के लिए
तरसेगा।
‘जंगल में रहने वाले संन्यासियों और संत स्त्रियों’ की श्रेणी में, क्योंकि यही है
जिसकी तुम गुप्त रूप से कामना कर रहे हो। तुम टिड्डियों का भोज करोगे, तुम भटकोगे।
अपनी आत्मा को बचाने के लिए जंगल में निकल पड़ो!
तो क्या आप मेरी आत्मा के उद्धार के लिए काम कर रहे हैं?
बदमाश?
“कभी-कभी अच्छा काम करना भी जरूरी होता है। तुम तो बड़े चिड़चिड़े हो!”
“मूर्ख! क्या तुमने कभी उन पवित्र पुरुषों को उकसाया है जो टिड्डे खाते थे और प्रार्थना करते थे?”
सत्रह साल तक जंगल में रहने के बाद वे काई से पूरी तरह ढक गए?
“मेरे प्रिय मित्र, मैंने इसके अलावा कुछ नहीं किया। इंसान सब कुछ भूल जाता है।”
दुनिया और सभी दुनियाओं में, और एक ऐसे संत से जुड़ा रहता है, क्योंकि वह बहुत ही
अनमोल हीरा। ऐसी एक आत्मा, आप जानते हैं, कभी-कभी पूरे के बराबर होती है।
नक्षत्रमंडल। हमारे पास गणना की अपनी प्रणाली है, आप जानते हैं। विजय
यह अनमोल है! और उनमें से कुछ, मेरी कसम, आपसे किसी भी तरह से कमतर नहीं हैं।
आप विश्वास नहीं करेंगे, फिर भी वे संस्कृति की इतनी गहराईयों पर विचार कर सकते हैं।
एक ही क्षण में विश्वास और अविश्वास, कभी-कभी ऐसा सचमुच लगता है

कि वे 'पूरी तरह से उलट जाने' के कगार पर हैं, क्योंकि
अभिनेता गोर्बुनोव कहते हैं।
"तो क्या तुम्हारी नाक खींची गई?" 8
आगंतुक ने गंभीर स्वर में कहा, "मेरे प्रिय मित्र, यह बेहतर है कि..."
नाक खींचकर निकल जाना, बिना नाक के रहने से बेहतर है। एक पीड़ित के रूप में
मार्किस ने कुछ समय पहले ही यह बात कही थी (उनका इलाज किसी विशेषज्ञ ने किया होगा)।
अपने आध्यात्मिक पिता—एक जेसुइट—के सामने स्वीकारोक्ति करते हुए। मैं वहाँ मौजूद था, बस इतना ही।
आकर्षक। 'मेरी नाक वापस दो!' उसने कहा और अपनी छाती पीटने लगा। 'मेरी
पुत्र,' पुजारी ने टालमटोल करते हुए कहा, 'सभी कार्य योजना के अनुसार ही पूरे होते हैं।'
ईश्वर की रहस्यमयी योजनाओं और एक दुर्भाग्यपूर्ण घटना के साथ
कभी-कभी इससे असाधारण, हालांकि अप्रत्यक्ष, लाभ प्राप्त होते हैं। यदि कठोर
नियति ने तुमसे तुम्हारी नाक छीन ली है, यह तुम्हारे लिए अच्छा ही है कि कोई भी
'क्या कभी कोई तुम्हें तुम्हारी नाक से खींच सकता है?' 'हे पवित्र पिता, इससे कोई सांत्वना नहीं मिलती,'
चिल्लाया।
हताश मार्किस। 'मुझे हर दिन अपनी नाक खिंचवाने में खुशी होगी।'
मेरा जीवन, काश यह अपने उचित स्थान पर होता।' 'मेरे बेटे,' पुजारी आह भरते हुए कहते हैं, 'तुम
एक साथ सारी खुशियाँ पाने की उम्मीद नहीं कर सकते। यह तो शिकायत करने जैसा है।
हे ईश्वर, जिसने इस मामले में भी तुम्हें नहीं भुलाया है, क्योंकि यदि तुम शिकायत करोगे तो
आपने अभी शिकायत करते हुए कहा कि आपको अपनी नाक खिंचवाने में भी खुशी होगी।
आपके शेष जीवन में, आपकी इच्छा अप्रत्यक्ष रूप से पहले ही पूरी हो चुकी है, क्योंकि
जब तुम्हारी नाक कट गई, तो तुम्हें नाक से ही रास्ता दिखाया गया।
"बेवकूफ, कितनी मूर्खता है!" इवान चिल्लाया।
"मेरे प्यारे दोस्त, मैं तो बस तुम्हें हंसाना चाहता था। लेकिन मैं कसम खाता हूँ कि यही सच है।"
यह बिल्कुल वास्तविक जेसुइट छल-कपट है और मैं कसम खाता हूँ कि यह सब शब्दशः हुआ था।
मैंने आपको बताया था। यह हाल ही में हुआ था और इससे मुझे बहुत परेशानी हुई।
एक दुखी युवक ने घर पहुँचते ही उसी रात खुद को गोली मार ली। मैं
आखिरी क्षण तक उनके साथ। वे जेसुइट कन्फेशनल वास्तव में
उदासी भरे पलों में मेरा सबसे आनंददायक मनोरंजन। यहाँ एक और उदाहरण है।
यह घटना कुछ ही दिन पहले घटी थी। एक छोटी गोरी नॉर्मन लड़की।
बीस साल की उम्र की एक सुडौल, सरल स्वभाव वाली खूबसूरत लड़की, जिसे देखकर आपके मुंह में पानी
आ जाएगा।
पानी—एक बूढ़े पुजारी के पास आती है। वह झुकती है और अपने पाप को फुसफुसाकर बताती है।
कर्कश आवाज। 'अरे, मेरी बेटी, तुम फिर से गिर गई हो?' चिल्लाता है।
पुजारी। 'हे संत मारिया, मैं क्या सुन रहा हूँ! इस बार यह वही आदमी नहीं है, कैसे?
ये कब से चल रहा है? क्या तुम्हें शर्म नहीं आती!' 'अरे, मेरे पिता,' जवाब देता है
पश्चाताप के आँसुओं से भीगा पापी कहता है, 'इससे उसे बहुत आनंद मिलता है, और मुझे बहुत कम।'
'पेन!' वाह, कैसा जवाब! मैं पीछे हट गया। यह प्रकृति की पुकार थी, बेहतर है
अगर आप चाहें तो निर्दोषता से भी बढ़कर। मैंने मौके पर ही उसके पाप को क्षमा कर दिया और था
मैं जाने के लिए मुड़ा, लेकिन मुझे वापस मुड़ने के लिए मजबूर होना पड़ा। मैंने चूल्हे पर पुजारी की आवाज़
सुनी।
उसने शाम के लिए उससे मिलने का समय तय किया—हालाँकि वह एक बूढ़ा था
कठोर हृदय वाला वह व्यक्ति पल भर में गिर पड़ा! यह प्रकृति का नियम था, प्रकृति का सत्य।
अपने अधिकारों का दावा किया! क्या, तुम फिर से नाक सिकोड़ रहे हो? गुस्सा
फिर से? मुझे नहीं पता कि मैं आपको कैसे खुश करूँ...
मुझे अकेला छोड़ दो, तुम मेरे दिमाग पर भूतिया असर डाल रहे हो

“दुःस्वप्न,” इवान असहाय होकर अपने भूत के सामने कराह उठा। “मैं हूँ
मैं तुमसे बेहद ऊब चुका हूँ, असहनीय रूप से। मैं कुछ भी देने को तैयार हूँ ताकि मैं
मैं तुम्हें झटक सकता हूँ!
मैं फिर दोहराता हूं, अपनी अपेक्षाओं को संयमित रखें, मुझसे कोई मांग न करें।
“सब कुछ महान और नेक है” और आप देखेंगे कि हम कितनी अच्छी तरह से आगे बढ़ेंगे।
उस सज्जन ने प्रभावशाली ढंग से कहा, "आप मुझसे इसलिए वाकई नाराज़ हैं क्योंकि मैंने ऐसा नहीं किया।
लाल चमक में, गरज और बिजली के साथ, आपके सामने प्रकट होकर,
झुलसे हुए पंख, लेकिन मैंने खुद को इतने विनम्र रूप में प्रकट किया है। आप हैं
सबसे पहले, आपकी सौंदर्यबोध संबंधी भावनाओं को ठेस पहुंची है, और दूसरे,
तुम्हारा घमंड! भला ऐसा नीच शैतान तुम्हारे जैसे महान व्यक्ति के पास कैसे आ सकता है!
हां, आपमें वह रोमांटिक प्रवृत्ति मौजूद है, जिसकी बायलिंस्की ने इतनी आलोचना की थी।
मैं कुछ नहीं कर सकता, नौजवान, जब मैं तुम्हारे पास आने की तैयारी कर रहा था तो मैंने एक विचार किया था।
एक सेवानिवृत्त जनरल के रूप में प्रकट होने का मजाक, जिसने सेवा की थी
काकेशस, मेरे कोट पर सिंह और सूर्य का तारा बना हुआ था। लेकिन मैं था
मुझे ऐसा करने से बहुत डर लग रहा था, क्योंकि अगर मैंने पिन लगाने की हिम्मत की होती तो तुम मुझे बुरी तरह पीट देते।
मेरे कोट पर शेर और सूरज बने हैं, कम से कम ध्रुव तारा या कुछ और तो होना चाहिए था।
सीरियस। और तुम मुझे बेवकूफ कहते रहते हो, लेकिन हे भगवान! मैं कुछ नहीं कर रहा।
मेफिस्टोफेल्स ने फाउस्ट से कहा, "बुद्धि में तुम्हारे बराबर होने का दावा करता हूँ।"
कि वह बुराई चाहता था, लेकिन उसने केवल भलाई ही की। खैर, वह जो चाहे कह सकता है, यह उसकी मर्जी है।
मेरे साथ तो बिलकुल उल्टा है। शायद मैं ही इस सृष्टि में इकलौता इंसान हूँ जो
सत्य से प्रेम करता है और वास्तव में भलाई चाहता है। मैं वहाँ था जब वचन,
क्रूस पर मरने वाला, अपनी गोद में आत्मा को लिए स्वर्ग में विराजमान हुआ।
पश्चातापी चोर की। मैंने देवदूतों के आनंदमय चीखों को गाते हुए सुना और
होसन्नाह का जयजयकार और सेराफिम का गर्जनापूर्ण उल्लास जो
मैंने स्वर्ग और समस्त सृष्टि को हिला दिया, और मैं पवित्रतम चीज़ों की कसम खाकर कहता हूँ, मैं
मैं उस गायक मंडली में शामिल होकर उन सबके साथ होसन्ना का जयजयकार करने के लिए तरस रहा था।
यह शब्द मेरे मन में था।
लगभग मेरे मुंह से निकल ही गया था, लगभग मेरे होंठों से टूट ही गया था... आप जानते हैं कैसे
मैं संवेदनशील और सौंदर्यबोध से आसानी से प्रभावित होने वाला व्यक्ति हूँ। लेकिन सामान्य ज्ञान—
ओह, मेरे चरित्र की एक बेहद दुर्भाग्यपूर्ण विशेषता—जिसने मुझे उचित सीमा में रखा और मैंने उसे जाने दिया
वो पल बीत गया! मैंने सोचा, क्या होता, क्या होता?
मेरी जयजयकार के बाद क्या हुआ होता? धरती पर सब कुछ बदल गया होता।
तुरंत बुझ गया और कोई घटना घटित नहीं हो सकती थी। और इसलिए, केवल
कर्तव्य की भावना और अपनी सामाजिक स्थिति के कारण, मुझे अपनी भावनाओं को दबाना पड़ा।
अच्छा क्षण है और मुझे अपने घिनौने काम पर डटे रहना चाहिए। कोई और सारा श्रेय ले जाता है।
वह अपने लिए जो अच्छा है, वही करता है, और मेरे लिए केवल बुराई ही बचती है। लेकिन मैं
मुझे आलस्य और ढोंग भरे जीवन के सम्मान से ईर्ष्या नहीं है, मैं महत्वाकांक्षी नहीं हूँ। क्यों?
क्या मैं, संसार के सभी प्राणियों में से, सभी सभ्य प्राणियों द्वारा शापित होने के लिए अभिशप्त हूँ?
लोगों द्वारा लात मारे जाने का भी खतरा है, क्योंकि यदि मैं नश्वर रूप धारण करता हूँ तो मैं बाध्य हूँ।
क्या कभी-कभी ऐसे परिणाम भुगतने पड़ते हैं? मुझे पता है, बेशक, इसमें एक रहस्य छिपा है।
लेकिन वे मुझे किसी भी कीमत पर रहस्य नहीं बताएंगे, क्योंकि तब शायद, देखकर

इसका अर्थ यह है कि मैं होसन्नाह चिल्ला सकता हूँ, और अपरिहार्य माइनस
वह सब तुरंत गायब हो जाएगा, और विवेक का सर्वोपरि वर्चस्व स्थापित हो जाएगा।
पूरी दुनिया। और इसका मतलब होगा, ज़ाहिर है, हर चीज़ का अंत।
पत्रिकाओं और अखबारों की भी, क्योंकि उन्हें कौन लेगा? मुझे पता है
कि अंत में मेरा मेल-मिलाप हो जाएगा। मैं भी अपने मार्ग पर चलूँगा।
क्वाड्रिलियन और रहस्य जानो। लेकिन जब तक ऐसा नहीं होता, मैं रूठ गया हूँ और
मैं अपनी नियति को पूरा करूंगा, भले ही यह मेरी प्रवृत्ति के विरुद्ध हो—अर्थात हजारों लोगों को बर्बाद करना।
एक को बचाने के लिए। कितनी आत्माओं को बर्बाद होना पड़ा है और
उस एक व्यक्ति के लिए कितनी ही प्रतिष्ठित प्रतिष्ठाएं नष्ट हो गईं
हे धर्मी पुरुष, अय्यूब, जिसके कारण पुराने समय में उन्होंने मुझे इतना मूर्ख बनाया था!
हाँ, जब तक रहस्य उजागर नहीं हो जाता, मेरे लिए दो प्रकार के सत्य हैं—एक,
उनका सत्य, जो दूर कहीं है, जिसके बारे में मुझे अभी तक कुछ भी पता नहीं है, और दूसरा मेरा
अपना। और यह कोई नहीं जानता कि कौन सा बेहतर साबित होगा... क्या आप
सो गया?"
“शायद मैं ही हूँ,” इवान गुस्से से कराह उठा। “मेरे सारे बेवकूफी भरे विचार—
बहुत पहले ही पुराना हो चुका, बुरी तरह से कुचला हुआ, और एक मृत शरीर की तरह फेंक दिया गया—तुम
मुझे इसे किसी नई चीज के रूप में प्रस्तुत करो!
“तुम्हें खुश करना नामुमकिन है! और मैंने सोचा था कि मैं तुम्हें मोहित कर लूँगा।
मेरी साहित्यिक शैली। आसमान में वो जयजयकार वाकई बुरा नहीं था, है ना?
और फिर वो व्यंग्यात्मक लहजा, बिल्कुल हेइन की तरह, है ना?
नहीं, मैं कभी इतना चापलूस नहीं था! तो फिर मेरी आत्मा भला कैसे किसी को जन्म दे सकती है?
तुम्हारे जैसे चापलूस?
मेरे प्रिय मित्र, मैं एक अत्यंत आकर्षक और सुंदर युवती को जानता हूँ।
रूसी सज्जन, एक युवा विचारक और साहित्य एवं कला के महान प्रेमी,
द ग्रैंड इनक्विजिटर नामक एक आशाजनक कविता के लेखक। मैं केवल
मैं उसके बारे में सोच रही हूँ!
“मैं तुम्हें ग्रैंड इनक्विजिटर के बारे में बात करने से मना करता हूँ,” इवान गुस्से से लाल होकर चिल्लाया।
शर्म के साथ।
और वह भूवैज्ञानिक प्रलय। क्या आपको याद है? वह एक
अब कविता!
"चुप रहो, वरना मैं तुम्हें मार डालूंगा!"
“तुम मुझे मार डालोगे? नहीं, माफ कीजिए, मैं बोलूंगा। मैं तो बस अपना इलाज कराने आया हूँ।
उस आनंद के लिए। ओह, मुझे अपने उत्साही युवा मित्रों के सपने बहुत प्यारे लगते हैं।
जीवन के प्रति उत्सुकता से कांपते हुए! 'नए लोग आ गए हैं,' तुमने पिछले हफ्ते फैसला किया था
वसंत ऋतु में, जब आप यहाँ आने की योजना बना रहे थे, 'वे इसे नष्ट करने का प्रस्ताव रखते हैं'
सब कुछ और नरभक्षण से शुरू करो। बेवकूफ लोग! उन्होंने मुझसे पूछा भी नहीं।
सलाह! मेरा मानना है कि कुछ भी नष्ट करने की आवश्यकता नहीं है, हमें केवल इतना ही चाहिए कि...
मनुष्य के मन में ईश्वर की धारणा को नष्ट करना होगा, इसी तरह हमें काम शुरू करना होगा।
हमें यहीं से शुरुआत करनी होगी। हे अंधों, तुम लोगों को कुछ भी नहीं आता।
समझ! जैसे ही मनुष्य सब परमेश्वर को नकार देते हैं—और मैं
मेरा मानना है कि भूवैज्ञानिक कालों के समान वह काल भी बीत जाएगा।
ब्रह्मांड की पुरानी अवधारणा बिना नरभक्षण के स्वतः ही समाप्त हो जाएगी।
और तो और, पुरानी नैतिकता भी बदल जाएगी, और सब कुछ नए सिरे से शुरू होगा।

हम जीवन से वह सब कुछ लेने के लिए एकजुट होंगे जो यह दे सकता है, लेकिन केवल आनंद और खुशी के लिए।
वर्तमान दुनिया। मनुष्य को दिव्य टाइटैनिक की भावना से ऊपर उठाया जाएगा।
अहंकार और ईश्वर-मानव का प्रकटीकरण होगा। पल-पल वह अपना विस्तार करता रहेगा।
मनुष्य अपनी इच्छाशक्ति और विज्ञान के बल पर प्रकृति पर असीम विजय प्राप्त कर लेगा, तब उसे ऐसा अनुभव होगा।
इसे करने में पल-पल मिलने वाला असीम आनंद, जिससे उसके पुराने सभी कष्टों की भरपाई हो जाएगी।
स्वर्ग के सुखों के सपने। हर कोई जानेगा कि वह नश्वर है और
वह देवता की तरह गर्व और शांति से मृत्यु को स्वीकार करेगा। उसका गर्व उसे सिखाएगा।
उसके लिए जीवन के क्षणिक होने पर पछताना व्यर्थ है, और वह
बिना किसी प्रतिफल की अपेक्षा के अपने भाई से प्रेम करना। प्रेम केवल एक के लिए पर्याप्त होगा।
जीवन का क्षण, लेकिन इसकी क्षणभंगुरता की चेतना ही
इसकी आग को और तीव्र करो, जो अब शाश्वत प्रेम के सपनों में विलीन हो गई है।
कब्र... और इसी तरह आगे भी। बहुत बढ़िया!
इवान अपनी आँखें ज़मीन पर गड़ाए और अपने हाथ कानों पर दबाए बैठा था।
लेकिन वह पूरी तरह से कांपने लगा। आवाज़ जारी रही।
मेरे युवा विचारक ने सोचा, “अब सवाल यह है कि क्या यह संभव है कि
क्या कभी ऐसा दौर आएगा? अगर आता है, तो सब कुछ तय हो जाएगा और
मानवता हमेशा के लिए स्थिर हो गई है। लेकिन, मनुष्य की जन्मजात मूर्खता के कारण,
ऐसा कम से कम एक हजार वर्षों तक नहीं हो सकता, हर कोई जो
जो अब भी सच्चाई को पहचानता है, वह वैध रूप से अपने जीवन को अपनी इच्छानुसार व्यवस्थित कर सकता है।
नए सिद्धांतों के अनुसार, यह उचित है। उस अर्थ में, 'सभी चीजें वैध हैं'
उसे। इतना ही नहीं, भले ही यह अवधि कभी न आए, क्योंकि
बहरहाल, न तो ईश्वर है और न ही अमरता, नया मनुष्य शायद वही बन जाए जो...
भले ही वह पूरी दुनिया में इकलौता ही क्यों न हो, फिर भी उसे ईश्वर-मानव के पद पर पदोन्नत किया जाता है।
अपने नए पद पर रहते हुए, वह पुराने नियमों की सभी सीमाओं को हल्के-फुल्के ढंग से पार कर सकता है।
यदि आवश्यक हो तो पुराने गुलाम की नैतिकता का सहारा लें। ईश्वर के लिए कोई कानून नहीं है।
जहां ईश्वर विराजमान हैं, वह स्थान पवित्र है। जहां मैं खड़ा हूं, वह स्थान भी पवित्र होगा।
सर्वोपरि स्थान... 'सभी चीजें वैध हैं' और बस! बात यहीं समाप्त होती है!
बहुत आकर्षक; लेकिन अगर आप धोखाधड़ी करना चाहते हैं तो आपको नैतिकता की क्या जरूरत है?
इसके लिए दंड? लेकिन यह तो हमारे आधुनिक रूसियों की खासियत है। वह ऐसा नहीं कर सकता।
वह बिना किसी नैतिक औचित्य के धोखाधड़ी करने को तैयार हो जाता है। वह उससे इतना प्यार करता है।
सच । । ।"
आगंतुक अपनी वाक्पटुता से मंत्रमुग्ध होकर बोलने लगा।
वह जोर-जोर से बोलने लगा और अपने मेजबान को व्यंग्य भरी नजरों से देखने लगा। लेकिन उसने ऐसा किया।
काम पूरा करने में सफल नहीं हो सका; इवान ने अचानक मेज से एक गिलास छीन लिया और
उसने इसे वक्ता पर फेंक दिया।
“अरे, ये तो बेवकूफी है,” सोफे से उछलते हुए दूसरे ने कहा।
और अपने ऊपर से चाय की बूँदें झाड़ते हुए। "उसे लूथर की याद आती है..."
स्याहीदान! वह मुझे सपने में ले जाता है और सपने पर गिलास फेंक देता है! यह ऐसा है जैसे
एक महिला! मुझे शक था कि तुम सिर्फ कान बंद करने का नाटक कर रही हो।
अचानक खिड़की पर ज़ोर-ज़ोर से लगातार दस्तक सुनाई दी। इवान
सोफे से उछलकर उठ खड़ा हुआ।

“क्या आप सुन रहे हैं? बेहतर होगा कि आप दरवाजा खोलें,” आगंतुक चिल्लाया; “यह आपका है।”
भाई अलेयोशा, आपके लिए सबसे दिलचस्प और चौंकाने वाली खबर लेकर आ रहा हूँ।
अवश्यंभावी!"
“चुप रहो, धोखेबाज़, मुझे पता था कि यह अलेयोशा है, मुझे महसूस हो रहा था कि वह आ रहा है, और
"बेशक वह व्यर्थ नहीं आया है; बेशक वह 'खबर' लेकर आया है," इवान
उसने घबराकर कहा।
"उसके लिए दरवाजे खोलो। बर्फ़ीला तूफ़ान चल रहा है और वह तुम्हारा भाई है।"
क्या उस सज्जन को मौसम की जानकारी है? ऐसा तो है नहीं कि वह यहाँ किसी कुत्ते को छोड़ देंगे।
बाहर।"
दस्तक जारी रही। इवान खिड़की की ओर दौड़ना चाहता था, लेकिन
ऐसा लग रहा था मानो किसी चीज ने उसके हाथों और पैरों को जकड़ रखा हो। उसने हर संभव प्रयास किया।
उसकी जंजीरें तोड़ने की कोशिश की, लेकिन व्यर्थ। खिड़की पर दस्तक तेज होती गई और
और तेज़। आखिरकार जंजीरें टूट गईं और इवान सोफे से उछल पड़ा।
उसने घबराकर चारों ओर देखा। दोनों मोमबत्तियाँ लगभग बुझ चुकी थीं, गिलास जो उसने
उसने अभी-अभी अपने सामने मेज पर खड़े आगंतुक पर कुछ फेंका था, और वहाँ था
सामने वाले सोफे पर कोई नहीं था। खिड़की के फ्रेम पर दस्तक जारी थी।
लगातार, लेकिन यह उतना तेज नहीं था जितना उसके सपने में दिखाई दिया था;
इसके विपरीत, यह काफी शांत था।
“यह सपना नहीं था! नहीं, मैं कसम खाता हूँ कि यह सपना नहीं था, यह सब सच में हुआ था।”
“अभी!” इवान चिल्लाया। वह खिड़की की ओर भागा और घूमने वाला दरवाज़ा खोल दिया।
फलक।
“अलोशा, मैंने तुमसे कहा था कि मत आना,” उसने अपने भाई से रोते हुए कहा।
दो शब्द, आप क्या चाहते हैं? दो शब्दों में, क्या आप समझ रहे हैं?
“एक घंटा पहले स्मर्ड्याकोव ने फांसी लगा ली,” अलेयोशा ने जवाब दिया।
यार्ड।
“सीढ़ियों के पास आ जाओ, मैं अभी खोलता हूँ,” इवान ने कहा और खोलने चला गया।
अलियोशा का द्वार।

8 शाब्दिक अर्थ: "क्या तुम पर नाक-भौं सिकोड़ने के बाद तुम बच गए?"—एक
रूस में असफलता के लिए प्रचलित कहावत।

अध्याय 10

"यह बात उन्होंने ही कही थी।"

अंदर आकर अलेयोशा ने इवान को बताया कि एक घंटे पहले मार्या कोंद्रत्येवना उसके कमरे में दौड़कर आई और उसे बताया कि स्मरद्याकोव ने आत्महत्या कर ली है। "मैं समोवर साफ करने अंदर गई और वह दीवार में लगी कील पर लटका हुआ था।" अलेयोशा के पूछने पर कि क्या उसने पुलिस को सूचना दी है, उसने जवाब दिया कि उसने किसी को नहीं बताया, "लेकिन मैं सीधे आपके पास भागी, मैं दौड़कर आई हूँ।" अलेयोशा ने बताया कि वह पूरी तरह से पागल लग रही थी और पत्ते की तरह कांप रही थी। जब अलेयोशा उसके साथ झोपड़ी में भागा, तो उसने स्मरद्याकोव को अभी भी लटका हुआ पाया। मेज पर एक नोट पड़ा था: "मैं अपनी इच्छा और इच्छा से अपनी जान ले रहा हूँ, ताकि किसी पर कोई दोष न लगे।" अलेयोशा ने नोट को मेज पर ही छोड़ दिया और सीधे पुलिस कप्तान के पास गया और उसे सब कुछ बता दिया। "और उनसे मैं सीधे आपके पास आया हूँ," अलेयोशा ने इवान के चेहरे को ध्यान से देखते हुए कहा। अपनी कहानी सुनाते समय इवान ने अपनी नज़रें उससे नहीं हटाई थीं, मानो उसके चेहरे के भावों ने उसे झकझोर दिया हो।
"भाई," वह अचानक चिल्लाया, "तुम बहुत बीमार लग रहे हो। तुम तो दिख भी रहे हो और..."
ऐसा लगता है कि तुम्हें मेरी बात समझ नहीं आ रही है।
"अच्छा हुआ कि तुम आ गए," इवान ने उदास होकर कहा, न कि किसी और भाव से।
अलियोशा की हैरानी भरी आवाज़ सुनकर, "मुझे पता था कि उसने खुद को फांसी लगा ली है।"
"जिस से?"
मुझे नहीं पता। लेकिन मुझे पता था। क्या मुझे पता था? हाँ, उसने मुझे बताया था। उसने मुझे ऐसा बताया था। बस अब।"
इवान कमरे के बीचोंबीच खड़ा था और उसी लहजे में बोलता रहा।
गंभीर स्वर में, जमीन की ओर देखते हुए।
"वह कौन है?" अलेयोशा ने अनजाने में चारों ओर देखते हुए पूछा। "वह चुपके से निकल गया है।"
इवान ने अपना सिर उठाया और धीरे से मुस्कुराया।
"वह तुमसे डरता था, तुम्हारे जैसी कबूतरी से। तुम एक 'शुद्ध देवदूत' हो।"
दिमित्री तुम्हें देवदूत कहता है। देवदूत! . . . देवदूतों का गर्जनापूर्ण उल्लास। देवदूत क्या हैं? शायद एक पूरा तारामंडल। लेकिन शायद वह तारामंडल केवल एक रासायनिक अणु है। सिंह और सूर्य का एक तारामंडल है। क्या तुम इसे नहीं जानते?
"भाई, बैठ जाओ," अलेयोशा ने घबराकर कहा। "भगवान के लिए, बैठ जाओ।"
सोफे पर लेट जाओ! तुम बेहोश हो रहे हो; अपना सिर तकिए पर रखो, ठीक है। क्या तुम अपने सिर पर गीला तौलिया रखना चाहोगे? शायद इससे तुम्हें आराम मिले।
"मुझे तौलिया दो: यह कुर्सी पर ही है। मैंने इसे अभी वहीं फेंक दिया था।"
"यह यहाँ नहीं है। चिंता मत करो। मुझे पता है यह कहाँ है—यहीं पर," उसने कहा।
अलेयोशा को कमरे के दूसरे कोने में इवान की ड्रेसिंग टेबल के पास एक साफ, तह किया हुआ और अप्रयुक्त तौलिया मिला। इवान ने तौलिये को अजीब नज़रों से देखा: मानो एक पल के लिए उसे कुछ याद आ गया हो।
"रुको,"—वह सोफे से उठा—"एक घंटा पहले मैंने वह नया तौलिया लिया था।"
मैंने उसे वहाँ से उठाया और गीला किया। मैंने उसे अपने सिर के चारों ओर लपेटा और यहाँ फेंक दिया... यह सूखा कैसे है? दूसरा तो था ही नहीं।
"तुमने वो तौलिया अपने सिर पर रखा था?" अलेयोशा ने पूछा। "हाँ, और एक घंटे पहले कमरे में इधर-उधर घूमा था... ऐसा क्यों किया था?"
मोमबत्तियाँ इतनी जल गईं? समय क्या हुआ है?
लगभग बारह।
"नहीं, नहीं, नहीं!" इवान अचानक चिल्लाया। "यह सपना नहीं था। वह यहीं था; वह

वो यहाँ, उस सोफे पर बैठा था। जब तुमने खिड़की पर दस्तक दी, तो मैंने उस पर गिलास फेंक दिया... यही वाला। एक मिनट रुको। पिछली बार मैं सो रहा था, लेकिन ये सपना सपना नहीं था। ऐसा पहले भी हो चुका है। मुझे अब सपने आते हैं, अलेयोशा... फिर भी ये सपने नहीं, बल्कि हकीकत हैं। मैं चलता-फिरता हूँ, बातें करता हूँ और देखता हूँ... हालाँकि मैं सो रहा होता हूँ। लेकिन वो यहाँ, उस सोफे पर बैठा था... वो बहुत बेवकूफ है, अलेयोशा, बहुत बेवकूफ।" इवान अचानक हँस पड़ा और कमरे में इधर-उधर घूमने लगा।
“बेवकूफ कौन है? तुम किसके बारे में बात कर रहे हो, भाई?” अलेयोशा ने पूछा।
फिर से बेचैनी से।
“शैतान! वो मुझसे मिलने आने लगा है। वो लगभग दो बार यहाँ आ चुका है।”
तीन बार। उसने मुझे ताना मारा कि मैं उसके साधारण शैतान होने पर नाराज़ हूँ, न कि झुलसे हुए पंखों वाले, गरजते और बिजली वाले शैतान पर। लेकिन वह शैतान नहीं है: यह झूठ है। वह एक ढोंगी है। वह बस एक शैतान है—एक तुच्छ, मामूली शैतान। वह स्नानघर जाता है। अगर आप उसके कपड़े उतार दें, तो आपको यकीनन उसकी एक पूंछ मिलेगी, डेनिश कुत्ते की तरह लंबी और चिकनी, एक गज लंबी, भूरे रंग की... अलेयोशा, तुम्हें ठंड लग रही है। तुम बर्फ में थे। क्या तुम चाय पीना चाहोगे? क्या? क्या ठंड है? क्या मैं उसे चाय लाने के लिए कहूँ? कुत्ते को बाहर मत निकालो...
अलियोशा कपड़े धोने के स्टैंड की ओर दौड़ा, तौलिया गीला किया और इवान को राजी किया।
फिर से बैठ जाओ, और गीला तौलिया उसके सिर के चारों ओर लपेट दो। वह उसके बगल में बैठ गया।
“अभी तुम मुझे लीज़ के बारे में क्या बता रहे थे?” इवान ने फिर से पूछना शुरू किया। (वह)
(बहुत ज्यादा बातूनी हो रहा था।) “मुझे लीज़ पसंद है। मैंने उसके बारे में कुछ बुरा कहा था। वो झूठ था। मुझे वो पसंद है... मुझे कल कात्या के लिए डर लग रहा है। मुझे उससे सबसे ज्यादा डर लग रहा है। भविष्य की वजह से। वो कल मुझे त्याग देगी और पैरों तले रौंद देगी। उसे लगता है कि मैं ईर्ष्या के कारण मित्या को बर्बाद कर रहा हूँ! हाँ, उसे यही लगता है! लेकिन ऐसा नहीं है। कल सूली पर चढ़ना है, फांसी पर नहीं। नहीं, मैं खुद को फांसी नहीं लगाऊंगा। क्या तुम जानते हो, मैं कभी आत्महत्या नहीं कर सकता, अलेयोशा। क्या यह इसलिए है क्योंकि मैं नीच हूँ? मैं कायर नहीं हूँ। क्या यह जीवन के प्रति प्रेम की वजह से है? मुझे कैसे पता चला कि स्मर्ज्याकोव ने फांसी लगा ली थी? हाँ, उसने ही मुझे बताया था।”
"और आपको पूरा यकीन है कि यहां कोई आया था?"
अलोशा ने पूछा।
“हाँ, कोने में उस सोफे पर। तुम उसे भगा देते। तुम
मैंने ही उसे भगाया था: तुम्हारे आते ही वो गायब हो गया। मुझे तुम्हारा चेहरा बहुत पसंद है, अलेयोशा। क्या तुम्हें पता है कि मुझे तुम्हारा चेहरा पसंद है? और वो मैं ही हूं, अलेयोशा। मेरे अंदर की सारी नीचता, सारी घटिया और घृणित बातें। हाँ, मैं एक रोमांटिक हूँ। उसने इसका अंदाज़ा लगा लिया था... हालाँकि ये झूठ है। वो बेहद बेवकूफ है; लेकिन ये उसके फायदे में है। वो धूर्त है, जानवरों जैसी धूर्तता—वो जानता था कि मुझे कैसे गुस्सा दिलाना है। वो मुझे अपने ऊपर विश्वास करने के लिए चिढ़ाता रहता था, और इसी तरह उसने मुझे अपनी बात मनवाई। उसने मुझे एक बच्चे की तरह बेवकूफ बनाया। हालाँकि उसने मुझे मेरे बारे में बहुत सी ऐसी बातें बताईं जो सच थीं। मैं खुद कभी ये बात नहीं मानती। क्या तुम्हें पता है, अलेयोशा,” इवान ने बेहद गंभीर और गोपनीय स्वर में कहा, “मुझे ये सोचकर बहुत खुशी होगी कि ये वो था, मैं नहीं।”
“उसने तुम्हें थका दिया है,” अलेयोशा ने अपने बेटे की ओर सहानुभूति से देखते हुए कहा।
भाई।
“वह मुझे चिढ़ा रहा है। और आप जानते हैं कि वह इसे कितनी चालाकी से करता है, इसलिए
चतुराई से। ‘अंतरात्मा! अंतरात्मा क्या है? मैं इसे स्वयं बनाता हूँ। मैं इससे क्यों व्याकुल हूँ? आदत से। सात हज़ार वर्षों से मानवजाति की सार्वभौमिक आदत से। तो चलो इसे त्याग दें, और हम देवता बन जाएँगे।’ यही उसने कहा था, यही उसने कहा था!
“और तुम नहीं, तुम नहीं?” अलेयोशा रोए बिना नहीं रह सकी, और स्पष्ट रूप से देखने लगी।
अपने भाई से कहा, “वैसे भी, उसकी परवाह मत करो; उससे नाता तोड़ लो और उसे भूल जाओ। और उसे वह सब कुछ अपने साथ ले जाने दो जिसे तुम अब कोसते हो, और कभी वापस मत आना!”
“हाँ, लेकिन वह द्वेषपूर्ण है। उसने मुझ पर हँसा। वह बहुत ही धृष्ट था, अलेयोशा।”

इवान ने अपमान से कांपते हुए कहा, “लेकिन उसने मेरे साथ अन्याय किया, कई बातों में मेरे साथ अन्याय किया। उसने मेरे सामने मेरे बारे में झूठ बोला। ‘अरे, तुम एक वीरतापूर्ण कार्य करने जा रहे हो: यह स्वीकार करोगे कि तुमने अपने पिता की हत्या की है, कि तुम्हारे उकसाने पर नौकर ने उनकी हत्या की है।’”
“भाई,” अलेयोशा ने बीच में कहा, “संयम बरतो। यह तुमने नहीं किया।”
उसकी हत्या की। यह सच नहीं है!
“वह यही कहता है, और वह यह जानता है। ‘तुम्हें एक प्रदर्शन करना होगा’”
"वीरतापूर्ण सद्गुण का कार्य, और तुम सद्गुण में विश्वास नहीं करते; यही बात तुम्हें पीड़ा देती है और तुम्हें क्रोधित करती है, इसीलिए तुम इतने प्रतिशोधी हो।" उसने मेरे बारे में मुझसे ये कहा और वह जानता है कि वह क्या कह रहा है।
“ये बात तुम कह रहे हो, वो नहीं,” अलेयोशा ने उदास स्वर में कहा, “और तुम कह रहे हो।”
ऐसा इसलिए है क्योंकि आप बीमार हैं और बेहोश हैं, और खुद को पीड़ा पहुंचा रहे हैं।"
“नहीं, वह जानता है कि वह क्या कह रहा है। वह कहता है, ‘तुम अहंकार के कारण जा रहे हो।’”
‘तुम खड़े होकर कहोगे कि मैंने उसे मारा है, और तुम इतना डर क्यों रहे हो? तुम झूठ बोल रहे हो! मुझे तुम्हारी राय से नफरत है, मुझे तुम्हारे डर से नफरत है!’ उसने मेरे बारे में ऐसा कहा। ‘और क्या तुम जानते हो कि तुम उनकी प्रशंसा के लिए तरस रहे हो—“वह एक अपराधी है, एक हत्यारा है, लेकिन कितना उदार आत्मा है; वह अपने भाई को बचाना चाहता था और उसने अपना जुर्म कबूल कर लिया।”’ ‘यह झूठ है, अलेयोशा!’ इवान अचानक गुस्से से चिल्लाया, उसकी आँखें चमक रही थीं। “मैं नहीं चाहता कि ये नीच लोग मेरी प्रशंसा करें, कसम से नहीं! यह झूठ है! इसीलिए मैंने उस पर गिलास फेंका और वह उसके बदसूरत चेहरे पर टूट गया।”
“भाई, शांत हो जाओ, रुक जाओ!” अलेयोशा ने उससे विनती की। “हाँ, वह किसी को सताना जानता है। वह क्रूर है,” इवान ने आगे कहा।
अनसुना। “मुझे शुरू से ही आभास हो गया था कि वह किसलिए आया है। ‘मान लो कि तुम अहंकार में हो, फिर भी तुम्हें उम्मीद थी कि स्मरद्याकोव को दोषी ठहराया जाएगा और साइबेरिया भेज दिया जाएगा, और मित्या बरी हो जाएगा, जबकि तुम्हें केवल नैतिक निंदा की सजा मिलेगी’ (‘सुना?’ तब वह हँसा)—‘और कुछ लोग तुम्हारी प्रशंसा करेंगे। लेकिन अब स्मरद्याकोव मर चुका है, उसने खुद को फांसी लगा ली है, और कौन अकेले तुम पर विश्वास करेगा? लेकिन फिर भी तुम जा रहे हो, तुम जा रहे हो, तुम हर हाल में जाओगे, तुमने जाने का फैसला कर लिया है। अब तुम किसलिए जा रहे हो?’ यह भयानक है, अलेयोशा। मैं ऐसे सवाल बर्दाश्त नहीं कर सकता। कौन मुझसे ऐसे सवाल पूछने की हिम्मत करता है?”
“भाई,” अलेयोशा ने बीच में कहा। उसका दिल भय से बैठ गया, लेकिन फिर भी वह
ऐसा लग रहा था कि वह इवान को समझाने की कोशिश कर रहा था, "मेरे आने से पहले वह तुम्हें स्मरद्याकोव की मौत के बारे में कैसे बता सकता था, जबकि इसके बारे में किसी को पता ही नहीं था और किसी को पता चलने का समय ही नहीं था?"
“उसने मुझे बताया,” इवान ने दृढ़ता से कहा, संदेह स्वीकार करने से इनकार करते हुए। “यह सब उसने ही कहा था।”
अगर आप उस बात पर आते हैं, तो उन्होंने इस बारे में बात की थी। उन्होंने कहा, 'अगर आप सद्गुण में विश्वास करते, तो सब ठीक होता। चाहे वे आप पर विश्वास न करें, आप सिद्धांतों के लिए जा रहे हैं। लेकिन आप फ्योदोर पावलोविच जैसे छोटे सूअर हैं, और आपको सद्गुण से क्या लेना-देना? अगर आपका बलिदान किसी के काम का नहीं है, तो आप दखल क्यों देना चाहते हैं? क्योंकि आप खुद नहीं जानते कि आप क्यों जा रहे हैं! काश आप खुद जान पाते कि आप क्यों जा रहे हैं! और क्या आपने अपना मन बना लिया है? आपने अपना मन नहीं बनाया है। आप पूरी रात सोचते रहेंगे कि जाएं या न जाएं। लेकिन आप जाएंगे; आप जानते हैं कि आप जाएंगे। आप जानते हैं कि आप जो भी फैसला करें, वह फैसला आपके हाथ में नहीं है। आप जाएंगे क्योंकि आप न जाने की हिम्मत नहीं कर सकते। आप हिम्मत क्यों नहीं कर सकते? इसका अनुमान आपको खुद लगाना होगा। यह आपके लिए एक पहेली है!' वह उठे और चले गए। आप आए और वह चले गए। उन्होंने मुझे कायर कहा, अलेयोशा! इसका मूलमंत्र है कि मैं कायर हूँ। ‘ऐसे चीलों का धरती से ऊपर उड़ना ठीक नहीं।’ यह बात उसने जोड़ी थी—उसने! और स्मरद्याकोव ने भी यही कहा। उसे मार डालना चाहिए!

कात्या मुझसे नफरत करती है। मैंने यह पिछले एक महीने से देखा है। यहाँ तक कि लीज़ भी मुझसे नफरत करने लगेगी! 'तुम प्रशंसा पाने के लिए जा रहे हो।' यह सरासर झूठ है! और तुम भी मुझसे नफरत करते हो, अलेयोशा। अब मैं तुमसे फिर नफरत करने जा रहा हूँ! और मैं उस राक्षस से भी नफरत करता हूँ! मैं उस राक्षस से नफरत करता हूँ! मैं उस राक्षस को बचाना नहीं चाहता। उसे साइबेरिया में सड़ने दो! उसने भजन गाना शुरू कर दिया है! ओह, कल मैं जाऊँगा, उनके सामने खड़ा होऊंगा, और उनके मुँह पर थूकूँगा!
वह उन्माद में उछल पड़ा, तौलिया फेंक दिया और इधर-उधर टहलने लगा।
फिर से कमरे में नीचे। अलेयोशा को याद आया कि उसने अभी क्या कहा था। "ऐसा लगता है जैसे मैं जागते हुए सो रहा हूँ... मैं चलता हूँ, बोलता हूँ, देखता हूँ, लेकिन मैं सो रहा हूँ।" अब भी ठीक ऐसा ही लग रहा था। अलेयोशा उसे छोड़कर नहीं गया। उसके मन में डॉक्टर को बुलाने का ख्याल आया, लेकिन वह अपने भाई को अकेला छोड़ने से डर रहा था: कोई नहीं था जिसके पास वह उसे छोड़ सके। धीरे-धीरे इवान पूरी तरह बेहोश हो गया। वह लगातार बोलता रहा, लेकिन उसकी बातें समझ में नहीं आ रही थीं, और वह अपने शब्दों को मुश्किल से ही बोल पा रहा था। अचानक वह बुरी तरह लड़खड़ा गया; लेकिन अलेयोशा समय पर पहुँच गया और उसे सहारा दिया। इवान ने उसे अपने बिस्तर तक ले जाने दिया। अलेयोशा ने किसी तरह उसके कपड़े उतारे और उसे बिस्तर पर लिटा दिया। वह अगले दो घंटे तक उसकी देखभाल करता रहा। बीमार आदमी गहरी नींद में सो रहा था, बिना हिले-डुले, उसकी साँसें धीमी और नियमित थीं। अलेयोशा ने एक तकिया लिया और बिना कपड़े उतारे सोफे पर लेट गया।
जब वह सो गया तो उसने मित्या और इवान के लिए प्रार्थना की। उसे समझ आने लगा।
इवान की बीमारी। "एक अभिमानी दृढ़ संकल्प की पीड़ा। एक दृढ़ अंतरात्मा!" ईश्वर, जिस पर उसका अविश्वास था, और उसका सत्य उसके हृदय पर हावी हो रहा था, जो अब भी समर्पण करने से इनकार कर रहा था। "हाँ," तकिए पर लेटे हुए अलेयोशा के मन में यह विचार आया, "हाँ, अगर स्मेरद्याकोव मर गया, तो कोई भी इवान के साक्ष्य पर विश्वास नहीं करेगा; लेकिन वह जाकर उसे देगा।" अलेयोशा ने धीरे से मुस्कुराया। "ईश्वर की जीत होगी!" उसने सोचा। "वह या तो सत्य के प्रकाश में उठ खड़ा होगा, या... वह घृणा में नष्ट हो जाएगा, अपने आप से और उन सभी से बदला लेगा जिन्होंने उस उद्देश्य की सेवा की जिसमें वह विश्वास नहीं करता," अलेयोशा ने कड़वाहट से कहा, और उसने फिर से इवान के लिए प्रार्थना की।

पुस्तक 12

न्यायिक त्रुटि

अध्याय 1

वह घातक दिन

मैंने जिन घटनाओं का वर्णन किया है, उनके अगले दिन सुबह दस बजे हमारे जिला न्यायालय में दिमित्री करामाज़ोव का मुकदमा शुरू हुआ।
मैं इस बात पर जोर देना चाहता हूं कि मैं खुद को इतना बड़ा नहीं मानता।
मुकदमे में जो कुछ भी हुआ, उसका पूरा विवरण, या घटनाओं के वास्तविक क्रम में भी, बताने में मैं सक्षम नहीं हूँ। मेरा मानना है कि हर बात का विस्तार से वर्णन करने पर एक पूरी किताब भर जाएगी, चाहे वह कितनी भी बड़ी क्यों न हो। इसलिए मुझे उम्मीद है कि जो बातें मुझे सबसे ज़्यादा प्रभावित करती हैं, उन्हीं तक सीमित रहने के लिए मेरी आलोचना नहीं की जाएगी। हो सकता है मैंने कम महत्वपूर्ण बातों को ज़्यादा अहमियत दी हो और सबसे ज़रूरी और अहम विवरणों को छोड़ दिया हो। लेकिन मुझे लगता है कि इसके लिए माफ़ी माँगना उचित नहीं होगा। मैं अपनी पूरी कोशिश करूँगा और पाठक स्वयं देखेंगे कि मैंने अपनी तरफ से हर संभव प्रयास किया है।
और, सबसे पहले, अदालत में प्रवेश करने से पहले, मैं यह उल्लेख करूंगा कि
उस दिन मुझे सबसे ज़्यादा आश्चर्य हुआ। दरअसल, जैसा कि बाद में पता चला, हर कोई इससे आश्चर्यचकित था। हम सभी जानते थे कि इस मामले ने लोगों में काफी दिलचस्पी जगाई थी, हर कोई मुकदमे की शुरुआत के लिए बेसब्री से इंतज़ार कर रहा था, और पिछले दो महीनों से स्थानीय समाज में यह चर्चा, अटकलों, आश्चर्य और अटकलों का विषय बना हुआ था। हम सभी यह भी जानते थे कि यह मामला पूरे रूस में फैल चुका था, लेकिन फिर भी हमने कल्पना नहीं की थी कि इसने न केवल हमारे बीच, बल्कि पूरे रूस में, हर किसी में इतनी तीव्र, इतनी उत्सुकता पैदा कर दी होगी। यह बात उस दिन मुकदमे के दौरान स्पष्ट हो गई।
आगंतुक न केवल हमारे प्रांत के प्रमुख शहर से आए थे, बल्कि
कई अन्य रूसी शहरों के साथ-साथ मॉस्को और पीटर्सबर्ग से भी लोग आए थे। उनमें वकील, महिलाएं और यहां तक कि कई प्रतिष्ठित व्यक्ति भी शामिल थे। प्रवेश के सभी टिकट तुरंत बिक गए थे। तीनों न्यायाधीशों की मेज के पीछे सबसे प्रतिष्ठित और महत्वपूर्ण पुरुष दर्शकों के लिए एक विशेष स्थान आरक्षित किया गया था; वहां आरामकुर्सियों की एक कतार लगाई गई थी - एक असाधारण बात, जिसकी अनुमति पहले कभी नहीं दी गई थी। दर्शकों का एक बड़ा हिस्सा - लगभग आधा - महिलाएं थीं। विभिन्न क्षेत्रों से इतने अधिक वकील आए थे कि उन्हें बैठाने की जगह का पता नहीं चल पा रहा था, क्योंकि हर टिकट बहुत पहले ही उत्सुकता से मांग में लगकर वितरित कर दिया गया था। मैंने कमरे के अंत में, मंच के पीछे, एक विशेष विभाजन देखा जिसे जल्दबाजी में लगाया गया था, जिसके पीछे इन सभी वकीलों को प्रवेश दिया गया था, और वे खुद को भाग्यशाली समझ रहे थे कि उन्हें वहां खड़े होने की जगह मिल गई, क्योंकि जगह बचाने के लिए सभी कुर्सियां हटा दी गई थीं, और विभाजन के पीछे की भीड़ पूरी सुनवाई के दौरान कंधे से कंधा मिलाकर खड़ी रही।
कुछ महिलाओं ने, विशेषकर दूर से आने वाली महिलाओं ने,
वे सभी दीर्घा में बेहद सजे-धजे कपड़ों में उपस्थित थीं, लेकिन अधिकांश महिलाएं अपने पहनावे को लेकर बेपरवाह थीं। उनके चेहरों पर उन्मादी, तीव्र, लगभग अस्वस्थ जिज्ञासा झलक रही थी। एक विचित्र तथ्य—जो बाद में कई अवलोकनों से सिद्ध हुआ—यह था कि लगभग सभी महिलाएं, या कम से कम उनमें से अधिकांश, मित्या के पक्ष में थीं और उसके बरी होने के पक्षधर थीं। इसका मुख्य कारण शायद महिलाओं के दिलों को जीतने वाले मित्या के रूप में उसकी प्रतिष्ठा थी। यह ज्ञात था कि इस मामले में दो महिला प्रतिद्वंद्वी पेश होने वाली थीं। उनमें से एक—कैटरीना इवानोव्ना—सबकी दिलचस्पी का केंद्र थी। उसके बारे में तरह-तरह की असाधारण कहानियां सुनाई जाती थीं, मित्या के अपराध के बावजूद उसके प्रति उसके प्रेम के

आश्चर्यजनक किस्से। उसके स्वाभिमान और "कुलीन संबंधों" पर विशेष रूप से जोर दिया जाता था (उसने शहर में शायद ही किसी से मुलाकात की हो)। लोगों का कहना था कि वह सरकार से साइबेरिया में अपराधी के साथ जाने और खानों में कहीं उससे शादी करने की अनुमति के लिए याचिका दायर करने का इरादा रखती थी। दरबार में ग्रुशेंका के आने का बेसब्री से इंतज़ार किया जा रहा था। जनता उत्सुकता से दो प्रतिद्वंद्वियों - अभिमानी कुलीन लड़की और "हेताइरा" - के मिलन का इंतज़ार कर रही थी। लेकिन जिले की महिलाओं के लिए ग्रुशेंका, कटेरीना इवानोव्ना से कहीं ज़्यादा जानी-पहचानी शख्सियत थी। वे पहले ही "उस औरत को देख चुकी थीं जिसने फ्योदोर पावलोविच और उसके अभागे बेटे को बर्बाद कर दिया था," और लगभग सभी, बिना किसी अपवाद के, इस बात पर हैरान थीं कि बाप-बेटा "इतनी साधारण, साधारण रूसी लड़की, जो सुंदर भी नहीं थी," से इतना प्यार कैसे कर सकते थे।
संक्षेप में, बहुत सारी बातें हुईं। मुझे पक्का पता है कि वहाँ बहुत कुछ हुआ था।
हमारे कस्बे में मित्या के कारण कई गंभीर पारिवारिक झगड़े हुए। कई महिलाओं ने इस भयावह मामले पर मतभेदों के कारण अपने पतियों से जमकर झगड़ा किया, और यह स्वाभाविक ही था कि इन महिलाओं के पति, कैदी के प्रति सहानुभूति रखने के बजाय, उसके प्रति घोर पूर्वाग्रह के साथ अदालत में आए। वास्तव में, यह लगभग निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि दर्शकों में मौजूद पुरुष, महिलाओं की तुलना में, कैदी के प्रति पक्षपाती थे। कई लोगों के चेहरे गंभीर, गुस्से से भरे और प्रतिशोधी थे। मित्या ने वास्तव में कस्बे में अपने प्रवास के दौरान कई लोगों को नाराज कर दिया था। कुछ आगंतुक, बेशक, बहुत खुश थे और मित्या के भाग्य के बारे में व्यक्तिगत रूप से बिल्कुल भी चिंतित नहीं थे। लेकिन सभी मुकदमे में रुचि रखते थे, और अधिकांश पुरुष निश्चित रूप से अपराधी को दोषी ठहराए जाने की उम्मीद कर रहे थे, शायद वकीलों को छोड़कर, जो मामले के नैतिक पहलू की तुलना में कानूनी पहलू में अधिक रुचि रखते थे।
उस विख्यात वकील की उपस्थिति से सभी लोग उत्साहित थे।
फेत्युकोविच। उनकी प्रतिभा सर्वविदित थी, और यह पहली बार नहीं था जब उन्होंने प्रांतों में कुख्यात आपराधिक मामलों में पैरवी की थी। और अगर वे ऐसे मामलों में पैरवी करते थे, तो वे पूरे रूस में चर्चित और लंबे समय तक याद रखे जाते थे। हमारे अभियोजक और न्यायालय के अध्यक्ष के बारे में भी कई किस्से प्रचलित थे। कहा जाता था कि इप्पोलिट किरिलोविच फेत्युकोविच से मिलकर कांप रहे थे, और वे सेंट पीटर्सबर्ग में अपने करियर की शुरुआत से ही एक-दूसरे के दुश्मन थे। हालांकि हमारे संवेदनशील अभियोजक, जो हमेशा मानते थे कि सेंट पीटर्सबर्ग में किसी ने उनके साथ अन्याय किया है क्योंकि उनकी प्रतिभा को ठीक से सराहा नहीं गया, करामाज़ोव मामले को लेकर बेहद उत्साहित थे, और यहां तक कि इसके माध्यम से अपनी गिरती किस्मत को फिर से संवारने का सपना भी देख रहे थे, लेकिन फेत्युकोविच ही उनकी एकमात्र चिंता थे। लेकिन ये अफवाहें पूरी तरह सच नहीं थीं। हमारे अभियोजक उन लोगों में से नहीं थे जो खतरे का सामना करने पर हिम्मत हार जाते हैं। इसके विपरीत, खतरा बढ़ने के साथ उनका आत्मविश्वास और भी बढ़ जाता था। यह ध्यान देने योग्य है कि हमारे अभियोजक आम तौर पर बहुत जल्दबाज़ और आसानी से प्रभावित होने वाले व्यक्ति थे। वह किसी भी मामले में अपना पूरा मन-जान लगा देते थे और इस तरह काम करते थे मानो उनका सारा भाग्य और सारी दौलत उसी के नतीजे पर टिकी हो। कानूनी जगत में इस बात पर उनका खूब मज़ाक उड़ाया जाता था, क्योंकि इसी विशेषता के कारण हमारे अभियोक्ता ने अपनी साधारण स्थिति के बावजूद उम्मीद से कहीं अधिक प्रसिद्धि हासिल कर ली थी। लोग विशेष रूप से मनोविज्ञान के प्रति उनके जुनून पर हंसते थे। मेरी राय में, वे गलत थे, और मेरा मानना है कि हमारे अभियोक्ता आम धारणा से कहीं अधिक गहरे व्यक्तित्व के धनी थे। लेकिन अपने नाज़ुक स्वास्थ्य के कारण वे अपने करियर की शुरुआत में अपनी छाप नहीं छोड़ पाए और बाद में भी इसकी भरपाई नहीं कर सके।
हमारे न्यायालय के अध्यक्ष के बारे में मैं केवल इतना ही कह सकता हूँ कि वे एक मानवीय व्यक्ति थे।
वे एक सुसंस्कृत व्यक्ति थे, जिन्हें अपने काम का व्यावहारिक ज्ञान और प्रगतिशील विचार थे। वे महत्वाकांक्षी तो थे, लेकिन अपने भावी करियर को लेकर ज्यादा चिंतित नहीं थे। उनके जीवन का मुख्य उद्देश्य उन्नत विचारों वाला व्यक्ति बनना था। वे संपर्कों और संपत्ति के धनी भी थे। जैसा कि हमें बाद में पता चला, करामाज़ोव मामले के बारे में उनकी भावनाएँ काफी प्रबल थीं, लेकिन सामाजिक दृष्टिकोण से, न कि व्यक्तिगत दृष्टिकोण से। वे इसे एक सामाजिक घटना के रूप में, इसके वर्गीकरण और हमारी सामाजिक परिस्थितियों के उत्पाद के रूप में, राष्ट्रीय चरित्र के विशिष्ट उदाहरण के रूप में, इत्यादि में रुचि रखते थे। इस

मामले के व्यक्तिगत पहलू, इसके दुखद महत्व और इसमें शामिल व्यक्तियों, जिनमें कैदी भी शामिल था, के प्रति उनका रवैया उदासीन और अमूर्त था, जो शायद उचित ही था।
जजों के फैसले सुनाने से बहुत पहले ही अदालत खचाखच भरी हुई थी।
उनकी उपस्थिति। हमारा न्यायालय शहर का सबसे उत्तम हॉल है—विशाल, ऊँचा और ध्वनि के लिए उपयुक्त। न्यायाधीशों के दाहिनी ओर, जो एक ऊँचे चबूतरे पर थे, जूरी के लिए एक मेज और कुर्सियों की दो पंक्तियाँ तैयार की गई थीं। बाईं ओर कैदी और बचाव पक्ष के वकील के लिए जगह थी। न्यायालय के मध्य में, न्यायाधीशों के पास, "भौतिक साक्ष्यों" वाली एक मेज थी। उस पर फ्योदोर पावलोविच का खून से सना हुआ सफेद रेशमी ड्रेसिंग गाउन; वह घातक पीतल का मूसल जिससे कथित हत्या की गई थी; मित्या की कमीज, जिसकी एक आस्तीन खून से सनी थी; उसका कोट, जिसकी जेब में रुमाल रखा था, उस पर जगह-जगह खून के धब्बे थे; रुमाल, जो खून से सना हुआ था और अब पूरी तरह पीला पड़ गया था; वह पिस्तौल जिसे मित्या ने पेरहोटिन में आत्महत्या के इरादे से लोड किया था, और जिसे ट्रिफॉन बोरिसोविच ने चुपके से मोक्रो में उससे छीन लिया था; ग्रुशेंका के लिए तैयार किए गए तीन हज़ार रूबल वाला लिफाफा, उसे बांधने वाला पतला गुलाबी रिबन और कई अन्य वस्तुएं जो मुझे याद नहीं हैं। हॉल के भीतरी हिस्से में, कुछ दूरी पर, जनता के लिए सीटें थीं। लेकिन रेलिंग के सामने उन गवाहों के लिए कुछ कुर्सियाँ रखी गई थीं जो अपना बयान देने के बाद अदालत में ही रह गए थे।
दस बजे तीनों न्यायाधीश पहुंचे—अध्यक्ष, एक मानद न्यायाधीश
एक शांति न्यायाधीश और एक अन्य व्यक्ति उपस्थित थे। अभियोजक तुरंत बाद दाखिल हुए। अध्यक्ष पचास वर्ष के कद-काठी के, मोटे और गठीले शरीर वाले व्यक्ति थे, जिनका चेहरा बदहजमी से ग्रस्त था, बाल काले थे जो भूरे पड़ रहे थे और छोटे कटे हुए थे, और उन्होंने एक लाल रिबन बांध रखा था, किस श्रेणी का, यह मुझे याद नहीं है। अभियोजक मुझे और अन्य लोगों को भी विशेष रूप से पीला, लगभग हरा सा लग रहा था। उनका चेहरा अचानक पतला हो गया था, शायद एक ही रात में, क्योंकि मैंने उन्हें दो दिन पहले तक बिल्कुल सामान्य देखा था। अध्यक्ष ने अदालत से यह पूछकर शुरुआत की कि क्या सभी जूरी सदस्य उपस्थित हैं। लेकिन मुझे लगता है कि मैं इस तरह आगे नहीं बढ़ सकता, आंशिक रूप से इसलिए क्योंकि कुछ चीजें मैंने नहीं कीं।
सुनो, कुछ बातें मैंने अनसुनी कर दीं, और कुछ मैं भूल गया, लेकिन सबसे ज़्यादा इसलिए क्योंकि, जैसा कि मैंने पहले कहा है, मेरे पास सचमुच हर कही और की गई बात का ज़िक्र करने के लिए समय या जगह नहीं है। मुझे बस इतना पता है कि दोनों पक्षों ने जूरी के ज़्यादातर सदस्यों पर आपत्ति नहीं जताई। मुझे बारह जूरी सदस्य याद हैं—चार कस्बे के छोटे अधिकारी थे, दो व्यापारी थे, और छह कस्बे के किसान और कारीगर थे। मुझे याद है, मुक़दमे से बहुत पहले, लगातार कुछ हैरानी भरे सवाल पूछे जाते थे, खासकर महिलाओं द्वारा: “क्या इतने नाज़ुक, जटिल और मनोवैज्ञानिक मामले को छोटे अधिकारियों और यहाँ तक कि किसानों के फ़ैसले के लिए सौंपा जा सकता है?” और “ऐसे मामले में एक अधिकारी, और उससे भी ज़्यादा एक किसान, क्या समझ सकता है?” जूरी के चारों अधिकारी असल में मामूली और निचले दर्जे के लोग थे। एक को छोड़कर, जो काफ़ी छोटा था, बाकी सभी बूढ़े हो चुके थे, समाज में कम जाने-माने थे, दयनीय तनख्वाह पर गुज़ारा करते थे, और शायद उनकी बूढ़ी, बेढंगी पत्नियाँ और बच्चों की भीड़ थी, शायद उनके पास जूते-मोज़े भी नहीं थे। वे अपना खाली समय ज़्यादा से ज़्यादा ताश खेलने में बिताते थे और ज़ाहिर है, उन्होंने कभी कोई किताब नहीं पढ़ी थी। दोनों व्यापारी देखने में भले ही सभ्य लग रहे थे, लेकिन अजीब तरह से चुप और गंभीर थे। उनमें से एक की दाढ़ी छोटी थी और उसने यूरोपीय शैली के कपड़े पहने थे; दूसरे की छोटी, भूरी दाढ़ी थी और उसने गले में एक लाल रिबन पहना था जिस पर किसी तरह का पदक लगा था। कारीगरों और किसानों की तो बात ही छोड़िए। स्कोटोप्रिगोन्येव्स्क के कारीगर लगभग किसान ही हैं और खेती भी करते हैं। उनमें से दो ने भी यूरोपीय पोशाक पहनी थी और शायद इसी वजह से वे बाकी लोगों की तुलना में ज़्यादा गंदे और कम आकर्षक लग रहे थे। इसलिए, जैसा कि मैंने उन्हें देखते ही सोचा, कोई भी यह सोच सकता है, "ऐसे लोग भला ऐसी स्थिति में क्या कर सकते हैं?" फिर भी उनके चेहरे एक अजीब तरह से प्रभावशाली, लगभग डरावना सा प्रभाव छोड़ रहे थे; वे सख्त और गुस्से में थे।
अंततः राष्ट्रपति ने फ्योदोर पावलोविच की हत्या का मामला खोल दिया।

करामाज़ोव। मुझे ठीक से याद नहीं कि उन्होंने उसका वर्णन कैसे किया था। दरबारी को कैदी को लाने का आदेश दिया गया, और मित्या प्रकट हुआ। दरबार में सन्नाटा छा गया। मक्खी की आवाज़ भी सुनाई दे सकती थी। मुझे नहीं पता कि दूसरों का क्या हाल था, लेकिन मित्या ने मुझ पर बहुत ही अप्रिय प्रभाव डाला। वह एकदम नए फ्रॉक-कोट में एक अजीब से दिखावटी व्यक्ति लग रहा था। बाद में मुझे पता चला कि उसने इसे खास तौर पर इस अवसर के लिए मॉस्को में अपने ही दर्जी से बनवाया था, जिसने उसका नाप लिया था। उसने बेदाग काले चमड़े के दस्ताने और उत्तम लिनेन के वस्त्र पहने थे। वह एक गज लंबे कदमों से चलता हुआ आया, एकदम सीधा सामने देखता हुआ, और बड़े ही शांत भाव से अपनी जगह पर बैठ गया।
ठीक उसी समय बचाव पक्ष के वकील, प्रसिद्ध
फेत्युकोविच ने प्रवेश किया और दरबार में एक हल्की सी खामोशी छा गई। वह लंबा-चौड़ा, दुबला-पतला आदमी था, जिसकी टांगें लंबी और पतली थीं, उंगलियां बेहद लंबी, पतली और पीली थीं, चेहरा साफ मुंडा हुआ था, बाल करीने से कंघी किए हुए, छोटे और पतले थे, और होंठ पतले थे जो कभी-कभी व्यंग्य और मुस्कान के बीच की किसी आकृति में मुड़े हुए होते थे। वह लगभग चालीस वर्ष का लग रहा था। उसका चेहरा देखने में अच्छा लगता, अगर उसकी आँखें छोटी और भावहीन न होतीं, जो एक-दूसरे के बेहद करीब थीं, उनके बीच केवल पतली, लंबी नाक ही विभाजक थी। वास्तव में, उसके चेहरे में कुछ हद तक पक्षी जैसी झलक थी। उसने शाम की पोशाक और सफेद टाई पहनी हुई थी।
मुझे राष्ट्रपति द्वारा मित्या से पूछे गए पहले प्रश्न याद हैं, उनके नाम के बारे में, उनके
पुकारना, इत्यादि। मित्या ने तीखे स्वर में उत्तर दिया, और उसकी आवाज़ इतनी अप्रत्याशित रूप से तेज़ थी कि राष्ट्रपति चौंक गए और कैदी को आश्चर्य से देखने लगे। फिर कार्यवाही में भाग लेने वाले व्यक्तियों की सूची दी गई—अर्थात गवाहों और विशेषज्ञों की। यह एक लंबी सूची थी। चार गवाह उपस्थित नहीं थे—मियूसोव, जिन्होंने प्रारंभिक जाँच में साक्ष्य दिए थे, लेकिन अब पेरिस में थे; मैडम होहलाकोव और मैक्सिमोव, जो बीमारी के कारण अनुपस्थित थे; और स्मरद्याकोव, जिनकी अचानक मृत्यु हो गई थी, जिसके संबंध में पुलिस का एक आधिकारिक बयान प्रस्तुत किया गया था। स्मरद्याकोव की मृत्यु की खबर से अदालत में अचानक हलचल और कानाफूसी मच गई। बेशक, कई श्रोताओं ने अचानक आत्महत्या के बारे में नहीं सुना था। लोगों को सबसे ज़्यादा चौंकाने वाली बात मित्या का अचानक विस्फोट था। जैसे ही स्मरद्याकोव की मृत्यु का बयान दिया गया, वह अपनी जगह से ज़ोर से चिल्ला उठा:
“वह एक कुत्ता था और कुत्ते की तरह ही मरा!”
मुझे याद है कि कैसे उनके वकील उनके पास दौड़े और कैसे राष्ट्रपति
उन्होंने उसे संबोधित करते हुए धमकी दी कि यदि ऐसी अनियमितता दोहराई गई तो कठोर कार्रवाई की जाएगी। मित्या ने सिर हिलाया और धीमी आवाज़ में अपने वकील से कई बार अचानक कहा, बिना किसी खेद का भाव दिखाए:
“मैं दोबारा ऐसा नहीं करूँगा, बिलकुल नहीं। मुझसे गलती हो गई। मैं दोबारा ऐसा नहीं करूँगा।” और ज़ाहिर है, इस छोटी सी घटना से जूरी या अन्य लोगों के सामने उनकी छवि बिल्कुल भी अच्छी नहीं बनी।
सार्वजनिक रूप से। उनका चरित्र प्रदर्शित हुआ, और वह अपने आप में ही सब कुछ बयां कर रहा था। इसी घटना के प्रभाव में प्रारंभिक बयान पढ़ा गया। यह संक्षिप्त था, लेकिन संदर्भपूर्ण था। इसमें केवल उनकी गिरफ्तारी के मुख्य कारण, उन पर मुकदमा क्यों चलाया जाना चाहिए, इत्यादि का उल्लेख था। फिर भी इसने मुझ पर गहरा प्रभाव डाला। क्लर्क ने इसे ज़ोर से और स्पष्ट रूप से पढ़ा। पूरी त्रासदी अचानक हमारे सामने खुल गई, केंद्रित होकर, स्पष्ट रूप से, एक घातक और निर्मम प्रकाश में। मुझे याद है कि इसे पढ़े जाने के तुरंत बाद, राष्ट्रपति ने मित्या से एक ऊँची और प्रभावशाली आवाज़ में पूछा:
"कैदी, क्या तुम अपना अपराध स्वीकार करते हो?"
मित्या अचानक अपनी सीट से उठ खड़ा हुआ।
“मैं शराब पीने और अय्याशी करने का दोषी हूँ,” उसने फिर से चिल्लाते हुए कहा।
चौंका देने वाली, लगभग उन्मादी आवाज़ में, "आलस्य और व्यभिचार की ओर। मैं हमेशा के लिए एक ईमानदार आदमी बनना चाहता था, ठीक उसी क्षण जब भाग्य ने मुझे गिरा दिया। लेकिन मैं उस बूढ़े आदमी, मेरे दुश्मन और मेरे पिता की मौत का दोषी नहीं हूँ। नहीं, नहीं, मैं उसे लूटने का दोषी नहीं हूँ! मैं हो ही नहीं सकता। दिमित्री करामाज़ोव बदमाश है, लेकिन चोर नहीं।"

वह फिर से बैठ गया, उसका पूरा शरीर स्पष्ट रूप से कांप रहा था। राष्ट्रपति फिर से संक्षेप में, लेकिन प्रभावशाली ढंग से, उन्होंने उसे केवल पूछे गए प्रश्नों का उत्तर देने और अनावश्यक उद्गारों में न उलझने की चेतावनी दी। फिर उन्होंने कार्यवाही शुरू करने का आदेश दिया। सभी गवाहों को शपथ दिलाने के लिए लाया गया। फिर मैंने उन सभी को एक साथ देखा। हालांकि, कैदी के भाइयों को शपथ लिए बिना गवाही देने की अनुमति दी गई। पुजारी और अध्यक्ष के आग्रह के बाद, गवाहों को ले जाया गया और उन्हें यथासंभव एक-दूसरे से दूर बैठाया गया। फिर उन्हें एक-एक करके बुलाया जाने लगा।

अध्याय दो

खतरनाक गवाह

मुझे नहीं पता कि बचाव पक्ष और अभियोजन पक्ष के गवाहों को अध्यक्ष द्वारा समूहों में अलग किया गया था या नहीं, और क्या उन्हें किसी निश्चित क्रम में बुलाया जाना तय था। लेकिन इसमें कोई संदेह नहीं कि ऐसा ही हुआ होगा। मुझे केवल इतना पता है कि अभियोजन पक्ष के गवाहों को पहले बुलाया गया था। मैं दोहराता हूँ कि मेरा इरादा सभी प्रश्नों का चरण-दर-चरण वर्णन करने का नहीं है। इसके अलावा, मेरा विवरण कुछ हद तक अनावश्यक होगा, क्योंकि अभियोजन पक्ष और बचाव पक्ष के भाषणों में साक्ष्यों की पूरी श्रृंखला को एक साथ प्रस्तुत किया गया और उसे सशक्त और महत्वपूर्ण रूप से उजागर किया गया, और मैंने उन दो उल्लेखनीय भाषणों के कुछ अंश पूर्ण रूप से लिख लिए हैं, और उचित समय पर उनका उल्लेख करूँगा, साथ ही एक असाधारण और बिल्कुल अप्रत्याशित घटना का भी, जो अंतिम भाषणों से पहले घटी थी, और जिसने निस्संदेह मुकदमे के भयावह और घातक परिणाम को प्रभावित किया।

मैं केवल इतना ही कहना चाहूंगा कि मुकदमे की शुरुआत से ही एक विचित्र बात सामने आई।

इस मामले की एक खास विशेषता स्पष्ट थी और सभी ने इसे देखा, यानी बचाव पक्ष के तर्कों की तुलना में अभियोजन पक्ष की अत्यधिक मज़बूती। हर किसी ने पहले ही पल से यह महसूस कर लिया था कि तथ्य एक ही बिंदु के इर्द-गिर्द केंद्रित होने लगे हैं, और पूरा भयानक और खूनी अपराध धीरे-धीरे सामने आ रहा है। शायद हर किसी को शुरू से ही यह लग रहा था कि मामला विवाद से परे है, इसमें कोई संदेह नहीं है, इस पर कोई बहस नहीं हो सकती, बचाव पक्ष की दलीलें केवल औपचारिकता थीं, और कैदी दोषी था, स्पष्ट रूप से और निश्चित रूप से दोषी। मुझे लगता है कि वे महिलाएं भी, जो इस दिलचस्प कैदी की रिहाई के लिए इतनी बेसब्री से इंतजार कर रही थीं, उसी समय, बिना किसी अपवाद के, उसके अपराध के प्रति आश्वस्त थीं। इतना ही नहीं, मेरा मानना है कि अगर उसका अपराध इतनी दृढ़ता से साबित न हुआ होता तो वे बहुत निराश होतीं, क्योंकि इससे अपराधी की रिहाई के अंतिम दृश्य का प्रभाव कम हो जाता। हैरानी की बात है कि सभी महिलाएं अंतिम क्षण तक इस बात पर दृढ़ थीं कि उसे रिहा कर दिया जाएगा। “वह दोषी है, लेकिन मानवता के आधार पर, नए विचारों और प्रचलित भावनाओं के अनुसार उसे बरी कर दिया जाएगा,” इत्यादि। और यही कारण था कि वे इतनी बेसब्री से अदालत में जमा हो गए थे। लोग अभियोजक और प्रसिद्ध फ़ेत्युकोविच के बीच की बहस में अधिक रुचि रखते थे। सभी यह सोच रहे थे और खुद से पूछ रहे थे कि फ़ेत्युकोविच जैसा प्रतिभाशाली व्यक्ति भी इतने कठिन मामले को कैसे संभाल सकता है; और इसलिए वे एकाग्रचित्त होकर, कदम-दर-कदम, उसकी उपलब्धियों का अनुसरण कर रहे थे।

लेकिन फेत्युकोविच अंत तक, अपने जीवनकाल तक, सबके लिए एक रहस्य ही बने रहे।

भाषण। अनुभवी लोगों को संदेह था कि उसका कोई इरादा है, वह किसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए काम कर रहा है, लेकिन यह अनुमान लगाना लगभग असंभव था कि वह क्या था। हालाँकि, उसका आत्मविश्वास और आत्मनिर्भरता स्पष्ट थी। इसके अलावा, सभी ने इस बात पर खुशी जताई कि हमारे बीच केवल तीन दिनों के थोड़े से प्रवास के बाद ही उसने मामले को इतनी कुशलता से सुलझा लिया था और उसका गहन अध्ययन कर लिया था। बाद में लोगों ने बड़े चाव से बताया कि कैसे उसने अभियोजन पक्ष के सभी गवाहों को चतुराई से घेर लिया था, उन्हें यथासंभव उलझा दिया था और इतना ही नहीं, उनकी प्रतिष्ठा को धूमिल करके उनके साक्ष्यों का मूल्य कम कर दिया था। लेकिन ऐसा माना जाता था कि वह यह सब पेशेवर प्रसिद्धि पाने के लिए, एक तरह से मनोरंजन के तौर पर कर रहा था, ताकि यह दिखा सके कि उसने स्वीकृत तरीकों में कोई कसर नहीं छोड़ी है। सभी को यकीन था कि गवाहों की इस तरह बदनामी करके वह कोई वास्तविक लाभ नहीं पहुंचा सकता, और शायद वह इस बात से सबसे ज्यादा वाकिफ था, क्योंकि उसके मन में कोई निजी योजना थी, कोई छुपा हुआ बचाव का हथियार, जिसे वह समय आने पर अचानक प्रकट कर देगा। लेकिन इस बीच, अपनी ताकत से वाकिफ होकर, वह अपना मनोरंजन करता हुआ प्रतीत हो रहा था।
उदाहरण के लिए, जब ग्रिगोरी, फ्योदोर पावलोविच का पुराना नौकर, जो
खुले दरवाजे के बारे में सबसे निर्णायक सबूत देने वाले ग्रिगोरी से पूछताछ की गई, और जब बचाव पक्ष के वकील की बारी आई तो उन्होंने उससे तीखे सवाल पूछे। यह ध्यान देने योग्य है कि ग्रिगोरी एक शांत और लगभग राजसी अंदाज में हॉल में दाखिल हुए, अदालत की भव्यता या उन्हें सुनने वाले विशाल श्रोताओं से जरा भी विचलित नहीं हुए। उन्होंने उतने ही आत्मविश्वास से गवाही दी मानो वे अपने मार्फा से बात कर रहे हों, बल्कि शायद अधिक सम्मानपूर्वक। उन्हें अपने ही बयान का खंडन करवाना असंभव था। अभियोजक ने उनसे सबसे पहले करामाज़ोव परिवार के जीवन के बारे में विस्तार से पूछताछ की। परिवार की तस्वीर भयावह रंगों में उभर कर सामने आई। यह स्पष्ट था कि गवाह निष्कपट और निष्पक्ष था। अपने दिवंगत स्वामी की स्मृति के प्रति गहरी श्रद्धा के बावजूद, उन्होंने गवाही दी कि उन्होंने मित्या के साथ अन्याय किया था और "उसके बच्चों का पालन-पोषण ठीक से नहीं किया था। अगर मैं न होता तो बचपन में ही उसके शरीर में जूँ लग जातीं," उन्होंने मित्या के बचपन का वर्णन करते हुए कहा। "पिता द्वारा अपनी मां की संपत्ति को लेकर अपने बेटे के साथ अन्याय करना न तो उचित था, क्योंकि वह संपत्ति कानूनी रूप से उसी की थी।"
अभियोजक के इस प्रश्न के उत्तर में कि उनके पास दावा करने के क्या आधार थे
जब ग्रिगोरी ने यह दावा किया कि फ्योदोर पावलोविच ने अपने बेटे के साथ पैसों के लेन-देन में अन्याय किया था, तो सभी को आश्चर्यचकित करते हुए उसके पास इसका कोई सबूत नहीं था। फिर भी वह इस बात पर अड़ा रहा कि बेटे के साथ किया गया समझौता "अन्यायपूर्ण" था और उसे "उसे कई हजार रूबल अधिक देने चाहिए थे।" वैसे, मुझे यह भी बताना चाहिए कि अभियोजक ने यह सवाल कि क्या फ्योदोर पावलोविच ने वास्तव में मित्या की विरासत का कुछ हिस्सा रोक रखा था, सभी गवाहों से बार-बार पूछा, जिनमें अलेयोशा और इवान भी शामिल थे, लेकिन उसे किसी से भी कोई सटीक जानकारी नहीं मिली; सभी ने यही आरोप लगाया, लेकिन कोई ठोस सबूत पेश नहीं कर सके। खाने की मेज पर हुई घटना का ग्रिगोरी का वर्णन, जब दिमित्री अचानक अंदर घुस आया और अपने पिता को पीटते हुए जान से मारने की धमकी दी, अदालत पर गहरा प्रभाव डाला, खासकर इसलिए कि बूढ़े नौकर का शांत स्वभाव, कम शब्दों का प्रयोग और विशिष्ट मुहावरेदार भाषा, वाक्पटुता के समान ही प्रभावशाली थे। उन्होंने कहा कि मित्या द्वारा उन्हें गिराने और चेहरे पर घूंसे मारने पर भी वे उससे नाराज़ नहीं थे; उन्होंने कहा कि उन्होंने उसे बहुत पहले ही माफ़ कर दिया था। मृतक स्मर्ड्याकोव के बारे में उन्होंने स्वयं को क्रॉस का निशान बनाते हुए कहा कि वह एक होनहार लड़का था, लेकिन मूर्ख और व्यथित था, और इससे भी बुरा, एक नास्तिक था, और यह फ्योदोर पावलोविच और उनके बड़े बेटे ने ही उसे ऐसा बनना सिखाया था। लेकिन उन्होंने स्मर्ड्याकोव की ईमानदारी का लगभग गर्मजोशी से बचाव किया, और बताया कि कैसे स्मर्ड्याकोव को एक बार आंगन में मालिक का पैसा मिला था, और उसे छिपाने के बजाय, उसने उसे अपने मालिक के पास ले गया था, जिसने उसे इसके लिए एक "सोने का सिक्का" इनाम में दिया था, और उस समय से उस पर पूरी तरह भरोसा किया था। उन्होंने ज़िद से कहा कि बगीचे का दरवाज़ा खुला था। लेकिन उनसे इतने सारे सवाल पूछे गए कि मुझे वे सभी याद नहीं हैं।
अंततः बचाव पक्ष के वकील ने उनसे जिरह करना शुरू किया, और

उन्होंने सबसे पहला सवाल उस लिफाफे के बारे में पूछा जिसमें फ्योदोर पावलोविच ने "किसी खास व्यक्ति" के लिए तीन हजार रूबल रखे थे।
“क्या तुमने इसे कभी देखा है, तुम जो इतने वर्षों तक अपने स्वामी की सेवा में तत्पर रहे?” ग्रिगोरी ने उत्तर दिया कि उसने इसे नहीं देखा था और न ही उसने किसी से इस धन के बारे में सुना था, “जब तक कि हर कोई इसके बारे में बात करने लगा।” फेट्युकोविच ने लिफाफे के बारे में यह प्रश्न उन सभी से पूछा जिन्हें इसके बारे में जानकारी हो सकती थी, ठीक उसी दृढ़ता से जैसे अभियोजक ने दिमित्री की विरासत के बारे में अपना प्रश्न पूछा था, और सभी से एक ही उत्तर मिला कि किसी ने भी लिफाफा नहीं देखा था, हालांकि कई लोगों ने इसके बारे में सुना था। शुरू से ही सभी ने इस विषय पर फेट्युकोविच की दृढ़ता को देखा था।
“अब, आपकी अनुमति से मैं आपसे एक प्रश्न पूछूंगा,” फेत्युकोविच ने कहा।
अचानक और अप्रत्याशित रूप से। "वह कौन सा मरहम, या यों कहें कि कौन सा काढ़ा था, जिसे प्रारंभिक पूछताछ से हमें पता चला है कि आपने उस शाम अपने कमर दर्द को ठीक करने की उम्मीद में उस पर मला था?"
ग्रिगोरी ने प्रश्नकर्ता की ओर खाली निगाहों से देखा, और थोड़ी देर की चुप्पी के बाद
उसने बुदबुदाते हुए कहा, "उसमें केसर था।"
“सिर्फ केसर? क्या आपको कोई और सामग्री याद नहीं है?”
"उसमें मिलफॉइल भी था।"
"और शायद काली मिर्च भी?" फेट्युकोविच ने पूछा। "हाँ, काली मिर्च भी थी।"
इत्यादि। और सब कुछ वोदका में घुल गया?
“भावनात्मक रूप से।”
अदालत में हल्की हंसी की आवाज सुनाई दी। “देखो, भावना में। तुम्हारी पीठ सहलाने के बाद, मुझे लगता है, तुमने क्या पिया होगा?
क्या उस बोतल में एक विशेष धार्मिक प्रार्थना के साथ कुछ छोड़ा गया था, जो केवल आपकी पत्नी को ही पता थी?
“मैंने किया।”
“क्या आपने बहुत शराब पी थी? मोटे तौर पर, एक या दो गिलास वाइन?”
"शायद एक गिलास भर ही रहा होगा।"
“एक गिलास भर, शायद डेढ़ गिलास?” ग्रिगोरी ने कोई जवाब नहीं दिया। ऐसा लगा जैसे वह बात समझ गया हो। “डेढ़ गिलास शुद्ध शराब—बिल्कुल भी बुरी नहीं है, क्या आपको नहीं लगता?
हो सकता है कि उन्हें स्वर्ग के द्वार खुलते हुए दिखाई दें, न कि केवल बगीचे का द्वार?
ग्रिगोरी चुप रहा। दरबार में फिर हंसी की आवाज गूंजी।
राष्ट्रपति ने एक आंदोलन शुरू किया।
"क्या आपको पक्का पता है," फेट्युकोविच ने जोर देकर पूछा, "कि आप थे या नहीं।"
जब आपने खुला दरवाजा देखा तो आप जाग रहे थे या नहीं?
मैं अपने पैरों पर खड़ा था।
“इससे यह साबित नहीं होता कि तुम जाग रहे थे।” (फिर से हंसी गूंज उठी)
(अदालत।) "अगर उस समय आपसे कोई सवाल पूछा जाता—उदाहरण के लिए, यह कौन सा साल है—तो क्या आप उसका जवाब दे पाते?"
"मुझें नहीं पता।"
“और यह कौन सा वर्ष है, क्या आप जानते हैं?” ग्रिगोरी उलझन भरे चेहरे के साथ अपने उत्पीड़क की ओर सीधा देख रहा था।
हैरानी की बात यह है कि ऐसा प्रतीत हुआ कि उसे वास्तव में पता ही नहीं था कि कौन सा वर्ष चल रहा है।
लेकिन शायद आप मुझे बता सकते हैं कि आपकी उंगलियों की संख्या कितनी है?
हाथ?
“मैं एक सेवक हूँ,” ग्रिगरी ने अचानक ऊँची और स्पष्ट आवाज़ में कहा। “यदि मेरे वरिष्ठ मुझे बलि का बकरा बनाना चाहें, तो यह मेरा कर्तव्य है कि मैं इसे सहन करूँ।”

फेत्युकोविच थोड़ा अचंभित रह गए, और राष्ट्रपति ने हस्तक्षेप किया।
उन्हें याद दिलाते हुए कि उन्हें और अधिक प्रासंगिक प्रश्न पूछने चाहिए। फेत्युकोविच ने गरिमा के साथ सिर झुकाया और कहा कि उनके पास गवाह से पूछने के लिए और कोई प्रश्न नहीं हैं। जनता और जूरी के मन में, निश्चित रूप से, उस व्यक्ति के साक्ष्य को लेकर थोड़ा संदेह रह गया था, जिसने शायद किसी उपचार के दौरान "स्वर्ग के द्वार" देखे हों, और जिसे यह भी नहीं पता था कि वह किस वर्ष में जी रहा है। लेकिन ग्रिगरी के कटघरे से जाने से पहले एक और घटना घटी। अध्यक्ष ने कैदी की ओर मुड़कर उससे पूछा कि क्या वह पिछले गवाह के साक्ष्य पर कोई टिप्पणी करना चाहता है।
“दरवाजे वाली बात को छोड़कर, उसने जो कुछ भी कहा है, वह सब सच है,” मित्या ने जोर से चिल्लाते हुए कहा।
आवाज। “मेरे शरीर से जूँ निकालने के लिए मैं उनका धन्यवाद करता हूँ; मेरे घावों को भरने के लिए मैं उनका धन्यवाद करता हूँ। वह बूढ़ा व्यक्ति जीवन भर ईमानदार रहा है और मेरे पिता के प्रति सात सौ पूडल कुत्तों जितना वफादार रहा है।”
“कैदी, अपनी भाषा पर ध्यान दो,” राष्ट्रपति ने उसे चेतावनी दी। “मैं कोई पिल्ला नहीं हूँ,” ग्रिगोरी ने बुदबुदाते हुए कहा।
“ठीक है, मैं खुद एक पूडल हूँ,” मित्या चिल्लाया। “अगर यह अपमान है, तो मैं
मैं इसे अपने ऊपर लेता हूँ और उनसे क्षमा मांगता हूँ। मैं एक दरिंदा था और उनके प्रति क्रूर था। मैंने ईसप के प्रति भी क्रूरता दिखाई थी।
“कौन सा ईसप?” राष्ट्रपति ने फिर सख्ती से पूछा। “ओह, पियरोट... मेरे पिता, फ्योदोर पावलोविच।” राष्ट्रपति ने बार-बार प्रभावशाली ढंग से और बहुत ही कड़े शब्दों में मित्या को चेतावनी दी।
उन्हें सख्ती से अपनी भाषा में अधिक सावधानी बरतने के लिए कहा गया।
“आप अपने न्यायाधीशों की नज़र में खुद को नुकसान पहुंचा रहे हैं।” बचाव पक्ष के वकील ने भी इस मामले को चतुराई से संभाला।
राकितिन के साक्ष्य। मैं यह उल्लेख करना चाहूँगा कि राकितिन प्रमुख गवाहों में से एक थे और अभियोजक उन्हें बहुत महत्व देता था। ऐसा प्रतीत होता था कि उन्हें सब कुछ पता था; उनका ज्ञान अद्भुत था, वे हर जगह गए थे, सब कुछ देखा था, सबसे बात की थी, फ्योदोर पावलोविच और सभी करामाज़ोवों की जीवनी का हर विवरण जानते थे। यह सच है कि उन्होंने लिफाफे के बारे में केवल मित्या से ही सुना था। लेकिन उन्होंने "महानगर" में मित्या के कारनामों, उनके सभी आपत्तिजनक कार्यों और कथनों का विस्तृत वर्णन किया और कप्तान स्नेगिरिओव के "सूअर के रेशे" की कहानी भी सुनाई। लेकिन मित्या की विरासत के बारे में राकितिन भी कुछ सकारात्मक नहीं कह सके और उन्होंने केवल तिरस्कारपूर्ण सामान्यीकरण तक ही सीमित रहे। कौन बता सकता था कि उनमें से कौन दोषी था और कौन कर्जदार था
दूसरे, करामाज़ोव के उस अजीब तरीके से चीजों को उलझा देते थे जिससे किसी को कुछ समझ ही नहीं आता था? उन्होंने इस दुखद अपराध का कारण सदियों से चली आ रही दास प्रथा और रूस की दयनीय स्थिति से उपजी आदतों को बताया, जो उचित संस्थानों के अभाव के कारण पैदा हुई थीं। वास्तव में, उन्हें बोलने की कुछ छूट दी गई थी। यह पहला अवसर था जब राकितिन ने अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया और सबका ध्यान आकर्षित किया। अभियोजक जानता था कि गवाह इस मामले पर एक पत्रिका लेख तैयार कर रहा है, और बाद में अपने भाषण में, जैसा कि हम आगे देखेंगे, उसने लेख के कुछ विचारों को उद्धृत किया, जिससे पता चलता है कि उसने इसे पहले ही देख लिया था। गवाह द्वारा प्रस्तुत तस्वीर निराशाजनक और भयावह थी, और इसने अभियोजन पक्ष के मामले को बहुत मजबूत किया। कुल मिलाकर, राकितिन के भाषण ने अपनी स्वतंत्रता और विचारों की असाधारण महानता से जनता को मंत्रमुग्ध कर दिया। जब उन्होंने दास प्रथा और रूस की दयनीय स्थिति के बारे में बात की तो दो-तीन बार तालियाँ भी बजीं।
लेकिन राकितिन ने अपनी युवावस्था के जोश में एक छोटी सी गलती कर दी, जिसकी वजह से...
बचाव पक्ष के वकील ने तुरंत चतुराई से इसका फायदा उठाया। ग्रुशेंका के बारे में कुछ सवालों के जवाब देते हुए, अपने उच्च विचारों और अपनी सफलता (जिसके बारे में वे स्पष्ट रूप से जानते थे) से इतने प्रभावित होकर कि उन्होंने अग्रफेना अलेक्जेंड्रोवना को कुछ हद तक तिरस्कारपूर्ण ढंग से "सैमसोनोव की रखैल" कह दिया। बाद में वे अपने शब्दों को वापस लेने के लिए बहुत कुछ दे देते, क्योंकि फेत्युकोविच ने उन्हें तुरंत

पकड़ लिया। और यह सब इसलिए हुआ क्योंकि राकितिन ने यह अनुमान नहीं लगाया था कि वकील इतने कम समय में हर बात से इतनी अच्छी तरह वाकिफ हो जाएगा।
“मुझे पूछने की अनुमति दें,” बचाव पक्ष के वकील ने सबसे तीखे स्वर में अपनी बात शुरू की।
एक सौम्य और यहां तक कि सम्मानजनक मुस्कान के साथ, "आप निश्चित रूप से वही श्री राकितिन हैं जिनकी पुस्तिका, 'द लाइफ ऑफ द डिसीज्ड एल्डर, फादर ज़ोस्सिमा', जो धर्मप्रांतीय अधिकारियों द्वारा प्रकाशित की गई है, गहन और धार्मिक विचारों से परिपूर्ण है और बिशप को एक उत्कृष्ट और भक्तिपूर्ण समर्पण के साथ प्रस्तुत की गई है, जिसे मैंने अभी-अभी बड़े आनंद के साथ पढ़ा है?"
मैंने इसे प्रकाशन के लिए नहीं लिखा था... यह बाद में प्रकाशित हुआ।
रकितिन ने बुदबुदाते हुए कहा, किसी कारणवश वह भयभीत और लगभग शर्मिंदा था।
“वाह, यह तो बहुत बढ़िया है! आप जैसे विचारक ऐसा कर सकते हैं, और वास्तव में उन्हें करना भी चाहिए।” हर सामाजिक मुद्दे पर व्यापक दृष्टिकोण। आपका अत्यंत ज्ञानवर्धक पैम्फलेट बिशप के संरक्षण में व्यापक रूप से प्रसारित हुआ है और सराहनीय रूप से उपयोगी साबित हुआ है... लेकिन मैं आपसे मुख्य रूप से यही जानना चाहता हूँ। आपने अभी कहा कि आप मैडम स्वेतलोव से बहुत अच्छी तरह परिचित हैं। (यह ध्यान देने योग्य है कि ग्रुशेंका का उपनाम स्वेतलोव था। मैंने इसे पहली बार उस दिन मामले की सुनवाई के दौरान सुना था।)
मैं अपने सभी परिचितों की ओर से जवाब नहीं दे सकता... मैं एक नौजवान हूँ... और
"जो भी व्यक्ति उससे मिलता है, उसकी जिम्मेदारी कौन ले सकता है?" रकितिन गुस्से से लाल होते हुए चिल्लाया।
"मैं समझता हूँ, मैं पूरी तरह समझता हूँ," फेत्युकोविच चिल्लाया, मानो वह...
वह भी शर्मिंदा था और जल्दी से माफी मांगते हुए बोला, “आप भी, किसी और की तरह, उस जवान और खूबसूरत औरत से जान-पहचान करने में दिलचस्पी रखते होंगे जो मोहल्ले के संभ्रांत युवाओं का आसानी से स्वागत करती हो, लेकिन... मैं तो बस यह जानना चाहता था... मुझे पता चला है कि मैडम स्वेतलोव कुछ महीने पहले छोटे करामाज़ोव, एलेक्सी फ्योदोरोविच से मिलने के लिए बहुत उत्सुक थीं और उन्होंने आपको पच्चीस रूबल देने का वादा किया था, अगर आप उसे उसके साधु वाले वेश में उनके पास ले आते। और यह घटना उसी शाम को घटी जिस दिन वह भयानक अपराध हुआ, जिसकी इस समय जांच चल रही है। आप एलेक्सी करामाज़ोव को मैडम स्वेतलोव के पास ले गए थे, और क्या आपको मैडम स्वेतलोव से इनाम के तौर पर पच्चीस रूबल मिले थे, यही मैं आपसे सुनना चाहता था?”
“यह एक मज़ाक था... मुझे नहीं लगता कि इसमें आपकी कोई दिलचस्पी हो सकती है...
मैंने इसे मजाक समझा था... बाद में लौटाने का इरादा था...
“तो तुमने ले लिया... लेकिन तुमने अभी तक इसे वापस नहीं किया है... या किया है।”
आप?"
“इसका कोई महत्व नहीं है,” रकितिन ने बुदबुदाते हुए कहा, “मैं ऐसे सवालों का जवाब देने से इनकार करता हूँ।”
सवाल... बिल्कुल, मैं इसे वापस कर दूंगा।
राष्ट्रपति ने हस्तक्षेप किया, लेकिन फेत्युकोविच ने घोषणा की कि उनके पास अब और कुछ नहीं है।
गवाह से पूछे जाने वाले प्रश्न। श्री राकितिन अपने चरित्र पर लगे दाग से पूरी तरह मुक्त नहीं हुए। उनके भाषण के उच्च आदर्शवाद का प्रभाव कुछ हद तक धूमिल हो गया था, और जब फेत्युकोविच उन्हें जाते हुए देख रहे थे, तो उनके हावभाव से ऐसा लग रहा था मानो वे जनता को यह संदेश दे रहे हों कि "यह उन उच्च विचारों वाले लोगों का एक नमूना है जो उन पर आरोप लगा रहे हैं।" मुझे याद है कि यह घटना भी मित्या के आक्रोश के बिना नहीं गुजरी। राकितिन द्वारा ग्रुशेंका का जिक्र करने के लहजे से क्रोधित होकर, वह अचानक चिल्लाया, "बर्नार्ड!" जब राकितिन की जिरह के बाद, राष्ट्रपति ने कैदी से पूछा कि क्या उसे कुछ कहना है, तो मित्या जोर से रो पड़ा:
“जब से मुझे गिरफ्तार किया गया है, उसने मुझसे पैसे उधार लिए हैं! वह एक
नीच और अवसरवादी बर्नार्ड, और वह भगवान में विश्वास नहीं करता; उसने बिशप को पनाह दी!
मित्या को एक बार फिर अपनी असंयमपूर्ण आदतों के लिए फटकार लगाई गई।

भाषा तो ठीक थी, लेकिन रकितिन का काम तमाम हो चुका था। कप्तान स्नेगिरिओव की गवाही भी नाकाम रही, लेकिन एक बिल्कुल अलग वजह से। वह फटे-पुराने और गंदे कपड़ों में, कीचड़ से सने जूतों में पेश हुआ, और पुलिस अधिकारियों की सतर्कता और कुशल निगरानी के बावजूद, वह बुरी तरह नशे में धुत निकला। जब उससे मित्या द्वारा उस पर किए गए हमले के बारे में पूछा गया, तो उसने जवाब देने से इनकार कर दिया।
भगवान उसका भला करे। इलुशा ने मुझे मना किया था। भगवान इसकी भरपाई जरूर करेंगे।
दूर।"
“तुम्हें किसने मना किया था? तुम किसके बारे में बात कर रहे हो?”
“इलुशा, मेरे नन्हे बेटे। ‘पिताजी, पिताजी, उसने आपका कितना अपमान किया!’ उसने कहा कि
पत्थर के पास। अब वह मर रहा है...
कप्तान अचानक रोने लगा और घुटनों के बल बैठ गया।
राष्ट्रपति के समक्ष। जनता की हंसी के बीच उन्हें जल्दबाजी में वहां से ले जाया गया। अभियोजक द्वारा तैयार किया गया प्रयास बिल्कुल भी सफल नहीं हुआ।
फेत्युकोविच ने हर अवसर का भरपूर लाभ उठाना जारी रखा, और
मामले की अपनी सूक्ष्म जानकारी से वह लोगों को लगातार आश्चर्यचकित करता रहा। उदाहरण के लिए, ट्रिफॉन बोरिसोविच ने एक गहरा प्रभाव छोड़ा, जो निश्चित रूप से मित्या के लिए बहुत हानिकारक था। उन्होंने उंगलियों पर लगभग हिसाब लगाया कि मोक्रोए की अपनी पहली यात्रा में मित्या ने कम से कम तीन हजार रूबल खर्च किए होंगे, "या लगभग इससे थोड़ा कम। सोचो उसने उन जिप्सी लड़कियों पर ही कितना पैसा लुटा दिया! और हमारे गरीब किसानों की बात करें तो, उसने आधा रूबल सड़क पर नहीं फेंका, उसने उन्हें कम से कम पच्चीस रूबल के उपहार दिए, इससे कम तो उसने कभी नहीं दिए। और कितना पैसा तो उससे सीधे-सीधे चोरी हो गया! और अगर किसी ने चोरी की भी, तो उसने कोई रसीद नहीं छोड़ी। जब चोर हर समय अपना पैसा लुटाता रहता था, तो उसे कैसे पकड़ा जा सकता था? हमारे किसान लुटेरे हैं, तुम्हें पता है; उन्हें अपनी आत्मा की कोई परवाह नहीं है। और जिस तरह से उसने उन लड़कियों के साथ व्यवहार किया, हमारी गांव की लड़कियों के साथ! मैं तुम्हें बताता हूं, तब से उनकी हालत बहुत खराब हो गई है, वे पहले गरीब हुआ करती थीं।" उन्होंने वास्तव में खर्च की हर मद को याद किया और सबका हिसाब लगाया। इसलिए यह सिद्धांत कि केवल पंद्रह सौ ही खर्च किए गए थे और बाकी की रकम एक छोटी सी थैली में अलग रख दी गई थी, अकल्पनीय प्रतीत होता था।
मैंने उसके हाथों में तीन हजार रुपये बिल्कुल साफ-साफ देखे, मैंने उसे अपनी आँखों से देखा।
अपनी आँखों से देखकर; मुझे लगता है कि मुझे पैसे गिनना आना चाहिए," ट्रिफॉन बोरिसोविच चिल्लाया, अपने "वरिष्ठों" को संतुष्ट करने की पूरी कोशिश करते हुए।
जब फेत्युकोविच को उनसे जिरह करनी पड़ी, तो उन्होंने शायद ही कोई कोशिश की हो।
उसके साक्ष्यों का खंडन करते हुए, वकील ने उससे गिरफ्तारी से एक महीने पहले मोक्रोए में हुई पहली दावत की घटना के बारे में पूछना शुरू किया। उस समय तिमोफे और अकीम नामक एक अन्य किसान ने गलियारे में ज़मीन पर गिरे सौ रूबल उठाए थे, जो मित्या ने नशे की हालत में गिरा दिए थे। उन्होंने ये रूबल ट्रिफॉन बोरिसोविच को दे दिए थे और इसके बदले में उनसे एक-एक रूबल ले लिए थे। वकील ने पूछा, "क्या आपने वो सौ रूबल श्री करामाज़ोव को वापस दिए थे?" ट्रिफॉन बोरिसोविच ने कुछ कहने से इनकार कर दिया... किसानों से पूछताछ के बाद, उसे सौ रूबल मिलने की बात स्वीकार करनी पड़ी। उसने बस इतना कहा कि उसने पूरी ईमानदारी से दिमित्री फ्योदोरोविच को सारे रूबल लौटा दिए थे और "उस समय शराब के नशे में होने के कारण उसे याद नहीं रहा।" लेकिन, चूंकि उसने सौ रूबल वाली घटना को तब तक नकार दिया था जब तक किसानों को गवाही देने के लिए नहीं बुलाया गया था, इसलिए मित्या को पैसे लौटाने के संबंध में उसके साक्ष्य पर स्वाभाविक रूप से गहरा संदेह जताया गया। इस प्रकार अभियोजन पक्ष द्वारा पेश किए गए सबसे खतरनाक गवाहों में से एक की विश्वसनीयता एक बार फिर धूमिल हो गई।
पोलैंड के लोगों के साथ भी ऐसा ही हुआ। उन्होंने यह रवैया अपना लिया कि
गर्व और स्वतंत्रता; उन्होंने ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाकर कहा कि वे दोनों राजशाही की सेवा में थे, और "पान मित्या" ने उन्हें "उनकी इज़्ज़त खरीदने" के लिए तीन हज़ार की पेशकश की थी, और उन्होंने उसके हाथों में

बड़ी रकम देखी थी। पान मुस्यालोविच ने अपने वाक्यों में बड़ी संख्या में पोलिश शब्दों का प्रयोग किया, और यह देखकर कि इससे राष्ट्रपति और अभियोजक की नज़र में उसका प्रभाव और बढ़ रहा है, वह और अधिक आडंबरपूर्ण होता चला गया, और अंत में पूरी तरह से पोलिश में बोलने लगा। लेकिन फेत्युकोविच ने उन्हें भी अपने जाल में फंसा लिया। ट्रिफॉन बोरिसोविच को, अपने टालमटोल के बावजूद, यह स्वीकार करने के लिए मजबूर होना पड़ा कि पान ब्रुबलेव्स्की ने उसके द्वारा दिए गए ताश के पत्तों के एक पैक की जगह दूसरा पैक रख दिया था, और पान मुस्यालोविच ने खेल के दौरान धोखा दिया था। कालगानोव ने इसकी पुष्टि की, और दोनों पोलिश गवाहों के कटघरे से जनता की हंसी के बीच धूमिल प्रतिष्ठा के साथ बाहर निकले।
फिर लगभग सभी सबसे महत्वपूर्ण लोगों के साथ ठीक यही हुआ।
खतरनाक गवाह। फेत्युकोविच उन सभी पर कलंक लगाने और उन्हें एक तरह से उपहासपूर्वक खारिज करने में सफल रहे। वकील और विशेषज्ञ प्रशंसा से अभिभूत थे और उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि इससे क्या लाभ हो सकता है, क्योंकि सभी, मैं दोहराता हूँ, महसूस कर रहे थे कि अभियोजन पक्ष का मामला नकारा नहीं जा सकता, बल्कि और भी अधिक दुखद रूप से प्रबल होता जा रहा था। लेकिन "महान जादूगर" के आत्मविश्वास से उन्होंने देखा कि वह शांत थे, और वे प्रतीक्षा करते रहे, यह महसूस करते हुए कि "ऐसा व्यक्ति" सेंट पीटर्सबर्ग से व्यर्थ नहीं आया था, और वह असफल होकर लौटने वाला व्यक्ति नहीं था।

अध्याय 3

चिकित्सा विशेषज्ञ और एक पाउंड पागल

चिकित्सा विशेषज्ञों के साक्ष्य भी कैदी के लिए कुछ खास उपयोगी साबित नहीं हुए। बाद में यह बात सामने आई कि फेत्युकोविच ने इस पर ज्यादा भरोसा नहीं किया था। चिकित्सा संबंधी बचाव का सहारा तो कैटेरिना इवानोव्ना के आग्रह पर ही लिया गया था, जिन्होंने विशेष रूप से मॉस्को से एक प्रसिद्ध डॉक्टर को बुलवाया था। बचाव पक्ष को इससे कोई नुकसान नहीं होता, बल्कि शायद किस्मत साथ देती तो कुछ फायदा भी हो जाता। हालांकि, डॉक्टरों की राय में मतभेद के कारण इसमें एक हास्य तत्व भी जुड़ गया था। चिकित्सा विशेषज्ञ मॉस्को के प्रसिद्ध डॉक्टर, हमारे डॉक्टर हर्ज़ेनस्टुबे और युवा डॉक्टर वारविंस्की थे। बाद वाले दोनों डॉक्टर अभियोजन पक्ष के गवाह भी बने।
विशेषज्ञ के तौर पर सबसे पहले डॉ. हर्ज़ेनस्टुबे को बुलाया गया।
वह सत्तर साल के एक बूढ़े, गंजे और सफ़ेद बालों वाले व्यक्ति थे, जिनकी लंबाई मध्यम और शरीर गठीला था। कस्बे में हर कोई उनका बहुत आदर करता था। वे एक कर्तव्यनिष्ठ डॉक्टर और एक उत्कृष्ट व धर्मनिष्ठ व्यक्ति थे, शायद हर्नुटर या मोराविएन ब्रदर, मुझे ठीक से याद नहीं है। वे कई वर्षों से हमारे बीच रह रहे थे और उनका व्यवहार अत्यंत गरिमामय था। वे दयालु और मानवीय स्वभाव के थे। वे बीमार, गरीब और किसानों का निःशुल्क इलाज करते थे, उनकी झुग्गियों और झोपड़ियों में जाकर उनका इलाज करते थे और दवाइयों के लिए पैसे भी छोड़ जाते थे, लेकिन वे जिद्दी स्वभाव के थे। एक बार कोई बात उनके मन में बैठ जाती तो उसे भुला पाना असंभव था। वैसे, कस्बे में लगभग हर कोई जानता था कि प्रसिद्ध डॉक्टर ने हमारे

बीच आने के पहले दो-तीन दिनों के भीतर ही डॉक्टर हर्ज़ेनस्टुबे की योग्यताओं के बारे में कुछ बेहद आपत्तिजनक टिप्पणियां की थीं। हालाँकि मॉस्को के डॉक्टर एक मुलाकात के लिए पच्चीस रूबल लेते थे, फिर भी कस्बे के कई लोग उनके आने का लाभ उठाने के लिए उत्सुक थे और खर्च की परवाह किए बिना उनसे परामर्श करने के लिए दौड़ पड़े। ये सभी मरीज़ पहले डॉक्टर हर्ज़ेनस्टुबे के मरीज़ रह चुके थे, और उस प्रसिद्ध डॉक्टर ने उनके इलाज की कड़ी आलोचना की थी। अंत में, उन्होंने मरीज़ों को देखते ही पूछा, “तो फिर तुम्हें ये दवाइयाँ कौन खिला रहा है? हर्ज़ेनस्टुबे? ही ही!” डॉक्टर हर्ज़ेनस्टुबे ने ये सब सुन लिया था, और अब तीनों डॉक्टर एक-एक करके जाँच के लिए पेश हुए।
डॉक्टर हर्ज़ेनस्टुबे ने स्पष्ट रूप से घोषणा की कि इस असामान्यता के कारण
कैदी की मानसिक क्षमताएँ स्वतः स्पष्ट थीं। फिर इस राय के आधार बताते हुए, जिसे मैं यहाँ नहीं बता रहा हूँ, उन्होंने आगे कहा कि यह असामान्यता न केवल कैदी के अतीत के कई कार्यों में स्पष्ट थी, बल्कि इस समय भी स्पष्ट रूप से दिखाई दे रही है। जब उनसे पूछा गया कि यह इस समय कैसे स्पष्ट है, तो बूढ़े डॉक्टर ने सरल और स्पष्ट शब्दों में बताया कि अदालत में प्रवेश करते समय कैदी का "असाधारण व्यवहार था, जो परिस्थितियों के हिसाब से उल्लेखनीय था"; कि वह "एक सैनिक की तरह अंदर आया, सीधे अपने सामने देख रहा था, जबकि उसके लिए बाईं ओर देखना अधिक स्वाभाविक होता जहाँ जनता के बीच महिलाएँ बैठी थीं, क्योंकि वह महिलाओं का बहुत बड़ा प्रशंसक था और निश्चित रूप से सोच रहा होगा कि महिलाएँ उसके बारे में क्या कह रही हैं," बूढ़े ने अपनी विशिष्ट भाषा में निष्कर्ष निकाला।
मुझे यह भी कहना होगा कि वह रूसी भाषा सहजता से बोलता था, लेकिन हर वाक्य बनावटी होता था। जर्मन शैली में, जिससे उन्हें कोई परेशानी नहीं होती थी, क्योंकि यह उनकी हमेशा से कमजोरी रही थी कि वे रूसी भाषा को पूरी तरह से जानते थे, बल्कि रूसियों से भी बेहतर। और उन्हें रूसी कहावतों का उपयोग करना बहुत पसंद था, वे हमेशा कहते थे कि रूसी कहावतें पूरी दुनिया में सबसे अच्छी और सबसे प्रभावशाली कहावतें हैं। मैं यह भी बताना चाहूंगा कि बातचीत के दौरान, अन्यमनस्कता के कारण वे अक्सर सबसे साधारण शब्द भी भूल जाते थे, जो कभी-कभी उनके दिमाग से निकल जाते थे, हालांकि वे उन्हें पूरी तरह से जानते थे। जर्मन बोलते समय भी ऐसा ही होता था, और ऐसे समय में वे हमेशा अपना हाथ अपने चेहरे के सामने ऐसे हिलाते थे मानो खोए हुए शब्द को पकड़ने की कोशिश कर रहे हों, और कोई भी उन्हें तब तक बोलना जारी रखने के लिए राजी नहीं कर सकता था जब तक कि उन्हें खोया हुआ शब्द न मिल जाए। उनकी यह टिप्पणी कि कैदी को अंदर आते समय महिलाओं को देखना चाहिए था, दर्शकों में हंसी की फुसफुसाहट पैदा कर दी। हमारी सभी महिलाएं हमारे बूढ़े डॉक्टर को बहुत पसंद करती थीं; वे यह भी जानती थीं कि जीवन भर अविवाहित और अनुकरणीय आचरण वाले धार्मिक व्यक्ति होने के कारण, वे महिलाओं को उच्च कोटि की प्राणी मानते थे। और इसलिए उनकी अप्रत्याशित टिप्पणी सभी को बहुत अजीब लगी।
मॉस्को के डॉक्टर से जब पूछताछ की गई, तो उन्होंने निश्चित रूप से कहा कि...
उन्होंने बार-बार ज़ोर देकर कहा कि वे कैदी की मानसिक स्थिति को अत्यंत असामान्य मानते हैं। उन्होंने "विकृति" और "उन्माद" के बारे में विस्तार से और विद्वतापूर्ण ढंग से बात की और तर्क दिया कि एकत्रित सभी तथ्यों से यह स्पष्ट है कि कैदी अपनी गिरफ्तारी से कई दिन पहले से ही विकृति की स्थिति में था, और यदि उसने अपराध किया है, तो भले ही वह इसके प्रति सचेत रहा हो, यह लगभग अनैच्छिक ही रहा होगा, क्योंकि उसके पास उस विकृत आवेग को नियंत्रित करने की शक्ति नहीं थी जिसने उसे वश में कर लिया था। लेकिन अस्थायी विचलन के अलावा, डॉक्टर ने उन्माद का निदान किया, जो
उनके शब्दों में, यह स्थिति भविष्य में पूर्ण पागलपन की ओर ले जाने वाली थी। (यह ध्यान देने योग्य है कि मैं इसे अपने शब्दों में बता रहा हूँ, डॉक्टर ने बहुत ही विद्वतापूर्ण और पेशेवर भाषा का प्रयोग किया था।) उन्होंने आगे कहा, “उसके सभी कार्य सामान्य ज्ञान और तर्क के विपरीत हैं। मैंने जो नहीं देखा, यानी अपराध और पूरी घटना, उसका जिक्र न करते हुए, परसों जब वह मुझसे बात कर रहा था, तो उसकी आँखों में एक अजीब सी स्थिर दृष्टि थी। वह बिना किसी कारण के अचानक हँस पड़ा। वह लगातार और अस्पष्ट रूप से चिड़चिड़ा रहा, अजीब शब्दों का प्रयोग कर रहा था, ‘बर्नार्ड!’, ‘नैतिकता!’ और इसी तरह के अन्य अनुपयुक्त शब्द।”
लेकिन डॉक्टर ने सबसे पहले इस तथ्य में उन्माद का पता लगाया कि कैदी तीन हजार रूबल के बारे में भी, जिसे वह ठगा हुआ मानता था, असाधारण चिड़चिड़ाहट के बिना बात नहीं कर सकता था, जबकि वह अन्य दुर्भाग्य और शिकायतों के बारे में अपेक्षाकृत हल्के ढंग से बात कर सकता था। सभी विवरणों के अनुसार,

अतीत में भी, जब भी तीन हजार रूबल का विषय उठता था, वह पूरी तरह से उन्माद में आ जाता था, फिर भी उसे एक निस्वार्थ और लालच रहित व्यक्ति के रूप में जाना जाता था।
“मेरे विद्वान सहकर्मी की राय के बारे में,” मॉस्को के डॉक्टर ने आगे कहा।
अंत में व्यंग्यात्मक ढंग से कहते हुए, “यह कहना कि कैदी अदालत में प्रवेश करते समय स्वाभाविक रूप से महिलाओं की ओर देखेगा, न कि सीधे अपने सामने, मैं केवल इतना ही कहूंगा कि इस सिद्धांत की चंचलता के अलावा, यह पूरी तरह से निराधार है। क्योंकि यद्यपि मैं इस बात से पूरी तरह सहमत हूं कि कैदी, उस अदालत में प्रवेश करते समय जहां उसके भाग्य का फैसला होना है, स्वाभाविक रूप से सीधे अपने सामने उस स्थिर तरीके से नहीं देखेगा, और यह वास्तव में उसकी असामान्य मानसिक स्थिति का संकेत हो सकता है, फिर भी मैं यह मानता हूं कि वह स्वाभाविक रूप से महिलाओं की ओर बाईं ओर नहीं देखेगा, बल्कि इसके विपरीत, दाईं ओर अपने कानूनी सलाहकार को ढूंढेगा, जिसकी मदद पर उसकी सारी उम्मीदें टिकी हैं और जिसके बचाव पर उसका सारा भविष्य निर्भर करता है।” डॉक्टर ने अपनी राय दृढ़तापूर्वक और स्पष्ट रूप से व्यक्त की।
लेकिन डॉक्टर वारविंस्की की अप्रत्याशित घोषणा ने अंतिम क्षण को बदल दिया।
विशेषज्ञों के बीच मतभेद में हास्य का पुट था। उनके अनुसार, कैदी अब और हमेशा से ही पूरी तरह सामान्य स्थिति में था, और यद्यपि गिरफ्तारी से पहले वह निश्चित रूप से घबराया हुआ और अत्यधिक उत्तेजित रहा होगा, इसके कई स्पष्ट कारण हो सकते थे, जैसे ईर्ष्या, क्रोध, लगातार शराब पीना आदि। लेकिन इस घबराहट भरी स्थिति में वह मानसिक विकार शामिल नहीं था जिसका अभी उल्लेख किया गया था। इस प्रश्न के संबंध में कि अदालत में प्रवेश करते समय कैदी को बाईं ओर देखना चाहिए था या दाईं ओर, "उनकी विनम्र राय में," कैदी अदालत में प्रवेश करते समय स्वाभाविक रूप से सीधे अपने सामने देखता, जैसा कि उसने वास्तव में किया था, क्योंकि न्यायाधीश, जिन पर उसका भाग्य निर्भर था, वहीं बैठे थे। इसलिए सीधे अपने सामने देखकर ही उसने वर्तमान में अपनी पूरी तरह सामान्य मानसिक स्थिति प्रदर्शित की। युवा डॉक्टर ने अपनी "विनम्र" गवाही को कुछ तीखे शब्दों में समाप्त किया।
“शाबाश, डॉक्टर!” मित्या अपनी सीट से चिल्लाया, “बिल्कुल सही!” बेशक, मित्या की जाँच की गई थी, लेकिन युवा डॉक्टर की राय में कुछ खास बात थी।
न्यायाधीशों और जनता पर उनका निर्णायक प्रभाव था, और जैसा कि बाद में पता चला, सभी उनसे सहमत थे। लेकिन डॉक्टर हर्ज़ेनस्टुबे, जब गवाह के रूप में बुलाए गए, तो मित्या के लिए अप्रत्याशित रूप से उपयोगी साबित हुए। शहर के एक पुराने निवासी के रूप में, जो करामाज़ोव परिवार को वर्षों से जानते थे, उन्होंने अभियोजन पक्ष के लिए कुछ अत्यंत महत्वपूर्ण तथ्य प्रस्तुत किए, और अचानक, मानो कुछ याद करते हुए, उन्होंने आगे कहा:
लेकिन उस बेचारे युवक का जीवन बहुत अलग हो सकता था, क्योंकि वह
मुझे पता है कि बचपन से लेकर किशोरावस्था तक उनका हृदय अच्छा था। लेकिन रूसी कहावत है, "अगर किसी व्यक्ति का एक सिर हो तो अच्छी बात है, लेकिन अगर कोई दूसरा चतुर व्यक्ति उससे मिलने आए तो और भी बेहतर होगा, क्योंकि तब दो सिर हो जाएंगे, एक नहीं।"
अभियोजक ने कहा, "एक दिमाग ठीक है, लेकिन दो बेहतर हैं।"
अधीरता से। वह बूढ़े आदमी की धीरे-धीरे और सोच-समझकर बोलने की आदत से वाकिफ था, चाहे इससे सामने वाले पर क्या प्रभाव पड़े और कितनी देरी हो, और वह अपने सपाट, नीरस और हमेशा प्रसन्नतापूर्वक आत्मसंतुष्ट जर्मन हास्य को बहुत महत्व देता था। बूढ़े आदमी को चुटकुले सुनाने का शौक था।
“ओह, हाँ, मैं यही कहता हूँ,” वह हठपूर्वक बोला। “एक ही दिमाग काफी है।”
लेकिन दो कहीं बेहतर हैं, लेकिन उसे बुद्धि से लैस कोई दूसरा व्यक्ति नहीं मिला, और उसकी बुद्धि चली गई। कहाँ चली गई? मैं शब्द भूल गया हूँ। वह अपनी आँखों के सामने हाथ फेरते हुए बोला, "ओह, हाँ, spazieren।"
“भटक रहे हो?”
“ओह, हाँ, भटकना, मैं यही कहता हूँ। खैर, उसकी बुद्धि भटक गई।”
और वह इतने गहरे गड्ढे में गिर गया कि खुद को ही खो बैठा। फिर भी वह एक कृतज्ञ और संवेदनशील लड़का था। ओह, मुझे वह बहुत अच्छी तरह याद है, एक छोटा सा दुबला-पतला लड़का, जिसे उसके पिता ने

पिछवाड़े में उपेक्षित छोड़ दिया था, जब वह बिना जूतों के इधर-उधर दौड़ता था, और उसकी छोटी सी पैंट एक बटन से लटकी रहती थी।
अचानक उस ईमानदार बूढ़े व्यक्ति के मन में भावना और कोमलता का भाव आ गया।
एक आदमी की आवाज़। फेट्युकोविच एकदम चौंक गया, मानो उसे किसी चीज़ की गंध आ रही हो, और उसने तुरंत बात समझ ली।
“ओह, हाँ, मैं तब एक जवान आदमी था... मैं... खैर, मैं पैंतालीस साल का था।”
तब, और मैं अभी-अभी यहाँ आया था। और मुझे उस लड़के पर बहुत दया आई; मैंने खुद से पूछा कि मैं उसके लिए एक पौंड... एक पौंड क्या? मुझे उसका नाम याद नहीं आ रहा। एक पौंड वह चीज़ जो बच्चों को बहुत पसंद होती है, वह क्या है, वह क्या है?” डॉक्टर ने फिर से अपने हाथ हिलाना शुरू कर दिया। “यह एक पेड़ पर उगता है और इसे इकट्ठा करके सबको दिया जाता है...”
“सेब?”
“अरे नहीं, नहीं। आपके पास एक दर्जन सेब हैं, एक पौंड नहीं... नहीं, यहाँ एक पौंड सेब हैं।”
उनमें से बहुत सारे हैं, और सभी छोटे-छोटे हैं। आप उन्हें मुंह में डालते हैं और चटकते हैं।
“पागल?”
“बिल्कुल सही, पागलों, मैं यही कहता हूँ।” डॉक्टर ने अत्यंत शांत स्वर में दोहराया।
हालाँकि उसके पास बोलने के लिए शब्दों की कोई कमी नहीं थी। “और मैंने उसे एक पौंड मेवे खरीदकर दिए, क्योंकि इससे पहले किसी ने भी उस लड़के को एक पौंड मेवे नहीं खरीदे थे। और मैंने अपनी उंगली उठाकर उससे कहा, ‘बेटा, पिता जी।’ वह हँसा और बोला, ‘पिता जी।’ ... ‘बेटा बेटा।’ वह फिर हँसा और तुतलाते हुए बोला, ‘बेटा बेटा।’”
‘गॉट डेर हीलिगे गेइस्ट।’ फिर वह हँसा और जितना हो सका बोला, ‘गॉट डेर हीलिगे गेइस्ट।’ मैं चला गया, और दो दिन बाद जब मैं वहाँ से गुज़र रहा था, तो उसने मुझे खुद से पुकारा, ‘अंकल, गॉट डेर वेटर, गॉट डेर सोन,’ और वह बस ‘गॉट डेर हीलिगे गेइस्ट’ कहना भूल गया था। लेकिन मैंने उसे याद दिलाया और मुझे फिर से उसके लिए बहुत दुख हुआ। लेकिन वह चला गया, और मैंने उसे फिर कभी नहीं देखा। तेईस साल बीत गए। एक सुबह मैं अपने अध्ययन कक्ष में बैठा था, एक सफ़ेद बालों वाला बूढ़ा आदमी, तभी कमरे में एक खिलखिलाता हुआ नौजवान आया, जिसे मैं कभी पहचान नहीं पाता, लेकिन उसने अपनी उंगली उठाई और हँसते हुए बोला, ‘गॉट डेर वेटर, गॉट डेर सोन, और गॉट डेर हीलिगे गेइस्ट। मैं अभी-अभी आया हूँ और उस एक पौंड मेवों के लिए आपको धन्यवाद देने आया हूँ, क्योंकि किसी और ने मुझे कभी एक पौंड मेवे नहीं दिए; 'तुम ही इकलौते हो जिसने ऐसा किया।' फिर मुझे अपना खुशहाल बचपन और आंगन में बिना जूतों के बैठे उस बेचारे बच्चे की याद आ गई। मेरा दिल पिघल गया और मैंने कहा, 'तुम बड़े शुक्रगुजार नौजवान हो, क्योंकि तुमने जीवन भर वो एक पौंड मेवे याद रखे हैं जो मैंने तुम्हारे बचपन में तुम्हें दिए थे।' मैंने उसे गले लगाया और आशीर्वाद दिया। और मेरी आंखों से आंसू बहने लगे। वो हंसा, लेकिन उसकी आंखों से भी आंसू बह रहे थे... क्योंकि रूसी अक्सर तब हंसते हैं जब उन्हें रोना चाहिए। लेकिन वो रोए; मैंने देखा। और अब, हाय!...
और मैं अब रो रही हूँ, जर्मन, मैं भी अब रो रही हूँ, हे संत!
“यार,” मित्या अचानक चिल्लाया।
बहरहाल, इस किस्से ने कुछ हद तक सकारात्मक प्रभाव डाला।
जनता। लेकिन मित्या के पक्ष में सबसे सनसनीखेज घटना कैटेरिना इवानोव्ना की गवाही से हुई, जिसका वर्णन मैं आगे करूंगा। दरअसल, जब बचाव पक्ष द्वारा बुलाए गए गवाहों ने गवाही देना शुरू किया, तो भाग्य अचानक मित्या के पक्ष में अधिक अनुकूल प्रतीत होने लगा, और सबसे आश्चर्यजनक बात यह थी कि यह बचाव पक्ष के वकील के लिए भी हैरानी की बात थी। लेकिन कैटेरिना इवानोव्ना को बुलाए जाने से पहले, अलेयोशा से पूछताछ की गई, और उसने एक ऐसी घटना का जिक्र किया जिससे अभियोजन पक्ष द्वारा उठाए गए एक महत्वपूर्ण बिंदु के विरुद्ध पुख्ता सबूत मिलता प्रतीत हुआ।

अध्याय 4

भाग्य मित्या पर मेहरबान है

यह बात अलेयोशा के लिए भी काफी आश्चर्यजनक थी। उनसे शपथ लेने की अपेक्षा नहीं की गई थी, और मुझे याद है कि दोनों पक्षों ने उनसे बहुत ही विनम्रता और सहानुभूति से बात की थी। यह स्पष्ट था कि उनकी अच्छाई की प्रतिष्ठा उनसे पहले ही फैली हुई थी। अलेयोशा ने विनम्रता और संयम से गवाही दी, लेकिन अपने दुखी भाई के प्रति उनकी गहरी सहानुभूति स्पष्ट थी। एक प्रश्न के उत्तर में, उन्होंने अपने भाई के चरित्र का वर्णन करते हुए कहा कि वह एक ऐसे व्यक्ति थे, जो शायद उग्र स्वभाव के और अपनी भावनाओं में बह जाने वाले थे, लेकिन साथ ही सम्माननीय, स्वाभिमानी और उदार भी थे, और आवश्यकता पड़ने पर आत्म-बलिदान करने में सक्षम थे। हालांकि, उन्होंने स्वीकार किया कि ग्रुशेंका के प्रति अपने प्रेम और अपने पिता के साथ प्रतिद्वंद्विता के कारण, उनके भाई हाल ही में एक असहनीय स्थिति में थे। लेकिन उन्होंने इस सुझाव को घोर अस्वीकार कर दिया कि उनके भाई ने लाभ के लिए हत्या की होगी, हालांकि उन्होंने यह माना कि तीन हजार रूबल मित्या के लिए लगभग एक जुनून बन गए थे; उसने कहा कि वह उन्हें अपने पिता द्वारा धोखे से छीनी गई विरासत का हिस्सा मानता था, और आम तौर पर पैसों के प्रति उदासीन होने के बावजूद, वह उन तीन हज़ार के बारे में बात करते-करते क्रोधित हो जाता था। अभियोजक द्वारा व्यक्त की गई दो "महिलाओं" (अर्थात ग्रुशेंका और कात्या) की प्रतिद्वंद्विता के बारे में उसने टालमटोल भरा जवाब दिया और एक-दो सवालों के जवाब देने से भी साफ इनकार कर दिया।
"क्या तुम्हारे भाई ने तुम्हें बताया था कि उसका इरादा तुम्हारे पिता को जान से मारने का है?"
अभियोजक ने पूछा, "यदि आपको आवश्यक लगे तो आप उत्तर देने से इनकार कर सकते हैं," उन्होंने आगे कहा।
“उन्होंने मुझे सीधे तौर पर ऐसा नहीं बताया,” अलेयोशा ने उत्तर दिया। “कैसे? क्या उन्होंने अप्रत्यक्ष रूप से बताया?”
“उसने एक बार मुझसे हमारे पिता के प्रति अपनी नफरत और इस डर के बारे में बात की थी कि किसी भी समय
अत्यंत गंभीर क्षण... क्रोध के क्षण में, वह शायद उसकी हत्या कर दे।
“और आपने उस पर विश्वास किया?”
मुझे यह कहते हुए डर लग रहा है कि मैंने ऐसा किया। लेकिन मुझे कभी इस बात पर संदेह नहीं हुआ कि कोई उच्च शक्ति मौजूद है।
"भावना हमेशा उसे घातक क्षण में बचाएगी, जैसा कि वास्तव में इसने उसे बचाया है, क्योंकि मेरे पिता की हत्या उसने नहीं की थी," अलेयोशा ने दृढ़ता से, ऊँची आवाज़ में कहा जो पूरी अदालत में सुनाई दी।
अभियोजक तुरही की आवाज सुनते ही युद्ध के घोड़े की तरह चौंक उठा। “मैं आपको आश्वस्त करना चाहता हूँ कि मुझे आपकी पूरी ईमानदारी पर पूरा भरोसा है।”
अपने इस दृढ़ विश्वास को अपने अभागे भाई के प्रति स्नेह से जोड़कर न समझाएं। इस पूरी दुखद घटना के बारे में आपका विशिष्ट दृष्टिकोण प्रारंभिक जांच से ही ज्ञात है। मैं आपसे यह छिपाने का प्रयास नहीं करूंगा कि यह पूरी तरह से व्यक्तिगत है और अभियोजन पक्ष द्वारा एकत्र किए गए अन्य सभी साक्ष्यों के विपरीत है। इसलिए मुझे यह आवश्यक लगता है कि मैं आपसे यह पूछूं कि किन तथ्यों के आधार पर आप अपने भाई की निर्दोषता और उस व्यक्ति के दोषी होने के इस दृढ़ विश्वास पर पहुंचे हैं, जिसके विरुद्ध आपने प्रारंभिक जांच में गवाही दी थी?
"मैंने प्रारंभिक पूछताछ में मुझसे पूछे गए सवालों के ही जवाब दिए।"
अलेयोशा ने धीरे और शांत भाव से उत्तर दिया, “मैंने स्मरद्याकोव पर स्वयं कोई आरोप नहीं लगाया।”
“फिर भी आपने उसके खिलाफ गवाही दी?”
“मुझे ऐसा करने की प्रेरणा मेरे भाई दिमित्री के शब्दों से मिली। मुझे बताया गया कि क्या हुआ था।”

गिरफ्तारी के समय की स्थिति और मेरे पूछताछ से पहले उसने स्मरद्याकोव की ओर इशारा कैसे किया था, इस बारे में मुझे पूरा विश्वास है। मेरा भाई निर्दोष है, और अगर उसने हत्या नहीं की है, तो—"
“तो फिर स्मरद्याकोव? स्मरद्याकोव ही क्यों? और तुम इतने क्यों हो?
क्या आप अपने भाई की निर्दोषता के प्रति पूरी तरह आश्वस्त हैं?
मुझे अपने भाई पर विश्वास करने से खुद को रोकना मुश्किल है। मुझे पता है कि वह मुझसे झूठ नहीं बोलेगा। मैंने देखा है
उसके चेहरे से लग रहा था कि वह झूठ नहीं बोल रहा था।
“सिर्फ उसके चेहरे से? क्या यही आपके पास एकमात्र सबूत है?”
मेरे पास इसका कोई और सबूत नहीं है।
और स्मर्ड्याकोव के अपराध का आपके पास कोई सबूत नहीं है सिवाय आपके
भाई के शब्द और उसके चेहरे के भाव?
"नहीं, मेरे पास कोई और सबूत नहीं है।"
अभियोजक ने इस बिंदु पर जांच रोक दी।
अलेयोशा के साक्ष्य से जनता को जो निराशा हाथ लगी, वह अत्यंत दुखद थी। मुकदमे से पहले स्मर्ड्याकोव के बारे में चर्चा हुई थी; किसी ने कुछ सुना था, किसी ने कुछ और बताया था, कहा गया था कि अलेयोशा ने अपने भाई की निर्दोषता और स्मर्ड्याकोव के अपराध के कुछ असाधारण प्रमाण जुटा लिए हैं, लेकिन अंततः कुछ भी नहीं मिला, एक भाई में स्वाभाविक रूप से निहित कुछ नैतिक विश्वासों के अलावा कोई सबूत नहीं था।
लेकिन फेत्युकोविच ने अपनी जिरह शुरू कर दी। जब उन्होंने अलेयोशा से पूछा
जब कैदी ने उसे अपने पिता के प्रति अपनी नफरत और उन्हें जान से मारने की धमकी के बारे में बताया था, और क्या उसने यह बात, उदाहरण के लिए, उस विपत्ति से पहले उनकी आखिरी मुलाकात में सुनी थी, तो अलेयोशा ने जवाब देते हुए चौंक गया, मानो उसे अभी-अभी कुछ याद आया हो और समझ आया हो।
मुझे अब एक ऐसी घटना याद आ रही है जिसे मैं खुद पूरी तरह से भूल चुका था।
उस समय तो मुझे यह बात स्पष्ट नहीं थी, लेकिन अब...
और, जाहिर तौर पर अब पहली बार किसी विचार से प्रेरित होकर, उसने
उसने उत्सुकता से बताया कि उस शाम मठ जाने वाली सड़क पर पेड़ के नीचे मित्या के साथ अपनी आखिरी मुलाकात में, मित्या ने अपनी छाती पर, "छाती के ऊपरी हिस्से" पर प्रहार किया था और कई बार दोहराया था कि उसके पास अपना सम्मान वापस पाने का एक साधन है, और वह साधन यहीं है, यहीं उसकी छाती पर।
“जब उसने अपनी छाती पर हाथ मारा, तो मुझे लगा कि उसका मतलब अपने दिल पर हाथ मारना था,” अलेयोशा ने आगे कहा, “कि वह अपने दिल में ऐसी ताकत पा सके जिससे वह किसी भयानक अपमान से खुद को बचा सके, जो उसका इंतजार कर रहा था और जिसे वह मुझसे भी कबूल करने की हिम्मत नहीं कर रहा था। मुझे मानना पड़ेगा कि उस समय मुझे लगा कि वह हमारे पिता के बारे में बात कर रहा था, और जिस अपमान से वह कांप रहा था, वह हमारे पिता के पास जाकर उन पर हिंसा करने का विचार था। लेकिन तभी उसने अपनी छाती पर किसी चीज की ओर इशारा किया, जिससे मुझे याद है कि उस समय मेरे मन में यह विचार आया कि दिल छाती के उस हिस्से पर नहीं, बल्कि नीचे होता है, और उसने अपनी छाती पर बहुत ऊपर, गर्दन के ठीक नीचे हाथ मारा था, और उस जगह की ओर इशारा करता रहा। उस समय मेरा यह विचार मुझे मूर्खतापूर्ण लगा, लेकिन शायद वह उस छोटी थैली की ओर इशारा कर रहा था जिसमें उसके पास पंद्रह सौ रूबल थे!”
“बिल्कुल सही,” मित्या ने अपनी जगह से चिल्लाकर कहा। “हाँ, अलेयोशा, यह वही था।”
मैंने उस छोटी थैली पर मुक्के से वार किया।
फेत्युकोविच बड़ी जल्दबाजी में उसके पास दौड़ा और उससे चुप रहने की विनती की, और
उसी क्षण अलेयोशा पर झपटा। अपनी यादों में खोया हुआ अलेयोशा बड़े उत्साह से यह सिद्धांत व्यक्त करने लगा कि यह अपमान शायद उसके ऊपर बकाया पंद्रह सौ रूबल की वजह से था, जिसे वह कैटेरिना इवानोव्ना को उसके आधे कर्ज के रूप में लौटा सकता था, लेकिन उसने अभी तक उसे न चुकाने और किसी अन्य उद्देश्य के लिए उपयोग करने का निश्चय किया था - अर्थात्, ग्रुशेंका के साथ भागने के लिए, यदि वह सहमत हो जाए।

“ऐसा ही है, ऐसा ही होना चाहिए,” अलेयोशा ने अचानक उत्साह में कहा। “मेरा
भाई कई बार रोते हुए बोला कि आधी बदनामी, आधी बदनामी (उसने कई बार आधा कहा) से वह तुरंत खुद को मुक्त कर सकता था, लेकिन अपनी इच्छाशक्ति की कमजोरी के कारण वह इतना दुखी था कि वह ऐसा नहीं कर पा रहा था... कि वह पहले से ही जानता था कि वह ऐसा करने में असमर्थ है!
और आपको स्पष्ट रूप से, पूरे विश्वास के साथ याद होगा कि उसने खुद को ठीक उसी समय चोट पहुँचाई थी।
"स्तन का यह हिस्सा?" फेत्युकोविच ने उत्सुकता से पूछा।
“स्पष्ट और आत्मविश्वास से, क्योंकि मैंने उस समय सोचा था, ‘वह प्रहार क्यों करता है?’
“जब दिल इतना नीचे हो तो क्या वह खुद को ऊपर संभाल सकता है?” और उस समय यह विचार मुझे मूर्खतापूर्ण लगा... मुझे याद है कि यह मूर्खतापूर्ण लगा था... यह मेरे दिमाग में कौंधा। इसी वजह से मुझे अभी याद आया। मैं इसे अब तक कैसे भूल गया था? उसका मतलब उस छोटे से थैले से था जब उसने कहा था कि उसके पास पैसे हैं लेकिन वह पंद्रह सौ वापस नहीं देगा। और जब उसे मोक्रो में गिरफ्तार किया गया तो वह चिल्लाया—मुझे पता है, मुझे बताया गया था—कि वह इसे अपने जीवन का सबसे शर्मनाक काम मानता है कि जब उसके पास कैटेरिना इवानोव्ना को आधा (आधा, ध्यान दें!) कर्ज चुकाने के साधन थे, तब भी वह पैसा नहीं चुका सका और उसे देने के बजाय उसकी नजरों में चोर बने रहना पसंद किया। और वह कर्ज उसके लिए कितनी यातना, कितनी यातना रहा है!” अलेयोशा ने अंत में कहा।
अभियोजक ने तुरंत हस्तक्षेप किया। उन्होंने अलेयोशा से वर्णन करने को कहा।
एक बार फिर यह सब कैसे हुआ, इस बारे में पूछा गया, और कई बार इस सवाल पर जोर दिया गया, "क्या कैदी ने किसी चीज की ओर इशारा किया था? शायद उसने बस अपनी मुट्ठी से अपनी छाती पर वार किया हो?"
“लेकिन उसने मुट्ठी से नहीं,” अलेयोशा चिल्लाया; “उसने अपने हाथ से इशारा किया था।”
मैंने अपनी उंगलियों से यहाँ, बहुत ऊपर की ओर इशारा किया... मैं इसे इस क्षण तक पूरी तरह से कैसे भूल गया था?
राष्ट्रपति ने मित्या से पूछा कि अंतिम गवाह के बारे में उसे क्या कहना है।
सबूत। मित्या ने इसकी पुष्टि करते हुए कहा कि वह अपनी छाती पर, गर्दन के ठीक नीचे रखे पंद्रह सौ रूबल की ओर इशारा कर रहा था, और यही तो उसकी सबसे बड़ी शर्मिंदगी थी। "ऐसी शर्मिंदगी जिसे मैं नकार नहीं सकता, मेरे पूरे जीवन का सबसे शर्मनाक काम," मित्या रोते हुए बोला। "मैं इसे लौटा सकता था, लेकिन नहीं लौटाया। मैंने इसे लौटाने के बजाय उसकी नज़रों में चोर बने रहना बेहतर समझा। और सबसे शर्मनाक बात तो यह थी कि मुझे पहले से ही पता था कि मुझे इसे लौटाना नहीं चाहिए! तुम सही कह रहे हो, अलेयोशा! धन्यवाद, अलेयोशा!"
इस प्रकार अलेयोशा की जिरह समाप्त हुई। महत्वपूर्ण बात यह थी कि...
इसमें सबसे चौंकाने वाली बात यह थी कि कम से कम एक तथ्य तो मिल ही गया था, और भले ही यह सबूत का एक छोटा सा टुकड़ा ही क्यों न हो, सबूत का सिर्फ एक संकेत ही क्यों न हो, फिर भी यह इस बात को साबित करने में कुछ हद तक मददगार साबित हुआ कि थैला मौजूद था और उसमें पंद्रह सौ रूबल थे, और कैदी ने मोकरो में प्रारंभिक पूछताछ के दौरान झूठ नहीं बोला था जब उसने दावा किया था कि वे पंद्रह सौ रूबल "उसके अपने" थे। अलेयोशा खुश था। लाल चेहरे के साथ वह अपनी निर्धारित सीट पर बैठ गया। वह बार-बार मन ही मन दोहरा रहा था: "मैं कैसे भूल गया? मैं इसे कैसे भूल सकता था? और अब मुझे यह कैसे याद आया?"
कैटेरिना इवानोवना को गवाह के कटघरे में बुलाया गया। जैसे ही वह अंदर दाखिल हुई,
दरबार में कुछ असाधारण घटना घटी। महिलाओं ने अपने चश्मे और दूरबीनें कसकर पकड़ लीं। पुरुषों में हलचल मच गई: कुछ लोग बेहतर दृश्य देखने के लिए खड़े हो गए। बाद में सबने कहा कि मित्या के प्रवेश करते ही उसका चेहरा पीला पड़ गया था। काले वस्त्र पहने वह विनम्रतापूर्वक, लगभग संकोच से आगे बढ़ी। उसके चेहरे से यह कहना असंभव था कि वह घबराई हुई थी; लेकिन उसकी गहरी और उदास आँखों में एक दृढ़ चमक थी। मैं यह उल्लेख करना चाहूँगा कि कई लोगों ने कहा कि उस क्षण वह विशेष रूप से सुंदर लग रही थी। वह धीरे से बोली लेकिन स्पष्ट रूप से, ताकि उसकी आवाज़ पूरे दरबार में सुनाई दे। उसने संयम से

बात की, या कम से कम संयमित दिखने की कोशिश की। अध्यक्ष ने अपनी पूछताछ सावधानीपूर्वक और बहुत सम्मानपूर्वक शुरू की, मानो "कुछ संवेदनशील मुद्दों" को छूने से डर रहे हों, और उसके गहरे दुख के प्रति सहानुभूति दिखा रहे हों। लेकिन पहले प्रश्नों में से एक के उत्तर में, कैटेरिना इवानोव्ना ने दृढ़ता से कहा कि उसकी पहले कैदी से सगाई हुई थी, "जब तक कि उसने अपनी मर्जी से मुझे छोड़ नहीं दिया..." उसने धीरे से कहा। जब उन्होंने उससे तीन हज़ार रुपये के बारे में पूछा जो उसने मित्या को अपने रिश्तेदारों को डाक से भेजने के लिए दिए थे, तो उसने दृढ़ता से कहा, "मैंने उसे पैसे सिर्फ़ भेजने के लिए नहीं दिए थे। मुझे उस समय लगा कि उसे पैसों की बहुत ज़रूरत है... मैंने उसे तीन हज़ार रुपये इस समझ के साथ दिए थे कि अगर वह चाहे तो एक महीने के भीतर डाक से भेज दे। बाद में उसे उस कर्ज़ के बारे में चिंता करने की कोई ज़रूरत नहीं थी।"
मैं उनसे पूछे गए सभी सवालों और उनके सभी जवाबों को विस्तार से नहीं दोहराऊंगा।
मैं केवल उसके साक्ष्य का सार ही प्रस्तुत करूंगा।
मुझे पूरा यकीन था कि वह जैसे ही उसे मिलेगा, वह रकम भेज देगा।
"उसे अपने पिता से पैसे मिल गए थे," उसने आगे कहा। "मुझे उसकी निस्वार्थता और ईमानदारी पर कभी संदेह नहीं हुआ... पैसों के मामलों में उसकी अत्यंत ईमानदारी पर। उसे पूरा यकीन था कि उसे अपने पिता से पैसे मिल जाएंगे, और उसने इस बारे में मुझसे कई बार बात भी की थी। मैं जानती थी कि उसका अपने पिता से झगड़ा था और मेरा हमेशा से मानना रहा है कि उसके पिता ने उसके साथ अन्याय किया था। मुझे याद नहीं कि उसने कभी अपने पिता के खिलाफ कोई धमकी दी हो। उसने निश्चित रूप से मेरे सामने कभी ऐसी कोई धमकी नहीं दी। अगर वह उस समय मेरे पास आया होता, तो मैं तुरंत उस दुर्भाग्यपूर्ण तीन हजार रूबल के बारे में उसकी चिंता दूर कर देती, लेकिन उसने मुझसे मिलने आना छोड़ दिया था... और मैं खुद ऐसी स्थिति में थी... कि मैं उसे आमंत्रित नहीं कर सकी..." और सच कहूँ तो, मुझे उस पैसे को लेकर इतना सख्त होने का कोई हक नहीं था," उसने अचानक कहा, और उसकी आवाज़ में दृढ़ निश्चय झलक रहा था। "एक बार मैं उससे तीन हज़ार से ज़्यादा की आर्थिक मदद के लिए ऋणी थी, और मैंने वह मदद ले ली थी, हालाँकि उस समय मुझे यह अंदाज़ा नहीं था कि मैं कभी अपना कर्ज चुका पाऊँगी।"
उसकी आवाज़ में एक तरह की अवज्ञा थी। तभी फ़ेत्युकोविच की बारी आई।
उन्होंने जिरह शुरू कर दी।
क्या यह घटना यहाँ नहीं, बल्कि आपके आरंभ में घटी थी?
"क्या आप उनसे परिचित हैं?" फेत्युकोविच ने सावधानी से पूछा, स्थिति का अंदाज़ा लगाते हुए, जैसे उन्हें कुछ अनुकूल संकेत मिल गया हो। मुझे यह बात संक्षेप में बतानी होगी कि यद्यपि फेत्युकोविच को पीटरबर्ग से कैटेरिना इवानोव्ना के कहने पर ही लाया गया था, फिर भी उन्हें मित्या द्वारा उन्हें दिए गए पाँच हज़ार रूबल और उनके "उनके सामने ज़मीन पर झुकने" की घटना के बारे में कुछ भी पता नहीं था। उन्होंने यह बात उनसे छिपाकर रखी और इस बारे में कुछ नहीं कहा, जो कि अजीब था। यह लगभग निश्चित रूप से माना जा सकता है कि उन्हें खुद भी अंतिम क्षण तक यह नहीं पता था कि वह दरबार में इस घटना के बारे में बोलेंगी या नहीं, और वह उस क्षण की प्रेरणा का इंतज़ार कर रही थीं।
नहीं, मैं उन पलों को कभी नहीं भूल सकती। उसने अपनी कहानी सुनाना शुरू किया।
उसने सब कुछ बता दिया, मित्या ने अलेयोशा को जो कुछ बताया था, वह सारा वाकया, उसका ज़मीन पर झुकना और उसका कारण। उसने अपने पिता और मित्या के पास जाने के बारे में बताया, और एक शब्द में भी, एक इशारे में भी यह नहीं कहा कि मित्या ने खुद उसकी बहन के ज़रिए यह प्रस्ताव रखा था कि वे "कैटरीना इवानोव्ना को भेजें" ताकि वह पैसे ले आए। उसने बड़ी उदारता से इस बात को छुपाया और ऐसा दिखाने में ज़रा भी शर्म नहीं की जैसे वह अपनी इच्छा से किसी बात पर भरोसा करते हुए उस नौजवान अधिकारी के पास गई हो... उससे पैसे मांगने के लिए। यह बहुत ही चौंकाने वाली बात थी! सुनते-सुनते मैं थरथरा गया। दरबार में सन्नाटा छा गया, सब एक-एक शब्द सुनने की कोशिश कर रहे थे। यह बेमिसाल था। यहाँ तक कि उसके जैसी ज़िद्दी और घमंडी लड़की से भी, इस तरह का खुला बयान, इस तरह का बलिदान, इस तरह का आत्म-बलिदान, अविश्वसनीय लग रहा था। और किसलिए, किसके लिए? उस आदमी को बचाने के लिए जिसने उसे धोखा दिया और अपमानित किया था, और उसके पक्ष में एक मज़बूत छाप छोड़कर, चाहे थोड़ी सी ही सही, उसे बचाने में मदद करने के लिए। और सचमुच, उस नौजवान अधिकारी की छवि, जिसने

भोली-भाली लड़की को सम्मानपूर्वक झुककर अपने आखिरी पाँच हज़ार रूबल—जो उसके पास दुनिया में सब कुछ था—दे दिए, बहुत ही सहानुभूतिपूर्ण और आकर्षक रूप में उभर कर सामने आई, लेकिन... मेरे मन में एक गहरी आशंका थी! मुझे लगा कि बाद में इस पर बदनामी हो सकती है (और वास्तव में हुई भी)। बाद में पूरे शहर में द्वेषपूर्ण हंसी के साथ यह बात दोहराई गई कि शायद कहानी पूरी नहीं है—यानी, इस कथन में कि अधिकारी ने युवती को "केवल सम्मानपूर्वक झुककर" विदा किया था। यह संकेत दिया गया कि यहाँ कुछ छूट गया है।
"और अगर कुछ भी न छिपाया गया हो, अगर यही पूरी कहानी हो," हमारी सबसे सम्मानित महिला ने कहा, "तब भी यह बहुत संदिग्ध है कि एक युवा लड़की के लिए इस तरह का व्यवहार करना प्रशंसनीय था, भले ही वह अपने पिता को बचाने के लिए ही क्यों न हो।"
और क्या कैटेरिना इवानोवना, अपनी बुद्धिमत्ता और अपनी रुग्णता के साथ,
संवेदनशीलता के कारण, क्या वह यह नहीं समझ पाई कि लोग इस तरह की बातें करेंगे? उसे यह समझ में आ गया होगा, फिर भी उसने सब कुछ बताने का फैसला कर लिया। बेशक, उसकी कहानी की सच्चाई को लेकर ये सारे छोटे-छोटे संदेह बाद में ही उठे और शुरू में तो सभी इससे बहुत प्रभावित हुए। जहाँ तक न्यायाधीशों और वकीलों की बात है, वे कैटेरिना इवानोव्ना की बात श्रद्धापूर्वक, लगभग शर्मिंदगी भरी चुप्पी में सुनते रहे। अभियोजक ने इस विषय पर एक भी प्रश्न पूछने का साहस नहीं किया। फेत्युकोविच ने उसके सामने झुककर प्रणाम किया। ओह, वह लगभग विजयी महसूस कर रहा था! बहुत कुछ हासिल हो गया था। एक व्यक्ति का उदारतापूर्वक अपने आखिरी पाँच हज़ार दे देना और फिर उसी व्यक्ति का अपने पिता की हत्या करके उनसे तीन हज़ार लूट लेना—यह विचार बहुत ही असंगत लग रहा था। फेत्युकोविच को लगा कि अब कम से कम चोरी का आरोप तो लगभग साबित हो चुका है। "मामला" पूरी तरह से एक अलग ही रूप ले चुका था। मित्या के प्रति सहानुभूति की लहर दौड़ गई। जहाँ तक उसकी बात है... मुझे बताया गया कि एक-दो बार, जब कैटेरिना इवानोव्ना गवाही दे रही थीं, तो वह अपनी सीट से उछल पड़े, फिर वापस बैठ गए और अपना चेहरा अपने हाथों में छिपा लिया। लेकिन जब उन्होंने गवाही समाप्त कर ली, तो वह अचानक सिसकते हुए रोने लगे:
“काट्या, तुमने मुझे क्यों बर्बाद कर दिया?” और उसकी सिसकियाँ चारों ओर सुनाई दे रही थीं।
अदालत। लेकिन उसने तुरंत खुद को संभाला और फिर से चिल्लाया:
अब मैं दोषी ठहराया गया हूँ!
फिर वह दांत भींचे हुए और बाहें फैलाए अपनी जगह पर अकड़कर बैठ गया।
उसके सीने पर। कैटेरिना इवानोव्ना दरबार में ही रहीं और अपनी जगह पर बैठ गईं। उनका चेहरा पीला पड़ गया था और वे नज़रें झुकाए बैठी थीं। उनके पास बैठे लोगों ने बताया कि वे काफी देर से बुखार की तरह कांप रही थीं। ग्रुशेंका को बुलाया गया।
मैं उस अचानक आई विपत्ति की ओर बढ़ रहा हूँ जो शायद अंतिम होगी।
मित्या के पतन का कारण। क्योंकि मुझे पूरा विश्वास है, और सभी को भी—बाद में सभी वकीलों ने भी यही कहा—कि यदि यह घटना न घटी होती, तो कैदी को कम से कम दया याचिका तो मिल ही जाती। लेकिन उस पर बाद में चर्चा करेंगे। पहले ग्रुशेंका के बारे में कुछ बातें।
वह भी पूरी तरह से काले रंग के कपड़ों में सजी हुई थी, साथ ही उसका शानदार काला रंग भी।
अपने कंधों पर शॉल ओढ़े, वह अपने सहज, शांत कदमों से गवाह-कट्टर की ओर चलीं, उनकी चाल में हल्का सा लड़खड़ाना आम बात है, जो कि सुडौल महिलाओं में आम है। उन्होंने राष्ट्रपति को स्थिर निगाहों से देखा, न तो अपनी आँखें दाईं ओर घुमाईं और न ही बाईं ओर। मेरे विचार से उस समय वह बेहद खूबसूरत लग रही थीं, और बिल्कुल भी पीली नहीं थीं, जैसा कि बाद में महिलाओं ने आरोप लगाया। उन्होंने यह भी कहा कि उनके चेहरे पर एकाग्रता और द्वेष का भाव था। मेरा मानना है कि वह बस चिढ़ गई थीं और हमारे सनसनीखेज जनता की तिरस्कारपूर्ण और जिज्ञासु निगाहों से बुरी तरह वाकिफ थीं। वह स्वाभिमानी थीं और अपमान बर्दाश्त नहीं कर सकती थीं। वह उन लोगों में से थीं जो अपमान के मात्र संकेत पर भड़क उठती हैं, क्रोधित हो जाती हैं और बदला लेने के लिए बेताब हो जाती हैं। उनमें थोड़ी सी झिझक भी थी, और अपनी ही झिझक पर आंतरिक शर्म भी, इसलिए यह कोई आश्चर्य की बात नहीं थी कि उनका लहजा बदलता रहता था। एक पल वह क्रोधित, तिरस्कारपूर्ण और कठोर होती थीं, और दूसरे पल आत्म-निंदा का भाव होता था। कभी-

कभी वह ऐसे बोलती थीं मानो कोई जोखिम भरा कदम उठा रही हों; जैसे कि वह सोच रही हो, “जो भी हो, मैं कहूँगी...” फ्योदोर पावलोविच से अपनी जान-पहचान के बारे में बात करते हुए उसने संक्षिप्त रूप से कहा, “यह सब बकवास है, और क्या यह मेरी गलती थी कि वह मुझे परेशान कर रहा था?” लेकिन एक मिनट बाद उसने आगे कहा, “यह सब मेरी गलती थी। मैं उन दोनों पर हंस रही थी—बूढ़े आदमी पर भी और उस पर भी —और मैंने ही उन दोनों को इस स्थिति में पहुँचाया। यह सब मेरी वजह से हुआ।”
सैमसनोव का नाम किसी तरह सामने आ गया। "इससे किसी को कोई लेना-देना नहीं है," उसने कहा।
ग्रुशेंका ने तुरंत ही बड़े ही ढीठ और अड़ियल अंदाज़ में जवाब दिया, “वह मेरे उपकारक थे; उन्होंने मुझे तब सहारा दिया जब मेरे पास पहनने के लिए कुछ नहीं था, जब मेरे परिवार ने मुझे घर से निकाल दिया था।”
राष्ट्रपति ने बड़ी विनम्रता से उन्हें याद दिलाया कि उन्हें सवालों के सीधे जवाब देने होंगे, अनावश्यक बातों में नहीं जाना है। ग्रुशेंका का चेहरा लाल हो गया और उनकी आँखों में गुस्सा झलक रहा था।
उसने नोटों वाला लिफाफा देखा नहीं था, बल्कि केवल सुना था।
मुझे पता चला कि फ्योदोर पावलोविच के पास "उस दुष्ट" के लिए तीन हजार के नोटों से भरा एक लिफाफा था। "लेकिन यह सब मूर्खता थी। मैं तो बस हंस रहा था। मैं किसी भी काम के लिए उसके पास नहीं जाता।"
“तुम ‘उस दुष्ट व्यक्ति’ से किसका जिक्र कर रहे हो?”
अभियोजक।
“उस नौकर, स्मर्ड्याकोव ने अपने मालिक की हत्या कर उसे फांसी पर लटका दिया।”
वह कल रात खुद ही चला गया।
उनसे तुरंत पूछा गया कि उनके पास ऐसा करने का क्या आधार है।
यह एक निश्चित आरोप था; लेकिन ऐसा प्रतीत हुआ कि उसके पास भी इसके लिए कोई आधार नहीं था।
“दिमित्री फ्योदोरोविच ने मुझे खुद ऐसा बताया था; आप उन पर विश्वास कर सकते हैं।
“हमारे बीच आई उस औरत ने उसे बर्बाद कर दिया है; वही इन सब की जड़ है, मैं आपको बता दूँ,” ग्रुशेंका ने आगे कहा। वह नफरत से कांप रही थी और उसकी आवाज़ में बदले की भावना झलक रही थी। उससे फिर पूछा गया कि वह किसका जिक्र कर रही है। “वह युवती, कटेरीना इवानोव्ना। उसने मुझे बुलवाया, मुझे चॉकलेट दी, मुझे लुभाने की कोशिश की। उसमें ज़रा भी शर्म नहीं है, मैं आपको बता सकती हूँ...”
इस मौके पर राष्ट्रपति ने उन्हें सख्ती से फटकार लगाई और उनसे संयम बरतने की विनती की।
उसकी भाषा। लेकिन ईर्ष्यालु स्त्री का दिल जल रहा था, और उसे इस बात की परवाह नहीं थी कि वह क्या कर रही है।
अभियोजक ने पूछा, "कैदी को मोकरो में कब गिरफ्तार किया गया था?"
“सबने तुम्हें अगले कमरे से भागते हुए और चिल्लाते हुए देखा और सुना: ‘यह सब मेरी गलती है। हम साथ में साइबेरिया चलेंगे!’ तो क्या तुम पहले से ही मानते थे कि उसने अपने पिता की हत्या की है?”
“मुझे याद नहीं कि उस समय मुझे कैसा महसूस हुआ था,” ग्रुशेंका ने उत्तर दिया। “हर
एक चिल्ला रहा था कि उसने अपने पिता को मार डाला है, और मुझे लगा कि यह मेरी गलती है, कि मेरी वजह से ही उसने अपने पिता की हत्या की है। लेकिन जब उसने कहा कि वह दोषी नहीं है, तो मैंने तुरंत उस पर विश्वास कर लिया, और मैं अब भी उस पर विश्वास करता हूँ और हमेशा करता रहूँगा। वह झूठ बोलने वाला आदमी नहीं है।
फेट्युकोविच ने अपनी जिरह शुरू की। मुझे याद है कि अन्य बातों के अलावा
उसने रकितिन के बारे में और उन पच्चीस रूबल के बारे में पूछा जो "आपने एलेक्सी फ्योदोरोविच करामाज़ोव को आपसे मिलने लाने के लिए उसे दिए थे।"
“उसके द्वारा पैसे लेने में कुछ भी अजीब नहीं था,” उसने ताना मारा।
ग्रुशेंका ने गुस्से और तिरस्कार से कहा, "वह हमेशा मुझसे पैसे मांगता रहता था: वह मुझसे कम से कम तीस रूबल प्रति माह लेता था, मुख्यतः विलासिता की चीजों के लिए: उसके पास मेरी मदद के बिना भी अपना गुजारा करने के लिए पर्याप्त पैसा था।"
"आपको श्री रकितिन के प्रति इतना उदार होने के लिए किस बात ने प्रेरित किया?" फेट्युकोविच ने पूछा।
राष्ट्रपति की ओर से एक असहज कदम के बावजूद।
“अरे, वो तो मेरा चचेरा भाई है। उसकी माँ मेरी माँ की बहन थी। लेकिन वो...”

वह हमेशा मुझसे विनती करता था कि मैं यहां किसी को भी इसके बारे में न बताऊं, क्योंकि वह मुझसे बहुत शर्मिंदा है।
यह तथ्य सभी के लिए पूरी तरह से आश्चर्यजनक था; कस्बे में किसी को भी इसकी जानकारी नहीं थी।
मठ में, मित्या को भी इसके बारे में पता नहीं था। मुझे बताया गया कि राकितिन शर्म से लाल हो गया था।
ग्रुशेंका को अदालत में आने से पहले ही किसी तरह पता चल गया था कि उसने मित्या के खिलाफ गवाही दी है, इसलिए वह गुस्से में थी। राकितिन के भाषण, उसके महान विचारों, दास प्रथा और रूस की राजनीतिक अव्यवस्था पर उसके हमलों का जनता पर जो भी असर था, वह इस बार पूरी तरह से नष्ट हो गया।
फेत्युकोविच संतुष्ट था; यह एक और वरदान था। ग्रुशेंका की जिरह ज़्यादा देर तक नहीं चली और ज़ाहिर है, उसकी गवाही में कुछ भी नया नहीं हो सकता था। उसने जनता पर बहुत ही अप्रिय प्रभाव छोड़ा; जब उसने अपनी गवाही समाप्त की और कटरीना इवानोव्ना से काफी दूरी पर अदालत में वापस बैठ गई, तो सैकड़ों तिरस्कार भरी निगाहें उस पर टिकी हुई थीं। मित्या उसकी गवाही के दौरान चुप रहा। वह मानो पत्थर का बन गया हो, उसकी आँखें ज़मीन पर टिकी हुई थीं।
इवान को गवाही देने के लिए बुलाया गया था।

अध्याय 5

एक अचानक आई आपदा

मैं यह उल्लेख करना चाहूंगा कि उन्हें अलेयोशा के समक्ष पेश होने के लिए बुलाया गया था। लेकिन अदालत के सेवक ने अध्यक्ष को बताया कि बीमारी या किसी प्रकार के दौरे के कारण गवाह इस समय उपस्थित नहीं हो सकता, लेकिन ठीक होते ही वह अपना बयान देने के लिए तैयार है। लेकिन ऐसा प्रतीत होता है कि किसी ने यह नहीं सुना और यह बात बाद में ही सामने आई।
उनका प्रवेश शुरू में लगभग किसी का ध्यान आकर्षित किए बिना हुआ। प्रधानाचार्य
गवाहों, विशेषकर दो प्रतिद्वंद्वी महिलाओं से पहले ही पूछताछ हो चुकी थी। जिज्ञासा फिलहाल शांत हो गई थी; जनता लगभग थक चुकी थी। अभी कई और गवाहों की सुनवाई बाकी थी, जिनके पास शायद पहले से दी गई जानकारी के बाद देने के लिए कुछ खास नहीं बचा था। समय बीत रहा था। इवान असाधारण धीमी गति से, किसी की ओर देखे बिना, सिर झुकाए हुए आगे बढ़ा, मानो किसी गहरे विचार में डूबा हुआ हो। उसके कपड़े बेदाग थे, लेकिन उसका चेहरा, कम से कम मुझ पर, एक पीड़ादायक प्रभाव छोड़ गया: उसमें एक उदासी थी, एक मरते हुए आदमी जैसी। उसकी आँखें बेजान थीं; उसने उन्हें उठाया और धीरे-धीरे दरबार में चारों ओर देखा। अलेयोशा अपनी सीट से उछल पड़ा और कराह उठा, "आह!" मुझे वह याद है, लेकिन उस पर शायद ही किसी ने ध्यान दिया हो।
राष्ट्रपति ने उन्हें यह बताकर बात शुरू की कि वे गवाह हैं, न कि
शपथ ली गई थी कि वह जवाब दे सकता है या जवाब देने से इनकार कर सकता है, लेकिन निश्चित रूप से उसे अपनी अंतरात्मा के अनुसार गवाही देनी होगी, इत्यादि। इवान सुनता रहा और उसे खाली निगाहों से देखता रहा, लेकिन धीरे-धीरे उसके चेहरे पर मुस्कान आ गई, और जैसे ही राष्ट्रपति ने आश्चर्य से उसकी ओर देखते हुए अपनी बात समाप्त की, वह खुलकर हंस पड़ा।
“अच्छा, और क्या?” उसने ऊँची आवाज़ में पूछा। दरबार में सन्नाटा छा गया; मानो कुछ अजीब सा महसूस हो रहा था।

राष्ट्रपति में बेचैनी के लक्षण दिखाई दिए।
“आप... शायद अभी भी अस्वस्थ हैं?” उसने चारों ओर देखते हुए पूछना शुरू किया।
द्वारपाल।
“आप चिंता न करें, महाराज, मैं बिल्कुल ठीक हूँ और बता सकता हूँ।”
“क्या आपको कुछ दिलचस्प लगा?” इवान ने अचानक शांत और आदरपूर्ण लहजे में उत्तर दिया।
“क्या आपको कोई विशेष संदेश देना है?” राष्ट्रपति ने पूछा।
फिर भी, अविश्वास के साथ।
इवान ने नीचे देखा, कुछ सेकंड इंतजार किया और फिर अपना सिर ऊपर उठाया,
लगभग हकलाते हुए उत्तर दिया:
“नहीं... मेरे पास नहीं है। मेरे पास कुछ खास नहीं है।”
उन्होंने उससे सवाल पूछने शुरू कर दिए। उसने मानो अनिच्छा से जवाब दिया।
अत्यंत संक्षिप्तता से, एक प्रकार की घृणा के साथ जो धीरे-धीरे बढ़ती गई, हालांकि उन्होंने तर्कसंगत ढंग से उत्तर दिया। कई प्रश्नों के उत्तर में उन्होंने कहा कि उन्हें नहीं पता। उन्हें दिमित्री के साथ अपने पिता के वित्तीय संबंधों के बारे में कुछ भी पता नहीं था। उन्होंने आगे कहा, "मुझे इस विषय में कोई रुचि नहीं थी।" अपने पिता की हत्या की धमकियों के बारे में उन्होंने कैदी से सुना था। लिफाफे में मौजूद पैसों के बारे में उन्होंने स्मरद्याकोव से सुना था।
“वही बात बार-बार,” उसने अचानक बीच में ही रोकते हुए कहा।
थकावट का भाव। "मुझे अदालत को कुछ खास नहीं बताना है।"
“मैं देख रहा हूँ कि आप अस्वस्थ हैं और आपकी भावनाओं को समझता हूँ,” राष्ट्रपति ने कहा।
शुरू किया।
उन्होंने अभियोजक और बचाव पक्ष के वकील की ओर मुड़कर आमंत्रित किया
यदि आवश्यक हो तो उन्हें गवाह से पूछताछ करने के लिए कहा गया, तभी इवान ने अचानक थकी हुई आवाज में पूछा:
"मुझे जाने दीजिए, महाराज, मैं बहुत अस्वस्थ महसूस कर रहा हूँ।"
और ये कहते हुए, बिना अनुमति का इंतजार किए, वह चलने के लिए मुड़ गया।
अदालत से बाहर। लेकिन चार कदम चलने के बाद वह वहीं रुक गया, मानो उसने कोई फैसला कर लिया हो, धीरे से मुस्कुराया और वापस चला गया।
“मैं एक किसान लड़की की तरह हूँ, महाराज... आप जानते हैं। यह कैसे होता है?”
जाऊं? ‘मैं खड़ी हो जाऊंगी अगर मेरा मन करेगा, और अगर मन नहीं करेगा तो नहीं खड़ी होऊंगी।’ वे उसे शादी के लिए चर्च ले जाने के लिए उसका सराफान पहनाने की कोशिश कर रहे थे, और उसने कहा, ‘मैं खड़ी हो जाऊंगी अगर मेरा मन करेगा, और अगर मन नहीं करेगा तो नहीं खड़ी होऊंगी।’... यह किसानों के बारे में किसी किताब में है।
“इसका क्या मतलब है?” राष्ट्रपति ने कड़े स्वर में पूछा। “अरे, ये,” इवान ने अचानक नोटों का एक बंडल निकाला। “ये रहा...”
पैसा... वो नोट जो उस लिफाफे में पड़े थे” (उसने उस मेज की ओर इशारा किया जिस पर सबूत रखे थे),
“जिनके लिए हमारे पिता की हत्या की गई थी। मैं उन्हें कहाँ रखूँ? श्रीमान अधीक्षक, उन्हें ले जाइए।”
अदालत के सेवक ने सारी फाइलें लीं और राष्ट्रपति को सौंप दीं। “अगर यह वही पैसा है तो यह आपके पास कैसे आया होगा?”
"पैसा?" राष्ट्रपति ने आश्चर्य से पूछा।
“मुझे ये कल स्मर्ड्याकोव से, उस हत्यारे से मिले थे... मैं था
उसके साथ फांसी लगाने से ठीक पहले। मेरे भाई ने नहीं, बल्कि उसी ने हमारे पिता की हत्या की थी। उसने उनका कत्ल किया और मैंने उसे ऐसा करने के लिए उकसाया था... भला कौन अपने पिता की मौत नहीं चाहेगा?
“क्या आप होश में हैं?” राष्ट्रपति के मुँह से अनायास ही यह सवाल निकल पड़ा। “मुझे लगता है कि मैं होश में हूँ... बिल्कुल वैसे ही जैसे बाकी सब हैं, मेरा दिमाग भी खराब है।”

तुममें से... इन सभी... बदसूरत चेहरों की तरह।" वह अचानक दर्शकों की ओर मुड़ा। "मेरे पिता की हत्या कर दी गई है और वे दिखावा कर रहे हैं कि वे भयभीत हैं," उसने भयंकर क्रोध से कहा। "वे आपस में यह ढोंग करते रहते हैं। झूठे! वे सब अपने पिता की मृत्यु चाहते हैं। एक सरीसृप दूसरे को खा जाता है... अगर हत्या न हुई होती, तो वे क्रोधित होकर उदास होकर घर चले जाते। वे तमाशा चाहते हैं! पनेम एट सर्कसेन्सेस। हालांकि मैं भी बोलने वाला हूँ! क्या आपके पास पानी है? भगवान के लिए मुझे एक घूंट पानी पिलाओ!" उसने अचानक अपना सिर पकड़ लिया।

द्वारपाल तुरंत उसके पास पहुँचा। अलेयोशा उछल पड़ा और चिल्लाया, “वह है
बीमार। उस पर विश्वास मत करो: उसे दिमागी बुखार है।” कैटेरिना इवानोव्ना अचानक अपनी सीट से उठी और भय से कांपते हुए इवान को घूरने लगी। मित्या खड़ा हुआ और लालची निगाहों से अपने भाई को देखने लगा और एक अजीब सी मुस्कान के साथ उसकी बातें सुनने लगा।

“आप लोग परेशान मत होइए। मैं पागल नहीं हूँ, मैं तो बस एक हत्यारा हूँ,” इवान
फिर से शुरू हुआ। "आप एक हत्यारे से वाक्पटुता की उम्मीद नहीं कर सकते," उसने अचानक किसी कारण से कहा और एक अजीब सी हंसी हंस दी।

अभियोजक स्पष्ट रूप से निराशा व्यक्त करते हुए राष्ट्रपति के सामने झुक गया। दोनों
अन्य न्यायाधीश उत्तेजित फुसफुसाहट में बात कर रहे थे। फेट्युकोविच ने ध्यान से सुना: हॉल में सन्नाटा छाया हुआ था। राष्ट्रपति को अचानक होश आया।

“गवाह, आपके शब्द यहाँ समझ से परे और असंभव हैं। शांत हो जाइए।”

अगर आप कर सकते हैं, तो खुद को सामने लाएं और अपनी कहानी सुनाएं... अगर आपके पास वाकई कुछ कहने को है। आप अपने कथन की पुष्टि कैसे कर सकते हैं... अगर आप वाकई भ्रमित नहीं हैं?

“बस यही बात है। मेरे पास कोई सबूत नहीं है। वह कमीना स्मर्ज्याकोव तुम्हें नहीं भेजेगा।”

दूसरी दुनिया से मिले सबूत... एक लिफाफे में। आप सिर्फ लिफाफों के बारे में सोचते हैं—एक ही काफी है। मेरे पास कोई गवाह नहीं है... सिवाय शायद एक के," उसने सोच-समझकर मुस्कुराते हुए कहा।

आपका गवाह कौन है?

“महामहिम, उसकी एक पूंछ है, और यह असामान्य बात होगी! Le diable

“कोई मतलब नहीं! ध्यान मत दो: वह एक तुच्छ, दयनीय शैतान है,” उसने अचानक कहा। वह हँसना बंद करके मानो गोपनीय ढंग से बोलने लगा। “वह यहीं कहीं है, इसमें कोई शक नहीं—शायद उस मेज़ के नीचे, जिस पर सबूत रखे हैं। अगर वहाँ नहीं, तो कहाँ बैठेगा? देखो, मेरी बात सुनो। मैंने उससे कहा कि मैं चुप नहीं रहना चाहता, और उसने भूवैज्ञानिक प्रलय के बारे में बात करना शुरू कर दिया... मूर्खता! आओ, उस राक्षस को छोड़ दो... वह भजन गा रहा है। क्योंकि उसका दिल हल्का है! यह सड़क पर एक शराबी आदमी की तरह है जो चिल्ला रहा है कि 'वांका पीटर्सबर्ग चली गई', और मैं दो सेकंड की खुशी के लिए खरबों-खरब दे देता। तुम मुझे नहीं जानते! ओह, यह सब कितना बेवकूफी भरा है! आओ, उसकी जगह मुझे ले जाओ! मैं व्यर्थ नहीं आया... क्यों, क्यों सब कुछ इतना बेवकूफी भरा है?...”

और उसने धीरे-धीरे, मानो चिंतन करते हुए, अपने चारों ओर देखना शुरू किया।

फिर से। लेकिन अब दरबार में काफी हलचल मची हुई थी। अलेयोशा उसकी ओर दौड़ा, लेकिन दरबारी ने इवान को बांह से पकड़ लिया था।

“तुम किसलिए आए हो?” उसने उस आदमी के चेहरे को घूरते हुए चिल्लाकर कहा, और
अचानक उसने उसे कंधों से पकड़कर ज़मीन पर पटक दिया। लेकिन पुलिस मौके पर मौजूद थी और उसने उसे पकड़ लिया। वह ज़ोर-ज़ोर से चीखने लगा। और जब तक उसे ले जाया जा रहा था, वह लगातार कुछ अस्पष्ट बातें चिल्लाता रहा।

पूरी अदालत में अफरा-तफरी मच गई। मुझे याद नहीं है।

सब कुछ जैसा हुआ वैसा ही हुआ। मैं खुद भी उत्तेजित थी और समझ नहीं पाई। मुझे बस इतना पता है कि बाद में, जब सब कुछ शांत हो गया और सबको समझ आ गया कि क्या हुआ था, तो अदालत के कर्मचारी को फटकार लगाने के लिए बुलाया गया, हालाँकि उसने बहुत ही तर्कसंगत तरीके से समझाया कि गवाह बिल्कुल ठीक था, डॉक्टर ने उसे एक घंटे पहले देखा था, जब उसे हल्का चक्कर आया था, लेकिन अदालत में आने से पहले तक वह लगातार बोल रहा था, इसलिए कुछ भी पहले से अनुमान नहीं लगाया जा सकता था—

दरअसल, उसने गवाही देने पर जोर दिया था। लेकिन इससे पहले कि सब लोग पूरी तरह से संभल पाते और इस दृश्य से उबर पाते, एक और घटना घट गई। कैटरीना इवानोव्ना को हिस्टीरिया का दौरा पड़ गया। वह जोर-जोर से रोने और चीखने लगी, लेकिन अदालत छोड़ने से इनकार कर दिया, संघर्ष किया और उन्हें न हटाने की विनती की। अचानक वह अध्यक्ष से चिल्लाई:
मुझे अभी और सबूत देने होंगे... अभी! ये रहा एक
दस्तावेज़, एक पत्र... इसे लो, जल्दी पढ़ो, जल्दी! यह उस राक्षस का पत्र है... उस आदमी का, वहाँ!" उसने मित्या की ओर इशारा करते हुए कहा। "उसने अपने पिता को मारा है, तुम खुद देखोगे। उसने मुझे लिखा है कि वह अपने पिता को कैसे मारेगा! लेकिन दूसरा बीमार है, वह बीमार है, वह बेहोश है!" वह बेकाबू होकर चिल्लाती रही।
अदालत के कर्मचारी ने वह दस्तावेज़ राष्ट्रपति को सौंप दिया, और
वह अपनी कुर्सी पर बैठते हुए, अपना चेहरा हाथों में छिपाकर, सिसकते हुए और खामोश होकर रोने लगी, उसका पूरा शरीर कांप रहा था और वह अदालत से निकाले जाने के डर से हर आवाज़ को दबा रही थी।
उसने जो दस्तावेज़ पेश किया था, वह वही पत्र था जो मित्या ने "मेट्रोपोलिस" सराय में लिखा था, जिसे इवान ने "गणितीय प्रमाण" बताया था। अफसोस! उसकी गणितीय सत्यता को मान्यता मिल गई थी, और अगर वह पत्र न होता, तो मित्या शायद अपनी मौत से बच जाता या कम से कम उसकी मौत इतनी भयानक न होती। मैं दोहराता हूँ, हर छोटी-छोटी बात पर ध्यान देना मुश्किल था। इसके बाद जो हुआ, वह अभी भी मेरे दिमाग में उलझन में है। मुझे लगता है कि अध्यक्ष ने तुरंत वह दस्तावेज़ न्यायाधीशों, जूरी और दोनों पक्षों के वकीलों को सौंप दिया होगा। मुझे बस इतना याद है कि उन्होंने गवाह से पूछताछ कैसे शुरू की। अध्यक्ष द्वारा धीरे से पूछे जाने पर कि क्या वह पूरी तरह से संभल गई हैं, कैटेरिना इवानोवना ने उतावलेपन से कहा:
"मैं तैयार हूँ, मैं तैयार हूँ! मैं आपके सवालों का जवाब देने के लिए पूरी तरह से सक्षम हूँ," उन्होंने आगे कहा। जाहिर तौर पर वह अब भी इस बात से डरी हुई थी कि उसे किसी तरह गवाही देने से रोक दिया जाएगा। उससे विस्तार से यह बताने को कहा गया कि यह पत्र क्या था और उसे किन परिस्थितियों में प्राप्त हुआ था। मुझे यह अपराध होने से एक दिन पहले मिला था, लेकिन इसे उसने लिखा था।
उससे एक दिन पहले, सराय में—यानी अपराध करने से दो दिन पहले। देखो, यह किसी नोट पर लिखा है!" वह हांफते हुए बोली। "उस समय वह मुझसे नफरत करता था, क्योंकि उसने घिनौना व्यवहार किया था और उस औरत के पीछे भाग रहा था... और क्योंकि उस पर मेरा तीन हज़ार का कर्ज़ था... ओह! वह अपनी ही नीचता के कारण उस तीन हज़ार से अपमानित हुआ था! उस तीन हज़ार के बारे में ये सब ऐसे हुआ। मैं आपसे विनती करती हूँ, मैं आपसे आग्रह करती हूँ, मेरी बात सुनिए। अपने पिता की हत्या करने से तीन हफ्ते पहले, वह एक सुबह मेरे पास आया। मैं जानती थी कि उसे पैसों की ज़रूरत है, और उसे ये किसलिए चाहिए। हाँ, हाँ—उस औरत को पाने और उसे ले जाने के लिए। मैं तब जान गई थी कि उसने मेरे साथ बेवफाई की है और मुझे छोड़ने का इरादा रखता है, और ये मैं ही थी, मैं ही थी, जिसने उसे वो पैसे दिए, मैंने उसे ये कहकर दिए कि वो इसे मेरी बहन को मॉस्को भेज देगा। और जब मैंने उसे पैसे दिए, तो मैंने उसकी आँखों में देखकर कहा कि वह जब चाहे भेज सकता है, 'एक महीने में भेज दे तो चलेगा।' भला वह यह कैसे नहीं समझ पाया कि मैं लगभग उसके सामने ही कह रहा था, 'तुम मुझसे बेवफ़ाई करने के लिए पैसे चाहते हो, तो ये लो तुम्हारे लिए। मैं तुम्हें खुद दे रहा हूँ। ले लो, अगर तुममें इतनी भी इज़्ज़त नहीं है कि तुम इसे ले लो!' मैं उसकी असलियत जानना चाहता था, और नतीजा क्या हुआ? उसने पैसे ले लिए, ले लिए, और उस औरत के साथ एक ही रात में उड़ा दिए... लेकिन वह जानता था, वह जानता था कि मुझे सब पता है। मैं तुम्हें यकीन दिलाता हूँ कि वह यह भी समझ गया था कि मैंने उसे ये पैसे उसकी परीक्षा लेने के लिए दिए थे, यह देखने के लिए कि क्या उसमें इतनी इज़्ज़त नहीं है कि वह मुझसे पैसे ले ले। मैंने उसकी आँखों में देखा और उसने मेरी आँखों में, और वह सब समझ गया और उसने पैसे ले लिए—वह मेरे पैसे लेकर भाग गया!
"यह सच है, कात्या," मित्या अचानक दहाड़ते हुए बोला, "मैंने तुम्हारी आँखों में देखा था।"
और मुझे पता था कि तुम मेरा अपमान कर रहे हो, फिर भी मैंने तुम्हारा पैसा ले लिया। मुझे बदमाश समझो, मुझे नीचा समझो, तुम सब! मैं इसी लायक था!
राष्ट्रपति चिल्लाए, "कैदी, एक और शब्द बोला तो मैं तुझे मौत की सजा सुना दूंगा।"
निकाला गया।"

“वह पैसा उसके लिए एक पीड़ा था,” कात्या ने आवेगपूर्ण स्वर में आगे कहा।
जल्दी। “वह मुझे इसका एहसान चुकाना चाहता था। वह चाहता था, यह सच है; लेकिन उसे उस औरत के लिए भी पैसों की ज़रूरत थी। इसलिए उसने अपने पिता की हत्या कर दी, लेकिन मुझे पैसे नहीं दिए और उसके साथ उस गाँव चला गया जहाँ उसे गिरफ़्तार कर लिया गया। वहाँ भी उसने अपने पिता की हत्या के बाद चुराए हुए पैसे उड़ा दिए। और हत्या से एक दिन पहले उसने मुझे यह पत्र लिखा। लिखते समय वह नशे में था। मैंने इसे उसी समय देख लिया था। उसने इसे बदले की भावना से लिखा था, और उसे पूरा यकीन था, बिल्कुल यकीन था, कि मैं इसे कभी किसी को नहीं दिखाऊँगी, चाहे वह उसे मार ही क्यों न डाले, वरना वह इसे लिखता ही नहीं। क्योंकि वह जानता था कि मैं बदला लेकर उसे बर्बाद नहीं करना चाहूँगी! लेकिन इसे पढ़ो, ध्यान से पढ़ो—और भी ध्यान से, कृपया—और तुम देखोगे कि उसने अपने पत्र में सब कुछ पहले ही बता दिया था, कि वह अपने पिता को कैसे मारेगा और उसका पैसा कहाँ रखा है। देखो, कृपया, इसे नज़रअंदाज़ मत करो, वहाँ एक वाक्य है, 'इवान के जाते ही मैं उसे मार डालूँगा।' उसने ऐसा सोचा था। “उसने पहले से ही सब कुछ तय कर लिया था कि वह उसे कैसे मारेगा,” कैटेरिना इवानोव्ना ने ज़हरीले और द्वेषपूर्ण अंदाज़ में दरबार की ओर इशारा करते हुए कहा। ओह! यह स्पष्ट था कि उसने उस पत्र की हर पंक्ति का अध्ययन किया था और उसमें छिपे हर अर्थ को समझ लिया था। “अगर वह नशे में न होता, तो वह मुझे पत्र न लिखता; लेकिन देखो, सब कुछ पहले से ही लिखा हुआ है, ठीक वैसे ही जैसे उसने बाद में हत्या की। पूरी योजना!” उसने उन्माद में कहा।
अब वह अपने ऊपर पड़ने वाले सभी परिणामों की परवाह नहीं करती थी, इसमें कोई संदेह नहीं था।
उसे एक महीने पहले ही इसका आभास हो गया था, क्योंकि शायद तब भी गुस्से से कांपते हुए वह सोच रही थी कि इसे मुकदमे में पेश करे या नहीं। अब उसने घातक कदम उठा लिया था। मुझे याद है कि क्लर्क ने तुरंत बाद वह पत्र जोर से पढ़ा था। उसका गहरा प्रभाव पड़ा। उन्होंने मित्या से पूछा कि क्या वह पत्र लिखने की बात स्वीकार करता है।
“ये मेरा है, मेरा!” मित्या चिल्लाया। “मुझे इसे लिखना ही नहीं चाहिए था, अगर मैंने इसे लिखा न होता तो!” नशे में था! ...कात्या, हमने कई बातों पर एक-दूसरे से नफरत की है, लेकिन मैं कसम खाता हूँ, मैं कसम खाता हूँ कि मैंने तुमसे नफरत करते हुए भी तुमसे प्यार किया, और तुमने मुझसे प्यार नहीं किया!
वह निराशा में अपने हाथ मलते हुए अपनी सीट पर वापस बैठ गया। अभियोजक और बचाव पक्ष के वकील ने उससे जिरह शुरू कर दी, मुख्य रूप से यह पता लगाने के लिए कि किस बात ने उसे ऐसा दस्तावेज़ छिपाने के लिए प्रेरित किया और उसकी गवाही के लहजे और भावना को समझने के लिए, जो कुछ देर पहले बिल्कुल अलग थी।
“हां, हां। मैं अभी झूठ बोल रहा था। मैं अपनी इज्जत के खिलाफ झूठ बोल रहा था।”
“मेरी अंतरात्मा मुझे कचोटती रही, पर मैं उसे बचाना चाहती थी, क्योंकि उसने मुझसे इतनी नफरत और घृणा की है!” कात्या पागलों की तरह रोते हुए बोली। “ओह, उसने मुझे बहुत बुरी तरह से अपमानित किया है, उसने हमेशा मुझे अपमानित किया है, और क्या तुम जानती हो, उसने मुझे उसी क्षण से अपमानित करना शुरू कर दिया जब मैंने उस पैसे के लिए उसके सामने सिर झुकाया था। मैंने देखा था... मुझे उस समय तुरंत महसूस हुआ था, लेकिन लंबे समय तक मुझे इस पर विश्वास नहीं हुआ। मैंने कितनी बार उसकी आँखों में पढ़ा है, ‘तुम तो अपनी मर्जी से आई हो।’ ओह, वह समझ नहीं पाया, उसे पता ही नहीं था कि मैं उसके पास क्यों भागी, वह नीचता के अलावा कुछ और नहीं सोच सकता, उसने मुझे अपने हिसाब से परखा, उसने सोचा कि हर कोई उसके जैसा है!” कात्या गुस्से से, पूरी तरह से पागलों की तरह फुफकारते हुए बोली। “और वह मुझसे सिर्फ इसलिए शादी करना चाहता था, क्योंकि मुझे विरासत में दौलत मिली थी, सिर्फ इसलिए, सिर्फ इसलिए! मुझे हमेशा से शक था कि यह इसी वजह से था! ओह, वह एक जाहिल है!” उसे हमेशा से यह यकीन था कि मुझे उसके सामने जीवन भर शर्म से कांपना चाहिए, क्योंकि मैं उस समय उसके पास गई थी, और उसे हमेशा के लिए मुझे नीचा दिखाने का अधिकार है, और इस तरह खुद को मुझसे श्रेष्ठ साबित करने का भी —इसीलिए तो वह मुझसे शादी करना चाहता था! यही सच है, बिल्कुल यही सच है! मैंने अपने प्यार से उसे जीतने की कोशिश की—एक ऐसा प्यार जिसकी कोई सीमा नहीं थी। मैंने उसकी बेवफाई को माफ करने की भी कोशिश की; लेकिन वह कुछ नहीं समझा, कुछ भी नहीं! भला वह कैसे समझ सकता था? वह तो एक

राक्षस है! मुझे वह पत्र अगली शाम को मिला: वह मुझे सराय से लाया गया था—और बस उसी सुबह, बस उसी सुबह मैं उसे सब कुछ माफ करना चाहती थी, सब कुछ—यहां तक कि उसकी बेवफाई भी!
राष्ट्रपति और अभियोजक ने, बेशक, उसे शांत करने की कोशिश की। मैं नहीं कर सकता
मुझे लगता है कि उन्हें उसकी हिस्टीरिया का फायदा उठाने और उसकी ऐसी बातें सुनने पर शर्म आ रही थी। मुझे याद है मैंने उन्हें उससे कहते सुना था, "हम समझते हैं कि तुम्हारे लिए यह कितना मुश्किल है; यकीन मानो, हम तुम्हारी परेशानी को समझते हैं," और इसी तरह की बातें। फिर भी उन्होंने उस उन्मादी, हिस्टीरियाग्रस्त महिला से सबूत निकलवा लिए। अंत में उसने असाधारण स्पष्टता के साथ वर्णन किया, जो अक्सर ऐसी अति उत्तेजित अवस्थाओं में, हालांकि केवल एक क्षण के लिए ही सही, देखने को मिलती है, कि कैसे इवान पिछले दो महीनों में "राक्षस और हत्यारे", अपने भाई को बचाने की कोशिश में लगभग पागल हो गया था।
"उसने खुद को बहुत सताया," उसने हैरानी से कहा, "वह हमेशा कोशिश करता रहता था कि..."
अपने भाई के अपराध को कम करके आंकते हुए और मुझसे यह स्वीकार करते हुए कि उसने भी कभी अपने पिता से प्रेम नहीं किया था, और शायद स्वयं उनकी मृत्यु की कामना की थी। ओह, उसका अंतरात्मा कितना कोमल है! वह अपने अंतरात्मा की पीड़ा से व्याकुल था! उसने मुझे सब कुछ बताया, सब कुछ! वह हर दिन आता था और मुझसे अपने इकलौते मित्र की तरह बातें करता था। मुझे उसका इकलौता मित्र होने का सौभाग्य प्राप्त है!" वह अचानक एक प्रकार के दृढ़ निश्चय के साथ चिल्लाई, और उसकी आँखों में चमक आ गई। "वह दो बार स्मरद्याकोव से मिलने गया था। एक दिन वह मेरे पास आया और बोला, 'अगर यह मेरे भाई ने नहीं, बल्कि स्मरद्याकोव ने हत्या की है' (क्योंकि यह अफवाह हर जगह फैली हुई थी कि स्मरद्याकोव ने ही यह किया है), 'शायद मैं भी दोषी हूँ, क्योंकि स्मरद्याकोव जानता था कि मैं अपने पिता को पसंद नहीं करती थी और शायद उसे विश्वास था कि मैं अपने पिता की मृत्यु चाहती हूँ।' तब मैंने वह पत्र निकाला और उसे दिखाया। वह पूरी तरह आश्वस्त था कि उसके भाई ने ही यह किया है, और वह इससे व्याकुल हो गया। वह यह विचार सहन नहीं कर पा रहा था कि उसका अपना भाई अपने पिता का हत्यारा है! एक हफ्ते पहले ही मैंने देखा कि उसकी तबीयत बिगड़ रही थी। पिछले कुछ दिनों से वह मेरे सामने बेतरतीब बातें कर रहा था। मैंने देखा कि उसका मानसिक संतुलन बिगड़ रहा था। वह बड़बड़ाता हुआ इधर-उधर घूम रहा था; उसे सड़कों पर भी बुदबुदाते देखा गया। मेरे कहने पर मॉस्को के डॉक्टर ने परसों उसकी जांच की और मुझे बताया कि उसे दिमागी बुखार होने वाला है—और यह सब उसी की वजह से, इस राक्षस की वजह से! और कल रात उसे पता चला कि स्मरद्याकोव की मौत हो गई है! यह इतना बड़ा सदमा था कि वह अपना मानसिक संतुलन खो बैठा... और यह सब इस राक्षस की वजह से, इस राक्षस को बचाने के लिए!
ओह, बिल्कुल, इस तरह की अभिव्यक्ति, इस तरह की स्वीकारोक्ति केवल एक बार ही संभव है।
जीवन में एक बार—जैसे मृत्यु के क्षण में, फांसी के तख्ते पर जाते समय! लेकिन यह कात्या का स्वभाव था, और यह उसके जीवन का एक ऐसा ही क्षण था। यह वही उग्र कात्या थी जिसने अपने पिता को बचाने के लिए एक युवक की दया पर खुद को सौंप दिया था; वही कात्या जिसने कुछ देर पहले ही, अपने स्वाभिमान और पवित्रता में, इन सभी लोगों के सामने खुद को और अपनी कुंवारी मर्यादितता को त्याग दिया था, मित्या के उदार आचरण के बारे में बताकर, उसके भाग्य को थोड़ा नरम करने की आशा में। और अब, फिर से, उसने खुद को बलिदान कर दिया; लेकिन इस बार किसी और के लिए, और शायद अभी—शायद सिर्फ इसी क्षण —उसे एहसास हुआ और पता चला कि वह दूसरा उसके लिए कितना प्रिय था! उसने उसके लिए भय में खुद को बलिदान कर दिया था, अचानक यह सोचकर कि उसने यह स्वीकार करके खुद को बर्बाद कर लिया है कि हत्या उसी ने की थी, उसके भाई ने नहीं, उसने उसे बचाने के लिए, उसके अच्छे नाम, उसकी प्रतिष्ठा को बचाने के लिए खुद को बलिदान कर दिया था!
और फिर भी एक भयानक संदेह मन में आया—क्या वह अपनी
क्या मित्या के साथ उसके पुराने संबंधों का वर्णन?—यही सवाल था। नहीं, उसने जानबूझकर मित्या की निंदा नहीं की थी जब उसने रोते हुए कहा था कि मित्या ने उसके सामने सिर झुकाने के कारण उसका तिरस्कार किया! वह खुद इस बात पर यकीन करती थी। शायद उस सिर झुकाने के बाद से ही उसे पक्का यकीन हो गया था कि सरल हृदय वाला मित्या, जो तब भी उससे प्रेम करता था, उस पर हंस रहा है और उसका तिरस्कार कर रहा है। उसने मित्या से एक उन्मादी, "घायल" प्रेम किया था, केवल अहंकार से, घायल अहंकार

से, और वह प्रेम, प्रेम जैसा नहीं, बल्कि प्रतिशोध जैसा था। ओह! शायद वह घायल प्रेम सच्चे प्रेम में बदल जाता, शायद कात्या को इससे ज्यादा कुछ नहीं चाहिए था, लेकिन मित्या की बेवफाई ने उसके दिल को गहराई तक घायल कर दिया था, और उसका दिल उसे माफ नहीं कर सकता था। प्रतिशोध का क्षण अचानक आ गया था, और उस अपमानित स्त्री के हृदय में इतने लंबे समय से और इतने दर्दनाक रूप से जमा हुआ सब कुछ एक साथ और अप्रत्याशित रूप से फूट पड़ा। उसने मित्या को धोखा दिया, लेकिन उसने खुद को भी धोखा दिया। जैसे ही उसने अपने भावों को पूरी तरह व्यक्त किया, तनाव समाप्त हो गया और वह शर्म से भर उठी। उसे फिर से हिस्टीरिया होने लगा: वह ज़मीन पर गिर पड़ी, रोने और चीखने लगी। उसे बाहर ले जाया गया। उसी क्षण, ग्रुशेंका चीखते हुए मित्या की ओर दौड़ी, इससे पहले कि वे उसे रोक पाते।
“मित्या,” वह विलाप करते हुए बोली, “तुम्हारे सर्प ने तुम्हें नष्ट कर दिया है! लो, उसने
“मैंने तुम्हें दिखा दिया कि वो क्या है!” गुस्से से कांपते हुए उसने जजों पर चिल्लाकर कहा। अध्यक्ष के इशारे पर उन्होंने उसे पकड़ लिया और अदालत से बाहर ले जाने की कोशिश की। उसने ऐसा होने नहीं दिया। वह लड़ती रही और मित्या के पास वापस जाने के लिए संघर्ष करती रही। मित्या ने चीख मारी और उसके पास पहुंचने के लिए संघर्ष किया। लेकिन वह उस पर हावी हो गया।
हाँ, मुझे लगता है कि तमाशा देखने आई महिलाएं अवश्य ही
संतुष्ट—यह एक विविध प्रस्तुति थी। तभी मुझे याद आया कि मॉस्को के डॉक्टर वहाँ आए। मेरा मानना है कि राष्ट्रपति ने पहले ही दरबारी को इवान के लिए चिकित्सा सहायता की व्यवस्था करने भेजा था। डॉक्टर ने अदालत को बताया कि बीमार व्यक्ति को मस्तिष्क ज्वर का एक खतरनाक दौरा पड़ा है और उसे तुरंत ले जाना होगा। अभियोजक और बचाव पक्ष के वकील के सवालों के जवाब में उन्होंने कहा कि मरीज़ परसों खुद उनके पास आया था और उन्होंने उसे चेतावनी दी थी कि उसे ऐसा दौरा पड़ने वाला है, लेकिन उसने इलाज करवाने की सहमति नहीं दी थी। डॉक्टर ने अंत में कहा, "वह निश्चित रूप से मानसिक रूप से ठीक नहीं था: उसने खुद मुझे बताया कि जागते समय उसे दृश्य दिखाई देते हैं, सड़क पर उसकी मुलाकात कई मृत व्यक्तियों से होती है और शैतान हर शाम उससे मिलने आता है।" अपनी गवाही देने के बाद, प्रसिद्ध डॉक्टर चले गए। कैटेरिना इवानोव्ना द्वारा प्रस्तुत पत्र को साक्ष्यों में शामिल कर लिया गया। कुछ विचार-विमर्श के बाद, न्यायाधीशों ने मुकदमे को आगे बढ़ाने और इवान और कैटेरिना इवानोव्ना द्वारा दिए गए दोनों अप्रत्याशित साक्ष्यों को प्रोटोकॉल में दर्ज करने का निर्णय लिया।
लेकिन मैं अन्य गवाहों के साक्ष्यों का विस्तार से वर्णन नहीं करूंगा, जिन्होंने केवल
पहले कही गई बातों को दोहराया और पुष्ट किया गया, हालांकि सभी में अपनी-अपनी विशिष्टताएँ थीं। मैं फिर से दोहराता हूँ, सब कुछ अभियोक्ता के भाषण में समाहित था, जिसे मैं तुरंत उद्धृत करूँगा। हर कोई उत्तेजित था, हर कोई हाल ही में हुई त्रासदी से स्तब्ध था, और सभी अभियोजन और बचाव पक्ष के भाषणों का बेसब्री से इंतजार कर रहे थे। कैटेरीना इवानोव्ना के साक्ष्य से फेत्युकोविच स्पष्ट रूप से हिल गए थे। लेकिन अभियोक्ता विजयी थे। जब सभी साक्ष्य ले लिए गए, तो अदालत लगभग एक घंटे के लिए स्थगित कर दी गई। मेरा मानना है कि ठीक आठ बजे राष्ट्रपति अपनी सीट पर लौटे और हमारे अभियोक्ता, इप्पोलिट किरिलोविच ने अपना भाषण शुरू किया।

अध्याय 6

अभियोजक का भाषण। रेखाचित्र
चरित्र

इप्पोलिट किरिलोविच ने घबराहट से कांपते हुए अपना भाषण शुरू किया,
उसके माथे पर ठंडा पसीना आ रहा था, उसे बारी-बारी से पूरे शरीर में गर्मी और ठंड लग रही थी।
उन्होंने बाद में स्वयं इसका वर्णन किया। उन्होंने इस भाषण को अपना मार्गदर्शक माना।
उनकी रचना, उनके पूरे जीवन की उत्कृष्ट कृति, उनका अंतिम गीत। उनका निधन हो गया।
यह सच है, नौ महीने बाद तीव्र क्षय के कारण, इसलिए उसे अधिकार था, क्योंकि
पता चला कि वह खुद की तुलना एक हंस से कर रहा था जो अपना आखिरी गीत गा रहा था।
उन्होंने अपना पूरा दिल और दिमाग उस भाषण में लगा दिया। और बेचारे
इप्पोलिट किरिलोविच ने अप्रत्याशित रूप से खुलासा किया कि कम से कम कुछ हद तक उनके मन में
उनके लिए भावनाएँ हैं।
जन कल्याण और "शाश्वत प्रश्न" उनमें छिपे हुए थे। जहाँ उनका
उनके भाषण की सबसे बड़ी खूबी उसकी ईमानदारी थी। उन्हें वास्तव में इस बात पर विश्वास था।
कैदी का अपराधबोध; वह उस पर केवल आधिकारिक कर्तव्य के रूप में ही आरोप नहीं लगा रहा था, बल्कि
प्रतिशोध की मांग करते हुए वह "सुरक्षा के लिए" एक वास्तविक जुनून से कांप उठा।
समाज की।" यहां तक कि दर्शकों में मौजूद महिलाएं भी, हालांकि वे शत्रुतापूर्ण बनी रहीं।
इप्पोलिट किरिलोविच के सामने उन्होंने स्वीकार किया कि उन्होंने असाधारण प्रभाव छोड़ा।
उन पर। उसने कांपती हुई आवाज़ में बोलना शुरू किया, लेकिन जल्द ही उसकी आवाज़ में ताकत आ गई
और
उनके भाषण के अंत तक न्यायालय खचाखच भरा रहा। लेकिन जैसे ही उन्होंने अपना भाषण समाप्त किया,
वे तुरंत ही...
लगभग बेहोश।
“न्यायपालिका के सज्जनों,” अभियोजक ने शुरू किया, “इस मामले ने एक
पूरे रूस में हलचल मच गई। लेकिन आश्चर्य की बात क्या है, ऐसा क्या है जो इतना महत्वपूर्ण है?
इसमें हमारे लिए अजीबोगरीब भयावह क्या है? हम तो ऐसे अपराधों के इतने आदी हो चुके हैं!
सबसे भयावह बात यही है कि ऐसे जघन्य कृत्य अब हमें भयभीत नहीं करते।
हमें इस बात से भयभीत होना चाहिए कि हम इसके इतने आदी हो चुके हैं, न कि इससे या इससे।
वह एकांत अपराध। हमारी उदासीनता, हमारी उदासीनता के क्या कारण हैं?
ऐसे कृत्यों के प्रति, समय के ऐसे संकेतों के प्रति, एक अशुभ संकेत का भाव है।
क्या यह एक अवांछनीय भविष्य है? क्या यह हमारा संशयवाद है, या समय से पहले की थकावट?
एक ऐसे समाज में बुद्धि और कल्पनाशीलता, जो पतन की ओर अग्रसर है, इसके बावजूद
क्या यह युवावस्था है? क्या हमारे नैतिक सिद्धांत अपनी नींव तक चकनाचूर हो गए हैं?
या शायद हममें ऐसे सिद्धांतों का पूर्ण अभाव है? मैं नहीं बता सकता।
ऐसे सवालों का जवाब दें; फिर भी वे परेशान करने वाले हैं, और प्रत्येक नागरिक
न केवल उन्हें परेशान करना चाहिए, बल्कि ऐसा होना ही चाहिए। हमारा नवजात शिशु और अभी भी
डरपोक प्रेस ने जनता की पहले ही अच्छी सेवा की है, क्योंकि इसके बिना हम
मुझे बेलगाम हिंसा और नैतिक पतन की भयावहता के बारे में कभी नहीं सुनना चाहिए था।
प्रेस द्वारा लगातार उजागर की जा रही गिरावटें, न केवल
जो लोग वर्तमान शासनकाल में स्थापित नई जूरी अदालतों में उपस्थित होते हैं, लेकिन
हर किसी के लिए। और हम लगभग रोज़ क्या पढ़ते हैं? उन चीज़ों के बारे में जिनके अलावा
वर्तमान मामला फीका पड़ जाता है, और लगभग सामान्य सा लगता है। लेकिन असल बात क्या है?

सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि हमारे देश में हिंसा से जुड़े अधिकांश अपराध इसके अंतर्गत आते हैं।
एक व्यापक बुराई का साक्षी, जो अब हमारे बीच इतनी आम हो गई है कि इसे समझना मुश्किल है
इसका विरोध करो।
“एक दिन हम उच्च समाज के एक प्रतिभाशाली युवा अधिकारी को देखते हैं, बिल्कुल
अपने करियर की शुरुआत में, कायरतापूर्ण और कपटपूर्ण तरीके से, बिना किसी संकोच के।
अंतरात्मा की आवाज सुनकर, एक ऐसे अधिकारी की हत्या कर दी जो कभी उसका संरक्षक था, और
नौकरानी से उसका अपना कर्ज और जितना भी नकद पैसा वह चुरा सकता था, चुराने के लिए कहा।
उस पर खोजो; 'यह फैशनेबल चीजों में मेरे सुखों के लिए काम आएगा'
दुनिया के लिए और भविष्य में मेरे करियर के लिए।’ उनकी हत्या करने के बाद, वह उन्हें रख देता है।
अपने प्रत्येक शिकार के सिर के नीचे तकिए रखकर वह चला जाता है। इसके बाद, एक
वीरता के लिए सम्मानित युवा नायक ने अपने सरदार की माँ की हत्या कर दी और
परोपकारी व्यक्ति, एक लुटेरे की तरह, और अपने साथियों को अपने साथ शामिल होने के लिए प्रेरित करने
के लिए वह
वह कहती है कि 'वह उसे बेटे की तरह प्यार करती है, इसलिए वह उसके सभी निर्देशों का पालन करेगी।'
और कोई सावधानी नहीं बरतते।' यह सच है कि वह एक राक्षस है, फिर भी मैं यह कहने की हिम्मत नहीं
करता कि
आजकल वह अद्वितीय है। कोई दूसरा आदमी यह हत्या नहीं करेगा, लेकिन
वह उसके जैसा ही महसूस करेगा और सोचेगा, और आत्मा से उतना ही बेईमान है। मौन में,
अपने अंतरात्मा के साथ अकेले में, वह शायद खुद से पूछता है, 'सम्मान क्या है, और
क्या रक्तपात की निंदा करना पूर्वाग्रह नहीं है?
"हो सकता है लोग मेरे खिलाफ यह कहकर चिल्लाएं कि मैं रुग्ण और उन्मादी हूं,
यह एक घोर निंदा है, कि मैं अतिशयोक्ति कर रहा हूँ। उन्हें ऐसा कहने दो—
हे भगवान! अगर ऐसा होता तो मैं सबसे पहले खुशी मनाता! ओह, विश्वास मत करो।
मुझे, मुझे निराशावादी समझो, लेकिन मेरे शब्दों को याद रखना; भले ही दसवां हिस्सा ही क्यों न हो, अगर
मेरी कही हुई बातों का केवल बीसवां हिस्सा ही सच है—और वो भी भयानक है! देखो कैसे
हमारे युवा बिना खुद से हैमलेट के प्रश्न पूछे आत्महत्या कर लेते हैं।
बिना किसी प्रश्न के संकेत के, यह प्रश्न करो कि उससे परे क्या है, क्योंकि
हालांकि यह सब आत्मा से संबंधित है और उस चीज़ से संबंधित है जो मृत्यु के बाद हमारा इंतजार कर रही
है।
यह बात उनके दिमाग से बहुत पहले ही मिट चुकी थी और रेत के नीचे दब गई थी। देखो
हमारी बुराई, हमारे दुराचारियों पर। फ्योदोर पावलोविच, इस घटना में दुर्भाग्यपूर्ण शिकार।
वर्तमान मामले में, वह बच्चा उनमें से कई की तुलना में लगभग एक निर्दोष शिशु था।
और फिर भी हम सब उन्हें जानते थे, ‘वे हमारे बीच रहते थे!’ . . .
"हां, शायद एक दिन रूस और यूरोप के अग्रणी बुद्धिजीवी ऐसा करेंगे।"
मैं रूसी अपराध के मनोविज्ञान का अध्ययन करूंगा, क्योंकि यह विषय सार्थक है। लेकिन
यह अध्ययन बाद में, फुर्सत के समय, तब किया जाएगा जब सभी दुखद उथल-पुथल समाप्त हो जाएगी।
आज का दिन हमसे काफी पीछे छूट चुका है, इसलिए अब हम इसका और अधिक बारीकी से अध्ययन कर
सकते हैं।
मुझे जितनी अंतर्दृष्टि और निष्पक्षता चाहिए, उतनी मैं नहीं दे सकता। अब हम या तो भयभीत हैं या
हम भयभीत होने का नाटक करते हैं, हालांकि वास्तव में हम इस तमाशे पर आनंद लेते हैं और इसे पसंद
करते हैं।
मजबूत और विलक्षण संवेदनाएं जो हमारे सनकी, लाड़ले
आलस्य। या, छोटे बच्चों की तरह, हम भयानक भूतों को दूर भगा देते हैं और
हम अपने सिर तकिए में छिपा लेते हैं ताकि हम अपने खेल और मौज-मस्ती में वापस लौट सकें।
जैसे ही वे गायब हो जाते हैं। लेकिन हमें एक दिन संयम से जीवन की शुरुआत करनी होगी।

गंभीरता से कहें तो, हमें समाज के रूप में स्वयं का मूल्यांकन करना चाहिए; अब समय आ गया है कि हम इसे समझने का प्रयास करें।
हमारी सामाजिक स्थिति के बारे में कुछ जानकारी प्राप्त करने के लिए, या कम से कम उस दिशा में एक शुरुआत करने के लिए।
दिशा।
“अंतिम युग के एक महान लेखक 9 ने रूस की तुलना एक तीव्र त्रिमूर्ति से की है।”
एक अज्ञात लक्ष्य की ओर सरपट दौड़ते हुए, वह कहता है, 'ओह, त्रयी, पक्षी जैसी त्रयी, जो
'मैंने ही तुम्हारा आविष्कार किया!' और गर्व और उत्साह से कहता है कि सभी लोगों ने
दुनिया सम्मानपूर्वक एक तरफ हट जाए ताकि बेपरवाह होकर सरपट दौड़ते हुए को रास्ता मिल सके।
तीनों को पास होना है। ऐसा हो सकता है, वे सम्मानपूर्वक या नहीं, एक तरफ हट सकते हैं, लेकिन
मेरी राय में, महान लेखक ने अपनी पुस्तक का अंत इस तरह किया, या तो किसी अन्य तरीके से।
बचकाने और भोले-भाले आशावाद की वजह से, या फिर सेंसरशिप के डर से।
उस दिन का। क्योंकि यदि तिकड़ी को उनके नायकों, सोबाकेविच द्वारा खींचा गया होता,
नोज़ड्रीव हो या चिटचिकोव, इससे कोई तर्कसंगत लक्ष्य हासिल नहीं हो सकता था, चाहे कोई भी हो।
इसे चला रहे हैं। और वे पिछली पीढ़ी के नायक थे, हमारी पीढ़ी के नायक हैं।
इससे भी बदतर नमूने...
इसी समय इप्पोलिट किरिलोविच का भाषण बाधित हो गया।
तालियाँ बज उठीं। इस उपमा के उदारवादी महत्व की सराहना की गई।
यह सच है कि तालियाँ बहुत कम समय के लिए बजीं, इसलिए राष्ट्रपति को यह नहीं लगा कि...
जनता को आगाह करना आवश्यक था, और केवल उसी दिशा में गंभीरता से देखा गया।
अपराधियों में से। लेकिन इप्पोलिट किरिलोविच को प्रोत्साहन मिला; उसने कभी ऐसा नहीं किया था
पहले भी उनकी सराहना हो चुकी है! उन्हें जीवन भर सुनवाई का अवसर नहीं मिला था।
और अब अचानक उसे पूरे रूस का ध्यान आकर्षित करने का अवसर मिल गया था।
“आखिरकार, यह करामाज़ोव परिवार है क्या, जिसने इतनी प्रतिष्ठा हासिल कर ली है?”
“पूरे रूस में बदनामी? शायद मैं हूँ।” उन्होंने आगे कहा।
यह अतिशयोक्ति है, लेकिन मुझे ऐसा लगता है कि कुछ मूलभूत विशेषताएं
आज के शिक्षित वर्ग की झलक इस पारिवारिक तस्वीर में दिखाई देती है—केवल कुछ अंशों में।
बेशक, लघु रूप में, 'जैसे पानी की एक बूंद में सूर्य।' ज़रा सोचिए।
दुखी, दुष्ट, बेलगाम बूढ़ा आदमी, जिसे ऐसी उदासी का सामना करना पड़ा है।
अंत में, एक परिवार का मुखिया! कुलीन परिवार में जन्म, लेकिन गरीबी में जीवन की शुरुआत हुई।
आश्रित स्थिति में होने के बावजूद, एक अप्रत्याशित विवाह के माध्यम से वह एक छोटे से घर में आ गया।
भाग्य। एक छोटा-मोटा बदमाश, चापलूस और मसखरा, हालांकि काफी अच्छा।
अविकसित बुद्धि वाला वह व्यक्ति, सबसे बढ़कर, एक साहूकार था, जो विकसित हुआ
बढ़ती समृद्धि के साथ उसका साहस बढ़ता गया। उसके दीन और दासतापूर्ण लक्षण
जब वह गायब हो गया, तो केवल उसकी द्वेषपूर्ण और व्यंग्यात्मक निंदक प्रवृत्ति ही शेष रह गई।
आध्यात्मिक रूप से वह अविकसित था, जबकि उसकी ऊर्जा अत्यधिक थी।
उसे जीवन में इंद्रिय सुख के सिवा कुछ नहीं दिखता था, और उसने अपने बच्चों का पालन-पोषण किया।
एक जैसा होना। पिता के रूप में अपने कर्तव्यों के प्रति उनमें कोई भावना नहीं थी। उन्होंने उपहास किया।
उन कर्तव्यों को पूरा करने के लिए उसने अपने छोटे बच्चों को नौकरों के हवाले कर दिया और वह स्वयं संतुष्ट था।
उनसे छुटकारा पा लिया, उन्हें पूरी तरह से भुला दिया। बूढ़े आदमी का यही सिद्धांत था.
après moi le déluge. वह हर उस चीज़ का उदाहरण था जो इसके विपरीत है।
नागरिक कर्तव्य, सबसे पूर्ण और घातक व्यक्तिवाद का। 'दुनिया
मुझे परवाह नहीं कि मैं जल जाऊं, जब तक मैं ठीक हूं,' और वह ठीक था;
वह संतुष्ट था, वह कुछ और समय तक इसी तरह जीवन जीना चाहता था।

बीस या तीस साल। उसने अपने ही बेटे को धोखा दिया और उसका पैसा खर्च कर दिया, उसका
मातृवंशीय विरासत, उससे उसकी प्रेमिका को छीनने की कोशिश पर। नहीं, मैं नहीं।
मैं कैदी की पैरवी पूरी तरह से अपने प्रतिभाशाली सहकर्मी पर छोड़ना चाहता हूँ।
पीटर्सबर्ग से। मैं खुद सच बोलूंगा, मैं अच्छी तरह समझ सकता हूं कि क्या
उसने अपने बेटे के दिल में अपने प्रति जो आक्रोश भरा था, उसे उसने खुद ही समेट लिया था।
लेकिन बस बहुत हो गया, उस अभागे बूढ़े आदमी की बात बहुत हो गई; उसने अपनी कीमत चुका दी है।
दंड। हालाँकि, हमें याद रखना चाहिए कि वह एक पिता थे, और उनमें से एक थे।
आजकल के आम पिताओं की तरह। क्या मैं यह कहने में गलत हूँ कि वह एक आम पिता है?
कई आधुनिक पिताओं के बारे में क्या? अफसोस! उनमें से कई केवल इस बात में भिन्न हैं कि वे खुलकर
अपनी भावनाएं व्यक्त नहीं करते।
वे इस तरह की संशयवादी सोच रखते हैं, क्योंकि वे अधिक शिक्षित और सुसंस्कृत हैं, लेकिन
उनकी विचारधारा मूलतः उनकी विचारधारा के समान ही है। शायद मैं निराशावादी हूँ।
लेकिन आपने मुझे माफ करने पर सहमति जताई है। आइए पहले से ही सहमति बना लें, आपको इसकी
आवश्यकता नहीं है।
मेरी बात मानो, लेकिन मुझे बोलने दो। मुझे जो कहना है कह देने दो, और
मेरी बातों को याद रखना।
“अब इस पिता, इस परिवार के मुखिया के बच्चों की बारी है। उनमें से एक
हमारे सामने जो कैदी है, वह वही है; मेरे भाषण का बाकी हिस्सा उसी के बारे में होगा।
बाकी दो के बारे में मैं संक्षेप में ही बात करूंगा।
“बड़ा व्यक्ति उत्कृष्ट शिक्षा प्राप्त आधुनिक युवाओं में से एक है।”
और तीव्र बुद्धि वाला व्यक्ति, जिसने हर चीज में अपना विश्वास खो दिया है। उसने इनकार कर दिया है।
और अपने पिता की तरह पहले ही बहुत कुछ अस्वीकार कर चुका था। हम सबने उसे सुना है, वह था
स्थानीय समाज में उनका हार्दिक स्वागत होता था। वे अपने विचारों को कभी नहीं छिपाते थे, बल्कि
वास्तव में इसके विपरीत, यही कारण है कि मैं उनके बारे में खुलकर बोलने में सक्षम हूं।
अब, बेशक, एक व्यक्ति के रूप में नहीं, बल्कि करामाज़ोव के सदस्य के रूप में।
परिवार। इस मामले से घनिष्ठ रूप से जुड़ा एक अन्य व्यक्ति भी यहीं मर गया।
कल रात उसने खुद अपने हाथों से यह किया। मेरा मतलब है, एक पीड़ित मूर्ख, जो पहले नौकर था, और
संभवतः फ्योदोर पावलोविच का नाजायज बेटा, स्मरद्याकोव।
प्रारंभिक पूछताछ के दौरान, उसने मुझे रोते-रोते बताया कि युवा इवान
करामाज़ोव ने अपनी आध्यात्मिक धृष्टता से उसे भयभीत कर दिया था। 'सब कुछ
उनके अनुसार संसार वैध है, और उसमें किसी भी चीज़ की मनाही नहीं होनी चाहिए।
भविष्य—यही वह हमेशा मुझे सिखाता था।' मेरा मानना है कि वह मूर्ख प्रेरित था।
इस सिद्धांत से वह पूरी तरह से बौखला गया, हालांकि, निश्चित रूप से, मिर्गी के दौरे
जो कुछ उसने सहा, और यह भयानक आपदा, दोनों ने मिलकर उसके मानसिक संतुलन को बिगाड़ दिया है।
लेकिन उन्होंने एक बहुत ही दिलचस्प बात कही, जो
अधिक बुद्धिमान पर्यवेक्षक को इसका श्रेय जाता है, और वास्तव में यही कारण है।
मैंने इसका जिक्र किया है: 'अगर उनके बेटों में से कोई एक फ्योदोर पावलोविच जैसा हो तो...'
चरित्र के लिहाज से, यह इवान फ्योदोरोविच है।
“इस टिप्पणी के साथ मैं उनके चरित्र का अपना रेखाचित्र समाप्त करता हूँ, मुझे ऐसा लगता है कि
आगे बढ़ना ठीक नहीं होगा। ओह, मैं और आगे नहीं बढ़ना चाहता।
निष्कर्ष निकालते हैं और उस युवक के भविष्य पर कौवे की तरह कर्कश स्वर में बोलते हैं।
आज इस अदालत में देखा गया कि उनके युवा मन में अभी भी अच्छे विचार मौजूद हैं।
उसके हृदय में पारिवारिक भावना आस्था की कमी से नष्ट नहीं हुई है।
और निराशावाद, जो उसे विरासत में मिले हैं न कि किसी और कारण से।
स्वतंत्र चिंतन का अभ्यास।

फिर तीसरा बेटा। ओह, वह एक धर्मनिष्ठ और विनम्र युवक है, जो...
वह अपने बड़े भाई के निराशावादी और विनाशकारी जीवन सिद्धांत से सहमत नहीं है।
उन्होंने 'जनता के विचारों' या उस नाम से जानी जाने वाली किसी भी चीज़ से जुड़े रहने की कोशिश की।
हमारे बौद्धिक वर्गों के कुछ हलकों में। वह मठ से जुड़ा रहा, और
वह भिक्षु बनने के बेहद करीब था। मुझे लगता है उसने विश्वासघात किया है।
अनजाने में, और इतनी कम उम्र में, वह दबी हुई निराशा जो हमारे कई लोगों को इस ओर ले जाती है
दुखी समाज, जो निराशावाद और उसके भ्रष्ट प्रभावों से भयभीत रहता है, और
गलती से सारी गड़बड़ी का श्रेय यूरोपीय ज्ञानोदय को देना, वापस लौटना
अपनी 'मातृभूमि' में, जैसा कि वे कहते हैं, अपनी माँ की गोद में।
डरे हुए बच्चों की तरह, धरती पर सो जाने की लालसा रखते हुए, मुरझाई हुई
अपनी दुर्बल माँ की गोद में, और वहाँ हमेशा के लिए सो जाने के लिए, केवल बचने के लिए
वे भयावह दृश्य जो उन्हें भयभीत करते हैं।
मैं अपनी ओर से इस उत्कृष्ट और प्रतिभाशाली युवक को हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं।
सफलता; मुझे विश्वास है कि उनकी युवावस्था की आदर्शवादिता और विचारों के प्रति उनका झुकाव सफलता दिलाएगा।
लोग नैतिक रूप से कभी पतित नहीं हो सकते, जैसा कि अक्सर होता है।
अंधकारमय रहस्यवाद, और राजनीति पर अंधराष्ट्रवाद—दो
ऐसे तत्व जो रूस के लिए समय से पहले की स्थिति से भी कहीं अधिक बड़ा खतरा हैं
यूरोपीय नीतियों की गलतफहमी और अनावश्यक रूप से अपनाने के कारण पतन हुआ।
ऐसे विचार, जिनसे उसका बड़ा भाई पीड़ित है।"
इसका जिक्र होते ही दो-तीन लोगों ने ताली बजाई।
अंधराष्ट्रवाद और रहस्यवाद। इप्पोलिट किरिलोविच वास्तव में बह गए थे।
अपनी वाक्पटुता से ही वह सब कुछ भुला दिया गया। इन सब बातों का मौजूदा मामले से कोई खास संबंध नहीं था।
इसके कुछ हद तक अस्पष्ट होने की बात तो छोड़ ही दीजिए, लेकिन बीमार और
क्षय रोग से पीड़ित व्यक्ति अपने आप को व्यक्त करने की तीव्र इच्छा से अभिभूत हो गया।
उसके जीवन के बारे में लोगों ने बाद में कहा कि वह अनुचित इरादों से प्रेरित था।
इवान की आलोचना में, क्योंकि बाद वाले को एक या दो मौकों पर
बहस में वह उससे बेहतर था, और इप्पोलिट किरिलोविच को यह याद था,
अब उसने बदला लेने की कोशिश की। लेकिन मुझे नहीं पता कि यह सच था या नहीं।
यह केवल परिचयात्मक था, और भाषण अधिक प्रत्यक्ष विषय की ओर बढ़ गया।
मामले पर विचार।
"लेकिन बड़े बेटे की बात पर लौटते हुए," इप्पोलिट किरिलोविच ने आगे कहा। "वह है
हमारे सामने कैदी है। उसका जीवन और उसके कर्म भी हमारे सामने हैं;
वह घातक दिन आ गया है और सब कुछ सामने आ गया है। जबकि उसका
भाई 'यूरोपीयवाद' और 'सिद्धांतों' के लिए खड़े प्रतीत होते हैं।
'लोग,' वह रूस को उसके वास्तविक स्वरूप में प्रस्तुत करते प्रतीत होते हैं। ओह, पूरा रूस नहीं, पूरा नहीं!
भगवान हमें बचाए, अगर ऐसा होता! फिर भी, हमारे सामने हमारी मातृ रूस है,
उसकी हर खुशबू और आवाज़। ओह, वह कितना सहज है, वह कितना अद्भुत है!
अच्छाई और बुराई का मिश्रण, वह संस्कृति और शिलर का प्रेमी है, फिर भी वह
वह सराय में झगड़े करता है और अपने जिगरी दोस्तों की दाढ़ी नोच लेता है। ओह,
वह भी अच्छा और नेक हो सकता है, लेकिन केवल तभी जब उसके साथ सब कुछ ठीक चल रहा हो।
इतना ही नहीं, उसे पूरी तरह से मदहोश किया जा सकता है, सचमुच मदहोश किया जा सकता है।
महान आदर्शों द्वारा, लेकिन केवल तभी जब वे स्वयं उत्पन्न हों, यदि वे गिर जाएं
अगर इनके लिए भुगतान न करना पड़े तो ये उसके लिए स्वर्ग समान होंगे। उसे भुगतान करना पसंद नहीं है।

उसे कुछ भी पसंद नहीं है, लेकिन उसे लेना बहुत पसंद है, और यही बात उसके साथ भी है।
सब कुछ। ओह, उसे जीवन में हर संभव सुख दो (वह ऐसा नहीं हो सकता)।
कम में संतुष्ट रहो), और उसके रास्ते में कोई बाधा न डालो, और वह यह दिखाएगा कि
वह भी नेक हो सकता है। वह लालची नहीं है, नहीं, लेकिन उसे पैसे की जरूरत होती है।
बहुत सारा पैसा, और आप देखेंगे कि कितनी उदारता से, कितने तिरस्कार के साथ
वह अपनी सारी दौलत को एक ही व्यक्ति के लापरवाह अपव्यय में लुटा देगा।
रात। लेकिन अगर उसके पास पैसे नहीं हैं, तो वह पैसे पाने के लिए जो कुछ भी करने को तैयार है, वह दिखाएगा।
जब उसे इसकी बहुत आवश्यकता हो, तब वह इसका उपयोग करे। लेकिन इन सब बातों को बाद में, आइए पहले घटनाओं को उनके क्रम में देखें।
कालानुक्रमिक क्रम में।
“सबसे पहले, हमारे सामने एक गरीब, परित्यक्त बच्चा है, जो इधर-उधर भाग रहा है...
पिछवाड़े में 'बिना जूते पहने', जैसा कि हमारे योग्य और सम्मानित साथी ने किया।
विदेशी मूल के नागरिक ने अभी-अभी यही कहा। मैं इसे फिर से दोहराता हूँ, मैं
किसी को भी अपराधी का बचाव करने की अनुमति नहीं है। मैं यहाँ उस पर आरोप लगाने आया हूँ, लेकिन उसका भी बचाव करो। हाँ, मैं भी इंसान हूँ; मैं भी प्रभाव का आकलन कर सकता हूँ।
घर और बचपन चरित्र पर गहरा प्रभाव डालते हैं। लेकिन लड़का बड़ा हो जाता है और बन जाता है।
एक अधिकारी; द्वंद्वयुद्ध और अन्य लापरवाह आचरण के लिए उसे निर्वासित कर दिया गया है।
रूस के सुदूर सीमावर्ती कस्बों में। वहाँ उन्होंने एक अधिकारी के रूप में बेफिक्र जीवन व्यतीत किया।
और, ज़ाहिर है, उसे पैसे की ज़रूरत थी, सबसे पहले पैसे की, और इसलिए बाद में
लंबे समय से चले आ रहे विवादों के बाद उन्होंने अपने पिता के साथ समझौता कर लिया, और पिछले छह
उसे हज़ार भेजे गए थे। एक पत्र मौजूद है जिसमें उसने व्यावहारिक रूप से कहा है।
वह शेष संपत्ति पर अपना दावा छोड़ देता है और अपने पिता के साथ अपने विवाद को सुलझा लेता है।
इस छह हजार के भुगतान पर विरासत प्राप्त होगी।
फिर उनकी मुलाकात एक उच्च चरित्र वाली युवती से हुई और
शानदार शिक्षा। ओह, मैं विवरण दोहराने का साहस नहीं करता; आपने
मैंने अभी-अभी उनके बारे में सुना। वहाँ सम्मान और आत्म-बलिदान का प्रदर्शन किया गया, और मैं भी।
चुप रहो। उस युवा अधिकारी की आकृति, जो लापरवाह और अय्याश है, कर रही है।
सच्ची महानता और एक उच्च आदर्श के प्रति श्रद्धांजलि को बहुत ही सहानुभूतिपूर्ण तरीके से दर्शाया गया था।
हमारे सामने रोशनी थी। लेकिन सिक्के का दूसरा पहलू अप्रत्याशित रूप से सामने आ गया।
इसके तुरंत बाद हमें इसी अदालत में पेश किया जाएगा। मैं फिर से ऐसा करने का साहस नहीं करूंगा।
इसके पीछे क्या कारण थे, इस पर अटकलें लगाई जा रही हैं, लेकिन कारण जरूर थे। वही महिला,
लंबे समय से छिपे आक्रोश के आंसुओं में भीगते हुए, उसने आरोप लगाया कि वह, वह सब कुछ
पुरुषों ने उसके इस कृत्य के लिए उसकी निंदा की थी, जो यद्यपि असावधानीपूर्ण और लापरवाह था।
शायद, अब भी उच्च और उदार उद्देश्यों से प्रेरित था। वह, वह, लड़की का
मंगेतर ने उसे उस उपहास भरी मुस्कान के साथ देखा, जो और भी अधिक थी।
उससे किसी और से भी ज्यादा असहनीय। और यह जानते हुए कि उसके पास
उसने पहले ही उसे धोखा दे दिया था (उसने उसे धोखा दिया था, यह मानते हुए कि वह उससे बंधी हुई थी)
उससे सब कुछ सहना पड़ा, यहाँ तक कि विश्वासघात भी), उसने जानबूझकर पेशकश की
उसे तीन हजार रूबल दो, और स्पष्ट रूप से, बहुत स्पष्ट रूप से, उसे यह बात समझ में आ जाए।
कि वह उसे धोखा देने के लिए पैसे दे रही थी। 'अच्छा, क्या तुम इसे लोगे या नहीं?'
क्या तुम शर्म से इतने बेहाल हो गए हो?' यह सवाल उसकी पैनी नजरों में छिपा हुआ था।
आँखें। उसने उसकी ओर देखा, और उसके मन में जो कुछ था उसे स्पष्ट रूप से समझ लिया (उसने यह स्वीकार किया है)।
यहां आपके सामने कि वह सब समझ गया था), उसने उन तीन हजार को अपने कब्जे में ले लिया

बिना किसी शर्त के, और उसने दो दिनों में ही इसे अपने नए साथी के साथ लुटा दिया।
स्नेह।
तो फिर हमें किस पर विश्वास करना चाहिए? युवा अधिकारी की पहली कहानी पर।
उदारता और परोपकार की महान भावना में अपना अंतिम पैसा भी कुर्बान कर दिया।
सद्गुण के प्रति श्रद्धा, या यह दूसरी घृणित तस्वीर? नियम के अनुसार, दो के बीच
चरम स्थितियों में हमें औसत ज्ञात करना होता है, लेकिन वर्तमान मामले में यह बात सत्य नहीं है।
संभावना यह है कि पहले मामले में वह वास्तव में कुलीन था, और दूसरे मामले में
दूसरा वास्तव में नीच था। और क्यों? क्योंकि वह व्यापक वर्ग का था।
करामाज़ोव चरित्र—मैं इसी ओर इशारा कर रहा हूँ—सक्षम है
सबसे असंगत विरोधाभासों को संयोजित करते हुए, और सक्षम होने के लिए
सबसे ऊँची ऊँचाइयाँ और सबसे गहरी गहराइयाँ। उस शानदार टिप्पणी को याद रखें।
करामाज़ोव परिवार को करीब से देखने वाले एक युवा पर्यवेक्षक द्वारा बनाया गया चित्र।
श्री राकितिन के अनुसार, 'अपनी ही अवनति का बोध उतना ही आवश्यक है।'
उन लापरवाह, बेलगाम स्वभावों के लिए, उनकी उच्च उदारता की भावना के रूप में।
और यह सच है, उन्हें लगातार इस अप्राकृतिक मिश्रण की आवश्यकता होती है। दो
या तो वे एक ही क्षण में चरम सीमाओं पर होते हैं, या वे दुखी और असंतुष्ट होते हैं और
उनका अस्तित्व अपूर्ण है। वे विशाल हैं, रूस की मातृभूमि के समान विशाल; वे
सब कुछ स्वीकार करो और सब कुछ सहन करो।
वैसे, जूरी के सज्जनों, हमने अभी-अभी उस विषय पर थोड़ी चर्चा की है।
तीन हजार रूबल, और मैं थोड़ा पहले से ही अनुमान लगाने का साहस करूंगा। क्या
आप कल्पना कीजिए कि उस तरह का आदमी, इतनी रकम मिलने पर और इस तरह से
इस तरह, इतनी शर्म, इतनी बदनामी, इतनी घोर गिरावट की कीमत पर,
वह उसी दिन उस राशि का आधा हिस्सा अलग रखने में सक्षम हो सकता था,
हर दिन, और इसे एक छोटी थैली में सिलकर, और इसमें दृढ़ता होती।
उसके चरित्र के अनुरूप, उसे पूरे एक महीने तक अपने साथ लेकर घूमना,
हर प्रलोभन और उसकी अत्यधिक आवश्यकता के बावजूद! न तो नशे में
न तो शराबखानों में दुराचार, न ही जब वह देश में हवाई यात्रा कर रहा था, कोशिश कर रहा था
उसे पता नहीं किससे वह पैसा मिलेगा जो उसे वहां से हटने के लिए इतना आवश्यक है।
क्या उसने अपने पिता द्वारा प्रलोभित होने से अपनी प्रेमिका को बचाया?
खुद को उस छोटे से थैले को छूने से रोकने के लिए! क्यों, कम से कम अपने को छोड़ने से बचने के लिए ही सही!
वह उस प्रतिद्वंद्वी की रखैल बन जाता जिससे वह इतना ईर्ष्या करता था।
उन्होंने वह थैला जरूर खोला होगा और निगरानी रखने के लिए घर पर ही रुके होंगे।
उसके ऊपर, और उस पल का इंतजार करना जब वह आखिरकार उससे कहेगी 'मैं हूँ'
'तुम्हारी,' और उसके साथ उस घातक परिवेश से बहुत दूर उड़ जाना।
लेकिन नहीं, उसने अपने ताबीज को नहीं छुआ, और इसका कारण क्या है?
इसके लिए क्या कारण है? जैसा कि मैंने अभी कहा, इसका मुख्य कारण यह था कि जब वह ऐसा करती थी
अगर आप कहें, 'मैं आपका हूँ, मुझे जहाँ चाहें ले जाइए,' तो शायद उसके पास साधन हों।
उसे ले जाने के लिए। लेकिन कैदी के अपने शब्दों में, वह पहला कारण बहुत कम महत्वपूर्ण था।
दूसरे के बगल में वजन। उन्होंने कहा, जब तक मेरे पास वह पैसा है, मैं एक
मैं बदमाश हूँ, चोर नहीं, क्योंकि मैं हमेशा अपनी अपमानित मंगेतर के पास जा सकता हूँ, और
धोखाधड़ी से हड़पी गई राशि का आधा हिस्सा जमा करके, मैं हमेशा
उससे कहो, 'देखो, मैंने तुम्हारे आधे पैसे बर्बाद कर दिए हैं, और यह दिखा दिया है कि मैं एक
कमज़ोर और अनैतिक आदमी, और अगर आप चाहें तो एक बदमाश' (मैं कैदी के शब्दों का प्रयोग कर रहा हूँ)

(अपने स्वयं के भाव), 'लेकिन यद्यपि मैं एक बदमाश हूँ, मैं चोर नहीं हूँ, क्योंकि यदि मैं
अगर मैं चोर होता, तो मुझे तुम्हें पैसे का यह आधा हिस्सा वापस नहीं देना चाहिए था।
लेकिन मुझे इसे भी वैसे ही लेना चाहिए था जैसे मैंने दूसरे हिस्से को लिया था!' एक शानदार व्याख्या!
यह उन्मत्त, लेकिन कमजोर आदमी, जो प्रलोभन का विरोध नहीं कर सका
इस तरह की बदनामी की कीमत पर तीन हजार रूबल स्वीकार करना, यह
अचानक ही हर व्यक्ति में अत्यंत संयम और दृढ़ता आ जाती है, और वह अपने साथ एक
हजार रूबल को बिना छुए ही खो दिया। क्या यह बात बिल्कुल भी मेल खाती है?
क्या हमने उस चरित्र का विश्लेषण किया है? नहीं, और मैं आपको यह बताने का साहस करता हूँ कि असली
अगर दिमित्री करामाज़ोव वास्तव में ऐसी परिस्थितियों में ऐसा व्यवहार करते, तो शायद वे भी ऐसा ही करते।
उसने हिम्मत जुटाकर पैसे अलग रख दिए थे।
"पहली ही लालसा पर—उदाहरण के लिए, महिला का मनोरंजन करने के लिए
जिसके आधे पैसे वह पहले ही लुटा चुका था—वह ऐसा करता
उसने अपना छोटा सा थैला खोला और उसमें से कुछ सौ रूबल निकाले, क्यों?
क्या उसे ठीक आधी रकम वापस लेनी चाहिए थी, यानी पंद्रह
सौ रूबल? चौदह सौ क्यों नहीं? वह उतना ही अच्छा कर सकता था।
तब उसने कहा कि वह चोर नहीं था, क्योंकि वह चौदह वापस लाया था।
सौ रूबल। फिर एक और बार वह इसे दोबारा खोल देता और
एक और सौ निकाल लिए, फिर एक तिहाई, फिर एक चौथाई, और इससे पहले
महीने के अंत में वह आखिरी नोट से पहले वाला नोट ले लेता, यह महसूस करते हुए कि
अगर वह केवल सौ ही वापस ले आता तो चोर का उद्देश्य पूरा हो जाता।
वह सब कुछ चुरा लेता। और फिर वह इस आखिरी नोट को देखता।
और उसने खुद से कहा, 'एक को वापस देना वास्तव में सार्थक नहीं है।'
सौ; चलो इसे भी खर्च कर देते हैं!' असली दिमित्री करामाज़ोव इसी तरह से बात करते थे।
हम उसे जानते हैं, वह वैसा ही व्यवहार करता। इससे अधिक कुछ कल्पना भी नहीं की जा सकती।
यह छोटी थैली की किंवदंती की तुलना में वास्तविकता से अधिक असंगत है। कुछ नहीं
इससे भी ज्यादा अकल्पनीय हो सकता है। लेकिन हम इस पर बाद में चर्चा करेंगे।
कार्यवाही में सामने आए तथ्यों पर चर्चा करने के बाद
पिता और पुत्र के वित्तीय संबंधों के बारे में, और फिर से बहस करते हुए और
फिर से यह कहना बिल्कुल असंभव था कि ज्ञात तथ्यों के आधार पर इसका निर्धारण किया जा सके।
जो गलत था, इप्पोलिट किरिलोविच ने सबूतों को आगे बढ़ाया।
तीन हजार के बारे में मित्या के निश्चित विचार के संदर्भ में चिकित्सा विशेषज्ञ
उसका ऋणी होना।

9. गोगोल का तात्पर्य है।

अध्याय 7

एक ऐतिहासिक सर्वेक्षण

“चिकित्सा विशेषज्ञों ने हमें यह समझाने की पूरी कोशिश की है कि कैदी का मानसिक संतुलन बिगड़ गया है और वास्तव में वह एक पागल है। मेरा मानना है कि वह पूरी तरह से होश में है, और अगर वह होश में न होता तो वह और भी चालाकी से व्यवहार करता। जहाँ तक उसके पागल होने की बात है, मैं उससे सहमत हूँ, लेकिन केवल एक बात पर, और वह है तीन हज़ार के बारे में उसका अड़ियल विचार। फिर भी मुझे लगता है कि उसके पागलपन की प्रवृत्ति से कहीं अधिक सरल कारण हो सकता है। मैं उस युवा डॉक्टर से पूरी तरह सहमत हूँ जिसने कहा कि कैदी की मानसिक क्षमताएँ हमेशा से सामान्य रही हैं, और वह केवल चिड़चिड़ा और गुस्सैल रहा है। कैदी के लगातार और हिंसक क्रोध का कारण केवल क्रोध ही नहीं था; इसके पीछे एक विशेष मकसद था। वह मकसद ईर्ष्या है!”
यहां इप्पोलिट किरिलोविच ने कैदी के घातक जुनून का विस्तार से वर्णन किया है।
ग्रुशेंका के लिए। कहानी की शुरुआत उस क्षण से हुई जब कैदी उस "युवती" के कमरे में "उसे पीटने" गया था—"मैं उसके अपने शब्दों का प्रयोग कर रहा हूँ," अभियोक्ता ने समझाया—"लेकिन उसे पीटने के बजाय, वह वहीं उसके पैरों में पड़ा रहा। यहीं से उसके जुनून की शुरुआत हुई। उसी समय कैदी का पिता भी उसी युवती पर मोहित हो गया—यह एक अजीब और घातक संयोग था, क्योंकि दोनों ने एक ही समय में उस पर अपना दिल हार दिया, हालाँकि दोनों उसे पहले से जानते थे। और उसने दोनों में करामाज़ोव की विशिष्ट, सबसे हिंसक वासना को जगा दिया। हमारे पास उसका स्वयं का बयान है: 'मैं उन दोनों पर हँस रही थी।' हाँ, अचानक उसे उन दोनों का मज़ाक उड़ाने की इच्छा हुई, और उसने एक ही बार में उन दोनों को जीत लिया। वह बूढ़ा आदमी, जो पैसे की पूजा करता था, उसने तुरंत उसके एक बार आने के इनाम के रूप में तीन हज़ार रूबल अलग रख दिए, लेकिन उसके तुरंत बाद, अगर वह उसकी कानूनी पत्नी बन जाती, तो वह अपनी संपत्ति और अपना नाम उसके चरणों में अर्पित करने के लिए तैयार था। हमारे पास इसके पुख्ता सबूत हैं। जहाँ तक कैदी की बात है, उसके भाग्य की त्रासदी यह है कि... स्पष्ट है; यह हमारे सामने है। लेकिन यही उस युवक का 'खेल' था। जादूगरनी ने उस अभागे युवक को आखिरी क्षण तक कोई उम्मीद नहीं दी, जब वह उसके सामने घुटने टेककर अपने पिता और प्रतिद्वंद्वी के खून से सने हाथ फैलाए। उसी स्थिति में उसे गिरफ्तार किया गया। गिरफ्तारी के समय, स्त्री ने सच्चे पश्चाताप के साथ कहा, 'मुझे भी उसके साथ साइबेरिया भेज दो, मैंने ही उसे इस हालत में पहुँचाया है, मैं ही सबसे बड़ी दोषी हूँ।'
“वह प्रतिभाशाली युवक, जिसका जिक्र मैं पहले ही कर चुका हूँ, श्री रकितिन,
इस नायिका का संक्षिप्त और प्रभावशाली वर्णन इस प्रकार है: ‘वह जीवन के शुरुआती दौर में ही मोहभंग का शिकार हो गई, अपने मंगेतर द्वारा धोखा खाकर बर्बाद हो गई, जिसने उसे बहला-फुसलाकर छोड़ दिया। वह गरीबी में जी रही थी, अपने संभ्रांत परिवार द्वारा शापित थी, और एक धनी बूढ़े व्यक्ति की शरण में आ गई, जिसे वह आज भी अपना उपकारक मानती है। शायद उसके युवा हृदय में बहुत कुछ अच्छा था, लेकिन वह बहुत जल्दी कड़वाहट से भर गया। वह समझदार हो गई और पैसे बचाने लगी। वह समाज के प्रति व्यंग्यात्मक और द्वेषपूर्ण हो गई।’ उसके चरित्र के इस वर्णन के बाद यह आसानी से समझा जा सकता है कि वह उन दोनों पर शरारत और द्वेष के कारण ही हंसती होगी।
“निराशाजनक प्रेम और नैतिक पतन के एक महीने के बाद, जिसके दौरान उसने
अपनी मंगेतर के साथ विश्वासघात करने और अपने सम्मान के लिए सौंपी गई धनराशि हड़पने के कारण, कैदी लगातार ईर्ष्या से लगभग पागलों जैसी हालत में पहुँच गया था—और ईर्ष्या किससे थी? अपने पिता से! और सबसे बुरी बात यह थी कि वह पागल बूढ़ा आदमी उसी तीन हज़ार रूबल के ज़रिए अपनी प्रेमिका को लुभा रहा था, जिसे बेटा अपनी संपत्ति, अपनी माँ से मिली विरासत का हिस्सा मानता था, और जिसे उसका पिता उससे छीन रहा था। हाँ, मैं मानता हूँ कि यह सहना बहुत कठिन था! यह किसी को भी पागल कर सकता है। बात पैसे की नहीं थी, बल्कि इस बात की थी कि इस पैसे का इस्तेमाल इतनी घिनौनी धूर्तता से उसकी खुशी को बर्बाद करने के लिए किया गया था!

फिर अभियोजक ने यह बताना शुरू किया कि उसके हत्यारे की हत्या करने का विचार उसके मन में कैसे आया।
पिता ने कैदी के दिमाग में प्रवेश किया और तथ्यों के साथ अपने सिद्धांत को स्पष्ट किया।
“शुरुआत में वह इसके बारे में केवल शराबखानों में ही बात करता था—वह हर जगह इसके बारे में बात करता था।”
उस महीने। आह, उसे हमेशा लोगों के बीच रहना अच्छा लगता है, और वह अपने साथियों को सब कुछ बताना पसंद करता है, यहाँ तक कि अपने सबसे शातिर और खतरनाक विचार भी; वह अपने हर विचार को दूसरों के साथ साझा करना पसंद करता है, और किसी कारण से उम्मीद करता है कि जिन पर वह भरोसा करता है, वे उसके प्रति पूरी सहानुभूति दिखाएंगे, उसकी सभी परेशानियों और चिंताओं को समझेंगे, उसका साथ देंगे और किसी भी बात में उसका विरोध नहीं करेंगे। अगर ऐसा नहीं होता, तो वह गुस्से से आग बबूला हो जाता है और सराय में सब कुछ तोड़-फोड़ देता है। [इसके बाद कैप्टन स्नेगिरिओव के बारे में किस्सा सुनाया गया।] कैदी की बात सुनने वालों को आखिरकार लगने लगा कि शायद उसका इरादा सिर्फ धमकियों से कहीं ज़्यादा है, और इस तरह का उन्माद धमकियों को कार्रवाई में बदल सकता है।
यहां अभियोजक ने परिवार की मुलाकात का वर्णन किया।
मठ, अलेयोशा के साथ हुई बातचीत और हिंसा का वह भयावह दृश्य जब कैदी रात के खाने के तुरंत बाद अपने पिता के घर में घुस गया था।
अभियोजक ने आगे कहा, "मैं निश्चित रूप से यह दावा नहीं कर सकता कि कैदी..."
उस घटना से पहले ही उसने अपने पिता की हत्या करने का पक्का इरादा कर लिया था। फिर भी, यह विचार कई बार उसके मन में आया था और उसने इस पर विचार भी किया था—इसके लिए हमारे पास तथ्य, गवाह और उसके अपने शब्द मौजूद हैं। “न्यायपालिका के सज्जनों,” उसने आगे कहा, “मैं स्वीकार करता हूँ कि आज तक मैं इस बात को लेकर अनिश्चित था कि कैदी को सचेत पूर्वचिंता का दोषी माना जाए या नहीं। मुझे पूरा विश्वास था कि उसने उस घातक क्षण की कल्पना पहले ही कर ली थी, लेकिन केवल कल्पना ही की थी, उसे एक संभावना के रूप में देखा था। उसने निश्चित रूप से यह नहीं सोचा था कि वह अपराध कब और कैसे करेगा।”
लेकिन मुझे आज तक, उस घातक दस्तावेज़ के सामने आने तक, अनिश्चितता बनी रही।
अभी-अभी अदालत में पेश किया गया। आप लोगों ने खुद उस युवती की चीख सुनी, 'यह हत्या की योजना है, हत्या का कार्यक्रम है!' उसने उस दुखी कैदी के नशे में लिखे उस घिनौने पत्र को इसी तरह परिभाषित किया था। और वास्तव में, उस पत्र से हमें पता चलता है कि हत्या की पूरी घटना पूर्व नियोजित थी। यह दो दिन पहले लिखा गया था, और इसलिए अब हम निश्चित रूप से जानते हैं कि अपने भयानक इरादे को अंजाम देने से अड़तालीस घंटे पहले, कैदी ने कसम खाई थी कि अगर उसे अगले दिन पैसे नहीं मिले, तो वह अपने पिता की हत्या कर देगा ताकि इवान के जाते ही उनके तकिए के नीचे से नोटों वाला लिफाफा ले सके। 'इवान के जाते ही'—आपने यह सुना; तो उसने हर बात सोच-समझकर, हर परिस्थिति का आकलन किया था, और उसने ठीक वैसे ही किया जैसा उसने लिखा था। पूर्व नियोजित होने का प्रमाण निर्णायक है; अपराध पैसे के लिए ही किया गया होगा, यह स्पष्ट रूप से कहा गया है, यह लिखा और हस्ताक्षरित है। कैदी अपने हस्ताक्षर से इनकार नहीं करता है।
मुझे बताया जाएगा कि इसे लिखते समय वह नशे में था। लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि...
पत्र का महत्व कम नहीं होता, बल्कि इसके विपरीत; उसने नशे में वही लिखा जो उसने होश में रहते हुए सोचा था। अगर उसने होश में रहते हुए योजना न बनाई होती, तो वह नशे में उसे न लिखता। मुझसे पूछा जाएगा: तो फिर उसने शराबखानों में इसके बारे में बात क्यों की? ऐसा अपराध करने की पूर्व-कल्पना करने वाला व्यक्ति चुप रहता है और इसे अपने तक ही सीमित रखता है। हाँ, लेकिन उसने योजना बनाने से पहले ही इसके बारे में बात की थी, जब उसके मन में केवल इच्छा थी, केवल प्रेरणा थी। बाद में उसने इसके बारे में कम बात की। जिस शाम उसने 'मेट्रोपोलिस' शराबखाने में वह पत्र लिखा, उस शाम अपनी आदत के विपरीत वह चुप रहा, हालाँकि उसने शराब पी रखी थी। उसने बिलियर्ड्स नहीं खेला, वह एक कोने में बैठा रहा, किसी से बात नहीं की। उसने एक दुकानदार को उसकी सीट से ज़रूर उठाया, लेकिन यह लगभग अनजाने में हुआ, क्योंकि वह बिना हंगामा किए कभी शराबखाने में प्रवेश नहीं कर सकता था। यह सच है कि अंतिम

निर्णय लेने के बाद, उसे यह आशंका जरूर हुई होगी कि उसने अपनी योजना के बारे में पहले ही बहुत ज्यादा बात कर ली है, और इससे बाद में उसकी गिरफ्तारी और मुकदमा हो सकता है। लेकिन कोई चारा नहीं था; वह अपने शब्द वापस नहीं ले सकता था, लेकिन उसकी किस्मत ने पहले भी उसका साथ दिया था, वह फिर से उसका साथ देगी। उसे अपनी किस्मत पर पूरा भरोसा था, आप जानते हैं! मुझे यह भी स्वीकार करना होगा कि उसने उस घातक विपत्ति को टालने के लिए बहुत प्रयास किए। जैसा कि उसने अपनी खास भाषा में लिखा है, "कल मैं हर किसी से पैसे उधार लेने की कोशिश करूंगा, और अगर वे मुझे पैसे नहीं देंगे, तो खून-खराबा होगा।"
यहां इप्पोलिट किरिलोविच ने मित्या के सभी विवरणों का विस्तृत वर्णन करना शुरू किया।
पैसा उधार लेने के प्रयासों के बारे में उन्होंने बताया। उन्होंने सैमसनोव से अपनी मुलाकात और ल्यागावी की अपनी यात्रा का वर्णन किया। “परेशान, उपहासित, भूखा, यात्रा का खर्च उठाने के लिए अपनी घड़ी बेचकर (हालाँकि वह कहता है कि उसके पास पंद्रह सौ रूबल थे—जो एक मनगढ़ंत कहानी है), शहर में अपनी प्रेमिका को छोड़ने की ईर्ष्या से व्याकुल, इस संदेह से कि उसकी अनुपस्थिति में वह फ्योदोर पावलोविच के पास चली जाएगी, वह अंततः शहर लौट आया, और यह देखकर उसे बहुत खुशी हुई कि वह उसके पिता के पास नहीं थी। वह स्वयं उसके संरक्षक के पास उसके साथ गया। (अजीब बात है, ऐसा लगता है कि उसे सैमसनोव से ईर्ष्या नहीं थी, जो मनोवैज्ञानिक रूप से दिलचस्प है।) फिर वह पिछवाड़े के बगीचों में अपने घात में वापस चला गया, और वहाँ उसे पता चला कि स्मरद्याकोव को दौरा पड़ रहा है, दूसरा नौकर बीमार है—हालात साफ हैं और वह ‘संकेतों’ को जानता है—कितना बड़ा प्रलोभन! फिर भी उसने इसका विरोध किया; वह एक महिला के पास गया जो कुछ समय से शहर में रह रही थी और हमारे बीच बहुत सम्मानित थी, मैडम होहलाकोव। उस महिला ने, जिसने लंबे समय से उसके जीवन को करुणा से देखा था, उसे सबसे विवेकपूर्ण सलाह, कि वह अपने व्यभिचारी जीवन, अपने अनुचित प्रेम-संबंध, शराबखानों में अय्याशी में अपनी जवानी और जोश की बर्बादी को त्याग दे और साइबेरिया की सोने की खानों की ओर निकल पड़े: "यह तुम्हारी उग्र ऊर्जा, तुम्हारे रोमांटिक स्वभाव और रोमांच की प्यास के लिए एक रास्ता होगा।"
इस बातचीत के परिणाम और उस क्षण का वर्णन करने के बाद जब
कैदी को जब पता चला कि ग्रुशेंका सैमसनोव के यहाँ नहीं रुकी है, तो ईर्ष्या और मानसिक थकावट से व्याकुल उस अभागे व्यक्ति का अचानक उन्माद भड़क उठा, क्योंकि उसे लगा कि ग्रुशेंका ने उसे धोखा दिया है और अब वह उसके पिता के साथ है। इप्पोलिट किरिलोविच ने संयोग के घातक प्रभाव पर विस्तार से चर्चा करते हुए निष्कर्ष निकाला, “अगर नौकरानी ने उसे बताया होता कि उसकी मालकिन अपने पूर्व प्रेमी के साथ मोक्रोए में है, तो कुछ भी नहीं होता। लेकिन उसने अपना आपा खो दिया, वह केवल शपथ खाकर अपनी अनभिज्ञता का दावा कर सकती थी, और अगर कैदी ने उसे मौके पर ही नहीं मारा, तो यह केवल इसलिए हुआ क्योंकि वह अपनी झूठी मालकिन का पीछा कर रहा था।”
लेकिन ध्यान दें, वह इतना घबराया हुआ था कि अपने साथ पीतल का मूसल ले गया। ऐसा क्यों?
कोई दूसरा हथियार क्यों नहीं? लेकिन चूंकि वह पूरे एक महीने से अपनी योजना पर विचार कर रहा था और उसकी तैयारी कर रहा था, इसलिए हथियार जैसी कोई भी चीज़ जो उसकी नज़र में आती, वह झट से उठा लेता। उसे पिछले एक महीने से यह एहसास था कि इस तरह की कोई भी वस्तु हथियार का काम कर सकती है, इसलिए उसने तुरंत, बिना किसी झिझक के, पहचान लिया कि यह उसके उद्देश्य की पूर्ति करेगी। इसलिए यह बिल्कुल भी अनजाने में या अनैच्छिक रूप से नहीं था कि उसने वह घातक मूसल उठा लिया। और फिर हम उसे उसके पिता के बगीचे में पाते हैं—रास्ता साफ़ है, कोई गवाह नहीं है, अंधेरा और ईर्ष्या का माहौल है। यह संदेह कि वह वहाँ उसके साथ, उसके प्रतिद्वंद्वी के साथ, उसकी बाहों में थी, और शायद उस पल उस पर हंस रही थी—उसकी सांसें थम गईं। और यह महज़ संदेह नहीं था, धोखा खुला और स्पष्ट था। वह वहाँ ज़रूर होगी, उस रोशन कमरे में, वह पर्दे के पीछे ज़रूर होगी; और वह बेचारा हमें यह विश्वास दिलाना चाहता है कि वह खिड़की तक चुपके से गया, सम्मानपूर्वक अंदर झाँका, और कुछ भयानक और अनैतिक होने के डर से चुपचाप पीछे हट गया। और वह हमें इस बात का यकीन दिलाने की कोशिश करता है, हमें, जो उसके चरित्र को समझते हैं, जो उस समय उसकी मनस्थिति को जानते हैं, और यह भी कि वह उन संकेतों को जानता था जिनसे वह तुरंत घर में प्रवेश कर सकता था। इस बिंदु पर इप्पोलिट किरिलोविच ने रुककर स्मर्ड्याकोव के हत्या से संदिग्ध संबंध पर विस्तार से चर्चा शुरू की। उन्होंने यह बहुत ही विस्तार से किया, और सभी को

एहसास हुआ कि यद्यपि वह उस संदेह को तुच्छ बताते थे, फिर भी वे इस विषय को अत्यंत महत्वपूर्ण मानते थे।

अध्याय 8

स्मेरद्यकोव पर एक ग्रंथ

"सबसे पहले, इस संदेह का स्रोत क्या था?" (इप्पोलिट किरिलोविच ने बोलना शुरू किया।) “सबसे पहले जिसने चिल्लाकर कहा कि स्मर्ड्याकोव ने हत्या की है, वह खुद कैदी था, उसकी गिरफ्तारी के समय। फिर भी, तब से लेकर आज तक उसने इस आरोप की पुष्टि के लिए एक भी तथ्य पेश नहीं किया है, न ही किसी तथ्य का हल्का सा भी संकेत। इस आरोप की पुष्टि केवल तीन व्यक्तियों ने की है—कैदी के दो भाई और मैडम स्वेतलोव। इन भाइयों में से बड़े ने आज ही अपना संदेह व्यक्त किया, जब वह निस्संदेह मस्तिष्क ज्वर से पीड़ित थे। लेकिन हम जानते हैं कि पिछले दो महीनों से वह अपने भाई के अपराध के बारे में हमारे विश्वास से पूरी तरह सहमत हैं और उन्होंने इस विचार का खंडन करने का प्रयास नहीं किया। लेकिन इस बारे में बाद में बात करेंगे। छोटे भाई ने स्वीकार किया है कि उसके पास स्मर्ड्याकोव के अपराध के बारे में अपने विचार का समर्थन करने के लिए जरा सा भी तथ्य नहीं है, और वह केवल कैदी के अपने शब्दों और उसके चेहरे के भावों से इस निष्कर्ष पर पहुंचा है। हाँ, सबूत का वह चौंकाने वाला टुकड़ा आज उसके द्वारा दो बार पेश किया गया है। मैडम स्वेतलोव तो और भी चौंकाने वाली थीं। ‘कैदी आपको जो बताता है, आपको उसे मानना ही होगा’ विश्वास करो; वह झूठ बोलने वाला आदमी नहीं है।’ कैदी के भाग्य को लेकर बेहद चिंतित इन तीनों व्यक्तियों द्वारा स्मरद्याकोव के खिलाफ यही एकमात्र सबूत पेश किया गया है। फिर भी स्मरद्याकोव के दोषी होने की थ्योरी को खूब उछाला गया है, और आज भी कायम रखा जा रहा है। क्या यह विश्वसनीय है? क्या यह संभव है?
यहां इप्पोलिट किरिलोविच ने व्यक्तित्व का वर्णन करना आवश्यक समझा।
स्मरद्याकोव के बारे में, "जिसने पागलपन के दौरे में अपनी जान दे दी थी।" उन्होंने उसे कम बुद्धि वाला, नाममात्र का शिक्षित व्यक्ति बताया, जो अपनी समझ से परे दार्शनिक विचारों और कर्तव्य के कुछ आधुनिक सिद्धांतों से विचलित हो गया था। ये सिद्धांत उसने अपने स्वामी, जो शायद उसके पिता भी थे, फ्योदोर पावलोविच के लापरवाह जीवन से सीखे थे; और सैद्धांतिक रूप से, अपने स्वामी के बड़े बेटे, इवान फ्योदोरोविच के साथ विभिन्न विचित्र दार्शनिक वार्तालापों से सीखे थे, जो शायद नीरस महसूस कर रहा था या नौकर का मज़ाक उड़ाकर अपना मनोरंजन करना चाहता था, इसलिए वह इन बातों में आसानी से शामिल हो जाता था। इप्पोलिट किरिलोविच ने बताया, "उसने अपने पिता के घर में अंतिम दिनों के दौरान अपनी आध्यात्मिक स्थिति के बारे में मुझसे स्वयं बात की थी; लेकिन अन्य लोगों ने भी इसकी गवाही दी है - स्वयं कैदी, उसका भाई और नौकर ग्रिगोरी - यानी वे सभी जो उसे अच्छी तरह जानते थे।"
इसके अलावा, स्मर्ड्याकोव, जिनका स्वास्थ्य उनके दौरे से हिल गया था
मिर्गी से ग्रस्त उस व्यक्ति में मुर्गे जितनी भी हिम्मत नहीं थी। कैदी ने खुद हमें बताया, 'वह मेरे पैरों पर गिर पड़ा और उन्हें चूमा,' इससे पहले कि उसे एहसास होता कि यह बयान उसके लिए कितना नुकसानदायक साबित होगा। उसने अपनी खास भाषा में उसके बारे में कहा, 'वह मिर्गी से ग्रस्त मुर्गे जैसा है।' कैदी ने उसे

अपना राजदार चुना (उसके अपने शब्दों में) और उसे डरा-धमकाकर आखिरकार जासूस बनने के लिए राजी कर लिया। इस भूमिका में उसने अपने मालिक को धोखा दिया और कैदी को उन लिफाफों के बारे में बता दिया जिनमें चिट्ठियां थीं और उन संकेतों के बारे में भी जिनसे वह घर में घुस सकता था। भला वह उसे बताए बिना कैसे रह सकता था? पूछताछ के दौरान उसने कांपते हुए कहा, 'वह मुझे मार डालता, मैं देख सकता था कि वह मुझे मार डालता,' हालांकि उस समय तक उसका उत्पीड़क गिरफ्तार हो चुका था और उसे कोई नुकसान नहीं पहुंचा सकता था। 'वह हर पल मुझ पर शक करता था।' डर और थरथराहट के मारे मैंने उसे शांत करने के लिए जल्दी से अपने सारे रहस्य बता दिए, ताकि वह समझ जाए कि मैंने उसे धोखा नहीं दिया है और मुझे जिंदा छोड़ दे।' ये उसके अपने शब्द हैं। मैंने इन्हें लिख लिया है और मुझे याद हैं। 'जब वह मुझ पर चिल्लाने लगता था, तो मैं घुटनों के बल गिर जाता था।'
वह स्वभाव से बहुत ईमानदार थे और उन्हें सभी का पूरा भरोसा प्राप्त था।
अपने मालिक के प्रति, जब से उसने उसका खोया हुआ कुछ पैसा लौटाया था, तब से वह उसका बहुत आभारी था। इसलिए यह माना जा सकता है कि बेचारे को अपने मालिक को धोखा देने का पछतावा हुआ होगा, जिसे वह अपना उपकारी मानता था। सबसे कुशल डॉक्टरों के अनुसार, मिर्गी से गंभीर रूप से पीड़ित व्यक्ति लगातार और अस्वस्थ आत्म-निंदा के शिकार होते हैं। वे अपनी 'बुराई' को लेकर चिंतित रहते हैं, वे अंतरात्मा की पीड़ा से ग्रस्त रहते हैं, अक्सर बिना किसी कारण के; वे तरह-तरह के दोषों और अपराधों को बढ़ा-चढ़ाकर बताते हैं और अक्सर मनगढ़ंत बातें गढ़ते हैं। और यहाँ हमारे सामने एक ऐसा ही व्यक्ति है जिसे वास्तव में भय और धमकी के कारण गलत काम करने के लिए मजबूर किया गया था।
इसके अलावा, उसे इस बात का प्रबल पूर्वाभास था कि कुछ भयानक होने वाला है।
उनकी आंखों के सामने घट रही स्थिति का परिणाम। जब इवान फ्योदोरोविच तबाही से ठीक पहले मॉस्को के लिए रवाना हो रहे थे, तब स्मरद्याकोव ने उनसे रुकने की विनती की, हालांकि वे इतने डरपोक थे कि उन्हें सीधे-सीधे अपने डर के बारे में नहीं बता सके। उन्होंने इशारों में ही अपनी बात रखी, लेकिन उनके इशारे समझ में नहीं आए।
“यह ध्यान देने योग्य है कि वह इवान फ्योदोरोविच को एक रक्षक के रूप में देखता था, जिसकी घर में उपस्थिति इस बात की गारंटी थी कि कोई नुकसान नहीं होगा। दिमित्री करामाज़ोव के नशे में लिखे पत्र के वाक्य को याद कीजिए, 'अगर इवान चला गया तो मैं बूढ़े आदमी को मार डालूंगा।' इसलिए इवान फ्योदोरोविच की उपस्थिति घर में शांति और व्यवस्था की गारंटी के रूप में सभी को प्रतीत होती थी।”
लेकिन वह चला गया, और अपने युवा स्वामी के जाने के एक घंटे के भीतर ही।
स्मरद्याकोव को मिर्गी का दौरा पड़ा। लेकिन यह पूरी तरह से समझ में आने वाली बात है। यहाँ मुझे यह बताना ज़रूरी है कि स्मरद्याकोव, एक तरह के डर और निराशा से घिरे हुए, पिछले कुछ दिनों से यह महसूस कर रहे थे कि तनाव के क्षणों में उन्हें पहले भी जो दौरे पड़ते थे, उनमें से एक फिर से आ सकता है। ऐसे दौरे का दिन और समय तो पहले से नहीं बताया जा सकता, लेकिन हर मिर्गी रोगी को पहले से ही आभास हो जाता है कि उसे दौरा पड़ने वाला है। डॉक्टर भी यही कहते हैं। और इसलिए, जैसे ही इवान फ्योदोरोविच घर से निकले, अपनी अकेली और असुरक्षित स्थिति से निराश स्मरद्याकोव तहखाने में चले गए। वे सीढ़ियों से नीचे उतरते हुए सोच रहे थे कि उन्हें दौरा पड़ेगा या नहीं, और अगर अचानक ही आ जाए तो क्या होगा। और इसी आशंका, इसी हैरानी ने उनके गले में ऐंठन पैदा कर दी, जो ऐसे दौरों से पहले हमेशा होती है, और वे तहखाने में बेहोश होकर गिर पड़े। और इस पूरी तरह से स्वाभाविक घटना में लोग शक पैदा करने की कोशिश करते हैं, यह संकेत कि क्या वह जानबूझकर दौरे का नाटक कर रहे थे। लेकिन, अगर यह जानबूझकर किया गया था, तो तुरंत यह सवाल उठता है कि उसका मकसद क्या था? वह किस बात पर भरोसा कर रहा था? उसका लक्ष्य क्या था? मैं चिकित्सा के बारे में कुछ नहीं कह रहा: मुझे बताया गया है कि विज्ञान भी गलत रास्ते पर जा सकता है: डॉक्टर नकली और असली में फर्क नहीं कर पाते थे। ऐसा हो सकता है, लेकिन मुझे एक सवाल का जवाब दीजिए: ऐसे नकली सामान के पीछे उसका क्या मकसद था? क्या हत्या की योजना बनाते समय, वह हत्या से ठीक पहले दौरे का नाटक करके घरवालों का ध्यान अपनी ओर खींचना चाहता था?
"देखिए, जूरी के सज्जनों, हत्या की रात, वहाँ थे..."
फ्योदोर पावलोविच के घर में पाँच लोग थे—स्वयं फ्योदोर पावलोविच (लेकिन उन्होंने आत्महत्या नहीं की, यह स्पष्ट है); फिर उनका नौकर ग्रिगोरी, लेकिन वह भी लगभग मारा गया था; तीसरा व्यक्ति ग्रिगोरी की पत्नी

मार्फा इग्नात्येवना थी, लेकिन यह सोचना भी शर्मनाक होगा कि वह अपने मालिक की हत्या कर सकती है। दो लोग बचे हैं—कैदी और स्मरद्याकोव। लेकिन, अगर हम कैदी के इस बयान पर विश्वास करें कि वह हत्यारा नहीं है, तो स्मरद्याकोव ही हत्यारा रहा होगा, क्योंकि कोई दूसरा विकल्प नहीं है, कोई और मिल ही नहीं सकता। यही कारण है कि कल आत्महत्या करने वाले उस अभागे मूर्ख पर चालाकी से, चौंकाने वाला आरोप लगाया गया। अगर किसी और पर ज़रा सा भी शक होता, अगर कोई छठा व्यक्ति होता, तो मुझे यकीन है कि कैदी भी स्मरद्याकोव पर आरोप लगाने में शर्म महसूस करता और उस छठे व्यक्ति पर ही आरोप लगाता, क्योंकि स्मरद्याकोव पर उस हत्या का आरोप लगाना सरासर बेतुका है।

“सज्जनों, आइए मनोविज्ञान को एक तरफ रख दें, आइए चिकित्सा को एक तरफ रख दें, आइए तर्क को एक तरफ रख दें, तो आइए केवल तथ्यों पर ध्यान दें और देखें कि तथ्य हमें क्या बताते हैं। यदि स्मरद्याकोव ने उसकी हत्या की, तो उसने यह कैसे किया? अकेले या कैदी की सहायता से? आइए पहले विकल्प पर विचार करें—कि उसने यह अकेले किया। यदि उसने उसकी हत्या की है, तो इसका कोई उद्देश्य रहा होगा, स्वयं के किसी लाभ के लिए। लेकिन कैदी के हत्या के उद्देश्य—घृणा, ईर्ष्या आदि—का कोई आभास न होने के कारण, स्मरद्याकोव ने केवल लाभ के लिए उसकी हत्या की होगी, ताकि वह तीन हजार रूबल प्राप्त कर सके जो उसने अपने मालिक को लिफाफे में रखते हुए देखा था। फिर भी वह दूसरे व्यक्ति —और वह व्यक्ति जो सबसे अधिक संबंधित था, अर्थात् कैदी—को पैसे और संकेतों के बारे में सब कुछ बताता है, लिफाफा कहाँ था, उस पर क्या लिखा था, वह किससे बंधा था, और सबसे बढ़कर, उसे उन संकेतों के बारे में बताता है जिनसे वह घर में प्रवेश कर सकता था। क्या उसने यह केवल स्वयं को धोखा देने के लिए किया, या उसी काम में किसी ऐसे व्यक्ति को आमंत्रित करने के लिए किया जो उस लिफाफे को स्वयं प्राप्त करने के लिए उत्सुक होगा? ‘हाँ,’ मुझे बताया जाएगा, ‘लेकिन उसने डर के मारे भेद खोल दिया।’ लेकिन आप इसे कैसे समझाएँगे? एक ऐसा व्यक्ति जो इतना दुस्साहसी, बर्बर कृत्य सोच सकता था और उसे अंजाम दे सकता था, वह ऐसे तथ्य बताता है जो दुनिया में किसी और को नहीं पता, और अगर वह चुप रहता, तो कोई भी कभी अनुमान नहीं लगा पाता!

नहीं, चाहे वह कितना भी कायर क्यों न हो, अगर उसने ऐसे अपराध की साजिश रची होती, उसे लिफाफे और संकेतों के बारे में किसी को भी बताने के लिए कोई भी मजबूर नहीं कर सकता था, क्योंकि ऐसा करना खुद को पहले ही धोखा देने जैसा होता। अगर उसे जानकारी देने के लिए मजबूर किया जाता, तो वह कुछ न कुछ मनगढ़ंत कहानी बना लेता, कोई झूठ बोल देता, लेकिन वह इस बारे में चुप रहता। दूसरी ओर, अगर उसने पैसे के बारे में कुछ नहीं कहा होता, बल्कि हत्या करके पैसा चुरा लिया होता, तो दुनिया में कोई भी उस पर लूट के इरादे से हत्या का आरोप नहीं लगा सकता था, क्योंकि उसके सिवा किसी ने भी पैसा नहीं देखा था, उसके सिवा किसी को भी घर में उसके होने की जानकारी नहीं थी। अगर उस पर हत्या का आरोप भी लगता, तो यही सोचा जा सकता था कि उसने किसी और मकसद से ऐसा किया है। लेकिन चूंकि किसी ने भी उसमें पहले से ऐसा कोई मकसद नहीं देखा था, और इसके विपरीत, सभी ने देखा कि उसका मालिक उससे स्नेह करता था और उस पर अपना विश्वास रखता था, इसलिए उस पर शक सबसे आखिर में किया जाता। लोग सबसे पहले उस आदमी पर शक करते जिसके पास कोई मकसद होता, जिसने खुद ऐसे मकसद होने की बात कही हो, जिसने इसे छिपाया न हो; दरअसल, उन्हें मारे गए व्यक्ति के बेटे दिमित्री फ्योदोरोविच पर शक होता। अगर स्मरद्याकोव ने उसकी हत्या और लूट की होती, और इसका आरोप बेटे पर लगता, तो ज़ाहिर है यह स्मरद्याकोव के लिए फ़ायदेमंद होता। लेकिन क्या हमें यह मानना चाहिए कि हत्या की साज़िश रचते हुए भी उसने अपने बेटे दिमित्री को पैसे, लिफ़ाफ़े और संकेतों के बारे में बताया? क्या यह तर्कसंगत है? क्या यह बात साफ़ है?

“जब स्मर्ड्याकोव द्वारा नियोजित हत्या का दिन आया, तब हमारे पास उसका बनावटी रूप से सीढ़ियों से नीचे गिरना—क्या मकसद था? पहला तो यह कि ग्रिगोरी, जो अपनी दवा लेने वाला था, उसे टाल दे और घर की रखवाली करे, क्योंकि घर की देखभाल करने वाला कोई नहीं था। दूसरा, मेरा अनुमान है, कि उसका मालिक, यह देखकर कि उसकी रखवाली करने वाला कोई नहीं है और अपने बेटे के आने के डर से, अपनी सतर्कता और सावधानी को और बढ़ा दे। और सबसे बढ़कर, मेरा अनुमान है कि दौरे से लाचार हुए स्मर्ड्याकोव को रसोई से, जहाँ वह हमेशा बाकी सबसे अलग सोता था और जहाँ वह अपनी मर्जी से आ-जा सकता था, ग्रिगोरी के कमरे में ले जाया जाए, जो झोपड़ी के दूसरे छोर पर था

और जहाँ उसे हमेशा रखा जाता था, उनके अपने बिस्तर से तीन कदम की दूरी पर एक पर्दे से अलग। यह उसके मालिक और दयालु मार्फा इग्नात्येवना द्वारा स्थापित सदियों पुरानी प्रथा थी, जब भी उसे दौरा पड़ता था। वहाँ, पर्दे के पीछे लेटे हुए, वह संभवतः नाटक जारी रखने के लिए कराहना शुरू कर देता, और इस तरह उन्हें पूरी रात जगाए रखता (जैसा कि ग्रिगोरी और उसकी पत्नी ने गवाही दी)। और यह सब, हमें यह मानना है, ताकि वह आसानी से उठकर अपने मालिक की हत्या कर सके!
लेकिन मुझे बताया जाएगा कि उसने जानबूझकर बीमारी का नाटक किया ताकि वह
संदेह न हो और उसने कैदी को पैसे और संकेतों के बारे में बताकर उसे हत्या करने के लिए उकसाया हो, और जब उसने उसकी हत्या कर दी और पैसे लेकर शोर मचाते हुए (संभवतः लोगों को जगाते हुए) चला गया, तो क्या मैं मान लूँ कि स्मरद्याकोव उठा और अंदर गया—किसलिए? अपने मालिक की दूसरी बार हत्या करने और पहले से चुराए गए पैसे को लेकर जाने के लिए? सज्जनों, क्या आप हंस रहे हैं? मुझे ऐसे सुझाव देने में शर्म आती है, लेकिन, भले ही यह अविश्वसनीय लगे, कैदी का यही आरोप है। जब वह घर से निकला, ग्रिगोरी को नीचे गिरा दिया और शोर मचाया, तो वह हमें बताता है कि स्मरद्याकोव उठा, अंदर गया और अपने मालिक की हत्या कर दी और पैसे चुरा लिए! मैं इस बात पर ज़ोर नहीं दूंगा कि स्मरद्याकोव ने शायद ही पहले से इसकी कल्पना की होगी, और यह अनुमान लगाया होगा कि क्रोधित और परेशान बेटा, हालांकि वह संकेतों को जानता था, केवल सम्मानपूर्वक अंदर झाँकेगा और स्मरद्याकोव को उसका लूटा हुआ माल छोड़कर वापस चला जाएगा। न्यायधीश महोदय, मैं आपसे गंभीरतापूर्वक यह प्रश्न पूछता हूँ; वह कौन सा क्षण था जब स्मरद्याकोव ने अपना अपराध किया होगा? उस क्षण का नाम बताइए, अन्यथा आप उस पर आरोप नहीं लगा सकते।
लेकिन शायद, यह दौरा सचमुच का था, बीमार आदमी अचानक होश में आया, एक चीख सुनी और बाहर चला गया। तो फिर क्या हुआ? उसने चारों ओर देखा और कहा, 'क्यों न जाकर मालिक को मार डालूँ?' और उसे कैसे पता चला कि क्या हुआ था, क्योंकि वह उस क्षण तक बेहोश पड़ा था? लेकिन इन कल्पनाओं की भी एक सीमा होती है।
"'बिल्कुल सही,' कुछ समझदार लोग मुझसे कहेंगे, 'लेकिन अगर वे इसमें होते तो क्या होता?'
समझौता? अगर उन्होंने मिलकर उसकी हत्या कर दी और पैसे आपस में बाँट लिए तो फिर क्या होगा?'
वाकई एक गंभीर सवाल! और इसे साबित करने वाले तथ्य चौंकाने वाले हैं। एक हत्या को अंजाम देता है और सारी मुसीबतें खुद उठाता है, जबकि उसका साथी एक तरफ पड़ा हुआ है और बेहोशी का नाटक कर रहा है, ताकि हर किसी को शक हो, उसके मालिक को डर लगे और ग्रिगोरी को भी। यह जानना दिलचस्प होगा कि किन वजहों से इन दोनों साथियों ने ऐसी पागलपन भरी योजना बनाई होगी।
लेकिन शायद यह स्मरद्याकोव की सक्रिय मिलीभगत का मामला नहीं था।
कुछ हद तक, लेकिन केवल निष्क्रिय सहमति से; शायद स्मरद्याकोव डर गया था और हत्या को रोकने के लिए सहमत नहीं हुआ, और यह जानते हुए कि उसे अपने मालिक की हत्या होने देने का दोषी ठहराया जाएगा, बिना मदद के लिए चिल्लाए या विरोध किए, उसने दिमित्री करामाज़ोव से नाटक करके वहाँ से हटने की अनुमति प्राप्त कर ली होगी - 'तुम उसे जैसे चाहो मार सकते हो; मुझे इससे कोई फर्क नहीं पड़ता।'
लेकिन चूंकि स्मरद्याकोव के इस हमले से घर में अफरा-तफरी मचने वाली थी, इसलिए दिमित्री करामाज़ोव ऐसी योजना के लिए कभी सहमत नहीं हो सकता था। हालाँकि, मैं इस बिंदु को छोड़ देता हूँ। मान लीजिए कि वह सहमत हो गया था, तब भी यही निष्कर्ष निकलेगा कि दिमित्री करामाज़ोव हत्यारा और उकसाने वाला है, और स्मरद्याकोव केवल एक निष्क्रिय साथी है, या यहाँ तक कि एक साथी भी नहीं, बल्कि केवल डर के मारे अपनी इच्छा के विरुद्ध सहमति दी।
लेकिन हम क्या देखते हैं? जैसे ही उसे गिरफ्तार किया जाता है, कैदी तुरंत
सारा दोष स्मर्ड्याकोव पर डाल दिया जाता है, उस पर अपने साथी होने का आरोप नहीं लगाया जाता, बल्कि खुद हत्यारा होने का आरोप लगाया जाता है। वह कहता है, 'उसने यह अकेले किया। उसने उसकी हत्या की और उसे लूटा। यह उसी के हाथों का काम था।' अजीब तरह के साथी जो एक-दूसरे पर तुरंत आरोप लगाने लगते हैं! और करामाज़ोव के लिए जोखिम के बारे में सोचिए। अपने साथी के बिस्तर पर पड़े रहने के दौरान हत्या करने के बाद, वह दोष उस बीमार व्यक्ति पर डाल देता है, जिसे शायद बुरा लगा होगा और आत्मरक्षा में वह सच कबूल कर सकता था। क्योंकि वह देख सकता था कि अदालत तुरंत फैसला करेगी कि वह कितना

जिम्मेदार है, और इसलिए उसने सोचा होगा कि अगर उसे सजा मिलती है, तो वह असली हत्यारे की तुलना में बहुत कम होगी। लेकिन उस स्थिति में वह निश्चित रूप से कबूलनामा कर देता, फिर भी उसने ऐसा नहीं किया। स्मर्ज्याकोव ने कभी भी उनकी मिलीभगत का संकेत नहीं दिया, हालांकि असली हत्यारा उस पर आरोप लगाता रहा और कहता रहा कि उसने अपराध अकेले किया है।
इसके अलावा, स्मरद्याकोव ने जांच के दौरान स्वेच्छा से यह बयान दिया कि
उसी ने कैदी को नोटों वाले लिफाफे और संकेतों के बारे में बताया था, और यह भी कि अगर वह न होता तो कैदी को इनके बारे में कुछ भी पता न चलता। अगर वह सचमुच दोषी सह-अपराधी होता, तो क्या वह पूछताछ में इतनी आसानी से यह बयान देता? इसके विपरीत, वह इसे छिपाने, तथ्यों को तोड़-मरोड़कर पेश करने या उन्हें कम करके बताने की कोशिश करता। लेकिन उसने तथ्यों को न तो तोड़ा-मरोड़ा और न ही कम करके बताया। केवल एक निर्दोष व्यक्ति, जिसे सह-अपराध में शामिल होने का डर न हो, वही ऐसा कर सकता था। और अपनी बीमारी और इस विपत्ति से उपजे दुख में उसने कल फांसी लगा ली। उसने अपनी खास भाषा में एक नोट छोड़ा, जिसमें लिखा था, 'मैं अपनी इच्छा और झुकाव से खुद को नष्ट कर रहा हूँ ताकि किसी पर कोई दोष न लगे।' इसमें जोड़ने में उसे क्या हर्ज था: 'हत्यारा मैं हूँ, करामाज़ोव नहीं'? लेकिन उसने ऐसा नहीं किया। क्या उसके अंतरात्मा ने उसे आत्महत्या करने के लिए प्रेरित किया, न कि अपना अपराध स्वीकार करने के लिए?
और उसके बाद क्या हुआ? तीन हजार रूबल के नोट लाए गए।
अभी-अभी अदालत में आए लोगों को बताया गया कि ये वही चीज़ें हैं जो इस लिफाफे में थीं जो अब हमारे सामने मेज पर रखा है, और गवाह को ये चीज़ें स्मरद्याकोव से एक दिन पहले मिली थीं। लेकिन मुझे उस दर्दनाक दृश्य को याद करने की ज़रूरत नहीं है, हालांकि मैं एक-दो बातें ज़रूर कहूँगा, ऐसी छोटी-छोटी बातें जो शायद पहली नज़र में सबको समझ न आएँ और इसलिए नज़रअंदाज़ हो जाएँ। पहली बात तो यह है कि स्मरद्याकोव ने पैसे लौटा दिए होंगे और कल पश्चाताप से आत्महत्या कर ली होगी। और कल ही उसने इवान करामाज़ोव के सामने अपना गुनाह कबूल किया, जैसा कि बाद वाले ने हमें बताया है। अगर ऐसा नहीं होता, तो इवान फ्योदोरोविच अब तक चुप क्यों रहता? और अगर उसने गुनाह कबूल कर लिया है, तो मैं फिर पूछता हूँ, उसने अपने आखिरी पत्र में पूरी सच्चाई क्यों नहीं बताई, यह जानते हुए कि अगले दिन निर्दोष कैदी को इस भयानक परीक्षा का सामना करना पड़ेगा?
“सिर्फ पैसा ही सबूत नहीं है। एक हफ्ते पहले, बिलकुल संयोग से, यह तथ्य सामने आया।
मुझे और इस अदालत में उपस्थित दो अन्य व्यक्तियों को यह जानकारी मिली है कि इवान फ्योदोरोविच ने पांच-पांच हजार के दो पांच प्रतिशत कूपन—अर्थात् कुल दस हजार—प्रांत के प्रमुख नगर में विनिमय के लिए भेजे थे। मैं इसका उल्लेख केवल यह बताने के लिए कर रहा हूँ कि किसी के पास भी पैसा हो सकता है, और यह सिद्ध नहीं किया जा सकता कि ये वही नोट हैं जो फ्योदोर पावलोविच के लिफाफे में थे।
“इवान करामाज़ोव को कल इस तरह का एक संदेश प्राप्त होने के बाद
असली हत्यारे से मिली अहमियत के बावजूद, वह हिला तक नहीं। उसने तुरंत इसकी सूचना क्यों नहीं दी? उसने सब कुछ सुबह तक क्यों टाल दिया? मुझे लगता है कि मुझे इस पर अनुमान लगाने का पूरा अधिकार है। पिछले एक हफ्ते से उसकी सेहत बिगड़ रही थी: उसने एक डॉक्टर और अपने सबसे करीबी दोस्तों को बताया था कि उसे मतिभ्रम हो रहा है और मृतकों के भूत दिखाई दे रहे हैं: वह उस मानसिक बुखार के शुरुआती दौर में था जिससे वह आज पीड़ित हुआ है। इस हालत में उसे अचानक स्मरद्याकोव की मौत की खबर मिली, और उसने तुरंत सोचा, 'वह आदमी मर गया है, मैं सारा दोष उस पर डाल सकता हूँ और अपने भाई को बचा सकता हूँ। मेरे पास पैसे हैं। मैं नोटों का एक बंडल लूँगा और कहूँगा कि स्मरद्याकोव ने मरने से पहले मुझे ये दिए थे।' आप कहेंगे कि यह बेईमानी थी: मरे हुए व्यक्ति पर भी बदनामी करना बेईमानी है, और यहाँ तक कि अपने भाई को बचाने के लिए भी। सच है, लेकिन अगर उसने अनजाने में बदनामी की हो तो? क्या होगा अगर नौकर की अचानक मौत की खबर से पूरी तरह से व्याकुल होकर उसने यह कल्पना कर ली हो कि यह सचमुच ऐसा ही था? आपने हाल ही का दृश्य देखा है: आपने गवाह की हालत देखी है। वह खड़ा था और बोल रहा था, लेकिन उसका दिमाग कहाँ था?
इसके बाद कैदी द्वारा दो दिन पहले लिखा गया पत्र प्रस्तुत किया गया।

अपराध से पहले, और हत्या की पूरी योजना के साथ, यह लिफाफा तैयार किया गया था। तो फिर हम किसी और योजना की तलाश क्यों कर रहे हैं? अपराध ठीक इसी योजना के अनुसार किया गया था, और इसे लिखने वाले के अलावा किसी और ने नहीं किया था। जी हाँ, जूरी के सज्जनों, यह बिना किसी रुकावट के हो गया! वह अपने पिता की खिड़की से सम्मानपूर्वक और डरपोक होकर नहीं भागा, हालाँकि उसे पूरा यकीन था कि उसकी प्रेमिका उसके साथ है। नहीं, यह बेतुका और असंभव है! वह अंदर गया और उसने उसकी हत्या कर दी। संभवतः उसने गुस्से में, द्वेष से जलते हुए, अपने घृणास्पद प्रतिद्वंद्वी को देखते ही उसकी हत्या कर दी। लेकिन उसकी हत्या करने के बाद, शायद पीतल के मूसल के एक ही प्रहार से, और सावधानीपूर्वक तलाशी के बाद यह सुनिश्चित करने के बाद कि वह वहाँ नहीं है, उसने तकिए के नीचे हाथ डालकर लिफाफा निकालना नहीं भूला, जिसका फटा हुआ आवरण अब हमारे सामने मेज पर पड़ा है।
मैं इस तथ्य का उल्लेख इसलिए कर रहा हूँ ताकि आप एक बात पर ध्यान दें, जो मेरे विचार से बहुत महत्वपूर्ण है।
यह एक विशिष्ट परिस्थिति है। यदि वह एक अनुभवी हत्यारा होता और उसने केवल लाभ के लिए हत्या की होती, तो क्या वह फटे हुए लिफाफे को लाश के पास, जिस स्थिति में वह मिला, उसी स्थिति में छोड़ देता? उदाहरण के लिए, यदि स्मरद्याकोव ने अपने मालिक को लूटने के लिए उसकी हत्या की होती, तो वह लिफाफे को अपने साथ ले जाता, उसे अपने शिकार की लाश के ऊपर खोलने की जहमत भी नहीं उठाता, क्योंकि उसे निश्चित रूप से पता होता कि लिफाफे में नोट थे—उन्हें उसकी उपस्थिति में ही लिफाफे में डाला गया था और सील किया गया था—और यदि वह लिफाफा अपने साथ ले जाता, तो किसी को भी लूट के बारे में पता नहीं चलता। मैं आप लोगों से पूछता हूँ, सज्जनों, क्या स्मरद्याकोव ऐसा व्यवहार करता? क्या वह लिफाफे को ज़मीन पर छोड़ देता?
नहीं, यह एक उन्मादी हत्यारे का कृत्य था, एक ऐसा हत्यारा जो सामान्य हत्यारे जैसा नहीं था।
दिमित्री करामाज़ोव, जो उस दिन से पहले कभी चोरी नहीं करता था, उसने तकिए के नीचे से नोट ऐसे छीन लिए जैसे कोई चोर उन्हें चुरा रहा हो, बल्कि मानो वह चोर से अपनी ही संपत्ति छीन रहा हो। क्योंकि यही विचार दिमित्री करामाज़ोव के मन में उस पैसे को लेकर एक पागलपन भरा जुनून बन गया था। और उस लिफाफे पर झपटते हुए, जिसे उसने पहले कभी नहीं देखा था, उसने यह सुनिश्चित करने के लिए उसे फाड़ दिया कि उसमें पैसा है या नहीं, और पैसे अपनी जेब में लेकर भाग गया, यहाँ तक कि यह भी भूल गया कि उसने उस फटे हुए लिफाफे में अपने खिलाफ एक चौंकाने वाला सबूत ज़मीन पर छोड़ दिया है। यह सब इसलिए क्योंकि वह करामाज़ोव था, स्मेरद्याकोव नहीं, उसने सोचा नहीं, उसने विचार नहीं किया, और वह कैसे करता? वह भाग गया; उसने अपने पीछे नौकर की चीख सुनी; बूढ़े ने उसे पकड़ लिया, रोक लिया, और पीतल के मूसल से ज़मीन पर गिरा दिया गया।
“दया से द्रवित होकर कैदी उसे देखने के लिए नीचे कूद पड़ा। क्या आप
यकीन मानिए, वह हमें बताता है कि वह दया और करुणा से नीचे कूदा, यह देखने के लिए कि क्या वह उसके लिए कुछ कर सकता है। क्या वह करुणा दिखाने का क्षण था? नहीं; वह केवल यह सुनिश्चित करने के लिए नीचे कूदा कि उसके अपराध का एकमात्र गवाह जीवित है या मृत। कोई और भावना, कोई और मकसद अस्वाभाविक होता। ध्यान दें कि उसने ग्रिगोरी को उठाने में परेशानी उठाई, अपने रूमाल से उसका सिर पोंछा और खुद को मृत मानकर, वह अपनी प्रेमिका के घर भागा, स्तब्ध और खून से लथपथ। यह कैसे हो सकता है कि उसने कभी नहीं सोचा कि वह खून से लथपथ है और तुरंत पकड़ा जाएगा? लेकिन कैदी खुद हमें आश्वस्त करता है कि उसने यह भी ध्यान नहीं दिया कि वह खून से लथपथ है। इस पर विश्वास किया जा सकता है, यह बहुत संभव है, अपराधियों के साथ ऐसे क्षणों में हमेशा ऐसा ही होता है। एक बात पर वे शैतानी चालाकी दिखाएंगे, जबकि दूसरी बात उनसे पूरी तरह बच निकलेगी। लेकिन उस क्षण वह केवल एक ही बात सोच रहा था - वह कहाँ थी? वह तुरंत यह पता लगाना चाहता था कि वह कहाँ है, इसलिए वह दौड़कर उसके कमरे में गया और उसे एक अप्रत्याशित और चौंकाने वाली खबर मिली - वह अपने पहले प्रेमी से मिलने मोकरो गई थी।

अध्याय 9

गैलपिंग ट्रोइका। अंत
अभियोजक का भाषण

इप्पोलिट किरिलोविच ने प्रस्तुति की ऐतिहासिक पद्धति को चुना था, जो सभी घबराए हुए वक्ताओं को प्रिय होती है, क्योंकि वे इसकी सीमाओं में अपनी अति उत्साही वाक्पटुता पर अंकुश पाते हैं। अपने भाषण के इस क्षण में वे ग्रुशेंका के "पहले प्रेमी" पर विस्तृत चर्चा करने लगे और इस विषय पर कई रोचक विचार प्रस्तुत किए।
“करमाज़ोव, जो हर किसी से बेहद ईर्ष्या करता था, बेहोश हो गया।”
एक तरह से कहें तो, उसने अपने पहले प्रेमी के सामने खुद को तुरंत मिटा दिया। जो बात इसे और भी अजीब बनाती है, वह यह है कि उसने इस दुर्जेय प्रतिद्वंद्वी के बारे में शायद ही कभी सोचा हो। लेकिन उसने उसे एक दूर के खतरे के रूप में देखा था, और करामाज़ोव हमेशा वर्तमान में जीता है। संभवतः उसने उसे एक काल्पनिक पात्र समझा हो। लेकिन उसके घायल हृदय ने तुरंत समझ लिया कि वह स्त्री इस नए प्रतिद्वंद्वी को छुपा रही थी और उसे धोखा दे रही थी, क्योंकि वह उसके लिए किसी काल्पनिक पात्र से कहीं अधिक था, क्योंकि वह उसके जीवन की एकमात्र आशा था। यह बात तुरंत समझकर, उसने खुद को इस स्थिति के लिए तैयार कर लिया।
“न्यायपालिका के सज्जनों, मैं इस अप्रत्याशित विशेषता पर विचार किए बिना नहीं रह सकता।”
कैदी के चरित्र में बदलाव आ जाता है। अचानक उसके मन में न्याय की प्रबल इच्छा, स्त्री के प्रति सम्मान और प्रेम के अधिकार की मान्यता जागृत हो जाती है। और यह सब ठीक उसी क्षण होता है जब उसने उसके लिए अपने पिता के खून से अपने हाथ रंगे थे! यह सच है कि उसके द्वारा बहाया गया खून पहले से ही प्रतिशोध के लिए पुकार रहा था, क्योंकि इस संसार में अपनी आत्मा और जीवन को बर्बाद करने के बाद, उसे उसी क्षण स्वयं से यह प्रश्न पूछना पड़ा कि वह उसके लिए, उस अस्तित्व के लिए, जो उसकी आत्मा से भी अधिक प्रिय है, अब क्या है और क्या हो सकता है, उस पूर्व प्रेमी की तुलना में जो पश्चाताप करते हुए, नए प्रेम के साथ, उस स्त्री के पास लौटा था जिसे उसने कभी धोखा दिया था, सम्मानजनक प्रस्तावों के साथ, एक सुधरे हुए और सुखी जीवन के वादे के साथ। और वह, अभागा मनुष्य, अब उसे क्या दे सकता है, उसे क्या भेंट कर सकता है?
“कारामाज़ोव ने यह सब महसूस किया, उसे पता था कि उसके द्वारा उसके लिए सभी रास्ते बंद कर दिए गए हैं
अपराध और यह कि वह सजा काट रहा अपराधी था, न कि ऐसा व्यक्ति जिसके सामने पूरा जीवन पड़ा था! इस विचार ने उसे अंदर तक झकझोर दिया। और इसलिए वह तुरंत एक बेकाबू योजना पर टूट पड़ा, जो करामाज़ोव जैसे चरित्र वाले व्यक्ति के लिए उसकी भयानक स्थिति से निकलने का एकमात्र अपरिहार्य रास्ता प्रतीत हुआ होगा। वह रास्ता था आत्महत्या। वह अपने मित्र पेरहोतिन के पास गिरवी रखी पिस्तौलें लेने दौड़ा और दौड़ते-दौड़ते उसने अपनी जेब से वह पैसा निकाला, जिसके लिए उसने अपने पिता के खून से अपने हाथ रंगे थे। ओह, अब उसे पहले से कहीं अधिक पैसों की ज़रूरत थी। करामाज़ोव मरेगा, करामाज़ोव खुद को गोली मार लेगा और यह बात हमेशा याद रखी जाएगी! बेशक, वह एक कवि था और उसने जीवन भर दिन-रात मेहनत की थी। 'उसके लिए, उसके लिए! और वहाँ, ओह, वहाँ मैं पूरी दुनिया को एक ऐसी दावत दूँगा, जैसी पहले कभी नहीं हुई, जिसे लंबे समय तक याद रखा जाएगा और जिसके बारे में बात की जाएगी!' बेतहाशा जयजयकार, बेपरवाह जिप्सी गीतों और नृत्यों के बीच, मैं गिलास उठाऊंगा और अपनी प्रिय स्त्री और उसकी नई खुशी के लिए जश्न मनाऊंगा! और फिर, वहीं, उसके चरणों में, मैं उसके सामने अपने सिर फोड़ दूंगा और खुद को दंडित करूंगा! वह कभी-कभी मित्या करामाज़ोव को याद करेगी, वह देखेगी कि मित्या उससे कितना प्यार करता था, वह मित्या के लिए दुखी होगी!
यहां हम दिखावे के प्रति अत्यधिक प्रेम, एक रोमांटिक निराशा और

भावुकता, और करामाज़ोव परिवार की बेतहाशा लापरवाही। हाँ, लेकिन कुछ और भी है, जूरी के सज्जनों, कुछ ऐसा जो आत्मा में चीखता है, मन में लगातार धड़कता है, और दिल को मौत के ज़हर में डुबो देता है—वह कुछ है अंतरात्मा, जूरी के सज्जनों, उसका फैसला, उसकी भयानक पीड़ाएँ! पिस्तौल सब कुछ तय कर देगी, पिस्तौल ही एकमात्र रास्ता है! लेकिन उससे आगे—मुझे नहीं पता कि करामाज़ोव ने उस क्षण सोचा होगा कि 'उससे आगे क्या है,' और क्या करामाज़ोव, हैमलेट की तरह, यह सोच सकता था कि 'उससे आगे क्या है।' नहीं, जूरी के सज्जनों, उनके पास उनके हैमलेट हैं, लेकिन हमारे पास अभी भी हमारे करामाज़ोव हैं! यहां इप्पोलिट किरिलोविच ने मित्या की तैयारियों का विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया।
पेरहोटिन की दुकान पर, ड्राइवरों के साथ जो दृश्य था, उसका उन्होंने वर्णन किया। उन्होंने गवाहों द्वारा पुष्ट किए गए कई शब्दों और कार्यों का हवाला दिया, और उस दृश्य ने दर्शकों पर गहरा प्रभाव डाला। जब सभी तथ्य एक साथ सामने आए, तो इस परेशान और हताश व्यक्ति का अपराध स्पष्ट और पुख्ता रूप से प्रकट हुआ।
उसे सावधानी बरतने की क्या आवश्यकता थी? दो-तीन बार तो वह लगभग बच ही गया था।
उसने कबूल किया, इशारा किया, लगभग सब कुछ कह ही दिया। (इसके बाद गवाहों द्वारा दिए गए सबूत आए।) “उसने उसे ले जा रहे किसान से चिल्लाकर कहा, ‘क्या तुम्हें पता है, तुम एक हत्यारे को ले जा रहे हो!’ लेकिन उसके लिए बोलना नामुमकिन था, उसे मोकरोए पहुँचना था और वहाँ अपने प्रेम प्रसंग को पूरा करना था। लेकिन उस बदनसीब आदमी का क्या इंतज़ार कर रहा था? मोकरोए पहुँचते ही पहले ही पल से उसने देख लिया कि उसका अजेय प्रतिद्वंद्वी शायद उतना अजेय नहीं था, कि उनकी नई-नई खुशी का जश्न न तो चाहा गया और न ही स्वीकार्य होगा। लेकिन आप तथ्य जानते हैं, जूरी के सज्जनों, प्रारंभिक जाँच से। करामाज़ोव की अपने प्रतिद्वंद्वी पर जीत पूरी हो गई थी और उसकी आत्मा एक बिल्कुल नए दौर में प्रवेश कर गई, शायद वह सबसे भयानक दौर जिससे उसकी आत्मा गुज़री है या गुज़रेगी।
“न्यायालय के सज्जनों, यह बात निश्चित रूप से कही जा सकती है,” अभियोजक ने कहा।
उन्होंने आगे कहा, “क्रोधित प्रकृति और अपराधी हृदय किसी भी सांसारिक न्याय से कहीं अधिक पूर्ण रूप से अपना प्रतिशोध लेते हैं। इतना ही नहीं, पृथ्वी पर न्याय और दंड प्रकृति के दंड को काफी हद तक कम कर देते हैं और वास्तव में, ऐसे क्षणों में अपराधी की आत्मा के लिए आवश्यक होते हैं, जैसे कि उसकी निराशा से मुक्ति। मैं करामाज़ोव की उस भयावहता और नैतिक पीड़ा की कल्पना भी नहीं कर सकता जब उसे पता चला कि वह उससे प्रेम करती है, कि उसके लिए उसने अपने पहले प्रेमी को त्याग दिया था, कि वह उसे, मित्या को, एक नए जीवन में बुला रही थी, कि वह उसे सुख का वादा कर रही थी—और कब? जब उसके लिए सब कुछ समाप्त हो चुका था और कुछ भी संभव नहीं था!”
वैसे, मैं कोष्ठक में एक महत्वपूर्ण बिंदु का उल्लेख करूँगा...
यह कैदी की वर्तमान स्थिति पर प्रकाश डालता है। यह स्त्री, उसका यह प्रेम, अंतिम क्षण तक, उसकी गिरफ्तारी के ठीक क्षण तक, उसके लिए अप्राप्य थी, वह उसे पाने की तीव्र इच्छा रखता था, पर वह उसे कभी प्राप्त नहीं कर सका। फिर भी उसने तब खुद को गोली क्यों नहीं मारी, उसने अपना इरादा क्यों छोड़ दिया और यहाँ तक कि अपनी पिस्तौल कहाँ है, यह भी क्यों भूल गया? यह प्रेम की तीव्र इच्छा और उसे संतुष्ट करने की आशा ही थी जिसने उसे रोके रखा। अपने पूरे उत्सव के दौरान वह अपनी प्रिय प्रेमिका के साथ रहा, जो उसके साथ भोज में उपस्थित थी और उसके लिए पहले से कहीं अधिक आकर्षक और मोहक थी—उसने उसका साथ नहीं छोड़ा, उसके समक्ष स्वयं को समर्पित कर दिया।
"उसका जुनून शायद कुछ पल के लिए गिरफ्तारी के डर को ही नहीं, बल्कि और भी बहुत कुछ दबा सकता है।"
लेकिन अंतरात्मा की पीड़ा भी। एक पल के लिए, ओह, बस एक पल के लिए! मैं उस अपराधी की मनःस्थिति की कल्पना कर सकता हूँ जो इन प्रभावों से बुरी तरह जकड़ा हुआ है—पहला, शराब का प्रभाव, शोर और उत्तेजना का, नाच की धमक और गाने की चीख का, और उस औरत का, जो शराब के नशे में चूर होकर उसके लिए गा रही है, नाच रही है और हँस रही है! दूसरा, मन में यह उम्मीद कि शायद मौत का अंत अभी दूर है, कम से कम अगली सुबह तक तो वे आकर उसे ले जाएँगे। तो उसके पास कुछ घंटे थे और यह बहुत कुछ था, बहुत कुछ! कुछ घंटों में इंसान कई बातें सोच सकता है। मुझे लगता है कि उसे कुछ ऐसा महसूस हो रहा होगा जैसा अपराधियों को तब होता है जब उन्हें फाँसी के तख्ते पर ले जाया जा रहा होता है। उन्हें एक

और लंबी सड़क पार करनी होती है, और वह भी पैदल चलते हुए, हज़ारों लोगों के बीच से। फिर एक और गली में मोड़ आएगा और उस गली के अंत में ही फाँसी का भयानक स्थान होगा! मुझे लगता है कि यात्रा की शुरुआत में, अपने शर्मनाक रथ पर बैठा हुआ दोषी व्यक्ति यह महसूस कर रहा होगा कि उसके सामने अभी अनंत जीवन है। घर पीछे छूटते जा रहे हैं, गाड़ी आगे बढ़ रही है—अरे, ये तो कुछ भी नहीं, दूसरी गली का मोड़ अभी बहुत दूर है और वो अब भी बेधड़क दाएं-बाएं उन हज़ारों बेपरवाह जिज्ञासु लोगों को देख रहा है जिनकी निगाहें उस पर टिकी हैं, और वो अब भी खुद को उन्हीं जैसा आदमी समझ रहा है। लेकिन अब मोड़ अगली गली का आ गया है। अरे, ये तो कुछ भी नहीं, कुछ भी नहीं, उसके सामने अभी भी पूरी गली है, और चाहे कितने भी घर पीछे छूट गए हों, वो अब भी सोचेगा कि बहुत से घर बाकी हैं। और इस तरह अंत तक, फांसी के तख्ते तक।

“मुझे लगता है कि करामाज़ोव के साथ भी ऐसा ही हुआ होगा। ‘उनके पास नहीं था
उसने सोचा होगा, 'अभी समय है, शायद मुझे कोई रास्ता मिल जाए, ओह, बचाव की कोई योजना बनाने के लिए अभी भी समय है, और अब, अब—वह कितनी आकर्षक है!'

उसका मन भ्रम और भय से भरा हुआ था, लेकिन फिर भी उसने किसी तरह खुद को संभाला।

अपने आधे पैसे अलग रख दिए और कहीं छिपा दिए—इसके अलावा मैं उसके पिता के तकिए से चुराए गए तीन हज़ार में से लगभग आधे के गायब होने की व्याख्या नहीं कर सकता। वह पहले भी कई बार मोकरोए जा चुका था, वहाँ दो दिन लगातार मौज-मस्ती कर चुका था, वह उस पुराने बड़े घर को उसके सभी गलियारों और बाहरी इमारतों के साथ जानता था। मुझे लगता है कि गिरफ्तारी से कुछ समय पहले, उसने उस घर में, किसी दरार में, फर्श के नीचे, किसी कोने में, छत के नीचे, कुछ पैसे छिपा दिए होंगे। किस उद्देश्य से? मुझसे पूछा जाएगा। क्यों, विपत्ति तो तुरंत आ सकती है; उसने अभी तक यह नहीं सोचा था कि इसका सामना कैसे करेगा, उसके पास समय नहीं था, उसका सिर दर्द कर रहा था और उसका दिल उसके साथ था, लेकिन पैसा—पैसा तो हर हाल में ज़रूरी था! पैसे के साथ ही इंसान मर्द बनता है। शायद ऐसे समय में ऐसी दूरदर्शिता आपको अस्वाभाविक लगे? लेकिन वह खुद हमें बताता है कि एक महीने पहले, एक नाजुक और रोमांचक क्षण में, उसने अपने पैसे को आधा कर दिया था और एक छोटे से थैले में सिल दिया था। और यद्यपि यह सच नहीं था, जैसा कि हम आगे चलकर सिद्ध करेंगे, इससे पता चलता है कि करामाज़ोव को इस विचार की अच्छी जानकारी थी, उसने इस पर विचार किया था। इतना ही नहीं, जब उसने पूछताछ में कहा कि उसने पंद्रह सौ रूबल एक थैले में रखे थे (जो कभी अस्तित्व में ही नहीं था), तो हो सकता है कि उसने उस छोटे थैले की कल्पना तात्कालिक विचार से की हो, क्योंकि उसने दो घंटे पहले ही अपने पैसे को दो भागों में बाँटकर आधा हिस्सा सुबह तक मोकरो में छिपा दिया था, ताकि आपात स्थिति में वह उसके पास न रहे। महोदय, जूरी के सदस्यों, याद रखें कि करामाज़ोव दो चरम सीमाओं पर एक साथ विचार कर सकता है।

“हमने घर में तलाशी ली, लेकिन हमें पैसे नहीं मिले। हो सकता है कि वे अभी भी वहीं हों या अगले दिन गायब हो गए हों और अब कैदी के हाथ में हों। खैर, वह उसके पास था, उसके सामने घुटनों के बल बैठा था, वह बिस्तर पर लेटी थी, उसने अपने हाथ उसकी ओर फैला रखे थे और वह सब कुछ इतना भूल चुका था कि उसे गिरफ्तार करने आए लोगों की आवाज भी सुनाई नहीं दी। उसके पास बचाव की कोई रणनीति बनाने का समय ही नहीं था। वह अचानक पकड़ा गया और अपने भाग्य के निर्णायक, अपने न्यायाधीशों के सामने आ गया।”

“न्यायपालिका के सज्जनों, अपने कर्तव्यों के निर्वहन में ऐसे क्षण आते हैं जब हमें असहज महसूस करना पड़ता है।”

जब किसी व्यक्ति का सामना करना हमारे लिए भयानक होता है, उसके लिए भी उतना ही भयानक! उस पशुवत भय के क्षणों का चिंतन, जब अपराधी देखता है कि सब कुछ खो गया है, फिर भी संघर्ष करता है, संघर्ष करने का इरादा रखता है, वे क्षण जब आत्मरक्षा की हर प्रवृत्ति उसमें एक साथ जागृत हो जाती है और वह प्रश्नवाचक और पीड़ा भरी आँखों से आपकी ओर देखता है, आपका अध्ययन करता है, आपके चेहरे का, आपके विचारों का, इस अनिश्चितता में कि आप किस तरफ वार करेंगे, और उसका विचलित मन एक पल में हजारों योजनाएँ बना लेता है, लेकिन फिर भी वह बोलने से डरता है, खुद को उजागर करने से डरता है! आत्मा का यह कष्ट, आत्मरक्षा की यह पशुवत प्यास, मानव आत्मा के ये अपमानजनक क्षण भयानक होते हैं,

और कभी-कभी वकील के मन में भी अपराधी के लिए भय और करुणा जागृत कर देते हैं। और यही सब हमने तब देखा था।
“पहले तो वह स्तब्ध रह गया और भयवश उसने कुछ बहुत ही
समझौतावादी वाक्य। ‘खून! मैं इसके लायक था!’ लेकिन उसने तुरंत खुद को संभाला। उसने यह तय नहीं किया था कि उसे क्या कहना है, क्या जवाब देना है, उसके पास केवल एक सीधा इनकार तैयार था। ‘मैं अपने पिता की मृत्यु का दोषी नहीं हूँ।’ यही उसका तात्कालिक बचाव था और इसके पीछे वह किसी तरह का अवरोध खड़ा करने की उम्मीद कर रहा था। अपने पहले समझौतावादी उद्गारों को उसने यह कहकर जल्दी से स्पष्ट किया कि वह केवल नौकर ग्रिगोरी की मृत्यु के लिए जिम्मेदार था। ‘उस रक्तपात का मैं दोषी हूँ, लेकिन मेरे पिता को किसने मारा है, सज्जनों, किसने मारा है? अगर मैंने नहीं तो उन्हें कौन मार सकता है?’ क्या आप सुन रहे हैं, उसने हमसे पूछा, हमसे, जो उससे यह प्रश्न पूछने आए थे! क्या आप उस वाक्य को इतनी जल्दबाजी में बोलते हुए सुन रहे हैं—‘अगर मैंने नहीं’—उसमें पशुवत चालाकी, भोलापन, करामाज़ोव जैसी अधीरता? ‘मैंने उन्हें नहीं मारा और आपको यह नहीं सोचना चाहिए कि मैंने मारा है!’ “मैं उसे मारना चाहता था, सज्जनों, मैं उसे मारना चाहता था,” वह जल्दी से स्वीकार करता है (वह बहुत जल्दी में था, भयानक जल्दी में), “लेकिन फिर भी मैं दोषी नहीं हूँ, मैंने उसकी हत्या नहीं की है।” वह हमसे यह स्वीकार करता है कि वह उसकी हत्या करना चाहता था, मानो यह कहना चाहता हो कि आप स्वयं देख सकते हैं कि मैं कितना सच्चा हूँ, इसलिए आप जल्दी ही मान लेंगे कि मैंने उसकी हत्या नहीं की। ओह, ऐसे मामलों में अपराधी अक्सर आश्चर्यजनक रूप से भोला और आसानी से विश्वास करने वाला होता है।
“उसी समय वकीलों में से एक ने उनसे, मानो संयोगवश, एक बहुत ही सरल सवाल पूछा, ‘क्या स्मरद्याकोव ने ही उनकी हत्या नहीं की थी?’ फिर, जैसा कि हमें उम्मीद थी, वे इस बात से बुरी तरह क्रोधित हो गए कि हमने उनसे पहले ही यह सवाल पूछ लिया था और उन्हें अचानक पकड़ लिया था, इससे पहले कि उन्हें स्मरद्याकोव का नाम लेने का सबसे स्वाभाविक मौका मिलता। वे हमेशा की तरह तुरंत दूसरे छोर पर चले गए और हमें यकीन दिलाने लगे कि स्मरद्याकोव उनकी हत्या नहीं कर सकता था, वह ऐसा करने में सक्षम नहीं था। लेकिन उन पर विश्वास न करें, यह केवल उनकी चालाकी थी; उन्होंने वास्तव में स्मरद्याकोव का नाम लेने का विचार नहीं छोड़ा था; इसके विपरीत, वे उसे फिर से सामने लाना चाहते थे; क्योंकि वास्तव में उनके पास किसी और को सामने लाने का विकल्प नहीं था, लेकिन वे ऐसा बाद में करेंगे, क्योंकि फिलहाल उनके लिए यह रास्ता बंद हो चुका था। वे शायद अगले दिन, या कुछ दिनों बाद भी, हमें यह कहने का मौका ढूंढेंगे, ‘आप जानते हैं कि मैं स्मरद्याकोव के बारे में पहले से कहीं अधिक संशय में था।’ तुम लोग खुद तो यह बात याद रखोगे, लेकिन अब मुझे पूरा यकीन हो गया है। उसने ही उसे मारा होगा, उसने ही मारा होगा!’ और फिलहाल वह उदास और चिड़चिड़े अंदाज़ में इनकार कर देता है। अधीरता और गुस्से ने उसे अपने पिता की खिड़की से झाँकने और फिर आदरपूर्वक पीछे हटने की सबसे बेतुकी और अविश्वसनीय व्याख्या करने पर मजबूर कर दिया। सबसे बुरी बात यह थी कि उसे हालात की जानकारी नहीं थी, ग्रिगरी द्वारा दिए गए सबूतों की भी उसे कोई जानकारी नहीं थी।
“हमने उसकी तलाशी शुरू की। तलाशी से वह क्रोधित हुआ, लेकिन इससे उसे प्रोत्साहन भी मिला।” पूरे तीन हज़ार उसके पास से नहीं मिले थे, केवल आधे ही मिले थे। और निस्संदेह, उस गुस्से भरी चुप्पी के क्षण में ही, छोटे थैले की मनगढ़ंत कहानी का ख्याल सबसे पहले उसके मन में आया होगा। निस्संदेह, वह स्वयं इस कहानी की असंभावना से अवगत था और इसे अधिक विश्वसनीय बनाने के लिए, इसे एक ऐसी प्रेम कहानी में पिरोने के लिए अथक प्रयास कर रहा था जो विश्वसनीय लगे। ऐसे मामलों में, जांच करने वाले वकीलों का पहला कर्तव्य, उनका मुख्य कार्य, अपराधी को तैयार होने से रोकना होता है, उस पर अचानक हमला करना होता है ताकि वह अपने सभी पोषित विचारों को उनकी सरलता, असंभावना और असंगतता के साथ उगल दे। अपराधी को केवल किसी नए तथ्य, मामले में किसी अत्यंत महत्वपूर्ण परिस्थिति के अचानक और प्रतीत होने वाले आकस्मिक संचार द्वारा ही बोलने के लिए मजबूर किया जा सकता है, जिसके बारे में उसे पहले से कोई जानकारी नहीं थी और जिसकी वह भविष्यवाणी नहीं कर सकता था। हमारे पास ऐसा ही एक तथ्य तैयार था - ग्रिगोरी का उस खुले दरवाजे के बारे में साक्ष्य जिससे कैदी भाग निकला था। वह उस दरवाजे के बारे में पूरी तरह से भूल गया था और उसे यह संदेह भी नहीं था कि ग्रिगोरी ने उसे देखा होगा।
“इसका असर अद्भुत था। वह उछल पड़ा और हमसे चिल्लाकर बोला, ‘तो फिर

'स्मरद्याकोव ने उसकी हत्या की, यह स्मरद्याकोव ही था!' और इस तरह उसने अपने बचाव का आधार ही उजागर कर दिया, और वह भी सबसे अविश्वसनीय रूप में, क्योंकि स्मरद्याकोव ग्रिगोरी को गिराने और भागने के बाद ही हत्या कर सकता था। जब हमने उसे बताया कि ग्रिगोरी ने गिरने से पहले दरवाजा खुला देखा था, और अपने शयनकक्ष से बाहर आते समय उसने पर्दे के पीछे से स्मरद्याकोव की आवाज सुनी थी—
करामाज़ोव बुरी तरह टूट गया। मेरे सम्मानित और विनोदी सहकर्मी, निकोले पारफेनोविच ने बाद में मुझे बताया कि उसे देखकर उनकी आंखों में लगभग आंसू आ गए थे। और स्थिति को और बिगाड़ने के लिए, कैदी ने हमें उस चर्चित छोटे थैले के बारे में बताने की जल्दी की—तो ठीक है, आप यह रोमांचक कहानी सुनेंगे!
“न्यायाध्यक्ष महोदय, मैं आपको पहले ही बता चुका हूँ कि मैं ऐसा क्यों मानता हूँ।”
रोमांस न केवल एक बेतुकी बात है, बल्कि उन परिस्थितियों में गढ़ी जा सकने वाली सबसे अविश्वसनीय रचना है। अगर कोई सबसे अविश्वसनीय कहानी गढ़ने की शर्त लगाए, तो उसे शायद ही इससे ज़्यादा अविश्वसनीय कुछ मिल पाए। ऐसी कहानियों की सबसे बुरी बात यह है कि विजयी कहानीकार अक्सर उन्हीं छोटी-छोटी बातों से भ्रमित और निराश हो जाते हैं जिनमें वास्तविक जीवन इतना समृद्ध होता है और जिन्हें ये अभागे और अनायास कहानीकार तुच्छ समझकर नज़रअंदाज़ कर देते हैं। अरे, उनके पास ऐसी छोटी-छोटी बातों के लिए ज़रा भी समय नहीं होता, उनका सारा ध्यान अपनी भव्य रचना पर केंद्रित होता है, और ज़रा सोचिए, कोई उन्हें छोटी सी बात पर टोक दे तो कितना मुश्किल होगा! लेकिन इसी तरह वे पकड़े जाते हैं। कैदी से पूछा गया, 'तुम्हारे छोटे से थैले के लिए सामान कहाँ से मिला और किसने बनाया?' 'मैंने खुद बनाया।' 'और लिनेन कहाँ से मिला?' कैदी को बहुत बुरा लगा, उसे लगा कि इतना तुच्छ सवाल पूछना लगभग अपमानजनक है, और यकीन मानिए, उसका गुस्सा सच्चा था! लेकिन वे सब ऐसे ही होते हैं। ‘मैंने इसे अपनी कमीज़ से फाड़ दिया था।’ ‘तो कल हमें तुम्हारी कमीज़ के बीच वो कमीज़ मिल जाएगी, जिसमें से एक टुकड़ा फटा हुआ होगा।’ ज़रा सोचिए, जूरी के सज्जनों, अगर हमें सचमुच वो फटी हुई कमीज़ मिल जाती (और हम उसे उसकी दराज या संदूक में कैसे नहीं ढूंढ पाते?) तो ये उसके बयान के समर्थन में एक ठोस सबूत होता! लेकिन वो इस बारे में सोच भी नहीं सकता था। ‘मुझे याद नहीं, शायद ये मेरी कमीज़ से नहीं थी, मैंने इसे अपनी मकान मालकिन की एक टोपी में सिल दिया था।’ ‘किस तरह की टोपी?’ ‘वो उसकी एक पुरानी सूती चिथड़ी थी जो इधर-उधर पड़ी थी।’ ‘और क्या तुम्हें ये बात साफ़-साफ़ याद है?’ ‘नहीं, मुझे याद नहीं।’ वो बहुत गुस्से में था, और फिर भी सोचिए कि उसे ये बात याद नहीं थी! इंसान की ज़िंदगी के सबसे भयानक पलों में, जैसे कि जब उसे फांसी के लिए ले जाया जा रहा होता है, तब भी उसे ऐसी छोटी-छोटी बातें याद रहती हैं। वह सड़क पर अचानक गुज़रने वाली किसी हरी छत या सूली पर लटके किसी कौवे को छोड़कर सब कुछ भूल जाएगा—वह उसे याद रहेगा। उसने अपने घरवालों से उस छोटी थैली को बनाने की बात छुपाई थी; उसे वह शर्मनाक डर ज़रूर याद होगा कि कोई अंदर आ जाए और उसे सुई हाथ में लिए देख ले; ज़रा सी भी आवाज़ पर वह कैसे पर्दे के पीछे छिप जाता था (उसके कमरे में एक पर्दा लगा हुआ है)।
लेकिन, जूरी के सज्जनों, मैं आपको ये सब बातें, ये सारी जानकारी क्यों बता रहा हूँ?
“मामूली बातें?” इप्पोलित किरिलोविच अचानक चिल्लाया। “सिर्फ इसलिए कि कैदी अब तक इन बेतुकी बातों पर अड़ा हुआ है। उसने दो महीने पहले उस भयानक रात के बाद से कुछ भी स्पष्ट नहीं किया है, उसने अपने पहले के मनगढ़ंत बयानों में एक भी ठोस तथ्य नहीं जोड़ा है; ये सब तुच्छ बातें हैं। ‘तुम्हें मेरी कसम पर विश्वास करना होगा।’ ओह, हमें विश्वास करने में खुशी होगी, हम विश्वास करने के लिए उत्सुक होंगे, भले ही केवल उसकी कसम पर ही क्यों न हो! क्या हम इंसानी खून के प्यासे गीदड़ हैं? हमें कैदी के पक्ष में एक भी तथ्य दिखाओ और हम खुश हो जाएंगे; लेकिन वह एक ठोस, वास्तविक तथ्य होना चाहिए, न कि कैदी के अपने भाई द्वारा उसके बयान से निकाला गया निष्कर्ष, या यह कि जब उसने अपनी छाती पीटी तो उसका मतलब अंधेरे में छोटी थैली की ओर इशारा करना रहा होगा। हम नए तथ्य पर खुश होंगे, हम अपने आरोप को खारिज करने वाले पहले व्यक्ति होंगे, हम इसे खारिज करने में जल्दी करेंगे। लेकिन अब न्याय पुकार रहा है और हम अड़े हुए हैं, हम कुछ भी नहीं खारिज कर सकते।”
इप्पोलित किरिलोविच अपने अंतिम भाषण की ओर बढ़े। वे ऐसे दिख रहे थे मानो...
वह बुखार में था, उसने उस खून की बात की जो प्रतिशोध के लिए पुकार रहा था, उस पिता का खून जिसकी हत्या उसके बेटे ने लूटपाट के घिनौने मकसद से की थी! उसने तथ्यों की दुखद और स्पष्ट समानता की ओर इशारा किया।

और प्रतिभाशाली और प्रसिद्ध परामर्शदाताओं से आप जो कुछ भी सुनें
बचाव पक्ष के लिए," इप्पोलिट किरिलोविच ने यह कहने से खुद को नहीं रोका, "आपकी भावनाओं को चाहे कितनी भी भावुक और मार्मिक अपील की जाए, याद रखें कि इस समय आप न्याय के मंदिर में हैं। याद रखें कि आप हमारे न्याय के रक्षक हैं, हमारे पवित्र रूस के रक्षक हैं, उसके सिद्धांतों के, उसके परिवार के, उन सभी चीजों के जिन्हें वह पवित्र मानता है! हाँ, इस समय आप यहाँ रूस का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं, और आपका फैसला केवल इस हॉल में ही नहीं सुना जाएगा, बल्कि पूरे रूस में गूंजेगा, और सारा रूस आपको अपने रक्षकों और न्यायाधीशों के रूप में सुनेगा, और आपके फैसले से उसे प्रोत्साहन या निराशा मिलेगी। रूस और उसकी उम्मीदों को निराश न करें। हमारी घातक तिकड़ी शायद विनाश की ओर बेतहाशा बढ़ रही है और पूरे रूस में लंबे समय से लोग इसके उग्र और लापरवाह मार्ग को रोकने के लिए गुहार लगाते रहे हैं। और अगर दूसरे राष्ट्र उस तिकड़ी से अलग खड़े हैं, तो शायद सम्मान के कारण नहीं, जैसा कि कवि मानना चाहता है, बल्कि केवल भय के कारण। भय से, शायद घृणा से। और यह अच्छी बात है कि वे किनारे खड़े हैं, लेकिन शायद एक दिन वे ऐसा करना बंद कर देंगे और तेजी से बढ़ते खतरे का सामना करते हुए एक मजबूत दीवार खड़ी कर देंगे और अपनी सुरक्षा, ज्ञान और सभ्यता के लिए हमारी अराजकता की इस बेतहाशा दौड़ को रोक देंगे। यूरोप से पहले ही खतरे की आवाजें सुनाई दे रही हैं, वे पहले ही सुनाई देने लगी हैं। उन्हें उकसाओ मत! एक बेटे द्वारा पिता की हत्या को जायज ठहराने वाले फैसले से उनकी बढ़ती नफरत को और मत भड़काओ!
हालाँकि इप्पोलिट किरिलोविच सचमुच भावुक हो गए थे, फिर भी उन्होंने अपना भाषण समाप्त कर दिया। उन्होंने अपने भाषण में जिस तरह की प्रभावशाली अभिव्यक्ति का प्रयोग किया, उसका प्रभाव असाधारण था। भाषण समाप्त करने के बाद वे जल्दी से बाहर निकल गए और जैसा कि मैंने पहले बताया है, बगल वाले कमरे में लगभग बेहोश हो गए। दरबार में तालियाँ नहीं बजीं, लेकिन गंभीर लोग प्रसन्न थे। महिलाएँ उतनी संतुष्ट नहीं थीं, हालाँकि वे भी उनकी वाक्पटुता से प्रसन्न थीं, विशेष रूप से इसलिए कि उन्हें मुकदमे के परिणाम के बारे में कोई आशंका नहीं थी और उन्हें फेट्युकोविच पर पूरा भरोसा था। "वह अंततः बोलेंगे और निश्चित रूप से सभी को अपने पक्ष में कर लेंगे।"
सभी लोग मित्या की ओर देख रहे थे; वह पूरी बातचीत के दौरान चुपचाप बैठा रहा।
अभियोजक का भाषण सुनते हुए, वह दांत भींचे, हाथ जोड़े और सिर झुकाए बैठा रहा। बीच-बीच में ही वह अपना सिर उठाकर सुनता, खासकर जब ग्रुशेंका का ज़िक्र होता। जब अभियोजक ने उसके बारे में राकितिन की राय का ज़िक्र किया, तो उसके चेहरे पर तिरस्कार और क्रोध की मुस्कान आ गई और वह ज़ोर से बुदबुदाया, "बर्नार्ड!" जब इप्पोलिट किरिलोविच ने बताया कि कैसे उन्होंने मोक्रोए में उससे पूछताछ की और उसे यातना दी, तो मित्या ने अपना सिर उठाकर बड़ी उत्सुकता से सुना। एक पल तो ऐसा लगा जैसे वह उछलकर चिल्लाने ही वाला हो, लेकिन उसने खुद को संभाला और सिर्फ़ तिरस्कार से कंधे उचका दिए। बाद में लोग भाषण के अंत के बारे में, मोक्रोए में कैदी से पूछताछ करने में अभियोजक के कारनामे के बारे में बात करने लगे और इप्पोलिट किरिलोविच का मज़ाक उड़ाने लगे। उन्होंने कहा, "वह अपनी चतुराई का बखान करने से खुद को रोक नहीं पाया।"
अदालत की कार्यवाही स्थगित कर दी गई, लेकिन केवल थोड़े समय के लिए, एक चौथाई घंटे के लिए। ज़्यादा से ज़्यादा एक घंटा या बीस मिनट। दर्शकों में बातचीत और विस्मयबोधक आवाज़ों की गूंज थी। मुझे उनमें से कुछ याद हैं।
"एक गंभीर भाषण," एक समूह में मौजूद एक सज्जन ने गंभीरता से कहा। "उन्होंने मनोविज्ञान का बहुत अधिक इस्तेमाल किया," दूसरे ने कहा। "लेकिन यह सब सच था, बिलकुल सच!"
"हां, वह इसमें बेहद माहिर है।"
उन्होंने सब कुछ संक्षेप में बता दिया।
"हाँ, उसने हमारा भी सही आकलन किया," एक और आवाज़ सुनाई दी। "क्या तुम
याद है, अपने भाषण की शुरुआत में उन्होंने ऐसा जताया था कि हम सब फ्योदोर पावलोविच जैसे हैं?
और अंत में भी। लेकिन वह सब बेकार था।
और साथ ही अस्पष्ट भी।
"वह कुछ ज्यादा ही बहक गया था।"

“यह अन्याय है, यह अन्याय है।”
नहीं, यह तो समझदारी से किया गया था। उसे लंबा इंतजार करना पड़ा, लेकिन उसे मिल गया।
उसकी बात, हा हा!
“बचाव पक्ष के वकील क्या कहेंगे?”
एक अन्य समूह में मैंने यह सुना:
"उन्हें पीटर्सबर्ग के उस व्यक्ति पर इस तरह हमला करने का कोई अधिकार नहीं था।"
‘आपकी भावनाओं को ठेस पहुँचाना’—क्या आपको याद है?
"हां, यह उसकी ओर से थोड़ी अटपटी बात थी।"
वह बहुत जल्दी में था।
वह एक घबराया हुआ आदमी है।
हम हंसते हैं, लेकिन कैदी को कैसा महसूस हो रहा होगा?
“हां, मित्या के लिए यह क्या होना चाहिए?”
तीसरे समूह में:
"आखिर में बैठी हुई वो मोटी महिला कौन है?"
"वह एक जनरल की पत्नी है, तलाकशुदा है, मैं उसे जानता हूं।"
"इसीलिए उसके पास लोरग्नेट है।"
वह किसी काम की नहीं है।
"अरे नहीं, वह तो एक आकर्षक छोटी महिला है।"
"उससे दो कदम आगे एक छोटी, सुंदर महिला है, वह उससे भी ज्यादा सुंदर है।"
“उन्होंने उसे मोक्रो में बड़ी चतुराई से पकड़ लिया, है ना?”
“ओह, यह तो काफी समझदारी भरा था। हमने पहले भी सुना है कि वह कितनी बार यह बात कह चुका है।
लोगों के घरों में यही कहानी चल रही है!
और अब वह ऐसा करने से खुद को रोक नहीं सका। यही तो घमंड है।
“वह एक शिकायत से ग्रस्त व्यक्ति है, ही-ही!”
“हाँ, और जल्दी नाराज़ हो जाते थे। और बहुत ज़्यादा बयानबाज़ी थी, जैसे
लंबे वाक्य।"
“हाँ, वह हमें डराने की कोशिश करता है, वह हमें डराने की कोशिश करता रहता है। क्या आपको याद है?”
तिकड़ी के बारे में? कुछ ऐसा कि 'उनके पास हैमलेट हैं, लेकिन हमारे पास अभी तक केवल करामाज़ोव ही हैं!' यह बात बड़ी चतुराई से कही गई थी!
“यह उदारवादियों को खुश करने के लिए किया गया था। वह उनसे डरता है।”
"हां, और वह वकील से भी डरता है।"
"हाँ, फेत्युकोविच क्या कहेंगे?"
"वह चाहे कुछ भी कह ले, हमारे किसानों को उसकी बातों से कोई फर्क नहीं पड़ेगा।"
क्या आपको ऐसा नहीं लगता?
चौथा समूह:
"ट्रोइका के बारे में उन्होंने जो कहा वह अच्छा था, अन्य राष्ट्रों के बारे में वह बात भी अच्छी थी।"
और अन्य देशों द्वारा इसे बर्दाश्त न कर पाने के बारे में उन्होंने जो कहा वह सच था।
"आपका क्या मतलब है?"
“क्यों, पिछले हफ्ते अंग्रेजी संसद में एक सदस्य उठे और
निहिलिस्टों के बारे में बात करते हुए, मैंने मंत्रालय से पूछा कि क्या अब समय नहीं आ गया है कि हम हस्तक्षेप करें, इस बर्बर लोगों को शिक्षित करें। इप्पोलिट उनके बारे में सोच रहे थे, मुझे पता है। वह पिछले हफ्ते इसी बारे में बात कर रहे थे।
"यह आसान काम नहीं है।"
“आसान काम नहीं है? क्यों नहीं?”
“क्यों, हम क्रोनस्टैड को चुप करा देंगे और उन्हें एक भी मक्का नहीं लेने देंगे।

क्या उन्हें यह समझ आएगा?
“अमेरिका में। अब वे इसे अमेरिका से प्राप्त करते हैं।”
"बकवास!"
लेकिन घंटी बजते ही सब अपनी-अपनी जगहों पर दौड़ पड़े। फेत्युकोविच ने घुड़सवारी शुरू की।
ट्रिब्यून।

अध्याय 10

रक्षा पक्ष का भाषण।
यह तर्क दोनों पक्षों के लिए लागू होता है

प्रसिद्ध वक्ता के पहले शब्द गूंजते ही सब सन्नाटा छा गया। श्रोताओं की निगाहें उन पर टिकी थीं। उन्होंने बड़ी सरलता और सीधेपन से बोलना शुरू किया, उनके भाषण में दृढ़ विश्वास झलक रहा था, लेकिन अहंकार का कोई नामोनिशान नहीं था। उन्होंने वाक्पटुता, करुणा या भावनात्मक शब्दों का प्रयोग करने का प्रयास नहीं किया। वे ऐसे लग रहे थे मानो घनिष्ठ और सहानुभूति रखने वाले मित्रों के समूह में बोल रहे हों। उनकी आवाज़ मधुर, सुरीली और भावपूर्ण थी, और उसकी ध्वनि में ही कुछ वास्तविक और सरलता थी। लेकिन हर कोई तुरंत समझ गया कि वक्ता अचानक सच्ची करुणा में डूब सकते हैं और "असीम शक्ति से हृदय को भेद सकते हैं"। उनकी भाषा शायद इप्पोलिट किरिलोविच की भाषा से थोड़ी कम अलंकृत थी, लेकिन वे लंबे वाक्यों का प्रयोग नहीं करते थे, बल्कि अधिक सटीकता से बोलते थे। एक बात महिलाओं को पसंद नहीं आई: वह आगे की ओर झुकता रहता था, खासकर अपने भाषण की शुरुआत में, ठीक से प्रणाम तो नहीं करता था, लेकिन ऐसा लगता था मानो वह अपने श्रोताओं पर झपटने वाला हो, अपनी लंबी रीढ़ को आधा मोड़ लेता था, मानो बीच में कोई स्प्रिंग लगी हो जो उसे लगभग समकोण पर झुकने में सक्षम बनाती हो।
अपने भाषण की शुरुआत में उन्होंने कुछ असंबद्ध तरीके से बात की, बिना किसी स्पष्ट क्रम के।
एक तरह से कहें तो, यह एक ऐसी प्रणाली थी जो तथ्यों को अलग-अलग करके प्रस्तुत करती थी, हालांकि अंत में ये तथ्य मिलकर एक संपूर्ण रूप बनाते थे। उनके भाषण को दो भागों में बांटा जा सकता है: पहला भाग आरोप के खंडन में की गई आलोचना से भरा था, जो कभी-कभी द्वेषपूर्ण और व्यंग्यात्मक भी थी। लेकिन दूसरे भाग में उन्होंने अचानक अपना लहजा और यहाँ तक कि अपना तरीका भी बदल दिया और तुरंत भावुक हो गए। श्रोता मानो इसी की प्रतीक्षा कर रहे थे और उत्साह से कांप उठे।
वह सीधे मुद्दे पर आए और यह कहकर शुरुआत की कि हालांकि वह
पीटर्सबर्ग में वकालत करने वाले वे एक से अधिक बार प्रांतीय कस्बों में कैदियों का बचाव करने के लिए जा चुके थे, जिनकी निर्दोषता के बारे में उन्हें दृढ़ विश्वास था या कम से कम एक पूर्वधारणा थी। उन्होंने समझाया, "मौजूदा मामले में मेरे साथ भी यही हुआ है।" अखबारों में छपी पहली खबरों से ही मुझे एक ऐसी बात का एहसास हुआ जिसने मुझे कैदी के पक्ष में दृढ़ता से प्रेरित किया। सबसे ज्यादा दिलचस्पी मुझे उस तथ्य में थी जो कानूनी कार्यवाही में अक्सर देखने को मिलता है, लेकिन मेरे ख्याल से इस मामले की तरह इतने चरम और विचित्र रूप में शायद ही कभी देखने को मिलता है। मुझे उस विचित्रता को अपने भाषण के अंत में ही स्पष्ट करना चाहिए, लेकिन मैं इसे शुरुआत में ही कर रहा हूँ, क्योंकि सीधे काम पर लग जाना मेरी कमजोरी

है, मैं अपने संसाधनों को बचाकर नहीं रखता और सामग्री को कम से कम इस्तेमाल करता हूँ। यह मेरी ओर से शायद नासमझी हो, लेकिन कम से कम यह ईमानदारी से है। मेरे मन में यह है: कैदी के खिलाफ सबूतों की एक बेहद मजबूत कड़ी है, और साथ ही एक भी तथ्य ऐसा नहीं है जो अलग-अलग जांच करने पर आलोचना का सामना कर सके। जैसे-जैसे मैंने अखबारों में इस मामले का और करीब से अनुसरण किया, मेरा यह विचार और भी पुख्ता होता गया, और अचानक मुझे कैदी के रिश्तेदारों से उसकी पैरवी करने का अनुरोध मिला। मैं तुरंत यहाँ आ गया, और यहाँ आकर मैं पूरी तरह आश्वस्त हो गया। मेरा उद्देश्य तथ्यों की इस भयानक कड़ी को तोड़ना और यह दिखाना था कि सबूत का हर टुकड़ा अलग-अलग देखने पर कितना गलत साबित होता है। यह बात अप्रमाणित और अकल्पनीय थी कि मैंने इस मामले को अपने हाथ में लिया। तो फेत्युकोविच ने शुरुआत की।
“न्यायालय के सज्जनों,” उसने अचानक विरोध करते हुए कहा, “मैं इस मामले में नया हूँ।”
ज़िला। मेरे मन में कोई पूर्वधारणा नहीं है। कैदी, जो उग्र और अनियंत्रित स्वभाव का व्यक्ति है, ने मेरा अपमान नहीं किया है। लेकिन उसने शायद इस कस्बे में सैकड़ों लोगों का अपमान किया है, और इस तरह कई लोगों के मन में उसके प्रति पहले से ही पूर्वाग्रह पैदा कर दिया है। बेशक, मैं मानता हूँ कि स्थानीय समाज की नैतिक भावनाएँ उसके विरुद्ध उचित रूप से भड़की हुई हैं। कैदी उग्र और हिंसक स्वभाव का है। फिर भी उसे यहाँ समाज में स्वीकार किया गया; यहाँ तक कि मेरे प्रतिभाशाली मित्र, अभियोजक के परिवार में भी उसका स्वागत किया गया।
(नोट: इन शब्दों पर दर्शकों में दो-तीन हंसी गूंजी।)
इसे तुरंत दबा दिया गया, लेकिन सभी ने इसे नोटिस किया। हम सभी जानते थे कि अभियोजक ने मित्या को उसकी इच्छा के विरुद्ध ही अपने यहाँ रखा था, केवल इसलिए कि उसने किसी तरह उसकी पत्नी को प्रभावित किया था—जो अत्यंत गुणवान और नैतिक मूल्यों वाली महिला थी, लेकिन कल्पनाशील, मनमौजी और अपने पति का विशेष रूप से छोटी-छोटी बातों पर विरोध करने वाली थी। हालाँकि, मित्या का आना-जाना अक्सर नहीं होता था।
फिर भी मैं यह सुझाव देने का साहस करता हूँ,” फेत्युकोविच ने आगे कहा, “कि
अपने स्वतंत्र विचारों और न्यायप्रिय स्वभाव के बावजूद, मेरे प्रतिद्वंदी ने मेरे दुर्भाग्यपूर्ण मुवक्किल के प्रति गलत पूर्वाग्रह बना लिया होगा। ओह, यह तो स्वाभाविक है; उस दुर्भाग्यपूर्ण व्यक्ति ने ऐसे पूर्वाग्रह का उचित ही उत्तरदायित्व लिया है। नैतिकता का आहत होना, और उससे भी अधिक आहत रुचि, अक्सर निर्दयी होती है। हमने प्रतिभाशाली अभियोक्ता के भाषण में कैदी के चरित्र और आचरण का कठोर विश्लेषण सुना, और मामले के प्रति उनका गंभीर आलोचनात्मक दृष्टिकोण स्पष्ट था। और तो और, उन्होंने मनोवैज्ञानिक बारीकियों का भी विश्लेषण किया, जिनमें वे तब तक नहीं जा सकते थे, जब तक कि उनके मन में कैदी के प्रति जरा सा भी सचेत और दुर्भावनापूर्ण पूर्वाग्रह न हो। लेकिन ऐसे मामलों में कुछ चीजें सबसे दुर्भावनापूर्ण और जानबूझकर अनुचित रवैये से भी बदतर, और भी घातक होती हैं। यह और भी बुरा होता है जब हम कलात्मक प्रवृत्ति से, एक तरह से कहें तो, एक प्रेम कहानी रचने की इच्छा से बहक जाते हैं, खासकर तब जब ईश्वर ने हमें मनोवैज्ञानिक अंतर्दृष्टि प्रदान की हो। यहाँ आने से पहले, मुझे पीटर्सबर्ग में चेतावनी दी गई थी, और मैं स्वयं भी इस बात से अवगत था, कि मुझे यहाँ एक प्रतिभाशाली प्रतिद्वंदी मिलेगा जिसकी मनोवैज्ञानिक अंतर्दृष्टि और बारीकियों ने हाल के वर्षों में कानूनी हलकों में उसे विशेष ख्याति दिलाई है। लेकिन मनोविज्ञान जितना गहरा विषय है, उतना ही यह एक ऐसा छुरी है जो दोनों तरफ से काटती है। (दर्शकों में हंसी गूंजी।)
"आप मेरी तुलना के लिए मुझे क्षमा करेंगे; मैं वाक्पटुता का दावा नहीं कर सकता। लेकिन मैं अभियोक्ता के भाषण के किसी भी बिंदु को उदाहरण के रूप में ले सकता हूं।"
अंधेरे में बगीचे में भागते हुए कैदी ने ऊपर से छलांग लगा दी।
बाड़ के पास खड़े उस व्यक्ति को नौकर ने पकड़ लिया और पीतल के मूसल से उसे नीचे गिरा दिया। फिर वह वापस बगीचे में कूद गया और उस आदमी के ऊपर पाँच मिनट तक यह पता लगाने की कोशिश करता रहा कि उसने उसे मारा है या नहीं। अभियोजक कैदी के इस बयान पर विश्वास करने से इनकार करता है कि वह बूढ़े ग्रिगोरी के पास दया के कारण भागा था। 'नहीं,' वह कहता है, 'ऐसे क्षण में ऐसी संवेदनशीलता असंभव है, यह अस्वाभाविक है; वह यह पता लगाने के लिए भागा कि उसके अपराध का एकमात्र गवाह

जीवित है या मृत, और इस प्रकार उसने यह साबित कर दिया कि उसने हत्या की है, क्योंकि वह किसी अन्य कारण से वापस नहीं भागता।'
यहां मनोविज्ञान है; लेकिन आइए इसी पद्धति को अपनाएं और लागू करें।
अगर इसे उलट दिया जाए, तो हमारा नतीजा उतना ही संभावित होगा। हमें बताया गया है कि हत्यारा एहतियात के तौर पर यह पता लगाने के लिए नीचे कूदा कि गवाह ज़िंदा है या नहीं, लेकिन उसने अपने मृत पिता के अध्ययन कक्ष में, जैसा कि अभियोजक स्वयं तर्क देता है, एक फटा हुआ लिफाफा छोड़ दिया था, जिस पर लिखा था कि उसमें तीन हज़ार रूबल थे। 'अगर वह उस लिफाफे को अपने साथ ले गया होता, तो दुनिया में किसी को भी उस लिफाफे और उसमें रखे नोटों के बारे में पता नहीं चलता, और यह भी कि कैदी ने पैसे चुराए थे।' ये अभियोजक के अपने शब्द हैं। तो एक तरफ आप देखते हैं कि सावधानी का पूर्ण अभाव है, एक ऐसा व्यक्ति जिसने अपना आपा खो दिया और डर के मारे भाग गया, उस सुराग को ज़मीन पर छोड़कर, और दो मिनट बाद, जब उसने एक और आदमी की हत्या कर दी, तो हम उसमें सबसे निर्दयी और सोची-समझी दूरदर्शिता मानने के हकदार हैं। लेकिन यह बात मान भी लें तो भी, मुझे लगता है कि यह मनोवैज्ञानिक सूक्ष्मता ही है जो यह दर्शाती है कि कुछ परिस्थितियों में मैं एक श्वेत चील की तरह खून का प्यासा और पैनी नज़र वाला हो जाता हूँ, जबकि अगली ही परिस्थिति में मैं एक छछूंदर की तरह डरपोक और अंधा हो जाता हूँ। लेकिन अगर मैं इतना खून का प्यासा और निर्मम हूँ कि किसी आदमी को मारने के बाद मैं सिर्फ यह देखने के लिए वापस भागता हूँ कि क्या वह मेरे खिलाफ गवाही देने के लिए ज़िंदा है, तो मैं दूसरे गवाहों से मिलने के जोखिम पर अपने शिकार की देखभाल में पाँच मिनट क्यों बिताऊँ? मैं अपने रूमाल को क्यों भिगोऊँ, उसके सिर से खून क्यों पोंछूँ ताकि बाद में वह मेरे खिलाफ सबूत बन सके? अगर वह इतना निर्दयी और हिसाब-किताब करने वाला होता, तो नौकर के सिर पर बार-बार उसी मूसल से वार क्यों न करता ताकि उसे तुरंत मार डाले और गवाह के बारे में अपनी सारी चिंता से मुक्त हो जाए?
“फिर भी, हालांकि वह यह देखने के लिए दौड़ा कि गवाह जीवित है या नहीं, वह चला गया।
रास्ते में एक और गवाह मिला, वह पीतल का मूसल जो उसने उन दो महिलाओं से लिया था, और जिसे वे बाद में हमेशा अपना बता सकती थीं और साबित कर सकती थीं कि उसने ही उसे उनसे लिया था। और ऐसा नहीं था कि वह उसे रास्ते में भूल गया हो, लापरवाही या जल्दबाजी में गिरा दिया हो, नहीं, उसने अपना हथियार फेंक दिया था, क्योंकि वह ग्रिगरी के पड़े होने की जगह से पंद्रह कदम दूर मिला था। उसने ऐसा क्यों किया? बस इसलिए कि वह एक आदमी, एक बूढ़े नौकर को मारने के गम से दुखी था; और उसने मूसल को एक हत्यारे हथियार की तरह कोसते हुए फेंक दिया। यही हुआ होगा, उसे इतनी दूर फेंकने का और क्या कारण हो सकता था? और अगर वह किसी आदमी को मारने पर दुख और दया महसूस करने में सक्षम था, तो यह दर्शाता है कि वह अपने पिता की हत्या का दोषी नहीं था। अगर उसने उसकी हत्या की होती, तो वह दया के मारे किसी और शिकार की ओर नहीं भागता; तब उसकी भावनाएँ अलग होतीं; उसके विचार आत्मरक्षा पर केंद्रित होते। उसके पास दया के लिए कुछ भी नहीं होता, इसमें कोई संदेह नहीं है। इसके विपरीत, वह पाँच मिनट उसकी देखभाल करने के बजाय उसकी खोपड़ी तोड़ देता। दया और सद्भावना की गुंजाइश इसलिए थी क्योंकि तब तक उसका विवेक साफ था। यहाँ मनोविज्ञान अलग है। मैंने जानबूझकर इस पद्धति का सहारा लिया है, महोदया, ताकि यह दिखाया जा सके कि इससे कुछ भी साबित किया जा सकता है। यह सब इस बात पर निर्भर करता है कि इसका उपयोग कौन करता है। मनोविज्ञान गंभीर से गंभीर लोगों को भी अनजाने में ही प्रेम प्रसंगों में उलझा लेता है। मैं मनोविज्ञान के दुरुपयोग की बात कर रहा हूँ, महोदया।
अभियोक्ता के विरोध में अनुमोदन और हंसी की आवाजें सुनाई दीं।
अदालत में फिर से सुनाई दिया। मैं भाषण को विस्तार से नहीं दोहराऊंगा; मैं केवल उसके कुछ अंश, कुछ प्रमुख बिंदु उद्धृत करूंगा।

अध्याय 11

पैसा नहीं था। कुछ भी नहीं था।
डकैती

फेत्युकोविच के भाषण में एक बात ऐसी थी जिसने सभी को चौंका दिया। उन्होंने घातक तीन हजार रूबल के अस्तित्व से साफ इनकार कर दिया, और परिणामस्वरूप, उनके चोरी होने की संभावना को भी नकार दिया।
“ज्यूरी के सज्जनों,” उन्होंने शुरू किया। “प्रत्येक नया और निष्पक्ष
इस मामले में एक विचित्र बात ध्यान देने योग्य है, अर्थात् डकैती का आरोप, और यह साबित करने की पूरी तरह असंभवता कि चोरी करने लायक कुछ था भी। हमें बताया गया है कि तीन हजार रूबल चोरी हुए थे, लेकिन क्या वे रूबल कभी अस्तित्व में थे, यह कोई नहीं जानता। सोचिए, हमें इस रकम के बारे में कैसे पता चला, और नोट किसने देखे? केवल एक व्यक्ति जिसने उन्हें देखा और बताया कि उन्हें लिफाफे में रखा गया था, वह नौकर स्मरद्याकोव था। उसने इस घटना से पहले कैदी और उसके भाई इवान फ्योदोरोविच से इस बारे में बात की थी। मैडम स्वेतलोव को भी इसके बारे में बताया गया था। लेकिन इन तीनों में से किसी ने भी वास्तव में नोट नहीं देखे थे, स्मरद्याकोव के अलावा किसी ने भी उन्हें नहीं देखा था।
“यहाँ सवाल उठता है कि क्या यह सच है कि वे अस्तित्व में थे, और क्या
स्मरद्याकोव ने उन्हें देखा था, आखिरी बार कब देखा था? क्या पता उसके मालिक ने बिना बताए उसके बिस्तर के नीचे से नोट निकालकर वापस उसके कैश बॉक्स में रख दिए हों? ध्यान दें, स्मरद्याकोव की कहानी के अनुसार नोट गद्दे के नीचे रखे थे; कैदी ने उन्हें निकाला होगा, फिर भी बिस्तर बिल्कुल साफ-सुथरा था; यह प्रोटोकॉल में सावधानीपूर्वक दर्ज है। कैदी बिस्तर को बिना छेड़े नोट कैसे ढूंढ सकता था? वह अपने खून से सने हाथों से उस उत्तम और बेदाग चादर को गंदा करने से कैसे बच सकता था जिससे बिस्तर जानबूझकर बनाया गया था?
लेकिन मुझसे पूछा जाएगा: फर्श पर पड़े लिफाफे का क्या? हाँ, यह वही है।
उस लिफाफे के बारे में कुछ कहना ज़रूरी है। अभी-अभी मुझे उस बेहद प्रतिभाशाली अभियोजक को यह कहते हुए सुनकर थोड़ा आश्चर्य हुआ—ध्यान दें, खुद के बारे में—कि अगर वह लिफाफा ज़मीन पर न पड़ा होता, तो दुनिया में किसी को भी उस लिफाफे और उसमें रखे नोटों के बारे में पता न चलता, और इसलिए कैदी द्वारा उसे चुराने के बारे में भी किसी को पता न चलता। और इसलिए अभियोजक के स्वयं के स्वीकारोक्ति के अनुसार, कागज का वह फटा हुआ टुकड़ा ही एकमात्र सबूत है जिस पर डकैती का आरोप टिका है, 'अन्यथा किसी को भी डकैती के बारे में पता न चलता, शायद पैसों के बारे में भी नहीं।' लेकिन क्या केवल कागज के उस टुकड़े का ज़मीन पर पड़ा होना ही इस बात का सबूत है कि उसमें पैसे थे, और वे पैसे चोरी हो गए थे? फिर भी, यह आपत्ति उठाई जाएगी कि स्मरद्याकोव ने लिफाफे में पैसे देखे थे। लेकिन कब, आखिरी बार उसने कब देखे थे, मैं आपसे यह पूछता हूँ? मैंने स्मरद्याकोव से बात की, और उसने मुझे बताया कि उसने त्रासदी से दो दिन पहले नोट देखे थे। तो क्यों न कल्पना करें कि बूढ़ा फ्योदोर पावलोविच, अपनी प्रेमिका के आने की बेसब्री और उन्मादपूर्ण प्रतीक्षा में अकेले कमरे में बंद होकर, लिफाफा खोलकर उसमें से नोट निकाल कर समय बिता रहा होगा। उसने शायद खुद से पूछा होगा, 'लिफाफे का क्या फायदा? उसे यकीन नहीं होगा कि नोट अंदर हैं, लेकिन जब मैं उसे तीस इंद्रधनुषी रंग के नोटों का बंडल दिखाऊंगा, तो उस पर ज्यादा असर पड़ेगा, यकीन मानिए, उसके मुंह में पानी आ जाएगा।' और इस तरह उसने लिफाफा फाड़ा, पैसे निकाले और मालिक होने के डर से बेफिक्र होकर उसे फर्श पर फेंक दिया।
"सुनिए सज्जनों, क्या इस सिद्धांत से अधिक संभावित कुछ और हो सकता है?"
क्या ऐसा हो सकता है? यह असंभव क्यों है? लेकिन अगर ऐसा कुछ हो भी सकता था, तो डकैती का आरोप बेबुनियाद हो जाता है; अगर पैसा नहीं था, तो चोरी भी नहीं हुई। अगर फर्श पर पड़ा लिफाफा इस बात का सबूत माना जा सकता है कि उसमें पैसा था, तो मैं इसके विपरीत यह तर्क क्यों नहीं दे सकता कि लिफाफा फर्श पर इसलिए पड़ा था क्योंकि उसके मालिक ने उसमें से पैसा निकाल लिया था?
लेकिन मुझसे पूछा जाएगा कि फ्योडोर पावलोविच के पैसे का क्या हुआ।

क्या उसने इसे लिफाफे से निकाल लिया था क्योंकि पुलिस द्वारा घर की तलाशी में यह नहीं मिला था? पहली बात तो यह है कि कुछ पैसा कैश बॉक्स में मिला था, और दूसरी बात, हो सकता है कि उसने इसे उस सुबह या पिछली शाम को किसी और काम के लिए, किसी को देने या भेजने के लिए निकाल लिया हो; हो सकता है कि उसने अपना इरादा, अपनी कार्ययोजना पूरी तरह से बदल दी हो, बिना स्मरद्याकोव को पहले से बताए। और अगर ऐसी व्याख्या की थोड़ी सी भी संभावना है, तो कैदी पर लूट के लिए हत्या करने और वास्तव में लूट को अंजाम देने का इतना पुख्ता आरोप कैसे लगाया जा सकता है? यह तो कल्पना की दुनिया में जाने जैसा है। अगर यह माना जाता है कि कुछ चोरी हुआ है, तो वह चीज पेश की जानी चाहिए, या कम से कम उसके अस्तित्व को निर्विवाद रूप से साबित किया जाना चाहिए। फिर भी, इन नोटों को किसी ने कभी नहीं देखा था। कुछ समय पहले पीटर्सबर्ग में अठारह साल का एक युवक, जिसकी उम्र मुश्किल से एक साल से थोड़ी अधिक थी,
एक लड़का, जो फल-सब्जी बेचने का छोटा-मोटा धंधा करता था, दिन दहाड़े कुल्हाड़ी लेकर एक साहूकार की दुकान में घुस गया और असाधारण दुस्साहस के साथ दुकानदार की हत्या कर दी और पंद्रह सौ रूबल लेकर भाग गया। पाँच घंटे बाद उसे गिरफ्तार कर लिया गया और पंद्रह रूबल को छोड़कर, जो वह पहले ही खर्च कर चुका था, बाकी सारी रकम उसके पास से बरामद हुई। इतना ही नहीं, हत्या के बाद दुकानदार जब दुकान पर लौटा तो उसने पुलिस को न केवल चोरी हुई रकम की सही-सही जानकारी दी, बल्कि उन नोटों और सोने के सिक्कों के बारे में भी बताया जिनसे वह रकम बनी थी, और वे नोट और सिक्के अपराधी के पास से बरामद हुए। इसके बाद हत्यारे ने अपना जुर्म कबूल कर लिया। इसे कहते हैं सबूत, न्यायाधीश महोदय! उस मामले में मैं जानता हूँ, मैंने देखा है, मैंने पैसे को छुआ है, और मैं उसके अस्तित्व से इनकार नहीं कर सकता। क्या इस मामले में भी ऐसा ही है? और फिर भी यह जीवन और मृत्यु का सवाल है।
“हाँ, मुझे बताया जाएगा, लेकिन वह उस रात मौज-मस्ती कर रहा था, पैसे लुटा रहा था।”
पैसा; उसके पास पंद्रह सौ रूबल पाए गए थे—उसे ये पैसा कहाँ से मिला? लेकिन यह तथ्य कि केवल पंद्रह सौ रूबल ही मिले और बाकी आधी रकम कहीं नहीं मिली, यह दर्शाता है कि वह पैसा एक ही नहीं था और कभी किसी लिफाफे में नहीं था। समय की सटीक गणना से प्रारंभिक जाँच में यह सिद्ध हुआ कि कैदी उन महिला नौकरानियों के पास से सीधे पेरहोटिन के पास भागा, घर नहीं गया और कहीं नहीं गया। इसलिए वह हर समय किसी न किसी के साथ था और इसीलिए वह तीन हजार रूबल को आधा-आधा बाँटकर शहर में नहीं छिपा सकता था। इसी कारण अभियोजक ने यह मान लिया है कि पैसा मोक्रोए की किसी गुफा में छिपा है। सज्जनों, उडोल्फो के किले की तहखानों में क्यों नहीं? क्या यह अनुमान बहुत ही काल्पनिक और काल्पनिक नहीं है? और ध्यान दें, यदि यह अनुमान गलत साबित होता है, तो डकैती का पूरा आरोप ही धराशायी हो जाएगा, क्योंकि उस स्थिति में बाकी पंद्रह सौ रूबल का क्या हुआ होगा? यह तो साबित हो चुका है कि कैदी कहीं और नहीं गया था, फिर भी वे किस चमत्कार से गायब हो सकते हैं? और हम ऐसी कहानियों से किसी का जीवन बर्बाद करने को तैयार हैं!
मुझे बताया जाएगा कि वह यह नहीं बता सका कि उसे पंद्रह कहाँ से मिले।
उसके पास सौ रुपये थे, और हर कोई जानता था कि उस रात से पहले उसके पास पैसे नहीं थे। भला किसे पता था? कैदी ने उस पैसे के स्रोत के बारे में स्पष्ट और अटल बयान दिया है, और अगर आप इसे स्वीकार करें, तो जूरी के सज्जनों, उस बयान से अधिक संभावित और कैदी के स्वभाव और मनोभाव के अनुरूप कुछ भी नहीं हो सकता। अभियोजक अपनी ही मनगढ़ंत कहानी में खोया हुआ है। एक कमजोर इच्छाशक्ति वाला व्यक्ति, जिसने अपनी मंगेतर द्वारा अपमानजनक ढंग से दिए गए तीन हजार रुपये स्वीकार कर लिए थे, वह, जैसा कि हमें बताया गया है, आधा पैसा अलग रखकर सिल नहीं सकता था, बल्कि अगर उसने ऐसा किया भी होता, तो वह हर दो दिन में उसे खोलकर सौ रुपये निकाल लेता और इस तरह एक महीने में सारा पैसा खर्च कर देता। आपको याद होगा, यह सब ऐसे लहजे में कहा गया था जिसमें किसी भी तरह के खंडन की गुंजाइश नहीं थी। लेकिन क्या होगा अगर घटना बिल्कुल अलग तरह से घटी हो? क्या होगा अगर आप एक मनगढ़ंत कहानी बुन रहे हों, और वह भी किसी बिल्कुल अलग तरह के आदमी के बारे में? बस यही बात है, आपने एक बिल्कुल अलग आदमी गढ़ लिया है!
मुझे बताया जाएगा, शायद, ऐसे गवाह हैं कि उसने एक ही दिन में सारा समय बिताया।

उसकी मंगेतर ने उसे त्रासदी से एक महीने पहले तीन हज़ार दिए थे, इसलिए वह उस रकम को आधा तो नहीं बाँट सकता था। लेकिन ये गवाह कौन हैं? अदालत में उनके साक्ष्य का महत्व पहले ही सिद्ध हो चुका है। इसके अलावा, दूसरे के हाथ में रोटी का टुकड़ा हमेशा बड़ा लगता है, और इन गवाहों में से किसी ने भी उस पैसे को गिना नहीं था; उन सभी ने केवल देखकर ही अनुमान लगाया। और मैक्सिमोव गवाह ने गवाही दी है कि कैदी के पास बीस हज़ार थे। देखिए, जूरी के सज्जनों, मनोविज्ञान एक दोधारी तलवार है। चलिए अब मैं इसका दूसरा पहलू आजमाता हूँ और देखता हूँ कि इसका क्या परिणाम होता है।
"विपदा से एक महीने पहले कैदी को कैटेरिना द्वारा सौंपा गया था।"
इवानोवना को डाक से भेजने के लिए तीन हजार रूबल दिए गए। लेकिन सवाल यह है: क्या यह सच है कि उन्हें इस तरह अपमानजनक और नीच तरीके से सौंपा गया था जैसा कि अभी-अभी बताया गया है? इस विषय पर युवती का पहला बयान बिल्कुल अलग था। दूसरे बयान में हमने केवल आक्रोश और प्रतिशोध की चीखें सुनीं, लंबे समय से छिपी हुई नफरत की चीखें। और गवाह द्वारा अपना पहला बयान गलत तरीके से देने से हमें यह निष्कर्ष निकालने का अधिकार मिलता है कि उसका दूसरा बयान भी गलत हो सकता है।
अभियोजक उस कहानी पर बात नहीं करेगा, हिम्मत नहीं करेगा (उसके अपने शब्द)। ठीक है। मैं भी उस पर बात नहीं करूंगा, लेकिन केवल इतना कहना चाहूंगा कि यदि कोई उच्च और उच्च सिद्धांतों वाली व्यक्ति, जैसे कि वह अत्यंत सम्मानित युवती निस्संदेह है, यदि ऐसी व्यक्ति, मैं कहता हूं, अदालत में अचानक अपने पहले बयान का खंडन करती है, कैदी को बर्बाद करने के स्पष्ट मकसद से, तो यह स्पष्ट है कि यह गवाही निष्पक्ष रूप से नहीं, बल्कि ठंडे दिमाग से दी गई है। क्या हमें यह मानने का अधिकार नहीं है कि प्रतिशोध की भावना रखने वाली महिला ने शायद बात को बढ़ा-चढ़ाकर बताया हो? हाँ, उसने शायद बढ़ा-चढ़ाकर बताया हो, विशेष रूप से उसे पैसे देने के अपमान और बेइज्जती के बारे में। नहीं, पैसे इस तरह से दिए गए थे कि उन्हें लेना संभव था, खासकर कैदी जैसे लापरवाह व्यक्ति के लिए, क्योंकि उसे अपने पिता से जल्द ही तीन हजार रूबल मिलने की उम्मीद थी, जो उसके अनुसार उसके पिता को देने थे। यह उसकी नासमझी थी, लेकिन उसकी इसी गैरजिम्मेदाराना नासमझी ने उसे इतना आश्वस्त कर दिया था कि उसके पिता उसे पैसे दे देंगे, उसे मिल जाएंगे, और इसलिए वह हमेशा उसे सौंपे गए पैसे भेजकर कर्ज चुका सकता था।
लेकिन अभियोजक यह मानने से इनकार करता है कि वह उसी दिन फैसला सुना सकता था।
आधे पैसे अलग रख दिए और उन्हें एक छोटी थैली में सिल दिया। वह हमें बताता है कि यह उसका स्वभाव नहीं है, उसके मन में ऐसी भावनाएँ हो ही नहीं सकतीं। फिर भी वह करामाज़ोव के व्यापक स्वभाव की बात करता रहा; उसने उन दो चरम सीमाओं के बारे में बताया जिन पर एक करामाज़ोव एक साथ विचार कर सकता है। करामाज़ोव का स्वभाव ही ऐसा है, दो चरम सीमाओं के बीच झूलता रहता है, कि जब वह उल्लासपूर्ण आनंद की तीव्र इच्छा से भी प्रेरित होता है, तब भी वह खुद को संभाल लेता है, अगर उसे दूसरी तरफ कुछ प्रेरणा मिले। और दूसरी तरफ प्रेम है—वह नया प्रेम जो उसके दिल में प्रज्वलित हुआ था, और उस प्रेम के लिए उसे पैसे की ज़रूरत थी; ओह, अपनी प्रेमिका के साथ मौज-मस्ती करने से कहीं ज़्यादा। अगर वह उससे कहे, 'मैं तुम्हारी हूँ, मैं फ्योदोर पावलोविच को नहीं चाहूँगी,' तो उसे उसे अपने साथ ले जाने के लिए पैसे चाहिए होंगे। यह मौज-मस्ती से कहीं ज़्यादा महत्वपूर्ण था। क्या एक करामाज़ोव इसे समझने में असफल हो सकता है? वह चिंता ही तो उसकी असल समस्या थी—उसके लिए उस पैसे को अलग रखना और आपात स्थिति में इस्तेमाल के लिए छिपाकर रखना असंभव क्यों है?
लेकिन समय बीतता गया, और फ्योदोर पावलोविच ने कैदी को वह समय नहीं दिया।
तीन हज़ार की उम्मीद थी; इसके विपरीत, बाद वाले ने सुना कि वह इस रकम का इस्तेमाल उस महिला को बहकाने के लिए करना चाहता है जिससे वह, यानी कैदी, प्यार करता था। उसने सोचा, 'अगर फ्योदोर पावलोविच पैसे नहीं देता, तो मैं कैटेरिना इवानोव्ना के सामने चोर की तरह हो जाऊंगा।' और फिर उसके मन में यह विचार आया कि वह कैटेरिना इवानोव्ना के पास जाएगा, उसके सामने अपने गले में लटके हुए पंद्रह सौ रूबल रखेगा और कहेगा, 'मैं बदमाश हूं, लेकिन चोर नहीं।' तो यहाँ हमारे पास पहले से ही दो कारण हैं कि उसे उस रकम को अपनी आँखों की पुतली की तरह क्यों संभाल कर रखना चाहिए, उसे उस छोटी थैली को खोलकर सौ-सौ करके क्यों नहीं खर्च करना चाहिए। कैदी के सम्मान की भावना को क्यों नकारा जाए? हाँ, उसके पास सम्मान की भावना है, यह सच है कि यह गलत जगह पर है, यह सच है कि यह

अक्सर गलत समझी जाती है, फिर भी यह मौजूद है और एक जुनून के बराबर है, और उसने इसे साबित कर दिया है।
लेकिन अब मामला और भी जटिल हो जाता है; उसकी ईर्ष्या उसे सताती है।
हालात चरम पर पहुँच गए, और वही दो सवाल उसके बुखार से ग्रस्त दिमाग को और भी ज़्यादा परेशान करने लगे: 'अगर मैं कैटेरिना इवानोव्ना का कर्ज़ चुका दूँ, तो ग्रुशेंका के साथ जाने के लिए मुझे पैसे कहाँ से मिलेंगे?' अगर उस महीने के दौरान उसने बेकाबू होकर शराब पी और शराबखानों में हंगामा किया, तो शायद इसलिए कि वह बहुत दुखी था और उसकी सहनशक्ति की सीमा से बाहर हो गई थी। ये दो सवाल इतने गंभीर हो गए कि अंततः उसने उसे निराशा की ओर धकेल दिया। उसने अपने छोटे भाई को तीन हज़ार रूबल के लिए आखिरी बार भीख मांगने भेजा, लेकिन जवाब का इंतज़ार किए बिना, वह खुद अंदर घुस गया और गवाहों के सामने बूढ़े आदमी को बुरी तरह पीट दिया। उसके बाद उसे किसी से भी वह रकम मिलने की कोई उम्मीद नहीं थी; उस पिटाई के बाद उसके पिता ने उसे वह रकम नहीं दी।
उसी शाम उसने अपनी छाती के ऊपरी हिस्से पर वार किया।
उसने छाती के उस हिस्से पर वार किया जहाँ छोटी थैली थी, और अपने भाई से कसम खाई कि उसके पास बदमाश न बनने के साधन हैं, लेकिन फिर भी वह बदमाश ही रहेगा, क्योंकि उसे पहले से ही पता था कि वह उन साधनों का उपयोग नहीं करेगा, उसके पास ऐसा चरित्र नहीं होगा, उसके पास ऐसा करने की इच्छाशक्ति नहीं होगी। आखिर अभियोजक एलेक्सी करामाज़ोव के इतने सच्चे, ईमानदार, सहज और विश्वसनीय तरीके से दिए गए सबूतों पर विश्वास करने से क्यों इनकार कर रहा है? और इसके विपरीत, वह मुझे उडोल्फो के किले की तहखानों में छिपे हुए धन पर विश्वास करने के लिए क्यों मजबूर कर रहा है?
उसी शाम, अपने भाई से बात करने के बाद, कैदी ने लिखा
वह घातक पत्र, और वह पत्र ही कैदी द्वारा डकैती किए जाने का सबसे बड़ा, सबसे ज़बरदस्त सबूत है! 'मैं सबसे भीख माँगूँगा, और अगर मुझे वह नहीं मिला तो मैं अपने पिता की हत्या कर दूँगा और इवान के जाते ही उनके गद्दे के नीचे से गुलाबी रिबन वाला लिफाफा उठा लूँगा।' हत्या की पूरी योजना बताई गई है, इसलिए यह वही होना चाहिए। 'जैसा उसने लिखा है, वैसा ही हुआ है,' अभियोक्ता चिल्लाता है।
लेकिन सबसे पहले तो, यह एक शराबी आदमी का पत्र है और इसे लिखा गया है
अत्यंत क्रोध; दूसरा, वह लिफाफे के बारे में फिर से स्मरद्याकोव से सुनी बातों के आधार पर लिखता है, क्योंकि उसने स्वयं लिफाफा नहीं देखा है; और तीसरा, उसने वास्तव में लिखा है, लेकिन आप यह कैसे साबित कर सकते हैं कि उसने ऐसा किया? क्या कैदी ने तकिए के नीचे से लिफाफा लिया, क्या उसे पैसे मिले, क्या वे पैसे वास्तव में मौजूद थे? और क्या कैदी पैसे लेने के लिए भागा था, अगर आपको याद हो? वह चोरी करने के लिए नहीं, बल्कि उस महिला का पता लगाने के लिए भागा था जिसने उसे कुचल दिया था। वह किसी योजना को अंजाम देने के लिए नहीं भागा था, जो उसने लिखा था उसे पूरा करने के लिए नहीं, यानी किसी पूर्व नियोजित डकैती के लिए नहीं, बल्कि वह अचानक, अनायास, ईर्ष्या के आवेश में भागा था। हाँ! मुझे बताया जाएगा, लेकिन जब वह वहाँ पहुँचा और उसकी हत्या की तो उसने पैसे भी छीन लिए। लेकिन क्या उसने वास्तव में उसकी हत्या की? मैं डकैती के आरोप को घोर अस्वीकार करता हूँ। किसी व्यक्ति पर डकैती का आरोप नहीं लगाया जा सकता, यदि यह सटीक रूप से बताना असंभव हो कि उसने क्या चुराया है; यह एक सर्वमान्य सत्य है। लेकिन क्या उसने बिना लूटपाट के उसकी हत्या की? क्या उसने सचमुच उसकी हत्या की? क्या यह साबित हो चुका है? क्या यह भी एक मनगढ़ंत कहानी नहीं है?

अध्याय 12

और न ही कोई हत्या हुई थी।

“न्यायपालिका के सज्जनों, मुझे आपको याद दिलाने दीजिए कि एक व्यक्ति का जीवन दांव पर लगा है और आपको सावधान रहना चाहिए। हमने स्वयं अभियोजक को यह स्वीकार करते सुना है कि आज तक वह कैदी पर अपराध की पूरी और सचेत पूर्वचिंता का आरोप लगाने में हिचकिचा रहा था; वह तब तक हिचकिचाता रहा जब तक उसने वह घातक नशे में लिखा पत्र नहीं देखा, जिसे आज अदालत में पेश किया गया। ‘सब कुछ जैसा लिखा था वैसा ही हुआ।’ लेकिन, मैं फिर से दोहराता हूँ, वह उसके पास दौड़ रहा था, उसे ढूंढने के लिए, केवल यह पता लगाने के लिए कि वह कहाँ है। यह एक ऐसा तथ्य है जिस पर विवाद नहीं किया जा सकता। अगर वह घर पर होती, तो वह भागता नहीं, बल्कि उसके पास ही रहता, और इसलिए वह वह नहीं करता जो उसने पत्र में वादा किया था। वह अचानक और अनजाने में दौड़ा, और उस समय तक संभवतः उसे अपना नशे में लिखा पत्र याद भी नहीं था। ‘उसने मूसल उठा लिया,’ वे कहते हैं, और आपको याद होगा कि कैसे उस मूसल पर मनोविज्ञान की एक पूरी इमारत खड़ी कर दी गई थी—वह उस मूसल को हथियार के रूप में देखने, उसे उठाने आदि के लिए बाध्य था। आगे बढ़ते हैं। इस बिंदु पर मेरे मन में एक बहुत ही सामान्य विचार आता है: क्या होता अगर वह मूसल नज़र में न होता, उस शेल्फ पर न पड़ा होता जहाँ से कैदी ने उसे उठाया था, बल्कि किसी अलमारी में रखा होता? वह कैदी की नज़र में न आता, और वह बिना हथियार के, खाली हाथों भाग जाता, और फिर वह निश्चित रूप से किसी को नहीं मारता। तो फिर मैं मूसल को पूर्व नियोजित हत्या के प्रमाण के रूप में कैसे देख सकता हूँ?

“हाँ, लेकिन उसने शराबखानों में अपने पिता की हत्या की बात की थी, और दो दिन
इससे पहले, जिस शाम उसने नशे में धुत होकर चिट्ठी लिखी थी, उस शाम वह शांत था और शराबखाने में सिर्फ एक दुकानदार से झगड़ा किया था, क्योंकि करामाज़ोव जैसा व्यक्ति झगड़ा किए बिना रह ही नहीं सकता! लेकिन मेरा जवाब यह है कि अगर वह अपनी चिट्ठी के अनुसार ऐसी हत्या की योजना बना रहा होता, तो वह निश्चित रूप से दुकानदार से भी झगड़ा नहीं करता, और शायद शराबखाने में जाता ही नहीं, क्योंकि ऐसा अपराध रचने वाला व्यक्ति शांति और एकांत चाहता है, खुद को मिटाना चाहता है, देखे और सुने जाने से बचना चाहता है, और यह सोच-समझकर नहीं, बल्कि सहज प्रवृत्ति से करता है। जूरी के सज्जनों, मनोवैज्ञानिक विधि एक दोधारी तलवार है, और हम भी इसका उपयोग कर सकते हैं। जहाँ तक पूरे महीने शराबखानों में होने वाले इस शोर-शराबे की बात है, क्या हम अक्सर बच्चों या शराबखानों से बाहर आने वाले शराबी लोगों को 'मैं तुम्हें मार डालूँगा' चिल्लाते हुए नहीं सुनते? लेकिन वे किसी की हत्या नहीं करते। और वह घातक चिट्ठी—क्या वह भी सिर्फ नशे में की गई चिड़चिड़ाहट नहीं थी? क्या यह शराबखाने के बाहर खड़े झगड़ालू की चीख नहीं है, ‘मैं तुम्हें मार डालूँगा! मैं तुम सबको मार डालूँगा!’ क्यों नहीं, क्यों नहीं हो सकता? उस पत्र को ‘बेतुका’ कहने के बजाय ‘घातक’ कहने का हमारे पास क्या कारण है? क्योंकि उसके पिता की हत्या कर दी गई है, क्योंकि एक गवाह ने कैदी को बगीचे से हथियार लेकर भागते हुए देखा था और उसने उसे गिरा दिया था: इसलिए, हमें बताया जाता है कि सब कुछ वैसा ही हुआ जैसा उसने लिखकर योजना बनाई थी, और वह पत्र ‘बेतुका’ नहीं, बल्कि ‘घातक’ था।

अब, शुक्र है! हम असली मुद्दे पर आ गए हैं: ‘चूंकि वह
बगीचे में, उसने ही उसकी हत्या की होगी।’ इन कुछ शब्दों में: ‘चूंकि वह वहां था, तो उसने ही की होगी’ अभियोजन पक्ष का पूरा मामला निहित है। वह वहां था, इसलिए उसने ही की होगी। और क्या होगा यदि इसमें ‘ज़रूर’ वाली बात न हो, भले ही वह वहां था? ओह, मैं मानता हूँ कि सबूतों की कड़ी—संयोग—वास्तव में संकेत देते हैं। लेकिन इन सभी तथ्यों की अलग-अलग जांच करें, चाहे उनका आपस में कोई संबंध न हो। उदाहरण के लिए, अभियोजन पक्ष कैदी के इस बयान की सच्चाई को मानने से क्यों इनकार करता है कि वह अपने पिता की खिड़की से भाग गया था? याद कीजिए अभियोजक ने हत्यारे के मन में अचानक उभरे सम्मानजनक और ‘पवित्र’ भावों का मज़ाक उड़ाते हुए किस तरह व्यंग्य किए थे। लेकिन क्या होगा यदि कुछ ऐसा ही हो, धार्मिक श्रद्धा का भाव हो, भले ही वह पिता के प्रति सम्मान न हो? ‘मेरी माँ उस समय मेरे लिए

प्रार्थना कर रही होंगी,' प्रारंभिक पूछताछ में कैदी के ये शब्द थे, और इसलिए जैसे ही उसे यकीन हुआ कि मैडम स्वेतलोव उसके पिता के घर में नहीं हैं, वह भाग गया। 'लेकिन वह खिड़की से झाँककर खुद को यकीन नहीं दिला सका,' अभियोक्ता आपत्ति जताता है। लेकिन वह ऐसा क्यों नहीं कर सका? क्यों? कैदी के इशारों पर खिड़की खुलती थी। फ्योदोर पावलोविच ने शायद कोई शब्द कहा हो, कोई ऐसी बात कही हो जिससे कैदी को पता चल गया हो कि वह वहाँ नहीं है। हम हर बात को अपनी कल्पना के अनुसार क्यों मान लें, जैसा हम सोचना चाहते हैं? वास्तविकता में हज़ारो चीज़ें घटित हो सकती हैं जो सूक्ष्म से सूक्ष्म कल्पना से भी परे होती हैं।
"हाँ, लेकिन ग्रिगोरी ने दरवाजा खुला देखा था, इसलिए कैदी निश्चित रूप से अंदर था।"
घर में था, इसलिए उसने उसे मार डाला।' अब उस दरवाजे के बारे में, जूरी के सज्जनों... ध्यान दें कि हमारे पास उस दरवाजे के बारे में केवल एक गवाह का बयान है, और वह उस समय ऐसी स्थिति में था कि... लेकिन मान लीजिए कि दरवाजा खुला था; मान लीजिए कि कैदी ने आत्मरक्षा की स्वाभाविक प्रवृत्ति के कारण, जो उसकी स्थिति में स्वाभाविक थी, इससे इनकार करते हुए झूठ बोला है; मान लीजिए कि वह घर में गया था— तो फिर क्या? यह कैसे निष्कर्ष निकलता है कि वहाँ होने के कारण उसने हत्या की? वह अंदर घुस सकता था, कमरों में भाग सकता था; अपने पिता को धक्का दे सकता था; उन पर प्रहार कर सकता था; लेकिन जैसे ही उसने सुनिश्चित किया कि मैडम स्वेतलोव वहाँ नहीं थीं, वह इस बात की खुशी मनाते हुए भाग सकता था कि वह वहाँ नहीं थीं और उसने अपने पिता को नहीं मारा था। और शायद यही कारण था कि वह अपने पिता को जान से मारने के प्रलोभन से बच गया था, क्योंकि उसका अंतरात्मा साफ था और उसे अपने पिता को न मारने की खुशी थी, इसलिए वह एक शुद्ध भावना, दया और करुणा की भावना से ग्रस्त हो सका और एक मिनट बाद ही बाड़ से कूदकर ग्रिगरी की सहायता के लिए आगे बढ़ा, जब उसने उत्तेजना में आकर उसे गिरा दिया था।
अभियोजक ने अत्यंत प्रभावशाली ढंग से हमें उस भयावह घटना का वर्णन किया है।
मोकरोए में कैदी की मनःस्थिति ऐसी थी कि प्रेम एक बार फिर उसके सामने आया और उसे नए जीवन की ओर बुला रहा था, जबकि प्रेम उसके लिए असंभव था क्योंकि उसके पीछे उसके पिता का रक्तरंजित शव था और उस शव के परे— प्रतिशोध। फिर भी अभियोजक ने उसे प्रेम की अनुमति दी, जिसे उसने अपने तरीके से समझाया, उसकी नशे की हालत का जिक्र करते हुए, एक अपराधी को फांसी के लिए ले जाने का जिक्र करते हुए, यह कहते हुए कि फांसी अभी दूर है, इत्यादि। लेकिन मैं फिर पूछता हूँ, श्रीमान अभियोजक, क्या आपने एक नया व्यक्तित्व नहीं गढ़ा है? क्या कैदी इतना निर्दयी और निर्दयी है कि उस क्षण प्रेम के बारे में और सजा से बचने के बारे में सोच सके, अगर उसके हाथ सचमुच उसके पिता के खून से सने हों? नहीं, नहीं, नहीं! जैसे ही उसे यह स्पष्ट हो गया कि वह उससे प्रेम करती है और उसे अपने पास बुलाकर नई खुशियों का वादा करती है, ओह! तब, मैं कहता हूँ, उसकी आत्महत्या की इच्छा दोगुनी, तिगुनी हो गई होगी और उसने खुद को मार डाला होगा, अगर उसके अंतरात्मा पर उसके पिता की हत्या का बोझ था। ओह, नहीं! वह अपनी पिस्तौलें कहाँ रखी थीं, यह भूला नहीं होगा! मैं उस कैदी को जानता हूँ: अभियोजक द्वारा उस पर लगाए गए क्रूर, निर्दयी और बेरहम आरोप उसके चरित्र से मेल नहीं खाते। वह आत्महत्या कर लेता, यह निश्चित है। उसने आत्महत्या सिर्फ इसलिए नहीं की कि 'उसकी माँ की प्रार्थनाओं ने उसे बचा लिया' और वह अपने पिता के खून का निर्दोष था। वह परेशान था, उस रात मोक्रो में वह बूढ़े ग्रिगोरी के लिए शोक मना रहा था और भगवान से प्रार्थना कर रहा था कि बूढ़ा ठीक हो जाए, कि उसका वार जानलेवा न हो और उसे इसके लिए कष्ट न सहना पड़े। तथ्यों की ऐसी व्याख्या को क्यों न स्वीकार किया जाए? हमारे पास क्या विश्वसनीय सबूत है कि कैदी झूठ बोल रहा है?
लेकिन हमें फिर से बताया जाएगा, 'यह उसके पिता का शव है! अगर वह
'जो बिना उसकी हत्या किए भाग गया, उसकी हत्या किसने की?' यहाँ, मैं फिर से दोहराता हूँ, आपके सामने अभियोजन पक्ष का पूरा तर्क है। अगर उसने खुद हत्या नहीं की, तो उसकी हत्या किसने की? उसकी जगह किसी को रखा ही नहीं जा सकता।
"न्यायपालिका के सज्जनों, क्या सचमुच ऐसा है? क्या यह बिल्कुल सच है कि वहाँ कोई और नहीं है? हमने अभियोक्ता को उस रात उस घर में मौजूद सभी लोगों को उंगलियों पर गिनते हुए सुना है। वे पाँच थे; मैं मानता हूँ कि उनमें से तीन जिम्मेदार नहीं हो सकते थे—स्वयं हत्यारा, बूढ़ा ग्रिगोरी और उसकी पत्नी। फिर

कैदी और स्मरद्याकोव बचते हैं, और अभियोक्ता नाटकीय ढंग से कहता है कि कैदी ने स्मरद्याकोव की ओर इशारा किया क्योंकि उसके पास किसी और पर शक करने के लिए कोई नहीं था, कि अगर छठा व्यक्ति होता, यहाँ तक कि छठे व्यक्ति का एक काल्पनिक रूप भी, तो वह शर्म से स्मरद्याकोव के खिलाफ आरोप तुरंत छोड़ देता और दूसरे पर आरोप लगाता। लेकिन, न्यायाधिकरण के सज्जनों, मैं इसके बिल्कुल विपरीत निष्कर्ष क्यों नहीं निकाल सकता? वहाँ दो व्यक्ति हैं—कैदी और स्मरद्याकोव। मैं यह क्यों नहीं कह सकता कि आप मेरे मुवक्किल पर आरोप लगा रहे हैं, सिर्फ इसलिए कि आपके पास आरोप लगाने के लिए कोई और नहीं है? और आपके पास कोई और नहीं है, सिर्फ इसलिए क्योंकि आपने स्मरद्याकोव को हर तरह के संदेह से बाहर करने का फैसला कर लिया है।"

"यह सच है, वास्तव में, स्मर्ड्याकोव पर केवल कैदी द्वारा ही आरोप लगाया गया है, उसके दो भाई और मैडम स्वेतलोव। लेकिन कुछ और लोग भी हैं जो उस पर आरोप लगाते हैं: एक सवाल, एक संदेह, एक अस्पष्ट रिपोर्ट, एक आशंका की धुंधली अफवाहें हैं। अंत में, हमारे पास तथ्यों का एक ऐसा संयोजन है जो बहुत ही संकेत देता है, हालांकि, मैं मानता हूं, निर्णायक नहीं है। सबसे पहले, हमारे पास ठीक उसी दिन की घटना है, जिस दिन त्रासदी हुई थी, और जिसकी प्रामाणिकता के लिए अभियोजक ने किसी कारणवश सावधानीपूर्वक बचाव करना आवश्यक समझा है। फिर मुकदमे की पूर्व संध्या पर स्मरद्याकोव की अचानक आत्महत्या। फिर आज अदालत में कैदी के बड़े भाई द्वारा दिया गया उतना ही चौंकाने वाला सबूत, जो उसके अपराध में विश्वास करता था, लेकिन आज उसने नोटों का एक बंडल पेश किया और स्मरद्याकोव को हत्यारा घोषित कर दिया। ओह, मैं अदालत और अभियोजक के इस विश्वास से पूरी तरह सहमत हूं कि इवान करामाज़ोव को मानसिक बीमारी है, कि उसका बयान वास्तव में एक हताश प्रयास हो सकता है, जो प्रलाप में रचा गया हो, ताकि मृत व्यक्ति पर दोष मढ़कर अपने भाई को बचाया जा सके। लेकिन एक बार फिर स्मर्ड्याकोव का नाम लिया जाता है, एक बार फिर रहस्य का आभास होता है। कुछ अनसुलझा, कुछ अधूरा सा लगता है। और शायद एक दिन इसका स्पष्टीकरण मिल जाए। लेकिन अभी हम इस बारे में बात नहीं करेंगे। बाद में।

अदालत ने मुकदमे को आगे बढ़ाने का फैसला किया है, लेकिन इस बीच, मैं शायद अभियोजक द्वारा सूक्ष्मता और कुशलता से प्रस्तुत किए गए स्मरद्याकोव के चरित्र चित्रण पर मैं कुछ टिप्पणी करना चाहता हूँ। यद्यपि मैं उनकी प्रतिभा की प्रशंसा करता हूँ, मैं उनसे सहमत नहीं हो सकता। मैंने स्मरद्याकोव से मुलाकात की है, उन्हें देखा है और उनसे बात की है, और उन्होंने मुझ पर बिल्कुल अलग छाप छोड़ी है। यह सच है कि वे स्वास्थ्य में कमज़ोर थे; लेकिन चरित्र और भावना में, वे किसी भी तरह से उतने कमज़ोर नहीं थे जितना अभियोजक ने उन्हें बताया है। मुझे उनमें अभियोजक द्वारा बताए गए डरपोकपन का कोई अंश नहीं मिला। उनमें सरलता भी नहीं थी। इसके विपरीत, मुझे उनमें भोलेपन के मुखौटे के नीचे छिपी अत्यधिक अविश्वास की भावना और व्यापक बुद्धि मिली। अभियोजक का उन्हें कमज़ोर दिमाग वाला समझना बहुत सरलता थी। उन्होंने मुझ पर एक स्पष्ट छाप छोड़ी: मैं उनसे यह विश्वास लेकर लौटा कि वे एक स्पष्ट रूप से द्वेषपूर्ण, अत्यधिक महत्वाकांक्षी, प्रतिशोधी और बेहद ईर्ष्यालु व्यक्ति थे। मैंने कुछ पूछताछ की: उसे अपने माता-पिता से घृणा थी, उसे इस बात पर शर्म आती थी, और जब उसे याद आता कि वह 'बदबूदार लिज़ावेता' का बेटा है, तो वह दांत पीसता था। वह नौकर ग्रिगोरी और उसकी पत्नी का अनादर करता था, जिन्होंने बचपन में उसकी देखभाल की थी। वह रूस को कोसता और उसका उपहास करता था। वह फ्रांस जाकर फ्रांसीसी बनने का सपना देखता था। वह अक्सर कहता था कि उसके पास ऐसा करने के साधन नहीं हैं। मुझे लगता है कि वह खुद के अलावा किसी से प्यार नहीं करता था और खुद को बहुत ऊँचा समझता था। संस्कृति के बारे में उसकी सोच अच्छे कपड़ों, साफ कमीजों और पॉलिश किए हुए जूतों तक ही सीमित थी। खुद को फ्योदोर पावलोविच का नाजायज बेटा मानते हुए (इसका सबूत भी है), वह अपने मालिक के जायज बेटों की तुलना में अपनी स्थिति से नाराज़ रहा होगा। उनके पास सब कुछ था, उसके पास कुछ नहीं। उनके पास सारे अधिकार थे, उन्हें सारी विरासत मिली थी, जबकि वह सिर्फ रसोइया था। उसने खुद मुझे बताया कि उसने फ्योदोर पावलोविच को लिफाफे में नोट डालने में मदद की थी। उस रकम का गंतव्य—वह रकम जिससे उसका करियर बन सकता था—उसके लिए बेहद घृणित रहा होगा। इसके अलावा, उसने तीन हजार रूबल के नए इंद्रधनुषी रंग के नोट देखे। (मैंने उससे जानबूझकर इसके बारे में पूछा।) ओह, किसी महत्वाकांक्षी और ईर्ष्यालु व्यक्ति को एक साथ इतनी बड़ी रकम दिखाने से सावधान रहें! और यह पहली बार

था जब उसने किसी एक व्यक्ति के हाथों में इतनी बड़ी रकम देखी थी। इंद्रधनुषी रंग के नोटों को देखकर उसकी कल्पना पर शायद एक भयावह प्रभाव पड़ा होगा, लेकिन इसका कोई तात्कालिक परिणाम नहीं हुआ।
"प्रतिभाशाली अभियोजक ने असाधारण सूक्ष्मता के साथ हम सभी के सामने यह सब प्रस्तुत किया।"
स्मर्ज्याकोव के अपराध की परिकल्पना के पक्ष और विपक्ष में दिए गए तर्कों पर चर्चा की गई और विशेष रूप से हमसे पूछा गया कि उसने मिर्गी का नाटक क्यों किया। लेकिन हो सकता है कि उसने नाटक किया ही न हो, मिर्गी का दौरा स्वाभाविक रूप से आया हो, या स्वाभाविक रूप से समाप्त हो गया हो, और बीमार व्यक्ति ठीक हो गया हो, शायद पूरी तरह से नहीं, लेकिन फिर भी होश में आ गया हो, जैसा कि मिर्गी के रोगियों में होता है।
अभियोजक पूछता है कि किस क्षण स्मरद्याकोव ऐसा कर सकता था
हत्या की। लेकिन उस क्षण को पहचानना बहुत आसान है। हो सकता है कि वह गहरी नींद से जागा हो (क्योंकि वह केवल सो रहा था—मिर्गी के दौरे के बाद हमेशा गहरी नींद आती है) उसी क्षण जब बूढ़े ग्रिगोरी ने ज़ोर से चिल्लाकर कहा, 'पितृहत्या!' अंधेरे और सन्नाटे में उस चीख ने स्मरद्याकोव को जगा दिया हो, जिसकी नींद उस समय शायद गहरी न रही हो: वह शायद एक घंटे पहले ही जाग गया हो।
बिस्तर से उठते समय, वह लगभग बेहोशी की हालत में और बिना किसी निश्चित संकेत के उठ जाता है। वह आवाज़ की तरफ बढ़ा, यह देखने के लिए कि मामला क्या है। उसका दिमाग अभी भी उस हमले से ग्रस्त था, उसकी इंद्रियाँ आधी सोई हुई थीं; लेकिन, बगीचे में पहुँचते ही, वह रोशन खिड़कियों की तरफ गया और उसे अपने मालिक से भयानक खबर मिली, जो उसे देखकर निश्चित रूप से खुश होता। उसका दिमाग तुरंत काम करने लगा। उसने अपने डरे हुए मालिक से सारी बातें सुनीं, और धीरे-धीरे उसके अस्त-व्यस्त दिमाग में एक विचार आकार लेने लगा—भयानक, लेकिन लुभावना और अप्रतिरोध्य रूप से तार्किक। बूढ़े आदमी को मार डालना, तीन हज़ार रुपये ले लेना, और सारा दोष अपने युवा मालिक पर डाल देना। जैसे ही उसे पता चला कि वह पकड़े जाने से सुरक्षित है, धन और लूट के माल का भयानक लालच उस पर हावी हो गया होगा। ओह! ये अचानक और अप्रतिरोध्य आवेग अक्सर तब आते हैं जब कोई अनुकूल अवसर मिलता है, और खासकर उन हत्यारों के साथ जिन्हें पहले से हत्या करने का कोई विचार नहीं होता। और स्मरद्याकोव अंदर गया होगा और उसने अपनी योजना को अंजाम दिया होगा। किस हथियार से? क्यों, बगीचे में मिले किसी भी पत्थर से। लेकिन किसलिए, किस उद्देश्य से? क्यों, वो तीन हज़ार, जिसका मतलब उसके लिए पूरा करियर था। ओह, मैं अपनी ही बात का खंडन नहीं कर रहा हूँ—पैसा शायद मौजूद था। और शायद केवल स्मरद्याकोव ही जानता था कि उसे कहाँ ढूँढना है, उसके मालिक ने उसे कहाँ रखा था। और पैसे को ढकने वाला वो फटा हुआ लिफाफा जो ज़मीन पर पड़ा था?
अभी-अभी, जब अभियोजक अपना सूक्ष्म सिद्धांत समझा रहे थे कि
करामाज़ोव जैसा अनुभवहीन चोर ही लिफाफा ज़मीन पर छोड़ सकता था, स्मरद्याकोव जैसा नहीं, जो अपने खिलाफ सबूत का कोई टुकड़ा छोड़ने से बचता। सुनते हुए मुझे लगा कि मैं कुछ बहुत जानी-पहचानी बात सुन रहा हूँ, और यकीन मानिए, करामाज़ोव के व्यवहार के बारे में यही तर्क, यही अनुमान मैंने ठीक दो दिन पहले स्मरद्याकोव से ही सुना था। इतना ही नहीं, उस समय मुझे यह बात खटक रही थी। मुझे लगा कि उसमें बनावटी सरलता है; जैसे वह मुझे यह विचार जल्दी से बताना चाहता हो ताकि मैं इसे अपना ही विचार समझ लूँ। उसने मानो इशारों में यह बात कही। क्या उसने पूछताछ के दौरान भी यही बात इशारों में नहीं कही थी और न ही प्रतिभाशाली अभियोक्ता को बताई थी?
मुझसे पूछा जाएगा, 'उस बूढ़ी औरत, ग्रिगोरी की पत्नी के बारे में क्या?'
"मैंने रात भर पास में बीमार आदमी के कराहने की आवाज़ सुनी।" हाँ, उसने सुनी तो थी, लेकिन यह सबूत बिल्कुल अविश्वसनीय है। मैं एक ऐसी महिला को जानती थी जिसने बहुत शिकायत की थी कि आँगन में कुत्ते की आवाज़ से वह रात भर जागती रही। लेकिन बेचारा जानवर, ऐसा लगता था, रात में सिर्फ़ एक या दो बार ही भौंका था। और यह स्वाभाविक है। अगर कोई सो रहा हो और कराहने की आवाज़ सुने तो वह जाग जाता है, जागने से चिढ़ जाता है, लेकिन तुरंत फिर सो जाता है। दो घंटे बाद, फिर से कराहने की आवाज़, वह जाग जाता है और फिर सो जाता है; और दो घंटे बाद फिर से वही होता है—रात में कुल तीन बार। अगली सुबह सोने वाला जागता है और शिकायत करता है कि कोई रात भर कराहता रहा और उसे जगाए रखा। और उसे

ऐसा लगना स्वाभाविक है: उसे दो घंटे की नींद के अंतराल याद नहीं रहते, उसे सिर्फ़ जागने के पल याद रहते हैं, इसलिए उसे लगता है कि वह रात भर जागता रहा है।
“लेकिन अभियोजक पूछता है, आखिर स्मरद्याकोव ने अपने बयान में कबूलनामा क्यों नहीं किया?”
आखिरी पत्र? उसके अंतरात्मा ने उसे एक कदम उठाने के लिए क्यों प्रेरित किया, दोनों क्यों नहीं? लेकिन, क्षमा कीजिए, अंतरात्मा पश्चाताप का प्रतीक है, और आत्महत्या करने वाले ने शायद पश्चाताप नहीं, बल्कि केवल निराशा महसूस की हो। निराशा और पश्चाताप दो बहुत अलग चीजें हैं। निराशा प्रतिशोधी और असहनीय हो सकती है, और आत्महत्या करने वाले ने, अपने हाथों को अपने ऊपर रखकर, उन लोगों के प्रति दुगनी नफरत महसूस की होगी जिनसे वह जीवन भर ईर्ष्या करता रहा था।
“न्यायपालिका के सज्जनों, न्याय के उल्लंघन से सावधान रहें! क्या है
क्या मैंने अभी जो कुछ आपके सामने रखा है, उसमें कुछ भी असंभव सा लगता है? मेरे तर्क में गलती ढूंढिए; असंभवता, बेतुकापन ढूंढिए। और अगर मेरी बातों में थोड़ी सी भी संभावना, थोड़ी सी भी प्रायिकता है, तो उसे दोषी मत ठहराइए। और क्या सच में थोड़ी सी ही संभावना है? मैं पवित्र आत्मा की कसम खाता हूँ, मैंने अभी जो हत्या का स्पष्टीकरण दिया है, उस पर मुझे पूरा विश्वास है। मुझे जो बात परेशान करती है और गुस्सा दिलाती है, वह यह है कि अभियोजन पक्ष द्वारा कैदी के खिलाफ जमा किए गए तथ्यों के अंबार में से एक भी तथ्य निश्चित और अकाट्य नहीं है। और फिर भी उस बेचारे आदमी को इन तथ्यों के आधार पर बर्बाद किया जाना है। हाँ, इसका मिलाजुला असर भयानक है: खून, उसकी उंगलियों से टपकता खून, खून से सना हुआ कमीज़, 'पितृहत्या!' की चीख से गूंजती अंधेरी रात और टूटे सिर के साथ गिरता बूढ़ा आदमी। और फिर वाक्यों, बयानों, हाव-भाव, चीखों का अंबार! ओह! इसका कितना प्रभाव है, यह दिमाग को कितना प्रभावित कर सकता है; लेकिन, जूरी के सज्जनों, क्या यह आपके दिमाग को प्रभावित कर सकता है? याद रखें, आपको बांधने और मुक्त करने की पूर्ण शक्ति दी गई है, लेकिन शक्ति जितनी अधिक होगी, उसकी जिम्मेदारी भी उतनी ही भयानक होगी।
मैंने अभी जो कहा है, उससे मैं जरा भी पीछे नहीं हटता, लेकिन
मान लीजिए कि एक पल के लिए मैं अभियोजन पक्ष से सहमत हो जाऊं कि मेरे दुर्भाग्यशाली मुवक्किल ने अपने पिता के खून से अपने हाथ रंगे हैं। यह केवल एक परिकल्पना है, मैं दोहराता हूं; मुझे उसकी निर्दोषता पर एक पल के लिए भी संदेह नहीं है। लेकिन, मान लीजिए कि मेरा मुवक्किल पितृहत्या का दोषी है। फिर भी, मेरी बात ध्यान से सुनिए। मेरे मन में आपसे कुछ और कहने की इच्छा है, क्योंकि मुझे लगता है कि आपके मन और हृदय में गहरा संघर्ष चल रहा होगा... न्यायाधीश महोदय, आपके मन और हृदय का जिक्र करने के लिए क्षमा करें, लेकिन मैं अंत तक सच्चा और ईमानदार रहना चाहता हूं। आइए हम सब ईमानदार रहें!
इसी समय जोरदार तालियों की गड़गड़ाहट से भाषण बाधित हो गया।
सचमुच, उनके अंतिम शब्द इतनी ईमानदारी से बोले गए कि हर किसी को लगा कि वे सचमुच कुछ कहना चाहते हैं, और जो वे कहने वाले थे वह अत्यंत महत्वपूर्ण होगा। लेकिन तालियों की गड़गड़ाहट सुनकर राष्ट्रपति ने ऊँची आवाज़ में धमकी दी कि अगर ऐसी घटना दोबारा हुई तो वे अदालत खाली करवा देंगे। सारी आवाज़ें शांत हो गईं और फेट्युकोविच ने अब तक इस्तेमाल किए गए लहजे से बिल्कुल अलग, भावपूर्ण स्वर में बोलना शुरू किया।

अध्याय 13

विचारों को भ्रष्ट करने वाला

“न्यायपालिका के सज्जनों, मेरे मुवक्किल के पतन का कारण केवल तथ्यों का संकलन ही नहीं है,” उन्होंने बोलना शुरू किया, “मेरे मुवक्किल के लिए सबसे बड़ा दोष एक तथ्य का है—उनके पिता का शव। यदि यह हत्या का एक सामान्य मामला होता, तो आप साक्ष्य की तुच्छता, अपूर्णता और अविश्वसनीय प्रकृति को देखते हुए आरोप को खारिज कर देते, यदि आप प्रत्येक भाग की अलग-अलग जांच करते; या कम से कम, आप किसी व्यक्ति के जीवन को केवल उसके प्रति पूर्वाग्रह के कारण बर्बाद करने में संकोच करते, जिसके वह, दुर्भाग्य से! पूरी तरह हकदार है। लेकिन यह हत्या का एक सामान्य मामला नहीं है, यह पितृहत्या का मामला है। यह लोगों के मन पर गहरा प्रभाव डालता है, और इस हद तक कि साक्ष्य की तुच्छता और अपूर्णता भी एक निष्पक्ष व्यक्ति के लिए कम तुच्छ और कम अपूर्ण हो जाती है। ऐसे कैदी को कैसे बरी किया जा सकता है? क्या होगा यदि उसने हत्या की हो और उसे सजा न मिले? यही वह बात है जो लगभग हर कोई, अनजाने में, सहज रूप से, अपने दिल में महसूस करता है।”
“हाँ, पिता का खून बहाना एक भयानक बात है—उस पिता का जिसने
मुझे जन्म दिया, मुझसे प्यार किया, मेरे लिए अपनी जान तक दे दी, बचपन से ही मेरी बीमारियों पर दुखी रहे, मेरी खुशी के लिए जीवन भर संघर्ष किया और मेरी खुशियों और मेरी सफलताओं में शामिल रहे। ऐसे पिता की हत्या करना—यह अकल्पनीय है। न्यायाधीश महोदय, पिता क्या होता है—एक सच्चा पिता? इस महान शब्द का क्या अर्थ है? इस नाम में क्या महान विचार निहित है? हमने अभी-अभी आंशिक रूप से बताया है कि एक सच्चा पिता क्या होता है और उसे कैसा होना चाहिए। जिस मामले में हम अभी गहराई से विचार कर रहे हैं और जिससे हमारा दिल दुखी है—इस मामले में, पिता, फ्योदोर पावलोविच करामाज़ोव, उस पिता की अवधारणा के अनुरूप नहीं थे जिसका हमने अभी उल्लेख किया है। यही दुर्भाग्य है। और वास्तव में कुछ पिता दुर्भाग्य होते हैं। आइए इस दुर्भाग्य का और गहराई से विश्लेषण करें: न्यायाधीश महोदय, आपको जो निर्णय लेना है, उसके महत्व को देखते हुए हमें किसी भी बात से पीछे नहीं हटना चाहिए। यह हमारा विशेष कर्तव्य है कि हम किसी भी विचार से पीछे न हटें, बच्चों या डरी हुई महिलाओं की तरह, जैसा कि प्रतिभाशाली अभियोजक ने खुशी से व्यक्त किया है।
लेकिन अपने जोशीले भाषण के दौरान मेरे आदरणीय प्रतिद्वंद्वी (और वह)
मेरे होंठ खोलने से पहले ही (जो मेरा विरोधी था) उसने कई बार कहा, 'ओह, मैं इस कैदी का बचाव उस वकील को नहीं सौंपूंगा जो पीटर्सबर्ग से आया है। मैं आरोप लगाता हूं, लेकिन बचाव भी करता हूं!' उसने यह बात कई बार कही, लेकिन यह बताना भूल गया कि अगर यह भयानक कैदी तेईस साल तक उस एकमात्र व्यक्ति द्वारा दिए गए एक पौंड मेवों के लिए इतना आभारी था, जिसने बचपन में उसके पिता के घर में उसके प्रति दयालुता दिखाई थी, तो क्या ऐसा व्यक्ति तेईस साल तक यह याद नहीं रख सकता था कि वह अपने पिता के पिछवाड़े में कैसे दौड़ता था, 'पैरों में जूते नहीं और उसकी छोटी पतलून एक बटन से लटकी हुई'—दयालु डॉक्टर, हर्ज़ेनस्टुबे के शब्दों में?
"ओह, जूरी के सज्जनों, हमें इस पर और अधिक बारीकी से विचार करने की क्या आवश्यकता है?"
दुर्भाग्यवश, जो हम सब पहले से जानते हैं उसे क्यों दोहरा रहे हैं? मेरे मुवक्किल को यहाँ, अपने पिता के घर पहुँचने पर किन परिस्थितियों का सामना करना पड़ा, और उसे एक निर्दयी, अहंकारी और राक्षस के रूप में क्यों चित्रित किया जा रहा है? वह अनियंत्रित है, वह उग्र और उद्दंड है—हम अभी इसी कारण से उस पर मुकदमा चला रहे हैं—लेकिन उसके जीवन के लिए कौन जिम्मेदार है? उसके उत्कृष्ट स्वभाव और कृतज्ञ एवं संवेदनशील हृदय के बावजूद, उसे इस तरह की अनुचित परवरिश क्यों मिली? क्या किसी ने उसे तर्कसंगत होना सिखाया? क्या उसे अध्ययन से ज्ञान प्राप्त हुआ? क्या बचपन में किसी ने उसे कभी प्यार नहीं किया? मेरे मुवक्किल को भाग्य के भरोसे छोड़ दिया गया था, जैसे कोई जंगली जानवर। शायद वह वर्षों के वियोग के बाद अपने पिता को देखने के लिए तड़प रहा था। शायद हजारों बार, अपने बचपन को याद करते हुए, उसने अपने बचपन के सपनों में आने वाले घृणित भूतों को दूर भगाया होगा और पूरे दिल से अपने पिता को गले

लगाने और क्षमा करने की इच्छा की होगी! और उसका क्या इंतजार कर रहा था? उसे निंदनीय ताने, संदेह और पैसों को लेकर झगड़े मिले। ब्रांडी पीते हुए वह रोज़ाना घिनौनी बातें और बुरी-बुरी सलाहें सुनता था, और अंत में उसने अपने पिता को अपने ही पैसों से अपनी प्रेमिका को उससे छीनते हुए देखा। हे न्यायाधीश महोदय, यह कितना क्रूर और घिनौना था! और वह बूढ़ा हमेशा अपने बेटे के अनादर और क्रूरता की शिकायत करता रहता था। उसने समाज में उसकी बदनामी की, उसे चोट पहुँचाई, उस पर झूठे आरोप लगाए, और उसे जेल भिजवाने के लिए उसके सारे कर्ज़ चुका दिए।
"न्यायालय के सज्जनों, मेरे मुवक्किल जैसे लोग, जो उग्र और उद्दंड हैं,
सतह पर अनियंत्रित दिखने वाले ये लोग कभी-कभी, बल्कि अक्सर, बेहद कोमल हृदय के होते हैं, बस वे इसे व्यक्त नहीं करते। मेरी बात पर हंसो मत! प्रतिभाशाली अभियोक्ता ने अभी-अभी मेरे मुवक्किल पर शिलर से प्रेम करने के लिए, उदात्त और सुंदर चीज़ों से प्रेम करने के लिए, निर्दयतापूर्वक हँसा! मैं उसकी जगह होता तो ऐसा नहीं करता। हाँ, ऐसे स्वभाव वाले लोग—ओह, मुझे ऐसे स्वभावों के बचाव में बोलने दीजिए, जिन्हें अक्सर और बेरहमी से गलत समझा जाता है—ये स्वभाव अक्सर कोमलता, अच्छाई और न्याय के लिए तरसते हैं, मानो अपने आप से, अपनी उद्दंडता, अपनी क्रूरता के विपरीत—वे अनजाने में इसके लिए तरसते हैं। सतह पर भावुक और उग्र दिखने वाले ये लोग, उदाहरण के लिए, स्त्री से प्रेम करने में अत्यंत सक्षम होते हैं, और वह भी आध्यात्मिक और उच्च कोटि के प्रेम से। फिर से मुझ पर हंसो मत, ऐसे स्वभावों में अक्सर ऐसा ही होता है। लेकिन वे अपने जुनून को छिपा नहीं सकते—कभी-कभी बहुत ही अशिष्ट—और यह स्पष्ट होता है और ध्यान आकर्षित करता है, लेकिन उनका आंतरिक स्वभाव अदृश्य रहता है। उनके जुनून जल्दी ही समाप्त हो जाते हैं; लेकिन, एक महान और उदात्त प्राणी के साथ, वह दिखने में असभ्य और खुरदरा मनुष्य एक नए जीवन की तलाश करता है, खुद को सुधारने की कोशिश करता है, बेहतर बनने की कोशिश करता है, महान और सम्माननीय बनने की कोशिश करता है, 'उत्कृष्ट और सुंदर' बनने की कोशिश करता है, भले ही इस अभिव्यक्ति का कितना भी उपहास किया गया हो।
मैंने अभी कहा था कि मैं अपने मुवक्किल के मामले पर टिप्पणी करने का साहस नहीं करूंगा।
सगाई। लेकिन मैं बस एक शब्द कहूँगी। अभी जो हमने सुना, वह सबूत नहीं था, बल्कि एक उन्मादी और प्रतिशोधी महिला की चीख थी, और यह उसका काम नहीं था—अरे, बिलकुल नहीं!—कि वह उस पर विश्वासघात का आरोप लगाए, क्योंकि उसने खुद उसे धोखा दिया है! अगर उसे सोचने का ज़रा भी समय मिला होता, तो वह ऐसी गवाही नहीं देती। अरे, उस पर विश्वास मत करो! नहीं, मेरा मुवक्किल राक्षस नहीं है, जैसा कि उसने उसे कहा है!
क्रूस पर चढ़ाए जाने की पूर्व संध्या पर मानवता के प्रेमी ने कहा: 'मैं ही हूँ
अच्छा चरवाहा। अच्छा चरवाहा अपनी भेड़ों के लिए अपना प्राण दे देता है, ताकि उनमें से एक भी न खो जाए। हमारे कारण किसी की आत्मा न खो जाए!
मैंने अभी पूछा कि 'पिता' का क्या अर्थ है, और आश्चर्य से कहा कि यह एक
महान शब्द, अनमोल नाम। लेकिन सज्जनों, शब्दों का प्रयोग ईमानदारी से करना चाहिए, और मैं चीजों को उनके सही नाम से पुकारने का साहस करता हूँ: बूढ़े करामाज़ोव जैसे पिता को पिता नहीं कहा जा सकता और वे इसके योग्य भी नहीं हैं। एक अयोग्य पिता के प्रति पुत्रवत प्रेम निरर्थक है, असंभव है। प्रेम शून्य से उत्पन्न नहीं हो सकता: केवल ईश्वर ही शून्य से कुछ उत्पन्न कर सकता है।
"'पिताओ, अपने बच्चों को क्रोधित न करो,' प्रेरित लिखते हैं,
प्रेम से दमकता हुआ हृदय। मैं ये पवित्र शब्द अपने मुवक्किल के लिए नहीं, बल्कि सभी पिताओं के लिए कह रहा हूँ। मुझे पिताओं को उपदेश देने का अधिकार किसने दिया है? किसी ने नहीं। परन्तु एक मनुष्य और नागरिक होने के नाते मैं यह निवेदन करता हूँ—जीवित रहो! हम इस धरती पर अधिक समय तक नहीं रहते, हम अनेक बुरे कर्म करते हैं और अनेक बुरे शब्द बोलते हैं। इसलिए आइए हम सब एक साथ मिलकर एक-दूसरे से अच्छे शब्द कहने का अवसर पाएँ। मैं यही कर रहा हूँ: जब तक मैं यहाँ हूँ, मैं इस अवसर का लाभ उठा रहा हूँ। यह मंच हमें सर्वोच्च सत्ता द्वारा दिया गया है—सारा रूस हमें सुन रहा है! मैं केवल यहाँ उपस्थित पिताओं के लिए नहीं बोल रहा, मैं सभी पिताओं से पुकार रहा हूँ: 'पिताओ, अपने बच्चों को क्रोधित न करो।' हाँ, आइए हम पहले स्वयं मसीह के आदेश का पालन करें और उसके बाद ही अपने बच्चों से इसकी अपेक्षा करें। अन्यथा हम पिता नहीं, बल्कि अपने बच्चों के शत्रु हैं, और वे हमारे बच्चे नहीं, बल्कि हमारे शत्रु हैं, और

हमने स्वयं उन्हें अपना शत्रु बना लिया है। 'जिस पैमाने से तुम दूसरों को मापोगे, उसी पैमाने से तुम्हें भी मापा जाएगा'—यह मैं नहीं कह रहा, बल्कि यह सुसमाचार का उपदेश है: दूसरों के साथ वैसा ही व्यवहार करो जैसा वे तुम्हारे साथ करते हैं। अगर बच्चे हमें हमारे पैमाने के अनुसार मापें तो हम उन्हें कैसे दोष दे सकते हैं?
कुछ समय पहले फिनलैंड में एक नौकरानी पर गुप्त रूप से कुछ करने का संदेह हुआ था।
उसने एक बच्चे को जन्म दिया। उस पर नज़र रखी जा रही थी, और अटारी के कोने में, कुछ ईंटों के पीछे, एक ऐसा बक्सा मिला जिसके बारे में किसी को कुछ पता नहीं था। उसे खोला गया और उसके अंदर एक नवजात शिशु का शव मिला जिसे उसने मार डाला था। उसी बक्से में दो अन्य शिशुओं के कंकाल भी मिले, जिन्हें उसने अपने कबूलनामे के अनुसार, जन्म के समय ही मार डाला था।
"न्यायालय के सज्जनों, क्या वह अपने बच्चों की माँ थी? उसने अपने बच्चों को प्यार और दुलार दिया।"
उन्होंने उन्हें जन्म तो दिया, लेकिन क्या वह उनकी माँ थीं? क्या कोई उन्हें माँ का पवित्र नाम देने का साहस करेगा? आइए, सज्जनों, हम साहसी बनें, यहाँ तक कि निडर भी बनें: इस समय ऐसा करना हमारा कर्तव्य है और हमें कुछ शब्दों और विचारों से डरना नहीं चाहिए, जैसे ओस्ट्रोव्स्की के नाटक में मॉस्को की महिलाएं कुछ शब्दों की ध्वनि से डर जाती हैं। नहीं, आइए हम यह सिद्ध करें कि पिछले कुछ वर्षों की प्रगति ने हमें भी प्रभावित किया है, और आइए हम स्पष्ट रूप से कहें कि पिता केवल वह नहीं है जो बच्चे को जन्म देता है, बल्कि वह है जो बच्चे को जन्म देता है और उसके प्रति अपना कर्तव्य निभाता है।
"ओह, बिल्कुल, इसका दूसरा अर्थ भी है, दूसरा भी है।"
'पिता' शब्द की वह व्याख्या, जो इस बात पर ज़ोर देती है कि कोई भी पिता, चाहे वह कितना भी क्रूर हो, चाहे वह अपने बच्चों का दुश्मन ही क्यों न हो, फिर भी मेरा पिता बना रहता है, केवल इसलिए कि उसने मुझे जन्म दिया है। लेकिन यह एक तरह से वह रहस्यमय अर्थ है जिसे मैं अपनी बुद्धि से नहीं समझ सकता, बल्कि केवल आस्था के बल पर ही स्वीकार कर सकता हूँ, या बेहतर कहें तो, विश्वास के आधार पर, उन अनेक चीज़ों की तरह जिन्हें मैं नहीं समझता, लेकिन जिन पर धर्म मुझे विश्वास करने का आदेश देता है। लेकिन उस स्थिति में इसे वास्तविक जीवन के दायरे से बाहर ही रखा जाए। वास्तविक जीवन के दायरे में, जिसके अपने अधिकार तो हैं ही, साथ ही जो हम पर बड़े कर्तव्य और दायित्व भी डालता है, उस दायरे में, यदि हम मानवीय —वास्तव में ईसाई—बनना चाहते हैं, तो हमें केवल तर्क और अनुभव द्वारा सिद्ध, विश्लेषण की कसौटी पर खरे उतरे विश्वासों के आधार पर ही कार्य करना चाहिए; संक्षेप में, हमें तर्कसंगत रूप से कार्य करना चाहिए, न कि स्वप्न और भ्रम में, ताकि हम किसी को हानि न पहुँचाएँ, किसी के साथ दुर्व्यवहार न करें और उसे बर्बाद न करें। तब यह वास्तविक ईसाई कार्य होगा, न केवल रहस्यवादी, बल्कि तर्कसंगत और परोपकारी भी...
इस अंश को सुनकर न्यायालय के कई हिस्सों से जोरदार तालियां बजने लगीं।
लेकिन फेत्युकोविच ने अपने हाथ इस तरह हिलाए मानो उनसे विनती कर रहे हों कि उन्हें बिना किसी रुकावट के अपना भाषण पूरा करने दिया जाए। दरबार में तुरंत सन्नाटा छा गया। वक्ता ने अपना भाषण जारी रखा।
"क्या आप लोगों का मानना है, सज्जनों, कि हमारे बच्चे जैसे-जैसे बड़े होते जाएंगे और
क्या तर्क करने से ऐसे प्रश्नों से बचा जा सकता है? नहीं, ऐसा नहीं हो सकता, और हम उन पर कोई असंभव प्रतिबंध नहीं लगाएंगे। एक अयोग्य पिता को देखकर एक युवा के मन में अनायास ही कई परेशान करने वाले प्रश्न उठते हैं, खासकर जब वह अपने साथियों के उत्तम पिताओं से उसकी तुलना करता है। इस प्रश्न का सामान्य उत्तर यह है: 'उसने तुम्हें जन्म दिया है, और तुम उसके खून और मांस हो, इसलिए तुम्हें उससे प्रेम करना ही चाहिए।' युवक अनायास ही सोचने लगता है: 'लेकिन क्या उसने मुझे जन्म देते समय मुझसे प्रेम किया था?' वह और अधिक आश्चर्यचकित होते हुए पूछता है। 'क्या उसने मुझे मेरे लिए जन्म दिया था? उस क्षण, शायद शराब के नशे में, वह मुझे नहीं जानता था, यहाँ तक कि मेरे लिंग को भी नहीं जानता था, और उसने मुझे केवल शराब पीने की आदत ही दी है—बस इतना ही उसने मेरे लिए किया है... मैं उसे केवल जन्म देने के लिए क्यों प्रेम करूं, जबकि उसने जीवन भर मेरी परवाह नहीं की?'
"ओह, शायद ये सवाल आपको भद्दे और क्रूर लगें, लेकिन ऐसा मत सोचिए।"
एक युवा मन से असंभव संयम की अपेक्षा करना व्यर्थ है। 'प्रकृति को दरवाजे से बाहर निकाल दो, वह खिड़की से अंदर आ जाएगी,' और सबसे बढ़कर, हमें शब्दों से डरना नहीं चाहिए, बल्कि रहस्यवादी विचारों के बजाय तर्क और मानवता के आधार पर प्रश्न का निर्णय करना चाहिए। इसका निर्णय कैसे किया जाए? इस

प्रकार। पुत्र अपने पिता के सामने खड़ा होकर पूछे, 'पिताजी, मुझे बताइए, मुझे आपसे प्रेम क्यों करना चाहिए? पिताजी, मुझे दिखाइए कि मुझे आपसे प्रेम करना चाहिए,' और यदि पिता उसे उत्तर दे पाते हैं और उसे उचित कारण बता पाते हैं, तो हमारे पास एक वास्तविक, सामान्य, माता-पिता का संबंध है, जो रहस्यवादी पूर्वाग्रहों पर आधारित नहीं, बल्कि तर्कसंगत, जिम्मेदार और विशुद्ध रूप से मानवीय आधार पर टिका है। लेकिन यदि वह ऐसा नहीं कर पाते, तो पारिवारिक बंधन समाप्त हो जाता है। वह उसके लिए पिता नहीं रह जाते, और पुत्र को उन्हें अजनबी, यहाँ तक कि शत्रु के रूप में देखने का अधिकार है। हे न्यायाधीशगण, हमारे प्रतिनिधि को सच्चे और ठोस विचारों का स्रोत होना चाहिए।
(यहाँ वक्ता को अनियंत्रित और लगभग उन्मत्त आवाज़ों द्वारा बाधित किया गया था)
तालियाँ बजने लगीं। बेशक, पूरी सभा ने नहीं, लेकिन लगभग आधे लोगों ने तालियाँ बजाईं। उपस्थित माता-पिता ने भी तालियाँ बजाईं। जहाँ महिलाएँ बैठी थीं, वहाँ से चीखें और उत्साह की आवाज़ें सुनाई दीं। रुमाल लहराए गए। अध्यक्ष ने पूरी ताकत से अपनी घंटी बजानी शुरू कर दी। वे स्पष्ट रूप से सभा के व्यवहार से चिढ़ गए थे, लेकिन उन्होंने अदालत खाली कराने की धमकी नहीं दी। यहाँ तक कि उच्च पदस्थ व्यक्ति, छाती पर सितारे वाले बुज़ुर्ग, जो न्यायाधीशों के पीछे विशेष रूप से आरक्षित सीटों पर बैठे थे, उन्होंने भी वक्ता के लिए तालियाँ बजाईं और अपने रुमाल लहराए। इसलिए जब शोर शांत हुआ, तो अध्यक्ष ने अदालत खाली कराने की अपनी कड़ी धमकी को दोहराया, और फेत्युकोविच, उत्साहित और विजयी होकर, अपना भाषण जारी रखा।
ज्यूरी के सज्जनों, आपको वह भयानक रात याद होगी जिसकी वजह से...
आज बहुत कुछ कहा गया है कि जब बेटा बाड़ फांदकर अपने ही दुश्मन और उत्पीड़क के सामने खड़ा हो गया, जिसने उसे जन्म दिया था। मैं पूरी दृढ़ता से कहता हूँ कि वह पैसों के लिए अपने पिता के घर नहीं भागा था: डकैती का आरोप बेतुका है, जैसा कि मैंने पहले ही साबित कर दिया है। और वह उसे मारने के इरादे से घर में नहीं घुसा था, बिलकुल नहीं! अगर उसका ऐसा इरादा होता, तो कम से कम वह पहले से ही हथियारबंद होने की सावधानी बरतता। उसने पीतल का मूसल बिना सोचे-समझे ही उठा लिया था। मान लीजिए कि उसने खिड़की पर दस्तक देकर अपने पिता को धोखा दिया, मान लीजिए कि वह अंदर घुस गया—मैं पहले ही कह चुका हूँ कि मैं इस कहानी पर एक पल के लिए भी विश्वास नहीं करता, लेकिन मान लीजिए, एक पल के लिए मान लेते हैं। सज्जनों, मैं आप सभी पवित्र चीज़ों की कसम खाता हूँ, अगर वह उसका पिता नहीं, बल्कि कोई साधारण दुश्मन होता, तो वह कमरों में दौड़कर और यह सुनिश्चित करके कि वह औरत वहाँ नहीं है, अपने प्रतिद्वंद्वी को कोई नुकसान पहुँचाए बिना तुरंत भाग जाता। वह उसे मारता, शायद धक्का देकर दूर कर देता, बस इतना ही, क्योंकि उसके पास इसके लिए न तो कोई विचार था और न ही समय। वह बस यह जानना चाहता था कि वह कहाँ है। लेकिन उसके पिता, उसके पिता! उस पिता को देखना ही काफी था जिसने बचपन से ही उससे नफरत की थी, जो उसका दुश्मन, उसका उत्पीड़क और अब उसका अस्वाभाविक प्रतिद्वंद्वी था! घृणा की भावना अनायास ही, अनियंत्रित रूप से उस पर हावी हो गई, उसकी बुद्धि को स्तब्ध कर दिया। यह सब एक ही क्षण में उमड़ पड़ा! यह पागलपन और उन्माद का आवेग था, लेकिन साथ ही प्रकृति का भी आवेग था, जो अनियंत्रित रूप से और अचेतन रूप से (प्रकृति की हर चीज की तरह) अपने शाश्वत नियमों के उल्लंघन का बदला ले रहा था।
लेकिन कैदी ने तब भी उसकी हत्या नहीं की थी—मैं इस बात पर कायम हूं, मैं रोते हुए कहता हूं।
इतनी जोर से!—नहीं, उसने तो बस गुस्से और घृणा में आकर मूसल लहराया था, उसका इरादा उसे जान से मारने का नहीं था, उसे पता भी नहीं था कि वह उसे मार डालेगा। अगर उसके हाथ में यह घातक मूसल न होता, तो शायद वह अपने पिता को सिर्फ गिरा पाता, लेकिन जान से नहीं मारता। भागते समय उसे पता नहीं था कि उसने बूढ़े को मार डाला है या नहीं। ऐसी हत्या, हत्या नहीं होती। ऐसी हत्या पितृहत्या नहीं होती। नहीं, ऐसे पिता की हत्या को पितृहत्या नहीं कहा जा सकता। ऐसी हत्या को केवल पूर्वाग्रह के कारण ही पितृहत्या माना जा सकता है।
लेकिन मैं अपने दिल की गहराइयों से बार-बार आपसे विनती करता हूँ; क्या
क्या यह हत्या सचमुच हुई थी? माननीय न्यायाधीशगण, यदि हम उसे दोषी ठहराकर सज़ा देते हैं, तो वह अपने मन में कहेगा: 'इन लोगों ने मेरे पालन-पोषण, मेरी शिक्षा, मेरे भाग्य को सुधारने, मुझे बेहतर बनाने, मुझे एक सच्चा इंसान बनाने के लिए कुछ नहीं किया। इन लोगों ने मुझे खाने-पीने को नहीं दिया, जेल में मेरी नग्न

अवस्था में मुझसे मिलने नहीं आए, और यहाँ उन्होंने मुझे सज़ा के लिए भेज दिया है। मैं अब ऋणी नहीं हूँ, अब मेरा इन लोगों से कोई ऋण नहीं है, और न ही भविष्य में कभी किसी का ऋणी रहूँगा। ये दुष्ट हैं और मैं भी दुष्ट रहूँगा। ये क्रूर हैं और मैं भी क्रूर रहूँगा।' माननीय न्यायाधीशगण, वह यही कहेगा। और मैं शपथ लेता हूँ, उसे दोषी ठहराकर आप उसके लिए केवल काम आसान कर देंगे: आप उसके अंतरात्मा को शांत कर देंगे, वह अपने बहाए खून को कोसता रहेगा और उसे इसका कोई पछतावा नहीं होगा। साथ ही, आप उसमें एक नया इंसान बनने की संभावना को भी नष्ट कर देंगे, क्योंकि वह जीवन भर अपनी दुष्टता और अज्ञानता में ही डूबा रहेगा।

लेकिन क्या आप उसे भयानक, बेहद दर्दनाक और सबसे भयावह तरीके से दंडित करना चाहते हैं?

क्या आप कल्पना से परे किसी भी दंड की कामना करते हैं, और साथ ही साथ उसे बचाना और उसकी आत्मा का पुनर्जन्म करना चाहते हैं? यदि ऐसा है, तो उस पर अपनी दया बरसाइए! आप देखेंगे, आप सुनेंगे कि वह कैसे कांप उठेगा और भयभीत हो जाएगा। 'मैं इस दया को कैसे सहन करूँ? मैं इतने प्रेम को कैसे सहूँ? क्या मैं इसके योग्य हूँ?' वह यही कहेगा।

“ओह, मुझे पता है, मुझे पता है वो दिल, वो बेकाबू लेकिन कृतज्ञ दिल, सज्जनों

न्यायधीश! यह आपकी दया के आगे झुक जाएगा; यह एक महान और प्रेमपूर्ण कार्य के लिए तरसेगा, यह पिघलकर ऊपर उठेगा। कुछ आत्माएँ अपनी सीमाओं में पूरी दुनिया को दोष देती हैं। लेकिन ऐसी आत्मा को दया से वश में कर लो, उसे प्रेम दिखाओ, और वह अपने अतीत को कोस देगी, क्योंकि उसमें अनेक अच्छे आवेग हैं। ऐसा हृदय विस्तृत होगा और देखेगा कि ईश्वर दयालु है और मनुष्य अच्छे और न्यायप्रिय हैं। वह भयभीत होगा; वह पश्चाताप और भविष्य में उस पर आसीन भारी दायित्व से चूर-चूर हो जाएगा। और तब वह यह नहीं कहेगा, 'मैं निर्दोष हूँ,' बल्कि कहेगा, 'मैं सभी मनुष्यों की दृष्टि में दोषी हूँ और सबसे अधिक अयोग्य हूँ।' पश्चाताप के आँसुओं और मार्मिक, कोमल पीड़ा के साथ, वह कहेगा: 'दूसरे मुझसे बेहतर हैं, वे मुझे बचाना चाहते थे, मुझे बर्बाद नहीं करना चाहते थे!' ओह, दया का यह कार्य आपके लिए कितना आसान है, क्योंकि वास्तविक साक्ष्य के अभाव में आपके लिए यह कहना बहुत कठिन होगा: 'हाँ, वह दोषी है।'

“एक निर्दोष व्यक्ति को दंडित करने से बेहतर है कि दस दोषी व्यक्तियों को बरी कर दिया जाए! क्या आप ऐसा सोचते हैं?”

सुनो, क्या तुम्हें हमारे गौरवशाली इतिहास की पिछली सदी की वो बुलंद आवाज़ सुनाई दे रही है? मुझ जैसे तुच्छ व्यक्ति के लिए यह याद दिलाना उचित नहीं है कि रूसी अदालतें केवल सज़ा देने के लिए नहीं, बल्कि अपराधियों के उद्धार के लिए भी बनी हैं! अन्य राष्ट्र प्रतिशोध और कानून के अक्षरशः पालन के बारे में सोचें, हम उसकी भावना और अर्थ—खोए हुए लोगों के उद्धार और सुधार—को थामे रहेंगे। यदि यह सच है, यदि रूस और उसका न्याय ऐसा है, तो वह गर्व से आगे बढ़ सकता है! हमें अपने उन उन्मादी रथों से डराने की कोशिश मत करो जिनसे सभी राष्ट्र घृणा से दूर खड़े हैं। कोई बेकाबू रथ नहीं, बल्कि रूस का राजसी रथ शांति और शान से अपने लक्ष्य की ओर बढ़ेगा। मेरे मुवक्किल का भाग्य आपके हाथों में है, रूसी न्याय का भाग्य आपके हाथों में है। आप इसकी रक्षा करेंगे, आप इसे बचाएंगे, आप साबित करेंगे कि इसकी देखरेख करने वाले लोग हैं, कि यह अच्छे हाथों में है!

अध्याय 14

किसान दृढ़ संकल्पित हैं

फेत्युकोविच ने अपने भाषण का समापन इसी तरह किया, और श्रोताओं का उत्साह एक बेकाबू तूफान की तरह फूट पड़ा। इसे रोकना नामुमकिन था: महिलाएं रोने लगीं, कई पुरुष भी रो पड़े, यहां तक कि दो महत्वपूर्ण हस्तियों की आंखों में भी आंसू आ गए। राष्ट्रपति ने हार मान ली और अपनी घंटी बजाना भी स्थगित कर दिया। बाद में महिलाओं ने रोते हुए कहा कि ऐसे उत्साह को दबाना किसी पवित्र चीज को दबाने के समान होगा। स्वयं वक्ता भी सचमुच भावुक हो गए थे।
और इसी क्षण इप्पोलिट किरिलोविच उठ खड़े हुए।
कुछ आपत्तियाँ उठाई गईं। लोग उसे घृणा से देखने लगे। “क्या? इसका क्या मतलब है? इसकी हिम्मत कैसे हुई आपत्ति उठाने की?” औरतें आपस में बड़बड़ाने लगीं। लेकिन अगर उसकी पत्नी समेत सारी औरतें विरोध करतीं भी तो उसे उस समय रोकना नामुमकिन था। उसका चेहरा पीला पड़ गया था, वह भावनाओं से कांप रहा था, उसके पहले शब्द भी समझ से बाहर थे, वह हांफ रहा था, मुश्किल से साफ बोल पा रहा था, बात अधूरी छोड़ गया। लेकिन जल्द ही उसने खुद को संभाल लिया। उसके इस नए भाषण के कुछ ही वाक्य मैं उद्धृत करूँगा।
“...मुझ पर एक प्रेम कहानी बुनने का आरोप लगाया जाता है। लेकिन यह क्या है?”
क्या यह एक के बाद एक प्रेम कहानियों का संग्रह नहीं है? बस कविता की कमी थी। फ्योदोर पावलोविच अपनी प्रेमिका का इंतज़ार करते हुए लिफाफा फाड़कर ज़मीन पर फेंक देता है। हमें यह भी बताया जाता है कि इस अजीब हरकत के दौरान उसने क्या कहा। क्या यह कल्पना की उड़ान नहीं है? और हमारे पास क्या सबूत है कि उसने पैसे निकाले थे? किसने सुना कि उसने क्या कहा? कमज़ोर दिमाग वाला मूर्ख, स्मरद्याकोव, बायरनिक नायक में बदल जाता है, अपने नाजायज जन्म का बदला लेने के लिए समाज से बदला लेता है—क्या यह बायरनिक शैली की प्रेम कहानी नहीं है? और वह बेटा जो अपने पिता के घर में घुसकर बिना मारे ही उसकी हत्या कर देता है, वह भी प्रेम कहानी नहीं है—यह तो एक ऐसा रहस्य है जिसे वह खुद हल नहीं कर सकता। अगर उसने उसकी हत्या की है, तो उसने की है, और बिना मारे उसकी हत्या करने का क्या मतलब है—यह सब कौन समझ सकता है?
“तब हमें यह चेतावनी दी जाती है कि हमारा मंच सत्य और निष्पक्षता का मंच है।”
विचारों की इस गद्दी से एक गंभीर घोषणा सुनाई देती है कि पिता की हत्या को 'पितृहत्या' कहना केवल एक पूर्वाग्रह है! लेकिन अगर पितृहत्या एक पूर्वाग्रह है, और अगर हर बच्चे को अपने पिता से यह पूछना पड़े कि वह उससे प्यार क्यों करे, तो हमारा क्या होगा? समाज की नींव का क्या होगा? परिवार का क्या होगा? ऐसा लगता है कि पितृहत्या केवल मॉस्को के व्यापारियों की पत्नियों का एक डर है। रूसी न्याय के भाग्य और भविष्य के लिए सबसे कीमती, सबसे पवित्र गारंटी हमें एक विकृत और तुच्छ रूप में प्रस्तुत की जाती है, केवल एक उद्देश्य की प्राप्ति के लिए—ऐसी चीज़ का औचित्य प्राप्त करने के लिए जिसका औचित्य सिद्ध नहीं किया जा सकता। 'ओह, उस पर दया करो,' बचाव पक्ष का वकील चिल्लाता है; लेकिन अपराधी बस यही चाहता है, और कल देखा जाएगा कि वह कितना कुचला जाता है। और क्या बचाव पक्ष का वकील केवल कैदी की रिहाई की मांग करके बहुत विनम्र नहीं है? भावी पीढ़ियों के बीच उसके इस कारनामे को याद रखने के लिए पितृहत्या के सम्मान में एक दान संस्था क्यों नहीं स्थापित की जाती? धर्म और सुसमाचार को तोड़-मरोड़ कर पेश किया जाता है—हमें बताया जाता है कि यह सब रहस्यवाद है, और हमारा ईसाई धर्म ही एकमात्र सच्चा ईसाई धर्म है जिसका तर्क और सामान्य ज्ञान के आधार पर विश्लेषण किया गया है। इस प्रकार वे हमारे सामने मसीह का एक झूठा रूप प्रस्तुत करते हैं! बचाव पक्ष के वकील ने पुकारा, 'जैसा नापोगे वैसा ही पाओगे,' और तुरंत यह निष्कर्ष निकाला कि मसीह हमें सिखाते हैं कि जैसा हमारे साथ किया जाए, वैसा ही हम भी करें—और यह सत्य और विवेक के मंच से कहा गया! हम भाषण देने से ठीक पहले ही सुसमाचार में झाँकते हैं, ताकि श्रोताओं को अपनी जानकारी से चकित कर सकें, जो वैसे भी एक मौलिक रचना है, जिसका उपयोग किसी विशेष प्रभाव उत्पन्न करने के लिए किया जा सकता है—यह सब केवल अपने उद्देश्य की पूर्ति

के लिए! लेकिन मसीह हमें जो आज्ञा देते हैं वह बिल्कुल अलग है: वे हमें ऐसा करने से सावधान रहने को कहते हैं, क्योंकि दुष्ट संसार ऐसा करता है, बल्कि हमें क्षमा करना चाहिए और दूसरा गाल आगे कर देना चाहिए, और अपने सताने वालों के साथ वैसा ही व्यवहार नहीं करना चाहिए जैसा वे हमारे साथ करते हैं। यही हमारे ईश्वर ने हमें सिखाया है, न कि बच्चों को अपने पिता की हत्या करने से रोकना पूर्वाग्रह है। और हम सत्य और विवेक के मंच से अपने प्रभु के सुसमाचार को सुधारने का प्रयास नहीं करेंगे, जिसे बचाव पक्ष के वकील केवल 'मानवता का क्रूसित प्रेमी' कहकर पुकारते हैं, जबकि यह बात उस संपूर्ण रूढ़िवादी रूस के विरुद्ध है जो उनसे कहता है, 'क्योंकि तू हमारा ईश्वर है!'
इस पर राष्ट्रपति ने हस्तक्षेप किया और अति उत्साही वक्ता को रोका।
राष्ट्रपतियों की तरह, लोग उनसे विनती कर रहे थे कि वे अतिशयोक्ति न करें, सीमाएँ पार न करें, इत्यादि। श्रोता भी बेचैन थे। जनता अशांत थी: यहाँ तक कि आक्रोश की आवाज़ें भी सुनाई दे रही थीं। फेत्युकोविच ने कोई जवाब तक नहीं दिया; वे मंच पर चढ़े, अपने दिल पर हाथ रखा और नाराज़गी भरे स्वर में कुछ शब्द गरिमापूर्ण ढंग से कहे। उन्होंने हल्के-फुल्के और व्यंग्यात्मक ढंग से फिर से "रोमांस" और "मनोविज्ञान" का ज़िक्र किया और उचित स्थान पर उद्धृत किया, "बृहस्पति, तुम क्रोधित हो, इसलिए तुम गलत हो," जिससे श्रोताओं में ज़ोरदार ठहाका लगा, क्योंकि इप्पोलिट किरिलोविच किसी भी तरह से बृहस्पति के समान नहीं थे। फिर, इस आरोप के संदर्भ में कि वे युवा पीढ़ी को अपने पिता की हत्या करना सिखा रहे हैं, फेत्युकोविच ने बड़ी गरिमा के साथ कहा कि वे इसका उत्तर भी नहीं देंगे। अभियोजक द्वारा लगाए गए अपरंपरागत विचारों को व्यक्त करने के आरोप के बारे में, फेत्युकोविच ने संकेत दिया कि यह एक व्यक्तिगत आरोप था और उन्हें इस अदालत में यह उम्मीद थी कि उन पर लगे आरोपों से उन्हें बचाया जा सकेगा, जो "एक नागरिक और वफादार प्रजा के रूप में उनकी प्रतिष्ठा को नुकसान पहुंचा सकते हैं।" लेकिन इन शब्दों पर राष्ट्रपति ने उन्हें भी फटकार लगाई और फेत्युकोविच ने अदालत में तालियों की गड़गड़ाहट के बीच झुककर अपना भाषण समाप्त किया। और हमारी महिलाओं की राय में, इप्पोलिट किरिलोविच "पूरी तरह से हार गए।"
फिर कैदी को बोलने की अनुमति दी गई। मित्या खड़ा हुआ, लेकिन उसने बहुत कम शब्दों में बात की। वह शारीरिक और मानसिक रूप से बुरी तरह थका हुआ था। सुबह जिस शक्ति और आत्मनिर्भरता के साथ वह आया था, वह लगभग गायब हो चुकी थी। ऐसा लग रहा था मानो उस दिन उसने कोई ऐसा अनुभव सहा हो, जिसने उसे जीवन भर के लिए कुछ ऐसा महत्वपूर्ण सिखाया हो जिसे वह तब तक नहीं समझ पाया था। उसकी आवाज़ कमजोर थी, वह पहले की तरह चिल्ला नहीं रहा था। उसके शब्दों में विनम्रता, हार और समर्पण का भाव था।
“न्यायपालिका के सज्जनों, मैं क्या कहूँ? न्याय का समय आ गया है।”
मेरे लिए आओ, मुझे अपने ऊपर ईश्वर का हाथ महसूस हो रहा है! एक भटके हुए इंसान का अंत आ गया है! लेकिन, ईश्वर के सामने, मैं आपसे फिर कहता हूँ, मैं अपने पिता के खून का निर्दोष हूँ! आखिरी बार दोहराता हूँ, मैंने उन्हें नहीं मारा! मैं भटका था, लेकिन मैंने अच्छाई से प्रेम किया। हर पल मैंने सुधरने की कोशिश की, लेकिन मैं एक जंगली जानवर की तरह जी रहा था। मैं अभियोजक का आभारी हूँ, उन्होंने मुझे मेरे बारे में कई ऐसी बातें बताईं जो मैं नहीं जानता था; लेकिन यह सच नहीं है कि मैंने अपने पिता को मारा, अभियोजक गलत है। मैं अपने वकील का भी आभारी हूँ। उनकी बातें सुनकर मैं रो पड़ा; लेकिन यह सच नहीं है कि मैंने अपने पिता को मारा, और उन्हें ऐसा सोचना भी नहीं चाहिए था। और डॉक्टरों पर विश्वास मत करो। मैं पूरी तरह से ठीक हूँ, बस मेरा दिल भारी है। अगर आप मुझे बख्श दें, अगर आप मुझे जाने दें, तो मैं आपके लिए प्रार्थना करूँगा। मैं एक बेहतर इंसान बनूँगा। मैं ईश्वर के सामने आपको वचन देता हूँ कि मैं बनूँगा! और अगर आप मुझे दोषी ठहराएँगे, तो मैं अपनी तलवार खुद अपने सिर पर तोड़ लूँगा और उसके टुकड़ों को चूमूँगा। लेकिन मुझे बख्श दो, मुझे मेरे ईश्वर से मत छीनो! मैं खुद को जानता हूँ, मैं विद्रोह करूँगा! मेरा दिल भारी है, सज्जनों... मुझे बख्श दो!
वह लगभग अपनी जगह पर गिर पड़ा: उसकी आवाज लड़खड़ा गई: वह मुश्किल से बोल पा रहा था अंतिम वाक्य स्पष्ट करें। फिर न्यायाधीशों ने प्रश्न पूछना शुरू किया और दोनों पक्षों से अपने निष्कर्ष बताने को कहा। लेकिन मैं विवरण नहीं दूंगा। अंत में जूरी परामर्श के लिए उठ खड़ी हुई। अध्यक्ष बहुत थके हुए थे, इसलिए जूरी को उनका अंतिम निर्देश कुछ कमजोर था। “निष्पक्ष रहें, बचाव पक्ष की वाक्पटुता से प्रभावित न हों, लेकिन फिर भी तर्कों पर विचार करें। याद रखें कि आप पर एक बड़ी जिम्मेदारी है,” इत्यादि।

जूरी सदस्य चले गए और अदालत की कार्यवाही स्थगित कर दी गई। लोग उठ सकते थे और चल सकते थे। सब आपस में बातचीत कर रहे थे, अपने अनुभव साझा कर रहे थे और बुफे में भोजन करके तरोताज़ा हो रहे थे। काफी रात हो चुकी थी, लगभग एक बज रहा था, लेकिन कोई भी नहीं गया: तनाव इतना ज़्यादा था कि किसी को भी आराम करने का मन नहीं था। सभी डूबते दिलों से इंतज़ार कर रहे थे; हालाँकि शायद यह कहना कुछ ज़्यादा ही होगा, क्योंकि महिलाएँ तो बस बेचैनी से हिस्टीरिकल अवस्था में थीं और उनके दिल में कोई चिंता नहीं थी। उन्हें लग रहा था कि बरी होना तय है। वे सब उत्साह के एक नाटकीय क्षण के लिए खुद को तैयार कर रही थीं। मुझे यह स्वीकार करना होगा कि पुरुषों में भी कई लोग थे जिन्हें यकीन था कि बरी होना तय है। कुछ खुश थे, कुछ नाराज़ थे, जबकि कुछ बस निराश थे, वे नहीं चाहते थे कि उसे बरी किया जाए। फेत्युकोविच खुद अपनी सफलता को लेकर आश्वस्त थे। उनके चारों ओर लोग उन्हें बधाई दे रहे थे और उनकी चापलूसी कर रहे थे।
बाद में मुझे बताया गया कि उन्होंने एक समूह से कहा, “वहाँ हैं।
बचाव पक्ष के वकील और जूरी को जोड़ने वाले अदृश्य धागे। भाषण के दौरान ही इनका एहसास हो जाता है। मुझे इनका एहसास था। ये मौजूद हैं। हमारी जीत हुई है। निश्चिंत हो जाइए।
“अब हमारे किसान क्या कहेंगे?” एक मोटे, चिड़चिड़े चेहरे वाले, चेचक के निशान वाले व्यक्ति ने कहा।
पड़ोस के एक भूस्वामी, चिह्नित सज्जन, बातचीत में मग्न सज्जनों के एक समूह के पास पहुँच रहे हैं।
लेकिन वे सभी किसान नहीं हैं। उनमें चार सरकारी क्लर्क भी हैं।
उन्हें।"
“जी हां, क्लर्क हैं,” जिला परिषद के एक सदस्य ने कहा, जो बैठक में शामिल हो रहे थे।
समूह।
और क्या आप जानते हैं कि पदकधारी व्यापारी नाज़ारयेव, एक
जूरी सदस्य?
“उसका क्या हुआ?”
वह बुद्धिमान व्यक्ति है।
लेकिन वह कभी बोलता नहीं है।
वह ज्यादा बातूनी नहीं है, लेकिन यह अच्छी बात है। इसकी कोई जरूरत नहीं है।
उसे सिखाने के लिए सेंट पीटर्सबर्ग के उस आदमी की क्या ज़रूरत है: वह खुद पूरे सेंट पीटर्सबर्ग को सिखा सकता है। वह बारह बच्चों का पिता है। ज़रा सोचिए!
"मेरी बात मानो, तुम्हें नहीं लगता कि वे उसे बरी नहीं करेंगे?" हमारे युवा अधिकारियों में से एक ने दूसरे समूह में हैरानी से कहा।
“वे उसे निश्चित रूप से बरी कर देंगे,” एक दृढ़ आवाज ने कहा। “उसे बरी न करना शर्मनाक, अपमानजनक होगा!” अधिकारी चिल्लाया।
“मान लीजिए कि उसने उसकी हत्या कर ही दी— बाप तो बाप होते हैं! और वैसे भी, वह उस समय बहुत गुस्से में था... हो सकता है उसने बस मूसल हवा में घुमाया हो और इस तरह बूढ़े को गिरा दिया हो। लेकिन यह अफ़सोस की बात है कि उन्होंने नौकर को घसीट लिया। यह तो सरासर बेतुकी थ्योरी थी! अगर मैं फेत्युकोविच की जगह होता, तो मैं सीधे-सीधे कह देता: ‘उसने उसकी हत्या की है; लेकिन वह दोषी नहीं है, धिक्कार है!’”
"उसने यही किया, बस उसने 'सब कुछ बर्बाद कर दो!' नहीं कहा।"
“नहीं, मिहाइल सेम्योनोविच, उन्होंने भी लगभग यही कहा था,” तीसरे व्यक्ति ने कहा।
आवाज़।
"जी महोदय, उपवास के दौरान हमारे शहर में एक अभिनेत्री को बरी कर दिया गया था, जिसने..."
उसने अपने प्रेमी की वैध पत्नी का गला काट दिया।
"ओह, लेकिन उसने इसे काटना पूरा नहीं किया।"
“इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। उसने इसे काटना शुरू कर दिया।”
“बच्चों के बारे में उन्होंने जो कहा, उसके बारे में आपका क्या विचार है? शानदार था, है ना?”
यह?"

"उत्कृष्ट!"
और रहस्यवाद के बारे में भी!
“अरे, रहस्यवाद छोड़ो!” किसी और ने चिल्लाकर कहा; “इप्पोलिट और उनके बारे में सोचो।”
आज से उसका भाग्य बदल जाएगा। कल उसकी पत्नी मित्या के लिए उसकी आंखें नोच लेगी।
"वह यहाँ है?"
“क्या शानदार विचार है! अगर वह यहाँ होती तो इन्हें मिटा देती।”
अदालत। वह दांत दर्द के कारण घर पर है। ही ही ही!
“ही, ही, ही!”
तीसरे समूह में:
"मुझे पूरा यकीन है कि वे आखिरकार मितेंका को बरी कर देंगे।"
मुझे आश्चर्य नहीं होगा अगर वह ‘महानगर’ को पूरी तरह से उलट-पुलट कर दे-
कल। वह दस दिन तक शराब पिएगा!
अरे बाप रे!
इसमें शैतान का हाथ जरूर है। अगर नहीं तो वो कहाँ होगा?
यहाँ?"
"जी महोदय, मैं मानता हूँ कि यह प्रभावशाली था। लेकिन फिर भी यह उचित नहीं है कि..."
अपने पिता का सिर मूसल से फोड़ दो! वरना हम किधर जा रहे हैं?
“रथ! क्या आपको रथ याद है?”
“हाँ; उसने एक गाड़ी को रथ में बदल दिया!”
और कल वह रथ को गाड़ी में बदल देगा, ठीक अपने हिसाब से।
उद्देश्य।"
आजकल कितने धूर्त लोग हैं! क्या न्याय मिलना बाकी है?
रूस में?"
लेकिन घंटी बज उठी। जूरी ने ठीक एक घंटे तक विचार-विमर्श किया, इससे अधिक नहीं।
और इससे कम भी नहीं। जनता के अपनी-अपनी सीटों पर बैठते ही अदालत में गहरा सन्नाटा छा गया। मुझे याद है कि जूरी के सदस्य अदालत में कैसे दाखिल हुए। आखिरकार! मैं सवालों को क्रम से नहीं दोहराऊंगा, और सच कहूं तो मैं उन्हें भूल भी चुका हूं। मुझे केवल अध्यक्ष के पहले और मुख्य प्रश्न का उत्तर याद है: "क्या कैदी ने लूट के इरादे से और पूर्व नियोजित तरीके से हत्या की?" (मुझे सटीक शब्द याद नहीं हैं।) वहां पूरी तरह सन्नाटा छा गया। जूरी के प्रमुख, जो क्लर्कों में सबसे कम उम्र के थे, ने अदालत की सन्नाटे भरी खामोशी के बीच स्पष्ट और बुलंद आवाज में कहा:
“हाँ, दोषी!”
और हर सवाल का एक ही जवाब दोहराया गया: "हाँ, दोषी!"
बिना किसी नरमी के। इसकी किसी ने उम्मीद नहीं की थी; लगभग सभी को कम से कम दया की सिफारिश की उम्मीद थी। अदालत में सन्नाटा छाया रहा—सभी स्तब्ध प्रतीत हो रहे थे: वे लोग जो उन्हें दोषी ठहराना चाहते थे और वे लोग जो उनकी रिहाई के लिए उत्सुक थे। लेकिन यह केवल पहले क्षण के लिए था, और इसके बाद एक भयानक शोरगुल मच गया। श्रोताओं में से कई पुरुष प्रसन्न थे। कुछ अपनी खुशी को छिपाने की कोशिश किए बिना अपने हाथ मल रहे थे। जो लोग फैसले से असहमत थे, वे हताश प्रतीत हो रहे थे, उन्होंने अपने कंधे उचकाए, फुसफुसाए, लेकिन फिर भी इसे समझने में असमर्थ लग रहे थे। लेकिन मैं महिलाओं की स्थिति का वर्णन कैसे करूँ? मुझे लगा कि वे दंगा खड़ा कर देंगी। पहले तो उन्हें अपने कानों पर विश्वास ही नहीं हुआ। फिर अचानक पूरी अदालत विस्मयबोधक प्रश्नों से गूंज उठी: “इसका क्या अर्थ है? आगे क्या होगा?” वे अपनी जगहों से उछल पड़ीं। उन्हें लगा कि इस पर तुरंत पुनर्विचार किया जा सकता है और फैसला पलटा जा सकता है। उसी क्षण मित्या अचानक खड़ा हो गया और अपने हाथ आगे फैलाते हुए दिल दहला देने वाली आवाज में रोने लगा:
मैं ईश्वर और न्याय के भयानक दिन की कसम खाता हूँ कि मैं दोषी नहीं हूँ।
मेरे पिता का खून! कात्या, मैं तुम्हें माफ करती हूँ! भाइयों, दोस्तों, उस दूसरी औरत पर दया करो!

वह आगे नहीं बोल सका और बुरी तरह रोने लगा।
उसकी आवाज़ से बिल्कुल अलग, एक अजीब और अस्वाभाविक आवाज़ पूरे न्यायालय में गूंज उठी। गैलरी के सबसे दूर कोने से एक तीखी चीख सुनाई दी—यह ग्रुशेंका की थी। वकीलों के भाषण शुरू होने से पहले ही वह न्यायालय में दोबारा प्रवेश पाने में सफल हो गई थी। मित्या को ले जाया गया। फैसला अगले दिन के लिए टाल दिया गया। पूरा न्यायालय शोरगुल में था, लेकिन मैं सुनने के लिए नहीं रुका। मुझे बस बाहर निकलते समय सीढ़ियों पर सुनी कुछ चीखें याद हैं।
उसे बीस साल के लिए खानों में काम करना पड़ेगा!
"कम नहीं है।"
"खैर, हमारे किसान डटे रहे हैं।"
और हमने अपने मित्या के लिए यही किया है।

उपसंहार
अध्याय 1

मित्या के भागने की योजनाएँ

मुकदमे के पांच दिन बाद, सुबह नौ बजे, अलेयोशा, कैटरीना इवानोव्ना के घर एक बेहद महत्वपूर्ण मामले पर चर्चा करने और उन्हें एक संदेश देने गए। कैटरीना उसी कमरे में बैठीं और उनसे बात की, जहाँ उन्होंने कभी ग्रुशेंका का स्वागत किया था। बगल के कमरे में इवान फ्योदोरोविच तेज बुखार से बेहोश पड़े थे।
मुकदमे के बाद, कैटरीना इवानोव्ना ने तुरंत बीमार और बेहोश व्यक्ति को अपने घर लाने का आदेश दिया था, चाहे इससे लोगों में कितनी भी अफवाहें और असंतोष क्यों न फैले। उनके साथ रहने वाले दो रिश्तेदारों में से एक अदालत में हुई घटना के तुरंत बाद मॉस्को चला गया था, दूसरा वहीं रहा। लेकिन अगर दोनों चले भी जाते, तो भी कैटरीना इवानोव्ना अपने फैसले पर अडिग रहतीं और दिन-रात बीमार व्यक्ति की देखभाल करती रहतीं। वारविंस्की और हर्ज़ेनस्टुबे उनकी सेवा में थे। प्रसिद्ध डॉक्टर बीमारी के संभावित अंत के बारे में कोई राय देने से इनकार करते हुए मॉस्को लौट गए थे। हालांकि डॉक्टरों ने कैटेरिना इवानोव्ना और अलेयोशा को प्रोत्साहित किया, लेकिन यह स्पष्ट था कि वे अभी तक उन्हें ठीक होने की कोई सकारात्मक उम्मीद नहीं दे सकते थे।
अलेयोशा अपने बीमार भाई को दिन में दो बार देखने आता था। लेकिन इस बार उसके पास एक अलग ही अनुभव था।
यह एक बेहद जरूरी मामला था, और उन्हें पहले से ही अंदाजा था कि इस विषय पर बात करना कितना मुश्किल होगा, फिर भी वे बहुत जल्दी में थे। उनका एक और काम था जिसे उसी सुबह टाला नहीं जा सकता था, इसलिए जल्दी करना जरूरी था।
वे पंद्रह मिनट से बातें कर रहे थे। कैटेरिना इवानोव्ना
वह पीली पड़ गई थी और बेहद थकी हुई थी, फिर भी साथ ही साथ उन्मादपूर्ण उत्तेजना की स्थिति में थी। उसे आभास हो गया था कि अलेयोशा उसके पास क्यों आया है।

“उसके फैसले की चिंता मत करो,” उसने आत्मविश्वास से भरे स्वर में कहा।
अलोशा। “किसी न किसी तरह उसे यह करना ही होगा। उसे भागना ही होगा। वह अभागा आदमी, सम्मान और सिद्धांतों का वह नायक—वह नहीं, दिमित्री फ्योदोरोविच नहीं, बल्कि उस दरवाजे के दूसरी तरफ लेटा हुआ आदमी, जिसने अपने भाई के लिए खुद को कुर्बान कर दिया,” कात्या ने चमकती आँखों से कहा, “उसने मुझे भागने की पूरी योजना बहुत पहले ही बता दी थी। आप जानते हैं कि उसने पहले ही बातचीत शुरू कर दी है... मैंने आपको पहले भी कुछ बताया है... देखिए, यह शायद यहाँ से तीसरे चरण में होगा, जब कैदियों के दल को साइबेरिया ले जाया जा रहा होगा। ओह, अभी बहुत समय है। इवान फ्योदोरोविच तीसरे चरण के अधीक्षक से मिल चुका है। लेकिन हमें अभी तक यह नहीं पता कि दल का प्रभारी कौन होगा, और इतने लंबे समय पहले इसका पता लगाना असंभव है। शायद कल मैं आपको विस्तार से वह पूरी योजना दिखाऊँगी जो इवान फ्योदोरोविच ने मुकदमे की पूर्व संध्या पर मुझे ज़रूरत पड़ने पर दी थी... वह तब था—क्या आप याद है?—तुमने हमें झगड़ते हुए देखा था। वो अभी नीचे गया ही था, लेकिन तुम्हें देखकर मैंने उसे वापस बुला लिया; तुम्हें याद है? तुम्हें पता है हम उस समय किस बात पर झगड़ रहे थे?
“नहीं, मैं नहीं करता,” अलेयोशा ने कहा।
“बेशक उसने तुम्हें नहीं बताया। बात भागने की योजना की थी। उसके पास
उसने मुझे तीन दिन पहले मुख्य विचार बताया था, और हम तुरंत इस पर झगड़ने लगे और तीन दिन तक झगड़ते रहे। हम इसलिए झगड़े क्योंकि जब उसने मुझे बताया कि अगर दिमित्री फ्योदोरोविच दोषी साबित हो गया तो वह उस औरत के साथ विदेश भाग जाएगा, तो मुझे तुरंत गुस्सा आ गया—मैं आपको बता नहीं सकती क्यों, मुझे खुद भी नहीं पता क्यों... ओह, बिल्कुल, मुझे उस औरत पर गुस्सा आ रहा था, और इस बात पर भी कि वह भी दिमित्री के साथ विदेश चली जाएगी!” कैटरीना इवानोवना अचानक गुस्से से कांपते होंठों के साथ बोलीं। “जैसे ही इवान फ्योदोरोविच ने देखा कि मैं उस औरत पर गुस्से में हूँ, उसने तुरंत सोचा कि मैं दिमित्री से ईर्ष्या करती हूँ और अब भी दिमित्री से प्यार करती हूँ। इस तरह हमारा पहला झगड़ा शुरू हुआ। मैं कोई स्पष्टीकरण नहीं दे सकी, मैं माफी नहीं मांग सकी। मैं यह सोच भी नहीं सकती थी कि ऐसा आदमी मुझ पर उस औरत से प्यार करने का शक कर सकता है... और जबकि मैंने खुद उसे बहुत पहले बता दिया था कि मैं दिमित्री से प्यार नहीं करती, मैं उसके सिवा किसी से प्यार नहीं करती!” उस प्राणी के प्रति मेरी घृणा ही थी जिसने मुझे उससे नाराज़ किया। तीन दिन बाद, जिस शाम तुम आए थे, वह मेरे लिए एक सीलबंद लिफाफा लाया, जिसे मुझे तुरंत खोलना था, अगर उसे कुछ हो जाता। ओह, उसने अपनी बीमारी का पूर्वाभास कर लिया था! उसने मुझे बताया कि लिफाफे में भागने की योजना का विवरण है, और अगर उसकी मृत्यु हो जाती है या वह गंभीर रूप से बीमार हो जाता है, तो मुझे अकेले मित्या को बचाना है। फिर उसने मुझे लगभग दस हज़ार रुपये दिए—वे नोट जिनका ज़िक्र अभियोक्ता ने अपने भाषण में किया था, क्योंकि उसे किसी से पता चला था कि उसने उन्हें बदलवाने के लिए भेजा था। मुझे यह जानकर बहुत आश्चर्य हुआ कि इवान फ्योदोरोविच ने अपने भाई को बचाने का विचार नहीं छोड़ा था, और भागने की इस योजना को मुझसे साझा कर रहा था, जबकि वह अब भी मुझसे ईर्ष्या करता था और अब भी आश्वस्त था कि मैं मित्या से प्यार करता हूँ। ओह, यह तो एक बलिदान था! नहीं, तुम ऐसे आत्म-बलिदान की महानता को नहीं समझ सकते, एलेक्सी फ्योदोरोविच। मैं श्रद्धापूर्वक उनके चरणों में गिरना चाहती थी, लेकिन तभी मुझे लगा कि वे इसे केवल मित्या के बच जाने की खुशी समझेंगे (और उन्होंने निश्चित रूप से यही सोचा होगा!), और उनके मन में इस तरह के अन्यायपूर्ण विचार की मात्र संभावना से ही मैं इतनी क्रोधित हो गई कि मेरा गुस्सा फिर भड़क उठा, और उनके चरणों को चूमने के बजाय, मैं फिर से क्रोध में आ गई! ओह, मैं कितनी दुखी हूँ! यही मेरा स्वभाव है, मेरा भयानक, दुर्भाग्यपूर्ण स्वभाव! ओह, आप देखेंगे, मैं अंत में उन्हें भी मजबूर कर दूंगी कि वे मुझे छोड़कर किसी और के पास चले जाएं, जैसे दिमित्री। लेकिन... नहीं, मैं इसे सहन नहीं कर सकती, मैं खुद को मार डालूंगी। और जब आप अंदर आए, और जब मैंने आपको बुलाया और उनसे वापस आने को कहा, तो उनकी घृणा और तिरस्कार भरी नजरों से मैं इतनी क्रोधित हो गई कि—क्या आपको याद है?—मैंने आपसे चिल्लाकर कहा कि यह वही था, केवल वही जिसने मुझे यह विश्वास दिलाया था कि उसका भाई दिमित्री हत्यारा है! मैंने जानबूझकर उन्हें फिर से चोट पहुंचाने के लिए वह दुर्भावनापूर्ण बात कही थी। उसने मुझे कभी भी यह यकीन नहीं दिलाया था कि उसका भाई हत्यारा है। बल्कि, मैंने ही उसे यकीन दिलाया था! ओह, मेरे बुरे स्वभाव ने ही सब कुछ बिगाड़ा! मैंने ही मुकदमे के उस भयानक दृश्य का रास्ता बनाया। वह मुझे यह

दिखाना चाहता था कि वह एक नेक इंसान है, और यह कि भले ही मैं उसके भाई से प्यार करती हूँ, वह बदले या ईर्ष्या के कारण उसे बर्बाद नहीं करेगा। इसलिए वह अदालत में आया... मैं ही इस सब की वजह हूँ, मैं ही अकेली दोषी हूँ!
कात्या ने इससे पहले कभी अलेयोशा के सामने इस तरह की बातें नहीं कबूल की थीं, और उसे लगा अब वह असहनीय पीड़ा के उस दौर में थी, जब सबसे अभिमानी हृदय भी पीड़ा से चूर-चूर हो जाता है और दुःख से पराजित हो उठता है। ओह, अलेयोशा उसकी वर्तमान पीड़ा का एक और भयानक कारण जानता था, हालाँकि उसने मुकदमे के बाद से उन दिनों में इसे उससे सावधानीपूर्वक छिपा रखा था; लेकिन किसी कारणवश उसके लिए यह बहुत कष्टदायी होता यदि वह अब उससे इस बारे में बात करती। वह मुकदमे में अपने "विश्वासघात" के लिए पीड़ा भोग रही थी, और अलेयोशा को लगा कि उसका अंतरात्मा उसे यह स्वीकार करने के लिए विवश कर रहा है, उससे, अलेयोशा से, आँसू बहाते हुए, चीखते हुए और ज़मीन पर तड़पते हुए। लेकिन वह उस क्षण से भयभीत था और उसे बख्श देना चाहता था। इससे वह कार्य और भी कठिन हो गया जिसके लिए वह आया था। उसने फिर से मित्या के बारे में बात की।
“कोई बात नहीं, कोई बात नहीं, उसके बारे में चिंता मत करो!” उसने कहना शुरू किया।
फिर से, तीखे और हठपूर्वक लहजे में। “यह सब बस क्षणिक है, मैं उसे जानती हूँ, मैं उसके दिल को बहुत अच्छी तरह जानती हूँ। आप निश्चिंत रहें, वह भागने के लिए राजी हो जाएगा। ऐसा नहीं है कि यह तुरंत होगा; उसे फैसला करने के लिए समय मिलेगा। तब तक इवान फ्योदोरोविच ठीक हो जाएगा और सब कुछ खुद ही संभाल लेगा, इसलिए मुझे इसमें कुछ भी नहीं करना पड़ेगा। चिंता न करें; वह भागने के लिए राजी हो जाएगा। वह पहले ही सहमत हो चुका है: क्या आपको लगता है कि वह उस प्राणी को छोड़ देगा? और वे उसे उसके पास नहीं जाने देंगे, इसलिए उसे भागना ही होगा। उसे सबसे ज्यादा डर आपसे है, उसे डर है कि आप नैतिक आधार पर उसके भागने को स्वीकार नहीं करेंगी। लेकिन अगर आपकी स्वीकृति इतनी जरूरी है, तो आपको उदारतापूर्वक इसकी अनुमति देनी होगी,” कात्या ने क्रूरता से कहा। वह रुकी और मुस्कुराई।
“वह किसी भजन के बारे में बात करता है,” उसने फिर कहा, “किसी क्रॉस के बारे में जिसे उसे पार करना है।”
सहन करना, कुछ कर्तव्य है; मुझे याद है इवान फ्योदोरोविच ने मुझे इसके बारे में बहुत कुछ बताया था, और अगर आप जानते कि वह कैसे बात करते थे!” कात्या अचानक, अपनी भावनाओं को दबा न पाने के कारण, चिल्लाई, “अगर आप जानते कि जिस क्षण उन्होंने मुझे बताया, उस समय वह उस बेचारे आदमी से कितना प्यार करते थे, और शायद उसी क्षण उससे कितनी नफरत भी करते थे। और मैंने उसकी कहानी और उसके आँसू तिरस्कार से सुने। जाहिल! हाँ, मैं जाहिल हूँ। मैं उसके बुखार के लिए ज़िम्मेदार हूँ। लेकिन जेल में बंद वह आदमी कष्ट सहने में असमर्थ है,” कात्या ने चिड़चिड़ाते हुए कहा। “क्या ऐसा आदमी कष्ट सह सकता है? उसके जैसे लोग कभी कष्ट नहीं सहते!”
उसके शब्दों में घृणा और तिरस्कारपूर्ण घृणा का भाव था।
और फिर भी, धोखा तो उसी ने दिया था। "शायद इसलिए कि उसे अपने किए का पछतावा है, इसलिए वह कभी-कभी उससे नफरत करती है," अलेयोशा ने मन ही मन सोचा। उसने उम्मीद की कि यह सिर्फ "कभी-कभी" ही हो। कात्या के आखिरी शब्दों में उसे एक चुनौती का भाव दिखाई दिया, लेकिन उसने उस पर कोई प्रतिक्रिया नहीं दी।
मैंने आज सुबह तुम्हें बुलवाया था ताकि तुम उससे वादा करो कि तुम उसे मना लोगे।
"या आप भी यही सोचते हैं कि भाग जाना अपमानजनक, कायरतापूर्ण या कुछ और... शायद ईसाई धर्म के विरुद्ध होगा?" कात्या ने और भी अधिक चुनौती भरे लहजे में कहा।
“अरे नहीं। मैं उसे सब कुछ बता दूँगा,” अलेयोशा ने बुदबुदाते हुए कहा। “वह तुमसे पूछेगा कि...”
“आज आकर उससे मिलो,” उसने अचानक बोलते हुए, उसकी आँखों में सीधे देखते हुए कहा। वह चौंक गई और सोफे पर उससे थोड़ा पीछे हट गई।
“मैं? क्या ऐसा हो सकता है?” वह लड़खड़ाते हुए बोली, उसका चेहरा पीला पड़ गया।
“ऐसा हो सकता है और होना भी चाहिए!” अलेयोशा ने ज़ोर देकर कहना शुरू किया, और उसका उत्साह बढ़ता गया।

जोश से भरी आवाज़ में उसने कहा, “उसे इस समय तुम्हारी खास ज़रूरत है। अगर ज़रूरी न होता तो मैं इस विषय पर बात नहीं करती और तुम्हें परेशान नहीं करती। वह बीमार है, उसका दिमाग खराब है, वह बार-बार तुम्हें बुला रहा है। वह तुमसे सुलह करने के लिए नहीं चाहता, बल्कि बस इतना चाहता है कि तुम उसके दरवाजे पर जाकर खुद को दिखा दो। उस दिन के बाद से उसके साथ बहुत कुछ बदल गया है। उसे एहसास है कि उसने तुम्हें बहुत बड़ा दुख पहुँचाया है। वह तुमसे माफ़ी नहीं माँग रहा; ‘मुझे माफ़ करना नामुमकिन है,’ वह खुद कहता है—बस इतना चाहता है कि तुम उसके दरवाजे पर जाकर खुद को दिखा दो।”
“ये सब अचानक हुआ है...” कात्या काँपते हुए बोली। “मुझे इन सब बातों का पूर्वाभास होता रहा है।”
मुझे पता था कि वह मुझे आने के लिए कहेगा। यह असंभव है!
“भले ही यह असंभव हो, लेकिन इसे करो। बस सोचो, उसे पहली बार यह एहसास होता है।”
“उसने तुम्हें कितना दुख पहुँचाया है, अपने जीवन में पहली बार; उसने पहले कभी इस बात को इतनी गहराई से नहीं समझा था। उसने कहा, ‘अगर वह नहीं आई तो मैं जीवन भर दुखी रहूँगा।’ क्या तुम सुन रहे हो? हालाँकि उसे बीस साल की सज़ा मिली है, फिर भी वह खुश रहने की योजना बना रहा है—क्या यह दयनीय नहीं है? सोचो—तुम्हें उससे मिलना चाहिए; हालाँकि वह बर्बाद हो चुका है, फिर भी वह निर्दोष है,” अलेयोशा ने चुनौती भरे लहजे में कहा। “उसके हाथ साफ हैं, उन पर खून नहीं लगा है! भविष्य में उसके अनंत कष्टों के लिए अभी उससे मिलो। जाओ, अंधेरे में जाते हुए उसका अभिवादन करो—उसके दरवाजे पर खड़े हो जाओ, बस इतना ही... तुम्हें ऐसा करना चाहिए, तुम्हें ऐसा करना ही चाहिए!” अलेयोशा ने “चाहिए” शब्द पर ज़ोर देते हुए अपनी बात समाप्त की।
“मुझे करना चाहिए... लेकिन मैं नहीं कर सकती...” कात्या कराह उठी। “वह मुझे देखेगा...”
मैं नहीं कर सकता।"
“तुम्हारी आँखें मिलनी चाहिए। अगर तुम ऐसा नहीं करोगे तो अपना पूरा जीवन कैसे जी पाओगे?”
क्या आप अभी इसे करने का मन बना लेंगे?
"पूरी जिंदगी कष्ट भोगना ही बेहतर है।"
“तुम्हें जाना चाहिए, तुम्हें जाना चाहिए,” अलेयोशा ने निर्दयता से दोहराया।
ज़ोर।
लेकिन आज ही क्यों, तुरंत ही क्यों? . . . मैं अपने मरीज को छोड़कर नहीं जा सकता . . .”
“तुम एक पल के लिए आ सकते हो। बस एक पल के लिए। अगर तुम नहीं आओगे, तो वह
आज रात तक वह बेहोश हो जाएगा। मैं तुमसे झूठ नहीं बोलूंगा; उस पर दया करो!
“मुझ पर दया करो!” कात्या ने कड़वी निंदा के साथ कहा और फूट-फूट कर रोने लगी।
आँसू।
“तो तुम आओगी,” अलेयोशा ने उसकी आँखों में आँसू देखकर दृढ़ता से कहा। “मैं जाऊँगी।”
और उनसे कहिए कि आप सीधे आ रहे हैं।
“नहीं, किसी भी हालत में उसे यह मत बताना,” कात्या ने घबराकर कहा। “मैं बताऊंगी।”
आओ, लेकिन उसे पहले से मत बताना, क्योंकि हो सकता है मैं जाऊं, लेकिन अंदर न जाऊं... मुझे अभी पता नहीं है...
उसकी आवाज लड़खड़ा गई। वह हांफने लगी। अलेयोशा जाने के लिए उठ खड़ी हुई। "और अगर मुझे कोई मिल जाए तो?" उसने अचानक धीमी आवाज में कहा, मुड़ते हुए।
फिर से सफेद।
“इसीलिए आपको अभी जाना चाहिए, ताकि किसी से मुलाकात न हो।
मैं आपको यकीन से कह सकता हूँ कि वहाँ कोई नहीं होगा। हम आपका इंतज़ार करेंगे,” उसने ज़ोर देकर कहा और कमरे से बाहर चला गया।

अध्याय दो

एक पल के लिए झूठ सच बन जाता है

वह जल्दी से अस्पताल पहुंचा जहां मित्या भर्ती था। उसके भाग्य का फैसला होने के अगले दिन ही मित्या को बुखार हो गया था और उसे शहर के अस्पताल के जेल विभाग में भर्ती कराया गया था। लेकिन कई लोगों (अलेयोशा, मैडम होहलाकोव, लिसे आदि) के अनुरोध पर, डॉक्टर वारविंस्की ने मित्या को अन्य कैदियों के साथ नहीं, बल्कि एक अलग छोटे कमरे में रखा था, उसी कमरे में जहां स्मरद्याकोव था। यह सच है कि गलियारे के दूसरे छोर पर एक संतरी था और खिड़की पर जाली लगी थी, ताकि वारविंस्की अपनी दिखाई गई नरमी के बारे में निश्चिंत हो सके, जो वास्तव में पूरी तरह से कानूनी नहीं थी; लेकिन वह एक दयालु और करुणामयी युवक था। वह जानता था कि मित्या जैसे व्यक्ति के लिए अचानक लुटेरों और हत्यारों की संगति में घुलमिल जाना कितना कठिन होगा और उसे धीरे-धीरे इसकी आदत डालनी होगी। रिश्तेदारों और दोस्तों के आने-जाने की अनुमति डॉक्टर और निरीक्षक, और यहां तक कि पुलिस कप्तान ने भी अनौपचारिक रूप से दे दी थी। लेकिन मित्या से मिलने केवल अलेयोशा और ग्रुशेंका ही आए थे। रकितिन ने दो बार जबरदस्ती अंदर घुसने की कोशिश की थी, लेकिन मित्या लगातार वारविंस्की से उसे अंदर न आने देने की गुहार लगाता रहा।
अलियोशा ने उसे अस्पताल के ड्रेसिंग गाउन में अपने बिस्तर पर बैठे हुए पाया, बल्कि
बुखार से व्याकुल, सिर पर सिरके और पानी में भीगा तौलिया रखे हुए। जब अलेयोशा अंदर आया तो उसने उसे एक अस्पष्ट भाव से देखा, लेकिन उसमें किसी प्रकार का भय स्पष्ट रूप से झलक रहा था। मुकदमे के बाद से वह बहुत ज्यादा चिंतित रहने लगा था; कभी-कभी वह आधे घंटे तक चुप रहता था, और ऐसा लगता था मानो किसी बात पर गहराई से विचार कर रहा हो, मानो अपने आसपास की हर चीज़ से बेखबर हो। अगर वह अपनी सोच से बाहर निकलकर बोलना शुरू करता, तो हमेशा एक तरह के रूखेपन से बोलता था और कभी भी वह नहीं कहता था जो वह वास्तव में कहना चाहता था। कभी-कभी वह अपने भाई को पीड़ा भरे चेहरे से देखता था। वह अलेयोशा की तुलना में ग्रुशेंका के साथ अधिक सहज प्रतीत होता था। यह सच है कि वह उससे शायद ही कभी बात करता था, लेकिन जैसे ही वह अंदर आती, उसका पूरा चेहरा खुशी से चमक उठता था।
अलेयोशा चुपचाप उसके बगल में बिस्तर पर बैठ गया। इस बार मित्या
अलोशा का बेसब्री से इंतज़ार करते हुए, वह उससे कोई सवाल पूछने की हिम्मत नहीं कर पा रहा था। उसे लगभग असंभव लग रहा था कि कात्या आने के लिए राज़ी होगी, और साथ ही उसे यह भी लग रहा था कि अगर वह नहीं आई तो कुछ अकल्पनीय घटित हो जाएगा।
अलियोशा उसकी भावनाओं को समझ गया।
“ट्रिफॉन बोरिसोविच,” मित्या ने घबराते हुए कहना शुरू किया, “ने अपना पूरा
मुझे बताया गया है कि उसने सराय को तहस-नहस कर दिया है। उसने फर्श उखाड़ दिया है, तख्ते अलग कर दिए हैं, पूरी गैलरी तोड़ दी है। मुझे बताया गया है कि वह हर समय खजाने की तलाश में रहता है—वह पंद्रह सौ रूबल जो अभियोजक ने कहा था कि मैंने वहाँ छिपाए थे। कहते हैं कि घर पहुँचते ही उसने ये सब चालें चलना शुरू कर दिया। उसे यही मिलना चाहिए था, धोखेबाज! यहाँ के गार्ड ने मुझे कल बताया था; वह वहीं से आता है।
“सुनो,” अलेयोशा ने कहना शुरू किया। “वह आएगी, लेकिन मुझे नहीं पता कब।”
शायद आज, शायद कुछ दिनों में, यह मैं नहीं कह सकता। लेकिन वह आएगी, वह आएगी, यह निश्चित है।
मित्या चौंक गया, कुछ कहना चाहता था, लेकिन चुप रहा। खबर ने उसे चौंका दिया था।
उस पर गहरा असर पड़ा। यह स्पष्ट था कि वह यह जानने के लिए बहुत उत्सुक था कि क्या कहा गया था, लेकिन वह फिर से पूछने से डर रहा था। कात्या की ओर से कोई क्रूर और अपमानजनक बात उसे उस क्षण चाकू की तरह चुभ सकती थी।
“उसने अन्य बातों के साथ-साथ यह भी कहा कि मुझे यह सुनिश्चित करना होगा कि मैं

भागने के बारे में आपकी अंतरात्मा को शांति मिलेगी। अगर तब तक इवान ठीक नहीं हुआ तो वह सब कुछ खुद ही संभाल लेगी।
“तुम इसके बारे में पहले ही बात कर चुके हो,” मित्या ने सोचते हुए कहा। “और तुमने ग्रुशा को भी यही बात बताई है,” अलेयोशा ने कहा। “हाँ,” मित्या ने स्वीकार किया। “वह आज सुबह नहीं आएगी।” उसने देखा उसने दबी आवाज़ में अपने भाई से कहा, “वह शाम तक नहीं आएगी। जब मैंने कल उसे बताया कि कात्या कुछ कदम उठा रही है, तो वह चुप रही, लेकिन उसने ठान लिया। उसने बस इतना फुसफुसाया, ‘उसे आने दो!’ वह समझ गई कि यह ज़रूरी है। मैंने उससे और कुछ पूछने की हिम्मत नहीं की। मुझे लगता है कि अब वह समझ गई है कि कात्या को मेरी परवाह नहीं है, बल्कि वह इवान से प्यार करती है।”
“क्या वह ऐसा करती है?” अलेयोशा ने बीच में ही टोकते हुए पूछा।
“शायद वो नहीं आ रही। बस वो आज सुबह नहीं आ रही,” मित्या ने कहा।
उसने जल्दी से फिर से समझाने की कोशिश की; “मैंने उससे मेरे लिए कुछ करने को कहा था। आप जानते हैं, इवान हम सब से श्रेष्ठ है। उसे जीना चाहिए, हमें नहीं। वह ठीक हो जाएगा।”
"क्या आप विश्वास करेंगे, हालांकि कात्या उससे चिंतित है, वह शायद ही..."
"उसके ठीक होने को लेकर संदेह है," अलेयोशा ने कहा।
इसका मतलब है कि उसे पूरा यकीन है कि उसकी मौत हो जाएगी। ऐसा इसलिए है क्योंकि वह
वह डरी हुई है क्योंकि उसे पूरा यकीन है कि वह ठीक हो जाएगा।
“इवान का स्वास्थ्य अच्छा है, और मुझे भी पूरी उम्मीद है।”
“मुझे उम्मीद है कि वह ठीक हो जाएगा,” अलेयोशा ने चिंता से कहा।
“हाँ, वह ठीक हो जाएगा। लेकिन उसे पूरा यकीन है कि उसकी मृत्यु हो जाएगी। उसे एक असहनीय दुःख सहना पड़ेगा..." सन्नाटा छा गया। मित्या गंभीर चिंता से ग्रस्त था।
“अलोशा, मैं ग्रुशा से बहुत प्यार करता हूँ,” उसने अचानक कांपती हुई आवाज़ में कहा।
आंसुओं से भरी हुई।
“वे उसे तुम्हारे पास बाहर नहीं जाने देंगे,” अलेयोशा ने तुरंत कहा। “और एक और बात है जो मैं तुम्हें बताना चाहता था,” मित्या ने आगे कहा।
अचानक उसकी आवाज़ में एक झंकार आ गई। “अगर वे मुझे रास्ते में या वहाँ पीटें, तो मैं इसे बर्दाश्त नहीं करूँगा। मैं किसी को मार डालूँगा, और इसके लिए मुझे गोली मार दी जाएगी। और यह बीस साल तक चलता रहेगा! वे मुझसे पहले से ही बदतमीज़ी से बात करते हैं। मैं पूरी रात यहाँ लेटा रहा, खुद पर विचार करता रहा। मैं तैयार नहीं हूँ! मैं खुद को हार मानने को तैयार नहीं हूँ। मैं एक भजन गाना चाहता था; लेकिन अगर कोई गार्ड मुझसे बदतमीज़ी से बात करे, तो मुझमें उसे सहने की ताकत नहीं है। ग्रुशा के लिए मैं कुछ भी सह लूँगा... मार-पीट को छोड़कर... लेकिन उसे वहाँ आने की इजाज़त नहीं दी जाएगी।”
अलियोशा ने धीरे से मुस्कुराया।
“सुनो भाई, एक बार फिर,” उसने कहा। “मैं इसके बारे में यही सोचता हूँ।”
और आप जानते हैं कि मैं आपसे झूठ नहीं बोलूंगा। सुनिए: आप तैयार नहीं हैं, और ऐसा कष्ट आपके लिए नहीं है। इससे भी बढ़कर, जब आप इसके लिए तैयार नहीं हैं, तो आपको ऐसे बलिदान की आवश्यकता नहीं है। यदि आपने हमारे पिता की हत्या की होती, तो मुझे दुख होता कि आप अपनी सजा को अस्वीकार कर रहे हैं। लेकिन आप निर्दोष हैं, और ऐसा कष्ट आपके लिए बहुत अधिक है। आप कष्ट सहकर खुद को एक नया इंसान बनाना चाहते थे। मैं कहता हूं, बस उस दूसरे इंसान को हमेशा याद रखें, अपने पूरे जीवन और आप जहां भी जाएं; और यही आपके लिए पर्याप्त होगा। उस भारी कष्ट को अस्वीकार करने से आपको जीवन भर एक और भी बड़ा कर्तव्य महसूस होगा, और वह निरंतर भावना शायद आपको वहां जाने से भी ज्यादा एक नया इंसान बना देगी। क्योंकि वहां आप इसे सहन नहीं कर पाएंगे और पछताएंगे, और शायद अंत में कहेंगे: 'मैं बरी हो गया।' वकील इस बारे में सही था। ऐसे भारी बोझ सभी के लिए नहीं होते। कुछ लोगों के लिए तो ये असंभव होते हैं। ये मेरे विचार हैं, यदि आप इन्हें जानना चाहते हैं। “अगर तुम्हारे भागने के लिए दूसरे लोगों, अधिकारियों या सैनिकों को जवाबदेह ठहराया जाता, तो मैं तुम्हें ‘इजाज़त’ नहीं देता,” अलेयोशा मुस्कुराते हुए बोला। “लेकिन वे कहते हैं—उस जेल के अधीक्षक ने खुद इवान को बताया—कि अगर सब कुछ ठीक से संभाला गया तो कोई बड़ी जांच नहीं होगी और वे आसानी से बच निकलेंगे। बेशक, ऐसे मामले में भी रिश्वत

देना बेईमानी है, लेकिन मैं इस बारे में फैसला नहीं कर सकता, क्योंकि अगर इवान और कात्या ने मुझे तुम्हारे लिए काम करने को कहा होता, तो मुझे पता है कि मैं जाकर रिश्वत देता। मुझे तुम्हें सच बताना होगा। इसलिए मैं तुम्हारे अपने काम का फैसला नहीं कर सकता। लेकिन मैं तुम्हें यकीन दिलाता हूं कि मैं तुम्हें कभी दोषी नहीं ठहराऊंगा। और अगर मैं इस मामले में तुम्हारा न्याय करूँ तो यह अजीब बात होगी। अब मुझे लगता है कि मैंने सब कुछ बता दिया है।"
"लेकिन मैं खुद को दोषी मानता हूँ!" मित्या चिल्लाया। "मैं बच निकलूँगा, यही बात थी।"
आपसे अलग बस जाने के बाद, मित्या करामाज़ोव के पास भागने के अलावा और क्या चारा था? लेकिन मैं खुद को दोषी ठहराऊंगा, और मैं अपने पाप के लिए हमेशा प्रार्थना करूंगा। जेसुइट्स ऐसे ही बात करते हैं, है ना? ठीक वैसे ही जैसे हम कर रहे हैं?
"हां," अलेयोशा ने धीरे से मुस्कुराते हुए कहा।
मैं तुमसे इसलिए प्यार करता हूँ क्योंकि तुम हमेशा पूरी सच्चाई बोलते हो और कभी कुछ नहीं छिपाते।
"कुछ भी," मित्या ने खुशी से हंसते हुए कहा। "तो मैंने अपने अलेयोशा को धार्मिक स्वभाव का बना दिया। इसके लिए मुझे तुम्हें चूमना ही होगा। अब बाकी की बात सुनो; मैं अपने दिल का दूसरा हिस्सा तुम्हारे सामने खोल रहा हूँ। यही मैंने योजना बनाई और तय किया है। अगर मैं भाग जाऊं, चाहे मेरे पास पैसा और पासपोर्ट हो, और चाहे अमेरिका ही क्यों न चला जाऊं, तो मुझे इस बात से तसल्ली मिलेगी कि मैं मौज-मस्ती के लिए नहीं भाग रहा हूँ, खुशी के लिए नहीं, बल्कि एक और ऐसे निर्वासन में जा रहा हूँ जो शायद साइबेरिया जितना ही बुरा हो। यह उतना ही बुरा है, अलेयोशा, सच में! मुझे उस अमेरिका से नफरत है, धिक्कार है उस पर। भले ही ग्रुशा मेरे साथ होगी। उसे देखो; क्या वह अमेरिकी है? वह रूसी है, रग-रग में रूसी; उसे अपने वतन की बहुत याद आएगी, और मैं हर पल देखूंगा कि वह मेरे लिए कितना कष्ट सह रही है, उसने मेरे लिए यह बोझ उठाया है। और उसने क्या नुकसान किया है? और मैं भी वहाँ के उन बदमाशों को कैसे बर्दाश्त करूँगा, भले ही वे मुझसे बेहतर हों, उनमें से हर एक? मुझे उस अमेरिका से अभी से नफरत है!" और भले ही वे मशीनरी में माहिर हों, लेकिन उनमें से हर एक, धिक्कार है उन पर, वे मेरे जैसे नहीं हैं। मुझे रूस से प्यार है, अलेयोशा, मुझे रूसी भगवान से प्यार है, भले ही मैं खुद एक बदमाश हूँ। मैं वहाँ घुटकर मर जाऊँगा!" वह अचानक आँखों में चमक लिए बोला। उसकी आवाज़ आँसुओं से काँप रही थी। "तो मैंने यही फैसला किया है, अलेयोशा, सुनो," उसने अपनी भावनाओं पर काबू पाते हुए फिर से बोलना शुरू किया। "जैसे ही मैं ग्रुशा के साथ वहाँ पहुँचूँगा, हम तुरंत ज़मीन पर काम शुरू कर देंगे, एकांत में, किसी बहुत दूरदराज जगह पर, जंगली भालुओं के बीच। वहाँ भी कुछ दूरदराज के इलाके ज़रूर होंगे। मुझे बताया गया है कि वहाँ अभी भी रेडस्किन हैं, कहीं क्षितिज के किनारे पर। तो मोहिकन्स के आखिरी वंशजों के देश में, और वहाँ हम तुरंत व्याकरण का अध्ययन करेंगे, ग्रुशा और मैं। काम और व्याकरण—इसी तरह हम तीन साल बिताएँगे। और तब तक हम किसी भी अंग्रेज की तरह अंग्रेजी बोल सकेंगे। और जैसे ही हम इसे सीख लेंगे—अमेरिका को अलविदा!" हम अमेरिकी नागरिक बनकर रूस भागेंगे। चिंता मत करो—हम इस छोटे से कस्बे में नहीं आएंगे। हम कहीं दूर, उत्तर या दक्षिण में छिप जाएंगे। तब तक मैं बदल चुका होऊंगा, और वह भी अमेरिका में बदल जाएगी। डॉक्टर मेरे चेहरे पर किसी तरह का मस्सा बना देंगे—उनका इतना मशीनीपन करने का क्या फायदा!—या फिर मैं अपनी एक आंख फोड़ लूंगा, अपनी दाढ़ी एक गज बढ़ा लूंगा, और रूस के लिए तड़पते हुए बूढ़ा हो जाऊंगा। मुझे यकीन है कि वे हमें पहचान नहीं पाएंगे। और अगर पहचान भी लें, तो हमें साइबेरिया भेज दें। मुझे परवाह नहीं। इससे पता चल जाएगा कि यही हमारा भाग्य है। हम यहां भी, कहीं जंगल में, खेती करेंगे, और मैं जीवन भर अमेरिकी बनकर रहूंगा। लेकिन हम अपनी ही धरती पर मरेंगे। यही मेरी योजना है, और इसे बदला नहीं जाएगा। क्या आप सहमत हैं?
"हाँ," अलेयोशा ने कहा, वह उसका विरोध नहीं करना चाहता था। मित्या एक पल के लिए रुका।
एक मिनट बाद उसने अचानक कहा:
और मुकदमे के दौरान उन्होंने इसे कितना बढ़ा-चढ़ाकर पेश किया! उन्होंने इसे कितना बढ़ा-चढ़ाकर पेश किया!
"अगर उन्होंने ऐसा नहीं किया होता, तो भी आपको दोषी ठहराया जाता," उन्होंने कहा।
अलेयोशा ने आह भरते हुए कहा।
"हाँ, यहाँ लोग मुझसे तंग आ चुके हैं! भगवान उनका भला करे, लेकिन यह मुश्किल है," मित्या ने कहा।

वह दर्द से कराह उठा। फिर एक मिनट के लिए सन्नाटा छा गया।
“अलोशा, मुझे इस पीड़ा से तुरंत मुक्ति दिलाओ!” उसने अचानक कहा।
मुझे बताओ, क्या वह अब आ रही है या नहीं? मुझे बताओ? उसने क्या कहा? उसने कैसे कहा?
“उसने कहा था कि वह आएगी, लेकिन मुझे नहीं पता कि वह आएगी या नहीं।”
दिन। उसके लिए यह मुश्किल है, तुम्हें पता है ना,” अलेयोशा ने डरते हुए अपने भाई की तरफ देखा।
मुझे लगता है कि उसके लिए यह मुश्किल होगा! अलेयोशा, इससे मैं पागल हो जाऊँगा।
मेरा मन... ग्रुशा मुझे देखती रहती है। वो समझ जाती है। हे भगवान, मेरे दिल को शांत करो: मैं क्या चाहता हूँ? मैं कात्या को चाहता हूँ! क्या मैं समझ पा रहा हूँ कि मैं क्या चाहता हूँ? ये तो जिद्दी, दुष्ट करामाज़ोव की आत्मा है! नहीं, मैं कष्ट सहने लायक नहीं हूँ। मैं एक बदमाश हूँ, बस इतना ही कहा जा सकता है।
“ये रही वो!” अलेयोशा चिल्लाया।
उसी क्षण कात्या दरवाजे पर प्रकट हुई। एक पल के लिए वह खड़ी रही।
फिर भी, मित्या को स्तब्ध भाव से निहारते हुए। वह अचानक उछलकर खड़ा हो गया, और उसके चेहरे पर भय का भाव आ गया। उसका चेहरा पीला पड़ गया, लेकिन उसके होठों पर तुरंत एक दबी हुई, विनती भरी मुस्कान आ गई, और एक अनियंत्रित आवेग में उसने कात्या की ओर दोनों हाथ बढ़ा दिए। यह देखकर, वह बेतहाशा उसकी ओर दौड़ी। उसने उसके हाथ पकड़ लिए, और लगभग जबरदस्ती उसे बिस्तर पर बिठा दिया। वह उसके बगल में बैठ गई, और उसके हाथों को पकड़े हुए ही उन्हें ज़ोर से दबाने लगी। कई बार दोनों ने बोलने की कोशिश की, लेकिन रुक गए और फिर एक अजीब सी मुस्कान के साथ एक-दूसरे को निहारने लगे, उनकी आँखें एक-दूसरे पर टिकी हुई थीं। इस तरह दो मिनट बीत गए।
“क्या तुमने मुझे माफ कर दिया?” मित्या आखिरकार लड़खड़ाते हुए बोला, और उसी क्षण
अलेयोशा की ओर मुड़ते हुए, उसका चेहरा खुशी से चमक रहा था, उसने चिल्लाकर कहा, "क्या तुम सुन रहे हो कि मैं क्या पूछ रहा हूँ, क्या तुम सुन रहे हो?"
“मैं तुम्हें इसीलिए प्यार करता था, क्योंकि तुम दिल से उदार हो!”
कात्या ने कहा, “मेरी क्षमा तुम्हारे लिए न तो अच्छी है, न ही तुम्हारी मेरे लिए; चाहे तुम मुझे क्षमा करो या न करो, तुम हमेशा मेरे दिल में एक दर्द की तरह रहोगे, और मैं तुम्हारे दिल में—ऐसा ही होना चाहिए...” वह सांस लेने के लिए रुकी। “मैं किसलिए आई हूँ?” उसने घबराहट भरी जल्दबाजी में फिर से कहना शुरू किया: “तुम्हारे पैरों को गले लगाने के लिए, तुम्हारे हाथों को इस तरह दबाने के लिए, जब तक दर्द न हो—तुम्हें याद है मॉस्को में मैं उन्हें कैसे दबाती थी—तुम्हें फिर से यह बताने के लिए कि तुम मेरे भगवान हो, मेरी खुशी हो, तुम्हें यह बताने के लिए कि मैं तुमसे बेइंतहा प्यार करती हूँ,” वह पीड़ा में कराह उठी, और अचानक लालच से उसका हाथ अपने होठों से लगा लिया। उसकी आँखों से आँसू बहने लगे। अलेयोशा अवाक और स्तब्ध खड़ा रहा; उसने कभी ऐसी कल्पना नहीं की थी।
“प्यार खत्म हो गया है, मित्या!” कात्या ने फिर से कहना शुरू किया, “लेकिन अतीत अभी भी बहुत प्यारा है, जिसे दिल में बहुत दर्द होता है।”
मेरे लिए। जान लो कि तुम हमेशा मेरे लिए ऐसे ही रहोगे। लेकिन अब एक पल के लिए मान लो कि जो हो सकता था वो सच हो जाए,” वो लड़खड़ाती हुई बोली, एक बनावटी मुस्कान के साथ, फिर से खुशी से उसके चेहरे की ओर देखते हुए। “तुम किसी और औरत से प्यार करते हो, और मैं किसी और मर्द से, फिर भी मैं तुम्हें हमेशा प्यार करूंगी, और तुम भी मुझे प्यार करोगे; क्या तुम जानते हो? क्या तुम सुन रहे हो? मुझे प्यार करो, मुझे अपनी पूरी जिंदगी प्यार करो!” वो लगभग धमकी भरे लहजे में चिल्लाई।
“मैं तुमसे प्यार करूंगा, और... क्या तुम जानती हो, कात्या?” मित्या ने शुरू किया, एक रेखा खींचते हुए। हर शब्द पर गहरी सांस लेते हुए, "क्या तुम्हें पता है, पांच दिन पहले, उसी शाम, मैंने तुमसे प्यार किया था... जब तुम गिर पड़ीं और तुम्हें बाहर ले जाया गया... मेरे पूरे जीवन भर! ऐसा ही होगा, ऐसा ही हमेशा रहेगा..." इसलिए वे आपस में बेतहाशा, लगभग अर्थहीन, शब्द बुदबुदाने लगे।
शायद यह सच भी न हो, लेकिन उस क्षण यह सब सच था, और वे दोनों अपनी कही हुई बातों पर पूरी तरह से विश्वास करते थे।
“कात्या,” मित्या अचानक चिल्लाई, “क्या तुम्हें विश्वास है कि मैंने उसकी हत्या की है? मुझे पता है

आपको अभी इस पर विश्वास नहीं है, लेकिन तब... जब आपने सबूत दिए थे... यकीनन, यकीनन आपको इस पर विश्वास नहीं था!
“मुझे तब भी इस पर विश्वास नहीं हुआ था। मैंने कभी इस पर विश्वास नहीं किया। मैं तुमसे नफरत करती थी, और
एक पल के लिए मैंने खुद को यकीन दिला दिया। गवाही देते समय मैंने खुद को यकीन दिलाया और उस पर विश्वास भी किया, लेकिन बोलते-बोलते ही मैंने उस पर विश्वास करना छोड़ दिया। इस बात पर शक मत करो! मैं भूल गई थी कि मैं यहाँ खुद को सज़ा देने आई थी,” उसने अपनी आवाज़ में एक नए भाव के साथ कहा, जो कुछ पल पहले के उसके स्नेहपूर्ण लहजे से बिल्कुल अलग था।
"हे स्त्री, तेरा बोझ बहुत भारी है," ये शब्द मानो अनायास ही फूट पड़े।
मित्या।
“मुझे जाने दो,” उसने फुसफुसाते हुए कहा। “मैं फिर आऊंगी। यह मेरे बस से बाहर है।”
अब।"
वह अपनी जगह से उठ रही थी, लेकिन अचानक जोर से चीख पड़ी।
और लड़खड़ाकर पीछे हट गई। ग्रुशेंका अचानक और चुपचाप कमरे में दाखिल हुई। किसी ने भी उसकी उम्मीद नहीं की थी। कात्या तेजी से दरवाजे की ओर बढ़ी, लेकिन जब वह ग्रुशेंका के पास पहुंची, तो वह अचानक रुक गई, उसका चेहरा सफेद पड़ गया और वह लगभग फुसफुसाते हुए धीरे से कराह उठी:
"क्षमा चाहता हूँ!"
ग्रुशेंका ने उसे घूरकर देखा और एक पल के लिए रुककर, प्रतिशोध की भावना से,
विषैली आवाज ने उत्तर दिया:
“हम नफरत से भरे हुए हैं, मेरी बच्ची, तुम और मैं! हम दोनों नफरत से भरे हुए हैं!
काश हम एक दूसरे को क्षमा कर पाते! उसे बचा लो, और मैं जीवन भर तुम्हारी पूजा करूंगा।
“तुम उसे माफ नहीं करोगी!” मित्या ने घबराकर फटकारा। “चिंता मत करो, मैं उसे तुम्हारे लिए बचा लूंगी!”
कात्या ने फुसफुसाते हुए कहा, और
वह कमरे से बाहर भाग गई।
और जब वह आपसे माफी मांगे तो आप उसे माफ करने से इनकार कर सकते हैं।
"खुद से?" मित्या ने फिर से कड़वाहट से कहा।
“मित्या, उसे दोष देने की हिम्मत मत करो; तुम्हें ऐसा करने का कोई अधिकार नहीं है!” अलेयोशा चिल्लाया। गरमागरम तरीके से।
“उसके गर्व से भरे होंठ बोल रहे थे, उसका दिल नहीं,” ग्रुशेंका ने एक खास लहजे में कहा।
घृणा से। "अगर वह तुम्हें बचा लेती है तो मैं उसे सब कुछ माफ कर दूंगा..."
वह चुप हो गई, मानो कुछ दबा रही हो। वह बोल नहीं पा रही थी।
फिर भी उसने खुद को संभाल लिया। बाद में पता चला कि वह गलती से अंदर आ गई थी, उसे इस बात का जरा भी अंदाजा नहीं था कि उसका सामना किससे होगा।
“अलोशा, उसके पीछे भागो!” मित्या अपने भाई से चिल्लाया; “उसे बताओ... मैं नहीं जानता।”
जान लो... उसे इस तरह जाने मत दो!
“मैं सूर्यास्त के समय फिर तुम्हारे पास आऊंगा,” अलेयोशा ने कहा और वह उसके पीछे दौड़ पड़ा।
कात्या। अस्पताल परिसर के बाहर उसने उसे पकड़ लिया। वह तेज़ी से चल रही थी, लेकिन जैसे ही अलेयोशा उसके पास पहुँचा, उसने जल्दी से कहा:
“नहीं, उस औरत के सामने मैं खुद को सजा नहीं दे सकता! मैंने उससे माफी मांग ली है।”
क्योंकि मैं खुद को अंत तक कड़ी सजा देना चाहती थी। वह मुझे माफ नहीं करेगी... मुझे वह इसी वजह से पसंद है!” उसने बनावटी स्वर में कहा, और उसकी आँखों में तीव्र आक्रोश झलक रहा था।
“मेरे भाई को इसकी ज़रा भी उम्मीद नहीं थी,” अलेयोशा ने बुदबुदाते हुए कहा। “वह
मुझे पूरा यकीन था कि वह नहीं आएगी...
“इसमें कोई शक नहीं। चलो इसे छोड़ देते हैं,” उसने झल्लाकर कहा। “सुनो: मैं तुम्हारे साथ नहीं जा सकती।”

अब अंतिम संस्कार के लिए चलते हैं। मैंने उन्हें फूल भेज दिए हैं। मुझे लगता है उनके पास अभी भी पैसे हैं। अगर ज़रूरत पड़े तो उन्हें बता देना कि मैं उन्हें कभी नहीं छोड़ूंगा... अब मुझे अकेला छोड़ दो, कृपया। तुम पहले ही देर कर चुके हो—अंतिम संस्कार की घंटियाँ बज रही हैं... मुझे अकेला छोड़ दो, कृपया!

अध्याय 3

इलूशा का अंतिम संस्कार। अंतिम संस्कार में दिया गया भाषण।
पत्थर

वह सचमुच देर से आया था। सब उसका इंतज़ार कर रहे थे और उन्होंने पहले ही तय कर लिया था कि वे उसके बिना ही फूलों से सजे सुंदर छोटे ताबूत को गिरजाघर ले जाएँगे। यह बेचारे छोटे इलुशा का ताबूत था। मित्या को सज़ा सुनाए जाने के दो दिन बाद उसकी मृत्यु हो गई थी। घर के द्वार पर अलेयोशा का स्वागत लड़कों के जयकारे से हुआ, जो इलुशा के सहपाठी थे। वे सब बेसब्री से उसका इंतज़ार कर रहे थे और उसे देखकर बहुत खुश थे। वे लगभग बारह थे, सभी के कंधों पर उनके स्कूल के थैले या बैग थे। मरते समय इलुशा ने उनसे कहा था, "पिता रोएँगे, पिता के साथ रहो," और लड़कों को यह बात याद थी। कोलिया क्रासोटकिन उनमें सबसे आगे था।
“कितनी खुशी की बात है कि तुम आ गए, करामाज़ोव!” उसने चिल्लाते हुए अपना हाथ आगे बढ़ाया। अलेयोशा को हाथ बढ़ाते हुए, “यहाँ का हाल बहुत बुरा है। इसे देखना वाकई भयानक है। स्नेगिरिओव नशे में नहीं है, हमें पक्का पता है कि उसने आज कुछ नहीं पिया है, लेकिन वह ऐसा लग रहा है जैसे नशे में हो... मैं हमेशा से मर्दाना रहा हूँ, लेकिन यह बहुत बुरा है। करामाज़ोव, अगर मैं आपको रोक नहीं रहा हूँ, तो अंदर जाने से पहले एक सवाल?”
“क्या बात है, कोल्या?” अलेयोशा ने कहा।
“क्या तुम्हारा भाई निर्दोष है या दोषी? क्या उसने तुम्हारे पिता की हत्या की थी या...?”
क्या वैलेट? जैसा आप कह रहे हैं, वैसा ही होगा। मैं इसके बारे में सोचते-सोचते पिछली चार रातों से सो नहीं पाया हूँ।
“नौकर ने उसे मार डाला, मेरा भाई निर्दोष है,” अलेयोशा ने उत्तर दिया। “मैंने भी यही कहा था,” स्मुरोव चिल्लाया।
“तो वह एक निर्दोष शिकार बनकर मरेगा!” कोल्या ने कहा; “हालांकि वह
बर्बाद हो गया, फिर भी खुश है! मुझे उससे ईर्ष्या हो रही है!
“तुम्हारा क्या मतलब है? तुम ऐसा कैसे कर सकते हो? क्यों?” अलेयोशा ने हैरानी से कहा। “काश, मैं भी किसी दिन सत्य के लिए खुद को कुर्बान कर पाता!” कोल्या ने कहा।
उत्साह से।
“लेकिन ऐसे मकसद में नहीं, इतनी बदनामी और इतने खौफ के साथ नहीं!”
अलोशा।
“बेशक... मैं पूरी मानवता के लिए मरना चाहूंगा, और बदनामी की मुझे कोई परवाह नहीं—भले ही हमारे नाम मिट जाएं। मैं आपके भाई का सम्मान करता हूं!”
“और मैं भी!” उस लड़के ने कहा, जिसने कभी दावा किया था कि वह जानता है कि किसने
ट्रॉय की स्थापना करने वाले व्यक्ति ने अचानक और अप्रत्याशित रूप से रोते हुए कहा, और वह उस अवसर की तरह ही एक खिले हुए फूल की तरह अपने कानों तक लाल हो गया।
अलियोशा कमरे में गया। इलूशा हाथ जोड़े लेटा हुआ था।

नीले ताबूत में, जिसके चारों ओर सफेद झालर लगी थी, उसकी आँखें बंद थीं। उसका पतला चेहरा लगभग अपरिवर्तित था, और आश्चर्य की बात यह थी कि शव से सड़न की कोई गंध नहीं आ रही थी। उसके चेहरे पर गंभीर और मानो चिंतनशील भाव थे। छाती पर रखे उसके हाथ विशेष रूप से सुंदर लग रहे थे, मानो संगमरमर में तराशे गए हों। उसके हाथों में फूल थे और ताबूत अंदर और बाहर से फूलों से सजा हुआ था, जो सुबह-सुबह लिसे होहलाकोव ने भेजे थे। लेकिन कैटेरीना इवानोवना की ओर से भी फूल थे, और जब अलेयोशा ने दरवाजा खोला, तो कप्तान के कांपते हाथों में फूलों का एक गुच्छा था और वह उन्हें अपने प्यारे बेटे पर फिर से बिखेर रहा था। अंदर आते ही उसने अलेयोशा की ओर मुश्किल से ही देखा, और वह किसी की ओर नहीं देख रहा था, यहाँ तक कि अपनी पागल रोती हुई पत्नी, "मम्मा" की ओर भी नहीं, जो अपने लंगड़े पैरों पर खड़े होकर अपने मृत बेटे को करीब से देखने की कोशिश कर रही थी। नीना को लड़कों ने उसकी कुर्सी पर धकेल कर ताबूत के पास ला दिया था। वह अपना सिर उस पर टिकाकर बैठी थी और निस्संदेह चुपचाप रो रही थी। स्नेगिरिओव का चेहरा उत्सुक, फिर भी उलझन और झुंझलाहट से भरा हुआ लग रहा था। उसके हाव-भाव और उसके मुंह से निकले शब्दों में कुछ पागलपन सा था। "बूढ़े आदमी, प्यारे बूढ़े आदमी!" वह हर पल इलुशा को देखते हुए कहता था। जीवित रहते हुए इलुशा को स्नेह से "बूढ़ा आदमी" कहना उसकी आदत थी।
“पिताजी, मुझे भी एक फूल दीजिए; उसके हाथ से वह सफेद फूल ले लीजिए और
“मुझे दे दो,” पागल माँ गिड़गिड़ाते हुए बोली। शायद इलुशा के हाथ में मौजूद छोटा सा सफेद गुलाब उसे भा गया था या फिर वो उसकी याद में उसके हाथ से एक गुलाब रखना चाहती थी, इसलिए वो बेचैनी से फूल पाने के लिए अपने हाथ फैला रही थी।
“मैं इसे किसी को नहीं दूंगा, मैं तुम्हें कुछ भी नहीं दूंगा,” स्नेगिरिव रोते हुए बोला।
निर्दयता से। “ये उसके फूल हैं, तुम्हारे नहीं! सब कुछ उसका है, तुम्हारा कुछ नहीं!”
“पिताजी, माँ को फूल दीजिए!” नीना ने अपना चेहरा ऊपर उठाते हुए कहा, जो फूलों से भीगा हुआ था। आँसू।
मैं कुछ भी नहीं बताऊंगी और उसे तो और भी कम बताऊंगी! उसने नहीं बताया।
"मैं इलुशा से प्यार करता था। उसने उसकी छोटी तोप छीन ली और उसने उसे दे दी," कप्तान यह सोचकर फूट-फूटकर रोने लगा कि इलुशा ने अपनी तोप अपनी माँ को दे दी थी। बेचारी पागल सी दिखने वाली वह लड़की चुपचाप आँसू बहा रही थी और अपना चेहरा हाथों में छिपाए बैठी थी।
लड़कों ने देखा कि पिता ताबूत नहीं छोड़ेंगे और यह
जब इसे करने का समय आया, तो वे इसके चारों ओर एक तंग घेरे में खड़े हो गए और इसे उठाना शुरू कर दिया।
“मैं नहीं चाहता कि उसे कब्रिस्तान में दफनाया जाए,” स्नेगिरिओव विलाप करते हुए बोला।
अचानक; “मैं उसे पत्थर के पास, हमारे पत्थर के पास दफनाऊँगा! इलुशा ने मुझे ऐसा करने को कहा था। मैं उसे बाहर ले जाने नहीं दूँगा!”
वह पिछले तीन दिनों से कह रहा था कि वह उसे दफना देगा।
पत्थर, लेकिन अलेयोशा, क्रासोटकिन, मकान मालकिन, उसकी बहन और सभी लड़कों ने दखल दिया।
“क्या विचार है, उसे किसी अपवित्र पत्थर के पास दफना देना, मानो उसे फांसी दी गई हो।”
“खुद!” बूढ़ी मकान मालकिन ने सख्ती से कहा। “वहाँ कब्रिस्तान में ज़मीन पर निशान लगा दिया गया है। वहाँ उसके लिए प्रार्थना की जाएगी। चर्च में भजन सुनाई देते हैं और पादरी इतनी स्पष्टता और शब्दों में पाठ करते हैं कि वह हर बार उस तक पहुँचेगा जैसे कि उसकी कब्र पर पढ़ा जा रहा हो।”
अंत में कप्तान ने निराशा का भाव दिखाते हुए ऐसा इशारा किया मानो कह रहा हो, "ले लो
उसे जहाँ चाहो वहाँ रख दो।” लड़कों ने ताबूत उठाया, लेकिन माँ के पास से गुज़रते हुए वे एक पल के लिए रुके और उसे नीचे रख दिया ताकि वह इलुशा को अलविदा कह सके। लेकिन उस प्यारे से नन्हे चेहरे को देखकर, जिसे उसने पिछले तीन दिनों से केवल दूर से ही देखा था, वह पूरी तरह काँप उठी और उसका सफ़ेद सिर ताबूत के ऊपर रुक-रुक कर फड़कने लगा।
“माँ, उस पर क्रॉस का चिन्ह बनाओ, उसे अपना आशीर्वाद दो।”

“उसे चूम लो,” नीना ने रोते हुए उससे कहा। लेकिन उसका सिर अब भी किसी मशीन की तरह फड़फड़ा रहा था और गहरे शोक से उसका चेहरा विकृत हो गया था। वह बिना कुछ कहे अपनी मुट्ठी से अपनी छाती पीटने लगी। वे ताबूत को उसके पास से ले गए। ताबूत को ले जाते समय नीना ने आखिरी बार अपने भाई के होंठों को छुआ। जब अलेयोशा घर से बाहर निकला तो उसने मकान मालकिन से पीछे रह गए लोगों का ख्याल रखने की विनती की, लेकिन उसने उसकी बात पूरी होने से पहले ही उसे रोक दिया।
“हाँ, मैं उनके साथ ही रहूँगी, हम भी ईसाई हैं।” बूढ़ी औरत ने कहा।
यह कहते हुए वह रोने लगी।
उन्हें ताबूत को चर्च तक ज्यादा दूर नहीं ले जाना था, तीन किलोमीटर से ज्यादा नहीं।
सौ कदम। दिन एकदम शांत और साफ था, हल्की ठंड पड़ रही थी। चर्च की घंटियाँ अभी भी बज रही थीं। स्नेगिरिओव अपने छोटे पुराने ग्रीष्मकालीन ओवरकोट में, सिर खुला रखकर और हाथ में अपनी मुलायम, पुरानी, चौड़ी किनारी वाली टोपी लिए, ताबूत के पीछे बेचैनी और व्याकुलता से दौड़ रहा था। वह घबराया हुआ और चिंतित लग रहा था। एक पल वह ताबूत के सिर को सहारा देने के लिए हाथ बढ़ाता और उठाने वालों को ही रोकता, दूसरे पल वह उसके साथ-साथ दौड़ता और वहाँ अपने लिए जगह बनाने की कोशिश करता। बर्फ पर एक फूल गिरा और वह उसे उठाने के लिए ऐसे दौड़ा मानो दुनिया की हर चीज उस फूल के गिरने पर निर्भर हो।
“और रोटी का ऊपरी भाग, हम ऊपरी भाग को भूल ही गए!” वह अचानक चिल्लाया।
निराशा। लेकिन लड़कों ने तुरंत उसे याद दिलाया कि उसने रोटी का टुकड़ा पहले ही ले लिया था और वह उसकी जेब में था। उसने तुरंत उसे बाहर निकाला और उसे तसल्ली मिली।
“इलुशा ने मुझे ऐसा करने को कहा था, इलुशा,” उसने तुरंत अलेयोशा को समझाया। “मैं था
एक रात मैं उनके पास बैठा था और अचानक उन्होंने मुझसे कहा: “पिताजी, जब मेरी कब्र भर जाए तो उस पर रोटी का एक टुकड़ा तोड़कर रख देना ताकि गौरैया नीचे उड़कर आ सकें, मैं सुनूंगा और यह सुनकर मुझे तसल्ली मिलेगी कि मैं अकेला नहीं लेटा हूँ।”
“यह अच्छी बात है,” अलेयोशा ने कहा, “हमें अक्सर कुछ न कुछ लेना ही पड़ता है।”
“हर दिन, हर दिन!” कप्तान ने जल्दी से कहा, मानो वह इस बात से खुश हो।
सोचा।
अंततः वे गिरजाघर पहुंचे और ताबूत को उसके बीचोंबीच रख दिया।
लड़के उसके चारों ओर जमा हो गए और पूरी प्रार्थना सभा के दौरान श्रद्धापूर्वक खड़े रहे। यह एक पुराना और काफी जर्जर गिरजाघर था। कई प्रतिमाओं में फ्रेम नहीं लगे थे; लेकिन प्रार्थना के लिए ऐसे गिरजाघर ही सबसे अच्छे होते हैं। प्रार्थना के दौरान स्नेगिरिओव कुछ शांत हो गए, हालांकि बीच-बीच में उन्हें वही अचेतन और मानो असंगत चिंता के दौरे पड़ते रहे। एक क्षण वे ताबूत के पास गए ताकि उसका ढक्कन या माला ठीक कर सकें, तभी मोमबत्ती स्टैंड से गिर गई और वे उसे वापस रखने के लिए दौड़े। काफी देर तक वे उसे इधर-उधर खुजाते रहे, फिर शांत हो गए और ताबूत के पास खाली बेचैनी और उलझन भरे भाव से खड़े रहे। पत्री के बाद उन्होंने अचानक अपने बगल में खड़े अलेयोशा से फुसफुसाकर कहा कि पत्री ठीक से नहीं पढ़ी गई, लेकिन उन्होंने इसका अर्थ नहीं बताया। "करूबों की तरह" प्रार्थना के दौरान वे गाने में शामिल हुए, लेकिन अंत तक नहीं गाए। घुटनों के बल गिरकर उन्होंने अपना माथा पत्थर के फर्श पर टिका दिया और काफी देर तक उसी स्थिति में लेटे रहे।
अंततः अंतिम संस्कार की रस्म हुई और मोमबत्तियाँ बांटी गईं।
विचलित पिता फिर से बेचैन होने लगे, लेकिन भावपूर्ण और प्रभावशाली अंतिम संस्कार की प्रार्थनाओं ने उनकी आत्मा को झकझोर कर रख दिया। वे अचानक सिकुड़ गए और तेजी से, छोटे-छोटे सिसकियों में फूट पड़े, जिन्हें उन्होंने पहले दबाने की कोशिश की, लेकिन अंत में वे जोर-जोर से रोने लगे। जब वे मृतक को विदाई देने और ताबूत बंद करने लगे, तो उन्होंने अपने हाथ ऐसे फैला दिए मानो वे इलुशा को ढकने नहीं देना चाहते थे, और अपने मृत पुत्र के होठों को लालच से और लगातार चूमने लगे। अंत में वे उन्हें सीढ़ी से हटने के लिए मनाने में सफल हुए, लेकिन अचानक उन्होंने आवेग में आकर अपना हाथ बढ़ाया और ताबूत से कुछ फूल उठा लिए। उन्होंने फूलों को देखा और मानो उनके मन में कोई नया विचार आया हो, जिससे वे एक पल के लिए अपना दुःख भूल गए। धीरे-धीरे वे गहरी सोच में डूबते चले गए और जब ताबूत को उठाकर कब्र तक

ले जाया गया तो उन्होंने कोई विरोध नहीं किया। यह चर्च के पास स्थित कब्रिस्तान में एक महंगी कब्र थी, जिसका भुगतान कटेरीना इवानोव्ना ने किया था। रीति-रिवाजों के बाद कब्र खोदने वालों ने ताबूत को नीचे उतारा। स्नेगिरिओव अपने हाथों में फूल लिए खुली कब्र पर इतना झुक गया कि लड़के घबराकर उसका कोट पकड़कर उसे पीछे खींच लाए। उसे पूरी तरह समझ नहीं आ रहा था कि क्या हो रहा है। जब कब्र भरने का काम शुरू हुआ, तो उसने अचानक चिंता से गिरती हुई मिट्टी की ओर इशारा किया और कुछ कहने की कोशिश करने लगा, लेकिन कोई भी उसकी बात समझ नहीं पाया और वह अचानक रुक गया। फिर उसे याद आया कि उसे रोटी तोड़नी है और वह बहुत उत्साहित हो गया, रोटी उठाई और उसे तोड़कर टुकड़े-टुकड़े करने लगा और उन्हें कब्र पर फेंकने लगा।
"आओ, नीचे उड़ो, पक्षियों, नीचे उड़ो, गौरैयों!" वह चिंतित होकर बुदबुदाया। लड़कों में से एक ने देखा कि उसके लिए उसे तोड़ना अटपटा लग रहा था।
उसके हाथों में फूल थे और उसने रोटी के टुकड़े थे। उसने सुझाव दिया कि वह उन्हें किसी को कुछ देर के लिए पकड़ने को दे दे। लेकिन उसने ऐसा नहीं किया और सचमुच अचानक अपने फूलों को लेकर चिंतित हो गया, मानो फूल उससे छीन लेना चाहते हों। कब्र को देखने के बाद, और मानो यह सुनिश्चित करने के बाद कि सब कुछ हो चुका है और रोटी चूर्णित हो चुकी है, वह अचानक, सभी को आश्चर्यचकित करते हुए, बड़े शांत भाव से मुड़ा और घर की ओर चल पड़ा। लेकिन उसके कदम और तेज़ होते गए, वह लगभग दौड़ने लगा। लड़के और अलेयोशा उसके साथ-साथ चलते रहे।
"ये फूल माँ के लिए हैं, ये फूल माँ के लिए हैं! मैं निर्दयी था।"
"मम्मी को," वह अचानक चिल्लाने लगा।
किसी ने उसे टोपी पहनने के लिए कहा क्योंकि ठंड थी। लेकिन उसने टोपी फेंक दी।
स्नेगिरिओव गुस्से में बर्फ में पड़ी टोपी को ऐसे पकड़े हुए था जैसे कह रहा हो, "मुझे टोपी नहीं चाहिए, मुझे टोपी नहीं चाहिए।" स्मुरोव ने टोपी उठाई और उसे अपने पीछे ले गया। सभी लड़के रो रहे थे, और कोल्या और वह लड़का जिसने ट्रॉय के बारे में पता लगाया था, सबसे ज़्यादा रो रहे थे। हालाँकि स्मुरोव भी कप्तान की टोपी हाथ में लिए ज़ोर-ज़ोर से रो रहा था, फिर भी दौड़ते हुए उसने रास्ते की बर्फ पर पड़ी लाल ईंट का एक टुकड़ा उठाया और उड़ते हुए गौरैयों के झुंड पर फेंक दिया। ज़ाहिर है, निशाना चूक गया और वह दौड़ते हुए रोता रहा। आधे रास्ते में, स्नेगिरिओव अचानक रुक गया, आधे मिनट तक ऐसे खड़ा रहा जैसे किसी चीज़ ने उसे चोट पहुँचाई हो, और अचानक गिरजाघर की ओर मुड़कर सुनसान कब्र की ओर भागा। लेकिन लड़कों ने तुरंत उसे पकड़ लिया और चारों ओर से जकड़ लिया। फिर वह बर्फ पर बेबस होकर गिर पड़ा जैसे उसे किसी ने धक्का दे दिया हो, और छटपटाते, सिसकती और विलाप करती हुई चिल्लाने लगी, "इलुशा, बूढ़े आदमी, प्यारे बूढ़े आदमी!" अलोशा और कोलिया ने उसे शांत करने और समझाने की कोशिश करते हुए उसे उठाने का प्रयास किया।
"कैप्टन, छोड़ दो, एक बहादुर आदमी को धैर्य दिखाना चाहिए," कोल्या ने बुदबुदाते हुए कहा। "तुम फूलों को खराब कर दोगे," अलेयोशा ने कहा, "और माँ गर्भवती है।"
वो वहाँ बैठकर रो रही है क्योंकि तुमने उसे पहले कुछ नहीं दिया था। इलूशा का छोटा सा बिस्तर अभी भी वहीं है...
"जी हां, मां!" स्नेगिरिओव को अचानक याद आया, "वे ले जाएंगे।"
"बिस्तर हटाओ, वे उसे ले जाएँगे," उसने घबराते हुए कहा, मानो उसे सच में डर लग रहा हो कि वे ऐसा कर देंगे। वह उछलकर खड़ा हुआ और फिर घर की ओर भागा। लेकिन घर ज़्यादा दूर नहीं था और वे सब एक साथ पहुँच गए। स्नेगिरिव ने जल्दी से दरवाज़ा खोला और अपनी पत्नी को पुकारा, जिससे उसने कुछ देर पहले ही इतनी बेरहमी से झगड़ा किया था:
"माँ, मेरी प्यारी अपाहिज बच्ची, इलुशा ने तुम्हारे लिए ये फूल भेजे हैं," उसने कहा।
बर्फ में संघर्ष करते समय जम कर टूट चुके फूलों का एक छोटा गुच्छा उसे देते हुए वह रो पड़ा। लेकिन उसी क्षण उसकी नज़र कोने में, छोटे से पलंग के पास, इलुशा के छोटे जूते पर पड़ी, जिन्हें मकान मालकिन ने बड़े करीने से एक तरफ रखा था। पुराने, पैबंद लगे, जंग लगे और कड़े जूतों को देखकर वह उछल पड़ा और उनकी ओर दौड़ा, घुटनों के बल गिर पड़ा, एक जूता उठाया और उसे अपने होठों से लगाकर लालच से चूमने लगा, रोते हुए बोला, "इलुशा, बूढ़े आदमी, प्यारे बूढ़े आदमी, तुम्हारे छोटे पैर कहाँ हैं?"

“तुम उसे कहाँ ले गए हो? तुम उसे कहाँ ले गए हो?”
पागल व्यक्ति दिल दहला देने वाली आवाज़ में रोया। नीना भी फूट-फूट कर रोने लगी। कोल्या कमरे से बाहर भागा, लड़के उसके पीछे-पीछे गए। अंत में अलेयोशा भी बाहर चला गया।
“उन्हें रोने दो,” उसने कोल्या से कहा, “उन्हें सांत्वना देने का कोई फायदा नहीं है।”
अभी बस। चलिए एक मिनट रुकते हैं और फिर वापस आते हैं।
“नहीं, इसका कोई फायदा नहीं, यह बहुत बुरा है,” कोल्या ने सहमति जताई। “क्या तुम जानते हो,
“करामाज़ोव,” उन्होंने अपनी आवाज़ इतनी धीमी कर ली कि कोई उन्हें सुन न सके, “मुझे बहुत दुख हो रहा है, और अगर उन्हें वापस लाना संभव होता, तो मैं इसके लिए दुनिया की कोई भी चीज़ दे देता।”
“हाँ, मैं भी ऐसा ही करता,” अलेयोशा ने कहा।
“कारामाज़ोव, तुम्हारा क्या ख्याल है? क्या हमें यहाँ वापस आना चाहिए?”
रात में? वह नशे में होगा, तुम्हें पता है।
“शायद वो मान जाए। हम सब मिलकर काम करें, तुम और मैं, इतना ही काफी होगा।”
“मां और नीना के साथ एक घंटा बिताने के लिए। अगर हम सब एक साथ आएंगे तो हम उन्हें सब कुछ फिर से याद दिला देंगे,” अलेयोशा ने सुझाव दिया।
“मकान मालकिन अब उनके लिए मेज सजा रही है—वहाँ अंतिम संस्कार होगा।”
रात का खाना या कुछ और, पादरी आ रहे हैं; क्या हम वापस उस पर चलें, करामाज़ोव?
“बिल्कुल,” अलेयोशा ने कहा।
“यह सब कितना अजीब है, करामाज़ोव, इतना दुख और फिर उसके बाद पैनकेक।”
हमारे धर्म में यह सब कुछ बहुत अस्वाभाविक लगता है।
“वहाँ सैल्मन मछली भी होगी,” यह बात उस लड़के ने कही जिसने इसका पता लगाया था।
ट्रॉय ने ऊँची आवाज़ में कहा।
“मैं आपसे अत्यंत विनम्रतापूर्वक विनती करता हूँ, कार्तशोव, कि आप फिर कभी अपने भाषण से हस्तक्षेप न करें।”
"बेवकूफी भरी बातें, खासकर तब जब कोई आपसे बात नहीं कर रहा हो और उसे इस बात की परवाह भी न हो कि आप मौजूद हैं या नहीं!" कोल्या ने चिढ़कर कहा। लड़का शर्म से लाल हो गया लेकिन जवाब देने की हिम्मत नहीं कर पाया।
इसी बीच वे धीरे-धीरे रास्ते पर टहल रहे थे और अचानक
स्मुरोव ने हैरानी से कहा:
“ये रहा इलूशा का पत्थर, जिसके नीचे वे उसे दफनाना चाहते थे।” वे सब उस बड़े पत्थर के पास स्थिर खड़े हो गए। अलेयोशा ने देखा और पूरा
स्नेगिरिओव ने उस दिन जो कुछ बताया था, उसकी तस्वीर तुरंत उसकी कल्पना में उभर आई - कैसे इलूशा रोते हुए अपने पिता को गले लगाकर चिल्लाया था, "पिताजी, पिताजी, उन्होंने आपका कितना अपमान किया।" मानो उसकी आत्मा में अचानक एक आवेग उत्पन्न हुआ हो। गंभीर और भावुक भाव से उसने इलूशा के सहपाठियों के एक-एक करके उज्ज्वल और प्रसन्न चेहरों को देखा और अचानक उनसे कहा:
“बच्चों, मैं तुमसे यहीं पर एक बात कहना चाहता हूँ।” बच्चे उसके चारों ओर खड़े हो गए और तुरंत ध्यान से, उत्सुकता से देखने लगे।
उस पर।
“लड़कों, हम जल्द ही अलग हो जाएंगे। मैं कुछ समय के लिए अपने दो बच्चों के साथ रहूंगी।
भाई, जिनमें से एक साइबेरिया जा रहा है और दूसरा मृत्यु के कगार पर है। लेकिन जल्द ही मैं इस शहर को छोड़ दूंगा, शायद लंबे समय के लिए, इसलिए हम बिछड़ जाएंगे। आइए, इलूशा के पत्थर पर यहीं एक प्रतिज्ञा करें कि हम इलूशा और एक-दूसरे को कभी नहीं भूलेंगे। और जीवन में आगे जो भी हो, चाहे हम बीस साल तक न मिलें, फिर भी हमेशा याद रखें कि हमने उस बेचारे लड़के को कैसे दफनाया था जिस पर हमने कभी पत्थर फेंके थे, याद है, पुल के पास? और बाद में हम सभी उससे बहुत प्यार करने लगे थे। वह एक नेक लड़का था, दयालु, बहादुर लड़का, उसे अपने पिता के सम्मान की परवाह थी और उसने उनके साथ हुए क्रूर अपमान का कत्ल किया और उनके लिए खड़ा हुआ। इसलिए, सबसे पहले, हम उसे याद रखेंगे, लड़कों,

जीवन भर। और चाहे हम सबसे महत्वपूर्ण कामों में व्यस्त हो जाएं, चाहे हमें सम्मान मिले या हम किसी बड़ी विपत्ति में पड़ जाएं—फिर भी याद रखें कि एक समय यहाँ कितना अच्छा था, जब हम सब साथ थे, एक अच्छे और दयालु भाव से एकजुट थे जिसने हमें, उस बेचारे लड़के से प्यार करते हुए, शायद आज से बेहतर बना दिया था। मेरी प्यारी बत्तखों—मैं तुम्हें यही कहूँगी, क्योंकि इस समय जब मैं तुम्हारे प्यारे चेहरों को देख रही हूँ, तो तुम बिल्कुल उन सुंदर नीली चिड़ियों जैसी लग रही हो। मेरे प्यारे बच्चों, शायद तुम मेरी बातें न समझ पाओ, क्योंकि मैं अक्सर अस्पष्ट बोलती हूँ, लेकिन तुम इसे याद रखोगे और एक दिन मेरी बातों से सहमत हो जाओगे। तुम्हें यह जानना चाहिए कि अच्छी यादों से बढ़कर, विशेषकर बचपन की, घर की यादों से बढ़कर, जीवन के लिए कुछ भी श्रेष्ठ, शक्तिशाली, स्वास्थ्यवर्धक और अच्छा नहीं है। लोग तुम्हारी शिक्षा के बारे में बहुत बातें करते हैं, लेकिन बचपन से संजोई हुई कोई अच्छी, पवित्र याद शायद सबसे अच्छी शिक्षा है। यदि कोई व्यक्ति अपने जीवन में ऐसी अनेक यादें संजो कर रखता है, तो वह अपने जीवन के अंत तक सुरक्षित रहता है, और यदि किसी के हृदय में केवल एक अच्छी याद रह जाए, तो वह भी कभी-कभी हमें बचाने का साधन बन सकती है। शायद हम आगे चलकर दुष्ट बन जाएँ, बुरे काम करने से खुद को रोक न पाएँ, लोगों के आँसुओं पर हँसें और उन लोगों पर हँसें जो कोलिया की तरह कहते हैं, 'मैं सभी मनुष्यों के लिए कष्ट सहना चाहता हूँ,' और यहाँ तक कि ऐसे लोगों का द्वेषपूर्वक उपहास भी करें। लेकिन हम चाहे कितने भी बुरे हो जाएँ —भगवान न करे—फिर भी, जब हम याद करेंगे कि हमने इलूशा को कैसे दफनाया, उसके अंतिम दिनों में हमने उससे कितना प्यार किया, और कैसे हम सब मिलकर दोस्तों की तरह बातें कर रहे थे, इस पत्थर को देखकर, हममें से सबसे क्रूर और उपहास करने वाला भी—अगर हम ऐसे बन भी जाएँ—तो उस क्षण दयालु और अच्छे होने पर मन ही मन हँसने की हिम्मत नहीं करेगा! इतना ही नहीं, शायद यही एक याद उसे बड़ी बुराई से बचा ले और वह सोचे और कहे, 'हाँ, मैं तब अच्छा, बहादुर और ईमानदार था!' उसे मन ही मन हँसने दो, इसमें कोई बुराई नहीं है, मनुष्य अक्सर अच्छाई और दयालुता पर हँसता है। यह तो बस लापरवाही है। लेकिन मैं तुम्हें यकीन दिलाता हूँ, लड़कों, कि जैसे ही वह हँसेगा, वह तुरंत अपने मन में कहेगा, 'नहीं, मैं हँसकर गलत कर रहा हूँ, क्योंकि यह हँसने की बात नहीं है।'
“ऐसा ही होगा, मैं तुम्हारी बात समझ गया, करामाज़ोव!” कोल्या चिल्लाया।
चमकती आंखें।
लड़के उत्साहित थे और वे भी कुछ कहना चाहते थे, लेकिन वे
उन्होंने खुद को संयमित रखा और वक्ता को एकाग्रता और भावना के साथ देखा।
“मैं यह इसलिए कह रहा हूँ कि कहीं हम बुरे न बन जाएँ,” अलेयोशा ने आगे कहा, “लेकिन ऐसा कोई कारण नहीं है।”
क्या कोई कारण है कि हमें बुरा बनना चाहिए, बच्चों? सबसे पहले और सबसे बढ़कर, दयालु बनो, फिर ईमानदार बनो, और फिर कभी एक-दूसरे को मत भूलो! मैं यह बात फिर से कहता हूँ। मैं तुम्हें वचन देता हूँ कि मैं तुममें से किसी को भी कभी नहीं भूलूँगा। अभी जो भी चेहरा मुझे देख रहा है, उसे मैं तीस साल तक याद रखूँगा। अभी-अभी कोल्या ने कार्तशोव से कहा कि हमें इस बात की परवाह नहीं है कि वह है या नहीं। लेकिन मैं यह नहीं भूल सकता कि कार्तशोव है और वह अब वैसे शरमा नहीं रहा है जैसे वह ट्रॉय के संस्थापकों को खोजते समय शरमाया था, बल्कि अपनी हंसमुख, दयालु, प्यारी छोटी आँखों से मुझे देख रहा है। बच्चों, मेरे प्यारे बच्चों, हम सब इलूशा की तरह उदार और बहादुर बनें, कोल्या की तरह चतुर, बहादुर और उदार बनें (हालाँकि बड़ा होकर वह और भी ज्यादा चतुर हो जाएगा), और हम सब कार्तशोव की तरह विनम्र, चतुर और प्यारे बनें। लेकिन मैं उन दोनों के बारे में क्यों बात कर रहा हूँ? मेरे प्यारे बच्चों, तुम सब मुझे बहुत प्रिय हो। आज से तुम सबके लिए मेरे दिल में एक खास जगह है, और मैं तुमसे भी विनती करता हूँ कि मेरे लिए भी अपने दिलों में एक खास जगह रखो! और भला किसने हमें इस नेक और सुखद भावना से जोड़ा है जिसे हम जीवन भर याद रखेंगे? इलुशा के अलावा और कौन? वह प्यारा बच्चा, वह प्रिय बच्चा, जो हमेशा हमारे लिए अनमोल रहेगा! हम उसे कभी न भूलें। उसकी याद हमेशा हमारे दिलों में बसी रहे!
“हाँ, हाँ, हमेशा के लिए, हमेशा के लिए!” लड़कों ने अपनी बुलंद आवाज़ में चिल्लाते हुए कहा।
चेहरे नरम पड़ गए।
आइए हम उसका चेहरा, उसके कपड़े और उसके बेचारे छोटे जूते याद रखें, उसके

"उस ताबूत और उसके दुखी, पापी पिता के लिए, और कैसे उसने अकेले ही पूरे स्कूल के खिलाफ बहादुरी से खड़े होकर उनका बचाव किया।"
“हम याद रखेंगे, हम याद रखेंगे,” लड़कों ने रोते हुए कहा। “वह बहादुर था।”
वह अच्छा था!
“आह, मैं उससे कितना प्यार करती थी!” कोल्या ने कहा।
अरे बच्चों, अरे प्यारे दोस्तों, जीवन से मत डरो! जीवन कितना अच्छा है!
जब कोई अच्छा और न्यायपूर्ण काम करता है!
“हाँ, हाँ,” लड़कों ने उत्साह से दोहराया। “करामाज़ोव, हम आपसे प्यार करते हैं!” एक आवाज़, शायद कार्तशोव की, चिल्लाई।
आवेगवश।
“हम तुमसे प्यार करते हैं, हम तुमसे प्यार करते हैं!” सबने एक साथ कहा। सबकी आँखों में आँसू थे। उनमें से कई लोगों की आंखों में।
“करामाज़ोव की जय हो!” कोल्या ने उत्साह से चिल्लाते हुए कहा। “और उस दिवंगत बालक की स्मृति अमर रहे!” अलेयोशा ने फिर कहा।
भावपूर्वक।
“हमेशा के लिए!” लड़कों ने फिर से एक साथ कहा।
“करमाज़ोव,” कोल्या चिल्लाया, “क्या धर्म में हमें जो सिखाया जाता है वह सच हो सकता है?”
कि हम सब मृत्यु से जी उठेंगे और फिर से जीवित होंगे और एक-दूसरे को देखेंगे, इलुशा भी?
“निश्चित रूप से हम सब फिर से उठ खड़े होंगे, निश्चित रूप से हम एक दूसरे से मिलेंगे और
“हम एक-दूसरे को खुशी और उल्लास के साथ वह सब कुछ बताएंगे जो हुआ है!” अलेयोशा ने आधा हंसते हुए, आधा उत्साह से जवाब दिया।
“वाह, कितना शानदार होगा!” कोल्या ने कहा। “अच्छा, अब हम बातें खत्म करके उनके अंतिम संस्कार के भोज में चलते हैं। हमारे पैनकेक खाने पर नाराज़ मत होना—यह बहुत पुरानी परंपरा है और इसमें कुछ अच्छा भी है!” अलेयोशा हँसते हुए बोला। “चलो चलते हैं! अब हम हाथ में हाथ डालकर चलते हैं।”
और हमेशा की तरह, हम जीवन भर एक-दूसरे का हाथ थामे रहेंगे! करामाज़ोव की जय हो!
कोल्या एक बार फिर उत्साह से चिल्लाया, और लड़कों ने एक बार फिर उसकी चीख को दोहराया:
“करामाज़ोव की जय हो!”

लेखक के बारे में

मॉस्को में जन्मे फ्योदोर मिखाइलोविच दोस्तोयेव्स्की (1821-1881) एक रूसी उपन्यासकार, लघु कथाकार, अनुवादक, निबंधकार, पत्रकार और दार्शनिक थे। उन्हें आज रूसी साहित्य के स्वर्ण युग के सबसे महत्वपूर्ण लेखकों में से एक माना जाता है।
किताबों के प्रति प्रेम के माहौल में पले-बढ़े दोस्तोयेव्स्की में एक इच्छा विकसित हुई
दोस्तोयेव्स्की ने कम उम्र में ही लिखना शुरू कर दिया था। उनके पहले उपन्यास, 'पुअर फोल्क', ने उन्हें साहित्यिक जगत में पहचान दिलाई, लेकिन ज़ारशाही रूस की प्रतिबंधित पुस्तकों में उनकी रुचि ने उन्हें साइबेरिया के एक जेल शिविर में चार साल बिताने के लिए मजबूर कर दिया। इससे दोस्तोयेव्स्की के मन में हताशा, आत्महत्या, गरीबी, छल, अपराध और नैतिकता के बारे में ऐसे विचार विकसित हुए, जो उनके उपन्यासों की प्रेरणा बने।

अनुवादक के बारे में

फ्योदोर दोस्तोयेव्स्की की शुरुआती अनुवादकों में से एक, कॉन्स्टेंस गार्नेट (1861-1948) का जन्म ब्राइटन, इंग्लैंड में हुआ था; उन्होंने कैम्ब्रिज के न्यून्हम कॉलेज में लैटिन और ग्रीक की शिक्षा प्राप्त की; और निर्वासित फेलिक्स वोल्खोव्स्की से रूसी भाषा सीखी। अंग्रेजी भाषी दुनिया में उन्नीसवीं सदी के रूसी साहित्य को लोकप्रिय बनाने में योगदान देने वाली गार्नेट ने लियो टॉल्स्टॉय, निकोलाई गोगोल, इवान तुर्गेनेव, अलेक्जेंडर ओस्ट्रोव्स्की, अलेक्जेंडर हर्ज़ेन और एंटोन चेखव सहित सत्तर से अधिक साहित्यिक कृतियों का अनुवाद किया।